

टैलीफोन नं० २०४७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

र्ष २६ अंक १) १९ पौष २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१— २ जनवरी १९६६ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

अरं शक्र परेमणि

हे सर्वशक्तिमन परमेश्वर ! ऐसी कृपा करें कि हम तेरे ही परेमणि—परम रूप में, रसपान करने में, तेरी स्तुति में आप की ही आराधना, साधना, में ही लगे रहें, मग्न मस्त रहें। आपकी भक्ति की मस्ती का परमरस सदा पान करते रहें!

विश्वा यदजय: स्पृध:

हे मानव ! तेरे अन्दर जितनी भी तामसी प्रवृत्तियां हैं, जिनके कारण यह जीवन तमोमय बनता जाता है, उन सबको जीत ले। उन तमोभावों को दूर भगाने के लिए उन पर पूरे रूप से विजय प्राप्त कर ले। ये तमोगुण मुझे अपना दास न बनाने पावे।

मत्स्व प्रभु वसो

इस शरीर में निवास करने वाले आत्मन् ! बड़ी सामर्थ्य रखने वाले आत्मन् ! तू सदा ही प्रसन्न रह। कभी भी विषाद को प्राप्त न हो। जीवन की निष्ठा सदा प्रसन्नता में है, घबरा कर सदा रोते रहना या निराश होना जीवन की साधना नहीं है। सदा प्रसन्न रहो।

सा म वे द से

हिंदी ही सारे देश की सम्पर्क भाषा हो सकती है : जाकिर हुसैन

उपराष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन ने आज यहां घोषणा की कि हिंदी के विकास का अर्थ दूसरी भाषाओं के विकास में बाधा उत्पन्न करना नहीं है। उन्होंने कहा कि किसी को यह भ्रांति नहीं होनी चाहिए कि हिंदी दूसरी भाषाओं को हानि पहुंचाना चाहती है। आज शाम दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के कार्यालय में ३० वें वार्षिक दीक्षांत समारोह को सम्बोधित करते हुए उन्होंने देश के लिए एक भाषा की आवश्यकता के गांधी जी के आदर्श को श्रद्धांजलि भेंट की और कहा कि गांधी जी जानते थे कि देश की एकता के लिए जहां विभिन्न भाषाओं के पूर्णतया विकसित होने की आवश्यकता है वहां लोगों में एकता लाने के लिए प्रभावपूर्ण सम्पर्क के रूप में एक साधारण भाषा को भी प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। यह भाषा सरल हिंदी ही हो सकती है जिसे चाहे हिंदी कहे या हिन्दोस्तानी उन्होंने कहा कि गांधी जी ने सोच-समझ कर सारे देश के लिए संपर्क भाषा के रूप में इसे चुना क्योंकि इस युग में हिंदी उत्तर तथा दक्षिण में बहुमत से बोली और समझी जाती है।

हिन्दी सरल और सुबोध होने के कारण राज्यभाषा की अधिकारी है।

ऋषि दर्शन

स विष्णुरीश्वर:

वह विष्णु ईश्वर ही है। वही परमेश्वर विष्णु कहलाता है। सर्वव्यापक होने से भगवान विष्णु कहलाता है। उस सर्वव्यापक प्रभु से ही जीवन की सारी कामनाएं पूरी होती हैं उसी को मानो और उसी से मांगना सीखो।

चक्रवर्ती राज्यम्

आप का राज्य चक्रवर्ती है। सारे विश्व की जनता आपके स्वराज्य तथा सुराज्य की प्रशंसा करती रहे। कोई हमें पराधीन न बना सके। मानसिक दास भी न बने हम चक्रवर्ती राज्य का प्रसाद प्राप्त करें।

अनन्त पराक्रमवान्

वह परमेश्वर अनन्त बल पराक्रमों का भण्डार है, सारी शक्तियों का वही केन्द्र है, उस की शक्ति के सामने कौन बलवान ठहर सकता है। अभिमानी बली उस महाबली के सामने हार गये, कुछ न चली वह बली है।

भाष्य भूमिका से

ठाता—श्री संतोषराज जी सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

(गतांक से आगे)

हर-क्षण बदलता है। टार्च के "सैल" नए नए खरीदे जाएं तो खूब रोशनी करते हैं। जैसे-जैसे मसाला खत्म होता है, रोशनी भी घटती जाती है। हे मानव, इसी तरह रूप को देख कर प्रसन्न न हो, यह भी अस्थायी है।

तीन प्रकार के गुण हैं—सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण। सतोगुण अर्थात् आप सोचें कि आपके पास बीस हजार रुपया है और यह आप अस्पताल बनाने के लिए दे देंगे। रजोगुण अर्थात् आप सोचें कि दस हजार से लड़की का ब्याह करूंगा और बाकी अस्पताल के लिए दे दूंगा और तमोगुण अर्थात् आप सोचें कि अमुक व्यक्ति सगाई में बाधा है उसे पांच हजार रुपया मुंह बन्द कराने के लिए दे दूं। यह भावनाओं का, विचारों का परस्पर विरोध है। यह संस्कार या वासना है। यह सब विचारों का परिणाम है।

रामायण में आता है कि जंगल में स्वरूपनखा ने माता सीता को देखा और आकर अपने भाई रावण से कहने लगी कि जंगल में एक बहुत ही सुन्दर युवती है। भय्या वह तुम्हारे लिए है। रावण ने कहा कि मैं खर, दूषण को भेजता हूं। स्वरूपनखा ने कहा कि उन दोनों को तो राम लक्ष्मण ने मार डाला है। उस ने अपने भाई को साधुवेष में जाकर सीता को पाने की सलाह दी और याद कराया कि भाई! तू तो मायावी है। रावण ने वैसा ही किया। मन्दोदरी ने आकर पति को इस रूप म देखा और साधुवेष धारण करने का कारण जाना तो कहने लगी—'तुम्हारे मन में यह गन्दा विचार आया है। सारे असुर परिवार को ले डूबेगा।' लेकिन रावण ने एक न सुनी और जो

राष्ट्र-भक्ति और प्रभु-भक्ति-६

(श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की अमृतभरी कथा)



परिणाम हुआ रावण के साथ क्या बीती, यह तो आप सभी जानते ही हैं। मेरे कहने का अभिप्राय: यह है कि विचार का अच्छा होना अत्यधिक आवश्यक है क्योंकि जैसे विचार होंगे वैसा ही संसार बनेगा हमें अपने विचार उत्तम एवं श्रेष्ठ रखने चाहिएं। दिल्ली की एक बात है। मैं करोल बाग में कथा कर रहा था। एक सज्जन मेरे पास आए और कहने लगे—"स्वामी जी। आज सायं आप हमारे यहां दूध पीजिए।" मैंने कहा—"पी लूंगा।" वह कहने लगे—"हमारे घर चलना होगा। बच्चे भी आप को देख लेंगे और घर भी पवित्र हो जाएगा।" मैंने घर जाना स्वीकार कर लिया और सायंकाल उन के घर पहुँचा तो कुछ ही क्षण बाद बिजली फेल हो गई। वह सज्जन सरकार को कोसने लगे—"अजी साहब! अजीब झंझट है रोज बिजली फेल होती है। क्या सरकार का घटिया प्रबन्ध है।" मैंने कहा—"महाशय! सरकार को बाद में कोस लेना, पहले कहीं से मोमबत्ती तो लाओ।" महाशय जी ने घर में सभी को बारी-बारी आवाज लगाई कि मोमबत्ती लाओ लेकिन मोमबत्ती नहीं मिली। मोमबत्ती को ढूंढते-ढूंढते माचिस खत्म हो गई और इतने में बिजली आ गई। मैंने कहा—भाई! सरकार को तो कोसते हो कि उसका प्रबन्ध ठीक नहीं है तुम अपना प्रबन्ध तो ठीक कर लो।

यह संसार जीवन और मृत्यु का एक चक्कर है। इसकी सर्वोत्तम औषध सुविचार हैं। विचार में बड़ी शक्ति है। एटम बम गिरने से हिरोशिमा में तो कुछ लाख व्यक्ति मरे लेकिन पाकिस्तान की स्थापना के विचार से भयकर तबाही हुई। पाकिस्तान के बारे में सारा साहित्य कैम्ब्रिज से आता था। अंग्रेजी ने एक अब्दुल लतीफ को द्विराष्ट्री के सिद्धांत का पट्टा पढ़ा कर भारत भेजा। मुस्लिम लीग के कराची अधिवेशन में मुहम्मद अली जिन्ना ने द्विराष्ट्री के सिद्धान्त का विरोध किया लेकिन चूंकि अंग्रेजों की दिलचस्पी थी, इस विचार का जोर-शोर से प्रचार जारी रहा और अन्ततः मुस्लिम लीग के लाहौर अधिवेशन में पाकिस्तान की मांग सम्बन्धी प्रस्ताव पास हो गया और अब्दुल लतीफ की मार्फत अंग्रेजों ने जो विचार फैलाया था उसे सफलता मिल गई। एटम बम से तो साढ़े तीन लाख व्यक्ति तबाह हुए लेकिन द्विराष्ट्री के सिद्धांत के विचार का नतीजा है कि भारत के विभाजन के समय लगभग साढ़े दस लाख व्यक्ति मारे गए और एक करोड़ के करीब लोग इधर आए और ५० लाख उधर पाकिस्तान गए। अब आप ही बताइए कि विचार की शक्ति ज्यादा है या एटमबम की? विचार हमारे समूचे जीवन की आधार शिला है। हम कान्वन्ट स्कूलों में पढ़ने के लिए अपने बच्चों को भेजते हैं। वहां ऐसे ढंग की शिक्षा दी जाती है जो भारतीय संस्कृति के प्रतिकूल है। कान्वेंट स्कूलों केपढ़े हुए बच्चे भारतीय नहीं रहते। याद रखो कुछ वर्ष बाद भारत में ईसाई विरोधी आंदोलन चलेगा तो कान्वेन्ट का पढ़ा हुआ हरेक बच्चा उस आंदोलन के विरोधियों का साथ देगा हमारा नहीं। हम असफल हो जाएं और हमारे विरोधी सफल। हमें अपने बच्चों की संगति का ध्यान रखना चाहिए। सिनेमा का भी बच्चों की बुद्धि पर बुरा प्रभाव पड़ता है। भगवान बचाए इस सिनमा से।

खिले हुए फूलों, पके हुए फलों और युवा सौंदर्य को देखकर बड़ों-बड़ों का दिल चलायमान हो जाता है लेकिन याद रखो जिसका पिता चित्रवान है, मां पतिव्रता है वह कभी दुश्चरित्र नहीं होगा। लेकिन हीरा लाल गांधी भी था महात्मा गांधी का लड़का। महात्मा गांधी जी कितने महान् और मां कस्तूरबा—एक सच्ची देवी। लेकिन बुरी संगत ने हीरा लाल गांधी को बिगाड़ दिया।

आज हमारे देश में मुसीबत है कि दूध डिब्बे का दिया जाता है और तालीम कान्वेन्ट की। बच्चा पैदा हुआ तो उसे मां का अमृत रूपी दूध नहीं मिलता। उसे तो दूध दिया जाता है हालैंड का, शीशी अमरीका की होती है और उसके साथ निपल लगा होता है इंगलैंड का। दो सौ वर्ष हो गए कान्वेन्ट शिक्षा को शुरू हुए। क्या कोई बता सकता है कि कभी कान्वेन्ट का कोई छात्र किसी परीक्षा में सफल आया है। हमेशा डी० ए० वी० संस्थाओं के छात्रों ने प्रथम दर्जे पाए हैं। कान्वेन्ट में पढ़ाना घन और बच्चों दोनों की बर्बादी है। विचार बिगड़ते हैं। बच्चों को घरों में पढ़ाओ, स्कूलों, कालेजों में भेजो लेकिन उन्हें भगवान राम और श्रीकृष्ण के सन्देश सुनाना मत भूलो। माता जी का यह फर्ज बनता है कि वे अपने बच्चों को अच्छी-अच्छी बातें बताएं और बुजुर्गों की वीरता तथा प्रभुभक्ति की गाथाएं सुनाएं। बच्चों का अच्छा या बुरा बनना माता-पिता पर बहुत हद तक निर्भर करता है। सब से पहली बात यह कि अच्छी संगत में आओ। (क्रमशः)

सम्पादकीय--

आर्य जगत

वर्ष २६] रविवार २०२२, २ जनवरी १९६६ [अंक १

हम और वे

राक्षसीपन के आसुरी मार्ग पर चलते हुए अधिनायक वाद का निन्दाभरा चित्र पेश करते हुए पाकिस्तानी शासकों ने कृतघ्नता की चरमसीमा पर पहुँच कर जिस धोखे से भारत की भूमि पर भारी टैंकों के साथ जो आक्रमण किया था—तथा पंजाब को हथियाने की योजना बनाई थी। यदि हमारे नेता तथा सैनिक शक्ति तुरन्त कारवाई न करती तो एक गम्भीर समस्या पैदा हो जाती। भारतीय सेना के वीर जवानों ने जिस वीरता, बलिदान भावना का शानदार परिचय दिया। वह इतिहास का अमर अध्याय बनेगा। भारतीय सेना ने भी युद्ध किया और शस्त्रों का प्रयोग किया। ग्रामों व नगरों पर अधिकार किया। परन्तु क्या मजाल कि किसी मकान को गिराया हो या किसी भी ग्रामीण या नागरिक बच्चे बूढ़े अथवा किसी युवती कन्या को मारा हो या मैली दृष्टि से भी देखा हो। भारतीय जवान शत्रु से टक्कर लेना जानता है ईंट का उत्तर तो पत्थर से देता है, किन्तु आचार में उच्चता की पराकाष्ठा तक पहुँचा हुआ है। बरकी और डोगराई कस्बों को इस ने जीता पर उन को आग नहीं लगाई। सैंकड़ों गांवो पर भारतीय सेना ने अधिकार किया है। उन स्थानों के सारे नरनारी इन के अधिकार में हैं। जम्मू कठुआ के कैम्पों में पाकिस्तानी क्षेत्र के सैंकड़ों मुसलमान बन्दी रखे गये हैं। उन में युवती लड़कियां व बच्चे भी शामिल हैं। परन्तु क्या मजाल कि उनके प्रति किसी ने भी मैली आंख से देखा हो। भारतीय सेना लड़ना तथा शत्रु का कचूमर निकालना तो खूब जानती है—साथ ही भारतीय सैनिक आचार की ऊंची मर्यादा भी निभाने में प्रसिद्ध हैं। यह हमारा आचार का ऊंचा स्तर है। दूसरी ओर पाकिस्तान के राक्षसीपन से भरे हुए कायर सैनिक हैं। जिन के आचार विचार की गिरावट की चर्चा करना भी बेकार है। जिन के सामने पिशाचवृत्ति को पूरा करने के सिवाय और कुछ होता नहीं। काश्मीर में लुटेरे आये तो दुकानों को लूट लिया, उनको आग लगा दी। गांव जला दिये, लोगों को मार दिया तथा नीचपन पर उतर कर जवान लड़कियां भी इन भेड़ियों से सुरक्षित न रह सकीं। पिशाचों, राक्षसों के सामने आचार की मर्यादा कैसी? असुरों का सारा इतिहास ही ऐसे भद्दे कामों से भरा पड़ा है। आज भी पाकिस्तानी इन मनुष्य के वेश में आने वाले राक्षसों के काम सामने हैं। और कुछ नहीं बनता तो ग्रामों को आग लगा देते हैं। उनको लूट लेते हैं। जवान लड़कियों से ये राक्षस पिशाचीपन से भी बाज नहीं आते। धर्म स्थान इन से सुरक्षित नहीं, श्रीमानों के हस्पतालों को जलाने में इनको शर्म नहीं आती, छहरटा जैसी नागरिक जनता पर अग्नि बम मार कर मारने में यह निर्लज्ज हैं तथा लूटने मारने आग लगाने, बलात्कार करने में यह पिशाचों से भी आगे हैं। हमारे तथा इन में यह भेद है। आज भी भारतीय वीरों ने इन्द्र बन कर वज्र की मार से इन राक्षसों को ठीक करना है।

—त्रिलोक चन्द्र

तन-मन-धन वालों से



काश्मीर और पंजाब की भूमि पर राक्षसपन की निन्दनीय वृत्ति से भरकर पाकिस्तान ने जो अपना नंगा पिशाचीपन का नाच करने का आयोजन किया था—उसमें तो मुंह की खाई है। किन्तु जिन ग्रामों को लूटा, जलाया तथा अत्याचार का निशाना बनाया—वहाँ की जनता अपने-अपने घरों को छोड़कर तीन कपड़ों में अपने-अपने भरे हुए मकानों को छोड़कर आ गई हैं। सरकार भी उनका प्रबन्ध कर रही है जो उसके प्रबन्ध वाले कैम्पों में हैं। साथ ही हजारों की संख्या में जो भाई बहिन छम्ब, जौड़ियां, राजौरी, जम्मू आदि स्थानों से जालन्धर, होशियारपुर, अमृतसर आदि नगरों में आये हैं। उनकी इस विषम समय में सेवा करने के लिए आर्यसमाज ने भी अपनी सेवा की पुरानी मर्यादा के अनुसार कैम्पों का प्रबन्ध किया है। आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब जालन्धर के माननीय प्रधान श्री यश जी पूर्व शिक्षा मन्त्री पंजाब सरकार ने तत्काल ही उजड़ कर आने वाले इन भाई बहिनों की सेवा करने के लिए सभा की ओर से तीन सेवा कैम्प खुलवा दिए हैं। एक अमृतसर में, एक होशियारपुर में तथा जालन्धर में। आर्य प्रादेशिक सभा का सेवा का इतिहास सोने के अक्षरों में लिखा हुआ है। सभा ने इस बार भी अपनी सेवा परम्परा को कायम रखा है। जालन्धर में सेवा का जो केन्द्र रेलवे स्टेशन के पास चल रहा था, उसके सचालक प्रबन्धक सभा के मान्य उपप्रधान श्री ला० इन्द्रसेन जी मण्डी फिटनगंज हैं उनकी देखरेख में कितना शानदार सेवाकार्य जारी था यह तो आंखों से देखने से ही सम्बन्ध रखता है। खाना-खिलाना, वस्त्रादि का प्रबन्ध करना तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं को जुटाना हो रहा है। ला० इन्द्रसेन जी दिन रात एक करके मौन होकर इस काम में लगे हुए हैं।

इसी प्रकार होशियारपुर में चौधरी बलवीरसिंह जी प्रधान दयानन्द कालेज प्रबन्धक कमेटी होशियारपुर के संचालन व प्रबन्ध में भारी सेवाकार्य जारी है। सभा के पूर्व प्रधान तपोमूर्ति प्रिंसिपल रलाराम जी एम. ए. तथा अन्य सज्जन भी रात दिन एक करके सेवा में लगे हैं अमृतसर में भी सभा द्वारा सारी आर्यसमाजें सेवा में लगी हैं। कर्तव्य निभाया जा रहा है। किन्तु इस काम के लिए हम तन मन धन वालों से एक आवश्यक बात कहना चाहते हैं। युद्ध में क्या होता है यह तो देखने वाली आंखें ही देखती हैं। दूर बैठे हुए सज्जन इस महानाश भीषण दृश्य को देख नहीं सकते। हम उन से कहना चाहते हैं कि इस समय इन उजड़े हुए अपने भाई बहिनों का सब प्रकार की सेवा सुविधा के लिए सभा को हर प्रकार का जल्दी से जल्दी सहयोग देवें। इस समय धन की भी आवश्यकता है, कपड़ों की भी तथा अन्नादि भी। इस लिए जो भाई वस्त्र दे सकते हैं वे कपड़ों से सहयोग देवें जो धन दे सकते हैं वो अधिक से अधिक धन देवें। इस समय तो यह सेवा महान यज्ञ, भक्तिभजन और स्मरण है। पवित्र कार्य आरम्भ करवाया है इस के लिए आर्य प्रादेशिक सभा जालन्धर के नाम वस्त्र व धन भिजवा कर कर्तव्य को पूरा करें।

सम्पादक

संस्कृत का महत्व

प्रो. कृष्णकुमार धवन प्रमुख मन्त्री सस्कृत विश्व परिषद, चंडीगढ़

गत सप्ताह संस्कृत के गुणगान का सप्ताह रहा है । केन्द्रीय संस्कृत बोर्ड से लेकर राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन तक सभी ने संस्कृत का महत्व प्रदर्शित किया है । अंग्रेजी, हिन्दी, उर्दू प्रेस ने भी समाचार, सम्पदकीय तथा अग्र लेख लिखकर संस्कृत की महता एवं भारत तथा विश्व के लिए इसकी आवश्यकता का विस्तार से और मोटे-मोटे अक्षरों में उल्लेख किया है। ये सभी धन्यवाद के पात्र हैं । अभी-अभी पटियाला में आल इण्डिया हिस्ट्री कांग्रेस ने मत प्रकट किया था कि इतिहास के वास्तविक अध्ययन के लिए संस्कृत का ज्ञान-पहली सीढ़ी है, परम आवश्यक है । कांग्रेस ने यह इच्छा भी प्रकट की कि कम से कम पंजाब के तीनों विश्वविद्यालय इसमें आवश्यक रुचि लेवें । शिक्षा मन्त्री श्री छागला ने केन्द्रीय संस्कृत बोर्ड की बैठक में जिस योग्यता से संस्कृत के अध्ययन पर बल दिया वह अत्यन्त वांछनीय है । राष्ट्रपति जी ने संस्कृत की उच्चता, तथा संस्कृत की पूर्णता को दृष्टि में रखते हुए उसके विस्तार के लिए, वाराणसी के सम्मेलन में उचित मार्ग निर्देश किया है । श्री अनन्त शयनम् आयंगर तथा डा० कर्णसिंह आदि अनेक राज्यपाल भी समय-समय पर संस्कृत का पक्ष लेने से नहीं चूकते । देश की अनेक शिक्षा संस्थाओं की प्रबन्धकर्त्री सभाएं और उनके मुखिया भी संस्कृत के ह्रास को देखकर चिन्ता प्रकट करते रहते हैं । पर, जब कि उपरक्त सभी व्यक्ति, अधिकारी, मन्त्री राज्यपाल, संस्थाएं, विश्व विद्यालयों के कुलपति और उपकुलपति संस्कृत के महत्व से सुपरिचित हैं, हर समय इसके लिए चिन्तित हैं तो इसे सवनाश से बचाने के लिए कुछ करने की बजाए इसके सर्वनाश के साधन ही क्यों जुटाते जा रहे हैं। आज जो विद्यार्थी संस्कृत पढ़ने स विमुख होते जा रहे हैं संस्कृत की लोकप्रियता समाप्त होती जा रही है, उसके जिम्मेवार क्या हमारे कर्णाधार और शिक्षा के अधिकारी हो नहीं हैं । लोग तो संस्कृत पढ़ना चाहते है परन्तु उन्हें संस्कृत पढ़ने नहीं दी जाती ।

पंजाब में, हमारे शिक्षाशास्त्रियों ने हायर सैकण्डरी सिस्टम चालू किया और साथ ही संस्कृत का गला घोंट दिया । हायर सैकण्डी के छात्र को साईंस के साथ संस्कृत पढ़ने को आज्ञा नहीं, मानों साईंस और संस्कृत का परस्पर विरोध हो । हायर सैकण्डरी के आठ ग्रुप में से केवल एक **Humanities Group** में संस्कृत को स्थान प्राप्त है । इस ग्रुप में भी कई स्कूलों ने इस प्रकार टाईम टेबल बना रखे हैं कि विद्यार्थी या संस्कृत पढ़ ले या गणित, संस्कृत पढ़ सके । या इतिहास, आदि-आदि । जिन स्कूलों में संस्कृत पढ़ाने की कुछ व्यवस्था है भी वहां सप्ताह भर में संस्कृत पढ़ाने के लिए केवल तीन-चार घन्टे नियत है जब कि अन्य विषयों के लिए छः से आठ तक ।

यही अवस्था मिडल कक्षाओं में है । कोई दिन थे (स्वतन्त्रता से पहले), जब संस्कृत की कक्षाएं विद्यार्थियों से भरी रहती थीं आज पूरे के पूरे विद्यालय में इने-गिने छात्र मिलेंगे ।

थ्री इयर डिग्री कोर्स तो संस्कृत को बिलकुल ले डूबा है । इस से पूर्व, कम से कम इन्टरमीडिएट तक एक ना एक भारतीय भाषा का अध्ययन हो जाता था पर ऐसा कोई नियम नहीं । यदि अब पुनः वैसा करने के लिए प्रस्ताव किया जाता है तो उसका खण्डन यह कह कर दिया जाता है कि ऐसा मान लेने से हिन्दी-संस्कृत के अध्यापक और रखने पड़ेंगे । कई कालेजों विशेषकर गवर्नमैंट कालेजों ने विषयों के **Combinations** इस भान्ति नियत कर रखे हैं कि विद्यार्थी चाहता हुआ भी संस्कृत को अपने अध्ययन का विषय नहीं चुन सकता । आनर्स की पढ़ाई का प्रबन्ध तो, छात्र-संख्या कम होने के कारण कई स्थानों पर नहीं है ।

संस्कृत पाठशालाएं भी इसी नीति का शिकार हैं । संस्कृत का तथा वेदों और शास्त्रों का वास्तविक अध्ययन इन विद्यालयों में होता था कुछ२ अब भी हो रहा है । इन्हें मृत्यु के मुख में धकेलना संस्कृत की मृत्यु होगी । केन्द्रीय सरकार ने चिरकाल से संस्कृत की परीक्षाओं को अन्य परीक्षाओं के बराबर मान्यता देने के लिए सिफारिश कर रखी है पर पंजाब विश्व विद्यालय और कई अन्य विश्व विद्यालय भी इसे बस दबाए ही बैठे हैं । पंजाब विश्वविद्यालय तो योजनाबद्ध रीति से, अपने केन्द्र स्थान से, संस्कृत के निर्वासन के लिए कटिबद्ध है तथा एम० ए० और आचार्य कक्षाओं के सभी ग्रुप पढ़ाने की व्यवस्था का भी पंजाब विश्वविद्यालय से दिन प्रति दिन लोप होता जा रहा है। कई तो कक्षाए ही प्राज्ञ, विशारद, आचार्य बन्द कर दी गई हैं ।

पंजाब के बहु संख्यक गवर्नमैन्ट स्कूलों तथा गर्ल्ज स्कूलों में संस्कृत पढ़ाने का प्रबन्ध बिल्कुल नहीं है । गवर्नमैंट माडल स्कूलों ने तो अछूत जान कर संस्कृत को निकाल रखा है ताकि संस्कृत की पढ़ाई कहीं छात्र-छात्राओं को असभ्य ना बना दे ।

स्कूलों, कालेजों तथा विश्वविद्यालयों में संस्कृत के अध्यापकों का स्थान सब से पीछे है । उन्हें मान देना या कोई जिम्मेवारी सौंपना संस्थाओं के अधिकारी अपना अपमान समझते हैं । सच पूछिए, आज जिन संस्थाओं में संस्कृत शिक्षा का प्रबन्ध है, वह प्रबन्धकों ने केवल मात्र अपना मुंह रखने के लिए, अपने को हेठी से बचाने के लिए या फिर धर्मप्रिय, संस्कृति प्रिय तथा देशानुरागी जनता की सहानुभूति हम से हट ना जाय, इस भय से कर रखा है । दिल से वे भी इसे नहीं चाहते । जो संस्थाएं संस्कृत के विकास और इस के प्रचार को सम्मुख रख कर खोली गई थी वे भी इसे सम्मान पूर्ण स्थान देने दिलाने से आज हिचकिचाती हैं ।

त्रिभाषी फार्मूलों ने तो संस्कृत को सब से पीछे ला पटका है । बंगाल, महाराष्ट्र और गुजरात जैसे प्रदेशों में भी, जहां कभी संस्कृत का बोल बाला था, आज ढूंढने पर ही संस्कृत के पढ़ने वाले मिलेंगे । यदि प्रादेशिक भाषा महाराष्ट्री या गुजराती या बंगला और अंग्रेजी के साथ वे संस्कृत भी पढ़ते हैं तो केवल भाषाओं के विद्यार्थी ही रह जाएंगे और युग की दौड़ में फिर पीछे के पीछे ।

प्रतिदिन मन्त्री गण और सरकारी प्रवक्ता यूं भी कहते रहते हैं कि संस्कृत सभी प्रादेशिक भाषाओं के विकास का आधार है, फिर प्रायः सभी प्रदेशों की, राज्यों की संस्कृत के प्रति उदासीनता क्यों ? पंजाब के भाषा विभाग को ही लिजिए, इस में प्रादेशिक भाषाओं हिन्दी और पंजाबी के लिए प्रबन्ध है, उर्दू के लिए भी हमारा भाषा विभाग चिन्तित है ।

क्रांतिकारी स्वामी श्रद्धानन्द जी

(श्री ज्ञान सिंह जी नई दिल्ली)



(गतांक से आगे)

सन् १९१९ में अमृतसर में हुए कांग्रेस के अधिवेशन में अपने भाषण में अछूतोद्धार के बारे में अपने राष्ट्र को चेतावनी देते हुए कहा था :—"लंदन शहर में भारत के लिए उपयुक्त रिफार्म स्कीम कमेटी के सामने इसाई मुक्ति फौज के नेता जनरल बूथ ठक्कर ने कहा था कि भारत के साढ़े छः करोड़ अछूतों को विशेष अधिकार मिलने चाहिएं और इस के लिए उन्होंने यह युक्ति दी कि चूंकि अछूतमें अंग्रेजी शासन रूपी जहाज के लंगर हैं इस लिये उन्हें ऐसे अधिकार मिलने ही चाहियें। इन शब्दों पर आप गम्भीरता से विचार करें और सोचें किस प्रकार आप के साढ़े छः करोड भाई आप के जिगर के टुकड़े जिन्हें आप ने काट कर फक दिया है, किस प्रकार भारत माता के यह पुत्र एक विदेशी सरकार रूपी जहाज के लंगर बन सकते हैं। मैं आप सब भाईयों और बहनों से एक याचना करूंगा कि इस पवित्र जातीय मंदिर में बैठे हुए अपने हृदयों को मातृभूमि के जल से शुद्ध कर के प्रतिज्ञा करो कि आज से यह साढ़े छः करोड़ भारत वासी हमारे लिये अछूत नहीं बल्कि हमारे बहन भाई हैं। उन के बच्चे हमारी पाठशालाओं में पढ़ेंगे, वह लोग हमारी सभाओं में सम्मिलित होंगे, हमारे स्वतन्त्रता संग्राममें वह हमारे कन्धे से कन्धा जोड़ेंगे और हम सब एक-दूसरे का हाथ पकड़े हुए अपने जातीय उद्देश्य को पूरा करेंगे।

जातपात के औचित्य पर लोग अभी विचार ही कर रहे थे कि मुंशी राम जी ने जातपात तोड़ कर अपनी पुत्री का विवाह कर दिया। लोग अभी उच्च शिक्षा को मातृ-भाषा में देने का स्वप्न ही न लेने पाये थे कि मुंशीराम जी ने विज्ञान अर्थशास्त्र आदि आधुनिक शिक्षा का माध्यम गुरुकुल में मातृभाषा हिन्दी को कर दिया। राजनीति में धर्म और नैमिकता के समावेश को शायद अव्यावहारिक और अनावश्यक समझा जाता था किन्तु १९१९ में अमृतसर कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष के पद से वेद मन्त्रों का उच्चारण करते हुए ब्रह्मचर्य आदि का उपदेश देने वाले वही प्रथम नेता थे। आपने यह भाषण हिन्दी में दिया, और अंग्रेजी भाषा दिये भाषणों और स्वीकृत प्रस्तावों के बोझ से दबी कांग्रेस में संभवतः यह पहला स्वागताध्यक्ष भाषण था जो हिन्दी में दिया गया था।

गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना

जिस समय अंग्रेजी शासन में घोषित पाश्चात्य भाषा और संस्कृति सरकारी विश्वविद्यालयों में प्रसारित हो रही थी, मुन्शीराम जी ने अपना सर्वस्व त्याग करके अपने आचार्य महर्षि दयानन्द के आदेशानुसार हरिद्वार से लगभग छः मील दूर गंगा पार चण्डी पहाड़ के नीचे घने जंगल में कांगड़ी गांव के पास गुरुकुल विश्व-विद्यालय की स्थापना की। देश के बच्चों को पाश्चात्य विचारों से पृथक विशुद्ध भारतीयता व राष्ट्रीयता के विचारों को उत्पन्न करके शिक्षा क्षेत्र में एक नूतन पथ का निर्माण किया। गुरुकुल कांगड़ी उनके शिक्षा सम्बन्धी आदेश का उज्जवल प्रतीक है।

इस संस्था के राष्ट्रीय स्वरूप को देखकर ही अंग्रेजी सरकार इस पर बड़ी-कड़ी नजर रखती थी! वह तो इसे बम बनाने का गुप्त कारखाना ही समझती थी।

एक महान भव्य मूर्ति

महात्मा मुन्शीराम की भव्य मूर्ति देखने ही योग्य थी। मजदूर दल के नेता श्री रेमजे मेकडानल्ड ने, जो बाद में ब्रिटिश साम्राज्य के प्रधान मन्त्री बने थे, १९१५ में भारत का दौरा करने के पश्चात महात्मा जी के बारे में निम्नलिखित वाक्य लिखे—

'एक महान भव्य और शानदार मूर्ति जिस को देखते ही उसके प्रति आदर का भाव उत्पन्न होता है, हमारे आगे हम से मिलने के लिये बढ़ती हैं।

सन्यास आश्रम में प्रवेश

लगभग सत्रह साल तक गुरुकुल का आचार्य पद से संचालन करने के पश्चात् उसे योग्य हाथों में सौंप महात्मा जी ने सन्यास आश्रम में प्रवेश किया और स्वामी श्रद्धानन्द बन कर सार्वजनिक कार्यों में भाग लेने लगे। स्वामी जी हिन्दु-मुस्लिम एकता की प्रत्यक्ष मूर्ति थे। १९१९ मार्च में रौलट एक्ट के विरोध में जब दिल्ली में सात दिन की हड़ताल रही तब इस राजधानी के बेताज बादशाह स्वामी श्रद्धानन्द ही थे। कसाईयों ने उन दिनों बूचड़ खाने बन्द कर दिये थे। जामा मस्जिद के मैम्बर से वेद मंत्रों के उच्चारण के साथ भाषण देने वाले मुस्लिम इतिहास में आप पहले हिन्दू थे। इस मौके पर हजारों हिन्दू मुसलमान बिना किसी भेद-भाव के वहां जमा थे, और स्वामी जी वहां निभयता से हिन्दू मुस्लिम एकता का संदेश सुना रहे थे। उन दिनों मुसलमान स्वामी जी पर इतने फिदा थे कि सात आठ व्यक्ति हर समय आप के मकान पर पहरा देते थे।

रौलट एक्ट के विरुद्ध जलूस निकाला गया इस का नेतृत्व स्वामी श्रद्धानन्द जी कर रहे थे जब यह जलूस घंटाघर के पास पहुँचा तो वहां गोरखे सिपाहियों को इस जन-समूह को रोकने और गोली चलाने के लिये तैयार देखा गया। स्वामी जी ने निर्भयता से आगे बढ़कर अपनी छाती तानकर गरज कर कहा निर्दोष जनता पर गोली चलाने से पहले मेरी छाती पर संगीन भौंक दो।' बूढ़े शेर की इस गर्जन को सुन गोरे साजेंन्ट के होश गुम हो गए। उसने तत्काल गोरखे सिपाहियों को बन्दूकें नीचे करने का हुक्म दिया! स्वामी जी की इस वीरता की सारे देश में भूरि-भूरि प्रशंसा की गयी।

२३ दिसम्बर १९२६ को स्वामी श्रद्धानन्द ने अपनी आहुति देकर इस लक्ष्य को पूरा किया। एक मुस्लिम लड़की की शुद्धि के कारण, जो अपने पिता के साथ स्वेच्छा से हिन्दु धर्म में प्रविष्ट हुई थी—नया बाजार दिल्ली स्थित सवदेशिक सभा भवन में रोगी पड़े स्वामी जी पर अब्दुल रशीद ने गोली चला दी जिससे उनका तत्काल जीवन समाप्त हो गया।

महात्मा गांधी ने स्वामी जी की मृत्यु पर कहा था स्वामी जी का जीवन जैसा शानदार था वैसी ही उनकी मृत्यु भी शानदार ही हुई थी। पंजाब केसरी लाला लाजपत राय ने स्वामी जी के बलिदान पर निम्नलिखित शब्द कहे थे :—

स्वामी जी की हड्डियों से यमुना के तट पर एक विशाल वृक्ष उत्पन्न होगा जिसकी जड़ें पाताल में पहुंचेगी। शहीद के खून से नये शहीद पैदा होंगे।

शहीदों की चिताओं पर
लगेंगे हर वर्ष मेले।
वतन पर मिटने वालों का
यही आखिरी निशां होगा॥

स्वामी जी के बलिदान दिवस पर आज उनके गुणों को यथा-शक्ति अपने जीवन में धारण करना ही इस महापुरुष के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

आर्य समाज व मारवाड़ी समाज—२

वंशीलाल जी गोदानी-कोषाध्यक्ष, आर्यसमाज शोलापुर

आर्यसमाज को साधन चाहिए। मारवाड़ी समाज साधन सम्पन्न है। मारवाड़ी भाई देश के सब भागों में फैले हुए हैं। यदि मारवाड़ी भाई आर्यसमाज को समझने का थोड़ा-सा भी प्रयत्न करें तो इनका हृदय साक्षी देगा कि जाति के जीवन की गारंटी एक मात्र आर्यसमाज ही है। मारवाड़ियों का दानशीलता देश भर में प्रसिद्ध है परन्तु मारवाड़ियों द्वारा दान की जो दुर्गति हो रही है उसको सभी जानते हैं। जैसे दान की दुर्गति हो रही है ऐसे ही हमारी भी दुर्गति हो रही है। जो भी मांगने आता है, मारवाड़ी सहृदय की, पात्र कुपात्र की जांच किये बिना दान दे देते हैं। यह सर्वथा अबुद्धिमत्तापूर्ण है।

मारवाड़ी समाज को चाहिए कि केवल वेद रक्षा, गोरक्षा, राष्ट्र रक्षा, मातृ-शक्ति की रक्षा, राष्ट्रीय एकता, राष्ट्र भाषा प्रसार व शुद्धि आदि पुनीत कार्यों के लिये दान दिया करें। कितने ही अनाथ बच्चे हैं जिनका लालन-पालन करके पूना आदि स्थानों पर ईसाई लोग उनको पादरी बनाकर हमारे लिए तैयार कर रहे हैं। दक्षिण भारत में ऐसी २०-२५ संस्थाओं का निर्माण होना चाहिए जहां असहाय बहिनों व ऐसे बच्चों के पोषण व शिक्षा आदि का प्रबन्ध हो। मारवाड़ी लोग सुगमता से यह काम कर सकते हैं। यह एक निर्विवाद सत्य है कि ऐसी संस्थायें चलाने का ढंग केवल आर्य समाज ही जानता है। आर्य समाज के वातावरण में पाला पोसा गया बालक कभी विधर्मी नहीं हो सकता। क्या किसी ने आज तक किसी आर्यसमाजी को ईसाई मुसलमान बनते देखा है?

कुछ स्वार्थी लोगों ने तो पेट पूजा के लिए आज भी यही भ्रम फैला रखा है कि आर्यसमाजी राम को नहीं मानते, आर्यसमाजी कृष्ण को नहीं मानते। सम्भवत वह समझते हैं कि १०० बार झूठ बोलने से झूठ सत्य बन जाता है। ऋषि दयानन्द जी महाराज ने तो यहां तक लिखा है कि श्री कृष्ण महाराज ने जन्म से लेकर मरण पर्यन्त कोई पाप नहीं किया। जो आर्यसमाजी राम पर किये गये प्रत्येक वार का मुंह तोड़ उत्तर देने के लिये २४ घण्टे तत्पर रहते हैं उन के सम्बन्ध में ऐसी लचर बात कहना जाति का दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है। ऋषि दयानन्द जी आर्य पूर्वजों के इतने अनन्य भक्त थे कि उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश उदयपुर में लिखा परन्तु इस ग्रन्थ की भूमिका में स्थान का नाम उदयपुर न लिख कर राणा जी का उदयपुर लिखा है। इसी प्रकार छत्रपति शिवाजी आदि समस्त राष्ट्रवीरों पर वह असीम गौरव करते थे। ऐसे महान ऋषि के सन्देश को न समझ कर हम अपने कल्याण के मार्ग में स्वयं बाधक बनकर राष्ट्रीय हितों की हत्या कर रहे हैं।

आज भी मारवाड़ियों में बाल-विवाह की कुप्रथा बड़ी दुखदायी है। राहु व केतु की कहानियां व सूर्य-ग्रहण की वास्तविकता न समझना बड़ा विनाशक अज्ञान है। वर्षा ऋतु में विवाह क्यों नहीं करने चाहियें। इस रहस्य को और मोटी बुद्धि की व्यवहारिक बात को न समझ कर भ्रममूलक गप्पों पर विश्वास करना अपने पूर्वजों का उपहास करना है। इसी प्रकार विश्व के रचयिता ईश्वर को सोया हुआ मानना व उसका जगाना ये कैसी मूढ़ कल्पनायें हैं। महाराज कृष्ण तो गीता में कहते हैं कि जब लोग सोते हैं तो ज्ञानी प्रभु भक्त जागते हैं। प्रश्न यह है कि यदि ईश्वर ही सो जाता है तो उपासक के जागने का क्या लाभ। यह वेद विरुद्ध विचार छोड़कर हम सब को कल्याण मार्ग का पथिक बनना चाहिये। इस के लिये हम सब को आर्य-समाज का अङ्ग बनना चाहिये। विश्व वेद की तिमिर नाशक रश्मियों से आलोकित होगा। प्रभु करे हम सब इस पथ पर चलें।

आर्य सदस्य विनय नगर देहली से प्राप्त

माननीय महोदय,

कई वर्षों से विनय नगर में श्री ब्रह्मचारी कृष्ण दत्त जी के प्रवचनों का जोर रहा है, शुरू-शुरू में उस समय इस विषय को लेकर आर्य जगत में विवाद खड़ा हो गया, हर्ष की बात थी कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने विरोध किया जो कि वास्तविक था मई ६२ में सभा मंत्री जी ने एक विज्ञप्ति निकाल कर आर्य जगत को प्रेरणा की थी कि वे इन प्रवचनों को जिसमें अनेक बातें सिद्धांत विरुद्ध, इतिहास विरुद्ध एवं भ्रमोत्पादक होती हैं। प्रोत्साहित न करें न करने दें। इस के साथ ही अन्य सभी बड़े-बड़े विद्वानों ने अपनी- अपनी सम्मतियां देकर आर्य समाज विनय नगर के तत्कालीन अधिकारियों को विवश कर दिया कि श्री ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी के प्रवचनों को प्रोत्साहन न दें।

अतः आर्य समाज विनय नगर ने, सार्वदेशिक सभा के निर्देशानुसार, दिनांक १४ मई १९६२ को निश्चय किया कि, आर्य समाज एक अनुशासनात्मक सगठन है, अतः अनुशासन में रहने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आदेशानुसार ब्रह्मचारी कृष्णादत्त जी के अनुसंधान एवं प्रवचनादि कार्यक्रम को भविष्य में, आर्य समाज विनय नगर द्वारा न चलाया जाए, ऐसा निश्चय किया जाता है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी के प्रवचनों को प्रोत्साहन देकर आर्यसमाजों और आर्य सभासदों को ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जो कि आर्य समाज के सिद्धांतों के प्रतिकूल हो।

किन्तु बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि यह सभा का आदेश और आर्यसमाज के उन आर्य सभासदों ने जिन्होंने उक्त प्रस्ताव पास किया था, बड़े धड़ल्ले के साथ ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी के प्रवचनों का आयोजन करते हैं, और अपने घरों पर खूब प्रचार कराते हैं। सारे भारत में वैदिक प्रवचन अनुसंधान समिति बनाकर आर्य समाजों तथा आर्य सभासदों के द्वारा प्रवचनों का आयोजन करते हैं। बड़ी सख्या में सदस्य बना लिए हैं जो लगभग भोले-भाले आर्य समाजी हैं, जिनको पथभ्रष्ट किया जा रहा है।

आर्यसमाज विनय नगर में सार्वदेशिक सभा के आदेश और ब्रह्मचारी जी के उपदेशों के स्वरूपों को जिन आर्य सभासदों ने समझा है, उनकी बड़ी सख्या है, बड़ी २ कठिनाइयां उठा रहे हैं। इस पर भी बड़े खेद की बात है कि कुछ सार्वदेशिक सभा के स्तर के आर्य नेता, ब्रह्मचारी कृष्णदत्त प्रवचन वैदिक अनुसंधान समिति जो कि उसके सर्वेसर्वा हैं उन महानुभावों को प्रोत्साहन देते हैं। ऐसे ही आर्य जनों ने जो आर्यसमाज के १९६५ के चुनाव में हार गए हैं आर्य समाज से अलग होकर एक आर्य सत्संग मण्डल बना लिया है, उसकी आड़ में आर्य विद्वानों एवं नेताओं का सहयोग लेकर आर्य जगत की आंखों में धूल झोंक रहे हैं और आर्यसमाज को हानि पहुँचा रहे हैं।

आर्य समाज के प्राचीन पत्र—

पं. तुलसीराम स्वामी का वेदप्रकाश

(श्री प्रो० भवानी लाल जी भारतीय एम० ए० (R.E.S.)
राजकीय कालेज, पाली (राजस्थान)

(गतांक से आगे)

समालोचना शीर्षक स्तम्भ के अन्तर्गत इन्द्र जी पुस्तक उपनिषदों की भूमिका की विस्तृत समीक्षा की गई है।

आर्यसमाज के इतिहास के जानकारों को यह विदित ही होगा कि उत्तर प्रदेश के आर्य सामाजिक जगत् में एक बार वर्णव्यवस्था सम्बन्धी सिद्धान्त को लेकर आर्य-पुरुषों में एक दुखद विवाद छिड़ गया था। एक पक्ष में छुट्टन लाल स्वामी और अखिलानन्द शर्मा जैसे व्यक्ति थे जो गुण, कर्म के अनुसार वर्णव्यवस्था मानने पर भी 'स्वभाव शब्द पर जोर देकर कभी २ जन्मना वर्णव्यवस्था को स्वीकार कर जाते थे। इसके विपरीत अन्य लोग वर्णव्यवस्था का केवल गुण कर्म पर ही आधारित मानते थे। आगे चल कर यही विवाद ब्राह्मण-अब्राह्मण अथवा ब्राह्मण पार्टी तथा बाबू पार्टी के दुखद रूप में परिवर्तित हो गया। ब्राह्मण पार्टी के समर्थक गुरुकुल कांगड़ी के विरोधी थे तथा ज्वालापुर महाविद्यालय को अपना आदर्श मानते थे। महात्मा मुन्शीराम की तेजस्विता, वर्चस्वी स्वभाव एवं उनके उद्दीप्तमान सूर्य के समान प्रताप से भी कई लोग जलते थे। वेद प्रकाश की भी यही नीति थी। उसे इस बात का बड़ा मलाल था कि महात्मा मुन्शीराम गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य हैं। इसी प्रकार मुन्शी नारायण प्रसाद (महात्मा नारायण स्वामी) का वृन्दावन गुरुकुल का अधिष्ठाता बनना भी कनिष्ठ स्वामी को नहीं रुचा। अतः वे यत्र तत्र वेदप्रकाश के अंकों में नारायण स्वामी जी के विरुद्ध लिखते रहते थे। मुन्शी नारायण प्रसाद जी से वेद प्रकाश को एक यह भी शिकायत है कि वे वैदिक मुनि हरिप्रसाद जी के मतानुयायी हैं जो यह मानते हैं कि वेदों में पुनरुक्ति है तथा वेदों में अनित्य इतिहास है। हमें यह बात चिन्त्य प्रतीत होती है कि नारायण स्वामी जी का मत कभी स्वामी हरिप्रसाद जी वैदिक मुनि के मत के अनुकूल रहा होगा। यह निश्चित है कि वैदिक मुनि जी आर्य समाज के सिद्धान्तों से वैभिन्न रखते थे। वेद प्रकाश के सम्पादक को यह भी शिकायत है कि वैदिक मुनि का लिखा हुआ वेद भाष्य उत्तर प्रदेश की सभा ने क्यों खरीदा?

मई १९१६ के अंक में एक नवीन लेख छापना आरम्भ हुआ है—पुराण परिचय। यह कालुराम शास्त्री द्वारा लिखित 'पुराणार्क लंका-भासमार्जन, का उत्तर है। इसके लेखक छुट्टनलाल स्वामी ही हैं। जून मास के अंक में लार्ड किचनर की मृत्यु का समाचार छापा है। इस पर सम्पादक की प्रतिक्रिया दर्शनीय है—'तीर सा लगा, शोक छा गया, कार्यालय बन्द किया गया।' राजभक्त छुट्टनलाल जी से और आशा भी क्या की जा सकती थी। इसी अंक में पं भीमसेन शर्मा और आर्यसमाज शीर्षक एक पठनीय है जिसमें शर्मा जी की आर्य-समाज और स्वामी दयानन्द के कृतघ्नता की आलोचना की गई है। समाचारों के अन्तर्गत गुरुकुल कांगड़ी में हुए महा-महोपाध्याय पं० गिरिधर शर्मा तथा इन्द्र जी के बीच शास्त्रार्थ का विवरण छापा है। यह प्रसिद्ध शास्त्रार्थ इन्द्र जी ने सनातन धर्म के दिग्गज विद्वान् से उस समय किया था जब वे कांगड़ी गुरुकुल से स्नातक बन कर निकले ही थे। वेदप्रकाश को यह शिकायत है कि गिरिधर शर्मा के विरुद्ध एक नये अपरिपक्व बुद्धि के स्नातक इन्द्र को क्यों मुन्शीराम जी ने खड़ा किया? यदि उन्हें शास्त्रार्थ करवाना ही था तो पं० आर्यमुनि रुद्रदत्त सम्पादकाचार्य या नन्द-किशोर देव शर्मा जैसे किसी पंडित को महामहोपाध्याय जी के सामने खड़ा करते। पं० भोजदत्त शर्मा के स्वर्गवास (२६-५-१६) का समाचार भी इसी अंक में छपा है! पं० भोजदत्त शर्मा आर्य मुसाफिर इस्लाम धर्म के जबरदस्त समीक्षक और शास्त्रार्थी विद्वान थे। उनके विषय के वेदप्रकाश सम्पादक का यह संस्मरण अत्यन्त मार्मिक है—'मैंने कहा पण्डित जी, आप बड़ी कठिन समालोचना इस्लाम की करते हैं, तो कुछ नर्मी कर दीजिए। शत्रुदल छुरी न चला दे। तब उत्तर दिया—तुम बकरी भेडों पर हाथ साफ करते हो, गीदड़ों का शिकार खेलते हो, पौराणिकों का खंडन करते हो, मैं तो बबर का शिकार करता हूं जिस में जान जाने का अंदेशा होता ही है।' समाचारों के के अन्तर्गत निम्न समाचार महत्व पूर्ण है—सिकन्दरा बाद गुरुकुल के संचालक पं. मुरारिलाल शर्मा के सुपुत्र पं. देवेन्द्र नाथ शास्त्री सांख्य तीर्थ के विवाह का समाचार जो अजमेर में सम्पन्न हुआ। अमेठी के राजा साहब ने अपने राज कुमारों के यज्ञोपवीत संस्कार में वेश्यानृत नहीं कराया इस पर हर्ष व्यक्त किया गया है।

जुलाई मास अंक में स्वामी दयानन्द कृत ऋग्वेद भाष्य (मंडल ७, सूक्त ६१, मंत्र २) के आगे के २५ मंत्रों का तुलसी राम स्वामी कृत भाष्य छापा हैं। यह स्वामी जी की प्रथम पुण्यतिथि के उपलक्ष में छापा है, ऐसा कहा जा सकता है क्योंकि उनकी मृत्यु आषाढ़ शु. ५. सं. १९७२ को हुई थी। इस के अतिरिक्त अन्य कोई लेख इस अंक में स्थान नहीं प्राप्त कर सका है।

आर्यसमाज (सैक्टर ८) चण्डीगढ़

संस्कृत का प्रचार न हुआ तो वेद का प्रचार धरा रह जायेगा।

हायर संकण्डरी के ग्रुप में संस्कृत को स्थान देना चाहिये।

चण्डीगढ़ बलिदान दिवस में श्रद्धांजलियां।

आज दिनांक २६ १२-६५ को आर्यसमाज सैक्टर ८ चण्डीगढ़ में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के प्रधान पद से श्रद्धांजली भेंट करते हुए डा० तुलसीदास रिटायर्ड डायरैक्टर मैडीकल एण्ड रिसर्च ने जनता और सरकार से अपील करते हुए कहा कि अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द के महान जीवन से शिक्षा लेते हमें संस्कृत को जीवित जागृत करने का प्रयत्न करे अन्यथा वेद का प्रचार धरये रह जायेगा। आपने कहा कि सरकार को तीन भाषाई फारमूले म तीसरी भाषा संस्कृत होना चाहि जिस के बिना भारत और भारतीय संस्कृतिका कोई महत्व नहीं रहता। दूसरे हायर सैकण्डरी में साईन्सके ग्रुप में संस्कृत को स्थान मिलना चाहिये। अन्यथा संस्कृत का प्रसार कदापि नहीं होगा। और सीमित होती जाकर समाप्त हो जायेगी। न

क्योंकि आज के युग में कोई भी विद्यार्थी विज्ञान से वंचित नहीं रहना चाहता, तो फिर संस्कृत इस के बदले में नहीं अपितु साथ होनी चाहिये ताकि देश के बालक और बालिकायें दोनों विद्याओं में सम्पन्न हो सकें।

आशुराम आर्य पुरोहित

गुरुकुल कांगड़ी क. एक घटना

पं. मनसाराम जी शर्मा (अफ्रीकावाले)

लार्ड चेम्सफोर्ड (उस समय के वॉयसराय), लेडी चेम्स फोर्ड, सर जेम्स मेस्टन (यू० पी० के गवर्नर) और अन्य बहुत से छुट भइये अफसर हरिद्वार से सजे सजाये हाथियों (राजसी महन्तों के) पर सवार होकर गुरुकुल भूमि में पहुँचे। वहां सब का हार्दिक स्वागत किया गया। संस्था के सभी मुख्य-मुख्य भाग उन्होंने पैदल घूम कर देखे। अन्त में उन्हें मुख्य भूमि के महाविद्यालय भवन के सामने सेमल के पेड़ के चबूतरे के नीचे संस्कृत में अभिनन्दन पत्र पेश किया गया। उत्तर में आप ने भी गुरुकुल के आदर्शों की और महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द जी) के व्यक्तित्व की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की।

भोजन भंडार के चबूतरे के पास पहुँच कर वायसराय और उनकी पत्नी को सूचना दी गयी कि इस से आगे जूता नहीं जा सकता और साथ ही प्रार्थना की गयी कि भण्डार देखने की कृपा कीजिये। क्षणभर के लिए तो वे दुविधा में पड़ गये कि किन शब्दों में इन्कार करें क्योंकि नंगे पांव तो चलना इनके लिए असम्भव ही था। इतने में महात्मा जी के सेवक ने, जिसका नाम चिन्ता (सिंह) था, कपड़े के बहुत से जूते लाकर दर्शकों के कदमों के आगे रख दिये और वायसराय से प्रार्थना की गयी कि आप चमड़े के जूते उतार कर कपड़े के जूते पहनने की अनुमति दीजिये। इस पर वायसराय और उनकी पत्नी ने अनुमति दे दी और उन्हीं के सेवकों ने वायसराय और उनकी पार्टी के पैरों में से चमड़े के जूते उतार कर कपड़े के जूते था, वायसराय और उनकी पत्नी हंसते और कपड़े के जूतों का आनन्द लेते रहे।

भारत पाक युद्ध काल में

केन्द्रीय आर्यसभा, अमृतसर का सेवा-विवरण

(धर्मपाल बी०ए० उपप्रधान केन्द्रीय आर्य सभा अमृतसर)

भारत और पाकिस्तान के मध्य हुए युद्ध के दिनों में केन्द्रीय आर्य सभा अमृतसर तथा अन्य स्थानीय आर्यसमाजों की ओर से राष्ट्र-सेवा का महान महत्वपूर्ण कार्य किया गया जिस से उस भयानक संकट-काल में इस सीमावर्ती नगर की जनता का साहस तथा मनोबल सुदृढ़ रहा। अपने सैनिक जवानों की सेवा के लिये केन्द्रीय आर्य सभा ने चाय-स्टाल खोल कर मुफ्त चाय तथा मिठाई का वितरण किया। जब अधिकारियों द्वारा यह संकेत प्राप्त हुआ कि अब चाय-स्टाल की आवश्यकता नहीं रही, तो इस फंड की शेष रकम ६३५) ४० केन्द्रीय आर्य सभा की ओर से डिप्टी कमिश्नर अमृतसर को राष्ट्र-रक्षा कोष के लिये दे दी गई। इस के अतिरिक्त ११००) रुपया की थैली राष्ट्र-रक्षा कोष के लिये केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री गुलजारी लाल जी नन्दा को उनके अमृतसर आगमन के अवसर पर भेंट की गई। आर्यसमाज श्रद्धानन्द बाजार की ओर से भी रक्षा कोष के लिये ११००) रुपया की थैली प्रधानमन्त्री श्री लाल बहादुर जी शास्त्री को भेंट दी गई।

इस के अतिरिक्त खेमकरण तथा अन्य स्थानों से विस्थापित होकर अमृतसर में शरणागत हुए देश-बन्धुओं की सेवा और सहायता का श्लाघनीय कार्य भी सभा की ओर से किया गया। सर्दी से ठिठुरते असहाय लोगों में ५०४ रजाइयें, २४ कम्बल, ३६ ऊनी स्वैटर, १० मन के लगभग कपड़े, ३ मन बर्तन तथा सैंकड़ों धार्मिक पुस्तकें वितरण की गईं। इस क्षेत्र में सेवा-कार्य अभी भी चालू है और सभा के अधिकारी असहाय लोगों के आवास स्थल पर स्वयं पहुँच कर उनकी आवश्यकतानुसार सेवा और सहायता कर रहे हैं।

करनाल में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

२४-१२-६५ सायंकाल ५ बजे से ८ बजे तक श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक दैनिक प्रताप की प्रधानता में होली मुहल्ला आर्य समाज में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर प्रो० राम प्रकाश पी० एच० डी तथा प्रो० योगेन्द्र सिंह यादव ने स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डाला।

मन्त्री
आर्य केन्द्रिय सभा
करनाल

दयानन्द-वचनामृत

"मनुष्य में मनुष्यपन यही है कि झूठे व्यवहारों को सर्वथा छोड़कर सदा सच्चे व्यवहारों को ग्रहण करे। सदा सत्य ही की जय होती है। झूठ का अन्त में पराजय ही हुआ करता है। ऋषि-जन सत्य ही पर चलकर सत्य के निधान भगवान को प्राप्त करते हैं। इस कारण सब मनुष्यों को सत्य पर अवश्य मेव आरूढ़ होना चाहिए। यह निश्चित है कि सत्य से बढ़कर धर्म का अंग दूसरा नहीं है। वे जन धन्य हैं जो अपने व्यवहारों को सत्य के अनुसार ही चलाते हैं।

(स्व० स्वामी सत्यानन्द जी)

आर्यसमाज टिटौली

वार्षिकोत्सव दिनांक ८-९-१० मार्च का है। आर्यजगत में जो तिथि २५-२६-२७ फरवरी दी गई है। हम इन से सहमत नहीं हैं। अतः सभा का कोई व्यक्ति इन तिथियों पर आने का कष्ट न करें। इस अवसर पर पं० ओ३म् प्रकाश जी महोपदेशक को अवश्य भेजें।

निवेदक :—
मन्त्री आर्यसमाज
टिटौली

आल इण्डिया दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर

"डा० शिवराम गुप्ता, रणवीर सिंह पुरा निवासी की नियुक्ति आल इंडिया दयानन्द साल्वेशन मिशन, होश्यारपुर ने जम्मू व काश्मीर के युद्ध पीड़ित लोगों में प्रचारार्थ तथा बिना मूल्य औषधियां बांटने के लिये १-१०-१९६५ से ३०-११-१९६५ तक दो माह के लिये की थी परन्तु वर्तमान परिस्थितियों को सम्मुख रखते हुए इन के सेवा कालमें दो माह और वृद्धि कर दी गई है।"

शुभ चिन्तक
राम दास

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज लंडवा की यह विशेष सभा दि० १९-१२-६५ को श्री पं. रामचन्द्र जी तिवारी प्रधान आर्यसमाज लंडवा के असामयिक देहावसान पर हार्दिक शोक प्रकट करती है तथा ईश्वर से प्रार्थना करती है कि उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें। साथ ही उनके शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें यह सभा उनके परिवार के साथ संवेदना प्रकट करती है।

—कैलाश चन्द्र पालीवाल
प्रचार मन्त्री आर्यसमाज लंडवा

मुद्रक व प्रकाशक श्री ज्योतिराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर में मुद्रित तथा भवन, कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर



टैलीफोन नं० २०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P.

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक २) २६ पौष २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१—९ जनवरी १९६६ (तार 'प्रादेशिक' जालन्ध

वेद सूक्तयः

वयं सख्याय स्वस्तये

हम अपने सुख कल्याणों के लिए, हे परमेश्वर ! आपको अपना परम सखा बनाते हैं । उसी भगवान को ही परम सखा बना लेने पर मानव को हर प्रकार की सुख-शान्ति मिलती है, जीवन सुखमय बन जाता है । जिसका भगवान् परममित्र बन जाए उसे क्या चिंता ?

हुवेम वाज सातये

हे पितः ! हम आपको पुकारते हैं, प्रार्थना करते हैं, इस लिए कि हमें आपकी कृपा से ज्ञान, बल प्राप्त हो । अन्न आदि भोग्य पदार्थ मिलें । इनके आप ही तो भण्डार दाता हैं। फिर आपके भंडार के द्वार छोड़कर भला और किसके द्वार पर जाएं ?

न कि इन्द्र त्वदुत्तरम्

हे इन्द्र प्रभो ! आपसे बढ़-कर कोई भी उत्तर उत्तम या ऊंचा नहीं है । आप ही सबसे उत्तम ऊंचे हैं । आपकी भक्ति से ही हमें जीवन में हर प्रकार की सुख सुविधा की सामग्री मिलती है । आप महान् बलवान् हो ।

सा म वे द से

वे दा मृ त

शत्रुनाशक की पूजा करो

जो राजा चर्षणीनां याता रथेभिरध्रिगुः ।
विश्वासां तरुता पृतनानां ज्येष्ठयो वृत्रहागृणे ॥

साम० अ० १ खण्ड ४ मन्त्र १

अर्थः—(यः) जो (राजा) स्वामी शासक, सब का सेनानायक है, जो (चर्षणीनाम) सारे लोगों का, जनता का (याता) पहुँचने वाला है (रथेभिः) रथादि अपनी शक्ति से सारी प्रजा तक पहुँच कर उसकी रक्षा करता है । और जो (अध्रिगुः) संयमी तथा ऊंचे आचारवाला है । वह इन (विश्वासां) सारे (पृतनानां) शत्रुओं सेना का (तरुता) पार करने वाला है । वह (यः) जो यह (वृत्रहा) वृत्रों को राक्षसों व शत्रुओं को मारने वाला है—उस वीर नायक को (ज्येष्ठं) महान् को (गृणे) मैं पूजता हूं । हम सारे उस का मान-सम्मान करते हैं ।

भाव :—हमें क्या और किस बात की चिन्ता है ? हो भी क्यों ? जबकि हमारा नेता राजा व सेनापति इतना महान् तथा वीर है । वह सारी प्रजा का सच्चा शासक नेता है । उनके सुख दुःख में सदा साथ रहता है । उसका सैनिक बल, नाना प्रकार की रथ शस्त्र अस्त्रादि की शक्ति सारी प्रजा तक पहुंच कर उसको सब विपत्तियों से बचाती रहती है । वह सेनानायक सदाचारी है । उसका अपने पर संयम है । सारी जनता उसके लिए सन्तान के समान है । राजा सब का पिता होता है । वह राक्षसों का नाश करने वाला है । शत्रुओं की सारी सेनाओं के मुंह मोड़ देता है । हमारे इस वीर नायक के सामने कोई भी शत्रु टिक नहीं सकता है । सर्व-विजयी है । ऐसे सदाचारी, बलवान वज्र-धारी तथा महान् राष्ट्र के नायक को पाकर हम प्रसन्न हैं । उसकी बार २ प्रशंसा करते हैं । उसकी वीरता के गीत गाते हैं । ऐसे वीर नेता पर हम सब को मान है—सं०

ऋषि दर्शन

विद्वांसः क्रान्तदर्शनाः

विद्वान या ज्ञानी वे हैं जो ऊंचे दर्शन वाले होते हैं । जो किसी तत्व के अन्दर पहुंच कर उसकी वास्तविकता को जानते हैं । साधारण लोग तो केवल बाहर की दृष्टि से ही देखते हैं—पर विद्वान लोग अन्दर के तत्व तक पहुंच जाते हैं ।

वयं सर्वदोपास्महे

हे प्रभु जी ! हम सब सदा आपकी उपासना करने वाले बनें । आपके पास बैठें आपका भजन भक्ति किया करें । आपके स्थान पर हम और किसी और की पूजा भक्ति न किया करें । आपके भक्त बनकर आपकी उपासना किया करें ।

सर्वानन्द वर्धकम्

वह भगवान् सब प्रकार के सुख आनन्द का बढ़ाने वाला है । उसी की कृपा एवं आशीर्वाद से जीवन के कष्ट दूर होकर सुख की प्राप्ति होती है । परमेश्वर स्वयं सुख रूप तथा आनन्द-घन है । उसी की उपासना से जीवन में आनन्द के अमृत का पान किया जा सकता है ।

भा ष्य भू मि का से

(गतांक से आगे)

बाकी सब काम करो लेकिन जब कोई काम न हो तो सत्संग में आने की भी कोशिश करनी चाहिए। मेरे एक मित्र थे वह प्रायः दिन को तो मेरे पास आते थे लेकिन रात को कथा में नहीं आते थे। मैंने एक दिन उन से कथा में न आने कारण पूछा तो कहने लगे—'आप अपनी कथा में ईमानदारी और सच बोलने की बातें करते हैं। यदि मैं तुम्हारे उपदेश पर चलूं तो मेरा कारोबार ही चौपट हो जाए। इसी लिए मैं जान-बूझकर कथा में नहीं आता। इसी लिए मैं कहा करता हूं कि जो लोग सत्संग में नहीं आते उनके बारे में जरूर दाल में काला है। गृहमन्त्री श्री नन्दा भ्रष्टाचार को खत्म करना चाहते हैं। मेरा तो उनसे सुझाव है कि नन्दा जी! आप स्वयं आर्यसमाज के सत्संग में आया करो और देखा करो कि कौन लोग सत्संग में आते हैं और कौन नहीं। जो आप उन्हें ईमानदार समझने में कोई गलती न होगी। जैसी संगति वैसे विचार। बरसात का एक जल बिन्दु सीप के मुंह में जाए तो मोती बन जाता है और सांप के मुंह में जाए तो विष। स्वामी दयानन्द ने 'सत्यार्थ प्रकाश' में बार-बार कहा कि श्रेष्ठ लोगों की संगत में बैठो, अच्छे ग्रन्थ पढ़ो और सुनो। हमारे पूर्वज स्वाध्याय किया करते थे लेकिन अब बहुत कम लोग स्वाध्याय करते हैं। ऋषियों ने लिखा है कि प्रतिदिन नियम पूर्वक स्वाध्याय एक बहुत बड़ा पुण्य है।

महात्मा हंसराज जीने अपना समचा जीवन दयानन्द कालज को अर्पित कर रखा था। एक समय भाईयों से उनका कुछ मन-मुटाव हो गया। कोई धन उन्होंने जोड़ा नहीं था। एक दिन ऐसा आया कि उन के पास सिर्फ छह आने के थे। उन्होंने लाहौर में शालमी

राष्ट्र-भक्ति और प्रभु-भक्ति-७

(श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की अमृतभरी कथा)



दरवाजे के बाहर से चने भुना लिए और एकाध दिन उन से गजारा किया। उन्होंने दिनों में महात्मा हंसराज जी की कुछ लोग तीव्र आलोचना भी करने लगे थे। मैंने एक दिन जब उन से इस आलोचना का उल्लेख किया तो कहने लगे—'यहां तो ऐसा ही है। रोटी घर से खाओ, गालियां बाहिर से और काम करो आर्य समाज का।" एक दिन महात्मा जी बहुत दुःखी थे, इर्द-गिर्द के वातावरण से अत्यन्त परेशान। मुझे कहने लगे—'रात भर मैं बहुत परेशान रहा। नींद भी नहीं आई। अजीब तरह की बेचैनी थी। सोच रहा था कि मैं सुख के लिए समाज में आया था, यह क्या हुआ। इसी परेशानी में मैं अपनी अलमारी की ओर बढ़ा और अचानक मेरा हाथ भगवदगीता की ओर बढ़ गया। मैंने पुस्तक जो खोली तो सामने श्लोक आया जिसका अर्थ है—हे मनुष्य! तेरा कर्म करने का अधिकार है, फल की इच्छा का नहीं। फल को तो भगवान पर छोड़ दे। महात्मा जी ने मुझे बताया कि इस श्लोक को पढ़ कर मेरा मन शांत हो गया। स्वाध्याय ने मेरा मार्गदर्शन किया।

विचार-शक्ति बड़ी प्रबल होती है, एटम बम और हाईड्रोजन बम से भी प्रबल। दुनिया की बागडोर ही विचार के हाथ में होती है। जैसा विचार व्याप्त होगा, वैसी ही दुनिया होगी। आज कल रुपए को ही सब कुछ समझा जाता है। कहा जाता है, रुपए के बिना दुनिया नहीं। दुकानदार, बाबू जी, ठेकेदार, सभी रुपया कमाते हैं। रुपए के लिए ही ब्लैक मार्कीट करते हैं। रुपया कमाने की मनाही नहीं। लेकिन धन सब कुछ हो, यह नहीं। धन केवल एक साधन है, मानव के भौतिक सुख का। लेकिन आज धन को सब कुछ समझा जाता है। यह विचार फैल गया है कि जितना धन, उतना सुख। धन के लिए दौड़ धूप होती रहती है।

चारों वेदों में कहीं भी धन की निन्दा नहीं। क्यों नहीं निन्दा? धन में बुराई नहीं, बनियों ने इसे बदनाम किया। साधु लोग बम्बई जाकर बड़े-बड़े सेठों के पास ठहरते हैं। सेठ यह समझते हैं कि धन ही सब कुछ है। धन को बड़ाई का कारण समझते हैं। तात्पर्य कि धन के विचार ने बुद्धि खराब कर दी।

सत्य के मैंने छह आधार बताए थे-सत् आचार, सत् विचार, सत् उच्चार, सत् व्यवहार, सत्य आहार, सत् आधार। सब से पहले सत् आचार है। जिसका चरित्र पवित्र नहीं, उसकी दो कौड़ी कीमत नहीं। आचरण की सर्वाधिक महत्ता है। जिसने अपने मन को पवित्र नहीं बनाया, कभी शांति नहीं पा सकता। मन से ही विचार उत्पन्न होते हैं। कितने ही वेद पढ़ें, उपनिषद पढ़ें मन में खोट है, आचार दूषित है तो मन को कभी शांति नहीं मिल सकती। सदाचार के लम्बे चौड़े अर्थ हैं। मैं विश्वासघात करता हूँ तो सदाचार से नीचे गिरता हूं। मेरे पास अन्न हो और मैं भूखे को भोजन नहीं खिलाता तो सदाचारी नहीं कहला सकता। मुझमें बल है, और किसी कमजोर की रक्षा नहीं करता तो सदाचार से नीचे गिरता हूँ।

फिर सत उच्चार आता है। सत आचार कहता है, सत्य बोल, नीचा बोल, मीठा बोल। ऐसा सत्य न बोल जो कड़वा हो। ऐसे सत्य का क्या [लाभ] जो नगर को ही आग लगा दे। इसलिए मीठा सत्य बोल। मानव की जिह्वा में लक्ष्मी बसती है। मीठा सत्य बोलने वाले की जिह्वा में ही लक्ष्मी वास करती है। यह जिह्वा ही शत्रु बनाती है। रोजाना देखने में आता है, मीठा बोलने वाला दुकानदार ज्यादा कमाता है। जो दुकानदार कड़वा बोलता है, उस का भट्ठा बैठता है। रे मानव, तेरी जिह्वा इतनी कोमल है, तू कठोर क्यों बोलता है? बरेली में एक विवाहित युवती मेरे पास आई और कहने लगी—सासू नानू की बहुत सेवा करती हूं, लेकिन फिर भी कद्र नहीं होती। उनका बेटा भी मुझ से विरक्त हो रहा है। कोई जंत्र-मंत्र बता दें जिस से सभी काबू में हो जाएं। भला आर्य समाज के पास जन्त्र-मंत्र कहां। मैंने कहा, बेटी आर्य समाज के साधु तो खुले आम मन्त्र देंगे। शायद बेचारी बहुत दुखिया थी। मैंने पूछा, तुम अपने सासू-नानू की कैसी सेवा करती हो? जवाब मिला उनको अच्छे-अच्छे पकवान बनाकर खिलाती हूं। खीर में बादाम, केसर, पिस्ता मिला कर खिलाती हूं। मैंने कहा, फिर वे तुम से नाराज क्यों हैं। वह बोली महाराज कभी कभी रूखा बोल देती हूं? मैंने कहा, फिर हो गया बेड़ा पार। अरी, तू सेवा तो करती है, खीर में मेवे डाल कर भी खिलाती है, तेरी जुबान की कड़वाहट सब पर पानी फेर देती है। कड़वा न बोल, सेवा चाहे थोड़ी कर।

खीरा सिर से काटिए और
मलियत नोन लगाय,
रहिमन कड़वे मुख को चहियत
यही सजाय।

खीरे की कड़वाहट दूर करने के लिए उसका सिर काट देते हैं। अरे मनुष्य! तू भी अपनी जिह्वा का कड़वापन निकाल दे और मधुर भाषी बन। इस से तुझे भी और दूसरों को भी सुख मिलेगा।

(क्रमशः)

आर्य प्रादेशिक सभा के समाचार



आर्य भाईयों को यह जानकर विशेष प्रसन्नता होगी कि आर्य-प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रसिद्ध और सुयोग्य गायक श्री महाशय मेलाराम जी ने जालन्धर के सुप्रसिद्ध हरिवल्लभ संगीत मेला में जहां कि देशभर के प्रसिद्ध संगीताचार्य एकत्रित हुए थे २६ दिसम्बर से २९ दिसम्बर तक विशेष कार्यक्रमों में भाग लिया। उन्होंने भैरव भीमपलासी आसावरी अलीया-विलावल आदि रागों को गाकर राग जानने वाले कलाकारों से सम्मान प्राप्त किया और सभा के यश को बढ़ाया।

आशा है कि सभा के दूसरे भजनोपदेशक भी राग विद्या में विशेष ज्ञान प्राप्त करके आर्यसमाज की इस दिशा में उन्नति के सहायक होंगे और श्री मेलराम जी के इस कार्य से मार्ग प्राप्त करेंगे।

संकल्प-पत्र

दो एक वर्ष हुए आर्य समाज के कुछ गण्य-मान्य सज्जनों ने स्वयं अथवा सभा के कार्यकर्ताओं की प्रेरणा से संकल्प पत्र भरे थे, अर्थात् इतना चन्दा हम प्रति वर्ष सभा की सहायता को देंगे। सभा के ही कर्मचारियों की दुर्बलता से संकल्प पत्रों के अनुसार धन की वसूली नियमित रूपसे न हो सकी। इस वर्ष सभा के कार्यालय ने उन सब महानुभावों की सेवा में जिन्होंने संकल्प-पत्र भरे थे प्रार्थना की है कि अपनी प्रतिज्ञा की हुई धन-राशि सभा को देने की कृपा करें।

कुछ सज्जनों ने उत्तर भेजे भी हैं। इस सम्बन्ध में निवेदन यह है कि यदि कोई महानुभाव संकल्प पत्र समाप्त करना चाहें तो स्पष्ट कार्यालय को लिख दें पर संकल्प पत्र रहते हुए अपनी प्रतिज्ञा की हुई धन-राशि उन्हें सभा को देनी ही चाहिए। यह धन एक धार्मिक ऋण है।

यदि किसी सज्जन ने सीधा या सभा के किसी कार्यकर्ता द्वारा संकल्प पत्र का धन सभा को भेजा हो और उन्हें रसीद प्राप्त न हुई हो तो वे अवश्य सभा के कार्यालय को लिखें।

फिरोजपुर आर्य अनाथालय

आर्य समाज के जीवन में फिरोजपुर के आर्य अनाथालय का विशेष महत्व है। ऋषिवर दयानन्द ने अपने करकमलों से इसकी स्थापना की थी। आर्यसमाज की यह एक महान संस्था है, इसका विवरण सभा की वार्षिक रिपोर्ट में प्रकाशित होगा।

यहां इस अनाथालय की चर्चा एक विशेष प्रयोजन से की जा रही है। दीवान जयकृष्ण जी नन्दा, महात्मा हंसराज जी के अनुरूप दयानन्द अपनी सरकारी नौकरी से रिटायर होकर इस अनाथालय की अवैतनिक सेवा में लग गए थे। आज से लगभग १२-१३ वर्ष पूर्व जब उन्होंने कार्य भार सम्भाला था उनका हाथ बंटाने के लिए उनकी धर्मपत्नी महात्मा हंसराज जी की सुपुत्री, स्वनामधन्य देवी, चन्दन देवी जी उनके साथ थीं। इस अवैतनिक सेवाकाल या ठीक कहा जाय तो तपस्याकाल में पूज्य चन्दन देवी जी का स्वर्गवास हो गया। पर श्री जय कृष्ण जी नन्दा एक साधक के समान अपने कार्य में लगे रहे। इस वर्ष प्रायः ७४ वर्ष की आयु होने पर मान्य नन्दा जी अध्यात्म साधना के लिए पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी के तपोवन में एक डेढ़ वर्ष के लिए जा रहे हैं।

इस १२-१३ वर्ष के समय में श्री नन्दा जी ने इस संस्था को काया कल्प कर दिया है। अपने सुयोग्य सहायक श्री प्रतापचन्द जी मेहता तथा उनकी धर्म-प्राण धर्मपत्नी की सहायता से अपनी इस संस्था का जो सुन्दर रूप बना दिया है वह जाकर देखने की वस्तु है, कहने सुनने की नहीं। इस आश्रम के बच्चे-बच्चियां किसी भी रूप में अनाथ नहीं कहे जा सकते। उनका लालन-पालन साधारण गृहस्थों के बच्चों के समान हो रहा है। वे हृष्ट-पुष्ट और सुखी है।

सबसे विशेष बात जो श्री नन्दा जी की तपस्या और अध्यवसाय ने की है वह है इस आश्रम की एक धन हीन संस्था के रूप से बदलकर एक महान और समृद्ध संस्था बना देना। आज इस संस्था में स्थायी कोष की ढाई-तीन लाख के लगभग धन है। इस राशि का एक-एक रुपया नन्दा जी के द्वारा संगृहीत है। इस राशि से भी अमूल्य वह सहयोग है जो श्री नन्दा जी ने फिरोजपुर की प्रत्येक आर्यसमाज और आर्य भाई से प्राप्त किया है। उनके स्वभाव की सरलता, धैर्य, परिश्रम-प्रेम, कर्तव्य निष्ठा और सूझ-बूझ ने फिरोजपुर अनाथालय को एक आदर्श संस्था का रूप दिया हुआ है।

सभा को तथा आर्य समाज को पूर्ण आशा है कि श्री नन्दा जी अपनी साल डेढ़ साल की अध्यात्म - साधना पूर्ण कर फिर समाज-सेवा के कार्य को संभालेंगे।

हम इस अंक में श्री नन्दा जी का फोटो भी देना चाहते थे पर उन्होंने हमारी बार-बार प्रार्थना पर भी अपना फोटो देना स्वीकार न किया। वे ऐसी पब्लिसिटी से बचना चाहते हैं।

सभा का इस वर्ष का लेखा-जोखा

सभा का वार्षिक विवरण प्रकाशित हो कर समाजों के प्रतिनिधियों के हाथ समय पर पहुँच जाएगा। पर सभा केवल प्रतिनिधियों की ही नहीं, प्रत्येक उस व्यक्ति की है जो अपने को ऋषि दयानन्द का अनुयायी कहता है। इसलिए आम लोगों को भी सभा के कार्य का परिचय हो इस दृष्टि से संक्षिप्त लेखा-जोखा 'आर्यजगत्' के इन अंकों से दिया जा रहा है।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा बाहर से देखने वालों के लिए तो एक बड़ी शक्तिशाली और समृद्ध संस्था है। इसे कालिज विभाग की आर्यसमाज कहा जाता है और समझा जाता है कि इतने कालिज धन-धान्य सम्पन्न कालिज इसके अधीन हैं अतः इसके पास भी खूब सम्पत्ति होनी चाहिए। कुछ अंश तक यह बात ठीक भी है। सिद्धान्त रूप से इतनी बड़ी २ संस्थाएं इसके आधीन हैं पर प्रबन्ध और आर्थिक दृष्टि से संस्थाओं का प्रबन्ध और कोष अलग है। सभा का कोष अलग है।

सभा का लगभग ५०-६० हजार वर्ष का खर्च है। यदि समाजें नियमित रूप से अपना भाग सभा को देती जाएं तो धन संग्रह में कठिनाई नहीं होती पर व्यवहार में ऐसा होता नहीं। प्रत्येक समाज को दशांश, उत्सव व कथा इत्यादि पर एकत्र धन का कुछ भाग तथा ऋषिबोध तथा ऋषि निर्वाण के उत्सवों पर एकत्र धन सभा को भेजना चाहिए। पर वास्तविक स्थिति यह है कि इस वर्ष निम्न संख्या में समाजों ने अपना भाग दिया :—

(शेष पृष्ठ ६ पर)

पापाचरण क्यों ?

डा० ओम प्रकाश जी अग्रवाल बी.ए.एम.एस.



आज जिस तरफ देखा जाय पाप आचार ही नजर आता है। खाद्य वस्तुओं में मिलावट पाई जाती है। राज्य कर्मचारी घूंस लेता है। मन्दिरों में भगवान के नाम पर धोखा दिया जाता है। कहा जाता है कि प्रतिमा पूजन से तुम्हारे पास छूट जावेगें। मनुष्य वैदिक शिक्षा को भूल गया है, कृत्रिम सौंदर्य में फसा हुआ है, जिसके बनाने में उसे खर्च ज्यादा करना पड़ता, है उतनी आर्य अगर नहीं होती है तो अनाचार पर तुल जाता है। वेद कहता है

'ईशा वास्य मिदृं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ॥

१. इस का अर्थ यह है कि परमात्मा इस विश्व के एक एक कण में व्याप्त है। अतः तू उसके दिये हुए पदार्थों का उपयोग कर अन्य किसी के धन की लालच मत कर।

आज हम पापाचार करते समय गवर्नमेंट का भय करते हैं पर उसका समाधान भी ऐसे कर लेते हैं कि या तो रिश्वत देकर छूट जावेंगे, नहीं छूटे तो अदालत में झूठे साक्षी और वकील की मदद से तो अवश्य ही निवृत्ति हो जायेगी। इसलिये भाई-भाई, पड़ोसी-पड़ोसी एक दूसरे का कतल करने में जरा भी नहीं डरता, लोग अपनी पत्नियों को मार डालने जिन्दा जला देने से भी नहीं हिचकिचाते।

२. अगर हमने वेदों में पढ़ा होता अथवा सुना होता कि परमात्मा हर जगह व्याप्त है तो हम पापाचार पर उद्यत न होते एक साधु ने अपने दोनों चेलों से कहा लो यह कबूतर निर्जन स्थान में मार लाओ। उन शिष्यों में एक परमात्मा को एकदेशीय मानता था जंगल में जाकर उसने अपनी दृष्टि चारों तरफ दौड़ाई जब उसको कोई मानव न दीखा तो उसने कबूतर को मार दिया। दूसरा साधू का शिष्य जो परमात्मा को सर्वदेशीय मानता था उसने कबूतर न मारा और कहा कि यद्यपि यहां मनुष्य नहीं दीखता तथापि परमात्मा देखता है मैं इसे नहीं मारूंगा। और यही उसने अपने गुरु के पास आकर कह दिया कि गुरू जी परमात्मा तो हर जगह है मुझे कोई स्थान न मिला जहां कोई न देखता हो। मैंने कबूतर नहीं मारा है। साधु ने प्रसन्न होकर वास्तव में तुम्हीं ने परमात्मा का जाना है। परमात्मा को सर्वदेशीय मानने वाला कभी पाप न करेगा। उसकी तो भावना होती है

'अयं निजः परोवेति
गणना लघुचेतसाम् ।
उदार चरितानान्तु
वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

३. मत-मतान्तरों की क्षमावादता, अवतारवाद, पैगम्बरवाद पाप बढ़ाने के कारण हैं। यह सब ईश्वर को एक देशीय मानते हैं। अपने अनुयायियों में विचार फैलाते हैं, पाप करके 'तोबा' करने पर पाप क्षमा हो जाते हैं। अब बताइये कि जब पाप क्षमा हो जाते हैं तो पाप करने में डर क्या, कोई कहता है कि पापों का भार ईसामसीह उठा ले गया। कोई कहता है गंगा स्नान से सहस्त्रों जन्मों के पाप छूट जाते हैं। इस प्रकार इन मत-मतान्तर वालों ने ईश्वर को एक देशी मानकर तथा दुष्कर्मों की बिना दण्ड निवृत्ति बतलाकर पापाचरण का बीज बो दिया।

४. दान की गलत प्रथा भी पाप बढ़ा रही है। आजकी दान प्रथा में तीन दोष हैं। पहला यह कि दान उस मन्दिर में ज्यादा दिया जाता है जहां कि मूर्तियां खूब सजी है चाहे वहां के पुजारी कितने ही आचारहीन क्यों न हो। छोटे मन्दिर में जहां मूर्तियां अच्छी तरह सजी नहीं हैं पर दोनों ही जड़ हैं दोनों ही पत्थर की बनी हैं कोई कमी नहीं। पुजारी भी प्रथम की अपेक्षा चरित्र वान है पर वहां जाकर एक पैसा चढ़ाते हैं। बड़े मन्दिरों में अशर्फियों की बौछारें कर देते हैं। इससे हर एक अपने मन्दिर को बड़ा बनाने और सजावट की कोशिश में लगा रहता है अर्थ लाने के लिए विभिन्न मार्ग अपनाता है। पाप पुण्य का विचार ही नहीं करता। दूसरा दोष कि जहां भीड़ अधिक है वहां दान दिया जाता है। तीसरा दोष जिन मन्दिरों में कुछ करामात दिखाई जाती है। उन्हें दान दिया जाता है। दान सदुपयोग न करने वालों को अधिक दान मिलता है जिस को पाने वाले बड़े २ मन्दिरों के पुजारी तथा साधु हैं। जो उस दान से मादक वस्तुओं को खाते हैं और स्त्रियों को खराब कर उनके बच्चों में पापाचरण का बीज बो देते हैं। शराब और बीड़ी पिलाकर उनकी बुद्धि को भ्रष्ट कर देते हैं। घर से चुरवाकर पैसा मंगाते हैं।

लड़के वाले शादी के समय लड़की वाले से धन अनाप शनाप मांगते हैं अतः जिस दिन से लड़की पैदा होती है। उसी दिन से माता पिता को चिन्ता लगी रहती है कि चाहे भोजन आवे पेट मिले, वस्त्र कठिनाई से उपलब्ध भले ही हों परन्तु लड़की के विवाह हेतु १०००० रु० अवश्य हो जावे इसके माने यह कि अगर किसी के ५ लड़कियां हैं उसे ५०००० की चिंता है। आय कम होने पर वह अनाचार करता है।

ओ ! आर्य बन्धुओं आजपापाचरण बहुत बढ़ रहा है। हम सत्य पर थे पर चीन ने हमको दबाया हम सत्य पर थे पर पाकिस्तान ने हमें हड़पने की कोशिश की। ईसाइयों की संख्या दिन पर दिन बढ़ती जा रही हैं। हम अगर किसी को शुद्ध करें तो उसे रोजगार दिलाने का प्रश्न उठता है। आज हमारे पास कुटीर उद्योग नहीं, हमारे पास चिकित्सालय नहीं इन सबको हमें ही पुरा करना है। आज का बढ़ता पापाचरण केवल आर्यसमाज ही रोक सकता है। अतः हमें पहले से और अधिक संलग्न होकर अपने कार्य में जुटना चाहिए। परमात्मा करे भारत से तथा अन्य स्थानों से पापाचारण दूर हो।

——

आर्य प्रादेशिक सभा के समाचार

(पृष्ठ ६ का शेष

दशांश—२० समाजों का

ऋषि बोध—१६ समाजों का

ऋषि निर्वाण—२३समाजों का

कथा आदि पर—२०-२१ के लगभग

उत्सव आदि पर—२५-३० के लगभग

यह अवस्था तब है जबकि सभा से सम्बद्ध समाजों की संख्या ३०० के लगभग है।

(क्रमशः)

जय किसान जय जवान के ऊपर आचरण कर अपने कर्तव्य का पालन करें

सम्पादकीय—

आर्य जगत

वर्ष २६] रविवार २०२२, ९ जनवरी १९६६ [अंक २

जन्मादिन की बधाई

आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब जालन्धर नगर का साप्ताहिक मुखपत्र आर्यजगत् अपने जीवन के पच्चीस वर्ष समाप्त करके २६वें वर्ष में अपना पग रखता हुआ अपने सारे आर्यसमाजकों पाठकों प्रेमी परिवारों को दिल से बधाई देता है। अपने इस जन्मदिवस पर सबका हार्दिक सम्मान करता हुआ उनका वर्ष के हर प्रकार के सहयोग के लिए आभार प्रकट करता है। आर्यजगत् सभा का अपना पत्र है। सभा आपकी अपनी विशाल संस्था है। इसका सब प्रकार का ध्यान इसके शुभचिंतकों को सदा रहता है। यह देख विचार कर हमें बड़ा आत्म-संतोष है। आर्यसमाज के मान्य तपस्वी सन्त महात्माओं, प्रसिद्ध फिलस्फर डा० दीवानचन्द जी कानपुर जैसे नेताओं, अपने शिक्षा के विशाल संस्थानों के माननीय प्रिंसिपल एवं प्राध्यापक महोदयों, समाजों के प्रेमी अधिकारियों, समाज के विद्वान् लेखकों, कवियों भाईयों व बहिनों, सभा के माननीय सज्जनों, अपने साथी आदरणीय उपदेशक भजनीक महानुभावों की आर्यजगत पर सदा ही कृपा रहती है मान्य ग्राहक सज्जन तो आर्यजगत का परिवार ही हैं। अपने सारे ही हैं। अपने इस सारे ही विशाल परिवार का जितना भी धन्यवाद किया जाये, थोड़ा ही है। हम तो उनके सेवक हैं। सभा के आदर योग्य अधिकारियों के आदेश पर आर्यजगत के सारे कार्यकर्ता सिपाही बनकर अपने कार्य पालन में लगे रहते हैं। जितना श्रेय है सब आर्यजगत के प्रेमी परिवार को है। जितनी कमी त्रुटियां हैं वे हमारी हैं। आज आर्यजगत अपनी आयु के २५ वर्ष समाप्त कर चुका है। नया जन्मदिन मनाते हुए सारे इसके हितचिन्तकों को बधाई देता हुआ उनके प्रति आभार प्रदर्शन करता है। गत वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी उनके पूरे-पूरे सहयोग और कृपा की पूर्ण आशा रखता है। आज और कृपा की पूर्ण आशा रखता है। आज का युग बड़ा ही विषम है। हर बात में कार्य तथा वस्तु में संकट का सामना करना पड़ता है। सभा अपने वेद प्रचारके पावन पथ पर चलती हुई प्रचार व पत्र साहित्य प्रकाशनके द्वारा अपने कार्य में जटी हुई है। धर्म प्रचार का कार्य हो या धार्मिक प्रकाशन हो। इनकी क्या अवस्था है। यह सब जानते हैं। सभाओं के जितने भी पत्र प्रकाशित होते हैं, उनमें वर्ष बाद कितने हजारों का घाटा होता है। यह उनके वार्षिक बजट से पता चल जाता है। पञ्जाब में प्रकाशित होने वाले धार्मिक पत्रों में हजारों का घाटा रहता है। बहुत ही अधिक घाटा आता है। सभाओं की स्थिरनिधि से उनको पूरा किया जाता है। हमारी अवस्था भी ऐसी है। परन्तु अधिक घाटे की नहीं। धार्मिक पत्रों को सरकारी या अन्य ज्ञापन न मिलने के समान हैं। जनता की धार्मिक पत्रों की ओर रुचि जैसी है वह भी सब के सामने है। कई कठिनताएं, समस्याएं हैं जो कार्य वाले ही जानते हैं फिर भी कर्तव्य का पालन किया जा रहा है। आर्यसमाज का यह भी महान मिशन है। हम चाहते हैं कि नगर, कस्बा-ग्राम की कोई भी समाज ऐसी न रहे। अपनी कोई भी शिक्षण संस्था ऐसी न रहे—जहां सभा का आर्यजगत न जाता हो। कई समाजें पांच २ दस २ और बीस २ पर्चे भी मंगवाती हैं। उनकी बड़ी कृपा है। यदि प्रत्येक बड़ी समाज इस प्रकार का सहयोग देवे तो चिन्ता क्या है? हमारी संस्थाएं विशेषांकों को मगा कर सभा को पूरा सहयोग देती हैं यदि संस्था के प्रत्येक मान्य प्रिंसिपल, मुख्याध्यापक महोदय, समाजों के प्रधान महानुभाव भी व्यक्तिगत रूप से आर्यजगत लेकर स्वयं लेवें या किसी दूसरे के नाम कर देवें तो बड़ा काम हो सकता है। यदि कोई समाज या मान्य सज्जन प्रचार के नाते अपनी ओर से कुछ राशि देकर, आधे २ मूल्य पर विद्यार्थियों, युवकों या अन्य लोगों तक पहुँचाने की कृपा करें तो प्रगति हो सकती है। आर्य जगत् की उन्नति अपनी सभा की उन्नति है। हम मान्य सभा के अधिकारियों के साथ इस बार आर्यजगत् की प्रगति के बारे में विशेष विचार कर रहे हैं। काम सुन्दर ही होगा। आर्य जगत् सच्चे अर्थों में आर्यों का जगत् बन जाये—ऐसे हमारा संकल्प है। विशेष निवेदन बाद में ही करेंगे। इस समय जो आर्यजगत् के नये जन्म दिवस पर इस के सारे परिवार को बधाई देते हैं। सबके आभारी हैं। प्रभु का धन्यवाद करते हुए सब से नम्र प्रार्थना है कि इस वर्ष भी अपना सहयोग, प्रेम तथा शुभ-चिन्तन आर्य जगत् के साथ रखते रहें। यह सभा का है और सभा आप की है। इस के सारे परिवार को बधाई।

—त्रिलोक चन्द्र

प्रि० भगवान् दास जी

माननीय प्रिंसिपल भगवान्दास जी एम० ए०, प्रिंसिपल दयानन्द कालेज अम्बाला शहर की विदुषी सुपुत्री सौभाग्यवती शारदा रानी का शुभ विवाह समारोह से सम्पन्न हो गया। इस शुभावसर पर हम अपनी व आर्य जगत् के सारे परिवार की ओर से आदर्श प्रिंसिपल महोदय को बहुत-बहुत हार्दिक बधाई देते हुए प्रभु से उस मंगलमयी जोड़ी के पवित्र गृहस्थ आश्रम की हर प्रकार की कुशलता की सदा प्रार्थना करते हैं। इस अवसर पर एक बात सब के लिए आवश्यक रूप से कहना चाहते हैं। माननीय प्रिंसिपल भगवान् दास जी सच्चे अर्थों में एक क्रियात्मिक नेता हैं। आर्यसमाज की दिव्य विभूति व स्तम्भ हैं। जीवन से जीवन के निर्माता हैं। आर्यसमाज के इने-गिने व्यक्तियों में से एक हैं। आपने अपनी सुपुत्री के शुभ विवाह के पुनीत अवसर पर जो निमन्त्रण पत्र छपवा कर मान्य सज्जनों के पास भेजे हैं। वह अपनी राष्ट्रीय भाषा हिन्दी में ही हैं। अंगरेजी में नहीं। कालेज के इतने प्रिंसिपल के उच्चासन पर बैठकर भी उनको विदेशी भाषा का व्यामोह नहीं। न उसे गौरव देते हैं। राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत होकर हिन्दी में निमन्त्रण पत्र छपवा कर सबका नेतृत्व किया है। यह विशेषता प्रिंसिपल भगवान् दास जी में है। दूसरों में कम है। आर्यसमाज की संस्थाओं में आज भी सारा काम अंगरेजी में होता है। बैठकों की, कमेटियों की कारवाई अंगरेजी में बोली व लिखी जाती है। पत्र व्यवहार भी अंगरेजी में होता है। इंगलिश का अधिक व्यामोह है। हम चाहते हैं कि हमारे नेता व संस्थाएं प्रिंसिपल भगवान् दास जी के इस राष्ट्रभाषा प्रेम के गौरव से प्रेरणा लेकर व्रत लेवें कि हम भी अपने समारोहों पर राष्ट्र भाषा को सम्मान देंगे।

शिक्षा समिति का गठन

पंजाब सरकार ने इस प्रान्त में एक नई समिति बन ई है जिस का काम अन्य शिक्षा की आवश्यक बातों पर विचार करने के साथ यह भी होगा कि साईंस के साथ संस्कृत का विषय लेने के बारे में भी विचार करना होगा। इस समिति में अन्य मान्य सदस्यों के साथ माननीय प्रिंसिपल रलाराम जी एम. ए. भी होंगे। हम इस समिति का स्वागत करते हैं। माननीय प्रिंसिपल रलाराम जी एम. ए. एक माने हुए शिक्षा विशेषज्ञ हैं। बहुत ऊंचा सोचते तथा क्रियात्मिक रूप पर सम्मति देते हैं। हमें इस समिति से बहुत आशाएं हैं। आज संस्कृत का पंजाब में तो स्कूलों में गला घोंट कर रख दिया गया। विदेशी राज्य में तो स्कूलों में संस्कृत को प्रोत्साहन मिलता था। छात्र अपनी रुचि के अनुसार संस्कृत लेकर उत्तम अंक लेते थे। पर खेद है कि आज अपने राज्य में संस्कृत को सर्वथा समाप्त कर दिया गया है। स्कूलों में जा कर देखें कि संस्कृत की दशा कैसे सिसकती है हम समिति से निवेदन करेंगे कि भारतीय संस्कृति से स्रोत संस्कृत के प्रवाह को जारी रखने का प्रबन्ध करेंगे—सं.

आर्य समाज लारेंसरोड अमृतसर

आर्य समाज लारेंसरोड अमृतसर में समय-समय पर आवश्यक तथा समय के अनुसार समारोहों व यज्ञों का सुन्दर कार्यक्रम होता रहता है। प्रभु ने यहां के परिवारों को सम्पन्नता तो दी है वहां इन के विचारों में धर्म निष्ठा तथा प्रभुप्रेम भी भर दिया है। यहां निरन्तर वर्षों से प्रातः काल का सत्संग प्रवाह बहता रहता है। इस बार ता. १४ दिसम्बर से २६ दिसम्बर तक वृष्टि यज्ञ का बड़ा प्रभावशाली आयोजन था। प्रातःकाल सात बजे से ८॥ बजे तक अथर्व वेद चौथे काण्ड के १५ वें सूक्त के मन्त्रों तथा पहले मन्त्र से बड़ी संख्या में नर-नारी पधार कर आहुतियां देते थे। बारी-बारी से यजमान बनते रहे। श्रद्धा का मनोरम दृश्य था। खुले दिल से घृत और सुगन्धित विशेषसमग्री का प्रयोग होता रहा। पूर्णाहुति पर तो कितना भव्य दृश्य था। देख कर सब का चित्त प्रसन्न हो गया। सब को खुशी मिला। इस यज्ञ में पं. त्रिलोक चन्द शास्त्री, प. खशीराम जी शर्मा वेद प्र० अधिष्ठाता सभा पं. सत्यपाल जी शास्त्री पं. रघुवीर सिंह जी, प. जगत राम जी बस्ती राम जी शामिल थे। सब में श्री. मोहनलाल जी अरोड़ा प्रधान समाज, वैद्य विद्यासागरजी मन्त्री सब को बधाई दी।

आर्य युवक समाज हिसार (पंजाब) का वार्षिक साहित्य प्रचार (१९६५)



देश विदेश में साहित्य का वितरण निम्न प्रकार से रहा:—

अमरिका में साहित्य वितरण

लगभग ७५ पुस्तकें भेजी गईं। अमरिका में पुस्तकें भेजने का कार्य एवं श्री डा० प्रेमदत्त जी, डा० फकीर चन्द जी तथा डा० लक्ष्मण दास जी ने विशेष रूप से किया।

१. **Introduction to vedas**
२. **Elementery teaching of vedic religion**
Essence of vedic religion
४. **Dayanand & Aryasamaj**
५. **Vedic Prayer**
६. **Agni hotra**

इंगलैण्डमें साहित्य प्रचारकार्यक्रम

श्री डा० राजपाल सिंह द्वारा कुछ चुनी हुई पुस्तकें इंग्लैण्ड में भेजी गईं। वहां एक रा-न कथोलिक बहन को भी कुछ साहित्य भेंट किया गया।

एक भारतीय भाई जो अब इंग्लैंड निवासी है जब वह भारत आया तब उसे १५ पुस्तकें भेंट की की गईं। उस साहित्य में एक पुस्तक भारत पर पाक हमले के सम्बन्ध में भी थी। पुस्तक ऊपर-लिखत है।

देश में साहित्य प्रचार कार्य

लाला लाजपतराय नगरपालिका पुस्तकालय, सर्वोदय भवन (गांधी अध्ययन केन्द्र,) चैटर्जी स्मारक पुस्तकालय, नगरपालिका पुस्तकालय माडल टाउन, हिसार में भी कुछ साहित्य भेंट किया गया। जिन्होंने लिखित रूप से आर्य युवक समाज को धन्यवाद दिया।

वैदिक मिशनरी श्री कृष्ण विचार को साहित्य भेंट

मैसूर प्रान्त में प्रचार हेतु आर्य युवक समाज हिसार की तरफ से श्री कृष्ण विचार जी को लगभग अंग्रेजी का साहित्य भेंट किया गया इस साहित्य के साथ साथ बाईबल (हिन्दी अनुवाद) जिसमें विद्वानों द्वारा उठाए गए आक्षेपों पर निशान लगाए हुए थे।

श्री जिलाधीश महोदय,हिसार को साहित्य भेंट

जिलाधीश महोदय जब हरियाणा गौशाला (कुरुक्षेत्र) के वार्षिक उत्सव पर पधारे तब उन्हें कुछ साहित्य भेंट किया गया। इस में यह लेख था।

अमरिका-शान्ति सेना के नवयुवकों में साहित्य भेंट

भारत में आये हुए शान्ति सेना जो अमरिका से सम्बन्धित थे, उनको भारतीय संस्कृति से परिचय करवाया गया और उनको यह भी बताया कि किस प्रकार भारतीय संस्कृति अपने आप में विज्ञान और आध्यात्मिकता से पूर्ण है। उनको कुछ साहित्य भी भेंट किया गया।

पंजाब कृषि विश्व विद्यालय के पुस्तकालय में

कुछ साहित्य डा० एस. एल. सहगल असिस्टैण्ड डायेरेक्टर महोदय की सहायता से रखा गया। श्री एस. एल. सहगल जी को भी कुछ साहित्य भेंट किया गया।

पंजाब विश्वविद्यालय में साहित्य वितरण:—

पंजाब विश्वविद्यालय में आये हुए अमरिकनप्रोफसरों में कुछ साहित्य युवक हृदय सम्राट प्रो० राम प्रकाश जी द्वारा वितरण किया गया।

कुल २०० के लगभग पुस्तकें फ्री बांटी गई हैं।

प्रोफैसर रामप्रकाश जी एम. एस. सी. अनुसन्धान विभाग पंजाब विश्वविद्यालय जिन्होंने सदैव इस कार्य के लिए उत्साहित किया और समय-समय पर सहयोग दिया। प्रोफैसर साहिब ने ३० पुस्तकें अपनी लिखित आर्य युवक समाज को भेंट कीं। इस सहायता के लिए मैं आर्ययुवक समाज की ओर से उनका हार्दिक धन्यवाद करता हूं।

आर्य युवक समाज हिसार की तरफ से मैं सर्व-प्रथम लाला बृजलाल जी गुप्ता का अति धन्यवाद करता हूं। जिन्होंने हमें इस कार्य के लिए ५० रुपये आर्य कुमार परिषद् की तरफ से प्रचार कार्य के लिए दिये। श्री देवराज जी गुप्ता आचार्य दयानन्द महाविद्यालय हिसार ने समय पर उत्साह बढ़ाया आर्थिक सहयोग दिया।

—हरीन्द्र आर्य

महर्षि दयानन्द के नाम पर तालियां क्यों ?

(पं० भक्तराम जी शर्मा (अफ्रीका वाले) जालन्धर)



आर्य समाज के प्रसिद्ध संन्यासी और प्रभावशाली धर्मोपदेशक स्व० स्वामी सत्यानन्द जी महाराज ने गुरुकुल कांगड़ी (हरिद्वार) के वार्षिकोत्सव पर अपने व्याख्यान में एक महात्मा का उल्लेख किया था जिसने स्वामी जी से पूछा था 'क्या कारण है कि तुम आर्य समाजी दूसरे महापुरुषों की अपेक्षा स्वा० दयानन्द के नाम पर तालियां अधिक पीटते हो ?' स्वामी जी ने उन महात्मा जी को उत्तर दिया था "प्यारे ! आर्य समाजियों ने भगवान् दयानन्द के लगाये हुए महा वृक्ष 'आर्य समाज' के फल खाये हैं इसलिए उनका रोम-रोम स्वामी दयानन्द जी महाराज के के प्रति कृतज्ञता का प्रकाशन कर रहा है। आर्य सभासद् आर्य धर्म सेना का एक सैनिक है और लोक हित का एकव्रती है जो दयानन्द की जय जय कार कर कृतघ्नता के दोष से मुक्त होना चाहता है।

स्वामी जी ने प्रश्न कर्त्ता को जो उत्तर दिया था वह प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए जिसकी ऐसी मान्यता है कि आर्य समाजी दयानन्दकी माला जपते हुए हर बात पर क्यों तालियां बजाते रहते हैं, पढ़ने और विचारने योग्य है। मेरी तो दृढ़ धारणा यह है कि केवल आर्यसमाजी ही नहीं विश्व जगत् स्वामी दयानन्द का ऋणी है और उसे स्वामी जी का कृतज्ञ होना चाहिए कि उन्होंने नये पन्थ को जन्म न देकर वेद प्रति-पादित मानव धर्म के प्रचार के उद्देश्य से 'आर्यसमाज' रूपी आन्दोलन चलाया। स्वामी दयानन्द जैसे महान उपकारी के उपकारों का क्या कहना जिन्होंने अपने बनाये दस नियमों में एक नियम यह रखा—'संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है।' केवल आर्यसमाजियों का नहीं।

पाठक सम्प्रदायों में जो क्रान्ति देख रहे हैं मैं तो उसे 'महर्षि दयानन्द की जय समझता हूं'। सम्प्रदायी लोग आज जो पैंतरे बदलते जा रहे हैं क्या वह स्वामी जी की जय नहीं ?

धर्म गुरू अब परोपकार का, मेल-मिलाप का, एकता का, लोक-हित का, जन सुधार का, दीन-दुखियों की सेवा का अनाथ रक्षा का और शिष्टाचार का उपदेश दे रहे हैं क्या यह स्वामी दयानन्द और उनके द्वारा फैलाए हुए वैदिक धर्म की जय नहीं ? महान् योगी श्री अरविन्द घोष ने वैदिक मैगज़ीन में, जिस का सम्पादन स्वर्गीय आचार्य राम देव जी करते थे, लिखा था—'दयानन्द की स्पिरिट सचाई की स्पिरिट है। जहां सत्य देखो वहां समझ लो कि इस पर दयानन्द की मुहर है। देश, धर्म और जाति के लिए यदि आवश्यक काम करना हो तो विश्वास पूर्वक हो जायेगा क्योंकि इस के लिए दयानन्द के अनुयायी मिल जाते हैं।' इन्हीं योगी जी ने आचार्य विद्यानन्द विदेह के शब्दों में अपने सम्पूर्ण जीवन में यदि किसी के व्यक्तित्व पर कुछ लिखा तो केवल ऋषि दयानन्द पर।' कोई ऐसा विषय नहीं जिस पर उन्होंने ने प्रकाश न डाला हो। क्या यह ऋषि दयानन्द की कम महानता है। ऐसे ऋषि थे वह जिन के उपकारों की गिनती नहीं हो सकती। किसी ने क्या खूब कहा है—

गिने जायें मुमकिन है,
सहरा के ज़र्रे,
समुद्र के क़तरे
फ़लक के सितारे।
स्वामी दया नन्द
मगर तेरे उपकार,
न गिनती में आयें
कभी हम से सारे।

ऐसे उपकारी महापुरुष के नाम पर तालियां बजा कर जयकारे क्यों न बुलाये जायें जिस ने मुन्शी राम को महात्मा मुन्शी राम और फिर स्वामी श्रद्धानन्द बना दिया, नास्तिक प. गुरुदत्त को आस्तिक बना दिया। लाला (महात्मा) हंसराज को त्याग और तपस्या का पाठ पढ़ाया। स्वामी दर्शनानन्द को वेद का मतवाला बना दिया और पं० लेखराम जी को 'आर्य मुसाफिर।' एक आर्य प्रचारक स्वामी जी के प्रति अपनी कृतज्ञता का वर्णन करते हुए ज़ार-ज़ार रोने लग पड़ता था। उसका नाम पूछा गया तो कहने लगा कि मेरा नाम 'आर्यसमाज' है। तुम्हारी माता कौन है ? जवाब मिला 'आर्य-समाज' अब घर का पता पूछा गया तो भी 'आर्यसमाज' ही बताया। पूछने पर मालूम हुआ कि कहीं अकाल पड़ने पर आर्य-समाजियों की शिष्ट मण्डली ने भूख के कारण मरी पड़ी उसकी माता की छाती पर से उसे दूध चूसने की कोशिश करते हुए उठाया था। फिर उसे पाला-पोसा और शिक्षा दी। इसलिए उसने अपना सर्वस्व 'आर्य समाज' को ही बताया।

सोने का मूल्य जौहरी ही जानता है। स्वामी जी का उपकार माना था लाला लाजपत राय जी ने जिन्होंने लिखा था—'स्वामी दयानन्द मेरे गुरु हैं। वह मेरे धर्म के पिता हैं। और आर्य समाज मेरी माता है। मैंने सार्वजनिक सेवा के सब पाठ आर्य समाज में रहते हुए आर्य समाज से सीखे। यदि मैं आर्यसमाज में प्रविष्ट न होता तो ईश्वर जाने क्या होता ? परन्तु यह सत्य है कि मैं आज जो कुछ हूं वह न होता। यदि मेरा बाल २ भी आर्यसमाज पर न्योछावर हो जाये तो भी उन उपकारों से उऋण नहीं हो सकता।' जिस ने हम को देश प्रेम का मीठा फल खिलाया जाति सेवा और जाति भक्ति का बीज हमारे अन्दर बोया उनका हम उपकार न मानें तो हमारे जैसा कृतघ्न कोई न होगा।

आर्यसमाज कार्नवालिस स्ट्रीट कलकत्ता के हाल में ६ जनवरी सन १९६५ की सायंकाल को आयोजित छोटे सम्मेलन में एक कांग्रेसी एम० पी० स्वामी रामानंद जी सरस्वती ने महर्षि दयानन्द के गुण गाकर उनको पहिचाना और उपकार माना था। उस अवसर पर भाषण देते हुए उन्होंने कहा था—'स्वामी दयानन्द के उपकार देखना है तो मुझे देखो। मुझ अछूत को आर्यसमाज ने वेद पढ़ाये, शास्त्री और आचार्य बनाया और लोक सभा का सदस्य बना दिया।' गर्व क्यों न हो। भारत की लोकसभा के ५०० सदस्यों में से वह एक हैं। भाषण आरम्भ करने पर दो मिनिट तक स्वामी जी बोल ही न सके थे। उनकी आंखों से आंसू टपक रहे थे। हम क्या स्वामी जी को पहिचानें उनका मूल्य आंका था उड़ीसा के श्री मोहन नायक एम. ए. ने जो सत्यार्थ पढ़ कर और भीड़ में बैठ कर दिल्ली की सब आर्य समाजों के उत्सवों में आर्य नाद सुन कर ५० वर्ष की आयु में आर्य समाजी बन गये।—(शेष पृष्ठ ८ पर)

आरोग्य प्रकाश

कविराज रामसिंह जी वैद्य यमुना नगर एक बड़े अनुभवी और योग्य वैद्य हैं। उन्होंने अपने जीवन को साधना की भट्टी में से गुजारा है और मानव जीवन कैसे सुखी बन सकता है, और उसके साधन शरीर और मन को कैसे स्वस्थ रखा जा सकता है इसका गम्भीर अध्ययन किया है और अपने अनुभव से ऐसे-ऐसे सारभूत नियम शास्त्रों से निकाले हैं जिन से सब लोग लाभ उठा सकते हैं। यमुना नगर में क्रियात्मक रूप से जनता को योगासन-प्राणायाम और मन के विचारों को ठीक रखने के लिये ध्यान का अभ्यास भी प्रतिदिन कराते हैं।

इसके विषय में उन्होंने एक पुस्तक आरोग्य प्रकाश प्रकाशित की है। जो हर नर-नारी-युवक और वृद्ध को पढ़नी चाहिए।

आनन्द स्वामी सरस्वती

आर्य समाज खंडवा पूर्व निमाड़ (म.प्र.)

दिनांक २४— २२— ६५ को साय ६॥ बजे से अमर शहीद, स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। बृहद यज्ञ प्रार्थना भजन के बाद स्वामी जी के जीवन पर अनेक विद्वानों के सारगर्भित भाषण हुए। अन्त में श्री० डा० रघुनाथसिंह जी वर्मा प्रधान जि० आर्य समाज ने स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। शांति पाठ के पश्चात् कार्यक्रम समाप्त हुआ। उपरोक्त कार्यक्रम में श्री नारायण प्रदास निगम द्वारा संगीत मय भजन भी हुए।

कैलाशचन्द्र पालीवाल
मंत्री आर्य समाज

आर्य समाज होशियारपुर का वार्षिक चुनाव

तिथि २७-२-६६ को प्रात १० बजे आर्यसमाज मन्दिर में होगा और उसी समय श्रीमती पार्वती देवी आर्य महिला हायर सैकण्डरी विद्यालय के लिये मैनिजिंग कमेटी के प्रतिनिधि भी चुने जायेंगे। चन्दा देने की अंतिम तिथि १० बजे प्रात २६-२-६६ है।

गजेन्द्रपाल
मन्त्री आर्य समाज

विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान का ६२ वां वार्षिकोत्सव

होश्यारपुर, २६ दिसम्बर—वि० वैदिक शोध संस्थान का ६२वें वार्षिकोत्सव की अध्यक्षता करते हुए पंजाब के शिक्षा मन्त्री, श्री प्रबोधचन्द्र ने संस्कृत भाषा और ज्ञान के प्रचार की आवश्यकता पर बल दिया और विश्वास दिलाया कि सरकार सब सहायता [illegible] आपने विश्वेश्वरानन्द [illegible]कालय का शिलान्यास भी किया जिसका सवा तीन लाख रु० के व्यय से निर्माण किया जा रहा है। आपने अपने सहकारी फण्ड में से २१०० रु० का दान घोषित किया।

आपने संस्थान के इस वर्ष प्रकाशित ७५ से ऊपर ग्रन्थों का, जिनकी कुल पृष्ठ संख्या ७,००० के लगभग है, उद्घाटन किया।

संस्थान के संचालक, आचार्य विश्वबन्धु जी ने संस्थान के दो भागों में विभाजन को स्पष्ट किया। संस्थान के शिक्षण, शोध तथा पुस्तकालय विभाग 'विश्वेश्वरानन्द संस्कृत तथा भारत-भारती संस्थान' के नाम से अलग 'संस्थान' के नाम से अलग संगठित किए गए हैं जो पंजाब विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हो गया है। शेष विभाग पुराने संस्थान के अन्तर्गत कार्य करते रहेंगे।

बहुत बड़ी संख्या में नेताओं [illegible] भारतीय और विदेशी विद्वानों [illegible] सन्देश प्राप्त हुए।

—कैलाशनाथ उपसंचालक

दयानन्द वचनामृत

जो बातें सब के मानने योग्य हैं, उनको मैं मानता हूं, जैसे सत्य बोलना सब के समीप अच्छा है और मिथ्या भाषण बुरा है। मत-मतान्तरों के परस्पर जो झगड़े हैं, उनको मैं अच्छा नहीं समझता। क्योंकि इन्हीं मतवादियों ने अपने मतों के प्रचार से मनुष्यों को भ्रम जाल में फंसा कर एक-दूसरे का वैरी बना दिया है। इन बुराइयों को दूर करके सर्व मान्य सत्यमत का प्रचार करना मेरा अभिप्राय है। सब मनुष्यों को एक मत में ले आना मेरा उद्देश्य है। राग-द्वेष छुड़ा, प्रेम-प्रीति-बद्ध कर सब को सुखी बनाना मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है।'

(स्व० स्वामी सत्यानन्द जी)

आर्य समाज रैनावाड़ी (काश्मीर) का चुनाव

प्रधान—श्री जगन्नाथ जी।
उपप्रधान—श्री काशीनाथ जी
मंत्री—श्री श्याम सुन्दर वैद्य।
उपमन्त्री—श्री ब्रजनन्दन लाल।
कोषाध्यक्ष—श्री श्याम लाल जी सराफ
पुस्तकाध्यक्ष—श्री मदन मोहन जी
सभासद—श्री बंसी लाल जी।

भवदीय
श्याम सुन्दर वैद्य
मंत्री समाज

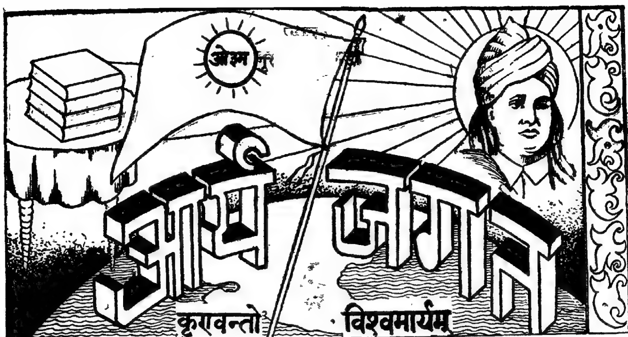
महर्षि दयानन्द के........

(पृष्ठ ७ का शेष)

जिस स्वामी दयानन्द के सबंध में देश प्रसिद्ध वक्ता कुंवर सुखलाल की 'मार्ग मुसाफिर' ने हिंदू जाति के मुख से यह कहलवाया —

मेरे सिवा सारे जहां में किसे फखर ऐसा नसीब है। दयानन्द जैसा रहनमा पहलू में अपने बिठा सके। उन दयानन्द 'महान' के उपकारों को स्मरण करके हमें तालियां और जैकारे बुलाना उनको दिल से मान करना है। ऐसी व्यक्ति पूजा पर हमें अभिमान है। वह मुबारिक हो।

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत् कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 12

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक ३) ४ माघ २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१— १६ जनवरी १९६६ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

सारे भारत और विश्व में शोक की घटाएं

भारत के वीर देवस्वभाव प्रधान मन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी का ताशकन्द में स्वर्गवास हो गया। इस दुःखद समाचार से सारा देश और विश्व के राष्ट्रों का जनमंडल शोक और आंसुओं के प्रवाह में डूब गया। महाकाल ने हमारा निडर, स्थिरप्रज्ञ और सर्व-प्रिय महान् नेता छीन लिया। भारत-माता का प्यारा देवपुत्र चला गया।

वेद सूक्तय:

इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे

हम सारे परमात्मा के अमृत पुत्र और पुत्रियां अपनी स्तुति से भरी गीर्भि:—वाणियों से, वचनों से उस इन्द्रम्—महान् भगवान् की नवामहे—स्तुति करते हैं। भक्ति करते हैं। हम तो उसी भगवान् के ही भक्त हैं।

यज्ञाय सन्त्वद्रय:

जो लोग अपने जीवन में अद्रय:—पर्वत हैं। पर्वत के समान स्थिर हैं। विचारों में हिलते डुलते नहीं हैं। वही यज्ञाय—यज्ञके लिए, शुभ कामों व परोपकार के लिए सन्तु—होवें। लगे रहें। स्थिर विचार वाले ही परोपकार कर सकते हैं।

ऋतस्य जिह्वा पवते

जो मनुष्य ऋत: वाला है उस ऋतस्य — सत्यवादी की जिह्वा—वाणी, बातें ही सब को पवते—पवित्र कर देती हैं। सत्यवादी मनुष्य अपनी वाणी से दूसरों को पवित्र कर देता है।

उत त्राता तनूनाम्

वही भगवान् हमारे तनूनाम्—शरीरों को जीवनों का सदा, त्राता—रक्षक होता है प्रभु ही वास्तव में सारे जीवन का त्राता और रक्षक है। उसी का सर्वत्र रक्षण काम [illegible]

देवता का सन्देश

भारत के प्रधान मन्त्री वीर, स्थिर विचार, अनन्य देश भक्त श्री. लालबहादुर जी शास्त्री का ताश कन्द में अत्यन्द दुःखद देहावसान ने सारे देश भारत एवं विश्व को शोक सागर में डुबो दिया है। उस देवता का यह सन्देश स्मरण रखने के योग्य है—समस्याएं यद्यपि जटिल हैं तथापि उन की ओर ईमानदारी से शीघ्र ध्यान देने की आवश्कता है। किसी समझौता के लिए पूरो ईमानदारी और लग्न की आवश्यकता होगी ताकि संघर्ष आगे अधिक न फैलने पाए।

राष्ट्र-भक्ति और प्रभु-भक्ति-८

(श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की अमृतभरी कथा)



(गतांक से आगे)

सत् व्यवहार में लेन-देन शुद्ध और सत्य होना चाहिए। पूजा, नमाज़ और गायत्री का जाप करने का क्या लाभ, जब व्यवहार में सत्यता नहीं और लेन-देन में खोट हो। इसलिए लेन-देन ठीक होना चाहिए।

जीवन का आधार भी सत्य होना चाहिए। दुकान अच्छी है, बहुतेरी कमाई होती है। बेटा २००० रुपया लेता है, उस में से खर्च दे देता है। जीवन तो कट जाता है। इस तरह, लेकिन सत आधार का बहुत व्यापक अर्थ है। मनुष्य का एक जैसी अवस्था नहीं रहती। कभी सुख, कभी दुख —यह चक्र चलता रहता है।

फलक देता है जिन का ऐश,
उन को गम भी होते हैं,
जहां बजते हैं नकारे,
वहां मातम भी होते हैं।

अरे मानव! परमात्मा को भी याद रख। वही जीवन का सत् आधार है।

इन्सान का अज़मो हिम्मत से
दूर किनारा होता है।
तूफां में टूटी किश्ती का भगवान
सहारा होता है।

ओ३म् तीन शब्द का संश्लिष्ट शब्द है अ उ और म। अ शब्द ऋग्वेद से, उ यजुर्वेद से और म सामवेद से लिया गया। अ का अर्थ है आगे बढ़ने वाला बन, उ से उत्तम बन और म से माननीय बन। मनुष्य को आगे बढ़ना चाहिए, उत्तम बनना चाहिए और दूसरों की दृष्टि में मान-योग्य बनना चाहिए। नचिकेता को भी यही संदेश मिला था कि तप और त्याग से भी बढ़कर ओ३म् का महत्व है। इस ओ३म् का उच्चारण कर, ओ३म् का रसपान कर।

मानव को विशाल, उदार और गम्भीर-हृदय वाला बनना चाहिए। राष्ट्र की रक्षा के लिए उदारता जरूरी है। देश गुलाम क्यों? काश्मीर का रोना क्यों है? क्योंकि इस में वृहत् भावना नहीं। काश्मीर की बिरादरियों ने महाराजा रणबीर सिंह को पत्र लिखा कि उन्हें हिंदू बना दिया जाए। लेकिन कश्मीरी पंडितों ने उस का विरोध किया। उनमें वृहत् भावना नहीं थी, हृदय में विशालता नहीं थी। उन्हें डर था कि अगर सभी हिंदु हो गए तो उनकी आमदन और पूंजी के हिस्से पड़ जाएंगे। महाराजा बेचारे क्या करें। पंडितों पर जोर दिया तो उन्होंने कहा कि अगर काशी के पंडित अनुमति दें तो उन मुसलमानों को हिन्दू बनाया जा सकता है। महाराजा के आदमी काशी गए। वहां एक बड़ा सम्मेलन हुआ और काशी के पंडितों ने फतवा दे दिया कि हिंदू बनाने में कोई दोष नहीं। अब काश्मीरी पण्डितों ने सोचा, जायदाद छिन जाएगी। नहीं माने। अपने निर्णय पर डटे रहे। तब की गलती आज भुगतते हैं। तब अगर मुसलमान हिंदू हो गए होते तो समस्या ही न रहती। स्वामी दयानन्द जी भी यही कह गए हैं—संसार का उपकार करना आर्यसमाज का धर्म है। उन्होंने घर का नहीं कहा, सम्प्रदाय का नहीं कहा, नगर का नहीं कहा, सूबे या देश का नहीं कहा, सारे संसार का उपकार करने को कहा। यह उन की विशालता थी। मानव को यही विशालता अपनानी है। हृदय को विशाल और उदार बना कर घर, परिवार, मोहल्ला, नगर, शहर की संकीर्णता को छोड़ सारे विश्व को हृदय में स्थान देना है। सबको अपना लें और छूतछात को दूर भगा दें। छूतछात क्यों आई? छोटे बड़े की भावना से ही। पंडितों ने अपने आप को श्रेष्ठ मान लिया। फिर ये भी बंट गए—चतुर्वेदी, यजुर्वेदी, त्रिवेदी आदि रूपों में बिखर गए। फिर बटवारा बढ़ता गया। आखिर में मनुष्य जाति ही बंट गई। स्वामी दयानन्द ने सच कहा है आर्यवर्त में विदेशियों के शासन के कारण आपस की फूट थी। दयानन्द जीवन भर जाटों, सिखों, मराठों को एक करने की कोशिश करते रहे।

भारत की आजादी से पहले की बात है। ईसाई भीलों को बहुत तंग करते थे। महात्मा हंसराज जी का निर्देश पाकर मैं लाहौर से उस इलाके को चला। दो रात और दो दिन तक सफर करता रहा। जब निश्चित नगर में पहुंचा तो एक सज्जन ने बड़ा स्वागत किया। उनके घर पहुंचे। भूख से पेट में चूहे दौड़ रहे थे। दूध, टोस्ट या और चीज़ की इंतजार करता रहा। नौ, दस ग्यारह, बारह बज गए।

लेकिन न तो कुछ आया, न ही मित्र महोदय दिखाई दिए। सोचा, बाज़ार चलूं और वहीं दूध वगैरह पी लें। इसी उधेड़ बुन में पड़ा था कि साढ़े बारह बजे भोजन के लिए संदेश आया। रसोई के बरांडा में पहुँचा था कि मित्र महोदय ने कपड़े उतारने को कहा। भूख लगी थी भय्या, इस लिए कपड़े उतार दिए। ठिठुराने वाली सर्दी में केवल एक बनियान ही गले में रह गई। तभी मित्र जी बोले, धोती भी उतारो। मैं चकित-सा उसकी ओर देखता रह गया। खाना खिला रहा था या कपड़े उतरवा रहा था। उसने अपनी धर्म पत्नी की धोती मेरे सामने कर दी। खैर, मैंने वह धोती पहन ली। अब चौके में पांव रखा तो मित्र महोदय चीख उठे। मैंने कहा, क्यों भई क्या हुआ। वह बोले, 'गजब कर दिया आप ने। सब किए कराये पर पानी फेर दिया। मैं समझ नहीं पाया कि मैंने क्या पानी फेर दिया। जब पूछा तो बोले आप ने चौके में एक पांव अन्दर और एक बाहर क्यों रख दिया। आप को कूद कर, दोनों पांव एक साथ अन्दर रखने थे।

इतनी संकीर्णता, मानव का मानव से इतना फर्क। मनुष्य मूल नहीं, सभी उस परमात्मा के बच्चे हैं। सारी सृष्टि उसकी है।

मैंने अथर्ववेद के बारहवें कांड का पहला सूक्त आरम्भ कर रखा है जिस में कहा गया है कि राष्ट्र भक्ति और प्रभु भक्ति दो अलग-अलग चीजें नहीं है। दोनों के लिए एक ही मार्ग है। मैंने सत्य विचार, सत्य आहार, सत्य आधार, सत्य व्यवहार, सत्य उच्चार, आदि का उल्लेख किया है। मानव जीवन की बुद्धि का सब से बड़ा खेवट बुद्धि है। बुद्धि बिगड़ जाने से यह जन्म भी बिगड़ता है और अगला भी। अच्छे कर्मों का फल है कि मानव-चोला हमें मिल गया है। यदि इस चोले को धारण करके भी हमने नेक काम न किए तो हमारा न लोक सुधरेगा और न परलोक। नेक कर्म करने से धन, वैभव, यश सब कुछ इस लोक में प्राप्त होगा और धन वैभव एवं यश का सदुपयोग करने तथा बुद्धि को बिगड़ने न देने से परमात्मा की ओर भी ध्यान जाता है और परलोक भी सुधरता है। यदि मानव-चोले को पाकर भी बुद्धि को सही ढङ्ग से विकसित नहीं किया तो मानव भी पशु ही कहा जाएगा। अच्छी संगति होगी तो अच्छे विचार मिलेंगे, बुरी संगति होगी तो बुरे विचार।

(क्रमशः)

सम्पादकीय—

आर्य जगत्

वर्ष २६] रविवार २०२२, १६ जनवरी १९६६ [अंक ३

भारत का देवता प्रधानमन्त्री

भारत के प्रथम प्रधान मन्त्री स्वर्गीय पण्डित जवाहरलाल नेहरू के स्वर्गवास के बाद राष्ट्र के इस गौरवमय ऊंचे आसन पर श्रीयुत लाल बहादुर शास्त्री जी बैठे। स्वतन्त्रता संग्राम में माननीय शास्त्री जी ने बड़ी यातनाएं झेलीं। जेल यात्रा की। उस समय राष्ट्र पर चारों ओर से विपत्तियों के काले बादल उमड़ २ आगये थे। चीन एक भयानक शत्रु के रूप में भारतीय नेफा, लद्दाख की हिमानी धरती पर छा जाने में लगा था। इधर पाकिस्तान ने भी वर्षों की युद्ध करने की तैयारी पूरी कर ली थी। ऐसी अवस्था में उसने घुसपैठियों के साथ २ काश्मीर में हजारों सशस्त्र घुसपैठये भेजकर वहां गड़बड़ करवा देने में कोई कसर न रखी। भारतीय वीर सेना के उत्तर देने पर अयूब की सैनिक शक्ति ने भारी पैटन टैंकों की सहायता से छम्ब पर बड़ा भयकर व भारी आक्रमण कर दिया। इधर पञ्जाब पर भी योजनाबद्ध हमले का प्रबन्ध था। इस भीषण परिस्थिति में पूज्य प्रधान मन्त्री श्री शास्त्री जी के सामने कितनी विकट समस्या थी। नेता की सब से बड़ी यही पहिचान होती है कि वह संकटकाल में धैर्यवान व स्थिरचित्त होकर राष्ट्र का नेतृत्व करे। किसी से दबने वाला न हो। भारत के उस देवता शास्त्री जी ने सारी जनता व विशाल लोक सभा की मानसिक भावना का परिचय पाकर शस्त्रों का उत्तर शस्त्रों से देने के लिए अपनी वीर सेना को आदेश दिया। राष्ट्र के सम्मान और गौरव की पताका को वीरता भरे सन्देशों से उन्नत रखा। सारे देश में श्री पूज्य शास्त्री जी की जयजयकार होने लगी। भारतीय जवानों की वीरता तथा बलिदानों से सारे देश का मस्तक ऊंचा हो गया। राष्ट्र को नई चेतना मिली। रूस के महान् नेता श्री कोसीजिन के प्रयत्नों से भारत और पाकिस्तान में इस युद्ध स्थिति को शान्ति में बदलने के लिए हमारे सर्वप्रिय प्रधान मन्त्री श्री शास्त्री जी तथा पाकिस्तान के राष्ट्रपति श्री अयूब ताशकन्द में गये। परस्पर बात चीत होती रही। सम्मिलित वक्तव्य पर हस्ताक्षर भी हो गए। पर ता. १० जनवरी रात के डेढ बजे हमारे पूज्य प्रधान मन्त्री श्री शास्त्री जी का ताशकन्द में देहावसान हो गया। मंगलवार को प्रातः काल इस दुःखद समाचार को सुनाने आ पहुंचा। सारे भारत पर वज्रपात हो गया। राष्ट्र का यह महान् नेता, भारत माता का प्यारा वीर पुत्र ताशकन्द में सदा की नींद सो गया। अठारह मास की अल्प अवधि में उस देवता ने राष्ट्र को कितना ऊंचा कर दिया। सारा भारत शोक सागर में डूबा है। कभी न पूर्ण होने वाली क्षति है। सारा विश्व ही अश्रुपूर्ण है। स्वर्गीय देवता श्री शास्त्री जी के सारे परिवार, सारे राष्ट्र, सारे विश्व के महान् शोक में मन आंखें व शरीर का रोम २ रोता है। —त्रिलोक चन्द्र

बयालीस वर्ष के बाद



उत्तम साहित्य मानव जीवन के लिए संजीवन का काम देता है। यदि वह समाज के अनुभवी; तपस्वी, प्रभुनिष्ठ आदर्श देवजनों की ओर से हो तब तो कहना ही क्या? आज हमें आर्यजगत् की जनता को यह शुभ समाचार देते हुए अत्यन्त हर्ष अनुभव करते हैं कि आर्य समाज के सुनहले युग के दिव्य महापुरुष सर्वमेधी महात्मा हंसराज जी द्वारा लिखित सन्ध्या के पवित्र मन्त्रों पर लिखित अध्यात्मवाद से भरी 'सन्ध्या पर व्याख्यान' नामक पुस्तक पूरे बयालीस वर्षों के बाद प्रकाशित हुई है। आर्य प्रादेशिक सभा पञ्जाब जालन्धर के महात्मा हंसराज साहित्य विभाग के मान्य अधिष्ठाता प्रो० वेदप्रकाश जी एम० ए० को ही इस बात का सारा श्रेय है कि उन्होंने यह सुन्दर पुस्तक ढूंढ कर उसको बड़े ही सुन्दर ढंग से ४२ वर्ष के बाद प्रकाशित करके जनता के हाथों तक पहुंचाने का शुभ काम किया है। बयालीस वर्ष आधी शती के लगभग का समय होता है। यह पुस्तक 'सन्ध्या पर व्याख्यान' के नाम से आज से बयालीस वर्ष पूर्व प्रकाशित हुई थी। पुराने लोगों को पता हो तो हो नये भाई बहिन तो जानते तक भी नहीं थे? जालन्धर की डी०ए०वी० कालेज की लाजपतराय लायब्रेरी में इस की एक प्रति सुरक्षित थी। उसे देख कर मान्य अधिष्ठाता साहित्य विभाग सभा ने उसे लेकर काफी परिश्रम किया। सभा की ओर से उसे प्रकाशित कर दिया है। हम इस उत्तम कार्य के लिए हार्दिक बधाई देते हैं।

उस देवता महात्मा हंसराज जी द्वारा लिखित सन्ध्या पर व्याख्यान नाम की यह पुस्तक कैसी है? इस पर तो लिखने की आवश्यकता नहीं? जैसा उज्ज्वल व आदर्श जीवन उस देवता का था—सचमुच उसी प्रकार की ही यह पुस्तक है। सन्ध्या के सारे मन्त्रों को लेकर कितना सुन्दर अनुभव भरा व्याख्यान है यह—यह अमृत-रस तो इस के पढ़ने पीने वाले स्वयं पी कर अनुभव करेंगे। जैसी पुस्तक है वैसे ही उत्तम कागज तथा बहुत ही आकर्षक मनोरम छपाई है। वह पुस्तक सन्ध्या पर हो, और जिस के लेखक देवता महात्मा हंसराज हों और जो बयालीस वर्ष बाद छपी हो—कौन उसे न चाहेगा। कोई आर्य ऐसा न हो जिस के हाथ में परिवार में व संस्था में न जावे। लाखों की संख्याओं में जावे-आर्य प्रादेशिक सभा जालधर शहर के महात्मा हंसराज साहित्य विभाग से इसी समय मंगवायें—

—त्रिलोक चन्द्र

'हाय बाप हाय राम'

शास्त्री जी के अंतिम शब्द

श्री शास्त्री जी को आधी रात को जब खांसी आई और छाती में दर्द हुआ तो डा० चुग ने उन्हें एक इन्जेक्शन दिया। इस मौका पर प्रधान मन्त्री के अंतिम शब्द थे—'हाय बाप, हाय राम।'

कल रात्रि भोजन के अवसर पर प्रसन्न मुद्रा में बातचीत करते हुए श्री कोसीगिन ने श्री शास्त्री से पूछा—'क्या आप रिटायर होना पसन्द करेंगे? श्री शास्त्री ने उत्तर दिया, नहीं।'

रात ११ बजे बिस्तर में जाने के पूर्व श्री शास्त्री ने अपने सेवक से कहा—'सवेरे ही यहां से काबुल रवाना होना है इस लिए तड़के ही सब सामान आदि ठीक कर लेना चाहिए।'

यज्ञ-बलिदान का प्रतीक

(आचार्य प्रियव्रत जी वेदालंकार गुरुकुल कांगड़ी)



माननीय पण्डित प्रियव्रत जी आचार्य गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार आर्यसमाज में वेदों के माने हुए विद्वान हैं। प्रसिद्ध लेखक एवं वक्ता हैं। मीठी और मंजी हुई भाषा में बोलते हैं। आपका दिया गया एक प्रवचन आर्यजगत् के प्रेमी पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है—सं०

वेद मन्त्र में आता है—यो वेदेन ददाश मर्त्यः जो मनुष्य अग्निहोत्र करता है, आहुतियां देता है। उसके द्वार पर हाथी घोड़े बंधे हिनहिनाते रहते हैं। उसका कोने २ में यश फैलता है, उसे ऐश्वर्य मिलता है। दैवी विपत्तियां उसे कष्ट नहीं दे सकती यह सारा फल यज्ञ करने वाले को मिलता है। हम अग्निहोत्र करते हैं किन्तु हमें तो टूटी झोंपड़ी भी प्राप्त नहीं होती। दु:ख और दैवी विपत्तियां भी आती रहती हैं। तो क्या वेद गलत कहता है? नहीं—ऐसी बात नहीं है। वेद तो सदा सच्ची बात ही कहते हैं। समझने की आवश्यकता है।

मन्त्र में कही गई ये सारी वस्तुएं किसे प्राप्त होती हैं—इस में एक विशेषण आया है—स्वध्वरः इस का अर्थ है कि जो उत्तम रीति से यज्ञ करता है। उसे जान अग्निहोत्र करता है, उसे सब कुछ मिलता है। प्रत्येक स्थान से लाभ प्राप्त करने की एक पद्धति होती है। यदि किसान खेती करने के लिए सारी प्रक्रिया ठीक ढंग से करे तो अन्न प्राप्त करता है। पर नासमझ कृषक ठीक व्यवस्था यदि न कर के वैसे ही बीज बखेर दे तो उसे अन्न कैसे मिलेगा? यही बात स्वध्वर :—यज्ञ के बारे में कही गई है। ये जितने भी यज्ञ हैं वे ठीक तरीके से किये जायें तभी फल देते हैं। प्रत्येक यज्ञ एक विशेष प्रयोजन के लिए होता है। यज्ञ एक नाटक है। इस में कुछ क्रियाएं होती हैं जिन को समझ कर उन से पूरा २ पाठ पढ़ा जा सकता है! जैसे रामायण नाटक को देख कर नारियां सीता के समान और पुरुष राम के समान जीवन बनाना सीखें, तब तो उस से लाभ है, अन्यथा उसे देखने का कोई लाभ नहीं है। ये सच मुच नाटक हैं। भरत नाट्य शास्त्र में विचार किया गया है जो कि यजुर्वेद से लिया है। यजुर्वेद कर्मकांड का वेद है। वाले पात्र कहलाते हैं। यज्ञ के भी पात्र होते हैं। ये दोनों में दोनों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

अग्निकुण्ड में अग्नि जलती है। समिधाएं डालते हैं। अग्नि के समर्पण अपने को भेंट करने का सन्देश है। यजमान जिस भी समिधा पर हाथ डालता है वह ननुनच नहीं करती। वह स्वयं नष्ट हो कर, मिट कर अग्नि की महिमा को, प्रकाश को बढ़ा देती है। अग्नि का मुख्यार्थ परमात्मा है। उस की प्रतीक यह अग्नि चुन ली जाती है। व्यक्ति परमात्मा की मर्जी पर अपने को अर्पित कर दें। उस के नामों के गुणों को अपने में धारण कर लें। प्रभु सत्यस्वरूप है, हमारे अन्दर भी सत्य होना चाहिए। न्यायरूप होने से हम में भी न्याय आ जाये। ये जो २ प्रभु की मर्जियां हैं—न्याय, सत्य, पवित्रता आदि—मानव भी वैसा बनता जाये। पुराना शब्द इस के लिए रामराज्य है उसे लाना है। **Heavenly Kingdom** लानी है। मैं अपने को परमात्मा की मर्जी पर छोड़ दूं। धर्म राज्य स्थापित करने को बलिदान करना पड़े, प्राणों की आहुति भी देनी पड़े तो दे दूं। आज नास्तिक नहीं मानते। जब प्रभु भक्त का जीवन सुगन्धिमय बन जाता है तब नास्तिक स्वयं मान जाते हैं। यदि प्रभु भक्त हो कर उसके जीवन में गड़बड़ है तब लोग उसके आचरण को देख कर प्रभु पर भी हंसेंगे। प्रभु की निन्दा जितनी आस्तिक कराते हैं उतनी नास्तिक नहीं। समिधा स्वयं स्वाहा हो कर अग्नि को चमका देती है। उसी प्रकार प्रभु का भक्त भी अपने को परमात्मा में स्वाहा कर के गुणों को चमका देता है। आकूतिरग्निः — हमारे संकल्प छोटे-बड़े होते हैं। छोटे-छोटे संकल्पों पर भी अपने को बलिदान कर देना होता है। जिस का संकल्प ढीला वह असफल रहता है। व्यक्ति के समान समाज का भी संकल्प होता है हमारा संकल्प विश्व में वेद प्रचार कर के उसे आर्य बनाने का है। इस के लिए समिधाओं के समान अपने आपको भेंट करना होगा। जिस पर भी हाथ रख दिया, वही कूदने को तय्यार रहे, ननु न च न करे। व्यक्ति यह समझे कि कोई और बोले न बोले, अपनी आहुति दे या न दे, किन्तु मैंने जीवन भेंट करना ही है। ऋषि ने समाज के लिए शतांश देने का नियम रखा है पर कितने देते हैं—स्वयं विचार लेवें। प्रत्येक चाहता है कि दूसरा देवे पर मैं न दूं। ऐसी मनोवृत्ति अग्निहोत्री की नहीं होती। दूसरा करे या न पर मैंने अपना काम करना ही है। मैंने समिधा बनना है। ऐसा व्यक्ति व समाज जीवन के हर क्षेत्र में सफल होता है ऋषि दयानन्द ने यही किया और सिखाया। जब आर्य तो कौपीन के सिवाय कुछ था ही नहीं पर महन्तियां व लक्ष्मी उन के चरणों पर लोटीं। किस बात की कमी रही। समिधा बनकर जीवन बलिदानी को क्या कमी रहती है? प्रभु भक्तों को किसी प्रकार की न्यूनता नहीं रहती। उनके द्वार पर हाथी घोड़े हिनहिनाते रहते हैं। यश फैलता है, विपत्तियां दूर हो जाती हैं। जो समिधा के समान अपने को यज्ञ की अग्नि में भेंट कर देते हैं। महात्मा गांधी को क्या कमी थी। स्वय तो मामूली वस्त्र धारण करते थे पर काम करने के लिए करोड़ों रुपए एकत्रित हो जाते थे। यज्ञ से हम भी पाठ पढ़ें कि हम राष्ट्र की, धर्म की, समाज की समिधा बन जाएं। यजमान हम में से जिसपर हाथ रखे वही अपना जीवन भेंट करने के लिए तैयार रहे। आत्म-समर्पण की भावना जिस समय प्रत्येक समाज के व राष्ट्र के नर-नारी के जीवन में पैदा होगी—वह अपनी प्रत्येक वस्तु को समाज के लिए समिधा समझेगा—तभी कल्याण होगा। यज्ञ के इस व्यापक और महान् पाठ को हम पढ़ने में तत्पर रहें। फिर सारा समाज फूलता फलता दिखाई देगा। सम्पन्नता के भंडार भर जाएंगे। प्रभु हमारे जीवन को यज्ञमय बनावें।

श्री शास्त्री का अंतिम संदेश

प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री ने अपने आकस्मिक देहांत से कुछ घंटे पूर्व अपने देश के लोगों को शांति का एक संदेश दिया था। उन्होंने कहा : हाल ही के भारत-पाक संघर्ष में हम ने अपनी पूरी शक्ति से लड़ाई की थी और अब हमें पूरी शक्ति के साथ शांति के लिये लड़ना है। उक्त बात उन्होंने प्रतिरक्षा मन्त्री श्री वाई. बी. चह्वाण को कल रात सोवियत प्रधान मन्त्री श्री कोसीगिन द्वारा दिये गये एक भोज से लौटते समय कही थी।

युद्धकाल में विद्यार्थियों का दायित्व

(श्री सुन्दरलाल जी बोहरा, जोधपुर)



संस्था तथा व्यक्ति के दायित्व की परख एक जनतन्त्र में ही स्वस्थ रूप से की जा सकती है। एक जनतन्त्रीय व्यवस्था में व्यक्ति का दायित्व क्या हो? उसका समाज तथा संस्था के प्रति किस प्रकार का कर्त्तव्य हो, साथ ही उसका वैयक्तिक जीवन-दर्शन किन बातों पर निर्भर करे? इन समस्त बातों की कसौटी एक जनतन्त्रीय व्यवस्था में हो सकती है। एक जनतन्त्र में प्रायः ऐसा देखा जाता है कि व्यक्ति अपने दायित्व को टालने की चेष्टा में रहता है। भारत में यह कुप्रवृत्ति अधिक संक्रामक है। इस प्रवृत्ति का मूल कारण है: दायित्व का अनावश्यक रूप से विकेन्द्रिकरण। परिणाम स्वरूप एक जनतन्त्र में किसी व्यक्ति विशेष को कार्य विशेष के लिये उत्तरदायी ठहराना सहज नहीं है। नौकरशाही तथा मंत्रियों के स्वार्थों में अहर्निश होड़ लगी रहने के कारण सांस्थनिक तथा सामूहिक (सामाजिक) क्षेत्र में एक अव्यवस्था-सी दृष्टिगत होती है। स्थिति ऐसी हो जाती है कि व्यक्ति न तो व्यक्तिवादी बन पाता है न कल्याणकारी प्रवृत्तियों का पूर्णरूपेण पोषक ही। फिर भी व्यवस्था, चाहे सांस्थनिक हो अथवा वैयक्तिक उपादानों से निर्मित, चलती ही रहती है। ऐसी व्यवस्था को समझने के लिए बुद्धिजीवी संशय से घिरे हुए प्रतीत होते हैं: वे निश्चित रूप से किसी भी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच पाते। फलस्वरूप व्यक्ति तथा संस्था की स्थिति 'पूछे एक एकनसों कहां जाइ का करों?' सी हो जाती है।

एक एकतन्त्रीय व्यवस्था में कार्य विशेष के लिए व्यक्ति विशेष की ओर इंगित किया जा सकता है, लेकिन इसके विपरीत एक जनतन्त्र में व्यक्ति को चुना तो जा सकता है, उसको पकड़ा नहीं जा सकता। हकीकत में संशय का जैसा वातावरण एक जनतन्त्र में रहता है वैसा अन्य व्यवस्थाओं में कम प्रतीत होता है। इस व्यवस्था में इतने मूलभूत दोष होते हुए भी व्यक्ति का झुकाव इस ओर बढ़ता जा रहा है। यह झुकाव उस वक्त श्रद्धा और संयम में परिवर्तित हो जाता है जब एक राष्ट्र को संकटकाल अथवा सामरिक दुविधा का सामना करना पड़ता है।

भारत में आज ऐसी ही स्थिति है। आज लोगों में अपने ऊपर कुछ दायित्व ओढ़ने की प्रवृत्ति प्रतीत हो रही है। भूत, जिसे दकियानूसी तथा पोंगा पन्थ का ही पोषक माना जाता रहा है, से अब प्रेरणा ग्रहण की जा रही है। भूत के प्रति वितण्डावादी बुद्धिजीवियों को भी आश्वस्त होना पड़ा है। यों भूत को सन्दर्भ में बिना भविष्य का निर्धारण भी सहज नहीं है। जहां तक नव खून का प्रश्न है, भूत उन्हें काफी अंशों में प्रेरित कर सकता है। प्रेरक भूत को प्रसंग में रखने से नवयुवक वर्ग की उद्दण्डता उत्साह में बदल जाती है। पिछले महीनों में हुए सीमावर्ती समर के बारे में जितनी रुचि और तत्परता विद्यार्थी जगत् ने दिखाई है वैसी श्रद्धा भारत के स्वातन्त्र्य संग्राम के इतिहास में नवयुवक वर्ग द्वारा शायद ही दिखाई गई हो। हड़ताल तथा तोड़ फोड़ की प्रवृत्तियों में शीघ्र ही जुट जाने वाला वर्ग आज राष्ट्र रक्षा के लिये प्राणपण से जुटा हुआ है। पिछले महीनों में हुए सीमावर्ती युद्ध में भारत को जो कमाल एवम् कामयाबी हासिल हुई है उसका गौरव विद्यार्थी वर्ग को ही मिलना चाहिये। विपक्षी के हवाई अड्डों एवम् अड्डों को नष्ट करने वाले शूरमा हाल ही में कालेज से निकले हुए विद्यार्थी ही थे। अतः भारत का विद्यार्थी चाहे हड़ताली हो चाहे हंगामी, उसकी राष्ट्र भक्ति में विलांश भी संशय नहीं किया जा सकता।

प्रश्न है: युद्धकाल में विद्यार्थियों का अथवा यों कहिये किशोरों एवम् नव-युवकों का क्या कर्त्तव्य हो? कोरा विद्याभ्यास भी व्यवहारिक नहीं होता। कहा भी है—'बल बिन बुद्धी बापड़ी' अर्थात शक्ति अथवा शस्त्र के संयोग से रहित शास्त्र सुने हैं। गीता-ज्ञान में निष्णात होते हुए भी गाण्डीव रहित अर्जुन का कोई महत्व नहीं था; ठीक उसी प्रकार आज प्रखर बुद्धि वाला समाज अस्त्रशस्त्रों से रहित होने पर नगण्य है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के साथ-साथ, परिस्थितियां उत्पन्न होने पर, जो राष्ट्र 'युद्धाय कृत निश्चय' का भी मूल्य एवम् महत्व जानता है वही 'जीत्वा वा भोक्ष्यसे महिम्' का सच्चा अर्थ जानता है।

इस प्रकार युद्धकाल में विद्यार्थियों से बहुत अपेक्षाएं की जा सकती हैं:

१. जो विद्यार्थी प्रखर बुद्धि वाले हैं वे अपनी प्रेरणादायक रचनाओं से लोगों में राष्ट्र-भक्ति की भावना उभार सकते हैं।

२. जो विद्यार्थी शारीरिक रूप से सशक्त हैं वे एन. सी. सी. तथा गृह-रक्षा पंक्ति (**Home Guard Service**) में स्वयं को समर्पित कर सकते हैं। एन. सी. सी. को एक बन्धन न मान कर खाद्य पदार्थ की तरह अनिवार्य मानना चाहिये।

(क्रमशः)

श्री बृजलाल जी गुप्ता टोहाना

आर्यसमाज टोहाना के प्रधान चन्द्रगुप्त औषधालय के मालिक श्री बृजलाल जी गुप्ता आर्यसमाज के माने हुए स्तम्भ हैं। टोहाना समाज का सारा काम आपकी प्रेरणा का फल है। समाज के सभी कार्यों में हजारों दे चुके होंगे। आज हम इस कालम में उनकी आदर्शवादिता के क्रियात्मक रूप की एक बात लिखकर सब की आंखें खोलना चाहते हैं। श्री गुप्ता जी अग्रवाल जाति से सम्बन्धित हैं। अग्रवालों में आज भी लड़कों की सगाई, मिलनी व विवाह पर हजारों नहीं लाखों रुपये लड़की वालों से ले लेते हैं। लड़कियां एक चिन्ता का विषय बनती जा रही हैं। किन्तु बधाई हो श्री गुप्ता जी को। आपने आज के युग में कमाल करके दिखा दिया। आप अपनी सारी पुत्रियों के विवाहों से निश्चिन्त हो चुके हैं। उनके विवाहों पर क्या कुछ न दिया होगा। पर जब अपने प्रिय पुत्र श्री राजेन्द्र जी बी० ए० की सगाई आगरा में श्री चन्द्रभानु जी की सुपुत्री से होने लगी तो परम्परा के अनुसार लड़की वालों ने हजारों रुपए सगाई में देने चाहे पर श्री गुप्ता जी ने केवल एक रुपया और एक नारियल के सिवाय और लेने से सर्वथा इनकार कर दिया। अंगूठी तक भी नहीं ली। विस्तार से तो फिर कभी लेख के रूप में लिखेंगे। आज विवाह सौदेबाजी तथा **Booking** एजेंसी बन गये हैं लड़कों को खुले बाजार बेचा जाता है। इस बिगाड़ को समाज भी नहीं सुधार सका। वहां भी यही सौदेबाजी का तमाशा है। ऐसे काम में आर्यसमाज व स्वामी दयानन्द के सिद्धांत सब को भूल जाते हैं। ऐसे समय में विशेषकर अग्रवाल जाति में इतने बड़े आदर्शवाद को क्रियात्मिक रूप देकर श्री गुप्ता जी ने सारे आर्यसमाज का मस्तक ऊंचा किया है। बहुत २ बधाई। क्या जन से कोई प्रेरणा लेगा? सं०

भारत के सर्वप्रिय नेता प्रधान मन्त्री

श्री लालबहादुर शास्त्री का संक्षिप्त जीवन चरित्र

श्री शास्त्री दो अक्तूबर १९०४ को मुगल सराय में एक मध्यवर्ती घराने में उत्पन्न हुए थे। जब वह डेढ़ वर्ष के थे तो उनके पिता का देहान्त हो गया। उनका पालन उनके नाना ने किया। उन्होंने अपनी आरम्भिक शिक्षा स्थानीय हरिश्चन्द्र स्कूल में पाई। उन्होंने १९२१ में अपनी शिक्षा छोड़ दी। और गांधी जी द्वारा आरम्भ किए गए असहयोग आन्दोलन में हो गए। श्री शास्त्री बन्दी बना लिए गए और रिहाई के बाद उन्होंने काशी विद्या पीठ में पुनः पढ़ाई शुरू की और यहां से ही उन्होंने शास्त्री की उपाधि प्राप्त की। उनका सर्वेंटस आफ दी पीपल सोसाइटी से भी घनिष्ठ सम्बन्ध था। श्री शास्त्री ने १९२१ और १९४५ के मध्य हुए कांग्रेस के सभी आंदोलनों में भाग लिया था। वह आठ बार बन्दी बनाए गए और लगभग दस वर्ष जेल में रहे। १९५२ के आम चुनावों के बाद श्री शास्त्री राज्यसभा के लिए चुने गए और श्री नेहरू ने उन्हें परिवहन तथा रेलमन्त्री नियुक्त किया। १९५७ में वह इलाहबाद निर्वाचन क्षेत्र से लोकसभा में चुने गए और मृत्यु तक इसी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते रहे। मई १९५७ में वह परिवहन तथा संचार मन्त्री बने। कुछ समय के लिए वह वाणिज्य तथा उद्योग मन्त्री भी रहे।

श्री शास्त्री ने मंत्रिमंडल को कम महत्व दिया। उन्होंने संगठनात्मक मामलों को सम्भालने के लिए उत्तर प्रदेश मंत्रिमडल से त्यागपत्र दे दिया। पुनः रेलमन्त्री के पद से उन्होंने यह कह कर त्यागपत्र दे दिया कि अरयालूर रेलवे दुर्घटना का संवैधानिक तौर पर सारा उत्तरदायित्व उन पर है। जब कामराज योजना का ढांचा बना तो उन्होंने गृहमन्त्री के पद से त्यागपत्र दे दिया और संगठनात्मक कार्य सम्भाल लिया। श्री शास्त्री ने कांग्रेस संगठन के भीतर और बाद में व्यापक क्षेत्र में शांति कायम करने की भूमिका निभाई। ताशकन्द शिखर सम्मेलन की समाप्ति के शीघ्र बाद उनके आकस्मिक देहांत ने इस भूमिका को एक विशिष्ट रूप प्रदान कर दिया।

श्री शास्त्री का स्वर्गीय नेहरू के अतिरिक्त आचार्य नरेन्द्रदेव, श्री रफी अहमद किदवई और पी. डी. टंडन जैसे महान नेताओं से निकट सम्बन्ध रहा। वह एक निम्न वर्ग में पैदा हुए भारतीय राजनीति में उच्चत्तम स्थान पर पहुच गए किंतु एक प्रमुख नेता के तौर पर सफलता प्राप्त करने के बाद भी उनका स्वभाव नहीं बदला। उनका जीवन बहुत साधारण था और १९४२ तक वह चाय भी नहीं पीते थे। श्री शास्त्री का कांग्रेस के आदर्शों में दृढ़ विश्वास था और कई प्रांतों की जटिल समस्याओं को हल करने के बाद इन्होंने लोगों के हृदयों तथा इतिहास में एक महत्वपूर्ण तथा अद्वितीय स्थान प्राप्त कर लिया था। स्वर्गीय नेहरू की तरह श्री शास्त्री रात को देर तक राष्ट्र सेवा के कार्य में संलग्न रहते थे इसके साथ ही प्रातः उठने के अभ्यस्त थे। प्रातः से ही वह आगन्तुकों से भेंट करना शुरू कर देते थे। कई बार ऐसे भी अवसर आते थे जब वह आध-आधी रात को सचिवालय से वापस आते थे।

१९६४ में श्री नेहरू के निधन के बाद जब नेतृत्व का मामला विचाराधीन आया तो उन्होंने अपने आप को पृष्ठभूमि में रखा उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि वह प्रधानमन्त्री का पद तभी सम्भालेंगे यदि कांग्रेस पार्टी उन्हें सर्वसम्मति से अपना नेता चुनेगी। तुरन्त ही यह स्पष्ट हो गया कि सभी राज्यों तथा संसद के कांग्रेसपार्टी की बहुसंख्या ने श्री शास्त्री को राष्ट्र का नेतृत्व संभालने के लिए अधिमान दिया। श्री कामराज ने सदस्यों से विचार विमर्श किया था, घोषणा की कि बहुमत श्री शास्त्री के पक्ष में है। उन्होंने राष्ट्र के नाम अपने पहले प्रसारण में ही घोषणा की थी—हमारा मार्ग सीधा और स्पष्ट है। अर्थात् हमारा लक्ष्य देश में समाजवादी लोकतन्त्र का निर्माण करना और सभी को समृद्ध बनाना और विश्व शान्ति को बनाए रखना तथा सभी राष्ट्रों से मैत्री बनाना है। पड़ोसी देशों के लिए भारत की मित्रता का सन्देश लेकर उन्होंने नेपाल की यात्रा की थी। काहिरा के तटस्थ सम्मेलन से लौटते समय श्री शास्त्री कुछ समय कराची में भी रुके थे जहां उन्होंने प्रधान अयूब खां से संक्षिप्त बातचीत की थी। हाल ही में श्री शास्त्री का स्वदेश में बहुत व्यस्त कायक्रम था किन्तु उन्होंने बर्मा के राष्ट्रपति जनरल नेविन के निमन्त्रण का सम्मान करते हुए गत वर्ष दिसम्बर को बर्मा की राजकीय यात्रा की थी। श्री शास्त्री ने लंका में रह रहे भारतीयों के भविष्य के लिए एक समझौता करके दोनों देशों के सम्बन्धों में बनी एक मुख्य बाधा को दूर किया था।

हाल ही में काश्मीर में पाकिस्तान द्वारा उत्पन्न स्थिति का जिस योग्यता से श्री शास्त्री ने सामना किया, उनसे उनकी ख्याति चरम-सीमा पर पहुँच गई थी। पाकिस्तानी आक्रमण को पछाड़ने के लिए लाहौर और स्यालकोट सैक्टरों में भारतीय सेनाओं को आगे बढ़ाने का आदेश देने के निर्णय ने उन्हें वास्तविक राष्ट्रीय नायक सिद्ध कर दिया था। जहां भी वह गए लाखों लोगों ने उनका शानदार स्वागत किया। बम्बई कलकत्ता और मद्रास जैसे बड़े नगरों में तथा देहाती क्षेत्रों में जनता प्रधानमन्त्री को सुनने के लिए उमड़ पड़ी थी। श्री शास्त्री ने आज ताशकन्द से भारत लौटते हुए काबुल रुकना था जहां उनका सीमांत गांधी खान अब्दुल गुफ्फार खां से भेंट का कार्यक्रम था परन्तु नियति को कोई नहीं टाल सका। काल के क्रूर हाथों ने उन्हें हम से सदा के लिए छीन लिया। जैसा कि श्री कोसीगन ने कहा, शास्त्री का नाम इतिहास में अपने शांति प्रयत्नों के लिए सदा अमर रहेगा।

आर्य-जगत रोहतक के समाचार

१. स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में आर्य समाज प्रधानामोहल्ला की ओर से दिनांक ११ पौष को प्रभात फेरी की गई।

२- १२ पौष तदनुसार २६ दि० रविवार के दिन आर्य केन्द्रीय सभा की देख रेख में आर्य वीर दल के तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया।

२६ पौष संवत २०२२ रविवार तदनुसार ६ जनवरी को रोहतक की समस्त आर्य समाजों व संस्थाओं का सम्मिलित सत्संग आर्य समाज प्रधाना मोहल्ला में हुआ।

५. ऋषिबोधोत्सव निश्चित तिथि से एक सप्ताह पूर्व अर्थात प्रथम फागुण स० २०२२ (१२ फरवरी) को आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान में यह पवित्र दिन मनाया जायेगा। जिस के कार्यक्रम में प्रातःकाल की प्रभात फेरियां, जलूस व सार्वजनिक जल्सा करना, निश्चित है और ऋषिबोधोत्सव के दिन प्रत्येक आर्य समाज व प्रत्येक आर्य घर पर दीपमाला होगी —विद्यार्थी

जीवन का सरल मार्ग

ले० श्री दयानन्द जी आर्य एम. ए. रिसर्च स्कालर,
वि० वै० शोध संस्थान होश्यारपुर



भगवान् वेद में एक सारगर्भित मन्त्र आता है। मंत्र यों है, 'न तं विदाथ य इमा जजानान्यत् युष्माकमन्तरं बभूव, नीहारेण प्रावृता जल्प्याचासुतृप उक्थ शासश्चरन्ति।' इस मंत्र का भावार्थ यह है कि उस परमात्मा को कौन नहीं जानता, वे नहीं पहचान सकते जिनका मन अभिमान रूपी कोहरे से ढका हुआ है, वह प्रभु हमें पैदा करने वाला है एवं हम से भिन्न है। यहां अद्वैतवाद का स्पष्ट शब्दों में खंडन है। (द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया) में आलंकारिक रूप से ईश्वर जीव, प्रकृति की भिन्न २ सत्ता का प्रतिपादन है। इस मंत्र में भी ऐसा ही संकेत है, ब्रह्म जीव नहीं, जीव ब्रह्म नहीं बन सकता, अलग २ होते हुए भी ब्रह्म सर्वज्ञ है जीव अल्पज्ञ है। इच्छा रखते हुए भी जीव उसे नहीं पा सकता क्योंकि पाप का अंधेरा उस पर छा चुका है। जब भगवान भानु भास्कर मेघों से आच्छन्न हो जाता है तो प्रयत्न करने पर भी मनुष्य उसे नहीं देख सकता। भगवत् प्राप्ति में बाधक हैं संसार के पाप, दुर्गुण व्यसन। महा कवि टैगोर ने गीतांजलि में लिखा है कि प्रभु! मेरी चीख निकल जाती है जब मैं स्वयं निर्मित बन्धनों को काटना चाहता हूं। जैसे मकड़ी बड़े ही प्रयत्न से जाला बुनती है किंतु अंत में उसी में फंसकर मृतप्राय हो जाती है, इसी प्रकार मनुष्य अपने सांसारिक कार्यों में लिप्त होकर संसार-निर्यंता को विसरा देता है। महाभारत में एक रोचक शिक्षाप्रद प्रसंग लिखा है। विदुर धृतराष्ट्र को बतलाते हैं कि राजन्! रात्रि के अन्धकार में एक मनुष्य घबरा जाता है। काले-काले बादलों में जब बिजली कौंधती है तो सामने वृक्ष पर चढ़ जाता है। पुनः बिजली चमकने पर वह देखता है कि वृक्ष को एक काला व एक सफेद चूहा काट रहा है, नीचे कुएं में अजगर फण फैलाए बैठा है। वह भयभीत हो उठता है। अकस्मात् मधु-मक्खियों के छत्ते से रस टपकता है, वह उसी के आनन्द में भयानक दृश्यों को भूल जाता है। वृक्ष कट गया, वह कुएं में गिरा गया। महाभारत कार ने इस दुर्घटना का मुख नर-जीवन की ओर मोड़ा है। मानव-जीवन वृक्ष है, आंधी बादल विषय है, सांप मृत्यु है, छः मुंह वाला हाथी, छः ऋतुएं हैं जो क्षण-क्षण मानव- जीवन के समय को काटती हुई द्रुत गति से व्यतीत हो रही हैं। किंतु मानव संसार को ही सर्वस्व मानता है, इसे ही उपास्य समझ लेता है, किंतु मृत्यु का अजगर खेल समाप्त कर देता है। कैसे मिले वह प्रभु? जब संसार ही साध्य बन गया, भगवान् वेद कहते हैं 'तेन त्यक्तेन भुंजीथा' संसार को भोगो किन्तु त्यागी बन कर के। नाव सागर में रहती है ठीक है किन्तु जब सागर का पानी नौका में रहना प्रारम्भ कर देता है तो नौका डूब जाती है। कठोपनिषद् का नचिकेता ब्रह्म जिज्ञासु है। यम प्रलोभन देते हुए गिनाता है—ये ये का मादुर्लभा मर्त्यलोके सर्वान्कामांश्छन्दतः प्रार्थयस्व इमा रामाः सरथाः सतूर्या नहीदृशा लम्भनीया मनुष्यैः। आभिर्मत्प्रत्ताभिः परिचारयस्व नचिकेतो मरणं मानुप्राक्षीः यम तीनों लोकों का वैभव उसे देने को उद्यत हैं वह कल्पधेनु है किन्तु नचिकेता टस से मस न हो कर उत्तर देता है—

'श्वोभावा मर्त्यस्य यदन्तकैतत्सर्वेन्द्रियाणां जरयन्तितेजः। अपि सर्वं जीवितमल्पमेव तवैववाहास्तव नृत्यगीते।' नचिकेसंसीमता पदार्थों को नश्वर बना कर अनश्वर ज्योति को ढूंढना चाहता है। उस के उत्तर में वही युक्ति है जो बृहदारण्कोपनिषद् में मैत्रेयी याज्ञवल्क्य को कहती है. यन्नुम इयमगोः सर्वा पृथिवी वित्तेन पूर्णा स्यात्कथं तेनामृता स्यामिति, क्या सारी भूमि का ऐश्वर्य मैत्रेयी को अमरता दे सकता है, उत्तर मिलता है नहीं, फिर वह भी याज्ञवल्क्य का साथ देती है। मानव संसार का न बन कर भगवान् का बने। मन्त्र में कहा है कि प्रभु-भक्त अभिमान न करे। कवि ने एक शिक्षा-प्रद कल्पना की कथा बनाई कि काला बादल धरती की ओर आ रहा था व सफेद बादल ऊंचा स्वर्ग लोक को पहुंचना चाहता था। स्वर्ग लोक के द्वार पर पहुंच कर द्वारपाल से स्वर्ग में स्थान प्राप्त करने के लिए कहा। द्वारपाल ने कहा कि अभी थोड़ी देर हुई एक रिक्त स्थान था वह काले बादल को दे दिया गया। नम्रता से विद्या चमकती है। अभिमान मानव को मानवता से नीचे गिरा देता है। योगेश्वर राष्ट्र-नेता देव दयानन्द जी से लोगों ने पूछा स्वामी जी! आप ज्ञानी हैं कि अज्ञानी। कहने लगे जिस कार्य को नहीं जानता वहां तो अज्ञानी व जिस को जानता हूं वहां ज्ञानी। ऋषि का प्रभाव चहुं ओर पड़ा। कितनी निरभिमानता। अपना कोई पन्थ नहीं चलाया, अपनी लाश को भी जलाने को कहा ताकि किसी कृषक के खेत को लाभ हो जाए। जो प्रभु की अनन्त सृष्टि को देखते हैं, उन्हें उसमें नित्य नया आविष्कार दिखाई देता है मानव की बुद्धि चकरा जाती है। यह उस भूमि का विस्तार है, उसके तीनों में चराचर विस्तीर्ण है; यह भूमि तो ब्रह्मांडों की संख्या के आगे एक पैंसिल से डाला हुआ बिंदु-सा है। अभिमान किस का। जिस पर मानव अभिमान करता है वह तो चिरस्थायी नहीं है। मानव की प्रिय से प्रिय वस्तु यहां रह जाती है। अजब खेल है प्रभु का, बोलता खाता मानव ऐसा सो जाता है कि मानो सदा के लिए कोई अपरिचित हो। तब हे मानव, शास्त्रों का उपदेश यही है कि संसार में रह कर उस प्रभु के चरणों में बैठ। धन का वास किया, सुख ऐश्वर्य को भोगा, किंतु यदि कुछ समय भगवान की उपासना नहींकी तो कुछभी नहीं किया। यजु. ३३।४० में लिखा है—

वट् सूर्य श्रवसा महां।
असि सत्ता देव महां।
असि मह्ना देवानामसुर्यः
पुरोहितो विभुः ज्योतिरदाभ्याम्

अर्थात् हे मनुष्यो, जिस ईश्वर ने पालना के लिए अन्नादि को उत्पन्न करने वाली भूमि और मेघ का प्रकाश करने वाला सूर्य रचा है वही परमेश्वर उपासना करने योग्य है।

बाल्मीकि रामायण बालकांड २४।३१-३२ का श्लोक भाग, आश्वासितो लक्ष्मणेन रामः सन्ध्यामुपासत वर्णन करता है कि राम लक्ष्मण ने प्रातः उठ कर स्नानादि के बाद ईश्वर का ध्यान करके यज्ञ किया। अयोध्याकांड ६।११ में 'सहपत्न्या विशालाक्षा नारायणमुपागमत'ईश्वर भजन करने की महापुरुष में कर्तव्य-परायणता दिखाई है। न्यूटन तो उन्नत विद्या के सागर में थोड़े से कण चुनने को बता रहे हैं। सुकरात को किसी ने कहा कि आप तो बड़े ही बुद्धिमान हो, कहने लगा,

(शेष पृष्ठ ८ पर)

स्वास्थ्य की ओर—

स्वास्थ्य के मुख्य आधार

(ले० कविराज वैद्य रामसिंह जी आरोग्य मंदिर यमुना नगर)

****

कविराज वैद्य रामसिंह जी आयुर्वेदाचार्य आरोग्य मन्दिर यमुना नगर के बड़े प्रसिद्ध आयुर्वेद के लम्भ हैं। विशेष अनुभवी हैं आपका स्वयं का स्वास्थ्य इस बात का परिचय देता है। आपकी लिखित पुस्तक आरोग्य प्रकाश स्वास्थ्यपथ पर चलने के लिए एक उत्तम प्रदर्शक का काम देती है। आर्यजगत के लिए स्वास्थ्य सम्बन्धी अपने अनुभव भरे विचार देते रहते हैं—सं०

स्वास्थ्य के मुख्य आधार चार माने जाते हैं।

१—आवश्यक और संतुलित भोजन।

२—उचित निद्रा।

३—ब्रह्मचर्य—ब्रह्म के नियमों के अनुसार आचरण।

४—उचित और नियमित व्यायाम। इनकी संक्षिप्त विवेचना अपने वर्षों के अनुभव के आधार पर की जाती है।

सर्वप्रथम आधार आहार

शरीर की रक्षा के लिए हम जो वस्तु मुख अथवा नासिका से भीतर ले जाते हैं वह सब आहार में सम्मिलित है। इस में विविध प्रकार का भोजन, सब प्रकार के पेय पदार्थ दूध जल आदि तथा मुख अथवा नासिका द्वारा भीतर ले जाई गई वायु भी सम्मिलित है। आहार के विषय में परिचय देने से पूर्व यह बता देना आवश्यक है कि आहार का उद्देश्य क्या है? आहार का एकमात्र उद्देश्य शरीर रक्षा है। यह शरीर पांच भौतिक तत्वों से बना है या सरल भाषा में यों कहें कि रोटी-दाल सब्जी दूध आदि पदार्थों के सहयोग से बना है।

कार्य करते, चलते-फिरते एवं [illegible] श्वास आदि [illegible] घिसता है। इसमें [illegible] आती है। अपनी [illegible] यह भूख प्यास [illegible] प्रकट करता है। जो मानव इस प्रक्रिया को समझ कर इस शरीर की रक्षा के निमित्त अपनी प्रकृति के अनुकूल पदार्थ खाता और पीता है, वह तो प्रकृति के नियमों का पालन करता है और स्वस्थ रहता है। किन्तु जो बिना भूख प्यास अनावश्यक पदार्थ समय कुसमय केवल स्वाद के लिए या अपने मित्रों के झूठे प्रेम के दबाव के कारण खाता और पीता है; वह पाप करता है और प्रकृति माता के सुन्दर [illegible] उसे दण्ड देती है [illegible] शरीर एक-दो बार के नियम के भंग को सहन कर लेगा, किन्तु बार-बार के उल्लंघन से अवश्य अस्वस्थ हो जायेगा। इसी बिना भूख प्यास खाने-पीने के अज्ञानता पूर्ण स्वभाव के कारण आज नब्बे प्रतिशत व्यक्ति रोगों में फंसे हैं। ऐसे व्यक्तियों को मैं चेतावनी देना चाहता हूं कि वे यदि रोगों से बचना चाहते हैं तो आहार का उद्देश्य समझें। बिना भूख-प्यास खाना पाप समझें और फिर इस नियम पालन के अनुपम आनन्द का वे स्वयं अनुभव करेंगे।

आर्य जगत में विज्ञापन देकर लाभ उठायें।

जीवन का सरल मार्ग

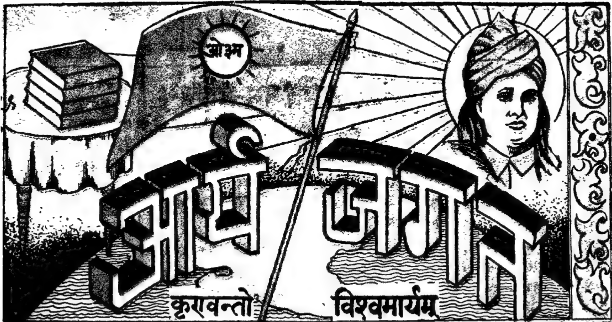
(पृष्ठ ७ का शेष)

मैं स्वयं को सब से बड़ा मूर्ख समझता हूं। प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइन्स्टीन आश्चर्य को अपना देवता मानता है क्योंकि एक समस्या वह हल करता है तो अन्य खड़ी हो जाती है अनन्त सृष्टि है, अनन्त भगवान है, अनन्त उसकी कृपा है। दर्प के बिना सरलता से उसके दर्शन होंगे। यही जीवन का सरल मार्ग है।

लेख राम नगर में यज्ञ

१८—१—६६ से डी०ए०बी० हायर सैकण्डरी स्कूल के संस्थापक महात्मा कर्म चन्द जी की पावन स्मृति में उनके सुपुत्र ला० जगदीश मित्र जी के घर यजुर्वेद परायण यज्ञ शुरु हो रहा है जिस की पूर्णाहुति २३-१-६६ को दिन के ठीक ग्यारह बजे होगी।—रोशनलाल मंत्री

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० २०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 1

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे — वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक ५) ११ माघ २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१– २३ जनवरी १९६६ (तार 'प्रादेशिक' जालन्ध

वेद सूक्तय:

एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति

उस एक भगवान् को जो सद्-सत्य रूप है, विप्राः—ज्ञानी लोग बहुधा-बहुत नामों से वदन्ति—कहते हैं, बोलते हैं। परमात्मा एक ही है, किन्तु मेधावी उसे अनेक नामों से पुकारते हैं।

ददृशे न रूपम्

उस परमात्मा का रूपम-रूप नहीं ददृशे—दिखलाई देता। प्रभु निराकार है, अरूप है। इसी लिए उसका रूप भी नहीं है और इसी कारण वह इन आंखों से किसी को भी दिखाई नहीं देता। वह तो अकाय और अरूप है।

साध्यानामधिराजो बभूव

वह भगवान ही साध्यानाम्—सारे जीवों व चराचर पदार्थों का अधिराजः—स्वामी है। इस सारे विश्व का विश्वपति वही है। वही प्रजापति व जगत पति है।

तस्य भूतं भव्यं वशे

यह जितना भी भूतम्-भूत है, पैदा हुआ संसार है और भव्यम्-न दिखाई देने वाला जगत् है—सारा ही तस्य-उसी के वश में है। सबका नियामक है।

अ थ र्व वे द से

वे दा मृ त

शत्रु को काट दिया जायेगा

इदमिन्द्र शृणुहि सोमप यत् त्वा हृदा शोचता जोहवीमि।
वृश्चामि तं कुलिशेनेव वृक्ष यो अस्माकं मन इदं हिनस्ति ॥

अर्थ—(इदम्) यह मेरी घोषणा (इन्द्र) हे इन्द्र (शृणुहि) सुनें (सोमप) वीरता के सोम रस का पान करने वाले (यत् त्वा) जो तुझ को (हृदा) दिल से (शोचता) दीप्ति से भरे हुए दिल से (जोहवीमि) पुकारता हूं। मैं (वृश्चामि) काट डालूंगा (तम्) उस दुष्ट का शत्रु को (कुलिशेन) तेज कुल्हाड़े से (वृक्षम् इव) जैसे वृक्ष को काट दिया जाता है। (यः) जो भी दुष्ट पापी (अस्माकम्) हमारे (मन इदम्) इस मन को (हिनस्ति) हिंसा करता है, मारता है।

इस का भाव यह है

मेरा मन सदा शान्ति चाहता है। इस में उदार विचार भरे हुए हैं। सब से प्रीति-पूर्वक व्यवहार करता है। किन्तु जो शत्रुता से भरे हुए विचारों को लेकर मुझ से वैर-भाव रखते हैं। अपने राक्षसीपन का परिचय देते हैं। अथवा जिन को अपने बल पर अभिमान है और इसी कारण ऐसे राष्ट्रघाती शत्रु, चोर लुटेरे मेरे मन को मारना चाहते हैं। मेरे मन के विचारों को प्रेम से उत्तर न देकर प्यार का तिरस्कार करने में लगे हैं। वे कान खोल कर सुन लेवें कि जैसे तेज़ कुल्हाड़े से पेड़ को काट दिया जाता है। उसी प्रकार मैं भी अपने विचारों की, साथियों की वीरता भरी तथा हथियारों की शक्ति से उन सारे शत्रुओं को काट कर रख दूंगा। कोई भूल में न रहें। ऐसे पिशाचों को चकनाचूर कर के रख दूंगा। अथर्ववेद २—१२—३

ऋषि दर्शन

व्याप्तो ज्ञानस्वरूपश्च

वह परमात्मा सब स्थानों पर व्यापक है। कोई भी स्थान ऐसा नहीं है जहां पर भगवान् व्यापक नहीं हैं। परमेश्वर ज्ञान रूप है, सारे ज्ञानों का भण्डार है। उसकी कृपा से जीवन में ज्ञान का प्रकाश मिलता है। ज्ञानस्वरूप प्रभु को प्रणाम।

नास्मात्पर उत्तमः

संसार में अनेक प्रकार के पदार्थ सुन्दर व बढ़िया हैं किंतु भगवान् से बढ़कर कोई भी वस्तु उत्तम नहीं है। सब से प्यारी तथा सर्वश्रेष्ठ तो भगवान् ही वस्तु है। उसके स्थान पर न तो कोई पूज्य है तथा न सर्वश्रेष्ठ ही है।

परम कारुणिकान्तर्यामी

वह भगवान् बड़ा ही दयालु करुणा के भण्डार हैं। उसकी कृपा का दर्शन सर्वत्र होता है। वही अन्तर्यामी है। प्रत्येक बात के ज्ञाता हैं। हमारे हरेक कर्म को जानते तथा उसका फल हमें प्रदान करते रहते हैं। उस से कोई भी बात छिपाई नहीं जा सकती।

भा ष्य भू मि का से

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी

सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

राष्ट्र-भक्ति और प्रभु-भक्ति-६

(श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की अमृतभरी कथा)



(गतांक से आगे)

बुद्धि क्रोध से बिगड़ती है। क्रोध की अग्नि जलने से बुद्धि के तन्तु जलकर भस्म हो जाते हैं। योग पद्धति से क्रोध को दबाने का भी एक ढंग है और वह यह कि जैसे ही क्रोधाग्नि प्रज्वलित हो अपनी जिह्वा को दांतों तले दबा लो और मुंह से ही ओम तत्-सत्.. ओम तत् सत् का जाप करो। इससे क्रोध स्वयंमेव भाग जाएगा। यह क्रोध को दबाने का एक ढंग है। यदि आप यह चाहते हैं कि आपको क्रोध आए ही नहीं तो इसके लिए कठोर परिश्रम की आवश्यकता है। क्रोध बुद्धि-नाशक है।

बुद्धि को बिगाड़ने वाली दूसरी चीज वहम है। दुनिया में कितनी ही बातें वहम या भ्रम के कारण उत्पन्न होती हैं। भ्रम के कारण ही बुद्धि बिगड़ती है। एक सज्जन थे। वह प्रतिदिन तीन साधुओं को भोजन कराने के पश्चात ही सपरिवार भोजन करने को बैठते थे। एक दिन वह प्रातःकाल काफी देर तक तीन साधुओं की खोज करते रहे लेकिन न जाने क्यों कोई भोजन का इच्छुक न मिला। बड़े निराश हुए। अपने दैनिक व्रत को तोड़ने को वह तैयार न थे। उन्होंने एक तरकीब सोच निकाली और बाजार से चीनी (खांड) के बने हुए तीन 'बावे' घर ले गए। घर पहुंच कर पत्नी से कहा—"भाग्यवान। बहुत ढूंढने पर भी कोई साधु महात्मा भोजन करने के लिए नहीं मिले। मैं चीनी के तीन'बावे' ले आया हूं। तू इन्हें ही भोग लगा दे।' इत्तफाक से तीन साधु भोजन की तलाश में मुहल्ले ही में आ गए और उक्त महाशय ने प्रसन्नता पूर्वक उन्हें भोजन के लिए अपने घर बुला लिया। जब तीनों साधु आसनों पर विराजमान हो गए तो उक्त महाशयजी बाजार से दही लेने चले गए। इतने में स्कूल पढ़ने के लिए गए तीन बच्चे घर में आ गए और उन्होंने रसोई में पड़े चीनी के तीन बावों को देखा तो एक ने कहा—मां एक बावे को मैं खाऊंगा दूसरे ने कहा—एक को मैं खाऊंगा। और तीसरेने भी जब यही कहा तो तीनों साधु आसन छोड़ कर भागे। उन्होंने सोचा कहां मुसीबत में फंस गए। भोजन करने आए थे, स्वयं भोजन बनने जा रहे हैं। महाशय जी जब दही लेकर आए तो यह देख कर बड़े परेशान हुए कि तीनों साधु महात्मा अपने २ आसनों से गायबहैं। पत्नी सेपूछा तोउसने 'बावे' वाली बात कह सुनाई। महाशय जी भागे-भागे फिर बाजार में पहुंचे और उन साधुओं के आगे हाथ जोड़ कर कहा—महाराज। बच्चे तो चीनी के 'बावे' खाने की बातें कर रहे थे। आप को भ्रम हुआ। मेरे घर पधारिए। मेरा तो सारा परिवार भूखा बैठा है।

यह है भ्रम से बुद्धि बिगड़ने का एक उदाहरण। आर्यसमाज देवी देवताओं का पूर्ण सन्मान करता है। आर्यसमाजी भगवान कृष्ण को श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं। कृष्ण ने गीता का महान सन्देश संसार को दिया। मर्यादा-पुरुषोत्तम राम भी हमारी श्रद्धा एवं सम्मान के पात्र हैं। देवी देवताओं की भी हम पूजा करते हैं। आज ही प्रातः महात्मा आनन्द भिक्षु जी ने यज्ञ कराया और वहां देवी देवताओं के लिए अनेक आहुतियां डाली गईं। लेकिन इस सब के बावजूद कुछ लोगों ने आर्यसमाज के विरुद्ध एक वहम फैला रखा है।

बुद्धि बिगड़ने का तीसरा कारण है चिन्ता। यह बहुत ही भयंकर है। हमें कभी चिन्ता नहीं करनी चाहिए। चिन्ता की बजाए चिन्तन करना चाहिए। कई लोगों को यही चिंता रहती है कि उन्हें कोई चिन्ता नहीं है।

इसी तरह बुद्धि के विकास के भी तीन तरीके हैं— प्रथम सदा प्रसन्न रहो भगवान् कृष्ण पांच हजार वर्ष पूर्व कह गए हैं कि जो व्यक्ति हमेशा प्रसन्न रहता है उस के कष्ट अपने आप हट जाते हैं। ऋषियों ने लिखा है कि हमारे शरीर में ७२१०२०१ कीटाणु हैं। जब इन्सान दिल खोलकर हंसता है तो यह सब कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। एक सज्जन कहने लगे कि किसी सभा-सोसायटी में बैठ कर जोर से हंसना शिष्टाचार के विरुद्ध है। मैंने जवाब दिया—अरे भाई! शिष्टाचार का तो हमेशा ख्याल रखना चाहिए। सभा-सोसायटी में हंसना पसन्द नहीं तो स्नानागार में जाकर हंस लो। हंसे बिना गुजारा नहीं हो सकता।

When you weep your Trouble Deep, you When Laugh your Trouble Sweep.

जिसका अन्तःकरण शुद्ध है, ईर्ष्या, द्वेष का जो शिकार नहीं, काम, क्रोध से जो बचता है वही खुलकर हंसेगा।

बुद्धि के विकास का दूसरा तरीका यह है कि अच्छे ग्रन्थ पढ़ो। उपन्यास और सिनेमा की गन्दी पुस्तकें पढ़ने से बुद्धि बिगड़ती है। हमें उपनिषद, गीता, रामायण और अन्य धार्मिक पुस्तक का पाठ करना चाहिए। तीसरे—अच्छी संगति में बैठना चाहिए। सत्संग में जो कुछ भी हो उसे ग्रहण कर लेना चाहिए।

एक पंडित जी गौ सेवा पर कथा कर रहे थे। एक दुकानदार का लड़का आवारा था। उसने उसे कहा—'जा बेटा! पंडित जी रोज सभा करते हैं। तू सुनाकर, शायद तुम्हें भी कोई अच्छी संगति का असरहो जाए।' लड़का कथा सुनने जाने लगा। पंडित जी ने कथा में कहा कि यदि गाय कहीं कुछ खा रही हो तो उसे रोकना नहीं चाहिए। दूसरे दिन लड़का अपने पिता को आटे, दाल की दुकान पर बैठा था कि एक गाय आकर आटे की बोरी में मुंह मारने लगी। लड़के ने पंडित जी की कथा के इस वाक्य को पल्ले बांध रखा था कि जब गाय खा रही हो तो उसे रोकना नहीं चाहिए और लड़के ने दुकान पर आटा खा रही गाय को भी नहीं रोका। इतने में लड़के के पिता भी आ गए और जब गाय को आटे की बोरी में मुंह डाले देखा तो चिल्ला कर कहा—'अरे मूर्ख! देखता नहीं गाय आटा खा रही है।' लड़के ने कहा—'पिता जी! पंडित जी ने रात कथा में कहा था कि खा रही गाय को मत रोको।' पिता ने क्रोध में कांपते हुए कहा—'मूर्ख! पण्डित की कथा को रात वहीं छोड़ आया करो।'

सत्य आधार—परमात्मा ही हम सबका आधार है। परमात्मा महान, सर्व-अन्तर्यामी है। जिसे प्रभु का आशीर्वाद प्राप्त है, उस पर कभी कोई विपदा नहीं आ सकती। यदि किसी की शहर के थानेदार से दोस्ती हो जाए तो वह बाजार में अकड़कर के चलता है। परन्तु यदि परमात्मा से सम्बन्ध स्थापित हो जाए तो क्या कहने। परमात्मा से सम्बन्ध बनने से अकड़ नहीं, नम्रता आएगी। सर्व-अन्तर्यामी ईश्वर दिखाई देता है। बातें भी करता है, लेकिन उसे देखने के लिए अन्तरात्मा के नेत्र खुलने चाहिएं। (क्रमशः)

सम्पादकीय—

आर्य जगत

वर्ष २६] रविवार २०२२, ३ जनवरी १९६६ [अंक ४

गणतन्त्र दिवस का संकल्प

प्रतिवर्ष २६ जनवरी का दिवस भारत के लिए गणतन्त्र दिवस के रूप में आता है। उस दिन भारत के माननीय प्रधानमन्त्री नई देहली में ऐतिहासिक लाल किले की ऊंची प्राचीर पर खड़े होकर राष्ट्र की लाखों करोड़ों जनता के सामने राष्ट्र का ऊंचा झंडा लहराते हैं तथा सारे देश को एक विशेष सन्देश देते हैं। यह दिवस हमारे देश के इतिहास में एक विशेष महत्व रखता है। उसी की स्मृति रूप सारा देश अपने संकल्पों को दुहराता रहता है। भारत माता के मान सम्मान की रक्षाहित तन मन धन भेंट करने की हम अपने जीवन में दीक्षा लेते हैं। सारे देश में बाघा से लेकर कन्याकुमारी तक तथा द्वारिका से लेकर नागा प्रदेश तक इस गणतन्त्र दिवस पर बड़े २ समारोहों में राष्ट्रभूमि की रक्षा का व्रत लिया जाता है। इस बार का यह दिवस सारा राष्ट्र आंसुओं के साथ मनायेगा। वैसे तो इस बार भारत ने एक भीषण संग्राम का सामना किया है इस युद्ध में हमारे पड़ोसी ने भीषण से भीषणतम शस्त्रों, टैंकों, विमानों तथा दूरमार तोपों का बलपूर्वक प्रयोग किया। भारतीय वीर जवानों ने आत्मबलिदान से एक नया वीरता का इतिहास स्याही से नहीं वरन अपने रक्त से लिख दिया है। युद्धविराम के बाद रूस के महान मन्त्री श्री कोसीगिन ने बड़ा प्रयत्न करके ताशकन्द में हमारे देवस्वभाव प्रधान मन्त्री श्री शास्त्री जी को तथा उधर से श्री अयूब को बुलवा कर परस्पर शान्ति से अपनी समस्या हल करने के लिए जो प्रशंसनीय काम किया। वह इतिहास का एक अध्याय बन गया है। अन्तिम दिन सम्मिलित घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर भी हो गए। किन्तु विधना को कुछ और ही मन्जूर था—रात को एकदम दिल के दर्द से भारत का शान्ति प्रिय देवता नेता प्रधानमन्त्री श्री शास्त्री जी कुछ मिन्टों में ही सदा की नींद में सो गये। विमान से उनका शव आया। सारा देश व सारा विश्व रोया है। केवल १८ मास के थोड़े समय में इस महान् नेता ने कितना कमाल कर दिखाया। राष्ट्र को नई चेतना दे दी। गुलाब से कोमल तथा वज्र से कठिन ऐसे ही होते हैं। यदि वह जीवित होते तो आज के गणतन्त्र दिवस का रूप ही कुछ और होता। वह तो विश्व-शान्ति के लिए अपना जीवन बलिदान कर गये।

गणतन्त्र दिवस तो हम मनायेंगे—किन्तु वह सर्वप्रिय शान्ति दूत हम में नहीं है। इसलिए इस बार रागरंग का समारोह कम होगा। हां गम्भीरता हमारे मुख व विचारों में होगा। हम इस दिवस पर संकल्प धारण करें कि जिस देश के गौरव मान के रक्षण के लिए हमारे स्वर्गीय नेता श्री शास्त्री जी ने अपने जीवन व्यक्तित्व के सारे सुख साधनों को एक ओर रखकर भारत को उन्नत करने में दिन रात एक कर दिया। काम करते हुए न दिन का ध्यान किया और न रात को विश्राम का विचार किया। शान्ति स्थापन के लिए विदेशों में जाकर दो २ बजे रात तक जाग २ भारत के सम्मान को आगे रखा। वह यज्ञमय, राष्ट्रमय, त्यागमय ही बन चुके थे। आज हम भी उनके जीवन बलिदान से इस गणतन्त्र दिवस पर संकल्प लेवें कि हम अपने तुच्छ स्वार्थ हितों का परित्याग करके राष्ट्र के विशाल सम्मान को सदा आगे रखेंगे। भारत माता के सम्मान व रक्षा के हित अपनी प्यारी से प्यारी वस्तु को बलिदान कर देंगे। राष्ट्र का जीवन हमारा जीवन, गौरव हमारा गौरव तथा इसकी उन्नति हमारी उन्नति होगी। इस के लिए यदि हमें अपना तन-मन-धन और सर्वस्व भी भेंट करना पड़े तो हंसते २ दे देंगे किन्तु माता के मान पर कोई आंच न आने देंगे। तभी सच्चे भारतीय हैं।

—त्रिलोकचन्द्र

आर्यसमाज मन्दिर (डेरा वसी में) आल पार्टीज़ शोक सभा

दिनांक १३ जनवरी को आर्यसमाज डेरावसी की ओर से ला० बख्शीराम जी रिटायर्ड तहसीलदार कलसिया स्टेट की प्रधानता में आल पार्टीज शोक सभा हुई, जिस में अकाली लीडर श्री गुरुमुख सिंह जी शाद, श्री बलवन्तसिंह जी अकाली प्रधान कांग्रेस कमेटी वसी श्री देशराज जी शास्त्री भूतपूर्व मैनेजर ड'. ए. वी. स्कूल डेरा वसी के—स्वर्गीय श्री लालबहादुर जो के सराहनीय कार्यों पर प्रकाश डालते हुये, उनकी आत्मा की सद्गति और उनके परिवार को शांति प्रदान के लिये प्रार्थनाये करके श्रद्धांजली भेंट की गयी।

धर्मपाल गुप्ता मंत्री
आर्य समाज

आर्यसमाज चंडीगढ़ (सैक्टर २२) में

१६-१-६६ रविवार को एक विराट शोक सभा हुई जिस में निम्न प्रस्ताव पास किए गए।
चण्डीगढ़ के आर्य नर-नारियों की यह विराट सभा भारतीय संस्कृति के अमर पुजारी, स्वातंत्र्य संग्राम के अमर सेनाना, युद्ध एवं शांति के अग्रदूत अपने सर्वप्रिय प्रधान मन्त्री स्वर्गीय श्री लालबहादुर जी शास्त्री के ताशकंद में आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक प्रगट करती है। उनकी महान आत्मा को परम पिता परमात्मा सद्गति तो प्रदान करेंगे ही, परन्तु जिस शुभ कार्य के लिए आप ने अपना जीवन न्योछावर किया है उस अधूरे कार्य पूर्ति के लिए हमें सम्पूर्ण शक्ति प्रदान करें। तथा उनके संतप्त परिवार एवं अनेक मित्र मण्डली को इस महान दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

चण्डीगढ़ के आर्य नर नारियों की यह विराट सभा भारतीय संस्कृति के अमर पुजारी स्वातंत्र्य संग्राम के प्रमुख सेनानी स्वर्गीय श्री काका साहिब नरहरि विष्णु गाडगिल जी के निधन पर हार्दिक शोक प्रगट करती है। आजीवन वे संग्राम में जूझे रहे। अगले जन्म में प्रभु उन्हे देश सेवा के लिए पुनर्जन्म दें।

यह सभा उनके संतप्त परिवार एवं सम्बन्धियों तथा अनेकानेक मित्र मण्डली को इस महान दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

वेदप्रकाश 'प्रभाकर'
कृते मंत्री आर्य समाज

★ कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः।

अर्थ—मेरे दायें हाथ में कर्म है बायें हाथ में विजय है। (अथर्व)

सभा का वार्षिक अधिवेशन

आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब जालन्धर शहर की विशेष अन्तरंग सभा की बैठक सभा कार्यालय महात्मा हंसराज भवन में सभा के माननीय प्रधान श्रीयुत यश जी की अध्यक्षता में हुई। पंजाबी सूबा की समस्या पर विशेष विचार होता रहा। अन्य आवश्यक बातों के साथ एक तो यह जरूरी निर्णय किया गया कि इस बार आने वाला शिवरात्रि का पर्व सारे समाजों में विशेष कर धूमधाम से मनाने का आयोजन हो। नगरों में कस्बों में इस दिन बड़े ही समारोह के साथ सारी जनता को मिला कर शानदार जलूस निकाले जायें ताकि समाज की संगठित व जीती जागती शक्ति का पूरा परिचय मिले। उत्साह से पर्व मनाया जाए।

इस के साथ सभा का वर्ष समाप्त हो रहा है। इसी लिए इसका अगला वार्षिक बजट व निर्वाचन अधिवेशन भी निर्धारित किए जाए। अन्तरंग में निश्चय किया गया कि सभा का वार्षिक अधिवेशन आर्यसमाज विक्रमपुरा जालन्धर के विशाल मंदिर में किया जाए। वास निवासादि का प्रबन्ध आर्यसमाज विक्रमपुरा जालन्धर की तरफ से किया जाएगा। अधिवेशन के लिए २० फवरी सन ६६ रविवार दो बजे बाद दोपहर है। सभा के मान्य अधिकारी अपना काय करते रहे और कर रहे हैं। वास्तव में आर्यसमाजें ही सभा का रूप हैं। वर्ष के बाद आर्य समाजों के निर्वाचित भाई बहिने इकट्ठे होकर अपनी केन्द्रीय सभा का अगले वर्ष के लिए कार्यक्रम बनाते हैं। गत वर्ष के तमाम कामों को देखते व सुनते तथा अगले साल के कामों को निश्चय करते हैं। यह वर्ष तो आर्यसमाज के लिए एक विशेष कार्य का वर्ष है। पंजाब प्रांत के आकाश पर छाये हुए भीषण संग्राम के काले बादलों से तो शायद थोड़ा सा चैन मिल जाये। भारत ने ताशकन्द में अमन शांति के महान दूत अपने सर्वप्रिय नेता प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री जैसे देवता की जीवन आहुति दे दी है। किन्तु पंजाब के बटवारे का पंजाबी सूबा व हरयाणा प्रांत बनाने के लिए जल मरने वालों की बातें आज भी उसी प्रकार से कायम हैं। आर्यसमाज के सामने सब से बड़ी समस्या खड़ी है और भी आवश्यक बातें हैं जिन पर इस बार सारे प्रतिनिधियों ने मिलकर विचार करके उनका हल ढूंढना होगा। यह वर्ष समस्याओं का वर्ष है। सभा का यह अधिवेशन बड़ा आवश्यक होगा। इसलिए भूलना नहीं होगा—सं०

गुरु विरजानन्द मेला

व्याकरण के सूर्य गुरु विरजानंद सरस्वती ने ससार को देवता दयानन्द जैसा महान शिष्य प्रदान किया। अफ्रीका निवासी महात्मा बद्रीनाथ जी करतारपुर जी. टी. रोड पर बड़ा भव्य गुरु विरजानन्द की याद में स्मारकरूप में विशाल स्थान बनवा दिया। जनता उस महान गुरु का भी उपकार मानती रही। महापुरुषों के मेले जनता में चेतना और प्रेरणा भर देते हैं। हम चाहते थे कि प्रतिवर्ष गुरु विरजानन्द जी का बड़ा भारी समारोह करतापुर होता रहे ताकि प्रचार हो। इस बार बड़े हर्ष की बात है कि इस स्मारक में पहली फरवरी ६६ से लेकर पूज्य महात्मा प्रभु आश्रित जी रोहतक वालों की अध्यक्षता में चारों वेदों का महान् यज्ञ आरम्भ होकर ता० १८ फवरी शिवरात्रि को पूर्णाहुति होगी। बड़ा भारी समारोह होगा सुन्दर प्रवचन भी होते रहेंगे। भोजन तथा ठहरने का प्रबन्ध यज्ञ प्रबन्ध मंडल की ओर से होगा। आने वाले सज्जन वहां एक सप्ताह पूर्व आश्रम में सूचना देवें। यह समारोह बड़ा भव्य होगा। हम प्रबन्धकों से एक नम्र निवेदन करना चाहते हैं कि कहीं ऐसा न हो कि इस बार तो इतना भारी समारोह कर दें और अगले वर्ष कुछ भी न हो या मामूली हो अब आरम्भ किया तो प्रतिवर्ष यह गुरुमेला समारोह हो। जनता खूब पहुंचे।

क्या गजब हो गया

शिवप्रकाश शर्मा 'अनिल' बेगमपुरा उज्जैन (म. प्र.)

क्या गजब हो गया? शासन ने हिन्दी को मिक्सचर कर डाला,
हल्दी, जीरा, राई, मिर्ची शहद खोपरा और इलायची।
नकली दाड़ी, नकली मूछें, असली घी नकली कर डाला,
असली नकली का धंधा, कोई जा शासन से सीखे।
कितने नकली हैं देशभक्त, ये कुर्सी पर डट कर देखे,
हमको तो भाई जीवन में, नकली से पड़ा सदा पाला।
अभी-अभी लाहौर गया, कविता का करने पाठ वहां,
असली-नकली नूतन हिन्दी युक्त बना गजल इक नई यहां।
नकली स्टेज, कठ बनाकर सब गुड़ को गोबर कर डाला,
नकल चलेगी, दाल गलेगी, झटपट से खिचड़ी बन जाय।
गूंगा गाय, बहरा सुन-सुन, बीच-बीच में ताल बजाये,
नवयुग के इस नये रंग ने, वृद्धा को तरुणी कर डाला।
क्या गजब हो गया.........

आर्य समाज हिसार

आज १२-१-६६ को आर्यसमाज दयानन्द भवन हिसार में दोनों समाजों की ओर से सम्मिलित यज्ञ और उपदेश हुआ। पश्चात् एक शोक सभा में आर्य विद्वानों ने अपने पूज्य नेता स्वर्गीय श्री लालबहादुर शास्त्री के चरणों में श्रद्धांजलियां भेंट की गईं।

—नन्दलाल मन्त्री समाज

आर्य समाज रेलवे रोड अम्बाला शहर का वार्षिक निर्वाचन

श्री जगदीश चन्द्र जी प्रधान
,, मा. करतार चन्द जी उप. प्र.
,, प्रो. कृष्णदत्त जी शर्मा उप प्र.
,, मातुराम जी मंत्री
,, रूपलाल जी भाटिया उपमन्त्री
,, प्रो. वेदप्रकाश वेदालंकार उपमंत्री
,, तख्तमल जी कोषाध्यक्ष
,, मा. मूलचन्द जी पुस्तकाध्यक्ष
,, विलायतीरामजी लेखानिरीक्षक

—मातुराम मंत्री

शोकजनक निधन

अमृतसर लारेंस रोड समाज के दो माननीय सज्जनों का गत दिनों देहावसान हो जाने से समाज की बड़ी क्षति हुई है। उन में माननीय ला० जगतरामजी दयानन्द नगर के हैं। आप ने ब्रह्मा में समाज का बड़ा काम किया। वापस आकर अमृतसर में रहते हुए भी बड़ा दान दिया। वृद्धावस्था में भी समाज की बड़ी लगन थी। उनके चले जाने से समाज को क्षति पहुँची।

इसी प्रकार श्री ला० गुरुचरण दत्त जी के मान्य भाई ला० रामलाल जी का देहांत भी शोकजनक है। सारा परिवार समाज का प्रेमी है। लाला जी वर्षों से बीमार थे फिर भी उनकी विद्यमानता समाज के लिए बड़ी लाभकारी थी। आर्यसमाज ने सारे परिवार से इस शोक के अवसर पर हार्दिक संवेदना प्रकट की। दोनों स्वर्गीय महानुभावों के देहावसान पर शोक प्रस्ताव पारित किया। —मन्त्रीसमाज

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के समाचार



आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन २०-२-१९६६ रविवार २ बजे बाद दोपहर आर्यसमाज विक्रमपुरा में होगा। प्रधान जी के निर्देश तथा ६-१-६६ की हुई अतरंग सभा की सम्पुष्टि के बाद यह तिथि निश्चित की गई है।

इसके वार्षिक विवरण तथा १९६६ सन् का आनुमानिक बजट प्रस्तुत किया जाएगा। साथ ही आगामी वर्ष के लिए अधिकारियों तथा अन्तरंग के सदस्यों का चुनाव भी होगा।

१ अगस्त १९६५ की अंतरंग सभा के निर्णय कि सभा सम्बन्ध के लिए कम से कम ५) दशांश तथा १५) वेद-प्रचार निधि में देना आवश्यक होगा—सम्पुष्टि के लिए आएगा।

सब समाजें अपना दशांश इस तिथि से पूर्व ही सभा-कार्यालय में भेज दें।

आने वाले प्रतिनिधियों के निवास और भोजन का प्रबन्ध आर्यसमाज विक्रमपुरा में ही होगा।

वार्षिक अधिवेशन की सूचना नियमित रूप से अलग भी भेजी जा रही है। सभा की रिपोर्ट और बजट की प्रतियाँ भी शीघ्र ही भेज दी जाएंगी।

आ.प्रा.प्र. सभा का लेखा-जोखा

६ जनवरी १९६६ के आर्य जगत में स्पष्ट किया गया था कि आर्थिक दृष्टि से सभा इतनी पुष्ट नहीं जितना कि प्रायः समझा जाता है। हां, यदि सभा से सम्बद्ध समाजें सभा का धन, जो कि उन्हें नियमित रूप से सभा को देना है, भेजती रहें तो सभा का कार्य ठीक ढंग से चल सकता है। सभा की आनुमानिक आय ६० हजार के लगभग है। इसमें से दशांश चार हजार आना चाहिए। वेद प्रचार निधि में २५ हजार आदि। इसके अतिरिक्त सभा में सीधा दान आता रहता है, सभा की सम्पत्ति से आय होती रहती है यदि उस सम्पत्ति का व्यावसायिक ढंग से प्रबन्ध हो सके तो, वस्तुतः सभा का सम्पत्ति सम्बन्धी काम इतना अधिक है कि इस के लिए अलग सम्पत्ति निरीक्षक रखने की आवश्यकता है। इस दिशा में इस वर्ष कुछ कार्य हुआ है पर अभी बहुत कुछ और करने के लिए शेष है, क्योंकि सभा की सम्पत्ति बहुत है पर उससे आय अपेक्षाकृत बहुत कम। इस वर्ष केवल हिसार के जिले में सभा की बांस ग्राम की भूमि से ११४५ रु० तथा किराए आदि के ६९२) प्राप्त हुए हैं। ठीक प्रबन्ध होने पर यह आय लगभग २० हजार वार्षिक तक पहुँच सकती है।

सभा के आनुमानिक दशांश तथा वेद प्रचार दान का ऊपर उल्लेख हुआ। इस वर्ष वस्तुतः सभा को २६३३) दशांश तथा २६०८) वेद प्रचार निधि में प्राप्त हुए हैं।

वेद प्रचार निधि को कम धन आने के दो कारण हैं। एक तो २-२½ मास युद्ध का वातावरण रहने से बहुत-सी समाजों के उत्सव न हो सके। अतः उनका धन भी न आ सका। दूसरे महात्मा हंसराज जयन्ती के सम्बन्ध में आर्य समाजों ने पर्याप्त धन संग्रह किया। दस हजार के लगभग जयन्ती के अवसर पर एकत्र हुआ तथा तीस हजार के लगभग जयन्ती नोटों की बिक्री से प्राप्त हुआ। जयन्ती नोटों की बिक्री से प्राप्त धन के दो स्रोत रहे। डी. ए. वी. संस्थाओं से जो धन प्राप्त हुआ उसके लिए ला. सन्तोषराज जी ने बहुत परिश्रम किया। सभा इसके लिए उनकी आभारी है। डी. ए. वी. संस्थाओं का भी इसके लिए विशेष आभार है। वास्तव में देखा जाए तो आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का महल डी.ए.वी. संस्थाओं के स्तम्भों पर ही खड़ा हुआ है इन संस्थाओं के प्रिंसिपल तथा हैडमास्टर महोदय के सहयोग के बिना यह सभा एक मास भी नहीं चल सकती।

महात्मा हंसराज जयन्ती सम्बन्धी नोटों की आय के लिए सभा के महोपदेशक तथा उपदेशक वर्ग का काम भी बहुत प्रशंसनीय रहा। उन्होंने बड़े परिश्रम से कष्ट सहकर यह कार्य सम्पन्न किया। जिन समाजों ने सभा के कार्यकर्ताओं को इस विषय में सहयोग दिया उनमें आर्यसमाज लारेंस रोड अमृतसर सबसे प्रमुख रही। उसके दो मुख्य कार्यकर्ता वैद्य विद्यासागर जी तथा डा० वेदव्रत जी के पुरुषार्थ से सभा को इस दिशा में बहुत सफलता मिली। आर्य समाज, लारेंस रोड अमृतसर एक ऐसी समाज है जिस ने कथा हो, जयन्ती हो, कोई भी सभा की सहायता का अवसर हो खाली नहीं जाने दिया। सभा की हर समय सहायता की है। सभा इसके लिए इस आर्य समाज की मुक्त कंठ से आभारी है। इस समाज का एक अनुकरणीय आदर्श है। यह समाज सभा के महोपदेशकों के अतिरिक्त किसी और से कथा या प्रचार कार्य नहीं कराती ताकि सभा की सहायता में किसी प्रकार की कमी न आ सके।

इस सभा-सहायता के कार्य में पूजनीय महात्मा आनन्द स्वामी जी, व्यक्तिगत रूप से हमारे उपदेशक महोदयों ने तथा अन्य आर्य समाजों ने जो कार्य किया, प्रयत्न किया, सफलता प्राप्त की उसका उल्लेख अगले अंक में किया जाएगा। —क्रमशः

सत्यदेव विद्यालंकार
मंत्री समाज

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज सैक्टर ८ चंडीगढ़ की यह सभा श्री लाल बहादुर शास्त्री के शोक निधन पर जो दो दिन पूर्व ताशकन्द में हुआ गहरा दुःख और शोक प्रकट करती है। पं० जवाहर लाल नेहरू के सुयोग्य वारिस के नाते वे न केवल युद्ध के दिनों के ही एक सफल नेता सिद्ध हुए, अपितु शांति प्राप्त करने में भी। मगर सब से बढ़कर वे एक विशुद्ध चरित्र और विनय तथा सहनशीलता के पुंज थे। हम अपने समूचे देश तथा संसार के साथ मिलकर इस महान राष्ट्रीय नेता और विश्वराजनीतिज्ञ के लिए शोक प्रकट करते हुए उनकी दिवंगत आत्मा के लिये शांति की कामना करते हैं। हम आज के दिन एक महान् राष्ट्र के निर्माण के लिये निज को अर्पण करें, यही उनकी सब से बड़ी यादगार होगी।

इस प्रस्ताव की प्रतियां भारत के प्रधानमन्त्री श्रीमती ललिता शास्त्री तथा प्रैस को भेजी गईं।

पंजाब के भूतपूर्व राज्यपाल डा० नरहरि विष्णु गाडगिल जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई और शोक प्रस्ताव पारित किया गया।

—आशुराम आर्य पुरोहित

आर्यसमाज मदीनादांगी में शोक सभा

चौ०केहरसिंह जी की प्रधानता में यह शोक सभा सम्पन्न हुई जिस में सहदेव जी शास्त्री तथा पं० प्रभुदयाल जी सभा उपदेशक ने श्री लालबहादुर शास्त्री जी के आकस्मिक निधन पर अपनी श्रद्धांजलियां अर्पित कीं। उपस्थित जनता ने २ मिनट मौन रह कर उनकी आत्मा की सद्गति व परिवार को धैर्य प्रदान करने की प्रभु से प्रार्थना की गई।

मंत्री आर्यसमाज

आत्मबल

(ले०–डा० ओमप्रकाशजी बी. ए. एम. एस. एटा यू. पी.)

संसार के अधिकांशतः मनुष्य कार्य को प्रारम्भ करके मध्य में ही छोड़ देते हैं। जबकि कुछ मनुष्य प्रारम्भिक कार्य को सैकड़ों विघ्नों के आने पर भी नहीं छोड़ते। विचारणीय विषय हो जाता है। जब दोनों बराबर आयु के पुष्ट मनुष्य हैं। फिर एक प्रारम्भक कार्य को मध्य में क्यों छोड़ता है। स्वतः सिद्ध है कि मनुष्य का शरीर बाहर से पुष्ट दीख सकता है, धन आदि भी उसके पास हो सकता है। परन्तु मानव शरीर अन्तःगत जो आत्मा है जिसकी उपस्थिति ही जीवन और अनुपस्थिति ही मरण है, उसकी पुष्टता जिनमें होती है वह व्यक्ति प्रारम्भिक कार्य को सैकड़ों विघ्नों के आने पर नहीं छोड़ते। इसी को हम दूसरे शब्दों में आत्मिक बल कहते है। ज्ञान और प्रयत्न वाली शक्ति को आत्मा कहते हैं। अतः ज्ञान और प्रयत्न का जिसका संचय अधिक होगा उसकी आत्मा उतनी ही बलवान होगी। सर्वदा 'सर्व भावानां सामान्यं वृद्धि कारणं' के अनुसार सिद्ध है।

संसार को प्रकृति, जीव, परमात्मा तीन शक्तियां ही बनाती हैं। इनमें प्रकृति, जड़ है। जड़ सन्निकर्ष रहने या जड़ोपासना से तो आत्मा का ज्ञान, प्रयत्न बढ़ नहीं सकता चाहे न्यून भले ही हो जाय। परमात्मा ही अपरिमित ज्ञान और प्रयत्न वाली शक्ति है। उसीकी उपासना से ज्ञान और प्रयत्न बढ़ता है। उसी के सन्निकर्ष होने पर आत्मबल बढ़ता है। इस प्रकार संसार में दो ही उपासनायें हुईं, नं० एक प्रकृति उपासना और नं० २ ईश्वर उपासना। संसार में धर्म नाम ईश्वरोपासना का द्योतक है, पाप, नाम प्रकृति उपासना का द्योतक है, देश भक्ति ईश्वरोपासना देशद्रोहता प्रकृतोपासना का द्योतक है। यज्ञ कर्म ईश्वरोपासना, मूर्ति पूजा प्रकृति उपासना का द्योतक है।

प्रश्न उठता है कि तुमने सिद्ध कर दिया कि ईश्वरोपासना से आत्म-बल बढ़ता है। पर न्याय शास्त्र तो आत्मा के सुख-दुःख, इच्छा, द्वेष ४ गुण और मानता हैं तो इसका उत्तर है कि यह चार गुण शरीरस्थ आत्मा के हैं। यह गुण सुख-दुःख इर्ष्या-द्वेष न केवल आत्मा के हैं न केवल शरीर के। अगर यह शरीर के गुण होते तो मुर्दा, जिसके आत्मा नहीं होती उस को मालुम पड़ते। लेकिन किसी भी मुर्दा को न सुख दुःख का आभास होता है न इच्छा द्वेष का उसके मानी यह है कि यह शरीर के गुण नहीं हैं। अगर इनको केवल आत्मा का गुण मानें तो निन्द्रा वस्था में भी शरीर को सुख दुःख मालुम पड़ना चाहिए परन्तु ऐसा भी नहीं होता। प्रत्यक्ष भी देखने में आता है कि कुल्हाड़ी आदि के लग जाने के कारण जिस समय मनुष्य अति दुःखी है, रोता है चिल्लाता है, उस समय डाक्टर लोग एट्रोपीन मार्फिया की सुई लगाकर सुलाने का प्रयत्न करते हैं। सो जाने पर न सुख मालुम पड़ता है न दुःख। प्रश्न उठता है सो जाने पर आत्मा का ज्ञान समाप्त हो जाता है; इसी लिए सुख दुःख आदि नहीं मालुम पड़ता। इसका उत्तर यह है कि किसी भी द्रव्य का गुण उसकी विद्यमानता में कभी समाप्त नहीं होता। जैसे सर्प के विष का गुण जब तक कि वह विद्यमान है कभी समाप्त नहीं हो सकता। कुछ पाठक गण शंका कर सकते हैं कि निन्द्रावस्था में आत्मा का ज्ञान क्यों नहीं होता? इसका उत्तर यह है कि आत्मा को स्वाभाविक ज्ञान ही स्वयं का होने का प्रतीत होता है वह जागृत अवस्था की शरीर की क्षति पूर्ति करने का प्रयत्न करती है। नैमित्तिक ज्ञान जो पदार्थों और इन्द्रियों के संयोग से होता है, आत्मा को निन्द्रावस्था में प्रतीत नहीं होता है। इस से यह सिद्ध हो गया कि आत्मा के ज्ञान और प्रयत्न दो ही गुण हैं। सुख दुःख इच्छा द्वेष प्रयत्न ज्ञान शरीरस्थ आत्मा के गुण हैं। कोई मनुष्य हाथ में कुल्हाड़ा लेकर किवाड़ काटता है अब काटना न केवल हाथ का काम है। और न केवल कुल्हाड़े का काम है, पर हस्तगत कुल्हाड़े का कार्य है।

आत्मबल के प्रत्यक्ष उदाहरण! अनुसन्धान कीजिये कि क्या कारण था कि स्वामी दयानन्द ईंट पत्थर खाने पर भी वेदप्रचार में दृढ़ रहे? क्या कारण था कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी महाराज ने राज्य को तुच्छ समझकर जंगल जाना स्वीकार किया, और भरत के वापिसी के आग्रह पर भी राज्य जैसी सत्ता को ग्रहण न किया? क्या कारण था कि महात्मा भर्तृहरि जी ने अपने सारे राज्य को तुच्छ जान जंगल में जाना स्वीकार कर लिया? क्या कारण था। ओ! मेरे प्रिय पाठको जरा विचारो तो वह कौन-सी शक्ति थी जिस के कारण महात्मा हकीकत राय ने अपने धड़ से अपने सर को अलग करवा दिया पर यवन बनना स्वीकार न किया और पद्मिनी ने जलती चिता में बैठना स्वीकार कर लिया पर यवन बादशाह की बेगम बनना अस्वीकृत कर दिया? प्रत्यक्ष उत्तर आप यही देंगे कि इन सब में धर्म का भाव था यह ईश्वरोपासक थे, इनकी आत्मा बलवान थी।

प्रिय मित्रो आत्मा एक राजा है। यह शरीर इसकी राजधानी है। इन्द्रिया इसके कर्मचारी हैं। कमजोर आत्मा कभी अपने कर्मचारियों पर शासन नहीं कर सकता है। जो कर्मचारियों पर शासन नहीं कर सकता वह गांव पर भी शासन नहीं कर सकता। जो गांव पर शासन नहीं कर सकता वह जिला पर शासन कैसे करेगा। और जो जिला पर शासन नहीं कर सकता, वह प्रांत पर शासन कैसे करेगा? जो प्रांत पर शासन नहीं कर सकता वह राष्ट्र पर शासन कैसे करेगा। इस प्रकार अपने राष्ट्र को उन्नति के शिखर पर पहुंचाने के लिये आत्मबल का होना बहुत जरूरी है। परमात्मा करें जनता में आत्मबल जाग्रत हो जनता अपने कर्त्तव्यों को समझे।

शोक प्रस्ताव

११-१-६६ डी. ए. वी. हायर-सै. तथा जे. बी. टी. स्कूल ऊनाके समस्त छात्रगण तथा अध्यापक वृन्द की शोक सभा हुई, जिसमें भारतीय सर्व प्रियनेता श्री लाल बहादुर शास्त्री की ताशकन्द में हुई अकाल तथा अकस्मात् हृदय विदारक मृत्यु की दुःखद दुर्घटना पर शोक प्रकट किया गया।

ईश्वर इस अद्वितीय शक्ति अथक परिश्रमी, निस्वार्थी नेता की आत्मा को परम शान्ति प्रदान करें, तथा इनके परिवार के सदस्यों तथा सम्बन्धियों और अखण्ड भारत की जनता को इस असहनीय दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। —शांतिस्वरूप शर्मा
हैड मास्टर स्कूल ऊना

विश्व के सब से बड़े प्रजातन्त्र देश की प्रथम महिला श्रीमती इंदरा गांधी प्रधान मन्त्री निर्वाचित

युद्धकाल में विद्यार्थियों का दायित्व

(श्री सुन्दरलाल जी बोहरा, जोधपुर)



(गतांक से आगे)

युद्धकाल में विशेष दायित्व छात्राओं का होता है। घायल अथवा दिवंगत जवानों को सान्त्वना देने के लिए जैसा कार्य छात्राएं कर सकती हैं वैसी सफलता छात्र वर्ग से सम्पादित नहीं हो सकती। नर्सिग का कार्य तो छात्राओं को ही शोभनीय है।

४. युद्धकाल में कोई देश न तो विपुल अनाज के सहारे ही जी सकता है न प्रक्षेपणास्त्रों के सहारे ही, अपितु धैर्य और समर में श्रद्धा की भावना ही उसे जीवित रखती हैं (और अन्ततः जीत भी दिलाते हैं।) ऐसे काल में विद्यार्थियों का यह कर्त्तव्य होता है कि वे अफवाहों द्वारा गुमराह न हों (विद्यार्थियों को गुमराह न होने देना अध्यापक का ही एक- मात्र कर्त्तव्य है।)

५. विद्यार्थियों का यह भी एक दायित्व है कि वे शृंगार विषयक सामग्री को कदापि न पढ़ें। वासनात्मक वेशभूषा को भी वे दूर ही रखें। सिनेमें भी ऐसे ही देखे जायें जो सामरिक महत्व के हों। लेकिन भारत में आज युद्धकाल की स्थिति होते हुए भी सिने-जगत् हालीवुड का हरकारा बना हुआ है।

६. चित्रकार-विद्यार्थी जनता तथा जवानों में जोश जगाने के लिए प्रभावोत्पादक चित्र तैयार कर सकते हैं।

७. नाटकों एवम् दंगलों का आयोजन करके विद्यार्थी वर्ग सुरक्षा कोष के लिए अच्छी रकम जुटा सकते हैं।

८. स्वयं विद्यार्थियों में सहिष्णुता तथा औरों को सान्त्वना देने की भावनाएं कूट-कूट कर भरी होनी चाहिएं। लेखक का यह प्रत्यक्ष निजी अनुभव है कि सा इरन बजने पर लोगों में अनावश्यक रूप से खलबली मच जाती है। 'मरना तो है ही' इस प्रकार की भावना से ग्रस्त हो कर कई लोग (विशेषतः बूढ़े) खाइयों में घुसने से इन्कार कर देते हैं। ऐसी दुविधा की घड़ी में विद्यार्थियों को ही आगे आ कर भीड़ को शान्त करना चाहिये। लोगों के साथ सहानुभूति प्रदर्शित करते हुए उन्हें चुप कराना चाहिए।

९. घुसपैठियों का सुराग मिलते ही उन्हें चाहिये कि वे अपनी 'वानर-सेना' सहित सजग एवम् सक्रिय हो जायें। पिछले महीनों में विघटनकारी घुसपैठियों को पकड़वाने में जैसी तत्परता विद्यार्थियों ने दिखाई वैसी कुशलता प्रशिक्षित पुलिस अधिकारियों के लिये भी एक उदाहरण रूप में ही रहेगी।

सही अर्थों में एक जनतन्त्र मे जब युद्धकाल की स्थिति उत्पन्न होती है तो विद्यार्थियों के दायित्व का निर्धारण उन के स्वयं के द्वारा न हो कर शिक्षकों तथा संरक्षकों द्वारा होना चाहिये। यदि स्वयं शिक्षक वर्ग का जीवन-दर्शन ही मुसाहिबी-टाइप (**Yes-ism**) का है तो चूक की स्थिति में विद्यार्थियों को दोषी ठहराना न्यायसंगत नहीं है। विद्यार्थी हमेशा सत्य को सत्य के रूप में ही ग्रहण करते हैं न कि उसे सापेक्ष मान कर।

स्वर्गीय शास्त्री जी के प्रति

ले०—श्री राममूर्ति जी कालिया, दिल्ली-२७

(१)

मध्याह्न में तम छा गया है,
कुहराम सा क्यों मच गया है?
बिजली गिरी बिन बादलों के,
या कि गगन ही फट गया है?

(२)

मृत्यु खड़ी क्यों सिसकती है,
औ 'मां' खड़ी क्यों बिलखती है?
हा! लाल मेरा सो गया है,
ज्वाला हृदय में धधकती है।

(३)

कोटि हृदय क्यों रो दिये हैं
क्यों अश्रु हार पिरो दिये हैं?
जिस ने जगाया था सभी को,
वे नींद गहरी सो दिये हैं।

(४)

तुम ने कहा था जय जवान,
तुम ने कहा था जय किसान,
अब लो सुनो जयकार अपनी,
हैं कर रहे जो जवां, किसान।

(५)

संसार खिन्न हो रह गया है,
औ मूक स्वर कुछ कह गया है,
इतिहास था जो बना रहा,
इतिहास बन कर रह गया है।

पटना जिला आर्य सभा बाढ़ (पटना)

यह सभा श्री लाल बहादुर शास्त्री जी के अचानक निधन पर गहरा शोक प्रकट करती है। आप लोक प्रिय नेता होने के साथ २ थोड़े समय में ही भारत को नया उत्साह व एकता का जो पाठ पढ़ाया उसको हम कभी नहीं भूल सकते। हम आप को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आपकी आत्मा की सद्गति व परिवार को धर्य धारण करने की प्रभु से प्रार्थना करते हैं।

राम लखन आर्य
प्रधान सभा

———

हंसराज महिला कालेज शास्त्री जी को श्रद्धांजलि

जालन्धर। हंसराज महिला महाविद्यालय जालन्धर की छात्राओं तथा स्टाफ की एक शोक सभा प्रिंसिपल कुमारी विद्यावती जी आनन्द की अध्यक्षता में हुई। विभिन्न वक्ताओं ने शास्त्री जी को हार्दिक श्रद्धांजलियां अर्पित कीं। शोक प्रस्ताव पास करने के बाद दिवंगत आत्मा की स्मृति में दो मिनट मौन धारण किया गया।

———

विश्व की स... समाजों के अधि... से आवश्यक निवेदन

विश्व के समस्त प्रमुख राष्ट्रों में ...दिक धर्म-ध्वजा फहराने के लिए, विश्व-शान्ति का पावन सन्देश लेकर वेद सन्देश को राष्ट्र नायकों को देने के लिए जन-मन में वैदिक संस्कृति का प्रसार करने के लिए अमेरिका इंग्लैंड, जर्मनी; फ्रांस, रूस आदि राष्ट्रों में प्रचारार्थ मैं अपने जाने का प्रोग्राम निर्धारित कर चुका हूं। लगभग २५ हजार रुपयों का व्यय होगा।

समस्त आर्य भाई-बहिनों से सविनय सानुरोध साग्रह निवेदन है कि धर्मवीर ग्रन्थ-माला के साहित्य सुमनों को भारी संख्या में मंगाकर वैदिक भव्य भावनाओं का व्यापक प्रचार करने में सहायक बनें।

पुस्तकें मंगाकर हमारी सहायता करें जिससे हम विदेशों में भी जाकर वैदिक धर्म का नाद बजा सकें। सभी पुस्तकों पर २५% कमीशन दिया जाएगा।

वेद पथिक धर्मवीर आर्य
झंडाधारी व्याख्यान भूषण
अध्यक्ष धर्मवीर ग्रन्थमाला प्रकाशन, विभाग सराय रुहेला नई दिल्ली ५

...लामाओं के लिए पुस्तकें

...समाज के नेता प्रिंसिपल ... M. P. होश्यार ... श्री विष्णु मित्र ... गत दिनों धर्म साला ला... ...स्कूल देखने भी चले गए। हमारी सरकार ने तिब्बत से आने वाले जितने भी लामा हैं, उन के परिवार हैं। उन के लिए जहां वासनिवास कार्य आदि और उचित प्रबन्ध किया है। वहां उन के व उन के बच्चों को पढ़ाने के लिए भी स्कूल तथा लायब्रेरी का भी सुन्दर प्रबन्ध किया है। वहां पर लामा पढ़ते हैं। श्रीयुत विष्णु मित्र जी ने वहां जा कर देखा तथा उन के प्रबन्धकों व अध्यापकों से आर्य समाज के बारे में भी जानकारी कराते हुए कुछ पुस्तकें भी दीं। आर्य समाज का सुन्दर साहित्य भेजने की बात भी कही। लामा बड़े प्रसन्न हुए। उन तक महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज का सुन्दर साहित्य पहुंचना चाहिए। श्री विष्णु मित्र जी की यह प्रबल इच्छा है कि आर्य समाजें सभाएं और कई संस्थाएं इस की ओर अवश्य ध्यान देती हुई आर्य समाज के प्रसिद्ध लेखकों की पुस्तकें अंग्रेजी व हिन्दी में जो भी भेज सकते हैं ...धिक पुस्तकें आर्य प्र...... सभा जालन्धर शहर के पते पर भेजने की कृपा करें ताकि यह सुन्दर साहित्य वहां लामाओं के पास पहुंचाया जा सके। साहित्य से बड़ा प्रचार होता है। श्री विष्णु मित्र जी भी सभा के पुराने, स्तम्भ हैं। उनकी इस इच्छा को पूर्ण करने के लिए समाजें संस्थाएं व सज्जन अपनी ओर से अच्छी २ पुस्तकें कृपया जल्दी सभा में भिजवाने का कष्ट करें ताकि धर्म साला में लामा स्कूल व लायब्रेरी में यह श्री विष्णु मित्र जी पहुंचा सकें—सं.

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर (रोहतक) का स्वर्ण-जयन्ती महोत्सव

(१७ से २० फरवरी १९६६ ई०) तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आचार्य जी ने आर्य जनता से ५ लाख रुपये की अपील की है। जिसे हमें अपने उत्तरदायित्व को समझते हुए पूरा करना है।

हमारा अनुरोध है कि आर्य जनता आचार्य जी के वचन को सार्थक करने के लिए मुक्त हस्त से दान दें तथा स्वयं जयन्ती में सपरिवार सम्मिलित होकर अपने गुरुकुल का गौरव बढ़ावें। ध्यान रहे गुरुकुल का दान आयकर (इन्कमटैक्स) से मुक्त है।

आचार्य भगवानदेव

आर्यसमाज धारीवाल में

भारत रत्न प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री जी की अकाल मृत्यु पर शोक सभा हुई उसमें परम पिता परमात्मा से प्रार्थना की गई कि उस दिव्यात्मा को सद्गति प्रदान करें तथा उनके परिवार और भारतवासियों को इस असह्य वेदना को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

निवेदक
आज्ञा राम शास्त्री
मन्त्री समाज

आर्यसमाज मन्दिर, बाढ़

आर्यजनों की यह सभा भारत के स्वर्गीय प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री जैसे लोकप्रिय, कर्मठ और ईमानदार राज नेता के अचानक निधन पर मार्मिक शोक प्रगट करती है। यह सभा उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करती है, और उनके शोक संतप्त परिवार और शास्त्री जी के प्रति अपनी संवेदना प्रकट करती है।

—चन्द्रदीप प्रशाद उपमन्त्री

आर्यसमाज खन्ना

श्री लालबहादुर जी शास्त्री, प्रधान मन्त्री भारत सरकार के अकस्मात् स्वर्गवास होने पर खन्ना आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में शोक प्रकट किया। प्रभु से प्रार्थना की गई कि दिवंगतात्मा को सुख मिले तथा दुःखी परिवार को सुख और शान्ति मिले।

—...

आर्य प्रादेशिक सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन

२०-२-१९६६ रविवार २ बजे बाद दोपहर आर्य समाज विक्रमपुरा जालन्धर में सम्पन्न हो रहा है। प्रतिनिधियों के निवास तथा भोजन आदि का प्रबन्ध आर्य समाज विक्रमपुरा जालन्धर की ओर से होगा। लेकिन बिस्तर आदि अपने साथ लाने आवश्यक हैं।

नोट—सब संबंधित समाजें अपना दशांश २०-२-६६ से पूर्व सभा के कार्यालय में भिजवा दें।

अपनी समाजों से आने वाले प्रतिनिधि अपनी-अपनी प्रतिनिधि स्लिप साथ लाने की कृपा करें। —व्यवस्थापक

आर्य जगत का ऋषिबोध अंक

पाठकों की सेवा में शिवरात्रि के अवसर पर छपकर आ रहा है। इस अंक में राष्ट्रीय एकता पर विशेष लेख भारतीय विद्वानों के एकत्रित किए जा रहे हैं। इसके साथ ही प्रसिद्ध कवियों की कविताएं भी समावेश की जा रही हैं। मुख पृष्ठ सुन्दर बढ़िया तैयार किया जा रहा। सभी समाजें व संस्थाएं अपने अपने आर्डर ठीक समय पर देने की कृपा करें। विज्ञापन दाता विज्ञापन देकर लाभ उठाएं। एक प्रति का मूल्य ३७ नए पैसे होगा। —व्यवस्थापक

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत् कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टेलीफोन नं० ३०४७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 12

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे — वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक ८) ६ फाल्गुण २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१—२० फरवरी १९६६ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

भारं भरत्याचित्

वह परमेश्वर ही भारम्-इस जड़ चेतन जगत् के भार को भरति-धारण किए हुए है आचित् पूर्ण रूप से। इस विशाल विविध रूप का जितना भी भार है, सारा उसी प्रभु ने ही धारण किया है।

ऋतं पिपर्ति

वही परमात्मा ऋतम्-इस विचित्र विविध संसार को, सत्य ज्ञान को पिपर्ति-पालन करता है। इस विश्व में जितने भी नियम हैं-उसी के बनाये हुए हैं।

अनृतं निपाति

वही प्रभु ही जितना और जहां या जो भी अनृतम्-असत्य है उसको निपाति-गिरा देता है, मार देता व नाश कर देता है। असत्य देर तक टिक नहीं सकता है।

तेन जीवन्ति प्रदिश:

उसी ब्रह्म से ही सारी प्रदिश: ये दिशाएं और इन में काम करने वाले प्राणी जीवन्ति-जीते हैं। प्रभु से ही सारा विश्व जीवन प्राप्त करता है। वही जीवन का आधार है।

अथर्ववेद से

वेदामृत

हे इन्द्र ! शत्रु को मार दे

यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि। मघवञ्छग्धितव तन्न ऊतये विद्विषो वि मृधो जहि॥

साम० अ० ३ ख० ५ मन्त्र २

अर्थ—हे वीर इन्द्र! (यत:) जहां और जिस से भी हम (भयामहे) भय करते हैं। जो भी हमें भयभीत करता है (तत:) उस स्थान और उस शत्रु से (न:) हमें (अभय) निर्भय (कृधि) कर दो। हे (मघवन्) इन्द्र आप (शग्धि) सामर्थ्य रखते हो (तव) तेरा (तत्) वह बल शक्ति है (न: ऊतये) जो हमारी रक्षा के लिए समर्थ हैं। हे वज्री! (विद्विष:) जितने भी शत्रु हैं, द्वेषी हैं तथा जो भी (मृध:) राक्षस, घाती तथा लुटेरे हैं उन सब को आप (जहि) मार डालो। उनका नाश कर दो।

भाव—हे वीर सेनापते! इन्द्र बन कर वज्र की शक्ति को धारण करने वाले मघवन! आप नाना प्रकार के बलों, शस्त्रों के भण्डार से भरपूर हो। बड़े बलवान हो। हम को जिस भी स्थान से या जब कभी जिस भी शत्रु से किसी प्रकार का भय पैदा हो। चाहे आकाश से हो, धरती से या पर्वत व सागर से हो। आपके पास तो हर प्रकार की सेना की शक्ति है। हरेक स्थान से आने वाले शत्रु के भय से आप हमारी रक्षा करो। आपके होते हुए हमें किसी प्रकार की चिन्ता नहीं है। आप जितने भी शत्रु हैं, घाती व आक्रमणकारी हैं, उन सब को अपना वज्र लेकर के अपनी शस्त्र शक्ति के साथ मार डालो। उनको अग्निमय बाणों से भस्म कर दो। अपने वज्र से उन हत्यारों की खोपड़ियां फोड़ दो। राक्षसों को मिटा दो। हिंसकों का नाश कर दो—सं०

ऋषि दर्शन

परमेश्वर: सर्वज्ञ:

परमेश्वर सर्वज्ञ है, सब कुछ जानने वाला है। कोई भी स्थान ऐसा नहीं जहां उस प्रभु की महती महिमा का चित्र दिखाई नहीं देता। कोई भी ऐसा कर्म नहीं जिसको प्रभु जानते नहीं हैं। उस से छिप करके कोई भी बात नहीं हो सकती तथा कोई भी काम नहीं हो सकता। वह सर्वज्ञ है।

सर्व-व्यापी सर्वाध्यक्ष:

वह भगवान् सर्व-व्यापक है। सारे ब्रह्माण्ड में रम रहा है। वही सारे विश्व का अध्यक्ष है, स्वामी है। समस्त विश्व उसी के नियम मर्यादा में चल रहा है। ब्रह्माण्ड का कोई भी पदार्थ उसके नियम से बाहर नहीं है। सारे संसार का वही स्वामी है।

शरीर सम्बन्ध रहित:

वह परमात्मा शरीर के सम्बन्ध से रहित है। उस का कोई किसी प्रकार भी आकार नहीं है। वह निराकार ही है। जन्म-मरण के बन्धन से रहित है। जो लोग प्रभु को शरीरधारी मानते हैं वे परमात्मा के साथ न्याय नहीं करते वह अकाय है। —भाष्य भूमिका से

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी

राष्ट्र-भक्ति और प्रभु-भक्ति-११

(श्री महात्मा आनन्द-स्वामी जी महाराज की अमृतभरी कथा)



(गतांक से आगे)

मैं भी साथ में था। दूर-दूर से मश्कों में पानी लाकर हम लोगों ने पीड़ित लोगों को पानी पिलाया। अन्न बांटा, हजारों अनाथ बच्चे आर्यसमाज ने पाले। मुझे याद है, दयानन्द कालेज के विद्यार्थी एक घर में एक वृद्धा के पास उसे पीने का पानी और कुछ अन्न देने के लिए गए तो उस वृद्ध मां ने कई दिनों से अपने भूखे बच्चे को अपनी आंखों से भूख से तड़पते देखा था। मालाबार में भी जब अकाल पड़ा तो आर्यसमाज पीड़ितों की सेवा के लिए वहां पहुँचा। हम वहां कई दिन रहे। मैं और मस्तानचद जी त्रावणकोर जा रहे थे। एक वकील ने दूसरे से बातचीत करते हुए कहा कि आर्यसमाज तो बहुत बड़ा सेठ मालूम होता है। कांगड़ा में भूकम्प आया तब भी आर्यसमाज वहां पहुंचा। आर्यसमाज के सेवा-दल के इंचार्ज रायबहादुर सोहन लाल थे। मैं भी वहां गया था यात्री, पुजारी और सभी लोग वहां भूकम्प से दबे पड़े थे। हम ने कई दिनों तक उनकी वहां सेवा की। अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर ने बाद में कहा कि आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता सब से पहले कांगड़ा पहुँचे। कोयटा और बिहार के भूकम्प और बंगाल के अकाल के समय भी आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं ने वहां पहुंच कर जन और धन की सेवा की। अब पाकिस्तान का हमला हुआ तो छंब के युद्ध पीड़ितों की सेवा के लिए आर्यसमाज ने जालन्धर में कैंप लगाया। सद्भावना यही है कि सारा भारत हमारा है और हम भारत के, लिए हैं। इसलिए परस्पर मेल-मिलाप और सद्-भावना नितांत आवश्यक है। आक्रमण पंजाब पर हो या कहीं और, इस का सारे देश पर प्रभाव होता है। प्रभु की कृपा है कि कांग्रेस सरकार ने इस संकट की घड़ी में देश को एक सूत्र में बांध रखा है, लेकिन उसने भाषायी राज्य बना कर एक हिमालय सी भूल की। जस्टिस मेहर चन्द महाजन का यह सुझाव कितना अच्छा है कि सारे देश को चार पांच प्रशासकीय क्षेत्रों में बांट दिया जाए, एक संसद हो। यदि यह सुझाव मान लिया जाए तो यह सारा देश एक हो और यह छोटे-छोटे क्षेत्रीय झगड़े भी खड़े न हों। हमें संकुचित एवं संकीर्ण विचार त्यागने चाहिएं। पंजाब में पता नहीं क्यों कुछ भाई संकीर्ण विचारों का प्रदर्शन कर रहे हैं। उनके इस रवैये से न जाने कितनी हानि होगी। भगवान इन लोगों को सद्बुद्धि प्रदान करें। ब्रह्म तेज, और क्षेत्रीय तेज मिलने से ही राष्ट्र की रक्षा होती है। चाणक्य एक सच्चे एवं ऊंचे ब्राह्मण भारत के प्रधान मंत्री थे तब अराकान से ईरान तक भारत की सीमा थी। हमारे वर्तमान प्रधानमन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी का जीवन भी अत्यन्त सादा और सुन्दर है। वह देश के लिए जीते हैं, देश के लिए खाते हैं। कोई बनावट नहीं, बिलकुल सादा एवं साधु स्वभाव के व्यक्ति हैं।

मैं आप को चाणक्य के जीवन की एक घटना सुनाता हूं। महान नीतिज्ञ चाणक्य अपने छोटे से घर में एक आसन पर बैठे थे कि एक भिक्षु बुद्धं शरणं गच्छामि, कहते हुए पधारे। चाणक्य ने उन्हें भोजन के लिए प्रार्थना की जो भिक्षु ने स्वीकार कर ली। इतने विशाल भारत के प्रधानमन्त्री ने भीतर से टूटा-फूटा सा आसन ला के दिया और केले के पत्ते पर भोजन परोस दिया। भिक्षु प्रधानमन्त्री के रहन-सहन के इस ढंग को देखकर आश्चर्य चकित रह गया। चाणक्य का छोटा सा परिवार था। एक पत्नी, और मां लड़का गुरुकुल में रहता था। चाणक्य ने उक्त भिक्षु को बताया कि मैं राज्य से एक पैसा भी नहीं लेता। अपना जीवन चलाने के लिए पुस्तकें लिखता हूं और राज्य की सेवा और पुस्तकें लिखने के बाद जो समय बचता है, उसमें दुखियों की सेवा करता हूँ। जब चाणक्य ने भिक्षु से उनके पधारने का प्रयोजन पूछा तो उन्होंने बताया कि एक निकटवर्ती गांव में दस्युओं ने उत्पात मचा रखा है। वे गांव के गांव लूट कर भाग गए हैं। चाणक्य तुरन्त उठे और महाराजा को साथ लेकर उस गांव में पहुँच गए। वहां उन्होंने ग्रामीणों को पूर्ण सहायता का आश्वासन दिया। चाणक्य ने गांव से लौटने पर महाराज से कहा कि आप इन ग्रामीणों की सहायता के लिए कुछ कंबल और अन्य सामान मेरे निवासस्थान पर भेज दें। राजा की आज्ञा से भारी संख्या में कंबल आदि चाणक्य के निवास-स्थान पर पहुँचा दिए गए। दस्यु भी इन सब बातों पर नज़र रखे थे। उन्होंने जब बहुत-सा माल-सामान प्रधानमन्त्री के निवास पर पहुंचते देखा, तो उन्होंने वहां भी लूट-मार करने की योजना बनाई। चांदनी रात में, ठिठुरती सर्दी में, जब दस्युओं का वह टोला चाणक्य मुनि के मकान में लूटमार के लिए पहुँचा तो देखा कि एक ओर कंबलों का ढेर लगा है। किन्तु चाणक्य अपने एक फटे - पुराने कंबल पर लेटे हैं। दस्युओं का सरदार यह देखकर स्तंभित रह गया। उसने अपने साथियों से कहा कि ऐसे आदमी को लूटने का क्या लाभ, जो एक महान ईमान है, जिसने अपने घर में पड़ी हुई दूसरों की चीज़ की ओर आंख उठाकर भी नहीं देखा। चाणक्य के त्याग को देखकर दस्यु सरदार का हृदय परिवर्तित हो गया, और उसी क्षण अपने साथियों को आदेश दिया कि पिछली रात जितना भी माल समान लूटा है वह यहीं लाकर ढेर कर दिया जाए। सुबह होने से पहले लूट का सब माल चाणक्य के निवास - स्थान पर पड़ा था। प्रधानमन्त्री ने शहर में ढिंढोरा पिटवा दिया कि जिस किसी का माल चोरी हुआ है वह आकर उठा ले जाए।

ये थे प्रधानमन्त्री श्री चाणक्य। ब्राह्मणों ने ही अपने तप-त्याग से राष्ट्र को बनाया। क्षत्रिय क्षात्र धर्म का पालन करते हुए राष्ट्र की रक्षा करते हैं। मनुष्य तो जन्म से ही एक फौजी है। चिकित्सा विधान के पंडितों का कहना है। कई करोड़ जीव अणु आपस में लड़ते हैं। युद्ध के बाद जो बलवान जीव अणु बच जाता है उसी से मनुष्य बनता है। निरन्तर आगे बढ़ना मनुष्य की जन्मघुटी में है। सैनिक का काम है चलते रहना परन्तु कोल्हू के बैल की तरह नहीं जो पचास वर्ष तक चलते रहने के बाद भी वहीं का वहीं रहता है। आज कल तो क्षत्रिय उड़ गया और खत्री रह गया। जरा सी बात हुई तो हम भागने लगे। याद रखो! ईरान से हमने भागना शुरू किया और भागते-भागते बाघा के इस पार आ खड़े हुए। अब हमारे हथियार तीर तलवार या बर्छी नहीं रहे बल्कि घड़ी, छड़ी और ऐनक बन गए हैं। क्या इन्हीं हथियारों से हमने चाओ माओ और अयूब भुट्टो का सामना करना है। भगवान् कृष्ण ने लिखा है कि बलहीन को परमात्मा भी नहीं मिलते।

(क्रमशः)

सम्पादकीय—

आर्य जगत

वर्ष २९] रविवार २०२२, २० फरवरी १९६६ [अंक ८

सभा के प्रतिनिधियों से

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर का वार्षिक अधिवेशन आज के दिन ता० २० फरवरी सन १९६६ रविवार दो बजे बाद दोपहर आर्य समाज विक्रमपुरा के सुन्दर मन्दिर में हो रहा है। सभा से सम्बन्धित आर्यसाजों के प्रतिनिधि भाई और बहिनें दूर २ से इस में पधार रहे हैं। वर्ष के बाद सभा के मान्य सज्जन समाजों के प्रतिनिधि के रूप में एकत्रित होकर गम्भीर समस्याओं पर विचार करते हैं। गत वर्ष किए गए सभा के सारे विस्तृत कार्यों का विवरण सुनते तथा अग्रिम वर्ष का व्यापक कार्यक्रम नियत करते हैं। कितनी कठिनाईयां आईं और अब कौन २ सी समस्याएं सामने हैं। क्या लाभ-हानि हुई? वेद प्रचार की प्रगति कैसी रही। विशेष बात कौन-सी है? इन सारी बातों पर पूरी तरह से विचार किया जाता है। यह महान् अधिवेशन सभा के विशाल परिवार के सब प्रकार के चिन्तन के लिए होता है। यह बजट अधिवेशन व निर्वाचन का दिन भी होता है।

आर्य प्रादेशिक सभा के वार्षिक अधिवेशन में अपने डी. ए. वी. कालेजों, स्कूलों के मान्य प्रिंसिपल महोदय भी समाजों के प्रतिनिधि के रूपों में पधारते हैं। समाजों के अधिकारी एवं विधान सभा के सभासद भी। आर्यसमाजों की ओर से सारा पढ़ा लिखा ऐसा वर्ग इकट्ठा हो कर आर्यसमाज की प्रगति पर विचार करता है। हमारी सभा की आरम्भ से एक विशेषता रही है कि यहां सारा कार्य, निर्वाचन आदि सर्वसम्मति से होता है। विचारों के प्रकाशन की परम्परा के बाद निर्वाचन के काम में एक मिनट ही लगता है। यह स्वस्थ परम्परा आर्य प्रादेशिक सभा की शान है। आर्यजगत की ओर से इस अधिवेशन में आने वाले मान्य प्रतिनिधियों का स्वागत है। उनसे एक निवेदन है कि इस बार जिस परिस्थिति में सभा के सारे हितैषी जालन्धर में इकट्ठे हो रहे हैं। वे विकट समस्याएं सामने हैं। सबसे बड़ी विषम समस्या पंजाब के विभाजन की भारत की इस वीर भुजा को दोनों ओर से काटने का प्रयत्न जारी है। सन्त जी तो धर्म मन्दिर में बैठ कर अपने आप को जला देने की धमकियां दिये जा रहे हैं। दूसरी ओर नैतिक दशा का कितना घिनौना चित्र है? मिट्टी का तेल तो घण्टों पंक्ति में खड़े होने पर मिले न मिले। किन्तु शराब जितनी चाहे और जब चाहे ले लो। शराब सस्ती है। शराब का कोटा बढ़ाया जा रहा है। दुकानें और ज्यादा की जा रही हैं। शराब पिलाने का प्रचार है। आज नैतिकता का गला घोंटा जाता है। विलासिता का बोलबाला है। धर्म से रुचि घट गई है। सत्सङ्गों की क्या दशा है? धर्म प्रचार में कितने नवयुक आते हैं? हायर सैकंड्री स्कूलों में संस्कृत को स्कूल निकाला मिल चुका है। वेदप्रचार में धन कहां है? नवयुवकों का रुझान क्या है? वैदिक साहित्य कितना निकलता है? युवकों को सम्भालने वाला कौन है—ऐसी कितनी ही समस्याएं हैं जो आज सामने हैं। समाज के सिवाय किसे चिन्ता है। आज तो आर्य समाज की अपनी तारें ही जुदा २ हो रही हैं। अलग २ जागीरें बनती जा रही हैं। सब कुछ इन को बढ़ाने के लिए होता है परन्तु केन्द्र का ध्यान कम है। वेद प्रचार के लिए कितनी श्रद्धा है, कितना दिया जाता है? यह सब जानते हैं। ये आज के सारे ज्वलन्त प्रश्न हैं, जिन पर आप सब ने मिल कर विचार करना है। आर्य समाज का सारा जीवन ही संघर्ष में बीता व बीत रहा है। वर्ष के बाद आप सारे इकट्ठे हो रहे हैं। सारी बातों पर आप ने पूर्णतया विचार करके बड़ी शक्ति के साथ कार्यक्रम बनाना है। यह स्फूर्ति देने वाला हो। सभा को हर प्रकार से ऊंचा कर देवें। स्वर्गीय महात्मा हंसराज जी का यह महान् सभा रूपी स्रोत अपनी विविध धाराओं से सारी तृषित जीवन धरती को आप्लावित करता रहे—त्रिलोक चन्द्र

आर्य जगत् भी

सभा का साप्ताहिक मुखपत्र आर्य जगत् वर्षों से सभा द्वारा सेवा कार्य में रत है। पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी के दिये गये आदेशा - नुसार स्वर्गीय श्री. सत्यार्थी जी के बाद यह सेवा कार्य भी अवैतनिक रूप से सम्भाला। वर्षों से कर्तव्य का पालन किये जा रहा हूं। सभा के उपदेशक का काम करते हुए साथ २ यह कार्य भी हो रहा है। मान्य सभा अधिकारियों, सहयोगी उपदेशक भजनीक सज्जनों, संस्थाओं के सज्जनों, समाजों के महानुभावों, विद्वान लेखकों व प्रेमी हितैषियों की जगत् पर बड़ी कृपा रहती है। किन्तु जगत् की वर्तमान अवस्था से मेरा दिल सन्तुष्ट नहीं है। यह ठीक है कि सभा के धार्मिक पत्रों की सर्वत्र ऐसी अवस्था है। फिर भी बहुत कुछ किया जा सकता है। यदि सारी समाजें, संस्थाएं तथा भाई बहिन और थोड़ा सा इधर ध्यान देवें तो बड़ा काम हो सकता है। अवश्य विचारें—सं०

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर का

वार्षिक साधारण अधिवेशन २० फरवरी रविवार के दिन आर्य समाज विक्रमपुरा जालन्धर में होना निश्चित हुआ है। समाजों के सब प्रतिनिधि अपनी प्रतिनिधि स्लिप साथ लाकर ठीक समय पर दर्शन दें।

नोट—निवास व खान-पान का प्रबन्ध साईंदास एंग्लो संस्कृत H/S स्कूल में होगा अतः बाहर से आने वाले सब सज्जन सीधे स्कूल में ही पहुंचने का कष्ट करें।

—व्यवस्थापक

शुभ समाचार

श्री बृजलाल जी गुप्त टोहाना निवासी के सुपुत्र श्री राजेन्द्र जी गुप्त बी०ए० का पाणि ग्रहण संस्कार आगरा निवासी ला० चन्द्रभानु जी की सुपुत्री शशि बाला के साथ ६. २. ६६ को सम्पन्न हुआ। इस प्रसन्नता में आर्य जगत की ओर से नव दम्पती तथा बृजलाल जी गुप्ता के परिवार को बहुत-बहुत बधाई। व्यवस्थापक

वेदों में शत्रु-दलन का आदेश

(श्री सुरेशचन्द्रजी वेदालंकार एम.ए.एल.टी डी.बी कालेज, गोरखपुर)



भारतीय साहित्य में वेदों का अत्यधिक महत्व माना गया है। वेदों में राष्ट्रीयता की भावना भी कूट-कूट कर भरी हुई है। वैदि॰ साहित्य की सबसे बड़ी देन 'राष्ट्र' शब्द है। ऋग्वेद व अन्य वेदों में यह शब्द अनेक बार आया है और इस शब्द में आर्यों की बड़ी भावना, बड़ी मार्मिकता और प्रोज्ज्वल अनुभूति निबद्ध है। राष्ट्र का अभ्युदय, राष्ट्र की उन्नति, राष्ट्र की स्वतन्त्रता और राष्ट्र की रक्षा के लिए आर्य लोग अपने प्राणों को न्यौछावर करने को सदा तैयार रहते थे। 'राष्ट्र' की परिभाषा भी वेदों में बड़े उदार दृष्टिकोण को सामने रख कर की गई है। अथर्ववेद के प्रसिद्ध मातृभूमि के विषय में एक मन्त्र में कहा गया है —

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं
नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम्
सहस्रं धारा द्रविणस्य मे
दुहां ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती।

अर्थात् अनेक प्रकार की भाषा बोलने वाले, नाना प्रकार के कर्तव्य करने वाले धर्म पर विश्वास रखने वाले मनुष्यों को अनेक प्रकार से एक ही घर में रहने के समान धारण करने वाली स्थिर मातृभूमि मुझे धन की सहस्र धाराएं दुहने दे जैसे निश्चल गौ दूध की धारा देती है। अनेक प्रकार की भाषा में बोलने वाले अथवा विविध विचारों को धारण करने वाले, विविध प्रकार के विभिन्न कर्तव्य करने वाले मनुष्यों को एक परिवार के समान जो मातृभूमि समान रीति से धारण कर रही है वह मातृभूमि हम सब को अनेक प्रकार का धन देवें।

आर्य लोग सदा यह कामना करते थे कि वरुण राष्ट्र को अविचल करें, बृहस्पति राष्ट्र को स्थिर करे, इन्द्र राष्ट्र को सुदृढ़ करें और अग्नि देव राष्ट्र को निश्चल रूप से धारण करें—

ध्रुवं ते राजा वरुणो,
ध्रुवं देवो बृहस्पतिः।
ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च,
राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥

अब प्रश्न उपस्थित होता है कि राष्ट्र रक्षा कैसे हो सकती है? दुष्ट जन बहुल संसार में, अपने राज्य तथा शासन सिद्धान्त और विचार, स्वातन्त्र्य और आजादी की रक्षा के लिए साधु बनने से काम नहीं चलेगा। राष्ट्र बच नहीं सकता। राष्ट्र की रक्षा के लिए भेदनीति और शस्त्रनीति द्वारा शत्रु दलन का स्पष्ट आदेश वेदों में दिया गया है। वेद में राष्ट्र रक्षा के लिए भेदनीति का उल्लेख करते हुए लिखा है—

विहृदयम् वैमनस्यम्
वदामित्रेषु दुन्दुभे,
विद्वेषं कश्मशं भयममित्रेषु
निदध्मस्यवैनान् दुन्दुभे जहि।

अथर्ववेद ५।२१।१

अर्थात् हे रण की दुन्दुभि! वैरियों में हृदय की व्याकुलता, मन की चिन्ता कर दे। शत्रुओं में फूट, द्वेष, भय उत्पन्न कर दे। इस प्रकार हे रणदुन्दुभि! तू शत्रुओं को राष्ट्र की रक्षा के लिए पराजित कर। हमें ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि जिस से शत्रु सैन्य में फूट, आपस में वैर, वैमनस्य व्याकुलता कष्ट, दुःख, आपस का विरोध और भय उत्पन्न हो। यही भेद नीति है और इस से राष्ट्र रक्षा होती है।

राष्ट्र रक्षा के लिए शस्त्रों की प्रबलता और तीक्ष्णता पर वेदों में बहुत जोर दिया गया है। ऋग्वेद के मं० १। सू० ३६ मन्त्र २ में कहा है—

स्थिरा वः सन्त्वायुधा
पराणुदे वीळू उत प्रतिष्कभे।
युष्माकमस्तु तविषी पनीयसी
मा मर्त्यस्य मायिनः॥

अर्थात् राष्ट्र के शस्त्रास्त्र शत्रुओं को दूर भगाने के लिए सुदृढ़ रहें और शत्रुओं का आक्रमण आदि कार्यों से प्रतिबन्ध करने के लिए बलवान् रहें। तुम्हारी शक्ति प्रशंसनीय हो। तुम्हारी अपेक्षा (पाकिस्तान, चीन आदि) दुष्ट कपटी शत्रु राष्ट्रों की शक्ति बढ़ने न पावे।

वेद में शक्तिशाली वीरों की मांग और उनकी रक्षा की प्रार्थना भी की गई है यजुर्वेद के २२-२२ मन्त्र में समूचे राष्ट्र के अभ्युदय के लिए ओजस्वी और पवित्र भावनाएं व्यक्त करते हुए कहा है—

'आ राष्ट्रे राजन्य शूर इषव्यो-
ऽतिव्याधी महारथो जायताम्'

बहादुर बाणविद्या, शस्त्रास्त्र संचालन में चतुर, दुष्टों को अत्यन्त उद्विग्न करने वाला महारथी क्षत्रियवर्ग हो। ऋग्वेद मण्डल ६।७५ सूक्त के मन्त्रों में रणक्षेत्र का बड़ा साहसिक और मार्मिक वर्णन किया गया है। ५ वें मन्त्र में कहा गया है —

तूणीर अनेक बाणों का पिता है। कितने ही बाण इसके पुत्र हैं। बाण निकालने के समय यह तूणीक 'चिश्चा' शब्द करता है। यह योद्धा के पृष्ठ देश में निबद्ध रहकर युद्धकाल में बाणों का प्रसव करता हुआ सारी सेना को जीत डालता है।

७ वें मन्त्र में कहा गया है ·|

'घोड़े टापों से धूलि उड़ाते हुए और रथ के साथ सवेग जाते हुए हिनहिनाते हैं। और ये घोड़े शत्रुओं पर आक्रमण कर अपनी टापों से उनको ध्वस्त कर देते हैं।'

१२वें मंत्र में कहा गया है—

'शत्रुओं का मुकाबला करने के लिए हमारे शस्त्र शक्तिशाली हों। हमारी सेना फौलाद की तरह मजबूत हो।

१३वें मंत्र में कहा गया है—

हमारे बाण विषाक्त हैं, इनका अग्रभाग हिंसक और इनका मुख लोहमय है, उस बाण देवता को नमस्कार है। (बाण सब शस्त्रों का प्रतिनिधि है)।

(क्रमशः)

आर्यसमाज खन्ना (लुधियाना)

का वार्षिकोत्सव ४, ५, ६ मार्च को होना निश्चित हुआ है। इस अवसर पर बड़े बड़े सन्यासी, महात्माओं, उपदेशकों तथा भजनीकों का कार्य-क्रम होगा।

इसके अतिरिक्त २४ से २६ फरवरी तक श्री नन्दलाल जी वैदिक मिशनरी मैजिक लालटेन द्वारा समयानुकूल फिल्में दिखायेंगे। श्री पूज्य आनन्दगिरी जी महाराज की कथा होगी ४ मार्च से ६ मार्च तक श्री शोभाराम जी, श्री हजारीलाल जी के भजन होंगे।

—मुन्शीराम प्रधान समाज

स्वर्गीय श्री लालबहादुर शास्त्री प्रधान मन्त्री भारत सरकार के आकस्मिक निधन पर भिन्न २ संस्थाओं की ओर से प्राप्त

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज सौथ एक्सटैंशन पार्ट १ नई देहली, आर्य समाज रम्बौली (जिला करनाल), आर्यसमाज शोलापुर, डी.ए.वी. हाई सकैंड्री स्कूल व आर्यसमाज ऊना (जिला होशियारपुर), आर्यसमाज रामगढ़ नई देहली, जिला वेद-प्रचारिणी सभा (होशियारपुर) आर्यसमाज खंडवा पूर्व निमाड़ (म० प्र०), डी.ए.वी. हाई सैकन्डरी स्कूल दौलतपुर (जिला होशियारपुर)।

महापुरुषों की बैठक

नाटकीय शैली पर

(श्री अग्निदेवजी 'शास्त्री' (वि. वै. शोध संस्थान) होशियारपुर)

देश की शिक्षा सम्बन्धी परिस्थितियों पर विचार विमर्श करने के लिए महर्षि दयानन्द के सभापतित्व में स्वामी श्रद्धानन्द लाला लाजपतराय महात्मा गांधी चौ० छोटूराम महात्मा हंसराज आदि सदस्य आमन्त्रित हैं। प्रत्येक सदस्य अपने-अपने विचार व्यक्त करने की प्रतीक्षा कर रहा है।

स्वामी श्रद्धानन्द :—

सभा के मन्त्री स्वामी श्रद्धानन्द जी (अध्यक्ष की ओर संकेत करते हुए) श्रद्धेय महर्षि दयानन्द जी की योजनाओं को पूर्ण करने और प्राचीन भारतीय संस्कृति और सभ्यता को पुनर्जीवित करने के के लिए गुरुकुल शिक्षा प्रणाली आरम्भ की थी। किन्तु सरकार की उपेक्षा और 'लार्ड मैकाले के कथन की पूर्ति करने वाली अंग्रेजी सभ्यता से रंगी हुई भारतीय जनता की उदासीनता से आज भारतवर्ष के गुरुकुल भी स्कूलों का रूप ले रहे हैं, या बन्द हो रहे हैं'

लाला लाजपतराय :—

गुरुकुल पद्धति के द्वारा प्राचीन भारतीय संस्कृति और सभ्यता के पुनर्जीवन में विलम्ब देख, अंग्रेजीयत से वशीभूत जनता के लिए अनेक साथियों के सहयोग से स्थापित किए गए डी. ए. वी. कालेज और स्कूल सामान्य कालेजों और स्कूलों का रूप लेते जा रहे हैं। उनमें अपने उद्देश्य के प्रति सजगता बहुत कम मात्रा में हो चुकी है।

महात्मा गांधी—

मान्यवर अध्यक्ष महोदय! बुनियादी शिक्षा का श्री गणेश देश की परिस्थितियों को ध्यान में रख कर किया गया था। अच्छे शिक्षकों के अभाव में इस (बुनियादी शिक्षा पद्धति) का भविष्य उज्ज्वल नजर नहीं आता। किसी विशेष संस्था के प्रयत्नों की परमावश्यकता है। जो कि बेसिक शिक्षा का बेड़ा पार लगा सके।

चौ० छोटूराम—

(खड़े होकर) श्रद्धेय अध्यक्ष जी! तथा भारत के हितैषी बन्धुओ! आप सब की निराशा यह जान कर आशा में बदल जानी चाहिये कि—'हरियाणा' क्षेत्र में चल रहे गुरुकुल तीव्र गति से उन्नति कर रहे हैं। और अधिक से अधिक संख्या में नवीन गुरुकुल तथा डी० ए० वी० संस्थाएं भी खुल रही हैं। जो कि निकट भविष्य में आप की इन सभी आशाओं को साकार करके दिखायेंगी।

महात्मा हंसराज—

मान्यवर महर्षि जी! आज का युग आकुल भावा से दूषित सभ्यता की ओर अग्रसर हो चुका है। इसके सुधार के लिये वैसे ही वातावरण की आवश्यकता है। जैसा कि आजका युग हो चुका है। संस्कृत में कहावत है—'देशकाल बलं ज्ञात्वा सर्व कार्याणि साधयेत्' अतः मैं लाला जी के वक्तव्य को दोहराता हुआ, कि डी. ए. वी. संस्था ही आज के युग में प्राचीन सभ्यता के विचारों को फैलाने में शीघ्र सफल हो सकती हैं। बैठता हूं।

(अब किंचित् विलम्ब से आने वाले दो सदस्य 'चिट' भेज कर थोड़ा २ समय मांगने में सफल हो जाते हैं)।

एक पौराणिक पण्डित

पूज्यनीय सभापति जी! यद्यपि मैंने बाद के एक दो वक्तव्य सुने हैं। मेरा विचार है कि डी. ए. वी. संस्थाओं के ऊपर 'नई नौ दिन पुरानी सौ दिन' वाली उक्ति चरितार्थ होगी। क्योंकि नया २ प्रोग्राम ऐसा ही चलता है। अतः प्राचीन सनातनधर्म से संस्थापित 'एस. डी.' स्कूल एवं कालेज ही संस्थाओं का नाम रखना चाहिये।

ठा० अमरसिंह शास्त्रार्थ महारथी

पण्डित जी की ओर देखते हुए आपका नाम से क्या अभिप्राय है, सुधारवादी कर्मठ व्यक्ति के लिये यह उचित नहीं कि 'डी. ए. वी.' न होकर 'एस. डी.' होना चाहिये। 'विष्णु शर्मा ने कहा तो ठीक है— अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्। और ऐसी ही संकुचित भावनाओं ने नालन्दा विश्वविद्यालय का विध्वंसरूप देखा और मन्दिरों से मोहम्मद गजनी आदि के द्वारा करोड़ों का सोना लुटता हुआ देखा।

(इतने में अध्यक्ष जी घण्टी से रुकने का संकेत करते हैं तदनन्तर स्वयं अध्यक्षीय भाषण खड़े होकर देते हैं)।

महर्षि दयानन्द जी

माननीय सुधारक बन्धुओ! अंग्रेजों के शासनकाल में सरकार और थी और जनता और थी। उस समय भारतीय जनता की आर्य भावनाओं को कुचला जाता था। हमारे वेदोक्त मार्ग को नहीं अपनाने दिया जाता था। आज भारत में जनता का जनता द्वारा जनता के लिए शासन है। आजाद आर्यावर्त्त में वेदों उपनिषदों, धर्मशास्त्रों, स्मृतियों द्वारा, कथित मार्ग को अपनाने में हम सब समर्थ तथा स्वतन्त्र हैं। अतः आओ! इन सभी गृह झगड़ों को छोड़कर वेद वर्णित मार्ग पर चलें तथा जनता में भी वेद की पवित्र भावनाएं भरें।

इतने में करतल ध्वनि से आकाश गूंज उठता है तथा सभा विसर्जित होती है।

आर्य युवक परिषद, दिल्ली-६

ऋषि मेला

आर्य युवक परिषद् दिल्ली की ओर से ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष्य में शुक्रवार १८ फरवरी १९६६ को ऋषिमेला रामलीला मैदान में दोपहर ११॥ बजे से स्कूलों के छात्र-छात्राओं की 'ऋषि दयानन्द के उपकार' विषय पर भाषण प्रतियोगिता होगी।

प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय विजेता छात्र-छात्राओं को अध्यक्ष श्री सोमनाथ जी मरवाहा एडवोकेट अपने कर कमलों द्वारा पारितोषिक वितरित करेंगे।

प्रतियोगिता में भाग लेने वालों के नाम १७ फरवरी तक परिषद् के कार्यालय, १६५४ कूचा दखिनी राय, दरियागंज, दिल्ली-६ के पते पर पहुँच जाने चाहियें—ओमप्रकाश मंत्री

आर्य केन्द्रीय सभा करनाल

ऋषि बोधोत्सव का कार्यक्रम

इस बार ऋषि बोधोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। तिथि १८-२-६६ को सारे नगर में प्रभात फेरियां होंगी तथा १९-२-६६ दोपहर बाद जलूस निकाला जावेगा और रात्रि को श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक प्रताप की प्रधानता में सार्वजनिक सभा होगी जिस में वीरेन्द्र जी के अतिरिक्त अन्य नेता भी पधार रहे हैं। २०-२-६६ को ऋषि दंगल का आयोजन है जिस में प्रांत के अच्छे २ पहलवानों ने भाग लेना स्वीकार कर लिया है।

शोक समाचार

डी० ए० वी० हा० से० स्कूल दौलतपुर व आर्यसमाज की सम्मिलित शोक सभा ने सूबेदार रामसिंह जी, सुपुत्र जैलदार महोदय चौ० मोतीसिंह जी, की मृत्यु पर अगाध शोक प्रकट किया तथा उनकी आत्मा की सद्गति व परिवार के लिए धैर्य और शान्ति प्रदान करने की प्रभु से प्रार्थना की।

महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य की विशेषताएं

(आचार्य मित्रसेन जी एम. ए., सेवा सदन, कटरा, अलीगढ़)



वेदों में सभी विद्याओं का ज्ञान भरा हुआ है। आवश्यकता इस बात की है कि उनके मन्त्रों का अर्थ समझा जावे। परन्तु यह कार्य बहुत ही कठिन है। वेद मन्त्रों के अनेक अर्थ हैं, किसी भाष्यकर्ता ने कोई अर्थ अपनाया तो किसी ने कोई और अर्थ। इसी कारण से वेद-मन्त्रों का कोई निश्चित एक अर्थ न रह सका और श्री अरविन्द के शब्दों में वेद रहस्यात्मक ही बने रहे।

महर्षि दयानन्द के आगमन से पूर्व अनेक भारतीयों तथा पाश्चात्य विद्वानों ने वेदभाष्य करने का प्रयत्न किया। इन में आधुनिक युग में सायण के भाष्य का अधिक महत्व है, सम्मान है। इन सभी वेद-भाष्यों को पढ़कर पाठक की श्रद्धा वेदों से निश्चित् ही उठ जाएगी क्योंकि इन भाष्य-कारों के मतानुसार वेदों में पौराणिक कथाओं, गोमांस भक्षण, यज्ञ में बलि प्रथा तथा अनित्य इतिहास का वर्णन है। महीधर, उव्वट तथा उनके छायानुवादी श्री ज्वालाप्रसाद मिश्र ने वेदों से भी सभी खुराफातें सिद्ध करने का प्रयत्न किया।

ऐसे समय में महर्षि यानन्द सरस्वती ने गुजराती होते हुये भी वेदों का संस्कृत तथा हिन्दी में भाष्य करके वैदिक जगत् में अद्भुत क्रांति उपस्थित कर दी, उनके प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप जनता में वेदों के प्रति श्रद्धा, विश्वास और प्रेम उत्पन्न हुआ। वास्तव में महर्षि दयानन्द का जीवन वेद ही था। ऋग्वेद के हिन्दी भाष्य कर्ता पण्डित रामगोविन्द त्रिवेदी ऋषि के विषय में लिखते हैं—आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती वेदों के परम-भक्त थे। उन्होंने आर्यसमाज की नींव वेदों के आधार पर रखी थी। वे भारत में ही नहीं, समस्त विश्व में वेदों का मेघ मन्द्र विना सुनना चाहते थे, वस्तुतः स्वामी जी वेद प्रचार के लिए ही जिए और मरे।' (वैदिक साहित्य पृष्ठ ३६८-३६६)

महर्षि दयानन्द ने सम्पूर्ण यजुर्वेद तथा ऋग्वेद के सप्तम मण्डल के ६१ सूक्त तक भाष्य किया। उन्होंने अपने भाष्य से यह समझाने का प्रयत्न किया कि वेदों में पौराणिक कथाएं,'गो-मांस भक्षण बलिप्रथा तथा अनित्य इतिहास नहीं है। महर्षि ने वेद व्याख्या में वैज्ञानिक शैली अपनाई। इस बात को महामहोपाध्याय पं. गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी भी मानते हैं—'वेद के वैज्ञानिक युग के व्याख्याकार श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती हैं। इन्होंने वेद के गौरव की ओर आर्य जाति की दृष्टि बहुत कुछ आकृष्ट की है। इस कारण से उनका भी उपकार विशेष माननीय है।'

आपने वेद भाष्य में महर्षि दयानन्द ने वे शैलियें अपनाईं जो बहुत बड़ी विशेषताएं मानी जाती हैं।

वैदिक शब्द यौगिक हैं

स्वामी दयानन्द जी ने वेदों में आये समस्त शब्दों को यौगिक माना है। आपने परम्परा के अनुचित अर्थ को नहीं माना। इसकी पुष्टि करते हुए श्री बलदेव जी उपाध्याय एम० ए०, साहित्याचार्य भी कहते हैं—'स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भी संहिताओं भी भाष्य लिखे हैं। ...स्वामी जी ने भाष्य संस्कृत में लिख...स्वामी दयानन्द के भाष्य में समस्त वैदिक शब्द यौगिक माने गये हैं। (आचार्य सायण और माधव पृष्ठ २२२-२२३)

यास्क शाकटायन पतञ्जलि आदि ऋषियों ने भी यही प्रणाली अपनाई थी, निरुक्त में भी यही ढंग अपनाया गया है। आचार्य सायण ने परम्परागत अर्थों को अपनाया। इनकी पुष्टि पुराण, इतिहास, स्मृति आदि ने भी की है। लेकिन महर्षि दयानन्द ने सायण के वेदार्थ को प्रमाण नहीं माना यजुर्वेद भाष्य में शत-पथ ब्राह्मण के कुछ अंश को तो प्रमाण माना है।

अनेकार्थ की शंका

वैदिक शब्दों को यौगिक मानने पर एक शंका यह होती है कि प्रत्येक शब्द अनेक धातुओं से सिद्ध हो सकता है। और अनेकार्थः हि धातवः के आधार पर उनके अनेक अर्थ होंगे अतः यौगिक अर्थ मानें तो शब्द शास्त्र के सिद्धांत से उन का एक अर्थ से सम्बन्ध नहीं हो सकता। उत्तर में निवेदन है कि शब्द समानार्थक वा नानार्थक होते हैं और वे चिरकाल के प्रयोग से स्थिर अथवा रूढ़ हो जाते हैं, उन्हीं अर्थों को ग्रहण किया जाता है। प्रसंग और विशेषण को ध्यान में रखते हुए यौगिक अर्थ मानना ही उचित प्रतीत होता है। यही कारण है कि ऋषि से पूर्ववर्ती कुछ भाष्य-कारों के मत में यज्ञ और यज्ञ सामग्री, यज्ञ पात्रादि का वर्णन भी अनेक मन्त्रों में हैं परन्तु महर्षि की शैली से उन्हीं अर्थों में (यज्ञ में (यज्ञ की एक- एक वस्तु में) प्रकाश तथा उत्तम अर्थ प्रतीत होने लगता है।

त्रिविध प्रक्रिया

वेदों का अर्थ यास्क ने तीन प्रक्रियाओं से माना है। आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक महर्षि ने भी इन्हीं त्रिविध प्रक्रियों के अनुसार अर्थ किया है। परन्तु उन्हें आध्यात्मिक अर्थ विशेष रुचिकर था, उनके विचार से यज्ञ शब्द भी इन्हीं अर्थों में प्रयुक्त होता था।

ऐतिहासिक शैली मान्य नहीं

महर्षि दयानन्द के अनुसार वेद में एक भी ऐसा स्थल नहीं है जहां में अनित्य इतिहास हो। क्यों कि पूर्ववर्ती आकार अनित्य तथा वैयक्तिक इतिहास मानते हैं। इस से वेद सर्वकालीन और सर्वप्राचीन नहीं माने जा सकते। ऋषि की यौगिक शैली से 'वशिष्ठ, जमदग्नि अत्रि आदि ऐतिहासिकों ने इस आध्यात्मिक अर्थ वाले शब्द हैं, इस शैली से आपने इन्हें नित्य प्राकृतिक घटनायें मान कर वेदों को सर्व कालिक एवं सर्व प्राचीन सिद्ध किया। निरुक्तकार भी ऐतिहासिक अर्थ नहीं मानता।

वैज्ञानिक अविष्कार

महर्षि का यह दृढ़ विचार था कि वेद में विज्ञान है। भाष्य में यथा स्थान इसका परिचय भी दिया गया है। भारत के दुर्भाग्य से वे अधिक दिनों जीवित न रह सके जिससे प्रयोगात्मक विज्ञान का आविष्कार वेद से न हो सका। बाद के भाष्यकारों ने उनके बताये मार्ग पर चलकर इस कमी को बहुत कुछ दूर करने का प्रयत्न किया।

वैदिक देवता

आपके भाष्य को पढ़कर वैदिक देवताओं के वास्तविक स्वरूप का पता चलता है। आचार्य सायण आदि के अनुसार अग्नि, वायु आदि देवता चेतन हैं जो अपने-अपने मण्डल के अधिष्ठाता हैं। वेदान्ती भी इसकी पुष्टि करते हैं। परन्तु ऋषि ने यौगिक रीति से इनके अर्थ उनके गुण समूह की दृष्टि से किए हैं, अथवा वे परमात्मा के वाची हैं। ऋषि के मत में तेतीस देवताओं की मूर्ति वेद में नहीं हैं।

सभी विनियोग मान्य नहीं

पूर्वकाल के भाष्यकारों ने वेद मंत्रों का उचित और अनुचित विनियोग माना और उसे ध्यान में रखकर भाष्य किये। फलतः जो शब्द वेद मन्त्रों में हैं ही नहीं, फिर भी उनका विनियोग खींचा तानी करके माना गया जिस से अर्थ का अनर्थ हुआ।

जी सरस्वती

(ले० कुमारी प्रमिला रामकृष्ण मारीशस)

कन्या ने साधारण भाषा में अपने हृदय के अनुसार स्वामी दयानन्द जी के प्रति प्रकट किए हैं। अवश्य पढ़िए।

आर्यावर्त सदा से महापुरुषों का जन्मदाता रहा है। समय-समय पर इस पवित्र भूमि में अनेक महापुरुष जन्म लेकर देश जाति और धर्म की रक्षा करते रहे हैं। समय ऐसा भी आया कि भारत में आर्य जाति की दशा काफी बिगड़ गई थी। समाज में बाल-विवाह बहु-विवाह आदि अनेक कुरीतियां प्रचलित हो गई थीं। साथ-साथ आर्य महिलाओं और विधवाओं की दशा अत्यन्त शोचनीय हो चुकी थी। शूद्र और नारी को वेद की अमर वाणी सुनना तथा पढ़ना निषिद्ध था। विधवाओं के करुण क्रन्दन से देश में दिन प्रतिदिन गरीबी बढ़ती जा रही थी। स्थिति ऐसी हो गई थी कि कुछ कहा नहीं जा सकता।

सैंकड़ों वर्षों के अन्धकारपूर्ण युग के पश्चात परम पिता ओ३म की असीम कृपा से विक्रमी संवत् १९८१ में गुजरात प्रांत के मौरवी नामक रियासत के (टंकारा) नामी स्थान में देश, जाति तथा वैदिक धर्म को पुनर्जीवित करने के लिए एक माता ने ऐसे होनहार बालक को जन्म दिया। जिसने भविष्य में महर्षि दयानन्द के नाम से संसार में प्रसिद्धि प्राप्त की। आप ने बाल्यावस्था में ही धर्म में अनुराग रखते हुए, एक छोटी सी घटना से प्रभावित होकर सोये हुए देश तथा जाति को जगा दिया।

तेरह वर्ष की आयु में शिवरात्रि के अवसर पर एक चूहे को शिव-पिण्डी पर चढ़कर कल्पित शिव का अपमान करते हुए देखकर उसी दिन से सच्चे शिव की खोज में अपने को लगा दिया। आपने गृहस्थ के समस्त ऐश्वर्य को लात मार कर सृष्टि के कर्ता दुनियां के दुखों के हरता विश्व के कल्याण-कर्ता की तलाश में सर्वदा के लिए गृह त्याग दिया। लगभग सोलह वर्ष तक घोर दुख संकट सहकर अन्त में पूज्य स्वामी विरजानन्द जी महाराज के यहां गये। वहां पर आपने अपनी पूरी लगन तथा पूर्ण रूप से शुद्ध वैदिक धर्म ग्रंथों का अध्ययन करके गुरु जी से जाने की आज्ञा ली। जाते समय पूज्य-पाद स्वामी विरजानन्द जी महाराज ने उन से कहा, 'दयानन्द समस्त आर्यवर्त और संसार के सभी देशों में अन्याय और अत्याचार दिन प्रतिदिन बढ़ रहे हैं।

आर्य जाति अनेक कल्पित धर्मों को अपना रही है। मैं आप से गुरु दक्षिणा के रूप में यही मांग करता हूं कि आप सारी दुनिया में वैदिक धर्म के सत्य स्वरूप को आर्यव्रत के समस्त विद्वानों के सामने तथा जन-साधारण के सामने रखने की कोशिश करें, ताकि आज संसार में अविद्या के कारण फैले हुए घोर अन्धकार तथा अन्ध-विश्वास का नाश हो सके। स्वामी दयानन्द जी ने उत्तर दिया कि मैं अपनी सारी आयु वैदिक धर्म के प्रसार में लगा दूंगा, और आपकी आज्ञा का पालन पूर्ण रूप से करूंगा।' स्वामी ने वहां से प्रस्थान किया। कई वर्षों तक आर्यवर्त के सभी नगरों शहरों और गांवों में वैदिक धर्म का प्रसार कर के अंत में बम्बई शहर में १८७५ में आर्य समाज की स्थापना की। आपने भारत के धार्मिक सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियों को सुधारते हुए काफी सफलता प्राप्त की। ये सब उनकी आदर्श तपस्या का फल था। आप आदित्य ब्रह्मचारी और परम ईश्वर भक्त थे। इसी कारण आपने अपने परम गुरू स्वामी विरजानन्द जी महाराज का कहा हुआ अमर वचन का पालन पूर्ण रूप से किया। आप अपने गुरू के एक सच्चे शिष्य और भक्त थे।

अंत में श्री स्वामी दयानन्द जी ने संसार को यह ज्ञान भी दिया कि प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए। किन्तु सब की उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए। ऐसे महान योगी तपस्वी के उपर्युक्त सिद्धांत के अनुसार उन की भेंट में हम यदि उन के प्रति अपने कोमल हृदय से श्रद्धांजलि अर्पित करने की शुभ भावना जागृत न करेंगी, तो कब करेंगी? ऐसे महान पुरुष के पवित्र चरणों में मेरा बारम्बार नमस्कार है।

आज उन के अनुयायी लाखों की संख्या में विदेशों में भी हैं, जैसे मोरिशस, फिजी, अफ्रीका और थाईलैण्ड आदि देशों में उनके बताये हुए पवित्र धर्म और मार्ग पर चल रहे हैं। इन सभी विदेशों के हर शहरों गांवों में हजारों की संख्या में आर्य मंदिर हैं, जहां पर नियमित रूप से साप्ताहिक सत्संग यज्ञ होते रहते हैं। यह सब उनके प्रचार का फल है जो आज हम आंखों से देख रहे हैं।

आज इन विदेशों में आर्य-समाज के द्वारा जो कार्य हुए हैं, और हो रहे है, उनकी जितनी प्रशंसा की जाए कम है। यहां पर इस पवित्र वैदिक धर्म की कृपा से हजारों सरकारी पाठशालाओं में नियमित रूप से (दैनिक) हिंदी आर्य-भाषा की पढ़ाई हो रही है। विगत वर्ष १९६३ में यहां पर एक आर्य गुरुकुल की स्थापना भी हो गई है। गत वर्ष पूज्यपाद स्वामी अखिलानन्द जी महाराज सरस्वती की असीम कृपा से यहां मोरिशस के शहर (पोर्टलुइस) में एक डी० ए० वी० कालेज की स्थापना हुई है, इस समय उस में सैंकड़ों छात्र हिन्दी संस्कृत पढ़ रहे हैं। इन छात्रों को भारतीय छात्र-वृत्तियां दिलाने की व्यवस्था भी हो गई है। हमारे (मोरिशस) में आर्यसमाज ने काफी प्रगति कर ली है। और कर रही है।

अंत में मैं आर्यावर्त के सभी ऋषि भक्तों आर्य उपदेशकों आर्य विद्वानों से प्रार्थना करती हूं, कि वे इस नए वर्ष १९६६ के ऋषि-बोधोत्सव के शुभ अवसर पर पूज्यपाद महर्षि दयानन्द के अधूरे कार्य को पूर्ण करने का पवित्र संकल्प करें। आज ही के दिन हम अपने बिछड़े भाई बहनों को गले लगा कर उनको सच्चे आर्य समाजी बनाने का सुअवसर है। इसी दिन हम अपने मन पवित्र करके विचार कर सकेंगे कि ऋषि के मिशन को पूरा करने के लिए कितना त्याग कर सकते हैं। आओ आज इस अंधेरी रात्रि का हम एक ही रूप प्रभु से प्रार्थना करें कि यह ऋषि-बोधोत्सव हम सभी के लिए नित नई प्रेरणा, उमंगें लेकर आए। ताकि हम सारी दुनियां को आर्य बना सकें।

हमारी आर्यवर्त के रहने वाली आर्य जाति सदा फूले फले। यही मेरी शुभ कामना है। जयहिन्द।

हरियाणा (जिला होशियार-पुर) में आनंद का स्रोत

श्री भीमसेन जी कपिल हैड-मास्टर डी. ए. वी. हाई स्कूल हरियाना की सुपुत्री कुमारी शशि का शुभ विवाह श्री रवि जी ओवराय सुपुत्र स्वर्गीय श्री वजीर चन्द्र जी के साथ १४-१५ जनवरी को बड़ी धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। उपस्थित सम्बन्धियों तथा प्रिय जनों ने इस नवीन दम्पती और परिवार को हार्दिक बधाई दी। इस शुभ अवसर पर हैड-मास्टर जी ने २०० रुपये दान की घोषणा की।

हंसराज महिला महाविद्यालय जालन्धर

युवक - कल्याण समिति के तत्त्वाधान में विद्यालय के संस्थापक, महात्मा हंसराज जी के शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में हंसराज-स्मारक अंतः विद्यालय भाषण-प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, इस प्रतियोगिता में पंजाब के लगभग सभी प्रमुख विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। समारोह की अध्यक्षता दैनिक पत्र-'हिन्दी मिलाप' के स्वामी श्री यश जी ने की।

प्रतियोगिता के अन्त में श्री यश जी ने सभी प्रतियोगियों की भाषण-कला तथा उनके आत्म-विश्वास की प्रशंसा की, पुरस्कार विजेताओं को हार्दिक बधाई दी तथा जो इस प्रतियोगिता में पुरस्कार नहीं जीत सके उन्हें अपनी भाषण-कला को निखारने और अगली बार पुरस्कार जीतने के लिए प्रोत्साहित किया।

समारोह की समाप्ति राष्ट्रीय गान से हुई।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा कार्यालय द्वारा आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग नई दिल्ली

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा की अन्तरंग सभा की गत बैठक दिनांक ३०-१-६६ में यह सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि आर्यसमाज के प्रसिद्ध सेनानी स्वर्गीय महात्मा हंसराज जी की जयन्ती आगामी अप्रैल १९६६ को दिल्ली में समस्त आर्यसमाजों डी० ए० वी० संस्थाओं तथा केन्द्रीय सभा के सहयोग से बड़े समारोह के साथ मनाई जाने का निश्चय हुआ।

इस अवसर पर हमारा यह परम कर्तव्य है कि महात्मा जी जैसे महापुरुष की जयन्ती दल बल सहित मनाई जाए। यह कार्य तभी सम्भव हो सकता है यदि आप इस में अपना पूर्ण योगदान दें और इस पुण्य पर्व को सफल बनाने का भरसक प्रयास करें। —राजकुमार मन्त्री

भारत का नया प्रधानमंत्री

सर्वप्रिय प्रधानमन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री के स्वर्गवास हो जाने के पश्चात् पार्लियामेंट के कांग्रेसी सदस्यों ने इस बार अपना नेता श्रीमती इन्दिरा गान्धी को चुना है। वही अब राष्ट्र की प्रधानमन्त्री बनी हैं। पहिली बार प्रधानमन्त्री के लिए मुकाबिला हुआ है। श्री मोरार जी देसाई ने मुकाबिले में खड़े हो कर प्रधानमन्त्री बनने की सर्वसम्मति की परम्परा को समाप्त कर दिया है। जनतन्त्र में ऐसा होता ही है। भारत के इतिहास में महिला प्रधानमन्त्री भी प्रथम बार निर्वाचित हुई हैं। भारत ने यह परिचय दे दिया है कि उस के विचारों में पुरुष और महिला में सम्मान के रूप में कोई अन्तर नहीं है। दोनों का सम्मान बराबर है। महिला सम्मान भारत का गौरव प्रसिद्ध है। आज हमारे देश के इतने ऊंचे आसन पर महिला प्रधानमन्त्री बन कर बैठी हैं। हम स्वागत करते हैं। श्रीमती इन्दिरा गान्धी स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू की योग्य विदुषी सुपुत्री हैं। सारी समस्याएं उनकी आंखों के सामने हैं। विशेषकर के आज कठिनताएं सामने हैं। ऐसे विषम अवसर पर सारे देश का कर्तव्य है कि वह उन को पूर्ण सहयोग देवें। हम अपने नये प्रधानमन्त्री का स्वागत करते हुए इन से बड़ी-बड़ी आशाएं रखते हैं।

—

[अन्तरंग] ... समिति नई दिल्ली १.

(वर्ष १९६६ के लिए)

प्रधान—डा० गोवर्धन लाल दत्त, भूतपूर्व उप-कुलपति विक्रम विश्वविद्यालय, उप-प्रधान—डा० मेहरचन्द महाजन भूतपूर्व उच्च न्यायधीश भारत सरकार, जस्टिस जीवनलाल कपूर चैयरमैन ला-कमीशन, राय बहादुर डा० महाराज कृष्ण कपूर, राय बहादुर कुन्दनलाल रिटायर्ड चीफ इंजीनीयर, श्री एम. आर. कोहली, श्री हरिश्चन्द्र काठपालिया, जस्टिस राम लुभाया ओबराय, प्रधान-मंत्री—राय बहादुर डा० गणेश दास कपूर, मन्त्री—श्री लालचन्द खन्ना, श्री एस. एल. वर्मा, श्री बृजलाल भवन वकील, डा० दौलतराम महता, राय बहादुर अमरनाथ पुरी, श्री आर. एन. गुप्त, आवै० अकाउंटैंट—श्री पन्नालाल सूद, श्री जैस्साराम, श्री पन्नालाल सूद, श्री सेवाराम कपूर, श्री कौशराज।

जी० डी० कपूर
प्रधानमन्त्री

आर्य समाज सीताराम बाजार देहली

प्रधान—श्री बाल किशन दास
उपप्रधान— ,, दौलत राम
उपप्रधान— ,, देवराज अग्रवाल
,, श्री [illegible]
,, श्री राजाराम शास्त्री
मन्त्री— ,, गौरीशंकर भारद्वाज
सहायक ,, —,, सत्यप्रकाश जी महेश्वरी
उपमन्त्री— ,, सेमदेव चांदना
,, ,, वेद प्रकाश
कोषाध्यक्ष— ,, नरेन्द्रनाथ गुप्ता
पुस्तकाध्यक्ष— ,, आनंद स्वरूप ,,
लेखा निरीक्षक ,, अनन्तराम बेरी

इसके अतिरिक्त २२ अन्तरंग सदस्य चुने गये।

गौरी शंकर भारद्वाज
मन्त्री समाज

श्री वीरदल गाजियाबाद

[संचालक]—श्री विजयकुमार जी सिंघल
सहायक ,, — I ,, कृष्ण जी
,, II ,, वेदप्रकाश जी आर्य
शाखा संचालक— ,, रामकुमार जी गोयल
संरक्षक—श्री डा. मूलराज जी अरोड़ा
मन्त्री— श्री सत्यपाल जी सिंघल
उपमंत्री- ,, अरविंद कुमार जी
कोषाध्यक्ष—श्री महेन्द्र कुमार जी मित्तल
पुस्तकाध्यक्ष- ,, विजयकुमार गोयल
शाखा नायक—श्री शिव कुमार जी सिंघल

सत्यपाल मन्त्री

आर्य समाज (सैक्टर ८) चण्डीगढ़

प्रधान—श्री नानक चन्द जी पंडित
उपप्रधान—श्री सन्तराम सैनी, प्रि. हरिराम, प्रि. त्रिलोकीनाथ, श्री. प्रकाश चन्द महाजन तथा श्रीमती विद्यावती अग्रवाल।
मन्त्री—श्री देसराज मलिक
उपमन्त्री—श्री टेकराम, श्री राम प्रताप, श्री विजय कुमार तथा मिसिज मलिक
कोषाध्यक्ष-श्री रामकृष्ण गुप्ता
पुस्ताध्यक्ष-श्री अविनाशी लाल
निरीक्षक—श्री रामलाल जौहर
अन्तरंग सदस्य — प्रतिष्ठत सदस्य श्री चानन लाल आहूजा, श्री परमेश्वरी दास बहल, डा० तुलसी दास, प्रि० जी. डी. खन्ना तथा न्यायाधीश टेक चन्द और २७ अन्तरंग सदस्य चुने गये।

देसराज मलिक
मन्त्री समाज

आर्य केन्द्रीय सभा करनाल

प्रधान—श्री मेला राम जी वर्क
मन्त्री—श्री बीहराम जी
कोषाध्यक्ष—श्री अनन्त राम जी
आडिटर—श्री अमरनाथ जी
—मन्त्री सभा

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत् कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टेलीफोन नं० १०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे — वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक ६) १६ फाल्गुण २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१— २७ फरवरी १९६६ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

यस्तन्न वेद

हे लोगो ! यः—जो भी अपने इस मानव जीवन में तत्-उस परमेश्वर को न वेद—नहीं जानता, नहीं मानता और उसे नहीं प्राप्त करता। प्रभु पथ पर नहीं चलता।

किमृचा करिष्यति

ऐसा अभागा प्रभु से हीन नरनारी ऋचा—इन चमकीले भौतिक पदार्थों से या अपने कोरे तर्कवादों से किम्—क्या करेगा ? प्रभु के बिना ये प्रकृति के चमकीले पदार्थ उसे क्या देंगे ?

य इत्तद् विदुः

और ये—जो नर-नारी अपने इस जीवन में ही तद्—उस प्रभु को मानते जानते और पालते हैं। उसके प्रेम के रसीले प्याले का पी लेते हैं।

ते अमी समासते

अमी—ऐसे ही ये ते—वे नर-नारी प्रभु प्रेमी ही अपने इस पवित्र जीवन में समासते—आनन्द का स्थान प्राप्त कर लेते हैं। परमानन्द को पा लेते हैं।

अ थ र्व वे द से

माननीय श्री यश जी

प्रधान आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, पंजाब—जालन्धर



आर्यप्रादेशिक सभा पंजाब जालन्धर नगर के ता० २० फरवरी १९६६ रविवार के वार्षिक अधिवेशन में सर्वसम्मति से आप को सभा का प्रधान चुना गया तथा अधिकारियों एवम् अन्तरंग सभा के सदस्यों का चुनने का आप को सर्वाधिकार दिया गया। आप ने सारे मान्य प्रतिनिधियों से ज़ोरदार शब्दों में कहा है—आप ने सभा का जो बड़ा दायित्व मुझे सौंपा है। उसके लिए आप ने पूर्ण सहयोग देना है। यह वर्ष समस्याओं का वर्ष है। वेदप्रचार के काम को बढ़ाना है। आज का युग आर्यसमाज के निष्काम सेवकों की ओर देख रहा है। आज से ही हम सब सभा की सेवा में तन मन धन से जुट जावें।

ऋषि दर्शन

स विष्णुरीश्वर:

वह विष्णु ईश्वर ही है। वही परमेश्वर विष्णु कहलाता है। सर्वव्यापक होने से भगवान विष्णु कहलाता है। उस सर्वव्यापक प्रभु से ही जीवन की सारी कामनाएं पूरी होती हैं उसी को मानो और उसी से मांगना सीखो।

चक्रवर्ति राज्यम्

आपका राज्य चक्रवति है। सारे विश्व की जनता आपके स्वराज्य तथा सुराज्य की प्रशंसा करती रहे। कोई हमें पराधीन न बना सके। मानसिक दास भी न बनें हम चक्रवर्ति राज्य का प्रसाद प्राप्त करें।

अनन्त पराक्रमवान्

वह परमेश्वर अनन्त बल पराक्रमों का भण्डार है, सारी शक्तियों का वही केन्द्र है, उस की शक्ति के सामने कौन बलवान ठहर सकता है। अभिमानी बली उस महाबली के सामने हार गये, कुछ न चली वह बली है।

भा ष्य भू मि का से

(गतांक से आगे)

हम आज अपनी मातृभूमि, संस्कृति और भाषा को भूलते जा रहे हैं। हमें इन तीनों की रक्षा करनी है। जिसके घरमें मां जीवित हो उसे कहीं बाहिर तीर्थों पर जाने की जरूरत नहीं। मां की सेवा से बड़ा कोई तीर्थ नहीं। मां ही हमें सुन्दर विचार देती है। शास्त्रों में मां को बहुत ऊंचा स्थान दिया गया है लेकिन मा भी मां होनी चाहिए 'मेकअप' वाली मम्मी नहीं। हमें अपनी जननी जन्मभूमि की सेवा करनी चाहिए। वह सबसे बड़ी मां है। किसी शायर ने कहा है—

बुलबुल को गुल मुबारिक
गुल को चमन मुबारिक
हम को मेरे प्यारे
प्यारा वतन मुबारिक

★ अपने देश, अपनी सस्कृति और अपनी भाषा के प्रति लगाव न रखने वालो ! याद रखो कि यदि तुमने जननी जन्मभूमि से प्यार करना न सीखा तो उसी तरह अमरीका से भी निकाल दिए जाओगे जैसे बर्मा, लंका और इंगलैंड से निकाले जा रहे हैं।

एक जन्म माता-पिता ने दिया और दूसरा जन्म गुरू देने हैं। गुरू का अर्थ है वह व्यक्ति जो ज्ञान के पास है जो चारों वेदों का ज्ञान रखता है और आत्म-दर्शन करके जागृत अवस्था में है। गुरू बनने के लिए इन्द्रियों पर विजय की आवश्यकता है और इन्द्रियों पर विजय के लिए जिह्वा पर जो बोलती भी है और खाती है, नियन्त्रण जरूरी है। गुरु यदि क्रोधी है। तो वह गुरु बनने के योग्य नहीं।

गुरु मिला तब जानिये
मिटे मोह सन्तोष
हर्ष शोक व्यापे नहीं
फिर गुरु समझो मिलिए

अथर्ववेद में राष्ट्रभक्ति और प्रभुभक्ति को समान दर्जा दिया गया है। जो राष्ट्र सेवा में अपने प्राणों की आहूति देते हैं और जो परमात्मा के लिए आत्मसमर्पण करते हैं, उनकी समान शब्दों और भावनाओं के बाद प्रशंसा की गई है। आत्म ज्ञान के बाद प्रभु में लीन हो जाने वालों और मातृ-भूमि की रक्षा के लिए आक्रमणकारी शत्रु का मुकाबिला करते हुए वीरगति प्राप्त करने वालों के मध्य परमात्मा की दृष्टि में कोई अंतर नहीं।

राष्ट्र-भक्ति और प्रभु-भक्ति-१२

(श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की अमृतभरी कथा)



कल दीक्षा, तप, और गुरू की बात चल रही थी। दीक्षा का अर्थ है दक्ष—**Alertness**—चौकसी। आज पूर्ण रूप से दक्ष रहने की आवश्यकता है। हमें देखना है कि कोई शत्रु हमारे देश की सीमाओं पर घुसपैठ तो नहीं कर रहा। देश के अन्दर दूसरों के रुपयों पर पलने वाले देशद्रोही सक्रिय तो नहीं हैं। जिस तरह देश की सीमाओं पर दक्षता जरूरी है, उसी तरह परिवारों के अन्दर भी पूर्ण दक्षता अनिवार्य है। जिस परिवार की मुखिया देवी निपुण एवं दक्ष होगा उसका प्रबन्ध खूब अच्छी तरह चलेगा। जहां कोई अल्हड़-सी स्त्री परिवार की मुखिया होगी वहां समय पर कोई भी वस्तु अपनी जगह पर नहीं मिलेगी और सारा प्रबन्ध अस्त-व्यस्त रहेगा। आज कल लड़कियों को स्कूलों में गृह-विज्ञान— **Home Science** पढ़ाई जाती है। **Home Science** का अर्थ भी यही है घरों में सभी प्रबन्ध को सुचारु ढंग से चलाने की शिक्षा। याद रखो ! एक छोटी-सी गलती एक बहुत बड़ी विपदा का कारण बन सकती है। दक्षता में आलस्य, प्रमाद और लोभ मुख्य बाधाएं हैं। लोभ कर्तव्य-पालन में सब से बड़ी बाधा है। १९४७ में पाकिस्तानी आक्रमणकारी काश्मीर की ओर बढ़े। बारामूला पहुंचे तो लूट मार शुरू कर दी। यदि ये लुटेरे लूटमार न करते तो बढ़ते-बढ़ते श्रीनगर पहुँच जाते। भगवान की कृपा से भारतीय सेना पहले पहुँच गई और श्रीनगरको समय पर बचा सकी। एक बार कुछ सशस्त्र व्यक्तियों ने खुले बाजार में एक दुकान में डाका डाला। जब डाकू लूट मार में लगे थे तो एक बहुत बड़ी भीड़ ने दुकान को घेर लिया। डाकुओं का लूट के माल सहित भागना कठिन हो गया। डाकुओं के सरदार ने झट एक तरकीब निकाली और लूट के माल में से दस हजार रुपए के नोट भीड़ पर बरसा दिए। भीड़ नोट उठाने में लग गई और डाकू भाग निकलने में सफल हो गए। यह दो घटनाएं बताने के लिए पर्याप्त हैं कि लोभ कर्तव्य पालन में कोताही सिखाताहै।

शरीर का तप आग में बैठना या पानी में खड़ा होना नहीं। देवता और गुरु की पूजा करो किंतु शरीर की भी रक्षा करो। सूर्य वायु-चन्द्रमा ये सभी देवता हैं। इन्हीं की कृपा दृष्टि की प्राप्ति के लिए यज्ञ पद्धति चलाई गई। मातृ देवो भव, आचार्य देवो भव अतिथि देवो भव जब हम कहते हैं तो इसका अर्थ यह है कि आचार्य और गुरु हमारा मार्ग दर्शन करते हैं हम उनको प्रणाम करते हैं। आजकल तो गुरु भी कई प्रकार के हैं। एक लड़के ने गुरु से पूछा—गुरु जी ! कबूतर को कैसे पकड़ना चाहिए। गुरुदेव ने झट से कहा—'पहले कबूतर को गर्दन से पकड़ो और फिर उसकी आंखों में गर्म-गर्म मोम डाल दो। जब कबूतर को दिखाई देना बन्द हो जाए तो उसे पकड़ लो।' शिष्य लड़के ने पूछा—'महाराज ! जब मोम डालने के लिए कबूतर की गर्दन पकड़नी है तभी क्यों न उसे पकड़ लिया जाय ?' गुरु ने डांटते हुए कहा—'शर्म नहीं आती तुम्हें गुरु को चुनौती देते हुए। यदि बिना मोम आंखों में डाले पकड़ लिया तो उसमें उस्तादी कैसे होगी। गुरु वही पूजा के पात्र हैं जो सन्मार्ग दिखाएं। महर्षि दयानन्द अपने गुरु विरजानन्द की पूजा करते थे। मध्य धारा से गंगाजल लाकर गुरु को स्नान कराते थे।

शरीर की रक्षा करो और ब्रह्मचर्य का पालन करो। इन दोनों बातों पर अमल करके ही आत्म-दर्शन सम्भव है। नेपोलियन बोनापार्ट इसीलिए मारा गया कि उसने ब्रह्मचर्य का पालन नहीं किया। अहिंसा का मानव जीवन में महत्व-पूर्ण स्थान है। अहिंसा का यह अर्थ कभी नहीं कि यदि चीनी हमला करके हमारे प्यारे देश में दाखिल हो जाए तो अहिंसा परमो धर्मः का भजन गाने लगो। तब अहिंसा का अर्थ है कि अटल होकर, कृतसंकल्प के साथ शत्रु का संहार करो। अथर्ववेद में तो यहां तक लिखा है कि शत्रु यदि जीवित रह जाए तो उसे पानी के योग्य भी न छोड़ो। अब मैं वाणी की चर्चा करता हूं। हे मानव ! ऐसी वाणी बोल जिससे दूसरे को पीड़ा न हो और कि जो सुनने वाले को शीतलता पहुँचाए। सच बोलते समय भी हमें हित, अहित का विचार करना चाहिए। सच बोलो किंतु मीठा। अप्रिय सच न बोलो। वाणी का अर्थ है कि इन्सान की जिह्वा के आगे मधु भरा हुआ हो। मन और जिह्वा दोनों मीठे हों। यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि वाणी के कारण ही महाभारत का युद्ध हुआ। दुर्योधन हस्तिनापुर में पांडवों के राजमहल को देखने गए। महल के एक भाग का नाम छल-महल था। (क्रमशः)

सम्पादकीय—

आर्य जगत

वर्ष २६] रविवार २०२२, २७ फरवरी १९६६ [अंक ६

सभा का शानदार अधिवेशन

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर का वार्षिक अधिवेशन गत २० फरवरी १९६६ रविवार दो बजे बाद दोपहर आर्य समाज विक्रमपुरा के नये और सुन्दर हाल में माननीय श्रीयुत यश जी सभा प्रधान की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ। इस अधिवेशन में पंजाब के कोने २ से दूर २ से मान्य प्रतिनिधि पधारे हुए थे। जालन्धर अमृतसर, फिरोजपुर, नाभा, लुधियाना, अम्बाला, करनाल, हिसार, रोहतक, देहली, शिमला, सोनीपत, बटाला, गुरदासपुर, धारीवाल, जोगेन्द्र नगर हिमाचल, जम्मू, होशियारपुर आदि सारे स्थानों से समाजों के मान्य भाई बहिनें उपस्थित थे। हमारे कालेजों के तथा स्कूलों के आदरणीय प्रिंसिपल महानुभाव, व्यापार क्षेत्र, राजनीति में कार्य करने वाले तथा अन्य भी केन्द्रों में बैठ कर काम करने वाले सज्जन सभा के हित-चिन्तक थे। इस सभा को इस बात का गौरव प्राप्त है कि उसके विशाल सामाजिक परिवार में शिक्षा क्षेत्र के विशारद, विख्यात नेता तथा विशिष्ट कार्यकर्ता शामिल हैं। ये सारे अधिवेशन में पधारे थे।

दिल खोलकर समस्याओं पर अपने-अपने विचार व्यक्त करने का बोलने वालों को समय मिला। माननीय प्रतिनिधियों ने नाना प्रकार की आवश्यक बातों और सभा की उन्नति के साधनों पर अपने कीमती तथा ठोस विचार रखे प्रान्त विभाजन के तत्वों का शक्ति से प्रतिकार करने के लिए सभा की संगठन शक्ति की सुन्दर सराहना की गई। इस वर्ष प्रचार कार्य को और भी तीव्र करने, समाजों में और भी उत्साह भरने की योजनाएं पेश की गईं। युवकों के संगठन के कार्य को सभा द्वारा हाथ में लेने पर सबने बड़ा बल दिया। इस वर्ष आर्ययुवकों को सूत्र में पिरोने का विशेष कार्य होगा। गायत्री पाठ के बाद भारतीय महान नेताओं एवम् समाज के महारथियों के निधन पर शोकाञ्जलियां प्रस्तुत की गईं।

सब के अन्त में निर्वाचन का काम शुरू हुआ। आर्यप्रादेशिक सभा को इस बात का सदा से गौरव प्राप्त है कि सभा का निर्वाचन सर्वसम्मति से होता है। यही परम्परा इस बार भी कायम रखी गई। सभा के प्रधान पद के लिए श्रीयुत यश जी का नाम प्रस्तुत हो कर सर्वसम्मति से स्वीकार हुआ तथा बाकी निर्वाचन का सर्वाधिकार श्री प्रधान जी को सौंप दिया गया। अधिकारियों व अन्तरंग सभादि के नाम स्वयं घोषित करेंगे। बड़े प्रेम से शांति पाठ से अधिवेशन समाप्त हुआ। आर्यसमाज विक्रमपुरा जालन्धर के मान्य अधिकारियों का भी तो विशेष धन्यवाद है जिन्होंने समाज की ओर से इस अधिवेशन में पधारने वाले सारे सज्जनों के निवास तथा भोजन-पान आदि का उदारता पूर्वक सुप्रबन्ध किया। अधिवेशन समाप्ति पर भी बढ़िया जलपान का प्रबन्ध था। नाम में तो जलपान था परन्तु उसमें खान-पान की वस्तुओं की कमी न थी। इस अधिवेशन की सबको बधाई।

—त्रिलोकचन्द

अपनों से गिला

★✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤✤★

भारत के संविधान में चौदह भाषाएं स्वीकृत की गई हैं। उनको अपने २ रूप में विकास का प्रबन्ध है ही। हिन्दी को राष्ट्रभाषा का स्थान मिला है। प्रत्येक राष्ट्र अपनी राष्ट्रीय भाषा का सम्मान करता है। भारत की विदेशी सत्ता को समाप्त हुए वर्षों हो गए। प्रति वर्ष हम गणतन्त्र दिवस मनाते हैं। लोकसभा का अधिवेशन भी होता रहता है। इस बार प्रधान मन्त्री के उच्चासन पर माननीया श्रीमती इन्दिरा गांधी जी विराजमान हुई हैं। हमारे राष्ट्र को गौरव प्राप्त है कि उसने इतने महान् जनतन्त्री राष्ट्र में एक देवी को यह सम्मान देकर अपना नारि सम्मान व्यक्त किया है। इसी प्रकार हमारे राष्ट्रपति मान्यवर डा० राधाकृष्णन जी विश्व विख्यात नेता हैं। पर इस बार एक बात का दिल में बड़ा खेद हुआ कि श्रीमती इंदिरा जी ने राष्ट्र के नाम अपना जो प्रथम सन्देश-भाषण दिया, अंगरेजी में दिया। इसी प्रकार हमारे राष्ट्रपति जी ने भी लोक सभा के इस अधिवेशन में अपना भाषण अंगरेजी में ही पढ़ा। दूसरे देशों वाले क्या कहेंगे? राष्ट्र की किसी भी भाषा में बोल देते तो गिला न था। पर इतने वर्षों के बाद भी हमारे नेता विदेशी भाषा में बोलना गौरव समझते हैं। यदि नेताओं के मन में ही राष्ट्रभाषा के प्रति सम्मान न होगा तो जनता क्या करेगी? हम इसे मानसिक दासता ही समझते हैं। राष्ट्र भाषा का यह अपमान भी है। हम नम्र निवेदन करना चाहते हैं कि आगे से प्रथम भाषण राष्ट्र की भाषा में देवें। बाद में चाहे उसका अनुवाद अंगरेजी में कर दिया जावे। राष्ट्र के मान के लिए राष्ट्र-भाषा का मान बड़ा ही आवश्यक है—सं.

हरियाना का जलसा

डी. ए. वी. हाईस्कूल हरियाना का जलसा स्कूल के मान्य हैडमास्टर श्री भीमसेन जी कपिल के उत्साह से बड़े समारोह से मनाया गया। समाज का भी यही जलसा होता है। स्कूल के छात्रों का बड़ा सुन्दर मनोरंजक कार्यक्रम था। जलसे में सभा की ओर से प. त्रिलोकचन्द्र शास्त्री, प. चन्द्रसेन जी आर्य हितैषी, पं. हजारीलाल जी शामिल हुए। जलसा हर प्रकार से सफल रहा। श्री हैडमास्टर जी का समाज प्रेम व उत्साह प्रशंसनीय है।

आर्य जनता सावधान रहे

विदित हुआ है कि ओंकारनाथ दुबे नाम का कोई व्यक्ति मध्य प्रदेश आदि के आर्य समाजों में घूम रहा है। वह अपने को कई विषयों में पी० एच० डी० और गुरुकुल कांगड़ी का प्रोफेसर बताता है।

यह व्यक्ति अपने को सार्वदेशिक सभा से सम्बन्ध भी प्रकट करता है।

इस व्यक्ति का सार्वदेशिक सभा के साथ किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है। न सभा ने इन्हें समाजों में घूमने का प्रमाण पत्र ही दिया है। ऐसे व्यक्तियों से आर्यसमाजें और नर-नारी सावधान रहें और इन्हें किसी भी प्रकार का प्रोत्साहन न दें।

रामगोपाल मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
नई दिल्ली—१

——

आर्यप्रादेशिक सभा का वार्षिक विवरण परिचय

महात्मा हंसराज जयन्ती, सेवाकार्य, साहित्य प्रकाशन



आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के दीर्घकालीन जीवन में एक वर्ष की और वृद्धि हुई। पिछला वार्षिक अधिवेशन ३१-१-६५ को लारेंस रोड आर्यसमाज अमृतसर में हुआ था। इस वर्ष आर्यसमाज, विक्रमपुरा, जालन्धर के नये विशाल मंदिर में हम सब एकत्रित हुए। लगभग एक लाख रुपयों की लागत से बना यह मन्दिर बरबस हमें अपने निर्माताओं, स्व० ला० शंकरदास जी त्रेहन, श्री देशराज जी महाजन, डा० हुकुमचन्द जी भल्ला ला० सन्तोषराज जी तथा प्रि० प्यारेलाल जी बेरी का स्मरण कराता है, जिनके भगीरथ पुरुषार्थ से जालन्धर में इस मंदिर के रूप में आर्यसमाज के यश और सम्पत्ति की वृद्धि हुई।

जालन्धर अत्यन्त प्राचीन नगरी है। इसका विशेष ऐतिहासिक महत्त्व है। नाथों, बौद्ध सन्तों तथा मुस्लिम सूफी फकीरों ने इसे अपनी साधना के लिये चुना। आर्यसमाज की दृष्टि से इसका एक विशेष महत्व है। क्योंकि इसी नगरी में और लगभग इसी स्थान पर आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी ने सन १८७७ सितम्बर, अक्तूबर में वैदिक धर्म का प्रचार किया।

ऋषि दयानन्द जी के प्रचार स्थान पर एकत्र हम सब लोग यदि आर्यसमाज के काम के लिए कुछ स्फूर्ति ग्रहण कर सकें तो हम अपना भी कल्याण करेंगे—वर्तमान भयंकर संकट में फंसे अपने प्रांत का भी कल्याण कर पायेंगे तथा देश को भी सन्मार्ग दिखा सकेंगे।

शोक प्रकाशन

१९६५-१९६६ का यह वर्ष भारत के लिये एक महान संघर्ष का वर्ष रहा। इस में हमने अनेक पुण्य आत्माओं के वियोग दुःख को सहा।

१—श्री लाल बहादुर जी शास्त्री, भारत के प्रधानमंत्री लगभग १८ मास के अपने महत्वपूर्ण कार्यकाल में भारत का, युद्ध और शान्ति के दोनों क्षेत्रों में ही सफलता पूर्वक नेतृत्व कर उज्ज्वल सूर्य के समान पूर्ण प्रकाश की अवस्था में ही अचानक कालग्रस्त हो गये। इस सन्त, साधक, प्रधानमन्त्री की अकाल मृत्यु से देश ने गहरे आघात का अनुभव किया।

२—स्वा० ध्रुवानन्द जी, पूर्व नाम श्री धुरेन्द्र शास्त्री राजगुरु का भी इस ही वर्ष देहान्त हुआ। आपकी मृत्यु से आर्यसमाज ने एक महान् कार्यकर्त्ता तथा एक विशिष्ट विद्वान् को हाथ से गंवाया। आप ने आर्य सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान के रूप में भी महत्वपूर्ण कार्य किया।

३—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के तथा आर्य संस्थाओं के महान् कार्यकर्त्ता, जिला होशियारपुर तथा कांगड़ा में प्रचार के प्राण तथा अंग्रेजी में वेदभाष्य प्रकाशित करने वाले महात्मा देवीचन्द जी भी आज नहीं रहे। उनकी मृत्यु से आर्य समाज की अपार क्षति हुई।

४—लाहौर तथा जालन्धर में आर्यसमाज के विशेष कार्यकर्त्ता तथा पिछले वर्ष सभा के कार्य को बहुत ही योग्यता से सम्पन्न करने वाले ला० ज्ञानचन्द जी भाटिया का स्वर्गवास सभा तथा जालन्धर की आर्य संस्थाओं की विशेष क्षति समझनी चाहिये।

५—हिन्दी पत्र-कारिता के क्षेत्र में देश-भक्ति का सन्देश देने वाले तथा जीवनी साहित्य के मर्मज्ञ श्री सत्यदेव जी विद्यालंकार (देहली वाले) तथा वैदिक साहित्य के विशिष्ट विद्वान् श्री चन्द्रमणि जी विद्यालंकार पालीरत्न का वियोग भी इस वर्ष की दुःखद घटना है।

६—ऋषि दयानन्द जी के विशेष भक्त श्री टी. एल. वस्वानी जी तथा आर्य साहित्य के विद्वान् तथा लेखक श्री गंगाप्रसाद जी एम.ए. के स्वर्गवास से जो आर्यसमाज की क्षति हुई उसका उपाय शीघ्र होता नहीं दीखता।

७—श्री यश जी तथा श्री रणवीर जैसे लेखनी के वीर तथा देश सेवकों की माता श्रीमती मेलादेवी जी का भी इस ही वर्ष स्वर्गवास हुआ। आर्यसमाज के उच्चकोटि के सन्त महात्मा आनन्द स्वामी जी, पूर्व रूप ला० खुशहालचन्द जी की धर्मपत्नी होने का सौभाग्य प्राप्त करने वाली माता मेलादेवी ने जीवनभर अपने पति का अनुसरण करते हुए आर्यसमाज के कार्य में भी सदा रुचि ली।

८—पंजाब प्रांत के पिछले राज्यपाल श्री नरहरि विष्णु गाडगिल जी की दुःखद मृत्यु इस प्रांत की एक विशिष्ट क्षति है।

सभा कार्य

देश में तथा देश का एक अंग होने के नाते इस प्रान्त में एक विशेष बात देखी जा रही है। आर्यसमाज का क्षेत्र फैल रहा है, संस्थाएं बढ़ रही हैं, नई-नई समाजें पनप रही हैं पर साथ ही साथ आर्यसमाज का जन्म जिन भ्रम के निराकरण के लिए हुआ था उन में भी कोई कमी आती दृष्टिगोचर नहीं होती।

मूर्तिपूजा करने वालों की संख्या घट नहीं रही है, तीर्थस्थानों के आडम्बर घट नहीं रहे हैं, भिखमंगे साधुओं की सेना कम नहीं हुई। फलित ज्योतिष का, चमत्कारी ठगों का, मूर्ति पूजा का, पुस्तक पूजा का, कबर पूजा का, भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों के ग्रन्थों का महत्व किसी प्रकार भी कम हो गया हो ऐसा कुछ भी दिखाई नहीं देता।

इस धार्मिक पाखंड के साथ-साथ राजनीतिक भ्रष्टता, व्यवहार की अशुचिता तथा जीवन में अवांछनीय मूल्यों की स्वीकृति ने इतनी नई समस्याएं उत्पन्न कर दी हैं कि हम सब एक बावले दिङ्मूढ़ बालक की तरह सिवाय चारों ओर देखकर हताश होने के कुछ कर नहीं पा रहे।

आर्यसमाज को यदि जीवित रखना है तो अपने सदस्यों, अपनी संस्थाओं, अपने कार्य-कर्त्ताओं तथा अपनी समाजों को देखना परखना होगा। अपनी दुर्बलताएं दूर करनी होंगी, अपने लक्ष्य को स्पष्ट करना होगा तथा अपनी कार्य विधि में आवश्यक परिवर्तन करने होंगे।

इन सब बातों पर विचार कर वर्ष के लिए नया सम्बल प्राप्त करना ही वार्षिक अधिवेशन का मुख्य कार्य होता है। आशा है हम सब समाज के प्रतिनिधि तथा अधिकारी इस अधिवेशन को

(शेष पृष्ठ ५ पर)

आर्यप्रादेशिक सभा का वार्षिक विवरण परिचय

(पृष्ठ ४ का शेष)

इस दृष्टि से देखेंगे केवल परम्परा के अनुसार काम चलाऊ रूप में न देखेंगे।

सभा की स्थिति

सभा की आर्थिक स्थिति सम्भवतः पिछले कुछ वर्षों में सन्तोष जनक नहीं रही। इसी कारण एक तो सभा में आवश्यक संख्या में प्रचारक नहीं रखे जा सकते और दूसरे सभा के मार्ग व्यय आदि को ठीक रूप में नहीं लाया जा सकता, तीसरे सभा के पत्र आर्यजगत का रूप और अच्छा नहीं बनाया जा सकता और चौथे सभा का साहित्य विभाग अधिक उन्नत नहीं हो सकता। इस वर्ष इन सब दिशाओं में कुछ कार्य हुआ। इस के लिए कुछ सुयोग और दुर्योग दोनों उत्तरदायी हैं। उनका उल्लेख करना आवश्यक है।

इस वर्ष भारत पाकिस्तान के युद्ध ने इस प्रांत के जन-जीवन को इतना उलट-पलट दिया कि सभा को इसके कारण विकट परिस्थिति में से गुजरना पड़ा।

जम्मू तथा श्रीनगर की समाजों को विशेष कर तथा अन्य सीमा देशवर्ती समाजों के सामान्यतया उत्सव न हो सके।

२—गाड़ियों की गड़बड़ के कारण प्रचारक वर्ग का प्रचार कार्य करना कुछ मास बन्द करना पड़ा।

३—इसके परिणाम स्वरूप सभा के लिए आवश्यक धन-संग्रह का कार्य न हो सका।

इस भीषण युद्ध के साथ यदि महात्मा हंसराज जन्म शताब्दी का सुयोग न आता तो सम्भवतः इस वर्ष सभा का कार्य चलाना लगभग असम्भव हो जाता।

महात्मा हंसराज जन्म-शताब्दी समारोह

यह समारोह पिछले वर्ष ११ अप्रैल से १६ तक बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। ११ अप्रैल से व्याख्यान माला का क्रम आरम्भ हो गया। १७ तारीख को आर्य संस्थाओं की ओर से एक विशाल जलूस निकाला गया। १७ से १६ तारीख तक विभिन्न सम्मेलन किए गए और १९ तारीख को एक विशाल कान्फ्रेन्स की गई जिसमें केन्द्र के उप-शिक्षा मन्त्री श्री यश जी प्रधान सभा, मुख्यमन्त्री श्री रामकृष्ण जी, कांग्रेस प्रधान पं. भगवत दयाल जी आदि प्रांत तथा देश के गण्य-मान्य नेताओं ने म० हंसराज जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

११ अप्रैल से जो व्याख्यान माला आरम्भ हुई उसमें आर्य-समाज, महात्मा हंसराज तथा भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर आचार्य हजारी प्रसाद जी द्विवेदी पंजाब विश्व विद्यालय, प्रो. अब्दुल मजीद जी, श्री सूर्यभानु जी उपकुलपति कुरुक्षेत्र विश्व-विद्यालय, डा. अनूपसिंह जी डा० गोवर्धनलाल जी दत्त, प्रधान डी० ए० वी० कालिज मैनेजिंग कमेटी तथा श्री मोरारजी देसाई, पूर्व वित्तमन्त्री केन्द्रीय सरकार, जैसे विद्वानों के विशिष्ट भाषण हुए।

यह व्याख्यान माला अपने ढंग की आर्य समाज के क्षेत्र में एक नई चीज थी।

१७ अप्रैल का जलूस व्याख्यान माला तथा १६ अप्रैल की यह प्रसभा आर्य-समाज के इतिहास में स्मरणीय समारोह थे। इनके अतिरिक्त यज्ञ तथा वेद सम्मेलन, धर्मप्रचार सम्मेलन आदि अनेक महत्व पूर्ण सम्मेलन हुये। इस शताब्दी का कार्य क्रम बहुत सफल और विस्तृत रहा। जलूस सम्मेलन कांफ्रेंस तथा अन्य कार्यक्रमों के अतिरिक्त महात्मा हंसराज जी के जीवन तथा उनकी रचनाओं के सम्बन्ध में अच्छा साहित्य तैयार किया गया।

शताब्दी के उपलक्ष्य में लगभग ३३ हजार रुपया एकत्र हुआ। आशा थी कि लाखों रुपये इस अवसर पर एकत्र किये जा सकेंगे और कोई ठोस विशिष्ट कार्य किया जा सकेगा, पर पाक आक्रमण की विपत्ति ने आर्य समाज की इस आशा पर तुषारपात कर दिया।

हमें यह प्रकट करते हुये खेद होता है कि प्रांतीय सरकार तथा पंजाब के मुख्य मन्त्री जी की सेवा में बार-बार प्रार्थना करने पर भी वर्तमान पंजाब का निर्माण करने वाले इस पुण्य पुरुष की जयन्ती पर सरकार की ओर से एक नया पैसा भर भी सहायता नहीं दी गई। यद्यपि अन्य सम्प्रदायों के महापुरुषों की जयन्तियों पर उदारता पूर्वक सहायता दी जाती है।

केवल प्रधान श्री यश जी के विशेष अनुरोध पर इस दिवस को अवकाश दिवस घोषित कर दिया गया। इस सहयोग प्रदर्शन के लिए भी सभा सरकार के प्रति अपना आभार प्रकट करती है।

युद्ध के कारण ऐसी स्थिति न रही कि जयन्ती का नवम्बर में होने वाला समारोह भी मनाया जा सके अतः अंतरंग सभा के निश्चय अनुसार जयन्ती समारोह की समाप्ति नवम्बर१९६६में मनाई जाएगी।

युद्ध पीड़ित कैम्प

भारत पाक के भयंकर युद्ध ने श्री नगर जम्मू तथा अन्य सीमा प्रदेशों के हजारों परिवारों को बेघर बार कर दिया। जालन्धर में जम्मू, श्रीनगर तथा अमृतसर की ओर से आने वाले हजारों विस्थापितों की सेवा का प्रबन्ध एक बड़ी भारी समस्या बन गई। प्रधान श्री यश जी ने इस अवसर पर सभा की ओर से तीन विशाल कैम्प स्थापित करने का प्रबन्ध किया।

बस अड्डा अमृतसर पर सभा के कार्यकर्त्ता पं० खुशीराम जी, महाशय मेलाराम जी तथा भक्त बुड्ढामल जी और पक्काबाग के श्री बलदेव राज जी ने कार्य सम्भाला। दूसरा कैंप स्टेशन पर था जिस का प्रबन्ध ला० इन्द्रसेन जी, श्री धर्मपाल जी महेन्द्र, श्री दुर्गादास जी तथा श्री कुन्दनलाल जी भाटिया ने किया। तीसरा कैंप होशियारपुर स्थापित किया गया। जिस का कार्य संचालन चौ० बलवीरसिंह जी ने पं० लब्भूराम जी तथा श्री ओमप्रकाश जी बग्गा के सहयोग से किया।

यह कैंप कार्य प्रायः तीन सप्ताह रहा। जनता ने खुले दिल से इस पवित्र कार्य में धन, वस्त्र तथा अन्न द्वारा सभा की सहायता की। हंसराज महिला महाविद्यालय की प्रिंसिपल कुमारी विद्यावती आनन्द और साईं दास एंग्लो संस्कृत स्कूल विक्रमपुरा की मुख्याध्यापिका श्रीमती कौशल ने शरणार्थियों के लिये बहुत से कपड़े भिजवाये। यह कपड़े विभिन्न कैंपों में बांट दिये गये।

पंजाबी सूबा आंदोलन

अभी युद्ध के बादल साफ भी न हो पाये थे कि गवर्नमैंट की ओर से सन्तफतेसिंह तथा उनके साथियों की पंजाबी सूबा सम्बन्धी मांग पर पुनर्विचार की घोषणा कर दोबारा पंजाब के राजनैतिक तथा सामाजिक वातावरण को क्षुब्ध कर दिया गया। पिछले हिन्दी आंदोलन के बाद तथा पंजाबी सूबा के आंदोलन के बाद गवर्नमैंट की ओर से घोषणा कर दी गई थी कि अब इस प्रांत विभाजन पर कभी विचार न होगा।

पंजाब की दोनों आर्य प्रतिनिधि सभाओं ने मिलकर अन्य राष्ट्रीय तत्वों के सहयोग से नए पंजाबी सूबा आन्दोलन के विरोध के लिए प्रयत्न आरम्भ किये। दोनों प्रतिनिधि सभाओं की सम्मिलित समिति ने तीन अक्तुबर १९६५ को इस आन्दोलन को

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्य प्रादेशिक सभा का वार्षिक विवरण परिचय

(पृष्ठ ५ का शेष)

चलाने का निश्चय किया। इसके लिए लोक सभा द्वारा निर्वाचन उपसमिति को मेमोरेंडम पेश किया गया तथा इस सम्बन्ध में अन्य कदम भी उठाये गये। अभी यह आन्दोलन चल रहा है।

कार्यकर्त्ताओं के ग्रेड

इस वर्ष अन्तरंग सभा ने सब कार्यकर्त्ताओं के हित का ध्यान रखते हुए महोपदेशक, उपदेशक, भजनीक तथा अन्य कार्यकर्ताओं के वेतन आदि का स्तर निश्चत कर कर दिया है। इस में सभा पर कुछ आर्थिक बोझ अवश्य पड़ा है पर कार्यकर्त्ताओं के हितों की सुरक्षा हुई है।

आर्य अनाथालय फिरोजपुर

आर्य अनाथालय फिरोजपुर जो कि आर्य प्रादेशिक सभा की एक महत्वपूर्ण संस्था है, उसके प्रबन्ध में इस बार एक विशेष परिवर्तन हुआ, जिसकी अन्तिम रूप रेखा अभी विचाराधीन है।

श्री जयकृष्ण जी नन्दा ने पिछले सात आठ वर्ष से अनाथालय की सेवा कर इस संस्था को सब प्रकार से सुशासित तथा समृद्ध संस्था बना दिया। उनकी देखरेख और प्रयत्नों से इसका स्थायी कोष तीन लाख से ऊपर का हो गया। इस वर्ष विशेष साधना के लिए उन्होंने अवकाश ग्रहण कर लिया है।

उनके स्थान पर अभी श्री प्रतापचन्द जी महता तथा उनकी सुयोग्य धर्मपत्नी श्रीमती परमेश्वरी देवी जी कार्य कर रही हैं।

सभा की सम्पत्ति की देखभाल

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की लाखों रुपये की सम्पत्ति का प्रबन्ध ठीक न होने के कारण सभा के लिए उपयोगी नहीं सिद्ध हो रही। ठीक प्रबन्ध होने पर सभा की स्थायी आय का यह महत्व पूर्ण भाग बन सकता है। इस ओर पूरा ध्यान देने के लिए रोहतक के वकील श्री सहदेव मलिक से प्रार्थना की गई है। उन्होंने यह कार्य सम्भाल लिया है। अभी तक इस दिशा में विशेष प्रगति इस लिए नहीं हो सकी क्योंकि उन्होंने यह कार्य वर्ष के अन्तिम दिनों में प्रारम्भ किया है, आशा है कि श्री सहदेव मलिक के सहयोग से सभा सम्पत्ति का प्रबन्ध सुचारुरूप से हो सकेगा और सभा को इस ओर से अच्छी आय प्राप्त हो सकेगी।

साहित्य विभाग

इस वर्ष साहित्य विभाग को श्री वेदप्रकाश जी मल्होत्रा ने सम्भाला। उनकी देख-रेख में विभाग ने अच्छी उन्नति की। एक तो उन्होंने इसे सुव्यवस्थित किया—लगभग ३-४ सौ रुपये खर्च करके नई अलमारियां बनाई गईं। पुस्तकों को बहुत परिश्रम कर जांच पड़ताल के बाद ठीक किया। दो नये महत्वपूर्ण प्रकाशन भी हुए। एक अंग्रेजी में महात्मा हंसराज मेकर आफ दी माडरन पंजाब, लेखक श्री प्रिं० श्रीराम जी शर्मा एम. ए.। दूसरा प्रकाशन महात्मा हंसराज जी के सन्ध्या पर व्याख्यान। प्रो० मल्होत्रा जी ने इस विभाग को आधुनिक तथा सफल रूप में संगठित करने का पूर्ण प्रयत्न किया।

इन दिनों दो प्रकाशन, एक सामवेद भाष्य तथा दूसरा वैदिक गुरुमत अभी अपूर्ण हैं—शीघ्र ही छप कर विक्रयार्थ आ जाएंगे।

आर्य जगत्

सभा का यह साप्ताहिक पत्र पं० त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री के सम्पादकत्व में कुछ प्रगति कर सका। पर सभा की समाजों की ओर से अभी पूरा सहयोग और सहायता इस पत्र को नहीं प्राप्त हुए।

वरा — सभा-प्रधान
सत्यदेव — सभा-मन्त्री

राष्ट्रिय चेतना के अग्रदूत महर्षि दयानन्द

वेद पथिक पं. धर्मवीरजी आर्य झंडाधारी, व्याख्यान भूषण अध्यक्ष धर्मवीर ग्रन्थमाला प्रकाशन विभाग सराय रुहेला, नई दिल्ली ५



विश्व वंदनीय लोक उपकारी क्रांति के अग्रदूत वैदिक समाज के स्वनाम धन्य नेता, करुणा निधान युग प्रवर्तक, वेदो उद्धारक, आर्य समाज के संस्थापक भारत के भव्य भाल महर्षि दयानन्द जी राष्ट्रीय जीवन ज्योति के देश-भक्ति के अग्रदूत थे।

महर्षि दयानन्द के महान उपकार केवल भारतीय जनता पर ही नहीं हैं अपितु विश्व के मानव मात्र पर असख्य उपकार हैं।

आज विश्व में जहां भी नव चेतना विश्व शांति की दिव्य दिशा दिखाई दे रही है या बाईबिल, कुरान, पुराणों में संशोधन आदि के कार्य हो रहे हैं उन सब विचार धाराओं में मूल कारण का प्रबल प्रभाव महर्षि दयानन्द जी की विचार धारा तर्क शंकाओं का तथा प्रबल खण्डन का ही है।

विश्व के राष्ट्र पुरुषो आओ आज हम शिवरात्रि के निर्माण का महाव्रत धारण करके वैदिक राज्य विधान के नव-निर्माण का शुभ संकल्प करके वसुधा को वेद सुधा का पान करावें।

आज मैं भारत के कर्णधारों से, विश्व के राष्ट्र नायकों से तथा विश्व के वैज्ञानिकों से विश्व के मानव समाज से यह कह देना आवश्यक समझता हूं कि जब तक विश्व का मानव समाज महर्षि दयानन्द के बतलाए हुए वेद मार्ग का पथिक नहीं बनेगा तब तक विश्व शांति का होना सर्वथा असंभव है। अतः आज से हम मन, वचन और कर्म से आर्य कहलाने का गौरव प्राप्त करें।

महर्षि दयानन्द ने विश्व के मानव समाज को वैदिक विचार धारा में अगम्य रत्न कोष है जिसे प्राप्त करके मनुष्य कृत कृत हो जाता है। शुभ कर्मों तथा शुभ भावनाओं का दैवी बल जिस पुरुष को प्राप्त हो जाता है वह देव बन जाता है, महा दार्शनिक, महा योगी मुमुक्षु महा ज्ञानी परमात्मा की सत्ता की महत्ता में विचरण कर के अपना जीवन तन, मन, धन विश्व के उपकार में लगा कर वह महा पुरुष अमर पद को प्राप्त कर लेता है।

महर्षि दयानन्द की अमर कीर्ति जब तक नभ में सूर्य, चन्द्र और तारे रहेंगे जब तक विश्व इतिहास में आर्य जाति का नाम रहेगा, आर्य जाति का अस्तित्व रहेगा तब तक महर्षि दयानन्द की अमर कीर्ति पताका ओ३म् पताका नभ में फहराती रहेगी। ओ३म् की पूजा एक ईश्वर की उपासना महर्षि दयानन्द ने सिखाई है। आइये हम आज महर्षि दयानन्द के उपकारों पर विचार करें।

महर्षि दयानन्द जी ने अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में सर्व पूर्व स्वराज्य का उद्घोष किया था।

हिन्दी को राष्ट्र भाषा पद पर आसीन करने का भगीरथ प्रबल प्रयत्न महर्षि दयानन्द जी ने किया था।

(अपूर्ण)

आर्ययुवक परिषद् दिल्ली-६ का वार्षिक निर्वाचन

अध्यक्ष—श्री देवव्रत धर्मेन्दु
उपाध्यक्ष—,, ईश्वरदत्त एम.ए.
मन्त्री— ,, ओ३म् प्रकाश
परीक्षामन्त्री ,, हरिदत्त

बृज शंकर नादान
प्रचार मन्त्री

(गतांक से आगे)

१६वें मंत्र में कहा गया है—

'मंत्र द्वारा तेज किए गए और हिंसा परायण बाण, तुम छोड़े जाकर गिरो, जाओ और शत्रुओं पर पड़ जाओ। किसी भी शत्रु को जीते जी नहीं छोड़ना।'

इस सूक्त के प्रथम मंत्र में राष्ट्र नेता प्रधानमन्त्री या राष्ट्रपति के विषय में कहा है—

'युद्ध छिड़ जाने पर जिस समय राजा लोहमय कवच पहन कर जाता है, उस समय वह साक्षात प्रलयकर मेघ मालूम पड़ता है।'

इस प्रकार वेद के अनेक सूक्तों में शत्रुओं से उठकर लोहा लेने और उनका संहार करने की प्रबल प्रेरणा भरी दिखाई देती है।

अथर्ववेद ११।६ सूक्त में मातृ-भूमि की स्वतन्त्रता की रक्षा के अर्थ युद्ध की किस प्रकार तैयारी करनी चाहिए, इस का स्पष्ट संकेत किया गया है। इस सूक्त का देवता 'अर्बुदि' है। 'अर्व' धातु का अर्थ गति और हिंसा है। जो सेनापति गतिशील हो, शत्रु पर हमला करने वाला और वीर हो वह सेनापति इस का देवता है। इस सूक्त के प्रथम मंत्र में कहा गया है—

'वीरों में जो बाहुबल और शस्त्र अस्त्र आदि हैं तथा अन्तः-करण के अन्दर जो विचार और सकल्प है उनका प्रयोग करके शत्रु की पराजय और अपनी विजय अवश्य करनी चाहिए।'

दूसरे मन्त्र में कहा है—

उत्तिष्ठत सं नह्यध्वम्,
मित्रा देवजना यूयम्।

वेदों में शत्रु-दलन का आदेश

(श्री सुरेशचन्द्रजी वेदालंकार एम.ए.एल.टी.डी.बी.कालेज, गोरखपुर)



संदृष्टाः गुप्ताः वः सन्तु,
या नो मित्राण्यर्बुदे ॥

अर्थात्—समय पर जो हमारी सहायता के लिए आए हुए दल हैं, वे मित्र हैं। जो स्वार्थ त्याग से दुष्ट शत्रु को हटाने के लिए होने वाले युद्ध में अपनी आहुति देने को सिद्ध होते हैं वे देवताओं के समान पूज्य होने के कारण देवजन हैं। इन सब वीरों को युद्ध के दिनों में सदा-सर्वदा सब प्रकार से सिद्ध अर्थात् तैयार रहना उचित है। युद्ध का अवसर कब होगा इसका पता नहीं होता। युद्ध के समय अपने मित्रों को सुरक्षित रखना चाहिए और शत्रुओं पर हमला करना चाहिए।

एक दूसरे मंत्र में कहा है—

उद्वेपय त्वमर्बुदेऽमित्रा
णाममूः सिचः।
जयांश्च जिष्णुश्चाऽमित्रां
जयतामिन्द्र मेदिनौ ॥

हे शूरवीर, शत्रुओं की इन सेना पंक्तियों को तू कंपा दे, शत्रुओं को जीतने वाला और जय-शील वीर ये दोनों अपने नेताओं के साथ रहते हुए विजय प्राप्त करें। शूरवीर ऐसा युद्ध करें कि शत्रु की सेना के सैनिक कांपने लग जाएं। शत्रु को पराजित करने वाले तथा जिन को जय प्राप्त हुआ है ये दोनों प्रकार के वीर सदा परमेश्वर को स्मरण करें और अपने विजय से घमंड न करें। यदि चित्त में घमंड आ जायेगा तो विजय कठिन हो जायेगी।

उत्कसन्तु हृदयान्यूर्ध्वः
प्रायः उदीषतु।
शौष्कास्यमनु वर्तताम
मित्रान् मोत मित्रिणः।

अर्थात् अपने सैन्य से ऐसा युद्ध करें जिस से शत्रु के दिल उखड़ जाएं। उन में घबराहट फैल जाये और उनके पास अपने स्थान पर न रहें। परन्तु अपने सैन्य में ऐसी व्यवस्था करें कि जिस से अपने सैनिकों के हृदय आत्म-विश्वास से परिपूर्ण रहें। पास में घबराहट उत्पन्न न हो, हृदय में आत्म-विश्वास और मनोबल स्थिर रहे। ऐसे वीरों की पराजय असम्भव है।

वास्तव में ससार के इतिहास पर दृष्टि डालने से हमे पता चलता है कि साहित्य में वीरों की गाथायें गायी जाती हैं, कवियों की लेख-नियां वीरों के जीवन को काव्य का विषय बनाती हैं। राम को भगवान बनाने वाली बाल्मीकि रामायण राम की विजय यात्रा है। महाभारत का महाकाव्य वीरों की उज्ज्वल भाषाओं का चिन्तक है। हिन्दुओं की पवित्र पुस्तक गीता हाथ में चक्र धारण करने वाले श्रीकृष्ण का युद्ध का उपदेश है। ऐसी स्थिति में वेद का आदेश है :—

जगो जवानो आज,
तुम्हारी जगे जवानी।

और इसी लिए हमें चाहिए कि आज हम अपनी लेखनी, भाषण शक्ति अपनी शारीरिक योग्यता, अपना स्वास्थ्य अपना तन, मन,धन सब राष्ट्र के लिए न्यौछावर कर दें। और स्पष्ट शब्दों में कह दें :—

अमर राष्ट्र, यहयु राष्ट्र,
उन्मुक्त राष्ट्र यह मेरी बोली।
अब सुधार समझौतों वाली,
मुझको भाती नहीं ठठोली।
मैं न सहूँगा पाक चीने ने
मूंछ मरोड़ी

जाने दे सिर लेकर मुझ को
ले सम्भाल यह लोटा डोरी

अन्त में यजुर्वेद ६.२३ के अनु-सार हमारी भी यह अभि-लाषा है :—

वयम् राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः
अपने राष्ट्र में नेता बनकर
हम जागरण शील रहें।

भोर जगाकर जोत बुझ गई

श्री ओमप्रकाशजी अंशु नई देहली

सत्ताइस मई का काला दिन,
कालिमा दिवस पर छाई हुई।
चहुं ओर अंधेरा छाया,
डगर किसी को मिल न पाई ॥

फिर आया इक दिन उसका,
दिवस गए रातें बीती।
समय कटा, क्षणों क्षण में,
कांग्रेस की जब आई कसौटी।
उस दिन नेतृत्व लेना था,
आया अन्ततः जून नौ।
खिड़की पे विदेश जन झांके,
ऊषा पूर्व फटी पौ॥

दुनिया शंकाई मन ही मन
लगा करने लाल का कार्य बहादुर।
उस मन न भाई कुगर्व कालिमा,
वह ..नर...नन्हा बना चतुर॥
जीवन काल हो गया सूक्ष्म,
समय की थाती लुट गई।
ताशकन्द की शांत-परीक्षा में,
भोर जगा कर जोत बुझ गई॥

आर्यसमाज खन्ना (लुधियाना)

का वार्षिकोत्सव ४, ५, ६ मार्च को होना निश्चित हुआ है। इस अवसर पर बड़े-बड़े संन्यासी महात्माओं, उपदेशकों तथा भज नीकों का कार्य-क्रम होगा।

इसके अतिरिक्त २४ से २६ फरवरी तक श्री नन्दलाल जी वैदिक मिशनरी मैजिक लालटेन द्वारा समयानुकूल फिल्में दिखा-एंगे। श्री पूज्य आनन्दगिरि जी महाराज की कथा होगी ४ मार्च से ६ मार्च तक श्री शोभाराम जी श्री हजारीलाल जी के भजन होंगे।

—मुन्शीराम प्रधान समाज

हिन्दी साप्ताहिक आर्य-जगत्

जालन्धर के स्वामित्व अधिकार तथा अन्य विषयों का ब्यौरा फार्म ४ (अधिनियम ८ देखो)

१. प्रकाशन स्थान—कार्यालय आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर नगर।

२. प्रकाशन की अवधि—साप्ताहिक।

३. मुद्रक का नाम—श्री संतोषराज जी।

जाति—भारती।

पता—हैडमास्टर दयानन्द मोडल स्कूल जालन्धर।

४. प्रकाशक का नाम—श्री संतोषराज जी।

जाति—भारती।

पता—हैडमास्टर दयानन्द मोडल स्कूल जालन्धर।

५. सम्पादक का नाम—श्री पं० त्रिलोक चन्द्र जी शास्त्री बी.ए.

जाति—भारती।

पता—महोपदेशक आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर नगर।

६. पत्र के स्वामी व्यक्तियों के नाम अथवा पते जो उसके सांझीदार हैं अथवा इसकी सम्पूर्ण पूंजी के प्रतिशत से अधिक भागों के मालिक हैं।

आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा रजिस्टर्ड संस्था ही इस पत्र की स्वामिनी है।

मैं संतोषराज इस लेख द्वारा घोषित करता हूं कि ऊपर लिखे विषयों की सूचना मेरे ज्ञान व विश्वास के अनुसार सर्वथा तथ्य पूर्ण है।

(हस्ताक्षर) संतोषराज प्रकाशक आर्यजगत, जालन्धर।

जी. ए. हाई स्कूल मंगवाल

ऋषिबोध उत्सव श्री धर्मसिंह जी सूबेदार की अध्यक्षता में बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। यज्ञ हवन के पश्चात अनेक विद्वानों के महर्षि जी के जीवन पर भाषण ... चुनाव सम्पन्न हुआ।

संरक्षक—ठा. दलीपसिंह जी, राय साहब बख्शीशसिंह जी, डा. चूड़ामणिजी, श्री रोशनलालजी

प्रधान—श्री धर्मसिंह जी सूबेदार, मन्त्री—महाशय खुशीराम जी, सहायक मन्त्री—मास्टर रेलूराम जी, कोषाध्यक्ष—पं. रामचन्द्र जी शास्त्री, लेखा निरीक्षक—श्री राजेन्द्रपालजी सैनी बी.ए.बी. एड।

—रोशनलाल शर्मा हैडमास्टर स्कूल

अत्यन्त शोक-जनक

आर्यसमाज के उद्भट विद्वान लेखक श्री पं. गंगाप्रसाद जी चीफ जज टिहरी के निधन से सारे समाज की भारी क्षति हुई है। आपने कई महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखी हैं। **The fountain head of Religion** तो उनकी बड़ी प्रसिद्ध पुस्तक है। इसका हिन्दी अनुवाद भी धर्म का आदि स्रोत के रूप में प्रकाशित हुआ था। श्री पण्डित जी सार्वदेशिक सभा के प्रधान भी रह चुके हैं। आर्यसमाज से एक यशस्वी तथा अनुभव महान् लेखक नेता का चला जाना समाज के लिए बड़े ही दुःख शोक की बात है। पर विधाता का विधान।

निबन्ध प्रतियोगिता

आर्यसमाज स्थापना ... उपलक्ष्य में आर्ययुवक परिषद् की ओर से स्कूलों के छात्र-छात्राओं की निबन्ध प्रतियोगिता कराने का आयोजन किया गया है जिसका विषय है ;—

आर्यसमाज के दस नियमों में से किसी एक पर निबन्ध।

निबन्ध हिन्दी भाषा में, फुलस्केप साईज के दो पृष्ठों में, स्याही से तथा अपना लिखा होना चाहिए जो १ मार्च १९६६ तक परिषद् कार्यालय, १६५४, कूचा दखनीराय, दरियागंज, दिल्ली-६ पते पर भेज देवें।

परिषद् की ओर से सर्वोत्तम ८ विजेता छात्र-छात्राओं को पारितोषिक दिए जाएंगे।

नोट—परिषद् की आर्य-सिद्धान्त-प्रकाशकी परीक्षाएं इस वर्ष ४ सितम्बर ६६ को होंगी। नई पाठ विधि परीक्षा मन्त्री आर्यसमाज मौडल बस्ती दिल्ली-५ से मिलकर वा पत्र लिखकर मुफ्त प्राप्त करें।

—ओ३म् प्रकाश, मन्त्री

आर्यसमाज सैक्टर २२ चण्डीगढ़

में २३-२-६६ रविवार प्रातः एक मुस्लिम महिला की आर्यसमाज मन्दिर में शुद्धि की गई। महिला का नया नाम वीणाकुमारी रखा गया। मध्याह्न समय समाज मन्दिर में ही महिला का विवाह संस्कार कर दिया गया।

—वेदप्रकाश प्रभाकर कृते मन्त्री

आर्यसमाज लारेंस रोड अमृतसर

आर्यसमाज लारेंस रोड अमृतसर में शिवरात्रि सप्ताह बड़े समारोह से मनाया गया। प्रातःकाल यज्ञ होता। पं० त्रिलोकचन्द्र शास्त्री की कथा होती रही। शिवरात्री के दिन बड़ी रौनक थी। आर्य पाठशाला के बच्चों का कार्यक्रम बड़ा ही मनोरंजक तथा उत्तम था। देवियों तथा सज्जनों का उत्साह बड़ा था। माननीय पं० दौलतराम जी शास्त्री तथा श्री रघुवीर सिंह जी का कार्यक्रम भी हुआ।

—देव विद्यासागर मन्त्री

आर्यसमाज बाजार सीताराम दिल्ली

पं० तेजराम जी वैदिक मिशनरी यहां पर निःशुल्क भाव से पुरोहित का कार्य कर रहे हैं आपने इस समय तक २७० शुभ संस्कार और चरित्र निर्माण, राष्ट्रीय भावना, आध्यात्मिकवाद, जाति संगठन पर १२५ सारगर्भित और मनोहर भाषण जनता में दिये हैं। इन से एकत्रित किया हुआ सैकड़ों रुपयों का दान आर्यसमाज के कोष में जमा कराया है, कई घरानों में सावित्री, यजुर्वेद, सामवेद शतक यज्ञ करके सुन्दर कथा की और शुभ कार्य किया।

गऊ रक्षा, अनाज के संकट को दूर करने के लिए खाद आदि कई सम्मेलन किये और इनकी रिपोर्ट प्रकाशित की। आपके दिल में देश जाति, धर्म के लिये बहुत तड़प पाई जाती है, जनता पर आपके विचारों और शुभ कार्य का अच्छा प्रभाव पड़ रहा है। देवराज गुप्ता

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १२ नये पैसे — वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक १०) २३ फाल्गुण २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१– ६ मार्च १९६६ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

अयं वाचः परमं व्योम

अयम्-यह परमात्मा ही वाचः-वेद वाणी का परमम्-परम व्योम-रक्षक व आश्रय है। वेद-वाणी का स्वामी और रक्षक स्वयं भगवान् ही है। वेद का ज्ञान प्रभु ही देते हैं। यह प्रभु वाणी है।

देवस्य पश्य काव्यम्

आंखें रखने वालो! इस देवस्य-महान देव भगवान् के इस महान दिव्य काव्यम्-काव्य को पश्य-देखो। विश्व के इस विविध विचित्र नियमों के कौशल को तो देखो।

ये इत् तद् विदुः

इस संसार में ये-जो लोग ही तत्--उस परमात्मा को अपने जीवन में जानते हैं तथा आवश्यक साधनों को अपनाकर उस ब्रह्म को पा लेते हैं ऐसे।

अमृतत्वमानशुः

लोग प्रभुभक्त ही अपने जीवन में उस दिव्य तथा परम-स्वादु अमृत के कटोरे को भर २ कर पीते हैं। उस भक्ति के परम-रस का परम स्वाद लेते हैं।

अथर्ववेद से

अमर शहीद पं० लेखराम जी

का

बलिदान दिवस

६ मार्च को बड़ी धूमधाम से मनाएं। सार्वदेशिक सभा के आदेशानुसार विशाल आयोजन इस दिन किया जाए। उनके साहित्य का उनकी भावनाओं का प्रचार करें। स्थान २ पर प्रभात फेरी, उनके बलिदान पर भाषण आदि का प्रोग्राम बनाएं तथा अमर शहीद का संदेश प्रसारित करें।

पं० लेखराम जी आर्य जाति के सर्वप्रथम शहीद थे, जिन्हें सांसारिक व्यस्तताएं भी प्रचार कार्य में बाधा नहीं पहुंचा सकती थीं जीए तो आर्यसमाज के लिए, मरे तो समाज का कार्य करते हुए। उनके हृदय में आर्यसमाज की तड़फ थी। इस तड़फ के कारण उन्हें संसार का कोई कार्य अच्छा नहीं लगता था। रात दिन वेद प्रचार की धुन लगी हुई थी। महर्षि दयानन्द जी का सच्चा भक्त होने के नाते उनके मार्ग का ही अनुसरण करते रहे। मानवता, आर्य संस्कृति देशोद्धार तथा वेद प्रचार का लक्ष्य पालने में पूरी तन्मयता से कार्य करते रहे। मरणासन के समय उनके निम्न शब्द आर्यसमाजों को चेतावनी दे रहे हैं कि "मेरे बाद आर्यसमाज से लेख का कार्य बन्द न हो" कितने मार्मिक और ध्यान देने योग्य हैं।

ऋषि दर्शन

वयं परमेश्वरस्यैव प्रजाः

हम सारे ही उस परमेश्वर की प्रजा हैं। जिस प्रकार सन्तान माता और पिता की प्यारी होती हैं, उसी प्रकार सारे छोटे-बड़े आपस में एक ही विशाल परिवार के अंग हैं तथा परमेश्वर हमारा पिता और माता है। उसी की ही प्रजा हैं।

ईश्वरोपासका मेधाविनः

जो परमेश्वर के उपासक हैं, प्रभु के भक्त हैं, जीवन में परमात्मा पर आस्था रख कर प्रातः सायं उसके समीप बैठते हैं, वे प्रभु प्रेमी मेधावी हैं, ज्ञानी हैं। ऐसे प्रभु के प्यारों को शुद्ध ज्ञान की ज्योति प्राप्त होती है। प्रभु भक्ति से मेधा व ज्ञान मिलता है।

स एकोऽद्वितीयः

वह परमेश्वर एक है तथा अद्वितीय है विश्व का निर्माता, धारक वही परमात्मा है। ईश्वर एक है। जो नाना प्रकार के ईश्वर मानते, देवी देवताओं को परमेश्वर मान कर उन को पूजते हैं वह भूल में है। प्रभु एक और अनूप है।

भाष्य भूमिका से

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी

सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

एक स्थान पर दुर्योधन ने देखा कि पानी ही पानी है। उसने जूता उतारा और चलने लगा तथा किंतु वह तो एक छलावा था, वहां पानी तो था ही नहीं। दुर्योधन इस छलावे पर बहुत झुंझलाया, सकपकाया। दूर खड़ी द्रौपदी दुर्योधन की इस हालत पर मुस्कराई। दुर्योधन थोड़ा और आगे बढ़ा। वहां फर्श बिल्कुल सूखा और चिकना देखाई दे रहा था। दुर्योधन ने कदम आगे बढ़ाया और धड़ाम से पानी के तालाब में गिर पड़ा। वह दोबारा छलावे का शिकार हुआ। पानी को उसने सूखा समझा और सूखे को पानी। द्रौपदी ने दुर्योधन की इस हालत पर फब्ती कसी—'अन्धे का बेटा भी अन्धा ही होता है।' द्रौपदी के इस वाक्य पर दुर्योधन आग बबूला हो गया और यही वाक्य महाभारत के युद्ध का कारण बना। महाभारत होने से पूर्व हमारा सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य था। महाभारत के बाद हम अपने ही घर में दास बन गए और वाणी के कारण उत्पन्न कलह के कारण धीरे-धीरे यह स्थिति आ गई कि आज लोग भारत को अपना वतन कहते हुए भी शर्म महसूस करने लगे हैं। वाणी के कारण ही परिवारों में झगड़े हैं। समाज असेंबली, संसद, और सुरक्षा परिषद वाणी के कारण झगड़ों का केन्द्र बने हैं। पंजाब विधान सभा में तो हर रोज वाणी हुनर देखने को मिलते हैं। वाणी का जीवन में बहुत महत्त्व है मीठा बोलने वाले दुकानदार के पास ग्राहक अधिक आते हैं चाहे वह सौदा महंगा ही क्यों न बेचता हो।

लेकिन राजा ने भी सिर झुकाए हुए कहा—'मैंने भी बचपन में मां की नजर से बच कर चोरी पेड़े खाए थे। मैं भी इस योग्य नहीं हूं कि आपने को बिल्कुल अवगुणी कह सकूं।' राजा के इन शब्दों से सभा में स्तब्धता छा गई। फांसी

राष्ट्र-भक्ति और प्रभु-भक्ति-१३

(श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की अमृतभरी कथा)



का दंड प्राप्त चोर ने एकदम उठ कर कहा—भाइयो! यहां तो राजा से लेकर एक गरीब किसान तक सब चोर हैं। इन सभी को फांसी लगाओ, मुझ अकेले को क्यों लगाते हो।

इसीलिए हे मानव! तू अपने आपको भी देख। रोज प्रातः उठ कर आत्म-परीक्षा भी किया कर, अपना भी मूल्यांकन किया कर। केवल दूसरों के दोष और अवगुण देखने से ही कोई गुणवान और निर्दोष नहीं बन जाता। प्रति दिन अवश्य कोई एक बेहतर कार्य करो और आगे से बेहतर बनने के मार्ग पर चलो। इस स मन के अन्दर प्रसन्नता आएगी। मन प्रसन्न रहने से घृणा, ईर्ष्या, द्वेष और अंधकार के लिए स्थान नहीं रहता।

एक बार अन्धेरा भगवान के पास गया और शिकायत की कि प्रकाश के आने पर मुझे भागना पड़ता है। यह बहुत बड़ी ज्यादती है। भगवान ने अन्धेरे की सुनने के बाद जब प्रकाश को बुलाया तो वहां से अन्धेरा गायब हो गया। इसलिए जब मानव के अन्तर में प्रकाश आ जाएगा तो वहां अन्धेरे को कभी स्थान नहीं मिल सकेगा। प्रसन्नता उसी के दिल में आएगी जिसको प्रभु पर विश्वास है। चिंता वहां आएगी यहां प्रभु पर विश्वास नहीं है। जो व्यक्ति मानव शरीर की रक्षा करते हुए धर्म परायण हो कर प्रभु को याद करता है उसे हमेशा ईश्वर का साथ मिलता है। जो प्रभु की याद में परिश्रम को मानसिक तप कहते हैं। महर्षि दयान ने मानव जीवन में हर प्रकार के द्वन्द्व को सहन करने को तप की संज्ञा दी है।

यदि जीवन में सत्य आचार, सत्य आहार, व्यवहार विचार और आचार तथा सत्य उच्चार की नींव रखी जाए, वृहद् भावना अपनाई जाए, वसुधैव कुटम्बकम् पर अमल किया जाए तो राष्ट्र के प्रति और मानव जाति के प्रति सेवा संभव है। आज के युग में तो भारत को वसुधैव कुटम्बकम् की भावना को सर्वाधिक ग्रहण करने की आवश्यकता है। मेरे देश ने माताओं, बच्चों और बड़ों—सभी ने बड़े कष्ट सहन किए हैं। हमारी संस्कृति वेष, भाषा और धर्म नष्ट हो गए हैं। इसलिए अब—

इर ददमन्द दिल को रोना मेरा
　　　　　　रुला दे
बेहोश जो पड़े हैं शायद उन्हें
　　　　　　जगा दे

इतिहास में साढ़े छह सौ वर्ष पूर्व की एक घटना का उल्लेख है। दिल्ली के तख्त पर तब अलाउद्दीन खिलजी बैठा था। चित्तौड़ में राजा भीमसिंह का राज था। पद्मनी अपूर्व सुन्दरी राजा भीमसिंह की महारानी थी। अलाउद्दीन खिलजी ने एक बहुत बड़ी सेना के साथ चित्तौड़ पर आक्रमण कर दिया। खिलजी की आंख पद्मनी पर थी। तीन माह तक घोर युद्ध हुआ। चित्तौड़ की बहादुर सेना ने आक्रमणकारियों का मुख फेर दिया। खिलजी को विवश होकर श्वेत झंडा लहराना पड़ा। आक्रमणकारियों ने राजा भीमसिंह से सुलह कर ली। राजपूत परम्परा के अनुसार भीमसिंह अलाउद्दीन खिलजी को राजमहल के अन्दर ले गए और आओभगत की। बाद में भीमसिंह खिलजी को जब विदा करने के लिए गए तो उन्हें धोखे से कैद कर लिया गया। जहां तक धोखेबाजी का सम्बन्ध है अंग्रेजों और खिलजियों में कोई अन्तर नहीं है। पद्मनि इस वस्तुस्थिति पर घबराई नहीं उसे खिलजी का सन्देश मिला कि वह स्वयं दिल्ली आए और वहां आकर राजा भीम सिंह को ले जाए। पद्मनी ने इस निमन्त्रणको स्वीकारकर लिया और उसे सूचित किया कि वह चित्तौड़ की महारानी के रूप में दिल्ली आएगी। खिलजी बहुत प्रसन्न हुआ। कुछ दिन पश्चात पद्मनी खूब बाजे-गाजे अंगरक्षकों और कहारों को साथ लेकर दिल्ली पहुँची। खिलजी ने महारानी का खूब स्वागत किया। पद्मनी ने आते ही अलाउद्दीन से कहा कि मैं अपने पति से मिलूंगी। खिलजी ने यह बात भी मान ली और सभी के देखते-देखते पद्मनी राजा भीमसिंह को आंधी की रफ्तार में वापिस चित्तौड़ ले गई। खिलजी के महल में जब यह खबर पहुँची तो भगदड़ मच गई। महारानी के साथ अंगरक्षकों कहारों और बाजे-गाजे वालों ने जो वास्तव में सैनिक थे खिलजियों का महल के अन्दर ही खूब सफाया किया। इस घटना के कुछ ही दिन पश्चात् फिर चित्तौड़ पर चढ़ाई कर दी। पुनः भयंकर युद्ध हुआ जिसमें हजारों व्यक्ति मारे गए। खिलजियों ने चित्तौड़ किलेकी नाकाबन्दी बन्द कर दी। जब नाकाबन्दी हुए कई दिन बीत गए और किले में रसद आदि समाप्त होने लगी तो राजा भीम सिंह जी बड़े चिन्तित हुए उन्होंने अपने सरदारों को बुलाया और कहने लगे कि भूखे प्यासे कैसे लड़ेंगे। अब दो ही रास्ते हैं या तो सब भूखे मरें या वीर गति को प्राप्त करें। सभी सरदारों ने आवाज में कहा कि हम पूरी शान के अनुसार वीर गति को प्राप्त करेंगे। किन्तु एक बूढ़े सरदार ने कहा कि स्त्रियों का क्या बनेगा तभी महारानी पद्मनी ने कहा कि हमारे लिए 'जौहर' धर्म के पालन का विधान है।　　　(क्रमशः)

सम्पादकीय--

आर्य जगत

वर्ष २६] रविवार २०२२, ६ मार्च १९६६ [अंक १०

अमर शहीद पंडित लेखराम जी

आर्यसमाज के महान भवन की बुनियाद बलिदान पर रखी गई है। इसके संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपना जीवन, शरीर एवं भस्म तक का विश्वसेवा के पवित्र कार्य में बलिदान कर दिया था। उन के सम्पर्क में जो-जो भी आता गया, वही जीवनदानी बन कर अपने को समाज की भेंट करता गया। देव दयानन्द के बाद इस बलिदान वेदी पर जिस ने सब से पहले अपने को भेंट कर दिया वह अमर शहीद पण्डित लेखराम जी आर्य मुसाफिर थे। ऋषि दयानन्द के दर्शनों के बाद तो पंडित लेखराम जी वैदिक धर्म व आर्यसमाज के ही बन गये। उनकी वेद श्रद्धा तथा समाज भक्ति का कौन वर्णन कर सकता है। निर्भयता की साक्षात् मनोरम मूर्ति थे। असत्य के सामने कभी नहीं झुकते थे। आर्य मुसाफिर बनकर ऋषि के जीवन चरित्र की घटनाओं को ढूंढने के लिए कितना रात दिन सफर किया। वेदप्रचार में उनकी लगन का अनुमान कौन कर सकता है? बच्चा मौत के बिस्तरे पर है पर आर्य मुसाफिर लिफाफा मिलते ही भोजन छोड़ कर जाति के अलग होने वाले लालों को बचाने को चल देते हैं। कितना बड़ा दिल था। कम से कम पांच हजार पृष्ठों की खोजभरी सामग्री दे गये।

आर्य मुसाफिर माने हुए वक्ता थे, गजब के लेखक थे। एक ही धुन थी वेद प्रचार की। अर्बी, फारसी, उर्दू के प्रकाण्ड पंडित थे। हिन्दी के विद्वान, संस्कृत से बड़ा प्यार था। रिसर्च स्कालर थे। इस्लाम व विशेषकर कादियां के अहमदी वर्ग के नेता मिर्जा गुलाम अहमद जी के लेखों व पुस्तकों का मुंह तोड़ जवाब देने वाले थे। मिर्जा साहिब से पण्डित जी के लेखों का जवाब न बन पड़ा। आर्यमुसाफिर के लिए मौत की पेशगोई की गई आर्यमुसाफिर सब कुछ समझते थे। वह कादियां पधारे, काफी दिन रहे। यहां पर आर्य समाज स्थापित किया। उसके सभासद मुसलमान भी बने। कितना प्रभाव था? ६ मार्च को धोखे से एक नीच ने शुद्ध होने के बहाने से उनके पास रह कर छुरे से शहीद कर दिया। ६ मार्च उनका शहीदी दिवस है। अन्तिम समय उनका सब को यही सन्देश था—आर्यसमाज से तहरीर का काम बन्द न होने पाये। हम देखें कि इतने बड़े बलिदानी वीर का हमने क्या सम्मान किया है? क्या उन का शहीदी दिवस सब जगह मनाया है? साहित्य का क्या बना है? प्रसन्नता है कि आर्य समाज किसी न किसी रूप में अपना कर्तव्य निभाता चला आता है पर इस के लिए बहुत कुछ करना अभी शेष है। आर्य मुसाफिर समाज के लिए अपना बलिदान दे गए। छुरे से पेट फड़वा कर भी तहरीर के काम को जारी रखने का अन्तिम सन्देश दिया—पर हम क्या कर रहे हैं। इस दिशा में पूर्ण विचार करें। इस पावन पर्व पर हम भी समाज के साहित्य निर्माण तथा बलिदान की भावना को जगाने का प्रयत्न करें। —त्रिलोक चन्द्र

लेखराम नगर कादियां

कादियां, जिला गुरदासपुर में अच्छा खासा कस्बा है। राष्ट्र विभाजन से पूर्व यहां पर अहमदिया मत का भारी केन्द्र था। अब भी उन की जमात यहां पर है। मिर्जा गुलाम अहमद साहब इस सम्प्रदाय के संस्थापक थे। यहां पर जिले की समाजें मिल कर चार पांच-छः मार्च को अमर शहीद आर्य मुसाफिर को याद में बड़ी धूम - धाम से शहीदी मेला मंडल के रूप मे मनाती हैं। दोनों सभाओं तथा सारे मान्य नेताओं का सहयोग प्राप्त होता है। सारे भारत में ऐसा शानदार शहीदी मेला पंडित लेखराम जी की बलिदान स्मृति में कहीं नहीं मनाया जाता होगा, जैसा यहां होता है। यहां के सारे भाई आर्य-हिन्दु-सिख इसे अपना समझ कर समारोह से मनाते है। इसका नाम भी लेखराम नगर कादियां प्रसिद्ध हो गया है। परन्तु हमें इस पर पूरा सन्तोष नहीं। हम चाहते हैं कि टंकारा, मथुरा, अजमेर तथा अब करतारपुर के महामेलों के बाद लेखराम नगर कादियां के इस शहीदी मेला मनाने की ओर गम्भीरता से विचार करके पूरा ध्यान दिया जाये। इसको शानदार प्रांतीय रूप दिया जाये। यहां के सज्जन तो मिल कर अपना कर्तव्य निभाते हैं, किन्तु आर्य मुसाफिर का यह शहीदी मेला केवल यहां वालों का नहीं—सारे समाज का है। उस अमर शहीद को प्रायः अब तक सारे समाज ने भुलाये रखा है। यह पाप है। अब इस का प्रायश्चित करना ही चाहिए। इस बार भी लेखराम नगर कादियां में चार-पांच छः मार्च को भारी शहीदी मेला हो रहा है।

तपोवन से मेरा सम्बन्ध नहीं

कितने ही पत्र मेरे पास आते रहते हैं जिन में तपोवन-देहरादून के सम्बन्ध में पूछताछ होती है—इन सब पत्रों के उत्तर देना मेरे लिये कठिन होता है, क्योंकि मैं चिरकाल से तपोवन नहीं गया और मैंने तपोवन कमेटी से भी त्यागपत्र दे दिया हुआ है, न ही अब तपोवन जाने का कोई विचार है—अतः तपोवन के सम्बन्ध में मुझे पत्र लिखने का कोई लाभ नहीं, मुझे पत्र मारफत दैनिक मिलाप नई देहली लिखा जा सकता है—आनन्द स्वामी सरस्वती

यह जलने की धमकी

पंजाब भारत का सीमाप्रान्त है। राष्ट्र विभाजन से इसे बड़ा धक्का लगा है। फिर भी पंजाब वासी परिश्रमी तथा साहसी हैं। प्रान्त ने काफी उन्नति की है। अब इस युद्ध में पंजाब ने बड़ी वीरता का परिचय दिया है। हानि भी बड़ी उठाई है। अभी क्षतिपूर्ति नहीं होने पाई कि पंजाबी सूबा का खेल खेलने में सन्त जी ने जल मरने की धमकी देनी प्रारम्भ की हुई है। शराब, अनाचार, अनैतिकता, भोगवाद, नास्तिकता के प्रवाह को रोकने के लिए तो सन्त जी बलिदान नहीं देते पर पंजाबी सूबा बनकर छोटा सा यह दोआब बट जाये। इस के लिए धर्मस्थान में बैठ कर आत्मदाह की धमकी देते हैं। यह देश का दुर्भाग्य ही है। सन्त जी तो एकता के टुकड़े करने के लिए जल मरने को तैयार हैं पर योगिराज सूर्यदेव आदि नेता एकता बनाये रखने को बलिदान देना चाहते हैं। कांग्रेस हाईकमान के दिल में पता नहीं क्या समाया है? आज ला० लाजपत होते तो यह स्थिति होती? यदि जलने से ही प्रांत बनने लगे तो पता नहीं क्या होगा? सारा पंजाब बटवारे का विरोधी है फिर हाईकमान कमजोरी क्यों दिखा रहा है? मौका है कि इस का पूरा डट कर विरोध किया जाये।—सं०

नारी हृदय...

पुष्प से कोमल-पत्थर से कठोर

(ले०—श्रीमती सुषमा वर्मा जालन्धर)

पुष्पों-सा कोमल एवं पत्थर-सा कठोर—क्या शीर्षक है, जैसे कोई एक पहेली हो, जिसे लिखकर मैं स्वय ही न समझ सकी। पर मुझे इसका साक्षात्कार यदि मिला तो केवल नारी में ही। यों तो नारी के प्रति मेरी भावना बहुत उच्च रही है विशेषकर तब जब मैंने यह अनुभव किया कि पति के लिए प्रेम, संतान के लिए ममता समाज के लिए शील, विश्व के लिए दया तथा जीवन मात्र के लिए करुणा संजोने वाली महा-प्रकृति का नाम ही नारी है। ऐसी भावनाओं तथा गुणों से युक्त नारी ही माता है, जगत माता है। परन्तु पुस्तकों के अतिरिक्त व्यक्तिगत अध्ययन ने मुझे बाध्य किया कि नारी का दूसरा रूप भी है। बड़े-बड़े वीरों की तलवार की झंकार उस नारी की स्वर-लहरों में कम्पित होकर सदा के लिए सोने को बाध्य हो गई, नारी का वह रूप है मदारी का रूप। मदारी का अर्थ होता है नचाने वाला। नारी इस पृथ्वी पर सदा से ही मानव को नचाती आई, पर स्वयं उसने कभी सम पर थाप तो क्या सिर तक नहीं हिलाया। महाराजा भर्तृहरि ने भिखमंगों का रूप ले लिया, पर पिंगला ने कभी भूमि पर सोकर भी नहीं देखा।

कितना भावुक और कोमल है नारी का हृदय कि जरा-सी दो मीठी बातें करो, सर्वस्व दे डालेगी, पर जहां उसे यह विश्वास हुआ कि दुर्बल मानव मेरा गुलाम है, बस फिर देखिए उस नारी को। कपड़ों में लिपटे हुए कितने ही बच्चे जो पुलिस सड़कों पर प्राप्त करती है, नारी की कठोरता के प्रमाण हैं। यह नारी उस समय कितनी कोमल रही होगी जब उस बच्चे के पिता को अपना सर्वस्व समर्पण किया होगा, परन्तु अब उस नारी ने ही यह दिखा दिया कि ममता के अतिरिक्त मैं कठोरता में भी आदर्श हूं। नारी की कठोरता पति की मृत्यु को भी लांघकर बच्चों तक छुरी फेरती चली गई है।

प्रत्येक व्यक्ति के चाहे वह स्त्री हो या पुरुष तीन पहलू होते हैं। एक तो वह, जो वह स्वयं को समझता है, दूसरा वह जो समाज उसे समझता है, और तीसरा वह जो कि वह वास्तव में है। नारी अपने आपको क्या समझती है, यह तो हर नारी स्वयं जानती है, और समाज उसे क्या समझ रहा है, इसकी कोई आवश्यकता नहीं, किन्तु वह वास्तव में नारी है। नारी का शील-गुण सम्पन्न रूप ही आदर्श है। इसी रूप पर स्वयं राम ने भी पुण्य अर्पण किये, क्यों कि यही रूप संसार की सबसे महान नींव है। इसी रूप का दूसरा रूप संसार की महान से महान रचना है। कवियों की लेखिनी, वीरों की तलवार, कलाकारों का मस्तिष्क-विकास इस रूप की देन है। जिस देन पर प्रकृति का कण-कण मुस्करा रहा है, झूम रहा है।

नारी का यही रूप सदा-सर्वत्र स्थिर रहे, इसका उत्तरदायित्व बहुत कुछ पुरुषों पर है। प्रायः पुरुषों का अविवेकपूर्ण व्यवहार ही नारी के इस मंगल तथा मृदुल रूप को अमंगल तथा कठोर रूप में परिवर्तित कर देता है, और फिर कहना पड़ता है कि, नारी पुष्प से भी कोमल और पत्थर से भी कठोर है।

——

श्री जय कृष्ण जी नंदा

श्री जय कृष्ण जी नन्दा ने पिछले १५-१६ वर्ष आर्य अनाथालय फिरोजपुर का जिस निस्वार्थ भाव से और प्रेम से कार्य किया उस की जितना भी प्रशंसा की जाए थोड़ी है। गवर्नमैंट के सेवा-काय से निवृत्त होकर उन्होंने इस धार्मिक तथा परोपकार के कार्य में अपने को खपा दिया। अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक उनकी धर्मपत्नी जी भी इस पुण्य कार्य में लगी रहीं। उन के पुरुषार्थ से इस संस्था ने अभूत पूर्व उन्नति की। इस का कोष जो पहले प्रायः रिक्त था अब ढाई तीन लाख तक जा पहुँचा। बच्चे और बच्चियों का प्रबन्ध, रहन सहन व खान-पान बहुत ही व्यवस्थित हो गया। सब से विशेष बात तो यह है कि उन के सौजन्य और कार्य से प्रभावित होकर फिरोजपुर की सम्पूर्ण आर्य समाजों ने उन्हें अपना पूरा सहयोग दिया।

श्री जय कृष्ण जी नन्दा की इस निस्वार्थ सेवा के लिए आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा तथा समस्त आर्य जगत् उन का आभार मानता है।

श्री नन्दाजी के इस सेवा कार्य में उनके मुख्य सहायक श्री प्रतापचन्द्र जी मेहता तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती परमेश्वरी देवी जी का निस्वार्थ कार्य बहुत अधिक महत्व का है। अब वे इस कार्य को निभा रहे हैं, क्योंकि श्री नन्दा जी लगभग डेढ़ वर्ष के लिए भक्ति-साधना के लिए महात्मा आनन्द स्वामी जी के आश्रम-देहरादून जा रहे हैं।

—सत्यदेव पुरातन मन्त्री

हंसराज महिला महा-विद्यालय जालन्धर

हंसराज महिला महा विद्यालय के छात्रावास की छात्राओं एवं प्राध्यापकों ने देश में उत्पन्न हुई खाद्यान्न की विशेष रूप से चावल की संकटकालीन स्थिति को देखते हुए 'चावल' खाने बन्द कर दिये हैं। छात्रावास में सप्ताह में दो बार चावल दिये जाते थे परन्तु देश में चावलों के अभाव को अनुभव करते हुए तथा केरल के लोगों की आवश्यकता को अनुभव करते हुए इस छात्रावास में निवास करने वाली सभी लड़कियों ने उपरोक्त निर्णय किया है।

अमर शहीद लेखराम जी का बलिदान

श्री करनैलसिंह जी विद्यार्थी विद्यावाचस्पति आर्यसमाज लक्ष्मणसर अमृतसर



आर्य पर्व पद्धति व सार्वदेशिक सभा के आदेशानुसार इस वर्ष आर्यसमाज के ऋषि दयानन्द के सच्चे सेवक अमर शहीद पं० लेखराम का बलिदान दिवस समारोह से मनाया जा रहा है। लेखराम नगरी (कादियां) इस महान पर्व को प्रति वर्ष ६ मार्च को मनाती है। बड़ी धूम-धाम से इस नगरी का यह उत्सव तो सचमुच देखने और सुनने से सम्बन्ध रखता है। युवकों का जोश भी ठाठें मारता दिखाई देता है।

मैं तो कहता हूं कि जिस प्रकार महात्मा हंसराज जी की जयन्ती का प्रोग्राम लगभग सारा वर्ष ही रहा है उसी प्रकार ज्यादा नहीं तो २३ फरवरी से ६ मार्च तक पं० लेखराम बलिदान सप्ताह भी बड़ी धूमधाम से मनाया जाना चाहिए। लेखराम नगर (कादियां) के युवक सज्जन तो इस पर्व पर महान जलूस भी निकालते हैं, प्रभात फेरी भी और स्थानों पर भी ऐसा-ऐसा प्रोग्राम होना चाहिए। नेताओं द्वारा जनता को अमर शहीद का सन्देश भी पहुंचाना होगा पण्डित जी ने आर्य समाज के लिए क्या कुछ किया सहा यह सब कुछ उसके जीवन को पढ़ने से सामने आ जाता है। महर्षि का यदि सच्चा पक्का और पहला भक्त हुआ है तो पं० लेखराम। ऋषि तुल्य लगन थी सच्ची मानवता के प्रति, आर्य संस्कृति के प्रति। आर्यसमाज ने, ऋषि दयानन्द के कार्य ने उससे जो कुछ भी मांगा, जब भी मांगा, वीर लेखराम तैयार था चाहे वह आराम कर रहा है, चाहे रोटी खा रहा है चाहे बच्चों के बीच बैठा है पर ऋषि का कार्य सुनते ही सब कुछ वहां का वहां ही छोड़कर चल पड़ते हैं ऋषि-पथ पर। कैसी मस्तानी लगन है।

मैं तो उसे एक अद्भुत मुसाफिर कहता हूं, जो आज यहां—कल वहां, आज इस शहर में कल उस शहर में, आज इस मुहल्ले में और कल दूसरे मुहल्ले में। वह मुसाफिर जिसके हाथ में वेद सन्देश और वह ऐसे भागता चला जा रहा है जैसे आंधी और तूफान हो। उस का दिल विषमताओं और मुसीबतों से डरने वाला नहीं। कुछ क्यों न आ पड़े हृदय में विजय का दृढ़ निश्चय उसे प्रतिक्षण उकसाता रहता है, रुकने नहीं देता। धन्य है मतवाले दीवाने, परवाने दयानन्द के शिष्य वीर लेखराम। तू जब तक जीया, आर्यसमाज की सेवा करता रहा

कादियां में रहने वाले अहमदियों के बारे में भी कई लोग जानते हैं कितने चतुर चालाक आदमी हैं ये। इनके गुरु पता है आपको, कौन थे। इनके गुरु का नाम था मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी। कभी यह अपने आपको कृष्ण घोषित करता था तो कभी राम होने का दावा करता था अपने आपको ईश्वर का पैगम्बर मानता था और यह उसने घोषणा कर रखी थी कि जो कोई भी उसके पास कादियां रहकर एक वर्ष में उसमें कोई मोजजे (चमत्कार) को न देख सके या सुन सके तो उसे वह २००) रु० मासिक के हिसाब से २४००) रु० देंगे। पं. लेखराम जी को जब इस प्रकार की घोषणा का पता चला तो उन्होंने मिर्जा जी से मुलाकात करके उसके मोजजे देखने के लिए लिखा। पर मिर्जा जी अपनी शर्तों से थिड़क गये और ऐसा वैसा जवाब दिया। पर पं. जी तो घर पहुंचने वाले थे। कादियां गये काफी बहस हुई। पूरे दो मास कादियां रहे और मिर्जा जी को निरुत्तर करके वहां एक प्रभावशाली समाज स्थापित करके ही हिले। पर विरोधियों का और तो कोई साधन न मिला हां पं० जी की जान के पीछे पड़ गए और पं० जी को धोखा देकर आर्य-जाति से छीन लिया। उठो! उठो! आर्यो शहीद के जीवन से शिक्षा लें।

आर्यसमाज मंडी (हि. प्र.)

आर्यसमाज मंडी (हिमाचल प्रदेश) की यह विशेष सभा पंजाबी भाषा की आड़ में स्वतन्त्र सिक्ख राज्य के निर्माण की अकालियों की सांप्रदायिक मांग का घोर विरोध करती है जो मा० तारासिंह के वक्तव्यों तथा सन्त फतहसिंह के सम्वाद दाताओं को दिये गए ताजा वक्तव्य से सुस्पष्ट हो गया है।

यह सभा भारत सरकार से मांग करती है कि वह किसी भी दबाव अथवा धमकी में आकर इस मांग को स्वीकार न करें क्योंकि स्वतन्त्र सिक्ख राज्य के निर्माण से पाकिस्तान और नागालैंड के निर्माण से भी अधिक भयावह, उलझनें और स्थितियां पैदा हो जाएंगी, जिसकी समस्त उत्तरदायित्व भारत सरकार पर होगी।

—चेतराम बैहल

वेदामृत-वर्षा

पूज्य महात्मा

आनन्द स्वामी जी सरस्वती

आर्य समाज लारेन्स रोड में ३ मार्च वीरवार से आरम्भ कर रहे हैं

समय प्रातः ७ से ८ बजे तक परिवार तथा इष्ट मित्रों सहित पधारने की कृपा करें

निवेदक—

मोहनलाल अरोड़ा—प्रधान

विद्यासागर—मन्त्री

अमर हुतात्मा पं. लेखराम बलिदान दिवस

मन, वचन, कर्म से सत्य-निष्ठ ईश्वर, धर्म और राष्ट्र के सच्चे और क्रियाशील उपासक अमर हुतात्मा पं० लेखराम जी आर्य मुसाफिर की पुण्य स्मृति को जागृत रखने के तथा सत्प्रेरणा प्राप्त करने के निमित्त कानपुर नगर की सब आर्यसमाजों की ओर से मैस्टन रोड में सामूहिक रूपेण श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए पं० विद्याधर जी श्रीयुत मूलचन्द जी, श्रीयुत डा० हरिदत्त जी शास्त्री, श्रीयुत तेजभान जी मदान श्रीयुत ललिता प्रसाद जी एवं स्वामी वेदानन्द जी, प्रज्ञाचक्षु पं० विजयपाल शास्त्री आदि ने उद्बोधन किया कि जिन्होंने प्राण दिये पर प्रण नहीं छोड़ा और लोक कल्याण की भावना से सम्पूर्ण जीवन समर्पित किया उनकी वसीयत से प्रेरणा लेकर पारस्परिक भेदभाव को भुलाकर हम सब प्रशस्त मार्ग का अनुसरण करें।

विद्याधर मन्त्री

केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर

वैदिक संसार की महान् क्षति

देश को यह सूचना पढ़कर अति दुःख होगा कि स्वतन्त्रता संग्राम के वीर सेनानी और सहस्रों क्रांतिकारियों के मार्ग दर्शक श्री विनायक दामोदर सावरकर का देहांत हो गया है। आप ८३ वर्ष की आयु तक लंबी बिमारी भोगने के बाद सामाजिक कार्य को अधूरा छोड़ कर इस संसार रूपी सागर को पार कर गए।

आप महान् पुरुष थे जो इस युग में दूसरों के लिए ज्योति लिए आगे बढ़ता चला गया।

आर्य समाज चण्डीगढ़ सैक्टर २२ के समाचार

श्री सावरकर जी की मृत्यु पर निम्न शोक प्रस्ताव पास किया गया चण्डीगढ़ के आर्यों की सभा भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के महान सेनानी, भारतीय संस्कृति के अमर पुजारी भारत माता के महानतम सपूत स्वातन्त्र्य वीर सावरकर के के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है तथा ईश्वर से उन की आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना करती है। असंख्य नर-नारी दिवंगत महापुरुष के जीवन से प्रेरणा लेते हुए देश को वैभव सम्पन्न बनाने का दृढ़ संकल्प लें।

"चण्डीगढ़ के नर-नारियों की यह विराट सभा पंजाबी भाषा की की आड़ में स्वतन्त्र सिक्ख राज्य के निर्माण की अकालियों की साम्प्रदायिक मांग का घोर विरोध करती है जो मा० तारासिंह के वक्तव्यों तथा संत फतहसिंह के सम्वाददाताओं को दिए गए ताजा वक्तव्य में सुस्पष्ट हो गया है।

यह सभा भारत सरकार से मांग करती है कि वह किसी भी दबाव अथवा धमकी में आकर इस मांग को स्वीकार न करे क्योंकि स्वतन्त्र सिख राज्य के निर्माण से पाकिस्तान और नागालैंड के निर्माण से भी अधिक भयावह उलझनें और परिस्थितियां उत्पन्न हो जायेंगी जिसकी समस्त उत्तरदायिता भारत सरकार पर होगी।'

—वेद प्रकाश 'प्रभाकर'

★ पंजाबी सूबा के विरोध में हिन्दुओं की सभी श्रेणियों ने आवाज़ उठाई है। अब भी गवर्नमैंट के कानों पर जूं नहीं रेंगेगी तो भविष्य में इसका परिणाम बुरा ही होगा। सरकार को सावधान होकर इसका कड़ा मुकाबला करने की जरूरत है।

हंसराज महिला महा विद्यालय जालन्धर

ऋषिबोध उत्सव श्री पं. सत्यदेव जी विद्यालंकार के सभा पतित्व में मनाया गया।

ऋषिबोध उत्सव का प्रारम्भ वेद मन्त्रों के सस्वर उच्चारण से किया गया। तदनन्तर महर्षि दयानन्द के चरणों से श्रद्धांजलियां प्रस्तुत की गईं। श्रीमती सुवीरा जी ने श्री स्वामी जी को महा-मानव, महा-ऋषि एवं महान आत्मा सिद्ध करते हुए कहा कि भारत आज यदि एक स्वतन्त्र देश के रूप में विकसित पल्लवित एवं पुष्पित हो रहा है तो इसका समस्त श्रेय उस महायोगी को है।

प्रधान पद से बोलते हुए पण्डित जी ने कहा कि दयानन्द एक प्रबुद्ध एवं जागृत नेता थे जिन्होंने अपनी 'लेखनी कथनी एवं करनी' सभी के द्वारा भारतीय जनता की सेवा की, उनका ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' सचमुच सत्य के आलोक का प्रसार करने वाला प्रकाश स्तम्भ है।

अश्लीलता निवारण के लिए

संसद् भवन पर उग्र आंदोलन की तैयारियां।

नई दिल्ली—वेद पथिक पं० धर्मवीर भंडाधारी ने आज प्रेस प्रतिनिधियों को यह बतलाया है कि खुले आम चौराहों पर नग्न अर्ध नग्न सिनेमाओं के चित्र लगे हुए हैं चुम्बन और आलिंगन का खुला प्रचार देश के सभी नगरों में हो रहा है श्री भंडाधारी जी ने बतलाया कि इस प्रकार के अश्लील चित्रों के प्रदर्शन से लाखों और करोड़ों विद्यार्थियों का जीवन निकृष्ट हो रहा है। देश का अरबों रुपया मासिक बुरे संस्कारों के प्रचार पर मनोरंजन के नाम पर बरबाद हो रहा है। देश की उन्नति और आर्थिक समस्या के लिए अश्लीलता निवारण अत्यन्त आवश्यक है। श्री पं० धर्मवीर जी ने अपने वक्तव्य में यह बताया कि देश भर से एक करोड़ हस्ताक्षर सर्वत्र करके राष्ट्रपति को भेंट किया जावेगा।

संसद भवन पर प्रदर्शन

२१ मार्च को संसद् भवन पर सभी धर्मों और वर्गों के लाखों नर-नारियों द्वारा उग्र प्रदर्शन किया जावेगा। देश भर की समस्त आर्य समाजों तथा सनातनधर्म संस्थाओं की ओर व ईसाई और मुसलमानों की ओर से इस प्रदर्शन में नर-नारी भाग लेंगे।

आमरण अनशन की घोषणा

सरकार यदि कड़ी चेतावनी और एक करोड़ हस्ताक्षर और प्रदर्शन पर ध्यान नहीं देगी तो श्रीमती इन्द्रा गांधी की कोठी के सामने वेदपथिक प० धर्मवीर जी ने कहा है कि मैं आमरण अनशन प्रारम्भ करूंगा।

हमारी मांगें

१. अश्लील फिल्म कम्पनियों के मालिकों को कठोर दंड दिया जाए।

२. बोर्ड के अधिकारियों को बदलकर धार्मिक प्रतिनिधियों को सदस्य बनाया जाए।

३. अश्लील चित्र छापने वालों को और बेचने वालों को कठोर दंड दिया जाए।

४. २० वर्ष तक की आयु के विद्यार्थियों को सिनेमा देखने पर कड़ा प्रतिबन्ध लगाया जाए।

धर्मवीर आर्य
भंडाधारी

कुछ तुम कहो, कुछ मैं कहूं

तुम नित्य के साथी रहे, तुमने मुझे अपना लिया,
अपना सखा मुझको किया, जीवन मेरा हुलसा गया।
नित साथ मैं तेरे रहूं, कुछ तुम कहो, कुछ मैं कहूं॥

★

मैं सत्य शिव हूं सदा से, तूने मुझे सुन्दर किया,
सौन्दर्य अपना दे दिया, और तृप्त मुझको कर दिया।
नित प्रेम मैं अर्पित करूं कुछ तुम कहो, कुछ मैं कहूं॥

★

रसमय हृदय हो प्रेम में, नित प्रेम ही भरने लगा,
तू प्रेममय सच्चा सखा, तुझ से हृदय बनने लगा।
मैं निकट अब तेरे रहूं, कुछ तुम कहो, कुछ मैं कहूं॥

★

रसमय रहे मेरा हृदय, नित प्रेम ही करता रहे,
आनन्द में भरपूर यह, अपने में सब को स्थान दे।
मैं स्वयं तुझ में रहूं, कुछ तुम कहो, कुछ मैं कहूं॥

—लालचन्द्र मंसूरी

पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी

आर्यसमाज लारेंस रोड अमृतसर में आर्यजगत् के प्रसिद्ध परम सन्त पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की ता. २ मार्च १९६६ बुधवार से प्रातः ७ बजे से आठ बजे तक मनोहर कथा आरम्भ है। नगर की जनता अमृतपान कर रही है।

सामूहिक एकता का प्रतीक

अमृतसर का ऋषिबोध उत्सव

(श्री नरदेवराज जी वर्मा आर्यसमाज लक्ष्मणसर अमृतसर)

जिस कल्याणकारी शिवरात्री के पर्व ने 'मूलशंकर' को बोध कराके 'मूलशंकर से महाऋषि दयानन्द सरस्वती बनाया था, इस महान पर्व को मनाने के लिये अमृतसर की 'केन्द्रीय आर्य सभा' की ओर से १९ फरवरी शनीवार को एक विशाल जलूस का संगठन किया गया। इस जलूस की विशेषता यह थी कि इस जलूस में ऋषि के प्रति-प्रेम प्रकट करने के लिए 'जिला भर की आर्यसमाजें, सनातन धर्म सभाएं और सिख नेता भी शामिल थे।' यह अमृतसर के इतिहास का प्रथम अवसर है कि इतना महान जलूस सभी धर्मों के नेताओं के साथ एकता की पुष्पमालाओं से ओतप्रोत होकर 'महाऋषि दयानन्द की जय' भारत माता की जय' 'हिन्दी भाषा की जय' 'हर हर महादेव' और 'जो बोले सो निहाल सतसरी अकाल' के नारों से शहर के बड़े-बड़े बाजारों में गूंजता हुआ निकल रहा था।

यह अद्भुत जलूस आर्य-समाज मन्दिर लोहगढ़ से शुरू होकर टेलीफोन एक्सचैंज-श्रद्धानन्द बाजार-कर्मो डियोड़ी-कटड़ा अहलू-वाला-घण्टा घर चौक-बाजार माई सेवा-गुरू बाजार से होता हुआ कटड़ा, सफेद में आर्यसमाज मन्दिर के आगे खतम हुआ। जलूस के आगे ध्वजारोही घुड़ सवार थे। और पीछे एक जीप गाड़ी में सभी नेता गण श्री जगत-नारायण जी के साथ पुष्पों से लदे बैठे थे। जनता का ठाठे मार रहे जलूस में आर्यसमाजें-स्त्री आर्य-समाजें और स्कूलों वा कालिजों के लड़के वा लड़कियां बड़ी शांति पूर्वक ऋषि गुण-गान करते चल रहे थे।

दूसरे दिन २० फरवरी रविवार को गोलबाग के विशाल मैदान में एक सभा श्री धर्मपाल जी बी. ए. म्युनिसीपल कमीशनर अमृतसर की प्रधानता में की गई जिसमें बड़े श्रेष्ठ और उच्च-कोटी के कवियों ने ऋषि गुण-गाण किया, और पं. ओम्प्रकाश जी खतौली वाले, मजहबी रामदासी सिखों के नेता ज्ञानी रामसिंह जी, सनातनधर्मी नेता श्री जगन्नाथ जी मिश्रा और आर्य नेता श्री वीरेन्द्र जी ने महाऋषि दयानन्दजी को श्रद्धांजली अर्पित करते हुए पंजाब के भाषा सम्बन्धी वाद-विवाद पर अपने-अपने विचार प्रकट किये। विशाल जन समूह के सामने श्री ओमप्रकाश जी ने कहा कि 'हिन्दी चीनी भाई-भाई या हिन्दु मुस्लिम भाई-भाई के नारे लगाने से मैत्रिक सम्बन्ध स्थापित नहीं होते। महात्मा गांधी, पं० नेहरू या सर्वोदय के नेता और विनोबाभावे इस कार्य में सफल न हो सके। राष्ट्र की एकता केवलमात्र भावों की एकता से हो सकती है, जिसे कि महर्षि दयानन्द ने उद्भुत किया। हमारी सरकार पंचशील और अहिंसा को गलत अर्थों में अपने सन्मुख रखती आ रही है। यह ठीक है कि हम किसी को काटना नहीं चाहते लेकिन अपनी फुनकार को तो मत छोड़ो। क्यों नहीं सैनिक शक्ति को और उन्नत किया जाता? और क्यों हमारी सरकार यह कहती है कि हम ऐटम शक्ति नहीं बनायेंगे? जब कि दुश्मन चारों तरफ से आंखें उठाए देख रहे हैं, हमारे स्कूलों वा कालिजों के लड़कों को तकलियां दी जा रही हैं कि अम्बर चर्खा चलाना सीखें। देश का धन बेकार में ही खर्च किया जा रहा है। अगर तुम देश को बचाना चाहते हो तो ऋषिदयानन्द के कथनानुसार 'एकता के सूत्र' में बन्ध जाओ और सब झगड़े छोड़-कर एक स्वर में कहो कि 'हम सब एक हैं।'

सिखों के नेता ज्ञानी रामसिंह जी ने कहा कि आज हम स्वतन्त्र हैं तो इसका मूलाधार महाऋषि जो ही हैं। जिन्होंने हमारी रगों में स्वतन्त्रता प्राप्ति की फूंक दे दी थी। आज हम उस महान ऋषि के उपकारों से कृतज्ञ हैं और उसके प्रति श्रद्धांजलि देते हुए हमारा सर खुद-बखुद झुक रहा है। उस महान ऋषि ने एकता का ऐसा पाठ दिया जैसा कि हमारे गुरू महाराज ने दिया था। लेकिन पंजाब के कुछ मन-चले लोग पंजाब के टुकड़े करना चाहते हैं। यह कहकर कि पाकिस्तान की लड़ाई में सिखों ने मुसलमानों से टक्कर ली और भारत को विजय प्राप्त कराई, इस लिए सिखों को खुश करना चाहिए और इन्हें पंजाबी सूबा दे दिया जाए। परन्तु मैं बता देना चाहता हूं कि इस लड़ाई में लड़ने वाले केवलमात्र सिख ही नहीं थे बल्कि हिन्दू मिलटरी भी उनके साथ थी। परन्तु इन सिखों में सब से अधिक संख्या मजहबी और रामदासी सिख थे, जिन्होंने छम्ब जौड़ियां और बर्की जैसे अति भयानक इलाकों में अपना खून बहाया था। मैं मजहबी रामदासी सिखों का प्रतिनिधि और नेता होने के नाते आपको बता देना चाहता हूं कि "हम कभी भी पंजाब को पंजाबी सूबा के रूप में भारत से अलग नहीं चाहते और इसका डट कर मुकाबला करेंगे। यह मांग केवलमात्र "मैकालफ्" के चेलों की है गुरु के चेलों की यह कोई मांग नहीं। ऋषि दयानन्द ने जैसे देश के हित के लिये अपना जीवन दे दिया। पर भारत का कोई अंग टूटने नहीं देंगे। यही हमारी सच्ची श्रद्धांजली है।"

इनके पश्चात् सनातन धर्मी, नेता श्री जगन्नाथ जी मिश्रा ने कहा कि मैं महाऋषि दयानन्द का आभारी हूं क्यों कि मैं समझता हूँ कि अगर ऋषि न आते तो हिंदु-जाति का नामो-निशान ही न रहता। हम तो उस ऋषि के उपकारों को कभी भूल भी नहीं सकते और उनके प्रति श्रद्धांजलि देते समय सर झुक जाता है। यह सनातन धर्म और आर्यसमाज कैंची के दो फरे हैं परन्तु वेद नाम की कील से ऋषि ने बान्ध दिया है।

परन्तु आज पंजाब में फूट डालो और राज करो की कारवाई चल रही वह पंजाब के समस्त जन समूह को ले डूबेगी।

पाकिस्तान से हुए नर विनाश ताण्डव को अभी जनता भूल भी नहीं पाई कि पंजाबी सूबे का शोशा छेड़ दिया गया है। पंजाब की जनता आज एक है और सरकार की कोई दूषित कार्यवाही सही नहीं जायेगी। ऋषि ने हम को एकता का पाठ दिया है और हम उस पर अमल करते हुए ऋषि के उपकारों को नहीं भूल सकते।' इसके पश्चात आर्य नेता श्री वीरेन्द्र जी ने भाषण दिया और कहा कि शिवरात्री पहले भी आती थी और हम पहले भी शिवरात्री का उत्सव मनाते थे परन्तु वास्तव में शिव-रात्री का उत्सव जिस ढंग से मनाना चाहिए वह — यह कल का दिन था। जिस में कि सब हिन्दुमात्र ने एकता का सबूत दिया है। ऋषि का सन्देश आर्य-समाज के लिए ही नहीं सनातन-

(शेष पृष्ठ ८ पर)

 रजिस्टर्ड नं० पी० १२१

अतमृतसर ... बोध उत्स

(पृष्ठ ७ का शेष)

धर्म बल्कि समस्त हिन्दु जाति के लिए था। आज की शिवरात्री में हमने इकट्ठे मिलकर इतिहास का रुख बदल दिया है। मलिका विक्टोरिया के समय एक सर्वधर्म सम्मेलन हुआ कि एकता कायम की जाए। लेकिन वह सम्मेलन सफल न हुआ परन्तु आज के शिवरात्री जलूस और सभा में आर्य समाज, सनातनधर्म सभा—जैन सभा और सिख नेताओं के एकत्रित होने पर कह सकते हैं कि एकता सफल हो रही है। अगर वातावरण कुछ शांत रहे तो एक दिन आएगा कि सब एक हो जायेंगे। लेकिन पंजाब के अकाली पंजाब की एकता में भाषा के नाम पर विघ्न डाल रहे हैं। लेकिन मैं उन्हें कहना चाहता हूँ कि हम हिन्दु अपनी हिन्दी को छोड़ देते हैं और आप सिख अपनी पंजाबी को छोड़ दो, चलो। वही भाषा अपना लें जो कि दसवें गुरु महाराज ने अपनाई थी। गुरु तेग बहादुर ने हिंदुओं के लिए बलिदान दे कर हिंदुओं पर उपकार किया है—हम कभी भी उनके उपकारोंको भूल नही सकते। यह गुरु वास्तव में हमारे भी गुरु हैं। आज शिवरात्री के उत्सव पर हम ऋषि के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने आए हैं यह हमारे लिए महान् दिन है। ऋषि ने हमारे लिये क्या किया। देखना हो तो आज भारत विधान उठा कर देखें। सन १८.. से पहले ही ऋषि ने स्वतन्त्रता का पाठ सिखाया और कहा कि 'दूसरों का राज चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो, अपने राज से वह बुरा ही है।' आज ४५ करोड़ जनता की प्रधानमन्त्री एक औरत का होना और उस देश में जहां कि कहा जाता था—

ढोल-गंवार-शूद्र-पशु-नारी,
ये सब ताड़न के अधिकारी

परन्तु लंगोट बन्ध संन्यासी ऋषि दयानन्द ने कहा—

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते,
रमंते तत्र देवता।

यह उसी ऋषि की कृपा है जो कि स्त्री जाति को भी पुरुषों के बराबर दरजा दिया। इतिहास लेखक अगर कलम उठा कर इतिहास के पन्ने लिखेगा तो उसे जरूर लिखना पड़ेगा कि जिस देश में औरत को पर्दे की चीज समझा जाता था वहां की प्रधानमन्त्री इन्द्रा गांधी का बनना या उच्च पदों पर औरतों के आने का श्रेय केवलमात्र लंगोट बन्द संन्यासी को ही है। एक सौ वर्ष पहले जितने भी नेता हुए किसी ने तो धर्म के लिए, किसी ने शिक्षा के लिये और किसी ने जनता की कुरीतियों के लिए कार्य किया। लेकिन महर्षि एक ऐसे नेता थे जिन्होंने सब प्रकार की शिक्षा देकर जनता को राहे-रास्ते पर डाला। सिख हमारे भाई हैं और गुरु महाराज हमारे पूज्यनीय हैं। सिखों को तो हम छाती से लगा सकते हैं लेकिन अकालियों से हमारा कोई समझौता नहीं हो सकता। अगर अकाली समझें कि हम सरकार को धमका कर पंजाबी सूबा ले लेंगे तो वह कार्य हम भी कर सकते हैं। और अगर यह समझें कि सन्त फतेहसिंह को जलाकर सूबा प्राप्त कर लेंगे तो इसके विपरीत हमारे तीन महारथी नेता जलने को तैयार हैं। और अगर समझें कि लड़कर हम सूबा प्राप्त कर लेंगे तो वह समझ लें कि आज के हिन्दू भी सोये हुए नहीं हैं हम ऐलान कर कर देना चाहते हैं कि हम किसी प्रकार भी पंजाब के टुकड़े नहीं होने देंगे और सदा एकता के लिए प्रयत्न शील रहेंगे आगे से जितने भी दिन त्योहार होंगे चाहे शिवरात्री हो या रामनौमी आर्य समाज और सनातन धर्म इकट्ठे ही मनाया करेंगे।'

इस भाषण के पश्चात् महान् जन समुदाय की सभा विसर्जित हुई।

..आ. प्रा. प्रतिनिधि ..के पदाधिकारी मनोनीत

श्री इन्द्रसेन, श्री भीमसेन बहल, प्रिं. रलाराम और चौधरी बलबीरसिंह उप-प्रधान नियुक्त

जालन्धर २८ फरवरी—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री यश ने आज सभा के अन्य पदाधिकारियों के नामों की घोषणा कर दी।

गत ... सभा के वार्षिक अधिवेशन में श्री यश को दोबारा सर्वसम्मति से सभा का प्रधान चुना गया था और उन्हें अन्य पदाधिकारियों के मनोनयन का अधिकार दिया गया था।

प्रधान द्वारा मनोनीत किए गए पदाधिकारियों के नाम इस प्रकार हैं—

उपप्रधान—डा. इन्द्रसेन जी, श्री भीमसेन बहल, प्रिं. रलाराम और चौ. बलबीरसिंह।

मन्त्री—प्रो.वेदप्रकाश मलहोत्रा

उपमंत्री—श्री देवव्रत अमृतसर, के. शिवराम जी ओबराए और पं. दुर्गादास।

कोषाध्यक्ष—संतोषराज जी।

पुस्तकाध्यक्ष—श्री बलदेवराज तलवाड़।

प्रतिष्ठित सदस्य—श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी, डा. मेहरचन्द जी महाजन (भारत के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश) श्री सूर्यभानु जी (उप-कुलपति पंजाब विश्वविद्यालय) डा. गोवर्धनलाल दत्त (भूतपूर्व उप-कुलपति उज्जैन विश्वविद्यालय), कैप्टन केशवचन्द्रजी, प्रिं. ज्ञानचन्द जी, प्रिंसिपल दीवानचन्द्रजी कानपुर, श्री देसराजजी महाजन, ज्ञानी पिंडीदास जी, श्री मेहरचन्द धीजी और श्री परमेश्वरीदास बहल।

अंतरंग सदस्य—कुमारी विद्यावती आनन्द, श्री प्यारेलाल बेरी' वैद्य विद्यासागरजी, पं. रुद्रदत्त जी, श्री बलदेवसिंह भंडारी, श्री बृजलाल टोहाना, महाशय धन्तराम लुधियाना, श्री सत्यप्रकाश शिमला, श्री कृष्णलाल गुप्ता जम्मू, श्री लब्भूराम जी होशियारपुर, „ किशनचन्द दिल्ली, श्री चमनलाल जी अम्बाला, वैद्य प्रकाशनाथ तिवाड़ी, जालन्धर, भगत बुड्ढामल जी जालन्धर, श्री सत्यदेव विद्यालंकार जालन्धर, डा. मिलखीराम, अम्बाला पं. विशम्भरदत्त करनाल, प्रो. वेदीराम, जी प्रिं. हरिराम जी, चण्डीगढ़, प्रि. चंचलदास जी, श्री बलदेवराज और श्री खुशहालचन्द पराशर।

—

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलापप्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत् कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक ११) ३० फाल्गुण २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१— १३ मार्च १९६६ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

तस्मै यमाय नमः

उस यम रूप भगवान को नमस्कार हो। यम और काल रूपी प्रभु की शक्ति है जो समय समय पर संसार को अपना ग्रास बनाती रहती है। प्रभु की इस शक्ति से कोई बच नहीं सकता। उसे नमस्कार है।

गिर्वणः पाहि नः

हे स्तुति के योग्य परमात्मन ! हम सारे आपके ही हैं हमारी आप ही रक्षा करो। नाना प्रकार के संकटों से आपकी कृपा से ही हम सदा सुरक्षित रहें। आप ही हमारे रक्षक, पाता, परित्राता हैं। इसी लिए तो आप पिता हैं, सच्चे रक्षक हैं।

स हि स्थिरो विचर्षणिः

वह प्रभु स्थिर है सदा एक रस है, अटल है। यह जगत परिवर्तनशील है, पर परमेश्वर सदा एक रस है, उसमें कभी परिवर्तन नहीं होता। वही सबका निरीक्षक है। सब के बाहर अन्दर के कार्यों भावों को देखता, जानता है। उससे कोई भी बात गुप्त नहीं है।

सा म वे द से

वे दा मृ त

बलिदान की अमर ज्योति

अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद्द्रविणस्युर्विपन्यया।
समिद्धः शुक्र आहुतः॥

वेद का उपदेश है कि अग्नि आहुतियों को प्राप्त होकर खूब प्रदीप्त होता है। अन्धकार तथा रोग के कीटों को मार देता है। राष्ट्र की स्वतन्त्रता के अग्नि को प्रदीप्त करने के लिए भी वीर-पुरुषों के जीवन की आहुति चाहिए। विदेशी सत्ता का उन्मूलन करने के लिए स्वराज्य आंदोलन की अग्नि को चमकाने में पंजाब केसरी ने छाती पर लाठियां खा कर अपना बलिदान देकर बड़ा भारी कार्य किया। हमारा भी कर्तव्य हो जाता है कि उन बलिदानी वीर लाला लाजपतराय जी के जीवन से हम धर्म व देशार्थ तन-मन-धन देना सीखें और देश की स्वतन्त्रता को चिरस्थायी बनाएं।

ऋषि दर्शन

सर्वं परमेश्वराय

हे लोगों ! जीवन में जो भी प्रिय वस्तु है, उसे परमेश्वर के अर्पण कर दो। परोपकार में लगा दो। सब कुछ प्रजापति का है, उसी का दिया हुआ, उसी के निमित्त लगा दो। भोगों को त्यागभाव से ही भोगो।

वयं परमेश्वरस्य एव

हम सब उसी परमेश्वर की प्रजा हैं, उसी प्रजापति की संतान हैं। वही हमारा पिता है हम उसके अमृतपुत्र हैं। इस नाते जो कुछ भी हमारे पास है, हमें जीवन में प्राप्त है सब उसी की कृपा का प्रसाद है। यह सब उसी का है—कस्यस्विद् धनम्।

पुत्रवद्तेमहि

प्रभो ! हम सारे आपके पुत्र ही तो हैं, आप हमारे पिता हैं। इसलिए हमारा कर्तव्य है कि हम पुत्रों के समान ही वर्ताव करें। आपके आदेश के अनुसार चलते रहें। आपके आज्ञाकारी बन कर हम सुपुत्र बनते जावें।

भा ष्य भू मि का से

राष्ट्र-भक्ति और प्रभु-भक्ति-१४

(श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की अमृतभरी कथा)



(गतांक से आगे)

पुरुषों ने शत्रु से लड़कर वीर गति प्राप्त करने और स्त्रियों ने जौहर की ज्वाला में आहुति देने का निश्चय कर लिया। किले के अन्दर जौहर के लिए लकड़ी जमा होने लगी। पद्मनी समेत सभीस्त्रीयोंने हार श्रृंगार किया। कुछ लोगों का कहना है कि इस जौहर में १३००० स्त्रियों ने भाग लिया और कुछ की राय है कि स्त्रियों की संख्या १७००० है। एक बहुत बड़े अग्नि-कुण्ड में खड़े होकर पद्मनी ने कहा था—"हमारा विश्वास है कि भारतवर्ष की देवियों को धर्म और राष्ट्र के प्रति कर्तव्य पालन में हमारे इस कृत्य से साहस और प्रेरणा मिलेगी।"

इधर जौहर से अग्नि की लपटें उठ रही थीं उधर राजपूत खिलजियों पर इस तरह वार कर रहे थे जैसे खिलजियों पर काल फिर रहा हो। शत्रु में भगदड़ मच गई। लाशों के ढेर लग गए। सब राजपूत शहीद हो गए। बची खुची खिलजी सेना के साथ अलाउद्दीन किले में दाखिल हुआ। उस ने पद्मनी को खोज में किले का चप्पा-चप्पा छान मारा तभी एक बुढ़िया ने जौहर कुण्ड से राख उठा कर खिलजी के सिर में डाल दी। राष्ट्र और धर्म के लिए इस से बड़ा बलिदान देवियों का और क्या हो सकता है। मार्च १९४७ की घटना है। रावलपिंडी, अटक और जेहलम में मुसलमानों के अत्याचार जोरों पर थे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को सूचना मिली कि गुजर खां तहसील के गांव से एक सौसे अधिक देवियां मुसलमान आत-ताईयों के शिकंजे में हैं। शन्नो देवी जी, रामेश्वरी नेहरू कुछ अन्य देवियां और भद्र पुरुष न देवियों की सहायता के लिए उक्त गांव को रवाना हुए। दल में मैं भी था। तीन दिन तक गांव के लोगों ने आततताईयों का मुकाबला किया। आततताईयों ने गांव की नाका बन्दी कर ली और पानी तक पहुँचने में पाबन्दी लगा दी। गांव की लगभग सौ रूपवतियों पर आततायी मुसल-मानों की नजर थी। कोई कहता था कि मैं ये लूंगा और कोई कहता था कि मैं वह लूंगा। यह गांव एक पहाड़ी पर था और पहाड़ी के नीचे सरदार गुलाबसिंह एडवोकेट का कुआं था। प्रातः स्मरणीय लाजवन्ती के नेतृत्व में इन सौ के करीब देवियों ने जब स्थिति को अत्यन्त असहनीय अनुभव किया तो एक-एक करके इस कुएं में छलांग लगा दी। तब कोई जपजी साहिब का पाठ कर रही थी, कोई गीता का और कोई वेद मन्त्र का। हम सब लोग दिल को हिला देने वाली इस घटना के दस दिन बाद वहां पहुंचे और मन बहुत दुखी हुआ। इस गांव की देवियों ने साढ़े छः सौ वर्ष पूर्व की घटना की पुनरावृत्ति कर दिखाई।

आज भी देश भयंकर संकट में है। वेद कहता है कि अपने में सत्य आचार, सत्य आहार, सत्य व्यवहार, सत्य विचार आदि आठ गुणों को पैदा कर लो तभी देश का बालबांका नहीं हो सकेगा। इन आठ चीजों पर अमल करते हुए प्रभु से मिलना असम्भव नहीं और इन्हीं आठ बातों पर अमल करते हुए राष्ट्र भक्ति के मार्ग पर चलना भी कठिन नहीं। हाल ही में जब अगस्त में पाकिस्तान ने काश्मीर पर आक्रमण किया तो मैं वहां ही था। मैंने अपनी आंखों से देखा कि किस तरह नौजवानों ने चुन-चुन कर आक्रमणकारियों का सफाया किया। उस दृश्य को देख कर मेरे मन से आवाज उठी कौन माई का लाल है जिस में यह साहस हो जो मेरे देश को गुलाम बना सके।

भगवान कृष्ण ने पांच हजार वर्ष पूर्व हमें एक संदेश दिया था। यदि हम उस पर अमल करते तो आज हमारी यह स्थिति न होती। उन्होंने अपने सन्देश में कहा कि सदा अपने मन को प्रसन्न रखो। गम में डूबे न रहो। मन में पवित्र भावनाओं का संचार करो। जो चिंता करता है दुखी रहता है। निराशावादी होना भी ठीक नहीं। जीवनमें हम क्षण-भर नाकारात्मक पहलू को देखने वाले कभी प्रसन्न नहीं रह सकते। जो हर बात में अवगुण देखेगा, अवगुणी हो जाएगा। मैं मुरादाबाद में था। एक व्यक्ति मेरे पास करवे में दूध लेकर आया। मैंने ले लिया। एक सज्जन पास ही बैठे थे, कहने लगे 'क्या साधु भी दूध पीते हैं?' मुझे उसकी बात सुन कर बड़ा आनन्द आया। मैं बहुत छोटा था। हमारे घर में तब एक गाए हुआ करती थी। एक दिन पिता जी ने मुझे गाए को पानी पिलाने को कहा। मैंने गाए को पानी पिलाते हुए देखा कि उसके स्तनों के पास कुछ काली-काली सी चीजें वहां गाए का दूध पीने के लिए जमा हैं मैंने जब पिता जी का ध्यान उस ओर दिलाया तो उन्होंने कहा कि 'बेटे, ये जोंकें हैं। दूध नहीं पीतीं, खून पीती हैं। मैं बड़ा परेशान हुआ कि दूध के समुद्र के पास आकर भी इन की किस्मत में दूध नहीं खून है। हे मानव! तू जोंक न बन, बछड़ा बन! खून न पी दूध पी, अवगुण न ढूंढ, गुण ढूंढ! मधुमक्खी बनके शहद इकट्ठा कर, मक्खी बनकर गंदगी पर मत बैठ। प्रभु ने हमें यह मानव चोला इस लिए नहीं दिया कि हम दूसरों के अवगुणों को ढूंढते फिरें। हमें यह कदापि भूलना नहीं चाहिए कि केवल परमात्मा ही सर्वगुण सम्पन्न है बाकी सब में अवगुण और दोष हैं।

एक बार एक राजा के महल में चोरी हो गई जिसके अभियोग में तीन व्यक्ति पकड़े गए। राजा ने तीनों को फांसी का हुक्म दिया। दो को तो फांसी पर चढ़ा दिया गया। जब तीसरे को बारी आई तो उसने कहा—कि मैं राजा को यह संदेश देना चाहता हूं कि मुझे लोहे से सोना बनाने की कला आती है। राजा ने जब यह सुना उसे लोभ हो गया। फांसी रोक दी गई। सारे शहर में ढिंढोरा पिटवा दिया गया जिस किसी के पास लोहा हो वह यहां लोहा लेकर आए। ढिंढोरे का पिटना,था कि लोग अपने घरों और दुकानों से लोहा लेकर महल में पहुँचने लगे। यहां तक वे कड़छी और कड़ाही तक लाने लगे। फांसी का दंड प्राप्त व्यक्ति कहने अनुसार दो कांस्टेबल जंगल से लोहे का सोना बनाने वाली बूटी भी ले आए। राजमहल का प्रांगन खचाखच भरा हुआ था। उक्त चोर ने अपने स्थान पर खड़े होकर कहा—सज्जनों! जिस किसी ने जीवन-भर कोई चोरी नहीं की उस के हाथ लगाने से यह सोना बनेगा ऐसा मेरे गुरू ने मुझे बताया है। चूंकि मैं तो चोरी के अपराध में पकड़ा गया हूं और मुझे फांसी की सजा का हुक्म भी हुआ है इसलिए जिस व्यक्ति ने कभी कोई चोरी नहीं की वह आगे आए और लोहे को छू कर सोना बनाने में योग दे। किसान, दुकानदार, ठेकेदार, मन्त्री, राजा के छोटे भाई—सभी ने एक के बाद एक उठ कर कहा कि उन्होंने अमुक समय पर चोरी की थी। आखिर-कार राजा से जब लोहे को छू कर सोना बनाने को कहा गया क्योंकि उस के तो कभी चोरी करने का प्रश्न ही नहीं था।

(क्रमशः)

सम्पादकीय—

आर्य जगत

वर्ष २९] रविवार २०२२, १३ मार्च १९६६ [अंक ११

उत्तम और उपयोगी साहित्य

धर्म प्रचार के लिए जहां दूसरे आवश्यक साधनों का प्रयोग किया जाता है, वहां उत्तम साहित्य भी विचारों के प्रचार के लिए बहुत ही जरूरी साधन तथा अंग है। साहित्य अपना स्थायी प्रभाव डालता है। नाना प्रकार के पूर्व और पश्चिम जगत् के सम्प्रदायों की विचार धारा का प्रसार करने वालों ने इस बात को समझा और अपने सम्प्रदाय के जैसे - कैसे सिद्धांतों का प्रसार करने के लिए लाखों रुपये व्यय कर के अपना साहित्य निर्माण किया। अपने धर्म ग्रन्थों को नाना भागों में छपवा कर उनको फैलाया। बाईबल इस का प्रमाण है। आज विश्व की अनेक भाषाओं में इस का अनुवाद कर के सब जगह पहुँचा दिया गया है। साहित्य जीवन को प्रभावी बनाने में बड़ा भारी साधन माना गया है। बड़े से बड़े का भाषण भी थोड़ी देर से बाद आकाश में मिल जाता है किन्तु वही साहित्य के रूप में लाखों तक पहुँच सकता है। आज भारत अपने पुरातन दिव्य साहित्य के कारण विश्व गुरु बना हुआ है। देवता राम-कृष्ण को अमर बनाने में रामायण, महाभारत का ही हाथ है। ऋषियों का दिया उपनिषदों व दर्शनों, महाकवियों का काव्यों, सन्तों का भक्तिरूप, वीरों का वीर पुस्तकों के रूप में दिया साहित्य भारत की सब से बड़ी सम्पत्ति है। आर्य समाज के महान प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती इस रहस्य को जानते थे। तभी उन्होंने इतना शानदार ऊंचा साहित्य धार्मिक ग्रन्थों के रूप में सारे विश्व को दिया। आर्यसमाज के प्रारम्भिक युग में विद्वानों ने बड़ा उपयोगी साहित्य लिखा। उस से धर्मप्रचार खूब फैला। तब समाज के पास मन्दिर इतने शानदार न थे। संस्थाएं इतनी विशाल नहीं थीं। किन्तु साहित्य के भण्डार भरने वालों की कमी न थी। उस से समाज आगे बढ़ा।

अब मन्दिर व संस्थाएं बहुत ऊंची हैं किन्तु साहित्य प्रकाशन की गति बहुत ही मन्द है आज व्यक्तिगत रूप से जितना साहित्य आर्य समाज के ओजस्वी लेखक श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय ने दिया है—उतना कौन दे सका है। आज ऊंचे वर्ग को विशेषकर अंगरेजी पढ़े लिखे वर्ग के हाथों में देने के लिए हमारे पास क्या है? अपनी जनता को देने के लिए भी क्या है? इधर ध्यान कम है। जितने बड़े २ समाज हैं यदि वर्ष में एक या दो पुस्तकें भी मध्यम-स्तर की अलग २ विद्वानो से लिखवा कर अपनी ओर से प्रकाशित करवा कर जनता तक पहुँचाते रहें तो कितना प्रचार हो सकता है। अकेला धुन का पक्का व्यक्ति क्या नहीं कर देता। जिस ओर चल पड़े उधर ही काम में लग जाता है। श्री पं० सातवलेकर जी अपनी सौ वर्ष के लगभग आयु में कितना काम करते हैं। आचार्य विश्वबन्धु जी ने अकेले कितना भारी काम किया व कर रहे हैं। आज होशियारपुर जाकर साधु आश्रम में उस विशाल काम को देखकर मनुष्य चकित हो जाता है। एक वर्ष में १८ लाख रुपये के लगभग बजट होता है। सबका अपना-अपना मार्ग है। किंतु इन लोगों की विशेषता तथा अथक परिश्रम की मुक्त कंठ से प्रशंसा करनी ही पड़ती है। आर्यसमाज के पास कितने विशाल कालेज हैं, गुरुकुलल हैं। किंतु इनसे कितना साहित्य निकलता है। यदि हमारा प्रत्येक कालिज अपनी २ शक्ति के अनुरूप वर्ष में एक विशिष्ट ग्रन्थ भी अंग्रेजी में या यथा रुचि अपने किसी महान् विद्वान् स्कालर से लिखवाकर प्रकाशित करता रहे तो कितना काम हो सकता है? संस्थाओं के पास धन व विद्वानों की कमी नहीं, पर ध्यान कम है। हमारी विशाल दयानन्द कालेज कमेटी का वार्षिक बजट लाखों या करोड़ों का होगा, कितना प्रभाव है, कितने स्कालर हैं परन्तु साहित्य की ओर ध्यान कम है। यदि यह काम हम नहीं करेंगे तो और कौन करेगा? यही बात समाजों से कहनी है। हजारों व्यय करके शानदार जल्सों के समारोह होते हैं—पर साहित्य की एक पुस्तक भी तो नहीं निकलती—इसके साधन अगले सप्ताह के लेख में पढ़ें।

—त्रिलोकचन्द्र

एक युग पुरुष की स्मृति

भारत की यह स्वतन्त्रता आदर है किसके कारण?
किसने उठाया बुद्धि से रूढ़ी का कठोर आवरण?
किसने भगवान को पत्थर बनाने से बचाया है?
किसने हमें पशु से मानव, अन्धों से दृश्य बनाया है?
किसने ललकारी दासवृत्ति, सुप्त लोगों को उठाया?
किसने मोहतम में प्रकाश, निर्बल में बल जगाया?
किसके कारण प्रेरित और आज हम जीवित हैं?
किस के हेतु न मान सुसंस्कृति का हुआ कवलित है?
कोई नहीं वह युग पुरुष अमर दयानन्द था।
बना मानवता की सेवा जिसका जीवनानन्द था।
पाखण्डों का खण्डन कर किया रूढ़ियों से युद्ध,
निःस्वार्थ लड़ा, विषपान करता रहा, वह वीर प्रबुध।
होनहार बिरवान के हैं होत चिकने पात,
तभी जूटा प्रसाद देख सत्य शैव को जागा प्रभात।
मानवता के हेतु सत्य शिव उसने खोजना चाहा था,
प्रभु-दूत ऋषि ने जग हित मन्त्र फूंकना चाहा था।
यूं एक शिव रात्रि को जागी दैवी प्रभात किरण थी।
मानवहीतल में उठी यही ज्ञान वृक्ष की पर्ण थी।
दानवता की रस्सियां प्रभु की सीमाएं तब टूटीं थीं,
व्यर्थ के आडम्बरों से तब पवित्र मानवता छुटी थी।
आज दयानन्द नहीं आया, ज्ञान रात्रि आई है,
उसकी दिव्य प्रभा औ' स्मृति सु किरण को लाई है।
करो प्रण इस शुभ दिवस पर करेंगे ऋषि अनुसरण,
देश रक्षा करेंगे, रूढ़ीसे हट दूर, हटा देंगे भयावरण।

—अरुण सरीन

आज भारतवर्ष अन्न की दृष्टि से अभाव का राष्ट्र हो गया है। जिस राष्ट्र में अन्न की कमी हो जाती है, भोजन मिलने की आशा क्षीण होने लगती है उस राष्ट्र का जीवन अस्त व्यस्त हो जाता है, उसका शरीर क्षीण होने लगता है और वह अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा भी कठिनाई से कर सकता है। संस्कृत में किसी कवि ने कहा है, 'बुभुक्षितः किं न करोति पापम्' भूखा मनुष्य क्या पाप नहीं कर सकता ? आज हमारे देश में अन्न की कमी को देखकर और इस मनोवैज्ञानिक सत्य को समझ कर अमेरिका अपने पक्ष में हमें लाने के लिये अन्न दान दे रहा है, हमारे मानसिक बल को गिराने के लिए ब्रिटेन सहायता करने को प्रस्तुत है, हमारे देश में ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिए पोप ने अपनी सहायता दी है और दूसरों से सहायता की अपील कर रहा है। इस तथ्य को प्राचीन भारतीयों ने समझा था और इसीलिए उपनिषदों में अन्न को प्राण माना है। 'अन्नं वै प्राणः' अन्न ही प्राण है क्योंकि अन्न से मनुष्य को शारीरिक बल प्राप्त होता है और शारीरिक बल से परमात्मा की प्राप्ति होती है। बलहीन मनुष्य न परमात्मा को प्राप्त कर सकता है, बलहीन मनुष्य न राष्ट्र की रक्षा कर सकता है, बलहीन मनुष्य अपनी स्वतन्त्रता और मान सम्मान को भी नहीं बचा सकता है। इसीलिए उपनिषद् में कहा गया है 'नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः' यह परमात्मा बलहीन मनुष्य से नहीं प्राप्त होता। 'शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्' शरीर ही धर्म का पहला साधन है। उपनिषदों ने शारीरिक शक्ति की अभिवृद्धि के लिए बल दिया है और इसके लिए 'अन्न को खूब उपजाओ' को दृष्टिकोण में रखकर 'अन्नं ब्रह्म' 'तस्मात् अन्नं बहु कुर्वीत' एव 'अहम् अन्नं अहम् अन्नम्' आदि कहा है।

अक्षैर्मा दिव्यः कृषिमित्कृषस्व

(जूआ मत खेलो, खेती करो)

(श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार एम० ए० एल० टी० डी० बी० कालेज, गोरखपुर)

❋❋❋❋❋❋❋❋

अन्न के प्रति हमारी पूज्य और आदरणीय भावना होनी चाहिए। अनाज का एक दाना भी हमें नष्ट नहीं करना चाहिए और न उसका अपमान ही करना चाहिए। अनाज का अपमान भगवान का अपमान है। भगवान को वेद में 'अन्नपति' भी कहा गया है और उनसे अन्न की याचना की गई है। इसलिए अन्न बोने वाले किसान को धैर्यशाली और दिव्य भावनामय माना गया है। खेती में धैर्य रखना अत्यन्त आवश्यक है। जब खेत में पड़े बीज के अंकुर निकलते हैं तब उनको बढ़ते देखकर किसान उन्हें अपने पुत्र की तरह प्यार करने लगता है। वह उन्हें देखता है, वह उनकी रक्षा करता है, उनकी वृद्धि उसको प्रसन्न करती है, उनकी क्षति उसको कष्ट देती है। रघुवंश में ऐसा वर्णन आया है कि पार्वती ने अपने सिर पर पानी के घड़े रख कर देवदार के वृक्षों को सींचा, बड़ा किया और बालकों की भांति उनका पालन-पोषण किया। जब कभी हाथी आदि आकर उनसे अपना शरीर रगड़ते थे और उनकी छाल निकाल डालते थे, तब वह दुःखी होती थीं। तब शंकर ने रखवाले रखे :—

अमुं पुरः पश्यसि देवदारुं
पुत्रीकृतोऽसौ वृषभध्वजेन।

अरे दिलीप ! यह जो सामने तू देवदारु पेड़ देख रहा है यह शंकर को प्यारा है, यह बात रघुवंश में शेर ने बड़े प्रेम से दिलीप से कही है। प्राचीन सनातन हिन्दू धर्म में अनाज के पौधों को ही नहीं वनस्पति, लता, घास तथा फल तरकारियों में भी मानवी भावना प्रदान की गई है। गर्मी में तुलसी के ऊपर अभिषेक पत्र से सतत धार डालकर उसे हम गर्मी का अनुभव नहीं करने देते। महात्मा गांधी के जीवन में एक घटना आती है कि एक बार मीरा बहन धुनकी की तांत में लगाने के लिए नीम के पेड़ की डाली रात के समय तोड़ लाईं। महात्मा जी ने पूछा 'इतनी सारी पत्तियों का क्या होगा ? पत्तियां तो मुट्ठी भर चाहिए थीं। देखो, ये पत्तियां कैसी सो गई हैं ? कैसी बन्द हो गई हैं। रात्रि के समय पत्तियां नहीं तोड़नी चाहिएं। लताओं के प्रति, फूल पौधों के प्रति हमें दिव्य मानवी भावना रखनी चाहिए और समझना चाहिए कि रात के समय ये भी सो जाते हैं।' अभिज्ञान शाकुन्तल में शकुन्तला का वर्णन करते हुए कण्व ऋषि कहते हैं—शकुन्तला वृक्षों को पानी पिलाये बिना पानी नहीं पीती है। उसे फूल और पत्तों का शौक था। फिर वह उन वृक्षों, लताओं एवं पौधों के पत्ते और फूल नहीं तोड़ती। उस प्रेममयी शकुन्तला के वियोग में आश्रम के पौधों ने, लता बेलियों ने, वृक्षों ने आंसू गिराए। रामायण में आया है कि रामचन्द्र जी को अयोध्या के पाषाण निर्मित प्रसादों की अपेक्षा वन के कुंज अधिक प्रिय थे। उन्हें रामायण में वन कानन प्रिय ! शब्द से सम्बोधित किया गया है। वृक्ष और बेलें उन्हें सगे सम्बन्धियों जैसी लगती थीं। सीता ने अपनी पर्णकुटी के आसपास फूल तरकारियों और सब्जियों के पौधे लगाए। (क्रमशः)

केन्द्रीय आर्य सभा अमृतसर

श्री माननीय महोदय !

सादर नमस्ते। पिछले दिनों अमृतसर में स्त्रियों के दङ्गल के सम्बन्ध में पोस्टर लगे हुये देखे गये थे जिन में दो स्त्रियों के अर्धनग्न (जांघ उघड़ा) चित्र देकर लोगों में उनका दङ्गल देखने की लालसा उत्पन्न करने का दुस्साहस किया गया था। जनता ने इस नयी बीमारी को बहुत बुरी दृष्टि से देखा और केन्द्रीय आर्य सभा की ओर से इस के विरुद्ध एक पब्लिक जलसा में प्रस्ताव भी पास किया जिस में इस निर्लज्जता तथा जनता के आचार पर बुरा प्रभाव डालने वाले कुकर्म को बन्द करने के लिये डी. सी. साहिब से प्रार्थना की गई।

अब ज्ञात हुआ है कि दङ्गल के प्रबन्धकों ने इस दंगल की आमदनी का कुछ भाग अन्ध विद्यालय पिंगलवाड़ा आदि संस्थाओं को देने और कुछ सरकार के डिफैंस फण्ड में देने का ढोंग रच कर डी. सी. साहिब से स्वीकृति प्राप्त कर ली है और थोड़े ही दिनों के पश्चात् अन्ध-विद्यालय के मैदान में यह दङ्गल दिखाने का प्रबन्ध हो रहा है। पहले ही जनता, विशेषतः नौजवानों के आचार को विनष्ट करने वाले कितने साधन विद्यमान हैं। इन पर यह एक नई बीमारी कितनी भयानक सिद्ध होगी इसका अनुमान लगाना कठिन नहीं है।

अतः आप की सेवा में सविनय निवेदन है कि जनता की आवाज को दृष्टि में रखते हुये इस भ्रष्टाचार की आग को हवा देने वाले कुकर्म के विरुद्ध पग उठा कर समय से पूर्व ही इस गम्भीर रोग को रोक दिया जाय।

[illegible] शर्मा
उपप्रधान केन्द्रीय आर्य सभा,
अमृतसर

महर्षि दयानन्द और शिवरात्रि का प्रभाव

(प्रोफैसर एम० आर० शर्मा एम० ए० R.G. कालिज फगवाड़ा)

****

बात सन् १८३८ ई० की है। जब शिवरात्रि की पुण्य तिथि पर शिवालय में शैव मत के सभी पुजारी पूजा करने इकट्ठे हुए थे। क्या मालूम था कि उस जनसमूह में से ही एक चौदह वर्ष का बालक शिवरात्रि की महत्ता को और भी चार चांद लगा देगा। लेकिन किसी और ढंग से भारतीय त्योहारों का अन्धाधुन्ध अनुकरण करके नहीं अपितु इन त्योहारों की पृष्ठभूमि और महत्व को पूरी तरह समझ कर।

यदि हम क्षण भर के लिए मनोवैज्ञानिक का रूप धारण करके एक चौदह वर्षीय बालक का मनोविश्लेषण करें तो स्पष्ट हो जाएगा कि उसके मन पर प्रत्यक्ष रखी हुई वस्तु का साधारण प्रभाव सत्यथा हो गया। इस नियम से मैं जिस बात पर पहुँचना चाहता हूँ वह है बालक मूलशंकर के मन पर शिवरात्रि की घटित घटना का प्रभाव।

"शिव की मूर्ति तक आते हुए चूहे को उसने देखा और मूर्ति के समक्ष रखे हुए प्रसाद को चूहे द्वारा खाते देखा तथा उसके प्रति बालक की श्रद्धा न रही।" जो लोग इन शब्दों का अभिप्राय यह लेते हैं कि मूलशङ्कर की शिव के प्रति आस्था न रही—वे शायद कुछ भूल करते हैं। वहां तो केवल शिव की मूर्ति थी—वह पत्थर की थी—त्रिशूलधारी चन्द्र शेखर शिव साक्षात् नहीं थे। तदुपरांत जो लोग प्रतिवाद के रूप में यह कहते हैं कि वह एक साधारण बालक नहीं था, उसे शिव, उसकी शक्ति और कार्य सभी ज्ञात थे और उसे बतलाया गया था कि पापात्माओं का संहार करने वाले और सद्-जनों को मुक्ति-प्रदान करने वाले शिव हैं न्यू अतः है को दूर भगाने का सामर्थ्य न देख कर बालक मूलशङ्कर का मन आस्थाहीन हो गया। किस के प्रति ? यह प्रश्न अति गहन है। प्रत्येक व्यक्ति के विचार अलग-अलग होते हैं। जो लोग उत्तर देते हैं कि शिव के प्रति श्रद्धा न रही—मैं उन से कतई सहमत नहीं हूं।

मेरे विचार में बालक की श्रद्धा भगवान शिव के प्रति कम नहीं हुई बल्कि उसमें और भी वृद्धि हुई। श्रद्धा कम हुई तो केवल उस जन-समूह के प्रति जो उस रात शिव-मन्दिर में इकट्ठा हुआ था। वह इसलिए कि जो ढोंगी कठिन व्रत रखकर भी उसका पालन नहीं कर सके, वे उसका आरम्भ ही न करते। शिव-मन्दिर में जाकर जागरण करने के स्थान पर सो जाना और फिर प्रातःकाल अन्य लोगों में शौक का ढिंढोरा केवल इसलिए पीटना कि उन्हें प्रशंसा मिले —ये थे वे कारण जिन्होंने उन के मन में उन लोगों के प्रति दया भाव भरा और शिव के प्रति और भी अधिक श्रद्धा का।

वह इसलिए कि बालक मूल-शंकर को शिव की शक्ति का पूर्ण परिचय दे दिया गया था, देवताओं में उनका क्या स्थान है—इस बात का ज्ञान भी उन्हें करवा दिया गया था। इन सब बातों का ज्ञान होने पर भी जब बालक ने शिव की मूर्ति पर चूहे को कूदते देखा तो सम्भव है—सम्भव ही नहीं सत्य है कि बालक ने सोचा —"इतने शक्तिशाली होने पर भी शिव कितने सहनशील हैं जो चूहे मात्र को भी स्वेच्छा उछलने - कूदने का अवसर देते हैं। धन्य है उनकी सहनशीलता और भोलापन—तभी लोग उन्हें भोले शंकर कहते हैं।"

वही वह घटना थी जिसने दयानन्द सरस्वती के समस्त जीवन को बदलकर रख दिया। सहन-शीलता का प्रथम पाठ उन्होंने यहां से ही सीखा और तभी बाद के जीवन में इतने दुःख और घातक मुसीबतें बिना 'हाय' तक कहे झेल लीं। यहां तक कि विष देने वालों को भी क्षमा दान दिया और उन्हें अपने पास से धन देकर जल्दी भाग जाने के लिए कहा ताकि चूहे के समान तुच्छ वे पापी भी स्वेच्छा से इस विश्व-मन्दिर में उछल कूद लें, चाहे वह स्थान दयानन्द का कल्याणकारी शरीर भी क्यों न हो। चौदह वर्ष की छोटी-सी अवस्था में शिवरात्रि में घटित इस घटना का कितना गहरा प्रभाव पड़ा उनके जीवन पर कि वह अन्तिम सांस तक उसको कार्यान्वित करते रहे।

महान आत्माएं जीवन में सीखे हुए पाठ को कभी नहीं भूलतीं अपितु उसे सीखकर आयु पर्यन्त उस पर आचरण करती हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन-सहन शीलता की प्रतिमा था—पग-पग पर कष्ट सह कर भी उन्होंने जान - बूझकर कभी को कष्ट देने का कभी प्रयास नहीं किया—लोगों द्वारा किए गए पत्थराव को सहन किया, लाठियों की मार सहन की। जगन्नाथ रसोइये का उद्धार करने के लिए मरते-मरते भी उस पापात्मा का बचाव कर गए और सदा के लिए उस पापी की आंखें खोल गए।

महर्षि के सद्-जीवन से यदि शिक्षा ग्रहण की जा सकती है तो वह है सहन-शीलता का सुन-हरी पाठ।

वार्षिक मेला

निःशुल्क शिक्षणालय आश्रम गुरुकुल वैदिक, आश्रम, वेदव्यास राउर केला (उड़ीसा) तृतीय वार्षिक महोत्सव १८ फरवरी १९६६ तक निर्विघ्न समाप्त हुआ। ५ नवीन बालक गुरुकुल में प्रविष्ट हुए। १८ वनवासी आदमियों को वैदिक धर्म में पुनः प्रविष्ट किया गया। गुरुकुल वैदिक आश्रम में प्रविष्ट ब्रह्मचारियों को निम्न प्रकार से छात्र वृत्ति का वचन मिला। १. श्रीमती यशवन्तकौर गंभीर, २. श्रीमती सुनीति आर्या, ३. श्रीमती शांतिदेवी सैनी, ४. श्रीयुत मोहनलाल अग्रवाल, ५. श्रीमती कमला चांद (जमशेदपुर), ६. श्रीमती यमुनादेवी शरदाना ने एक एक ब्रह्मचारी को मासिक व्यय वहन करने का वचन दिया।

उत्सव में भाग लेने के लिए आये हुए निम्न महानुभावों ने सहायता दी। १. श्रीमती लक्ष्मी-देवी आर्या (कलकत्ता) २०१), २. श्रीमती शांतिदेवी सैनी (कल०) १०१) ३. श्रीमती यशवन्तकौर गम्भीर (कल०) १०१) ४. श्रीयुत हरिश्चन्द्र जी वर्मा (कल०) १०१) श्रीयुत रामकुमार वर्मा (जमशे०) १०१)श्रीमती पार्वती देवी खुराना (राज गांगपुर) १०१) श्रीमती निर्मलादेवी गुप्ता (कल०) ७५) श्रीमती वीरावती बलिसचदेव(कल०) ५१) श्रीमती सांचीदेवी खेड़ा (कल०) ५१) श्रीमती सुशीलदेवी आर्या (कल०) ३१) श्रीमती करतार-देवी (कल०) २५) श्रीमती विद्या-वती शावरवाल (कल०) २५) श्रीमती कमला चन्द देवी (जमशेदपुर) ३१) दान दिये।

इस के अतिरिक्त राजगांगपुर राउर केला आदि स्थानों से उत्सव पर पंधारे हुए नर-नारियों ने भी यथाशक्ति दान देकर संस्था की सहायता की। उत्सव पर पधारे संन्यासी महात्मा और विद्वानों का व्याख्यान तथा भजन गुरुकुल भूमि तथा वेदव्यास मेला भूमि में होते रहे। आश्रम के पास वेद-व्यास चौक सुगई गांव में सांस्कृतिक भवन का शिलान्यास श्री हरिश्चन्द्र जी वर्मा प्रधान आर्यसमाज कलकत्ता के करकमल से हुआ।

—स्वामी ब्रह्मानन्दजी अध्यक्ष आश्रम

स्वामी सत्यानन्द जी का दिल्ली जाते हुए हर जगह हार्दिक स्वागत होगा

प्रादेशिक सभा की सूचना

जालन्धर — आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान ला० इन्द्रसेनजी ने एक बयान में कहा कि सन्त फतेहसिंह की राष्ट्रीय हित के विरुद्ध पंजाबी सूबा की साम्प्रदायिक मांग और मा० तारासिंह की सिख राज्य के लिए धमकी तथा सरकार की ढिलमिल व अनिश्चित नीति के दृष्टिगत पंजाब के सभी देश-हितैषियों के लिए आर्य समाज के प्रसिद्ध सन्यासी स्वा० सत्यानन्द जी ने १५ मार्च से आर्य समाज दीवान हाल में मरणव्रत रखने का निश्चय किया। आजकल अस्वस्थ होते हुए भी उन्होंने इतनी बड़ी कुर्बानी देने का फैसला किया है। उनका यह दृढ़ निश्चय था कि दिल्ली में मरणव्रत रखने से पहले वह पंजाब के सभी बड़े-बड़े नगरों में जाएं और जनता को अपनी कुर्बानी देने के कारण बताएं किंतु अस्वस्थ होने के कारण वह ऐसा करने में असमर्थ हैं इस लिए अब वह अपने आश्रम यमुना नगर से सीधे जालन्धर पधार रहे हैं जहां १२ मार्च को जालंधर की सभी संस्थाओं की ओर से एक विराट सार्वजनिक सभा में उनका स्वागत किया जाएगा और १३ मार्च को प्रातः ५ बजे की गाड़ी से वह सीधे दिल्ली के लिए चल पड़ेंगे। ऐसे अवसर पर इतनी बड़ी कुर्बानी देने वाले एक संन्यासी का स्वागत करना हर आर्यसमाजी, सनातन धर्मी, जैनी, सिख हरिजन तथा समस्त देश प्रेमियों (जो पंजाबी सूबा के विरुद्ध हैं) का यह कर्तव्य है कि वह अपने-अपने नगरों व कस्बों के रेलवे स्टेशनों पर जब पूज्य स्वामी जी की गाड़ी १३ मार्च को गुजरे तो उनका भव्य स्वागत करें और बड़े शांतिपूर्ण ढंग से स्वागत करते हुए सरकार को बता दें कि वह पंजाबी सूबा की स्थापना के सर्वथा विरुद्ध हैं। पूज्य स्वामी जी १३ मार्च को जालन्धर से सुबह ५ बजे ३३८ डाऊन पैसंजर ट्रेन द्वारा दिल्ली के लिए रवाना होंगे। यह गाड़ी लगभग ६.३० बजे शाम दिल्ली पहुंचेगी।

राष्ट्रीय चेतना के अग्रदूत

महर्षि दयानन्द

लेखक : वेदपथिक श्री पं० धर्मवीर आर्य झंडाधारी, व्याख्यान भूषण नई दिल्ली—५

****

(गतांक से आगे)

गौरक्षा आन्दोलन का सूत्रपात महर्षि दयानन्द जी ने ही किया था।

छूआ-छूत के भयंकर भूत को हिन्दू जाति से महर्षि दयानन्द जी ने बचाया था।

वेद विरोधियों से शास्त्रार्थों की धूम मचाकर वेदों का प्रबल प्रचार महर्षि दयानन्द जी ने किया था। भारत की जनता वेद पथ को भूल कर रौरव दुःखों में भटक रही थी।

विधवा अनाथों की करुण अवस्था को देखकर फूट-फूट कर आंसु बहाया था अनेक आश्रम आर्यसमाज की ओर से चल रहे हैं जिसमें हजारों निराश्रित बालकों और बालिकाओं को भोजन, वस्त्र और शिक्षा का सारा प्रबन्ध आर्यसमाज कर रहा है। महर्षि दयानन्द के गुणों का गान किन शब्दों में गाया जाये।

नारी जाति की शिक्षा व उन्नति का सबसे बड़ा श्रेय महर्षि दयानन्द जी को है। आज भारत की प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्द्रा गांधी है। इसका सारा श्रेय महर्षि दयानन्द जी को है। आज एक-दो नहीं हजारों कन्या विद्यालय, देश-विदेशों में आर्यसमाज की ओर से चल रहे हैं और लाखों विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करके भारतीय जीवन की विचार धारा को अपना कर वैदिक संस्कृति की रक्षा में अग्रसर हो रहे हैं

महर्षि दयानन्द और यज्ञ

महर्षि दयानन्द के पूर्व यज्ञ के नाम पर बड़े-बड़े पाप और अनर्थ हो रहे थे। यज्ञ के नाम पर पशु और कहीं नरमेध यज्ञ चल रहे थे। पाखंड अविद्या अंधकार में लोग भटक रहे थे। वैदिक कर्मकाण्डों का प्रचार पंच महायज्ञों का प्रबल प्रचार महर्षि दयानन्द ने किया। आज लाखों नर-नारी प्रतिदिन संध्या और यज्ञ कर रहे हैं। अपना जीवन यज्ञमय बनाकर आत्म उन्नति की दिव्य दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। इस का सारा श्रेय महर्षि दयानन्द को है।

बाल विवाह और महर्षि दयानन्द

बाल विवाह की प्रथा ऐसी चल पड़ी थी कि दुध मुंहे बच्चों की शादियां धूंवाधार हो रही थीं। इस कलंक में हजारों विधवायें नित्य विधर्मियों के जाल में आकर देश के लिये अभिशाप हो रही थीं। विधवाओं के करुण क्रन्दन को सुनकर बाल विवाह की प्रथा का प्रबल विरोध महर्षि दयानन्द जी ने किया था।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली और महर्षि दयानन्द

गुरुकुल प्रणाली का लोप हो चुका था वेद विद्या और संस्कृत के प्रचार के लिये जो कार्य महर्षि दयानन्द जी ने किया था उसे आज सारा संसार जानता है। संस्कृत विश्व की समस्त भाषाओं की जननी है इस के लिये महर्षि दयानन्द जी ने जो कार्य किया है वह स्वर्ण-अक्षरों में अंकित करने योग्य है।

आज आर्य समाज की ओर से अनेकों गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, संस्कृत विद्यालय देश और विदेशों में चल रहे है। यह सब उस देव दयानन्द जी की दया का ही प्रतिफल है।

आर्य समाज ने देश के जागरण में जो कार्य किया है वह उल्लेख किन शब्दों में किया जाये। सभी दिशाओं में आर्य समाज ने आगे बढ़कर जो कार्य किया है उस का साक्षी भारत का स्वर्ण इतिहास है।

महर्षि दयानन्द और वेद प्रचार

वेद प्रचार का जो कार्य देश और विदेशों में आज हो रहा है। उस कार्य को करने के लिए आज आर्य समाज के हजारों विद्वान उपदेशक, संन्यासी प्रचारक कार्य कर रहे हैं। मेक्स मूलर ने स्वामी जी के वेद भाष्य की प्रबल शब्दों में सराहना की है। इस कार्य पर करोड़ों रुपए वार्षिक खर्च हो रहे हैं यह सब उस एक योगी का महा तप और त्याग है, जिसका नाम मूलशंकर था।

महर्षि दयानन्द और वैदिक : साहित्य का निर्माण

महर्षि दयानन्द जी ने मानव को देव बनाने के लिए धर्म अर्थ, काम तथा मोक्ष सुख की सिद्धि जैसे अमृतमय ग्रन्थ को लिखकर तथा सत्यार्थ प्रकाश जैसे पावन ग्रन्थ को लिखकर जो देश को भ्रम जाल से बचाया है उसका ऋणी सारा संसार है। विश्व का मानव समाज महर्षि दयानन्द का अत्यन्त कृतज्ञ है।

(क्रमशः)

साहित्य एक ओर मनुष्य को पलायन और भय से बचने को प्रेरित करता है तो दूसरी ओर युद्धोन्माद और युद्ध लिप्सा के नरक में पड़ने से बचाता है। युद्ध के प्रति साहित्यकार के दृष्टिकोण पर श्री विष्णु प्रभाकर के विचार, आज जब हम युद्ध की स्थिति से गुजर चुके हैं, पाठकों को कुछ सोचने की प्रेरणा देंगे। यह विचार उन्होंने आकाशवाणी, दिल्ली से प्रस्तुत किए थे।

आकाशवाणी के सौजन्य से

युद्ध और उसके बाद

(विष्णु प्रभाकर)



युद्धकाल में साहित्यकार का कर्त्तव्य क्या है? यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका उत्तर सहसा हां या न में नहीं दिया जा सकता। साहित्यकार सबसे पहले मनुष्य है अर्थात नागरिक है। नागरिक के नाते वह कुछ सुविधाओं का अधिकारी है और इसीलिए उस पर उत्तरदायित्व भी आता है। युद्धकाल में उसके भी कुछ कर्त्तव्य हो सकते हैं। वे कर्त्तव्य आवश्यक नहीं कि उसे साहित्यकार के नाते कुछ करने को विवश करें। नागरिक के नाते वह उन सभी कार्यों में भाग ले सकता है जो युद्धकाल में आवश्यक हो जाते हैं। उदाहरण के लिए वह खाइयां खोद सकता है, ब्लैक-आउट में पहरा दे सकता है। यदि स्वस्थ है तो स्वयं सेना में जाकर लड़ सकता है। यानी संकटकाल के जितने भी काम हो सकते हैं वे सब वह एक नागरिक के रूप में करने का अधिकारी है। लेकिन उसके लिए यह आवश्यक नहीं कि वह साहित्यिक के रूप में ही यह सब कुछ करे।

प्रश्न उठ सकता है कि साहित्यकार और नागरिक, ये क्या दो व्यक्ति हैं? जब वह नागरिक के रूप में युद्ध में भाग लेता है तो उसका साहित्यकार अछूता कैसे रहेगा। प्रश्न असंगत नहीं है। फिर भी यह सही है कि साहित्यकार के रूप में उस व्यक्ति का दायित्व नागरिक के दायित्व से कुछ अधिक है। आदि काल से युद्ध होते आए हैं, शायद होते भी रहेंगे। किसी को बुरा लग सकता है, लेकिन जब तक प्रभुसत्ता, राष्ट्रीयता, देशभक्ति और मेरा धर्म ये शब्द हमारे लिए पवित्र हैं तब तक युद्ध से मुक्ति नहीं है। लेकिन इसके साथ ही यह भी सत्य है कि अनादिकाल से ही विश्व के चिन्तकों का एक वर्ग युद्ध का विरोधी रहा है। उन्होंने सदा युद्धविहीन एक विश्व की कल्पना की है। दक्षिणपन्थी और वामपन्थी और मध्यमवर्गीय सभी ने। क्यों की है? क्योंकि उन्होंने समझ लिया था कि युद्ध में जो निन्दनीय वस्तु है वह है हानि पहुंचाने की इच्छा, अदम्यघृणा, प्रतिशोध की उग्रता और प्रभुता जमाने की भावना। युद्ध में सहज विनाश का भय तो है ही, चेतना में जो श्रेष्ठ है उसके विनाश का भी भय है। चेतना खोकर जीने का मूल्य क्या रह जाता है? युद्ध की प्रतिक्रियाओं के फलस्वरूप जो विचार पश्चिम के साहित्यकारों द्वारा प्रतिबिम्बित या अंकित हुए उनका परिचय इस कविता से मिल सकता है.--

युद्ध और युद्ध के बाद,
दोनों दल थककर,
स्वीकार करते हैं शांति,
किन्तु क्या मिलती है मुझे,
तुम्हें जनता को
नये-नये टैक्स, हर घर विधवाएं,
कटे हुए पांवों की वैशाली,
और कर्ज गले पर नाखून सरीखा।

'महाभारत' युद्ध का ग्रंथ माना जाता है। लेकिन हम नहीं जानते कि युद्ध के विरोध में उससे अधिक शक्तिशाली ग्रंथ कभी लिखा गया हो। वह युद्ध की व्यर्थता की गीता है। हमारा इतिहास साक्षी है कि हर युद्ध के बाद धर्म का एक चरण टूट गया है। द्वापर के अन्त में महाभारत के युद्ध के बाद केवल एक ही चरण शेष रह जाता है। वही तो कलियुग है। और कलियुग को कौन अच्छा मानता है। युद्धों को भी कौन अच्छा मानता है। साहित्यकार तो कभी भी नहीं मान सकता। यह तो क्षणिक और शाश्वत के अन्तर को मानने वाला है। क्षणिक पर जीने वाले राजनीतिज्ञ के निर्णय को वह आंख मूंद कर स्वीकार नहीं कर सकता। उसके निर्णय पर साहित्यकार को शंका करने का अधिकार है और होना चाहिए। यदि उसे वह अधिकार नहीं मिलता है तो उसकी वही अवस्था होगी जो पाकिस्तान में साहित्यकारों की हुई।

जब युद्ध अनिवार्य हो जाए

लेकिन समस्या इतनी आसान नहीं है कि यह कहकर हम मुंह छिपा लें। क्या इस देश का और सारे विश्व का इतिहास ऐसे दृष्टांतों से नहीं भरा पड़ा है कि विनाशकारी परिणामों और सम्भावनाओं के बावजूद युद्ध कभी अनिवार्य हो जाता है। उस क्षण युद्ध से मुक्ति की बात कहना विश्व पलायन है। जब हम साहित्यकार के शंका करने के अधिकार की बात को मानते हैं तब हम उसे पलायन करने की आज्ञा नहीं देते। क्या कृष्ण ने महाभारत के युद्ध को रोकने की कोशिश की थी? केवल पांच गांव मांगने के लिए वह स्वयं दूत बनकर कौरवों की सभा में गए थे। सीता को वापिस लाने के लिए क्या राम ने बार बार अपमान सहकर भी रावण की सभा में दूत नहीं भेजे थे। पिछले ही विश्वयुद्ध में जिस व्यक्ति की सब से अधिक आलोचना की गई उस चैम्बरलेन ने इस विनाशकारी युद्ध को रोकने के लिए क्या नहीं किया था। वह आत्मसमर्पण की सीमा तक पहुँच गया था, लेकिन फिर भी आक्रांता का दुराग्रह अडिग रहा और विश्वयुद्ध के विजयी योद्धा चर्चिल का प्रादुर्भाव हुआ। रूस भी तो विवश होकर ही उसमें आया था। आज ये सब देश युद्ध की विभीषिका से पूरी तरह परिचित हैं, इसलिये उन के प्रयत्न युद्ध रोकने के लिए ही हैं। भारत तो सदा शान्तिप्रिय रहा है। युद्ध से बचने का उसने सदा प्रयत्न किया है। लेकिन युद्ध से बचने का अर्थ नपुंसकता स्वीकार करना नहीं है। कायर होना नहीं है। उचित उद्देश्य के लिए उचित युद्ध भी धर्म हो जाता है। कम से कम तब तक के लिए वह निश्चय ही धर्म है जब तक हम प्रभुसत्ता, राष्ट्रीयता और देशभक्ति से मुक्ति पाकर, अखण्ड मानवता को स्वीकार नहीं कर लेते। किसी एक देश स्वीकार करने से काम नहीं चल सकता। सम्पूर्ण विश्व को ही इसे स्वीकार करना होगा। एक भी देश उससे अलग रहता है तो युद्ध से मुक्ति नहीं है। तब हमें गांधी जी के शब्दों में कायरता के स्थान पर हिंसा को स्वीकार करना होगा। उन्होंने कहा था : मैं चाहता हूं कि भारत कायरतापूर्ण ढङ्ग से बेइज्जती का असहाय शिकार बने या बना रहे, इससे अच्छा यह है कि वह अपनी जान की रक्षा के लिए शस्त्र बल का प्रयोग करे। मैं नहीं कहता कि भारत पर आक्रमण करने वाले राष्ट्रों के साथ हिंसा मत करो। बुद्ध ने भी कहा था, 'जो दण्ड का पात्र है उसे दण्ड दिया ही जाना चाहिए। तथागत की शिक्षा यह नहीं है कि जो लोग शांति बनाए रखने का कोई उपाय शेष न रहने पर, धर्म के लिए युद्ध करते हैं, वे दोषी हैं।' (क्रमशः)

दयानन्द ब्राह्म महा-विद्यालय हिसार के समाचार

यह विद्यालय वैदिक धर्म के प्रचारार्थ दयानन्द कालिज प्रबन्धकर्त्री सभा चित्रगुप्त मार्ग नई दिल्ली की देख-रेख में दस वर्ष से चल रहा है। यह विद्यालय देश बटवारे से पहले लाहौर में ८१ ... जिससे ... उपदेशक शिक्षा ... वर्ष के भिन्न-भिन्न प्रान्तों ... वैदिक धर्म का प्रचार कार्य बड़ी योग्यता तथा सफलता के साथ कर रहे हैं। केरल में दो हजार ईसाई शुद्ध किए हैं। इस विद्यालय में तीस विद्यार्थी हैं जिनको दर्शन, व्याकरण, संस्कृत, साहित्य तथा तुलनात्मक वैदिक सिद्धान्त पढ़ाने के लिए तीन अध्यापक हैं।

विद्यार्थी भिन्न-भिन्न प्रान्तवासी हैं। यथा आन्ध्र प्रदेश, केरल, मद्रास, मैसूर, महाराष्ट्र, उड़ीसा उत्तर प्रदेश, बंगाल, बिहार तथा पंजाब।

विद्यार्थियों का सकल व्यय भार विद्यालय पर है जो लगभग चार हजार रु० मासिक है।

जिसको दानी महानुभाव ही पूरा करते हैं। और जिसके संग्रह का भार अकेले पूज्य श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी एम. ए. आचार्य ही के ऊपर है।

विद्यालय का प्रवेश वर्ष जुलाई मास से प्रारम्भ होता है। अप्रैल मास में वार्षिक परीक्षा होगी।

दानी महानुभावों को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए।

—मुरारीलाल शास्त्री
उपाचार्य विद्यालय

आर्यजगत रोहतक के समाचार

१२ फरवरी १९६६(१ फाल्गुन) को आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक के तत्वावधान में सम्मिलित रूप में ऋषि बोधोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। दोपहर को नगर कीर्तन किया गया तथा रात्रि को आर्यसमाज भज्जर रोड के पंडाल में सार्वदेशिक आर्यवीर दल के सेनापति श्री ओ३म प्रकाश जी त्यागी का क्रांतिकारी भाषण हुआ। १८ फरवरी को सब समाजों में यह पर्व धूमधाम से मनाया गया तथा ...त्री को ... की गई।

रोहतक से १०।। मील पटवापुर ग्राम में दूसरी कक्षा में पढ़ने वाली अनपढ़ ग्रामीण माता पिता की पुत्री चंचल कुमारी अपने दो जन्मों का ... बताती है। पहला लाहौर (... रा) के मुसलमान के यहां ... दूसरा पानीपत के ... पाल कृषक के यहां ... ग मास्टर के रूप ... २४ वर्ष की आयु में पेट दर्द के कारण मौत होना बताती है। अपने पूर्व जन्म के भाई का नाम ओमिन्द्रराम तथा बहिनों का नाम कैलाश व दर्शना बताती है। एक भाई व बहिन लुधियाना के आहूजा परिवार में तथा दूसरी बहिन दिल्ली के चावला परिवार में विवाहित हैं। प्यारेलाल नागपाल पानीपत से कहीं और चला गया है। यदि किसी सज्जन को उपरोक्त परिवार का कुछ अता-पता मालूम हो तो कृपया हमें सूचित करने का कष्ट करें।

आर्यसमाज प्रताप मोहल्ला की यह सभा भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के वीर सेनानी अमरवीर श्रीयुत विनायक दामोदर सावरकर के अकाल निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है तथा उस महान वीर के वीरोचित कृत्यों की सराहना करती है।

परमानन्द 'विद्यार्थी'
प्रताप मोहल्ला, रोहतक

आर्य समाज खंडवा पूर्व निमाड़ (म. प्र.)

वार्षिक निर्वाचन

प्रधान—श्री बी.एस. भंडारी साहिब उपप्रधान—श्री रामकृष्ण जी पालीवाल, श्री रामचन्द्र जी आर्य। मन्त्री—श्री डा० अक्षय कुमार जी वर्मा। उपमन्त्री—श्री कृपाराम जी आर्य। प्रचारमन्त्री—श्री कैलाश चन्द्र जी पालीवाल कोषाध्यक्ष—श्री पं० हरिश्चन्द्र जी तिवारी पुस्तकाध्यक्ष—श्री रमेश चन्द्र जी शर्मा निरीक्षक — श्री अनन्त रायकर और ७ अन्तरंग सदस्य निर्वाचित हुए।

—मन्त्री समाज

दलितोद्धार समिति का निर्माण

श्री रामचन्द्र जी आर्य ने दलितोद्धार समिति निर्माण और उसके लिए सिंगाडुतलाई मकान के किराये की आय दी जावे। एक धर्मार्थ औषधालय भी खोलने का सुझाव दिया गया।

चुनाव समिति इस प्रकार बनाई गई :—

श्री पं, हरिश्चन्द्र जी तिवारी। श्री सेठ कन्हैयालालजी खन्डेवाल, श्री रामचन्द्र जी आर्य, श्री पूनमचन्द जी आर्य, श्री बालाराम जी आर्य।

ऋषि-बोध दिवस शिवरात्री

आर्यसमाज खंडवा पूर्व निमाड़ में दि० १८-२-६६ को श्री रामकृष्ण जी पालीवाल उप-प्रधान आर्य-समाज की अध्यक्षता में दयानन्द बोध-दिवस एवं शिवरात्री पर्व मनाया गया। शान्ति पाठ के बाद कार्य-क्रम समाप्त हुआ।

—कैलाशचन्द्र पालीवाल मन्त्री
आर्यसमाज, खन्डवा

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टलीफोन नं० १०४७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P.

एक प्रति का मूल्य १२ नये पैसे — वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अक १) ७ चैत्र २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१—२० मार्च १९६६ (तार 'प्रादेशिक' जालन्

वेद सूक्तय:

अयं लोक: प्रियतम:

अर्थ-यह लोक-ससार अथवा शरीर तो प्रियतम बडा ही प्यारा है। यह जगत् मिथ्या और झूठा नहीं है। स्वप्न या कड़वा नहीं वरन मीठा तथा प्यारा है। यह जीवन भी बड़ा मधुर एवं प्यारा है। इसे बेकार नहीं समझना चाहिए।

मा पुरा जरसो मृथा:

जरस-बुढ़ापे से पुरा-पूर्व मा मृथा-मत मर। हे मानव! इस मानव जीवन जैसे मीठे प्रसाद को प्राप्त करके बुढ़ापा से पहले न मर। पूरी आयु भोग कर जाना चाहिए। प्रयत्न किया जाये कि लम्बी से लम्बी आयु हम भोग सकें।

निरवोचं शतं रोपी:

आत्मविश्वास के भरोसे पर मैं शत-सैंकड़ों रोपी-पीड़ाओं को, बाधाओं व दु खों को निरवोचम्-दूर कर देता हू। मैं इन से घबराने वाला नहीं हू। ये आती हैं पर मेरे मार्ग को रोक नहीं सकतीं।

मा ते प्राण उपदसन्

हे मानव! ते-तेरा प्राण-जीवन प्राण मा-मत उपदसन्-विनाश को प्राप्त हो। तेरी प्राण शक्ति कमजोर न बने। आत्मा में दुर्बलता न आने पाये। प्राण शक्ति से सदा भरपूर रह।

अ थ र्व वे द से

वे दा मृ त

राजा व शासक कैसा हो

स्वस्तिदा विशांपतिर्वृत्रहा विमृधो वशी।
वृषेन्द्रः पुर एतु नः सोमपा अभयंकरः॥

अथर्व वेद काड प्रथम सूक्त २१ मन्त्र १

अर्थ—राजा या शासक (स्वस्तिदा) कल्याण का देने वाला (विशापति) प्रजाओ का पालल, रक्षक स्वामी (वृत्रहा) वृत्रो-शत्रुओ का नाशक (विमृधः) दुश्मनो को कुचल देने वाला तथा (वशी) अपने पर व सब पर वश करने वाला हो। शासक (वृषा) सुख की वर्षा करने वाला (इन्द्र) इन्द्र राजा (पुर) हर स्थान व बात मे आगे (एतु) चले (न) हमारे (सोमपा) प्रभु भक्ति का सोमपान करने वाला (अभयकर) सबको अभय कर देने वाला होवे।

भावार्थ—राज्य के शासन के ऊंचे आसन पर हर एक को नही बैठना या बिठाना चाहिए। प्रत्येक कार्य के लिए उस कार्य के ज्ञाता की आवश्यकता होती है, तभी काम चलता है। राज्य का काम तो बहुत बडा कार्य है। उसे सम्भालने वाले शासक मे विशेष गुण तो होने चाहिए। वेद में राजा, शासक या राज्य को सम्भालने वाले के मत्र मे नौ गुण बताये गये हैं। शासक सबका कल्याण करे, सबकी रक्षा करे, शत्रु का दमन करे, राष्ट्रघातियो को कुचल दे, आत्म-विजयी हो, प्रभु भक्त हो, वीर बन कर राज्य को निर्भय बना दे, सुखदायक हो, लोभी न हो। ऐसा राजा ही शासक बन कर राष्ट्र को चला सकता है।

—सम्पादक

ऋषि दर्शन

सत्य न्याय प्रकाशकान्

जिनके जीवन में सत्य है, जिनको सदा सत्य से प्यार है, जो अपने जीवन के आचार-विचार के प्रकाश से प्रकाशित होकर दूसरों को चमकाने वाले हैं। सत्य प्रेमी, न्याय प्रिय होते हैं। प्रत्येक काम में लक्ष्य प्रतिष्ठ हैं—

सर्वहितं चिकीर्षून्

जो सज्जन हैं, सारे राष्ट्र की प्रजा का सदा हित करने वाले हैं। अपना ही स्वार्थ सिद्ध करने वाले नहीं वरन् सारी प्रजा के हितैषी बनकर सबका भला करते हैं। हितचिन्तक बनकर परसेवा में लगे रहते हैं—

धर्मात्मनः सभासदः

सभाओं के इस प्रकार अधिकारी बनावे, राज्य के ऐसे-ऐसे अधिकारी बनाने चाहिए जो धर्मात्मा हों। जिनके जीवन में सत्य धर्म का प्रेम हो। जिन के प्रत्येक काम में धर्म प्रमुख होता है। किसी भी प्रलोभन में आने वाले न हों। धर्मी होवें वे सदस्य बनें।

भा ष्य भू मि का से

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी

राष्ट्र-भक्ति और प्रभु-भक्ति-१५

(श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की अमृतभरी कथा)



गत पांच दिनों में मैंने अथर्ववेद के बारहवें कांड के पृथ्वी सूक्त का उल्लेख किया है जिस में मातृभूमि के गुणों का वर्णन है। मातृभूमि की रक्षा कैसे हो? दान कैसे किया जाए, गुरु ग्रहण कैसे किया जाए? आदि इस सूक्त में ६३ मंत्र हैं। कोई देश-प्रदेश बलिदान के बिना सुखी नहीं रह सकता। स्वराज्य का मूल्य चुकानाही पड़ता है। हम ने भी अपने स्वराज्य का मूल्य चुकाया लेकिन वह अपेक्षाकृत थोड़ा था। ठीक है कि माताओं ने बच्चों ने, जवानों ने जवानियां, धनवानों ने थैलियां दीं लेकिन यह पूरी कीमत नहीं थी। अब यह अदा करनी ही पड़ेगी इस के सिवा कोई चारा नहीं है।

सेवा देश की करनी बड़ी औखी
गल्लां करनियां ढेर सुखलियां ने

ब्रह्म का अर्थ है ज्ञान, विज्ञान को प्राप्त करना सैनिक तैयारी कैसे हो, जवानों को कैसे तैयार किया जाए। हमें आज अकेले जवानों को ही तैयार नहीं करना लेकिन देवियों को भी सैनिक रूप से तैयार करना है। सारे देश में सैनिक अनुशासन होना चाहिए, लेकिन हो क्या रहा है, कहीं भाषा का झगड़ा कहीं प्रदेश में भिन्न प्रकार की बोलियां बोली जा रही हैं। हमारे देश में अनेक धर्म हैं, सम्प्रदाय हैं, मतमतांतर हैं, लेकिन इन सब के बावजूद हम सब को एक परिवार के सगे भाईयों की तरह रहना है। पृथ्वी की नाना प्रकार की धाराओं, सुख-सम्पदाओं दूध स्वर्ण की रक्षा तभी सम्भव है जब हम सगे भाईयों की तरह रहेंगे। अस्त्र-शस्त्र का निर्माण, खेती-बाड़ी सैनिक तैयारी–यह सब कुछ विज्ञान कहलाता है। विज्ञान का यह रूप भौतिक ज्ञान है उपनिषदों में भौतिक ज्ञान को अविद्या कहा गया है। अविद्या, शोक, चिंता को दूर करती है। ज्ञान से अभिप्राय: अध्यात्मिक ज्ञान से है। इस ज्ञान के द्वारा मानव यह समझने की कोशिश करता है कि मैं क्या हूं, कहां से आया हूं और किस लिए आया हूँ। इस ज्ञान को ब्रह्म ज्ञान का नाम भी दिया जाता है। ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति के लिए आत्मा और शरीर दोनों का ठीक होना आवश्यक है। शरीर की रक्षा तब तक की जानी चाहिए जब तक इस में आत्मा है। 'अन्न' की व्याख्या उपनिषद् में पति, पत्नी, बहन, भाई, पानी इत्यादि सभी सुख पहुंचाने वाली वस्तुओं के नामों से की गई हैं। चावल, गेहूं ही अन्न का अर्थ नहीं है। भौतिक ज्ञान को प्राप्त करके हम भौतिकवादी प्रसन्नता पाते हैं। जीवनमें भौतिकवादी प्रसन्नता भी नितांत आवश्यक है लक्ष्मी के बिना नारायण का गुजारा नहीं चलता। यदि आप यहां लक्ष्मी का वास चाहते हैं तो यज्ञ करना चाहिए, वेद मन्त्रों का पाठ करना चाहिए। जहां यह दोनों बातें होंगी वहां नारायण भी पधारेंगे। लक्ष्मी का स्थायी रूप से वास नहीं होगा जहां नारायण होंगे। हे मानव यदि तूं धन की वृद्धि चाहता है तो यज्ञ कर। धन के लिए भी यज्ञ होते हैं। धनी वही बन सकता है जो इन्द्र, प्रजापति सविता, सौम्य और अग्नि के गुण प्राप्त करे। इन्द्र से अभिप्राय: है कि निर्धनों की रक्षा करे। राक्षसों का संहार करे। प्रजा के पालन करने वाले को प्रजापति कहते हैं। सविता का अर्थ है जो कोई सम्पर्क में आए उसे प्रेरणा दे साहस बढ़ाए, सौम्य का अर्थ है कि स्वभाव में क्रोध न हो, मन प्रसन्न रखे और चेहरे पर भी अकड़फूं न लाए। अथर्ववेद में कहा गया है कि अपनी अग्नि आयु और शरीर को सुन्दर रखना चाहते हो तो दाढ़ी मूंछें सब मुण्डवा दो। अग्नि की व्याख्या इन शब्दों से की गई है कि चाहे कोई लाभ उठाए या न पर अग्नि जलती रहे। अर्थात तूं अपना कर्म किए जा तूं यह मत सोच कि इसका फल क्या होता है। उपरोक्त पांच गुण आने से ही, आदमी धनवान बनता है।

लेकिन हमारे शास्त्रों में धन की निन्दा भी की है। यह सब माया है जो साधु महात्माओं को भी ठग लेती है। धन की निन्दा का एक बड़ा कारण यह है कि इसका दुरुपयोग होता है। जैसे आज कल अमरीका धन का प्रयोग कर रहा है। वह रुपये से संसार को खरीदना चाहता है। याद रखो! अमरीका इंगलैंड वालों ने आज संसार में जो रवैया अपना रखा है वह अत्यन्त भयंकर है थोड़ी देर बाद यह संसार में भीख मांगते नजर आयेंगे। इंगलैण्ड का सूर्य डूब गया है अमरीका का भी यही हाल होगा। धन का दुरपयोग बहुत बुरा है। किसी वैद्य ने एक रोगी को सुझाव दिया कि वह पुराने गुड़ से दवा का सेवन करे। रोगी एक दुकानदार के पास गया और थोड़ा पुराना गुड़ मांगा। दुकानदार ने उत्तर दिया कि मैं सब को थोड़ा-थोड़ा गुड़ देता रहता तो मेरा यह गुड़ पुराना क्यों होता इस पुराने गुड़ का तो चार गुणा भाव लगेगा। यह है एक कन्जूस मनोवृत्ति का उदाहरण। मैंने विस्तार से ब्रह्म ज्ञान का उल्लेख किया। हमें भौतिक और अध्यात्मिक दोनों प्रकार का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। इससे आगे आता है यज्ञ, इसके अन्तगत देव पूजा की जाती है। यह एक वैज्ञानिक विधि है। घी और सामग्री आग में जलाकर वातावरण को पवित्र बनाया जाता है, बिखरों को इकट्ठे किया जाता है। यज्ञ से हमें विनम्रता का संचार होता है। यज्ञ हमें दान करना सिखाता है। दान का अर्थ है धन का सदोपयोग। जहां आवश्यकता हो वहां खर्च कर। हमारे देश में सन्यासी हैं। संन्यास का अर्थ है त्याग। पहिले धनवान बनो फिर त्याग करो। परमात्मा यह नहीं कहता कि संसार का भोग न करो। यह कहता है कि अच्छे ढंग से बांट कर खाओ। किसी को दुखी मत करो। सहयोग और सहकारिता का ढंग अपनाओ। आगे एक कमाता था, सभी खाते थे। अब सभी कमाते हैं, फिर भी पूरी नहीं पड़ती। कारण यह है कि इसने अपनी आवश्यकताओं को बढ़ा लिया है। आज चाय ही हमारी एक बहुत बड़ी आवश्यकता हो गई है। मुझे एक घटना याद आती है मैं कराची मेल में सफर कर रहा था। सामने की सीट पर एक देवी अपने पिता के साथ बैठी थी। अचानक उस लड़की के चेहरे का रंग पीला पड़ने लगा और देखते ही देखते वह बेहोश हो गई। मैं बहुत चिन्तित हुआ और लड़की के पिता से पूछा कि ये क्या बात है, लड़की बेहोश क्यों हो गई है। वह कहने लगे कि क्या बताएं इस बेचारी को चाए न मिले तो उसकी तबीयत खराब हो जाती है। मैं यह सुनकर बहुत हैरान हुआ। हे मेरे भगवान चाए न मिलने से लड़की बेहोश हो जाती है। प्रभु की कृपा से जल्दी ही अगले स्टेशन पर गाड़ी रुकी और मैं टी स्टाल से भाग कर चाय लेकर आया और लड़की का मुंह दबाकर उसके मुंह में चाए डाली गई। जैसे ही दो घूंट अन्दर गए लड़की स्वस्थ होकर बैठ गई। (क्रमशः)

सम्पादकीय—

आर्य जगत्

वर्ष २६] रविवार २०२२, २० मार्च १९६६ [अंक १२

सैंसर लग जाने के कारण लेख नहीं दिया जा सका

रायसाहिब अमींचन्द जी

अभी-अभी मजीठा आर्यसमाज के प्रेमी मन्त्री श्री सत्यपाल जी के प्रेम से वहां जाकर सभा की ओर से प्रचार का अवसर मिला। साथ में सभा की प्रसिद्ध मंडली पं. जगतराम जी बस्तीराम जी थी। प्रचार तो हुआ ही। वहां कन्या पाठशाला का काम देखकर भी प्रसन्नता हुई। सबसे बड़ी व न भूलने वाली बात तो यह है कि वहां पर ९३-९४ वर्ष की आयु में भी आयसमाज व सभा के लिए अपने दिल में भारी तड़प रखने वाले रायसाहिब अमींचन्द जी के दर्शन तथा घण्टों उनके पास बैठकर समाज के कामों के बारे में विचार विनिमय हुआ। रायसाहिब स्वर्गीय महात्मा हंसराज जी के परम श्रद्धालु एवम् अनन्य भक्त हैं। सभा के बड़े प्रेमी तथा आर्यसमाज के दीवाने हैं। आज भी समाज में इन जैसे दीवानों का दर्शन करके प्रेरणा मिलता है। दीवान बद्रीदासजी, डा० दीवानचन्द जी कानपुर, दीवान अलखधारीजी, डा. नारंग जी के युग के हैं। बातें तथा समाज को उनका दिया सन्देश तो फिर लिखा जाएगा। ऐसे समाज के अनन्य दीवाने के दर्शन व बातों से जीवन में बहुत कुछ मिला है। —सं.

आर्यसमाज खंडवा पूर्व निमाड़ (म. प्र.) में

होली उत्सव पर्व

आर्यसमाज खंडवा पूर्वनिमाड़ में दि० ६-३-६६ रविवार को श्री सेठ कन्हैयालाल जी खन्डेल वाल के निवास स्थान पर श्री बी० एस० भंडारी प्र० जि० आ० स० की अध्यक्षता में होली पर्व आदर्श रूप में मनाया गया। सायंकाल ६॥ बजे से पर्व पद्धति अनुसार बृहद्यज्ञ किया गया।

दि० ७-३-६६ सोमवार को प्रातः ६॥ बजे से १०१ गायत्री मन्त्रों की आहुतियों के साथ यज्ञ की पूर्णाहुति हुई।

कैलाशचन्द्र पालीवाल
मन्त्री समाज

अक्षैर्मा दिव्यः कृषिमित्कृषस्व

(जूआ मत खेलो, खेती करो)

(श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार एम० ए० एल० टी० डी० बी० कालेज, गोरखपुर)



गतांक से आगे

वह उन्हें गोदावरी के पानी से सींचती थी। आज राष्ट्र के संकट के समय सीता और शकुन्तला की अनुयायी भारतीय महिलाओं को भी चाहिए कि वे अपने घर के चप्पे चप्पे भूमि के टुकड़ों पर सब्जियां आदि उगाये और उन्हें पुत्रों के समान प्रिय मानें। उनके प्रति रखी गई सद्भावना और अपनत्व का फल वे कई गुणा कर के देंगे। ऋग्वेद के १०।१०।१।४ मंत्र में कहा गया है :—

सीरा युञ्जन्ति कवयो युगा वितन्वते पृथक्। धीरा देवेषु सुम्नया ॥

धैर्यशाली बुद्धिमान किसान दिव्य विभूतियों में उत्तम मन रखकर हल जोतते हैं और जोड़े अलग अलग जोड़ते हैं। उस समय राष्ट्र में लहलहाते खेत दृष्टि गोचर होते हैं। जो सब का कल्याण करते हैं।

सचमुच विचार करने पर पता चलेगा कि किसी भी राष्ट्र का आधार व्यापार, सट्टा और कल-कारखाने उतनी मात्रा में नहीं हैं जितनी मात्रा में कृषि है। अतः वेद में बड़े भाव भरे शब्दों में किसानों से अन्न उत्पन्न करने की अपील की गई है। वेद में मनुष्यों को सबोधित करते हुए कहा गया है—

अक्षैर्मादिव्यः कृषिमित्कृषस्वः।

अर्थात् जूआ मत खेल। खेती कर। आज भी तो अपने राष्ट्र के लिए। उसकी स्वतन्त्रता के लिए हमारे प्रधानमंत्री स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री ने 'जय जवान' के साथ 'जय किसान' का नारा इसी भाव से लगाया था। सचमुच आज हम सभी अथर्ववेद के ३।१७।२ मंत्र के अनुसार अपने किसानों से कहेंगे—

युनक्त सीरा वियुगा तनोत
कृते योनौ वपतेह बीजम्।
विराजः श्नुष्टिः सभरा असन्नो
नेदीय इत्सृण्यः पक्वमा यवन्॥

अर्थात् हे विशेष शक्ति वाले किसानो! हलों को जोतो! जुओं को फैलाओ, लकीरें बनाने पर यहां बीज बोओ जिस से हमारी अन्न की उपज भरपूर हो। हमारे हंसुए या अन्न काटने के साधन कच्चे और अपरिपक्व अन्नों को न काटें।

हमारे देश में अन्न की कमी सरकारी आंकड़ों के अनुसार केवल ८ प्रतिशत है। यदि भारतवर्ष की जनता और विशेष कर हमारे देश के कृषक इस कमी को पूरा करने के लिए हृदय से सावधान होकर जुट जाएं तो हम अन्न के मामले में पराधीन नहीं रहेंगे। हमारे किसान उत्तम बीज को समय पर बोयें तथा उनकी खाद आदि की उत्तम व्यवस्था करें और जनता तथा सरकार का उन्हें सहयोग मिले तो वह निर्विवाद है कि हम खेती की संख्या में वृद्धि कर सकेंगे। अर्थात् जिन खेतों में हम एक या दो फसलें काटते हैं वहां तीन फसलें काट सकेंगे। यही अन्न की शीघ्र प्राप्ति का भाव है।

सैनिक अपने खून से और किसान अपने पसीने से राष्ट्र की रक्षा करते हैं। परिश्रम के साथ-साथ खेती में आने वाली बाधाओं और उनको क्षति पहुंचाने वाले कृमि, चूहे आदि से भी हमें सावधान रहना चाहिए। वेद में कहा है:—

पद्भिः सेदिमवक्रामन्नरां
जङ्घाभिरुत्खिदन्।
श्रमेणानड्वान् कीलाल
कीनाशश्चाभिगच्छतः॥

अथर्व ४।११।१०

अर्थात् अपने पावों द्वारा विनाश को करने वाले चूहे कीड़े आदि कृषि नाशक जन्तुओं को पराजित करता हुआ और जांघों द्वारा अन्न को ऊपर करता हुआ अर्थात् परिश्रम से अन्न उत्पन्न करता हुआ, बैल और परिश्रम के साथ खेती करने वाला किसान ये दोनों उत्तम अन्न-पान को सब प्रकार से प्राप्त करते हैं। जिस राष्ट्र के किसान परिश्रम करना छोड़ देंगे और जहां के बैल कमजोर और निकम्मे हो जायेंगे उस राष्ट्र का उत्थान न हो सकेगा। इसलिए राष्ट्र के किसानों! परिश्रमी बनो।

किसान देव हैं। देव उसे कहते हैं, जिसमें दिव्यता होती है। श्रेष्ठता होती है। किसानों से बढ़कर कौन श्रेष्ठ है? राजा उनसे जीता है, व्यापारी उन पर निर्भर है, क्षात्र धर्म का रक्षक सैनिक उन पर आश्रित है, ज्ञान का नेता ब्राह्मण के जीवन दाता किसान हैं। किसान देव हैं। किसान राष्ट्र के जीवन हैं और जब ये राष्ट्र रक्षा के लिए सन्नद्ध हो जाते हैं तो विजय निश्चित हो जाती है। अथर्ववेद के एक मन्त्र में राष्ट्र निवासियों को संबोधित करते हुए कहा गया है :—

देवा इदं मधुना संयुतं यवं
सरस्वत्यामधिमणाव चर्कृषुः।
इन्द्र आसीत् सीरपतिः शतक्रतुः
कीनाशा आसान् मरुतः सदानवः।

विजय की इच्छा करने वाले देवों ने—राष्ट्र निवासियों ने पानी के प्रवाह से युक्त उत्तम भूमि में मीठे जौ, गेहूं, चावलों की खेती की अर्थात् जब राष्ट्र के किसान परिश्रम के साथ अन्न उत्पन्न करने को तत्पर हो जाते हैं, उस समय इन्द्र देवों का राजा या शासक उसके खेत की रक्षा करने वाले बन जाते हैं।। किसान राष्ट्र का उत्तम दाता (मरुत) हो जाता है। यहां इन्द्र का रक्षक होने से यह तात्पर्य है कि राष्ट्र के परिश्रमी किसानों के लिए उत्तम खाद, बीज तथा सिंचाई की व्यवस्था द्वारा शासकों को चाहिए कि खेती की पूरी तरह रक्षा करें। जब शासक रक्षक और किसान परिश्रमी हो जाते हैं तब राष्ट्र धन-धान्य की वृद्धि राष्ट्र के कल्याण और उन्नति का कारण बनती है। अतः वेद का नारा है :—

युनक्त सीरा वियुगा तनोत कृते योनौ वपतेह बीजम्। विराजः श्नुष्टिः सभरा असन्नो नेदीयः इत्सृण्यः पक्वमेयात ॥

ऋग्वेद १०।१०१।३

अर्थात हे किसानो! हल चलाओ! बैलों की जोड़ियों को जोतो! जब जमीन ठीक हो जाय तब उस पर बीज बोओ और पके हुए अनाज के पास ही धान्य काटने के यन्त्र और हंसिया ले जाओ। याद रखो! दूसरों से अनाज की भिक्षा लेकर बहुत समय तक राष्ट्र की रक्षा नहीं की जा सकती है, दूसरों से अनाज की भिक्षा लेकर हम अपनी स्वतंत्रता की रक्षा नहीं कर सकते हैं, दूसरों से अनाज की भिक्षा लेकर हम अपनी संस्कृति को बचा नहीं सकते हैं, दूसरों से भिक्षा लेकर राष्ट्र की भूख को दूर करने की बात तो एक जुआ है। जिस प्रकार जूए का परिणाम क्या होगा, यह नहीं जाना जा सकता है ठीक उसी प्रकार राष्ट्र भी यदि दूसरों से अन्न

(शेष पृष्ठ ६ पर)

स्वास्थ्य-विचार

भोजन द्वारा स्वास्थ्य

(ले०-डा. ओमप्रकाश जी, प्रकाश हस्पताल जिला एटा (यू.पी.)

प्रिय पाठक वृन्द
'धर्मार्थ काम मोक्षाणामारोग्यं मूल कारणम् ॥'
रोगास्त स्यापहर्तारः, श्रेयसो जीवितस्य च ॥'

हमारे जीवन का लक्ष धर्म अर्थ काम मोक्ष की प्राप्ति आरोग्य शरीर के ही द्वारा है। शरीर की आरोग्यता का भोजन से बहुत कुछ सम्बन्ध है! बैठने उठने चलने श्वास लेने तथा किसी भी कार्य के करने में शारीरिक शक्ति व्यय होती है। इस शक्ति की पूर्ति हम भोजन द्वारा ही करते हैं। अतः भोजन ऐसा होना चाहिए जो जीवनीय संघटकों से युक्त हो।

'प्राणिनां पुनर्मूलयाहारो बलवर्णोजसाम'
(सु० सूत्र स्थान १४८॥)

समस्त जीवों और उनके बल रूप ओजादि का मूल आहार है।

आहारः प्रीणनः सद्यो-
बलकृद् देहधारकः।
आयुस्तेजः समुत्साह,
स्मृत्योजोऽग्नि विवर्धनः॥
(सु० चि० अ.२४)

आहार पुष्ट करने वाला, तुरन्त बलकारक देह को धारण करने वाला, आयु तेज उत्साह स्मृति ओज, अग्नि को बढ़ाने वाला होता है।

उपरोक्त जो आहार का कार्य है। वही चिन्ह रूप में जीवधारियों को देखने पर उनके शरीर की पुष्टि, बल, तेज, ओज, उत्साह के रूप में प्रकट होता है। इसके मानी यह हैं जो हम खाते हैं उससे शरीर बनता है। अतः स्वस्थता प्राप्ति में भोजन का बहुत बड़ा हाथ है भोजन स्वास्थ्य के अनुकूल होना चाहिए।

"Our body is made of what we have eaten."

१. दालों के छिलकों में स्वास्थ्य प्रद भाग है पर उस का काला रंग हमारी प्यारी बहनों को खटकता है। इसलिये वह धुली दाल बनाती हैं। हम लोग खाते हैं और कहते हैं "कि दाल बड़ी बढ़िया बनी है"। मैं कहता हूँ कि छिलका जो स्वास्थ्य प्रद भाग था वह तो हम ने सौभाग्य शाली पशुओं को खिला दी या और हम भाग्य हीनों ने स्वास्थ्य प्रद भाग अर्थात **Vitamins** से रहित दाल खाई, फिर भी बढ़िया कहना अपनी नादानी दिखाना है।

चावल जिसका छिलका मूसल से उतारा गया हो, अच्छा होता है पर उस में उतनी चमक नहीं होती जितनी कि मशीन के द्वारा छिलका उतरे हुये चावलों में होती है। सहाब की पत्नियां उसे पसन्द नहीं करती हैं। उन्हें सफेदी की होड़ है। मशीन से छिलका उतारने में स्वास्थ्यप्रद भाग नष्ट होता है। तो आप ही बतायें? कि जब हमारा भोजन स्वास्थ्यप्रद भाग से रहित होगा तो हमारे स्वस्थ होने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। इसी प्रकार से गेहूं को भी आप समझिये। इस के ऊपर का गेहुयें रंग का भाग शरीर वर्धक होता है। बीच का सफेद भाग कम मूल्य रखता है जब हम सफेदी की ही रट लगाते हैं, तो ऊपर भाग खुरचकर पिसाई की जाती है। सफेदी की मांग के कारण मैदा की तरह पिसाई होने लगी, और बहनें महीन चलनी से छानती हैं मैदा आंतों की श्लैष्मिक कला पर पलस्तर का कार्य करता है। उस से आंत्र पाचक रस नहीं निकल पाता, फलतः भोजन का सम्यक परिपाक नहीं होता। उससे कब्ज रहने लगता है। अथवा प्रवाहिका (जिसे पेचिश) कहते हैं हो जाती है। तब डाक्टरों वैद्य और हकीमों के द्वार खटखटाने पड़ते हैं। प्रिय पाठक वृंद हमारी सफेदी रटन ने हमारे स्वास्थ्य का नाश कर दिया। हमारी सफेदी की मांग ने शक्कर डालने वाले मसाले को जन्म दिया जिसको किसान लोग अब गुड़ में भी डालने लगे हैं। यह बहुत हानि कारक वस्तु है। हमारी सफेदी की मांग ने तेलों को बनास्पति घी का जन्म दिया। जिस में सफाई कास्टिक सोडा से की जाती है जो खुजली पैदा करता है। और द्वारा मोटा करने के लिये निकिल धातु का चूर्ण डाला जाता है। जो आंतों को कमजोर करता है। जो लोग इसका सेवन करते हैं उन में से ४० प्रतिशत का कहना है कि इससे गला पेट दोनों खराब हो जाते हैं। अमेरिका के मिनोसोटा विद्यालय के शरीर विज्ञान के डाक्टर ऐंसल कीज जिन्होंने १० हजार व्यक्तियों पर इस तेल का परीक्षण किया। उनका कहना है कि अमेरिका वासियों का यह सब से बड़ा शत्रु है। इसके सेवन से ५ लाख व्यक्ति प्रति वर्ष मृत्यु का शिकार बन जाते हैं। आप का कहना है कि इन तेलों के सेवन से रक्त में "कोलेस्ट्रल" की मात्रा बढ़ जाती है। इसको हिन्दी में गाढ़ा पित्त कह सकते हैं। इसकी सम्यक् मात्रा ही शरीरोपयोगी है। वनस्पति तैलों से इसकी मात्रा बढ़ जाती है। अतः दिल के दौरा होने लगते हैं। आधुनिक दिल की बीमारियां इसी की देन है। प्रिय पाठक वृन्द अगर सफेदी पर ही हमारा ध्यान लगा रहा, हम ने भोजन की वास्तविकता का उपयोग न किया तो हम कभी भी स्वस्थ नहीं हो सकते। हम को भोजन के विषय में तीन सिद्धांत अपने सामने रखने चाहिएं।

Eat to live, not live to eat. जीवन के लिए भोजन है भोजन के लिए जीवन नहीं है। अतः रसना की स्वादपूर्ति के लिए भोजन नहीं करना है। पर अपने जीवन वृद्धि के लिए भोजन करना है।

Health depends not on how much money is expended on food, But on what food the money is expended. स्वास्थ्य इस बात पर निर्भर नहीं है कि भोजन कीमती हो। पर कैसा भोजन कीमती है।

Cheapest and simplest food is the best food. सादा और सस्ता भोजन भी स्वास्थ्यकारी है। प्रिय पाठक वृन्द! सर्वदा भोजन को बनवाने में तीन उपरोक्त सिद्धांत रखें-क्रमशः

हम जागते रहें

श्री सत्यपाल 'सहदेव जी विद्यावाचस्पति' लेखरामनगर कादियां

वही जातियां संसार में सर्वांगीण प्रगति करती है जो जीवन भर जागृति का पाठ पढ़ती हैं। निर्बल राष्ट्र जब अपने कर्त्तव्य के प्रति सावधान हो जाता है तो वह एक सबलराष्ट्र कहलाता है। संगठित समाज का ध्यान यदि प्रकाश की ओर हो तो वह अपने गन्तव्य स्थान पर शीघ्र पहुँच जाता है। किन्तु जो आलस कर सो जाता है, कर्त्तव्य-कर्म से च्युत हो जाता है वह अपनी प्राप्त संपत्ति से भी हाथ धो बैठता है। जीवन क्या है, जागते रहना, मरणा क्या है सो जाना। भगवान वेद कहते हैं 'वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः' तथा यो जागारः तमृचा कामयन्ते' अर्थात् ऋचाएं उसका स्तवन करती हैं जो चेतना-युक्त होता है।

संसार एक बहीड़ वन है। इसे मखमली बिछौना कहना अपने से धोखा करना है। पग २ पर समस्याएं, आपदाएं झंझावत, प्रलोभन, कांटे बिछे पड़े हैं व मुंह फाड़े मानव को निगलना चाहते हैं। वही इनको चीरता हुआ सुपथ पर बढ़ता जाता है जो घबराता नहीं, लड़खड़ाता नहीं चकराता नहीं। एक अंग्रेज विद्वान, ने कितना सुन्दर कहा है "Vigileave is the price of Liberty." स्वतन्त्रता की प्राप्ति का मूल कारण जागृति है। वेद ने राष्ट्र के नाम संदेश देते हुए योग व क्षेम का सुचारू रूप से वर्णन किया है योग कहते हैं किसी पदार्थ को प्राप्त करना, क्षेम है प्राप्ति की रक्षा करना, योग है परन्तु क्षेम नहीं तो भी हानि ही हानि है। राष्ट्र का नाश करने वाले शत्रु जब तक हैं तब तक राष्ट्र भी पनप [न]हीं सकता। आज दरिन्दे पाकिस्तान ने भारत का शत्रु बन कर क्या दुष्कर्म नहीं किया? यह उसका जागना नहीं परन्तु बर्बरता पूर्ण पाशविकता का नग्न नृत्य मुट्टो और अयूब खां की अकल का जनाजा समझा जाता है। पाकिस्तान का मान-मर्दन जिस शूरवीरता से भारतीय वीरों ने किया है उसकी जितनी भी भूरी-भूरी प्रशंसा की जाए उतनी ही कम है। कौमें बलिदानों से चमका करती हैं वीरों का खून इतिहास की स्याही का शुभ कार्य करता है। भारतीय समाज ने इस विषम वातावरण में "एक भारत का रूप धारण किया। इन प्रवर सैनिकों की टंकारों में अर्जुन का गांडीव, कृष्ण का चक्र, भीम की गदा, शिवा की तलवार, प्रताप की वीरता दयानन्द की देश भक्ति गूंजती है। यह भारत वह भारत है जिस की गर्दन कट सकती है झुक नहीं सकती। भारत में शांति भी है किन्तु जब जरासंध-कंस अत्याचार का प्रलयकारी तुफान चलाते हैं तो कृष्ण उनके लिए काल बन जाते हैं। यह वही भारत है जिस में शहीद राम प्रसाद बिस्मिल खुश रहो अहले वतन हम तो सफर करते हैं' का वीर घोष करते हुए फांसी के तख्ते पर हंसते हुए चढ़ते हैं। भक्तसिंह लाजपतराय सुभाष आदि भारत-माता के उज्जवल रत्न हैं ये सितारे हैं उस आकाश में जिस की पावन धरती ने व्याकुल मानव को जीवन-यापन के सफल उपाय बताए हैं। यहां तो मार्ग रोकने वाली विपत्तियां वरदान बन जाती हैं। क्यों? भारत जागता है, हिन्दुस्तान का बच्चा-बच्चा जागता है तभी तो आज विजय हमारी है शत्रु की नानी मर चुकी है कुत्तों की तरह मुट्टो और अयूब भौंक रहे हैं। जो गरजते हैं सो बरसते नहीं, पाकिस्थान को मुंह की खानी पड़ी है। इसका कारण यही तो है कि हम जागते हैं।

संसार के लोग उसे चाहते हैं जो रणवीर धर्म वीर होता है सफलता आरती उतारने के लिए किसी राम की तलाश में फिरा करती है आज वीरता देवी ने भारत के चन्दन का तिलक किया है, हमारी वीरता की गाथाओं में एक नया इतिहास जुड़ गया है। हम अब भी जागते रहें। शत्रु बौखला उठा है, क्या पता मरा मरा भी क्या करे? अतः सारा देश सावधान रहे। अभी हमने स्वतन्त्रता का मूल्य और देना है। इसकी रक्षा में रुंड-मुंडों का बलिदान देना है तभी सितारे आने वाली संतान को हमारी कहानियां सुनाया करेंगे। भगवान कृपा करे इस 'अध्नन्तु अराव्णः' के अनुसार शत्रु का मलिया मेट कर देवें। ताकि हमारा जागरण फलदायक हो सके, यही शहीदों की पुकार है वीरों की झंकार है व धर्म का निनाद है। जय भारत

आर्यसमाज योगेन्द्रनगर (H. P.)

आर्यसमाज योगेन्द्रनगर ने १३-३-६६ से दैनिक वाचनालय का प्रबन्ध किया है। इस में दैनिक, साप्ताहिक तथा मासिक समाचारपत्रों के मंगाने का प्रबन्ध किया गया है। जनता स्वाध्याय द्वारा लाभ उठा रही है तथा समाज के इस शुभ पग की सराहना कर रही है।

इसी प्रकार लाला लाजपत राए पुस्तकालय का उद्घाटन किया गया है। इस के प्रबन्ध के लिए नवयुवक मंत्री मनोनीत करके उसकी सहायतार्थ अन्य सात सदस्यों की समिति का निर्माण किया गया है।

मुरारीलाल
मंत्री समाज

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा दिल्ली

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा दिल्ली का कार्य दिल्ली के इलाके में खूब अच्छी तरह से चल रहा है। इस से सम्बन्धित ३५ आर्य समाजें हैं और १५ स्वतन्त्र आर्यसमाजें इस सभा से उपदेशकों का कार्यक्रम लेती हैं। सभा के पास दो भजनोपदेशक और लगभग ४० अवैतनिक उपदेशक कार्यक्रम में भाग ले रहें हैं। पं० सोमकीर्ति जी कार्यालय के कार्य को भली प्रकार चला रहे हैं।

कृष्णचन्द्र रल्हन
प्रधान उपसभा देहली

अक्षैर्मा दिव्यः कृषिमित्कृषस्व

(पृष्ठ ४ का शेष)

की भीख लेकर यदि जीवित रहने की बात सोचता है तो इसका परिणाम निश्चित नहीं है। भीख देने वाले राष्ट्र जिस दिन चाहेंगे हमें अपनी शर्तों को मानने के लिए बाध्य कर देंगे। इसलिए भारत के खाद्यमंत्री को आज 'जयकिसान' को चरितार्थ करने के लिए अन्न की भीख से ध्यान हटाकर, इस जूए से अपने को दूर कर वेद के शब्दों में कृषि की ओर ध्यान देना चाहिए। इसलिए खाद्यमंत्री से हम वेद के शब्दों में कहेंगे।

'अक्षैर्मा दिव्यः कृषिमित्कृषस्व' जूआ मत खेल। खेती कर।

★ इस नश्वर शरीर धारियों ने काम धेनु सी लक्ष्मी पाई तो क्या? शत्रुओं को पराजित किया तो क्या? धन से मित्रों का सम्मान किया तो क्या और कल्प तक जीता रहा तो क्या हुआ? जो परलोक न बनाया अर्थात् उसका सब निष्फल है।

महर्षि दयानन्द के परवर्ती आर्य सामाजिक विद्वानों की संस्कृत साहित्य सेवा

(प्रो० भवानीलाल जी भारतीय एम० ए० पाली (राजस्था



संस्कृत भाषा के सम्पूर्ण वाङ्मय को हम दो भागों में विभक्त कर सकते हैं — शास्त्रीय साहित्य और ललित साहित्य । शास्त्रीय साहित्य से हमारा तात्पर्य वेद, उपनिषद् , वेदांग , दर्शन, स्मृति, धर्मशास्त्र आदि उस ग्रन्थ समूह से है जिनमें भारतवासी आर्यों के धम, दर्शन, तत्व—ज्ञान, अध्यात्म तथा कर्म-काण्ड विषयक विचारों का विवेचन हुआ है। इस साहित्य के प्रणयन में कई शताब्दियां लग गईं। सहस्रों शास्त्रीय ग्रन्थों के मुद्रित और प्रकाशित होने के उपरान्त भी अभी शतश: ऐसे ग्रंथ शेष हैं जिनकी पाण्डुलिपियां पुस्तक भण्डारों और अद्भुतालयों की शोभा बढ़ा रही हैं तथा जो अभी भी प्रकाशन की प्रतीक्षा कर रही हैं। इसी प्रकार अनेक ग्रंथ ऐसे भी हैं। जो सर्वथा लुप्त हो चुके हैं तथा जिन में नामों का उल्लेख मात्र ही ही मिलता है, अथवा जिन के उद्धरण यत्र-तत्र अन्य ग्रंथों में उपलब्ध होते हैं। संस्कृत साहित्येतिहास के मर्मज्ञ विद्वानों के अनुसार इस शास्त्रीय साहित्य का रचनाकाल ईसा पूर्व २००० वर्षों से लेकर ईसा के एक हजार पश्चात् तक फैला हुआ है। भारतवासियों के परम्परागत विश्वास के अनुसार तो वेदों की रचना सृष्टि के आरम्भ में ही हुई और तब से लेकर विक्रम की सत्रहवीं शताब्दी पर्यन्त शास्त्र ग्रंथों के प्रणयन की परम्परा अविच्छिन्न गति से प्रवाहित हो रही है।

शास्त्रीय साहित्य से भिन्न रसात्मक ललित साहित्य को आचार्यों ने काव्य नाम से अभिहित किया है। काव्य का मूल वेद ही माना गया है । अथर्ववेद के अनुसार वेद परमात्मा का दिव्य काव्य है जो न मरता है और न जीर्ण होता है। वेद में ईश्वर को 'कवि' नाम से सम्बोधित किया गया है। रामायण और महाभारत के ऐतिहासिक महाकाव्य धार्मिक दृष्टि से जितने महत्वपूर्ण हैं उतने ही काव्य और साहित्य की दृष्टि से भी। क्रौन्च मिथुन में से एक का वध देखकर महामुनि वाल्मीकि के हृदय में करुण रस के जिस स्थायी भाव शोक की उत्पत्ति हुई वही श्लोक बन कर संसार के प्रथम लौकिक काव्य के रूप में प्रादुर्भूत हुआ ।

रामायण और महाभारत आर्ष प्रतिभा सम्पन्न वाल्मीकि और व्यास जैसे रस सिद्ध कवियों की अमर कृतियां हैं जिनमें काव्य तत्व पुष्ट और प्रतिष्ठित रूप में उपलब्ध होता है । इतना ही नहीं, ये महाकाव्य परवर्ती काव्य, नाटक, आख्यायिका विषयक शतशः ग्रन्थों के उपजीव्य रहे हैं। इन्हीं से प्रेरणा लेकर भास, कालिदास, भवभूति जैसे नाटककार और भारवि, माघ, श्रीहर्ष जैसे कवियों ने अपने दृश्य और श्रव्य काव्यों की रचना की है।

स्वामी दयानन्द के परवर्ती आर्य समाजी विद्वानों ने संस्कृत साहित्य के इन दोनों क्षेत्रों में कार्य किया है। शास्त्रीय और रसपरक साहित्य का सृजन करने में इन विद्वानों की लेखनी अप्रतिहत गति से प्रवाहित रही है। शास्त्रीय ग्रन्थों के इतिहास में मूल ग्रन्थों की रचना के साथ २ उन पर भाष्य, टीका, वार्तिक, विवरण, न्यास, चूर्णिका आदि व्याख्या ग्रंथों के लिखने की परिपाटी जितनी प्राचीन है उतनी ही महत्वपूर्ण भी। यहां तक कि पतंजलि, शंकर, वाचस्पति मिश्र एवं उदयनाचार्य जैसे महान आचार्यों ने व्याकरण, वेदान्त, दर्शन, न्याय आदि के स्वतन्त्र ग्रंथों की अपेक्षा जिन भाष्यों और टीकाओं की रचना की है, उन्हीं में उनकी मौलिक प्रतिभा, अनूठी ऊहा तथा नवनवोन्मेषशालिनी कल्पना शक्ति के दर्शन होते हैं। यही कारण है कि इन भाष्य और टीकाओं के लेखक आचार्यों को भी परवर्ती लेखकों ने 'भगवान भाष्यकार' जैसे आदरास्पद वचनों से सम्बोधित किया है।

आर्य समाज के विद्वानों ने भी वेद, वेदांग, दर्शन, उपनिषद, स्मृति तथा रामायणादि इतिहास ग्रन्थों पर भाष्य टीका विवरण आदि ग्रन्थ लिखकर विपुल साहित्य का निर्माण किया है। इन लेखकों ने वेद वेदांग तथा दर्शन जैसे गूढ़ शास्त्रों को अपनी टीकाओं और व्याख्याओं द्वारा सुगम, सुबोध तथा जनसुलभ बनाने का जो प्रयास किया है वह सर्वथा श्लाघनीय है। आर्यसमाजी विद्वानों ने इन शास्त्रीय ग्रंथों पर संस्कृत में भाष्यादि तो लिखे ही हैं लोकभाषा हिंदीमें भी उनकी विशद व्याख्याएं प्रस्तुत की हैं। इस प्रकार गीर्वाणवाणी की शास्त्र सम्पत्ति को अधिकाधिक लोकोपयोगी बनाने का कार्य सम्पन्न करने में आर्यसमाज ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आगामी पंक्तियों में हम आर्यसमाजी विद्वानों द्वारा किए गए शास्त्रीय साहित्य विषयक कार्य का विवेचन करेंगे।

वेद व वेदविषयक साहित्य—आर्यसमाज के प्रवर्तक ने वेद के संहिता भाग के महत्व का विशिष्ट रीत्या प्रतिपादन किया । उन्होंने मध्यकालीन आचार्यों की इस धारणा का खण्डन किया कि मंत्र और ब्राह्मण दोनोंकी वेद संज्ञा है। उन की यह मान्यता थी कि केवल मंत्रसंहिताएं ही वेद कहलाने की अधिकारिणी हैं और ब्राह्मण ग्रंथ इन मंत्रों की ऋषि प्रणीत व्याख्याएं।

स्वामी दयानन्द की दृष्टि में वेद संहिताएं ईश्वरोक्त होने के कारण स्वतः प्रमाण हैं तथा ब्राह्मण ग्रन्थ मनुष्य प्रोक्त होने के कारण परतः प्रमाण है। स्वामी दयानन्द के वेदार्थ विवेचन और वेद की विश्व व्याप्ति के लिए जो कार्य किया उसका विवेचन पूर्व अध्याय में हो चुका है । स्वामी जी के परलोकगत होने पर आर्यसमाजी पण्डितों ने उनके अपूर्णवेद भाष्य का पूरा करने का यत्न किया तथा स्वतन्त्र रूप से भी वेद व्याख्या एवं वेद-विवेचन विषयक प्रभूत साहित्य का निर्माण किया।

स्वामीजी के अपूर्ण ऋग्वेद भाष्य का पूर्ण करने के प्रयत्न

मेरठ निवासी पं. तुलसीराम स्वामी ने अपने मासिक पत्र वेदप्रकाश में ऋग्वेद भाष्य के शेषांश को पूर्ण करने का यत्न किया । यह भाष्य जुलाई १९१६ के अंक से प्रारम्भ होकर धारावाही रूप में कई अंकों में प्रकाशित होता रहा। भाष्य हिन्दी तथा संस्कृत दोनों भाषाओं में लिखा जाता था । पं. तुलसीराम स्वामी की मृत्यु के उपरान्त उनके अनुज तथा वेदप्रकाश सम्पादक छुट्टनलाल स्वामी ने भी इस भाष्य का कुछ अंश लिखा।

ऋग्वेद भाष्य को पूरा करने का द्वितीय प्रयत्न मिथिला निवासी पं. शिवशंकर शर्मा काव्य तीर्थ द्वारा हुआ। वे भी इसे पूरा नहीं कर सके। इस विषयक सर्वाधिक महत्वपूर्ण यत्न महामहोपाध्याय आर्यमुनि का था। आर्यमुनि जी ने स्वामी जी द्वारा छोड़े गए ऋग्वेद के सप्तममण्डल के ६१वें सूक्त के तृतीय मन्त्र से आरम्भ कर नवम-मण्डल पर्यन्त मन्त्रों का संस्कृत तथा हिन्दी भाषा में भाष्य लिखा। (क्रमशः

आकाशवाणी के सौजन्य से

युद्ध और उसके बाद

(विष्णु प्रभाकर)



(गतांक से आगे)

इसलिए एक सीमा आती है जब युद्ध छोड़ना ही होता है। जो युद्धकाल अभी-अभी बीता है, हम उसी सीमा पर आ पहुँचे थे। कश्मीर का प्रश्न मात्र एक प्रदेश का प्रश्न नहीं है। वह हमारी आस्था, हमारे विश्वास का प्रश्न है। धर्मान्धता के विरोध में धर्म-निरपेक्षता, मानवता का प्रश्न है। इसीलिए हमने निश्चय किया कि हम अपनी आत्मा का हनन नहीं होने देंगे। हम कायर नहीं होंगे। इस से अधिक सहना अपने प्रति ही विश्वासघात होगा।

युद्धकारी मनोवृत्तिसे खबरदार

यही साहित्यकार का दायित्व आता है। उस के लिए यह आवश्यक नहीं कि वह गला फाड़-फाड़ कर गर्जनाएं करें। जो कर सकते हैं करें, लेकिन साहित्यकार के लिए यह अनिवार्यता नहीं है। उस के लिए यही अनिवार्यता है कि वह इस बात को न भूले कि युद्धकाल तात्कालिक है, जीवन की स्थायी और सम्पूर्ण व्यवस्था नहीं है। उचित उद्देश्य के लिए उचित युद्ध करने का अर्थलिप्सा और युद्ध-उन्माद नहीं है। साहित्यिक सैन्यशाही का समर्थन नहीं कर सकता। वह उसके खतरों से सावधान ही कर सकता है। वह राष्ट्र के मनोबल को सही दिशा दे सकता है। युद्ध-काल में उफान आना स्वाभाविक है। साहित्यिक उसी उफान के बीच में खड़ा हो कर युद्ध को जीता है और जीवन के मूल्यों को परखता है। नए मूल्यों का निर्माण करता है। वह निर्भीकता और पौरुष का निर्माता है, हथियारों का प्रशासक नहीं था। नागरिक साहित्यकार का अन्तर यहीं स्पष्ट होता है। नागरिक उफान में बहकर होता है। नागरिक उफान में बहकर सैनिकशाही और युद्धलिप्सा का समर्थक बन सकता है। अनजाने अनचाहे वह सकता है। लेकिन साहित्यकार इसी अनचाही स्थिति से ही बचने का मार्ग सुझाता है। वह जानता है कि युद्ध से बचने का हमारे सामने कोई विकल्प नहीं रहा था इसीलिए हमने युद्ध के लिए युद्ध को नहीं स्वीकारा। ऐसी स्थिति में हम आक्रमण करने वालेका विरोध करेंगे उसके आक्रमण करनेकी शक्तिको नष्ट करेगा। लेकिन इस बात को नहीं भूलेंगे, कि युद्ध में जय और पराजय दोनों की सीमा ऐसा दोनों का प्रभाव, इनमें कोई विशेष अन्तर नहीं होता। पाण्डव दल में केवल सात व्यक्ति बचे थे और कौरव दल में केवल तीन। विजय श्री पाण्डवों को मिली। लेकिन वह विजयश्री कैसी थी, वह क्या किसी को बताना होगा? साहित्यकार का यही प्रयत्न रहता है कि वह अपने नागरिक को वैसी विजयश्री के प्रति सचेत करता रहे।

जो दुर्बल हैं, जो पलायनवादी हैं वे कभी-कभी ऐसी स्थिति का लाभ उठाकर उसी नारेबाजी में फंस जाते हैं जिस में युद्धलिप्सा-वादी फंसे रहते हैं। साहित्यकार इन दोनों के बीच में सही मार्ग का निर्माण करने वाला होता है। है। युद्ध करते हुए भी वह युद्ध के परिणामों को दृष्टि से ओझल नहीं होने देता। गीताका ज्वरहीन युद्ध साहित्यकार ही लड़ता है। 'युद्धस्व विगतज्वर:' कृष्ण ने ऐसा ही युद्ध लड़ने के लिए अर्जुन को प्रेरित किया था। उसे पलायन से बचाया था। साहित्यकार की यही भूमिका आज के संदर्भ में मानी जा सकती है। एक ओर वह मनुष्य को भय और पलायनवाद से मुक्ति पाने की प्रेरणा देता है तो दूसरी ओर युद्ध-उन्माद और युद्ध-लिप्सा के नरक में पड़ने से बचाता है। उसका यह दृष्टिकोण युद्ध मात्र के प्रति होना चाहिए किसी देश विशेष में लड़े जाने वाले युद्ध के प्रति नहीं, तभी उसका यह दावा, कि वह केवल मात्र राष्ट्रीय नहीं है, सही हो सकता है।

१ . . .न० ए० का शुभ विवाह श्री रविशंकर जी के सुपुत्र श्री अशोक त्रेहन के साथ सम्पन्न हुआ। विवाहकार्य व आशीर्वाद पूज्य स्वामी विद्यानन्द जी विदेह द्वारा १२-३-६६ को उनके निवास स्थान पर हुआ।

आर्यजगत की ओर से इस नवदम्पती को तथा पं० आशुराम जी के परिवार को हार्दिक बधाई।

आर्य कन्या सदन पाटोदी हाउस, दरियागंज, दिल्ली

इस समय ३ वर्ष से लेकर १८ वर्ष तक की आयु की १ कक्षा से ...क पढ़ने वाली अनाथ ...लड़कियों की संख्या ...है। इनके निवास, ...इनके पालन पोषण, शिक्षा आदि के लिए डेढ़ लाख रुपया प्रतिवर्ष चाहिए।

आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि अपनी पुण्य कमाई में से अधिक से अधिक दान भेजने की कृपा करें।

इस समय लगभग ८०० मान्य देवियां इसकी मासिक सदस्या है जो १ रुपये से लेकर २५ रुपये तक सहायता प्रति मास देती रहती हैं। आप से भी प्रार्थना है कि आप इस अत्यन्त उपयोगी संस्था का मासिक सदस्य बनने की कृपा करें।

—देसराज चौधरी
प्रधान समाज

आर्यसमाज स्थापना दिवस

नई दिल्ली ८ मार्च—आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य की ओर से रविवार दिनांक २७ मार्च १९६६ को सायंकाल अजमल खां पार्क, करोलबाग में बड़े समारोह पूर्वक मनाया जावेगा।

आर्य केन्द्रीय सभा सभी आर्य समाजों, स्त्री आर्य समाजों तथा शिक्षण संस्थाओं से प्रार्थना करती हैं कि वे अपने २ स्थानों में इस पुण्य पर्व को बड़े समारोह-पूर्वक मनाने और जनता से अपील करें कि वे अधिक से अधिक संख्या में अजमल खां पार्क उत्सव में भाग लें। —रामनाथ मंत्री समाज

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे   वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक १३) १४ चैत्र २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१– २७ मार्च १९६६ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

नमो यमाय

यम रूप उस परमेश्वर को नमस्कार हो। परमात्मा के अनेक नामों में यम भी उसका एक नाम है। क्योंकि वह सबका नियामक है। सबको अपने नियम में रखता है। कोई भी वस्तु उसके नियम से बाहर नहीं जा सकती है। वह यम है।

नमो अस्तु मृत्यवे

मृत्यु रूप उस भगवान् को नमस्कार है। वही देह को आत्मा से या आत्मा को शरीर से अलग-अलग करता है। सब को अपने-अपने कर्मों का उचित फल प्रदान करता है। उसके नियम विधान को कौन तोड़ सकता है?

तमग्निं पुरोदधे

मैं उस अग्निमय भगवान को अपने जीवन में सदा आगे रखता हूं। वही मेरा नेता तथा नायक है। परमेश्वर ही मेरा पथ प्रदर्शक है। वही इन्द्र बनकर प्रत्येक कार्य में मेरा नेतृत्व करता है। उसे ही सदा आगे रखता हूं।

अस्मै अरिष्टतातये

इस जीवन के कल्याण व सुख के लिए मैं भगवान् को नायक बनाता हूं। परमेश्वर ही कल्याण करता है। वही सुखदाता है। अथर्व वेद से

वे दा मृ त

हे वीर ! तू वज्र का वज्र है

दूष्या दूषिरसि हेत्या हेतिरसि मेन्या मेनिरसि।
आप्नुहि श्रेयांसमति समं क्राम॥

अर्थ—हे वीर नर ! तू (दूष्याः) दोष निकालने वाले का (दूषिः असि) दोष निकालने वाला है। तू (हेत्याः) तलवार की भी (हेतिः असि) तलवार है और तू तो (मेन्याः) वज्र का भी (मेनिः असि) वज्र है। तू अब (आप्नुहि) प्राप्त हो (श्रेयांसम्) श्रेष्ठ उत्तम मनुष्यों के पास पहुंच कर तथा (समम्) बराबर वाले से (अतिक्राम) आगे बढ ! तू शक्ति की शक्ति तथा वज्र का भी तेज़ वज्र है। तेरे सामने कौन ठहरे?

इस का भाव यह है

हे वीर नर ! तेरा क्या कहना? कौन तेरे सामने आने का साहस कर सकता है। जो दुष्ट दोष निकालने वाले हैं। जब वे तेरे सामने आते हैं तो उनकी अपनी बोलती बन्द हो जाती है। तेरे सामने आते ही उनके अपने दोषों का ढेर उनकी आंखों के आगे आ जाता है। उनका तेज कुल्हाड़ा तेरे सामने सर्वथा बेकार हो जाता है। उनके पास यदि वज्र भी हो तो तेरे आगे वह मिट्टी का ढेला सा बन जाता है। हे राष्ट्र के वीर नर ! तू वज्र का भी वज्र है। शक्ति की भी शक्ति तथा शस्त्र का भी शस्त्र ही है तेरे आगे शत्रु के, राक्षस पिशाच के, चोर लुटेरे के सारे शस्त्र बेकार हो जाते हैं। हे वीर ! आगे ही आगे बढ़ते जाओ।

अथर्व वेद २-११-१

ऋषि दर्शन

क्षत्रस्य धर्मस्य स्वरूपम्

राज्य में पापी अपराधी दुष्ट को कड़ा दण्ड देना क्षत्रिय का उस शासन को चलाने वाले का धर्म का लक्षण है। दण्ड देना उसके धर्म और कर्तव्य में शामिल है।

उत्तमकर्मकारिभ्य: आनन्दकर:

राज्य के नायक का यह धर्म है कि जो उत्तम काम करने वाले हैं, उन के लिए आनन्दकारी बन जाये। नियमों का पालन करने वालों को तो सुखी बनाता रहे तथा—

एक सहस्वद् द्वितीय मुग्रवत्

उन दोनों में एक तो शांति व प्रेम है और दूसरा उग्रता से दण्डविधान है। राज्य का काम चलाने के लिए शांति की भी आवश्यकता है तथा दण्ड भी जरूरी होता है केवल एक से काम नहीं चला करता।

भाष्य भूमिका से

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी   सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्

धार्मिक चर्चा—

अनुभूति



सत्संग, स्व-अध्ययन, मनन ये ईश्वर भक्तिमें रुचि बढ़ानेके साधन हैं। सत्य का संग सत्संग है। सदाचारी जनों का सम्पर्क भी इसीलिए सत्संग कहा जाता है। स्व- अध्ययन और अंतर्मुख होकर अपने अन्तःकरण का अवलोकन करना, एक लाभकारी साधन है। चरित्रवान लोगों के जीवन वृत अपने अन्दर जागृति उत्पन्न करते हैं तथा आकांक्षा की उत्पत्ति में सहायक होते हैं। परम पवित्र और सर्वोत्तम आदर्श तो भगवान ही है जिसके व्रत और सत्य नियम सारी जगती को नियमित रूप से चला रहे हैं। व्रत के अनुष्ठान के लिए संकल्प किया जाता है और फिर पूरी लग्न से व्रती रहकर व्रतावान बनने तक प्रयत्न किया जाता है। प्रयत्न जब शिव संकल्प से प्रेरित होता है तो अवश्य सफल होता है क्योंकि इस में विश्वयज्ञ के साथ साम्य स्थापित हो जाता है। प्रार्थना वह उत्कंठा है जो शुद्ध हृदय में उत्पन्न होती है और जिसकी पूर्ति के लिए साधक पुरुषार्थ करने के लिए उद्यत होता है। उदय हुआ उत्साह मनुष्य की सहायता करता है और मनुष्य में सत्य को धारण करने की क्षमता हो जाती है जिसे श्रद्धा कहतेहैं। श्रद्धा में ही सफलता मिलती है। विश्वास और श्रद्धा से कर्तव्य करते हुए जो मनुष्य को अनुभव होते हैं और जिनके सहारे मनुष्य उत्तरोत्तर उन्नति करता रहता है उन्हें ही अनुभूति कहा जाता है।

आजकल योगीजन अनुभूति शब्द से उन अनुभवों का ही व्यक्त करते हैं जो अनुभव कि स्नायु केन्द्रों में चक्रों में हुआ करते हैं। स्पष्ट अर्थ अनुभूति का अनुभव ही है। अनुभूति का सम्बन्ध समस्त मानव से है ज्ञान बुद्धिगम्य है। स्थितप्रज्ञ मनुष्य जिसकी बुद्धि निश्चल हो चुकी है जो कुछ अनुभव प्राप्त करता है वह अनुभव ज्ञान-तक ही सीमित हैं। ज्ञान द्वारा उपलब्ध अनुभव जब तक कर्मानुष्ठान में नहीं आते जीवन विकसित नहीं होता। जीवन का निरन्तर विकास होना चाहिए यदि साधन सम्यक रीति से किए जाएं और साधन भी ठीक हों। साधक के लिए धर्म मर्यादाओं का पालन करना अत्यावश्यक है। धर्मशील मानव ही साधन से उन्नत होता है। धर्म, व्यक्ति, परिवार, समाज राष्ट्र क्या सारी जगती का आधार है। धर्म के नियम पालन करने से प्रगति सुगम होती है और गति तीव्र होती है। जीवनचर्या की शुद्धि और नियमता परम आवश्यक है। कभी-कभी आभास-सा जो साधक को होता है वह ज्योतिदर्शन नहीं है। आत्मज्योति का केन्द्र यद्यपि हृदय है पर उद्दीप्त ज्योति तो मुखमण्डल तथा मस्तिष्क से लेकर सारे शरीर के अवयवों को पवित्र और सशक्त करती है। साधक में आलस्य नहीं होना चाहिये। आलस्य और प्रमाद केवल समय का ही ह्रास नहीं करते इन के द्वारा तो जीवन क्षय हो जाता है। आलस्य और प्रमाद युगल-व्यसन तमोगुण की सन्तान हैं और मोह को सामने लाकर कामना को विकृत कर देते हैं। विकृत कामना ही लालसा और वासना है। तमोगुणी मनुष्य में यदि गति आ भी जाए तो वह रजोगुण युक्त होती है उसमें विकृत काम की प्रधानता रहती है और पूर्ति न होने पर क्रोध का कारण बनती है। यह क्रम ह्रास का है। साधक को सत्वगुण में दृढ़ भूमि तैयार करनी चाहिए जिसमें नियमित प्रगति प्रकाश और नित्य नव-जीवन है। सत्वस्थ हुए बिना मनुष्य के अंदर आत्म प्रेरणा सम्भव नहीं। आत्म प्रेरणा से ही मानव पूर्ण आयु भर से ही मानव पूर्ण आयु भर स्वस्थ रहता हुआ भगवत अनुकूल कर्तव्य करके भगवान की प्रेरणा के पाने का अधिकारी होता है। भगवत प्रेरणा भगवान का प्रसाद है वह तो अनुकूल जीवन-चर्या देखकर भगवान ही अपनी कृपा से दिया करते हैं।

राष्ट्र-भक्ति और प्रभु-भक्ति-१९

(श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की अमृतभरी कथा)



(गतांक से आगे)

अरे भाई! अपनी आदतें क्यों विगाड़ते हो। जब पांच कपड़ों में गुजारा हो सकता है तो बड़े-बड़े संदूक भरने से क्या लाभ? जितना तप्पड़ ओना पाला जितना टब्बर ओना मुंह काला।

अपनी जरूरतों को कम करो दूसरों का भला करो।

यदि सब कुछ आप अपने ऊपर ही खर्च करते गए तो अनाथ बच्चों पर खर्च कौन करेगा? उन बहादुर जवानों की कौन सुध लेगा जो हिमालय की १८, १७ हजार फुट की ऊंची चोटियों पर जहां इतनी सर्दी है कि सब्जी नहीं बनती, रोटी नहीं पकती, सब कुछ विमानों से गिराया जाता है सावधान खड़े होकर हमारी सीमाओं की रक्षा कर रहे हैं। यदि कुछ बचाओगे नहीं तो इन जवानों के लिए क्या दे सकोगे। खाओ पीओ दुनिया आपके लिए है, लेकिन ढंग से। यज्ञ का अर्थ है कि संसार के भोग भी कर साथ में प्रभु को भी मत भूल। अपने-आपको प्रभु और राष्ट्र के अर्पित कर देना ही यज्ञ का मूल अर्थ है। आजकल लोग शराब भी बहुत पीने लगे हैं मैं कहता हूं पीओ, जी भरकर पीओ लेकिन ऐसी मत पीओ कि रात को पी और सुबह उतर गई। उस प्रभु के नाम की शराब पीओ जो कभी उतरे नहीं।

नाम खुमारी नानका,
चढ़ी रहे दिन-रात

मूलशंकर ने टंकारा में पी थी। ऐसी पी कि जीवन भर नशा रहा। शराब चढ़कर उतरने वाली

पिलाई तो क्या पिलाई साकी,
जो एक बार चढ़ के न उतरे
वह पिलाओ तो जानूं।

यज्ञ की भावना परमात्मा की देन है, सउद्देश्य है। खाना, पीना, सोना, सन्तान उत्पत्ति तो पशु भी करते हैं। पशु और प्राणी में अन्तर होना चाहिए। यज्ञ प्रभु के दर्शन पाने का एक साधन है। यज्ञ यह भी सिखाता है कि अपनी इन्द्रियों को नियन्त्रण में रखो। दशरथ का अर्थ है दश इन्द्रियों का मालिक। दशरथ का अर्थ है ऐसा व्यक्ति जिस का अपनी दशों इन्द्रियों पर नियन्त्रण हो। रावण, इन्द्रियों का गुलाम था। हमारे शास्त्रों ने इन्द्रियों पर विजय पाने का एक ही साधन बताया है कि अपने मन पर काबू पाओ। अतः काबू करके ही परमात्मा के दर्शन पाए जा सकते हैं। मन ही मनुष्य के बन्धन और मोक्ष का साधन है।

यही सब आठ बातें जिन का मैंने अब तक उल्लेख किया। राष्ट्र-भक्ति और प्रभु-भक्ति सिखाती हैं। राष्ट्र-भकित और प्रभु-भक्ति दोनों एक हैं।

(समाप्त)

सम्पादकीय—

आर्य जगत्

वर्ष २९] रविवार २०२२, २७ मार्च १९६६ [अंक १३

संस्कृत की ओर

भारतीय संविधान में स्वीकृत चौदह भाषाओं में संस्कृत भी एक भाषा है। प्रायः सारी भाषाओं में भिन्न २ समय पर समाचार तथा अन्य बातें आकाशवाणी द्वारा प्रसारित की जाती हैं। किंतु संस्कृत संविधान में स्वीकृत भाषा होने पर भी ऐसी अभी तक अभागी बनी हुई है कि जिस के द्वारा प्रसार मन्त्रालय कोई भी कार्यक्रम प्रसारित नहीं करता। वैसे तो आये दिन भारत के बड़े २ ऊंचे लोग, मान्य राष्ट्रपति से लेकर मन्त्रियों पर्यन्त संस्कृत भाषा के गौरव के सम्बन्ध में आये दिन के समारोहों में बहुत कुछ कहते रहते हैं। किन्तु खेद यह है कि क्रियात्मिक रूप में संस्कृत के लिए किया कुछ भी नहीं जाता। स्कूल में संस्कृत समाप्त होती जा रही है। संस्कृत की परीक्षाएं आये वर्ष कम हो रही हैं। संस्कृत वालों की हर बात में उपेक्षा की जाती है। जीवन क्षेत्र में जिस की भी उपेक्षा की जायगी, वह वस्तु या तत्व पीछे होता चला जाएगा। संस्कृत वाला व्यक्ति अपने ही देश में अपने आप को सरकार तथा जनता में सर्वथा ही उपेक्षित समझता है। इसीलिए वह ऐसी दशा में आंखें नीची कर के जीवन के दिन बिताने में लगा है। स्कूलों में सरकार की ओर से संस्कृत तथा संस्कृत वालों के साथ जो व्यवहार किया जाता है। संस्कृत की पढ़ाई का क्या हाल है। इस की दुर्दशा कौन नहीं जानता? अभी गत दिनों राज्य सभा में एक मान्य सदस्य ने यह पूछा कि संस्कृत भाषा में समाचार प्रसारित क्यों नहीं किये जाते? उत्तर में कहा गया कि इस पर विचार किया जा रहा है। पता नहीं अभी और कितने वर्ष इस पर विचार करते लग जायेंगे। एक ओर जर्मनी है। वहां तो संस्कृत में एक विशेष कार्यक्रम प्रसारित किया जाने लगा है। दूसरी ओर भारत है जहां की संस्कृति संस्कृत में निहित है। वहां अभी तक विचार ही हो रहा है। कितना खेद तथा संस्कृत की कितनी उपेक्षा है?

यह समाचार निकला है कि चौथी योजना में संस्कृत प्रसार के लिए दो करोड़ रुपये रखे गए हैं। इतना महान् देश, इतनी प्राचीन भाषा और भारती राष्ट्र की सरकार और केवल दो करोड़ की अल्प राशि? मछलियों, मुर्गियों, सूअर पालन, शराब आदि के लिए तो पता नहीं कितने करोड़ किन्तु संस्कृत के लिए केवल दो करोड़ ऐसी है स्थिति संस्कृत की हमारे भारत में। युवक यह कहते हैं कि संस्कृत पढ़कर भूखों क्यों मरें। गत दिनों पंजाब के शिक्षामन्त्री श्री प्रबोधचन्द्र जी ने कहा कि संस्कृत वालों के ग्रेड बी. टी. के समान बनाने पर विचार किया जा रहा है। पता नहीं यह विचार क्रियात्मिक निर्णय में कब सामने आयगा। हम चाहते हैं कि संस्कृत के प्रति इस उपेक्षा वृत्ति को समाप्त करके इसमें समाचार भी प्रसारित हों। स्कूलों में भी इसकी पढ़ाई का प्रबन्ध हो। जीवन यात्रा में भी संस्कृत वालों का ध्यान रखा जाये तभी कल्याण होगा।

—त्रिलोकचन्द्र

भाषा के आधार पर

पंजाबी भाषा के आधार पर गृहमन्त्री श्री नन्दा जी ने लोक सभा में पंजाब के पुनर्गठन की घोषणा कर दी है। पंजाब के मान्य त्रिमूर्ति नेता श्री ला० जगत् नारायण जी संसत्सदस्य, श्री यश जी पूर्व शिक्षा मन्त्री पंजाब प्रधान आर्य प्रादेशिक सभा जालन्धर श्री वीरेन्द्र जी एम० ए० तथा जनसंघ के नेताओं एवं देहली के श्री ला० रामगोपाल जी शाल वाले मन्त्री सार्वदेशिक सभा, श्री ओमप्रकाश जी त्यागी आदि नेताओं ने पंजाब एकता समिति ने मिल कर गृहमन्त्री से इस के सम्बन्ध में खुल कर बातें कीं। आवश्यक आश्वासन प्राप्त किये। अमृतसर में वीर यज्ञदत्त जी शर्मा ने अपना अनशन व्रत खोल दिया है। पंजाब में भी अब शान्ति का वातावरण पैदा होता जा रहा है। पंजाब में पुलिस द्वारा जो अत्याचार किये गये हैं उनकी जांच पड़ताल करने को गृहमन्त्री श्री नन्दा जी से अनुरोध किया गया है। आर्यसमाज के प्रसिद्ध संन्यासी श्री स्वामी सत्यानन्द जी ने आर्यसमाज दीवानहाल देहली में इसी सम्बन्ध में अपना अनशन प्रारम्भ किया हुआ है। हम भी सरकार से बलपूर्वक अनुरोध करते हैं कि पंजाब में पुलिस की ओर से जो २ ज्यादतियां हुई हैं। उनकी अवश्य ही जांच पड़ताल कराई जाये।

आदर्श शुभ विवाह

साम्बा आर्यसमाज के अनथक कार्यकर्ता श्री ला० रूपचन्द जी की सुपुत्री, समाज के उत्साही मन्त्री श्री वेदप्रकाश जी की बहिन सुशीला जी का शुभ विवाह धूमधाम से सम्पन्न हो गया। विवाह संस्कार में श्री पं० खुशीराम जी शर्मा अधिष्ठाता वेद प्रचार आर्य प्रादेशिक सभा, पं० त्रिलोकचन्द शास्त्री, पं० जगतराम बस्तीरामजी की मण्डली शामिल हुई। विवाह सचमुच आदर्श था। पूर्णतया वैदिक रीति से हुआ। श्री रूपचन्द जी के सुपुत्र श्री वेदप्रकाश जी तथा उनका सारा परिवार आर्यसमाज के रङ्ग में रङ्गा हुआ है। बरात के स्वागत सम्मान में कोई भी कसर न रखी गई। साम्बा की जनता पर इस आदर्श विवाह का बड़ा ही प्रभाव पड़ा। वर वधू को सबने शुभाशीर्वाद दिया। इस अवसर पर आर्यजगत, आर्यगजट और समाज को दान भी दिया गया। हम इस आदर्श विवाह पर दम्पती के मंगल मांगल्य की प्रार्थना करते हुए सारे परिवार को बधाई देते हैं।—सं०

करनाल मंडल के जल से

करनाल मंडल में आर्यसमाज कम्बोहपुरा का उत्सव समारोह से हो गया ठा. दुर्गासिंह जी पं. दुर्गासिंह जी, प. चन्द्रसेन जी, श्री. नत्थूराम जी, डा. गणेशदास जी शामिल हुए।

आर्यसमाज कुञ्जपुरा का वार्षिक उत्सव समारोह से हो गया। श्री चौ० नन्दलाल जी, श्री दीनानाथ जी, श्री कंवरभानजी, „ गोविन्दराम जी, मन्त्री श्री हरिचन्द जी आदि सज्जनों तथा देवियों के उत्साह से खूब शोभा रहा। जलसे में सभा की ओर से पं. त्रिलोकचन्द शास्त्री, पं. चन्द्रसेन जी, प. राजपाल मदन मोहन जी की चिमटा मण्डली ठा० दुर्गासिंह जी, म० नत्थूराम जी तथा करनाल से डा. गणेशदासजी प्रो. उत्तमचन्द जी शरर पानीपत शामिल हुए। बड़ा समारोह था। मार्ग व्यय के अतिरिक्त सभा को १०७) रु० मिले। ठा० दुर्गासिंह मंडल ने तरावाड़ी में प्रचार किया।

भारतीय सैनिक की प्रतिष्ठा बढ़ी

रक्षा योजना का पालन कार्यक्रम के अनुसार

१९६५-६६ की रक्षा मंत्रालय की रिपोर्ट

****

रक्षा मंत्रालय की १९६५-६६ की वार्षिक रिपोर्ट में कहा गया है कि भारतीय सेना के जवानों ने एक बार फिर अपनी वीरता की धाक जमा दी है और जनता के दिल में भारतीय सैनिक की प्रतिष्ठा बढ़ गई है। सितम्बर १९६५ की घमासान लड़ाई में भारतीय सेना के अधिकारियों और जवानों ने अपनी जान हथेली पर रखकर ऐसी वीरता और बहादुरी का परिचय दिया, जिस से भविष्य में कोई भी आक्रामक डरेगा। सारा देश अपने जवानों के शौर्य पर गर्वित है और जवानों ने देश में अपने प्रति बड़ी श्रद्धा अर्जित कर ली है।

आज जारी की गई इस रिपोर्ट में कहा गया है कि उक्त लड़ाई में २ हजार ७६३ व्यक्ति मारे गये, ८ हजार ४४४ घायल हुए और १ हजार ५०७ लापता हुए। ८ हजार ४४४ घायलों में से ५ हजार ५८६ ठीक होकर अस्पताल से निकल कर अपने काम पर लौट चुके हैं और ३३६ का इलाज करके उन्हें बीमारी की छुट्टी पर भेज दिया गया है। अनुमान है कि ४६२ व्यक्ति गंभीर रूप से अपंग हो जायेंगे। लापता लोगों में से १००५ व्यक्ति युद्धबंदी के रूप में पाकिस्तान से लौट चुके हैं।

उक्त लड़ाई में ५० करोड़ रु० खर्च हुए, जिसमें नष्ट हुआ और काम में आया साज-समान भी शामिल हैं।

सेना के विस्तार, आधुनिकीकरण और अन्य विकास कार्यों के लिए १९६४-६६ की अवधि के लिए ४००० करोड़ रु० क रक्षा योजना है, जो निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार लागू की जा रही है। आशा है कि इस योजना का खर्च योजना में निर्धारित आंकड़ों के अनुसार ही रहेगा रिपोर्ट में कहा गया है कि यह योजना चीन के खतरे को ध्यान में रख कर बनाई गई थी और यह खतरा अब भी है। पिछली लड़ाई के दौरान कुछ देशों द्वारा भारत को सामान की सप्लाई रोक देने के बाद रक्षा की जरूरतों के लिए विदेशों पर निर्भर न रहने और इस मामले में स्वावलम्बी बनने का विचार अब जोर पकड़ गया है। रक्षा मंत्रालय में रक्षा पूर्ति का एक नया विभाग खोला गया है जो आयातित सामान की जगह देश में सामान बनाने क प्रयत्न कर रहा है।

रिपोर्ट में बताया गया है कि साल के शुरू में कच्छ में पाकिस्तानी आक्रमण के मुकाबले में और बाद में युद्ध-विराम रेखा तथा अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर पाकिस्तानी आक्रमण का सामना करने में सेना ने क्या काम किया। १९६५ की घटनाओं में रक्षा की तैयारियों की योजनाओं की परीक्षा हुई और प्रशिक्षण, साज-सामान, आयोजन और युद्ध संचालन, और देश के सैनिकों का शौर्य इस परीक्षा में अच्छा उतरा। पाकिस्तान के साथ लड़ाई के दौरान देश पर चीनी खतरे को नजर-अन्दाज नहीं किया गया और हमारे जवान हर सम्भव कारवाई के लिए तैयार रखे गए। इस लड़ाई में प्राप्त अनुभव का अध्ययन किया जा रहा है और देश की सेना को सक्षम और सबल बनाए रखने के लिए उचित उपाय किए जा रहे हैं।

श्री स्व० म० हंसराज जी के विषय में कुछ महोदयों की

संक्षिप्त सूत्रों में सद्भावना

(प्रो० श्री दौलतराम जी शास्त्री अमृतसर)

****

१—१९०६ में ओरियन्टल कालिज के मुख्य संस्कृत प्राध्यापक महामहोपाध्याय श्री शिवदत्तजी को उनके छात्रों ने पूछा कि गुरु जी ! श्री ला० हंसराज प्रिंसिपल के विषय में आप की क्या सम्मति है ?

पण्डित जी ने कहा—कि श्री हंसराज जी नीति में विदुर, और धर्म में युधिष्ठिर हैं।

२—शांति कुटि शिमला में सनातन धर्म व आर्यसमाज तथा कुछ अन्य हिन्दू संस्थाओं के सम्मिलित संग में स्व० मालवीय जी ने महात्मा जी के लिये निम्नस्थ विशेषण कहे।

वे आदर्श त्यागी—भविष्यदर्शी पसीजें तो कोमल कमल से, अड़ें तो हिमालय से।

३—डी० ए० वी० कालेज के फारसी के प्रोफैसर मौलवी मीरांबक्श जी को छात्रों ने पूछा कि प्रो० साहिब सुना है कि आप को इसलामियां कालिज में बड़ी तनख्वाह मिल रही थी—आप ने उसे क्यों छोड़ा वह तो आपने दान का कालिज था।

मौलवी जी ने कहा कि—साहेब !

मेरा मक्का डी० ए० वी० कालेज—मेरा नबी ला० हंसराज ! मैं बलिहार दोनों पर।

४, श्री काली प्रसन्न चैटर्जी ट्रिब्यून के सम्पादक होशियारपुर के उत्सव पर गए। प्रातःकाल बौलियों पर स्नान करने गए। एक सज्जन ने उनको पूछा कि बाबू जी आप सारे भारत में घूमे कौन-कौन से देवताओं का दर्शन किया ? बाबू जी बोले (मखौली ढंग से) हम तो अनेक देखे उनमें यहां की बौलियां भी हैं। देवता तो मुझे कहीं नहीं मिले सिवाय लाहौर के ! वे भी देवता, दो ही। सज्जन कहने लगे कौन से दो ?

बाबू जी ! पास-पास ही रहते हैं दो वाले !!

एक हंसराज, और दूसरे लाजपतराय। बस दो ही।

५. भाई जगतसिंहजी डी.ए.वी. कालिज के मुख्योपदेशक हुए हैं। वे वीर रस की मूर्ति दूसरे भूषण कवि थे। जनता में जोश भरने के लिए वे भूषण-सी ही कविता पढ़ते थे। वे हमें सुनाया करते कि जब मेरा क्रोध सीमा पार हो जाता तो मैं महात्माजी के पास चला जाता। महात्मा जी (उनको भाई जी कहते थे) कहते भाई जी—कहो कैसी तबीयत है ? भाई जी कहते थे कि मैं इतने में ऐसा हो जाता जैसे कभी जन्म में भी क्रोध न किया हो।

सज्जनो :—महात्मा जी को महात्मा बनाने वाले इत्यादि अनेकों गुण थे। हमारा उन्हें और उनके गुणों को नमस्कार।

वे लोग ! वे बातें...

★ विश्व की कोई भी शक्ति मानव को गिरा नहीं सकती, मानव को गिराने वाला मानव स्वयं ही है।

—स्वामी विवेकानन्द

★ मैं नरक में भी उत्तम पुस्तकों के स्वाध्याय में व्यस्त रहना पसन्द करूंगा।

—लोकमान्य तिलक

★ भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए सबसे पहले स्वामी दयानंद ने आवाज उठाई।

—डा० केलकर

महर्षि दयानन्द के परवर्ती आर्य सामाजिक विद्वानों की संस्कृत साहित्य सेवा

(प्रो० भवानीलाल जी भारतीय एम० ए० पाली (राजस्थान)



(गतांक से आगे)

यह भाष्य ६ खण्डों में समाप्त हुआ है। भाष्य के आरम्भ में लेखक ने निम्न श्लोकों में अपने भाष्य विषयक प्रारम्भिक वक्तव्य को प्रस्तुत किया है—

दयानन्दः समाख्यातो ।
यस्माते च सरस्वती ।
एतन्नामान्वितः स्वामी
दयानन्दः सरस्वती ॥
सेतुर्लोक व्यवस्थाया
नौरासीद्वेदवारिधेः ।
वेदस्य स्थापना तेन
झकारि भूतले पुनः ॥
एक षष्ठितमे सूक्ते
सप्तमे मंडले तथा ।
द्वितीय मन्त्रे सम्प्राप्य
तद्भाष्यमगर्वा गतम् ॥
इत्यालोच्य प्राविन्नेन मया
ऽऽर्यमुनिनाऽधुना ।
शेष विधास्यते भाष्य
स्वामिमार्गानुगामिना ॥१

अर्थात् दयानन्द सरस्वती स्वामी नामक जो महात्मा हुए हैं उन्होंने धराधाम पर वेद की व्यवस्था और मर्यादा की स्थापना की। उन्होंने सप्तम मण्डल के ६१वें सूक्त के द्वितीय मंत्र पर्यन्त भाष्य किया, तत्पश्चात स्वर्ग सिधार गये। दुःखपूर्वक उस स्थिति का अनुभव कर मुझ आर्य मुनि द्वारा शेष ऋग्वेद का यह भाष्य स्वामी दयानन्द प्रदर्शित मार्गानुसार बनाया जा रहा है।

१. ऋग्वेद भाष्यम् श्रीमदार्यमुनि निर्मितम् संवत् १९७४ पृ० १

आर्यमुनिकृत ऋग्वेद भाष्य के प्रथम खण्ड में वेदविषयक विस्तृत विवेचनों के अनन्तर लेखक ने निम्न श्लोक में भाष्य आरम्भ करने की तिथि का निर्देश किया है—कृष्णा प्रियतमे मासे मार्गशीर्षे मनोरमे ।

त्रयोदश्यां तिथौ कारया मुनिनेवं प्रकाशिता ॥

सम्वत १९७४ मार्गशीर्ष कृष्णा त्रयोदशी को यह भाष्य आरम्भ हुआ। सप्तम मण्डल पर्यन्त भाष्य द्वितीय खण्ड में समाप्त हुआ जो १९७५ में विमें काशी के आर्ज प्रेस तथा चन्द्रप्रभा प्रेस में छापा। अष्टम मण्डल का भाष्य तृतीय तथा चतुर्थ खण्डों में समाप्त हुआ। ये दोनों खण्ड रामघाट निवासी बी. एल. पावगी के हितचिंतक यन्त्रालय में छापे। इनका प्रकाशनकाल क्रमशः १९७६ वि. तथा १९८० वि. है। नवम मण्डल का भाष्य ५ वें तथा छठे खण्ड में समाप्त हुआ। ये दोनों खण्ड क्रमशः काशी के चन्द्रप्रभा तथा हितचिंतक प्रेस में वि. सं. १९८० तथा १९७८ वि. में छापे। आर्यमुनि के ऋग्वेद भाष्य में प्रथम मन्त्र पुनः पद पाठ, तत्पश्चात् संस्कृत पदार्थ तथा भावार्थ दिया गया है। अन्त में प्रत्येक मन्त्र का हिन्दी पदार्थ तथा भावार्थ भी दिया गया है। भाष्य की संस्कृत भाषा सरल और सुगम है। संस्कृत भाषा का नमूना दृष्टव्य है—

'परमात्मोपदिशति-भो जना ! अस्मिन जगति अध्यापकानामुपदेशकानाञ्च सर्वोपरि पदे वर्तते, अतो भवद्भिः तत्पदस्य सर्वथैव रक्षणं कार्यम् अन्यच्च अयज्ञानाम कर्मणा निष्फल एव सन्तानो याति, यतश्च ईश्वराज्ञानुयायिनः ईश्वरनियमं पालयन्ति, एतएव ते सुखिनः, ये ईश्वरीय नियमान् न पालयन्ति तेषां मासा दिनान्यपि दुःखेन यांति, इत्यमि प्रायेणोक्तं तेषां मासा अवीरा एव अयन् अगच्छन्नित्यर्थः॥२

उपर्युक्त भाष्यों के अतिरिक्त स्वतन्त्र रूप से भी ऋग्वेद के हिन्दी भाषा में लिखे गये भाष्य उल्लेखनीय हैं। चतुर्वेद भाष्यकार जयदेव शर्मा विद्यालंकार का ऋग्वेद भाषा भाष्य,३ श्रीपाद दामोदर सातवलेकर का ऋग्वेद सुबोध भाष्य४ तथा विद्यानन्द विदेह कृत ऋग्वेद व्याख्या५ महत्वपूर्ण हैं।

यजुर्वेद भाष्य—स्वामी दयानंद के सम्पूर्ण यजुर्वेद पर संस्कृत तथा हिन्दी में जो महत्वपूर्ण भाष्य लिखा उस पर ब्रह्मदत्त जिज्ञासु ने एक विस्तृत विवरण लिखा है। यह यजुर्वेद के प्रथम दस अध्यायों पर ही लिखा गया है और रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा दो बार प्रकाशित हो चुका है। विवरणकार ने स्वामी दयानन्द के भाष्य पर विस्तृत टिप्पणियां दी हैं तथा भाष्य में प्रयुक्त संस्कृत को व्याकरण की दृष्टि से पुष्ट किया है। विवरणकार ने अपनी विशद भूमिका में वेद ज्ञान का स्वरूप वेद और उसकी शाखायें, देवतावाद, छांदोवाद, धातुओं का अनेकार्थत्व और यौगिकवाद, वेदार्थ की त्रिविध प्रक्रिया जैसे महत्वपूर्ण विषयों का सांगोपांग विवेचन किया है।

दयानन्द भाष्य के अतिरिक्त आर्यसमाजी विद्वानों ने यजुर्वेद पर कतिपय अन्य हिन्दी भाष्य भी लिखे हैं। जिन में जयदेव शर्मा विद्यालंकार का भाषा भाष्य, वैदिक संस्थान वृन्दावन द्वारा प्रकाशित यजुर्वेद भाष्य, श्रीपाद दामोदर सातवलेकर का सुबोध भाष्य तथा विद्यानन्द विदेह का यजुर्वेद व्याख्या ग्रन्थ महत्वपूर्ण है। लाला देवीचन्द ने स्वामी दयानन्द के यजुर्वेद भाषा भाष्य का अंग्रेजी में अनुवाद भी किया है।

सामवेद भाष्य— स्वामी दयानन्द का सामवेद पर कोई भाष्य उपलब्ध नहीं होता। सर्व प्रथम मेरठ निवासी प० तुलसी राम स्वामी ने सामवेद पर महत्वपूर्ण भाष्य लिखा यह संस्कृत तथा हिन्दी दोनों में लिखा गया है तथा दो भागों में स्वामी प्रेस मेरठ से छापा। अन्य हिन्दी भाष्यों में जयदेव शर्मा विद्यालंकार का भाषा भाष्य, वीरेन्द्र शास्त्री का सामवेद भाष्य हरिश्चन्द्र विद्यालंकार का उपासनापरक भाष्य,२ श्रीपाद दामोदर सातवलेकर का सुबोध भाष्य तथा लाला देवीचन्द का अंग्रेजी अनुवाद महत्वपूर्ण है।

अथर्ववेद भाष्य

स्वामी दयानन्द अथर्व वेद पर भी भाष्य रचना नहीं कर सके। सर्वप्रथम प्रयाग निवासी क्षेमकरणदास त्रिवेदी ने अथर्ववेद पर संस्कृत और हिन्दी में भाष्य लिखा। यह जानकर सचमुच आश्चर्य होता है। क्षेमकरण दास त्रिवेदी का प्रारम्भिक शिक्षण उर्दू और फारसी भाषा के माध्यम से हुआ था और वे जीवन भर रेलवे में कर्मचारी रहे, परन्तु अपने स्वाध्याय और अध्यवसाय के बल पर उन्होंने संस्कृत भाषा और वेदों पर असाधारण अधिकार प्राप्त कर लिया क्षेमकरण त्रिवेदी ने अथर्ववेद के प्रथम काण्ड का भाष्य संवत् १९६६ वि.(१९१२ ई०)

(शेष पृष्ठ ६ पर)

१. ऋग्वेद भाष्यम् — श्री मदार्यमुनि निर्मितम् प्रस्तावना पृ० ७५

२. ऋग्वेद भाष्यम् — श्री मदार्यमुनि निर्मितम् प्रस्तावना पृ० ४।

३. प्रकाशक—आर्य साहित्य मंडल, अजमेर।

४. प्रकाशक आर्य स्वाध्याय मण्डल पारडी।

५. प्रकाशक वेद संस्थान अजमेर

स्नायु-मण्डल का स्वाभाविक स्थिति में बने रहना ही हमारी स्वस्थता का द्योतक है। स्नायु-मंडल से प्रकृति- विरुद्ध कार्य लेने पर व्यक्ति का शारीरिक व आध्यात्मिक पतन हो जाता है। उत्तेजित स्नायु-मण्डल व्यक्ति के विचारों को विक्षुब्ध कर देता है। उत्तेजना के क्षणों में व्यक्ति निरंकुश और विवेकहीन हो जाता है। ऐसी स्थिति में वह स्वयं को ही एक मात्र सही व्यक्ति मानता है। उत्तेजित व्यक्ति की इन्द्रियां विवेक से विलग हो जाती हैं। ऐसा व्यक्ति प्रेत-बाधा से ग्रस्त व्यक्ति की तरह सन्निपात ग्रस्त हो जाता है। बात-बात में वह भड़क जाता है। उसके व्यवहार में कृत्रिमता और चिड़चिड़ापन छा जाता है। वह न तो सुख से खा पी ही सकता है और न चैन की नींद ही सो सकता है। मधुमक्खियों की तरह अनेक ऊंट-पटांग विचार उसके मस्तिष्क को त्रस्त करते रहते हैं। व्यक्ति में विद्रोह की भावना का पोषण भी स्नायु-मण्डल की उत्तेजना द्वारा ही किया जाता है।

अपने पर किये जा रहे अन्याय का प्रतिकार करने के लिए हर व्यक्ति क्रोध के रूप में उत्तेजित होता है। क्रोध व्यक्ति में जन्मजात उत्तेजना है। किन्तु जब व्यक्ति इस प्रकार की उत्तेजना को किसी बाह्य नशे के सेवन द्वारा तूल देने लगता है तो उसका मानसिक व शारीरिक क्षय होने लगता है। यही बात भूख, भोग व निद्रा के बारे में भी कही जा सकती है। कृत्रिम भूख लगाने के नाना प्रकार के चूर्ण और चटनियों को उदरस्थ किया जाता है। रसना को तृप्त करने के लिए विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट व्यञ्जनों का आविष्कार किया जाता है। लेकिन यह स्वाद ही आगे चल कर व्यक्ति को विभिन्न व्याधियों का शिकार बनाता है।

क्यों नशा ही हमारी प्रेरणा है ?

(ले०—श्री सुन्दरलाल जी बोहरा जोधपुर)



अजीर्ण, पेचिश, बवासीर, मधुमेह व लिवर द्वारा उत्पन्न अन्यान्य व्याधियोंको अंतिम सांस तक व्यक्ति को ढोना पड़ता है। इस तरह कृत्रिम भूख को उत्तेजित करने के लोभ में जहां एक ओर अनेक लोग युवावस्था में ही वृद्ध बन गये हैं, वहां दूसरी ओर असंख्य चिकित्सालय व चिकित्सक पल रहे हैं। किसी वैद्य ने अपनी खुमारी में कह दिया—पान से पाचन-व्यवस्था ठीक रहती है। फिर क्या चाहिए, लोगों ने इस तरह मुंह भर-भर कर खाने शुरू कर दिये कि देखकर ऊंट और बकरियों को भी लज्जित होना पड़ा। अब तक लखनवी नवाबों द्वारा प्रयुक्त विभिन्न मसालों युक्त पान की गिलौरियां न चबायी जाएं तब तक पान खाना ही पाप है। आखिर पाचन-व्यवस्था को सुधारना है, शरीर में मर्दानगी (!) का अनुभव जो करना है, बेचारे पनवाड़ियों के बाल-बच्चों का पालन जो करना है। और? और एकदम उजली सड़कों व फर्शों पर चलते हुए आधुनिक कला की विभिन्न डिजाइनें बनाना है।

किसी लफंगे ने कभी छाती ठोंक कर बात कह दी: बीड़ी सिगरेट के सेवन से जुकाम कभी भी नहीं होता। फिर क्या, फटाफट बीड़ियों के बण्डल खाली किये जाने लगे, सिगरेटों के खाली पैकिटों से सारी सड़कें, बसें और रेलगाड़ियां पाट दी गई। जिधर देखो उधर बस धुआं ही धुआं—हम किसी रेल के इंजिन या फैक्ट्री की चिमनी से कम थोड़े ही हैं। चिलम और हुक्का तो भारत की ग्राम्य और रईसी परम्परा के नाम से चल ही रहे हैं। भांति-भांति की चिलमें और ऊंची कीमतों के हुक्के बनाये जाने लगे। 'पूली छाप' 'गुजरातिन' लखनवी' 'खेती-बाड़ी' और भी न जाने कितने नामों व रंगों की तम्बाकू को सजा सजा कर मसनद पर सम्मान दिया गया। लेकिन फिर भी मजा नहीं आया। तब? तब 'वर्जीनिया-वधू' का आह्वान किया गया। प्लास्टिक और बैकेलाइट बाजार में आ ही चुके थे, अबाध गति से चुरुट बनाये जाने लगे। सस्तेपन और टिकाउपन के लोभ में साहब लोगों ने सिगार को पीना शुरू कर दिया। वस्तुतः आदमी को हमेशा समय के अनुसार ही चलना चाहिये। इंजिनों और चिमनियों के युग में हमें तदनुरूप ही आचरण करना चाहिए वरन हम 'जंगली' ही रह जायेंगे।

लेकिन अफीम का वर्णन किये बिना तो राजपूतों का इतिहास ही नहीं लिखा जा सकता। व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक अफीम तो गलना ही चाहिये, अन्यथा इस भूमि पर जन्म लेना ही निरर्थक है। अफीम खाने में कड़वी लगी तो उसे गूलर के पानी में घोल कर पिया जाने लगा। यदि किसी ने महफिल में बैठकर भी अफीम लेने से इन्कार कर दिया तो उसे चार आदमियों ने पकड़ कर उसके गले में अफीम को उतारा गया—सामाजिक तो आखिर अफीमची ही हुआ करते हैं। इस अफीम के लोभ में अनेक जागीरियां समाप्त हो गईं, फिर भी मर्दानगी और शूरत्व के लिए अफीम खायेंगे ही।

(क्रमशः)

पानीपत की घटना पर प्रधानमन्त्री का वक्तव्य

प्रधान मन्त्री, श्रीमती इंदिरा गांधी ने पानीपत की घटना के बारे में यह वक्तव्य जारी किया है।

पानीपत में १५ मार्च को जो काण्ड हुआ, उससे सारे देश को और मुझे भी गहरा धक्का लगा।

क्या हम भारत के महान सपूतों के आदर्शों को भूल गए हैं? क्या हमने स्वतन्त्रता की लड़ाई इसीलिए लड़ी और स्वतन्त्रता इसीलिए पाई कि हम अपने ही देशवासियों की हत्या करें? भारत के मान और स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए पानीपत में अनेक लड़ाइयां हुई हैं। क्या अब पानीपत के नाम पर यह कलंक लगेगा कि यहां ऐसे अमानवीय और नृशंस कार्य भी होते हैं।

सारे देश के प्रबुद्ध लोगों, विशेषकर कांग्रेस संगठन के कार्यकर्ताओं को इससे सबक लेना चाहिए और ऐसे नृशंस कार्यों के खिलाफ जनमत तैयार करना चाहिए।

श्री क्रांति कुमार, श्री सन्तराम लाम्बा और श्री दीवान चन्द टक्कर ने अपना सारा जीवन देश की सेवा में न्यौछावर कर दिया था और अब भी शहीदों की तरह उन्होंने प्राण दिए हैं।

महर्षि दयानन्द के........

(पृष्ठ ५ का शेष)

में प्रकाशित किया। पुनः क्रमशः सम्पूर्ण बीस काण्डों का भाष्य प्रयाग से प्रकाशित हुआ। अथर्ववेद पर जयदेव शर्मा विद्यालंकार ने भाषा भाष्य, श्री पाददामोदर सातवलेकर ने सुबोध भाष्य तथा लाहौर डी. ए. वी. कालेज के संस्कृत तथा दर्शनशास्त्रके प्राध्यापक प. राजाराम ने भी भाषा भाष्य लिखा। (क्रमशः)

१. वेदवाणी काशी के विशेषांक के रूप में

२. प्रकाशक-सार्वदेशिक प्रकाशन लि. दिल्ली सम्वत २०१२ वि.

३. आर्ष ग्रन्थावली लाहौर के अन्तर्गत।

(गतांक से आगे)

महर्षि दयानन्द और विश्व विजय को भव्य भावना

महर्षि दयानन्द जी भारत को उन्नति के शिखर पर पहुँचा कर भारत को विश्व का गुरु बनाना चाहते थे। चक्रवर्ती वैदिक साम्राज्य स्थापित करना चाहते थे। ऐ विश्व के आर्य भाई बहनो हम महर्षि दयानन्द जी के अधूरे कार्यों को पूर्ण करने का सत्य संकल्प करके विश्व में अपना चक्रवर्ती वैदिक साम्राज्य स्थापित करके पुनः प्रेम की गंगा बहा कर वेद के पवन संदेश को कृण्वन्तो विश्व मार्यम के उपदेश को चरितार्थ करें।

आर्य समाज को विश्व के मानव समाज का प्रदर्शक बनाने में वह वेद विद्या के प्रचार में अपनी सारी शक्तियों को लगाकर अपना जीवन यज्ञ मय बनायें। आज पंजाब केसरी लाला लजपतराय, महात्मा हंसराज शहीदे आजम श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द स्व० लाल बहादुर जी शास्त्री जैसा आदर्श त्यागी हैं। भारतीय गौरव के सूर्य शिवाजी, महाराणा प्रताप अमर शहीद धर्मवीर पं० लेखराम आजादी के दिवाने वीर भगतसिंह देवता स्वरूप भाई परमानन्द, देशभक्त कुंवर चांदकरण जी शारदा, वीर सावरकर जैसे महापुरुषों की आवश्यकता आर्य समाज को है। ऐ महर्षि दयानन्द के सैनिकों अपने सारे मतभेदों को भूलकर वेद प्रचार करने में जुट जाओ। ओ३म की पवित्र पताका को धारण करके वेद पथ पर आगे बढ़ो। अपनी संगठन शक्ति को बढ़ाओ, विश्व की सेवा के लिये अपने तन, मन, धन तुच्छ सर्वस्व की आज भेंट चढ़ा दो।

सृष्टि के आदि कालसे अब तक का इतिहास ध्यान पूर्वक पढ़ने से यह ज्ञात होता है कि पुरुषार्थी मनुष्य के लिए कोई कार्य असम्भव नहीं है। मनुष्य शक्तियों का पुञ्ज है। अतः अपनी शक्ति को पहचानो, अपनी अन्तर आत्मा के सिंह नाद को ध्यान पूर्वक सुनो। राष्ट्रिय चेतना के अग्रदूत महर्षि दयानन्द थे इस बात को आज सब भली प्रकार जानकर उनके दिव्य गुणों को उपदेशों को धारण करके अपना जीवन वेदोक्त बनाकर अमर बनो।

राष्ट्रीय चेतना के अग्रदूत
महर्षि दयानन्द

लेखक : वेदपथिक श्री पं० धर्मवीर आर्य झंडाधारी, व्याख्यान भूषण नई दिल्ली—५

****

आवश्यक नोट :–

सृष्टि के आदिकाल से अब तक कोई भी विश्व का वैज्ञानिक नभ के असंख्य तारों की ठीक प्रकार गणना नहीं कर पाया है। उसी प्रकार महर्षि दयानन्द जी के अनगिनत उपकार को गिनना या शब्दों की सीमा में लाना लेखक की लेखनी से सर्वथा परे है। महर्षि दयानन्द के उपकारों का ऋणी आज संसार में अनीश्वर वाद और भौतिकवाद भोग वाद की ओर अबाध गति से मनुष्य बढ़ रहा है, पर यह याद रहे ईश्वर और धर्म को अपनाये बिना मनुष्य लाख यत्न करने पर भी लाख जन्म में भी सुख शान्ति तथा आत्म ज्ञान का अधिकारी कदापि नहीं बन सकेगा। महर्षि दयानन्द के गुणों का आओ आज हृदय में ध्यान कर के हम भी आज बोध प्राप्त करके इस जीवन यात्रा को सुखी बनाएं।

सावधान !

(रचयिता –प्रकाशचन्द्र कविरत्न, अजमेर)

सावधान हो, सावधान हो सुस्ती छोड़ जवान ॥
शस्त्र सम्भाल हाथ में तू बन वीर प्रताप शिवाजी
मातृभूमि की रक्षा करने, लगा जान को बाजी
ले उमंग निज अंग - अंग मे
सिंह बब्बर - सा कूद जंग मे
बात अरे ! डर की क्या ! तेरा रक्षक जब भगवान संग में,
चरण बढ़ाये जा निशङ्क, आगे तू छाती तान।
सावधान हो, सावधान हो, सुस्ती छोड़ जवान ॥
भ्रष्टाचारी, प्रपञ्चियों की सारी पोल खोल दे
देश-द्रोहियों के दल पर तू धावा विकट बोल दे
ऐंठ, अकड़, मद, मान झाड़ दे
मार - मार हुलिये बिगाड़ दे,
चारों खाने चित पछाड़ दे
पूर्ण विजय की ध्वजा गाड़ दे
फाड़ कलेजा हिरणकश्यप का तू नरसिंह समान।
सावधान हो, सावधान हो, सुस्ती छोड़ जवान ॥
छोड़ व्यर्थ की बात बनाना बिगड़ी बात बना ले
कर 'प्रकाश' सेवा स्वदेश की जग में कीर्ति कमा ले
जग में अपना अमर नाम कर
देश सुखी हो वही काम कर
स्वदेश के ही लिए समर्पण
निज तन, मन, धन, धरा धाम कर
स्वदेश-भाषा, स्वदेश-भूषा, स्वदेश के हों गान।
सावधान हो, सावधान हो, सुस्ती छोड़ जवान ॥

वेद विश्व विद्यालय

विश्व की समस्त राष्ट्रभाषाओं के ज्ञाता वेदों के प्रकाण्ड धुरन्धर विद्वान उपदेशकों को तैयार करने के लिये विश्व में व्यापक वेद विद्या के प्रबल प्रचार के लिए हमें वेद विश्व विद्यालय का निर्माण करना है। नालन्दा विश्वविद्यालय के समान वेद विश्वविद्यालय का निर्माण और सञ्चालन भारत की राजधानी में करना है। इसके बिना महर्षि के वैदिक मिशन का ठोस और व्यापक प्रचार नहीं हो सकेगा।

आज हमें हजारों, उपदेशकों, सन्यासियों, वाणप्रस्थियों, प्रचारकों के ठहरने स्वाध्याय करने तथा उनके भोजन व विश्राम की व्यवस्था करनी है। विश्व के समस्त वेद भक्तों के नाम यह सुझाव है। इस कर्तव्य के पालन में सब जुट जायें।

वेद प्रचार से ही विश्व शांति होगी

वेद विश्व विद्यालय निर्माण समिति, नई दिल्ली के मंत्री वेद पथिक पं० धर्मवीर जी आर्य झंडाधारी ने आज गिरगाव, बम्बई से अपने एक प्रेस वक्तव्य में यह बतलाया है कि जब तक विश्व का मानव समाज वेदों की शिक्षाओं को अपनाकर अपना जीवन वेदोक्त नहीं बनायेगा, तब तक विश्व शांति का होना सर्वथा असम्भव है।

आप ने अपने वक्तव्य में यह भी बतलाया है कि वेदों का अनुवाद और प्रकाशन का कार्य विश्व की समस्त प्रमुख राष्ट्र भाषाओं में किया जायेगा।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

भारत सूचना

तुंगभद्रा नहर ये सहाय..

केन्द्रीय सिंचाई .. मंत्री श्री फखरुद्दीन अली .. ने श्री कोल्ला वेंकैय्या तथा चार अन्य सदस्यों के प्रश्न के उत्तर में आज लोकसभा को बताया कि तुंगभद्रा योजना के लिए आंध्र प्रदेश सरकार को १८ दिसम्बर, १९६५ को १ करोड़ रु० और ३१ जनवरी, १९६६ को ६० लाख रु० ऋण मंजूर किया गया। राज्य सरकार ने इस योजना के लिए १ करोड़ ६८ रु० का और ऋण मांगा है।

आकाशवाणी से बच्चों के कार्यक्रम का समय

गर्मी की छुट्टियों में बच्चों के कार्यक्रम अधिक अच्छी तरह सुनवाने के लिए, १५ मई से ६ जुलाई तक वृहस्पती और शनिवार के दिन बच्चों का कार्यक्रम दिल्ली 'क' से सुबह १० से १०-३.. बजे तक प्रसारित किया जायगा।

रविवार को बच्चों के कार्यक्रम का समय पहले की तरह .. से १०-४५ बजे तक प्रसारित किया जायगा।

दया याचिका..

आज लोक सभा में .. शान के प्रश्न के उत्तर में गृह मंत्रालय में मंत्री श्री जयसुखलाल हाथी ने बताया कि १९६५ में राष्ट्रपति ..याचि.. मृत्यु दंड ..न्दियों की .. ने आजीवन ..रिवर्तित कर दिया।

क.. में पाकिस्तानी एजेन्टों की गतिविधियां

आज लोक सभा में बड़े और तीन अन्य सदस्यों के प्रश्न के उत्तर में गृह मंत्रालय में मंत्री श्री हाथी ने बताया कि इस बात का कोई सबूत नहीं मिला है, कि जम्मू व कश्मीर में पाकिस्तान एजेन्ट फिर सक्रिय हो गए हैं। फिर भी उपयुक्त सतर्कता बरती जा रही है।

अंतिम तारीख ३१ मार्च

भारत सरकार ने स्वर्ण (नियन्त्रण) नियम, १९६६ के मसौदे पर लोगों के विचार और सुझाव प्राप्त करने की अवधि ३१ मार्च १९६६ तक बढ़ा दी है।

यह सूचना वित्त मंत्रालय के राजस्व और बीमा विभाग की एक विज्ञप्ति में दी गई है।

..र्में रजिस्टर होंगी

सरकार को जरूरी सामान की सप्लाई नियमित होती रहे, इसके लिए पूर्ति और विदेशी फर्मों से पहले से अपने नाम रजिस्टर कराने को कहा है।

जनवरी १९६६ में ६६ करोड़ रु० का निर्यात

जनवरी १९६६ में ६६ करोड़ रु० का माल विदेशों को भेजा गया। पिछले वर्ष की इसी अवधि (जनवरी १९६५) के मुकाबले इस बार २ करोड़ १० लाख रु० का निर्यात अधिक हुआ। इस बार सभी वस्तुओं के निर्यात में लगभग समान वृद्धि हुई।

ग्रामीण उच्च शिक्षा की राष्ट्रीय परिषद में विचार

१६ मार्च, १९६६ को यहां ग्रामीण उच्च शिक्षा की राष्ट्रीय परिषद की बैठक हो रही है। बैठक की अध्यक्षता केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री, श्री मो.. करीम चागला क..

विश्वविद्याल.. के लिए अनुदान

श्री बी० एन० भार्गव के प्रश्न के उत्तर में केन्द्रीय शिक्षा मंत्री श्री मोहम्मदअली करीम चागला ने आज राज्य सभा में बताया कि १९६५-६६ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने विश्वविद्यालयों को छापेखाने खोलने अथवा उन में सुधार करने के लिए ६, ८४, ६५८, ८७ रु० अनुदान दिया।

आवश्यकता है

एक सुयोग्य उपदेशक की आवश्यकता है जो कि प्रचार के काम के अतिरिक्त आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा दिल्ली के कार्यालय को भी सम्भाल सके। वेतन योग्यता और अनुभव के आधार पर दिया जावेगा। दिल्ली या दिल्ली के समीप रहने वाले महानुभाव को प्रधानता दी जावेगी। प्रार्थना पत्र निम्नलिखित पते पर आने चाहियें।

कृष्ण चन्द्र रल्हन

प्रधान—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा मार्फत जे-२५ साऊथ एक्सटेंशन पार्ट-१ नई दिल्ली—३

नये बालकों का प्रवेश

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के विद्यालय विभाग में नये बालकों का प्रवेश वार्षिकोत्सव पर ११ से १४ अप्रैल १९६६ तक होगा। गुरुकुल की उपाधियां सरकार और विश्वविद्यालयों द्वारा स्वीकृत हैं। आश्रम प्रणाली, शुद्ध जलवायु, उत्तम आचार व्यवहार इस संस्था की मुख्य विशेषतायें हैं। प्रवेशार्थ प्रार्थना पत्र तथा नियमावली गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय जिला सहारनपुर से मंगाये जा सकते हैं।

धर्मपाल विद्यालंकार
स० मुख्याधिष्ठाता

आर्यसमाज, गोविन्द नगर (ब्लाक नं० २) कानपुर

स्वतन्त्र वीर सावरकर के निधन पर शोक प्रस्ताव पारित किया गया।

आर्य समाज में होली का त्योहार भी विशेष आकर्षक ढंग से मनाया गया। इस अवसर पर श्री देवीदास जी आर्य ने होली के महत्व पर भाषण दिया। सदस्यों ने चन्दन और अबीर से एक दूसरे का स्वागत किया। गले लगाया।

धर्मवीर पं० लेखराम दिवस पर भी आम सभा की गई, जिस में श्री देवीदास आर्य का भाषण हुआ।

भवदीय
मोहनलाल
मन्त्री समाज

महर्षि दयानन्द

(पृष्ठ ८ का शेष)

आप ने बतलाया है कि नई दिल्ली में वेद विश्व-विद्यालय का निर्माण होगा। इस वेद विश्वविद्यालय के भवन पर तथा वेदों के अनुवाद और प्रकाशन पर दस करोड़ रुपयों का प्रारम्भिक व्यय होगा। यह ज्ञातव्य है कि विश्व शांति का तथा वेदों का पावन संदेश लेकर पं० धर्मवीर जी आर्य विश्व के राष्ट्र नायकों से मिलने के लिये तथा उन्हें वैदिक साहित्य का उपहार भेंट करने के लिये दिल्ल से शीघ्र ही विदेशों की यात्रा पर प्रस्थान करने वाले हैं।

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० २०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक १४) २१ चैत्र २०२२ रविवार—दयानन्दाब्द १४१—३ अप्रैल १९६६ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तयः

अयमग्निरुपमघः

यह अग्नि : अग्नि रूप परमात्मा ही उपमघः—प्राप्त करने योग्य है। वही प्रकाश-दाता परमेश्वर सदा पूजा करने के योग्य है। वही उपासक के लिए उपासना के योग्य है। उसी को पाना होगा।

उदेहि मृत्योर्गम्भीरात्

हे मानव ! अपने इस जीवन में इस गहरी मौत से उदेहि—ऊंचा उठ जा। मौत से किसी प्रकार का भी भय न कर। मौत को छूने न दे। तेरा जीवन अविनाशी जीवन बनता जाए। मौत से मरना नहीं।

कृष्णाच्चित् तमसस्परि

और हे वीर मनुष्य ! यह जो पाप ताप का काला-काला अन्धकार है, जिससे जीवन भी काला बन जाता है। इससे भी तू परे रह। पाप का अन्धकार भी तुझे स्पर्श न करने पाए।

ऋषि बोधप्रतिबोधौ

तेरे पास तो ये दोनों बोध और प्रतिरोध रूप में ऋषि रहते हैं। बोध का अर्थ है ज्ञान और प्रतिरोध का अर्थ है स्मरण शक्ति के—अर्थात् बुद्धि और मन तू बुद्धि और मन का मालिक है। ज्ञानी और बुद्धिमान है। तुझे क्या चिन्ता— अथर्ववेद से

वेदामृत

राजा व शासक के कर्तव्य

वि न इन्द्र मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्यतः।
अधमं गमया तमो यो अस्मां अभिदासति ॥

अथर्व वेद काण्ड प्रथम सूक्त २१ मन्त्र २

अर्थ—हे (इन्द्र) राजन ! शासक आप (न.) हमारे सारे (मृधः) शत्रुओं को (वि जहि) मार देवें और (नीचा) नीच पुरुषों को (नीचा यच्छ) नीचे कर दो, दबा दो। जो भी [पृतन्यतः] सेना से हमला करते है उन शत्रुओ को कुचल दो। उन को [अधमं] नीच मण्डली को [गमया] पहुचा दो [तमः] अन्धेरे में जेल में व मृत्यु की कोठरी में डाल दो [य] जो भी [अस्मान्] हम को [अभिदासति] अपना दास बनाना चाहता है।

भावार्थ—राज्य के ऊंचे आसन पर बैठ कर शासन चलाने वाले राजन् ! आप इन्द्र है। जो भी शत्रु बन कर या नीचता के विचारों से भर कर राष्ट्र को हानि पहुंचाना चाहते हैं। सेना लेकर राष्ट्र की भूमि भवन अथवा सम्पत्ति के भण्डारों को हथियाना चाहते है। हमारी आजादी को समाप्त कर के प्रजा जनता को पराधीनता की बेड़ियो मे बांधना चाहते हैं। उन सब शत्रुओं को, राष्ट्र-घातकों, देश के एकता के सूत्र को तोड़ने वाले देश-द्रोहियों को, विगठन पैदा कर के राज्य के जन-जीवन की शांति से खिलवाड़ करने वाले वैरी विरोधियों को पूरी शक्ति से कुचल कर रख दे। उन को बन्दी बना डाल। उन को पूर्णतया दबा दे—सं०

ऋषि दर्शन

दुष्ट शत्रूणां पराजयार्थम्

हे राष्ट्र के नायको ! प्रजा के लोगों व वीर पुरुषो ! आप सारे मिलकर दुष्ट शत्रुओं को पराजित करने के लिए सदा ही तैयार रहो। उनसे संग्राम करते रहो।

सदा विजयं प्राप्नुमः

हम सदा ही ऐसे समाज धर्म और राष्ट्र का घात करने वाले अत्याचारी शत्रुओं से टक्कर लेते हुए विजय प्राप्त करें उनको परास्त करके विजयी बनें।

त्रिविधां सभां पान्तु

सभा तीन प्रकार की होती है। राजार्य सभा विद्यार्य सभा और तीसरी धर्मार्य सभा। राष्ट्र को सुखी बनाने के लिए इन तीनो सभाओं की पालना करते रहें। राज्य, विद्या, और धर्म का ठीक-ठीक काम चले।

तत्रैव प्रजाः सुखयः

उस देश में, उस राज्य में सारी प्रजा, सारे लोग अत्यन्त सुखी होते हैं। यह स्वाभाविक ही है। जहां पर उत्तम सज्जन होते हैं, वहां पर जनता को हर प्रकार का जीवन में सुख होता है। हर विभाग मे स्तर ऊंचा होता है।

भाष्य भूमिका से

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

धार्मिक चर्चा—

स्तुति

(ले०—स्वा० लालचन्द्र जी)

****

अस्मै ते प्रतिहर्यते
जातवेदो विचर्षणे।
अग्ने जनामि सुष्टुतिम् ॥
ऋ ८।४३।२।

हे सर्वज्ञ, सर्वैश्वर्य के स्वामी, हे ज्ञान स्वरूप, सर्व प्रकाशक, प्रकाश स्वरूप, हे सर्व द्रष्टा,, प्रत्येक जीव को चाहने वाले तेरी मैं उत्तम स्तुति किया करूं।

भगवान प्रत्येक जीव को चाहते हैं सभी प्राणियों का मंगल करते हैं। भगवान की स्तुति उनके दिव्य गुण धारण करने से होती है।

सत्वं विप्राय दासुषे
रयिं देहि सहस्त्रियम्।
अग्ने वीर वतीं मिषम् ॥
ऋ ८।४३।१५

हे जीवन दाता हे तेजस्वरूप हे सर्व नियन्ता! उदारचरित दिव्य गुण सम्पन्न मेधावी मनुष्य को सहस्रों सुख और ऐश्वर्य और वीरता युक्त अन्न दिया करता है।

दिव्य गुण सम्पन्न मनुष्य भगवान को प्यारा लगता है चूंकि वह भगवान को अनुकूल उदारता और श्रेष्ठता का व्यवहार करता है। भगवान उसे हर प्रकार यश, मान, संपदा देता रहता है। दिव्य गुण संपन्न मानव ऐश्वर्यवान होता है, मतिमान होता है और कीतिमान होता है।

यदङ्गदासुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।
तवेत्तत्सत्यमङ्गिरः ॥
ऋ—१।१।६

हे प्रेममय प्रभो, हे परम सुहृद ! तू दानशील मनुष्य का नित्य कल्याण करता है, यह तेरा सत्यव्रत है।

स्तुति करने का वेद भगवान का आदेश

प्राग्नयेवाचमीरय वृषभाय
क्षितीनाम् ।
सनः पर्षद अतिद्विषः ॥
ऋ १०।१८७।१॥

मनुष्यों के अभीष्टों को बरसाने वाले जीवन - दाता प्रभु के लिए अपनी वाणी को प्रकृष्टता से प्रेरित कर। वह हमें द्वेषों से पार लगावेगा।

अग्निदेव वृषभ है। अपनी कृपा बरसाते हैं। भगवान में संकीर्णता नहीं, संकोच नहीं। भगवान मनुष्यों की भांति कृपण नहीं। कृपण मनुष्य तो है ही तरस के योग्य, क्योंकि ऐश्वर्यवान होकर भी वह उदार नहीं। भगवान से उदारता सीखनी चाहिए। अपना हृदय उदार बनाना चाहिए। भगवान द्वेषों को समाप्त कर देते हैं। जब मनुष्य घर-घर वासी हृदय विहारी को अपने साथ में अनुभव करता है तो ईर्ष्या और घृणा नहीं करता इस प्रकार द्वेष का शमन होता है। और भगवान की स्तुति करने वाले को वेद भगवान आदेश दे रहे हैं। स्तुति तब ही पूरी समझनी चाहिए जब कि उपास्य देव के अनुकूल जीवन व्यवहार होने लगे।

उपासना

उपत्वा अग्ने दिवेदिवे
दोषावस्तर्धियावयम्।
नमो भरन्त एमसि ॥
ऋ० १।१।७

राजन्त मध्वराणां
गोपामृतस्य दीदिविम्।
वर्धमानं स्वेदमे ॥
ऋ० १।१।८

हे अग्ने ! हे सर्वश्रेष्ठ प्रभो ! हम प्रतिदिन रात और दिन के समय बुद्धि व कर्म से नमस्कार की भेंट लाते हुए तेरे समीप आ रहे हैं।

हे भगवान ! हम तेरे समीप आए हैं, तू हिंसा रहित सत्कर्मों का रक्षक है तू हिंसा रहित सत्कर्मों में विराजता है तू ऋत का रक्षक है तू अपने सामर्थ्य में प्रकाशमान है।

भगवान स्व-सामर्थ्य में विराजता है सारी सृष्टि का वह आधार है। उसी एक अद्वितीय प्रभु का आश्रय ही परम आश्रय है। वह सर्वाधार जीवन का जीवन आत्मा का आत्मा परमात्मा है हम अपने आचरण द्वारा उसके निकटतम होवें। इस छोटे से लेख में मैं केवल ऋग्वेद के ही कुछ मंत्र दे सका।

वेद का स्वाध्याय करना स्फूर्ति दायक है इस स्वाध्याय से चेतना का विकास होता है। इस स्वाध्याय से हृदय निर्मल होता है बुद्धि उज्ज्वल होती है। इस स्वाध्याय से आस्था स्थिर होती है। मनुष्य में श्रद्धा की उत्पत्ति वेद के स्वाध्याय द्वारा बहुत सुगमता से होती है यह हमारा वर्षों के स्वाध्याय का अनुभव है। अग्निदेव का चिंतन उन्हें अपने आदर्श प्रेरक और रक्षक के रूप में देखने से मनुष्य अभय हो जाता है। विपत्ति में भी धैर्य स्थिर रखने के लिए अग्निदेव की उपासना बहुत उपयोगी अनुभव में आई है।

प्रतिदिन श्रद्धा और विश्वास से अग्नि सूक्तों के स्वाध्याय से सामर्थ्य की वृद्धि होती है निराशा दूर होती है और मनुष्य स्वावलम्बी रहता हुआ अग्निदेव की रक्षा में दिनोंदिन अधिकाधिक स्वस्थ रहता हुआ उन्नत होता है।

सच्चे सेवक हो लो

(रचयिता—श्री प्रकाशचन्द्र जी कविरत्न अजमेर)

भारत माता की जय बोलो॥

जगती में वो जन नीका है, जो सेवक निज जननी का है
जो सेवा इसकी करे, अमर हो जाता नाम उसी का है
भूलो न कभी तुम पर भारी, ऋण इस पावन धरती का है
इस में ही जन्मे, इस ने ही, पालन भी किया सभी का है
मन, वचन, कर्म से मातृभूमि के तुम सच्चे सेवक होलो।
भारत माता की जय बोलो ॥

निज गौरव पर मर मिटने का, पैदा दिल में अरमान करो
शारीरिक बल के साथ-साथ आत्मा अपना बलवान करो
है लक्ष्य निकट ही यदि मन में, तुम ध्रुव संकल्प महान करो
निर्माण और करिये अवश्य, पहले चरित्र निर्माण करो
औरों को शिक्षा दो पीछे, पहले अपने कल्मष धो लो
भारत माता की जय बोलो ॥

तुम याद करो तो अपने उन पूर्वज वीरों, रणधीरों को
रण-मध्य जिन्होंने शयन हेतु, था सेज बनाया तीरों को
कितनों ने किया देश हित बलि, धन वैभव स्वस्थ शरीरों को
घट अनीति का फोड़ा तोड़ा, परवशता की जंजीरों को
परमार्थ-प्रेम रस वह 'प्रकाश' अपने भी जीवन में घोलो।
भारत माता की जय बोलो ॥

वे लोग ! वे बातें...

★ भूदान आन्दोलन के प्रचार में हिन्दी ने मेरी बड़ी सहायता की।

—आचार्य विनोबा भावे

सम्पादकीय—

आर्य जगत्

वर्ष २६] रविवार २०२२, ३ अप्रैल १९६६ [अंक १४

पंजाब का भीषण काण्ड

कांग्रेस कार्यकारिणी ने श्री कामराज की अध्यक्षता में पंजाबी भाषा के आधार पर अकालियों की धमकियों के सामने झुक कर पंजाब प्रांत को बांटने का एकदम निर्णय कर दिया। उसका प्रभाव पंजाब के एकता प्रेमियों पर पड़ना स्वाभाविक था। अब तक तो कांग्रेस गले से चिल्ला २ कर स्वयं यह कहती रही है कि इस प्रांत का विभाजन नहीं किया जा सकता। स्वर्गीय प्रधानमन्त्री पं० नेहरू जी की आंखों के सामने मा० तारासिंह ने भूख हड़ताल रखी। अकालियों ने गड़बड़ भरा आन्दोलन किया। पर रिजनल फार्मूला तो मान लिया गया किन्तु प्रान्त का बटवारा किसी भी रूप में नहीं माना पिता ने जिसे किसी प्रकार भी न स्वीकार किया, उसे अब उन की पुत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने प्रधान मन्त्री के आसन पर बैठ कर मानने में देर न की। जो बात पिता के विचार में सर्वथा अनुचित और गलत थी, वही बात पुत्री के विचार में उचित और ठीक है। इस पंजाब को छोटे २ भागों में बांटना मान लिया। एकता के शरीर पर छुरी फेर दी गई।

इस बटवारे के निर्णय से पंजाब में उथल-पुथल मच गई। एक ओर जनसंघ के नेता वीर यज्ञदत्त जी शर्मा ने अमृतसर में कटड़ा भाई सन्तसिंह के खुले चौक में इस कांग्रेस के निर्णय के विरोध में अपना अनशन आरम्भ कर दिया। दूसरी ओर देहली में आर्यसमाज के नेता स्वामी सत्यानन्द जी ने अपनी जान की बाजी लगा दी। पटियाला तथा अम्बाला में भी अनशन व्रती बैठ गए। पंजाब के अनेक बड़े - बड़े नगरों में इतनी व्यापक हड़ताल हो गई जिसका उदाहरण गत इतिहास में कम मिलता है। सारा हिन्दु समाज मिल गया। कांग्रेसी भाई भी बटवारे के निर्णय से दुःखी हो गये। आर्यसमाज, जनसंघ तथा पंजाब एकता समिति के सारे नेता मिल गये कांग्रेस सरकार शायद अपने दिल में हिन्दुओं को कमजोर भेड़ें समझती रही है। वह मुसलमानों, अकालियों व नागाओं के सामने नाक रगड़ना जानती है। देशभक्त हिंदु समाज को मारती रहती है। पंजाब में हिंदु समाज ने अपने त्याग, बलिदान तथा एकता का भारी परिचय दे कर हाईकमान और सरकार के दिल से अब भ्रम दूर कर दिया है कि हिंदु भेड़ें नहीं हैं।

इतने दिनों तक करोड़ों रुपए की व्यापार की हानि करके बाज़ार बन्द रखना हिन्दुसमाज के त्याग, बलिदान का चमकता उदाहरण है। पंजाब में श्री ला० जगत-नारायण जी, श्री यश जी, श्री वीरेन्द्र जी, श्री केशवचन्द्जी, डा. बलदेव-प्रकाश जी, ला. रामगोपाल जी शाल वाले आदि नेताओं ने मिलकर जो काम किया है—उसकी स्मृति सदा रहेगी। वीर यज्ञदत्तजी की भूखहड़ताल खुले मैदान में थी। इस महान् बलिदान ने जनता में कितना जोश भर दिया। सब नगरों में जवानों, नर-नारियों ने जो जलूसों का प्रदर्शन किया, वह इतिहास के अध्याय बन गए हैं। पंजाब में कामरेड रामकिशन जी की पुलिस ने जो-जो भीषण अत्याचार किये—उनके लिए श्री यश जी ने तथा ला. जगत नारायण जी व श्री वीरेन्द्र जी आदि नेताओं ने जो कुछ कहा, लिखा है—उससे तो जलियांवाला बाग तथा मार्शल ला की याद ताजा हो जाती है। उसके लिए जांच करने की चारों ओर से आवाज़ उठ रही है। अत्याचार चले जाते हैं पर उनका अत्याचार उनके जीवन पर सदा के लिए काला टीका लगा देता है।

कामरेड आज पंजाब के मुख्य मन्त्री हैं—पर, हमेशा यह आसन उन के पास रहने का नहीं। आसन वाले बदलते रहते है। पर उन के इस युग में लोगों पर, बच्चों पर, देवियों पर तथा मन्दिरों के पुजारियों पर जो-जो कुछ किया गया, वे धब्बे धुल नहीं सकेंगे—जिन को हानि पहुँची है उन से तो सब को आन्तरिक सहानुभूति है। पंजाब में इन अत्याचारों का इतिहास वातावरण शांत होने पर इकट्ठा कर के लिखा ही जाना चाहिए। हम पञ्जाब के नेताओं को इस एकता पर, जनता को महान त्याग पर तथा बलिदान पर बधाई देते हैं। अब हाईकमान उन को भेड़ें नहीं मानेगा। उस की भी आंखें खुल गई हैं। आर्य समाज ने भी अपने जीवन का परिचय दे दिया है। परम्परा कायम रखी है।

—त्रिलोक चन्द्र

आर्य समाजों से

पञ्जाब में आर्य समाज एक जागता हुआ विशाल आंदोलन है। इस के पास सतर्क नेता हैं, उत्साही युवक हैं, भक्ति भाव भरी बहिनें तथा इस की आवाज पर सब कुछ देने वाली जनता है।

आर्य समाज के पास अपना संगठित प्रचार विभाग है। बड़ा प्रभावशाली प्रैस है। उत्तम प्लेट फार्म हैं। बड़े २ शिक्षणसंस्थान हैं। कोई भी कमी नहीं है।' आर्य समाज का प्रान्त में बड़ा सुन्दर संगठन है। सारी जनता आर्य समाज के कार्यक्रम पर बड़ी श्रद्धा से चलती है!

प्रचार की इस समय बड़ी आवश्यकता है। अनेक प्रकार के नये २ संप्रदाय पैदा होकर लोगों को विशेष कर स्त्रियों की श्रद्धा का अनुचित लाभ उठा रहे हैं। कहीं आनन्दपुरियों का जोर तो कहीं पर ब्रह्म कुमारियों का प्रचार है।' व्यास वाले राधास्वामियों का काम जारी है। अनेक अखाड़े व साधुओं के डेरे अपने काम में लगे हुए हैं। सन्त भी अपनी सन्तानियां बनाते जाते हैं। इस प्रवाह को रोकने के लिए प्रचार की बड़ी आवश्यकता है। आर्य समाज के सिवाय इस अन्ध श्रद्धा के प्रवाह को रोकना और किसी के बस का नहीं है। इस लिए अब हर एक नगर व कस्बे की आर्य समाज को चाहिए कि वह अपने २ समाज का जलसा करने का प्रबन्ध करे। प्रत्येक समाज जलसे के अतिरिक्त कथा आदि के प्रचार का प्रबन्ध करे। इस प्रचार की आज के युग में बड़ी आवश्यकता है—सं.

आर्य समाज लक्ष्मणसर (अमृतसर)

धर्म प्रेमी जनता को यह जान कर खुशी होगी कि आगामी रविवार ३ अप्रैल को आर्य समाज लक्ष्मणसर के साप्ताहिक अधिवेशन में बम्बई के प्रतिष्ठित आर्य-उपदेशक लाल सिंह जी आर्य एक अत्यन्त उपयोगी और सारगर्भित भाषण देंगे जिसमें मादक द्रव्यों विशेषतः तम्बाकु, चाय आदि के प्रयोग से होने वाली हानियों और इन से बचने के उपायों पर प्रकाश डालेंगे।

—रुद्रदत्त शर्मा
प्रधान समाज

स्वास्थ्य विचार :—

भोजन द्वारा स्वास्थ्य

(ले०—श्री डा० ओमप्रकाश जी अग्रवाल बी.ए.एम. एस. (एटा)

योगीराज कृष्ण जी ने गीता में कहा है।

युक्ताहार विहारस्य युक्त
चेष्टस्य कर्मसु।
युक्त स्वप्नाव बोधस्य
योगी भवति दुःखहा ॥

अर्थात उचित आहार कर, उचित कर्म कर, उचित चेष्टायें कर। हमारी जीभ हमारे वश में नहीं। सादा भोजन हमें अच्छा नहीं लगता है। जबान के स्वाद के लिए हम तीनों बातों का उलंघन कर देते हैं। पिछले लेख में मैंने लिखा था **Eat to live, not live to eat.** पर हमारे प्यारे बन्धुओं ने इस सिद्धान्त को उलट करके रख दिया, अर्थात् **live to eat not eat to live.** जब मनुष्य जीवन का लक्ष धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति है। फिर यह कहना कि हम खाने के लिए जीते हैं, केवल नादानी है। पिछले लेख में भोजन सम्बन्धी द्वितीय सिद्धांत मैंने लिखा था। **Health depends not on how much money to expended on food, but on what food money is expended** स्वास्थ्य इस बात पर निर्भर नहीं है कि भोजन कीमती हो पर कैसा भोजन कीमती हो। हम मंहगाई का रोना रोते हैं। कहते हैं घृत दुग्ध नहीं मिलता, स्वास्थ्य कैसे अच्छा हो। हम चाय जो १५ पैसे कप पड़ती है ४० पैसे के बिस्कुटों सहित बाजार में बैठकर पीना पसन्द करते हैं, परन्तु पाव दूध जो पूर्व से कम कीमत का है पीना पसन्द नहीं। यद्यपि यह चाय बिस्कुटसे अधिक शक्ति देताहै भोजन में भले ही कमी आ जाए पर सिगरेट के बिना जीना कठिन है चाहे इसके धुएं से गले का कैंसर भले ही हो जाए हम खूराक को महंगा बनाने की कोशिश में प्रतिक्षण रहते हैं। मंहगी खुराक खाना बुरा नहीं, पर स्वास्थ्यकारी भी हो हम रोटीकी अपेक्षा परामठे को महत्ता देते हैं। यह रोटी की अपेक्षाकृत भारी और देर से पचने वाला होता है। दाल में थोड़ा घी तप्त करके डालने की अपेक्षा खुला जोरा देने को महत्ता देते हैं। इस घी को अगर आंतें न पचा सकें तो बहुत से रोग पैदा होते हैं। हम समझते हैं कि घी जो खाया खूब ताकत देगा सो मेरे भाई वह ताकत तो देता नहीं उल्टी ताकत लेता है। हमारी शक्ति का हरण करता है। हम गर्म दूध की अपेक्षा रबड़ी को, गाजर की सब्जी अपेक्षा हलुवे को, बेसन लड्डुओं को अपेक्षा, बिस्कुट खटाई केक पेस्टरी को महत्ता देते हैं हम यह पता नही लगाते कि कौन-सा भोजन स्वास्थ्य-प्रद है। खुराक को महंगाई के युग में मंहगी बनाने की कोशिश करते हैं। अगर स्वास्थ्य-प्रद खुराक को महंगी बनाने की कोशिश करें तो मुझे कोई एतराज नहीं है। एक सेठ जी थे, धन-धान्य की उनके पास कमी न थी। घृत दुग्ध की अपेक्षा खट्टा खाने को उनकी इच्छा हर समय बलवती रहती थी। उनके मकान पर भैंसें और गायों की तो कमी न थी! नित्य-प्रति उनके दुग्ध का वह दही जमवाया करते थे। दही खाना अच्छा है बुरा नहीं परन्तु वह अम्ल दही ही खाया करते थे। जबान उनके वश में थी नहीं। एक बार उनको ब्रौंकाटिस नाम की व्याधि हो गई। इस व्याधि होने के बाद अच्छी होने पर खांसी शेष रह जाती है। सेठ थे जबान दास उनके लिए खट्टे दही न खाना अति दुष्कर था। खांसी की दवा लेने वह किसी वैद्य के पास गये और कहा मुझे वैद्य जी बड़ी खांसी उठती है कृपया कोई दवा दीजिए ताकि मेरी खांसी दूर हो जाए। वैद्य ने उनको खांसी की दवा दे दी। खांसी की दवा से उनको लाभ न हुआ तब वह शिकायत करने लगे, कि आपकी दवा ने मुझे लाभ न किया वैद्य था होशियार उसने विचार करके पूछा आपने कोई खट्टी चीज तो नहीं खाई है, सेठ जी बोले मेरी खट्टे दही खाने की आदत है, उसको मैं खूब खाता हूं दही खाना मुझ से छूट नहीं सकता। वैद्य राज ने कहा कि मैं आपको दवा नहीं देता आप खट्टा दही छोड़ेंगे तो खांसी नहीं दूर होगी। सेठ जी चल दिए और दूसरे वैद्य के पास पहुंचे कहने लगे मैं खट्टा दही खाना नहीं छोड़ सकता। क्या आपके पास कोई औषधि है जो मेरी खांसी समाप्त कर सके। उस वैद्य ने मना कर दिया। सेठ एक-एक करके सैंकड़ों वैद्यों के पास गये और सब से पूर्ववत् ही प्रश्न किये कि मुझे खांसी है खट्टा दही खाना मैं नहीं छोड़ सकता, अगर आपके पास कोई दवा है जो खांसी दूर कर सके तो दे दो। सभी ने मना कर दी। सेठ जी बड़े हताश हुए और अपने मकान पर लौट आये। उन्होंने कुछ दिनों बाद किसी वैद्य की प्रसिद्धि सुनी, उसके पास भी पहुंचे और कहने लगे, 'वैद्य राज जी! मुझे खांसी का रोग है। खट्टे दही खाने की मेरी आदत है। क्या आप के पास ऐसी कोई औषधि है जो खट्टे दही खाने पर भी मेरी खांसी दूर कर सके। वैद्य था काफी विद्वान और अनुभवी उसने कहा कि आप खूब खट्टा दही खाइयें ! इस से आपको तीन लाभ होंगे। प्रथम यह कि आपके पास कुत्ता नहीं आवेगा। द्वितीय यह कि आपके घर में चोरी कभी न होगी। तृतीय यह कि आप पर बुढ़ापा कभी नहीं आवेगा। सेठ जी फूल कर कुप्पा हो गये। और प्रफुल्लित प्रसन्न मुद्रा में बोले, अच्छा! यह तीन लाभ मुझे होंगे? जरा यह तो बतलाइये कि कैसे होंगे? यह तीन लाभ। वैद्य ने कहा खांसी आपको नहीं जायेगी आप रात्रि में खासेंगे चोर यह देख कर सेठ खांस रहा है दूर से ही भाग जायेगा। खांसी रहेगी आप जीर्ण शरीर हो जावेंगे अतः आप को लकड़ी लेकर चलना पड़ेगा, कुत्ता दूर से डरकर भाग जावेगा। और तृतीय लाभ भी बता दूं सेठ जी ने कहा जरूर बतलाइये।

(क्रमशः)

दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा

सर्वसाधारण आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि इन्टरनेशनल महर्षि दयानन्द मिशन नाम की संस्था जिसने अपना कार्यक्षेत्र टंकारा और जीवापुर के मध्य में बनाने की घोषणा की है और जो अन्तरराष्ट्रीय महर्षि दयानन्द संस्कृत विद्यालय बनाने जा रहा है साथ में गौशाला सामवेदीय यज्ञादि का कार्यक्रम बना कर धनसंग्रह की अपील कर रहा वह एक श्रीकृष्ण शर्मा द्वारा स्थापित स्वतन्त्र संस्था है जिसका महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा से कोई सम्बन्ध नहीं।

जनता भ्रम में न रहे अतः यह स्पष्टीकरण किया गया है।

आनन्द प्रिय मन्त्री ट्रस्ट टंकारा

आर्य विद्यासभा चित्रगुप्त रोड नई दिल्ली

वार्षिक अधिवेशन २ अप्रैल ६६ को शनिवार ४-३० बजे डी. ए. वी. कालिज मैनेजिंग कमेटी चित्रगुप्त रोड नई देहली के कार्यालय में होगा सब सदस्य ठीक समय पर पधार कर दर्शन दें।

प्रधान जी की आज्ञानुसार

आर. एल. चोपड़ा मन्त्री-सभा

ओ३म् शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शंयोरभि स्रवन्तु नः ॥

शाब्दिक अर्थः— ओ३म्=परम पिता परमात्मा का निज नाम। शम्=कल्याण कारी। न=हमारे लिये। देवी=सर्व प्रकाशक। अभिष्टये=मनोवांछित सुख के लिये। आप=सर्वव्यापक भवन्तु=होवें। पीतये=पूर्ण आनन्द (मोक्ष) की प्राप्ति के लिये। शंयो=सुख शांति और कल्याण की। अभि=चारों ओर से। स्रवन्तु=धीमी-धीमी वर्षा करें। नः=हम पर।

सरल अर्थ गद्य में :—

हे सर्व-व्यापक और सर्व प्रकाशक परमात्मा, आप हमारे मनोवांछित सुख और अभीष्ट फल की प्राप्ति के लिए कल्याणकारी होवें, और हम सब पर चारों ओर सुख की धीमी-धीमी वर्षा करें।

सरल अर्थ पद्य में :—

ओंकार प्रभु तेरा नाम,
गुण गावे संसार तमाम।
तेरी महिमा गावें वेद,
तेरे जपे न आवे खेद॥
सत्चित आनन्द स्वरूप,
निराकार निर्भय अनूप।
जग का स्वामी पालन हारा,
जग प्रकाशक व्यापक सारा॥
मन मांगे सुख भोग तमामी,
पूर्ण-आनन्द दियो हे स्वामी।
वर्षा सुख की करो महेश,
तीन ताप हूं दूर क्लेश॥

व्याख्या :—हे सर्वव्यापक परमेश्वर ! मुझे शक्ति दे कि वेद के ज्ञान के आधार पर अपने जीवन को उन्नत करूं। हे सर्व प्रकाशक परमात्मा ! शक्ति प्रदान करें कि आपके पवित्र वैदिक धर्म पर चल कर अपने जन्म को सफल बनाऊं। हे आनन्द के भंडार ! मुझे शक्ति दें कि मैं काम वासना को काबू रख कर शारीरिक दुःखों से छुटकारा पाऊं। हे पिता

'आओ ! हम वैदिक सन्ध्या रूपी सागर में डुबकी लगाएं, ताकि अमूल्य रत्न पाएं'

(ले० श्री परमा नन्द जी विद्यार्थी रोहतक)

[आचमन मन्त्रः]



मुझे शक्ति दें, ताकि आपकी आज्ञा अनुसार अहिंसा और क्षमा जैसे व्रतों का वेदोक्त रूप से परिपालन करते हुए अपने जीवन को शांत करूं। हे माता ! मुझे शक्ति मिले, ताकि मैं 'ब्रह्म यज्ञ' अर्थात आपको सर्वत्र और सर्व स्थान पर समझता हुआ आठों पहर चौबीस घण्टे आपकी स्तुति करता हुआ आपके दर्शन अर्थ प्रयत्नशील रहूं।

विशेष संकेत— (क) यह पवित्र वेद मन्त्र चारों वेदों में पाया जाता है। (ख) सन्ध्या करते समय पहले 'गायत्री' पश्चात इस मन्त्र में ध्यान करना चाहिए। (ग) भगवान दयानन्द जी ने वैदिक सन्ध्या में आचमन मन्त्र के नाम से पुकारा है। (घ) यदि कफ आलस्य तथा सुस्ती न हो, तो बिना आचमन इस मन्त्र का ध्यान करना चाहिये। (ङ) यदि जल हो, तो तीन बार जल न हो, तो आचमन करने की कोई आवश्यकता नहीं, क्योंकि आचमन करना एक शारीरिक कर्म है और परमात्मा ध्यान मानसिक और आत्मिक धर्म है। (च) इस मन्त्र का केन्द्र बिन्दु 'पीतये' है अर्थात जिस के बाहर मन्त्र घूम रहा है, वह पीतये—पूर्ण आनन्द की प्राप्ति है। इस मन्त्र पर ध्यान करने से साधक को 'ईश्वर' के ज्ञान प्राप्ति की इच्छा, वैदिक धर्म पर चलने की अभिलाषा, काम वासना को नियन्त्रित करने की शक्ति अहिंसा तथा क्षमा के व्रतों के पालने की सुमति, ब्रह्म यज्ञ के महत्व को समझने की ताकत तथा ईश्वर के गुण-गान की प्रेरणा प्राप्त होती है। अभ्यासी को निरन्तर अभ्यास करके अभ्यस्त बनना चाहिए। (क्रमशः)

टिप्पणी :—

इस पवित्र मन्त्र में 'नः' शब्द दो बार आया है। जिसका अर्थ हमारे और हम पर है। हम हमारे बहु वचन शब्द है। अतः सिद्ध हुआ कि बिना किसी तमीज के प्रत्येक व्यक्ति पर सुख की वर्षा होवे। इस प्रकार पवित्र वेद वाणी में आये हजारों मन्त्र पेश किए जा सकते हैं। कहां हैं वे साम्यवादी (कम्युनिस्ट) और समाजवादी (सोशलिस्ट) ? जो चिल्ला-चिल्ला कर अपने इज़म (वाद) की दुहाई मचाते हैं। इस पृथ्वी तल पर फैले हुए समस्त मत-मतान्तर और Political parties अपने अपने समाज के अंगों (मिम्बरों) के लिए जीते हैं और उनके लिए मरते हैं, परन्तु मानवता के लिए एक कौड़ी का काम नहीं करते। केवल वेद भगवान ही सबकी भलाई की शिक्षा देता है और वेद भगवान की शिक्षा के अनुसार चलने वाला ही 'मानवता' का प्रचार कर सकता है। अतः मुसलमान, सिख, ईसाई, जैनी-बौधी, राधा स्वामी तथा देव समाजी भाइयों से प्रार्थना है कि आओ ! वेद भगवान की शरण में ! यह मनुष्य जीवन बड़ा अनमोल है व्यर्थ में न गंवाओ !

करो भारत से ही अनुराग

भारत की निज शान जगा दो !
शुभ संस्कृति की ज्योत जगा दो !
निज सन्तति में गान जगा दो !
कूट-२ कर भर दो तन में देश-प्रेम अनुराग !
करो भारत से ही अनुराग !

इंग्लिश को रट क्या कर लोगे ?
अरबी को पढ़ क्या भर लोगे ?
भूखे द्वार-द्वार भटकोगे।
आर्य-संस्कृति से न करोगे, यदि दृढ़तम अनुराग !
करो भारत से ही अनुराग !

जो संसृति का पूज्य गुरु है।
कहां विधाता अन्य अरु है ?
'भू' पारस अन्य मरु है !
होंगे क्यों न पतित कहो फिर जो न करें अनुराग !
करो भारत से ही अनुराग !

वेद सूर्य से उषा उदित है !
श्रौत-धर्म से आर्य मुदित है !
प्रत्न-संस्कृति जिस में निहित है !
उस संस्कृति के अलि बन कर सूंघो पुष्प पराग !
करो भारत से ही अनुराग !

नामदेव राव गनगने 'पथरोट'

वैदिक (आर्ष) तथा अवैदिक (अनार्ष) विज्ञान

(ले० श्री दौलतराम जी शास्त्री अमृतसर)



आज के युग में वैज्ञानिकों ने चन्द्रमा तक पहुँच लिया है। अब सन्देह नहीं रहा कि चन्द्रमा भी एक लोक है। आर्य ग्रन्थों में भी चन्द्रलोक का वर्णन है। अघमर्षण मंत्र में लिखा है—

'सूर्या चन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्।

पूर्व कल्पों के समान परमात्मा ने अब के कल्प में भी सूर्य तथा चन्द्रमा आदि बनाए।

संध्या में 'चित्रं देवानामुदगादनीकं' इस मंत्र का भौतिकअर्थ करने पर विदित होता है कि—

देवानां दिव्य गुण युक्तानां लोकानां' चित्रं अनीकं अद्भुतं सैनिक दलम, (आकाशे) उदगात् उदितम् आस्त' रात्रौ—

दिव्य गुण युक्त लोक लोकान्तरों की विचित्र सेना आकाश में उदित हुई है—जो उस रचना करने वाले भगवान की सत्ता तथा कला चातुरी की ज्ञापक है।

इस से सिद्ध होता है कि भगवान ने आदि सृष्टि मे लोक-लोकान्तरों की रचना करके उन की गति स्थिति की भी मर्यादा बांधी। अनार्ष ग्रंथों में जो वर्णन किया गया है उसे पढ़कर न केवल हंसी आती है अपितु उन की अच्छी बातों पर अश्रद्धा-सी हो रही है। कुछ यहां दिग्दर्शन के रूप में दिया जाता है।

एक मत चन्द्रमा की उत्पत्ति के विषय में है कि—

"अत्रेर्नयन समुत्थं ज्योतिः"

चन्द्रमा अत्रि ऋषि के नेत्रों से उत्पन्न ज्योति है। किसी-किसी ने अर्घ देने के लिए मंत्र पढ़ते हुए यह भी लिखा है कि—

"अत्रि गोत्र समुद्भवः"

अत्रि के गोत्र में जन्म लेने वाले तुम्हे नमस्कार।

जिन सज्जनों ने आजकल के अन्तरिक्ष यात्रियों द्वारा लिए गये चन्द्रमा के फोटो देखे हैं—वे लोग ऊपर लिखे गल्प का कितना मान कर सकते हैं?

भागवत वैष्णवों का एक और मत है कि समुद्र मन्थन के समय १४ रत्नों में से जहां उच्चैः श्रवा घोड़ा, और ऐरावत हाथी-धन्वन्तरि देव आदि भी गण्य हैं। चन्द्रमा भी समुद्र में से निकला था।

एक पौराणिक किंवदन्ती यह है कि एक ऋषि स्नान करके आ रहे थे—मार्ग में आते समय पैर फिसल गया और वह गिर गए। चोट लगी। चन्द्रमा उन्हें देखकर हंस पड़ा ऋषि ने क्रोधावेश में अपना कीचड़ भरा गीला अंगोछा चन्द्रमा पर दे मारा—चन्द्रमा में धब्बे दृष्टिगत होते हैं वे उस अंगोछे की चोट के चिन्ह हैं।

सम्पादकीय टिप्पणी

यदि चन्द्रमा के समुद्र से उत्पन्न होने से पहले देवता असुर-और धन्वन्तरि उच्चैः श्रवा तथा ऐरावतादि उत्पन्न हुए थे तो वह मन्त्र— 'सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्व मकल्पयत्' उस देवासुर संघर्ष से अनन्तर बना समझा जाएगा जो सृष्टि नियम के विपरीत है। विवाह विधि में प्रोक्त 'चन्द्रमा नक्षत्राणामधि पतिः' यह मन्त्र भी निरर्थक तथा मंत्रों की अपौरुषेयता में बाधक होगा स्वस्ति वाचन के मन्त्रों में पढ़ा वह वेद मंत्र— 'सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता।' इत्यादि मत्र सृष्टि के आदि प्रकट हुए—यह भी चिन्तनीय होगा।

'सदाधार पृथिवी द्यामुतेमां कस्मैदेवाय हविषा विधेम'

इस मंत्र में पृथिवी आदि द्युलोक में स्थित सारा ब्रह्माण्ड उस परमात्मा के आधार पर स्थित अनादिकाल से विद्यमान आ रहा है। पुराणादि मनुष्यकृत ग्रन्थों में प्रोक्त कपोल कल्पित हैं ऐसा धर्म प्रेमी सज्जन निश्चय करेंगे!

उद्गार

प्रेषक श्री पं० रुद्रदत्त जी शर्मा, अमृतसर



पंजाब के विभाजन के सम्बन्ध में कांग्रेस कार्य कारिणी के अदूरदर्शी निर्णय से देश भक्त जनता के हृदयों को गहरा आघात पहुँचा और उसके दुष्परिणाम जो पिछले दिनों देखने में आये वह अत्यन्त दुःखदायक थे। जिनके लिये जहां एक ओर सर्वसाधारण को पथ भ्रष्ट करने वाले कम्युनिस्ट तथा इसी प्रकार के देश और जाति के शत्रु वर्ग जिम्मावार हैं वहां दूसरी ओर पंजाब पोलीस की निर्दयता पूर्ण सख्तियों और असीम अत्याचारों ने जलती पर तेल डालने का काम किया। पोलीस ने अश्रु गैस, लाठियों और गोलियों के बेतहाशा प्रयोग के अतिरिक्त निरपराध व्यक्तियों को अकारण गिरफ्तार करके और उनपर झूठी निराधार और मनमानी धारायें लगाने में कोई कसर नहीं छोड़ी इस के अनगिनत उदाहरणों में से एक अपनी ही कहानी आप के सामने रखना चाहता हूँ।

मैं पञ्जाब के विभाजन का विरोधी हूँ और श्रीयुत पं. जवाहर लाल नेहरू के ऐतिहासिक निर्णय के अनुसार इसे हिन्दुओं सिक्खों तथा देश भर के लिए हानिकारक समझता हूं और अपनी सम्मति पिछले दिनों एक शिष्ट मंडलके रूपमें प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी श्री गुलजारीलाल नन्दा गृहमन्त्री श्री कामराज और श्री चेबर जी के सामने प्रकट कर चुका हूँ। परन्तु साड़-फूंक और तशद्द की नीति को अपने तथा देश के हित के लिये सर्वथा घातक समझता हूं। इस के बावजूद १८ मार्च प्रातःकाल घर बैठे मुझे अमन कमेटी में सम्मिलित होने के बहाने पोलीस भारी संख्या में आकर थाना में ले गयी और गिरफ्तार कर लिया। कई दिन हवालात और जेल में रहने के पश्चात २२ मार्च रात को जमानत पर छोड़ा गया। मुझे ज्ञात हुआ है कि मुझ पर, बलवा आग और ऐसे ही दूसरे कितने ही गम्भीर अभियोग झूटमूठ लगाये गये हैं। निस्सदेह न्याय और सच्चाई का मुंह चिढ़ाने वाली बात है न्यायालय ने २ अप्रैल की तारीख नियत की है वहां अभी वास्तविकता सामने आ जायेगी। परन्तु पौलीस का बिना कारण मनघड़न्त, काल्पनिक और सर्वथा निराधार धारायें आरोपित करने का दुस्साहस उनके दुर्व्यवहार और अत्याचारों की मुंह बोलती तस्वीर है। ठीक ऐसा ही व्यवहार मेरे दूसरे साथी एक प्रतिष्ठित नागरिक श्री गिरधारी लाल परवाना के साथ हुआ। इस के सम्बन्ध में निष्पक्ष जांच होनी चाहिये और इस के लिये जिम्मावार और अपराधियों को उचित दण्ड मिलना चाहिये, जिस के बिना वास्तविक शान्ति स्थापित होना कठिन है।

क्या नशा ही हमारी प्रेरणा है?

(श्री सुन्दर लाल जी बोहरा, जोधपुर)



(गतांक से आगे)

सरकार ने अफीम पर प्रतिबन्ध लगा दिया तो क्या हुआ, लोगों ने डाक्टरों से 'अफीम के बिना जीवित रहना असम्भव' के प्रमाण-पत्र लेकर सरकार-सम्मत अफीम खानी शुरू कर दी। कोयला और खील लगाने के काले चपड़े में मिला कर अफीम को इधर से उधर लाया ले जाने लगा। अफीमचियों को तब भी सन्तोष नहीं हुआ। उन्होंने अफीम के छिलकों को चाय के साथ उबाल कर पीना शुरू कर दिया—एक पन्थ दो काज।

असली बात तो अभी बाकी है। मदिरा के बिना तो महिषासुरमर्दिनी की पूजा ही नहीं हो सकती। शराब का सेवन शास्त्र-सम्मत सिद्ध कर अनेक लफंगों ने अपनी रसना को शान्त किया है। 'शराब पीना राजा का धर्म है, इस तरह की कुत्सित धारणाओं का प्रचार कर शराबी लोगों ने अनेक रजवाड़ों को मिट्टी में मिला दिया है। रसना के गुलाम व्यभिचारी शायरों ने अपनी सम्पूर्ण शायरी को शराब को ही समर्पित कर दिया। शराब की उत्तेजना में इन लोगों ने इतने कुत्सित शेयर उगले जिनको पढ़ या सुन कर देवालय में बैठे हुए व्यक्ति की इन्द्रियां भी विक्षुब्ध हो जाती हैं। अधिकांश उर्दू-शायरी शराब से सरोबार है! गली-गली और घर-घर में शराब की भट्टियां लगाई गई हैं। अन्ततः विवश होकर सरकार को शराब पर प्रतिबन्ध लगाना पड़ा। लेकिन क्या हुआ? लोगों ने स्प्रिट में पानी मिला कर 'प्रसादी' लेनी शुरू कर दी। वैद्य और डाक्टरों ने शराब-युक्त औषधियों के निर्माण को स्वास्थ्य के लिए हितकर बताया। 'माता जी के प्रसाद' के रूप में आज भी मन्दिरों में बैठ कर शराब पी जाती है। डाक्टर कहते हैं—नार्मल रूप में पी गई शराब भूख लगाती है, खून बढ़ाती है, शरीर में शक्ति और ताजगी लाती है, आदमी को हर दम 'मर्द' बनाए रखती है — इस लिए शराब हानिकारक नहीं है। और कभी-कभी दबी जबान से डाक्टर जन यह भी कहते हैं— शराब से लिवर और आंते चलनी हो जाती हैं, क्षय और कैन्सर की सम्भावना बढ़ जाती है। लेकिन पीने के लोभ में पियक्कड़ लोग सम्भावित व्याधियों की परवाह ही नहीं करते।

यही बात है कि शराब के सेवन और गले व लिवर के रोगों में चोली-दामन का सम्बन्ध है। चिकित्सालयों में कैन्सर व हृदय के रोगियों की संख्या दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ रही है, पागलखानों में नए पागलों के लिए स्थान ही नहीं है, बलात्कार और आत्म-हत्या के अपराध अबाधगति से बढ़ रहे हैं, युवकों में अशिष्टता व उच्छृङ्खलता की प्रवृत्ति असह्य होती जा रही है, फिर भी 'जायके' के लिए शराब पीना आवश्यक है।

हर कूचे में मयखाने
मेरे मुल्क में कायम।
पेरिस जाने की मुझे
अब ख्वाहिश नहीं है॥

और भांग? ओह, भांग के बिना तो भोलेनाथ रीझ ही नहीं सकते! भोलेनाथ भांग पीते हैं, इसलिए हम भी पीएंगे, शिवजी धतूरा खाते हैं, तो हम धतूरे के बीजों को ही भांग के साथ रगड़ कर पी जाएंगे, आशुतोष आक का सेवन करते हैं, तो हम आक के दूध में गांजे को तर कर चिलम में फूंकेंगे। आखिर हमें गुरु गोरखनाथ जो बनना है। क्योंकि

जिसने न पी भांग(गांजे) की कली।
उस लड़के से लड़की भली॥

न जाने इन लफंगों ने कितने सुकुमारों को पथभ्रष्ट किया है न जाने राष्ट्र में कितनी असाध्य अकर्मण्यता को अक्षुण्ण बनाए रखा है, न जानें कितने ठगों और भिखमंगों की जमातों को जन्म दिया है। 'विजया' के बिना भला इस प्रकार की विजय ही कैसे प्राप्त हो सकती है। भांग पिए बिना कवि का 'मूड' ही तो नहीं बनता है, 'भंग-भवानी' को भला तलाक कैसे दे दें—बेचारे अनेकों हलवाइयों और चाट-पकौड़ी वालों की रोजी ही मारी जाएगी। भोजन कराने से पहले जो यजमान भांग का प्रबन्ध करवा दे उसकी तो फिर इक्कीस पीढ़ियां ही तर जाती हैं। हकीकत में इन आवारा नशेबाजों ने भांग को धर्म का चोला पहना कर हिंदू-धर्म को बदनाम करने में कोई कसर नहीं रख छोड़ी है। आज तो हमारे वे त्यौहार ही फीके हैं जिन में किसी भी प्रकार के नशे की व्यवस्था न हो।

चाय और काफी तो सभ्यता के पेय जो ठहरे—इन्हें भला हम नशा कैसे कहें? लोगों को एक उबाल वाली चाय में मजा नहीं आता इसलिये एकदम कड़क चाय बना कर पी जाती है। जरा देर तक बना रहे इसलिये उस में अफीम के छिलकों को उबाला जाता है। होटलों की चाय से घृणा है, इसलिये अपने आपको वैष्णव कहने वाले लोग चांदी व जर्मन सिल्वर के बर्तनों से चाय पीते हैं। शक्कर नहीं मिलती है तो गुड़ की ही चाय पी जाती है। आंतों में खुश्की, आंखों की दृष्टि में मन्दी, पीलिया, कब्ज, बवासीर व शुक्रदोषों जैसे रोगों की जननी होते हुए भी चाय का महल से लेकर झोंपड़ी तक में स्वागत किया जाता है। इस चाय पीने वाली जमात को धन्यवाद देना चाहिये जिसके कारण बेचारे नकली दांत बनाने वाले डाक्टरों का धन्धा चल रहा है। लेकिन अपने को 'अति अकलमन्द' समझने वाले चाय की जगह काफी पीते हैं। क्यों? यही कि काफी में पोषण (**nutrition**) होता है, काफी स्पेशल चाय को भी मात करती है। चाय अथवा काफी चाहे चीनी के प्याले से पी जाय अथवा चांदी के कटोरी से, अन्ततः वह है चाय ही। डाक्टर और वैद्य लोग भी चाय के साथ ही दवा लेने को कहेंगे—चाय हमारा राष्ट्रीय पेय जो ठहरा।

आज शहरों में हर दस कदम पर चाय के होटल खुले हुए हैं। स्थिति यहां तक पहुंच गई है कि बिना चाय पिये गृहिणी घर का काम-काज ही नहीं कर सकती, चाय की चुस्कियां लिये बिना वक्ता लोग धारा प्रवाह बोल ही नहीं सकते, बिना चाय का प्याला पिये विद्यार्थी पढ़ ही नहीं सकते। हमारी एक दिन के लिये चाय बन्द कर दीजिये, हमारी स्थिति एक मृत चूहे के समान हो जाएगी। चाय के लिए लोगों ने अपने कपड़े तक बेच डाले हैं। बोझा ढोने वाला एक मजदूर अपने एक समय के भोजन का त्याग बे झिझक कर सकता है, किन्तु चाय के एक प्याले के पिये बिना वह एक कदम भी चल फिर नहीं सकता—उसके मजदूरी करने का उद्देश्य ही यही है कि 'चाय-पानी' के पैसे हाथ लग सकें।

वह भोज ही अधूरा है जिस में चाय की प्रधानता न हो।

'सर्दी और जुकाम से बचने के लिये चायपान व धूम्रपान आवश्यक है। (क्रमशः)

पंजाबी

(श्री बलदेवराजजी गुप्ता एम.ए. अन्नामलाइ ...

✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱

मेरे प्यारे पंजाबी भाइयो भारत-माता की सीमाओं के संरक्षक पंजाबी भाइयो। मेरी परीक्षा बहुत निकट है। उधर पंजाब की परिस्थिति पढ़कर अत्यन्त दुःख होता है। 'वसुधैव कुटुम्बम्' का नारा लगाने वाले हम ही आपस में फूट व घृणा के बीज बो रहे हैं। ऐसे दृश्य देखकर पढ़ाई में चित्त नहीं लगता। आर्यसमाजी (सच्चा आर्यसमाजी) तंग दिल वाला नहीं होता, सत्य बातें कहने से डरता नहीं, भाषा व जाति के नाम पर फूट डलवाता नहीं, आत्म निरीक्षण ही उसको सुधार के पथ पर ले जाता है। मैं स्वयं नहीं कह सकता कि मैं सच्चा आर्यसमाजी हूं। आज ही तामिल पत्र में पंजाब की परिस्थिति पढ़ी। आत्म-निरीक्षण किया। आपके समक्ष रख रहा हूं 'चाहे इसे स्वीकार करो, चाहे ठुकरा दो।'

आज पंजाबी सूबा मांग स्वीकार हो चुकी है। आत्म-निरीक्षण करने पर मुझे १९५०-५१ के दृश्य स्मरण हो आते हैं। उस समय मैं १२ वर्ष का बालक था। सांसारिक ज्ञान न था। हमारे घरों में कुछ राजनीतिज्ञ नेता और कुछ हिन्दी प्रेमी आया करते थे। घर २ चक्कर काटते और लोगों को झूठ बोलने का पाठ पढ़ाते। वे कहा करते थे 'आप ने अपनी मातृ-भाषा पञ्जाबी न लिखाना। जन-गणना वाले पूछें तो झूठ-मूठ ही मातृ-भाषा हिन्दी लिखना, बालक-पन प्रवृत्ति के कारण मैंने कहा आप स्वयं पंजाबी बोल रहे हैं, हिन्दी क्यों नहीं बोलते, खैर आर्य-समाजी होने के नाते आर्य-समाज के जलसों में भी ऐसा ही प्रचार सुनता रहा। इसका परिणाम क्या होगा उस समय मुझे क्या मालूम। हम अपनी मातृ-भाषा को क्यों मिटाना चाहते हैं? मातृ-भाषा से क्यों घृणा करते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर १९५६-५७ में स्वयं मिल गया। आर्य समाज ने (हिन्दी-प्रेमियों) आन्दोलन चलाया 'हम पर पंजाबी न ठोसी जाए। कोई भाषा किसी पर ठोंसना अन्याय है' मातृ-भाषा पंजाबी क्यों नहीं। इस का भी उत्तर मिल गया 'क्योंकि पंजाबी स्थान-स्थान पर बदलती है।' खैर इन बातों से सन्तुष्ट हो गया। पंजाबी से घृणा के परिणाम स्वरूप पंजाबी-प्रेमी कैसे चुप रह सकते हैं उनके लिए पंजाबी सूबा मांगने के सिवा और चारा ही क्या था।

अब मुझे भाषा-विज्ञान का ज्ञान है। अब मुझे उपर्युक्त उत्तर निस्सार दिखाई देते हैं। यदि हम चाहते हैं कि हम पर अपनी ही मातृ-भाषा पञ्जाबी न ठोसी जाए (यानि किसी भाषा को किसी पर ठोसना अन्याय है) तो वही लोग उस समय क्यों चुप बैठे रहे जब दक्षिण-भारत वाले बेचारे चिल्लाते थे कि 'हम पर हिन्दी न ठोसी जाए' वही लोग अन्याय का नाम लेकर हिन्दी प्रेमी की मस्ती में हिंदी ठोंसने का अन्याय प्रसन्नता से सहन करते रहे यदि हम हिंदी के साथ अपने प्रांत की ही पञ्जाबी-भाषा को भी स्वीकार कर लेते तो शायद ये दिन न देखने पड़ते। हां दूसरे उत्तर का उत्तर भी दे दूं। संसार की कोई भी भाषा ऐसी नहीं जो स्थान-स्थान पर परिवर्तन न होती हो। मैं हिंदी का विरोधी नहीं हूं पञ्जाबी मातृ-भाषा होते हुए भी हिन्दी में बहुत शौक है। किन्तु राजस्थानी, ब्रज आदि अनेक हिन्दी-भाषाएं हैं। उनको नहीं समझ सकता। हिन्दी क्या स्थान-स्थान पर नहीं बदलती। क्योंकि हिन्दी स्थान २ पर भिन्न रूप से बोली जाती है। इसलिए हमारी मातृ-भाषा 'नहीं' यह कहना मानों हिन्दी से ही विश्वासघात है।

मैं प्रभु कृपा से अनेक भाषाओं का प्रेमी हूं। आर्य-समाज में राज-नीति के बीज न पनपते तो पञ्जाबी भाषा का विरोध न होता। पंजाब का विभाजन न होता। लड़ाई झगड़े न होते। पञ्जाबी के साथ हिन्दी भी पनपती। अब राष्ट्र भाषा हिन्दी के स्वप्न लेने व्यर्थ हैं। ये लोग भी कहते हैं 'हिन्दी प्रेम स्वयं पञ्जाबी (जो हिन्दी के निकट है) ठोंसने का विरोध करते हैं तो हम पर हिन्दी क्यों ठोंसते हैं।'

इस लेख के लिखने के आशय के पढ़े बिना विरोध न करें। मैं चाहता हूं कि आर्य समाज अब भी राजनीति के चक्र से मुक्त होकर पंजाब एकता, हिन्दू-सिक्ख एकता, पञ्जाबी-हिन्दी प्रचार की डोर अपने हाथ में ले अन्यथा आर्य समाज पर ही फूट डलवाने का कलंक सदा के लिए रहेगा राजनीतिज्ञों को कौन पूछेगा। वसुधैव कुटुम्बम्' के घोष से आर्य समाज एकता के आन्दोलन में लग जाए हिन्दू-सिक्खों को मिलाए। विभाजन से केवल आर्य समाज बचा सकती है। यही मेरे लेख का आशय है।

रतलाम में वैदिक धर्म प्रचार

आर्य जनता को यह शुभ समाचार पढ़कर अति प्रसन्नता होगी कि रतलाम में वैदिक धर्म प्रचारार्थ तथा ईसाई मिशन में प्रविष्ट हिंदू जनता के उद्धारार्थ श्री पं० देव प्रकाश जी आचार्य अप्रैल मास में भ्रमण के लिए जा रहे हैं। जनता से प्रार्थना है कि आचार्य जी जहां-जहां पधारें उनका पूर्णतया स्वागत करें।

—व्यवस्थापक

मोहन आश्रम हरिद्वार में ऋषि-मेला

ईश्वरभक्ति तथा वैदिक धर्म का प्रचार ही इस आश्रम का मुख्य उद्देश्य है

इस वर्ष ता० ८, ९, १० और ११ अप्रैल सन् ६६ को ऋषि-मेला मनाया जावेगा, जिस में पूज्यपाद संन्यासी महात्माओं के और विद्वान् महानुभावों के सदुपदेश होंगे। उन्हीं दिनों में श्री पूज्यपाद महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की ओर से यजुर्वेद पारायण यज्ञ भी होगा।

कार्यक्रम

प्रातः ७ बजे से ८॥ बजे तक यज्ञ
८॥ बजे से ९ बजे तक भजन कीर्तन
९ बजे से ११ बजे तक उपदेश
सायं २॥ बजे३ बजे तक भजन कीर्तन
३ बजे से ५ बजे तक उपदेश

११ अप्रैल को प्रातः ९ बजे यज्ञ की पूर्णाहुति।

सर्व महानुभावों से सानुरोध निवेदन है कि इस मेले में सम्मिलित होकर महर्षि दयानन्द जी महाराज की भावनानुसार वैदिक धर्म प्रचार कार्य में सहयोग प्रदान करें और धर्म लाभ उठावें।

(स्वामी) सच्चिदानन्द तीर्थ
अधिष्ठाता

★ छल कपट से दूसरों को ठग कर अपना प्रयोजन साधने वाले को पोप कहते हैं।

—स्वामी दयानन्द

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत् कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक १७) १२ वैशाख २०२३ रविवार—दयानन्दाब्द १४१—२४ अप्रैल १९६६ (तार 'प्रादेशिक' जालन्ध

वेद सूक्तय:

ते प्राणस्य गोप्तारौ

बुद्धि और ज्ञान नाम के ये दोनों ऋषि तेरे प्राणों की, जीवन की गोप्तारौ-रक्षा करते रहते हैं। ये दोनो मन व बुद्धि मनुष्य को सत पथ से गिरने नहीं देते हैं। सदा सावधान किये रहते हैं।

दिवा नक्तं च जागृताम्

ये मन और बुद्धि रूपी दोनों ऋषि सदैव जागते रहते हैं। मानव जीवन को सुमार्ग पर चलाते रहते हैं। दिन को भी जागते हैं रात को भी। इन का जागना मनुष्य का जागना व सो जाना उसका सो जाना है। ये ऋषि हैं।

मा बिभे र्न मरिष्यमि

हे मानव! तू मा बिभे-भय मत कर, डरना नहीं। तू न मरिष्यसि-नहीं मरेगा। तू मौत के लिए नहीं है। तेरा आत्मा तो अमर है। मौत तेरा बाल भी बांका न कर सकेगी। निर्भय होकर काम कर।

इहैधि पुरुष

हे पुरुष! तू इह-इस संसार में, इस जीवन में तथा इस मानव शरीर में एधि-निवास कर, वृद्धि को प्राप्त होता रह। इस जगत् में रहता हुआ उन्नति के मार्ग पर बढ़ता चलता जा।

अथर्ववेद से

महात्मा आनंद स्वामी जी महाराज



आप पिछले दिनों वेद प्रचारार्थ थाईलैंड प्रस्थान कर गए हैं। वहां बैंकाक में तीन-चार दिन वेद कथा करके सिंगापुर पहुंच गए हैं यहां लगभग एक मास तक वेद प्रचार करेंगे।

ऋषि दर्शन

जना विद्वांसो धर्मात्मान:

मनुष्य विद्वान, ज्ञानी हों और धर्मात्मा भी हों यदि केवल ज्ञानी व विद्वान ही होंगे उनमें धर्म की भावना नहीं होगी, तो वह कोरा ज्ञान मानव को नीचे भी गिरा सकता है। धर्म तो ज्ञान के ऊपर अंकुश है। इसके बिना जीवन दुर्घटना ग्रस्त हो जाएगा।

सदा सुखदा: सौम्या:

राज्य में काम करने वाले अधिकारी ऐसे हों जो प्रजा को सदा सुख देने वाले होने चाहिए तथा सौम्य प्रकृति वाले हों। केवल अपने स्वार्थ के लिए ही काम न करते रहें कठोर स्वभाव वाले भी न बनें। परहित का ध्यान रखते हुए कोमल स्वभाव के होने चाहिए। तभी राज्य ठीक चलता है।

दुष्टान् प्रत्युग्रो व्यवहार:

राष्ट्र में जो लोग उग्र बनकर अन्दर-अन्दर से जनता में उत्पात मचाकर सारे शान्त वातावरण को अशान्त करने वाले हों। ऐसे नीच, दुष्ट, राष्ट्रघाती लोगों के साथ सदा उग्र व्यवहार ही करना चाहिए। उनके साथ नरमी के साथ कभी पेश न आवे।

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका से

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी

सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शा

वैदिक ऋषियों ने मानव जीवन की महत्ता बताते हुये लिखा है कि 'पुरुषो वाव यज्ञः ।। अर्थात् मानव जीवन एक-एक यज्ञ है। यज्ञ के तीन सवन होते हैं। जिन में क्रमशः २४-४४ तथा ४८ अक्षरों वाले गायत्री, त्रिष्टुप तथा जगती छन्द के मन्त्र बोले जाते हैं। मनुष्य भी वसु, रुद्र तथा आदित्य ब्रह्मचर्य द्वारा मनन करता है, क्योंकि मन्त्रा मननात् । ऐसा यास्क ने कहा है, जैसे मन्त्रों के बिना यज्ञ अधूरा है। तथैव तीनों ब्रह्मचर्यों के बिना मानव जीवन का कोई मूल्य नहीं है। इसी आश्रम के द्वारा तो मनुष्य अपने नाम के अभिप्राय की गम्भीरता को समझने की योग्यता प्राप्त करता है। यज्ञ शब्द जिस धातु से बना है, जिसके तीन अर्थ हैं। देव पूजा, संगतिकरण तथा दान। मनुष्य भी जीवन के उषःकाल ब्रह्मचर्याश्रम में देवपूजा ही करता है ।। विद्वांसो हि देवा ।। अर्थात् ब्रह्म निष्ठ श्रोत्रिय आचार्यों का पूजा, एवं संगति करता है। उन की संगति से आध्यात्मिक देव पूजा अर्थात् दिव्य गुणों की पूजा करता है। उस के जीवन में दिन प्रतिदिन दिव्य गुण अपना स्थान बनाते जाते हैं। जब अन्तः करण पूर्ण देवत्व से भर जाता है तो समावर्तन होता है, तब 'द्रष्टुमभि संयन्ति देवाः ।। देव लोग देखने आते है कि हमारे मध्य में एक और देव आ गया चलो इस का सत्कार करें। जब आधार भूत इस आश्रम में द्वितीय आश्रम में जाता है, तो ससार में चलने के लिये अपने द्वितीय साथी से संगति करण करता है। जहां सगति करण होता है, वहां वृद्धि तथा कुछ नवीनता को उत्पन्न करता है। वह वृद्धि तथा नवीनता पुत्रोत्पत्ति के रूप में समक्ष आती है। उपनिषत्कारों ने पुत्रोत्पत्ति को भी यज्ञ का नाम दिया है। जीवन के शेष दो आश्रम दान के

धार्मिक चर्चा—

जीवन यज्ञ

श्री पं. सत्य प्रिय जी शास्त्री सिद्धान्त शिरोमणि
प्राध्यापकः-दयानन्द ब्रह्म महाविद्यलय हिसार

प्रतीक हैं, जिसमें दान ही दान होता है, अपना घर, सम्पत्ति, स्त्री, पुत्रादि को छोड़ देता है, अपने सुख के लिये नहीं। प्रत्युत अपना जीवन भी तो वह संसार को दान दे देता है अपने विचार भी संसार के कल्याण के लिये ही होते हैं। अपने लाभ वा सुख के लिये नहीं। कई मनुष्य जीवन में त्याग तो करते हैं, परन्तु त्याग के फल का त्याग नहीं करते हैं। वे त्याग के फल अर्थात् प्रशंसा व स्तुति को सुनना चाहते हैं, लेकिन अन्तिम आश्रम में तो त्याग के फल का भी त्याग किया जाता है। संन्यासी होते समय सर्वस्व त्याग के साथ २ ऐषणात्राय का त्याग होता है, उन्हीं के मध्य लोकैषणा के रूप में अपने त्याग के फल स्तुति अथवा प्रशंसा और कीर्ति का भी त्याग होता है। यह है वास्तव में सर्वस्व दान के साथ-साथ दान के फल की कामना का त्याग। यज्ञ होने पर जिस में से सुगन्धि उठकर वायु मण्डल को सुगन्धित करती है। ठीक इसी प्रकार जीवन में से सुन्दर सद्-विचारों की सुगन्धि उठकर मानव-जाति को सुवासित करती है। यदि यज्ञ में धुआं उठा तो सुगन्ध मारी गई ठीक इसी प्रकार जीवन में अश्रद्धा तथा नास्तिकता का धुआं उठकर जीवन की सुगन्ध का विनाश कर देता है। अतः मानव जीवन में आस्तिकता तथा श्रद्धा बराबर प्रदीप्त होनी चाहिये। तभी जीवन से श्रेष्ठाचरण तथा सद्विचारों की सुगन्धि निकलकर विश्व को सुगन्धित कर आनन्द युक्त बना सकेगी। यह है मानव जीवन रूपी यज्ञ जिसे हम में से हर एक ने सिद्ध करना है। तभी जीवन की सार्थकता है।

सब कुछ ही बलिदान

रचयिता—श्री वेदप्रकाश जी एम० ए०

वीरवरो पंजाब आप से मांग रहा बलिदान,
पंजाबी सूबे की ज्वाला जला रहे शैतान,
पंजाबी सूबा यह क्या है? क्या यह खालस्तान?
नफरत बैर विरोध कि जिन से उपजा पाकिस्तान।
हिन्दी साइनबोर्ड मिटाना हिन्दी का अपमान,
ऐसों को अब सूबा देंगे पहुँचा कर शमशान।
हिन्दी है तन बदन हमारा हिन्दी ही है प्राण,
तन मन धन क्या कर देंगे हम सब कुछ ही बलिदान।
हिन्दी भारत मां की बिन्दी हिन्द देश की शान,
हिन्दी हम, जय हिन्दी भाषा, जय जय हिन्दुस्तान।
गोली गोले बरसें चाहें, गिर ले वज्र महान,
प्रलयकारी वीर न रुकते प्रलयंकर सन्तान।

आर्यसमाज खंडवा पूर्व निमाड़ में वेद प्रचार

आर्यसमाज खंडवा के अन्तर्गत दलितोद्धार समिति की ओर से दिनांक ३०-४-६६ को ग्राम आवलिया में और दि० ४-४-६६ को ग्राम चिराग पुरा नाला में १२५ ग्राम की पंच सम्मलित हुई थी जिस में बलाही जाति सुधार के विषय में श्री पुनमचन्द जी आर्य ने एवं आ० स० खंडवा के प्रचारक सुखराम आर्य सिद्धान्त शास्त्री ने मानव जीवन उन्नति ईश्वर भक्ति, महापुरुषों के सत्सग से मानव महामानव बन सकता है आदि विषयों पर सारगभित भाषण दिया। जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

इसी अवसर पर शिक्षाप्रद धार्मिक ट्रेक्ट प्रचारार्थ नि.शुल्क वितरण किये गये इस कार्य से लोगों में आर्यसमाज एवं वैदिक धर्म के प्रति श्रद्धा बढ़ी।

आर्य युवक परिषद् देहली

प्रसिद्ध आर्योपदेशक श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु रिटायर होने के पश्चात अपना सम्पूर्ण समय देकर आर्य समाज के प्रचार कार्यों में ही सतत लगे हुए हैं।

आर्य स्त्री समाजों, युवक सभाओं के साप्ताहिक सत्संगों तथा पारिवारिक सत्संगों, वार्षिक उत्सवों विशेष प्रचार कथाओं, शुभ संस्कारों तथा यज्ञों आदि पुण्य कार्यों में आप सब श्री पं० जी की सेवाओं से लाभ उठावें।

श्री पण्डित जी को बुलाने, पत्र व्यवहार करने या मिलने का पता निम्न है।

श्री प० देवव्रत जी धर्मेन्दु आर्योपदेशक, १६५४, कूचा दखिनीराय, दरियागंज देहली-६

——

सम्पादकीय—

आर्य जगत

वर्ष २९] रविवार २०२२, २४ अप्रैल १९६६ [अंक १७

शराब का खुला प्रचार

विदेशी सत्ता को भारत से गये हुए बीस वर्ष होने को आये। स्वर्गीय महात्मा गांधी जी ने कांग्रेस के विशाल कार्यक्रम में अन्य बातों के साथ-साथ शराब-बन्दी का भी लाभकारी कार्यक्रम बनाया। उन दिनों अंग्रेजी युग में शराब की दुकानों पर भारतीय नर-नारी पिकेटिंग किया करते थे। हंसते हंसते पुलिस की लाठियां भी खाते थे। जनता के जीवन से इस महाविष को दूर करने के लिए सब ने मिल कर बड़ा भारी संघर्ष किया। स्वराज्य की प्राप्ति के समय तो शराब पर प्रतिबन्ध लगाने की बातें कही जाती थीं। किन्तु महान् खेद है कि आज इस के बारे में क्या हो रहा है। शराब के विरुद्ध वे बातें कहां चली गई!

वैसे तो सारे देश के प्रायः सभी प्रांतों में ऐसी अवस्था है। परन्तु पंजाब की शराब सम्बन्धी स्थिति को देख कर तो दिल बड़ा ही दुःखी होता है कि क्या इतना बलिदान और संघर्ष इसी लिए किया गया था कि सरकार की ओर से देसी और विदेशी शराब का इतना खुला प्रचार किया जाये। लोगों को शराब पीने का भरपूर प्रोत्साहन मिले। क्या स्वराज्य प्राप्त करके उस सत्ता के आसन पर बैठने वालों को इस लिए चुना जाता है कि वे शराब की नदी प्रवाहित करने में पूरी शक्ति लगा देवें? कहां चले गये वे बड़े-बड़े दावे और सारी योजनाएं? शराब का खुला प्रचार जनता के जीवन को कितना पतन के गहरे गर्त्त में गिराता जा रहा है, यह बात किस के सामने नहीं है। आज दूध महंगा है, घी मिलता नहीं पर शराब सस्ती की जा रही है। उनके ठेके दुगने-दुगने किये जा रहे हैं। विदेशी शराब की दुकानें बढ़ाई जा रही हैं। प्रांत को खुले रूप में शराबी बनाया जा रहा है। यह सब इस लिए कि शराब से करोड़ों रुपये मिलते हैं। क्यों भारत का बेड़ा गर्क करने लगे हो। जीवन को शराबी बनाकर किस स्थिति पर ले जाना चाहते हो? शराब रूपी साधन से मिलने वाला धन क्या जीवन की नौका नहीं डुबा देगा। स्वतन्त्र राष्ट्र को किस मार्ग पर धकेलने में लगे हो। क्या महात्मा गांधी का यही मार्ग है? क्या बलिदानों का यही परिणाम है? क्या सत्ता इसलिए प्राप्त की है? क्यों देश को निरा शराबी बनाने पर लग गए हो। आज तो घर २ में शराब पहुंचाई है। ऐसा पैसा जीवन के लिए विष बनेगा। भारत की थोड़ी तो परम्परा कायम रखो। परिवारों को मधुशाला मत बनाओ।

आर्यसमाज को अपने कामों से समय नहीं मिलता। लोग थक-थककर बैठते जा रहे हैं। जो कुछ होता है होने दो ऐसा विचार भी करने वाले हैं। बाहर निकल कर समय देने वाले तो बहुत थोड़े हैं। राजनीति के प्रचण्ड ने तो और भी जन-जीवन को उलझा दिया है, देवता महात्मा हंसराज सरीखे प्रभावशाली नेता कहां हैं जिन की वाणी सारे वातावरण को प्रभावित कर डालती थी। ऐसी है आज की अवस्था। फिर भी निराश नहीं होना। वेद का प्रेमी, देव दयानन्द का अनुयायी, आर्य धर्म का विश्वासी उदास नहीं होता। कोई साथ दे या न दे, कोई बोले या न बोले। कोई चले या न चले परन्तु आर्य हर बुरी बात के प्रतिकार के लिए अकेला ही चल पड़ता है। वह अकेला स्वयं एक महान् आंदोलन बनता है। इस शराब के खुले प्रचार के विरुद्ध आर्य समाजों को खुले रूप में मैदान में आकर जनता को जगाना चाहिए। स्थान स्थान पर बड़े २ सम्मेलन करके सरकार को इस शराब पीने की नीति के विरुद्ध कड़ा प्रोटेस्ट और क्रियात्मिक काम करना चाहिए। आर्यसमाज इस विष प्रवाह को जल्दी रोकने का काम आरम्भ करे। —त्रिलोक चन्द्र

वीरों का इतिहास लिखें

वीरों पर सारे समाज को बड़ा मान होता है। वीर बालक, युवक तथा बलिदान का प्याला पीने वाले अपना जीवन देकर समाज का व देश का इतिहास बनाते हैं। जनता उनसे सदा प्रेरणा लेती है। पंजाब में पंजाबी सूबा बनाने के सरकारी निर्णय पर आन्दोलन हुआ। इतने दिनों तक बड़े-बड़े नगरों में हड़ताल रही। करोड़ों रुपये का प्रसन्नता से घाटा व्यापारियों ने सहन किया। जनता ने सरकार की पुलिस की लाठियां खाईं। उसकी गोलियों से इस आंदोलन में नौ-बारह वर्षों के बच्चे शहीद हुए। मन्दिरों तथा मातृ-शक्ति का अपमान किया गया। पंजाब के एकता प्रेमियों ने आर्यसमाज, जनसंघ, एकता समिति के रूप में मिलकर अपने विचारों का परिचय दिया। युवकों तथा माताओं ने अपने जीवन का पता दिया। स्वामी सत्यानन्द जी एवं वीर यज्ञदत्त जी ने अपने जीवन की अनशन द्वारा बाजी लगा दी। लाठियों, अश्रुगैस तथा गोलियों का भी हंसते-हंसते सामना किया। सब कुछ एकता तथा पंजाब को एक बनाये रखने के लिए किया गया। इन दिनों के इस आन्दोलन में किये गये बलिदानों तथा सारी घटनाओं का इतिहास पुस्तक के रूप में लिखा जाना चाहिए। इस आंदोलन के सारे मान्य नेताओं से हमारा निवेदन है कि वे सारे मिलकर संगठित रूप से इस सारे आंदोलन का पूरा-पूरा सचित्र इतिहास अवश्य ही तैयार करावें। ऐसा इतिहास सारे समाज को जीवन में बड़ी प्रेरणा दिया करता है। यह भी एक प्रकार की जनता को जीवन देने वाली सम्पत्ति होती है। इस समय के तथा आगे आने वाले नर नारी ऐसे बलिदानों से भरे इतिहास से बहुत कुछ सीखा करते हैं। हम अपने सारे मान्य नेताओं से इस आन्दोलन का सारा तथ्य भरा इतिहास तैयार कराने का आग्रह पूर्वक निवेदन करते हैं। वे अवश्य इस ओर ध्यान देकर इस आवश्यकता को पूर्ण करें। अधिक संख्या में ऐसा बलिदान इतिहास प्रकाशित होकर लाखों भाई बहिनों के हाथों में पहुंचे। इस से चेतना व स्फूर्ति मिलेगी। पंजाब का इन दिनों का आंदोलन जन जीवन का एक बड़ा सुन्दर अध्याय है। इस में सब ने अपना अपना योग दिया है। प्रान्त की एकता को इसी रूप में स्थिर रखने के लिए बलिदान व त्याग में किसी प्रकार की भी कमी नहीं की। ऐसा सचित्र इतिहास शीघ्र निकलना ही चाहिए। सं०

★ असतो मा सद्गमय।

(ईश्वर मैं असन्मार्ग से सन्मार्ग... प्राप्त करूं

श्री पूज्यपाद महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की

मेहता रामचन्द्र शास्त्री से भेंट

कितने ही वर्षों से मेहता रामचन्द्र जी शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, पंजाब, सिंध, बलोचिस्तान, लाहौर के दर्शन नहीं कर पाया था। परन्तु पिछले सप्ताह मुझे बीकानेर में कथा के लिए जाना पड़ा तो वहां मेहता जी के दर्शन करके हृदय गद्गद् हो गया इस समय उनकी आयु ८ कम १०० वर्ष की है और उनकी आवाज में वही ओज है जो युवावस्था में था परन्तु उनकी टांगों ने चलने से इंकार कर रखा है। मेहता रामचन्द्र जी अपने सुपुत्र श्री दत्ता जी के पास ठहरे हुए हैं जो बीकानेर में Deputy Inspector General police है। कितनी श्रद्धा, भक्ति और प्यार से श्री दत्ता जी, मेहता जी की सेवा कर रहे हैं। इस युग में ऐसे पुत्रों का मिलना बड़े भाग्य की बात है।

मेहता रामचन्द्र जी शास्त्री ने निरन्तर ४० वर्ष वेद प्रचार का कार्य किया है। मेहता जी पेशावर में निवास करते थे। एक मिरजई मुसलमान अब्दुल लतीफ ने हिन्दु मुसलमानों में फूट डलवा दी जिस के कारण से हिन्दुओं को अपना अलग स्कूल National School के नाम से बनाना पड़ा। यह १८९५ की बात है तब बख्शी गोकुल चन्द जी ने युवकों को मुस्लिम प्रभाव से बचाने के लिए बड़ी भाग-दौड़ की। मेहता रामचंद्र जी शास्त्री इसी स्कूल में पढ़ाने लगे। और साथ ही सीमा प्रांत के इस भाग में बन्नू कोहाट, हंगू, एबटाबाद इत्यादि नगरों में वेद-प्रचार के लिए जाने लगे। आर्यसमाज पेशावर के, उत्सव पर श्री भाई परमानन्द जी. पं. भगतराम जी शास्त्री और दूसरे उपदेशक पहुंचे। मेहता रामचन्द्र शास्त्री का भाषण सुनकर ये बड़े प्रभावित हुए। लाहौर पहुंचकर भाई परमानन्दजी और पंडित भगतराम जी ने महात्मा हंसराज जी को बताया कि मेहता रामचन्द्र जी शास्त्री कितने अच्छे वक्ता और विद्वान हैं। महात्मा हंसराज जी ने मेहता रामचन्द्र जी शास्त्री को पेशावर में पत्र लिखा कि वो आर्य-प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा में काम करना स्वीकार करें। आर्य प्रादेशिक सभा की स्थापना १८९२ में हो चुकी थी। मेहता जी महात्मा जी के पत्र मिलते ही लाहौर पहुँच गए। उस समय ला० रामप्रसाद जी बी०ए० आर्य प्रादेशिक सभा के मन्त्री पद पर काम कर रहे थे। यह १९०४ की बात है। मेहता रामचन्द्र जी को कार्य करते हुए एक महीना व्यतीत हुआ तो भाई परमानन्द जी एम०ए० ने मेहता जी से पूछा कि मासिक वेतन क्या लोगे? मेहता जी ने कहा कि मैं वेतन लेने के लिए लाहौर नहीं आया। जिस प्रकार पेशावर में काम करता था उसी प्रकार यहां करता रहूंगा। पंजाब केसरी लाला लाजपतराय जी भी पास बैठे थे, कहने लगे कि जीवन निर्वाह के लिए कुछ तो लेना ही चाहिए। बहुत साधारण वेतन पर मेहता जी १९०४ से १९४७ तक कार्य करते रहे। उनके भाषणों की धूम मच गई। रामायण की कथा सुनने के लिए दूर-दूर से जनता पहुँच जाती। वेद मंत्रों की भी झड़ी लगा देते। आर्य समाज ने जब शुद्धि का कार्य आरम्भ किया तो मेहता जी ने 'पतीतों की शुद्धि की सनातन है' के नाम से एक प्रमाणिक ग्रन्थ लिखा जो कितनी ही भाषाओं में प्रकाशित हुआ। केवल अपने ही देश में नहीं मेहता जी अफ्रीका भी पहुंचे और वहां लोगों को वेद संदेश सुनाया। कितने ही शास्त्रार्थों में मेहताजी ने वैदिक सच्चाई का सिर ऊंचा किया। गर्मियों के दिनों में श्री मेहर चन्द जी महाजन मेहता जी को अपने साथ धर्मशाला ले जाया करते थे और उन से वेद कथा सुना करते थे। १४ सितम्बर १९४७ की बात है कि जब मेहता जी Uppe Dharm Shala में महाजन जी की कोठी में ठहरे हुए थे तो अकस्मात उनकी टांगों में कम्पन होने लगा। निर्बलता बढ़ने लगी। फिर भी मेहता जी ने वेद-प्रचार का कार्य जारी रखा परन्तु १९६२ में शरीर काम करने से रह गया। देश विभाजन के पश्चात मेहताजी ने नई दिल्लीमें अपना भवन बनवा लिया और देहली की आर्यसमाजों में जाकर वेद-प्रचार करते रहे। जब तक उनके शरीर में शक्ति रही आर्य समाजी उन से निरन्तर काम लेते रहे। परन्तु जब शरीर काम करने से रह गया तो फिर उन्हें पूछा तक नहीं गया। हां उनके पुत्रों ने उनकी भरपूर सेवा की और अब भी कर रहे हैं। प्रभु कृपा से मेहता जी के सारे सुपुत्र बहुत ऊंचे सरकारी ओहदों पर हैं। जयपुर जाने के लिए, ला० मेहर चन्द जी पुरी ने मेहता जी को रेलगाड़ी पर चढ़ाने का कष्ट किया। मेहता जी अपने सुपुत्र के पास पहुँच गए। डाक्टरों ने उन्हें भली-भांति देखा। और कहा कि यह तो वृद्धावस्था का रोग है जो जा नहीं सकता। अक्तूबर ६३ में मेहता जी को पेशाब का कष्ट हुआ। दो महीने अस्पताल में रह कर आपरेशन कराने से कम्पन अधिक हो गया। इसी बीच में उनके पितृ-भक्त पुत्र श्री नरदेव जी का देहांत हो गया। इससे उन्हें अधिक आघात पहुँचा। परन्तु इस से भी अधिक उन्हें कष्ट इस बात का हुआ कि आर्यसमाज की ओर से उनसे बहुत कम सहानुभूति की गई। उन्हें यह भी शिकायत है कि अनारकली आर्यसमाज नई दिल्ली ने शोक पत्र भी नहीं लिखा। परन्तु मेहता जी के हृदय में वेद-प्रचार की लगन कम नहीं हुई! २४ मार्च को श्री दत्ता जी की विशाल कोठी में सत्सङ्ग का आयोजन किया गया उस सत्सङ्ग में मेहता जी ने दो मन्त्रों की ऐसी सुन्दर व्याख्या की कि सब लोग गद्गद् हो गए। मेहता जी के सुपुत्र श्री नरेन्द्रदत्त जी Depty Inspector general Police और उनका परिवार तन, मन, धन से मेहता जी की सेवा में लगा हुआ है।

मेहता रामचन्द्र जी शास्त्री ने अपना लगभग ५००० रु० का पुस्तकालय अनारकली आर्यसमाज के पास भेजा था। मेहता जी चाहते हैं कि इस पुस्तकालय का सदुपयोग किया जाए जो जालन्धर में नहीं हो सकता अतः यह पुस्तकालय उनकी इच्छा के अनुसार आर्यसमाज अनारकली, नई दिल्ली के पास भेज देना चाहिए। ताकि विद्वान लोग उस से लाभ उठा सकें।

श्री अमरनाथ खोसला का निधन

श्री अमरनाथ जी खोसला जो कांगड़ा के प्रमुख सामाजिक कार्य-कर्ता थे, विगत सप्ताह देहांत हो गया। उनकी आयु ७१ वर्ष की थी। आप कई वर्ष कांगड़ा आर्य-समाज के प्रधान, तथा G. A. V. H/S. स्कूल कांगड़ा की प्रबन्धक समिति के प्रधान भी रहे। आर्य-समाज कांगड़ा की यह क्षति अपूर्ण ही रहेगी। आर्यजगत उनके परिवार से सहानुभूति प्रकट करता है।

पंजाबी सूबा तथा आर्यसमाज



प्रिंसिपल भगवान दास जी डी०ए० वी० कालेज अम्बाला नगर

१९४७ में जब हिन्दु सिख पाकिस्तान से मारपीट कर निकाले गये तो इधर आते ही कुछ सांप्रदायिक अकाली नेताओं ने खालिस्थान का नाद लगाया था। पर पाकिस्तान का कड़वा स्वाद सब को बराबर मिला था इस लिये पंजाब की जनता ने उनकी न सुनी। कहीं-कहीं ग्रामों में सांप्रदायिकता की अग्नि भड़की पर जनता की सूझबूझ से शांत हो गई। उसके पश्चात् भी कुछ नेता अपनी ढफली बजाते ही रहे तथा जनता को चैन से बैठने न दिया शायद केन्द्रीय सरकार भी थोड़ा बहुत झुकती गई पर खालिस्थान के काम पर उन नेताओं को पंजाब में बहुदा सहयोग न मिला। लाभ यही रहा कि सिक्खों को कुछ न कुछ सरकार देती ही रही जिस से हिन्दु सिक्खों में कुछ खाड़ी बनती चली गई और यहां तक हुआ कि धार्मिक स्थानों में विशेष कर कभी-कभी दोनों भाई एक दूसरे पर कीचड़ उछालते रहे। सब से अधिक खाड़ी तब पैदा हुई जब सिक्खों की धार्मिक लिपि गुरुमुखी को पंजाबी भाषा की लिपि ठोंस दिया गया। १९५६ के क्षेत्रीय योजना ने तो गुरमुखी लागू करके ७० प्रतिशत हिन्दुओं को तीसरे दर्जे के नागरिक बना दिया! अकाली मनोवृति के सरकारी अफसरों ने जनता पर, जो गुरुमखी नहीं जानती थी, अत्याचार करने प्रारम्भ कर दिए। कई ग्रामों में तो क्या बड़े-बड़े नगरों से भी ऐसी शिकायतें मिलीं कि काले दिल के अफसरों ने उर्दू, हिन्दी तथा अंग्रेजी के, प्रार्थना पत्रों तथा पुस्तकों को फाड़ा तथा जनता का अपमान किया। इससे लोगों का स्वाभिमान जागृत हुआ तथा-जन समूह हिन्दी रक्षा के नाम अपना रोष लेकर उठा तथा भारत के इतिहास में प्रथम बार भाषा के नाम पर किये जा रहे अत्याचारों का विरोध किया। सत्याग्रहियों को जो कष्ट दिये गए वह कभी भूल नहीं सकते पर सरकार ने यह मान लिया कि रोष सत्य था तथा चाहे कोई रूप दिया न रहा पर साम्प्रदायिक अफसरों के होश ठिकाने आ गए तथा गुरुमुखी अत्याचार बन्द हुए। दूसरा लाभ इस आंदोलन का यह हुआ कि अकाली भाईयों ने समझ लिया कि खालिस्थान की चाल उनकी नहीं चलेगी तथा उन्होंने सिख सूबा के नाद को छोड़कर पंजाबी सूबे का नाद प्रारम्भ किया। भाषा अत्याचार के घाव इतने ताजे थे कि हिन्दुओं को उनके कहने पर विश्वास न आया तथा उनका नाद व्यर्थ में रह गया।

हिन्दी आंदोलन में कुछ आर्य समाजी नेताओं के स्वार्थ तथा दुर्बलता के कारण एक दुखदाई बात हुई और वह यह कि गुरुमुखी की अनिवार्यता हरियाणा पर बनी रही। गत दस वर्षों के मिडिल परीक्षा परिणाम तथा प्राईमरी के छात्रवृत्ति परीक्षा परिणाम यह बतायगे कि गुरुमुखी की अनिवार्यता के कारण हरियाणा के बच्चे बहुत पिछड़ गए क्योंकि पंजाबी क्षेत्र के हिन्दुओं को तो एक लिपि ही सीखनी पड़ी पर हिन्दी क्षेत्र के विद्यार्थियों को लिपि तथा भाषा दोनों ही सीखनी पड़ीं जो बहुत कठिन कार्य है। भारत के किसी प्रदेश में द्वितीय भाषा अनिवार्य नहीं पर हरियाणा को इस कठिनाई में जबर से डाला गया। परिणामान्त पंजाब में तीन प्रकार के नागरिक बन गए—

(क) वह जो लिपि तथा भाषा को धार्मिक क्षेत्र में वर्षों से जानते थे तथा बोली भी वही बोलते थे।

(ख) वह जो बोली तो बोलते थे पर लिपि नहीं जानते थे।

(ग) वह जो न लिपि जानते थे तथा न बोली बोलते थे।

आर्य समाज के नेता यह भूल गए कि गुरुमुखी की अनिवार्यता ने तो पंजाब के टुकड़े हो जाने का अंकुर बीजा था। संसार के इतिहास में मजहब के नाम पर तो लोगों को बदला भी गया और पृथक भी किया गया। भाषा के आधार पर तो भेदभाव कहीं सुने नहीं। पंजाब को एक रखने का यह एक निराला ढंग था। जिसका प्रमाण इतिहास में नहीं इस का परिणाम यह हुआ कि पंजाबी सूबा की नींव रखी गई। जब मैंने १९५७ में यह कहा तो कुछ कांग्रेसी नेता तथा आर्य समाजी नेताओं ने मेरा मखौल उड़ाया और मैं स्वयं नहीं जानता था कि मेरा अनुमान नौ वर्ष में ही सत्य निकलेगा। अब वह स्वार्थी नेता क्या उत्तर दे सकते हैं। हरियाणा को हमने स्वयं काट दिया क्योंकि अगर वह अलग न हों तो भाषा का जबर कैसे जाये। पंजाबी क्षेत्र के हिन्दु भी इस में उत्तरदायी हैं।

दूसरी बात जो पंजाबी सूबे के निर्माण में बहुत सहायक हुई वह था आर्यसमाज का घरेलू युद्ध। इस युद्ध में यह बहुत कष्टदायक बात हुई कि युद्ध बिना कहे क्षेत्रीय ढङ्ग पकड़ गया इस पर अभी मैं चुप रहना चाहूंगा केवल इतना कहूंगा कि आर्यसमाज जो सर्वसमिति से भाषाई प्रांतों के विरोध में था आज घरेलू युद्ध के कारण उसका एक बड़ा अग्रदल पंजाबी सूबे के पक्ष में है। अगस्त १९५७ से पूर्व मैंने कई मित्रों को कहा कि आर्यसमाजी भाई पंजाबी सूबा बना कर रहेंगे। अगस्त में जब कुछ आर्य नेताओं ने मुझे लिखा अथवा पञ्जाबी सूबा के विरोध के लिये कहा तो मैंने स्पष्ट कहा तथा लिखा था कि पञ्जाबी सूबा बनेगा। पञ्जाब के कांग्रेसी नेता जो पञ्जाबी सूबा के घोर विरोध में थे वह भी मानेंगे कि पंजाबी सूबों का क्षेत्र आर्यसमाज की फूट के कारण तैयार था। हरियाणा को पीछे रखना, गुरुमुखी की अनिवार्यता तथा आर्यसमाज की फूट बड़े भारी चिन्ह थे। पञ्जाब के विभाजन के विरोध में दो बड़े नेता जिन्होंने भिन्न-भिन्न समय पर आत्म बलिदान की घोषणा की थी जब कहीं मिले तो मैंने सानुरोध कहा था कि कोई लाभ नहीं आराम से बनने दें।

तीसरी बात जिसने पंजाबी सूबे के लिये बहुत सहायता की वह थी पञ्जाब कांग्रेस के घर में युद्ध थोड़ा नहीं बहुत। बाहर से कार्य चलता दीखता था और शायद अब भी चल रहा होगा पर अन्दर से समूचा नियन्त्रण टूट चुका है। स्वार्थवाद तथा कुटुंबवाद के नग्न नृत्य ने पंजाब की जनता के दिलों के दो टुकड़े न कर दिये अथवा पञ्जाब के भी। अच्छी बात इस झगड़े में यह रहा कि पंजाब की कांग्रेस के अन्दर यह झगड़े साम्प्रदायिक जोड़ तोड़ के आधार पर जैसे कि पहले हुआ करते थे, न होकर केवल स्वार्थवाद पर हुए। (क्रमशः)

आर्यसमाज (कालिज विभाग) बटाला का चुनाव

१७-४-६६ को निम्न प्रकार से हुआ।

प्रधान—म० मनोहरलालजी, उपप्रधान—श्रीमती शकुन्तला राय, श्री जुगलकिशोर जी भारद्वाज। मन्त्री—श्री दर्शन कुमार जी हांडा, उपमंत्री—श्री दर्शन कुमार जी शारदा, श्री कुलदीप जी महता। कोषाध्यक्ष—श्री देसराज जी जुलका।

पुस्तकाध्यक्ष—श्री वेदपाल जी हांडा।

अंतरंग सदस्य—डा० रामप्रकाश जी खुल्लर, श्री मुलखराज जी, श्री गुरवचनसिंह जी।

आदर्श त्यागी म० हंसराज जी

(ले० पं. रुद्रदत्त जी शर्मा प्रधान आर्य समाज लक्ष्मणसर अमृतसर)

संसार में दूसरों को सुखी देख कर जलने वाले लोग तो प्रायः दिखाई देंगे परन्तु ऐसे महान आत्मा विरले ही मिलेंगे जो दूसरों को दुःख में देखकर अधीर और दुःखी हो जाएं। उन में भी ऐसे उदाहरण बहुत कम मिलेंगे जो दूसरों का दुःख दूर करने के लिये स्वय दुःख उठाने और अधिक से अधिक कुर्बानी देने के लिए तैयार रहें। निसंदेह वह मनुष्य नहीं देवता कहलाते हैं। महात्मा हंसराज जी में ये गुण पराकाष्ठा को पहुँचे हुए थे। उन्होंने संसार के दुःखों और उनके सबसे बड़े कारण अन्धकार को दूर करने के लिए मानो अपना जीवन वकफ कर रखा था। दूसरों के कष्ट निवारण करना उनके जीवन का ध्येय बन चुका था। उन्होंने इस ध्येय की पूर्ति के लिए अपने गरीब माता पिता की खून पसीने की कमाई और दिन रात के परिश्रम द्वारा प्राप्त की हुई उच्च कोटि की शिक्षा, अपनी जवानी और जवानी की उमगें और इसके साथ अपना बुढ़ापा भी न्योछावर कर दिया अर्थात् अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक परोपकार का मुजस्समा बने रहे।

महात्मा जी ने जिन दिनों B. A. पास किया, उन दिनों B. A. की डिगरी को अत्याधिक मान और प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखा जाता था ग्रैजुएट होते ही बड़े से बड़े सरकारी पद प्रतीक्षा में खड़े मिलते थे। महात्मा जी को सरकार की ओर से अनेकों निमन्त्रण आये परन्तु उन्हें तो देश और जाति की सेवा की धुन लग चुकी थी अतः उन्होंने महर्षि दयानन्द की पुण्य स्मृति में स्थापित किये गये D. A. V. High School मे मुख्याध्यापक और पीछे कालज बनने पर प्रिंसिपल के रूप में बिना वेतन कार्य करना स्वीकार किया। उनके गुजारा के लिए ४०) मासिक उनके पूज्य भ्राता श्री मुलकराज जी, भल्ला अपने पास से दिया करते थे। जिसमें श्री महात्मा जी अत्यन्त तङ्गी के साथ निर्वाह किया करते थे और बहुत बार उन्हें परिवार सहित भूखे रहना पड़ता था।

देश और धर्म के लिये शीस कटा देना अथवा जिन्दा चिता में जल मरना अतीव कठिन है परन्तु आयु भर घोर तपस्या की भट्टी में जलते रहना और दूसरों को प्रकाश देना उससे भी अधिक कठिन है। एक बार भावजा जी के नाराज हो जाने के कारण बड़े भ्राता जी द्वारा ४०) की सहायता मिलनी बन्द हो गयी घर में नितान्त अन्धेरा छा गया। फाका कशी अर्थात् भूखे मरने की नौबत आ गयी। चने मिलने भी दुर्लभ हो गये। तब अधीर होकर पुस्तकें लिखकर निर्वाह करने का विचार किया। अल्मारी से एक पुस्तक निकाली वह भगवद्गीता थी। खोलते ही सामने श्लोक आया 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।' पढ़ते ही मन को शांति आ गयी, और दृढ़ता पूर्वक अपने कर्तव्य पालन में लग गए। उधर बड़े भ्राता जी ने अपनी भूल अनुभव करके फिर से सहायता आरम्भ कर दी। अब भी देश और जाति पर कोई आपत्ति आई महात्मा जी सदैव सेवा के लिये आगे निकल आते थे। कांगड़ा आदि के भूकम्पों मालाबार आदि में मुसलमानों द्वारा हिदुओं पर किये गये अत्याचारों के समय तथा मलिकाना राजपूतों की शुद्धि आदि के अवसर पर उन्होंने जो महान कार्य किए वह आर्य साज के इतिहास में स्वरणाक्षरों में लिखने योग्य हैं। महात्मा जी जहां और जिस कार्य के लिए खड़े हो जाते थे उन्हें कोई हिला नहीं सकता था जब आगे पग बढ़ाते तो कोई रोक नहीं सकता थ। जब वेद प्रचार अथवा विद्या के प्रसारार्थ धन के लिये अपील किया करते थे तो पुरुष और स्त्रियां धन, वस्त्र और भूषण लुटा देते थे। देश में डी० ए० वी० कालजों और स्कूलों का जो जाल फैल रहा दिखाई दे रहा है यह सब महात्मा जी के घोर परिश्रम और त्याग का फल है। वह जब तक जीवित रहे, स्वयं सरकार के कहने पर भी कभी एक पाई तक ग्राण्ट न ली और न कोई सरकारी प्रतिबन्ध सहन किया।

कूट नीतिज्ञ अंगरेज सरकार ने उनके सुपुत्र श्री बलराज जी पर देश प्रेम के बदले साजिश का केस चला कर फांसी की सजा सुना दी। उस समय के गवर्नर ने कहला भेजा कि यदि महात्मा हंसराज एक बार संकेत भी कर दें तो मैं श्री बलराज को तुरन्त मुक्त कर दूंगा। परन्तु आत्म-सन्मान के पुतले महात्मा जी ने गवर्नर के सामने प्रार्थना करना स्वीकार न किया। अपितु एक दिन गवर्नर डी० ए० वी० कालज देखने के बहाने स्वय आ गया तो महात्मा जी ने उस दिन कालिज से छुट्टि ले ली ताकि शिष्टाचार के नाते गवर्नर का स्वागत और सत्कार करने पर कहीं गवर्नर यह न समझ बैठे कि महात्मा जी अपने बेटे को छुड़ाने के लिए उसकी आओ भक्त कर रहे हैं।

जोगेन्द्रनगर समाज में

हिमाचल में आर्य समाज जोगेन्द्रनगर भी सभा से सम्बन्धित समाजों में बड़ा जागरूक समाज है। इसका विशाल भवन तो सारे हिमाचल में प्रसिद्ध ही है। साथ-साथ कार्य भी बड़ा सुन्दर होता है। जहां वृद्धों के साथ युवक वर्ग होगा, वहां जीवन की ज्योति होगी। श्री गुरदयालसिंह जी प्रधान, श्री धवन जी, श्री जियालाल जी, श्री बलराजजी, श्री बतरा जी, श्री लालसिंह जी आर्य, श्री ताराचन्द जी, श्री मिलखीराम जी आदि सज्जन उत्साही हैं, वहां युवक श्री मुरारीलाल जी मन्त्री, श्री राजकुमार जी श्री सत्यपाल जी भी खूब काम में जुटे हैं। इस बार ता० ८ से १३ अप्रैल तक खूब कथा व उत्सव की धूम रही। प्रातः यज्ञ व रात को प्रचार था। इस बार समाज ने बड़ी प्रगति की है पंजाब केसरी ला० लाजपतराय वाचनालय का भी समारोह से उद्घाटन हुआ। हिमाचल के गवर्नर जी की सेवा में साहित्य भेंट किया गया। प्रीति भोजन समारोह का तो कहना ही क्या? कथा-उत्सव में पं० त्रिलोकचन्द्र शास्त्री तथा पं० राजपाल मदन-मोहन मंडली गई थी। श्री प्रधान जी की सुपुत्री ने सभा वेदप्रचार में १०१) रुपये दिये। मंडी से भी श्री इन्द्रसिंह जी, श्री चेतराम जी की धर्मपत्नी पधारे थे। समारोह देख कर मन प्रसन्न हो गया—सं०

महात्मा आनन्द स्वामी जी का पत्र आर्यजगत के नाम

मेरे प्यारे पं० त्रिलोकचन्द्र शास्त्री सप्रेम नमस्ते!

मैं ६ अप्रैल को देहली से उड़कर ३॥ तीन घंटे में थाईलेंड पहुँच गया था। उस दिन से हिन्दु समाज के विशाल भवन मे कथा शुरू है। यहां गर्मी तो बहुत है, परन्तु लोग श्रद्धालु हैं। यहां के राजा को राम कहा जाता है। बुद्ध भगवान की पूजा होती है। १५० फुट लंबी बुद्ध भगवान की सोने की मूर्ति है। यहां १७ अप्रैल तक कथा करके १८ को बैंकाक से सिंगापुर चले जाना है। वहां एक महीना सेवा करके फिर मलेशिया पहुँच कर सेवा करूंगा। मनुष्य को मनुष्य बनाने का ढंग वेद क्या बतलाता है यही कथा कर रहा हूं। सब को नमस्ते।

आनन्द स्वामी सरस्वती
C/o
मूलामल एण्ड कम्पनी
७३/१ हाई स्ट्रीट सिंगापुर-६

कविराज रामसिंह जी वैद्यवाचस्पति आयुर्वेदाचार्य आरोग्य मन्दिर यमुनानगर एक माने हुए वैद्य हैं। आपने अपने जीवन के वर्षों के अनुभव के पश्चात् स्वास्थ्य के लिए आसनों के महत्व पर जोर देते हुए आज के युवकों के लिए बड़ा ही महत्वपूर्ण कार्य किया है। क्रियात्मिक जीवन है। आपका लिखित आरोग्य प्रकाश स्वास्थ्य का प्रतिपादक है। आर्य-जगत् में अपने विचारों को देकर कृपा करते रहते हैं—स.

स्वास्थ्य में आसनों का महत्त्व

(ले०—कविराज श्री रामसिंह जी यमुनानगर)

जीवन का अनुभव

मैं अपने प्रिय पाठकों को अपने २५ वर्षों के अनुभव के पश्चात् यह सन्देश देना चाहता हूँ कि आसनों का अभ्यास निस्सन्देह एक नया जीवन प्रदान करता है। लगभग १६-१७ वर्ष की आयु तक मेरे स्वास्थ्य की अवस्था बड़ी ही दयनीय थी। इसका कारण यह था कि मेरे मन में विद्या प्राप्ति की बड़ी लगन थी। बहुत अधिक समय पढ़ने में ही व्यतीत होता था। श्रेणी के प्रथम रहने की धुन के कारण मुख्य कार्य पढ़ना ही हुआ करता था। अतः व्यायाम तथा विश्राम की कमी के कारण पाचन शक्ति दुर्बल पड़ गई। परिणाम स्वरूप स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन विकृत होता गया। मैट्रिक में प्रथम दर्जे में पास होने का सौभाग्य तो प्राप्त हुआ, किन्तु स्वास्थ्य दुर्बल होने के कारण जीवन में आनन्द का अभाव प्रतीत होने लगा।

जब डी० ए० वी० कालेज लाहौर में आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्ति के लिए प्रविष्ट हुआ तो मैं शारीरिक रूप में अपने आप को सारी श्रेणी में कमजोर देख कर बड़ा ही लज्जित हुआ करता था और उसी समय से विद्या की उन्नति के साथ-साथ स्वास्थ्य को उन्नत करने की भी प्रबल भावना मन में पैदा हो उठी। जब कोई भावना मन में प्रबल वेग का रूप धारण कर ले तो प्रभु कृपा से उसकी पूर्ति का साधन भी अवश्य प्राप्त हो ही जाता है। ऐसा ही मुझे उस समय तथा उसके बाद भी कई बार अनुभव हुआ है।

लगभग छः मास के निरन्तर अभ्यास का आश्चर्यजनक प्रभाव मैंने अपने शरीर पर अनुभव किया। मेरी भूख बढ़ने लगी, स्वास्थ्य सुधरने लगा। शरीर में एक नई जीवन शक्ति, स्फूर्ति अनुभव होने लगी। चित्त में एक विशेष प्रकार की प्रेरणा रहने लगी और साथ ही विद्या-अध्ययन में भी विशेष सफलता मिली। प्रभु-कृपा से आयुर्वेद की अन्तिम श्रेणी में सर्वप्रथम रहने और स्वर्णपदक (Gold Medal) प्राप्ति का सौभाग्य मिला। शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विशेष विकास एवं विद्यार्थी जीवन के विशिष्ट लक्ष्य, विद्याभ्यास में विशेष सफलता का साधन, इस नियमित जीवन और योगासनों के अभ्यास में मेरी इतनी श्रद्धा बढ़ी कि आज तक भी मैं अपने जीवन को उसी प्रकार नियमित रूप से व्यतीत करने का यत्न करता हूँ। अब मैंने योगासनों, प्राणायाम और उपासना को अपने जीवन के कार्यक्रम का एक अंग बना लिया है।

इस मार्ग पर चलते हुए जहां एक सफल विद्यार्थी होने का सौभाग्य मिला, वहां अन्य पारिवारिक व सामाजिक कर्तव्यों की पालना में भी प्रभु-कृपा से पूरी सफलता मिली है जो शक्ति, स्फूर्ति उत्साह शरीर तथा मन में २०-२२ वर्ष की आयु में थे। इस नियमित कार्य-क्रम और आसनों के अभ्यास के परिणाम-स्वरूप आज पैंतालीस वर्ष की अवस्था में भी वैसा अनुभव करता हूँ। मैं अपने प्रिय पाठकों को विशेष कर प्रिय विद्यार्थियों और भाई-बहनों को यह सन्देश देना चाहता हूं कि यदि आप भी जीवन में सफलता चाहते हैं, सुख शान्ति व आनन्द की प्राप्ति चाहते हैं तो प्राचीन महापुरुषों के अनुभूत इस वैदिक मार्ग पर चलें।

सूचना

इन दिनों मैं सभा मन्त्री, वेद प्रचार अधिष्ठाता का कार्य सम्पन्न कर रहा है। अतः वेद प्रचार तथा उत्सवों के प्रोग्राम सम्बन्धी सारा पत्र व्यवहार मन्त्री सभा के नाम पर किया जाय। आर्य समाजों के अधिकारियों से नम्र निवेदन है कि वे अपने उत्सवों इत्यादि की तिथियों को पर्याप्त समय पहले ही स्वीकृत करा लिया करें ताकि पीछे प्रोग्राम बदलने की आवश्यकता न रहे।

वेद प्रकाश मलहोत्रा
सभा मन्त्री
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा
जालन्धर

आर्य प्रतिनिधि सभा का भविष्य

आर्य प्रतिनिधि सभा और आर्य प्रादेशिक सभा के मतभेद विरोध के अतिरिक्त भारत सरकार ने पंजाब के विभाजन की घोषणा कर दी है। जिस से दोनों सभाओं को बहुत दुःख हुआ। कुछ महानुभावों के दिल में शक पैदा हो रहा है कि कहीं पंजाब के विभाजन की तरह आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का विभाजन करके आर्य-समाज का संघटन छिन्न-भिन्न न हो जाए। मैं आर्य समाजों और आर्य भाइयों को विश्वास दिलाता हूँ कि यह सभा वर्तमान पंजाब में आर्यसमाज के संघटन के लिए हमेशा कोशिश में रहेगी और सभा के विभाजन का किसी तरह का प्रश्न ही पैदा नहीं होगा। इस विषय में किसी तरह का संदेह पैदा नहीं होना चाहिए।

रामसिंह प्रधान
सभा

★ हम ने विषयों को तो भोगा नहीं उल्टे विषय ही ने हमें भोग लिया, हम तप न तपे पर तप ने हमें तपा दिया और समय नहीं बीता परन्तु हमारी आयु अलबत्ता व्यतीत हो गयी। परन्तु इतने पर भी तृष्णा बुड्ढी नहीं हुई बल्कि हम ही बूढ़े हो गये।

स्वर्गीय महात्मा हंसराज जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

ले० श्री कृष्णचन्द्र जी प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा दिल्ली और उप प्रधान आर्य केन्द्रिय सभा दिल्ली



१८६४ (१९ अप्रैल) बिजवाड़ा जिला होशयारपुर (पूर्वी पंजाब) में ला० चूनीलाल जी के गृह में जन्म हुआ।

१८८२—दी जेनरेटर आफ आर्यावर्त अंग्रेजी साप्ताहिक पत्र जारी किया।

१८८५—(नवम्बर) बी. ए. की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए और अपना जीवन आर्यसमाज और डी. ए. वी. कालिज कमेटी के अर्पण कर दिया।

१८८६—(१ जून) डी. ए. वी. कालिज की लाहौर में स्थापना और महात्मा जी को अवैतनिक प्रिंसिपल नियुक्त होना।

१८८५—आर्य समाज और आर्य प्रतिनिधि सभा लाहौर के प्रधान बने।

१८६२—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की स्थापना की।

१८६५—'आर्य गजट' साप्ताहिक पत्र का श्री ला० लाजपतराय जी पंजाब केसरी के साथ सम्पादन आरम्भ किया।

१९११—कालिज के प्रिंसिपल के पद को त्याग दिया और प्रादेशिक सभा के काम में तन-मन से लग गये।

१९१३—दयानन्द कालिज कमेटी के भी प्रधान बनाए गए।

१९१४—ज्येष्ठ पुत्र श्री बलराज जी को लार्ड हार्डिंग केस में सात साल का दण्ड मिला और महात्मा जी की धर्मपत्नी का देहान्त हो गया।

१९१८—पंजाब शिक्षा कान्फ्रेंस के प्रधान चुने गए।

१९१९—नेशनल सोशियल कान्फ्रेंस के प्रधान चुने गए।

१९२२—हिन्दू संगठन की योजना तैयार की और आगरा इत्यादि स्थानों में मलकानों की शुद्धि प्रारम्भ की।

१९२४—अखिल भारतीय शुद्धि सभा के प्रधान चुने गये।

१९२७—अखिल भारतीय आर्य कान्फ्रेंस दिल्ली के प्रधान चुने गये।

१९२८—महिला महाविद्यालय लाहौर स्थापित किया।

१९३७—प्रादेशिक सभा के प्रधान पद से पृथक हो गये।

१९३८—(१५ नवम्बर) केवल २० दिन बीमार रह कर ओ३म का जप करते २ रात्री के ११ बजे महात्मा जी ने अनेक क्षेत्रों में अविद्या से, भूख से, भूकम्पों से, अग्नि से विद्रोहों और अन्य कष्टों से पीड़ित समस्त देश में आर्य जनता के दुःखों को निवारण करने का भरसक प्रयत्न किया।

महर्षि दयानन्द की अमर ज्योति से महात्मा हंसराज जी ने ज्योति प्राप्त की, भगवान इन ज्योतियों से हमारे हृदयों को भी प्रकाशित करें जिसे कि हम सब वास्तविक रूप में पूज्य महात्मा जी के अनुयायी बनें। महात्मा जी त्याग, सादगी और गम्भीरता की प्रतिमा थे।

शोक समाचार

श्री भरतसिंह जी मन्त्री आर्यसमाज मोखरा के पिता श्री चौ० नेकीराम जी का ८८ वर्ष की आयु में देहावसान ५-४-६६ को होगया आप आर्यसमाज और उसके सिद्धांतों के कट्टर पक्षपाती थे। आपकी सारी आयु समाज सेवा में ही व्यतीत हुई है। उनके निधन से आर्यसमाज मोखरा की काफी क्षति हुई है जो कि शीघ्र पूर्ण नहीं हो सकती। आर्यजगत की ओर से उनकी आत्मा की सद्गति व परिवार शांति व धैर्य प्रदान करने की प्रभु से प्रार्थना करते हुए समवेदना प्रकट करते हैं।

आर्यसमाज स्टेशन रोड

मैसूर—श्री कृष्णाजी शास्त्री के तत्वाधान में निम्न चुनावसम्पन्न हुआ।

प्रधान—श्री लक्ष्मीचन्द जी, मन्त्री—श्री ए. एस. आयगर, कोषाध्यक्ष—श्री के. रामकृष्णाप्पा पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री लक्ष्मी नरसिंहमन।

अंतरंग सभासद :—

श्री हनुमन्तपा, श्री ह० नागपत, श्री रत्नैया सेठी, श्री वैंकट रमन गुप्ता।

आर्यसमाज नंगल टाउनशिप का वार्षिकोत्सव

८-४-६६ से १०-४-६६ तक तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। २ अप्रैल से ७ तक स्वामी वेदानन्द सरस्वती (काठगढ़ वाले) की कथा तथा श्री राजपाल मदन मोहन जी श्री मेलाराम जी के भजन होते रहे। कथा तथा उत्सव का रात्री कार्यक्रम मेन मार्केट में सार्वजनिक स्थान पर हुआ। उपस्थिति अच्छी रही।

आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग नई देहली का चुनाव

प्रधान—श्री तीर्थराम हांडा

उपप्रधान :—

राय बहादुर डा० गणेशदास कपूर
प्रिंसिपल शान्ति नारायण
श्री मुलखराज भल्ला
,, लालचन्द खन्ना
,, गणपतराय तलवाड़
,, सेवाराम कपूर
,, अमृतलाल हांडा
,, रामचन्द थापड़
,, दयाराम शास्त्री

मन्त्री—श्री सोमनाथ गुप्ता

उपमन्त्री :—

श्री दरबारीलाल
,, मुन्शीराम सचदेवा
,, प्रकाशचन्द महता
,, हरिमित्र बहल
,, राधाकृष्ण ठाकुर
,, गोपाल कृष्ण दत्ता जी
,, जगदीशचन्द्र जी
,, भगवत स्वरूप जी
,, शान्ति नाथ जी

कोषाध्यक्ष—श्री बृजलाल सोनी
उप-कोषाध्यक्ष—श्री प्रेमकृष्ण भारद्वाज
लेखा-निरीक्षक—श्री रामसरणजी कपूर
पुस्तकालयाध्यक्ष—प. सोमकीर्ति
सहायक ,, —श्री हीरालाल चावला

भवदीय—दरबारीलाल

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टेलीफोन नं० ३०२७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे — वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक १८) — १६ वैशाख २०२३ रविवार—दयानन्दाब्द १४१— १ मई १९६६ — (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

अक्ष्यौ निविध्य

हे वीर नर ! जो भी शत्रु बन कर तेरे राष्ट्र पर आक्रमण करना चाहता है। जो भी हानि पहुँचाना चाहता है तथा जो भी उपद्रव करता है—उसकी अक्ष्यौ दोनों आंखें निविध्य-बीन्ध डाल। उसे नेत्रों से हीन कर दे ताकि गड़बड़ न करे।

हृदयं निविध्य

ऐसा जो भी राष्ट्रघाती, मानवता को नाश करने वाला शत्रु बन कर आता है उसके कलेजे को चीर डाल। शत्रु पर दया करना उचित नहीं वरन् राष्ट्र की शान्ति भंग करने वाले को मार डालना ही सच्ची देश भक्ति है।

नतृन्धि

उस पापी, दुष्ट, देशद्रोही शत्रु की जबान काट डाल। ऐसा शत्रु अपनी जबान से राष्ट्र की एकता को छिन्न भिन्न करने के लिए नाना प्रकार से विषैले विचारों का प्रचार करता रहता है। उसे इस पाप से रोकने से वाणी हीन कर देना चाहिए।

अथर्ववेद से

वेदामृत

राजा व शासक कैसा हो

वि रक्षो वि मृधोजहि वि वृत्रस्य हनू रुज।
वि मन्युमिन्द्र वृत्रहन् अमित्रस्याभिदासतः॥

अथर्ववेद कांड प्रथम सूक्त २१ मन्त्र ३

अर्थ—हे इन्द्र ! राजन् ! जो भी (रक्षः) राक्षस हैं और जो भी (मृधः) राष्ट्र के घातक हैं, उनको (विजहि) मार दे। तथा (वृत्रस्य) दुष्ट शत्रु की (हनू) दाढ़ों को तथा हमला करने के तमाम साधनों को (वि रुज) तोड़ डाल। हे वीर शासक ! शत्रु के (मन्युम्) अभिमान को भी (इन्द्र) राजन् ! हे (वृत्रहन्) शत्रु का नाश करने वाले शासक ! (अमित्रस्य) शत्रु के (अभिदासतः) हमें दास, गुलाम बनाने वाले राष्ट्र के घातक के अभिमान को, क्रोध को चूर २ कर दे अपने बल के वज्र से उसकी दाढ़ें ही निकाल दे।

भाव—राजा व राज्य का शासन चलाने वाला शासक कैसा हो ? वेद के इस मन्त्र में इसी का उपदेश दिया है। केवल शांति से राज्य का काम नहीं चला करता। जो भी राक्षस हैं, जितने भी राष्ट्र में गड़बड़ मचा कर उसकी आजादी को नष्ट करना चाहते हैं। जिन को भी अपने बल पर अभिमान है या जो भी राष्ट्र के वातावरण में आग लगाने में तुले हैं। हे वीर राजन्। उन सब को भली भांति ठीक करने के लिए कुचल कर रख दे। उनके दांत निकाल दे, दाढ़ें तोड़ डाल। उन का सारा अभिमान चूर २ कर दे, ताकि राज्य में शांति की व्यवस्था बनी रहे। —सं०

ऋषि दर्शन

तद् द्विविधं भवति

यह राजधर्म या राजकर्म है। यह तो दो प्रकार का माना गया है। राज्यसूत्र के दो नियम होते हैं। राज्य में मनुष्य भी जब देव और असुर रूप से दो प्रकार से हैं। उन के काम भी दो तरह के हैं। उन के साथ व्यवहार भी तो दो प्रकार का ही होना चाहिए—

भवति एकं सहस्वत्

उस राजधर्म के दोनों प्रकारों में पहला सहस्वत्—के नाम से पुकारा जाता है। सहस्वत् का अर्थ है सहनशील होना। जो उत्तम प्रजाजन हैं, उन से तो सहनशीलता हो। या जब कभी जनता उचित मांग के लिए राज्य की समालोचना करे तो शासक को सहनशील होना चाहिए।

द्वितीयमुग्रवत्

राज्यधर्म का दूसरा रूप उग्रवत् है अर्थात् उग्रता से भरा होना चाहिए। राज्य में जब कभी समय-समय पर दुष्टजन जनता में उत्पात मचाने लगें। राज्य के नियमों को तोड़ने लगें तो ऐसी अवस्था में राज्यधर्म को उन दुष्टों का दमन करने के लिए उग्र रूप होना चाहिए।

भाष्य भूमिका से

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी — सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

धार्मिक चर्चा—

यज्ञ की सार्थकता

श्री पं० सत्य प्रिय जी शास्त्री सिद्धान्त शिरोमणि प्राध्यापक—
दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार



यज्ञ करते हुए मन्त्र बोलते हैं। 'अयन्त इध्म आत्मा ।। अर्थात् हे यज्ञ कर्ता ? यह तेरे शरीर में स्थित जो आत्मा है, यह इध्म अर्थात् समिधा है। । समिधाओं को जन-सामान्य की भाषा में लकड़ियां कहा जाता है। परन्तु यज्ञ प्रकरण में उनका नाम समित् । है इसी की सादृश्यता को लेकर यहां आत्मा को इध्म कहा है। इध्म शब्द जहां से निकला उस का मौलिक अर्थात् दीप्ति है। जो प्रकाशित हो सके वह इध्म है। अतः यज्ञ में समिधा डालते समय ध्यान रखा जाता है कि वे गीली, गली सड़ी वा विकार युक्त न हों, पवित्र तथा सूखी हों, जिससे प्रदीप्त हो सकें। आध्यात्मिक अर्थ में आत्मा को समिधा बनाना है। शायद इसी लिए प्राचीन काल में अपने मन की शंका निवारणार्थ विद्वान् की सेवा में जाने वाले जिज्ञासु के लिए उपनिष्तकारों ने नियम बनाया था कि 'स गुरू सेवाभिगच्छे समित्पाणिः श्रोत्रिय ब्रह्म निष्ठम् ।। अर्थात् जिज्ञासु हाथ में यज्ञ योग्य समिधा लेकर विद्वान, साधक गुरु की सेवा में पहुंचे । अन्य गौण प्रयोजनों के साथ हाथ में समिधा लेकर जाने का मुख्य प्रयोजन प्रतीत होता है कि वह अपने आत्मा को समिधा बनाकर जा रहा होता है, जैसे यह स्थूल समिधा यज्ञाग्नि के संसर्ग से प्रदीप्त हो उठता है, लाल हो जाता है। ठीक इसी प्रकार जिज्ञासु का आत्मा भी आचार्य कुण्ड के अंदर धधकती ज्ञान-रूपी अग्नि का संग प्राप्त कर प्रदीप्त हो उठता है, वह चमकने लगता है, उस प्रकाश और लाली में वह जीवन के तत्वों को समक्ष देखता है । जो उस अवस्था से युक्त होता है, वह ही वास्तव में देव होता है। देव शब्द का अर्थ खोलते हुए महर्षि यास्क ने जहां कई अर्थ किए हैं उनमें एक अर्थ 'दीपनाद्वा' भी है ।

अर्थात् जो अपने ज्ञान द्वारा स्वयं प्रदीप्त हों और साथ ही जीवन के सरल व सच्चे रास्तों से भटक कर जो घोर संसार जंगल में घूम रहे हों, उन्हें अपने ज्ञान से मार्ग-दर्शन कराएं, वह देव हैं। ऐसे देव ही अपनी शरीर पूरी के याज्ञिक होते हैं। उनका देह उनकी पृथिवी बनती है, अर्थात् शरीर का विस्तार होता है। मानों सभी उनके भक्त उनको सशरीर अपने निकट हमेशा देखते हुए उनके आदर्शों का सम्मान करते हैं। वे अनुकरणीय लोग ही अपनी पृथिवी को देवयजनि बनाते हैं। अर्थात दिव्य गुणों का यज्ञ करते हैं । यज्ञ करने पर थोड़े से घी तथा सामग्री का काफी विस्तार हो जाता है। ऐसे ही अपने जीवन में दिव्य यज्ञ कराने वालोंका भी विस्तार होता है। उसी के लिए तो कहा गया है कि 'उद्‌बुध्यस्वाग्ने ? प्रति जागृहि' अर्थात हे आत्मन ? तू जाग, सोच विचार और जीवन में प्रगति, कर। आगे लिखा कैसी प्रगति ? 'इष्टापूर्ते ।। दोनों प्रकार के प्रति जागरूक होना है, अभ्युदय और निःश्रेयस अर्थात् इस लोक में तथा परलोक दोनों में सुख देने वाले कर्मों की साधना है। यजमान बाह्य क्रियाओं को गौण मान कर चलता है। वास्तव में तो वह जीवन का नाटक खेल रहा है। इस बाह्य कर्म काण्ड के द्वारा तो वह अपने जीवन की मानसिक भूमि की तैयारी करता है। तीन समिधाओं के द्वारा मानो वह मन, वचन तथा शरीर से किये शुभ कर्मों अथवा अपने ज्ञान, कर्म और उपासना को अपने पिता के सम्मुख उपस्थित कर ईश्वर प्रणिधान करता है। इस बाह्य यज्ञ की प्रत्येक क्रिया को यदि व्यक्तिगत जीवन के यज्ञ का प्रतीक माना जाये तभी इस यज्ञ की सार्थकता तथा उपयोगिता है।

तप त्याग निस्स्वार्थ मूर्ति (हंसराज)

(श्री वेद प्रकाश जी एम. ए. आर्य स्कूल लुधियाना)

अधिकारों ने कुर्सी नीचे कुचल दिए कर्त्तव्य सभी,
सिसक न पाते आह तलक भी भर वे पाते नहीं कभी।
अधिकारी कुर्सी पर इतना जम कर बैठे हैं भाई,
त्राहि-त्राहि कुर्सी चिल्लाती शामत मेरी है आई।
तपस्त्याग निस्वार्थ मूर्ति पर हंसराज कुछ ऐसे थे,
निशि दिन दीन दुखी के सेवक प्रभु जाने वे कैसे थे।
तन मन धन सब कुछ ही अर्पण वे तो करने वाले थे,
दीन अनाथों विधवाओं हित जीने मरने वाले थे।
खाने पीने सोने जगने कपड़े का था ध्यान नहीं,
ध्यान अगर था यही कि क्योंकर फैला पाया ज्ञान नहीं।
अज्ञान में भारतवासी पग-पग ठोकर खाते क्यों,
सुधर संवर कर विश्व प्रकाशक ज्ञान नहीं फैलाते क्यों।
युवकों को सत्पथ पर लाकर भव्य भाव भर पाए वे,
डी० ए० वी० संस्थाओं द्वारा सफल क्रान्ति कर पाए वे।
पराधीनता पेड़ यहां जो झूम-झूम था फूल रहा,
देश प्रेम से जड़ें हिला यह मानव हरता शूल रहा।
श्रद्धा से उस दिव्य पुरुष को आओ शीश झुकाएं हम,
सेवा का व्रत लेकर पापों को आमूल हिलाएं हम।
यह मिल जाए, वह खा जाएं यही नहीं अपनाएं हम,
भारतवासी भारत की संस्कृति को फिर फैलाएं हम।

आर्य समाज जोगेन्द्रनगर के अंतर्गत लाला लाजपत राय लाइब्रेरी का उद्‌घाटन समारोह

दिनांक १३ अप्रैल १९६६ को आर्य समाज योगेन्द्रनगर द्वारा आयोजित गायत्री यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद भारत केसरी ला० लाजपत राय लाइब्रेरी का उद्‌घाटन समारोह माननीय श्री गुरुदयालजी प्रधान आर्यसमाज की अध्यक्षता में हुआ जिस में पं० त्रिलोक चन्द्र जी शास्त्री, श्री इन्द्रसिंह जी उपप्रधान आर्यसमाज मण्डी, श्रीमती सरला देवी मन्त्राणी आर्य महिला मण्डल मण्डी, पं० हरिश्चन्द्र जी शास्त्री राजकीय पाठशाला जो० नगर पं० राजपाल मदनमोहनजी, मुरारीलाल मन्त्री आर्यसमाज जोगिन्द्रनगर ने भाग लिया। श्री गुरदयाल जी प्रधान आर्यसमाज ने लाला लाजपत राय लाइब्रेरी का उद्‌घाटन किया।

—

★ प्रकृति जीव और परमात्मा तीनों का पूरा ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद यदि सच्चे मन से परमेश्वर की भक्ति की जावे तो ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है।

सम्पादकीय—

आर्य जगत

वर्ष २९] रविवार २०२३, १ मई १९६६ [अंक १८

बिजवाड़ा नगरी में

महापुरुषों के जन्म स्थान एक प्रकार के तीर्थ होते हैं। जिन स्थानों में किसी भी महापुरुष ने अपने भौतिक जीवन को प्रारम्भ किया हो—वह ऐतिहासिक बन जाते हैं। हम भौतिकवाद के विरुद्ध हैं परन्तु उन-उन स्थानों पर समारोह तो मनाना ही चाहिए। आस पास के इलाके की जनता को प्रेरणा मिलती व प्रचार भी होता है।

आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब के महान संस्थापक त्याग-तप के देवता स्वर्गीय महात्मा हंसराज जी के जन्म स्थान बजवाड़ा जिला होशियारपुर में प्रतिवर्ष उनके जन्म दिन १९ अप्रैल को समारोह हुआ करता है। देशविभाजन से पूर्व तो श्री घनीराम जी भल्ला वहां पर बड़ा भारी यज्ञ व मेला किया करते थे। विभाजन के बाद सभा ने अपनी ओर से प्रतिवर्ष वहां इस परम्परा को कायम रखे हुए है। इस वर्ष भी वहां समारोह हुआ है। वहां जा कर अपनी आंखों से देखा, सुना तथा शामिल होकर कुछ कहने सुनने का भी अवसर मिला। इस बार यह बात बिना संकोच के कही जा सकती है कि वहां पर आचार्य विश्वबन्धु जी के साधु आश्रम के एम० ए० दर्शनाचार्य व शास्त्री पास महानुभावों ने जो काम किया, जो उत्साह दिखाया तथा जो प्रबन्ध किया। उसके लिए उनकी प्रशंसा करनी ही पड़ती है। प्रातःकाल यज्ञ से लेकर शाम को शामियाने व दरियां आदि के इकट्ठा करने तक वे लगे रहे। इस समारोह में विद्वान आदि पधारे। सबकी चर्चा अलग समाचार में पढ़ सकते हैं। यह उत्सव समारोह से मनाया गया। वहां डी.ए.वी. स्कूल होशियारपुर, बजवाड़ा स्कूल व सज्जनों बहिनों का सहयोग मिला। सभा व्यय व प्रबन्ध करती है। बजवाड़ा समाज के अनथक मन्त्री श्री जगदीश जी भल्ला का बड़ा प्रेम है। महात्मा जी के परिवार के निकट सम्बन्धी हैं।

इस में जो विशेष बात वहां सारे वक्ताओं, विद्वानों ने कही तथा अनुभव की वह यह कि यह समारोह भारी समारोह से मनाया जाना चाहिए। बाहर का यदि कोई सज्जन आकर बजवाड़ा देखे तो क्या कहे। बजवाड़ा उजड़ता जा रहा है। भारत में महात्मा जी के भक्तों की कमी नहीं यदि वहां कोई ऐसी चीज शिल्प केन्द्र महात्मा जी के नाम पर बन सके तो उत्तम होगा। वहां तो अब महात्मा जी के नाम पर चलने वाली पुरानी कन्या पाठशाला भी सरकार को दे दी गई है। उस से महात्मा जी का नाम भी समाप्त होकर गवर्नमेंट नाम आ गया है। अब की बार जल्सा भी वहां न होकर समाज मन्दिर में हुआ। बड़ी नम्रता से कहना चाहेंगे कि इस समारोह को पूरी शान से मनाना चाहिए। जालन्धर होश्यारपुर से भी काफी नर-नारी वहां शामिल हों। यह तो मेला का रूप धारण कर लेवे तभी शोभा है। अपनी सभा की सेवा में इस बारे में एक आवश्यक व विस्तृत निवेदन भी विचारार्थ किया जायगा।

—त्रिलोकचन्द्र

पूज्य महात्मा जी सिंगापुर में

आर्य जगत के तपस्वी सन्त महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज का जीवन लोकसेवा में धर्ममय, यज्ञमय बन चुका है। भारत के कोने २ में तो वेदामृत पान कराने के निमित्त भ्रमण करते ही हैं। इस आयु में भी उनका स्वास्थ्य देख कर सिर झुक जाता है। विदेशों में भी वेद प्रचार के लिए पधारते हैं। आजकल महात्मा जी गत दिनों से ६ अप्रैल से थाईलैण्ड, सिंगापुर, बैंकाक तथा मलेशिया देशों में वेद प्रचार के लिए गये हुए हैं। आप कितना मीठा, प्रभावशाली तथा रसीला बोलते हैं। यह तो सारे ही जानते हैं। आर्य समाज को नहीं वरन भारत को इस देवता पर बड़ा मान है। हम प्रयत्न कर रहे हैं कि वहां पर जनता में बांटा जाने वाला कथा अमृत यहां भी आर्य जगत की प्रेमी जनता को पीने को प्राप्त होता रहे। प्रभु महात्मा को सदा स्वस्थ रखें। महात्मा जी ने अपने हाथों से जो पत्र लिखा है उसकी कुछ पंक्तियां ये हैं—

मेरे प्यारे त्रिलोकचन्द्र जी
सप्रेम नमस्ते।

मैं ६ अप्रैल को देहली से उड़ कर साढ़े तीन घण्टे में थाईलैण्ड पहुंच गया था। उसी दिन से हिन्दु समाज के विशाल भवन में कथा शुरू है। यहां गर्मी तो बहुत है, परन्तु लोग श्रद्धालु हैं। यहां के राजा को राम कहा जाता है। बुद्ध भगवान की पूजा होती है। १५० फुट लम्बी मूर्ति बुद्ध की स्वर्ण की है। यहां १७ तक कथा करके १८ को बैंकाक से सिंगापुर चले जाना है। वहां एक महीना सेवा करके फिर मलेशिया पहुंच कर सेवा करूंगा। मनुष्य को मनुष्य बनाने का ढङ्ग वेद क्या बतलाता है—यही कथा कर रहा हूं। सब को नमस्ते—

आनन्द स्वामी सरस्वती

पूज्य महात्मा जी को वेद प्रचार के पवित्र मानवधर्म को फैलाने की कितनी तड़प है। देश-विदेश में यह महान सन्त अपने पवित्र कार्य में लगे हैं। प्रभु सदा स्वस्थ रखें। —सं०

आर्य बाल सम्मेलन

आर्य समाज करोल बाग नई दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर शनिवार ता० ७ मई १९६६ को मध्याह्न २ से ५ बजे तक 'आर्य बाल सम्मेलन' का आयोजन किया गया है।

जिसमें ग्यारहवीं तक के बड़े बालक बालिकाओं की 'आर्यसमाज' विषय पर तथा मिडल तक के छोटे बालक बालिकाओं की 'महर्षि दयानन्द' विषय पर भाषण प्रतियोगितायें होंगी। दोनों भागों में विजेता १६ बालक-बालिकाओं को सुन्दर-सुन्दर पारितोषिक दिये जावेंगे।

बोलने के इच्छुक बालक बालिकाओं के नाम ता० ५ मई ६६ तक सम्मेलन के संयोजक श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु, आर्योपदेशक १९५४, कूचा दखिनी राय, दरियागंज, दिल्ली ६ के पते पर भेज दिये जावें।

महात्मा बुद्ध

महात्मा बुद्ध को संकल्प बल से ही बोधि वृक्ष के नीचे गया में बोध प्राप्त हुआ था और वे राज्य पाट त्याग कर मानव मात्र की सेवा में लग गये थे। महात्मा बुद्ध ने विश्व-व्यापी अहिंसा का प्रचार किया था।

आर्यसमाज के महान् नेता, तप-त्याग की साक्षात् सजीव मूर्ति भारत में शिक्षा रूपी गंगा के वर्तमान भागीरथ तथा आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब के संस्थापक स्वर्गीय महात्मा हंसराज जी की पुण्य स्मृति में वार्षिक जन्म-दिवस उनके जन्म स्थान बजवाड़ा जिला होशियारपुर में समारोह से मनाया गया। वैसे तो यह समारोह एक प्रकार के शानदार मेले के रूप में मनाया जाना चाहिए। इतने महान् त्यागी सर्वमेधी का दिवस-समारोह तो दर्शनीय होना चाहिए। जिसने सर्वमेध कर दिया हो उसकी स्मृति किसका मस्तक नहीं झुका देती।

महात्मा हंसराज जी की जन्मभूमि बजवाड़ा में

जन्म-दिवस का महान् समारोह

महात्मा हंसराज अमर रहें के जयघोष



ता० १९ अप्रैल प्रातःकाल से ही यज्ञ के कार्यक्रम के साथ दिवस-समारोह का काम शुरू हो गया। इस बार आचार्य विश्वबन्धु जी के साधु आश्रम के विद्वान प्राध्यापकों तथा विद्यार्थियों ने जो सुन्दर सहयोग दिया, उत्साह के साथ प्रबन्ध किया उसकी प्रशंसा होनी ही चाहिए। आर्यसमाज में वहां प्राय. प्रति सप्ताह ही समाज का कार्यक्रम चलाने के लिए यही युवक वर्ग आ कर सत्संग करता है। बजवाड़ा समाज के मन्त्री श्री जगदीश चन्द्र भल्ला महात्मा जी के परिवार में से हैं। वह तो बड़ी ही तड़प रखते व काम करते हैं। साधु आश्रम से आने वाले युवक वर्ग से उन को उत्साह मिला है। साधु आश्रम से आकर काम करने वालों में प० वेदप्रकाश साहित्याचार्य, श्री दयानन्द आर्य एम०ए०, श्री चन्द्र प्रकाश एम०ए०, श्री भूषण एम० ए० प० वेदव्रत शास्त्री, कृष्ण बहादुर जी दर्शनाचार्य, पं० भद्रसेन जी दर्शनाचार्य तथा शास्त्रिवर्ग था। इस अवसर पर श्री पं० अग्निहोत्री जी, आचार्य रामानन्द जी शास्त्री, प्रिंसिपल रामदास जी पूर्व एम० पी०, प्रिंसिपल महेन्द्र जी प्रधान होशियारपुर समाज, पं० लभूराम जी शर्मा महामन्त्री दयानन्द कालेज कमेटी होशियारपुर, आचार्य चारुदेव जी शास्त्री श्री उनियाल जी एम० ए०, पं० मस्तान चन्द जी, ला० संसार चन्द जी एडवोकेट, प्रिंसिपल बजवाड़ा स्कूल, कैप्टन बूटाराम जी, प० त्रिलोक चन्द शास्त्री, पं० चन्द्रसेन जी, प० ज्ञानचन्द जी सभा से तथा होशियारपुर डी० ए० वी० का बैंड, बजवाड़ा स्कूल का बैंड, कन्या स्कूल की लड़कियां, अध्यापक तथा नरनारियां थीं।

यज्ञ के कार्यक्रम के बाद दोपहर को शानदार जलूस निकाला गया। गली २ महात्मा हंसराज जी की जय, आर्यसमाज अमर रहे के गगनभेदी घोषों से गूंज उठा। सारे कस्बे में जलूस ने चक्कर लगाया। उस स्वर्गीय तपस्वी देवता महात्मा हंसराज का त्यागमय जीवन सब को आत्म-विभोर कर रहा था। तीन बजे तक जलूस की बड़ी शोभा थी। उस के बाद आचार्य रामानन्द जी शास्त्री साधु आश्रम की प्रधानता में कार्यक्रम आरम्भ हुआ। श्री दयानन्द आर्य एम० ए० ने इस दिवस को महान् मेले के रूप में प्रति वर्ष मनाने की ओर सब का ध्यान आकर्षित किया। आर्यसमाजों, सभाओं एवं दयानन्द कालेज कमेटी के अधिकारियों को इस की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। उस सर्वमेधी का दिवस भी उसके अनुरूप ही मनाया जाना चाहिए। अगले वर्ष से यह समारोह अपनी शान का निराला हो। श्री पं० वेद प्रकाश जी ने कहा कि आज कल तो युवक अपनी नौकरी की तलाश में फिरते हैं। परन्तु महात्मा जी ने तो अपनी यौवन अवस्था लोकसेवा को भेंट कर दी। निष्काम भावना के वह आदर्श प्रतीक थे। भाई मो हन लाल जी मुल्तराज सरीखा हो जिसने युवक हंसराज जी को अपना सारा सहयोग दे कर जीवन पर्यन्त निभाया। संस्कृत में कहा गया है—अंगीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति। महापुरुष धारण किए हुए व्रत की पालना करते हैं। महात्मा जी ने युग की धारा को बदल कर रख दिया। युग प्रवाह के साथ बहना तो सब को आता है किन्तु महापुरुष युग धारा को बदलकर रख देते हैं। महाभारत में कहा है कि राजा कालस्य कारणम्—राजा, नेता एवं आत्म-विश्वासी युगधारा को बदल देता है। महात्मा हंसराज जी युग-पुरुष थे। उनका कार्य आज हमारे सामने है। आर्यसमाज उनका दिवस समारोह उनके अनुरूप ही मेले के रूप में मनाए।

दयानन्द कालेज कमेटी होशियारपुर के मन्त्री प. लभूराम जी ने कहा कि महापुरुषों का कार्य बालपन से ही प्रारम्भ हो जाता है। आज जितना भी शिक्षा का काम है इसका सारा श्रेय उसी देवता को दिया जा सकता है। वह तो सेवा को अपना कर्तव्य समझते थे। किसी प्रकार का श्रेय नहीं लेना चाहते थे। उस महा-पुरुष के जन्मदिन की यह अवस्था देखकर दुःख पैदा होता है। हमें चाहिए कि आज का दिन एक महान पर्व के रूप में यहां पर मनाया करें। प्रेरणा मिलेगी।

आर्य समाज के महान् विद्वान् पण्डित चारुदेव जी शास्त्री एम० ए० ने भाव भरे शब्दों में कहा कि महापुरुषों के ऐसे-ऐसे जीवन पर्व समाज व सारे देश को प्रेरणा देते हैं। धार्मिक मनुष्य की पहिचान दो समय पर होती है। एक तो प्रलोभन की तारों के सामने और दूसरा विपत्तियों के समय। मृत्यु के समय भी मनुष्य की परीक्षा होती है। मौत का समय सब से बड़ा भयंकर होता है। जो उस समय भी शान्त रहता है, वह महापुरुष कहलाता है। महात्मा जी का जीवन विपत्तियों में अविचल रहा है। श्री बलराज जी के विषम केस में भी विचलित नहीं हुए। उन के सामने अर्थ संकट भी आया पर तनिक भी डांवाडोल नहीं हुए। चन्दन को घिसने से वह सुगन्धि ही देता रहता है। गन्ना काटने पर वह अपनी मिठास नहीं छोड़ता। स्वर्ण को जितना तपाओ वह अधिक चमकता है। इसी प्रकार महात्मा भी समय-समय विपत्तियों में पड़ कर अपने जीवन में अडिग ही रहते हैं। महात्मा हंसराज जी के जीवन में यही पवित्र बात काम करती थी। रूई व पहाड़ की चट्टान में हवा चलने से रूई का भारी ढेर भी उड़ जाता है पर चट्टान विचलित नहीं होती। महापुरुष पर्वत की चट्टान होते हैं। हम ने इसे महान मेले का रूप देना होगा।

दयानन्द ब्राह्म महा विद्यालय, हिसार

इसके सुयोग्य स्नातक भारत के भिन्न-भिन्न प्रांतों में बड़ी योग्यता कार्य कुशलता, तथा कर्मठता के साथ वैदिक धर्म का प्रचार कार्य कर रहे हैं।

उसी तरह श्री पंडित वेदव्रतजी शर्मा सिद्धांत भूषण स्नातक विद्यालय, आसाम प्रांत में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ जा रहे हैं। उनके सन्मान तथा अभिनन्दन के लिये एक विराट सार्वजनिक सभा माननीय नेत्र विशेषज्ञ श्री डा० गिरधर भिवानी वासी के सभापतित्व में १-५-६६ को दिन के ६ बजे आर्यसमाज नागौरी गेट हिसार में होगी। अतः सब सज्जनों की उपस्थिति प्रार्थनीय है।

मुरारी लाल शास्त्री

मीठी लेकिन गहरी

(श्री यश जी प्रधान आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब)



चोट छोटी-सी, पर कितनी गहरी। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ने नेपाल के प्रधान मन्त्री श्री सूर्य बहादुर थापा का सन्मान करने के लिए उन्हें 'डाक्टर आफ लिटरेचर' की सम्मानार्थ उपाधि दी। इस उद्देश्य के लिए विश्वविद्यालय का विशेष दीक्षांत समारोह बुलाया गया। कारवाई के बाद उपकुलपति श्री दीपचंद वर्मा ने कुलपति श्री उज्जलसिंह से प्रार्थना की कि वह दीक्षांत समारोह आरम्भ करने की अनुमति दें। कुलपति ने अनुमति दे दी। तब उपकुलपति ने श्री सूर्य बहादुर थापा की सराहना करते हुए कुलपति से प्रार्थना की कि वह मान्य अतिथि को सम्मानार्थ उपाधि प्रदान करें कुलपति ने ऐसा ही किया और तब रजिस्ट्रार (कार्य सचिव) ने इस कारवाई की संपुष्टि कर दी। यह सारी कारवाई अंग्रेजी में हुई। परन्तु जब कुलपति श्री उज्जलसिंह ने अंग्रेजी में ही नेपाल के प्रधानमन्त्री से प्रार्थना की कि वह अपने विचार प्रकट करें तो श्री सूर्य बहादुर थापा ने नेपाली भाषा में भाषण दिया। नेपाली भाषा और हिन्दी में अधिक अन्तर नहीं है। लगभग नब्बे प्रतिशत शब्द सांझे हैं। इसलिए सुनने वालों के लिए समझना कठिन नहीं था। पहले तो सुनने वालों ने नहीं समझा कि वह शायद हिन्दी में बोल रहे हैं। इसलिए जैसे ही उन्होंने बोलना आरम्भ किया, सारा हाल तालियों से गूंज उठा।

लोग प्रसन्न हो रहे थे, मैं झेंप रहा था। हमारे मान्य अतिथि ने कितनी मीठी, लेकिन गहरी चोट की थी। हम अपने देश में अपनी भाषा बोलने में लज्जा अनुभव करते हैं। दूसरे पराए देश में अपनी भाषा बोलने में गर्व अनुभव करते हैं। इस से भी अधिक गहरी चोट और की गई। जब श्री सूर्य बहादुर थापा नेपाली भाषा में भाषण दे चुके, तो इनके सैक्रेटरी ने इस भाषण का अंग्रेजी में अनुवाद सुनाना आरम्भ कर दिया। हमारी मजबूरी देखिए कि हम उनसे शिकायत भी नहीं कर सके कि आप अंग्रेजी अनुवाद क्यों सुना रहे हैं। यदि अनुवाद सुनाना ही है तो हिन्दी में सुनाइए। जब हम स्वयं अंग्रेजी बोलते रहें, तो दूसरे से हिंदी में न बोलने की शिकायत कैसे करें। लेकिन सुनने वालों ने इस चोट की पीड़ा अनुभव ही नहीं की, अपितु इसकी अभि-व्यक्ति भी की। जब श्री थापा नेपाली भाषा में भाषण दे रहे थे, तो हर वाक्य के बाद तालियां बजती रहीं। परन्तु जब अंग्रेजी में अनुवाद सुनाया गया, तो किसी ने तालीन नहीं बजाई। सुनने वालों ने यह प्रकट किया कि उन्हें नेपाली तो समझ में आई, अंग्रेजी समझ में नहीं आई। मंच पर बैठे किसी व्यक्ति ने एक बार अंग्रेजी के अनुवाद के दौरान ताली बजाई, लेकिन इसका साथ किसी ने नहीं दिया। दोबारा उसे साहस भी नहीं हुआ कि अंग्रेजी में अधिक समझने का प्रदर्शन कर सके।

यह पहला अवसर नहीं है कि जब किसी विदेशी ने हमारी आवश्यकता से अधिक अंग्रेजी-प्रियता की अनुभूति कराई हो। कई बार कोड़े की-सी तेज़-तर्रार सांट हमें लगा चुकी। लेकिन हर बार जब चाबुक पड़ता है, तो हम सामयिक रूप से जाग कर फिर जड़ता की नींद सो जाते हैं। जैसे यह एक साधारण-सी बात हो। इधर पड़ी, उधर बह गई। मैं पूछता हूं, आखिर अभी कितने और कोड़ों की आवश्यकता है कि जब हमें अपने राष्ट्रीय स्वाभिमान की अनुभूति होगी? हमारे देश की चौदह भाषाएं हैं। एक से एक मीठी, एक से एक अच्छी। हमारे देश की अपनी राष्ट्र भाषा भी है। प्रत्येक दृष्टिकोण से सम्पूर्ण। हम इन सब को छोड़कर ऐसी भाषा बोलने में गर्व क्यों अनुभव करते हैं, जिसे हम स्वयं प्रायः गलत बोलते हैं, और सुनने वाले गलत समझते हैं। गलत समझने वालों की संख्या भी मुश्किल से तीन चार प्रतिशत है।

विचार-तरङ्ग (८)

(श्री राम मूर्ति जी कालिया एम० ए० नई दिल्ली)



अपने लिए तो पशु पक्षी भी करते हैं। परहित की भावना का स्रोत तो मानव हृदय ही है। इस भावना से शून्य मानव बिना पूंछ और सींग का पशु है। दूसरे का का कल्याण चाहने वाले के लिए संसार में कोई कार्य भी कठिन नहीं होता। तुलसी दास जी ने ठीक ही कहा है—

'परहित बस जिन के मन माहीं,
तिन कहां जग दुर्लभ कुछ नाहीं।'

किन्तु भावना की पूर्ति के लिए यदि कठिनाई का सामना करना भी पड़े तो साहस और पौरुष का परिचय दे देना चाहिए। व्यवधानों से जूझने में चारित्रिक विकास निहित है। सरल धारा-सा जीवन व्यतीत हो, इस में भी कोई आनन्द है क्या? मजा तो कल कल निनाद में, पत्थरों से टकरा कर रास्ता बनाने वाली धारा में है। शोभनीय और आनन्ददायक दृश्य तो उसी वेगमयी प्रवाह का है। जीवन का सरल और उथल पुथल से रहित होना भी शुष्क-सा बन जाता है। यह शुष्कता अखरने लगती है और जीवन व्यर्थ-सा, निष्क्रिय से जान पड़ता है। तभी तो कहा—'चला जाता हूँ हंसता खेलता मौजे हवादस में, अगर आसानियां हों जिन्दगी दुश्वार हो जाये।'

कठिनाइयों को सहन करने का सामर्थ्य रखने वाला व्यक्ति अपने मार्ग को प्रशस्त बना ही लेता है। वह निर्भीक बन कर जग में विचरण करता है। सोने के तपने के बाद कुन्दन-सा बना हुआ उस का शरीर आभा बिखेरता है। वह तूफानों से डरता नहीं बल्कि स्वय एक तूफान-सा बन जाता है। श्री विनोबा भावे ने एक बार कहा, **'Cyclones do not change my programme, I am a cyclone myself.'** (क्रमशः)

आर्यसमाज दसूआ

का चुनाव १८.४.६६ को निम्न प्रकार से हुआ।

प्रधान—मि० राजेन्द्रनाथ जी B.S.C., B.T. उपप्रधान—श्री हरवंसलाल जी मुजरिम। मंत्री—श्री बलदेव मिश्र, ऋषि एम. ए. एडवोकेट, उपमन्त्री—राजेन्द्र जी जोषी एडवोकेट खजांची—पं० देवीदयाल जी, पुस्तकाध्यक्ष—सुरेन्द्र कुमार जी B.S.C.B.T. एडीटर—ला० दुर्गादास जी एडवोकेट। प्रतिनिधि सदस्य—मि० राजेन्द्रनाथ जी, श्री हरवंसलालजी मुजरिम, श्री बलदेव मिश्र जी अंतरंग सदस्य—ओम प्रकाश जी एडवोकेट पं० जगदीशचन्द्रजी, प्रेसीडेंट म्यूनसीपल कमेटी ला० ज्ञानचन्द्र जी सराफ, म० दीवानचन्द्र जी, पं० अमीरचन्द्र जी।

(गतांक से आगे)

इससे पंजाब में साम्प्रदायिक दंग न आया तथा भाई को भाई से प्रेम रहा। हानि यह हुई कि संत गुट के अकालियों ने अपनी बुद्धिमता से इस कांग्रेस के झगड़े का, आर्यसमाज में फूट का तथा हरियाणा के रोष का पूर्ण लाभ उठाया। मास्टर धड़े के अकाली तो देखते ही रह गए पर संतफतह सिंह ने लोहा गर्म देखकर खूब समय पर चोट की।

त्याग दृढ़ता और तप की दृष्टि से तथा ऊंचे जीवन की दृष्टि से संत जी का मुकाबला आज भारत का कोई नेता नहीं कर सकता पर समझ बूझ में भी कमाल कर दिया। अगर यह अवसर निकल जाता अथवा हरियाणा की शिकायतों पर सरकार ध्यान दे देती तो शायद संत जी का सफलता न होती। यह अवसर तो प्रत्येक समय न आ सकता था और तो और अगर आर्य समाज की फूट दूर हो जाती तो संत की सारी शक्ति पंजाबी सूबा बनाने में सफल न हो सकती। पंजाब कांग्रेस की सुदृढ़ता के सामने थोड़े ही वर्ष हुए थे कि जब संत जी तथा मास्टर जी की मिली-जुली शक्ति भी निष्फल गई थी। अगर संतगुरू अवसर का लाभ न उठाता तो शायद फिर उनका वास्तविक जल मरना भी पंजाबी सूबा न बना सकता।

पंजाबी सूबे के निर्माण में संत जी ने एक और बात भी सूझ-बूझ से की है। वह यह है कि जब पाकिस्तानी बम-वर्षा कर रहे थे तो वह भारत सरकार की खिल्ली उड़ा रहे थे पर किसी के कहने पर अथवा अन्दर की आवाज पर उन्होंने अपने ढंग को बदल कर अपना जल मरना स्थगित कर दिया था अगर वह उस समय मास्टर तारासिंह जी की मनोवृत्ति अपनाते और व्रत

पंजाबी सूबा तथा आर्यसमाज

(श्री प्रिंसिपल भगवानदास जी डी.ए.वी. कालेज अम्बाला नगर)



रखते और जल मरते तो कोई पंजाबी उनकी आत्म-हत्या पर आंसू भी न बहाता। पंजाब की जनता में कोई दोष हो पर वह देश के शत्रु को क्षमा नहीं करते। इसलिये उन दिनों में अपना जल कर मरना स्थगित करके संत जी ने देश प्रेम का प्रमाण दिया तथा अपने मिशन की सफलता की ओर पग रखा।

पंजाबी सूबे सम्बन्धी कांग्रेस महामंडल की घोषणा पर जो रोष देखा गया वह दुखदाई था। उसमें किसी भी दल का दोष न था जनता बिना नेतृत्व के गलत रास्ते पर चल पड़ी। केन्द्रीय नेताओं का निश्चय बहुत बेढंग से तथा शीघ्रता में घोषित किया गया तथा रोष के दिनों में कोई नेता पंजाब न पधारे। सब से दुखदायक बात यह रही कि संत जी ने पीड़ित जनता की पकड़ धकड़ के विरोध में एक शब्द भी न कहा तथा बहुत से निर्दोषी होते हुए भी कष्ट के भागी बने। कई नगरों से सूचना मिली कि कई साम्प्रदायक लोगों ने हलवा, लड्डू तथा पुलाओं बांट कर जलती पर तेल का कार्य किया। ऐसे भड़काने वालों को सरकार ने कुछ नहीं कहा। संत जी जो अपने आपको हिन्दू सिक्ख एकता का पुजारी कहते हैं अवश्य इन बातों पर रोष प्रकट करना चाहिए था। सरकार इस पकड़-धकड़ में न केवल विद्यार्थियों को ही पकड़ बैठी अपितु जनता पर काबू रखने वाले कुछ नेताओं को भी पकड़ कर जेल में डाल दिया। आर्य समाज का भला इसी में है कि अब एक हो जाएं। जो लोग पंजाबी सूबा में सिक्खों की बहु-संख्या का विरोध करते हैं वह गलती करते हैं। पंजाबी सूबा वर्तमान पंजाबी क्षेत्र में से, खरड़, होशियारपुर, पठानकोट, अबोहर, फाजिल्का आदि तहसीलें निकाल कर बनना चाहिए। जितनी हिन्दुओं की संख्या कम होगी उतना ही सुसंगठित होकर वह साम्प्रदायिक वृत्ति को नष्ट कर सकेंगे। जो सुविधाएं सिखों को पंजाब में ३२ प्रतिशत पर मिल रही हैं वह सुविधाएं हिन्दुओं को पंजाबी सूबा में तभी मिलेंगी अगर हिन्दू अल्प संख्या में होंगे। इसका दूसरा लाभ यह होगा कि अकालियों को साम्प्रदायिकता की ऐनक छोड़ कर सबको साथ लेकर चलना पड़ेगा। अधिक से अधिक क्षेत्र हरियाणा के साथ होने से राष्ट्रीय तत्वों को बढ़ौती मिलेगी। अकाली यह याद रखें कि भाषाई प्रान्तों में जो स्तर हिन्दी को है उसका अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि महाराष्ट्र में तो लिपि देवनागरी है ही पर गुजरात तथा दूसरे प्रदेशों में देवनागरी लिपि की मांग दिनोंदिन बढ़ रही है। जिन गुजरातियों ने लड़ झगड़ कर गुजरात प्रदेश बनाया था वही जान गए हैं कि गुजराती लिपि में कार्य नहीं चल सकता तथा खुल्लम-खुल्ला देवनागरी की ओर बढ़ रहे हैं। दूर दक्षिण में भी ऐसा वातावरण देखा जा सकता है। लोग अब एक-दूसरे की भाषा नहीं समझ सकते तो अंग्रेजी की बजाय हिन्दी का प्रयोग करते हैं। महा-विश्वविद्यालयों में देवनागरी लिपि बनाने के प्रयत्न चलते ही रहते हैं। लाखों व्यक्ति प्रतिवर्ष हिन्दी की परीक्षाओं में अपनी इच्छा से बैठते हैं। पंजाबी सूबा का निराला ढंग अगर छोटे से छोटे प्रदेश में चलेगा तो कुछ वर्षों में कूप मंडूक को होश आने लगेगी। उनका भारत से दूर जाने का तर्क मैंने कभी नहीं माना तथा नहीं यह होगा। आर्यसमाज का नाद होना चाहिये कि पंजाबी सूबे को छोटे से छोटा करो।

जो तीनों प्रदेशों में सांझे तत्वों की बात है वह भी कुछ नहीं। सांझे तत्वों का लाभ तभी हो सकता है अगर अकाली पंजाबी की लिपि में स्वतन्त्रता दें। अगर जैसा कई अकाली करते हैं कि उनको हिन्दी गुरुमुखी लिपि में लिखने की भी छूट हो तो दे देनी चाहिए। कौन उन पर लिपि ठोस सकता है। सांझे तत्वों से झगड़े बहुत बढ़ेंगे तथा भ्रष्टाचार भी। सिवाए हाई-कोर्ट के कोई बात चल न सकेगी। पंजाबी सूबा बनाना है तो सिखों की बहु-संख्या से छोटे से छोटा सूबा बनाना ही ठीक रहेगा तथा आर्य समाज को एक होकर यही बल देना चाहिए।

आर्य समाज बागोरीगेट हिसार

का चुनाव १७-४-६६ को निम्न प्रकार से हुआ।

प्रधान—चौ० नत्थन लाल जी, उपप्रधान—पं० जगन्नाथ जी, ला० फतेहचन्द जी, प्रो० विजयचन्द जी। मंत्री—ला० नंदलाल जी, उपमंत्री—ला० सुरेन्द्रनाथ जी, श्री यशवंत जी, प्रचार मंत्री—प्रो० रामविचार जी, पुस्तकालयाध्यक्ष—राजेन्द्रमोहन जी, कोषाध्यक्ष—चूनीलाल जी, लेखानिरीक्षक—ला० दीनदयाल जी।

आर्य समाज योगेन्द्र नगर

ला० लाजपतराय लायब्रेरी संचालन समिति का निर्वाचन इस प्रकार से हुआ—

संरक्षक—श्री गुरदयाल जी, प्रधान—श्री गिरधारीलाल जी, उप-प्रधान—श्री सत्यपाल जी, मन्त्री—श्री राजकुमार जी, कोषाध्यक्ष—श्री केदारनाथ जी, सहायक मन्त्री—श्री हरिश्चन्द्र जी, प्रन्त० सदस्य—श्री मुरारीलाल जी मन्त्री समाज, शिवराम जी, करतारचन्द जी।

वैद्य जी ने उत्तर दिया कि जवानी में ही मर जाओगे। बुढ़ापा आने का प्रश्न ही नहीं उठता। तब कहीं सेठ जी सचेत हुए और उन्होंने खट्टा दही खाना छोड़ दिया।

भोजन का तीसरा सिद्धान्त मैंने लिखा था **Cheapest and Simplest food is the best food.**

अर्थात सादा सस्ता भोजन भी स्वास्थ्यकारी होता है। चरक में भोजन के सम्बन्ध में यह लिखा है।

"षष्टिकान शालिमुद्गांश्च
सैन्धवाम्ल के यवान्
अंतरिक्षं पयः सर्पिजाङ्गलं
चाभ्यसेत ॥
तच्च नित्य प्रयुञ्जीत
स्वास्थ्यं येनानुवर्तते।
अजातानां विकाराणामनुत्पत्ति
करञ्चयत् ॥"

शाली के चावल, साठी के चावल, मूंग, सैंधानमक, आंवला गेहूँ आकाशीय जल, दूध घृत शहद इनका नित्य सेवन करे। देह की स्वास्थावस्था को जो न बिगाड़ें, और रोगों को उत्पन्न न करें वह द्रव्य खाने चाहिएं। यह भोजन सस्ता, सात्विक, स्वास्थ्य कारी है। नवीन विज्ञान के अनुसार प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फेट, विटामिन, साल्ट, वाटर, आइरन आदि आदि संघटकों से युक्त आहार चाहिए। सो चरक ऋषि द्वारा बताये भोजन में जिसका विवरण उपरोक्त है सभी संघटक पाये जाते हैं।

भोजन सदा पच जाने पर ही करना चाहिए। अत्यन्त भूख, शरीर में लघुता, शुद्ध डकार आना, उत्साह होना यह आहार के पच जाने के लक्षण हैं। बिना पचे भोजन पर भोजन करना, सैंकड़ों रागों को जन्म देना है। लिखा भी है।

'अर्धरात्रेऽपि भुञ्जानः
परमार्थं बुभुक्षितः ।
सुधी वैद्य परित्यागी
व्याधिभिर्नाभिभूयते ॥'

अत्यन्त भूख लगने पर आधी रात में भी भोजन करने वाला

स्वास्थ्य विचार—

भोजन द्वारा स्वास्थ्य

ले०—श्री डा० ओमप्रकाश जी अग्रवाल बी.ए.एम.एस. (एटा)

(नोट—इस लेख का पूर्व भाग ३ अप्रैल के अंक १४ में पढ़ें।)



बुद्धिमान मनुष्य वैद्य का त्याग कर देने पर भी रोगों द्वारा पराजित नहीं होता। पर आज तो चाहे भूख लगे अथवा न लगे। हमने हर समय खाना ही जीवन का लक्ष बना लिया। हमको उठते ही 'बेड' टी की आवश्यकता पड़ती है। उसके बाद न मालूम हम कितने बार खाते हैं। हमने सिद्धान्त बना लिया है यह खा, वह खा, खड़े होके खा, बैठ के खा, लेट के खा, सफर में खा, रसोई घर में खा, प्रिय बन्धुओ आपको मालूम होना चाहिए कि सन् १४ में फौज में भर्ती होने वालों का डाक्टरों ने स्वास्थ्य का निरीक्षण किया। उनमें से ६६% मनुष्यों का स्वास्थ्य खराब निकला। आवश्यकता के अनुसार खराब स्वास्थ्य के आदमी भी भरती करने पड़े। उनके स्वास्थ्य के खराब होने का कारण उनकी विलासिता तथा भोजन का अति मात्रा में बार-बार खाना निकला। फौज के नियमित भोजन ने चन्द महीनों में ही उनके स्वास्थ्य का पूर्ण सुधार कर उनके वजन को १०-१० पौंड बढ़ा दिया। अतः प्रिय बन्धुओ भोजन के सम्बन्ध में याद रखो ज्यादा खाना पाप है। आज कल तो दफ्तरों में जाकर रिश्वत देना लोगों ने अपना कर्त्तव्य समझ लिया है। उसी प्रकार पेट भर जाने पर जीभ के नीचे ऊपर चटनी का लेपन करना अपना कर्त्तव्य समझ रखा है।

जब पेट भर चुका फिर चटनी मलना जो है रिश्वत की मनोवृत्ति है। स्वामी रामतीर्थ जी महाराज ने अमरीका में कहा था जो मनुष्य अपने को जीत सकता है। वह निसन्देह सारे संसार को जीत सकता है।" हम देश का भ्रष्टाचार मिटाना चाहते हैं। नित्य भ्रष्टाचार करते हैं। आवश्यकता से अधिक किसी भी चीज़ का सेवन भ्रष्टाचार है। तो क्या अधिक खाना जबकि हमारा पेट भर चुका है भ्रष्टाचार नहीं है? अवश्य है। इस भ्रष्टाचार का प्रारम्भ 'बहनों की बनाई हुई खट्टी-खट्टी चटनी का जिह्वा रानी पर लेपन से होता है।

हमारे पेट में भोजन को पचाने वाली तीन चीजें होती हैं। जिनको **Hydrochloric acid, pepsin, Renin** नाम दिया जाता है। इन तीनों चीज़ों को ही मिलाकर आमाशयिक इसको नाम दिया है। इस रस को आमाशयिक ग्रंथियां बनाती हैं। जब हम खाना अधिक खावेंगे। तो हमारे उदर सैलों पर रस निर्माण का कार्य बढ़ जावेगा इतने पर भी भोजन को हम ने संतुलित न किया तो कार्य भार की दृष्टि से उनके सूजन होना स्वभाविक है सूजन हो जाने पर या तो उनका कार्य भार बिल्कुल रुक जावेगा या अल्प परिमाण में इसका निर्माण करती रहेंगी। जब ऐसा होता है तो डकार अधिक आना, उल्टी होना, उदर पीड़ा, मुख में बार-बार कफ आना अरुचि, बुखार, पतले दस्त, आदि रोगों को जन्म मिल जाता है। इस प्रकार का रोग जब उत्पन्न हो तो अच्छा यह है कि भोजन को ही संतुलित कर ले, उपवास का सहारा ले। पर जो भाई और बहनें इस रोग के उत्पन्न करने की तथा चिकित्सकों के दरवाजे खटखटाने की, आदी हों वह निम्न उदरामृत बना लें यह पेट के सब रोगों पर अमृत का कार्य करता है।

घृत कमारी (घी कुमार) का पट्ठा का रस ५॥, नीबू का रस ५॥ दोनों को चूल्हे पर गर्म करें। एक उबाल आने पर नीचे उतार लें और उस में नौसादर ५ काली मिर्च ५, काला नमक ५ इन तीनों का कपड़छन चूर्ण करके मिला दें और बोतलों में भर लें। मात्रा १ तो० से २॥ तो० भोजन के बाद पियें।

१. भोजन की मात्रा निर्धारण के लिये पेट के कल्पित चार हिस्से कर लें। पहले दो हिस्से ठोस खाना से भर लें। एक को तरल पदार्थ से भर लें, एक भाग खाली छोड़ दें।

२. भोजन प्रारम्भ के पहले थोड़ी-सी अद्रक और काला नमक अवश्य खाना चाहिए।

३. कच्चा दूध कभी न पिये इस में बैक्टीरियाज प्रविष्ट हो जाते हैं। जो रोगोत्पादक हैं। तथापि धारोष्ण दुग्ध अमृत के समान है। दूध को एक उबाल आने तक ही गर्म करना चाहिए। ज्यादा उबाल देने से विटेमिन नष्ट हो जाते हैं।

४. भोजन के बाद १०० कदम टहल कर बाईं करवट लेट जाय और प्रिय शब्द स्पर्श रूप रस गंध का प्रयोग करे परन्तु वृत्ति सात्विक हो।

आहार शुद्धौ सत्त्व शुद्धिः
सत्त्व शुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः।
स्मृति लम्भे सर्व ग्रंथीनां
विप्र मोक्षः ॥

परमात्मा करे हम लोग स्वस्थ बल शाली बनें। हमारे अन्दर वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना जाग्रत हो और सब मिल कर जय नाद करें "भारत माता की जय।"

—

रजिस्टर्ड नं० पी० १२१

आर्यजगत का (महात्मा हंसराज विशेषांक)

(श्री सत्यदेव जी एम० ए० विद्यालंकार सेंट्रलटौन जालन्धर)

✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱

मान्य सम्पादक जी,

आर्य जगत् का 'महात्मा हंसराज अंक' प्राप्त हुआ। मैंने प्रारम्भ से अन्त तक इसे पढ़ा। लेख-सामग्री अच्छी है। सम्पादन परिश्रम से हुआ है। पूज्य महात्मा जी के सम्बन्ध में अच्छी सूचना प्राप्त होती है।

दो बातें अखरीं। जिन के लिये यह पत्र लिख रहा हूं। एक तो श्री यश जी का लेख नहीं। वे वर्तमान अवस्था पर कुछ प्रकाश डालते।

दूसरे आप यह अंक १६ अप्रैल १९६६ को निकाल रहे हैं जब महात्मा हंसराज की अमानत समाज और डी. ए. वी. संस्थाएं दोनों का भविष्य इस पंजाबी सूबे में पंजाब में नहीं क्यों कि श्री यश जी के शब्दों में वह मर गया है— डावांडोल है। आप कभी मा० तारासिंह, स० फेहरसिंह वैरागी, स० बुधिराजा तथा अन्य अकाली दल के नेताओं के व्याख्यान सुनिए। यह वह अकाली दल है जिस के सामने केन्द्रीय सरकार ने घुटने टेक दिए हैं। उसके नेता जो कुछ कहते हैं वह सुनिए और फिर बतलाइए कि क्या म० हंसराज के डी० ए० वी० स्कूल प्रारम्भ से हिन्दी पढ़ा सकेंगे या नहीं। क्या हमारे स्कूलों में सब विषय हिन्दी में पढ़ाए जा सकेंगे या नहीं? सीधा प्रश्न है। सीधा उत्तर चाहिए।

मेरा यह पत्र आर्य जगत में प्रकाशित कीजिए और उत्तर मांगिए।

दूसरा एक और प्रश्न है। वह है आर्यसमाज का। आपके आर्यसमाजी भाई गांव-गांव में हैं। क्या पंजाबी सूबे की सरकार जिसमें पोलीस के विभाग और जिला के अधिकारियों से सिख-भाई बहुत अधिक संख्या में होंगे, उन आर्यसमाजियों की अकालियों के अत्याचारों से रक्षा कर सकेगी।

क्या आपके पिछड़ी जातियों के आर्य-हिंदू भाई अपने को बचा सकेंगे। क्या आर्यसमाज का संगठन इतना प्रबल है जो उन्हें सहायता दे सकेगा?

मेरा कहने का अभिप्राय यह है आज जो प्रश्न इस पंजाबी सूबे में हमारी आंखों में उंगली चुभोकर उत्तर मांग रहा है, उनके विषय में आपका म० हंसराज अंक मौन है। म. हंसराज जी की विरासत को बचाने के लिए हम क्या कर रहे हैं, इसके विषय में चुप रहने से काम न चलेगा।

अधिक क्या लिखूं। आर्य जगत के द्वारा इन प्रश्नों का उत्तर जनता से मांगिए। आर्यसमाज के अधिकारियों से मांगिए।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज अलनूर का वार्षिकोत्सव तिथि १७-१८-१६ अप्रैल को बड़े प्रभावशाली रूप में सम्पन्न हुआ। उत्सव से पूर्व तीन दिन पूज्य पं० ओमप्रकाश जी आर्य उपदेशक की वेद कथा हुई। आर्य जगत की प्रसिद्ध विमटा भजन मण्डली महाशय रामपाल मदन मोहन वाली कुंवर जगतराम बलीराम जी की मण्डलियां पधारी हुई थीं। पं० जी के व्याख्यानों का और भजनों का जनता पर बहुत प्रभाव पड़ा। नगर कीर्तन का जलूस बहुत शानदार था नौजवानों ने बड़े उत्साह से जलूस में भाग लिया। बड़े जोश-खरोश से भजन गाते रहे।

आर्य समाज की ओर से सभा को १७५/- वेद प्रचार फण्ड, ५/- शिवरात्रि फण्ड, १२/- आर्य जगत शुल्क, ५०/- किराये-भाड़े में दिए गए।

—जियालाल आर्य
मन्त्री समाज

मुंडन संस्कार

श्री लाला कर्मचन्द जी रिटायर्ड **Principal Higher Secondary School Nakodar**, के पौत्र श्री बलदेव मित्र के सुपुत्र चिरंजीव राजीव कुमार का मुंडन संस्कार, देहली में वैदिक रीति के अनुसार, सैंकड़ों स्त्री-पुरुषों, सम्बन्धियों और मित्रों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। सबका मिठाई, चाय से स्वागत हुआ।

आर्य जगत के बारे में

आर्य समाज मारीशस के मन्त्री श्री विद्यानंद रामदयालजीका पत्र

पूज्य सम्पादक जी, हृदय से नमस्ते।

मुझे आप की पत्रिका आर्य-जगत काफी पसन्द आई और हर सप्ताह नियमित रूप से प्राप्त हो रही है। मेरी दृष्टि में आर्यजगत भारतवर्ष की ही नहीं संसार की सर्वश्रेष्ठ धार्मिक पत्रिकाओं में से है। इसके हर अंक में नवीनता रहती है। आधुनिक युग में इस प्रकार की पत्रिका की बड़ी आवश्यकता थी। इस कमी की पूर्ति करके आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब ने बड़े साहस का परिचय दिया है।

मैं ईश्वर से सदा यही कामना करूंगा कि यह पत्रिका सदैव इसी प्रकार सारी दुनियां के कोने-कोने में वैदिक धर्म का प्रचार करती रहेगी।

भवदीय—विद्यानन्द रामदयाल
मोरिशस टापू

★ जिस वस्तु की उपासना की जाती है उसके गुण उपासना करने वाले में आ जाते हैं। जैसे यदि कोई विद्वान् की उपासना करे तो उसे विद्या प्राप्त होगी। इसी प्रकार यदि कोई पत्थर की पूजा करेगा तो वह पत्थर के सामान जड़, मूर्ख और आलसी तथा अज्ञानी हो जावेगा।

आर्यसमाजों से निवेदन

आर्यसमाजों से निवेदन है कि जून और जुलाई के मास में होने वाले उत्सवों तथा कथाओं के प्रोग्राम स्वीकृत कराने के लिए मुझे पत्र लिखें ताकि सभा के कार्य-कर्ताओं को भेजने का उचित प्रोग्राम बनाया जा सके। हिमाचल जम्मू-काश्मीर तथा पंजाब के पहाड़ी क्षेत्रों की समाजों से विशेष तौर पर निवेदन है कि वे इस अवसर का लाभ उठावें।

—वेदप्रकाश मलहोत्रा, सभा मन्त्री
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा
जालन्धर

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा मोर मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर।

टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक १९) २६ वैशाख २०२३ रविवार—दयानन्दाब्द १४१— ८ मई १९६६ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

अद्न्यो निविध्य प्रदतो मृणीहि

उस धोखेबाज राक्षस के तो दत :—दान्त भी मृणीहि—तोड़ डाल। हे वीरनर ! तू इस प्रकार के दुष्टजन शत्रु को ऐसी मार दे। उसे के दान्त भी निकाल दे ताकि वह विष वमन न कर सके—

इहैव भव

इह—इस जगत् में तथा अपने इस शरीर में भव—सुख-पूर्वक निवास कर। इस संसार को झूठा न जान तथा अपने इस मानव चोले को भी तुच्छ एवं साधारण मत समझना। सुख से दिन बिता।

न: सोम मृडय

प्रभुदेव ! आप सोम हैं—ताप संताप को दूर करने वाले हो। सारे सकटों को काटने वाले आप ही हैं। सुख शांति के दाता हो। कृपा करते हुए न:—हमें मृडय—सुखी बना दो। सदा आप की कृपा से सुख मिले।

ता: सर्वा नश्यन्तु

भगवन ! वे सारी बीमारियां मन की बुराईयां हमारे शरीर तथा मन से परे हट जायं। सब का नाश हो जाए। कोई भी बीमारी तथा बुराई हमारे शरीर एवं मन में न आने पाये। सदा स्वस्थ तथा चिन्तारहित बनें।

अ थ र्व वे द से

वे दा मृ त

राजा का कर्तव्य

अपेन्द्र द्विषतो मनोप जिज्यासतो वधम्।
वि महच्छर्म यच्छ वरीयो यावया वधम्॥

अथर्व वेद काण्ड प्रथम सूक्त २१ मन्त्र ४

अर्थ—हे राजन् ! इन्द्र इन को (अप) परे हटा दे जो (द्विषत:) द्वेषी हैं, शत्रु हैं उनके (मन:) नीच मन को भी (अप) परे हटा दो जो (जिज्यासत:) शत्रु बन कर सदा हमारी हानि चाहने और करने वाले हैं। उनके (वधम्) हमले को भी परे कर दे। हमें (महत) बड़ा (शर्म) सुख कल्याण (यच्छ) दे तथा (वरीय:) राष्ट्र के शत्रु के (वधम्) हमले को भी (यवय) दूर कर दे। हर प्रकार का शत्रु भगा दे।

भावार्थ—राष्ट्र की शान्ति को कई प्रकार से भय होता है। परस्पर द्वेष, वैमनस्य फैलाने वाले शत्रु सदा गड़बड़ किया करते हैं। हानि पहुंचाने वाले राष्ट्र की शांति को भंग करने में लग जाते हैं। इसी प्रकार शत्रु भी शस्त्रों से राष्ट्र की भूमि पर आक्रमण करके उसकी अपार क्षति कर देते हैं। इन का प्रतिकार न किया जाये तो सारा देश अन्दर से खोखला हो जाता है। इसलिए वेद की राजा अथवा शासक के लिए यह आज्ञा है कि इन तमाम प्रकार के शत्रुओं, वैरियों और हमला करने वालों को पूर्ण रूप से कुचल दिया जाये ताकि देश में किसी तरह की भी अशान्ति व गड़बड़ न होने पाये—सं०

ऋषि दर्शन

इन्द्रियाणिमदैवरक्षणीयानि

राज्य के आसन पर बैठे हुए राजा से लेकर मन्त्रि मंडल तथा कर्मचारी वर्ग के लिए आवश्यक है कि वे अपनी इन्द्रियों का सदा रक्षण किया करें। आत्मवशी व आत्मविजयी हों। कामी या इन्द्रियों के दास लोग राज्य के काम को कभी चला नहीं सकते। अनाचार की मार राज्य को मार देती है। आत्म-दमन चाहिए।

ओज एव क्षत्रम्

शास्त्रों में ऐसा विधान माना जाता है कि ओज ही क्षत्र है। शक्ति तथा बल को क्षत्र का नाम दिया है। बल शक्ति के बिना राज्य का काम चल ही नहीं सकता। यह शक्ति बल बिना सदाचार के आता नहीं। कामी तथा अपनी इन्द्रियों का दास बना कर्मचारी कायर होता है।

वीर्यमेव राजन्य:

वीर्य या बल ही राजन्य अर्थात् क्षत्रिय होता है। बल के बिना क्षत्रिय नहीं कहा जा सकता। क्षत्रिय उसे कहा जाता है जो विपत्ति में पड़े हुओं को बचाता है, दु:खियों की रक्षा करता है। जो कमजोर है वह क्या बचायेगा ? इसीलिए वीर्य को क्षत्रिय माना है।

भा ष्य भू मि का से

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी

सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

आन्तरिक एवं बाह्य जीवन में माधुर्य, मिठास का इच्छुक है। अग्नि, ज्ञान प्रकाश स्वरूप परमात्मा इसका देवता, विश्वप्रकाश स्वरूप परमात्मा इस मन्त्र में निहित भावना का आचरण किया जाए, तो मानव का जीवन मधुमय बन सकता है। इसमें कोई सन्देह नहीं।

वैसे तो संसार का प्रत्येक नर-नारी आधुनिक युग में धन की दौड़ में व्यस्त है और बिना धन के निर्वाह भी सम्भव नहीं, किन्तु वेद मन्त्र में जिस धन की घोषणा की गई है, वह लौकिक धन से बहुत विलक्षण है।

सर्व-प्रथम धन को 'रयि' शब्द से कहा गया है। रयि शब्द 'री गतिरेषणयोः' धातु से 'इ' प्रत्यय करके बना है। अतः 'रयि' का अर्थ हुआ, वह ऐश्वर्य, जिसमें गति, हल चल, एक स्थान से दूसरे स्थान पर गमन आना जाना और इच्छा का भाव हो। अर्थात् वेद के अनुसार हमारा ऐश्वर्य ऐसा नहीं होना चाहिए, जो एक जगह पड़ा हुआ सड़ता रहे, किसी के काम न आए। किसी तालाब का जल निरन्तर खड़ा रहे, तो सड़ जाता है। उस से दुर्गन्ध आने लगती है। यही अवस्था ऐश्वर्य की है। रयि शब्द में दूसरी भावना इच्छा की है। हमारे धन में दूसरों का उपकार करने की इच्छा भी हो। एषणा में खोज का भी

केवलाघो भवति केवलादी।" सौ हाथों से कमा, हजारों हाथों से दान कर, अकेला खाने वाला केवल पापी होता है।

यह रयि आये कहां से? भोगे किससे? इस पर भी ध्यान दीजिए। सर्वप्रथम धन की याचना प्रभु से की है, क्योंकि वे ही रयिमान् हैं। अयं मग्निः पुरीष्यो रयिमान्

कुंदनदास के विषय में ऐसा प्रसिद्ध है, कि एक बार अकबर बादशाह के बुलाने पर उन्हें फतहपुर सीकरी जाना पड़ा, जहां उनका बड़ा आदर हुआ। पर अन्त तक उन्हें इसका खेद रहा, जिसे व्यक्त करते हुए उन्होंने लिखा—'संतन कहा सीकरी सो काम? आवत जात पनहियां टूटीं, बिसरि गयो हरिनाम।"

मधु-कलश

(१)

अधम लोग विघ्नों के भय से शुरू नहीं कर पाते
मध्यम लोग विघ्न आने पर पीछे को हट जाते
लेकिन उत्तम लोग हमेशा विघ्नों को ठुकरा कर
पूरा करते काम कभी भी पीठ नहीं दिखलाते

(२)

सब दुविधाएं मिट जाती हैं सब संकट कट जाते
बसर जिन्दगी हो जाती है यूं ही हंसते गाते
मधुर बोलने वाले को तो इस दुनिया के अन्दर
अपने तो क्या बेगाने तक बढ़ कर गले लगाते

(३)

तुम इसकी गरिमा को समझो गौरव को स्वीकारो
जो कुछ है अनमोल साथियो सोचो और विचारो
मेरी वाणी का मतलब है दर्पण दुनियां वालो
जब चाहो तब इसके अन्दर अपना रूप निहारो

(४)

जिसकी अवनति से डिग जाता जग का धर्माचार
उन्नत है जिसकी उन्नति से विश्व धर्म-व्यापार
जिस से सुखद प्रेरणा सब को सदा धर्म की मिलती
उस भारत को देना प्रभुवर आभा अपरम्पार

(क्रमशः)

एडीटर इनचार्ज पंजाब केसरी—विजय निर्बाध

महात्मा कैयट ने अपनी धर्म-पत्नी से कहा—'यदि हमारे यहां रहते हुए राजा को पाप लगता है, तो उठाओ चटाई, यहां से चलें। राजा ने कई बार उन्हें फिर भी कहलवाया। पर कैयट ने उत्तर दिया, 'हम यही आप से मांगते हैं, कि आप इसी समय यहां से चले जाइये।'

मुद्राराक्षस में जब पाटलिपुत्र का एक विद्यार्थी दूसरे विद्यार्थी से आचार्य चाणक्य का घर पूछता है, तो वह तुरन्त उत्तर देता है—

'उपल शकलमेतद् भेदकं
गोमयानाम्,
बटुभिरुपहृतानां बर्हिषां
स्तूपमेतद्।
शरणमपि समिद्भिः
शुष्यमाणाभिराभिः,
विनमित पटलान्तं दृश्यते
जीर्ण कुड्यम्॥

ऐसे थे हमारे सत्ताधारी मंत्री। उनकी तुलना कीजिये, तनिक आज के शासकों से। आकाश-पाताल का अन्तर है। आर्यसमाज के प्रसिद्ध कवि स्व० नाथूराम शंकर ने उन पर क्या ही फबती कसी है—' कितने ही राजकर्मचारी, जिनके कर बाग है हमारी। वेतन भरपूर पा रहे हैं, तिस पर भी घूंस खा रहे हैं। (क्रमशः)

★ जो प्राचीन ब्राह्मण ग्रन्थ आदि ऋषि मुनि कृत सत्यार्थ पुस्तक है उन्हीं को पुराण, इतिहास, कल्प, गाथा और नाराशंसी कहते हैं।

सम्पादकीय—

आर्य जगत्

वर्ष २९] रविवार २०२३, ८ मई १९६६ [अंक १९

हमारी आंखें कब खुलेंगी

विदेशी सत्ता के शासकों ने तो अपना साम्राज्य स्थापित किये रखने के लिए भारतीय इतिहास में बहु गड़बड़ की तथा स्कूलों वा कालेजों में ऐसा इतिहास लिखवा कर पढ़ाना प्रारम्भ किया—कि भारतीय विचारधारा को बिगाड़ करके रख दिया। भारत के मूल निवासी आदिवासी थे, द्रविड़, कोल आदि थे। आर्य बाहर से आये। दोनों में संग्राम हुआ। आर्य लोग आगे बढ़ते गये। आर्य लोगों के खान-पान में मांस का यहां तक कि गोमांस तक का खुला प्रयोग होता था विवाहों पर बैलों का मांस पकाया जाता था। शराब भी खुले रूप से पी जाती थी। भारतीय ऋषि मुनि भी गोमांस का प्रयोग करते थे। आज भी इतिहास में ये बातें पढ़ाई जाती हैं। भारतीय इतिहासकारों ने भी वही पश्चिम का चश्मा लगा कर भारतीय संस्कृति को उसी रूप में देखा, सोचा, माना, जाना व लिखा भी। उनके मन और मस्तिष्क पर भी पश्चिमी विचार-धारा आकर बैठ गई। यहां तक कि स्वर्गीय प्रधान मन्त्री श्री पं० नेहरू जी ने भी अपनी 'डिस्कवरी आव इंडिया' नामक पुस्तक में वेद के बारे में, गोमांस खाने तथा रामायण, महाभारत के बारे में जो कुछ लिखा है—उसे पढ़कर महान् दुःख होता है। सब उसी प्रवाह में बह गये। उसी कारण पर चल पड़े। पश्चिमी लोगों का अन्धानुकरण किया गया। भारत का कितना दुर्भाग्य है। आज भी भारतीय शिक्षा-संस्थाओं में यह इतिहास के रूप में पढ़ाकर राष्ट्रीय जीवन का बेड़ा गर्क किया जाता है। सारे मौन हैं। कारण यह है कि इन लोगों के दिमाग पर अंग्रेज राज्य कर रहा है। आंखें पश्चिम की, वाणी पश्चिम की तथा मन भी पश्चिम का है। मैकाले का स्वप्न साकार हो गया है। इसका प्रमाण लेवें।

अभी-अभी राजधानी देहली में महावीर जयन्ती का जैन समारोह था। उसमें केन्द्रीय मन्त्री श्री जगजीवनराम जी को भी निमन्त्रित किया गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के मन्त्री पं० रामगोपाल जी शाल वाले भी निमन्त्रित थे। अपने प्रभावशाली भाषण में भारतीय अहिंसा पर वैदिक विचारधारा प्रकट करते हुए उन्होंने कहा कि आज तो मांसाहार आगे से भी अधिक होता जा रहा है। गोहत्या जारी है। कांग्रेस सरकार को महात्मा गांधी का आदर्श सामने रखना चाहिए। इस पर श्री जगजीवनराम जी ने अपने प्रवचन में कहा कि मांस खाना आदि काल से चला आ रहा है। भारत के ऋषि मुनि भी गोमांस खाते थे.....

भारतीयो! आंखें खोलो। और जरा सोचो! आप कहां खड़े हो। भारत सरकार के मन्त्री के विचार पढ़ो और सुनो। इन लोगों का दिमाग किस प्रकार से काम कर रहा है। भारतीय संस्कृति का इनके विचार में क्या पुरातन रूप है? यह बात प्रत्यक्ष हो जाता है। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री जी ने निर्भीकता से इन बातों का वहां उत्तर दिया। वह तो बधाई के पात्र हैं। हम यह कहना चाहते हैं कि मूल में विदेशी सत्ता जो जान बूझकर भूल पैदा कर गई। उसी का आज विघटन के रूप में परिणाम सामने आता है। जब तक इस भूल का प्रबन्ध नहीं किया जाता, तब तक पत्तों को पानी देना बेकार है। स्वामी दयानन्द पहला महा-पुरुष था, जिसने इस बाहिरात बात के विरुद्ध अपनी लेखनी उठा कर घोर प्रतिवाद किया। आर्य समाज का कर्तव्य है कि इन विचारों का प्रतिकार करने में जोर से काम करें। आज हमारे परिवारों के बच्चे भी स्कूलों में अपने स्कूलों के इतिहास में यह बातें पढ़ते, याद करते तथा परीक्षा में लिखते हैं। यही विचार बालपन में सीख कर पक्के हो जाते हैं। अपने लोग भी इसी धारा में बह रहे हैं। आर्यो! आंखें खोलो। इन विषैले विचारों से भरे इतिहास को बदलने के लिए संगठित आवाज उठाओ। यह विष है जो विचारों के रूप में सब को पिलाया जाता है। राजनीतिक लोगों को तो समय नहीं है। संस्थाओं के सज्जनों को श्रद्धा नहीं परिवारों को अवकाश नहीं तथा साधारण जनता को आवश्यकता नहीं तो फिर क्या होगा?

—त्रिलोक चन्द्र

केन्द्र की विशेषता

वृक्ष चाहे कितना महान् हो, उसे मूलरूपी केन्द्र से रस मिलता रहता है। यदि वह मूल निर्बल हो जाये तो सारा हराभरा वृक्ष सूख जाता है। राष्ट्र का केन्द्र भी यदि कमजोर हो जाये तो महान देश भी नाना टुकड़ों में बह जाता है। भारत की पराधीनता का सबका बड़ा यही कारण था कि उसका केन्द्र निर्बल हो गया था। धर्म स्थानों की भी यही अवस्था होती है। आर्यसमाजें अपने-अपने स्थान पर बड़ा भारी काम करती हैं। किन्तु इन समाजों के मनोरम मनके सभा रूपी केन्द्रीय सूत्र में पिरोये हुते हैं। यही सूत्र उनको परस्पर जोड़े रखता है। सूत्र के टूटने पर मनके बिखर जाते हैं। माला समाप्त हो जाती है शक्ति जाती रहती है।

आर्य प्रादेशिक सभा की स्थापना उस सर्वमेधी युग-पुरुष महात्मा हंसराज जी ने की था। यह केन्द्र था जिसके द्वारा सारे समाजों को रस मिलता रहा। शोक है कि अब यह केन्द्र निर्बल होता जा रहा है। इससे सम्बन्धित समाजों के विशाल भवनों को देखे समाजों द्वारा चलाई जा रही संस्थाओं को देखें, बड़े-बड़े शिक्षा संस्थानों को देखें। उन पर होने वाले लाख करोड़ों के व्यय को देखे। इधर सभा रूपी केन्द्र के भवन, तथा प्रचार का आर्थिक अवस्था को देखे तो कलेजा मुंह को आता है। बिना लगी लिपटी के कह देते हैं कि सभा रूपी माता की दशा चिन्ताजनक है, दुर्बल है—और इस के पुत्र-पुत्रियां मौज मेले में मस्त हैं। देवता हंसराज के इतने महान् भक्त हैं किन्तु आर्य प्रादेशिक सभा के महात्मा हंसराज भवन बनाने की लिए किसी को भी चिन्ता नहीं। सभारूपी माता के पुत्र पुत्रियों के पास सम्पत्ति के भण्डार भरे पड़े हैं पर इस माता के पास वेद प्रचार में चार पैसे भी शायद नहीं। सभा के इने-गिने मान्य अधिकारियों को चिन्ता है या प्रचारक वर्ग भिक्षा पात्र ले कर स्थान-स्थान पर भटकता रहता है या कुछ उदार समाजें व सज्जन ध्यान रखते हैं। सभा रूपी केन्द्र कमजोर न होने देना। सभा आत्मा है। समाजें

(शेष पृष्ठ ४ पर)

बजवाड़ा का समारोह—
तपोनिधि महात्मा हंसराज जी

✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻✻

महात्मा हंसराज जी के जन्म-स्थान बजवाड़ा जिला होशियारपुर में उनके जयन्ती समारोह पर बोलते हुए महात्मा जी के अनन्य भक्त प० मस्तान चन्द जी ने कहा कि मैंने स्वर्गीय देवता के साथ २५ वर्ष काम किया है। उनके गुणों का गान कैसे करूं ? वह सचमुच गुणों की खान थे। वह सच्चे अर्थों में मुनि थे, स्थित प्रज्ञ थे, अडिग चट्टान थे। संसार का बड़े से बड़ा प्रलोभन और भयानक विपत्ति भी उस महात्मा के मन को तनिक भी विचलित नहीं कर सकती थी वह धर्म प्रचार में जब जाते थे तब मार्ग में भूख लगने पर सत्तू घोलकर पी लेते थे। आज ऐसे नेता कहां हैं ? बाहर ही नहीं निकलते। मैं अपने जीवन में प्यारे से प्यारे सम्बन्धी को तो भूल सकता हूं किन्त महात्मा जी को कदापि नहीं भूल सकता। मुझे तो स्वप्न में भी महात्मा जी दिखाई देते हैं। बातें करते और बातें पूछते हैं।

प्रिंसिपल रामदास जी ने कहा कि आज के दिन इस नगरी में उस बालक ने जन्म लिया, जिस से इस बजवाड़ा की शोभा हो गई। उनको बालपन में तपस्या करनी पड़ी। यही तप उनको कुन्दन बना गया। वह तो जन्म से ही महात्मा थे। ऊंचे लोगों मे प्रारम्भ में ही विशेष चीज होती है। आवश्यकता केवल पर्दा उठाने की हुआ करती है। वह दिव्य गुण प्रकट हो जाते हैं। स्कूल में और भी विद्यार्थी थे पर क्रिश्चियन हैड-मास्टर को उत्तर देने वाला हंसराज ही था। विपत्तियों में प्राय: मनुष्य गिर जाते हैं, पर आदर्श पुरुष नहीं गिरता। महात्मा जी आदर्श पुरुष थे। उनका जीवन विराट् स्वरूप था। आचार्य भद्रसेन जी ने वेदना भरे भाव प्रकट करते हुए कहा कि जनता का समाज पर इतना विश्वास था कि और संस्थाएं तो फेल हो सकती हैं पर आर्यसमाज का संस्था कभी फेल नहीं हो सकती। महात्म जी आठवें नियम के साक्षात् प्रतीक थे। सर्वमेध यज्ञ किया। भारतीय संस्कृति के सच्चे उपासक थे। धर्म शिक्षा स्वयं पढ़ाते थे। मैं बड़े दुःख भरे दिल से कहता हू कि हमने दूसरे नगरों में तो महात्मा हंसराज जी के बड़े-बड़े स्मारक खड़े कर दिये। उनका जन्म-स्थान बजवाड़ा उजड़ रहा है। यहां पर उनका उचित स्मारक बनाना होगा। बजवाड़ा को बसाना होगा। आज बाहर से कितने लोग आए हैं ? विचारो ! ऐसी अवस्था रही तो बोलने वालों के साथ हमे सुनने वाले भी बाहर से ही साथ लाने होंगे।

श्री संसारचन्द जी एडवोकेट ने कहा कि सागर में प्रकाश स्तम्भ जहाजों को मार्ग दिखलाते हैं। महा-पुरुष भी प्रकाश के मीनार होते हैं। महात्मा जी चमकते मीनार थे। दोनों भाई ही आदर्श थे जीवन में आकर्षण था। कितने युवक बनाकर समाज को दिए। सत्य, न्याय व सेवा का मार्ग उनका मार्ग था पण्डित चन्द्रसेन जी आर्य प्रादेशिक सभा ने कहा कि महात्मा जी सच्चे नेता थे। हर सम्प्रदाय का व्यक्ति उनको सादर निमन्त्रित करता व सम्मान करता था शिक्षा की दृष्टि से महान् थे। सारा श्रेय उनको है। वेद प्रचार के लिए आर्य प्रादेशिक सभा स्थापित की। हमें इस ओर विशेष ध्यान देना है

श्री दयानन्द आर्य एम० ए० ने कहा कि आज आर्य समाज के पास सब कुछ है। किन्तु युवकों का निर्माण करने वाला महात्मा हंसराज जी जैसा देवता नहीं है। बजवाड़ा समाज में आकर हम सत्संग लगाते हैं। श्री जगदीश चन्द्र जी भल्ला मन्त्री समाज आदि सज्जन बड़ा प्रयत्न करते हैं। किंतु मन्दिर के लिए अभी तक दरियां भी नहीं हैं। यह समाज उस तपो-धन की स्थापित समाज है। इसकी उन्नति का भी ध्यान रखना है। सारे हमें सहयोग देंवे।

पं० त्रिलोक चन्द्र शास्त्री ने भी अपने विचार रखे। पं० इन्द्रदत्त जी उनियाल एम० ए० ने शानदार कविता पाठ किया। पं० ज्ञानचन्द जी भजनोपदेशक के मीठे भजनों के बाद श्री पं० रामानन्द जी शास्त्री सभापति ने अपना प्रभावशाली प्रवचन दिया है कि—

महापुरुष की पहिचान सम्पत्ति और विपत्ति में होती है। दोनों में एकरूप रहना महात्मा की परि-भाषा है। महात्मा हंसरास सदा अविचल रहे। वह सच्चे अर्थों में कर्म योगी थे।

जो जीवन को कर्म में लगाये रखता है और उसी में मस्त रहता है। वह महात्मा कहाता है। कर्मयोग ही उनका सब से बड़ा योग होता है। महात्मा लोग दृढ़ संकल्प होते हैं। अपने सिद्धांत में वे वज्र से भी कठोर तथा जन-सेवा में फूल से भी कोमल होते हैं। तप के समय तप तथा त्याग के समय त्याग करते रहते हैं। यही उनका आदर्श होता है। महात्मा हंसराज जी के जीवन में क्रिया-त्मिक त्याग एवं तप था। उनके जीवन से कितने जीवन बन गये। आज जीवन तो बहुत हैं पर उन के निर्माण करने वाले विरले ही हैं। आज के इस महान पर्व पर बैठ कर हम सब प्रतिज्ञा करें कि महात्मा हंसराज के समान अपने जीवन में विशेष कार्यपथ चुन कर उस पर चलना आरम्भ कर देवें। तभी कल्याण होगा। इस प्रकार समारोह समाप्त हुआ। सब ने जोर दिया कि अगले वर्ष इसे मेले के रूप में मनाया जाए।

——

गुड़गावां में महात्मा हंसराज दिवस

२४-४-६६ को आर्यसमाज मन्दिर माडल टाऊन गुड़गावां में महात्मा हंसराज स्मृति दिवस बड़े समारोह से मनाया गया। गुड़गावां की समस्त आर्य संस्थाओं ने भाग लिया पं० हरिदत्त जी पं० नन्दलाल जी के भजन और महाशय कृष्ण चन्द जी प्रधान आर्य प्रादेशिक उपसभा देहली आदि सज्जनों ने महात्मा जी के जीवन पर प्रकाश डाला।

कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण का मेला

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की ओर से अम्बाला जिले के उपप्रधान श्री अमरसिंह जी सूर्य ग्रहण मेला पर प्रबन्ध के लिए नियुक्त किए गए हैं, इस अवसर पर निवास, भोजन प्रचार आदि का प्रबन्ध सभा की ओर से सुचारु रूप से किया जा रहा है। सभा का यह कैम्प १५ से २० तक रहेगा। जिसमें धर्म प्रचार के अतिरिक्त मनोहर भजनों का भी प्रबन्ध रहेगा।

केन्द्र की विशेषता

(पृष्ठ ३ का शेष)

व संस्थाएं इस का घटक व शरीर है। शरीर को भोजन दिया जाये पर आत्मा व मन को भूखा मारा जाए तो शरीर का क्या बनेगा ? हम स्वर्गीय महात्मा हंसराज जी के भक्तों, प्रेमियों तथा श्रद्धालुओं से नम्र निवेदन करते हैं कि वे सभा रूपी केन्द्र मूल का अभी से ध्यान रखना प्रारम्भ कर दें। केन्द्र को केन्द्र बना देवें। कोई सुनेगा—सं०

विचार-तरङ्ग (९)

(श्री राम मूर्ति जी कालिया एम० ए० नई दिल्ली)



हंसी और गमी दोनों ही जीवन के अङ्ग हैं। संसार के बहुधा लोग आप के साथ हंसना-खेलना पसंद कर लेंगे किन्तु आप का रोना-धोना सुनने के लिये न किसी की कामना है, न ही किसी के पास व्यर्थ का समय। सुख में मिल बैठना सब चाहेंगे, दुःख भक्ति अकेला भोग ले, संसार शायद कुछ-कुछ ऐसा ही चाहता है। आप हंस कर, मुस्करा कर किसी से बात करें तो दो चार क्षण सुख-दुःख की बात कोई कर लेना चाहेगा किन्तु ज्यों ही आप ने अपना मुंह मसोसा कि किसी ने किनारा किया। आखिर हमें समाज में तो रहना ही है, अकेले तो कोई बड़ा नहीं बनता और ईश्वर किसी को एकाकीपन दे भी न। तो रोने से क्या लाभ। जिंदगी का नाम जिन्दा दिली हो तो है। अतः मुस्काना सीख लो, चह-चहाना सीखो और सीखो गुन-गुनाना। वह दिल तो मुर्दा है जो कभी खिलखाया नहीं। ठीक ही तो कहा है विद्वान लेखक ने—'It is a poor heart that never rejoices.

खुशी हो अथवा गमी दोनों एक-सी हैं। दोनों का जीवन पर अधिकार है। दोनों आती हैं और चली जाती हैं। दोनों में कोई भी स्थायी नहीं है। यदि आज बसंत है तो कल पतझड़। आज खुशी है कल गमी हो सकती है। रात्रि के बाद पौ फटती है और बाद रवि अपनी रश्मियों से जग में पुनः स्मित छिटक देता है। और जहां बजते हैं नक्कारे वहां मातम भी होते हैं' अतः यह सिलसिला तो चलता ही रहेगा किन्तु जो बात अपनाने योग्य है वह है हर हालत में मुस्कराना सीखना। संसार यदि दुःख सुनने का हामी नहीं तो मैं क्यों सुनाऊं। ईश्वर से मैं भी यही मांगू कि दुःख अकेला झेलूं और संसार जो हंसते ही देखने का आदी है उसके सामने हंसता रहूं।

हंसना स्वास्थ्य का प्रतीक है यह निर्विवाद सत्य है। दुःख और गमी में मुसकुराना यह साहस और शौर्य का लक्षण है। संकटों और अभावों में भी मुसकराना सन्तोष का प्रतीक है। सन्तोष ईश्वर की भक्ति है। जो सन्तोषी नहीं है वह आस्तिक भी नहीं है। ईश्वर जो त्रिकालज्ञ है अर्थात हमारे भूत वर्तमान और भविष्य को जानता है वह जिस स्थिति में हमें रखे, उस का वह न्याय ही है इस प्रकार समझने वाला व्यक्ति ही सन्तोषी कहा जाता है। ऐसा सन्तोषी जीव ही मस्त रहता है, मुस्कराता है और निर्भीकता से स संसार में विचरण करता है। ऐसे ही भक्त पर उस का भगवान भी प्रसन्न रहता है। उर्दू के एक कवि ने ठीक ही फरमाया है—

"खुशी हो, गम हो, चाहे कुछ
हो, पर खुश रहिए,'
जो खुश रहते हैं खुश उन पर
हमेशा है खुदा उनका।"

हां यदि न हंसने की कसम ही किसी ने खाई हो तो उस पर दया करनी चाहिए। और न हंसने के लिए भी बातें हैं जहां मैं प्रार्थना करूंगा कि कोई न हंसे। मेरे कहने का भाव है किसी की मूर्खता पर, किसी की विवशता पर और त्रुटियों पर। इन के अति रिक्त हमें हसने की आवश्यकता है। यदि हम हमेशा प्रसन्न मुख हैं तो ईश्वरीय वरदान समझें अन्यथा अभिशाप।

विचार तरंग [८]

(ले०—श्री राममूर्ति जी कालिया एम० ए० नई दिल्ली)



(गतांक से आगे)

परहित की भावना से ओत-प्रोत है जिसका मन, उद्देश्य की प्राप्ति हेतु जिसने मार्ग प्रशस्त कर लिया हो एवं दृढ़ता से जिसका कदम आगे बढ़ रहा है ऐसे शूरवीर और दृढ़व्रती के मार्ग में छोटी-मोटी कठिनाइयां तो सिंह के सम्मुख मच्छर हैं। लज्जित होकर नत मस्तक हो वे स्वयं मार्ग से हट जाती हैं। फिर वह प्रबल शौर्य-धारी संकटों और अवधानों का आह्वान करता है। सुखों की तुलना में संकटों में सुख का अनुभव करता है। ऐसे ही अलमस्त व्यक्ति पुकार उठते हैं, 'वे खुश किसमत हैं जिन पर गर्दिशे ध्याम आती है।' कबीरदास जी ने तो सुख को कोसा और दुख को सराहा। इसी को अभिव्यक्त करते हुए उन्होंने लिखा—

'सिला परे इस सुख पर,
नाम हृदय से जाये,
बलिहारी उस दुख के,
पल-पल नाम रटाय।'

दुख पर बलिहारी जाने वालों के लिये वह दुःख ही सुखकारी हो जाता है। मार्ग की कठिनाइयां ही आसानियां बन जाती हैं, शूल ही फूल हो जाते हैं। जीवन में कोई ऐसी कठिनाई एवं शत्रु नहीं जिस का सामना न किया जा सके और पराजित न कर सकें। किन्तु परहित की भावना लेकर, दृढ़ संकल्प करके मार्ग पर पग धरें तो सही।

आर्य समाज खंडवा पूर्व निमाड़ (म. प्र.)

आर्य समाज खंडवा के अन्तर्गत दलितोद्धार समिति की ओर से दि० २२-४-६६ को ग्राम कुंडिया में बलाही जाति सुधार सभा में १२५ ग्राम की पंच सम्मिलित हुई थी जिस में आर्यसमाज के स्थायी प्रचारक सुखराम आर्य सिद्धान्त शास्त्री ने (वैदिक वर्ण व्यवस्था मानव जीवन का उद्देश्य, जातियों का निर्माण, छुआछूत) आदि विषय पर वैदिक सिद्धान्तों के आधार पर ओजस्वी भाषण दिया। उपरोक्त भाषण का ग्रामीण जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

——

चेतावनी

आर्यों का मीट मसाला

श्री मथुरा दास जी आर्य समाज नवांकोट, अमृतसर



यूं तो आर्य समाज के नाम पर, आर्य के नाम पर, स्वामी दयानन्द के नाम पर अनेक दुकानें अनेक चीजें, और अनेक अन्य काम हो रहे हैं, परन्तु ३-४-६६ को मिलाप उर्दू के संडे एडीशन में और हो सकता है हिन्दी मिलाप व अन्य समाचार पत्रों में भी हो एक विज्ञापन 'मीट मसाला' आर्यां दी हट्टी ६३३६ तिलक बाजार खारी बावली देहली—६ का छपा है जिस में लिखा है कि उनका मसाला खुश्क और तरीदार हर प्रकार के मीट (मांस) को अति स्वादु बनाता है और इस काम के लिये अद्वितीय वस्तु है।

मैंने जब यह इश्तहार पढ़ा तो विचार आया कि आर्य समाज का प्रचार तो लगभग एक शताब्दी से मांस के न खाने का हो रहा है कई ट्रेक्ट छपे स्वामी दयानन्द जी ने इस का घोर खण्डन किया, उनकी पुस्तकों में अनेक स्थानों पर इस के खाने का निषेध किया गया है उनके बाद भी आज तक आर्य समाज ने सामूहिक रूप में इस का खण्डन किया है और कर रहा है। परन्तु अब दुकान का नाम 'आर्यां दी हट्टी' रख कर और मांस खाने का प्रचार करना यह तो बहुत ही अनुचित बात है, आर्य शब्द का अपमान है, यहां तक मेरा विचार है यह दुकान महाशियां दी हट्टी का ही हिस्सा है इनकी दुकान पहले स्यालकोट में था, पाकिस्तान बनने पर अब देहली में कारोबार कर रहे हैं और प्रतीत होता है अब उन्होंने दो दुकानें कर ली हैं, स्यालकोट में क्या यहां आकर भी वह मिर्च, मसाला, मेथो, जल जीरा आदि बनाते रहे और उन के इश्तिहार भी निकलते रहे परन्तु अब आर्य शब्द के नाम पर यदि मांस खाने का प्रचार किया जावे तो मेरे विचार में आर्य समाजों को आर्य सभाओं को विशेष कर आर्य सार्वदेशिक सभा को तो इन्हें अवश्य ही रोकना चाहिए। हो सकता है कि कुछ आर्य समाजी मांस खाते भी हों परन्तु आर्य समाज तो खाने की आज्ञा नहीं देता हां घोर विरोध करता है। इस कारण आर्य नाम के साथ मांस खाने का प्रचार तो बिल्कुल बन्द होना चाहिए। दृष्टान्त अनेक दिए जा सकते हैं, यहां केवल एक ही देता हूँ कि सिखों में सिग्रेट तम्बाकू पीना वर्जित है, सिद्धांत रूप में परन्तु कई सिख तम्बाकू सिग्रेट पीते हैं परन्तु आज तक किसी को साहस नहीं हुआ कि सिखों के नाम पर गुरु नानक के नाम पर या गुरु गोविन्दसिंह जी के नाम पर सिग्रेट या तम्बाकू का प्रचार कर सके। सिख क्या किसी दूसरे मतवाले को भी साहस नहीं हुआ कि इस प्रकार का कोई प्रचार करे। परन्तु यहां तो आर्य लोग ही आर्य नाम को लेकर विशेष वस्तुओं का प्रचार कर रहे हैं और आर्य सभाएं तथा आर्य समाजें चुप साधे हुए हैं। जहां तक मेरा विचार है आर्यां दी हट्टी के मालिक करोल बाग या किसी दूसरी देहली की आर्य समाज के सभासद भी होंगे, करोल बाग एक जीती जागती समाज है उन का कर्तव्य है कि वह उनको समझाए और इस प्रचार को बन्द करे। यह आरम्भ है यदि इसे रोका न गया तो इसके पश्चात और भी कई प्रकार के अनुचित और अवैदिक प्रचार लोग कर सकेंगे। इस कारण चेतावनी दी है इस पर आचरण करना सभाओं और समाजों का काम है जो कि अवश्य होना चाहिये अन्यथा इस का परिणाम अच्छा नहीं होगा।

हिसार के साप्ताहिक हिन्दी पत्र आनन्द भूमि के आरोप का खण्डन

(ले०—श्री मुरारिलाल जी शास्त्री प्रधान आर्यसमाज हिसार)



स्थानीय साप्ताहिक पत्र 'आनन्द भूमि' हिसार ने अपने दिनांक १५ मार्च १९६६ के पत्र में आर्यसमाज और उसकी संस्थाओं को लांछित और हानि पहुँचाने की मिथ्या एवं आधार हीन झूठी और असफल चेष्टा की। आर्यसमाज हिसार की समस्त संस्थायें दोनों प्राइमरी स्कूल, हाई स्कूल, दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय, आर्य कन्या महाविद्यालय, समस्त पूर्ववत खुले रहे। पढ़ाई होती रही और परीक्षाएं भी चलती रहीं।

डिगरी कालिज प्रबन्धक वर्ग एवं आचार्य महोदय को विवश होकर बन्द करना पड़ा। क्योंकि दूसरे कालिज के लड़के वहां आ गये।

उक्त समाचार पत्र ने अपने व्यक्तिगत पक्षपात का प्रदर्शन किया है क्योंकि उस ने किसी और संस्था का नाम नहीं लिखा और नाहीं उस संस्था के लड़कों का वर्णन किया है कि जिन्हें जेल भी भेजा गया।

आर्य समाज जैसी गम्भीर एवं विचारशील संस्था को जिसने स्वतन्त्रता प्राप्त करने और स्थिर रखने के लिए बीसियों बलिदानी वीर उत्पन्न किये उनको यह दूध पीने वाले मजनू लांछित करने की कुचेष्टा करते हैं। आर्यसमाजों की संस्थायें बिना किसी भेद भाव के निर्धन वर्ग को उच्च शिक्षा प्रदान करने के लिए अपने जन्मकाल से ही लगी हुई हैं। देश पर जब भी कभी कठिनाई आई तो आर्यसमाज उसका मुकाबला करता रहा है।

चीन और पाकिस्तान के आक्रमणों को असफल बनाने के लिए आर्यसमाज और उसकी स्थानीय संस्थाओं ने हजारों रुपए एकत्र करके देश के लिए समर्पण किये। आज उसकी देश भक्ति की यह लोग जनता में भ्रांति उत्पन्न करने की असफल चेष्टा कर रहे हैं। इनको यह ज्ञान नहीं कि किसी उलझी हुई समस्या पर अलग-अलग विचार रखने का अधिकार प्रत्येक मनुष्य को है। हां, उसके प्रदर्शन के लिए गम्भीरता एवं विचार शीलता का मार्ग अपनाना अत्यावश्यक है। देश की सम्पत्ति की तोड़ फोड़ करना अथवा शारीरिक हानि आर्यसमाज को स्वीकार नहीं अपितु वह इसको घृणा की दृष्टि से देखता है।

समाचार पत्र के संचालक महोदय से निवेदन है कि उनके चमचे जो इस चाल से चल रहे हैं यह ना तो आप के लिये लाभदायक हैं और न जनता के लिये, हां, इनका हलवा मांडा अवश्य बन जाता है।

आल इंडिया दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर के समाचार

१. आपको यह जानकर अति हर्ष होगा कि श्री देवव्रत शर्मा दयानन्द ब्रह्म महा-विद्यालय के एक स्नातक को नियुक्त आसाम प्रान्त में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ की है और उनको वहां मई, १९६६ मे कार्यार्थ भेजा जा रहा है। इनके अतिरिक्त आसाम म मिशन के एक अनथक कार्यकर्ता श्री मोहनलाल महादेव आर्य पहले ही वैदिक धर्म का प्रचार तथा शुद्धि का कार्य कर रहे हैं।

२. लाला नानकचन्द केसर राम नारंग चेरी टेबल ट्रस्ट घुघली जिला गोरखपुर (यू.पी.) ने आल इंडिया दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर के कार्य की सराहना करते हुए मिशन का संरक्षक (पैटरन) बनाना स्वीकार कर लिया है जिस के फलस्वरूप उन्होंने अपनी पहली किस्त पांच सौ रुपये की भेज दी है।

—रामदास, प्रधान मिशन

क्या नशा ही हमारी प्रेरणा है ?

(ले०—श्री सुन्दरलाल जी वोहरा जोधपुर)

नोट—इस का पूर्व भाग ३ अप्रैल के अंक में पढ़ें।

****

(गतांक से आगे)

इस तरह की दलील देने वाले लोगों ने जुकाम का फल नजले के रूप में भुगता है। इस फैशनी नशेबाजी के आधार पर ही आज असंख्य औषधि-विक्रेताओं, डाक्टरों व वैद्यों की रोजी चल रही है। अपने को औरों से ऊंचा व वैध्याव सिद्ध करने वाले लोगों ने जहां एक ओर धूम्रपान से घृणा की तो वहां दूसरी ओर चांदी अथवा हाथी दांत से बनी डिबिया में सुंघनी व जर्दे को सम्हाल कर रखा। आज सुंघनी व जर्दे की मनुहार बड़ी इज्जतदारी के साथ की जाती है। गैस्ट्रिक ट्रबल को मिटाने के लिये चूना मिले हुए जर्दे को रामबाण घोषित किया गया है। जिन्हें चूने के साथ जर्दा बीड़ी खाने में घिन आती है वे जर्दे को पान में मिला कर उदरस्थ करते हैं। ऐसे लोग जहां भी बैठेंगे, पान का पीक थूकेंगे, सुंघनी को हवा में उड़ाएंगे और जर्दे का पीक थूक-थूक कर आसपास की जगह को घिनौनी बना देंगे। लाचारी है।

नशे की स्थिति में शरीर से उसकी क्षमता से अधिक कार्य लिया जाता है, फलस्वरूप आंतों व स्नायु-मण्डल में खुश्की बढ़ जाती है। इस खुश्की के कारण ही शरीर क्षय व एनीमिया जैसे रोगों का शिकार हो जाता है। हिस्टिरिया जैसा पाजी रोग भी शरीर में खुश्की बढ़ने के कारण ही होता है। शरीर में बिना खुश्की बढ़े कैंसर का होना ही असम्भव है। इस खुश्की के कारण ही जुकाम नजले में बदलने लगता है। आपको चश्मा लगाने वाले वे ही लोग मिलेंगे जो जुकाम व नजले के रोगी हैं। नजला जब आंखों में उतर जाता है तो चश्मा लगाना पड़ता है, जब बालों की ओर बढ़ जाता है तो खजाब के लिये दौड़-धूप करनी पड़ती है। लेकिन हम इन रोगों का इलाज नशीली औषधियों के रूप में खोजते हैं। भला इन्द्रियों की इच्छाओं की पूर्ति करते हुए भी क्या कभी अस्वस्थ शरीर का इलाज किया जा सकता है? परन्तु हम छिद्र वाले बर्तन के पैंदे की ओर भूल कर भी नहीं देखते—हम तो अन्धा-धुन्ध उस बर्तन में पानी भरना ही जानते हैं।

नशाबन्दी कोरा प्रचार मात्र बनकर रह गया है।

समस्त मदिरालयों पर ताला लगा दीजिए, देश में उपलब्ध समस्त प्रकार की तम्बाकू व उससे तैयार की गई बीड़ी व सिगरेट का स्टाक जब्त कर लीजिए, देश में पड़ी चाय व काफी की समस्त पेटियों व पैकिटों को अरब सागर में डाल दीजिए, अफीम, गांजा, व भांग को भुसे की तरह जला दीजिए, हजारों युवक एक पलक झपकते वृद्ध हो जाएंगे, अनेकों वृद्धों को लकवा मार जाएगा, असंख्य वकीलों की वकालत उखड़ जाएगी, धारा-प्रवाही मूक हो जाएंगे, सैंकड़ों लेखक प्रेरणाहीन बन जाएंगे, अनेक समाचार पत्रों के संवाददाता व सम्पादकों की कलम टूट जाएगी, असंख्य मोटर व रेल ड्राइवरों तथा पाइलटों को नींद आ जाएगी। सही अर्थ में आज हमारे शरीर के हम स्वयं संचालक न होकर हमारे द्वारा लिया हुआ नशा ही [illegible]

अम्बाला जिला में यज्ञ व उत्सवों की धूम

श्री अमर सिंह जी की अध्यक्षता अम्बाला मण्डल की ओर से ककड़ माजरा जिला अम्बाला में ३० मार्च से १५ अप्रैल तक यज्ञ व उत्सव सम्पन्न हुआ।

प्रादेशिक सभा की ओर से श्री जगदीश चन्द्र जी शास्त्री की अध्यक्षता में यज्ञ सम्पन्न हुआ पश्चात अमरसिंह जी का उपदेश हुआ इस सम्पूर्ण कार्य क्रम में जनता ने श्रद्धा व प्रेम का परिचय देते हुए पूर्ण तथा सहयोग दिया। कस्बे के श्री वैजनाथ जी, श्री कश्मीरी लाल जी आदि महानुभावों के पूर्ण सहयोग से यज्ञ, उत्सव निर्विघ्न समाप्त हुए। समाज की ओर से १५२/- वेद प्रचार व आर्य जगत को प्राप्त हुए।

इसी प्रकार (कोट) जिला अंबाला में भी ७ अप्रैल से १३ अप्रैल तक यज्ञ व उत्सव सम्पन्न हुआ। प्रचार व भजनों की धूम रही। १५८/-वेद प्रचार और आर्य जगत का चन्दा प्राप्त हुआ। इस सम्पूर्ण कार्य में नगर निवासियों ने विशेष कर श्री सुलेख चन्द जी श्री राम स्वरूप जी आदि सज्जनों ने पूर्ण सहयोग देकर इस कार्यक्रम को सफल बनाया।

श्री अमर सिंह जी को दोनों मण्डलियां भजनों से जनता को तृप्त करती रहीं।

आर्य समाज (किला) विक्रमपुरा जालन्धर

यह विशेष सभा पंजाब सरकार की इस नीति का जोरदार विरोध करती है कि पंजाब के प्रमुख नगरों में शराब के नए ठेके खोले जाएं। यह सभा पंजाब सरकार से यह भी मांग करती है कि शराब जैसी नशीली वस्तुओं पर पाबन्दी लगाई जाए।

आशा है कि सरकार देश के स्वतन्त्र नागरिकों के इस प्रस्ताव पर अवश्य विचार करेगी और हमारी भावनाओं का मान करेगी।

मन्त्री
आर्य समाज

****

आज तो—
नशा ही नींद लाता है,
नशा हमको जगाता है।
नशे में [illegible] इन्सान,
[illegible] कहां से कौन आता है।।

डी.ए.वी. हायर सैकण्डरी स्कूल दौलतपुर होशियारपुर

मिडल परीक्षा परिणाम गत-वर्षों की भान्ति इस वर्ष भी शानदार है। जो कि ९३ प्रतिशत है। प्रान्त के अन्य विद्यालयों के परीक्षा परिणामों के मुकाबला में, इस विद्यालय की सराहना साधारण जनता में हो रही है। इस सफलता का श्रेय प्रिंसिपल महोदय श्री जगन्नाथ शास्त्री तथा उनके परिश्रमी अध्यापक वर्ग पर है।

सार्वभौम आर्य परिव्राजक संघ खरखोदा (मेरठ)

'सर्व साधारण को विदित हो कि असीमानन्द सरस्वती नाम का कोई संन्यासी सार्वभौम आर्य परिव्राजक संघ में उपमंत्री अथवा प्रचार मन्त्री नहीं है। अतः इस नाम के व्यक्ति के मांगने पर किसी भी प्रकार की धन राशि संघ के लिए कोई भी आर्यसमाज अथवा आर्य जन न दे।

—स्वामी आत्मानन्द तीर्थ
महामन्त्री

'यतोऽभ्युदय-निःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः'

यह कणादि मुनि के वैशेषिक दर्शन का वचन है। इस का अर्थ यह है कि जिन बातों के धारण करने से इस संसार में कल्याण और सुख की प्राप्ति हो तथा अन्त में मोक्ष होकर आनन्द की प्राप्ति हो उसे धर्म कहते हैं।

आर्यसमाज बिजवाड़ा (ज़िला होशियारपुर)

महात्मा हंसराज जन्म-दिवस सोत्साह पूर्ण मनाया गया

१६ अप्रैल १९६६ को बिजवाड़ा जिला हुशियारपुर में म० हंसराज जन्म दिवस समाज मन्दिर में धूमधाम से सम्पन्न हुआ। १६ को प्रातः बृहद् यज्ञ से कार्य-क्रम प्रारम्भ हुआ। यज्ञ पश्चात् श्री पं. त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री बी.ए. का सारगर्भित प्रवचन हुआ। तत्पश्चात् विशाल जलूस नगर के बड़े-बड़े भागों से होता हुआ समाज मन्दिर में समाप्त हुआ। इस विशाल जलूस में, डी.ए.वी.हा०सै० स्कूल, होशियारपुर सी.बी. हाई स्कूल का बैंड तथा आर्य वीर दल आर्य समाज बिजवाड़ा, व होशियारपुर के नागरिकों में भाग लिया। महात्मा हंसराज जी के जय घोषों से आकाश गूंज उठा। २॥ बजे साधु आश्रम के अध्यक्ष श्री पं. रामानन्द जी अध्यक्षता में कार्यवाई प्रारम्भ हुई। श्री पं. त्रिलोकचन्द्र जी बी. ए., श्री पं. चन्द्रसेन जी, श्री ज्ञानचन्द्र जी, प्रो० वासदेव जी शास्त्री एम.ए. एम. ओ. एल. पं., दीनानाथ जी श्री मस्तानचन्द्र जी बी.ए., श्री संसार चन्द जी सूद, श्री प्रो. इन्द्र-दत्त जी जवियाल, श्री भद्रसैन जी दर्शनाचार्य, श्री वेदप्रकाश जी आर्य वीरदल, श्री श्री चिरंजीवलाल जी आदि व दयानन्द जी एम.ए. रिसर्च स्कालर आदि विद्वानों के महात्मा जी के जीवन पर भाषण हुए। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा ने भजनीक भेजकर पूर्ण सहयोग दिया। उपदेशकों के अतिरिक्त २००) की धनराशि से सहायता की।

आर्य पाठशाला शादीपुर जुलाना

यह पाठशाला श्री चंदगी राम जी मलिक, तथा श्री रामधन जी नांदल के पुरुषार्थ से दिनों दिन उन्नति के शिखर पर जा रही है। इस समय पाठशाला में ११४ छात्र हैं। इस वर्ष एक छात्र छात्रवृत्ति के लिए भेजा गया है उसके सफल होने की पूर्ण आशा है।

इस संस्था की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस में धार्मिक शिक्षा का पूरा-पूरा प्रबन्ध है। पाठशाला आर्य समाज की तन, मन, धन से सेवा कर रही है। इस का मुख्य कारण श्री रामधन जी नांदल हैं, जिनका सदाचारी जीवन इस पाठशाला को उन्नति के मार्ग पर ले जा रहा है।

आर्य स्त्री समाज रेलवे रोड अम्बाला

ने अपनी एक बैठक में पंजाब गवर्नमेंट का ध्यान दूध की बढ़ती कीमतों की ओर दिलाया है जिस से गरीब जनता इस पौष्टिक पदार्थ से वंचित हो रही है तथा दूध से बनने वाली मिठाइयों पर कानून द्वारा निषेध की आज्ञा देने की प्रार्थना की है। सावित्री बडेरा

मंत्राणी स्त्री समाज

गुरुकुल वैदिक आश्रम वेदव्यास P. O. राउरकेला (उड़ीसा)

स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज ने दो मास में ४२ स्थानों पर प्रचार किया। २७ ईसाईयों को शुद्ध करके पुनः वैदिक धर्म में प्रविष्ट किया। शिवरात्री पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

३१-३-६६ को अंग्रेज महिला मिस इन्यता की शुद्धि करके उस का पाणि ग्रहण संस्कार ब्राह्मण कुमार इंजीनीयर के साथ सम्पन्न हुआ। कन्या का नाम लतिका राय रखा गया। दोनों दम्पती राउरकेला में निवास कर रहे हैं।

आर्यसमाज साबुन बाजार लुधियाना

महात्मा हंसराज जन्म दिवस श्री धर्मपाल जी खन्ना एडवोकेट की प्रधानता में १७ अप्रैल को सम्पन्न हुआ। जिस में श्री हरराज जी शर्मा, श्री रणवीर जी शास्त्री, श्री मेघराज भारद्वाज, स्वामी जयराम दास जी, प्रिंसीपल शांता शर्मा और वेद प्रकाश जी एम. ए. के भाषण तथा कवितायें हुईं। महात्मा जी के जीवन पर तथा उनके गुणों पर प्रकाश डाला गया।

मुद्रक व प्रकाशक श्री रूपलाल वाली आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक २०) २ ज्येष्ठ २०२३ रविवार—दयानन्दाब्द १४१— १५ मई १९६६ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

दूतौ यमस्य मानुगा

हे मनुष्य ! सावधान हो जा । इन यम के दोनों दूतों के मानुगा—मत पीछे चल इनके वश में मत हो जाना । यम के दो दूत कौन हैं ? भूख और प्यास, खाना और पीना—रसना का स्वाद । खाना-पीना जीवन के लिए है न कि जीवन खाने पीने के लिए ।

अधिजीवपुरा इहि

सावधान ! अपने जीवपुरा-शरीर की इस पुरी पर, इसके सारे अगों पर, अपना तमाम इन्द्रियो पर अधिइहि-अधिकार रख । इनको अपने वश मे रख । इनका स्वामी बन, दास न बनना । ये तेरे बने रहें, तु इनका न बनना । नहीं तो मुझे ये कही का नहीं रखेंगे ।

प्रत्यक् सेवस्व भेषजम्

हे मानव ! तू अपने जीवन को स्वस्थ रखने के लिए प्रत्येक भेषजम्-उत्तम वस्तु, औषध तथा शुद्ध सात्विक पदार्थ सेवन करता रह । तेरा आहार शुद्ध होना चाहिए । दूषित तथा तामस अन्न मत खा—

पुनानो भुवनोपरि

वह परमेश्वर सारे जगत् में रम रहा है। सबके ऊपर विराज रहा है। वह सबको पवित्र करने वाला है। उसी के आशीर्वाद से सबको पवित्रता मिलती है। उसी की कृपा से सारे ताप संताप मिट जाते हैं। अथर्व वेद से

वेदामृत

राजा के कर्तव्य

अदारसृद् भवतु देव सोमास्मिन् यज्ञे मरुतो मृडता नः ।
मा नो विददभिभा मो अशस्तिर्मा नो विदद् वृजिना द्वेष्या या ॥

अथर्व वेद कांड प्रथम सूक्त २० मन्त्र १

अर्थ—हे देव-सोम-राजन् ! हमारा शत्रु (अदारसृद्) स्त्रियों का सुख न पाने वाला (भवतु) होवे । (अस्मिन्) इस (यज्ञे) युद्ध रूप राष्ट्रिय यज्ञ में (मरुत.) वीर सैनिक (मृडत) सुख शांति देवें (न) हम को । (या) मन (नः) हमें (विदत्) प्राप्त हो (अभिभाः) हम से मुकाबिला करने वाला शत्रु तथा (मा उ) मत जान सके (अशस्ति) नोच विचार का वैरी (मा नः) हमें न (विदत्) आ सके (वृजिना) पापी तथा (द्वेष्या या) जितना भी द्वेषी हो। कोई भी हमें न जान सके व न पा सके ।

भाव—राजा तथा राष्ट्र के शासक का यह कर्तव्य है कि उसकी सारी प्रजा चारों ओर से सुरक्षित हो। किसी प्रकार का भी कहीं से भय, आतंक न हो। संग्राम एव राष्ट्र रक्षा भी एक यज्ञ है। जितने भी वीर सैनिक हैं, वे मरुत् देशवासियों को सब ओर से सुरक्षित रखें। किसी दिशा से भी शत्रु को हमला करने का साहस न हो सके। मुकाबिला करने वाला, नीच कर्म वाला और पापी, द्वेषी शत्रु हम को न जान सके तथा न प्राप्त कर सके। राजा का इतना सुन्दर प्रबन्ध हो कि शत्रु को किसी बात का भी पता ही न लग सके। —सं०

ऋषि दर्शन

अतिष्ठा सभा

सभा वह होती है जो अतिष्ठा हो अर्थात् जिसमे बड़े-बड़े विद्वान् राज सभा के सदस्य ऐसे-ऐसे लोग बने जो कि राजनीति के विद्वान् हों। राज धर्म का जिन्होंने गम्भीरता मे अध्ययन किया हुआ हो । ऐसे विद्वान् ही राज सभा की शोभा होते हैं। ऐसे राजनीति विदों से राज्य सुन्दर रूप से चलता है।

नमस्कृत्य राजकर्मारम्भम्

भगवान् को नमस्कार करके राज कर्म का आरम्भ करना चाहिए। जो भी शासक हो तथा जो भी राजसभा के सभासद हो वे सारे आस्तिक तथा प्रभु विश्वासी हों। प्रभु का नाम लेकर राजसभा का काम किया जाये उसमे मिठास आ जाता है। प्रभु प्रेमी राज्य मे सदा परोपकार का काम करते हैं। शांति चाहते हैं।

परमेश्वरस्य वशम्

जिस राज्य का सारा शासक मण्डल प्रभु के वश मे होता है। अर्थात् परमेश्वर का प्यारा है। उनके जीवन मे तथा कामो मे आस्तिकता है। वहा सच्ची शांति है, सम्पन्नता आ जाती है। उत्पात नही होते। प्रभु प्यार होता है।

भाष्य भूमिका से

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी

सम्पादक—[illegible]

धार्मिक चर्चा—

धर्म अर्थ काम और मोक्ष

श्री बलदेव राज जी गुप्ता एम० ए० (संस्कृत)

स्वामी दयानन्द जी ने सन्ध्या के एक मन्त्र मे लिखा है 'हे ईश्वर दयानिधे ! भवत्कृपयानेन जपोपासनादिधर्मार्थकाममोक्षाणां सद्य:सिद्धिर्भवेन्न.' भावार्थ यह कि हमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष मे सिद्ध मिले। मैं इसी पर अपनी लेखनी उठाता हू।

धर्म अर्थ काम और मोक्ष मे से मोक्ष की इच्छा केवल परलोक के लिए की जाती है। काम की इच्छा इहलोक के सुख के लिए प्राय: सभी प्राणी करते है। धर्म और अर्थ केवल काम की प्राप्ति के लिए साधन मात्र हैं। अत. आओ पहले काम के साधनो पर विचार कर ले।

धर्म की अनेक प्रकार से परिभाषाएं दी गई है। इसीलिए कहा गया है 'धर्मस्य तत्त्व निहितं गुहायाम्' अर्थात् धर्म के तत्त्व को कोई नही जानता। मनु महाराज ने धर्म के धृति-क्षमा आदि दश लक्षण लिखे किन्तु मेरे प्रस्तुत लेख मे धर्म का केवल एक ही अर्थ 'कर्त्तव्य-पालन' होगा। इस सम्बन्ध मे 'महाजनो येन गत स धर्म.' सूक्ति विचारणीय है। इस मे भी धर्म का अर्थ कर्त्तव्य है यानि बड़े लोगो ने जिस पथ का अनुसरण किया है, उसी पथ पर चलना हमारा कर्त्तव्य है। मनुष्य जन्म से ही धर्म के बन्धन मे आ जाता है। जो धर्म (कर्त्तव्य) को निभाता जाता है, उसे अर्थ की प्राप्ति स्वय हो जाती है। गीता मे भी कहा 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' अर्थात् तेरा अधिकार कर्त्तव्य-पालन मे है न कि फल मे। तदुपरान्त एक जगह श्री कृष्ण ने कहा है 'योगक्षेम वहाम्यहम्' अर्थात् यदि धर्म (कर्त्तव्य) पर डटे रहो तो स्वय आपको योग (न मिले हुए अर्थ की प्राप्ति) और क्षेम (मिले अर्थ की सुरक्षा) की प्राप्ति हो जाएगी। समाज के प्रति भी हमारा धर्म (कर्त्तव्य) है। निस्वार्थ उसको निभाते रहने से सारे ही समाज को उस व्यक्ति की चिन्ता रहती है। इस प्रकार धर्म से अर्थ की स्वय प्राप्ति होती है।

अर्थ (धन) प्राप्त होने पर कामेच्छा की पूर्ति के लिए मार्ग खुल जाता है। कामेच्छा की पूर्ति के लिए विवाह कराना आवश्यक है। वैवाहिक जीवन धन के बिना सूना है। शास्त्रो मे केवल सयत कामेच्छा पूर्ति की मर्यादा का विधान है। सभोग केवल सन्तानोत्पत्ति हेतु ही करना चाहिए क्योकि विवाह का उद्देश्य कामेच्छा-पूर्ति ही नही, अपितु विशुद्ध-दाम्पत्य-प्रेम से सदाचारी पुत्र की उत्पत्ति होगी। वही पुत्र मोक्ष का साधन है जैसे श्री यास्क ने पुत्र शब्द की व्युत्पत्ति करते समय लिखा है 'पु नाम नरकात् त्रायते इति पुत्र:) उसे कहते है कि जो पुम् नाम नरक से बचाता है जिससे मोक्ष व स्वर्ग की प्राप्ति होती है। वास्तव मे बात है भी ठीक। पुत्र ही युवक होकर सारे घर का प्रबन्ध अपने ऊपर जब लेता है तो पिता को सासारिक-प्रपञ्च से मोक्ष मिल जाता है जिससे वह ईश्वर-भजन व परोपकार करके परलोक मे सुखी रहे।

इस प्रकार काम (गृहस्थ-जीवन) के द्वारा ही श्रेष्ठ मोक्ष मिल सकता है। धर्म अर्थ काम के साधन हैं।

प्रणाम

श्री. शरर जी एम० ए० आर्य कालिज पानीपत

ओ तुङ्ग हिमालय शृंङ्गा तुल्य उज्ज्वल महान्,
गम्भीर पर पावन चरित्र गंगा समान।
ओ ब्रह्मचर्य साकार दिव्य जीवन अनूप,
पाखण्ड दम्भ के लिए उग्र विद्रोह रूप

ओ दया अहिसा, सत्य न्याय के चमत्कार,
ओ अबला हीन अनाथ दलित के चीत्कार।
ओ पयोदधि से शात, बिजलियो से विह्वल,
ओ प्रखर तेज मे सूर्य, चन्द्रमा से शीतल।

निर्भीक, तपस्वि, परिवार, कौपीन धारि,
आचार्य ऋषिवर दयानन्द ओ ब्रह्मचारि,
ओ जगहित निज जीवन अर्पित करने वाले,
विष पी-पी कर भी पर पीडा हरने वाले,

ओ तेजस्वि, ओ क्रान्तदर्शी ओ सत्याकाम,
युग पुरुष हमारा युग-युग तक तुझ को प्रणाम।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा सीमा-आयोग को कोई ज्ञापन नहीं देगी : श्रीयश

सभा राज्य को अविभज्य मानती है : सभा का भी विभाजन नहीं किया जाएगा

जालन्धर—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधिसभा के प्रधान श्री यश ने आज यहा घोषणा की कि सभा पंजाब को भाषा के आधार पर अविभाज्य मानती है इसलिए वह सरकार द्वारा नियुक्त सीमा निर्धारण आयोग को कोई ज्ञापन नही देगी।

श्री यश ने जो संवाददाताओ से बातचीत कर रहे थे कहा कि आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा बुनियादी तौर पर विभाजन के ही विरुद्ध है। इसलिए इस बारे में कोई राय देने का सवाल ही नही उठता कि विभाजन का आधार १९६१ की जनगणना होना चाहिए या कोई अन्य। उन्होने कहा कि उनके लिए इस बात का कोई अन्तर नही कि कोई तहसील इस राज्य मे जाती है या उस राज्य मे। श्री यश ने यह भी ऐलान किया कि आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्तमान स्वरूप को कायम रखा जाएगा और कि इसे प्रस्तावित पजाब या हरियाणा से विभाजित नही किया जाएगा। यह निश्चय हरियाणा के प्रतिनिधियो की राय के अनुसार सर्वसम्मति से किया गया है। श्री यश ने विचार प्रकट किया कि चडीगढ के महत्व को बनाए रखने के लिए इसे एक सघीय नगर घोषित कर दिया जाए जहा पजाब और हरियाणा दोनो की राजधानियां हो। यदि यह शहर किसी भी एक प्रात को सौंपा गया तो यह उजड़ जाएगा। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि भाखड़ा परियोजना के लिए दामोदर घाटी परियोजना निगम की तरह का एक निगम बना दिया जाए जो व्यापारिक आधार पर काम करे। इस निगम मे सभी सम्बद्ध राज्यो के प्रतिनिधि हो।

आर्यसमाज चंडीगढ़ सैक्टर ८ में महात्मा हंसराज जयंती समारोह

१९-४-६६ को डी. ए. वी. स्कूल के मैदान में ५ बजे साय काल को श्री न्यायधीश श्री टेकचन्द्र जी की अध्यक्षता मे मनाया गया। जिस मे श्री हरिराम जी प्रिन्सीपल डी. ए. वी. हायरसेकैंडरी स्कूल चंडीगढ़ चौ० रूपचन्द जी एडवोकेट, डा० विश्वनाथ जी श्री गोपालदास जी खन्ना, श्री सन्तराम जी सैनी आई. ए. ऐस. आदि विद्वद्वरो ने महात्मा हसराज जी के जीवन पर प्रकाश डाला अत मे न्यायधीश श्री टेकचन्द्र ने श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि महात्मा हंसराज जी ने देश और जाति को जगाया उनका उपकार हम कभी भूल नही सकते।

आशुराम आर्य
पुरोहित समाज

सम्पादकीय—

आर्य जगत

वर्ष ६| रविवार २०२३, १५ मई १९६६ [अंक २०

प्रशंसा के योग्य

आर्यसमाज के महान नेता, भारत के सर्वप्रथम सुप्रीम न्यायालय के चीफ जज, टंकारा ट्रस्ट के प्रधान तथा दयानन्द कालेज कमेटी के मान्य कर्णधार डा० मेहरचन्द जी महाजन तथा उनके सारे साथियों के अथक उत्साह से नई देहली में आर्यसमाज अनारकली रीडिंग रोड का विशाल भवन बना है। बहुत ही सुन्दर और शानदार है। उस का कार्यक्रम भी बडा रोचक होता है। बडे २ ऊंचे पद पर बैठे हुए सज्जन इस समाज के अधिकारी तथा सदस्य हैं। समाज का महोत्सव समारोह भी प्रति वर्ष देखने योग्य होता है। प्रतिसप्ताह भी यहा उच्चकोटि के विद्वानों के प्रवचन होते रहते हैं। अपनी इस समाज के सारे कार्यों पर सब को बड़ा मान है। आर्य प्रादेशिक उपसभा का दिल्ली कार्यालय भी इसी समाज में है।

आर्य जनता यह सुन कर बड़ी प्रसन्न होगी कि अब इस समाज के मान्य नेताओ एव अधिकारियो ने वेद के पवित्र सन्देश का अंगरेजी पढे लिखे ऊंचे शासन के विभागो मे काम करने वाले, लोक सभा के सदस्यो और विदेशों के राजदूतालयो मे काम करने वाले देशी विदेशी लोगों तक आर्य समाज के वैदिक विचारो को पहुचाने के लिए बड़ा ही सुन्दर कार्यक्रम बनाया है। जैसा यह समाज है उसी के अनुरूप ही विशाल योजना बनाई गई है। योजना यह है कि आर्यसज वैदिक धर्म का प्रचार करने के लिए जहां प्रतिसप्ताह हिन्दी प्रवचनो का उत्तम कार्य क्रम चलता है। समय २ पर संस्कृत में भी भाषणों का प्रबन्ध होता है। वहा पर अब महीने मे एक बार विशेष कार्यक्रम बना कर अगरेजी मे भी वैदिक सिद्धान्तो पर बडे २ योग्य विद्वानो व प्रिंसिपलों के द्वारा भाषण कराये जायें। उस मे विशेष रूप से विशिष्ट जनता को निमन्त्रित किया जायगा। अगरेजी वातावरण मे रहने वाले तथा अगरेजी मे ही अपना सारा जीवन कार्य चलाने वाले लोग आर्य समाज के सम्पर्क मे आकर वैदिक सन्देश से लाभ उठा सकेगे। इगलिश के प्रवचनो के द्वारा उन लोगो तक भी समाज का सन्देश पहुचता रहेगा। इस योजना के लिए आर्यसमाज अनारकली नई देहली के सारे अधिकारियो को बहुत बधाई हो। आर्यसमाज ने वेद प्रचार के लिए बडा ही सुन्दर काम किया तथा कर रहा है। नाना प्रकार की भाषाओ मे समाज का साहित्य प्रकाशित करके विविध प्रांतो मे एव विदेश मे भी भारी काम किया है। साहित्य की और भी अधिक आवश्यकता है। यदि प्रत्येक बड़ी-बड़ी समाजें वर्ष में साथ-साथ साहित्य लिखवा कर बाटने का प्रबन्ध कर लिया करे तो प्रचार का बड़ा काम किया जा सकता है। जो लोग अंगरेजी मे पढते, लिखते, बोलते सोचते तथा काम करते है, उन तक आर्यसमाज का सन्देश इगलिश मे पहुचाना होगा। इसका भी पूरा पूरा प्रबन्ध करना पड़ेगा। लोग आर्यसमाज को जानना चाहते हैं, उनके पास इगलिश के माध्यम से अपना सन्देश देना होगा। आर्य-समाज ने हर प्रकार के साहित्य से उपेक्षा यदि नही की तो उदासीनता तो जरूर दिखाई है। गीता प्रेस के समान हमारे पास भी क्या वेद प्रेस है? क्या इतना साहित्य प्रकाशन हमारे पास है? इसके लिए हम कितना उत्सर्ग करते हैं? आर्य-समाजो को इधर विशेष ध्यान देना चाहिए। उत्तम २ साहित्य के लिए समाजो को व्यय करना ही होगा? यही बात प्रचार के बारे मे कही जा सकती है। आर्यसमाज अनारकली रीडिंग रोड नई देहली ने अगरेजी मे अपने भाषणो का जो प्रचार का कार्यक्रम तैयार किया है। इसके लिए समाज के सारे अधिकारी विशेष सम्मान के पात्र है। प्रति मास वैदिक सिद्धातो पर विशेष व्याख्यान इंगलिश भाषा मे होगा। उस मे विशिष्ट लोगो को निमन्त्रण दिया जायगा। ऐसे लोग भी समाज के वातावरण मे आकर बहुत कुछ सीखेंगे। आर्यसमाज के पास किस बात की कमी है? फिलास्फर प्रिंसिपल दीवानचन्द जी कानपुर, डा० गोवर्धन लाल जी दत्त, प्रिंसिपल सूर्यभानु जी वायस चासलर, प्रिंसिपल दीनानाथ जी शर्मा, प्रिंसिपल भगवान् दास जी, प्रिंसिपल भीमसेन जी बहल, आचार्य विश्वबन्धु जी, प्रिंसिपल श्री राम शर्मा प्रिंसिपल देवराज गुप्ता, प्रिंसिपल बहादुरमल जी, प्रि० शाति नारायण जी श्री प० भगवद्दत्त जी, प्रिंसिपल ग्रोवर जी प्रि० चमनलाल जी आदि कितने विद्वान हैं जिन पर समाज को मान है। इसी प्रकार मद्रासी व बगला मे भी प्रवचनो का प्रबन्ध हो रहा है। प्रभु करे कि यह कार्य जल्दी प्रारम्भ होवे।

—त्रिलोकचन्द्र

क्या अंगरेज़ चला गया ?

भारत मे विदेशी शासन समाप्त होकर स्वदेशी सत्ता स्थापित हो गई। वैसे तो सब कुछ अपना ही माना है। किन्तु मन मे यह विचार आता है कि क्या भारत से अगरेज गया है? आज हमें तनिक तो लाज आनी ही चाहिए। कितना खेद होता है यह देखकर कि बीस वर्ष होने को आए, प्रतिवर्ष गणराज दिवस मनाया जाता है। अभी तक हमारी दासता की प्रवृत्ति मे परिवर्तन ही नही हो सका। शरीर के रूप मे तो शायद अगरेज चला गया परन्तु विचारो के रूप मे तो अगरेज का प्रभाव आगे से भी अधिक होता जा रहा है। भारत के नगरो मे देखे दुकानो के नाम पट्टो को देखें—कहा पर अगरेज नही बैठा। आज राष्ट्र हिन्दी कहा है? भारत की राजधानी नई देहली मे और लन्दन या वाशिंगटन नगरों मे क्या भेद है। अभी तक राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति मान ही नही है। नाम-पट्टो पर अगरेज बैठा है। लोकसभा मे उसी की छाया है। सम्मान करते हुए यह बात कहना चाहते है कि भारत के महान् राष्ट्रपति भी अभी तक अपने आरम्भ का भाषण अगरेजी भाषा मे ही देते हैं। जब राष्ट्रपति जी का अपनी राष्ट्र भाषा के प्रति ऐसा भाव है तो अन्यों की बात क्या कही जाए। सच तो है कि मनोदासता की प्रवृत्ति उसी प्रकार से बनी हुई है। कितनी विडम्बना है कि स्कूलो, कालेजो मे यदि छात्र अगरेजी पेपर मे एक-दो अको मे भी रह जाए तो उसे सारी परीक्षा मे अनुत्तीर्ण कर दिया जाता है। क्या उसने इंगलैंड जाना है? आज हर क्षेत्र मे, हर बात मे तथा प्रत्येक विचार मे अगरेज ने अपना प्रभाव जमा रखा है। खाने पीने मे अगरेज, वेशभूषा मे अगरेज, घर के कमरो मे अगरेज, स्कूलो, कालेजो मे अगरेज, दुकानो के पत्र व्यवहार मे अगरेज, शरीर पर अगरेज, विधान सभाओ, लोकसभा मे अगरेज, पुस्तकालयो मे अगरेज, आखो तथा वाणी पर अगरेज सब स्थानो पर अगरेज पूरी तरह से छाया हुआ है। भारत का क्या बनेगा? यह समझ मे नही आता। इतने वर्षों के बाद भी आज तक अंग्रेजी भाषा का व्यामोह कम नही हो पाया। प्रतिदिन बढता ही जा रहा

(शेष पृष्ठ ६ पर)

जनसंघ और आर्यसमाज

(पृष्ठ ७ का शेष)

आर्यसमाज मे कांग्रेसी भी है, प्रजा-सोशलिस्ट भी और जनसघी भी। पर आर्य समाज इन से अलग भी कुछ है। आर्य समाज ने स्वतन्त्रता के आदोलन मे कांग्रेस का पूरा साथ दिया। लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द तथा अन्य लाखो आर्य समाजी जेल गए और हर तरह का नुकसान भी उठाया। पर जब कांग्रेस को मुसलमानो का पक्षपात कर देश का नाश करते देखा, वही ला० लाजपतराय और स्वा० श्रद्धानन्द कांग्रेस के विरोध मे खड़े हो गए। जब आर्य समाज गाधी जी और जवाहर लाल के आगे नही झुका तो श्री अटल बिहारी वाजपेयी, श्री बलराज मधोक तथा श्री यज्ञदत्त के आगे क्या झुकेगा। आर्य समाज को अपने सिद्धात प्रिय है, उनके लिए किसी और के विचार का हमारे सामने कोई मूल्य नही।

इसका यह अभिप्राय नही कि हमारे मन मे श्री यज्ञदत्त तथा अन्य नेताओ का मान नही। हम उन सब का सम्मान करते हैं। विशेष कर श्री यज्ञदत्त जी का तो पजाब के सब हिन्दू हृदय से मान करते है। पर आर्यसमाज का नेतृत्व और सिद्धात स्वतन्त्र ही रहने चाहिए, पराश्रित नही।

एक सबसे अलग और विशेष बात यह है कि आर्य समाज वैदिक धर्म के प्रचार के लिए स्थापित एक सस्था है। वैदिक धर्म समारके इस्लाम, क्रिश्चियनिटी तथा बुद्ध धर्म आदि धर्मों मे मूर्धन्य एक धर्म है। राजनीतिक पार्टिया कांग्रेस, जनसघ आदि अस्थाई दल है जिन्होने कुछ देर बाद नष्ट होना है। पर वैदिक धर्म तो सृष्टि प्रारम्भ से अब तक चला आ रहा है और यावच्चन्द्र दिवाकरौ रहेगा। यह एक स्थायी वस्तु है।

धर्म और राजनीतिक पार्टियो की कोई तुलना नही। राजनीतिक पार्टिया सदा धर्मों के प्रभाव से रही है और रहेगी।

इस प्रकार यदि वस्तु स्थिति स्पष्ट समझ ली जाय तो आर्यसमाज की स्थिति और महत्व सदेह रहित रूप मे सामने आ जाएगे।

आर्य समाज और वैदिक साम्राज्य की स्थापना

श्री धर्मवीर जी आर्य झंडाधारी व्याख्यान भूषण अध्यक्ष धर्मवीर ग्रन्थमाला प्रकाशन [redacted] रायरुहेला, नई दिल्ली-५

आर्य समाज के सस्थापक विश्व वंदनीय महर्षि दयानन्द जी ने आर्याभिविनय नामक अपनी प्रार्थना पुस्तक मे एक नही सैकडो बार चक्रवर्ती वैदिक साम्राज्य के लिए वेद मत्रो के आधार पर प्रार्थना की है। क्रान्ति के अग्रदूत महर्षि दयानन्द जी महाराज चक्रवर्ती वैदिक साम्राज्य स्थापित करना चाहते थे। उन्होने विश्व के मानव समाज के पथ प्रदर्शन की अलौकिक भव्यभावना से ही आर्य समाज को स्थापित किया था। आज ईसाईयत और ईस्लाम की भयकर आधी से यदि विश्व के मानव समाज को आर्य समाज बनाना चाहता हैं।

यदि धर्म शिक्षा का और वेदो का प्रचार विश्व व्यापी रूप से आर्य समाज करता चाहता है। आर्य समाज यदि वैदिक युग का निर्माण करना चाहता है। आर्यसमाज यदि वैदिक कर्मकाडो का विश्व व्यापी प्रबल प्रचार करना चाहता है। यदि आर्य समाज यह चाहता है कि विश्व की समस्त राष्ट्रभाषाओ मे वेदो का अनुवाद और प्रकाशन तथा प्रचार का कार्य द्रुत गति से किया जाये। यदि आर्यसमाज के नेतागण हजारो और लाखो की सख्या मे अपने उपदेशको को वेद विद्या, अध्यात्म विद्या, ब्रह्मविद्या, योग विद्या, मोक्ष विद्या आदि के महा विद्वान ज्ञाता बना कर विश्व के सभी नगरो मे मानवता की रक्षा के लिये भेजना चाहता है। यदि आर्य समाज विश्व के समस्त राष्ट्रो मे वेद विश्व विद्यालयो को स्थापित कर के वेदो का पढना पढाना मानव मात्र के लिये अनिवार्य रूप से चाहता है। यदि आर्यसमाज सूर्य और चन्द्र के समान विश्व गगन मे प्रबल प्रकाश के समान चमकना चाहता है। यदि आर्यसमाज विश्व में रामराज्य स्थापित करना चाहता है। यदि आर्यसमाज वैदिक राज्य विधान का निर्माण करना चाहता है। यदि आर्यसमाज विश्व शाति की दिव्य दिशा मे अग्रीय बनकर वैदिक जीवन की दिव्य ज्योति का प्रकाश पुञ्ज बनकर अलौकिक जीवन का सौदर्य जगमगाना चाहता है। यदि आर्यसमाज अवैदिक मतो का विस्मार चाहता है। यदि आर्यसमाज विश्व के इतिहास मे नया जीवन, नया अरमान, नया मोड लाना चाहता है। यदि आर्यसमाज वसुधा को वेद सुधा का दान देना चाहता है तो आर्यसमाज को आपसी दलबन्दियो के दलदल से ऊपर उठकर रामराज्य स्थापित करने के लिए राजनीति के अखाडे मे कूदकर राज्य सत्ता अपने हाथ मे लेनी पडेगी। राज्य शासन का सूत्र सचालन जब तक आर्यसमाज नही करेगा तब तक विश्व के मानव समाज का सुधार लाख प्रयत्न और प्रचार करने पर भी होना सर्वथा असभव है।

ऐ विश्व के आर्य (हिन्दू) भाईयो और बहिनो आज अपने अतीत गौरव को देखो। हम चक्रवर्ती साम्राज्य के सूत्र सचालक रह चुके है। हम उन चक्रवर्ति के स्थापित करने वाले पिताओ के पुत्र और पुत्रिया है आप अपने अधोपतन को देखकर तनिक विचार करो कि हमे क्या बनना है आज मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम का जन्म-दिन रामनौमी है। आज रामराज्य स्थापित करने का, वैदिक स्वराज्य, वैदिक साम्राज्य, स्थापित करने का महाव्रत धारण करो।

आर्य समाज के जन्मदाता विश्व वदनीय महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के छठा समुल्लास मे वैदिक राज्य के सूत्र सचालन पर लिखा है। आज इस वैदिक राज्य विधान के सदेश को आर्य समाज भूल कर पगु बन गया है। आर्य समाज विश्व काया पलट देने की अलौकिक क्षमता है।

आर्य समाज के पास एक से एक विचारक हैं। आर्य समाज मे एक से एक साहित्यकार लेखक है। आर्य समाज मे एक से एक ओजस्वी वक्ता हैं। आर्य समाज ने जो कार्य किया है वह स्वर्णाक्षरो मे अकित करने योग्य हैं।

ऐ आर्य वीरो आज आज, भारत भूमि धर्म वीरो से विहीन हो गई है। आज देश धर्म के दिवानो को धर्मवीरो को भारत माता इस लिये आवाहन कर रही है कि आज भारतीय सस्कृति और सभ्यता की रक्षा नही हो रही है।

आज कांग्रेस साम्राज्य के कर्णधारो ने धर्म को तिलाजलि देकर धर्म प्रधान भारत भूमि को इस महर्षियो की जन्मदात्रि भारत वसुन्धरा को धर्म विहीन बना दिया है। धर्म और वैदिक सस्कृति से शून्य वेदो की शिक्षाओ से शून्य राज्य और स्वर्ग किस काम का है।

आज मानवता रो रही है। आज नारी जाति का सतीत्व अश्लील फिल्मों के कारण लूटा जा रहा है। आज मास और अन्डे का घर-घर मे प्रबल प्रचार हो रहा है। आज भी बीडी, तम्बाकू, शराब, और चरस, भग, गाजा आदि दुर्व्यसनो पर देश का अरबो रुपया बरबाद हो रहा है। आज गुरुकुल शिक्षा प्रणाली समाप्त होती जा रही है। आज सह-शिक्षा के कारण नित्य अपवित्र प्रेम के कारण नित्य देश की ललनायें भारी सख्या मे गर्भपात करातीं हैं। आज भारतीय वेशभूषा को धारण करने मे हमारे नौजवान हिचकिचाते हैं। आज स्कूलो और कालिजो मे अग्रेज काले अंग्रेज तैयार किये जाते हैं। आज शिक्षा सूत्र का लोप हो गया है। गुरुजनो का माता पिताओ को विदेशी सभ्यता के कारण कोई आदर सम्मान नही दिया जाता है। आज सर्वत्र संयम सदाचार ब्रह्मचर्य का अभाव हो गया है। आज फिल्मी सितारे और तारिकाये बनने की प्रबल धुन हमारे देश के युवको और युवतियों की हो गई है। (क्रमशः)

'सनार्दम जून उन्नी सौ पैंसठ के 'आर्य जगत' नामक साप्ताहिक पत्रिका मे भक्तराम जी शर्मा अफ्रीका वाले) जालन्धर' का तब और अब के आर्य समाजी' नामक लेख पढा। इसी के अनुसार मैं अपने विचार प्रस्तुत कर रहा हू. .लेखक'।

भूत और वर्तमान के आर्य समाजी नेता

ले०—श्री बलदेवसिंह जी शास्त्री, विद्या प्रभाकर

आर्यसमाज ससार को प्रशस्त मार्ग पर ले जाने वाली. एक अक्षुण्ण गति से चलने वाली सस्था है। प्रारम्भ मे देव दयानन्द ने इस का सृजन इसी लक्ष्य से किया था कि मनुष्यमात्र का कल्याण करने वाली यह परोपकारिणी सस्था ससार मे जेगीयमान होकर ससार पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर पायेगी। किन्तु हो रहा है इसके प्रतिकूल, ऐसा क्यो? एक ही विचार ध्यान मे आता है कि आर्य समाज के नायक शिथिल हो गये है। समाज वही पल्लवित तथा सर्वधित होता है जिस के अग्रसर सम्पुष्ट तथा सद्भावनामय हो। आप कहेगे कि जिस आर्य समाज के सिद्धान्त प्रत्येक समाजिक सस्था को स्वीकृत हो। जिसके प्रवर्तक त्याग मूर्ति तथा दयानिधान हो फिर वह सस्था अवनति की ओर जाये आश्चर्य की बात है। किन्तु बन्धुओ! दुःख के साथ लिखता हू कि इस विशुद्ध सस्था मे आज उदरम्भरी तथा पेट पूर्ति करने वाले, आडम्बर करने वाले लोगा की कमी नही है।

किसी सस्था के कर्णधार उसके मूल-तत्व होते है। उन्ही के आधार पर सिद्धात कायम रह सकते है। जब मूल विनाश की ओर जायेगा तो वृक्ष स्वय ही नष्ट हो जायेगा क्योकि—

'छिन्ने मूले फल नैव पुष्पम्' वस्तुतः सामाजिक विचारो को क्रियान्वित रूप देने वाले नेता लोग होते हैं।

जब हम इन अर्वाचीन तथा उन प्राचीन नेताओ को एक कसौटी पर रखकर परखते हैं तो हमें आकाश और पाताल जितना अन्तर मालूम होता है कितने ही उपयुक्त उदाहरण देकर पण्डित भक्तराम जी ने प्राचीन आर्यसमाजी नेताओं का त्याग दिखाया है। उनकी कार्य शक्ति का परिचय दिया है। उनके धैर्य की गिनती की है। उनके व्यवहार तथा आचरण का चित्र खेंचा है। किन्तु मै उन आदर्श पुरुषों का गुणगान करना आवश्यक न समझ कर इन वर्तमान नेता मानी लोगो का व्यवहार भी आपको दिखाना आवश्यक समझता हूं। कोई व्यक्ति स्वय नेता कहलाने से नेता नही होता। जब तक उसमे नेता के गुण विद्यमान न हो उसे नेता कहने वाले व्यक्ति समुदाय को मूर्खो की श्रेणी मे ही रखना पडेगा।

मेरा अनेक वर्तमान आर्यसमाजी नेताओ से विशिष्ट सम्पर्क रहा है। उनके प्रवचन भी सुने है। किन्तु कहना कुछ व्यवहार कुछ यह उनका स्वाभाविक गुण है।

दूसरो की निन्दा करना दूसरो पर कीचड फैंकना ही उनका कार्य रह गया है। आर्य समाज की ईंट से ईंट बजाना, आर्य समाज को कलंकित करना ही उनका ध्येय रह गया है।

मेरे ऐसे आर्य नेताओ से अनुरोध है कि वे आर्य समाज से सन्यास लेकर कमण्डलु हाथ मे उठा आर्य समाज को मिट्टी मे मिलने से बचाये। आर्य समाज को उनकी इन स्वार्थपूर्ण सेवाओ की आवश्यकता नही। क्या प्रतिनिधि क्या प्रादेशिक और क्या सार्वदेशिक सब ओर स्वार्थ लिप्सा, पदलिप्सा बढी जा रही है। इस 'अह पूर्णम् २ नीति ने समाज को दुवृत तथा दुर्भावनामय बना कर रख दिया।

केवल मात्र परोपकार के कार्य मे अपनी शक्ति की आहुति देना इन से कोसों दूर हो गया है।

बन्धुओ! कोई व्यक्ति आपे से निर्गुण हो और वह कहने लगे कि मेरा दादा अमुक गुण सम्पन्न था। हमारा पुरखा इस प्रकार का था,तो यह न्याय सगत तथ्य नहीं कहा जा सकता क्या यही स्थिति आज के नेताओ की। दयानन्द के नाम पर, हसराज के नाम पर श्रद्धानन्द के नाम पर ही ये लोग खाने का आडम्बर करने लगे है। यदि यही स्थिति रही तो इन्हे भूखे पेट ही इस ससार से सक्रमण करना पडेगा। इन नेताओ का ढोंग अब ज्यादा दिन चलने का नही। वह दिन दूर नही जबकि इन को मुह की खानी पडेगी।

सस्कृत मे आता है कि—'कुक्कुर कुक्कुर बुक्कायते' इसी के अनुसार आज के नेता स्पर्धा और ईर्ष्या की अग्नि मे अपनी आहुतिया देने को तत्पर रहते है। क्रोध की अग्नि दधकती ही रहती है। उन्हे गीता का निम्न श्लोक ध्यान मे करना चाहिये कि—

"क्रोधाद् भवति समोहः
समोहात् स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रशाद् बुद्धिनाशो
बुद्धिनाशात् प्रणश्यति॥"

वस्तुत. क्रोधाग्नि मनुष्य को इस लोक से समाप्त कर देती है। आज के नेताओ को उसी स्थिति मे नेता कहा जायेगा जबकि मनु द्वारा प्रतिपादित निम्न श्लोक का आचरण करेंगे।

"त्यजेदेक कुलस्यार्थे ग्राम-
स्यार्थे कुल त्यजेत्।
ग्राम जनपदस्यार्थे
आत्मार्थे पृथिवी त्यजेत्॥"

वस्तुत त्यागमय जीवन व्यतीत करने वाले व्यक्ति को समार समादृत करता है। इसके अनेको उदाहरण आर्यसमाज के भूतकालीन इतिहास मे है। गुरुकुल भैसवाल जि० रोहतक के सस्थापक श्री पूज्य पितृदेव भक्त फूलसिह ने पटवार मे ली रिश्वत वापिस करके ससार के सामने त्याग का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। किन्तु आज के स्वार्थी नेता प्रतिनिधि द्वारा दी गई वस्तु को भी हथिया लेते है। उसपर अपना आधिपत्य कर लेते है। हिन्दी सत्याग्रह के समय प्राप्त वस्तुओ को लोगो ने अपना बना लिया, अधिकार कर लिया। लोगो की आखो मे धूल झोककर कोई नेता बनने की चेष्टा करता है तो यह उसके लिए असम्भव नही तो कठिन अवश्य है।

आज के कितने ही नेता अपनी जायदाद एव धन सम्पत्ति बनाए बैठे है। मै उनसे पूछता हू कि क्या दयानन्द को कलक लगाना उन्होने सोचा है? या उन्होने कसम खाई है कि हम आर्यसमाज को विशुद्धता मे दूर करके छोडेगे? आज तो सरकार भी मन्त्रि व उच्च पद देती है। उसमे उसकी जायदाद का लेखन करवाती है तो फिर इन नेताओ को क्या सूझी है। जो ये इस लक्ष्मी के चयन की ओर दौड जा रहे है।

अन्त मे मेरी इनसे प्रार्थना है कि आर्य नेता हमको माफ करे क्योकि भावी समय मे ऐसा नही कि समार हम आर्यो के सिद्धान्तो को श्रवण की भी आवश्यकता न समझ समझ बैठे।

मह॰ योग

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार की धार्मिक सेवायें

यह विद्यालय हिसार मे सुचारू रूप मे चल रहा है। इसके अनेक सुयोग्य स्नातक भारत के भिन्न-भिन्न प्रान्तो मे धर्म का प्रचार कार्य कर रहे है। उसी तरह श्री प० वेदव्रत शर्मा सिद्धान्त भूषण स्नातक विद्यालय आसाम प्रान्त मे वैदिक धर्म के प्रचारार्थ जा रहे है। उनके सम्मान तथा अभिनन्दन के लिये एक विराट सार्वजनिक सभा माननीय डा० गुलाटी के सभापतित्व मे १-५-६६ को दिन के दस बजे आर्य-समाज हिसार मे हुई। आर्यसमाज हिसार की विविध सस्थाओ की ओर से और बाहर की समाजो की ओर से श्री प० वेदव्रत शर्म्मा जी का फूलमालाओ तथा भाषणो द्वारा भव्य स्वागत तथा अभिनन्दन किया गया और उनको १०१) रु० भेट किया गया। इस प्रकार स्वागत समारोह सफलतापूर्वक समाप्त हुआ।

★ इन ससार की बनी आखो से परमेश्वर को नही देख सकते पर आत्मा मे उनका अनुभव करके ज्ञान प्राप्त कर सकते है।

क्या अंगरेज़ चला गया ?

(पृष्ठ ३ का शेष)

है। गले मे आज भी टाई बाध कर गौरव अनुभव किया जाता है। समझ नही आता कि देश का क्या बनेगा ? शरीर का बन्धन उतना हानिकर नही होता जितना कि मनोबन्धन बुरा होता है। अग्रेज के मानस पुत्र आज अपना परिवार बढाते जाते है। ऐसा प्रतीत होता है कि अंग्रेज़ ने अपना प्रभाव डाल रखा है। मैकाले का स्वप्न साकार होता जाता है। भारतीय अपने पत्र व्यवहार मे, निमन्त्रण पत्रो में, भी अंग्रेजी का प्रयोग करना गौरव समझते हैं। अभी तक अपनी राष्ट्र-भाषा का मान मन मे नही है। यह बात देशहित के अनुकूल नही है। जिस देश की जनता अपनी भाषा पर मान नही करती। विदेशी भाषा मे बोलती है, लिखती सोचती है—वह देश गूगा हो जाता है। हम सब से यही कहना चाहते है कि मानसिक दासता की इस प्रवृत्ति के प्रवाह को रोकने का भरसक प्रयत्न करो। देश के जीवन मे इस प्रभाव को निकालो। तभी राष्ट्र का कल्याण हो सकेगा—

सपादक

समाजों की सेवा में

यह बात सारे समाजो व सस्थाओ से बलपूर्वक कहना चाहते हैं कि वे अपने - अपने समारोहो मे, उत्सवो मे अन्य कार्यो के साथ-साथ आर्य समाज का साहित्य जरूर जनता मे बाटें। समाजो का जहा और इतना व्यय हो जाता है वहा पर साहित्य के लिए भी अवश्य व्यय किया जाए। जनता के हाथो मे वैदिक धर्म का साहित्य पहुचाया जाये। सभा की ओर से हिन्दी व इगलिश मे सुन्दर साहित्य प्रकाशित किया गया है। अभी-अभी स्वर्गीय महात्मा हसराज जी लिखित सन्ध्या पर व्याख्यान नाम की पुस्तक प्रकाशित की है। सन्ध्या पर महात्मा जी की बडी सुन्दर विचार धारा है। समाजे व सस्थाए अपने साहित्य वितरण मे इस पुस्तक को अधिक सख्या मे सभा से मगवा कर उस का प्रसार करें। — स०

महता रामचन्द्र जी शास्त्री भूतपूर्व महोपदेशक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

श्री भक्तराम जी शर्मा (अफ्रीका वाले) जालन्धर

परम पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज के 'आर्यजगत' २४-४ मे प्रकाशित 'महता रामचन्द्र शास्त्री से भेंट' शीर्षक लेख द्वारा यह जान कर खेद और चिंता हुई कि वह १४-९-४७ से रोगी चले आ रहे हैं। इस से भी अधिक दुःख यह हुआ कि आर्यसमाज ने उनके प्रति इस कष्ट मे अपना अल्प स्वल्प कर्त्तव्य भी (मौखिक अथवा लिखित सहानुभूति द्वारा) पूरा नही किया। महता जी को केवल मात्र समवेदना चाहिए। कितने शोक की बात है कि आर्यसमाजी इस मे भी पूरे न उतरे। फिर शिकायत होती है कि आर्य समाज में उपदेशक नही आ रहे। क्या वे उस समाज में आयें जहा अपूज्यो की पूजा और पूज्यो का तिरस्कार होता है ? जब महता जी जैसे उच्च कोटि के वेदोपदेशक के प्रति ऐसी उदासीनता है तो साधारण प्रचारक को कौन पूछेगा ? यदि हम "वेद प्रचार" चाहते हैं तो हमे प्रचारको का मान करना सीखना चाहिए। आर्य समाज (अनारकली) नई दिल्ली के उस समय के मन्त्री को महता जी से क्षमा याचना करनी चाहिए, क्योंकि वस उन के सुपुत्र श्री नरेन्द्र के देहान्त पर शोक पत्र भी लिखने मे असमर्थ रहे और उन्हे इस असावधानी के लिए प्रायश्चित करना चाहिए।

अफ्रीका मे जो आर्य सन्यासी और आर्योपदेशक पहुचे वे निम्नलिखित है—

(१) प० पूर्णानन्द जी महोपदेशक (आर्य प्रतिनिधि सभा)
(२) पं०मायुर शर्मा भजनोपदेशक (आर्य प्रतिनिधि सभा)
(३) पं० ईश्वर दत्त जी स्नातक गुरुकुल कागडी (हरिद्वार)
(४) ठाकुर प्रवीण सिह स्वतन्त्र भजनोपदेशक
(5) पं. महाराणी शङ्कर
(6) सत्यव्रत जी स्नातक
(7) प्रोफेसर रामदेव
(8) पं. चमूपति एम ए०
(9) बुद्धदेव जी स्नातक
(10) महात्मा कर्मचन्द कादिया
(11) प. बालकृष्णजी बम्बई
(12) प. सत्यपाल जी स्नातक
(13) प. ऋषिराम बी०ए०
(14) प. बुद्धदेव मीरपुरी
(15) पं. भक्तराम सहगल
(16) महता जैमिनि(स्वा.ज्ञानचद)
(17) प. सत्यदेव स्नातक
(18) महता रामचन्द्र शास्त्री★
(19) ठाकुर जोरावरसिह भजनोपदेशक बरसाना (मथुरा)
(20) श्री चान्द करण शारदा अजमेर
(21) आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री
(22) पं. हरिशङ्कर विद्यार्थी (गुरुकुल शुक्ल तीर्थ)
(23) प. नागरदासजी गुरुकुल शुक्लतीर्थ
(24) प. महेद्र नाथ जी
(25) स्वा. भवानी दयाल जी
(26) पं. केशवदेव ज्ञानी
(27) म० बद्रीनाथ

श्रीमती शन्नोदेवी जी भूतपूर्व आचार्य कन्या महाविद्यालय जालधर प. आनन्द प्रिय बडोदा (वे दोनो धन एकत्रित करने के लिए शिष्टमण्डल लेकर गए थे।)

अ य संन्यासी

(1) स्वा. स्वतन्त्रतानन्द जी
(2) स्वा. नारायणानन्द जी (महू छावनी)
(3) स्वा. ध्रुवानन्द जी
(4) महात्मा आनन्द स्वामी जी
(5) महात्मा आनन्द भिक्षु जी
(6) आचार्य विद्यानन्द विदेह

★ उपर्युक्त प्रचारकों में महता जी उन प्रभावशाली वक्ताओं में से एक है जिन्होंने वहा धूम मचा दी थी, वेद प्रचार की।

माननीय महता रामचन्द्र जी शास्त्री अफ्रीका प्रचारार्थ पहुचे तो सन् १९३५ मे आर्य समाज दारेसलाम (ईस्ट अफ्रीका) के वार्षिकोत्सव पर आर्य प्रतिनिधि सभा ईस्ट अफ्रीका, नौरोबी की सेवा मे प्रार्थना कर के महता जी को बुला भेजा। वह और प० सत्यदेव जी स्नातक पधारे। मैंने यहां भी आदरणीय महता जी के व्याख्यान सुने हुए थे परन्तु वहा उत्सव से पहिले व्याख्यान माला के अन्तर्गत सुने भाषणो द्वारा उन की विद्वत्ता की अत्यधिक छाप पड़ी। तत्कालीन मन्त्री महोदय ने उन के प्रत्येक भाषण को लिखाने की इच्छा प्रकट की ताकि वह गुजराती भाषा में अनुवाद करके वहाँ के गुजराती पत्रों में छपवा दें।

(क्रमशः)

आर्य समाज पटेलनगर

आर्य समाज पटेलनगर नई देहली का वार्षिक महोत्सव समारोह धूमधाम से सम्पन्न हो गया। मन्दिर बडा ही सुन्दर है। कार्य भी उत्साह से हो रहा है। स्त्री समाज भी उत्साह से भरपूर है। एटा वाले स्वा० ब्रह्मानन्द जी वेद का यज्ञ कराते रहे। सभा की ओर से पण्डित खुशी राम जी शर्मा, प० त्रिलोक चन्द्र शास्त्री, प० राज पाल मदन जी की प्रसिद्ध चिमटा-मण्डली कथा व उत्सव पर आये। स्वामी रामेश्वरानन्द जी, आर्य भिक्षु जी पधारे। सार्वदेशिक सभा के मान्य प्रधान श्री प्रताप भाई जी की प्रधानता मे आर्य सम्मेलन हुआ जिस मे प० रामगोपाल जी शालवाले, डा० महावीर सिह जी ग्वालियर, पं० विद्याधर जी कानपुर, प० बालरेडी हैदराबाद, श्री कृष्ण चन्द जी प्रधान आर्य प्रादेशिक उपसभा देहली बोले। ऋषि भण्डारा तो विशाल था। बाल सभा व स्त्री समाज का महोत्सव भी बडे ही समारोह से किया गया। अधिकारी बडे उत्साही हैं।

जनसंघ और आर्यसमाज

श्री सत्यदेव जी विद्यालंकार एम० ए० प्रो० कन्या
महाविद्यालय, जालन्धर

जन सघ भारत की, राजनीति के क्षेत्र मे एक उन्नति करती हुई पार्टी है। अखिल भारतीय स्तर की राजनीतिक पार्टियो मे उसका स्थान कांग्रेस और कम्युनिस्ट पार्टी के बाद है। विशेषको यह है कि यह स्थान उसने पिछले १७-१८ वर्षो मे प्राप्त किया है। उसके पास राष्ट्रीय स्वय सेवक संघ के अथक और नौजवान कार्यकर्त्ताओ का बडा भारी दल है और यही उसकी शक्ति का ही मुख्य आधार है।

जन सघ प्रारम्भ से भारतीय सस्कृति और सभ्यता का आधार मान कर अपना कार्य चला रहा है, इसलिए स्वभावत: आर्य संस्थाए और समाजें उसे आदर और सहानुभूति की दृष्टि से देखती रही है और जहा तक बन सका सहयोग भी देती रही है। मुझे अच्छी तरह स्मरण है कि प्रारम्भ मे राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ में प्रशिक्षण लेने के लिए पजाब की आर्य समाजो के अनेक युवक कार्यकर्त्ता नागपुर गए थे। उस समय हिन्दू मात्र की सहानुभूति इस सस्था से थी, विशेष कर हिन्दू विचार के लोगो की।

इस वर्ष जनसघ का वार्षिक अखिल भारतीय अधिवेशन जालन्धर मे हुआ। जलूस और अधिवेशन दोनो ही उपस्थिति और उत्साह की दृष्टि से शानदार रहे। पर इस वर्ष एक नई बात भी थी। वह थी पजाबी सूबा की माग के कारण पंजाब का विभाजन। जनसघ की कार्यवाही पर इस नई महत्त्वपूर्ण घटना की पूरी छाप पडी। इस घटना ने तथा इससे मिलती-जुलती दूसरी घटनाओ ने जनसघ के दृष्टिकोण मे परिवर्तन कर दिया। जनसघ के नेता अब आधुनिक राष्ट्रवादी (Secutar Nationalistie) दृष्टिकोण अपनाना चाहते हैं। वे अब हिन्दु रूप मे न रहकर भारतीय रूप धारण करना चाहते है। पर इसके लिए उन्हे दो बाते करनी पड़ेगी। एक उनके नेताओ मे मुसलमान ईसाई तथा सिख सज्जनो के नाम भी आने चाहिए और पर्याप्त मात्रा मे आने चाहिएं। इसके उन्हे राष्ट्रीय स्वयं सेवक सघ का अखाड़ा छोड़ना पडेगा। राष्ट्रीय स्वय सेवक संघ को कोई भी व्यक्ति आधुनिक अर्थ (Modern Sense) मे राष्ट्रवादी सस्था नही कह सकता।

हमारा विचार है कि जनसंघ यह दोनों बाते ही नही कर सकता।

इस नए दृष्टिकोण को अपनाकर जनसघ के नेताओ ने तीन ऐसी बाते की जिससे आर्यसमाज के हितो की हानि होती है।

पहली बात यह कि पजाब के हिन्दुओ को हिन्दी-देवनागरी त्याग कर पजाबी-गुरुमुखी अपनी भाषा माननी चाहिए।

दूसरी बात यह कि जनसअ के वर्तमान प्रधान श्री बलराज मधोक ने आर्यसमाज और अकाली पार्टी को एक स्तर पर लाकर इन दोनो को पजाब की आजकल की गडबड का दोषी ठहराया।

तीसरे श्री यज्ञदत्त जी ने अपने भाषण मे नाम न लेकर श्री वीरेन्द्र, श्री जगत नारायण तथा श्री यश को भला-बुरा कहा।

आर्यसमाज की ओर से इन तीनो ही बातो का निराकरण आवश्यक है। इसमे कोई सन्देह नही कि पजाब के हिन्दु विशेषकर आर्यसमाजी हिन्दी-देवनानागरी से प्यार करते है। जनसघ क्या किसी भी पार्टी के कहने से वे इस प्यार को छोड़ नही सकते। पजाब के हिन्दू हिन्दी-देवनागरी से आज सिक्खो या पजाबी के द्वेष के कारण प्यार नही करने लगे। तब से करते है जब कि अकाली पार्टी और जनसघ का जन्म भी नही हुआ था। ऋषि दयानन्द ने जब सन् १८८२ मे अपने सत्यार्थ प्रकाश मे यह लिख दिया था कि जब बालक या बालिका पाच वर्ष के हों तो उन्हे देवनागरी अक्षरो का अभ्यास कराया जाय तो पंजाबी-गुरुमुखी के नाम लेवा अभी पैदा भी न हुए थे। जब महात्मा हसराज और स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने स्कूल-कालिज और गुरुकुलो से हिन्दी-देवनागरी को शिक्षा का माध्यम बनाया था तब तो पजाब मे उर्दू का बोलबाला था, पंजाबी का नही।

आर्यसमाजी को चाहे वह किसी प्रान्त का भी क्यो न हो हिन्दी-देवनागरी वैसी ही प्यारी है, जैसे कनाडा और अमरीका मे पैदा हुए सिक्खो को भी पजाबी-गुरुमुखी प्यारी लगती है, जैसे भारत मे पैदा हुए मुसलमानो को भी अरबी-फारमी प्यारी लगती है। हिन्दुओं को हिन्दी प्यारी इसलिए नही कि उन्हे पजाबी से द्वेष है बल्कि इसलिए कि उनका सारा साहित्य हिन्दी-सस्कृत मे है। वे इसे छोड नही सकते।

रही जनसघ की बात। वह एक राजनीतिक पार्टी है। राजनीति मे कलाबाज़िया खाना स्वाभाविक है। सिक्खो के वोटो की आवश्यकता हो तो पजाबी-गुरुमुखी ठीक है और हिन्दुओ से वोटो की आवश्यकता हो तो हिन्दी-देवनागरी ठीक है।

हिन्दी आन्दोलन मे जनसघ और आर्यसमाज दोनो साथ थे। हजारो लोग जेल गए, बीसियो अगभग करा बैठे। पोलीस ने भी जी भर कर पीटा और जेल मे वार्डरों से भी लाठिया चलवाई गई। सरदार प्रताप सिह कैरो ने छल-बल से इस आदोलन को कुचल दिया। यदि बलिदान मे आर्यसमाज और जन संघ दोनो का भाग था तो असफलता मे भी दोनो का भाग था। एक बच नही सकता।

इसी तरह कांग्रेस के श्री नेहरू जी से लेकर कांग्रेस दफ्तर साफ करने वाले जमादार तक सब ने—अर्थात कांग्रेस के छोटे- बडे सब ने एक स्वर मे कहा कि पजाबी सूबा नही बन सकता। लोगो को विश्वास हो गया कि पजाबी सूबा नही बनेगा। जब संत फतह सिह ने जल मरने की धमकी देकर पंजाबी सूबा की माग की तो सेना के सिख सेनापतियो से लेकर कांग्रेस - कम्युनिस्ट पार्टी सोशलिस्ट पार्टी तथा अकाली दल के सब सिखो ने उस माग का खुले या दबे शब्दो मे समर्थन किया। कांग्रेस के नेता सिखो की इस माग के आगे झुक गए। पिछले १८ वर्ष के वायदे भूल गए और पजाबी सूबे को बनाना मान लिया। पजाब के हिन्दू लोगो पर उसकी भयकर प्रतिक्रिया स्वाभाविक थी। श्री यज्ञदत्त जी तथा श्री सत्यानन्द जी ने आमरण अनशन का व्रत रखा। अभिप्राय यह कि इस आदोलन मे भी जनसंघ और आर्यसमाज साथ-साथ थे।

इसमे सन्देह नही कि इस आदोलन का परिणाम कुछ अच्छा नही हुआ। बिना किसी निश्चित आश्वासन के आदोलन समाप्त हो गया। पर यदि श्रेय है तो जनसघ और आर्यसमाज दोनो को और यदि असफलता की बदनामी है तो दोनो को। जनसघ के नेता इस मामले मे आर्यसमाज को बुरा भला कैसे कह सकते हैं।

आर्यसमाज को अकालियो के साथ जोडकर जनसघ राष्ट्रपति नहीं बन सकता। यह राजनीति की पुरानी घिसी-पिटी चाल है। कांग्रेस जनसघ और अकाली पार्टी को साम्प्रदायिक कहकर अपने को राष्ट्रवादी कहती है। कम्युनिस्ट कांग्रेस को अमरीका के पिछलगुआ कहकर अपने को किसानो और मजदूरो के हितैषी कहते है। सोशलिस्ट पार्टी कम्युनिस्ट पार्टी को रूस और चीन का एजेण्ट कहती है। राजनीति मे झूठ बोलना और गाली देना धर्म है। जनसघ तो भारतीय सस्कृति का नाम लेता है उसे कुछ ऊची बात करनी चाहिए।

तीसरी बात श्री वीरेन्द्र, श्री यश तथा श्री जगत नारायण को बुरा-भला कहने की है। ये तीनो सज्जन आर्यसमाजी है, देशभक्त है, कसौटी पर कसे जा चुके है, राजनीति के चतुर खिलाडी है। चोट सहना भी जानते है, चोट लगाना भी। इन्हे आर्यसमाज की चाल की आवश्यकता नही। (शेष पृष्ठ ४ पर)

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा दिल्ली

मार्फत आर्यसमाज अनारकली मंदिर मार्ग नई दिल्ली

श्री कृष्ण चन्द्र जी प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा दिल्ली तथा उपप्रधान आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली ७ साल से सरकारी नौकरी से मुक्त होकर सारा समय अवैतनिक रूपेण आर्यसमाज के कार्य मे लगा रहे हैं। आर्यसमाज के सप्ताहिक सत्संगो मे भी व्याख्यान देने जाते हैं। जिन समाजो को उनकी सेवा की आवश्यकता हो वह मन्त्री आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा%आर्य समाज मंदिर मार्ग नई दिल्ली को पत्र द्वारा सूचितकर दें।

शोक समाचार

पंजाब के दानी श्री परमेश्वरीदास जी बहल का ५ मई वीरवार को उनके अपने निवास स्थान आर. मोडल टौन लुधियाना मे रात ४५ पर स्वर्गवास हो गया।

आप कट्टर आर्यसमाजी होते हुए सरल स्वभाव के व्यक्ति थे चिरकाल तक पंजाब गवर्नमैंट के ठेकेदार रहे पर रिश्वत से कोसो दूर रहे। आप के निधन से आर्यजगत की महानक्षति हुई है।

आर्यजगत और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा उनके इस विछोह पर हार्दिक खेद प्रकट करती है तथा उनके परिवार से सवेदना प्रकट करती है।

आर्यसमाज चराई

केवल गुरुमुख सूचियों के विरुद्ध आर्यसमाज चण्डीगढ़ का प्रस्ताव

दिनाक २४-४-६६ को आर्य-समाज सैक्टर ८ चण्डीगढ की सार्वजनिक सभा पंजाब निर्वाचनाध्यक्ष (चीफ अलैक्टोरल ओफीसर) के क्षेत्र में केवल गुरमुखी लिपि मे मतदाता सूचियो के प्रकाशित करने के विरुद्ध जोरदार प्रोटैस्ट करती है। जिस कारण लाखो गुरुमुखी न जानने वालों को उनके मौलिक नागरिक अधिकारों (अपना नाम पढ़ सकने) से वंचित कर दिया गया है। अतः यह सभा पंजाब सरकार तथा भारत सरकार से प्रार्थना करती है कि वह सारे राज्य पंजाब मे हिन्दी तथा गुरुमुखी दोनो लिपियो में तुरन्त मतदाता सूचिया प्रकाशित कर जनता को पहुंचाए। - देसराज मलिक मन्त्री आर्यसमाज

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत् कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन न० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे — वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक २१) ६ ज्येष्ठ २०२३ रविवार—दयानन्दाब्द १४१— २२ मई १९६६ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

संश्रुतेन गमेमहि

हम वेद के अनुसार चलें। हमारा जीवन वेद के अनुकूल हो, हमारा पथ वेद पथ तथा हमारे कार्य वेद से अनुमोदित हों। जो कुछ सुनें उस पर आचरण करते रहें।

मा श्रुतेन विराधिषि

हम कभी भी वेद के प्रतिकूल न चलें। कथन, मनन, चिन्तन तथा जीवन का आचरण वेद के विपरीत न हो। जो भी सुनें उसे भुला न देवें, उसका विरोध न करें तथा उससे आंखें बन्द न करें।

देवदत्तं ब्रह्म गायत

यह वेद का ज्ञान देव का भगवान का दिया हुआ है। उस परमेश्वर की वाणी है। सब के लिए उस पिता का दिव्य एवं मीठा प्रसाद है। उस वेद का गान करो। वेद का गीत संगीत गाते रहो।

असि होता न ईड्यः

प्रभो! आप होता हैं। इस सारे-संसार में आपका ही महान् यज्ञ हो रहा है। आप इस सारे यज्ञ के होता हो और न,-हमारे लिए ईड्यः-स्तुति के योग्य हो। आपकी स्तुति हम लोग किया करें।

मित्रं वयं हवामहे

हम उस भगवान को बुलाते हैं, जो हमारा मित्र है। इस संसार के मित्र, साथी तो कष्ट आ पड़ने पर साथ छोड़ जाते हैं। पर प्रभु ऐसा परम मित्र है जो सदा हमारे अंग-संग रहकर सुखी करता है।

सा म वे द से

वे दो द्धा र क



महर्षि दयानन्द सरस्वती

अपने देश की बिगड़ी दशा को सुधारने व लुप्त प्राय, वेदज्ञान को पुनः प्रसारित करने तथा स्त्री जाति की अधोगति को देखते हुए अपना तन, मन, धन सब कुछ देश के सम्पर्ण कर दिया।

ऋषि दर्शन

जैसा ईश्वर पवित्र सर्वविद्यावित शुद्ध गुण कर्म स्वभाव न्यायकारी दयालु आदि गुणों वाला है वैसे जिस पुस्तक में ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव के अनुकूल कथन हो वह ईश्वरकृत, अन्य नहीं और जिस में सृष्टिक्रम प्रत्यक्षादि प्रमाण आप्ता के और पवित्रात्मा के व्यवहार से विरुद्ध कथन न हो वह ईश्वरोक्त। जैसा ईश्वर का निर्भ्रम ज्ञान वैसा जिस पुस्तक में भ्रान्ति रहित ज्ञान का प्रतिपादन हो वह ईश्वरोक्त। जैसा परमेश्वर है और जैसा सृष्टिक्रम रखा है वैसा ही ईश्वर, सृष्टि कार्य कारण और जीव का प्रतिपादन जिस में होवे वह परमेश्वरोक्त पुस्तक होता है और जो प्रत्यक्षादि प्रमाण विषयों से अविरुद्ध शुद्धात्मा के स्वभाव से विरुद्ध न हो, इस प्रकार के वेद हैं।

सत्यार्थ प्रकाश से

अमूल्य वचन

विश्व की समस्त आर्यसमाजों में दैनिक सत्संग अनिवार्य रूप से चालू किए जाएं। और वेदों का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब मानव मात्र के जीवन क्रम का अंग बन जाए। तब परमात्मा पर अटल विश्वास करने पर उस कार्य के लिए प्रबल पुरुषार्थ आरम्भ कर देने पर संसार में असंभव दिखने वाले कार्यों को सम्भव करके दिखला देने की अद्भुत क्षमता हम में आ जाती है।

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी — सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

धार्मिक चर्चा—

अध्यात्म यज्ञ

लेखक—श्री पं० सत्यप्रिय जी शास्त्री सिद्धान्त शिरोमणि प्राध्यापक-दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार

हमारे प्राचीन महामनीषी महर्षियो ने सासारिक मानवो के लिये प्रतिदिन यज्ञ करना जीवन का अग निरुपण किया है। यह स्थूल यज्ञ तो मनुष्यो के अत करण को श्रेयमार्ग की ओर ले जाने के लिये भूमिका मात्र है। वास्तव मे इन बाह्य क्रियाओ के नाटक द्वारा वहा तो पुरुष अध्यात्म जगत के चमत्कार देखता है। इसीलिये ऋषियो ने कहा 'यज्ञोवैश्रेष्ठतमम् कर्म' हर एक शुभ कर्म यज्ञ है। मन, वचन और शरीर से क्रियमाण पवित्र कर्म यज्ञ नाम के अधिकारी है। जब तक मनुष्य बाह्य क्रियाओ के आधार पर अन्तः-करण को पुण्य कर्मो की ओर प्रेरित करता रहता है तभी तक इस बाह्य भौतिक अग्निहोत्र की आवश्यकता अनुभव की जाती है। जब मनुष्य का अन्त करण अपने जीवन के लक्ष्य को समझ कर किसी बाह्य क्रिया के आश्रय के बिना ही निवृत्ति मार्ग का पथिक बन जाता है तभी उसके लिये बाह्य अग्निहोत्र का कोई मूल्य न रह कर वह उस क्रिया-कलाप से स्वतन्त्र हो जाता है। मनुष्य के जीवन मे इसी अवस्था को सन्यासाश्रम कहते है जिसमे मनुष्य परिपक्वावस्था को पहुचकर भौतिक तथा आध्यात्मिक जगत के यथार्थ स्वरूप का साक्षात करता है। उससे पूर्व वह दूसरों के अनुभवो के आधार पर चलता है। उन बाह्य क्रियाओ के द्वारा अपने अध्यात्म जगत का निर्माण करता है। जैसे भौतिक अग्निहोत्र में होता अग्नि कुण्ड में प्रज्वलित अग्नि पर घृत तथा सामग्री की आहुति डालता है। ठीक उसी प्रकार अपने अन्दर अध्यात्म जगत मे जाज्वल्यमान ज्ञानाग्नि मे श्रद्धा की आहुति डालना भी योग्य है। इस आहुति से अन्तंजगत प्रकाशित होगा है। अग्नि का स्थानापन्न ज्ञान है, जिसके प्रकाश मे अपने जीवन लक्ष्य निवृत्ति मार्ग को देखना है, परन्तु वह अग्नि बुझ सकती है, यदि उसमे श्रद्धा रूपी घृत की आहुति नही पडी। इस लिए वेद में कहा गया है श्रद्धयाग्निः समिध्यते अर्थात से श्रद्धा से अग्नि प्रदीप्त होती है। घृत चिकना होता है, वैसे ही श्रद्धा भी स्नेहरूप ही है। बाह्ययज्ञ मे तीन समिधाए अर्पित की जाती है, वैसे ही इस अध्यात्मयज्ञ मे शरीर, मन तथा आत्मा की तीन समिधाए चढानी है, तभी तो उक्त समिधाए उस कुण्ड मे पड कर चम-केगी। हम कहते है कि 'अयं त इध्म आत्मा' अर्थात् हे प्राणियो ? यह आत्मा तुम्हारे अध्यात्म यज्ञ के लिए समिधा है, उस कुण्ड मे इसे डालो तथा प्रकाशित करो। इस समिधा को डालकर ही हम निम्न वाक्य चरितार्थ कर सकते है 'उद् बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि' हे अग्नि मे पडे आत्म रूप समिद् ? तुम उद्बुद्ध हो—अपने लक्ष्य को पहचानो और उसकी प्राप्ति के प्रयत्न के प्रति सर्वदा जागरूक रहो। इसी तत्व के उद्-बोधन के लिए महीदास ऐतरेय ने अपने ग्रन्थ ऐतरेय ब्राह्मण मे 'चरैवेति चरैवेति' की टेक देकर तत्व ज्ञानियो के उद्बोधनार्थ एक रहस्य पूर्ण आत्मिक गीत लिखा है। बाह्य यज्ञ मे चार मन्त्रो द्वारा कुण्ड के चारो ओर जल का प्रोक्षण किया जाता है। अध्यात्म यज्ञ मे वही जल शुभ कर्म का रूप धारण कर लेना है। हमने आत्मिक यज्ञ के चारो ओर पुण्य-कर्मो का जल छिड-कना है। जल और अग्नि यद्यपि विरोधी माने जाते हैं। परन्तु यज्ञ में दोनो का संगति-करण होता है, ठीक वैसे ही इस आध्यात्मिक यज्ञ में ज्ञान और कर्म दोनो का सगति करण होता है, क्योकि दोनो एक दूसरे के बिना अपूर्ण है। बाह्य अग्नि मे 'स्वाहा' कहकर आहुति डालते हैं और 'इदन्न-मम' कहते है। ठीक यही दशा यहा भी है। ज्ञान मे श्रद्धा की आहुति पडते ही 'स्वाहा' अर्थात् प्रत्येक इन्द्रिय से अपने विषय का ग्रहण जीवन के कल्याणार्थ है न कि अघ; पतन के लिए। आह कहते हैं बोलना वागिन्द्रिय सभी इन्द्रियो का उपलक्षण है। यह सब कृपा उस करुणानिधान जगदीश्वर की हैं, अत: अध्यात्म यज्ञ के यजमान के मुख से उसके प्रति कृतज्ञता तथा अपनी हीनता का सूचक वाक्य 'इन्दन्नमम्' निकलता है। यह उसके जीवन मे नम्रता, विनय को धारण कराता है। यह है अध्यात्म यज्ञ के कुछ रहस्य। मनुष्य सोच कर जीवन मे इस यज्ञ की ओर बढे। यही तुझे उत्तमावस्था-सन्यास अर्थात् त्याग की ओर बढावेगा, क्योकि त्याग ही यज्ञ है।

आर्य जगत के पाठकों से निवेदन

आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं और आर्य बन्धुओं की सेवा मे यह लिखते हुए हमें हर्ष होता है कि आप की सभा के प्रमुख पत्र आर्य जगत् की अवस्था को सुधारने की ओर पग उठाए गए हैं। इस का टाईप बदल दिया गया है। मुख पृष्ठ का ब्लाक भी बदला जा रहा है। इससे पत्र के सौंदर्य में वृद्धि हुई है। अब इस की उप-योगिता भी बढनी चाहिए। आप सभी से प्रार्थना है कि अपने बहुमूल्य लेख लिख कर भेजें। इसके साथ इसकी ग्राहक सख्या बढ़ा कर सभा की सहायता करें। इस से भी इस पत्र की उपयोगिता बढ़ जाएगी।

इस महंगाई के समय में सभी समाचार पत्रों का मूल्य बढ़ चुका है। फिर भी सभा प्रचारार्थ इस पत्र को पुराने मूल्य पर ही दे रही है। इस से इस का घाटा बढ़ रहा है। यह यत्न करें कि यह पर्चा सभी आर्य परिवारों में पहुचे जिस से इस घाटा को पूरा करने में कुछ न कुछ सहयता आवश्य मिलेगी। धन्यवाद !

★ मधु कलश ★

श्री विजय निर्बाध जी आडिटर इंचार्ज पंजाब केसरी

शेषनाग भी जिसके यश के गीत नही गा पाते
जिसकी रज को स्वयं देवता सादर शीश चढ़ाते
भारत मां के निर्मल यश का झंडा जग में फहरे
हर गुत्थी सुलझा लें उसके बालक हंसते गाते।

★

हाथ हिलाते मुझे देखते जब-जब ज्ञानी ध्यानी
मैं अचरज में पड़ जाता हूं होती है हैरानी
सच तो यहहै प्रभुकी भाषा आती नही समझ में
मानव की गति नही आजतक गई किसीसे जानी

★

बहुत गल्त है बात-बात पर भावों में बह जाना
बिना विचारे काम किया तो पड़ता है पछताना
आंख मींचकर चलने वाला खा जाता है ठोकर
नामुमकिन है विष पीकर के दुनिया में जी पाना

★

घर को छोड़ा, मुंड मुंडाया, वस्त्र गेरुए धारे
लिए चिमटा और कमंडल दर-दर फिरते मारे
ऐसे लोग सखे संन्यासी कभी नहीं हो सकते
बात-बात पर गुस्सा करते वचन बोलते खारे।

—(क्रमशः)

पादकाय --

आर्य जगत्

वर्ष ६] रविवार ०२३, २२ मई १९६६ [अंक २१

आर्यसमाज की वेदी

आर्यसमाज ने अपनी वेदी के द्वारा बहुत बड़ा काम किया है। गम्भीर विद्वानो के गम्भीर भाषणो ने जन जीवन को उत्तम से उत्तम विचारो का प्रसाद दिया। शास्त्रो की चर्चा की एव वैदिक सिद्धान्तो को लेकर जनता की आखे खोलने का शानदार काम किया। आर्यसमाज की वेदी की प्रशसा बड़े २ लोगो ने खुले दिल से की। प्रत्येक सम्प्रदाय के बड़े २ लोग मुक्तकण्ठ से यह मानते और कहते है कि समाज की वेदी अपना रूप आप ही है। आज जितना भी परिवर्तन दिखाई देता है, वैदिक विचारो का जितना भी प्रचार है, जीवन मे जागृति प्रतीत होती है तथा धार्मिक, सामाजिक, राष्ट्रिय चेतना है—इस सारे श्रेय का कारण विना पक्षपात के आर्यसमाज को ही दिया जा सकता है।

किन्तु कुछ समय इस बात को अनुभव किया जाने लगा है कि अब समाज की वेदी की वह पुरातन गम्भीरता व शान कम होने लगी है। इस का कारण यह नही कि समाज के सिद्धान्तो मे कुछ परिवर्तन आ गया है या इस के पास सन्यासी महात्मा और विद्वानो की कमी है अथवा ऊची कोटि के बोलने वाले कम हो गये है। इन बातो मे से कोई भी वस्तु कम नही है। आज भी समाज के प्रभावशाली सन्यासी महात्मा, गम्भीर विचारक, ओजस्वी वक्ता, दार्शनिक विद्वान तथा आदर्श जीवन के नायक व मधुर गायक मौजूद हैं। शिक्षा क्षेत्र के विशारदों की भी कमी नही है—किन्तु ऐसे महान् व्यक्ति अब कुछ उदासीन होने लगे हैं। अपनी वेदी की वर्तमान अवस्था को देखते हुए उन उच्च कोटि के विद्वानो की उपरामता व उदासीनता ठीक ही कही जा सकती है। आर्यसमाज अपना उत्सव का समारोह इसलिए रखता है ताकि वैदिक विचारधारा का प्रचार होता जाये। जनता वेद के प्रति रुचि लेकर आर्यसमाज के सम्पर्क में आ सके।

दशा कुछ और की और बदलती जा रही है। समय के वातावरण का प्रभाव काफी मात्रा मे हमारी वेदी पर भी पडने लगा है। इस की पुरानी शान व गम्भीरतामें कमी आने लगी है। जनता की साधारण रुचि के अनुकूल ही इसको बनाने का प्रयत्न किया जाने लगा है। आर्यसमाज वेद के प्रचार के लिए स्थापित किया गया था। वैदिक सिद्धातो की विशेषता इसके जीवन की सब से बड़ी निष्ठा है। अन्य बाते तो दूसरी वेदियो मे भी कही तथा सुनी जा सकती है। इधर उधर के विचारो का प्रचार तो और स्थानो से भी हो सकता है। किन्तु वेद के विविध विषयो पर ओजस्वी प्रवचन आर्यसमाज के विशिष्ट कार्यक्रमो का एक विशेष भाग है। यदि हमारी वेदी से भी वही बाते होगी जो कि अन्य स्थानो से होती है—तो फिर वेद की बाते कौन बतायेगा? ऋषि दयानन्द जी ने अपना सारा जीवन वेद प्रचार के निमित्त लगाया। इसी पवित्रतम कार्य के लिए उनका बलिदान हुआ वेद को परमधर्म मान कर उसे ही प्रमुखता दी। आर्यसमाज ने अपने प्रारम्भिक युग मे वेदो विविध विषयो पर जनता को बडे मजे हुए विवाद दिये। उचित व स्वस्थ समालोचना की। किन्तु अब वह बात बदलती जा रही है। हमारी वेदी की महत्ता मे दरार पड़ने लगी है। यह भी खेद का विषय है कि इस वेदी पर अब राजनीति व राजनीतिक लोगो का अधिक बोलबाला होने लगा है। बडे से बडा सन्यासी महात्मा तथा विद्वान तो एक कोने मे चुपचाप बैठा रहे किन्तु इधर-उधर की बाते कहने वाले व्यक्ति समाज की वेदी पर खडा कर जो चाहे कह जाये और जिस रूप मे आये चला आये। न ऐसे लोगो को समाज का पता, न सिद्धातो का परिचय और न ही जनता का पथ प्रदर्शन ही करने का विचार होता है। दो ढाके की और दो बगाले की बाते कह देते हैं। सारा वातावरण कुछ और ही बन जाता है। परिणाम यह होता है कि बड़े २ स्वाध्याय शील व्यक्ति अब समाज की वेदी से सकोच करने लगे है। अवस्था सब की आखो के सामने है। इसपर समाज को अवश्य विचार करना ही होगा। वेदी की पवित्रता हर हालत मे रखनी है। वह अन्यथा इसकी महत्ता सर्वथा समाप्त हो जाएगी विशिष्टता भी नष्ट होकर पुराणो के समान अनेक विरोधी विषयो का पिटारा ही बन जाएगा। समाज के मान्य पुरुषो को इस पर विचार करना ही चाहिए बात कड़वी भले ही हो पर है तो सच्ची ही।

—त्रिलोकचन्द्र

अंगरेज़ी का मोह

अभी-अभी उस दिन भारत मे श्री गोखले जी का दिवस मनाया गया। समाचार पत्रो ने उनके चित्र छापे, उनकी जीवनी प्रकाशित की तथा उनके स्वतन्त्रता विषय के बडे सुन्दर लेख भी लिखे। महापुरुषो के दिवस मनाने ही चाहिए। उसी रात भारत के मान्य दार्शनिक राष्ट्रपति जी ने भी श्री गोखले जी के जीवन को लेकर आकाशवाणी मे जनता के नाम अपना इस विषय का सुन्दर और ओजस्वी सन्देश भी प्रसारित किया। परन्तु एक बात का अत्यन्त खेद है कि १८-१९ वर्षो के बाद भी आज भारत का इतना महान् राष्ट्रपति भी अपना भाषण पहले अगरेजी मे देते है— बाद मे उसका हिन्दी भाषा मे अनुवाद किया जाता है। राष्ट्रपति जी भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी को प्रमुख स्थान न देकर उसे दूसरा दर्जा देते है तथा विदेशी भाषा इगलिश को प्रथम स्थान देते है। बाहर देशो के लोग जब भारत के महान् राष्ट्रपति का सन्देश अगरेजी भाषा मे सुनते होगे तो वे मन में क्या कहते होगे कि १८-१९ वर्षो के बाद भी इतना महान् नेता अपनी राष्ट्रभाषा मे नही बोलता। जिसमे अनुवाद होना चाहिए उस मे तो मूल भाषण दिया जाता है। और जो राष्ट्र भाषा है उस मे अनुवाद किया जाता है। यह अवस्था भारत के मान्य महान नेता की है। वह भी १८-१९ वर्षों की स्वाधीनता के बाद की है। कोई बोले या न—पर हम ने जब आकाश वाणी से अग्रेजी में भाषण सुना तो विचार आया कि भारत की अवस्था का यह परिवर्तन कब होगा। जब राष्ट्र के सर्वोच्च नेता के मन मे अपनी ही राष्ट्र भाषा के प्रति यह विचार है कि वे १८-१९ वर्षो की स्वाधीनता के बाद भी इगलिश को प्राथमिकता देते हुए राष्ट्र की भाषा हिन्दी को स्वय दूसरा दर्जा एक अनुवाद की भाषा समझते हैं तो अन्य लोगो की दशा का अनुमान लगाया जा सकता है। भारत की कितनी भाषाओ को सविधान मे मान्यता प्राप्त है। उन मे से किसी भी भारतीय भाषा मे अपना राष्ट्रीय सदेश दिया जा सकता है। पर इगलिश का इतना मोह वस्तुत: ही खेद जनक है। हम अपने राष्ट्रपति जी का अत्यन्त सम्मान करते हुए नम्रता किन्तु जोरदार शब्दो मे प्रार्थना करना चाहते है कि मान्यवर राष्ट्रपति जी तो बडे विद्वान है भारतीय है तथा अपनी पुरातन सस्कृति के प्रबल पोषक है। व तो सारे देश का नेतृत्व करने वाले है। जनता तो महान लोगो का अनुकरण व अनुसरण किया करती है। यदि वही विदेशी भाषा का इतना व्यामोह करेगे तथा राष्ट्र भाषा की उपेक्षा करेगे तो दूसरो की ओर से तो उपेक्षा वृत्ति अधिक ही होती जायगी। यह परम्परा स्वस्थ नही कही जा सकती है। बडे २ व्यक्तियो का कर्तव्य है कि मान्य राष्ट्रपति जी से मिल कर भविष्य मे राष्ट्र भाषा के यथोचित सम्मान का प्रबन्ध करे।—स.

आल इंडिया दयानन्द साल्वेशन मिशन

होशियारपुर

(१) वर्तमान बढती हुई महगाई को मुख्य रखते हुए आल इडिया दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर ने अपने कार्यकर्ताओ के महगाई अलाऊस मे, जिनका वेतन महगाई अलाऊस सहित १५०/- रु० मासिक या इस से कम है, १०/- रु० की वृद्धि १-४-१९६६ से कर दी है।

(२) आल इडिया दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर की जनरल बौडी की वार्षिक बैठक दिनाक २९-५-१९६६ रविवार को शाम के साढे चार बजे मिशन के कार्यालय, राम आश्रम, राय बहादुर योद्धामल रोड, होशियारपुर मे होगा। सभी सदस्य समय पर पधार कर कृतार्थ करे। निवेदक—रामदास

प्रधान मिशन

अकालियो को खुश करने के लिए जनसघ ने आर्यसमाज पर हमला तो कर दिया लेकिन अब स्वय ही घबरा रहा है। पजाब जनसघ के भूतपूर्व प्रधान कैप्टन केशव चन्द्र ने उस बहस को बन्द करने की अपील की है जो इस प्रश्न पर हो रही है।

लेकिन यह बहस शुरू किस ने की? और फिर इस बहस को व्यक्तिगत स्तर पर कौन ले आया? अखिल भारतीय जनसघ के प्रधान ने सारे आर्यसमाज पर लाञ्छन लगा दिया कि यह पजाब के वातावरण को खराब कर रहा है। और उसके बाद हर छोटे मोटे जनसघी ने आर्यसमाज और उसके नेताओ पर बरसना शुरू कर दिया। इतना ही नही, लाला जगतनारायण व श्री वीरेन्द्र के विरुद्ध घटिया भाषा मे ऐसे लेख लिखे गए जिनका किसी भी युगकी सभ्यता से कोई सम्बन्ध नही। बहस सिद्धात की हो, दलील मे वजन हो और सभ्यता की सीमा मे रह कर एक दूसरे का केस काटने की कोशिश की जाए तो मैं इसे बुरा नही समझता। लेकिन जब लडाई व्यक्तिगत स्तर पर पहुच जाए और उस मे मतभेदो का उल्लेख न होकर गालिया निकाली जाए तो स्वाभाविक रूप से हर किसी को अफसोस होगा। लेकिन जनसघ ने यही क्यो समझ लिया कि केवल वही हमला कर सकता है? जब प्रत्युत्तर मिलने लगा तो वह परेशान हो उठा। हर सस्था मे जहा उत्तरदायित्व हीन व्यक्ति होते है, वहा एक समझदार वर्ग भी होता है। जनसघ का दुर्भाग्य यह है कि इसके प्रधान और कई दूसरे नेता उत्तरदायित्व हीन है। इसलिए वे यह सोचते ही नही कि जो पग वे उठाने जा रहे है उसका परिणाम क्या निकल सकता है। जनसघ यदि अपने आपको राजनीतिक सस्था मानता है तो उसे राजनीतिक सस्थाओ से ही लडना चाहिए, धार्मिक या सामाजिक सस्थाओ से उलझ कर वह अपने आपको कमजोर ही कर सकता है, सत्ता प्राप्त नही कर सकता। आर्य समाज कोई राजनीतिक पार्टी नही है। इस के विरुद्ध दिल की भडास निकालने के दो ही मतलब हो सकते हैं, एक यह कि जनसघ अपने आप को राजनीतिक और असाम्प्रदायिक पार्टी कहना अवश्य है। लेकिन दिल से नही मानता। उसके दिल मे वही बात है जो मास्टर तारासिह और सन्त फतेहसिह

गलती की स्वीकारोक्ति करो!

(श्री यश जी प्रधान आर्य प्रादेशिक सभा)

के दिल मे है। इन दोनो नेताओ का विश्वास है कि धर्म और राजनीति अलग-अलग नही हो सकते। इन दोनो नेताओ ने धर्म का प्रयोग राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने के लिए किया है। जनसघ का आर्यसमाज से उलझना यह सिद्ध करता है कि वह भी धर्म की आड मे राजनीतिक शिकार खेलना चाहता है, दूसरे यह कि जनसघ भी भारत की राजनीति मे वही भूमिका



निभाना चाहता है जो किसी समय मुस्लिम लीग ने निभाई थी। मुस्लिम लीग वालो का विश्वास था कि जो व्यक्ति मुस्लिम लीग मे शामिल नही होता, वह मुसलमान नही है। इसलिए वे किसी ऐसे मुसलमान को सहन नही करते थे जो मुस्लिम लीग के अलावा किसी और पार्टी मे हो। मौ० अबुल-कलाम आजाद को ससार भर के मुसलमान तो मुसलमान मानते थे लेकिन मुस्लिम लीग उन्हे 'काफिर' समझती थी। काग्रेस अजमान अहरार यहा तक कि यूनयनिस्ट पार्टी मे जितने भी मुसलमान थे, वे चाहे पाच वक्त नमाज पढने के पाबन्द हो तो भी मुस्लिम लीग की निगाह मे वे मुसलमान नही थे। यह फासिस्ट रवैया मुस्लिमलीग ने इसलिए अपनाया क्योकि वह मुसलमानो की एकमात्र प्रतिनिधि सस्था बनना चाहती थी। वह काग्रेस या किसी दूसरी राजनीतिक पार्टी के गैर-मुस्लिम नेता को तो सहन कर लेती, किंतु किसी मुस्लिम नेता का नाम तक सुनना गवारा न करती। इसी प्रकार अब जनसघ यह कोशिश कर रहा है कि हिन्दू पर उसका एकाधिकार हो जाए। उसे यह सहन नही कि किसी और पार्टी के झडे तले काम करने वाला कोई हिन्दू विशिष्ट स्थान प्राप्त करे। मुस्लिम लीग की तरह वह एक हिन्दू लीग की भूमिका निभाना चाहता है और उन लोगो को हिन्दू मानने से इन्कार करने लगा है जो जनसघ मे नही हैं। दूसरी सभी पार्टियो मे काम करनेवाले गैर हिन्दुओ को तो वह सहन करता है किन्तु कोई हिन्दु उसे गवारा नही।

आर्यसमाज या उसके नेताओ से उलझने का इसके सिवा और कोई अर्थ हो ही नही सकता। आर्यसमाज न तो कभी चुनाव मे भाग लेता है और न इस पर किसी एक राजनीतिक पार्टी का अधिकार है। असख्य आर्यसमाजे ऐसी है, जनके पदाधिकारी जनसघी है। ऐसे भी है, जिनके पदाधिकारी सोशलिस्ट है। आर्यसमाज मे काग्रेसी भी है और ऐसे लोग भी है जिनका सम्बन्ध किसी राजनैतिक पार्टी से नही। आर्यसमाज ने कभी किसी पर आपत्ति की, न किसी पर प्रतिबन्ध लगाया। जनसघ वालो ने कई जगह आर्यसमाज के मच और सगठन का दुरुपयोग करने का यत्न अवश्य किया। इसपर उन्हे रोका जरूर गया, किन्तु निकाला नही गया। अलबत्ता जनसघ का यह प्रयत्न अवश्य असफल हुआ कि वह इसमे आर्यसमाज पर तूर्णरूप से आधिपत्य जमा ले। सभवत इस प्रयत्न की असफलता ही उस क्रोध का कारण है, जो अब आर्यसमाज पर निकाला जा रहा है। लेकिन जनसघ वालो ने कभी सोचा नही कि यदि आर्यसमाजी जनसघ को छोड जाए, तो बाकी क्या रह जाता है?

मैं कैप्टन केशवचन्द्र जी से सहमत हू कि यह बहस बन्द होनी चाहिए। किन्तु इसे समाज ने नही छेडा, स्वय जनसघ के नेताओ ने छेडा है। आर्यसमाज किसी भी राजनीतिक पार्टी से उलझना नही चाहता और न किसी राजनीतिक पार्टी के लिए अपने दरवाजे बन्द करना चाहता है। किन्तु यह सम्भव नही कि जनसघ अकालियो को प्रसन्न करने के लिए आर्यसमाज पर लाछन भी लगाए और यह आशा भी रखे कि उसे प्रत्युत्तर नही मिलेगा। अभी तो आर्यसमाज खामोश है। आर्यसमाज के कुछ नेताओ ने ही जनसघ को उत्तर दिया है। संस्था के रूप मे अभी कुछ कहा नही गया। आर्यसमाज मे सहन शक्ति बहुत है। यदि वह अकालियो का हमला सहन कर सकता है, तो जनसघ का भी। किंतु हर बात की एक सीमा होती है। यदि जनसघ का यही रवैया रहा तो फिर उसे भी हरकत में आना पड़ेगा। बेहतर हो कि जनसंघ अपनी गलती को स्वीकार करते हुए आर्यसमाज से क्षमा माग ले। आर्य समाज को इस बात से कोई सरोकार नही कि जनसघ अकालियो से गठजोड़ करता है या स्वतन्त्र पार्टी से, यह उसका अपना दृष्टिकोण है। आर्यसमाज चुनाव के पचडे मे नही पडता। लोग जनसघ को अच्छा समझेगे तो उसे वोट देगे, कांग्रेस को अच्छा समझेगे तो उसे सफल करा देगे। इस से आर्य समाज का कोई सम्बन्ध नही। लेकिन आर्य समाज जनसघ को यह अनुमति नही देगा कि वह चुनाव जीतने के लिए एक धार्मिक सस्था पर कीचड उछाले।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्य वीर दल केन्द्रीय शिविर

१२ जून १९६६ से २६ जून १९६६ तक दिल्ली मे श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी प्रधान सचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल की अध्यक्षता मे आयोजित किया गया है। इस शिविर मे प्रातीय अधिकारियो के अतिरिक्त आर्य वीर दल का सेवा कार्य करने के इच्छुक शिक्षित व्यक्ति भी भाग ले सकेगे। प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् ऐसे व्यक्तियो की नियुक्ति केन्द्र की ओर से विभिन्न प्रातो मे की जायगी। शिविर मे भोजन का प्रबन्ध नि:शुल्क होगा। जो आर्य वीर इस मे भाग लेना चाहे वह अपना प्रार्थना पत्र यथासम्भव अपने प्रातीय सचालको के द्वारा मन्त्री सार्वदेशिक आर्य वीर दल दयानन्द भवन, आसफअली रोड, नई दिल्ली के पते पर ३१-५-६६ तक भेजे।

शिविरार्थियो को ११ जून की शाम तक दिल्ली पहुच जाना चाहिये।

जगदेव—मन्त्री
सार्वदेशिक आर्यवीर दल

शुभ विवाह

श्री चन्द्रसैन जी आर्य हितैषी की सुपुत्री आयुष्मती द्रौपदी देवी का शुभ पाणिग्रहण सस्कार चीरंजीव मनोहर लाल जी सुपुत्र श्री मोतीराम जी लाजपत नगर सोनीपत निवासी के साथ २१ मई शनिवार को होना निश्चित हुआ है सब सम्बन्धी और इष्ट मित्र समय पर पधार कर वर वधु को शुभ आशीर्वाद देने की कृपा करें।

आर्यसमाज और राजनीतिक्षेत्र

(ले० श्री गंगाराम जी अमृतसर)

आर्य समाज की स्थापना श्री दयानन्द जी ने भारतीय सस्कृति अर्थात वैदिक सस्कृति और सत्य और असत्य का निर्णय करके लोगो तक पहुचाने के कार्यहित की थी।

परन्तु यह एक प्रामाणिक बात है कि सत्य को ही सत्य सिद्ध करने और लोगो को निश्चय कराने का कार्य किसी शक्ति द्वारा ही किया जा सकता है। विशेषत. वह शक्ति राज्य शक्ति ही होती है। अन्यथा वह सत्य की भावनाए .दिल की दिल मे ही रह कर झुलस जाती है। ईस्लाम का प्रचार मुगलराज्य के सरक्षण काल मे ही हो सका और ईसाईयत का प्रचार भी ईसाई सरकार (विदेशी सरकार) द्वारा ही भारत मे शुरू किया गया। इस के अतिरिक्त भारत मे यह बात सब के प्रत्यक्ष है कि बौद्ध धर्म का प्रचार और कार्य राज्य सरक्षण मे ही हुआ। यही नही बल्कि जैनमत और सिखमत झूठ को सत्य सिद्ध करने के लिए राज्य का ही आश्रय लेते रहे।

झूठे मत-मतातर अपने झूठ को सत्य सिद्ध करने के लिये प्रयत्नशील रहे। लेकिन खेद है कि आर्यसमाज जो सदैव सत्य का पुजारी और सत्य का उपदेश करता रहा है, जिस का सन्मान अपने घर मे ही नही बल्कि विदेशो मे भी देखा जाता है. वो अपने सत्य को फैलाने के लिए एक धार्मिक सस्था के रूप मे ही रह गया है। बडे खेद से कहना पडता है कि आर्यसमाज के नेताओ ने अपने गुरु महाऋषि दयानन्द जी के कथन का अक्षराक्षर पालन नही किया। ऋषि ने यहा धार्मिक प्रवृत्ति को फैलाने का उपदेश दिया वहा शिक्षा सस्थाओ मे लडके और लडकियो को बराबर शिक्षा देने का अधिकार और राजनीति को भी सम्भालने का सत्यार्थ-प्रकाश के छटे समुल्लास मे उपदेश दिया था। लेकिन आज हमारी परिस्थिति क्या है? अगर इस को दयनीय परिस्थिति कहे तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। धार्मिक प्रचार मे आर्यसमाज सदा ही अग्रसर रहा है। परन्तु जहां शिक्षा और राजनीति का सम्बन्ध है उस क्षेत्र मे आर्यसमाज ने जनता के सन्मुख ऋषि कथनानुसार कोई विशेष कार्य नही किया। जैसा कि दूसरे सिखो-मुस्लिम लीगियों वा मैसाईयों की सस्थाएं शिक्षा के क्षेत्र मे कार्य कर रही है। शिक्षा के माध्यम से ही अपने अध्यापको द्वारा प्रत्येक बच्चे की नस-नस मे अपने धार्मिक विचार कूट-कूटकर भर रही हैं। परन्तु वर्तमान समय मे आर्यसमाज की शिक्षा सस्थाए सरकार से सहायतार्थ धन लेने के लिए किसी प्रकार का कार्य अध्यापको या बच्चो मे वैदिक मिश्नरी का कार्य नही कर रही।

यह दोनो कार्य तभी सम्पूर्ण हो सकते है जब राज्य सरकार द्वारा सरक्षण प्राप्त हो। परन्तु यह बात सदैव सत्य है कि सस्था या व्यक्ति किसी दूसरे के सहारे उन्नति नही कर सकता। आर्यसमाज के स्वर्गीय नेता ला० लाजपतराय जी वा स्वामी श्रद्धानन्द जी काग्रेस मे कष्ट सहते हुए भी स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए बलिदान हो गये। केवल इसी हेतु कि अपना राज्य होने पर अपनी सस्कृति और सभ्यता को देश मे फैलाते हुए 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का कार्य कर सकेगे। आर्य वीर भक्तसिह, रामप्रसाद बिसमल और चन्द्रशेखर आजाद जैसे हजारो नेता स्वतन्त्रता के कुण्ड मे कूद गये और अपना जीवन बलिदान कर दिया। एक दिन आया कि १५ अगस्त १९४७ को उनका खून रग लाया और स्वतन्त्रता हुई। वही काग्रेस जिसको आर्य नेताओ ने अपनी रग-रग का खून देकर सत्तारूढ किया कुछ समय पश्चात् वही काग्रेस आर्यसमाज के विपरीत सिद्ध हुई। लेकिन आर्य नेताओ ने अपना दिल नही छोडा बल्कि यू ही राष्ट्रिय स्वय सेवक सघ ने जनसघ की स्थापना की उनका यह आश्वासन मिलने पर कि भारतीय सस्कृति सभ्यता को उचित स्थान दिलाने और जनता की मनोभावनाओ का प्रतिनिधित्व करेगा. सो समस्त आर्य नेता जनसघ मे शामिल हो गये। यू ही कुछ समय ने पलटा खाया कि जनसघ रूपीदेवी का घू घट उठने लगा और वह वास्तिवक रूप मे सामने आने लगी। तो पता चला कि यह कुरूपा लालच और मोह मे भरपूर है। जिस को केवल मात्र अपने वोट इकठ्ठे करने का लालच और सत्ता प्राप्ति की लालसा सताए जा रही है। और इसी लालसा मे उसने अपने किये हुए पहले विश्वासन यथा कि हम भारतीय सस्कृति और सभ्यता की प्रत्येक समस्त विचारधाराए जो गौ हत्या का विरोध, मुसलमानो और ईसाईयो का भारतवासियो पर किये जा रहे दिन प्रतिदिन उपद्रवो का उत्तर और मातृभाषा और राष्ट्र-भाषा हिन्दी को उचित स्थान दिलाने को लिये अग्रसर रहेगे। मगर जनसघ ने पहले ही दि वासो का घात कर दिया था शेष हिन्दी भाषा के प्रश्न पर भी हाल ही मे जो अधिवेशन जालन्धर मे किया गया उसने भी अपना वास्तविक रूप प्रकट कर दिया। जिस जनसघ को आर्यसमाज अपना सरक्षक समझती थी उसी जनसघ के अध्यक्ष श्री बलराज मधोक श्री अटलबिहारी बाजपेई और श्री यज्ञदत्त शर्मा ने आर्यसमाज को बुराभला कह कर आर्य नेताओं के सम्मान मे अशोभनिय शब्द कहे। यही नही जिस हिन्दी भाषा को राष्ट्रीय भाषा होने का सन्मान प्राप्त है अपने वोटो के लालच मे उसका भी अपमान कर दिया।

अब इन सब बातो मे सिद्ध होता है कि आर्यसमाज को घर-घर की भिक्षमागन मे तो यही अच्छा है कि वर्तमान समय मे अपने प्रसिद्ध नेताओ और आर्य कार्यकर्ताओ द्वारा एक राज्य सभा, भारतीय लोक सघ के नाम पर स्थापित की जायें और ऋषि ऋण से उऋण होवें।

हिंदी को पंजाब में पंजाबी के सामान अधिकार दिया जाए

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का विभाजन नहीं होगा

पंजाब आर्य सम्मेलन के महत्वपूर्ण निश्चय

जालन्धर (डाक से)—पजाब प्रदेश के आर्य समाजो का प्रतिनिधि सम्मेलन प्रो० रामसिह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। १२० के लगभग प्रतिनिधि उपस्थित थे। सम्मेलन मे माग की गई कि :—

१. आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का विभाजन न किया जाए, क्योकि आर्य समाज ने कभी भी पजाब के विभाजन को स्वीकार नही किया।

२. पजाब मे हिन्दी को भी पजाबी के समान स्थान दिया जाए।

३. गत आन्दोलन मे हुए पुलिस के बर्बर अत्याचारो की जाच की जाए।

प्रस्ताव नं० १

(क) आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के निरन्तर प्रयत्न के बावजूद भी हुए पजाब के विभाजन को एक अत्यत दुर्भाग्यपूर्ण घटना मानता है।

२. इस सम्मेलन का यह निश्चित मत है कि परिवर्तित परिस्थितियो मे भी पजाब के आर्यो को अपनी शक्ति, विचारधारा, आत्म सम्मान, और अधिकारो की सुरक्षा के लिए अपना सगठन दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल काश्मीर आदि सभी क्षेत्रो मे यथापूर्व बनाये रखना चाहिए। इतना ही नहीं अपितु विभाजन से उत्पन्न हालात का मुकाबला करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब को इस समूचे क्षेत्र मे पहले से भी अधिक दृढता एव शक्ति से कार्य करना चाहिये। जिस से किसी भी क्षेत्र मे आर्यो के अधिकारो और कार्य को क्षति पहुचाने का साहस न हो।

(ख) यह सम्मेलन घोषित करता है कि सरकार द्वारा विभाजन की घोषणा कर देने के बाद भी धार्मिक सामाजिक और सास्कृतिक दृष्टिकोण से उक्त सब क्षेत्रो को समस्त आर्य एक रहेगे और उनके सगठन पूर्ववत समूचे क्षेत्र के समान हितो की दृष्टि से कार्य करते रहेगे। इस सम्मेलन की यह मान्यता है कि तथाकथित पजाबी सूबे मे भी लगभग ४० प्रतिशत जनता की धार्मिक, सास्कृतिक तथा मातृभाषा हिन्दी रहेगी। अत यह सम्मेलन सरकार से माग करता है कि सविधान की मान्यताओ तथा प्रजातान्त्रिक सिद्धान्तो को ध्यान मे रखते हुए पजाबी सूबा मे हिन्दी को न केवल राष्ट्रभाषा के रूप मे अपितु क्षेत्रीय भाषा के रूप मे भी पजाबी के समान अधिकार दिया जाय और पजाबी को यथापूर्व देवनागरी और गुरुमुखी लिपि मे लिखने पढने की छूट दी जाए।

(ग) नवीन परिस्थिति मे यदि पजाब मे हिन्दी अथवा आर्यो के साथ किसी प्रकार का अन्याय हुआ या उन के मौलिक अधिकारो पर कुठाराघात हुआ, तो हरियाणा, दिल्ली व हिमा-

(शेष पृष्ठ ६ पर)

स्वास्थ्य विचार

आसनों से शरीर की पुष्टि

इस भौतिक शरीर को चिरस्थायी बनाने के लिए जहा आहार, स्नान शुद्धि, ब्रह्मचर्य आदि अनेक साधनो का शास्त्रो ने विधान किया है। उसके साथ शरीर पुष्टि के लिए आसनो का प्रयोग भी अनिवार्य है इससे शरीर पुष्ट और आयु की वृद्धि होती है। जीवन का वास्तविक आनन्द प्राप्त किया जा सकता है।

वैदिक ग्रन्थो में ८४ आसनो का विस्तृत वर्णन उसके लाभ तथा करने का विधान भी दिया है। इस पर अनेक छोटे - मोटे ग्रन्थ लिखे जा चुके है। वर्तमान समय मे वैद्य रामसिंह जी कविराज का लिखा **आरोग्य प्रकाश** तथा **आसनों की विधि** ग्रन्थ पर्याप्त ख्याति प्राप्त कर चुके है।

इन पर आनन्द स्वामी जी महाराज के कुछ विचार पाठको के सम्मुख रखते है।

"शरीर मे शक्ति, बुद्धि मे गम्भीरता, मन मे प्रसन्नता और हृदय मे विशालता, ये चार गुण जिस के पास हैं उसी का जीवन सफल है, और इन सब का आधार शरीर का नीरोग रहना है। हमारे पूर्वजो ने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए ऐसे साधन खोज निकाले जिन पर धन तो खर्च न हो और लाभ पूरा मिल जाए, उन्ही साधनो मे एक बडा साधन योग आसन है। यह पुस्तक उन आसनो का भली-भाति दिग्दर्शन कराती है।

सबसे पूर्व सिद्धासन को लीजिए

इस आसन का नाम सिद्धासन इस कारण है कि सब सिद्ध महापुरुष इसी आसन मे बैठकर मानसिक शान्ति, आत्म ज्ञान, और ब्रह्म ज्ञान की सिद्धि के लिए साधना करते रहे हैं। दूसरा कारण इसका नाम सिद्धासन पडने का यह है कि इस आसन का विशेष सम्बन्ध वीर्य सस्थान से है। इसके अभ्यास के समय अडकोष(Testicles) मे वीर्यकोष (Seminal vessicle) की ओर जाने वाली नाली(Seminal-card) दोनो एडियो के बीच मे दब जाती है और इस प्रकार निरन्तर दबी रहने के कारण जनन इन्द्रिय मे पैदा होने वाली अनावश्यक उत्तेजना (Innecessary Excitment) शात हो जाती है। जिसमे वीर्य-सरक्षण मे बडी सहायता मिलती है। वीर्य सब धातुओ का सार रूप होने से हमारे मस्तिष्क, ज्ञानेन्द्रियो और सब शरीर को शक्ति, स्फूर्ति, और उत्साह प्रदान करता है। मुख पर तेज और चमक उत्पन्न करता है। ब्रह्मचर्य सब प्रकार की सिद्धियो को इसी आसन मे बैठकर प्राणायाम और उपासना की जाती है। जो मानसिक शाति, आत्मिक शक्ति को प्राप्त करने तथा परमानन्द के स्त्रोत उस सच्चिदानन्द स्वरूप परम-पिता की प्राप्ति की साधना की सिद्धि भी इसी आसन पर बैठ कर अभ्यास करने से प्राप्त होती है। इस कारण भी इसका नाम महापुरुषो ने सिद्धासन रखा है।

मानसिक शाति, आत्मिक सतोष, मानव का परम धन है, जिसके माध्याम से ब्रह्मानन्द का वह अधिकारी बनता है। ससार की सब भौतिक वस्तुए प्राप्त करके भी मानव का मन शात और स्थिर नही होता, आत्मा की आज्ञा मे नही होता, मानव कदापि सुख शाति और आनद का अधिकारी नही बन सकता। यदि मन शात और स्थिर हो तो सब भौतिक पदार्थ मानव के लिए सुख, शाति और आनन्द की प्राप्ति मे सहायक सिद्ध हुआ करते हैं। इसके विपरीत केवल अनावश्यक भौतिक विकास से बुद्धि पर अधकार का पर्दा पड जाया करता है और मानव सब प्रकार के भौतिक साधनो को प्राप्त करके भी अशात दिखाई देता है। अत: मानसिक शाति और आत्मिक सतोष तथा ब्रह्मानन्द के इच्छुक सब मानव बधुओ को इस आसन मे बैठ कर कम से कम एक-दो घटा प्रात-साय प्राणायाम और उपासना द्वारा आत्म ज्ञान की वृद्धि का अभ्यास अवश्य करना चाहिए—

सिद्धासन करने की विधि—

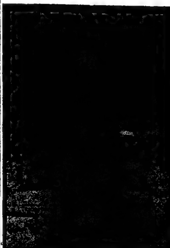
विधि सरल है। बाए पैर की एडी गुदा और मूत्रेन्द्रिय के बीच के स्थान पर रखें और दाए पैर की एडी को मूत्रेन्द्रिय के ऊपरी भाग पर इस प्रकार रखें कि दोनो पाव की एड़िया एक दूसरे के ऊपर आ जाए और मूत्रेन्द्रिय का मूल दोनों एडियों के बीच दब जाए।

लाभ

मानसिक शान्ति प्राप्त करके मन के रोगो को दूर करने मे सहायक है। साधना, उपासना में उपयोगी, वीर्य रक्षा में सहायक है।

नोट—अगले अंक में पद्मासन का वर्णन पढ़िए।

पद्मासन



मन तथा इन्द्रियो को शात रखने तथा ध्यान को एकाग्र रखने के लिए

आर्य बाल गृह व आर्य कन्या सदन का श्री मेहरचन्द जी खन्ना

(केन्द्रीय मन्त्री भारत सरकार)

द्वारा निरीक्षण

दिल्ली (डाक से) भारत सरकार के मन्त्री श्री मेहरचन्द खन्ना ने १० मई की सुबह ८ बजे सपत्नीक राजधानी की प्रमुख समाजसेवी सस्था आर्य बाल गृह व आर्य कन्या सदन का निरीक्षण किया।

सस्थाओ की सफाई, व्यवस्था और बालाको की आसीनता देख कर श्री मेहरचन्द खन्ना अत्यन्त प्रभावित हुए। उन्होंने कहा कि मुझे इस सस्था को देख कर अपार हर्ष हो रहा है और मै अनुभव करता हू कि सस्था की जितनी भी सहायता सम्भव हो हमे करनी चाहिये।

संकल्प के धनी वीर शिरोमणि शिवाजी

शिवाजी ने जो सकल्प, साहस, बल और पुरुषार्थ से आर्य जाति की रक्षा की थी उसे कौन नही जानता है शिवा जी के जीवन को देखे तो सकल्प सिद्धि के लिये हमे अनुपम प्रेरणा का स्त्रोत मिलता हैं।

हिंदी को पंजाब में पंजाबी के सामान अधिकार....

(पृष्ठ ५ का शेष)

बल के आर्य बन्धु पंजाब के आर्यो के साथ मिल कर समस्याओं का हल करने मे साथ होगे और पंजाब के आर्य सदा यह अनुभव कर सकेंगे कि हम अकेले नही है, अपितु उक्त क्षेत्र के सभी आर्य उनके साथ हैं।

(घ) सम्मेलन की दृष्टि में कुछ व्यक्तियों द्वारा आर्य समाज के संगठन को छिन्न-भिन्न करने का प्रयत्न उसी विभाजक साम्प्रदायिक मनोवृत्ति को प्रोत्साहन देना है, जिसके कारण पजाब का विभाजन हुआ है और जिस का आर्य समाज सदा विरोध करता रहा है। पजाब की वर्तमान गम्भीर परिस्थितियो में यह चेष्टा आर्यसमाज के हित की दृष्टि से अत्यन्त आपत्तिजनक और अनुचित है।

(ड) सम्मेलन आर्य समाजो से प्रार्थना करता है कि वे—

१—प्रत्येक दृष्टि से आर्यसमाज के सगठन को शक्तिशाली बनाने का प्रयत्न करे।

२—अपने उत्सवों, कथा तथा प्रचार आदि की व्यवस्था पूर्ण उत्साह से करे।

प्रस्ताव सं० —२

यह सम्मेलन पजाब पुलिस द्वारा पंजाब के शातिप्रिय नागरिको पर किए गए बर्बर अत्याचारो की घोर निन्दा करता है। और सरकार से माग करता है कि इस सारे काण्ड की न्यायिक जाच कराई जाए।

प्रस्ताव सं०—३

यह सम्मेलन पजाब सरकार के शराब के प्रचार को प्रोत्साहन देने की नीति को अत्यन्त अनुचित समझता है। सम्मेलन की माग है कि सरकार शराब के प्रचार पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाए।

प्रस्ताव सं०—४

पंजाब सरकार द्वारा सह-शिक्षा की नीति को प्रोत्साहन देने को यह सम्मेलन अनुचित और भारतीय सभ्यता के विपरीत समझता है। सम्मेलन की मांग है कि सर्वत्र बालकों और लड़कियो की शिक्षा का प्रबन्ध पृथक्-पृथक् किया जाए।

✱ कभी नही ! मूर्ति पत्थर की बनी होती है। वेद में कहीं मूर्ति पूजा का विधान नही। मूर्ति पूजा से आत्मा को कोई लाभ नहीं हो सकता।

आर्य समाज और वैदिक साम्राज्य की स्थापना

ले० श्री धर्मवीर जी अध्यक्ष धर्मवीर ग्रन्थमाला सराय रुहेला नई देहली-५

गतांक से आगे

महर्षियों और वेदों के आत्माओं के स्थान पर जिस देश के पथ प्रदर्शक सिनेमाओ के एक्टर होगे उस देश का सर्वनाश न होगा तो और क्या होगा। आज कांग्रेस साम्राज्य मे चरित्र बल की ओर कोई ध्यान देने वाला नही है। चारो ओर विनाश की अग्नि की ज्वालाये धधक रही है। देश की सस्कृति और सभ्यता फैशन परस्ती की आग मे चिता की चिगारियों के समान धू-धू करके जल रही है। देश आज विनाश के पथ पर बेरोक टोक प्रतिक्षण आगे बढ रहा है। आज विश्व की मानवता लज्जित और कलकित हो रही है। आज वेद शास्त्रो, उपनिषदो का रामायण और गीता केउपदेशो का उपहास उडाया जाता है।

आज देश की विचित्र अवस्था हो गई है। आज देश मे भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। इसका मूल कारण यह है कि आज मनुष्य ईश्वर और धर्म को भूल चुका है। वेद ईश्वर और धर्म धारण किये बिना मनुष्य मे और पशुओं मे कोई अतर नही रह जाता है।

विश्व वदनीय महर्षि दयानन्द जी वैदिक युग का निर्माण करना चाहते थे। महर्षि दयानन्द अविद्या, अधकार को दूर भगा कर वेद विद्या का प्रबल प्रचार करना चाहते थे। महर्षि दयानन्द वैदिक राज्य विधान का सूत्र सचालन कर के मानव को देव बनाना चाहते थे। विश्व के मानव मात्र को महर्षि दयानन्द जी धर्म अर्थ, काम तथा मोक्ष का अधिकारी बनाना चाहते थे। सोलह सस्कारो के आधार पर मानव का महर्षि दयानन्द निर्माण करना चाहते थे।

महर्षि दयानन्द जिस काम को अकेले रह कर, कर गये उस कार्य को हम करोडो की सख्या मे रह कर आर्य भाई नही कर पा रहे है। इसका मूल कारण क्या है?

इसका मूल कारण यह है कि हमारे जीवन मे श्रद्धानन्द जैसी श्रद्धा नही है। महर्षि दयानन्द जैसा तप नही है। धर्मवीर प० लेखराम जैसी तडप और आग नही है।

ऐ आर्य बन्धुओ आओ श्रद्धालू बनो अपने निजि स्वार्थों को त्याग कर राष्ट्र निर्माण महायज्ञ में जुट जाओ। वैदिक साम्राज्य स्थापित करके वेद-विद्या के प्रचार में अपनी सारी शक्तियों को लगा दो।

आज यह ध्यान देकर सुनो। राज्य सत्ता के बिना इस युग मे देश का सुधार नही हो सकेगा। इसलिए आगामी चुनाव मे देश-द्रोहियो को धर्म-विरोधियो को अपना बहुमूल्य वोट कदापि मत दो। आर्यसमाज के उम्मीदवारो को ही अपना बहु-मूल्य वोट देकर वैदिक साम्राज्य की स्थापना मे जुट जाओ।

यदि भारत वर्ष देश को पुन, विश्व को गुरू बनाना चाहते हो तो आर्य भाईयो और बहिनो राज्य शासन का सूत्र सचालन करो। अपने कीमती वोटो के आधार पर धर्म शून्य कांग्रेस साम्राज्य को समाप्त करो। कांग्रेस से देश का सुधार, धर्म की रक्षा की आशा रखना निरा भ्रम है। मुझे पूर्ण आशा और विश्वास है कि भारत की समस्त आर्य समाजें तथा सनातन धर्मी भाई बहिने अपनी सनातन वैदिक सस्कृति की रक्षा के लिए सयुक्त रूप से प्रबल प्रयत्न करके राज्य सत्ता को अपने हाथ मे लेकर देश का सुधार करेगी।

देश का दयनीय चित्र

आज देश मे भुखमरी और बेरोजगारी का नग्न चित्र हमारे सामने है। आज तक ढकने के लिए लोगो के पास वस्त्र नही है, पेट की ज्वाला को शान्त करने के लिए अन्न नही है। ऐसी अवस्था मे अन्धा धुन्ध नग्न अश्लील फिल्मो का निर्माण करके मनोरजन के नाम पर जनता के खून-पसीने की कमाई की लूट मच रही है। अश्लील फिल्मो का सब मिलकर बहिष्कार करें।

भारत मे गो वध कांग्रेस के मस्तक पर कलक है। आज स्वराज्य हुए कितने वर्ष बीत गये है इतने दिनो मे गोवध बद जिस सरकार ने नही किया है उस कांग्रेस के उमेदवारो को वोट देना गोवध को प्रोत्साहन देना तथा पाप को प्रोत्साहन देना है। अत: इस कांग्रेस साम्राज्य में सुधार लाने के लिये हमें सोच विचार कर काम करना होगा। जिस देश मे कभी दूध घृत की नदियां बहा करती थी उस देश में आज सवा रुपया किलो पानी मिला दूध बिक रहा है। दस रुपया किलो घृत बिक रहा है। आज जीवन उपयोगी वस्तुओ मे मिलावट चल रही है। देश रसातल की ओर जा रहा है।

जब रोम जल रहा था

जब रोम जल रहा था तो नीरो बासुरी बजा रहा था। उसी प्रकार आज साम्प्रदायक शक्तिया मिल कर देश को टुकडे करती जा रही है, घुटने टेकती जा रही है। कांग्रेस के कर्णधार गफलत की नीद मे चादर तान कर सो रहे है।

पाकिस्तान के विष वृक्ष

कांग्रेस के नेताओ ने प० जवाहर लाल जी नेहरू की भयकर भूल के कारण पाकिस्तान बना जिस मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान बनवाया उसी लीग से कांग्रेसी शासक वोट लेने के लिये गठबंधन करते है। कांग्रेस सरकार की कृपा से पजाब नही रहा है। पजाब का अस्तित्व समाप्त कर के रख दिया गया है। पाकिस्तान के बटवारे मे अरबो रुपयो की सम्पत्ति हिन्दुओ की पाकिस्तान मे रह गई थी। लाखो आदमी जान से मारे गये थे। कराची के बाजारो मे हिन्दू युवा लडकियो का नगा जलूस निकाला गया था। उन दुखद घटनाओ के समाचारो की स्याही अभी सूख नही पाई है। पाकिस्तान से समस्त हिन्दुओं को निकाल दिया गया है। ऐसी अवस्था मे अब भारत के मुसलमानो को पाकिस्तान मे कांग्रेस सरकार क्यो नही भेजती है। मुसलमानो को भारत मे रहने का कोई अधिकार नही होना चाहिये। भारत मे रहे हुए मुसलमान भारत सरकार की जडें खोखली करके फिर देश के बटवारे का ये हल्ला शोर मचायेंगे।

आज देश मे ईसाई मिश्नरी लाखो की सख्या मे आकर नागाओ को बहका कर नागालैंड बनाने मे लगे हुए हैं परन्तु ईसाई मिश्नरियो के ऊपर कोई रोक सरकार नही लगा रही है।

आर्य वीरो देश और धर्म को बचाने के लिये कमर कस कर राजनीति में कूद पडो। वैदिक राज्य साम्राज्य स्थापित कर तब इस ससार में जीवित रह सकते हो अन्यथा जीते जी मरे समान हो।

विचार-तरङ्ग (१०)

(श्री राममूर्ति जी कानिया, एम० ए० नई दिल्ली (१७)

अग्रेजी के प्रसिद्ध विद्वान श्री कारलाईल की बडी सुन्दर उक्ति है। 'The latest gospel in this world is know. They work and do it' अर्थात् विश्व का यह नवीनतम सिद्धान्त है कि अपना कार्य जानो और उसे कर डालो। बात निश्चित रूप से स्फूर्तिदायक है और यदि कार्य निश्चित हो जाए तो आलस्य और प्रमाद का इसमें लेशमात्र भी स्थान नही है। कार्य को जान लेना परम आवश्यक है। उस कार्य की पूर्ति एक अलग विषय है। कार्य को जान लेना ज्ञान है और करना कर्म दोनो का सामञ्जस्य हो जाए तो जिन्दगी स्वर्ग समान है। जीवन मे क्या करना है इसी का निर्णय करने मे जीवन समाप्त हो जाता है और वयोवृद्ध होकर प्रायश्चित का आश्रम लेना पडता है। अतः जो कुछ भी हम सोचे उसे तुरन्त कार्यरूप मे लाने के लिए उतारू हो जाए तो आनन्द की उपलब्धी हो सकती है।

बात कुछ ऐसी है कि जब हम कोई बडा कार्य करने के लिए उतारू होते है तो हमारा ध्यान प्राय, अनेकानेक क्षुद्र झझटो मे उलझ जाता है और हम पथ से भ्रष्ट हो ही जाते है। इस प्रकार गति अवरुद्ध-सी हो जाती है और मुख्य कार्य अछूता अथवा अधूरा रह जाता है। ईश्वर से प्रार्थना करे कि हम अपने जीवन के कार्य का निर्णय कर सके और तत्पश्चात उसको करते समय हमारा ध्यान क्षुद्र बातो मे न उलझे।

कार्य करने मे घबराना कायरता है। यदि कोई व्यक्ति श्रेष्ठ कार्य के निमित्त पूर्ण मन से कठोर परिश्रम भी करता है, उसे कभी थकान अनुभव नही होती। इस प्रकार के कार्य करने मे घोर परिश्रम करते-करते कोई मरा हो, ऐसी बात आज तक तो हम ने सुनी नही।

परिश्रम करने के लिए समय की प्रतीक्षा करना व्यर्थ की बात है। सारी शक्तियो को सजो करके कार्य करने का समय वही है जब यह विचार मस्तिष्क मे आये। कार्य करने का समय यही और केवल यही है। भविष्य के लिए यह स्थापित करना

(शेष पृष्ठ ८ पर)

रजिस्टर्ड नं० पी० १२१

विचार-तरंग

(पृष्ठ ७ का शेष)

कभी भी लाभास्पद नहीं होती। प्राचीन पुरुषों को अपने पुरुषार्थ के बल पर ही सफलता मिलती है न कि किसी और कारण से 'क्रिया सिद्धि: सत्त्वे भवति महता।' अत: लक्ष्य सिद्धि के लिए सतत् कार्य करने का दृढ़ सकल्प करके एक क्षण भी व्यर्थ गवाना अशोभनीय है। कई बार ऐसा देखने में आता है कि हम कार्य के समय को परस्पर की प्रशंसा में अथवा चापलूसी मे ही गंवा देते हैं। स्मरण रहे कि बीतता समय हमेशा के लिए बीत रहा है और प्रयत्न करने पर भी वह हाथ नहीं लगेगा। फिर पछताये क्या होत जब चिड़िया चुग गई खेत। अत: वर्तमान को हाथ से निकलने न दो।

पूर्वजो के गुणगान करना बुरा नहीं। वीरो का पूजन प्रत्येक देश किसी न किसी रूप मे करता ही है। किन्तु पूर्वजो के कार्यों की रटना लगाने से ही तो कल्याण होने वाला नहीं। कल्याण तो अपने ही कार्यों से होगा। अत; अकर्मण्यता और निष्क्रियता के दूषित विचारो को छोड कर्मण्य एव सक्रिय होने की परम आवश्यकता है। याद रखो आपकी आयु को वर्षों से नही कार्यों से ही जाचा जाएगा। कर्मों से ही जीवन सुखमय एव दु:खमय बनता है। उर्दू के एक शायर ने ठीक ही लिखा है।

'अमल से जिन्दगी है बनती है जन्नत भी जहन्नुम भी।'

कार्य करने के बाद फिर आगे की चिन्ता व्यक्ति का काम नहीं। कार्य करते समय कार्य-कर्ता के मन मे यह धारणा न रहे कि उसकी किसी को चिन्ता हो।

आर्यसमाज शक्ति

देहली का ८वां वार्षिकोत्सव ...से १५ मई तक बड़े समारोह से मनाया गया। जिस में श्री ...राम जी महोपदेशक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर की रात्रि को वेद कथा होती रही तथा श्री राजपाल मदन मोहन जी के भजन होते रहे। उत्सव में अनेक विद्वान सन्यासी तथा कविगण पधारे।

आर्य जगत् रोहतक के समाचार

ईसाई अराष्ट्रीय प्रचार विरोध समिति रोहतक की ओर से ५० रु० केरल मे चलने वाले शुद्धि-यज्ञ मे अर्पित किए गए।

आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वाधान मे रोहतक नगर की समस्त आर्य-समाजो का सम्मिलित सत्संग आर्य-समाज माडल टाऊन मे दिनाक १२ जून को सम्पन्न होगा।

केरल से शुद्धि कार्य मे निरत प्रो० प्राजेन्द्र जी जिज्ञासु लिखते हैं कि यहा शुद्ध होने वालो की तो भरमार है. परन्तु अर्थाभाव के कारण कार्य दुष्कर हो गया है। अर्थाभाव इतना विकट है कि शुद्धि यज्ञ के बाद प्रसाद बाटने के लिए भी धन नहीं है। यदि आर्यसमाज इस समय न महानुभावों से प्रार्थना है कि ... कार्य में दान देकर हाथ बटाएं। दान निम्न पते पर भेजें;—

श्री नरेन्द्र भूषण आर्य बी.ए. c/o Aryan youth league & Publishers of "Arya-Bharthi" P.O. Chengannur (Kerala)

आर्यसमाज विक्रमपुरा जालन्धर में

१५. से २१ मई तक प्रतिदिन शानदार कथा का कार्य-क्रम

(समय : रात्रि ८ बजे से ९-३० बजे तक)

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रसिद्ध महोपदेशक श्री ओम् प्रकाश जी आर्य, पंजाब भर के प्रमुख नगरो का दौरा कर के तथा सामयिक परिस्थितियों का गम्भीर ध्ययन करके आ रहे हैं। 'आर्य समाज का आज की परिस्थितियो में क्या कर्त्तव्य है' इस विषय पर वे वेदो और ऐतिहासिक घटनाओ के प्रमाणों-साहित अपने विचार जनता के सम्मुख प्रस्तुत करेंगे। कथा से पूर्व श्री ज्ञानचन्द जी के मनोहर भजन हुआ करेंगे।

समस्त धर्म-प्रेमियों से नम्र निवेदन है कि निश्चित समय पर परिवार सहित दर्शन देकर लाभ उठावें।

साईंदास भल्ला
मन्त्री समाज

आर्य समाज सांवा का उत्सव

२४, २५, २६, अप्रैल ६६ को हुआ जिस मे २० अप्रैल से २३ अप्रैल तक पूज्य प. ओम प्रकाश जी की कथा और क. जगत राम व बस्तीराम जी के मनोहर भजन होते रहे। २४-४-६६ को पूज्य यश जी, उप सभा प्रधान का भाषण हुआ, २६, को डा० ओम प्रकाश जी, सस्कृत स्कालर, प. चन्द्र सैन जी और पूज्य प. ओम प्रकाश जी के उपदेश और प. ज्ञान चन्द जी व क. जगतराम जी व श्री बस्तीराम जी के मनोहर भजन हुए जिनका जनता पर भारी प्रभाव पडा। वेद प्रचार मे १६१/- मार्ग व्यय ५२/- दिया गया।

शोक समाचार

आर्यसमाज सैक्टर ८ चंडीगढ़

मे श्री परमेश्वरी दास जी बहल के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक प्रकट किया गया तथा उनकी आत्मा की सदगति व परिवार को शान्ति व धैर्य के लिए प्रभु से प्रार्थना की गई।

(ब) स्वर्गवास होने से पूर्व लाला जी ने आर्य समाज को ५१००/- का दान देने का जो अंतिम आदेश दिया। उसके प्रति समाज उनका आभार प्रकट करती है।

(स) श्री फकीर चन्द जी मित्तल एडवोकेट के देहात पर भी शोक प्रकट किया गया।

जिला वेद प्रचारिणी सभा होशियार पुर

अपनी बैठक में श्री ला. गिरधारी लाल जी रिटायर्ड रेलवे अकौंटेंट आफीसर की मृत्यु पर हार्दिक शोक प्रकट किया। लाला जी की पवित्र आत्मा को सदगति प्रदान करने की प्रभु से प्रार्थना की। इसी प्रकार श्री परमेश्वरी दास जी बहल की आकस्मिक मृत्यु पर भी गहरा शोक प्रकट किया तथा उनके परिवार से गहरी सम्वेदना प्रकट की गई।

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत् कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर

ओ३म्

आर्य जगत

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे — वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक २२) १६ ज्येष्ठ २०२३ रविवार—दयानन्दाब्द १४१— २९ मई १९६६ (तार प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

शिशिर इन्नु रन्त्य:

यह शिशिर-पतझड की ऋतु भी प्यारी है। जीवन मे ऐसी अवस्था भी आ जाती है जैसी पतझड मे होती है। मनुष्य सम्पत्तिहीन सा बन जाता है। परन्तु इस दशा मे भी निराश न होना चाहिए। साहस न त्यागे।

त्वा स्तुवन्ति कवय:

हे परमेश्वर ! आप की सारे कवि मेधावी, ज्ञानीजन सदा स्तुति करते है, जितने भी बडे २ विद्वान ज्ञानी नर है, वे सारे तेरा यशोगान गाते हैं। तेरा ही स्तवन करते हैं, स्तुति के गीत गाते रहते है—तेरे स्तोता है।

अग्न आयूंषि पवस

हे प्रकाशमय प्रभो अग्निदेव आप कृपा करके हमे आयु स्वास्थ्य दीर्घजीवन प्रदान करे। आप की कृपा से हम दीर्घजीवी, यशस्वी कीर्ति वाले तथा शरीर वाले बनकर कार्य करते रहे—

ग्रीष्म इन्नु रन्त्य:

यह गर्मी की ऋतु भी हमे प्यारी है तपाने और झुलसाने वाली गर्मी से भी डरना न चाहिए। इस से भागना नही चाहिए। यह भी प्यारी समझो। जीवन मे ऐसी दशा आने पर उदास निराश कभी मत हो जाना।

साम वेद से

कांग्रेस दल जब चाहेगा मैं त्यागपत्र दे दूंगी

श्रीमती गांधी की घोषणा

गांधी जी और नेहरू जी की मूलभूत नीतियों से हटने के आरोप सर्वथा गलत

समाजवादी समाज की रचना का कोई विकल्प नहीं

मैं सेवा भावना को लेकर प्रधानमन्त्री बनी हूं : ऐश्वर्य के लिए

बम्बई—आज यहा प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी ने कांग्रेस महासमिति के अधिवेशन को सम्बोधित करते हुए कहा कि "यदि मुझ पर अपने पिता स्वर्गीय पंडित नेहरू के सिद्धान्तो और मूल नीतियो से हटने का आरोप लगाया गया तो मैं एक दिन भी प्रधान मन्त्री पद पर नही रहूंगी" श्रीमती गांधी ने आगे कहा कि वह भारत की आर्थिक और वैदेशिक नीतियों के निर्माण के समय बिलकुल निकट सम्पर्क मे रही हैं और उन्हे बिल्कुल सही समझती है। प्रधानमन्त्री ने कहा कि वह इसलिए प्रधानमन्त्री बनी हैं कि लोगो की बेहतर ढंग से सेवा कर सकें नाकि किसी ऐश्वर्य के लिए। यदि उनका दल उन्हे नहीं चाहता तो वह किसी भी समय त्यागपत्र देने को तैयार हैं।

श्रीमती गांधी ने अपने दल के लोगो से अपील की कि वे सभी मत भेदों को भुलाकर संगठित हों, साहस से अपने सामने महान कार्यों का सामना करें। समाजवादी-व्यवस्था लागू करने के सिवा हमारे सामने कोई विकल्प नही। कांग्रेस आज अनेक ऐसे दायित्व भली प्रकार निभा नही रही जो उसके जिम्मे हैं। श्रीमती गांधी ने इस आलोचना से सहमति प्रकट की कि कांग्रेस द्वारा स्वीकृत अनेक प्रस्तावों को पूर्णतया क्रियान्वित नहीं किया गया। वह इस मामले की जांच करेंगी। सरकार कांग्रेस के सभी विचार नही मान सकती क्योंकि यहां विभिन्न मामलो पर अलग-अलग दृष्टिकोण हैं। प्रधान मंत्री ने कहा कि जब तक आर्थिक विकासकी गति तेज नही होगी लोगो के लिए लोकतन्त्र का कोई अर्थ नही होगा।

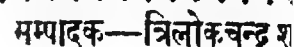
विदेशी सहायता का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि अचानक इससे इन्कार कर देना न्यायोचित नही होगा। खाद्य समस्या के बारे मे उन्होने कहा कि यदि कही गलती है तो उसे सुधारना होगा। तात्कालिक प्रश्न कृषि उत्पादन बढ़ाने का है। यदि किसान ने प्रगति न की तो राष्ट्र तबाह हो जाएगा। श्रीमती गांधी ने कहा कि जहां तक भारत का सम्बन्ध है उसे संसार की कोई शक्ति उसकी वर्तमान नीतियो से हटा नही सकती। आज विदेशी दबाव अकेले भारत पर ही नही सभी देशों पर है लेकिन हमे अपने ऊपर पूरा भरोसा है।

देश की उन्नति का सर्वोत्तम माध्यम शिक्षा : सूर्यभानु

फगवाड़ा— कल यहां रामगढ़िया ट्रेनिंग कालेज के पारितोषिक वितरणोत्सव की अध्यक्षता करते हुए पंजाब विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री सूर्यभानु जी ने कहा कि शिक्षा ही माध्यम है जिस से देश उन्नति के शिखिर पर पहुंच सकता है। विलियम जेम्ज का उल्लेख करते हुए उन्होने कहा कि यदि हमें सही ढंग से लडाई का विकल्प ढूंढना है तो केवल शिक्षा ही हो सकती है और वह भी तब जब कि शिक्षा सही ढंग से दी जाए। पंजाब विश्वविद्यालय में फुटबाल चैंमपियनशिप जीतने वाली टीम के खिलाड़ियों को सबोधित करते हुए श्री सूर्यभानु जी ने कहा कि यह जीत अंतिम जीत नहीं होनी चाहिए बल्कि उन्हे इससे भी बेहतर बनने की कोशिश जारी रखनी चाहिए। उन्होंने ट्रेनिग पाने वाले अध्यापकों से अपने अंदर विश्वास पैदा करने और समाज मे फैली बुराइयों को दूर करने में लोगों को प्रेरणा देने को अपील की।

★ महर्षि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द तथा धर्मवीर प० लेखराम जी के अन्तिम शब्दो को ध्यान पूर्वक सुनो और उनके स्वप्नो को और उनके अधूरे कार्यों को पूर्ण करने के लिए ओ३म् का झंडा धारण करके सिर पर कफन बांध कर मौत को भी ललकार कर, विश्व-विजय पथ पर आगे बढो।

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी


सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र श

इन्द्रिय स्पर्शाः मन्त्र नं० २

ओ वाक् वाक् । ओं प्राणः प्राणः ।
ओं चक्षु, चक्षु, । ओं श्रोत्रम् श्रोत्रम्।
ओ नाभि; । ओ हृदयम् । ओ कण्ठ; ।
ओ शिर, । ओ बाहुभ्या यशो बलम् ।
ओ करतल कर पृष्ठे ॥

शब्दार्थ ;— वाक् वाक् ;—मेरी वाणी और वाणी के उच्चारण करने वाली जिह्वा को) प्राणः प्राणः :—मेरी नासिका तथा नासिका द्वारा लिए जाने वाले प्राण वायु को) चक्षुः चक्षुः मेरी आख और आख द्वारा देखने वाली शक्ति को) श्रोत्रम् श्रोत्रम् :—(मेरे कान और कानो द्वारा सुनने वाली शक्ति को) नाभिः—(मेरे शरीर के समस्त भागो मे नस - नाडियो द्वारा रुधिर पहुचाने वाली नाभिः अर्थात शरीर के केन्द्र स्थान को) हृदयम् :—(मेरे शरीर के गन्दे और स्वच्छ खून को निष्कासित और प्रविष्ट करने वाले एवम् जीवन स्थिर रखने वाले दिल किन्तु ... आवाज के उत्पन्न करने वाले कण्ठ रूपी बक्स को)

शिरः—(मेरे शरीर सर्व-उत्तम भाग अर्थात् सिर को)

बाहुभ्याम् (शरीर के समस्त अगो के रक्षा करने वालीदोनो बाजुओ को)

यशोबलम् —(ऐसा बल, जो यश युक्त हो)

करतल कर पृष्ठे : —(दोनो हाथो की हथेलियो तथा हाथ के पीठ वाले भागो को)

सरल अर्थ (गद्य मे) :—हे परम पिता परमात्मा, आप कृपा करके मेरी जीह्वा, नासिका आखो तथा कानो और उनकी बोलने, सूघने व सास लेने, देखने और सुनने वाली शक्तियो को, इसके अतिरिक्त नभि, दिल, गले, सिर तथा दोनो बाजुओ को ऐसी शक्ति प्रदान कर, ताकि इन इन्द्रियो से जो भी क्रिया करू, वह कीर्ति युक्त हो।

सरल अर्थ (पद्य मे) :—

दीन दयाल दया के सागर ।
दीजिए हमको बुद्धि उजागर।
ज्ञान-कर्म दस इन्द्रिय मेरे ।
कभी न जाए पाप के नेडे ॥
रस भरी शुभ बोले बाणी ।
प्राण पवित्र करो हे स्वामी ॥
दो आखे दो कान प्रभु जी ।
देखे, सुनें पवित्र कथा जी ॥
नाभि, हृदय कण्ठ भुजाए ।
हाथो से न पाप कमाए ॥
यश-बल जितना मिले प्रभु जी ।
शुभ कर्मों मे लगे सदा ही ॥

धार्मिक चर्चा—

आओ! हम वैदिक सन्ध्या के सागर में डुबकी लगाएं, ताकि अमूल्य रत्न पाएं

(परमानन्द जी "विद्यार्थी" रोहतक)

व्याख्या :—हे ईश्वर !

मुझे शक्ति प्रदान कर, कि मैं पवित्र वेदका **ज्ञान** प्राप्त करके आपके पवित्र वेद ज्ञान के अनुसार **वैदिक धर्म** पर चल कर अपने जीवन को उन्नत करू और सफली भूत करू । हे माता ! मुझे बल दो, ताकि **काम वासना** पर काबू पा कर शारीरिक रोगों से छुटकारा पाऊ । हे ईश ! मुझे साहस दें, कि मैं शरीर की किसी भी कर्म तथा ज्ञान इन्द्रिय से किसी भी प्रकार की, किसी भी हालत में **झूठी** क्रिया न करूं, ताकि मेरा जीवन शात रहे । प्राणों से प्यारे प्रभु ! मुझे ताकत दें, ताकि **ब्रह्म यज्ञ** अर्थात आप को सर्वव्यापक समझता हुआ आप को पाने अर्थ शुभ कर्मों द्वारा **प्रयत्न-शील** रहू ।

विशेष संकेत :—(१) यह मन्त्र इन्द्रियो को पवित्र तथा शक्ति प्रदान करने वाला है। (२) किसी वेद का मन्त्र नही, अपितु जगत् गुरु दया नन्द जी महाराज ने पवित्र वेद वाणी से इन शब्दो, वाक्यो को चुन कर शारीरिक उन्नति अर्थ वैदिक सन्ध्या मे क्रम दिया हैं। (२) भक्त को भगवान का निकटतम स्थान लेने से पहले शरीर को बलवान बनाना चाहिए, बलवान ही नहीं, अपितु पवित्र वेद वाणी अनुसार हरेक कर्म व ज्ञान इन्द्रिय से पवित्र क्रिया करनी चाहिए। (३)बलवान तथा स्वस्थ शरीर मे बलवान तथा स्वस्थ आत्मा रह सकता है। (४) यदि शरीर मे आलस्य हो, तो उपरोक्त विधि अनुसार जल स्पर्श करके पवित्रता की भावना हृदय मे लानी चाहिए। यदि पानी न हो, तो व्यायाम और प्राणायाम से भी आलस्य दूर किया जा सकता है। पानी तो एक बाह्य (बाहर) की चीज है अतः जल न मिले, जिससे स्नान किया जाए या पाच स्नानी की जाए, तो सन्ध्या करनी नही छोडनी चाहिए। पानी का सम्बन्ध तो शरीर से है, आत्म-परमात्मा के मिलन से नही। अतः ब्रह्म मुहूर्त (रात्रि के तीन या चार बजे) परमात्मा के ध्यान मे (वैदिक सन्ध्या अर्थ सहित) जुट जाना चाहिए। प्रेम-श्रद्धा से सन्ध्या करने से ध्यान लगता है। जैसे हम कहें, वैसा मनन और आचरण करें। सन्ध्या के पीछे ओ३म् या गायत्री का जाप करें, पहले नहीं।

आओ! हम वैदिक सध्या रूपी सागर में डुबकी लगाए ताकि अमूल्य रत्न प्राप्त करें। नं० ३

मार्जन मन्त्राः नं० ३

ओ भूः पुनातु शिरसि । ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः । ओ स्वः पुनातु कण्ठे । ओ महः पुनातु हृदये । ओ जनः पुनातुः नाभ्याम् । ओ तपः पुनातु पादयोः । ओ सत्य पुनातु पुनश्शिरसि । ओ ख ब्रह्म पुनातु सर्वत्र ॥

शब्दार्थ—ओ (परम पिता परमात्मा का निज नाम) भूः (प्राण स्वरूप) पुनातु (पवित्र करो) शिरसि (मेरे सिर को) स्वः सुखो के देने वाले) पुनातु (पवित्र करो) कण्ठे (गले को) महः (सब से महान) पुनातु (पवित्र करो) हृदये (दिल को) जनः (पिता) पुनातु (पवित्र करो) नाभ्याम् (मेरी नाभि को) तपः (पापियो को उनके कर्मों अनुसार सजा देने वाले) पुनातु (पवित्र करो) पादयोः (मेरे दोनो पावो को) सत्य (सत्य स्वरूप) पुनातु (पवित्र करो) पुनः (फिर) शिरसि (शिर को) खम् (आकाश की भाति) ब्रह्म (महान ईश्वर) सर्वत्र (सब स्थानों पर)।

सरल अर्थ गद्य में—हे प्राणो से प्यारे ओ३म् जी ! मेरे सिर को बुरे विचारो से रहित करके पवित्र रखो। हे मेरे दुःखो के दूर करने वाले परमात्मा ! आप कृपा करके मेरी आखो को रोगो तथा अशुभ दृश्यो से दूर रखो, ताकि पवित्र बनी रहें। समस्त सुखों के दाता ! मेरे गले को पवित्र करें, ताकि स्वर-बक्स से निकलने वाली प्रत्येक ध्वनि शुद्ध, स्पष्ट रूप मे निकले । हे सबसे महान परमेश्वर ! आप दया करके मेरे दिल को पवित्र करो, ताकि जहा अश्लील भाव स्थान न पा सकें, वहां जीवन गति में किसी प्रकार की बाधा न पड़े। हे संसार के उत्पादक तथा पालक ! आप मेरी नाभि चक्र (धुन्नी) को पवित्र रखें, ताकि शरीर के समस्त अंगों तथा भागों में भोजन द्वारा मिलने वाली शक्ति ठीक ढंग से पहुचा सके और न ही किसी प्रकार की पीड़ा हो हे। पापियों को सजा देने वाले प्रभु ! आप सदैव ही मेरे पांवों को पवित्र कर ताकि मैं किसी बुरे स्थान पर बुराई करने निमित्त न जाऊं और न ही मेरी टांगों और पांवों मे किसी भी प्रकार का रोग हो। हे सत्‌चित् आनन्द स्वरूप मेरी माता ! दूसरी बार फिर प्रार्थना करता हूं, कि मेरे सिर को हर अवस्था मे पवित्र करे, क्योकि शुद्ध व पवित्र विचारो वाले शिर के शरीर में आपके दर्शन पा सकता हूं। सर्वत्र और सर्व व्यापक मेरे स्वामी ! कृपा करो, दया करो, कि मेरे शरीर के समस्त अंगो को चाहे प्रत्यक्ष हैं अथवा प्ररोक्ष अग हैं, इन सबको पवित्र करें अर्थात् मैं इनसे कोई ऐसी क्रिया न करू, जो आप की आज्ञा का उल्लघन करने वाली हो।

सरल अर्थ पद्य मे—

प्राणो मे ही प्यारे भगवन !
शिर को पवित्र करो निशि दिन ॥
दुःख विनाशक दीन दयाल।
आखो मे रहे ज्ञान उजाला ॥
सर्व व्यापक सुखो के दाता।
करो पवित्र कण्ठ विधाता ॥
महा प्रभु तुम पूज्य हमारे।
करो पवित्र हृदय हमारे ॥
करो पालना जगत बना कर।
नाभि मेरी करो पवित्र ॥
दंड दाता प्रभु ज्ञान भंडारा।
रहे पवित्र मार्ग हमारा ॥
सत्य स्वरूप अविनाशी ईश्वर।
पुनः पवित्र करो मेरा शिर ॥
सत्य स्वरूप दया सागर हो।
अवनाशी तुम अजर अमर हो ॥

व्याख्या—प्राणो से प्यारे भगवान! आप मुझे शक्ति प्रदान करें, कि मैं आपके पवित्र वेद का ज्ञान प्राप्त कर के जीवन को उन्नत करूं। हे दुःखों को दूर करने वाले दीन दयाल ! मुझे शक्ति मिले, ताकि आपके पवित्र वैदिक धर्म पर चल कर जीवन को सफलीभूत करूं। हे सुखों के दाता ! मुझे बल दो, ताकि काम वासना पर नियन्त्रण पाकर शारीरिक दुःखो से छुटकारा पाऊं। हे पिता ! मुझे ताकत दो, ताकि मैं शरीर के किसी भी अंग से किसी भी हालत में चोरी की क्रिया न करूं। हे समस्त संसार के पालक ! मुझे

(शेष पृष्ठ ८ पर)

भारत का आर्य जन-सावधान

(श्री महानन्द सचदेवा बी० एड छात्र, रोहतक)

कोई समय था जब कि सारे संसार में आर्यों की तूती बोलती थी। सारा ससार 'वैदिक धर्म की जय' का निनाद करता था। परन्तु आज कहां है वह स्वर धारा ? कहा है हिन्दुओ का चक्रवर्ती साम्राज्य ? क्या यह सब झूठ था ? नही यह सब सत्य था परन्तु आज हमे यह सब कुछ कल्पना मात्र लगता है। आज अपनी दशा देख कर हृदय हाहाकार कर उठता है, आखो के आगे अन्धेरा छा जाता है और मस्तिष्क चेतना शून्य सा हो जाता है कि हम क्या थे और क्या हो गये। मित्रो इसके उत्तरदायी हम स्वय हैं। अपनी मूर्खता, अज्ञानता व चेतना हीनता के कारण आज हम इस विपन्न अवस्था को आ पहुचे है।

अभी तो हमारी न जाने क्या अवस्था होती यदि भारत के भाग्या-काश पर एक बाल दिवाकर का उदय न होता। यह बाल दिवाकर और कोई न था अपितु गुरुवर दयानन्द ही था जिस के सिहनाद से भयभीत हो कर मुस्लिम व इसाई रूपी सियार दुमदुमा कर भागने लगे। गुरुवर द्वारा लगाये गये शुद्धि के पौधे को न जाने किन-किन अमर वीरो ने अपने पवित्र रक्त से सिंचत किया। यह वह समय था जबकि भारत माता पराधीनता की बेड़ियो से जकडी हुई कराह रही थी। समस्त ब्रिटिश सत्ता भारत को ईसाई बनाने का कृतसकल्प कर चुकी थी। पर वाह रे धर्म के दीवाने आर्यो ! तुमने अपने कोर्यों से ब्रिटिश सत्ता को झकझोर दिया। उनके हृदय मे हर समय महर्षि के आदेश को पूरा करने की तड़प थी।

जब भारत वर्ष स्वतन्त्र हुआ तो इसाई पादरी भी अग्रेजो के साथ बोरिया-बिस्तर गोल कर जाने लगे थे। पर हाय रे दुर्भाग्य ! तूने हमारा पीछा न छोड़ा। भारत की वर्तमान सरकार ने 'धर्म निरपेक्ष राज्य' की घोषणा कर दी। परिणाम स्वरूप ईसाई फिर से जम गये और अपने काले कारनामो से हजारो गरीब हिन्दु आदिवासियों व पिछड़ी जाति के लोगों को ईसाई बनाने लगे। यदि इस का प्रमाण देखना हो तो नागालैंड मिजो प्रदेश छोटा नागपुर, उड़ीसा, केरल इसका प्रमाण है। अब कुछ दिनों में अंडेमान, निकोबार से एक नया नागालैंड, मिजो लैंड की माग उठ खड़ी होगी। केरल में इस समय ५०% लोग ईसाई व मुसलमान बन चुके हैं।

आर्यो ! जागो, शत्रु तुम्हारी जडे काट रहा है। यदि आज तुम न जागृत हुए तो याद रखो कि आगामी १०-२० वर्षों में केवल अगुलियो पर गिनने लायक हिन्दु रह जायेंगे। धर्मसिंह, रामकृष्ण के स्थान पर हमारे नाम रिचर्डसन, एडवड आदि होंगे। दोस्तों जमाने की चाल को समझो। तेल देखो और तेल की धार देखो वाली उक्ति चरितार्थ करो। ईसाई-मुसल-मानों की प्रत्येक बुरी चाल का उत्तर वैसी चाल चल कर दो।

दक्षिण भारत मे स्थिति विषम हो चुकी है। हिन्दु लडकिया भाग कर मुसलमानो से निकाह कर रही हैं। केरल प्रान्त मे इसाई लोग अनु-चित हथकन्डे अपना कर भोले भाले लोगो का धर्म परिवर्तन कर रहे हैं। छुआछूत का भूत आज भी मुंह फाडे खडा है। परन्तु हम चुपचाप अपने घर को लगी आग का तमाशा देख रहे हैं। दिन रात यही नारा लगाते हैं 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' पर भारत से विधर्मियों को भगा नही सकते। अपनी शक्ति का अपव्यय पद प्राप्त करने, एक दूसरे पर कीचड उछालने तथा एक दूसरे की टाग खेंचने मे कर रहे हैं। इस आग को बुझाने का प्रयत्न नही किया जा रहा। यदि थोडा-सा कार्य करते है तो उसे पहाड की भाति बडा करके वर्णित करते है तथा अपने मुह मिया मिट्ठू बन जाते हैं।

दक्षिण के सुन्दर हरियाले प्रान्त केरल मे इसाईयो से केवल मात्र दो व्यक्ति ही टक्कर ले रहे है एक है दयानन्द ब्राह्म महाविद्याय हिसार के स्नातक श्री नरेन्द्र भूषण बी० ए० तथा एक वही के सन्यासी महोदय। मान्यवर नरेन्द्र जी किसी प्रकार के सन्मान की लालसा न कर विदेशी शक्तियों से जूझ रहे हैं। इस वीर पर हाल मे ही रात्रि के समय जब वह tour से लौट रहा था। ईसाईयो ने घातक आक्रमण कर दिया तथा मरा हुआ जानकार छोड गये। वहा से गुजर रहे हिन्दु राहगीरों ने उन्हें उठाकर हस्पताल पहुंचाया। इस व्यक्ति ने केरल मे तूफान ला दिया है। ईसाईयों के हौसले पस्त हो गये हैं। दो वर्ष के अल्प समय मे इसने सैंकडो लोग शुद्ध करके हिन्दू बना लिये हैं। दयानन्द कालेज शोला-पुर के प्राध्यापक व आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्रीयुत राजेन्द्र जी जिज्ञासु जो आजकल केरल मे नरेन्द्र जी के साथ कार्य कर रहे हैं, लिखते हैं कि हजारो लोग इस प्रतीक्षा मे हैं कि कब उन्हे शुद्ध किया जायेगा। परन्तु इन धर्म के दीवानो के पास धन की अत्यन्त कमी है। यज्ञ करने के लिये, यज्ञोपरान्त प्रसाद बांटने तथा चेगनूर से कोचीन जहा लोग भारी तादाद मे शुद्ध होने को बैठें हैं, तक जाने के लिए मार्ग व्यय भी नही है।

आर्यो ! अरे भारत के हिन्दुओ ! आज केरल मे शुद्धि का महायज्ञ प्रारम्भ हुआ है। आओ अपनी जिम्मे-वारी पहचानो। यह समय बार बार हाथ नही आता। धन के क्रीत दास मत बनो। इस पवित्र महायज्ञ मे अपनी आहुति डाल दो। धर्म-जाति के परवाने जो आज धन की कमी महसूस कर रहे है, उनकी झोली भर दो। यदि तुम चाहते हो कि नागा लैन्ड, मिजो लैन्ड की समस्याए समाप्त हो जायें, राष्ट्र एकता के सूत्र मे बन्ध जाए तो इस महायज्ञ की ज्वाला को और अधिक प्रज्वलित करो तथा इसे समस्त भारत मे फैला दो।

मुझे आशा है कि आर्य जन ! विशेषतया उत्तर भारत के आर्य-जन तथा हिन्दू मात्र इस ओर ध्यान देंगे। उत्तर भारत की समस्त आर्य समाजे, सनातन धर्म सभाए' आर्य प्रतिनिधि सभाए तथा सार्वदेशिक सभा के अधि-कारी पारस्परिक झगडो को छोडकर कमर कस कर विदेशी शक्तियों के विनाश के लिये वज्र प्रहार करेंगे और वे लोग आज शुद्ध होने के लिये हमारी तरफ आशा लगाये बैठे हैं, को शुद्ध करने मे श्रीयुत नरेन्द्र भूषण की दक्षिण में तथा अन्य वीरो की जो छोटा नागपुर, नागालैंड मे ईसाई, मुसलमानो से टक्कर ले रहे है, सहायता करेंगे तभी हम कह सकेंगे।

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'

सत्यमेव जयते नानृतम्

सत्य की जय होती है झूठ की कभी नही।

महता रामचन्द्र जी शास्त्री

भूतपूर्व महोपदेशक आर्य प्रादेशिक सभा

(लेखक श्री भगतराम जी शर्मा)

(अफ्रीका वाले)

(गताक से आगे)

परन्तु महता जी ने उत्तर दिया कि वह व्याख्यान के समय नोट ले लिया करे अथवा जो कोई Short hand जानता हो उसके द्वारा लिखा लिया करे। जैसा कि महात्मा जी ने लिखा है कि महता जी वेद मन्त्रो की झडी लगा देते हैं वस्तुत: उनकी वेदो मे बहुत अच्छी गति है। जिस विषय पर भी बोलेंगे वह वेद मन्त्रो से ओतप्रोत होगा। महता जी वेद विषय को वेद मन्त्रो के प्रमाणो से सिद्ध करते है।

आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव २२ तथा २३ जून सन् १९६६ शनि और रवि दो दिन आर्यसमाज मन्दिर मे सम्पन्न हुआ था। उनके विषयो का ब्योरा निम्न प्रकार था—

(१) मानवीय जीवन का वैदिक आदर्श।

(२) वैदिक सदाचार।

(३) राष्ट्रीय जीवन मे वेद और आर्यसमाज की आवश्यकता।

उपरिलिखित वेद विषयक व्याख्यानों से महता जी के वेद पर अधिकार का सहज मे ही अनुमान लगाया जा सकता है मन्दिर खचाखच भरा हुआ होता था। उस उत्सव पर कार्यक्रम में नैरौबी से अथवा भारत से कोई भजनो-पदेशक न पहुच सकने के कारण मुझे ही प्रोग्राम भुगताना पडा था। महता जी अफ्रीका मे हिन्दी मे बोलते बोलते कही २ पजाबी वाक्य भी बोलजाते थे। एक दिन एक गुजराती भाई ने महता जी से शिकायत की कि 'पडित जी ! आप थोडी बार पजाबी ही पजाबी बोल जाते है तो बोले—प्रवाह में ऐसा हो जाया करता है। अस्तु मैं ध्यान रखू गा।' महता जी मितभाषी और मिताहारी है। अभिमान उनको छुआ तक नही। भूल को स्वीकार करने मे कभी ननुनच नही करते। यह उनके जीवन मे विशेष गुण है। सादगी की तो साक्षात् मूर्ति हैं। वेष है उनका बन्द गले का कोट, पाजामा और टसरी।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

महता रामचन्द्र जी शास्त्री

(पृष्ठ ७ का शेष)

१९४८ मे जब मैं अफ्रीका से दीर्घावकाश पर आया था तो जालन्धर में आर्यसमाज मन्दिर (अड्डा होशियारपुर) मे उनके दर्शन किये थे। मैंने उनकी सेवा मे प्रार्थना की थी कि वह अफ्रीका प्रचारार्थ चलें। परन्तु उन्होंने अस्वस्थ रहने के कारण मेरी प्रार्थना अस्वीकृत कर दी थी। मैंने भी उन्हे उस समय निर्बल पाया था। दारेसलाम के आर्य भाइयो का कुशल समाचार पूछ कर बहुत प्रसन्न हुए थे। सदा के लिए भारत लौटने पर सन् १९५४ से लेकर आज तक उनके दर्शनो का सौभाग्य प्राप्त न हो सका।

श्रुति, स्मृति, पुराण, इतिहासादि के प्रमाणो से अलकृत और प्रबल युक्तियों से सुभूषित महता जी का ग्रन्थ 'पतितो की शुद्धि सनातन है' शुद्धि के विरोधियो के लिए अमोघ अस्त्र है। माघ स० १९८० विक्रमी तदनुसार जनवरी सन् १९२४ मे तृतीय बार छपा था। भूमिका लेखक हैं पंजाब केसरी स्व० लाला लाजपत राय जी। २ अक्तूबर सन् १९०९ को लिखी थी जो २० पृष्ठो पर है। मै जब भी भेडा-तलवाड़ा से बाहिर संस्कार, उत्सव, शुद्धि के अवसर पर अथवा मेले पर प्रचारार्थ जाता था तो यह पुस्तक भी साथ ले जाता था। मेरे पास 'पतितो की शुद्धि सनातन है' की दो प्रतिया हैं। एक प्रति फालतू है। यदि किसी आर्य भाई को आवश्यकता हो मुझ से मगवा सकता है। जिस का पत्र पहिले आयेगा वह इसे प्राप्त करने का अधिकारी होगा। डाक व्यय भी मेरे जिम्मे। पता—

५२, माडर्न कालोनी, रेडियो स्टेशन के निकट, जालन्धर नगर।

'रामायण से शिक्षाएं' विषय पर व्याख्यान मे महता जी ने एक महत्व की बात कही थी कि 'पश्चिमी विद्वान् कहते हैं कि रामायण कपोल कल्पित है। इस के पात्र राम सीता आदि कोई नही हुए। ऐसा मान भी लिया जाये तो जिस बुद्धिमान् ने ऐसा शिक्षा प्रद ग्रन्थ रचा उस भारतीय के मस्तिष्क की सराहना होनी चाहिए।'

ऐसे विद्वान् का जीवन धन्य है। परमात्मा महता जी की आयु दीर्घ करे ताकि वह आर्यसमाज का पथ प्रदर्शन कर सकें।

आर्यसमाज अखनूर (जम्मू)

निम्न दानी सज्जनो ने ध्वस्त आर्य समाज मन्दिर के निर्माणार्थ धन से जो सहायता की हम उनके कृतज्ञ हैं और आशा करते हैं अन्य दानी सज्जन जिनके हृदय मे आर्यसमाज की कुछ तड़प काम करी है वे भी अपनी पवित्र कमाई मे से यथा शक्ति सहायता करते हुए पुण्य के भागी बनेंगे।

दानदाता—हरि निवास कौशल 10/-, रामप्रकाश नागपाल 10/-' श्री मूलचन्द्र जी गुरदासपुर 5/-, श्रीमती के. पी. बाली राची 10/- डा. जगदीशचन्द्र जी रोहतक 20), ओमप्रकाश जी मेहरा पानीपत 5), अमृतसर लोम फैक्टरी% श्री मदनजीत जी मन्त्री 20), आर्य समाज योगेन्द्रनगर 25), आर्यसमाज फरीदकोट 100), आर्य समाज मण्डी(मोगा) 101)' आर्यसमाज शाहबाद (करनाल)% श्री मुन्शीराम जय भगवान 101), आर्यसमाज दीनानगर 154) 60 न. पै. ला० परमेश्वरीदास जी बहल ठेकेदार लुधियाना 100), कृष्णलाल जी गुप्त अखनूर 10),।

कुलयोग—672.60 न. पै.

—जियालाल आर्यमन्त्री समाज

आर्यसमाज पुरानी मंडी जम्मू में

वैदिक धर्म प्रचार

आर्य समाज पुरानी मडी जम्मू तथा बक्षी नगर मे १६. ४. ६६ से श्री मेलाराम जी रेडियो सिंगर (सभा की ओर से) पं० ओम प्रकाश जी शर्मा देहरादून वाले, तथा डा० भक्तराम जी प्रचारार्थ पधारे प्रचार कार्य उत्साह पूर्ण रहा। जनता ने अच्छा सहयोग देकर समाज के अधिकारियो का उत्साह वर्धन किया।

इन स्थानो के अतिरिक्त रणवीर हिस पुरा, बिशनाह आदि स्थानो मे भी पं० हरिश्चन्द्र जी शास्त्री व मेला राम जी के व्याख्यान और भजन होते रहे। आर्य समाज पुरानी मण्डी की ओर से १०१/- वेद प्रचार, ५१/- शिवरात्रि फड, कुल १५२/-प्राप्त हुए।

—मोहन लाल मोत्याल मन्त्री समाज

आर्य जगत के पाठकों से निवेदन

आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं और आर्य बन्धुओं की सेवा में यह लिखते हुए हमें हर्ष होता है कि आप की सभा के प्रमुख पत्र आर्य जगत् की अवस्था को सुधारने की ओर पग उठाए गए हैं। इस का टाईप बदल दिया गया है। मुख पृष्ठ का ब्लाक भी बदला जा रहा है। इससे पत्र के सौंदर्य में वृद्धि हुई है। अब इस की उपयोगिता भी बढ़नी चाहिए। आप सभी से प्रार्थना है कि अपने बहुमूल्य लेख लिख कर भेजें। इसके साथ इसकी ग्राहक संख्या बढ़ा कर सभा की सहायता करें। इस से भी इस पत्र की उपयोगिता बढ़ जाएगी।

इस महंगाई के समय में सभी समाचार पत्रों का मूल्य बढ़ चुका है। फिर भी सभा प्रचारार्थ इस पत्र को पुराने मूल्य पर ही दे रही है। इस से इस का घाटा बढ़ रहा है। यह यत्न करें कि यह पर्चा सभी आर्य परिवारों में पहुंचे जिस से इस घाटा को पूरा करने में कुछ न कुछ [illegible]ता आवश्य मिलेगी।

धन्यवाद।

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार

बडी अच्छी दशा में चल रहा है। इस वर्ष इसके उपदेशक विभाग में 20 छात्र दाखिल करने हैं। जोकि शरीरसे पूर्ण हृष्ट-पुष्ट हो आयु १६ वर्ष से २० वर्ष तक के अंदर होनी जरूरी है। शिक्षा हिन्दी सस्कृत लेकर दसवी पास की हो। उपरोक्त योग्यता के साथ अगर आयु कम भी होगी तो उन्हे दाखिल कर लिया जाएगा। ऐसी दशा मे उन्हें एक वर्ष अधिक लगाकर विद्यालय में शिक्षा पानी होगी। प्रवेश जुलाई में होगा। प्रार्थनापत्र १५ जून तक श्री आचार्य जी दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार के नाम आने चाहिएं। जीवन की सभी आवश्यकताएं विद्यालय ही वहन करेगा। पूर्ण कोर्स चार वर्ष का है।

नोट — शिक्षा पूर्ण कर लेने के पश्चात भारत के भिन्न २ भागों में वेद प्रचारार्थ जाना होगा।

मुरारीलाल शास्त्री उप आचार्य विद्यालय

आओ हम वैदिक....

(पृष्ठ २ का शेष)

शक्ति मिले, ताकि ब्रह्म यज्ञ अर्थात् आपको सर्वत्र सर्व-व्यापक जानकर आपके दर्शन करने निमित्त शुभ कर्म करके जीवन पर्यन्त प्रयत्नशील रहू।

विशेष सकेत :—१. यह पवित्र मन्त्र सन्ध्या मे तीसरा स्थान रखता है, भगवान दयानन्द जी ने इसे मार्जन मन्त्र के नाम से पुकारा है। यदि हम शुद्ध जल शरीर के प्रत्येक अग पर छिड़के और शब्द-अर्थ द्वारा ओ३म् का ध्यान करे और पवित्रता की भावना को हृदय में स्थान दें, तो शरीर का आलस्य अवश्य भावी दूर हो जाता है। परन्तु वैदिक सन्ध्या करने से पहले नहाये या न नहायें, जल मार्जन करें या न करें। किन्तु शरीर का आलस्य अवश्यमेव दूर करें। चाहे व्यायाम करें अथवा प्राणायाम। क्योंकि पानी का सम्बन्ध केवल शरीर से है अत: जल छिड़कने की महत्ता को प्रथम स्थान न दें। ताकि ब्रह्म महूर्त का समय सन्ध्या के बिना गुजर न जाए। (२) यह वेद मन्त्र नही, अपितु प्रभुवर दयानन्द जी महाराज ने वेद-वाक्य चुन कर इसे क्रम दिया है। (३) जैसा कि हम पवित्रता चाहते हैं, वैसा हमें अपनी कथनी और करनी को एकीकरण मे लाना चाहिए। अन्यथा तोते बोलने से कोई लाभ नही।

★ ★

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आ[illegible] सभा पंजाब [illegible]से मुद्रित तथा आर्यजगत्
कार्यालय गुरुदत्त भवन हंसराज भवन [illegible]जालन्धर शहर [illegible] जालन्धर[illegible]

ओ३म्

आर्य जगत

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टेलीफोन नं० १०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक २३) २३ ज्येष्ठ २०२३ रविवार—दयानन्दाब्द १४१— ५ जून १९६६ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

तस्मै यमाय नम:

उस यम रूप भगवान को नमस्कार हो। यम और काल रूपी प्रभु की शक्ति हैं जो समय समय पर संसार को अपना ग्रास बनाती रहती है। प्रभु की इस शक्ति से कोई बच नहीं सकता। उसे नमस्कार है।

गिर्वण: पाहि न:

हे स्तुति के योग्य परमात्मन्! हम सारे आप के ही हैं हमारी आप ही रक्षा करो। नाना प्रकार के संकटों से आप की कृपा से ही हम सदा सुरक्षित रहे। आप ही हमारे रक्षक, पाता, परित्राता हैं। इसी लिए तो आप पिता हैं, सच्चे रक्षक हैं।

स हि स्थिरो विचर्षणि:

वह प्रभु स्थिर है सदा एक रस है, अटल है। यह जगत परिवर्तनशील है, पर परमेश्वर सदा एक रस है, उस में कभी परिवर्तन नहीं होता। वही सबका निरीक्षक है। सब के बाहर अन्दर के कार्यों भावों को देखता, जानता है। उससे कोई भी बात गुप्त नहीं है।

वाजी ददातुवाजिनम्

वह वाजी—सब बल, ज्ञान आदि का दाता परमेश्वर मुझे और सब को बल प्रदान करे, ज्ञान का प्रसाद देवे, शक्ति पराक्रम का दान देता रहे। उसके सिवा इन सम्प्रदाओं को और देने वाला भी कौन है। वह प्रभु सर्व शक्तिमान है, हमें शक्तिवाला बनावे। सा म वे द से

वे दा मृ त

राजा कैसा हो

इतश्च यदमुतश्च यद् वधं वरुण यावय ।
वि महच्छर्म यच्छ वरीयो यावया वधम् ॥

अथर्व वेद काण्ड प्रथम सूक्त २० मन्त्र ३

अर्थ :—हे राजन्! जो कोई (इतश्च) इस ओर से (यद्) जो भी शत्रु या (अमुत: च) उस ओर से, किसी भी ओर से (यत्) जोवधम्) आक्रमण या उपद्रव, गडबड करता है तो हे (वरुण) शत्रु का नाश करने वाले राजन्! उस शत्रु को (यावय) दूर कर दो। तथा (महत्) बड़ा (शर्म) सुख हमें (यच्छ) देवें और जो भी (वरीय:) बड़ा भारी (वधम्) हमला को (यावया) रोककर कुचल देवे। आक्रमणकारी के हर हमले को पूरी शक्ति से समाप्त करके राष्ट्र की रक्षा करें।

भावः—राष्ट्र की स्वतन्त्रता को हथियाने के लिए शत्रु तथा देशघाती नाना प्रकार के षड्यन्त्र करते रहते हैं, उत्पात मचाते हैं। नाना दिशाओं से और अनेक तरीकों से देश पर हमला करते हैं। उनसे देश की हर बात को भय होता है। ऐसे हमले को रोकने के लिए तथा इस प्रकार के दुष्टों उत्पातियों, आक्रमण करने वालों दलने, कुचलने, मसलने के लिए राजा अथवा शासक का सबसे प्रथम कर्तव्य यह है कि वह पूरी तरह सावधान होकर ऐसे-ऐसे शत्रुओं को कुचलकर राष्ट्र की रक्षा का पूरा-पूरा प्रबन्ध करता रहे। शत्रु को राष्ट्र से बहुत दूर रखे। प्रजा को सुखी करता रहे। —म.

अमूल्य उपदेश

मोक्ष अवस्था का परमानन्द प्राप्त करने का सुगम साधन एक ही है कि कर्मकांडों को किया जाए और अन्तर मुख होकर पल-पल घड़ी-घड़ी ओम नाम की महिमा का गान और बखान किया जाए। आज के स्वर्ण प्रभात में परम पिता से कोटि-कोटि प्रार्थना है कि विश्व का मानव समाज सर्व बुराईयों को त्याग कर मोक्ष सुखों की सिद्धि मे लग कर अपना जीवन वेदोक्त बनाकर परमानन्द को प्राप्त करके निगमागम के मार्ग पर चलें। सं.

ऋषि दर्शन

ईश्वरसत्तया च धारित:

ये सारे लोक-लोकान्तर भूमि सूर्य आदि आपस में घूमते हुए भी उस परमेश्वर के सत्ता नियम से धारण किए हुए हैं। इन को संचालन तथा नियम में रखने वाली वही चेतना शक्ति ही है।

सर्वाणि सुखानि दाशत्

यह भूमि अपने नियम में बन्धी हुई सब को अनेक प्रकार के सुखों को देती है। यह माता के समान सब को पालती, खिलाती पिलाती है। जीवन के लिए यह गोदी है। इसी से सब कुछ मिलता रहता है।

प्राणिन: प्रपूरयति

यह भूमि माता अपने उत्तम उत्तम भण्डारों से, अनेक विध पदार्थों से तथा उत्तम २ प्रसादों से अपने सारे पुत्र-पुत्रियों को, जीवमात्र को भर देती है, तृप्त करती रहती है, मालामाल करती है।

सोमश्चन्द्रलोक:

सोम चन्द्रलोक को कहते हैं। शीतल शांत किरणों से सब को शीतल करके ताप दूर कर देता है। वनस्पतियो, औषधियों मे रस भरता है इसलिए चन्द्रमा को सोम नाम दिया जाता है।

भा ष्य भू मि का

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी

सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

कपटी की भी कोई ठौर नही। काठ की हडिया कोई बार-बार थोड़े ही चढ़ती है। मनुष्य समझता है कि किसी को धोका दे कर वह कार्य सिद्ध कर लेगा। किन्तु कपटी की सिद्धि क्षणिक और अस्थायी हुआ करती है। महात्माओ के कथनानुसार दूसरों को ठगने वाला स्वयं पहले ठगा जाता है। और फिर किसी के मन में विश्वास जमने मे भी समय लगता है। कपटमय व्यवहार से उस विश्वास पर कुठाराघात कर देना वहा की बुद्धिमत्ता है। ठगने मे सुख नही किन्तु ठगाई खाने मे थोड़ा आल्हाद अवश्य है। सन्त कबीर के ये शब्द बडे मार्मिक हैं —

कबिरा आप ठगाइये, और न ठगिये कोए,
और ठगे सुख होत है आपु ठगे दु:ख होए।

किन्तु धोका करते समय व्यक्ति यह तो सोचे कि वह किस से ऐसा व्यहार कर रहा है। कपट कर के वह कृतघ्न तो नही कहायेगा, यह विचार तनिक कर लेना चाहिये। व्यक्ति तो

विचार तरंग

(ले० श्री राम मूर्ति जी कालिया, एम. ए. नई दिल्ली-१७)

एक तरफ, जाव पड़ता है कि सृष्टि के स्वामी, नियन्ता, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान ईश्वर के प्रति भी कपट का व्यवहार करने में मनुष्य को संकोच नही। हम मानते हैं कि भगवान पर कृपालु हैं। किन्तु वे अन्तर्यामी भी तो हैं। मन की बात जानने में उन को देर नही लगती। वे तो घट २ वासी हैं। एक क्षण विचार करे कि हम कितने Hypocrite कपटी हैं। आख की झपक मे ही बदल जाते हैं। भगवान का ध्यान करके हम मुख से उच्चारण करते हैं त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धु श्च सखा त्वमेव, किन्तु आख खुलते ही हम और को माता एव पिता कहना प्रारम्भ करते हैं। क्या यह भावना के प्रति कपट नही? ऐसे भक्तो को कहा ठौर है? तुलसी जी ने अपने मन को सम्बोधित करते हुए ठीक कहा—

अस प्रभु दीन दयाल हरि,
कारण रहित दयाल
तुलसी दास प्रभु सठ मनहिं,
छांड़ि कपट जजाल।

निष्कपटता का उदाहरण अच्छा पुरुष दूध और जल की मैत्री से देते हैं। दूध जल को अपना आकार दे देता है, अपने ही भाव पानी को बिका देता है। जल भी इस मैत्री के व्यवहार को भूलता नही। दूध जब आच पर रखा जाता है पानी स्वय को जला देता है। दूध मित्र की तलाश में उफनता है। पानी पुन: मिल जाने से उफान शान्त होता है। निश्चय ही यह निष्कपट मैत्री का बडा सुन्दर उदाहरण है। किन्तु तुलसी जी ने बडी सुन्दर बात कही कि 'कपट खटाई पुनि मिली, नीरस भई, रस जाई।' कपट रूपी खटाई के मिश्रण से ही दूध फट जाता है, दोनो मित्र विलग हो जाते हैं। परस्पर के व्यवहार मे कपट न आ पाये, ऐसी ही परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। छल छिद्र किसी को पसन्द नही। राम चरित मानस मे राम कहते हैं "निर्मल मन जन मो मोहि पावा, मोहि कपट छल छिद्र न भावा।"

स्मरण रहे कि छलिया कभी भी बडा नही बन पाता। मुंह दिखावे की बात कुछ और है किन्तु पीठ पीछे उस की सभी निन्दा ही करेंगे। यह सर्व प्रसिद्ध बात है अत: आप किसी को धोखा दें, वहां तक आप छले ही जायेंगे।" निष्कपट भक्ति सरल चित्त मे होगी। उसकी सरलता मन मोह लेने वाली होती है। उसके विचार, शब्द एव कार्य सभी शान्तिप्रद होते हैं। उसके व्यवहार मे पवित्रता रहती है। सही अर्थों में वह इन्सान होता है। ऐसा व्यक्ति फरिश्तों से भी अच्छा है। तभी तो कहा कि—

"फरिशते से बेहतर है इन्सान होना,
मगर इसमे लगती है मेहनत ज्यादा।"

★★

पारखंड खंडिनी पताका

(श्री शरर जी एम. ए. पानीपत)

बढ़ो वीर पाखंड खडनी ध्वजा उड़ाते
कब तक पड़े रहोगे तुम सोते मदमाते
तुम ने सोचा था असत्य को मार भगाना,
लक्ष्य तुम्हारा रहा विश्व को आर्य बनाना।
सम्प्रदायो की जड़ उखाड़ सद्धर्म स्थापन,
सदा रहा उद्देश्य तुम्हारा जग हित चिन्तन।
किन्तु न जाने किस का जादू चला तुम्ही पर,
पाप दम्भ की माया देख पड़े मुस्काते।
इसीलिये क्या दयानन्द ने जहर पिया था?
श्रद्धानन्द ने निज उर पर पिस्तोल सहा था?
लेखराम क्या आशा तुम से बान्ध चले थे?
मृत्यु को सम्मुख पाकर जो नही हटे थे।
क्या विलास जीवन का उनको प्राप्त नहीं था?
उनके दिल की धड़कन, काश, कभी सुन पाते!
देखो आज चतुर्दिक पाप दम्भ की माया,
पीरो अवतारो ने है क्या जाल बिछाया।
खडा धरा पर कोई चन्द्रमा तोड़ रहा है,
कोई आपको फिर जीवन से जोड रहा है।
उठा रहा है कोई पर्वत को उगली पर,
कही दहकते अगारे कलिया बन जाते।
दयानन्द ने दिया तर्क का जो सम्बल था,
सम्प्रदायवादी ने उसका मूल्य न आका।
आज निशा का अन्धकार छाया भू पर,
वीरो जागो आपदाओ से जूझो बढ कर
समरस्थल मे वीरो का सकुचाना कैसा,
कट जाते हैं शीश, नही पग रुकने पाते
बढ़ो वीर पाखंड खडनी ध्वजा उडाते

शुभ विवाह

आर्यसमाज के प्रसिद्ध नेता, आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के कोषाध्यक्ष श्री रामनाथ भल्ला की सुपुत्री कु० उमारानी का शुभ विवाह श्री जवाहरलाल जी खोसला के साथ २२ मई को आनन्द सम्पन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर प्रो० रामसिंह एम०ए०, श्री जगदेवसिंह सिद्धाती एम०पी, श्री रघुवीरसिह शास्त्री सभा मन्त्री, आदि आर्य नेता उपस्थित थे। उपस्थित जन-समूह ने वर-कन्या को सुखी-चिरजीवी रहने का आशीर्वाद प्रदान किया।

★ दूध, घृत, दही, मक्खन, मिष्टान्न, शहद, शाक तथा अन्नादि वस्तुऐं खाने योग्य हैं जिन से बुद्धि बढ़ती और शरीर पुष्ट होता है। इन्ही का सेवन करना चाहिये तथा मास, शराब, तम्बाकू, सिगरेट, बीड़ी, भांग आदि को बिल्कुल छोड़ देना चाहिये।

मधु कलश

(श्री विजय निर्बाध एडिटर इनचार्ज पंजाब केसरी)

(१)

एक प्रश्न उठता है जीना कितने दिन है भाई।
राग द्वेष के अन्दर तुम ने कैसे टांग फंसाई।
अपयश लेकर अगर जिए तो भार हो गया जीना।
यश के साथ मौत भी आए तो भी है सुखदाई॥

(२)

दुविधा का आनन्द निहित है केवल अपने पन में।
दया भाव से बड़ा नही है कुछ भी इस जीवन में।
दुश्मन पर भी क्रोध करो तो इतना कभी न करना।
शंका करने लगे मीत भी जिसे देख कर मन में॥

(३)

न्योछावर है तुम लोगों पर नभ के चांद सितारे।
स्वय मनुज हूं अत: मनुज हैं मुझे प्राण से प्यारे।
बिन तुम्हारे मुझे स्वर्ग भी नही चाहिए साथी।
घोर नरक भी स्वर्ग तुल्य हैं रह कर साथ तुम्हारे॥

सम्पादकीय—

आर्य जगत्

वर्ष ६] रविवार ०२३, ५ जून १९६६ [अंक २३

भारत और भारतीयता

बन्दना के योग्य माता पर यदि कोई किसी प्रकार का भी हमला करे तो उस की सारी सन्तान माता की सुरक्षा के लिए प्राणपण की बाजी लगा देती है। माता का सम्मान सन्तति के सम्मान का महान् प्रश्न बन जाता है। इसी प्रकार यदि कोई वैरी विरोधी मातृ-भूमि का अपमान करता है तो उस की रक्षा के लिए भी भूमि की सन्तान तन-मन-धन लगा कर अपने कर्तव्य को निभाती है। भारत हमारी माता है। हम ने इसे माता मान कर समादर किया है (बन्दे मातरम् का गीत गाते २ विदेशी सत्ता की गोलिया खाई हैं। इस जन्म भूमि के सम्मान हित प्यारी से प्यारी वस्तु भी भेंट कर दी है। जिस किसी ने भी इस का किसी प्रकार से अपमान करने की नीचता की, उसे भली भान्ति छटी का दूध याद करा दिया। भारत को माता मान कर प्रत्येक भारतीय ने इस पर सर्वस्व वार दिया है।

इसी प्रकार भारत मे भारतीयता भी जन-जीवन की नस २ मे एव श्वास २ मे समाई हुई है। भारतीयता आत्मा का स्थान रखती है जिस के द्वारा सारे भारत को जीवन व ज्योति मिलती है। भूमि के समान भारतीयता पर होने वाले अपमान को भी भारतीयो ने कभी सहन नही किया। इतिहास मे भारतीयता की रक्षा की गाथा सुनहले अक्षरो मे लिखी मिलती है। किन्तु भारतीयता पर आक्रमण करने वालो की भी कमी नही हुई। प्राचीन समय में भी और वर्तमान काल मे भी आक्रमण कारियोके दलके दल भारतीयता को मिटाने मे लगे एव लग रहे हैं।

हम इस समय की बात कहते है। आज चारों ओर भारतीयता को समाप्त करने के लिये बड़ा भारी हमला किया जा रहा है। भारत मे रहने वाले इन से प्रभावित हो रहे हैं। प्रतीत होता है कि केवल रंग में तो भारत के लोग भारत के हैं, किन्तु सारी बातों मे भारतीयता से कोसो दूर भागते जा रहे है। विशेषकर ईसाईयत के प्रचार ने तो भारत का चित्र ही बदल कर रख दिया है। अपनी कोई भी तो वस्तु अच्छी नही लगती है। जिस प्रकार धर्म पर आज धन चढ गया है। है। सब कुछ धनमय बन गया है। उसी प्रकार ही जीवन भी अभारतीय बनता जा रहा है। भारतीयता सर्वथा दबने लगी है।

इस का कारण ईसाईयत का प्रभाव है। ईसाई मिशन सगठित रूप से भारत के चारो ओर अपना आक्रमण करके पाव फैलाने मे लगा है। हिन्दु समाज को तो कुरुक्षेत्रके तालाबो, हरिद्वार, प्रयाग के गगा स्नानो अथवा यमुना पूजन से ही अवसर नही है। धनपति अपनी तिजोरियो को भरने मे लगे है। उनका पैसा विवाह पर बिजली पर, साजसज्जा मे तथा इधर उधर के दिखावे बनाव मे पानी की तरह बह रहा है। बाघा तक भारत कट गया, नागा प्रदेश मे भारत विरोधी जमाव है, ईसाईयत प्रचार के लिए ३० करोड रुपया विदेशो से आता है। हिन्दु समाज को हडाने की तैयारी मे वे सब लगे है। इस की तनिक भी किसी को चिन्ता नही। सब से बड़े दुःख की बात यह है कि मुगल काल के घोर अत्याचारो को सहन कर भी भारतीय जीवन मे भारतीयता की भावना जीवित थी। पग २ पर टक्कर लेते थे। परन्तु इस समय यह भावना मरी जाती है। भावना यदि मर जाये तो भारत का बाकी क्या बचेगा ? पूंजीपति पूंजी के प्यारे बन गये। राजनीतिक अपनी अपनी डफली बजाने मे मस्त हैं, भोगी भोग मे लगे हैं। तो भला भारतीयता पर होने वाले हमले को रोकेगा कौन ? आर्य समाज पर विश्वास किया जा सकता है यही एक मात्र सस्था है। किन्तु क्षमा किया जाए कि यह भी अब जलूस प्रिय बनता जा रहा है। राजनीति का पुट अधिक है और आर्यपन का बहुत कम। फिर भी इसके सिवाय और कौन है ? सब मोर्चो पर इसे ही लडना है, सब काम इसे करना है और सब का ध्यान भी इसे ही रखना है। भारतीयो मे भारतीयता की भावना मरने न दो। भावना का शख फूंकते रहो। भारतीयता पर ईसाईयत का जो भयानक छक्र हो रहा हैं—उसे पूरी शक्ति लगाकर आर्यसमाज ने ही रोकना है। आर्यो ! जन-जन के मन-मन मे भावना भर दो—त्रिलोकचन्द्र

नेहरूसंस्कृत विश्वविद्यालय

भारत की राजधानी देहली मे स्वर्गीय प्रधान मन्त्री श्री नेहरू जी के नाम से सस्कृत विश्वविद्यालय खुला है। वैसे तो जैसा पढ़ा है कि इसका कोई भवन नही है। अभी-अभी देहली के चीफ कमिश्नर श्री झा जी ने इसका दीक्षान्त भाषण देते हुए सस्कृत भाषा की बडी महिमा गाई है तथा विदेशो मे इसका प्रसार करने का सन्देश दिया है।

विचार बडे ऊचे हैं तथा सबके लिए मनन के योग्य। परन्तु बात यह है कि सस्कृत की प्रशसा तो भारत के सारे बडे-बड़े लोग करते हैं। इसकी उन्नति की बात भी खूब कहते हैं। उनका धन्यवाद है। किन्तु सस्कृत के लिए हो क्या रहा है ? आज यह प्रायः कहावत बन चुकी है कि सस्कृत पढने वाला भूखो मरता है। भारत की रामायण, गीता, उपनिषदो व दर्शनो की या ऋषि वाल्मीकि, व्यास, कालीदास महाकवि की रसीली भाषा सस्कृत का अगरेजी के सामने क्या महत्व है, क्या प्रतिष्ठा है ? सस्कृत वाला व्यक्ति आज अपने मन मे अपने देश मे मे ही भारी ग्लानि अनुभव करता है। इसकी कोई माग नही, सम्मान नही। सस्कृत के महान केन्द्र भारत मे ही सस्कृत का व सस्कृत वालो का जितना घोर अपमान है, उतना धरती के किसी भी भाग मे नही। आर्यसमाज भी इसी मे शामिल है। देहली का यह नेहरू सस्कृत विश्व विद्यालय सस्कृत व इसके पढने वालो को यदि सम्मान दिला सके तो यह महान काम होगा। अन्यथा समारोह तो चलते ही रहते हैं। हमे तो प्रतीत होता है कि भारत मे न दूध घी मिलेगा, न पण्डित पुरोहित मिलेंगे, न धर्म मिलेगा और न सस्कृत के पढ़ने वाले ही मिलेंगे—

शराब पर पिकेटिंग

कभी वह युग था कि कांग्रेस पताका के नीचे भारत के भाई बहिन अगरेजी शासन मे शराब की दुकानो पर पिकेटिंग करते हुए नाना कष्ट सहन करते थे। आज वह समय आ गया कि वही विचार वाले भाई बहिन कांग्रेस शासन मे बढती हुई शराब को रोकने के लिए नगरो मे शराब की दुकानो पर धरना मारते है। अपने राज्य मे इतना शराब का प्रचार होगा ? यह किसी के स्वप्न मे भी नही आया था। जनता की शराब छुडवाने के स्थान उन को शराबी बनाने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना क्या अच्छा है ? रामराज्य मे कहीं भी शराब नही थी। रावण राज्य लका मे शराब की भरमार थी। दोनो मे यह भी अन्तर था। रामराज्य का कोई वासी शराब नही पीता था—रावण राज्य मे दौर चलते थे। हमारी सरकार देश को रामराज्य बनाना चाहती है या रावण राज्य ? उसे साफ कह देना चाहिए। शराब को बन्द कराने मे तो सब को चाहिए कि प्रबल जनमत पैदा किया जाए—स०

क्रियात्मिक देवता चल बसा

आर्य समाज शाम चौरासी के प्रधान, सभा के अन्तरग सदस्य, क्रियात्मिक जीवन वाले, ऋषि दयानन्द व महात्मा हसराज जी के अनुपम भक्त श्री परमेश्वरी दास जी बहल का मृत्यु समाचार वज्रपात के समान है। वैसे तो समाज मे बडे २ सज्जन हैं परन्तु श्री बहल जी जैसा सात्विक, नम्र, मौन की सजीव मूर्ति, समाज के कामो मे मुक्तहस्त से दान करने वाले, अत्यन्त श्रद्धालु सज्जन सचमुच विरले हैं। सारे परिवार के सुपुत्रो मे धर्मभावना उनके जीवन के कारण ही है। श्री बहल जी अब नही मिलेंगे। सारे समाज के लिए भारी आघात है। हम महान् दुःख मे दुःखी हैं। उनकी विशेष स्मृति स्थापित करनी चाहिए।

- स०

★ मलीन, विष्ठा, मलादि के मेल से उत्पन्न हुये शाक, फल, फलादि न खाना चाहिये। इसके अतिरिक्त जितने तमोगुणी पदार्थ हो जैसे प्याज, लहसुन आदि उनका खाना भी तमोगुण को बढाता है।

आज भारत मे सकट की स्थिति है। यह सकट चीन के वृहद् आक्रमण से तथा पाकिस्तान की साजिश के कारण उपस्थित हुआ है। चीन निश्चित भारत के इलाके हथ्याना चाहता है। लद्दाख के भाग जिसे अक्षय चिह्न कहते हैं उन पर बलात कब्जा जमाये रखने का निश्चय चीन ने किया हुआ है। उसके सूबे सिक्याग में जाने के लिये अक्षय चिह्न मे से चीन ने सौ मील लम्बी सड़क पूरी कर ली है। वह इस इलाके को परास्त किए बिना नहीं छोड़ेगा। पाकिस्तान एक गीदड़ की तरह इस ताक मे है कि कब चीन रूपी शेर भारत को मारे तो वह भी आगे बढ़ कर मास नोचने मे भाग ले। यह सकट वास्तविक है। कपोल कल्पित नही। बिना युद्ध चीन हमारे २० हजार वर्ग मील से पीछे नही हटेगा। यह सुनिश्चित तथा अपरिहार्य है।

इस गम्भीर स्थिति मे शासन का सर्वप्रथम धर्म सैनिक तैयारी है। हम ने इस ओर उदासीनता रखी। चीन ने इस का अनुचित फायदा उठाया। हमारा राष्ट्रीय अपमान हुआ। ससार की दृष्टि मे भारत गिर गया। अब हमे इस अपमान को सम्मान मे बदलना होगा। इस पराजय को विजय मे तबदील करना होगा। तब हम अपने गौरव का पुनर्लाभ करेंगे। इस के लिये सर्व प्रथम भारतीय सरकार को पर्याप्त युद्ध सामग्री तैयार करनी होगी। चीन के टिड्डी दल का मुकाबिला करने के लिये सेना बढ़ानी होगी सफल युद्ध का वातावरण कायम रखना होगा। भारतीय निश्चित रूप से आराम पसन्द हो गये हैं। भारत की भूमि पर पिछले सौ वर्ष से युद्ध की गोलिया नही चली। भारतीय जनता युद्ध के भयकर रूप की कल्पना करने के असमर्थ है। हमारी सरकार को बौद्धिक तौर पर लोगों को युद्ध के लिए उद्यत करना होगा। भारतीय जनता मे वह मनोवृत्ति पैदा करनी होगी जो युद्ध के क्लेश तथा कष्टो का स्वागत करती है और बलिदान के लिए सर्व साधारण को तैयार रखती है।

परन्तु यह सारी सैनिक तैयारी धरी-धराई रह जाएगी यदि देश की आन्तरिक स्थिति शान्त उत्साह पूर्ण तथा एकता परायण न हो। १९१४ के युद्ध मे जर्मनी १९१८ तक सैनिक दृष्टिकोण से विजेता था। मित्रराष्ट्र लगातार पीछे हट रहे थे। परन्तु

आर्यसमाज तथा राष्ट्रीय संगठन

प्रि० प० रलाराम जी एम० ए०, एम०एल०ए० होशियारपुर

एकाएक जर्मनी हार गया। ब्रिटेन, फ्रांस तथा यू. एस. ए. विजयी हो गये। उसका एक मात्र कारण था कि जर्मनी मे आन्तरिक विप्लव हो गया। घरेलू कलह जागृत हो गई। परिणामत: विजयी जर्मनी हार गया है। युद्ध में व्यस्त देश घरेलू कलह से विनष्ट हो जाते हैं। किसी भी देश के सैनिक फ्रन्ट की अपेक्षा आंतरिक या होम फ्रन्ट कम महत्व का नही अपितु अधिक महत्व का है। राष्ट्रीय मौराल **(Morale)** पराजय को समय पाकर विजय मे परिवर्तित कर देता है। पिछले युद्ध का ब्रिटेन तथा रूस का इतिहास इस बात का साक्षी है।

इस होम फ्रन्ट को संगठित, सुव्यवस्थित, सुदृढ तथा अदम्य बनाने के लिए धार्मिक तथा सांस्कृतिक सस्थाए एक विशेष रोल अदा कर सकती है। राष्ट्रो को सबल सोना चादी नही बनाते। धीर वीर तथा चरित्रवान व्यक्ति राष्ट्र को सबल बनाते तथा स्वतन्त्र रखते हैं। धन तथा सामग्री मानवी बुद्धि बल तथा परिश्रम से पैदा हो जाते हैं। ऋषि ईमर्सन अपनी एक कविता मे कहते हैं —

Not gold, but only men can make A people great and strong men who for truth and Lnonr's Sake Stand fast and supper long Brave men who work while others sleep who dare while others fly. They build a nation's pillars deep. And lift them to the sky

यह मानव निर्माण का काम अध्यापिक वर्ग या धार्मिक सस्थायें ही कर सकती है। सत्तारूढ व्यक्ति नैतिक सिद्धान्तोको सुविधाकी बलिवेदी पर कुरबान कर देते हैं। इसी लिये लार्ड एक्टन की विख्यात लोकोक्ति कि Power corrupts and absolute power corrupts absolutely, अर्थात् सत्ता भ्रष्टाचारी बना देती है और एक मात्र सत्ता धारी होना तो पूर्णतया भ्रष्टाचारी बना देता है। यह सर्वत्र प्रसिद्ध हो है। इस का एक मात्र इलाज उच्च नैतिक आदर्शोके पालन में तथा आध्यात्मिकता मे है। यह काम नितान्त धार्मिक सस्थाओ का है।

देश में भ्रष्टाचार के विरुद्ध हाहाकार है। यह हाहाकार देश की शान्तमयी उन्नति तथा समृद्धि के लिये बहुत ही खतरनाक है। यह चीनी आक्रमण को रोकने तथा अपने देश के छीने हुवे भाग को वापिस लेने मे बाधक है। वह स्थिति जो भ्रष्टाचार तथा चोर बाजारी से पैदा होती है वह देश को निर्बल बनाती तथा होम फ्रंट को कमजोर करती है।

आर्यसमाज के उच्चनैतिक आदर्श तथा वैदिक आध्यात्मिकता इस प्रयोजन को सिद्ध करने की क्षमता रखते हैं। वे राष्ट्र के व्यक्तियों को सत्यप्रिय, न्यायपरायण तथा सुचरित्रवान बना सकते हैं। परन्तु शोक की बात तो यह है कि प्राय: आर्यसमाज स्वय इस भ्रष्टाचार, झूठ, अनृत, मायाचार, दम्भ, मक्कारी, जालसाजी के गर्त मे गिर चुका है। जो कुप्रथाए तथा भ्रष्टाचार राजनैतिक क्षेत्रो में देखे जाते थे उससे कही अधिक घिनाऊनी बाते अब प्राय: आर्यसमाज के सगठन मे पायी जाती हैं। आर्यसमाज का ढाचा भ्रष्टाचार अनृत ने खोखला कर दिया है। जो निराशा पैदा करने वाली बात है वह यह कि बहुसख्या मे आर्यसमाजी इस बुराई को बुराई के रूप मे नही देखते। कई उस धूर्तता तथा कुटिलता को जो आर्यसमाज के साधारण सचालन मे आ गई है उसे उचित तथा ठीक बताते है। मैंने अनेको आर्य सभासदों को इस अनाचार तथा दुराचार का समर्थन करते देखा है। राजनतिक क्षेत्र तथा दलो की तुलना करके तथा उसकी उपमा देकर। इसका यह अर्थ है कि हमारा आचरण ही पतित नही हुआ अपितु हमारे उच्च आदर्श धुंधले पड़ गए हैं, और कई दिशाओ मे दृष्टि से ओझल हो गए है।

मुझे तो इस नैतिक पतन का एक मात्र इलाज यह नजर आता है कि आर्य जनता चेते और और जागकर उन सब भ्रष्टाचारियों को जो आर्यसमाज के उन्नत आदर्शो को धूलि मे मिला रहे हैं बाहर निकाल फैंके। व्यक्तियों की कोई परवाह न करे। आओ, इस सकट मे हम स्वयं सन्मार्ग गामी तथा उच्चनैतिक आदर्शों के समर्थक बनने का व्रत लें और आर्यसमाज को अनाचार तथा भ्रष्टाचार से सशोधित करने का प्रयास करें। पहले हमें अपने आप के साथ आरम्भ करना होगा। तब हम समाज में अनीति को अनीति, भ्रष्टाचार को भ्रष्टाचार, अनाचार को अनाचार तथा दम्भ को दम्भ कह सकेंगे। ऐसी स्थिति पैदा हो जाने पर हम राष्ट्र में से भ्रष्टाचार तथा अनीति को समाप्त करके होम फ्रण्ट को मजबूत बना सकेंगे। यह हमारी सच्चे अर्थों मे राष्ट्र रक्षा तथा देश सेवा होगी।

दयानन्द ने आर्यसमाज की नींव सत्य तथा सुचरित्र पर रखी है। यदि हम आर्यसमाज में उच्च नैतिक आदर्शों के लिये दृढ भावना तथा स्वच्छ वफादारी जागृत कर सकें और आचरण मे दाखिल कर सकें तो दयानन्द के स्वप्न चरितार्थ हों और देश को हम अवश्य संकट से निकाल सकेंगे।

भारत सूचना कार्यालय से प्राप्त

सैनिकों को उद्योग प्रबंध की शिक्षा

आजकल नई दिल्ली मे ३४ रिटायर और रिटायर होने वाले सैनिक अफसर, उद्योग प्रबंध की शिक्षा ले रहे हैं। इन मे से २८ अफसर सेना के, ३ नौसेना के और ३ वायुसेना के हैं। यह पाठयक्रम ४ सप्ताह तक चलेगा।

*

अलावल पुर में मुंडन संस्कार

श्री गुरु प्रशाद जी मन्त्री आर्य समाज अलावलपुर के भाई श्री हुकुम चन्द्र जी अग्रवाल के पौत्रों सर्व मित्र श्री सजय कुमार का मुन्डन संस्कार २२—५—६६ को प्रो० कृष्ण जी आर्य एम० ए०, एम० एस० सी० डी० ए० वी० कालिज चण्डीगढ़ ने पूर्ण वैदिक रीति से कराया। तथा मुंडन सस्कार पर भाषण दिया। श्री कर्म चन्द जी प्रिंसिपल ए० एस० हायर सैकण्डरी स्कूल नकोदर (अवकाश प्राप्त) ने अपने परिवार की ओर से प्रोफेसर जी का धन्यवाद किया। उपस्थित जनता का मिष्टान्न से स्वागत किया।

नारी स्तंभ—

बहिनों से एक प्रश्न—

आप का धन कहां से आता है ?

(कुमारी सुशीला आर्या एम० ए० विद्या वाचस्पति)

परिवारिक जीवन के निर्वाह के लिये धन एक अनिवार्य उपकरण है। वेद मन्त्रो मे स्थान स्थान पर परमात्मा से धन के लिए प्रार्थना की गई तथा 'अरातय:' अर्थात् दान न देने वालों की निन्दा की गई है। स्पष्ट है कि दान भी धन से ही सम्भव है। अभिप्राय यही हुआ कि प्रत्येक व्यक्ति जो सासारिक जीवन व्यतीत कर रहा हो, धन से युक्त होना चाहिए। धन संन्यासी के लिए पाप है तो निर्धनता गृहस्थ के लिए अभिशाप है। किन्तु इसका अर्थ यह नही कि हम जैसे तैसे भी पैसा प्राप्त कर ले। ऐसा लिख कर तो हम चोर डाकुओ को प्रोत्साहन देने वाला साहित्य लिखने के अपराधी माने जाएगे। इसी स्तम्भ मे कुछ दिन पूर्व हम ने अपने बहिनो के समक्ष एक प्रश्न प्रस्तुत किया था कि आप का धन कहा जाता है ? वह व्यय सम्बन्धी व्यवस्था का निर्धारण है। किन्तु आय सम्बन्धी व्यवस्था भी प्रथम आवश्यक है। हमे आय के साधनों पर व्यय के स्तम्भो से भी अधिक ध्यान देना है। अथवा यों कहिए कि यदि हमारे आप के साधन शुद्ध एव नियन्त्रित है तो व्यय प्रणाली स्वत. सुधर जाएगी। ईमानदारी की कमाई स्वभाविक रूप मे भले कामो मे खर्च होती है इसके मूल मे एक रहस्य यह भी है कि यह खून पसीने की कमाई निर्वाह के लिए ही कठिनाई से पर्याप्त पडती है. व्यर्थ नष्ट करने के लिए कहा से आए ?

हमारी आय का उद्गम स्रोत क्या है ? यह हमारे जीवन के बनने बिगडने का प्रश्न है। धन की तुलना जल से की जा सकती है। यह जल की भाति प्रवाह शील है। रहीम जी ने इसी कल्पना के आधार पर कितना सुन्दर लिखा है :—

ज्यो जल बढै नाव मे घर मे बाढै दाम।
दोऊ हाथ उलीचिए यही सज्जनको काम।

हमारे यहा जैसे धन की अनावश्यक वृद्धि विनाश का मूल मानी गई वैसे ही धन का उद्गम स्त्रोत मलिन होना भी जीवन को गदला कर देने वाला समझा गया है। आप विचार लीजिए जल जैसे स्थान से आता है अपने गुण लिए रहता है। समुद्र से आने वाली हवाए वर्षा लाती हैं शुष्क मरुस्थलीय पवने धूल तथा खुश्की लाती हैं। उष्ण प्रदेशो से उठने वाले वात चक्र वायु मण्डल मे गर्मी उत्पन्न करते है। पुन: धन का प्रभाव जीवन पर पड़े बिना कैसे रह सकता है ? स्मरण रखिए धर्म की कमाई आपके परिवार के जीवन की समृद्धि तथा सच्चरित्रता का अचूक साधन है।

आज के युग मे इस तथ्य पर लोग सन्देह करने लगे हैं। हमारा लक्ष्य पैसा रह गया है। वह कैसा हो, इसकी चिन्ता हमे नही। कुछ लोगो को सट्टे तस्कर व्यापार तथा रिश्वतखोरी से कोठिया बनाने. बैंक बेलैंस बढाने एव पिछलग्गुओ द्वारा प्रदान की गई प्रतिष्ठा कमाते देख लोग यह भ्रम करने लगे है कि सम्भवत: काला बाजार के इस युग मे ईश्वरीय कर्मफल व्यवस्था भी कुछ परिवर्तित हो गई है। किन्तु इसमे सार नही। ऐसी भ्रातियो का निराकरण करने के लिए हमे शास्त्रकारो की शरण मे जाना चाहिए। योग दर्शन का भाष्य करते हुए व्यास मुनि ने कर्मफल व्यवस्था का बहुत सुन्दर निर्भ्रम विवेचन किया है कि कुछ कर्म हमै तुरन्त फल देने वाले होते है कुछ देर तक पडे रहते है। तीसरे प्रकार के कर्म शुभ कर्मो मे डूबे पडे रहते है, जैसे हो ही न। अनुचित साधनो से धन प्राप्ति करके भी सुखी दीखने वाले व्यक्तियो के किन्ही शुभ कर्मो की प्रधानता से ही ऐसा है। यह नही कि पाप की कमाई फल रही है, सो तो कभी फल ही नही सकती ऐसी दृढ धारणा बनाना हमारे आपके स्रोतो की मलिनता मिटाने का सर्वप्रमुख उपाय है।

इस मे कोई बुरा मानने की बात नही आज हमारे आपके स्रोत गदले हो चुके है। इने गिने घर ही ऐसे होगे जिन मे कही से किसी प्रकार की अनुचित कमाई का अश न आता हो। इस कमाई के अनेक रूप हैं। कोई रिश्वत ही ले. तस्कर. व्यापार ही करे. ऐसा आवश्यक नही। संस्थाओ के नाम पर दान का धन खाना, हट्टे कट्टे होकर भी भीख मागना. जिस ड्यूटी पर लगे है उसे पूरा न करते हुए वेतन लेना. हिसाब किताब मे बेईमानी करना, चोरी से आय कर या बिक्री कर बचाना इत्यादि विविध प्रकार है जो शुद्ध कमाई मे नही गिने जा सकते। इन्हे डालडा घी की उपमा दी जा सकती है।

अब आप सारे देश के सुधार का ठेका भले ही न उठाइये पर अपने घर परिवार पर दृष्टि डाल कर देख लीजिए। इसकी ईटे या संगमरमर भाखडा बाध में सीमेंट के स्थान पर रेती लगा कर ठेकेदारी के बदले तो नहीं आई ? यदि आप डाक्टर हैं तो रोगी के प्राणों मे खिलवाड करके तो आप अपने पुत्र को अमेरिका पढने नही भेज रहे ? आप क्लर्क है तो कागजो के ऊपर लिखे अको की अदला बदली से प्राप्त धन को सिगरेट के धुए मे नही उडा रहे ? आप अध्यापक है तो कर्तव्य की उपेक्षा करके वेतन की तारीख की प्रतीक्षा तो नही कर रहे ? इन तथा और अनेक स्थितियो मे अपने भीतर झाक कर देखना है। जो परिवार धन के स्रोत की दृष्टि से उजले है वे आज भी कलियुग मे आशातीत सात्विक विचारधारा रखते है। मैले सोते का पानी पीकर हम कब तक स्वस्थ रह सकते है ? शास्त्र कहते है 'अन्न वै प्राणा' अन्न से ही प्राण धारण किए जाते है। कहावत है जैसा खाओ अन्न वैसा हो जाए मन।

इस मे केवल सेहत की सफाई वा पुष्टि कारक गुण से ही अभिप्राय नही उसकी प्राप्ति के ढग से भी है। एक बात और भी यह नही कि आपका सम्पूर्ण धन अनुचित मार्ग से ही आता है। सम्भव है आप परिश्रम से धन कमाते हो किन्तु कभी भी कोई भी गन्दे जल की धारा इस गङ्गा नीर मे मिल गई तो सारी पवित्रता को ले डूबेगी। पानी के स्वच्छ हौज मे आप एक बाल्टी गदला जल डाल कर देख लीजिए। ऐसे ही हमारी बातो का परीक्षण अपने परिवार पर साल छ. महीने कर लीजिए। कमाई के अनुचित साधनो के नाले बन्द कर देखिए पुन: जीवनादर्श कितना ऊचा उठ जाएगा। परिवार के एक एक पैसे पर मलिनता का धब्बा लगने से बचाना गृहिणी का कर्त्तव्य है। हम तो यही कहेंगे— कोई बुरा माने चाहे भला—देश की समग्र अपवित्र कमाई के लिए हमारी देवियां उत्तरदायी हैं वे अपने सरक्षको को तंग करके ऐसा करने पर विवश करती हैं। हमारी कमाई की शुद्धता की जांच कोई कमीशन बिठा कर तीन काल में नहीं हो सकती इसे तो देवियां ही करेंगी। इस लिए बहिनो ! आप से प्रार्थना है कि आप अपने पिता. पति, पुत्र. भाई किसी की भी कमाई का एक-एक पैसा जाच कर प्रयोग मे आने दे। अनुचित कमाई के नये पैसे को भी मत छुए। यह काला साप है जो आप के परिवार मे विष व्याप्त कर देगा। सन्तानो के कुकर्मो से तग नित्य नए रोगो से ग्रस्त भारतीय गृहस्थो ! सभलो और देखो, आप का धन कहा से आता है ? आखो देखते विषाक्त भोजन पर मत टूट पडो। जीती मक्खी मत निगलो। इसी में हित है।

सूचना कार्यालय भारत सरकार

रूसी संग्रहालय को भारतीय कला के नमूने भेंट

भारत सरकार ने लेनिनग्रेड के हरमिटेज सग्रहालय को भारतीय कला कृतियो का प्रतिनिधि सग्रह भेंट करने का निश्चय किया है। इस मे पत्थर और कास्य मूर्तिया पाडुलिपिया, चित्र और लोक कला के नमूने होगे।

पंजाब उच्च न्यायालय के स्थायी मुख्य न्यायाधीश

राष्ट्रपति ने न्यायाधीश श्री मेहरसिंह को जो इस समय पजाब उच्च न्यायालय के कार्यकारी मुख्य न्यायाधीश है २१ मई, १९६६ से पजाब उच्च न्यायालय का स्थायी मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया है।

जवाहर बाल भवन

जवाहर बाल भवन स्कूलोत्तर सस्थाए होगी, जिन मे बच्चे व्यापक अनुभव प्राप्त कर सकेंगे और अनेक ऐसे कार्यो मे हिस्सा ले सकेंगे जो हमारे स्कूलो के पाठ्यक्रमो की कमिया पूरी कर सकेंगे। ये भवन बच्चो मे जोश भरेंगे और उनमे जीवन के प्रति अनुराग पैदा करेंगे। उन मे समूचे विश्व को एक समझने और जानने की जिज्ञासा जगाएगे।

जवाहरलाल नेहरू स्मारकनिधि

श्री जवाहरलाल नेहरू की दूसरी बरसी के अवसर पर राज्यो के मुख्य मत्रियो ने २० से २७ मई १९६६ तक निधि के लिए धन इकट्टा करने के लिए विशेष अभियान चलाने का फैसला किया है।

हिन्दी का हिमायती कौन ?

(श्री युन्दरलाल जी वोहरा जोधपुर)

समाज एवम् सस्था के सचालन के लिए भाषा अत्यावश्यक है। भाषा समाज विशेष की ऐतिहासिक प्रगति व सास्कृतिक अभ्युदय का दर्पण है। भाषा के द्वारा एक समाज मे प्रचलित रिति-रिवाजो के बारे मे विशद् ज्ञान हो सकना है। जिस प्रकार एक शृ खला मे छिटकी हुई कडी से शृ खला का ठोक-ठीक परिचय मिल जाता है उसी प्रकार किसी भाषा के शब्द विशेष से उस भाषा की परम्परा का आभास सहज ही मिल जाता है।

हर भाषा के शब्दो के उच्चारण का ढग व उससे सलग्न चेहरे की भाव-भगिमा अलग-अलग होते हैं। एक भाषा में जो शब्द सहानुभूति का द्योतक माना है दूसरी भाषा मे वही शब्द घृणा का प्रतीक हो सकता है—इस बात का निर्णय विशेषत: वक्ता के बोलने के ढग पर निर्भर करता है। यह सिद्धान्त केवल भावना-प्रधान जगत् मे अधिक कार्यशील है। भावना-प्रधान जगत् मे शब्द का महत्व कम, इशारे (जेस्चर) का अधिक होता है।

जहा तक व्यक्ति के बौद्धिक विकास का प्रश्न है, शब्द उत्तरोत्तर महत्वपूर्ण बनते जाते है। हर बात का निर्णय तर्क की कसौटी पर किया जाता है। तर्क मे शब्द की ही प्रधानता होती है। यही की यही बात समाज विशेष की वैज्ञानिक उपलब्धियो के बारे मे कही जा सकती है। जिस वस्तु का जहा सृजन हुआ है, निश्चित रूप से उसका नामकरण भी निर्माता समाज के लोगो के उच्चारण के ढग व जीवन के प्रति दृष्टिकोण को दृष्ठिगत रखकर ही होगा। हर वैज्ञानिक उपलब्धि के पीछे समूह विशेष का जीवन-दर्शन छिपा हुआ है।

भाषा व भौतिक विज्ञान

लेकिन वैज्ञानिक उपलब्धिया सम्पूर्ण एषणाजन्य जगत् के लिए उपयोगी होती हैं। व्यक्ति की आवश्यकता व एषणा के प्रसारण के साथ-साथ उसकी वैज्ञानिक उपलब्धिया भी बढती रहती है। हर वैज्ञानिक उपलब्धि समाज मे नये शब्दो व भावो को जन्म देती है। प्रत्येक आविष्कार जब समाज के उपयोग मे आने लगता है तो समाज मे नये धन्धो व नये वर्गों का निर्माण होने लगता है। लोगो मे संघ व सघर्ष की प्रवृत्ति प्रबलतर होती रहती है। इस प्रवृत्ति के फलस्वरूप भी नये शब्दों व मुहावरो का आविष्कार होता है। इसी कारण आवश्यकता को आविष्कार की जननी कहा गया है।

व्यक्ति मे आविष्कार का यह उद्वेग ही रहा है जिसके कारण वह एक ओर गू गेपन से उठकर गीता का सृजन कर सका है, दूसरी ओर गुफा से निकल कर गगनचुम्वी अट्टालिकाओ में प्रश्रय पा सका है। इस प्रकार मानव का सास्थनिक व सास्कृतिक विकास एक प्रकार से शब्दो व भाषा का क्रमिक व शृ खलाबद्ध विकास रहा है। व्यक्ति की सास्थनिक सुदृढता के साथ साथ उसकी भाषा भी समजित व सुव्यवस्थित हुई है।

शासन व शब्द

इस प्रकार ज्यो ज्यो व्यक्ति की वैज्ञानिक उपलब्धिया व भाषा समानान्तर चलते रहे, उसकी राजनैतिक चेतना मे भी तदनुरुप निखार आता गया है। 'मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिन्न:' की बात हर जगह साक्षात होने लगी। समाज मे सघो व सस्थाओ की बाढ़ आने लगी। हर समूह अपने ही शब्दो को सनातन मान कर चलने लगा और तो और एक ही शब्द की व्याख्या को बदला जाकर नया ही शब्द गढा जाने लगा। शब्दो की इस तोड मरोड मे ही व्यक्ति का सास्थनिक अम्युदय हुआ, सस्थाओ के आपसी सघर्ष की कहानी शब्दो के भाव-परिवर्तन से ही प्रसूत है। हर समूह अपने ही किले और कृपाण के सरक्षण के लिये उन्मत्त रहने लगा। समाज मे 'राजा माने सो ही रानी शेष सब भरे पानी' की बिषैली प्रवृत्ति का पोषण इसी कुण्ठा के कारण हुआ है।

जिसके हाथ मे शस्त्र हैं, शासन है, वही धरती पर विश्वसनीय नियामक है—साधारण जन समूह पर राज्य का रोब स्पष्ट रूपसे हावी होने लगा। जो बात किले अथवा कचहरी मे तय हो गई, वह तय, शेष सब मिथ्या व आधारहीन। इस प्रकार शनै: शनै: कुण्ठित समाज का निर्माण हुआ। लोगों की शासन व शब्द के प्रति आस्था दृढतर होती गई। जीवन के हर क्षेत्र मे व्याकरण ही प्रधान दिखने लगा। परिणाम-स्वरूप संस्था की बलिवेदी पर वैयक्तिक उपलब्धियों को आत्म - हत्या करने पर बाध्य होना पड़ा। जीवन व जगत् की व्याख्या भी सांस्थनिक सीमाओ मे रह कर ही की जाने लगी। भाषा व साहित्य भी दीर्घकाल तक इन सीमाओ मे ही सिसकता रहा। ऐसी दम घुटने वाली परिस्थितियो मे लोकतन्त्र का आभ्युदय अनिवार्य हो गया।

फिर भी समस्या पूर्णत: सुलझी नही। व्यक्ति के लिये किसी न किसी सस्था अथवा सघ के प्रति वफादार होना आवश्यक हो गया। यद्यपि ऐसे काल मे भी एकला चलो रे के स्वर गूंजे है, लेकिन ऐसा उद्घोष साधारण व्यक्ति की पहुच से परे रहा है। भेड-प्रवृत्ति प्लास्टिक का चश्मा लगा कर प्रकट हुई। लोगो को अनुशासन अथवा आविष्कार के नाम मे येन केन प्रकारेण अनुसरण करना ही पडा है। जिन्होने ऐसा करना अपने अह के प्रतिकूल समझा वे, बहुलाश मे, समाज से परित्यक्त ही रहे, ऐसे व्यक्तित्व की पूजा नगण्य मामलो मे ही हुई।

जो कुछ भी हो, समाज मे सस्था द्वारा प्रचलित शब्दो व सविधान की ही प्रधानता व प्रतिष्ठा रही लोकतन्त्र मे भी लाठी लाठी ही रही।

अनुत्तरदायित्वयुक्त अनुशासन

भारत मे चू कि व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास पर ही सस्था की श्रीवृद्धि को महत्वपूर्ण माना गया है, अत: जब सन् १९५० मे ही राष्ट्र का राजनैतिक मानो पर ही गठन हुआ तो यह समस्या सहस्रबाहु की तरह अपने रौद्र रूप मे प्रकट हुई। आध्यात्मिक रूप से तो अद्वैत-दर्शन का आविष्कार व अनुभूति करके भारतवासी पूर्णरूपेण लोकतन्त्री व व्यक्तिवादी बन ही चुके थे। इसी कारण भारत मे विषय तथा भौतिक विज्ञान के प्रति लोगो की एक प्रकार से विरक्ति ही रही है। यहा हर विज्ञान की पूर्णाहुति जगत से विरक्ति के रूप मे की गई है। लोग कर्मयोग का प्रतिपादन एवम् प्रचार करते हुए भी लौकिक विषयो के बारे मे कुण्ठित ही रहे। देश का दर्शन वैज्ञानिक रहते हुए भी विरक्ति से ही आभिभूत रहा।

भारतवासियो की जीवन के प्रति इस उदासीनता नें उन्हे अनेकों बार विदेशी लोगो से आतंकित रखा। अध्यात्म व अनुशासन में असन्तुलन रहने से राष्ट्र में शनै:-शनै अनुत्तरदायी लोगो का प्रादुर्भाव होने लगा। हर बात में लोग अस्त्र व अनुशासन की दुहाई देने लगे। 'राज्य ही सब कुछ करेगा' इस प्रकार की सर्वव्यापी कुण्ठा ने पिछली अनेकों शताब्दियों तक भारतवासियो को आध्यात्मिक रूप से भी अशान्त रखा है।

जिस प्रकार आध्यात्मिक रूप से हमे एकाकी रहना प्रिय रहा है, ठीक उसी प्रकार राजनैतिक क्षेत्र मे भी हम कई बार एकतन्त्र की वैदिक व सनातन दुहाई देने लगते है। स्वाभिमान व धर्म के नाम में हम मे से अधिकाश को कूप मण्डूक बने रहना आज भी भाता है। जयचन्दी-कुण्ठा हमारी इसी कूप मण्डूकता का विकृत एव विषैला रूप रही है। अपने वैयक्तिक हितो के लिए हमने सास्थानिक सिद्धि को हमेशा ही गौण माना है। यह प्रकृति चाहे आध्यात्मिक क्षेत्र मे हो अथवा अनुशासनिक क्षेत्र मे, हमे अनुत्तरदायी लोकतन्त्री बनाए रखे है।

वर मरो चाहे वधू, जोशी को टके से मतलब !

हिन्दी का प्रश्न हमे आज अनुशासनिक तौर पर अशान्त बनाए हुए है। हमारी इस अशान्ति का कारण हमारा अध्यात्मिक दिवालियापन है। यह उस 'कम्पनी की कुण्ठा' का विष फल है जिसके कारण हम पिछली दो सदियो तक (व इससे पूर्व भी) विशृखल रहे है। हमारी स्थिति उस बन्दर जैसी हो गई है जिसका हाथ चनो से भरी ओखली मे फंस गया है। एक के बाद एक चना निकाल कर खाने का उसको धैर्य नही, इधर पूरी मुट्ठी भर कर चना एक साथ बाहर निकल नही सकता। कहने का तात्पर्य यह है कि हम राष्ट्रीय एकता चाहते हैं, लेकिन प्रान्तीय भाषाओ को प्रमुखता देकर। याने वर मरो चाहे वधू, जोशी को टके से मतलब—हिन्दी रहे अथवा न रहे, प्रान्तीय भाषाओ को तो पनपने ही दो।

इस सन्दर्भ मे अनेक भाषी राष्ट्र स्वीटजरलैण्ड का उदाहरण प्रस्तुत किया जाता है। लेकिन वहां की परिस्थितिया भारत में प्रचलित परम्पराओ से बिल्कुल विपरीत हैं। कोरा लोकतन्त्र होना ही पर्याप्त नहीं है।

(क्रमश:)

हिंदुओं के लिए

आत्म विस्मृति आत्मघात है

(ले० श्री ज्ञानी पिंडीदास जी आर्य प्रधान आर्यसमाज लोहगढ़)

परमात्मा जाने वह कैसा अशुभ दिन था जब पद लोलुप कुछ पंजाबी युवकों ने हिन्दुस्थान के सपूत, हिन्दु महा सभा के रुष्ट भूत प्रधान डा० श्याम प्रसाद मुकर्जी को अपने जाल में फांसा और इण्डियन नैशनल कांग्रेस का हिन्दी अनुवाद करके भारतीय जनसंघ के नाम की कांग्रेस की भांति एक धर्म निरपेक्ष संस्था की स्थापना कर डाली जो एक ओर हिन्दु सगठन होने का उद्घोष करती और दूसरी ओर सैक्यूलरिज़म का दम भरती। भ्रम में फंसे कतिपय आर्य नेताओ और हिन्दु लीडरों का आशीर्वाद भी इस सस्था को प्राप्त था, इसी कारण यह थोडे दिनो मे ही जनता का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर सकी।

वास्तव में इस संस्था की प्रथम दिवस से ही कोई 'समझी सोची' नीति निर्धारित नही थी। जिस पर कि 'दृढ़ता से' स्थिर रहती। उदाहरणत :-

१—प्रात:काल निकर पहने लाठी धारी युवक हिन्दुत्व का दम भरते, 'नमस्ते सदा वात्सले मातृभूमे' त्वया हिन्दु भूमे सुख वर्धितोऽहम्' गाते हुए 'हिन्दु भूमि का स्तोत्र पाठ करते, परन्तु जनसघ मे जाते ही हिन्दु मुस्लिम-ईसाई- यहूदो की एक साझी भारतीय संस्कृति की दुहाई देने लगते। यह देख और सुन कर जनता चकित रह जाती।

२. प्रथम दिवस से हिन्दी की दोहाई देने वाले, देव नागरी लिपि के समर्थक, हिन्दी आन्दोलन के दिनों सहस्रों हिन्दी प्रेमियों के साथ कारागार भोगने वाले इन जनसघी सज्जनों के प्रधान प्रा० मधोक के जालन्धर वाले भाषण में जब हिन्दी की अवहेलना करते देखे जाते तो लोग "कुछ न समझे खुदा करे कोई' कह कर अवाक् रहे जाते।

३. एक ओर लाखो लोगों के हस्ताक्षर करवा कर गो हत्या बन्द कराने के लिये राष्ट्रपति भवन मे कई टन कागज़ मैमोरेण्डम की शकल मे ढेर कर दिया जाता और दूसरी ओर गत बकर ईद (बकर अर्थात् गौ) के अवसर पर जिस दिन मुसलमानों के लिये गौ की कुर्बानी धार्मिक कर्तव्य समझा जाता है, राजधानी के जनसंघी नेता 'ईद मिलन' का ढोंग रच कर जामा मस्जिद की छाया मे ज्याफते उड़ाने में ही देश धर्म एव जाति का कल्याण समझते हैं।

४. वर्तमान पजाब मे कभी गुरुमुखी लिपि मे पजाबी का विरोध कभी समर्थन, देहली मे इस का पक्षपात् और उर्दू का प्रतिनिधित्व तेरहवे जालन्धर अधिवेशन के प्रधान प्रा० मधोक को खुल खेले जब उन्होंने पंजाबी हिन्दुओं को उपदेश दे डाला कि वे हिन्दी से, जो कि देश की राष्ट्र-भाषा होने के अतिरिक्त उनकी धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं सास्कृतिक भाषा भी है, सम्बन्ध विच्छेद करले और गुरुमुखी लिपि मे पंजाबी को अपना ओढना बिछौना समझ लें जिसे न महाराजा रणजीतसिंह राष्ट्र भाषा के पद पर आसीन कर सके न अंग्रेज ने इसे यह स्थान प्रदान करना उचित समझा।

५—आजकल तो आर्य समाज और आर्यसमाजी कार्य-कर्ता इन भद्र पुरुषो को अखरने लग गए हैं जिन्होने जनसघ की भूल-भुलैय्या को पनपने का अवसर प्रदान किया, अपने मन्दिर तथा अन्य सस्थानो की उदारता पूर्वक इस्तेमाल के लिए इन्हे दिए और जो इनसे बड़ी-बडी आशाए करते हुए समझ रहे थे कि हिन्दु, हिन्दी, हिन्दुस्थान का उद्धार इन ही देश भक्तो, जाति हित-चिन्तको और धर्म प्रेमियो की कृपा से ही हो सकेगा। मगर अपने अध्यक्षीनय भाषण मे प्रा० मधोक के ये शब्द कि—

'पंजाब की स्थिति को और खराब करने से बचाने के लिये यह (अर्थात सरकार की ओर से जनसघ को दिये गये तथाकथित आश्वासनों को कार्यान्वित करना अति आवश्यक है, प्रकट करते है मानो पंजाब की स्थिति को असाधारण बनाने का आर्यसमाज ही उत्तरदायी था। या यूं समझिये कि बात-बात मे साम्प्रदायिकता का अड़गा लगाने वाले, आत्मनिर्णय और भारत सघ से पृथक हो सकने के हक को मांग करने वाले अकाली और महर्षि दयानन्द के निस्वार्थ-निष्कामभाव से देश की सेवा करने वाले आर्यसमाजी, जिन्होंने आज तक अपने लिये कभी कोई मांग नहीं की नही, प्रा० मधोक की कृपा के समान पात्र बन गये। अन्तत बताया जाय कि इस नई पैतराबाज़ी का सिवाय अकालियों के साथ आगामी साधारण चुनावो पर अपवित्र गठ-बन्धन की दुराशा तथा चन्द वोटो के लोभ के दूसरा क्या कारण हो सकता है ?

वस्तुस्थिति यह है कि जब तक हिन्दू अपने समस्त धार्मिक, सामाजिक, सास्कृतिक एवं राजनैतिक स्वत्वो के लिये हिन्दु के रूप मे वीरता पूर्वक नहीं सोचेंगे और धर्म निरपेक्षताके भ्रमजालको तोड़ कर संगठित रूप से डट कर कार्य क्षेत्र में नही उतरेंगे, तब तक हज़ारो अथवा लाखों की सख्या वाले सम्प्रदाय उभरते रहेंगे, सफल मनोरथ होते रहेंगे और चालीस करोड़ की यह शानदार हिन्दु कौम इन सैक्यूलर जादूगरो के इन्द्रजाल मे फसे होने के कारण पिटती रहेगी, विफल प्रयत्न होती रहेगी चाहे यह महापजाब आदोलन चलायें, हिन्दी रक्षा मोर्चा लगाये अथवा पंजाबी सूबा विरोधी अभियान चालू करें। अब वह अवसर आ गया है जब कि हिन्दुओं को अपने हृदय पर अंकित कर लेना चाहिये कि—

'आत्म विस्मृति आत्मघात है'

चरित्र बल के धनी बनो

ले०—वेद पथिक पथिक श्री धर्मवीर जी आर्य झंडाधारी व्याख्यान-भूषण सराय रुहेला, नई दिल्ली -५

आज सृष्टि की आदि काल से अब तक का विश्व के इतिहास को ध्यान पूर्वक अवलोकन करने से यह ज्ञात होता है कि बुराईयों और पापो में कुसस्कारों में पड कर बड़े से बडे साम्राज्य तबाह और समाप्त हो चुके हैं इस लिए ऐ मनुष्य, पर नारी को पैनि छुरि समझो, हलाहल का प्याला समझ कर इनके मोहजाल चितवन से अपने आप को बचाओ अन्यथा लोक और परलोक में दुसह दुखों को भोगना पड़ेगा। सयम, सदाचार, घोर वैराग्य, तप, जप, व्रत अनुष्ठान के बिना मनुष्य उन्नति के शिखर पर लाख जन्म मे भी नहीं पहुंच सकता है।

सदाचार मनुष्य का अलौकिक रत्न कोष है। यह ध्यान रखो अपने पास चाहे लाखों और करोडों की सम्पत्ति सपदा आवे, चाहे कंगाली के दिनो मे एक फूटी कौड़ी तक न रहे इस बात की चिंता मत करो परमात्मा पर अटल और अटूट विश्वास रखो।

अरबों रुपयो से और चक्रवर्ती साम्राज्य से भी मूल्यवान मनुष्य का चरित्र बल है इसकी रक्षा करो।

यह ध्यान रखो अपकीर्ति जग में मरण समान है। सुयश मनुष्य का जीवन धन सर्वस्व है इसलिए शुभ कर्मों के करने मे लोक उपकार करने में वेद विद्या के प्रबल प्रचार मे यज्ञ के अनुष्ठान मे संयमी सदाचारी, परोपकारी संत महात्माओं महा योगियों और विद्वानों की सेवा और सहायता में अपने धन को और शरीर को लगाओ।

यह ध्यान रहे मनुष्य चाहे चारो वेदों का महा ज्ञाता हो, सकल विश्व की विद्याओ का महा पण्डित हो, यदि उनका चरित्र शुद्ध नही है, उनके मन मे पाप की भावनाए हैं तो वह महा मूर्ख है और निन्दनीय है।

एक व्यक्ति चाहे वह कम पढ़ा लिखा हो वह सयम के साथ रहता है उसका जीवन यज्ञ मय है उसके जीवन में विकार नही है वह परमात्मा की भक्ति मे और लोक सेवा मे वैदिक सस्कृति और सभ्यता की रक्षा में अपना तन-मन-धन निछावर करने की प्रतिज्ञा कटिबद्ध है।

देश धर्म की रक्षा के लिए सर कफन बाधे फिरता है वह हमारे आदर और पूजा तथा समान का पात्र है।

यह ध्यान रहे पर नारी से प्रीत करने के कारण रावण की सोने की लंका आज से ९ लाख वर्ष पूर्व राख मे मिल गई थी। चरित्र पतन और ऐयाशी के कारण मुगल साम्राज्य का सूर्य अस्त हो चुका है।

चरित्र बल राष्ट्र का रत्न कोष है। पर नारी के द्वारे कितनो की मूंछ उखड़ते और अनगिनत जूते पड़ते और कितनों को जेल जाते और कितनों को मौत के घाट उतरते मैंने देखा है। आज आश्रम मर्यादा को कलंकित करने वाले भगवे बाने को बट्टा लगाने वाले एक नही देश मे लाखो लोग घूम रहे हैं इसलिये रगे हुए देश धर्म के शत्रुओ से सावधान रहो और उन का वाणी मात्र से भी सम्मान मत करो

(क्रमशः)

आर्यसमाज शक्ति नगर

देहली का ८वां वार्षिकोत्सव ८ से १५ मई तक बड़े धूमधाम से मनाया गया। जिस में पं० सुखीराम जी महोपदेशक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि जालन्धर की रात्रि को वेद कथा होती रही तथा श्री राजाराम मदन मोहन जी के भजन होते रहे। उत्सव में अनेक विद्वान्, सन्यासी तथा कविगण पधारे।

आर्यसमाज विक्रमपुरा जालन्धर शहर

साप्ताहिक सत्सग रविवार ५-६-६६ को प्रातः ८ बजे हवन का कार्य आरम्भ होगा ... प्रार्थना आरती तत्पश्चात् श्रीमान् पुरोहित जी का मनोहर व्याख्यान होगा। सभी सज्जनों से सानुरोध प्रार्थना है कि समय पर पधार कर अनुगृहीत करें।

मन्त्री—आर्यसमाज विक्रमपुरा किला

आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा

कन्याओं का नया प्रवेश

आर्य कन्या महा विद्यालय बड़ौदा का नवीन सत्र ता० १६ जून से आरम्भ होता है। कन्याओं को प्रविष्ट कराने के लिये आचार्य आर्य कन्या महाविद्यालय कारेली बाग, बड़ौदा को लिखकर प्रवेश पत्र मंगवाकर ता० १० जून से पूर्व भरकर भेज दे। नवीन कन्याओं का ता० १६ से ३० जून तक प्रवेश किया जायगा।

संस्था का सैकण्डरी विभाग सरकार मान्य है। एस० एस० सी० तथा स्नातिका दोनों का अभ्यास क्रम रखा गया है। प्रवेश शुल्क रु० ६० है, मासिक फीस रु० ५५ है।

निवेदिका
अशोक कुमारी आचार्या

आर्ययुवक परिषद् दिल्ली-६

वार्षिक निर्वाचन

आर्य युवक परिषद (रजि०) का वार्षिक निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ :—

अध्यक्ष—श्री देवव्रत जी धर्मेन्दु उपाध्यक्ष—प्रि० ईश्वरदत्त जी; मन्त्री—प्रो० ओ३म्प्रकाश; परीक्षा मन्त्री—हरिदत्त जी; कोषाध्यक्ष—ओ३म्प्रकाश

—प्रचार मन्त्री

आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली का निर्वाचन कोर्ट ने रोक दिया

दिल्ली :—नगर की प्रसिद्ध आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली का निर्वाचन जो २२ मई को होने वाला था, कुछ सदस्यों की प्रार्थना पर कोर्ट ने रोक दिया। समाज के कुछ प्रभावशाली सदस्यों का कथन है कि समाज के प्रधान श्री रामगोपाल शाल वाले ने अनियमितताओं की भरमार कर रखी है और समाज का प्रयोग अपने निजी स्वार्थों के लिए करते हैं।

न्यायालय के समक्ष क्या-क्या रहस्य प्रकट होते हैं इसकी प्रतीक्षा है।

शिवकुमार १५-हनुमान रोड, नई दिल्ली

आर्यसमाज राजौरी गार्डन नई दिल्ली

द्वितीय वार्षिकोत्सव ६ से ८ मई तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। उत्सव ... प्रातः ... को ... रामवि... होती ... के सार ... भजन होते रहे।

—नन्दकिशोर भाटिया
मन्त्री समाज

आर्यसमाज सांबा (जम्मू)

चुनाव २२—५—६६ को निम्न प्रकार से सम्पन्न हुआ।

प्रधान—श्री रामलाल जी सराफ, उप-प्रधान—श्री नानक चन्द जी शर्मा, मन्त्री—श्री वेद प्रकाश जी वर्मा, उप-मन्त्री—श्री तारासिंह जी, कोषाध्यक्ष—श्री ... गुप्ता, अंतरंग सभा में श्री ... जी ... श्री दीना नाथ जी ... और सरदारा सिंह जी लिए गए और प्रादेशिक सभा के लिए दो प्रतिनिधि श्री वेद प्रकाश जी, श्री सरदार सिंह जी चुने गए।

आवश्यकता

भजनोपदेशक की

जिला वेद प्रचारणी सभा होशियारपुर को एक योग्य आर्य सिद्धान्तो से पूर्णतया परिचित भजनोपदेशिक की आवश्यकता है। वेतन योग्यता अनुसार दिया जावेगा। प्रचार का काम ग्रामों में करना होगा। बूटा राम-मन्त्री जिला प्रचारणी सभा, होशियारपुर।

आर्यसमाज राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-१५ का चुनाव

प्रधान—श्री सरदारीलाल जी अशोक, उप-प्रधान—श्री मनोहरलाल जी, श्री ... जी आर्य, मंत्री—श्री नन्दकिशोर जी भाटिया, उपमंत्री—श्री कृष्णलाल जी, श्री ... जी, श्री ओ३म्प्रकाश जी, कोषाध्यक्ष—श्री हरि बाबू गुप्त, पुस्तकाध्यक्ष—श्री धर्मवीर जी आर्य, लेखा निरीक्षक—श्री हरबन्सलाल जी ... सभी अधिकारियों का निर्वाचन सर्व सम्मति से हुआ। अन्तरंग सभा के सदस्यों के निर्वाचन का अधिकार प्रधान एवं मंत्री को सौंपा गया।

—... मन्त्री समाज

आर्यसमाज रैनावाड़ी (श्रीनगर) का चुनाव

२१ मई को निम्न प्रकार से सम्पन्न हुआ।

प्रधान—श्री ... नाथ जी, उप-प्रधान—श्री ... लाल जी, मन्त्री—श्री श्याम सुन्दर जी वैद, कोषाध्यक्ष—श्री श्यामलाल जी सराफ, पुस्तकाध्यक्ष—श्री मदन मोहन जी, सभासद—श्री दीना नाथ जी।

श्याम सुन्दर वैद
मन्त्री समाज

मेला कुरुक्षेत्र, सूर्यग्रहण पर

इस मेले पर १५ से २० मई तक आर्य प्रादेशिक सभा के प्रबन्ध में कैंप लगाया गया। सभा की ओर से श्री पं० जगदीश चन्द्र जी शास्त्री पधारे और श्री रणजीत सिंह जी सहायक पुरोहित का कार्य करते रहे। प्रति दिन दोपहर के बाद तथा रात्री को सभा की मंडलियों के भजनों का तांता लगा रहा। ... के अवसर पर ... हजारों नरनारियों ने पधार कर ... का लाभ उठाया। इस सारे मेले पर चौ० धर्मवीर जी व ला० रलियाराम जी का विशेष सहयोग प्राप्त होता रहा।

शोक समाचार

श्री ... जी ... प्रादेशिक उप सभा देहली के ... की धर्मपत्नी श्रीमती देवीबाई जी पुनवानी का २२-५-६६ को रविवार रात के ९॥ बजे दुर्घटना से देहावसान हो गया उनकी क्रिया रस्म ३ जून सायं ५ बजे उनके निवास स्थान सी० ७ निजामुद्दीन वैस्ट नई देहली में होगी। उनके सम्बन्धियों से ठीक समय पर पधारने की प्रार्थना है।

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित। मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टेलीफोन नं० ३०७७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे | वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक २४) ३० ज्येष्ठ २०२३ रविवार—दयानन्दाब्द १४१– १२ जून १९६६ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तयः

अग्निरस्मि जन्मना

हे लोगो ! कान खोल कर सुन लो। मैं तो जन्मकाल से ही अग्नि बन के आया हू। अग्नि के समान सब से आगे चलता तथा सब को प्रकाश देकर जीवनपथ दिखलाता हू। दुष्टो को भस्म भी कर देता हू।

घृतं मे चक्षु

यह मेरी आंखे बड़ी चमकती हैं। कोई भी धर्म का, समाज या राष्ट्र का द्रोही शत्रु मेरी आखो से बच कर निकल न सकेगा। मेरी दृष्टि से बच नहीं सकता। सब को मेरी आंखें देखती हैं।

अमृतम् म आसन्

मेरे मुख में अमृत भरा है। जैसे अमृतपान कर के तृप्ति हो जाती है वैसे मेरे मुख से निकले शब्दों को सुन कर सारे मुग्ध, मस्त हो जाते हैं। मधु की तरह मेरे मुख में मीठा अमृत-रस भरा हुआ है।

यशस्वो अस्याः संसदः

मैं इस संसद का, समाज सभा का यशस्वी सभासद् बन के रहू। हर समाज में या किसी भी क्षेत्र की सभा हो अथवा राष्ट्र की संसद् हो वहां पर भी मेरा यश फैलता रहे। मेरे कामों की सर्वत्र कीर्ति हो।

सा म वे द से

वे दा मृ त

राजा का धर्म

शाम इत्था महां अस्यमित्रमाहो अस्तृनः।
न यस्य हन्यते सखा न जीयते कदाचन॥

अथर्व वेद कांड प्रथम सूक्त २० मन्त्र ४

अर्थ—हे राष्ट्र के पालक शासक राजन् ! आप (शासः) शासक (इत्था) इस प्रकार से (महान्) बडे भारी (असि) हो। आप (अमित्रसाहः) शत्रुओ—अमित्रो को वश मे रखने वाले हो। आप (अस्तृतः) किसी से भी न मार खाने वाले हो, सुरक्षित हो। (न) नही (यस्य) जिस आप का (हन्यते) मारा जाता है (सखा) मित्र व प्रजालोक तथा न ही आप के राज्य की जनता को कोई भी शत्रु (जीयते) जीता जा सकता है (कदाचन) कभी भी।

भाव—हे वीर शासक ! राष्ट्र के प्यारे राजन् ! आप राष्ट्र के शासक हो, वीरता से भरपूर राजा बने हो ! आप का आचार, विचार, व्यवहार एव प्रजाजनो से प्यार भी महान् ही है। आप स्वय महान् हो। राष्ट्र को समय-समय पर हानि पहुचाने वाले जितने भी विरोधी, शत्रु तथा उत्पाती बन कर गडबड पैदा करना चाहते हैं। उन सब को वश मे रखते हो कुचल कर रख देते हो। आप को कोई भी तो मार नही सकता है। जिस प्रजा के वर्ग की आप पालना करते हो, उसे न तो कोई मार ही सकता है और न ही उसे पराजित किया जा सकता है। यह राजा का धर्म है।—स०

अमूल्य वचन

जिह्वा मे मधुमत्तमा

"मेरी जिह्वा मीठी हो।" जबान की कटुता से ही कितने झगडे और फसाद होते हैं। यदि जिह्वा मे मिठास आ जाएगी, तो सब कुछ मीठा हो जाएगा। इसी लिए वेद की आज्ञा है :—

'जिह्वया अग्रे मधु मे, जिह्वा मूले मधूलकम्'

"मेरी जिह्वा के अग्र भाग में और जिह्वा के मूल मे मिठास रहे। मेरा चाल-चलन मीठा हो। मेरी वाणी मीठी हो। मैं मीठा बनूगा। मैं मीठे से भी अधिक मीठा बनूगा।" इत्यादि वेदोपदेश सदा ध्यान मे रखने योग्य है। स्वभाव की माधुरी का इस प्रकार अत्यन्त महत्व है। यह वैदिक मधु-विद्या देखने से पाठकों को बहुत बोध मिल सकता है। निश्चय ही संसार में सफलता पाने का अमोघ शस्त्र है। इस लिए विजयेच्छु पाठक इस उपदेश को अपनाने का यत्न करें।

ऋषि दर्शन

यत्रैको मनुष्यो राजा

जिस देश मे एक ही मनुष्य राजा बन जाता है, सारी शक्ति उसी के हाथ मे होती है, प्रजा की कोई सत्ता व आवाज नही होती। अकेला अधिनायक होता है, डिक्टेटर-शिप चलती है, अकेला ही सब कुछ होता है—वहा।

तत्र पीडिताश्च

वहा, उस देश में, राज्यमें सारी प्रजा सारी जनता, सारे लोग पीडित हो जाते हैं दुःखी होते हैं वह अकेला जन तन्त्र को कुचल कर अधिनायक बन कर मनमानी चलाता और मन-मानी करता है। लोग अतीव कष्ट पाते हैं।

एताः तिस्रः सभाः

इसलिए सारे कामो को ठीक रूप से चलाने के लिए राज्य मे तीन सभाए बनानी चाहिए ताकि सारे देश में राज्य के लोगो के काम उत्तम ढंग से चलते रहे। इन सभाओ के द्वारा सारी प्रजा जीवन मे सुखी बनी रहे।

एका राजार्य सभा

राज्य के कार्यो को ठीक ढंग से चलाने के लिए तथा प्रजा को सुखी बनाने के निमित्त पहली राजार्य सभा बनानी चाहिए। जिस का काम सारे राज्य प्रबन्ध को चलाना है। राज-नीति ठीक चले।

भा ष्य भू मि का से

सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

निराकार शब्द का अर्थ है— आकार, रूप रग आदि से रहित होना ईश्वर को मानने वाले को आस्तिक कहते है और न मानने वाले को नास्तिक । आस्तिको के भी दो भेद हैं। इन मे से एक ईश्वर को साकार मानते हैं और दूसरे निराकार। साकार रूप के उपासक प्रभु की मूर्ति बनाते हैं और उस मूर्ति की प्रतिष्ठा करके उससे नाना प्रकार की वस्तुओ की याचना करते हैं। अब प्रश्न उपस्थित होता है कि प्रभु को साकार मानकर उपासना करने से कौन-सा बडा भारी पहाड टूट पडता है? लोग इसका विरोध करते हैं। क्या इससे कुछ हानि की सभावना है। इस विषय में हमे एक पुरानी कहानी याद आ रही है। एक गुरु के दो शिष्य थे, एक ईश्वर सर्वव्यापक मानता था और समझता था कि पहाड के सर्वोच्च शिखर पर, समुद्र की सबसे नीची सतह पर, नदियो की धारा मे तेज बहती वायु की गति मे वह प्रभु विद्यमान है। दूसरा शिष्य प्रभु को एक देशी समझता था और वह साकारोपासना करता था। गुरु ने एक दिन अपने दोनो विद्यार्थियो को बुला कर परमेश्वर की सर्वव्यापकता समझाते हुए कहा कि बिना प्रभु को सर्वव्यापक माने हम पापो से दूर नही हो सकते और जब तक ससार मे पाप रहेगे तब तक सुख की प्राप्ति असभव रहेगी। दूसरे शिष्य ने इस का विरोध किया। दूसरे दिन गुरु ने दोनो को दो फल दिए और कहा कि तुम इसे ऐसे स्थान पर काटना जहा तुम्हे कोई न देखे। एक ने किवाड बन्द किए, वहा किसी को न देख कर उसे काटा और प्रसन्नचित्त गुरु के सामने आ उपस्थित किया। दूसरा वापिस लाया और कहा कि मुझे ऐसा स्थान कहीं भी न मिला जहा कोई भी मुझे न देख रहा हो। इस दृष्टात का उद्देश्य है कि जो व्यक्ति प्रभु को सर्वव्यापक मानेगा वह उसे सर्वत्र विद्यमान समझ कर कोई भी अनुचित काम करते हुए उस के देखने के भय से उस से विरत हो जायगा और जो उसे एक देशी मानेगा। वह उस से बच कर पाप की ओर प्रवृत्त होगा और जब हम प्रभु को साकार मानेंगे तो उस समय उसका एक देश मे रहना स्वाभाविक हो जायगा. क्योंकि साकार वस्तु सीमित होती है। इस लिए परमेश्वर को साकार समझते हुए हम अपने को पापो से मुक्त नही कर

धार्मिक चर्चा :—

प्रभु निराकार हैं

(श्री सुरेश चन्द जी वेदालंकार एम० ए० एल० टी० डी० बी० कालेज, गोरखपुर)

सकेंगे। इसको ठीक रूप में इस प्रकार हम समझ सकते हैं कि यदि परमेश्वर साकार होने से सीमित होगा और सीमित आकार प्रकार वा मूर्तिमान परमेश्वर गोरखपुर में रहेगा तो दिल्ली और कानपुर वालों के दोषों को वह नही देख सकेगा और जब उनके दोषों को नही देख सकेगा तो या तो वह उन्हें अपराध करने पर भी दण्ड नही देगा और दण्ड देगा तो उस में दोष होने से वह न्यायकारी नहीं हो सकेगा। यदि परमेश्वर को न्यायकारी मानना है और उसे सर्वव्यापक मानना है तो उसे निराकार मानना पडेगा। परमेश्वर के साकार उपासक सूरदास तक ने भी लिखा है—

'रूप, रेख, गुण जाति जुगुति
बिनु हि निरालंब मन चकृत धावै
... .
सूर सगुण लीला पद भावै।

सूरदास वास्तव में निर्गुण भगवान् की उपासना करना चाहते हैं पर उसके रूप को न समझनेके कारण उसकी मूर्ति की कल्पना कर लेते हैं। इस प्रकार साकार उपासक भी परमेश्वर के निराकार रूप के ही उपासक हैं। इसी लिए वेदों मे कहा है:—

न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यशः। हिरण्य गर्भ इत्येष मा मा हिंसीदित्येषा यस्मान्न जात इत्येष। य० ३२।३।

(यस्य) जिसका (महत्) महान् (नाम) प्रसिद्ध (यशः) यश है (तस्य) उस परमात्मा की कोई (प्रतिमा) प्रतिमा (न अस्ति) नहीं है। (हिरण्य गर्भ इति एषः) हिरण्य गर्भ इत्यादि मन्त्रो से (मा मा हिंसीदित्येषा) 'मा मा हिंसी दित्येषा' मन्त्रो से तथा (यस्मान्न जातः) 'यस्मान् न जातः। इन मन्त्रो से उसका वर्णन होता है।

एक दूसरे मत्र मे इसे बहुत पुराना सब से पहला देव बतलाया गया है और कहा गया है कि वह महान् अवकाश में स्थित है और न इस के हाथ है और न पाव सिर आदि अवयव है अर्थात् यह अशरीरी निराकार है और सब के अन्दर गुप्त अथवा व्याप्त है। शरीर रहित होने से यह निरवयव है और इसी कारण यह सब में व्याप्त है। यह परमेश्वर अव्यक्त है और इस मत्र में परमेश्वर की प्राप्ति के उपाय का उल्लेख करते हुए यह कहा गया है कि बलवान् आत्मिक शक्ति सम्पन्न मनुष्य ही इसे प्राप्त कर सकता है। 'नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः' यह आत्मा बलहीन को प्राप्त नहीं होता। दुर्बलों को आनन्द स्वरूप की प्राप्ति कहां? उनके लिए तो दुःख, दरिद्रता और दीनता ही रहती है—

स जायते प्रथमः पस्त्यासु
महो बुध्ने रजसो अस्य योनौ।
अपादशीर्षा गुहमानो अन्तायो
युवानो वृषभस्य नीले।
ऋ० ४।१।११

(सः प्रथम पस्त्यासु जायत) वह पहिला प्रजाओ मे हुआ है (अस्य महः रजसः बुध्ने योनौ) वह इस महान् अंतरिक्ष के मूलस्थान में होता है। यह (अपादशीर्षा) पाव सिर आदि अवयवो से रहित है (अन्तः गुहमानः) अन्दर गुप्त है। यह (वृषभस्य नीले) वीर्य युक्त पुरुष के स्थान से (आयायुवानः) सघटना या सम्मेलन का कार्य करता है।

एक यजुर्वेद ३२-२ मत्र में परमेश्वर के निराकार स्वरूप के विषय मे बतलाते हुए कहा है—

'विशेष तेजस्वी और सृष्टि में पूर्ण व्यापक परमात्मा से सब निमेष आदि काल के अवयव होते हैं। कोई भी इस परमात्मा का न ऊपर है, न तिरछा, न मध्य भाग मे पूर्णता से ग्रहण कर सकता है।' अर्थात् काल के सब अवयव और सब गति उसी तेजस्वी सर्वव्यापक परमात्मा से प्रकट हो रही है। उस परमात्मा का ऊपर नीचे आदि कोई अवयव नही अर्थात् वह निराकार है।

ऋग्वेद ८/६२/३ मत्र में कहा गया है कि वह तो गूगे का गुड़ है। अर्थात् जैसे गूंगा आदमी गुड़ का स्वाद नहीं बता सकता उसी प्रकार प्रभु की सत्ता का अनुभव करने पर उस का रूप नहीं बताया जा सकता है। मंत्र है:—

अन्तरिच्छन्ति तं जने रुद्रं परो मनीषया गृभ्णन्ति जिह्वया ससम्।

अर्थात् जो (मनीषया) बुद्धि से (परः) परे है (तंरुद्रं) उस रुद्र प्रभु को ज्ञानी मुमुक्षु (जने अनाः) मनुष्य के बीच में=आत्मा के भीतर (इच्छन्ति) चाहते हैं खोजते हैं। जैसे (ससम्) फूल को (जिह्वया) जिह्वा से (गृभ्णन्ति) ग्रहण करते हैं।

यजुर्वेद का ४० वां अध्याय जो ईशोपनिषद् के रूप में भी प्रचलित हैं उस के ८ वें मंत्र मे लिखा है:—

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरꣳ शुद्ध मपापविद्धम्। कविर्मनीषी परिभूःस्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः। यजु० ४०।८

जो ब्रह्म शीघ्रकारी, तेजस्वी, सर्वशक्तिमान् सूक्ष्म एव स्थूल शरीरों से रहित अर्थात् कभी भी नस नाड़ी के बन्धन मे न आने वाला, अविद्यादि दोषो से रहित, सदा पवित्र, पाप संसर्ग से सदा पृथक् सर्वज्ञ, अन्तर्यामी, दुष्टों का तिरस्कार करने वाला स्वसत्ता में परानपेक्ष, अनादि स्वरूप अर्थात् जिसकी संयोग से उत्पत्ति, विभाग से नाश, माता पिता जन्म, गर्भवास, जन्म मरण कभी नहीं होते, सर्वत्र व्यापक है, वही परमेश्वर नित्य जीवरूप प्रजाओं को ठीकठाक रीति से, वेद द्वारा सब पदार्थों को देता है अथवा कर्म फल देता है।

इस मंत्र में कितने ढंग से ईश्वर की निराकारता का प्रतिपादन किया गया है।

ऋग्वेद के ८।६९।११ मंत्र में कहा गया है—

अपादिन्द्रो अपादग्निर्विश्वे देवा अमत्सत्। वरुण इदिह अयत्तमायो अभ्यनूषत वत्स संशीश्वरीरिव॥ ऋ० ८।६९।११

(इन्द्र) सम्पूर्ण ऐश्वर्य सपन्न प्रभु (अपात्) निराकार है। (अग्निः) चेतन जीव (अपात्) निराकार है। और (विश्वे देवाः अमत्सत) सब इन्द्रियां और सूर्य चन्द्रादि सुख के साधन हैं अथवा इस बात के ज्ञान से सभी विद्वान् मोक्ष या आनन्द प्राप्त करते हैं। अर्थात् निराकार न मानने वालो को अज्ञान वश कष्ट होता है। (वरुण इत् इह अयत्) वरुण=सर्वश्रेष्ठ भगवान् ही इस संसार में सर्वत्र वास करते हैं। (अभ्यः तम् अभ्यनूषत शिश्वरीः इव वत्सं सम्) सब स्तुतियां उसको प्राप्त होती हैं जिस

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सम्पादकीय—

आर्य जगत्

वर्ष ६| रविवार ०२३, १२ जून १९६६ [अंक २४

कब आंखें खोलोगे

हिन्दुसमाज के आखें बन्द करने का भीषण परिणाम सारे देश के सामने आगया। सारा समाज आखे बन्द कर के सो गया। इस का अनुचित लाभ उठा कर विदेशी सत्ता के लोग इस्लाम और ईसाईयत के रूप में भारत मे खुल खेले। हमारी दुर्बलता, फूट तथा ऊंच नीच की भेदभावना को देखते हुए हमारे घर की प्रत्येक वस्तु को हथियाने मे लग गये। आज भारत का सीमा प्रान्त, वीर दाहर का सिन्धुप्रान्त, वीरभूमि पजाब का अधिक भाग तथा आधे से भी अधिक बगाल राष्ट्र के विराट शरीर से काट दिये गए। स्वर्गभूमि काश्मीर भी तो कुछ चला गया। भारतीय समाज सोता रहा। यहा के लोग नदियो मे स्नान, सूर्यग्रहण को मुक्त कराने, तीर्थों की यात्रा एव काली देवी को रिझाने मे लगे रहे। परन्तु काली का बगाल बच न सका। कितनी हानि हो गई। इस पर जितने आसू बहाये जाये थोड़े हैं।

इस पर भी भारतीय समाज की आखें नही खुल सकी। अब तक भी तमाशा सामने हो रहा है। केरल मे शकराचार्य की भूमि पर ईसायत की पताका का जोर है। आसाम, झारखण्ड व छोटा नागपुर मे तथा मध्य प्रदेश मे ईसाई अपना काम करके हिन्दुसमाज को ईसाई बनाने मे पूरे ज़ोर से लगे हुए हैं। उनके पास धन जन की कमी नही है। विदेशो से लाखो नही करोड़ों रुपया इस काम के लिए आ रहा है।

भारतीय समाज की सरिता के कगारों को यह विदेशी प्रवाह गिराता जाता है। देश की शासक पार्टी को इस की तनिक चिन्ता नहीं उस की जाने बला चाहे सारा भारत ईसाई बन जाये या मुसलमान। उस का तो कांग्रेस का नाम कायम रहना चाहिए। इन लोगों में किसी को भी इस बात का ध्यान तक नहीं। केवल इस बात की चिन्ता है कि हम लोक-सभा, विधान सभाओं व मन्त्रिमण्डलों की कुर्सी पर बने रहे।

स्वार्थ ने स्वाभिमान को दबा रखा है। आने वाले निर्वाचनो के लिए ऐसे लोगो को अभी से रात को नीद नही आती। पापड़ बेलने में लगे हैं। अपने २ सिद्धान्तो को बेचने में लग पड़े है। स्वार्थ व सत्ता ने सब को अन्धा बना दिया है।

आम जनता भी उदासीन है। उसे तो विचार तक नही कि ईसाईयत क्या कर रही है। वह अपने परिवार के पालने मे मस्त है। लाखो पति धनी लोग तो लक्ष्मी के दास बन चुके है। अपने बच्चे भी ईसाईयो के स्कूल मे प्रविष्ट करा कर ईसायत को अपने घरो मे लाते जा रहे है। राजनीतिक दलो की बात ही न कहे। उनके सामने केवल चुनाव ही है और किसी बात के लिए समय नहीं है। आर्यसमाज ही शेष है जिस ने यह काम किया और करना है। किन्तु सत्य यह है कि इस मे भी रक्त देने वाले दीवाने बलिदानी विरले है। दूध पीकर मौज मनाने वाले अधिक हैं। सारा काम प्रचारक ही करते रहे। उनका ही यह फर्ज है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी की तरह सीने मे गोलिया खायें, प० लेखराम की तरह बच्चे को मौत के मुह मे छोड कर घूम २ कर पेट में छुरा खाकर मरे। स्वामी सर्वदानन्द बन कर चने चबाये महात्मा हंसराज बन कर जीवन भेंट कर दे। जब आर्यसमाज की ओर से किसी प्रकार का सत्याग्रह आदि का आन्दोलन हो तो अपने परिवार बच्चो समेत जेल में जाकर चने चबायें। सरदी, गर्मी मे सदा यात्रा पर रह कर वेद का सन्देश सुनाये। मुसल्मान व ईसाईयो से टक्कर लेते रहे। अपनी सन्तान को भी प्रचारक बना कर यातनाएं सहन करते रहे। इसी काम में ही मर जाये। इस समय का यह दृष्टिकोण है। बात ठीक है। प्रचा को के लिए यह सम्मान है।

क्या यह पर्याप्त है? क्या इस से प्रवाह रुक जायेगा? सत्य तो यह है कि भारतीय समाज को मिलकर काम करना होगा। धनी समाज को धन से भर देवे। समय देने वाले समय देवें। काम करने वाले काम करें। उन के परिवारो के साथ सहानुभूति रखने वाले सहानुभूति रखे। बडे-बड़े व्यक्ति, आर्य समाज के बडे व्यक्ति अपना समय निकाल कर भ्रमण करें। साहित्य का काम जारी हो तभी काम चलेगा। दयानन्द की फौज का मुकाबिला कौन कर सकता है आप को पता होना चाहिए कि इगलैंड के पहले प्रधानमन्त्री का एक लडका मिशनरी है जो कि मिशन के काम पर लगा है।

भारतीय समाज जितनी जल्दी आखे खोले उतना ठीक होगा। आज वेद प्रचार का पात्र सर्वथा खाली है। प्रचारको की कमी हो। फिर ईसाईयत का प्रवाह रुकेगा कैसे? हर बड़ा आर्य परिवार अपना एक एक लड़का समाज की सेवा केलिए अर्पण कर दे। प्रवाह बढता आ रहा है—**आंखें खोलो।**

—त्रिलोक चन्द्र

जीवन-मरण का प्रश्न

सनातन धर्म सभा पञ्जाब के नेता श्री स्वामी गणेशानन्द जी ने जालन्धर के सनातन धर्म मन्दिर माई हीरा गेट के पुलिस द्वारा अपमान पर अपने वक्तव्य मे इसे जीवन-मरण का प्रश्न कहा है। गत दिनो पजाबी सूबा आदोलन मे अन्य नगरो मे जो-जो अत्याचार हुए। उन मे जालन्धर मे और अपमान के साथ-साथ वेदमन्दिर तथा सनातनधर्म मन्दिर माई हीरागेट में जो कुछ हुआ। वह किसे भूल सकता है? अपने राज्य मे यह सब कुछ हो सकता है? यह देख सुन पढ कर तो सारे स्तब्ध रह गये। आर्य-समाज को यद्यपि मूर्तिपूजन मे मतभेद है, परन्तु धर्म मन्दिर के सम्मान में वह सब से आगे है। धर्म स्थानो का अपमान आर्य समाज के लिए भी असह्य है। हम महमूद गजनवी को आज भी खुले रूप मे निन्दनीय समझ कर कोसते है। क्योकि उसने धर्म-मन्दिरो का घोर अपमान किया था। हैदराबाद का सत्याग्रह निजामशाही द्वारा वहा के मन्दिरो के अपमान भी एक कारण था। आर्यसमाज स्वामी गणेशानन्द जी की आवाज मे आवाज मिला कर कहना चाहता है कि जिसने भी धर्मस्थानों का अपमान किया है— उसकी पूरी-पूरी जाच पडताल कराई जाए। यदि कुछ नही हुआ नो कामरेड मरकार जुडिशियल जाच पडताल क्यो नही करानी? कोई भी समाज इम अपमान पर चुप नही रह सकता।

यह चौबीस करोड़

पजाब के माान्य शिक्षा मन्त्री श्री प्रबोध चन्द जी ने अभी कहा है कि इस समय पंजाब सरकार इस प्रान्त मे शिक्षा पर चौबीस करोड रुपये व्यय कर रही है तथा पजाब मे २५ लाख छात्र छात्राएं शिक्षा प्राप्त कर रहे है। इस शिक्षाप्रसार के कर्तव्य को पूरा करने के लिए सरकार की सराहना है। किन्तु एक बात कहनी है कि आज की शिक्षा का प्रभाव क्या है? इस पर भी सरकार ने कभी ध्यान दिया है। आज के स्कूलो के वातावरण को तथा शिक्षा पाने वालो की वेशभूषा तथा उनके कामो को देख कर लज्जा को भी लज्जा आती है। क्या यही भारतीये शिक्षा का जीवनस्तर है। आज की शिक्षा मे गुरु शिष्य का प्राचीन मीठा सम्बन्ध सर्वथा समाप्त सा होता जा रहा है। भगडा व कल्चरल कार्यक्रमो का जोर है। फैशन के प्रवाह को भी यदि सरकार अपने शिक्षणस्थानो मे न रोक सकी तो यह किताबी शिक्षा सर्वथा बेकार होगी। जीवन का आदर्श बिगड रहा है। परमात्मा के लिए आज के शिक्षणालयो को भगडास्थान न बनवाओ। धार्मिक शिक्षा के बिना यह शिक्षा किसी काम की नही है। स्कूली वातावरण को यदि बदला न न गया तो करोड़ो का व्यय किस काम का

—स.

आर्यजगत् के बारे में

आर्य प्रादेशिक सभा पजाब जालन्धर शहर का साप्ताहिक मुखपत्र आर्यजगत् प्रति सप्ताह मौन होकर सभा के कार्यभार को लेकर मान्य महात्मा सन्यासी, नेताओ व विद्वानो के गम्भीर विचारो के लेखो के साथ आपके समाजो, परिवारो व सस्थानो

(शेष पृष्ठ ५ पर)

मानो न मानो आपका यह अख्तयार है।
हम नेको बद जनाब को समझाये जायेंगे॥

हिन्दु जाति तथा इस के आधुनिक नेताओं की अवस्था देखकर मथुरा की एक घटना याद आती है। यमुना नदी मे कुछ मुसाफिर रातो रात किसी दूसरे नगर को जाने के लिये नाव मे सवार हुए। रात अन्धेरी थी, निरन्तर चप्पू चलाते रहे। प्रातः काल थोडा प्रकाश होने पर बडा २ इमारते दिखाई देने लगी। ख्याल किया कि हम अपने ध्येय स्थान पर पहुच गये है। चप्पु चलाने बन्द करके इमारतो को देखने लगे तो मालूम हुआ कि मथुरा के तट पर वही खड़े है जहा रात को किश्ती मे सवार हुए थे। रात भर चप्पु चलाने के बावजूद अपने आपको वही देखकर बहुत हैरान हुए। कारण ढुण्डने लगे तो मालूम हुआ कि किश्ती का रस्सा घाट पर लगे कुण्डे से बन्धा रहा, इसलिये किश्ती एक कदम आगे नही बढ़ सकी और सारी रात की मेहनत और समय व्यर्थ गया। यही हालत कोहलू के बैल की होती है, जब दिन भर बन्धी हुई आखो के साथ चलते और चलते जाने के पश्चात् सायकाल उसकी आखे खोली जाती है, तो वह अपने आपको वही उस कोहलू के साथ बन्धा हुआ पाता है।

मैं अपनी जाति के पथ प्रदर्शको, नेताओ और तन-मन से इसके उत्थान के लिए दिन रात एक करने वाली संस्थाओ के सामने नम्रता पूर्वक एक प्रश्न रखना चाहता हू, कि कभी उन्हो ने यह देखने की तकलीफ उठाई है कि वर्षों की निष्काम सेवा और घोर परिश्रम के पश्चात् वह जाति की नैय्या को कितना आगे ले जा सके है या यह वही की वही खड़ी है अथवा आगे जाने की बजाये, (जैसा कि देखा जा रहा है) उलटी अपने उद्देश्य से और भी पीछे तो नही जा रही? अन्तिम दोनो अवस्थाओं मे इसका कारण ढूढना जाति के प्रत्येक शुभचिन्तक का परम कर्त्तव्य हो जाता है। सृष्टि के आरम्भ मे लेकर महाभारत काल तक भूगोल पर चक्रवर्ती राज्य करने वाली आर्य जाति उठने का नाम नही लेती। इस का हर कदम अपनी शानदार प्राचीनता की तरफ से बढने की बजाये यूरोप और अमरीका की विनाशकारी असभ्यता की तरफ जा रहा है। मास, शराब, दुराचार, अश्लील गाने और

देश और जाति के कर्ण-धारो !

सावधान

श्री रुद्रदत्त जी शर्मा प्रधान, आर्यसमाज लक्ष्मणसर अमृतसर

नाच, सिनेमा तथा रेडियो के भयानक दुरोपयोग और कलचरल प्रोग्रामो के नाम पर खालिस आचार हीनता के खुले प्रचार ने हमें कहां से कहा ला फैंका है? हमारे नवयुवक आज धर्म ईश्वर और वेद का नाम सुनने को तैयार नही। उनकी दृष्टि मे रामायण और महाभारत कल्पित कहानियां हैं। उनके विचार मे राम और कृष्ण नाम के कोई महापुरुष इस ससार मे नही हुए।

धर्म निरपेक्ष सरकार की तरफ से हमे वेदीन और धर्म हीन बनाने का पूरा यत्न किया जा रहा है। ऐसी अवस्था से लाभ उठाने के लिए मुसलमान और ईसाई हर उचित और अनुचित ढङ्ग से अभागी हिन्दू जाति के युवको और युवतियो का धर्म भ्रष्ट कर रहे हैं। अग्रेजी राज्य की अपेक्षा कई गुणा अधिक सख्या मे यूरोपियन मिशनरी भारत के कोने-कोने मे रुपया, कपडा, अनाज, घी और दूध के डिब्बे बाट - बाट कर प्रायः करीब हिन्दुओ और विशेषतः अछूत कहलाने वाले भाइयो को वे खटके धर्म भ्रष्ट कर रहे है। परन्तु हमारी सरकार चीन, ब्रह्मा और लंका की तरह इन को देश से निकालने की बजाये उल्टा समय-समय पर उनकी सहायता करती और उन्हे हर प्रकार की सुविधाए देती है। आज इस जाति की अवस्था नदी किनारे खड़े उस वृक्ष की सी हो रही है जिस की जड़े हर समय पानी के थपेडो से खोखली हो रही है। अकेला आर्य समाज वेद प्रचार और शिक्षा आदि के कार्यों मे लगा होने पर भी अपनी शक्ति के अनुसार ईसाइयत की बाढ का भी मुकाबला कर रहा है। परन्तु क्या जाति के प्रत्येक हितैषी को इसकी चिन्ता नही होनी चाहिए?

एक दुकानदार भी वर्ष भर के पीछे देखता है कि उसने क्या कमाया और क्या गवाया है? आखिर कोई समय तो ऐसा भी आना चाहिये जब भारतीयता और प्राचीनता के सरक्षक अपने काम का निरीक्षण करे और देखें कि इतने परिश्रम के पश्चात् भी क्या वह कोहलू के बैल की तरह अथवा खूण्टे के साथ बन्धी हुई किश्ती की तरह वही की वही तो नही खड़े?

गत चुनाव के समय चूक जाने के कारण शासन की ओर से हिन्दुओं तथा मातृ-भाषा हिन्दी के साथ हो रहे घोर अत्याचारो के जो कटु अनुभव इन पाच वर्षो मे हुए उन्हे सामने रखते हुए आने वाले चुनाव में अपनी आवाज को अधिक से अधिक बलवती और प्रभावशाली बनाना इस समय आप के हाथ मे है। यदि तुम्हारे हृदय मे वस्तुतः देश और जाति के लिए तडप विद्यमान है तो प्राचीन सभ्यता और सस्कृति के अनुकूल विचार धारा वाले नेताओं सभाओ और सस्थाओ को कुछ काल के लिए अपने मत भेदो और द्वेषो को भुला कर तथा स्वार्थ की भावना को मिटाकर केवल जाति के उत्थान के महान लक्ष्य को सामने रखते हुए एक सयुक्त मार्ग निर्धारित करना होगा। देश और जाति का हित चाहने वाली जनता ऐसे निश्चय का सच्चे हृदय से स्वागत करेगी। हा, इसके लिए उदारता और त्याग की आवश्यकता है। पृथक् पृथक् गुट-बन्दियो से ऊपर उठना होगा और सगठित एव सम्मिलित शक्ति के साथ उच्चतम योग्य महानुभावो को सफल करने के लिए कटि बद्ध होना होगा। ऐसे शुभ उद्देश्य के लिए मिल कर चलने से किसी को भी हानी नही होगी, अपितु अधिक शक्ति के जुट जाने से अधिक से अधिक सुलझे हुए उम्मीदवार सफल हो सकेगे। यदि किसी सस्था को आरम्भ मे किसी अश मे कुछ हानी प्रतीत भी होगी तो वह उस निराशा पूर्ण और अपमान जनक हानि से कही बेहतर होगी जो फूट की अवस्था मे वोट बट जाने के कारण परिश्रम और धन व्यय करने के पश्चात् असफल होकर देखनी पड़ेगी और उसके साथ वर्षों तक फिर सारी जाति के विरोधियो और विधर्मियो द्वारा पद्दलित होना पड़ेगा। सैकड़ो वर्षों की गुलामी के पश्चात् हमे पिछले इतिहास से कुछ तो शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये और अधोपतन के एक मात्र कारण फूट रूपी राक्षसी से बचना चाहिये।

जिन संस्थाओं में प्रभु कृपा से कुछ जागृति दिखाई देती है, वह देश और जाति का हित रखते हुए भी शक्ति के नशे मे तथा तगदिली का शिकार होकर अपनी सस्था को ही सब कुछ समझते हुए विशाल जातीय दृष्टि कौन से सोचने और एक दूसरे के साथ मिल कर चलने को तैयार नही होते जिस के परिणाम स्वरूप वह पूरी सफलता प्राप्त नही कर सकते, जो मिलकर चलने की अवस्था में कर सकते हैं दूसरी तरफ कई महानुभाव अपनी सफलता मे विश्वास रखते हुए भी केवल इस लक्ष्य से खड़े हो जाते हैं कि व्यक्ति गत ईर्षा के कारण सम्मुख खडे अच्छे से अच्छे उम्मीदवार को हानि पहुंच सके। वह जाति के सब से बडे शत्रु हैं।

इस समय 'लोक सभा' और विधान सभाओ आदि मे ऐसे अनुभवी, सदाचारी और आदर्श महानुभावो को भेजने की आवश्यकता है जो रूस और अमरीका आदि की तरफ आखे लगाये रखने की बजाये भारत और भारतीयता के सच्चे पुजारी हो और जिनके हृदय मे देश और जाति दोनो के लिए वास्तविक हित और अटूट श्रद्धा हो और किसी अवस्था मे भी जाति के नाम पर देश को और देश के नाम पर जाति के हितो को न्योछावर करने के लिए तैयार न हो सके। अन्त मे वास्तविक हित का एक दृष्टात देकर अपनी इस प्रार्थना को समाप्त करना चाहता हू:—

एक बार अदालत मे एक बच्चे के सम्बन्ध मे दो देवियो का झगडा पेश हुआ। दोनो ही माता होने का दावा करती थी। मैजिस्ट्रेट जब किसी प्रकार भी वास्तविक (सच्ची) माता का निश्चय न कर सका तो उसे एक उपाय सूझा और आदेश दिया कि चू कि दोनों देविया बच्चे की माता होने का दावा करती हैं और उसे लेना चाहती हैं अतः इसका एक ही उपाय हो सकता हैं कि बच्चे के दो टुकडे कर दिए जाएं और दोनो को एक-एक टुकड़ा दे दिया जावे उस के साथ ही जल्लाद को बुला लिया गया। ज्यूही जल्लाद ने तलवार उठाई तो असली माता झट कूद कर मध्य मे आ खड़ी हुई और कहने लगी कि भगवान के लिए बच्चे के टुकड़े मत करो इसे सही सलामत दूसरी देवी को ही देदो। ठीक इसी तरह अब समय है कि देश और जाति का सच्चा हित चाहने वाले नेता और संस्थायें

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्य समाज पुरानी मंडी जम्मू

इस वर्ष आर्यसमाज पुरानी मंडी का अधिकारी वर्ग बहुत ही उत्साह और लग्न से समाज का काम करता रहा है. पिछले कई एक वर्षों से चल रही सब प्रकार की शिथिलता दूर हो गई है। समाज में एक प्रकार से नया जीवन आ गया है। समाज के सब पर्व बडे उत्साह और समारोह से मनाये जा रहे है। ग्राम प्रचार की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। पीछे श्री डा० ओम प्रकाश जी (Doctor of Philasophy) के कई स्थानो पर कई प्रभावशाली भाषण कराये गये। फिर श्री डा० भवत राम जी सहगल (Vedic misonary) जी को एक मास के लिए जम्मू नगर प्रचारार्थ बुलाया गया। उनके साथ श्री प० मेलाराम जी सगीत कलाकार भजनोपदेशक प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा बुलाये गये। इनके काम का भी जनता पर बहुत प्रभाव पडा।

विद्या प्रचार के लिए भी आर्य समाज पुरानी मण्डी, बहुत उत्साह से काम कर रहा है। आर्य कन्या विद्यालय हाई स्कूल पुरानी मण्डी बडी सफलता पूर्वक चल रहा है। जिसमे एक हजार से ऊपर कन्याओ की सख्या है। पिछले एक वर्ष से लडको का डी० ए० बी० हाई स्कूल भी चालू कर दिया है। जो अच्छी उन्नति कर रहा है।

विद्यालय के परिणाम बहुत अच्छे है। विद्यालय का भवन बहुत विशाल है। तो भी कन्याओं की बढती हुई सख्या को देखकर और महती आवश्यकता अनुसार और नए कमरो और एक बहुत बडी सुन्दर यज्ञ शाला का निर्माण किया जा रहा है। विद्यालय मे धर्मशिक्षा मुख्य है। प्रबन्ध उत्तम है। शिक्षा विभाग की परीक्षाओ के अतिरिक्त प्रतिवर्ष कुछ कन्याये आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब द्वारा सचालित धार्मिक परीक्षाये, 'धर्म प्रवेशिका,' 'धर्माधिकारी' आदि मे भी लड़कियां काफी सख्या मे भाग लेती हैं, और सफल होती हैं।

इसका श्रेय निशुल्क रूप से काम कर रहे (Retired Inspector of school) भूतपूर्व शिक्षाध्यक्ष शिक्षा-विभाग श्री मुल्कराज जी प्रधान समाज एवं श्री मा० चूनी लाल जी वर्तमान प्रबन्धक जी को है।

इस वर्ष प्रोफेसर श्री वेद प्रकाश जी मल्होत्रा, प्रधान आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मन्त्री, समाजहित के लिए २१-५-६६ को जम्मू मे पधारे। रविवार २२-५-६६ के साप्ताहिक अधिवेशन मे उनका बहुत ही प्रभावशाली मौलिक शैली मे वेदोपदेश हुआ।

२३-५-६६ सोमवार आर्यकन्या विद्यालय मे उनके कर कमलो से धार्मिक परीक्षाओ मे उत्तीर्ण हुई ६६ छात्राओ को Deplomas (प्रमाण पत्र) प्रदान किए गये। और प्रोफेसर जी ने इन परीक्षाओ की उपयोगिता, शिक्षा, नैतिकता, आर्य समाज का गौरव. और जीवन की सफलता, कर्तव्य परायणता, सस्कृति, सभ्यता और सस्कारो आदि के महत्व पर भाषण दिया जिस का छात्रावर्ग, शिक्षकवर्ग, और प्रबन्धक वर्ग पर अमिट प्रभाव पडा।

—गोपाल कृष्ण
उपमन्त्री समाज

★ पृथ्वी से लेकर ईश्वर पर्यन्त पदार्थो का सत्य विज्ञान और उन से यथायोग्य उपयोग लेना विद्या कहाता है।

आर्य जगत के बारे में

(पृष्ठ ३ से आगे)

में पहुचता रहता है। सभाओ के पत्रो को कितना घटा रहता है यदि यह लोग जान पाये तो उनको अचम्भा होगा। अपनी यह सभा धर्मप्रचार के नाते प्रचार विभाग में घाटा उठाकर भी काम करती रहती है। सभा के मान्य अधिकारियो का ध्यान आर्य जगत् को और भी सुन्दर बनाने का है। इस के मान्य अधिष्ठाता श्री ला० सन्तोषराज जी, सभा मन्त्री प्रो० वेदप्रकाश जी एम० ए० तथा सारे ही अधिकारी अपना प्रचारकवर्ग, सस्थाओ व समाजो के सज्जनो का इस से स्नेह है। अब इस का टायप बारीक सुन्दर कर दिया गया है ताकि पठन-सामग्री अधिक आ सके। नया ब्लाक बनाया जा रहा है। लेखों का भी ध्यान दिया जा रहा है। आपकी सभा आप का आर्य जगत् आप ही सहायक है। हम केवल सिपाही है। प्रत्येक समाज, परिवार, सस्थान, इस की ग्राहक सख्या बढाने की कृपा करे-स०

हर्ष समाचार

श्री मेहर चन्द्र जी जौली अम्बाला छावनी निवासी ने अपने सुपुत्र रणजीत कुमार जी के शुभ विवाह पर निम्नलिखित सस्थाओ को दान दिया। इस शुभ दान के लिए आर्य प्रादेशिक सभा उनका हार्दिक धन्यवाद करती है। इसी प्रकार सभी सज्जन शुभ अवसरो पर सभा का ध्यान रखे तो सभा की आर्थिक अवस्था पर्याप्त मात्रा में सुधर सकती है।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा	५५/-
आल इडिया सेवा समिति	५१/-
आर्य समाज उरमुर होशियारपुर	२१/-
आर्य समाज पजाबी मुहल्ला अबाला छावनी	२१/-
,, माडल टाउन लुधियाना	२१/-
,, यमुना नगर	२१/-
प० ज्ञानेन्द्र देव जी शास्त्री	२१/-
आर्य गजट जालन्धर	११/-

—व्यवस्थापक

आल इंडिया दयानन्द माल्वेशन मिशन होशियारपुर

आल इडिया दयानन्द माल्वेशन मिशन होशियारपुर ने प० हरिशचन्द्र विद्यार्थी बी० ए० बी० टी० जम्मू. को आसाम तथा उत्कल प्रात मे प्रचारार्थ तथा मिशन के लिए धन एकत्रित करने के लिये नियुक्त किया है।

इनके अतिरिक्त मिशन ने अपने एक कार्यकर्ता श्री वेदव्रत को भी आसाम मे प्रचारार्थ तथा शुद्धि कार्यार्थ भेजा है। श्री मोहन लाल महादेव आर्य जो आसाम मे कार्य करते थे, को अब महाराष्ट्र तथा मध्य प्रदेश मे वैदिक धर्म के प्रचारार्थ तथा शुद्धि कार्यार्थ भेजा जा रहा है।

रामदास
प्रधान मिशन

★ जिस वस्तु की उपासना की जाती है उसके गुण उपासना करने वाले मे आ जाते है। जैसे यदि कोई विद्वान् की उपासना करे तो उसे विद्या प्राप्त होगी। इसी प्रकार यदि कोई पत्थर की पूजा करेगा तो वह पत्थर के समान जड़ मूर्ख और आलसी व अज्ञानी हो जावेगा।

★ इन ससार की बनी आखो से परमेश्वर को नही देख सकते, पर आत्मा मे उसका अनुभव करके ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

गीत

(आचार्य मित्र सैन जी एम० ए०, अलीगढ़)

सुख के साथी मिले हजारो, दु:ख मे कोई पास न आया।
धन के भाई तो बहुतेरे, निर्धनता मे धाम न आया॥
उमर नगर की भरी डगरिया
जब तक साथ रही तरुणाई।
तब तक बजती रही हमारे
इर्द गिर्द अलि की शहनाई॥
ज्यो ज्यो ढलती उम्र हमारी, अपना तन भी काम न आया।
सुख के साथी मिले हजारो, दु:ख मे कोई पास न आया॥
चलती गाडी देख सभी ने
मिल कर उस को दिया सहारा।
बहती नदिया बैठ किनारे
सब ने अपना हाथ पखारा॥
रुकती गाडी और नदिया के तट पर, कोई कभी न आया।
सुख के साथी मिले हजारो, दु:ख मे कोई पास न आया॥
उठता मानव देखा ज्योही
पल्ला सब ने जा पकडा।
गिरता देखा ज्यो ज्यो उसको
बीच भवर मे पल्ला छोड़ा॥
तरते मानव सब ने तारे, तृण को डूबा तनिक न भाया।
सुख के साथी मिले हजारो, दु:ख मे कोई पास न आया॥
भाई, बन्धु, कुटुम्ब, कबीला
जिस ने मिल कर साथ निभाया।
सब के सब रह गये यहा पर
क्या पत्नी क्या अपना जाया॥
मरघट तक तो साथ रहे पर, आगे कोई जाने न पाया।
सुख के साथी मिले हजारो, दु:ख में कोई पास न आया॥

हिन्दी का हिमायती कौन ?

(श्री सुन्दरलाल जी वोहरा, जोधपुर)

(गताक से आगे)

माना, आधुनिक लोकतन्त्र व्यवस्थित रूप पाश्चात्य जगत् ने दिया है, पर जहा तक भारत मे उसके प्रचलन का प्रश्न है, बुद्धिजीवी वर्ग को कुछ विचार करना ही होगा।

भारत मे हिन्दी के नाम मे अशाति का कारण लोकतन्त्र की आधुनिक व्याख्या है। इस लोकतन्त्र के पीछे सारा भौतिकवादी पाश्चात्य दर्शन है। इसकी व्याख्या की सारी शब्दावलि पाश्चात्य सभ्यता से प्रसूत है। इस लोकतन्त्र मे व्यक्ति को प्रमुख मानते हुए भी सस्था का अस्तित्व अनिवार्य निश्चित किया गया है।

अगर हम लोगो से आज तक यही प्रवृत्ति रही है कि हम बहुत कम अशो में अपने वैयक्तिक स्वार्थों का सास्थनिक सिद्धि के लिए बलिदान करने को तत्पर हुए हैं। इसे निश्चित रूप से "कम्पनी की कुण्ठा" ही कहा जाएगा। हमारी यही दुर्दम हठधर्मिता हम पर विदेशीपन को थोपे हुए है। हिन्दी का प्रश्न अभी तक पूर्णरूप से सुलझा ही नही है और हम प्रांतीय भाषाओ की प्रमुखता की बाग देने लगे हैं। परिणाम यह है : अंग्रेजी अभी चलने दो। याने बिल्लियो की लडाई मे बन्दर न्यायाधीश। किधर है हमारी राष्ट्रीयता, कहा है हम मे त्याग की प्रवृत्ति, कहा है हमारी आध्यात्मिक उपलब्धि, कहा है अद्वैत व अनासक्त को समझने-समझाने वाले ?

शब्दों का सैन्यकरण

माना, भाषा के मामले मे सेनाशाही (**regimentation**) नही होनी चाहिये, लेकिन जहा राष्ट्रीयता व सस्कृति के संरक्षण का प्रश्न उठता है, हमे किसी न किसी भाषा के प्रति श्रद्धालु व वफादार होना ही पडता है। विश्व-राज्य, निश्चित रूप से, एक दिवा स्वप्न ही है। कहा भी है : एकै साधे सब सधे, सब साधे सब जाय। रात को हमारे घर के आगन मे बिच्छु रेग रहे हैं और हम मशाल लेकर जगल मे रेग रहे बिच्छुओ का सफाया करने निकले हैं। भारत का बुद्धिजीवी वर्ग आज इसी रतौधी का शिकार है।

अनुशासन आवश्यक

तर्क दिया जाता है : प्राय: सारी वैज्ञानिक उपलब्धिया पाश्चात्य है, इसलिये भाषा भी पाश्चात्य ही रहे। तर्क समयानुकूल है। सही शब्दो मे, आज हिन्दी व अंग्रेजी का भाषा के नाम मे सघर्ष कम, सस्कृति व सभ्यता के नाम में ही अधिक है। समस्या है : वायरलेस व वेद साथ-साथ कैसे चले ? आज जीवन व जगत् के प्रति मानव का सम्पूर्ण दृष्टिकोण ही तो बदल गया है।

पर समष्टि के प्रति व्यष्टि की भक्ति अभी भी एक आवश्यक शर्त मानी जा रही है। लोकतन्त्र मे भी संस्था की अनिवार्यता स्पष्ट होती जा रही है; अन्यथा समाज नाम का कोई शब्द ही नही रहैगा यदि व्यक्तिवाद के नाम मे अनुत्तरदायित्व को ही पनपाना हमारा लक्ष्य हो तो इसी क्षण हमें गुफावासी बन जाना चाहिये—भाषा व भेदभाव का प्रश्न चिह्न ही मिट जाएगा।

जो भी हो, सास्थनिक अस्तित्व अनुशासन के लिए हमें एक भाषा माननी ही पड़ेगी। भारत के लिए ऐसी भाषा निश्चित रूप से हिन्दी ही है। किसी न किसी रूप मे यह कश्मीर कन्याकुमारी व कच्छ से कुमाऊ के पार तक बोली व समझी जाती है। और यो लकाशायर व लिंकनशायर की अंग्रेजी मे भी विचारणीय अन्तर है। जन भाषा कभी भी सेना की भाषा नही हुआ करती। यदि ऐसा कर दिया जाए (जैसा कि तानाशाही व साम्यवादी व्यवस्थाओ मे किया जाता है) तो व्यक्ति-व्यक्ति न रह कर बनैला बन जाएगा।

बौद्धिक व वैज्ञानिक विकास के नाम मे व्यक्तित्व का बलिदान शताश मे भी अपेक्षित नही होना चाहिये।

भाषा के नाम में व्यक्तित्व कुण्ठित नहीं होता

यह सत्य है कि राष्ट्रीयता व भाषा का चोली दामन सा सम्बन्ध है, पर इस प्रवृत्ति से व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास रुकता है, यह बात तर्क सम्मत नही है। व्यक्ति अपने आध्यात्मिक विकास के लिये किसी भी भाषा का वरण कर सकता है। रवि ठाकुर, योगी अरविन्द व स्वामी विवेकानन्द प्रभृति लोग इस बात के ज्वलन्त प्रमाण रहे है। लेकिन ऐसे लोग भी मातृ-दुग्ध के साथ ग्रहण की गई भाषा मे जिस सक्षमता के साथ अपने अन्तरतम भावो को अभिव्यक्त कर पाते थे, उनके द्वारा प्रसगवश अपनाई गई भाषा में उसकी अनुकृति मात्र ही रहती थी। तभी तो कहा जाता है कि हर भाषा की अपनी संवेदना व शाश्वत प्रतिभा (**genius**) होती है। समाज विशेष में बसे हुए बुद्धिजीवी वर्ग के स्वाद व सन्यास को ही ध्यान मे रख कर किसी भाषा को राष्ट्रीय स्तर पर आदरणीय व अनुसरणीय बनाए रखना शताश में भी न्याय संगत नही है।

दो विभाजनकारी शब्द

पर भारत में आज हिन्दी रूपी वृक्ष की जडो में मट्ठा व मीठापानी एक जैसा सीचा जा रहा है। राष्ट्र का स्वनिर्मित संविधान लागू हुए आज पन्द्रह वर्ष से अधिक समय हो गया है, फिर भी 'पुनर्मूषको भव:' का नाटक अपूर्ण है। हिन्दी का सबसे बडा अहित वे लोग कर रहे है जो संविधान मे हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा के रूप मे मान्यता स्वीकार करते हुए भी, आज तक "हिन्दी भाषी" व "अहिन्दी भाषी" शब्दो का प्रयोग कर रहे है। अनेक गम्भीर वक्ता व लेखकगण इस राष्ट्रघाती व्याधि से मुक्त नही हैं। जब यह निश्चित हो चुका है कि हिन्दी सम्पूर्ण भारत गणतत्र की राष्ट्रभाषा है, फिर "हिन्दी भाषी" व "अहिन्दी भाषी" शब्द क्या अर्थ रखते है ? इन शब्दो का प्रयोग करने वाले निश्चित रूप से हिन्दी के विरोधी ही हैं।

इस "अहिन्दी भाषी" नारे रूपी जयचन्द की आड मे आज अनेको विध्वसकारी प्रवित्तिया राष्ट्र मे पनप रही है। इसी अनिष्टकारी नारे के कारण दक्षिण के प्रात 'अनिश्चित काल के लिये अंग्रेजी में काम हो' की हठधर्मिता को पाल रहे हैं और तो और, उत्तर वाले प्रांत भी हिन्दी में लिखे गये पत्रो के साथ अंग्रेजी का अनुवाद संलग्न करना अपना गौरव समझते हैं।

यदि कुछ काल तक राष्ट्र में 'हिन्दी भाषी' व अहिन्दी भाषी' की विध्वंसकारी प्रवृत्ति प्रचलित रही तो वह दिन दूर नही जब उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश व राजस्थान एक अलग राष्ट्र बनाएंगे, सिखिस्तान व आमार देश बंगाल की विषैलीकुण्ठा अभी मरी नही है, द्रविडिस्तान अपने आपको पहले से ही पाक समझे हुए है ही। जनवरी १९६५ में तमिलनाडु में हुए दगे इस बात के ज्वलन्त प्रमाण हैं। मतिभ्रम से पीड़ित लोगों ने केशव कड़े के नाम में पजब में पिछले दिनो भीषण रक्तपात करवाया है। इन सब का एक ही कारण है : हम विष वृक्ष के पत्तो को काट रहे हैं, लेकिन साथ ही साथ अपने निहित स्वार्थों से पूर्ण अनेक रसायनो से उसकी जड़ों मे पोषण भी पहुचा रहे हैं। गांव चाहे भूखो मरे, अपने घर मे अनाज का सग्रह होता रहे—हमारी सही कुप्रवृत्ति आज राष्ट्रीय एकता रूपी भवन की नीव खोद रही है।

हो हल्का हिन्दी नहीं है !

हमारी दृष्टि में हिन्दी का आध्यात्मिक व अनुशासनिक महत्व गौण है; हमे, हिन्दी के नाम मे, आन्दोलन व आंतक फैलाना ही वरणीय रहा है। (क्रमशः)

सावधान

(पृष्ठ ४ का शेष)

व्यक्तिगत हानि सहन करके भी जाति और के टुकड़े होने से बचाने के लिए मैदान में निकले परन्तु यह तभी हो सकता है यदि हम जाति के हित को अपने और अपनी संस्थाओं से अधिक महत्व दे। निस्संदेह इसी मे सब का कल्याण है। अन्यथा—

बचोगे न तुम और न साथी तुम्हारे।
अगर नाव डूबी तो डूबोगे सारे॥

ला. लाजपतराय लायब्रेरी

आर्य समाज योगेन्द्रनगर का चुनाव

सरक्षक—श्री गुरदयाल जी झब, प्रधान—श्री गिरधारी लाल जी धवन, उपप्रधान—श्री सत्यपाल जी अग्रवाल, मन्त्री—श्री राजकुमार जी, उपमन्त्री—श्री हरिश्चन्द्र जी शास्त्री, कोषाध्यक्ष—श्री केदारनाथ जी, कार्यकर्ता—श्री शिवराम जी आर्य, सम्मानित सदस्य—श्री करतार चन्द्र जी, श्री मुरारीलाल जी।

इस लायब्रेरी का उद्घाटन समारोह श्री गुरदयाल जी झब प्रधान आर्यसमाज जोगेन्द्र नगर के करकमलो से हुआ। यह लायब्रेरी आर्यसमाज के सहयोग से चल रही है। वाचनालय में चार पांच दैनिक पत्रों, पांच छ: साप्ताहिक पत्रों का प्रबन्ध किया गया है। इस के अतिरिक्त सामाजिक उपन्यास, नाटक, कहानियां व जीवनी है। जनता पूरा लाभ उठा रही है।

राज कुमार
मन्त्री पुस्तकालय

चरित्र बल के धनी बनो

ले०-वेद पथिक श्री धर्मवीर जी आर्य झंडाधारी
व्याख्यान-भूषण सराय रुहेला, नई दिल्ली-५

(गताक से आगे)

दर्दनाक समाचार

आर्य समाज करोलबाग दिल्ली के वार्षिक उत्सव का अतिम दिन ९ मई सोमवार को था अंतिम दिन श्री पं० खेम चन्द जी सुमन स्नातक ज्वालापुर महाविद्यालय की अध्यक्षता में कवि सम्मेलन रात्री के ११ बजे तक चला। इस कवि सम्मेलन मे बोलने का सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हुआ।

सम्मेलन समाप्त होने पर शाति पाठ के पश्चात आर्य समाज चेम्बूर कैप बम्बई के उत्साही कर्मवीर मन्त्री श्री प० देवव्रत जी मुझे मिले उन्होने चालीस किलो हवन सामग्री का आर्डर मुझे दिया। उनसे जब मैने दिव्यानद जी का समाचार पूछा तो उन्हो ने आखों में खून के आसू बहाते हुये मुझे यह बतलाया कि स्वामी जी साधना आश्रम बम्बई के सतसग में आने वाली एक कन्या को लेकर भाग गए।

दिव्यानन्द पहले एक सप्ताह तक इसी आर्य समाज करोलबाग में अपना प्रवचन कर गये थे उन्हे सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री लाला राम गोपाल जी ने अपना पुत्र घोषित कर दिया। था। उनके चित्र सार्वदेशिक के अको में प्रकाशित हो चुके हैं। इस दुःखद समाचार को सुनकर मेरी अतर वेदना का कोई पारावार न रहा कि दिव्यानन्द जी काम वासनाओ के कीचड़ में फस कर आर्य समाज की और लाला राम गोपालजी की प्रतिष्ठा को मिट्टी में मिलाकर सदा के लिये चरित्र भ्रष्टता की मौत मर चुके है।

इस समय काम वासनाओ को प्रदीप्त करने वाले अश्लील फिल्मो का निर्माण हो रहा है। गन्दे इश्क के गानों का आकाश वाणी से रात दिन प्रबल प्रचार हो रहा है। धर्मात्मा और महात्मा तथा वीर योद्धा देश रक्षक धर्मरक्षक पुरुषों के निर्माण पर आज तनिक भी कांग्रेस के राम राज्य की दुहाई देने वालों का ध्यान नहीं है। धर्म शून्य राज्य से समाज का सुधार लाख करनें पर भी नही होगा।

भाईयों और बहिनों वैदिक साम्राज्य स्थापित करो। बुराईयों और पाप कर्मों से ससार को बचाने का आज बीड़ा उठाओ। चरित्रवान् धर्मात्मा महा पुरुषों का सदा मान सम्मान करो और दिव्यानद जैसे पतितों की पूजा जूतो से करना सीखो। चरित्र उन्नत बनाओ।

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य धर्म है। आर्य समाज से ही विश्व के मानव समाज का जीवन धर्मयुक्त वेदोक्त बनेगा।

भाईयो और बहिनो महर्षि दयानन्द जी अकेले रह कर देश को जगा गये आज करोडो की सख्या मे आर्य स्त्री पुरुषो के होते हुए देश का सुधार और उपकार नहीं हो रहा है। इस लिये महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के काम मे चार चांद लगाने का महा व्रत धारण करो। देश को और विश्व के मानव समाज को चरित्र के पतन से चरित्र की मौत से बचाओ।

आओ लुधियाना चलें

११, १२ जून को लुधियाना के ऐतिहासिक नगर मे आर्य वीर दल का ऐतिहासिक सम्मेलन होने जा रहा है। पजाबी सूबा के निर्माण पश्चात यह आर्यो का प्रथम अधिवेशन आर्यों को हर प्रकार से सफल बनाना चाहिए अपने और पराये आर्यों की शक्ति से परिचित हो सके, ऐसा प्रयास करना चाहिये। अतः पजाब के आर्य भाई बहिनों से मेरी प्रार्थना है कि आओ हम लुधियाना चले। प्रसन्नता का विषय है कि गुडगाव, नरवाना, कैथल, रोहतक, भिवानी, करनाल, अम्बाला आदि नगरो से स्पैशल बसें, लुधियाना को पहूंच रही है। जालन्धर से दर्शको के अतिरिक्त २०० आर्य वीर आ रहे है। अमृतसर से भी काफी आर्य भाई पधार रहे हैं यह आर्यो का एक भव्य समारोह होगा। कृपया अभी से इस के लिये तैयारी करे।

उत्तम चन्द 'शरर'
सचालक

अब आर्यसमाज क्या करे

(श्री रामदास जी प्रधान द. स. मि. होशियारपुर)

आर्य जगत में एक दो विद्वानो के लेख प्रकाशित हुए है कि वैदिक धर्म का प्रचार ससार मे किस तरह हो सकता है और समाज जो अब कमजोर हो गया है इस को फिर से जीवित करने के लिये क्या साधन उत्पन्न करने चाहिये। अन्त मे तान उसी जगह पर टूटती है कि जब तक आर्यसमाज के हाथ मे राज्य सत्ता न आएगी तब तक वैदिक धर्म ससार मे नही फैल सकता। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का सकल्प पूर्ण नही हो सकता। इस के लिए दूसरे मतो के उदाहरण दिए गए है परन्तु इनको मैं यहा लेख मे नही लाता। केवल इतना ही कहना चाहता हू कि यह विचार ठीक नही है कि मजहब (मत) का प्रचार राज्य सत्ता द्वारा हुआ। पहले यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि वेद का धर्म है और दूसरे धर्म नही है, मजहब या मत हैं। इस लिये धर्म और मत मे अन्तर को जानना अत्यावश्यक होगा।

बुद्ध मत का उदाहरण दे कर कहा जाता है कि सम्राट अशोक ने जब इस को गृहण कर लिया तो राज्य सत्ता से यह मत अधिक फैल गया, यह गलत है। सम्राट अशोक ने बुद्ध मत को फैलाने के लिये तलवार या शक्ति का प्रयोग नही किया। परन्तु उस का अपना जीवन, अपना जीवन चरित्र एक चमकता हुआ, उदाहरण था। उस ने अपने पुत्र तथा पुत्री को भिक्षू बना कर इस मत के प्रचारार्थ देश देशान्तो मे भेजा। इस कारण लोगो ने बुद्ध मत को अधिक मात्रा मे गृहण कर लिया। जीवन से जीवन उत्पन्न होना आवश्यक है। ईसाईयत के प्रचार के लिये भी राज्य सत्ता के जिम्मेवार नही ठहराया जा सकता। ईसाईयत का अधिक तर प्रचार उन प्रचारको द्वारा हुआ जिन्होने एक दूसरे के पश्चात अपनी जान की कुर्बानिया दी। परन्तु जब ईसाईयत ने शक्ति का प्रयोग किया और Inquisition को काम मे लाया तो इस के अन्दर विरोह उत्पन्न हो गया और वास्तव मे लोगो को ईसाईयत के सिद्धान्तो ने प्रेरित नही किया। अब भी लोग ईसाईयत के विचारों से प्रभावित हो कर इस मत को ग्रहण नहीं करते परन्तु घरेलू आवश्यकताओ की पूर्ति के लिये ही ऐसा करते है। इस्लाम का बोलबाला भी उस समय हुआ जब खलीफो ने अपने जीवन तथा कुर्बानी से इस का प्रचार किया। परन्तु जब इसलाम ने तलवार उठाई तो इस के विरुद्ध भी लोगो ने बगावत कर दी। और इस के न ग्रहण करने का भी यही कारण हुआ।

अब आर्यसमाज के इतिहास को भी देखना चाहिये। जिस समय इस का बोलबाला था तो उस समय इस के हाथ मे कोई राजसी शक्ति न थी अपितु राज्य सत्ता इसके अति विरुद्ध थी। इस के अतिरिक्त उस समय आर्यसमाज ने अधिक मात्रा मे लोगो को अपनी ओर आकर्षित किया क्योकि उस समय के आर्यो के अन्दर जीवन शक्ति, शुद्ध जीवन चरित्र, लोक सेवा की भावना तथा यज्ञमय जीवन था। वे जो कहते थे वही करके दिखलाते थे और इसके लिये हर कुर्बानी देने के लिये हर समय त्यार रहते थे। स्वामी दयानन्द जी महाराज से लेकर महात्मा हसराज तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी तक यही अवस्था रही। इस के पश्चात सस्थाओ के कारण या राजनैतिक क्षेत्र मे भाग लेने के कारण, जब आर्यों का राज्य सत्ता मे अधिकार पैदा हुआ तो चरित्र हीनता, दिखलावा तथा चापलूसी पैदा हो गई। इन के कारण वैदिक धर्म के प्रचार मे प्रगति रुक गई। इस तरह जैसे-जैसे आर्य लोग राजनैतिक क्षेत्र मे प्रगति करते गये वैसे-वैसे आर्यसमाज का पतन होता गया और वर्तमान अवस्था आपके सामने ही है।

मत को जबरदस्ती, तलवार से या शक्ति द्वारा लोगो पर ठोसा जा सकता है और वे ना मानते हुए भी इस को स्वीकार कर लेगे, परन्तु वे इस को अपने जीवन मे धारण नही करेंगे और एक दिन विद्रोह हो जावेगा।

धर्म का प्रचार तथा प्रसार तो शुद्ध जीवन चरित्र, धार्मिक बृति और शुद्ध उदाहरण द्वारा होगा। धर्म को गृहण करने से पूर्व लोग यह देखते है कि जिन सिद्धातो का ये प्रचार करते है वे उन के अपने जीवन मे कहा तक प्रवेश कर चुके हैं। यदि चरित्र और

(शेष पृष्ठ ८ पर)

उ ...ो बढ़ावें

कर ... आर्यसमाज लक्ष्मणसर अमृतसर

आर्यसमाज एक पवित्र शुद्ध सदाचारी समाज का नाम है जो दुनिया को सीधे रास्ते पर, ठीक मार्ग पर चलाने का समर्थ रखे। भारत के एक महान दूरदर्शी ने जब भारत की अवस्था देखी थी तो उसके मन मे बहुत ठेस लगी, दुख हुआ कि ओह? वह जाति जो कभी पवित्र, शुद्ध सदाचारी थी आज घोर अन्धकार मे पडी है इस को किस प्रकार सीधे रास्ते पर लाया जा सके? क्या कोई उपाय है इस जाति को उठाने, बचाने का? आदि अनेक विचार थे उस महान दर्शनिक मे।

इन सब प्रश्नो का जवाब उस भारत के महान हितैषी देव दयानन्द ने एक ही दिया जो 'आर्यसमाज' के नाम से जनता के समक्ष रखा और इस के सदस्यो पर बहुत भारी जिम्मेदारी सौंपी, बहुत बडे कर्त्तव्य सौंपे जिन मे एक तो दुनिया का भला हो सके दूसरे इन का स्वय का भी भला हो सके।

जैसा कि 'आर्यसमाज' के नाम से ही स्पष्ट सामने इसका कर्त्तव्य आ जाता है इस समाज ने भारत की खास कर बहुत सेवा की। जनता को इतनी रुचिकर प्यारी बन गई कि कोई इसे अपनी मा कहने लगा, कोई इसे गुरु कहने लगा, कोई इस पर जान न्यौछावर करने लगा आदि २। तब आर्यसमाज उन पवित्र, चमकीले रत्नों का भण्डार बन गया जिन को देख, सुन, बर्ताव करके लोग इसकी ओर बड़ी तेजी से खीचे आने लगे। यह सब था उनके अपने निजी जीवन से प्रभाव जनता पर। जनता यह नही देखती थी कि इनके पास वेद हैं या इन के पास सत्यार्थप्रकाश है। यह सब तो जनता को बाद में पता चला, पहले वह बर्ताव और गुणो को देख कर ही खींची आई।

इनका सेवा-भाव सदाचार इतना था कि जो कोई एक बार भी इनके सम्पर्क मे आ जाता सदा ही इनका बन जाता इतना ही नही बल्कि आजीवन इनका ऋणी रहता। वास्तव में आर्य समाज का लक्ष्य यही है कि दूसरो की सेवा करना उनके कष्टों को दूर करना। आर्यसमाज जब तक, जितना भी इस अपने पवित्र कार्य को लक्ष्य मान कर मैदान मे आया उतना ही उज्जवल, पवित्र और शुद्ध बन कर मैदान से निकला।

आज तक आर्यसमाज लगातार अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए आगे बढता चला आ रहा है। पर अब इसकी गति कुछ आगे की अपेक्षा घट गई है। इसका यह मतलब नहीं कि इसके महान् लक्ष्यो व सिद्धान्तों में कोई कमी आ गई है या कोई सिद्धान्त झूठा निकला है बल्कि कारण यह है कि हमने सेवा का पवित्र जो काम था दुखियों के दर्दों को सुनने का जो महान लक्ष्य था, नियम था उसको भूल गये है। हमने अपने मन्दिरो में सेवक रख लिये हैं सेवा करने के लिए पर स्वयं करते नही। यह बात याद रखनी चाहिये कि जो कभी एक बार भी गरीब दरिद्र, दुखिया का दर्द दूर करता है, वह गरीब दुखिया उसका सदा के लिए हो जाता है। ऋषि ने हमें सेवा करके हमारे दर्द मिटाने के लिए कई बार जहर पीया था, कितनी बार ईंटें पत्थर खाये थे अपने जिस्म पर, कितना रंग लाया उसका यह सेवा भाव, सब जानते हैं।

उठो! जागो! अपने लक्ष्य को पहचानो! हमारा लक्ष्य सेवा करना है, दुख दूर करना है जिसके लिये हमे शुद्ध पवित्र सदाचारी बनना है। मैदान में आना है। अपने युवकों पर कुमारों पर ऐसा ही प्रभाव डालना है, ऋषि के पवित्र मिशन को बचाना है महान दूरदर्शी ने जो वृक्ष लगाया था आओ उसकी सेवा करने का व्रत लें।

मोहन आश्रम हरिद्वार में अमृत कथा

आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान प० रुद्रदत्त जी शास्त्री विद्याभास्कर की मनोरम कथा मोहन आश्रम हरिद्वार में ११ जून से २० जून तक होती रहेगी। धर्म प्रेमी भाइयो से प्रार्थना है कि ठीक समय पर पधार कर अमृत कथा श्रवण करके आत्मानंद लाभ करें।

सच्चिदानन्द तीर्थ

प्रभु निराकार है

(पृष्ठ २ का शेष)

प्रकार वर्धक शक्तियां बच्चे को प्राप्त होती हैं। ईश्वर और जीव दोनो निराकार हैं पर ईश्वर सर्व व्यापक है, जीव नही।

आइए अब हम उस निराकार प्रभु का गुणगान करें:—

भूत भविष्यत् वर्तमान का
जो प्रभु है अन्तर्यामी।
विश्व व्योम मे व्याप्त हो रहा
जो त्रिकाल का है स्वामी।
निर्विकार आनन्द कन्द है,
जो कैवल्य रूप सुखधाम।
उस महान् जगदीश्वर को है,
अर्पित मेरा नम्र प्रणाम।

अब आर्यसमाज क्या करे

(पृष्ठ ७ का शेष)

विचारो मे अन्तर होगा कोई इस विचारे को धारण नही करेगा।

यदि अब आर्य समाज चाहता है कि फिर से इसका पहले की तरह अधिक तीव्रता पूर्वक प्रचार तथा प्रसार हो तो फिर वही यशमय जीवन, शुद्ध चरित्र तथा निस्वार्थ लोक सेवा की भावना को धारण करना होगा। नही तो परिस्थितियां और बिगड़ती जाएंगी।

आर्यकुमार सभा नारनौला का चुनाव

निम्न प्रकार से सम्पन्न हुवा। प्रधान—सर्वश्री हीरालाल जी, उप-प्रधान—श्री हरीश्चन्द्र जी, मन्त्री—महेन्द्र प्रताप जी, कोषाध्यक्ष—श्री वासुदेव जी, पुस्तकालयाध्यक्ष—कंसदेव जी अरोड़ा (कुम्हार)।

मन्त्री—महेन्द्र प्रताप रहेजा

शोक समाचार

आर्यसमाज रैनवाड़ी (श्रीनगर) के अद्वितीय विद्वान वानप्रस्थी श्री जानकीनाथ जी के निधन से स्थानीय आर्यसमाज को तथा अन्य आर्य सज्जनों तथा समाजों को उनके वियोग से अत्यन्त दुःख है। ईश्वर से उनकी सद्गति व परिवार को इस दारुण कष्ट सहन करने की प्रभु से प्रार्थना करती है। श्याम सुन्दर वैद्य मन्त्री समाज

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत् कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मासिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd No P. 1

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक २५) ६ आषाढ़ २०२३ रविवार—दयानन्दाब्द १४१- १९ जून १९६६ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

हथियार मांगे जा सकते हैं किन्तु मांगे हुए हथियारों से लड़ा नहीं जा सकता

श्री यश जी का जनरल स्पैरों के अभिनन्दन समारोह में भाषण

लड़ाई के मैदान में जवानों के इरादे लड़ते हैं

जालन्धर श्री यश जी ने कल यहां कहा कि गत सितम्बर के भारत-पाकिस्तान संघर्ष में भारतीय जवानों ने यह साबित कर दिया कि लड़ाई के मैदान मे अकेले हथियार नही, जवानों के इरादे लड़ते हैं।

आगे आपने जो रायजादा स्टेडियम मे मेजर जनरल राजेन्द्रसिंह स्पैरो, लैफ्टीनैंट कर्नल सधा और अन्य सैनिक अफसरो के सम्मानमे आयोजित एक समारोह मे भाषण दे रहे थे. करतल ध्वनि के मध्य कहा कि हमारे बहादुर जवानो ने हथियार मागने वालो की भ्राति भी दूर कर दी और यह साबित कर दिया कि हथियार मागे तो जा सकते हैं लेकिन मागे हुए हथियारो से लडा नही जा सकता। उन्होने कहा कि लडाई के मैदान मे हमारे बहादुर रणबाकुरो ने जिस सूझबूझ और युद्ध कौशल का परिचय दिया वह अद्वितीय एव प्रशसनीय है। पाकिस्तान ने अमरीका से बडे-बडे पैटन टैंक और अन्य शस्त्रास्त्र तो प्राप्त कर लिए लेकिन उसके जवानो और अफसरो की न कोई सूझबूझ थी और न हमारे जवानो और अफसरो की तरह मजबूत इरादे थे। भारतीय जवानो ने इस लड़ाई मे अमरीका के पैटन टैंको की जो दुर्गत की उस से अमरीका वाले भी आश्चर्यचकित रह गए।

श्री यश जी ने जनरल स्पैरो द्वारा १७ वर्ष पूर्व जोजीला दर्रा की लडाई में दिखाए गए कारनामो का उल्लेख किया और कहा कि भारत का सिपाही जहा भी लड़ता है वहा एक नया रिकार्ड कायम करता है। भारतीय जवानों ने जोजीला मे टैंक ले जाकर ससार भर को चकित कर दिया था। जनरल स्पैरो जिस तरह स्यालकोट सैक्टर की घमासान लडाई के हीरो है वैसे ही की जोजीला की लडाई के भी।

★ जितनी सच्ची विद्याये तथा शास्त्र मनुष्यो के जीवन के लिए लाभदायक हैं उन सब का जानना धर्म के अन्दर ही आजाता है। धर्म उन विद्याओ का विरोधी नहीं। इसके अतिरिक्त धर्म कभी नही मर सकता। आत्मा और परमात्मा के विषय मे जानना और ईश्वर की भक्ति करना भी मनुष्य के लिए आवश्यक है।

देश की समृद्धि व उन्नति के लिए गांवों का विकास आवश्यक

आर्यवीर दल सम्मेलन में श्रीमती ललिता शास्त्री के उद्गार

लुधियाना — श्रीमती ललिता शास्त्री ने आज यहा आर्यवीर दल सम्मेलन में आर्यवीर दल की सेवाओं की सराहना की और कहा कि देश की समृद्धि, उन्नति और मजबूती के लिए गांवों की उन्नति अत्यावश्यक है। स्वर्गीय शास्त्री जी कहा करते थे कि जब तक गांव की जडे मज़बूत नहीं हो जाती, देश को सही शब्दों में मजबूत नही कहा जा सकता और यह-जड़े हैं गांव। हमे चाहिए कि हम स्वयं गांवो मे जा कर लोगों की समस्याओ को समझ कर उनकी सहायता करे। हमने इसी उद्देश्य के लिए शास्त्री सेवा निकेतन कायम किया।

मैं आर्यवीर दल से निवेदन करती हू कि वह इस काम में निकेतन को सहयोग दे। देश को ऊपर उठाने के लिए यहां से छूतछात, निर्धनता और अनपढ़ता को खत्म करना चाहिए और दल यह काम अच्छी तरह कर सकता है। मैं जनता से भी सहयोग की अपील करती हू। इससे पहले जब श्रीमती शास्त्री भाषण देने को स्टेज पर आई तो माता ललिता शास्त्री 'जिंदाबाद' लाल बहादुर शास्त्री जिंदाबाद 'महर्षि दयानन्द अमर रहें' के नारे लगाए गए।

भारत सरकार से परमाणु बम बनाने की मांग

श्री यश जी की अध्यक्षता में आर्य वीर दल के रक्षा सम्मेलन का प्रस्ताव

लुधियाना आर्य वीर दल का आज यहा राष्ट्र रक्षा सम्मेलन श्री यश जी की प्रधानता मे हुआ जिसमे सर्वसम्मति मे दो प्रस्ताव पास किए गये। पहले प्रस्ताव मे जिसे महात्मा आनन्द गिरी जी ने पेश किया, सरकार से जोरदार माग की गई कि सीमाओ की स्थिति के दृष्टिगत सरकार परमाणु बम बनाने पर भी विचार करे। दूसरे प्रस्ताव मे कहा गया कि दहेज और जाति-पाति की प्रथा ने समाज को खोखला कर दिया है। इन को समाप्त करना चाहिए। प्रस्ताव मे आर्य भाइयो से अपील की गई है कि वह दहेज बिल्कुल न दे और अपने नामो के साथ जाति न लिख कर केवल आर्य लिखा करे।

शिक्षामन्त्री श्री प्रबोधचन्द्र ने सम्मेलन को सबोधित करते हुए धर्म और देश मे प्यार करने पर जोर दिया और कहा कि धर्म देश-प्यार को नही रोकता। आर्य समाज उन सस्थाओ मे से एक है जिन्होंने स्वतन्त्रता के पौदे को अपने रक्त से सींचा। हो सकता है कि कुछ लोग मार्ग मे भटक गए हो किन्तु एक सस्था के रूप मे आर्य समाज की कुर्बानी अद्वितीय है। महर्षि दयानन्द ने सब से पहले स्वतन्त्रता का नारा लगाया था और कहा था कि परतन्त्र देश मे धर्म-विकास नही कर सकता इसलिए धर्मप्रचार के लिए स्वतन्त्रता आवश्यक है।

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी

आज विश्व का मानव समाज परमात्मा की प्राप्ति के लिये अधीर है व्याकुल है। कोई काशी मे जाता है कोई काबा मे तो मक्के और मदीने मे खाक छानता है। कोई मन्दिर मे कोई गुरुद्वारे मे कोई चर्च में तो कोई मस्जिद मे सिजदा करता है। आज इस विशाल विश्व का मानव समाज परमात्मा को पाने के लिए उद्विग्न अवस्था मे ठोकरे खा रहा है। ऐ विश्व के नर नारियो याद रखो यदि परमात्मा को प्राप्त करना चाहते हो! यदि स्वर्गीय सुखो को प्राप्त करना चाहते हो, यदि मोक्ष अवस्था मे विचरण करना चाहते हो, यदि जन्म मरण के सुख दुखो से मुक्त होना चाहते हो, यदि चिताओ की चिता से बचना चाहते हो, यदि अक्षय सुखो को प्राप्त करना चाहते हो यदि प्राण प्रियतम का साक्षात्कार करना चाहते हो, यदि परमात्मा से वार्तालाप करना चाहते हो, यदि परमात्मा का दिव्य दर्शन अपनी अन्तर आत्मा की गहन गुफाओ मे करना चाहते हो यदि वेदोक्त जीवन के रहस्य के मर्म को जानना चाहते हो, यदि महर्षियो के जीवन की झांकियों को देखना चाहते हो, यदि सृष्टि की आदि काल के उन कल्याणकारी शब्दो को वेद ज्ञान के मर्मों को जो आज आकाश मे गूंज रहे है उन्हे सुनना चाहते हो तो आओ आज मन मन्दिर का पुजारी बनो। आओ आज हम प्रेम योगी बने आओ हम आज प्रेम पुजारी बने आओ आज हम अपने मन मन्दिर मे प्रेम की अखण्ड ज्योति जलाये। जलाये हृदय दीप तल्लीन होकर भक्ति रस मे।

श्रद्धावान बने श्रद्धा और प्रेम के बिना मन मन्दिर की ज्योति का प्रकाश पुंज मिलता नही है। मन मन्दिर मे ही परमात्मा का निवास है रत्न जडित मन्दिरो मे भगवान को ढूंढना सर्वथा बेकार है।

जिस मनुष्य का मन अपवित्र नही। जिस मनुष्य के मन में आखो मे वाणी मे भावनाओ में इन्द्रियो मे पवित्रता नही हो। जो मनुष्ययज्ञशाला के समान पवित्र अपने शरीर को नही रखता है। जो मनुष्य कुवासनाओ का और इन्द्रियो का दास है जो मनुष्य अपने मन पर विजय नही प्राप्त कर सका है वह मनुष्य लाख जन्मो मे भी परमात्मा का दर्शन नही कर सकेगा।

ऐ विश्व के नर नारियो जीवन की सफलता के लिये शिव सकल्पो से

—धार्मिक विचारधारा

मन मन्दिर

वेद पथिक पं. धर्मवीर आर्य झंडाधारी व्याख्यान भूषण अध्यक्ष धर्मवीर ग्रन्थमाला प्रकाशन विभाग सराय रुहेला नई दिल्ली ५।

युक्त अपने मन को बना लो माया की मदिरा का पान मत करो। ससार के सौन्दर्य में विश्व के कण-कण मे फूलो मे हवा मे निर्जन बनो मेआकाश मे चन्द्र मे सूर्य मे तारो मे पवन में कला मे वक्ता की वाणी मे महात्माओ और योगियो के जीवन बिज्ञान मे जीवन निर्माण और विश्व रचना में पृथ्वी मे पाताल में जुगल जोडियो के प्यार मे, महात्माओं के वैराग्य मे अनुराग मे क्रातिदर्शी कवियो की वाणी मे भक्तो की टेर मे घनघोर आपदाओ मे समठो मे जीवन की तरल तरगो मे उषा काल की लाली मे शब्द सागर के कोष मे समुन्द्र की गहराईयों मे यत्र तत्र सर्वत्र उस परमात्मा को देखने का अपना अनुपम अनुरूप मगल मय सरल सरस सलिल स्वभाव भाव बना लो अपने नयनो मे परमात्मा की दिव्य छवि को आज विवेक द्वारा देखो।

गायत्री माता की गोद मे बैठने का परमात्मा का अमृत पुत्र और पुत्रिया कहलाने का परम सौभाग्य बनाओ। मनो निग्रह कर मन मे लेश मात्र भी विकार न आने दो।

मनस्वी बनो: जो मनुष्य मन पर विजय प्राप्त कर सकता है और परमात्मा को मन मन्दिर मे प्राप्त कर सकता है वह विश्व विजय करने की क्षमता भी प्राप्त कर सकता है। यह याद रखो कूकर-शूकर कीट पतगो के समान हमारे जीवन बन गये है। आज ससार का मानव समाज भोग वाद की ओर द्रुतगति मे आगे बढ़ रहा है। विश्व का मानव समाज अपने आप को और परमात्मा को भूल कर प्रतिक्षण विनाश के गर्त जा रहा है आज हम मानव कुल के धर्म कर्म को भूल कर सुख और शाति की आशा रखते हैं। सुख शाति आनन्द ऐश्वर्य का परम धाम परमात्मा की भक्ति मे तथा विश्व की मानवता की रक्षा मे ही है।

यह याद रहे सुख और शांति चाहते हो तो दीन-दुखियो दरिद्रो आर्त-जनों की सेवा करो निष्काम कर्म करो। विश्व कल्याण महायज्ञ में लग जाओ घोर तप करो तपस्वी बनो। आलस्य, कायरता भीरुता को पास न आने दो दैवी गुणो को प्राप्त करो। जीवन को सादा और मन को पवित्र बनाओ। भारतीय सस्कृति और सभ्यता को अपनाओ। शिखा सूत्र की रक्षा करो। देश प्रेम देश सेवा देश उन्नति में अपने जीवन को लगाओ।

परमात्मा की प्राप्ति शुभ कर्मों के करने से तथा धर्मयुक्त जीवन के निर्माण से अनायास हो जाती है। परमात्मा का दिव्य दर्शन भावनाओ मे परम प्रसन्नता मे ही होता है।

ऐ विश्व के नर-नारियो अपने आपको पहचानो परमात्मा को अपने मन मन्दिर मे ही प्राप्त कर सकते हो। परमात्मा को ढूढ ने के लिए कही भटकने की और दूर जाने की कोई आवश्यकता नही है। सयम, सदाचार, वैराग्य अनुराग युक्त हो अपना जीवन सदन, मोह माया ममता को विषमता न सताये तभी मन मन्दिर के हम पुजारी बने मन मन्दिर मे ही हम आज उद्बुद्ध करे ज्ञान अग्नि रवि को। यह याद रहे ज्ञान के बिना गति नही है ज्ञान ही वेदो का और शास्त्रो का उपनिषदो का महर्षियो की पवित्र वाणी का सार है। मन मदिर मे ही जन्म-जन्मान्तरो का संस्कार सुक्ष्म विचार और कर्मरेखा की गति प्रगति सुषुप्त अवस्था मे पड़ी हुई है। मन में विशाल वेदों का ज्ञान छिपा हुआ है मन की अगम्य शक्तियो को मनोविज्ञान के निष्कर्ष को जान जाने पर तथा मन को वश मे कर लेने पर जिस परम आनन्द का अनुभव मनुष्य करने लग जाता है उसका शताश भाग भी चक्रवर्ती सम्राटो को प्राप्त नही होता है।

मन को वश में कर लेने वाला मनुष्य देव बन जाता है मन को वश में कर लेने वाले और मन मदिर मे ही परमात्मा का दिव्य दर्शन करने वाले महात्माओं महापुरुषो के दर्शन कर लेने से मन में परम शान्ति और आनन्द से परिपूरित मनुष्य का जीवन बन जाता है। मानव जीवन की दिव्य दिशाओ मे आनन्द की विचित्र लहरें तरगित होने लग जाती हैं।

आओ आज हम मन मंदिर के सच्चे पुजारी बने आत्मा ज्ञानी अनुरागी अराधक बने। जगत जननी का आज यह संदेश है। महर्षियो का तथा वेद शास्त्रो का आज यह आदेश है कि जीवन मरण के बन्धनो से मुक्त होने के लिये मन मंदिर के पुजारी बनो वेद विज्ञान, कर्म विज्ञान, धर्म विज्ञान, आत्म विज्ञान, सृष्टि विज्ञान, सूर्य विज्ञान आदि विद्याओं विज्ञानो को प्राप्त करने के लिये आत्म ज्ञानी महात्मों के सतसंग मे जाओ जहा जाने से सशय शूल मिट जाते हैं। मन की वेदोक्त तरल तरंगो मे देखो वह परमात्मा हमे दे रहा है।

आज कुवासनाओ, कुसस्कारो, कुकर्मों और कुविचारो को भस्म सात कर दो। दया, विनम्रता, विवेक, अनुराग से अनुरक्त अपने जीवन को बना लो। जीवन पथ को भूल न जाना। जीवन पथ मे पथ रेखा बन कर चाहे फूल आये या आये शूल उन शूलो को या फूलो को अथवा आपदाओं के अंगारो को कह दो अब हम परमात्मा के मधुर मिलन में तल्लीन हो चुके हैं। इस लिए तुम भाग जाओ।

यह ध्यान रहे अपनी चित्तवृत्ति को पवित्र बना लो। मन को पवित्र बनाना चाहते हो और मन मन्दिर मे ही परमात्मा का दिव्य दर्शन करना चाहते हो तो ओ३म् नाम का पल दिन घड़ी घड़ी प्रतिपल जाप करो। परमात्मा को एक क्षण के लिये भी मत भूलो। सुख चाहते हो तो सयम युक्त सदाचार युक्त निष्कलक निर्विकार निर्लिप्त अपने जीवन को बना लो। आज से ऐ धर्मवीर धर्म को ही अपना मित्र बना लो। धर्म को मित्र बना लेने पर ससार स्वय मित्र बनायेगा। परमात्मा से अपनी मित्रता जोड़ो। परमात्मा को अपना मित्र बना लो। अपने नयनो में प्राणो मे वाणी मे परमात्मा को बसा लो।

मन मन्दिर की पवित्रता के लिये अपना जीवन धन सर्वस्व निछावर कर दो। यह याद रहे परमात्मा को भूल जाना महा अज्ञान है और महा मृत्यु है। परमात्मा की प्राप्ति में आत्म-चिन्तन में लग जाओ।

जीवन की जटिल समस्याओं का यदि समाधान चाहते हो यदि विश्व को विनाश से बचाना चाहते हो यदि जन मन में वेदों के ज्ञान का प्रकाश

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सम्पादकीय—

आर्य जगत्

वर्ष ६] रविवार ०२३, १९ जून १९६६ [अंक २५

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च

राष्ट्र की उन्नति के लिए ब्रह्म और क्षत्र शक्तियों का होना बडा आवश्यक है। वेद का यह अमर सन्देश युगो से चला आता है। ज्ञान के बल के साथ २ कमान का बल भी चाहिए। बुद्धि का अपना स्थान है और बाहु का अपना। जिस देश मे ब्राह्मण और क्षत्रिय दोनो मिल कर चलते है, वह देश सदा प्रगति के पथ पर आगे ही आगे बढता जाता है। शक्ति के बिना ज्ञानकोर्स हो कर रह जाता है। शस्त्र और शास्त्र ये दोनो ही राष्ट्र के जीवन के प्रसिद्ध साधन है। ज्ञान का प्रसार तथा अन्याय व अत्याचार का प्रतिकार प्रत्येक राष्ट्र का कर्तव्य होता है। इस के लिए भक्ति के साथ २ शक्ति होनी चाहिए। भारतीय सभ्यता के जीवन-रथ के ये दोनो पहिये साथ २ चला करते है। हमारा पुराना इतिहास इन दोनों साधनो को साथ २ रखता था। भारतीय महापुरुषो ने सरस्वती और शक्ति दोनों का भली भान्ति समन्वय किया था। युग पुरुष राम और कृष्ण, शिव-प्रताप आदि सब मे दोनो बलो का समावेश था। राष्ट्र की शान्ति के लिए ये आवश्यक हैं। आर्यसमाज के महान् संस्थापक ऋषि दयानन्द जी ने वेद का यह भूला हुआ सन्देश सब के सामने रखा। आर्य समाज ब्रह्म और क्षत्र दोनो साधनो का प्रचार करता है। कोरे ज्ञान से पाकिस्तान या चीन के भेडियो को कैसे रोका जा सकता है। उस के लिए क्षत्र शक्ति का प्रयोग करना ही पडा।

आज का युग तो शक्ति का युग है। जिस व्यक्ति या समाज के पास शक्ति नही होगा। उस की आवाज अरण्यरोदन होगा। सुनसान जगल में जैसे रोने वाले के रोने को कोई नही सुनता। उसी प्रकार शक्ति से हीन समाज व जाति की आवाज को कोई भी नहीं सुनता। यदि कोई सुनता भी है तो ध्यान देने की आवश्यकता नहीं समझता। हम सारे हिन्दु समाज की बात नही कहते। उसे तो आज के विश्व ने बड़ा ही कमज़ोर मान रखा है। उस का प्रमाण भी सामने है। आज बाबा तक इस्लाम का राज्य है। हिन्दु समाज अपना सब कुछ छोड कर बाघा के इस पार आ गया। हम अभी तक विश्व के दिल से हिन्दू समाज की निर्बलता की भावना को हटा नही सके। ईसायत हमे कमजोर जान कर अपने धन जन के ज़ोर से अपने काम मे खुले रूप से लगी हुई है। अपने ही प्रान्त पञ्जाब का खेल सब ने देखा। यहा पर आर्यसमाज का बडा भारी केन्द्र है। शक्तिशाली वेदी है। प्रभावशाली प्रेस है। विशाल सस्थाओ का जाल विछा हुआ है। हमारे पास बड़े २ नेता, महारथी, धुआंधार वक्ता व लेखक है। शानदार सगठन है। समाजो का जाल बिछा हुआ है। जलूसो व उत्सवो की कमी नही है। दूसरी ओर क्या है? थोडे से व्यक्ति तथा इनी गिनी सख्या मे नेता कहे जाने वाले लोग। किन्तु यह तथ्य है कि सारा ज़ोर लगाने पर भी, भूख हडताल करने पर भी, हडताल से करोडो की हानि उठाने पर तथा नौ २ वर्ष के कुमारो के गोलियो का निशाने बनाये जाने पर भी, अपने धर्म स्थानो व मातृशक्ति का अपमान कराने पर भी, बडे २ जलसे जलूस करके प्रस्ताव पारित करने पर भी हमारा पजाब बाट दिया गया। भूखहडताल का कुछ न बन सका। हम ने अपनी आखों के सामने ही प्रात को बाटा जाता हुआ देख लिया। सब कुछ मौन होकर मान लिया।

बात कडवी पर है सच्ची। यह साफ है कि हम से कोई भी नहीं डरता। हमारे मरणव्रतो की किसी को भी चिन्ता नही है। हमारे जलूसों, जलसो, सम्मेलनो व प्रस्तावो का कुछ भी प्रभाव नही है। दूसरी ओर के लोगों से धरती और आकाश भी कांपते है। कमीशन के निर्णयों में भी परिवर्तन हो जाता है। आज का विश्व कोरे ज्ञान को नहीं मानता। उसे शक्ति का परिचय चाहिए। हम सदा आशावादी हैं। निराशा वेद मे पाप माना गया है। किन्तु इसका यह अर्थ नही कि झूठा आशावाद लेकर अपने को भ्रम मे रखा जाये। आर्यसमाज की वह पुरातन शक्ति कब आयेगी। आर्यसमाज बोलता था तो सारा देश उसकी ओर देखता था। उस की आवाज पर निर्णय होता था। आज हमारी आवाज कितनी है? केवल जलूसो से काम नही चलेगा। शक्ति का प्रभाव पैदा करना होगा। हमारे प्रति दूसरो के मन मे जो निर्बलता का भाव भर गया है। उसे दूर करने के लिए क्षत्रबल का परिचय देना होगा। जलूस भी चाहिएं पर समाज केवल जलूसों पर जीवित नही होता। इसके लिए तो शक्ति की आवश्यकता है। इस कटेबटे पजाब में आर्यसमाज के कर्णधार इस पर विचार करके शक्ति का केन्द्र जुटाए। आर्यसमाज की शक्ति का प्रभाव पैदा करे—त्रिलोकचन्द्र

बटाला का गर्ल्स कालेज

बटाला जिला गुरदासपुर व्यापार कला कौशल का एक प्रसिद्ध स्थान है। यहां लोहे की भारी इंडस्ट्री है। यहा पर अन्य शिक्षण संस्थानो के साथ आर्यसमाज की शिक्षण सथाएं भी बडा सुन्दर काम कर रही है। यहा का डी. ए. वी. स्कूल व आर्य कन्या स्कूल अपने विद्या-प्रचार के काम में लगा है। अमर बलिदानी वीर हकीकत की धर्म-पत्नी सती लक्ष्मी का भारी मेला प्रति वर्ष यहा लगता है। कई आर्य समाजे भी काम करती है। बहुत दिनो से एक कमी थी कि बटाला मे कोई डी० ए० वी० कालेज नही था। यहा पर क्रिश्चियन कालेज है जिसमें लडके लडकिया इकट्ठे पढते है। बटाला जैसे केन्द्र मे ईसाईयो का कालेज तो हो पर डी० ए० बी० कालेज न हो यह बात अखरती थी। यहा के अनथक सोशल कार्यकर्ता श्री महाशय गोकुल चन्द जी, डी० ए० बी० हायर स्कूल के प्रिंसिपल प० युगलकिशोर जी एम० ए० आदि सज्जनो ने मिल कर इस भारी कमी को पूरा करा दिया। लड़कियो का डी० ए० बी० कालेज खुलवा दिया। बडी सफलता से चल रहा है। इस महान् परिश्रम के लिए हम सारे कार्यकर्ताओं को बधाई देते हैं। अब परिवारो की बेटियां निश्चिन्त रूप से डी० ए० वी० कालेज जैसी सस्था में शिक्षण प्राप्त कर सकेंगी।

आर्य जगत् नये ब्लाक में

आपका प्यारा, आर्य प्रादेशिक सभा का साप्ताहिक पत्र आर्य जगत अपने शानदार परिवर्तनों के साथ आप की सेवा में पहुंच रहा है। इस का टाइप बारीक सुन्दर कर दिया गया है। इस का ब्लाक भी नया बनवा दिया है। लेखो मे भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है। सभा धर्म प्रचार के विचार से इसे प्रकाशित करने का कर्तव्य निभाती चली जाती है। जनता भी तो अपना कर्तव्य निभाये। आज कल धार्मिकपत्र चलाना कितना कठिन है। यह वही जानते हैं जो इस के अन्दर है। फिर भी सभा अपना काम कर रही है कितना खेद है कि हम धर्म प्रचार के लिए कम ध्यान देते हैं। कौन सा ऐसा परिवार है जहा पर ऐसे वैसे पत्र मैगजीन नहीं आते। किन्तु आर्य जगत जैसे सभा के पत्र कितने परिवार मगवाते है। यदि हम वर्ष मे सभा को केवल छ. रुपये भेज कर उसके साप्ताहिक पत्र के प्रसार मे सह-योग नही देते तो और कौन देगा। हम धनी सज्जनों से निवेदन करते हैं कि वे अपनी ओर से एक-एक पत्र किसी के नाम लगवावें। यह भी एक कर्तव्य है। समाजे व संस्थाएं आर्य जगत् की प्रतिसप्ताह कई प्रतियां इकट्ठी मगवाकर लोगो तक पहुंचावें। यह भी अपनी सभा का ही काम है।

शोकजनक

सार्वदेशिक सभा नई देहली के माननीय प्रधान श्री सेठ प्रताप भाई की पूज्या माता का स्वर्गवास हो गया। इस समाचार से सारा आर्य जगत उनके शोक मे शोकातुर है। माननीया माता जी का सारा जीवन आर्यत्व के रग मे रगा हुआ था। धार्मिकता की तो साक्षात् सजीव प्रतिमा थी। हमे कच्छ केसल बम्बई के मान्य प्रधान श्री प्रताप भाई जी के उच्च आर्य परिवार में मान्या माता जी के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। मान्य प्रधान जी अपनी माता जी का बडा ही सम्मान करते थे। माता जी के पवित्र व धर्म भरे जीवन की छाप सारे परिवार पर थी। धर्म कार्यों मे माता जी बढ चढ कर हिस्सा लेती थी। माता जी के दिवगत होने पर इस वेदना मे आर्य जगत् श्री प्रधान जी के साथ है। प्रभु दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें। माननीय प्रधान जी अपनी पूज्या माता जी की स्मृति मे कुछ न कुछ स्थायी स्मृति कायम करने पर विचार करेंगे—स०

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के नये उपकुलपति

(प्रो० गंगाराम, एम. ए., रजिस्ट्रार, गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार)

गुरुकुल कांगडी में महान उप-कुलपतियों की एक लंबी शृंखला रही है। इस शृंखला में जहा स्वामी श्रद्धानन्द, आचार्य रामदेव और श्री चमूपति जी रहे हैं वहा इसकी अन्तिम दो कडी श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति और श्री सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार थे। श्री इन्द्र जी स्वामी श्रद्धानन्द जी के सुपुत्र और गुरुकुल कांगड़ी के प्रथम स्नातक थे। वे एक महान लेखक, पत्रकार, वक्ता, राजनीतिक कार्यकर्ता एवं आर्यसमाज के प्राण थे। भारत के राष्ट्रीय जीवन पर अपने पिता के समान उनकी गहरी छाप थी। उनकी महान कृतियां अब भी बड़े चाव से पढ़ी जाती हैं और पढी जाती रहेंगी। अभी पहली जून को इस शृंखला की अन्तिम कड़ी श्रीसत्यव्रत सिद्धान्तलंकार ने अपना कार्यभार इस न टूटनेवाली शृंखला की एक अन्य कड़ी को सौंप दिया। उनका कार्यकाल पूरा हो जाने पर सीनेट की एक उपसमिति ने ३ हमान व्यक्तियो के नामो की सिफारिश की। इनमें से गुरुकुल के विजिटर डा० मंगलदेव शास्त्री ने प्रिंसिपल महेन्द्र प्रताप शास्त्री एम.ए., एम.ओ.एल. को चुन लिया। इस निर्णय के अनुसार आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० रामसिंह जी एम. ए., ने श्री शास्त्री जी को गुरुकुल विश्वविद्यालय का उपकुलपति नियुक्त कर दिया और वे एक जून की प्रातः से इस पद को सुशोभित कर रहे है।

श्री शास्त्री जी गुरुकुल के वातावरण में ही पले हैं। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल वृन्दावन मे और बाद को अन्य कालेज मे हुई। श्री शास्त्री जी के पिता का संबंध स्वामी श्रद्धानन्द जी से बहुत निकट का था। उनके पिता ठा० माधवसिंह जी स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित अखिल भारतीय शुद्धि महासभा के महामन्त्री थे। आगरा के शुद्धि आन्दोलन में उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द जी के दाहिने हाथ का कार्य किया। श्री महेन्द्र प्रताप शास्त्री इन्हीं ठा० माधवसिंह जी के एकमात्र सुपुत्र हैं।

एम० ए० की परीक्षा पास करने के बाद १९२५ ई० में राजाराम कालेज कोल्हापुर में श्री शास्त्री जी अध्यक्ष संस्कृत विभाग नियुक्त हुए।

१९२८ मे राजकुमार शत्रुजयसिंह (शाहपुराधीश मेवाड के पौत्र) के संरक्षक तथा शिक्षक बनकर इंगलैंड गये। वहां से लौट कर आप १९२९ में डी० ए० वी० कालेज देहरादून मे कई वर्षो तक प्रोफेसर तथा आश्रमाध्यक्ष रहे। देहरादून मे आप आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता थे और कई वर्षो तक वहां की समाज के प्रधान भी रहे। पर आपका कार्यक्षेत्र देहरादून तक ही सीमित नही था। आप उत्तर प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा के कई वर्षो तक महामन्त्री और उपप्रधान रहे।

आपके चरित्र पर भी स्वामी श्रद्धानन्द जी की गहरी छाप है। जाति पाति के बन्धन की शृंखला को तोड़ कर आपने अपने पिता जी की स्वीकृति से विवाह किया। आपकी पत्नी कन्या गुरुकुल हाथरस की सुपुत्री हैं और अब भी वे इस गुरुकुल का कार्यभार सभाले हुए है। आपने अपने तीनो पुत्रो के विवाह जाति पाति तोड कर किये।

श्री शास्त्री जी डी० ए० वी० कालेज लखनऊ के कई वर्षों तक प्रिंसिपल रहे। उसके पश्चात् उन्होने जाट वैदिक कालेज बड़ौत का सचालन भी बड़ी सफलता पूर्वक किया। पर आपने कभी भी आर्यसमाज को नहीं भुलाया। आप सार्वदेशिक सभा के भी अन्तरंग सदस्य रहते हैं। आर्य जाति तथा आर्यसमाज के क्षेत्र मे आपने वैदिक धर्म प्रचार का जो महान् कार्य किया है उसे कभी नही भुलाया जा सकता है। आप अनेक सामाजिक एव शिक्षा संस्थाओ के प्रधान, मन्त्री, प्रबन्धक रहे है। आगरा व लखनऊ विश्वविद्यालय तथा उत्तर प्रदेश बोर्ड मे उनका सम्बन्ध रह चुका है।

पहली जून से जब आपने गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के उपकुलपति का भार सभाला है तब से पंजाब, उत्तर प्रदेश, राजस्थान तथा अन्य प्रदेशो के आर्यसमाज तथा आर्यनेताओं से बधाई के संदेश लगातार आ रहे हैं। पहली जून को ही गुरुकुल में अधिकारियों की एक सभा हुई जिस में सभी ने शास्त्री जी को अपने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

हमें पूर्ण आशा है कि श्री शास्त्री जी की नियुक्ति गुरुकुल के लिए ही नहीं अपितु आर्य जनता तथा आर्य समाज के लिये वरदान सिद्ध होगी।

आर्य वीरो!

श्री वेद प्रकाश जी एम० ए० आर्य स्कूल, लुधियाना

आज गुरु गरिमा गई, मां बाप की इज्जत गई
राह पर मा बहिन के सिर पर है नित शामत नई,
हाय हाहाकार निशिदिन आपदाएं हैं कई.
आज अमृत बन गया विष प्रीति है नफरत भई।

आज भलमानसी तड़पती पीट कर सिर रो रही,
आज गैरतमन्द की किस्मत सदा को सो रही.
आंसुओ से आज इज्जत मुंह अपना धो रही,
भद्रता इन्सानियत हा प्राण को है खो रही।

आर्य वीरो कर रही इन्सानियत फरयाद है.
बोल बाला दुष्ट का मिलती उसी को दाद है,
भद्रता की लूट इज्जत बह सगा दामाद है,
पीस चक्की में सभी को हो रहा वह शाद है।

आर्य वीरो वेद का डंका बजाना है तुम्हे,
उजड़ यह गुलशन गया फिर से सजाना है तुम्हे।
द्रौपदी लुटती कन्हैया बन दिखाना है तुम्हे,
वीरवर अभिमन्यु का सिक्का जमाना है तुम्हे।

आर्य वीरो सूर्य बन करना उजाला ठान लो,
हर विपद के सामने पर्वत सा सीना तान लो,
रक्त पीते जो तुरत तुम रक्त को कर पान लो,
तुम धनुषधारी बनो तुम हाथ मे किरपान लो।

वज्र बन वीरो गिरो तुम पाप अत्याचार पर,
द्वेष पर, छल कपट पर, दुष्टता व्यभिचार पर,
ढोंग पर पाखण्ड गुरुडम स्वार्थ हाहाकार पर,
ढीठता निर्लज्ज फैशन दोष दुष्टाचार पर।

आभार-प्रदर्शन

मेरी पुत्री सरस्वती आर्या के शुभ विवाह पर जो कि आर्य समाज के प्रसिद्ध शास्त्रार्थ महारथी श्री० पं० शान्ति प्रकाश जी अधिष्ठाता वेद प्रचार आर्य प्रति निधि सभा पंजाब जालन्धर के सुपुत्र प्रिय सुभाष आर्य के साथ लेखराम नगर कादियां मे सम्पन्न हुआ है। कई सज्जनों ने अपने शुभाशीर्वाद के पत्र भेज कर अनुग्रहीत किया। यद्यपि मैंने बाहर बहुत कम ही सूचना दी है। फिर भी मान्य सज्जनों तथा अपने प्रचारक सज्जनो, समाज के भाई-बहिनों तथा सभाओं के सज्जनों व मित्रों ने जो आशीर्वाद दिया है, आर्यजगत द्वारा उन सब का आतरिक आभारी हू। प्रभु से प्रार्थना है कि उन का आशीर्वाद व प्रेम सदा मिलता रहे।

विनीत
त्रिलोक चन्द्र शास्त्री
आर्य प्रादेशिक सभा

★ सच्चा धर्म झगड़ा नहीं कराता। बल्कि झूठा धर्म जिसे मजहब कहते हैं, झगड़ो की जड़ हो सकता है। ऋषियों ने जो धर्म के लक्षण बताये हैं उनके मानने से संसार में कभी लड़ाई झगड़े नहीं हो सकते।

नारी स्तम्भ—

हमारी बहिनों के कपड़े

(कु० सुशीला जी आर्या एम० ए० आर्य कन्या गुरुकुल, नरेला)

जब से मनुष्य सभ्य बनने का दम भरने लगा है उसने तभी से शरीर ढांपने के लिए वस्त्रों का उपयोग प्रारम्भ कर दिया । ये वस्त्र चाहे किसी प्रकार के क्यों न रहे हों यह स्पष्ट है कि इनसे उसने गर्मी-सर्दी से रक्षा का आश्वासन प्राप्त किया । निःसन्देह वस्त्र न केवल मानव को सभ्य सुसंस्कृत एवं सुन्दरतर रूप में हमारे समक्ष प्रस्तुत करते हैं अपितु स्वास्थ्य की दृष्टि से भी ये अद्‌भुत रूप से उपयोगी सिद्ध हुए हैं । इस प्रकार स्वास्थ्य, सौंदर्य एवं सुरक्षा की वृद्धि के प्रयोजनों से मनुष्य ने वस्त्र धारण किए। किन्तु जहा तक पुरुष जाति से पृथक् कर केवल स्त्री जाति के दृष्टिकोण से इस प्रश्न पर विचार किया जाए तो इन प्रयोजनो मे एक और महत्वपूर्ण प्रयोजन जुड़ जाएगा और वह है लज्जा की रक्षा । अर्थात नारी जाति के वस्त्र धारण का मुख्य उद्देश्य लज्जा की रक्षा करना है, यद्यपि शरीर को ढापना इसके अन्तर्गत ही लज्जा की रक्षा का प्रयोजन भी पूरा हो जाता है किन्तु 'शरीर को ढापना' इन शब्दो का दुरुपयोग जितना इस युग में हुआ है उतना पूर्व तो सम्भवत: कभी किसी ने आशा भी न की हो ।

प्रस्तुत प्रश्न के उत्तर मे हमारी तथाकथित आधुनिका एवं प्रगतिशील बहिनें कह सकती हैं कि वे भी तो शरीर को खूब सिर से पांव तक ढाप कर रखती हैं । इस प्रसंग में प्रथम तो हमें यह विचार करना है कि शरीर के जिस भाग पर वे वस्त्र पहनती हैं क्या उसे ढांपने के लिए अथवा और भी अधिक प्रदर्शित करने के लिए ? इस प्रश्न का उत्तर मुझे कटु अथवा मधुर शब्दो में देने की आवश्यकता नही, उत्तर तो स्वयं हमारी बहिनों के वस्त्र दे रहे हैं जिन्हें सभी प्रकार के लोग सर्वदा सर्वत्र देखते - देखते ही रहते हैं कि हमारी बहिनों ने आज वस्त्रों को शरीर छिपाने का नहीं अपितु गोपनीय अंगों तक के भद्दे प्रदर्शन का साधन बना लिया है लज्जा की रक्षा का नहीं अपितु निर्लज्जता का प्रमाण मान लिया है ।

वस्त्रों का प्रयोजन इस प्रकार उलटने की कला में भारतीय नारी ने दो बातों का आधार लिया है । एक तो वस्त्र ही ऐसे ढंग का होना जिस से यह भी शंका होने लगे कि शरीर पर वस्त्र हैं भी या नहीं ? जैसे नाईलौन की साड़ियां व चुन्नियां इत्यादि, जिन्हें धारण करना परितोष के अतिरिक्त अन्य किसी लक्ष्य की पूर्ति का साधक नहीं । दूसरा और इस से भी बडा कमाल हमारी देवियों ने वस्त्रो की सिलाई कला में किया है । वस्त्र चाहे झीना न हो, सामान्यता शरीर को छिपाने मे समर्थ भी हो तो भी आधुनिकता के पीछे दीवानी बहिनें उसकी सिलाई में सब कमी पूरी कर देती है । जैसा कि सर्वविदित है आज भारत में चुस्त पोशाक का फैशन जोरों पर है ।

समाचार-पत्रो के पढने से ज्ञात होता है कि नैपाल मे भी ऐसा फैशन बल पकड़ रहा है, किन्तु वहा की नैतिकता प्रिय सरकार इस प्रकार की वेशभूषा पर राजकीय प्रतिबन्ध लगाने की सोच रही है । दूसरी ओर धन्य है हमारी लोकतन्त्रीय सरकार ! जो आखे मूंदकर जनमत को (विशेषतः बुराईयो के क्षेत्र में) शिरोधार्य एव अपरिहार्य मानने को सदैव सन्नद्ध रहती हैं । तभी तो चुस्त पोशाक की प्रेमी तितलियो को बसो के ऊचे पायदानो पर चढने में कठिनाई न हो इस विचार से नीचे पायदानो वाली बसो के निर्माण की योजना है । जय जनतन्त्र !

जो भी हो, समस्या नारी जाति के लिए विचारणीय है । बहिनो ! क्या हम फैशन की वेदी पर अपनी लज्जा, मान-मर्यादा को इसी तरह बलि का बकरा बनाती रहेगी ? क्या हम कोई भी कार्य करने से पूर्व उसके सुखद दुःखद परिणाम पर दृष्टिपात करने का कष्ट कभी करना न सीखेंगी? यदि नही तो सचमुच हमारे साथ देश का भविष्य भी खतरे मे डालने का कलंक हमारे माथे पर अवश्यमेव लगेगा । याद रखिये हमारी निर्लज्जतापूर्ण वेशभूषा देश में अनैतिकता तथा चरित्र हीनता को जन्म दे रही है और यही एक बडा कारण है—देश में हथियारो का कम उत्पादन होने से भी बडा—कि हमारी राष्ट्रिय सुरक्षा स्थिति हमारे पडोसी देशो से निर्बल है । यह आवश्यक नही कि इस प्रकार के निजी व घरेलू प्रश्नो पर भी हम सरकारी प्रतिबन्धो की ही शरण लेने पर बाधित किए जाये । अन्ततः हम भी एक स्वतन्त्र राष्ट्र की नागरिक हैं । हमारे सामाजिक और पारिवारिक कर्तव्य हमे चुनौती दे रहे हैं । फिर एक बात और भी किये वस्त्र स्वास्थ्य के लिए कितने हानिकारक हैं: यह किसी शरीर विशेषज्ञ से पूछने की आवश्यकता नही । इनके शिकजे मे जकडी हुई हमारी बहिनें अगो के सचालन मे विवशता की मूर्ति बनी स्वत: इसका प्रमाण हैं । खेद है कि इनमे कष्ट व अस्वस्थता का प्रत्यक्ष अनुभव करते हुए भी केवल दुराग्रहवश या भेड़ा चाल नीति के कारण इन्हे अपनाये हुए हैं, और अपना नाश जगत की हसी वाली कहावत सिद्ध कर रही हैं । एक समय था जब हमारी वेश-भूषा मे अगो की गोपन शक्ति का कवि इन शब्दो मे उल्लेख करते थे कि पता ही नही चलता 'नारी मे ही सारी है कि सारी में ही नारी है' और आज हम अपने वस्त्रावृत शरीर को नग्नतर रूप मे प्रस्तुत करे, फिर कहे हम बहुत सभ्य बहुत शिष्ट और प्रगतिगामिनी हो गई हैं । आश्चर्य ! महद् आश्चर्य !!

भारतीय देवियों को अपने दिव्य देवी स्वरूप की अनविच्छिन्न परम्परा बनाये रखने के लिए—साडी या सलवार जो भी वे पहनें—अपनी वेशभूषा स्वास्थ्य लज्जा और शालीनता की रक्षा की दृष्टि से निर्धारित करनी चाहिये, अन्धाधुन्ध अविचार झीलता से नही इसी में हमारा तथा हमारे देश का कल्याण है ।

जीवन का मूल्य

(श्रीराम मूर्ति जी कालिया एम. ए. नई दिल्ली-१७)

दिख रहा ससार मे जीते सभी हैं,
आ रहा जो सास, क्या जीवन यही है ?
भूल कर मत भूलना, फिर जान ऐसा,
मौत को जो वर सके जीना वही है ।

(२)

ले सहारा दूसरो का, क्या जिया है,
दे सका न मान, उसने क्या दिया है,
मर चुके, जो सोचते अपने लिये ही,
दुःख पर का न हर सके तो क्या किया है ।

(३)

वीर तब जो रो रहे उन को हसाओ,
अध खिले जो फूल हैं उनको खिलाओ ।
मौत का औ जिन्दगी का मूल्य आको,
सड़ रहे जो धूल में उनको सजाओ ।

(४)

मूल्य जीवन का बढ़ाना काम तेरा,
दूसरो के काम मे ही नाम तेरा ।
लें न पायें पास बैठे स्फूर्ति तुझ से,
सच कहूं फिर व्यर्थ सुन्दर चाम तेरा ।

आर्यसमाज लक्ष्मणसर

रविवार ५ जून प्रातः हिन्दी दिवस मनाया गया जिस मे समस्त हिन्दू मात्र को अपने सभी कार्य तथा पत्र व्यवहार विशेषतया विवाह आदि के निमन्त्रण पत्र हिन्दी मे छपवाने का तथा अपनी सन्तानो को सर्वप्रथम हिन्दी पढाने का व्रत लेने को कहा गया अन्यत्र सरकार से माग की गई कि हिदी भाषा देश की राज्य भाषा होने तथा पजाब की प्रमुख भाषा होने के नाते नये पजाबी सूबा मे इस का सरकारी कार्यो तथा शिक्षा क्षेत्र मे पूरा २ संरक्षण किया जावे । जुगल किशोर
उपमंत्री समाज

आर्य समाज लेखराम नगर कादियां

आर्य समाज लेखराम नगर की तरफ से तिथि ५. ६. ६६ को साप्ताहिक सतसग के बाद हिन्दी दिवस मनाया गया और प्रस्ताव पास किया गया कि हिन्दी को पजाब मे उचित स्थान दिया जाये । मन्त्री आर्य समाज
लेखराम नगर

दृष्टिकोण

(श्री बूटाराम जी मंत्री जिला वेदप्रचारिणी सभा होशियारपुर)

मेरा दृष्टिकोण क्या है? आप का दृष्टिकोण क्या है? दूसरे तीसरे का दृष्टिकोण क्या है जो मेरा दृष्टिकोण है मेरी दुनिया वैसी ही है। जैसा आप का दृष्टिकोण है आप की दुनिया उस जैसी ही है। इसी प्रकार दूसरे की तीसरे की दुनिया उनके दृष्टिकोण के अनुरूप ही है। तब तो जितने व्यक्ति है उतनी ही दुनियाएं हैं। हां, ऐसा ही तो है। यद्यपि दुनिया एक ही है तथापि इसके इतने ही 'रूप' है जितने व्यक्ति। यही तो कारण है कि दुनिया मे इतने मत है उतने भेद है उतनी विचार-धाराएं है। तभी तो इतनी खैंचातानी इतने कलह-क्लेश, वैर वैमनस्य और लडाई झगडे देखने मे आ रहे है। जितना विचारो मे बे-लगाम फैलाव (अथवा स्वतन्त्र्य कहिये) बढता जाएगा उतना ही यह तनाव और खिचाव भी बढता जाएगा। ससार मे ऐसे बहुत से मनीषी-विचारवान हुए है जिन्होंने इस विभिन्नता के दुष्परिणामो को अपनी दिव्य दृष्टि से स्पष्टतया देखा और संसार के लोगो के दृष्टि कोणो को एक मर्यादा और एक श्रृङ्खला मे पिरोने का प्रयास किया। जितने-जन-समूह ने किसी एक ऐसे मनीषी की विचार-धारा को स्वीकार किया उतने ही सम्प्रदाय बन गए। अब भी यह क्रम जारी है। जहां ऐसे महापुरुषो का उन की सदभावना और पथ-प्रदर्शन के लिए उनके अनुयायी और अन्य लोग भी-आभार मानते है वहा इस बात को दृष्टि से ओझल नही करना चाहिये कि ऐसे पथ-प्रदर्शकों के मस्तिष्क से निकली विचार-धारा ने कुछ व्यक्तियो के दृष्टि-कोण को अच्छे या विपरीत मार्ग पर चलने के लिए भले ही प्रेरित किया हो परन्तु मानव-जाति के विशाल हित को ध्यान मे रखा जाए तो उन्होने उपकार करने की बजाए हानि अधिक की है। यदि इस तथा-कथित 'विचार-स्वातन्त्र्य' पर किसी प्रकार का नियन्त्रण नही लगेगा तो जन-समूह के अन्दर मत-भेद बढता ही जाएगा। और जितनी मात्रा मे मत-भेद बढेगा उतनी ही मात्रा में दुख क्लेश, वैर विरोध वैमनस्य और खैंचातानी बढ़ेगी। क्या आज के संसार की मनोवृति इस का ज्वलन्त उदाहरण नही प्रस्तुत कर रही। कोई इसे देखते हुए अनदेखी करना चाहे तो और बात है अन्यथा यह चमकते हुए सूर्य की भांति प्रत्यक्ष है। राष्ट्र-राष्ट्र मे जाति-जाति में प्रान्त-प्रान्त मे नगर-नगर मे ग्राम-ग्राम मे घर-घर मे इस के उदाहरण देखने को मिल रहे हैं। क्या ईश्वर की सृष्टि का यही नियम है? कदापि नही क्योकि मानव जाति को छोड़ कर अन्य जितना प्राणी-वर्ग है उन सबकी एक-एक पंक्ति (जाति) मे एक सा स्वभाव एक सी शकल सूरत, एक सा रंग रूप, एक सा रहन सहन एक सी चाल ढाल एक सी बोल वाणी है। यह केवल मनुष्य ही है जिसे ईश्वर ने अपनी अन्य सब विभूतियों से विभूषित करने के साथ-साथ सोचने के लिए विकसित मस्तिष्क और बोलने तथा समझने समझाने योग्य वाणी भी दी है। इन दो शक्तियो के प्रयोग से मानव इस संसार को जैसा चाहे बना सकता है। अब प्रश्न यह है कि इस स्वतन्त्रता का और विकास का उपयोग कैसे किया जाए जिस से यह ससार स्वर्ग धाम बन सके। उत्तर एक ही है और वह वही है जो आरम्भ मे निवेदन किया है अर्थात विचारो को एक लडी मे, एक श्रृंखला मे पिरोया जाए। अब सवाल यह रह जाता है कि वह एक विचार-धारा कौन-सी है और उस का स्रोत कहा है और क्या है? स्पष्ट है कि यदि यह किसी एक व्यक्ति पर आधारित हुई (वह व्यक्ति ससार मे विद्यमान हो अथवा ससार छोड चुका हो) तो इस का हल कभी भी नही मिलेगा। तब क्या कोई रास्ता है भी? हां है और वह है उसी शक्ति का अवलम्बन जिस ने इस ससार को रचा है। जिसने सब के लिए सूर्य, चन्द्रमा पृथ्वी, आकाश, जल, वायु, अन्न, प्राण आदि समान रूप मे दिए देखने-सुनने चखने, सूंघने छूने बोलने जैसी शक्ति प्रदान की। जिस ने इतना कुछ दिया यह कैसे हो सकता था कि वह इन्सान को समझ-बूझ (ज्ञान) और महसूस करने की शक्ति (अनुभूति) प्रदान न करती। मानना पडेगा कि आज भी यह दो शक्तियां जितनी भी मात्रामें मनुष्य को प्राप्त हैं उनका आदि स्रोत वही शक्ति है। भले ही इन्सानने उनको अपने अभ्यास (practice) से विकसित कर लिया हो पर आदि स्रोत उस के अतिरिक्त किसी अन्य को मानना जहा कृतघ्नता की पराकाष्ठा होगी वहा इस क्लिष्ट प्रश्न के हल के ढूंढने में ही आयु व्यतीत हो जायेगी तिस पर भी हल नहीं मिलेगा। यह एक निर्विवाद तथ्य है कि उस शक्ति की देन का, प्रेरणा का, रूप का वर्ग के लिए एक ही हो सकता है जैसा कि चरिन्दे-परिन्दे वर्ग के अन्दर प्रत्यक्ष देखने में आ रहा है, ऐसे ही मनुष्य समूह के लिए भी उसकी प्रेरणा का (ज्ञान का) स्वरूप एक ही हो सकता है बहुत नहीं।

उसने दिया भी है एक ही ज्ञान इनसान ने उसे भिन्न-भिन्न मार्गों (**Channels**) में प्रवाहित करके उसके रूप को ही बदल दिया है नही नही दूषित कर दिया है। मानव जाति का हित इस मे है कि ऐसी-ऐसी विभिन्नता फैलाने वालो को एकदम रास्ते से हटा दिया जाए और एक केवल एक ही मार्ग का अवलम्बन किया जाए। वह एक मार्ग कौन-सा है इसी की खोज समस्त मानव जाति के सारे प्रयत्नो का केन्द्र बन जाना चाहिये।

वर्तमान युग में महर्षि दयानन्द एक ऐसे महापुरुष हुए है जिन्होने ऐसी खोज की और उस खोज के परिणाम स्वरूप उनको वेद रूपी मणि हाथ लगी। ससार के लोगो को सब पक्षपात और आग्रह (जिद्द) छोड कर उनकी खोज से लाभ उठाना चाहिये और इस को यथा शक्ति आगे बढाना चाहिये और सारी मानव जाति के हितार्थ बिना जाति-भेद, राष्ट्र-भेद, रंग, नसल के भेद से इस का प्रचार और प्रसार इस मात्रा में करना चाहिये कि संसार का कोई भी व्यक्ति इस से वंचित न रहे।

ईश्वर ने स्वय मानव को आदेश दिया है:—

संगच्छध्वं संवदध्वं सं
वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे
सं जानाना उपासते॥

(**प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी** ज्ञानी बनो पूर्वजो की भांति तुम कर्तव्य के मानी बनो)

समानो मन्त्रः समितिः समानी,
समान मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मंत्रमभि मंत्रयेवः
समानेन वो हविषा जुहोमि।

हो विचार समान सब के
चित्त मन सब एक हों।

ज्ञान देता हूं बराबर
भोग्य पा सब नेक हों॥

बदलो अपने दृष्टिकोण को इस आदेश के अनुसार और बदल दो संसार के दृष्टिकोण को।

आवश्यकता

आर्यसमाज वजीर बाग श्रीनगर वास्ते ऐसे पुरोहित की आवश्यकता है जो पुरोहिताई के अतिरिक्त डी.ए.वी. हाई स्कूल मे धर्म शिक्षा भी पढा सके। वेतन योग्यतानुसार दिया जाएगा निम्न पते पर पत्र-व्यवहार करें।

पं० राधा कृष्ण जी गंजू मंत्री
आर्यसमाज वजीरबाग श्रीनगर
(काश्मीर)

केन्द्रीय आर्य सभा अमृतसर

केन्द्रीय आर्य सभा की एक साधारण सभा ५. ६. ६६ को कैप्टन केशव चन्द्रजी की प्रधानतामें सम्पन्न हुई जिस में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

'केन्द्रीय आर्य सभा अमृतसर की यह बैठक हिन्दी भाषा को राष्ट्र भाषा के अतिरिक्त अपनी मातृभाषा और धर्म भाषा मानती है। केन्द्रीय सरकार से अनुरोध करती है। कि वह नवनिर्मित पंजाब मे हिन्दी को पंजाबी के साथ शिक्षा मे और शासन के क्षेत्र मे सहायक भाषा घोषित करे और इस प्रांत के हिन्दी भाषी लोगो के देश के स्वीकृत विधान मे वर्णित अल्प सख्यको के अधिकार देने का शीघ्र निर्णय करें।

—मथुरादास उपमन्त्री

जनपद हिन्दी सम्मेलन, लुध्याना

हिन्दी दिवस धूमधाम से मनाया

जनपद हिन्दी सम्मेलन, लुध्याना के कार्यकर्त्ता प्रधान श्री रणवीर जी शास्त्री सूचित करते हैं कि आर्यसमाज साबुन बाजार मे श्री नन्दलाल जी आर्य की प्रधानता मे हिन्दी दिवस धूमधाम से मनाया गया। श्री शास्त्री जी ने बताया कि हिन्दी अन्य प्रातो के साथ हमे सगठित करती है। विदेशो में भी इसका प्रचार उत्तरोत्तर हो रहा है। हमें हिन्दी की उन्नति के लिए समस्त पत्र-व्यवहार, निमन्त्रण पत्र तथा विज्ञापन आदि हिन्दी मे ही अपनाना चाहिए। साहित्य गोष्ठियो का आयोजन कर जनता मे इसके प्रति रूचि उत्पन्न करनी चाहिए। साहित्यकारो को विशिष्ठ पारितोषिक आदि देकर सम्मानित करना चाहिए यह सम्मेलन शीघ्र ही लुध्याना मे हिन्दी के पठन-पाठन के लिए एक केन्द्र खोल रहा है। श्री पं० ज्येष्ठानन्द जी शास्त्री तथा पूज्य सभापति जो ने भी हिन्दी की उन्नित के लिए ठोस कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

वेदप्रकाश एम. ए.
मन्त्री हिन्दी सम्मेलन

हिन्दी का हिमायती कौन ?

(ले०—श्री सुन्दर लाल जी वोहरा, जोधपुर)

(गतांक से आगे)

वोट मांगने के संदर्भ मे हिन्दी का हो-हल्का किया जाता है: अंग्रेजी के नामपट व पत्र जलाये जाते हैं। लेकिन इससे ऋणात्मक राहत ही मिलती है—उल्टे अंग्रेजी का बोलवाला बढता है।

आज हिन्दी के नाम मे निहित स्वार्थ सरकारी नौकरियो व अनेक अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के पदो को अपने परिवार वालो के लिए सुरक्षित रख रहे है। हिन्दी के खालिस साहित्यकार ऐसे कम ही होगे जो अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में भेजने को न तृपित हो। हमे आज अपने पैरो के नीचे जलती हुई धरती का भान नही है. पर्वत पर लगी हुई आग को बुझाने को हम जी जान से दौड धूप कर रहे हैं।

आखिर समाधान क्या ?

अंग्रेजी का जहा तक तकनीकी शिक्षा से सम्बन्ध है, उसका उस क्षेत्र विशेष मे बने रहना किसी के लिये हानिकारक नही है। इस कमी को हिन्दी मे प्रामाणिक अनुवाद द्वारा पूरा किया जा सकता है। उत्तर के प्रान्तो मे हायर सैकण्ड्री स्तर तक तो प्राय: विज्ञान की शिक्षा हिन्दी के द्वारा ही दी जाती है। जिन प्रान्तो ने ऐसा नही किया है, उन्हे शीघ्रातिशीघ्र ऐसा कर लेना चाहिये।

अन्य प्रान्तो मे हायर सैकण्ड्री तक प्राय: सारे विषय प्रान्तीय भाषाओ से ही पढ़ाये जाते है। इस पर भी त्रिभाषा रूपी भेड़ की खाल मे अंग्रेजी रूपी भेडिये को हायर सैकण्ड्री स्तर तक बनाये रखना तिलाश मे भी उचित नही है। भाषा के तौर पर एक एक प्रश्न पत्र हिन्दी व प्रान्तीय भाषा मे पहली कक्षा से ही शुरू हो जाने चाहिये। अंग्रेजी स्वत: ही उठ जायगी।

विश्वविद्यालयो मे भी अंग्रेजी भाषा की व्यवस्था केवल उन लोगो के लिये ही होनी चाहिये जो इसे ऐच्छिक तौर पर पढना चाहे। समाधान यह हो : हायर सैकण्ड्री स्तर तक सारे विषय प्रान्तीय भाषा से व विश्वविद्यालय मे सारे विषय हिन्दी से पढ़ाए जाएं।

रहा केन्द्रीय स्तर की प्रशासनिक सेवाओ का सवाल। तो यह भी कोई कठिन समस्या नही है। अंग्रेजी का प्रश्न पत्र केवल उन्ही लोगो के लिए विवशक रहे जो विदेशी मामलो के विभाग मे जाने के इच्छुक हो। अन्य सेवाओ में जाने वाले लोगो के लिए अंग्रेजी के पर्चे की कोई आवश्यकता ही नही है। ऐच्छिक विषय लेने वाले परीक्षार्थियो के लिए हिन्दी अथवा अंग्रेजी मे लिखने की छूट रहे।

इस सन्दर्भ मे प्रान्तीय भाषा का प्रश्न उठाना कदापि उचित नहीं है। प्रान्तीय भाषा के उपयोग की छूट केवल प्रान्तीय स्तर तक की सेवा की प्रतियोगी परीक्षा मे ही रहनी चाहिये। इसके अलावा कोई दूसरा चारा ही नही है।

प्रान्तीय स्तर की सेवाओ मे अब लोग प्राय: प्रान्तीय भाषा मे ही लिखने लगे है। उत्तर के राज्यो मे तो सारे उम्मीदवार हिन्दी में ही उत्तर लिखते है।

फिर भी इच्छुक प्रशासक की एक शिकायत शेष रह जाती है, साक्षात्कार के समय अंग्रेजी मे ही प्रश्न किये जाते है। इसका हल यह है, निर्वाचक समति के सदस्यो को चाहिए कि वे केन्द्रीय स्तर की सेवाओ मे (सिवाय विदेशी मामलो के) आने के इच्छुक लोगो से हिन्दी मे ही बातचीत करें। प्रान्तीय स्तर की सेवाओ मे भी साक्षात्कार के समय बातचीत तो हिन्दी मे ही होनी चाहिए। निर्वाचन समिति के सदस्यो से प्रान्त विशेष की भाषा का कुछ ज्ञान रखने की अपेक्षा अवश्य की जा सकती है।

सही शब्दो मे, आज भारत मे अंग्रेजी भाषा एक सास्थनिक समस्या कम, सास्कारिक ही अधिक है। इस भाषा के हम मानसिक रूप से इतने क्रीतदास हो चुके है कि इससे नाता तोड़ना हम अपने वैभव के अस्तित्व के लिए सबसे बड़ा खतरा समझते है। जहा भी "दो पैसे" की कमाई का प्रसंग आता है हम हिन्दी की हुण्डी का तिरस्कार कर अंग्रेजी का चैक स्वीकार कर लेते है।

संस्कृत शांति रखे

इस सन्दर्भ में संस्कृत के बारे में भी दो शब्द कहना अप्रासगिक नही होगा। सस्कृत को हायर सैकन्डरी स्तर तक एक विवशक भाषा के रूप मे पढाना उचित प्रतीत नही होता। इसमे तो त्रिभाषी रूपी त्रिशकु को पोषण ही मिलेगा। सस्कृत पढने से ही कोई सस्कृत होता है, यह तर्क आधारहीन है। ऐच्छिक तौर पर सस्कृत पढाई जाय तो अधिक उपयुक्त रहेगा। इस सनातन व सर्व आर्य भाषा जननी के पुनरुत्थान के लिये अन्य उपाय भी तो किये जा सकते है। आखिर इसका आधुनिक पद्धति के समाज मे उपयोग भी तो देखना है। जिस जिज्ञासु को मूल ग्रन्थ देखने की जिज्ञासा होगी वह सस्कृत क्या, कोई भी आवश्यक भाषा पढ़ने को तत्पर हो जाएगा। 'रघुवीरी हिन्दी' के तो प्राय: सारे शब्द सस्कृत-प्रसूत ही है। परम्परा के नाम मे बाल मस्तिष्क पर अतिरिक्त बोझा लादना उचित नहीं है।

सबसे महत्वपूर्ण बात निहित स्वार्थ यदि शात रहें तो हिन्दी कोई समस्या ही नही है।

विचार तरंग (१२)

ले० श्री राममूर्ति कालिया, एम. ए, नई दिल्ली-१७)

जीवन क्षण-भगुर है। धर्म ग्रन्थ, सन्त जन ससार के हित के लिये ऐसी घोषणा बार-बार करते रहते है। इस विचार का चिन्तन विवेक है। विवेकी पुरुष जीवन मे कुछ स्फूर्तिदायक कार्य कर जाता है। चलती हुई धौकनी सहसा कब बन्द हो जाये यह विचार आते ही अपने विचारो को हम कुछ क्रिया रूप देकर पूर्ण कर लेने की सोचते है। यह अच्छा लक्षण है। मृत्यु तो अवश्यम-भावी है ही। कबीर ने तो जीवन को पानी का बुदबुदा 'प्रभात तारा' कह करके इसी क्षण भगुरता की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट कियाहै। पंचभूतो से निर्मित यह शरीर अधम माना गया, कारण इसका नाशवान होना ही है। सन्त तुलसीदास जी ने लिखा कि 'छिती, जल, पावक गगन समीरा, पंच रचित अति अधम सरीरा। इस स्पष्ट तत्व को वस्तुत: भूलना ही बडी भूल है। नारायण कवि ने दो बातो की ओर हमारे ध्यान को बाधने का प्रयत्न किया है और इसी मे उन्हो ने ससार का कल्याण समझा। उन्हो ने आदेश देते हुए कहा—

'दो बातो को भूल मत
जो चाहो कल्याण।
नारायण इक मौत को,
दूजे श्री भगवान।'

पल पल बीतने मे जीवन बीतता है और वह समय आ पहुचता है जब प्राण पखेरू लम्बी उडारी भर उसी शरीर मे वापिस नही लौटता। समय की गति से संसार उस का विस्मरण करता है। अंग्रेजी के एक कवि ने बडा सुन्दर कहा :—

Months burries our day, year raises the stone and rubbing wind makes us unlsnown.

इसी भाव को उर्दू के एक शायर ने अपने शब्दों मे बडे सुन्दर ढग मे प्रस्तुत किया है—

'यह उम्र यूं ही तमाम हो जायगी,
मरने की खबर भी आम हो जायगी
रोते हो 'उन्नीस' क्या जवानी को,
पीरी की सहर भी शाम हो जायेगी।

मौत का स्मरण और जीवन की क्षणिकता का शक्ति को यदि नितात बाध रहे तो पाप पुण्य की कल्पना उस के मस्तिष्क मे स्पष्टतर रूप धारण करती चली जायेगी। दूसरो के मन को विक्षुब्ध और प्रताडित करने से वह दिनोदिन बचता ही चला जायेगा। ऐसे अनेकानेक उदाहरण हमे अपने जीवन मे मिलते हैं जहा निकट सम्बन्धी की अचानक मृत्यु मे भक्ति के जीवन में सहसा पलटा-सा आ जाता है और फिर अपनी मृत्यु के स्मरण मे भक्ति तो पापो से और भी भयभीत हो उठता है। अत: भगवान मे भी पहले यदि कोई वस्तु स्मरणीय है तो वह है मृत्यु।

सस्कृत और हिन्दी के साहित्य मे जीवन की क्षण भगुरता को समझाने के लिये विद्वानो ने अनेकानेक सुन्दर उपमायें दी है। इस छोटे-से लेख मे तो केवल सकेतो से बात करनी पडती है। हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि निराला ने 'प्रात समीरण सम' जीवन को कहा और दुख दर्द की दीवानी कवियित्री महादेवी वर्मा जी ने लिखा—

'सिकता मे अकित रेखा सा,
वात विकम्पित दीप शिखा सा,
काल कपोलो पर आसू सा,
ढुल जाता अम्लान।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

मन मन्दिर

(पृष्ठ २ से आगे)

पहुंचना चाहते हो तो शुभ कर्मों को ही करो। लोक और परलोक की सिद्धि का साधन तथा परमात्मा की प्राप्ति का साधन मोक्ष सुख का साधन एक मात्र निष्काम कर्म और मन की पवित्रता है मन की पवित्रता मे ही मन मन्दिर में ही परमात्मा की प्राप्ति होती है।

मन मन्दिर के पुजारी बनो। मनो निग्रह करो मनस्वी बनो, सदाचारी और ब्रह्मचारी बनो इसी में अपना और संसार का परम कल्याण निहित है। आज हम आदि सृष्टि का इतिहास पढ रहे थे। उस में यह लिखा हुआ था स्वर्णक्षरो में कि मनुष्य स्वयमेव अपने भाग्य का विधाता है मनुष्य अपने शुभ कर्मों से मन की पवित्रता से सुख पाता है और बुरे कर्मों से बुराईयों से रौरव नरकमय महा दुःख पाता है। अरबों रुपयों से बढ़कर मनुष्य के शुभ विचार और शुभ कर्म हैं। इसलिये आओ आज से हम नित्य यज्ञ को करे।

विश्व महा यन्त्र के हम यजमान बने अपना जीवन यन्त्रमय बनाकर परमात्मा की गोद में बैठने का अधिकार आज ही इसी क्षेत्र में अपने आपको बना लें। परमात्मा का दिव्य दर्शन हम मन की गहन गुफाओ मे करके हम अमर बनें। मनुष्य की सर्वांग उन्नति का मूल मन्त्र मन वचन और कर्म की पवित्रता है। मन एव मनुष्याणाम् कारण बंध मोक्षयोः गीता मे भगवान कृष्ण जी ने यह कहा है कि बन्धन और समोक्ष का कारण मनुष्य का अपना मन है। वेदों के सैकड़ो मन्त्रो में यह लिखा हुआ है कि मनुष्य की उन्नति सुमन सुकृत 'सुसंस्कृत मन से ही होती है।

मन की अगम्य शक्तियां हैं मन की महिमा को नि शब्दों में गाया जाये संकल्पो की सिद्ध का और मोक्ष का साधन मनुष्य का अपना मन है।

विचार तरंग

(पृष्ठ ७ का शेष)

जीवन का परिचय देते हुए उन्होने कहा—

"मैं नीर भरी दुःख की बदली,
परिचय इतना, इतिहास यही
उमड़ी कल थी, मिट आज चली।"

इसी प्रकार संस्कृत में बड़ी सुन्दर उपमा दी गयी :—

'नलिनी दल गत जलमति तरलं,
तद्वज्जीवनमतिशयचपलम्।'

अर्थात् कमल के पत्तों पर फिरकती ओस की बूंद के सदृश्य जीवन क्षणिक है। जब इतना ही हमारा अस्तित्व है तो फिर जीवनमे आलस्य, प्रमाद, मद, अहंकार और व्यर्थ के अभिमान का क्या स्थान। क्यों न फिर हम कीर्ति से जिये? अपने निर्धारित उद्देश्य की ओर क्यो न अग्रसर होने के लिये कटिबद्ध हो जायें? क्यो न अविवेक का साथ छोड विवेक धारण करे? क्यो न असत्य का परित्याग कर सत्य का आह्वान करें? क्यो न एक स्वर से पुन: पुकार उठे कि 'मृत्योर्मा अमृत गमय।' क्यो कोई कार्य बुढ़ापे में करने के लिये ... विश्वास ... आवेगा ही

धन

प्रान्त केरल ... यज्ञ के सम्बन्ध में। ... आर्य पत्रों में प्रिय राजेन्द्र जिज्ञासु के लेखों ने आर्य व हिन्दी जगत के सामने जो चित्र खींचा है, उस के सम्बन्ध में अनेक स्थानों से धर्म और जाति की पीड़ा रखने वाले महानुभावों ने मेरे घर के पते पर राजेन्द्र जी के नाम पत्र लिखें हैं, कि "धन" कहां और किस के नाम भेजे?

अत: अपनी शुभ कमाई से निम्नलिखित पते पर धन भेजें और महर्षि दयानन्द कालेज शोला पुर, दक्षिण भारत, प्रान्त महाराष्ट्र के पते पर सूचना दें।

धन भेजने का पता :—श्री नरेन्द्र भूषण बी० ए० सम्पादक आर्य भारती पत्रिका C/o आर्यन यूथ लीग, P.O. चिंग नूर, प्रान्त केरल, दक्षिण भारत।

आर्य समाज प्रधाना मोहल्ला रोहतक शहर का प्रशंसनीय पग

केरल प्रान्त मे चल रहे शुद्धि यज्ञ के सम्बन्ध में आर्य समाज प्रधाना मोहल्ला ने ३०) रु० मासिक छ: मास तक भेजने का संकल्प किया है। इस संकल्प की पूर्ति अर्थ आर्यसमाज के ... पतामह मलिक राम रंग जी ... ने ५०) रु० श्री विद्यार्थी जी ...) रु० और सर्वश्री भवानी दास, ...ज, दौलतराम, जगदीश मास्टर, ...ने, प्रेम नाथ चक्रवर्ती महानुभावों ने एक-एक दो-दो रु० मासिक देने का वचन दिया। "विद्यार्थी"

शुभ सूचना

आर्यसमाज विक्रमपुरा जालन्धर का साप्ताहिक सत्संग रविवार १९-६-६६ को प्रात: आठ बजे आरम्भ होगा। देव यज्ञ आदि के पश्चात् श्री महाशय कुन्दन लाल जी बस्ती गुजां वाले का मनोहर व्याख्यान होवेगा। सभी सज्जनों प्रार्थना है कि समय पर पधार कर अनुगृहीत करें।

नोट—आर्यसमाज विक्रमपुरा में नये पुरोहित जी आ गये हैं, अत: जो भी सज्जन वैदिक रीति से संस्कार करवाना चाहते हों वे इनका मन्त्री जी को सूचित करें और लाभ उठाए।

पुरोहित जी हमेशा समाज मन्दिर मे ही रहते हैं, उन से जब चाहे मिल सकते हैं।

मन्त्री—आर्यसमाज विक्रमपुरा जालंधर

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत् कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मासिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर

आर्य जगत

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टेलीफोन न० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. [illegible]

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे — वार्षिक मूल्य ६ रुपए

वर्ष २६ अंक २६ — १३ आषाढ़ २०३२ रविवार — दयानन्दाब्द १४१ — २६ जून — [आर्य] प्रादेशिक जालन्धर

वेद सूक्तयः

अरं शक्र परेमणि

हे सर्वशक्तिमन् परमेश्वर ! ऐसी कृपा करें कि हम तेरे ही परेमणि परम रूप में रमण करते रहें, तेरी स्तुति में आपकी ही आराधना, साधना में ही लगे रहें, मग्न मस्त रहें। आपकी भक्ति की मस्ती का परमरस सदा पान करते रहें।

विश्वा यद्जयः स्पृधः

हे मानव ! तेरे अन्दर जितनी भी तामसी प्रवृत्तियां हैं, जिनके कारण यह जीवन तमोमय बनता जाता है, उन सब को जीत ले। उन तमोभावों को दूर भगाने के लिए उन पर पूर्ण रूप से विजय प्राप्त कर ले। ये तमो गुण मुझे अपना दास न बनाने पावें।

मत्स्व प्रभू वसो

इस शरीर में निवास करने वाले आत्मन् ! बड़ी सामर्थ्य रखने वाले आत्मन् ! तू सदा ही प्रसन्न रह। कभी भी विषाद को प्राप्त न हो। जीवन की निष्ठा सदा प्रसन्नता में है। घबरा कर सदा रोते रहना या निराश होना जीवन की साधना नहीं है। सदा प्रसन्न रहो।

अहं प्रवदिता स्याम्

मैं सदा ज्ञान की, हित की बात बोलने वाला बनूं। जब मैं समाज में या संसार में अपनी बात कहूं तब सारे लोग मेरे प्रभावशाली तथा हितकर वचनों का आदर मान करने वाले हों। ऐसा बनूं।

साम० [illegible]

वेदामृत

राक्षसों को मार गिरा

जहि त्वं काम मम ये सपत्ना अन्धा तमांस्यव पादयैनान्। निरिन्द्रिया अरसाः सन्तु सर्वे मा ते जीविषुः कतमच्चनाहः॥

अर्थ— हे मेरे मन के संकल्प ! इन राक्षसों को (जहि) मार दे। (त्वम्) तू (काम) मेरे संकल्प (मम) मेरे (ये) जो और जितने भी (सपत्नाः) शत्रु हैं उन सबको तू (अन्धा) घोर घने (तमांसि) अन्धकार में (अवपादय) गिरा दे (एनान्) इन सारे राक्षसों को। वे सारे ही (निरिन्द्रियाः) इन्द्रियों से रहित तथा (अरसाः) शक्तिबल से खाली (सन्तु) हो जायें (सर्वे) सारे ही और (मा ते) वे शत्रु मत होवें (जीविषुः) जीवित (कतमत् चन) उनमें से भी कोई भी न बचे (अहः) एक दिन के लिए भी न बचे।

इसका भाव यह है

मेरे पास सबसे बड़ी शक्ति और बल अपने संकल्प का है। मन का निश्चय, विश्वास तथा अपने मन का संकल्प सबसे महान् बल होता है। यदि मन निर्बल है तो शस्त्र की शक्ति बेकार कर सकेगी। मैं मन के इस संकल्प बल को लेकर चला हूं। इसको कह रहा हूं कि रे मेरे वीर संकल्प ! मेरे या हमारे जितने भी शत्रु हैं, जितने भी राक्षस पिशाच हैं, उन सबको तू मार गिरा दे। उनको अंगहीन, बलहीन बना दे। इनको अन्धा बना दे। उनमें से किसी को भी एक दिन के लिए जीवित न रहने दे। एक एक शत्रु, राक्षस, चोर लुटेरे तथा आक्रमणकारी को पकड़-पकड़ कर मार गिरा। किसी को जिन्दा न छोड़।

— अथर्ववेद [illegible]

अपने सुधार का निश्चय

अपने सुधार के लिए यदि अपने स्वभाव के अन्दर यदि कुछ कटुता कठोरता आदि दोष हों तो 'आत्मानुशासन' से उनको दूर करें। बोलने के समय चुनकर सौम्य, नरम और मीठे शब्दों का ही उपयोग करना। दूसरों का जिस समय सम्बन्ध आ जाए, उस समय शान्ति से काम करने का अभ्यास बढ़ाना सबके लिए कल्याणकारी है। अपना भाषण, चालचलन, व्यवहार तथा अपना दर्शन भी बड़ा मधुर और शान्ति सूचक होना चाहिए। अन्यथा जगह-जगह में झगड़े और कलह होंगे और कई प्रकार की हानि उठानी पड़ेगी। शरीर सुडौल हुआ, रंग अच्छा रहा, और साथ-साथ स्वभाव भी मीठा हो तो वह सबका प्रिय बन जाएगा। सोने में सुहागे का काम देगा।

ऋषि दर्शन

विश्व में मधुरता

इयं पृथिवी सर्वेषां भूतानां मधु।
इमा आपः सर्वेषां भूतानां मधु।
अयमग्निः सर्वेषां भूतानां मधु।
अयं वायुः सर्वेषां भूतानां मधु।
असावादित्यः सर्वेषां भूतानां मधु।
इमा दिशः सर्वेषां भूतानां मधु।
अयं चन्द्रः सर्वेषां भूतानां मधु।
इयं विद्युत् सर्वेषां भूतानां मधु।
अयं धर्मः सर्वेषां भूतानां मधु।
इदं सत्यं सर्वेषां भूतानां मधु।
इदं मानुषं सर्वेषां भूतानां मधु।
अयमात्मा सर्वेषां भूतानां मधु।

बृ० उप० [illegible]

यह पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आदित्य, दिशा, चन्द्र, विद्युत्, धर्म, सत्य, मनुष्यत्व और यह आत्मा माधुर्यमय है। यह [illegible] की अनुभूति सुना [illegible] योग्य है। [illegible] जगत् में कठोरता और कटुता कहीं भी नहीं है, परन्तु [illegible] अपने हृदय में होता है वही जगत् में प्रतिबिम्बित हुआ दिखाई देता है। यदि आपके हृदय में माधुर्य होगा तो आपके लिए सम्पूर्ण जगत् माधुर्यमय हो जाएगा और यदि आपके अन्दर दोष हुआ, तो सब जगत् में दोष ही दोष दिखाई देगा। इसलिए आत्मसुधार की बड़ी भारी आवश्यकता है।

उपनिषद् और [illegible]

अनुभव की बात

[illegible]

[illegible]

[illegible] २।५।१।६

सम्पादकीय—

आर्य जगत्

वर्ष ६] रविवार २०२३, २६ जून १९६६ [अंक २६

आज और अभी ही

आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब जालंधर के माननीय प्रधान श्रीयुत यश जी ने लुधियाना के सम्मेलन की प्रधानता करते हुए अपना जो विशाल जनसमूह के सामने ओजस्वी भाषण दिया है उसमें वास्तविकता है। वह सारे हिन्दी प्रेमियों की आंखें खोलने वाला है। सारा भाषण ही इस योग्य है कि उसे प्रत्येक नर-नारी तक पहुंचाया जाये। सब से बडी विशेषता उस में यह है, कि यह ठोस सन्देश है जिस पर इस समय आचरण करने की बड़ी आवश्यकता है। इस भाषण में हिंदी के प्रेमियों को झंझोड़ते हुए उन हिन्दी प्रेम का क्रियात्मिक रूप देने को कहा गया है। अपने विचारों को व्यक्त करते हुए सभा प्रधान जी तमाम हिंदी के हितैषियों से तथा विशेष कर पंजाब के तमाम प्रकार के क्षेत्र में काम करने वालो से यह बात बलपूर्वक कही है कि वे यदि वास्तव में हिन्दी भाषा के साथ प्रेम करते हैं, इसे फैलाना चाहते हैं एवं इसे सम्मान देना चाहते हैं तो वे आज और इसी समय ही अपने-अपने घरों, दुकानों आदि के नाम पट्ट हिन्दी में कर देवें। यदि किसी दूसरी भाषा मे भी लिखना चाहते हैं तो उन की इच्छा—किन्तु ऊपर का प्रथम स्थान हिन्दी को ही देवें। यह हिन्दी भाषा के प्रेम का क्रियात्मिक रूप है। इस से सब का हिन्दी के प्रति प्रेम का भी परिचय मिल जायेगा। इस बात का भी प्रमाण मिल सकेगा कि हम केवल कोरी बाते ही नही कहते वरन् उसको क्रियात्मिक रूप भी देना जानते हैं! अपने-अपने समय-समय पर होने वाले परिवारिक व सामाजिक समारोहो पर भी दूसरो के पास निमन्त्रण पत्र भी हिन्दी भाषा में भेजने चाहिएं।

बात बडी ठोस है। यदि हमारे कहने व करने मे भारी अन्तर है। हम हिन्दी-हिन्दी चिल्लाते है। हिंदी भाषा अमर रहे के ऊंचे-ऊंचे घोष लगाते हैं। बड़े-बडे लेख व धुआंधार भाषण देकर हिन्दी के प्रेम में पसीना - पसीना हो जाते हैं। हिन्दी के आन्दोलन में जेलों में भी चले जाते हैं। हिन्दी की उन्नति न करने के लिए स्थान-स्थान पर सरकार की कड़ी व करारी समालोचना भी करते रहते हैं। किन्तु हमारा अपना आचरण यह है कि हमारा पत्र व्यवहार तथा पत्रों पर लिखा हुवा पता भी हिन्दी में न लिखा हो कर केवल अंग्रेजी में ही होता है। घरों व दुकानो पर नाम व काम पट्ट भी अंग्रेजी में होते हैं। समारोहों के अवसर पर निमन्त्रण पत्र भी विदेशी - भाषा मे होते हैं। घरों में भी इसी का प्रयोग होता है—तो फिर हिन्दी प्रचार कैसे हो सकेगा। जयघोषो तथा केवल हिंदी का नाम लेने से तो इस का प्रचार कदापि न होगा।

आज सारे नगरोके बाज़ारों, दुकानों, मकानो को देखा जायें तो कितनों के नाम हिन्दी में हैं? हमारे निमंत्रण पत्र किस में होते हैं? आर्य समाजके मान्य नेता प्रिंसिपल भगवानदास जी दयानन्द कालेज अम्बाला सरीखा ही कोई सच्चा हिन्दी प्रेमी अपनी सुपुत्री के विवाह के निमन्त्रण हिन्दी मे छपवाते हैं? हमारे घरों में अगरेज बैठा है। आर्यजगत् के इन्हीं स्तम्भो मे एक बार हम ने लिखा था कि क्या अगरेज भारत से चला गया है? भौतिक रूपसे चाहे चला गया हो पर मानसिक व आत्मिक रूप से वह हमारी दुकानो, मकानो, खानपान की मेज़ो, पत्र व्यवहार व निमन्त्रणों, कार्यक्रमों, मन तथा वाणी पर आज भी उसी प्रकार बैठा हुआ है। सच्ची बात यह है कि आज अभी तक अंगरेजी से सब का बड़ा मोह है, हिन्दी से प्रेम नहीं है। सर्वत्र अंगरेजी का सम्मान है हिन्दी का नही। समाज का अकुश कम है। यदि हिन्दी प्रेमी सारे यह निश्चय कर ले कि यदि किसी का निमन्त्रण पत्र अंगरेजी में आये, हिन्दी की अवहेलना की जावे तो उस समारोह में कदापि न जायेंगे तो बहुत कुछ काम बन सकेगा। हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है। राष्ट्रभूमि के अपमान के समान राष्ट्रभाषा का अपमान भी नहीं सहन करना चाहिए। यह अपमान चाहे किसी की ओर से भी क्यों न हो। जनता की बड़ी आवाज होती है। इस बार जनता की प्रबल आवाज का ही तो परिणाम है कि मान्या प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी अपना आकाश वाणी का भाषण पहले राष्ट्रभाषा हिन्दी में बोलीं फिर अंगरेजी में। राष्ट्रभाषा का सम्मान यदि राष्ट्र के ऊंचे अधिकारी नहीं करेंगे तो जनता कैसे करेगी। बीस वर्ष स्वाधीनता को होने आये किन्तु कितना खेद है कि २० वर्षों के बाद भी राष्ट्र का मान्य सर्वप्रथम नेता राष्ट्रपति अपना भाषण राष्ट्रभाषा हिन्दी में न देकर विदेशी भाषा में देता है। भारत के लिए कितनी खेद जनक बात है। सोलह वर्ष में तो किसी भाषा का एम. ए. किया जा सकता है, किन्तु अभी तक राष्ट्रभाषा में भाषण भी नहीं दिया जा सकता। ऐसा तमाशा भारत में ही हो सकता है।

इसलिए हम सारे हिन्दी के हितैषियों से कहना चाहते हैं कि वे अपने कामों का हिन्दी करण करे। पंजाब के नरनारियों के लिए सभा के मान्य प्रधान श्री यश जी के प्रभावशाली शब्द बड़े आवश्यक हैं कि हिन्दी के लिए संघर्ष के क्षेत्र में उतरते हुए सब से पहला काम यह है कि ठोस पग उठायें।— त्रिलोक चन्द्र

ये काले अंगरेज़

लुधियाना के वेद सम्मेलन में आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् संन्यासी स्वामी समर्पणानन्द जी ने कहा कि इस समय वेदों की सभ्यता तथा वैदिक संस्कृति को गोरे अंगरेजों से उतना भय नहीं है जितना कि काले अंगरेजों से है। उनका सकेत उन भारतीय लोगों की ओर था जिनके दिमाग पर पश्चिमी सभ्यता ने अपना पूर्ण अधिकार कर रखा है। जो रूपरंग के सिवाय हर बात में अंगरेज बने हुए हैं। जिनको भारत की कोई भी वस्तु, पुस्तक, स्थान, विचार तथा महापुरुष अच्छा नहीं लगता। उनके विचार गुरु, भोजन गुरु, मति गुरु, वेशभूषा गुरु, भाषा भावना गुरु, किंवा शिक्षा गुरु तथा राजनीति गुरु अंगरेज ही अंगरेज हैं। ऐसे लोग ही काले अंगरेज हैं। उनके कारण आज भारतीय परिवार घर-घर व शिक्षण संस्थाएं योरुप के समान बनते जा रही है। वर्षों की संस्कृति की विचारधारा के लिए इनके मन में वेदों पर अश्रद्धा पैदा किया जा रहा है। यही लोग आज स्कूलों, कालेजों से पाठ्यक्रम निकाल करके वेदों पर कुठाराघात कर रहे हैं। ये काले अंगरेज अधिक भयंकर हैं। आर्यसमाज को इन काले अंगरेजों से पूरी तरह से टक्कर लेनी है। विचारों के युद्ध में इनको पराजित करना है।

स्वर्गीय प्रिंसिपल भाटियाजी

स्वर्गीय प्रिंसिपल ज्ञान चन्द जी भाटिया को हम से जुदा हुए एक वर्ष हो गया। गत १० जून ६५ को वह स्वर्गवासी हुए। आर्यसमाज माडल टाऊन जालन्धर ने उनका स्मृति दिवस बड़े समारोह से मनाया। स्वर्गीय श्री भाटिया जी आर्य प्रादेशिक सभा के वर्षों उपप्रधान व मन्त्री रहे। डी० ए० वी० कालेज कमेटी के स्तम्भो में से थे। जालन्धर की दयानन्द कालेज कमेटी के तो चेयरमैन थे। मांडल टाऊन समाज का भव्य भवन उनकी तपस्या; समाज साधना, धर्म प्रेम तथा प्रचार श्रद्धा का परिचय देता है। प्रिंसिपल भाटिया जी यज्ञ के तो बड़े प्रेमी थे। प्रातःकाल दैनिक रूप से समाज मन्दिर में स्वयं आकर यज्ञपात्रों को अपने हाथों से मांजते धोते। सब से पहले स्वयं यज्ञ करते। स्वाध्यायशील थे। प्रिंसिपल के ऊंचे पद से रिटायर होने के बाद तो वह सभा के, कालेज कमेटी तथा समाज के ही हो गये। अधिक काम करने के कारण ही उनका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। प्रभु ने उन को हर प्रकार की भौतिक सामग्री कोठी, धन, उत्तम योग्य सन्तान तथा प्रतिष्ठा प्रदान की। उनका सारा जीवन धार्मिक, प्रभु प्रेम से भरा था। महात्मा हंसराज जी के अनन्य भक्त थे। सभा को उन्नत करने में बड़ा हाथ है। सारा परिवार धर्मभाव से भरपूर है। उनके सुपुत्र श्री बलबीर-चन्द जी आज कल माण्डल टाऊन समाज के मन्त्री बन कर अपने स्वर्गीय पिता जी के पथ पर चल कर समाज की बड़ी सेवा करते हैं। अभी-अभी एक हजार के व्यय से हाल को हर प्रकार से सुन्दर बना दिया है। भाटिया जी अपनी धर्म स्मृति दे गये हैं। युवक उनके जीवन से प्रेरणा लेवें—सं०

★ क्या चाय और गरम मसालों जैसे मिर्च, खटाई, तेल, आदि के सेवन करने से भी हानि होती है?

Bari Doab Bank Limited

Registered Office :

Gowshala Bazar, HOSHIARPUR

Subscribed Capital	.. ...	Rs. 2,00,000
Paid up Capital	.....	Rs. 2,00,000
Reserves	......	Rs. 9,15,000

FIFTY-FIRST REPORT BY THE DIRECTORS

The Directors beg to submit to the shareholders the Balance Sheet and Profit and Loss Account of the Bank for the year ended 31st December, 1965 together with the Auditors' Report.

The net profit for the year amounts to Rs. 1,01,496·57, which with Rs. 2,04,996·06, brought forward from the previous year, makes a total Rs. 3,06,492·63 available for disposal.

The Directors recommend the amount to be disposed of as under :—

		Rs.	P.
To Statutory Reserve Fund	... ...	50,000	00
To Dividend @ 12% p. a.	... ...	24,000	00
To provision for Income tax	... ...	30,000	00
To Dharmada	... ...	2,000	00
To carry forward	... ...	2,00,492	63
Total	... ...	3,06,492	63

The payment of dividend proposed is subject to the sanction of the Reserve Bank of India.

The Bank's business continued to function satisfactorily.

Hoshiarpur

28th March, 1966

JAS RAJ
SHAM SINGH } Directors
JANAK RAJ

Report of the Auditors to the shareholders

We have audited the foregoing Balance-sheet of Bari Doab I Limited, Hoshiarpur, as at 31st December, 1965 and also the foreg Profit and Loss Account of the Bank for the year ended upon that da

In accordance with the provisions of Sections 29 of the Banl Companies Act, 1949 read with the provisos to sub section (1) and of Section 211 and sub-section (5) o Section 211 and 227 of Companies Act, 1956, the Balance-sheet and Profit and Loss Acco are not required to be and are not drawn up in accordance with Sixth Schedule to the Companies Act 1956 they are, therefore drawn in conformity with Forms A and B of the Third Schedule to Banking Companies Act, 1949.

We report that —

(a) We have obtained all the information and explanations wh to the best of our knowledge and belief, were necessary the purpose of our audit and have found them to satisfactory.

(b) The transactions of the Bank which have come to our not have been within the powers of the Bank

(c) In our opinion proper books of accounts as required by l have been kept by the bank so far as appears from exami tion of those books.

(d) The Bank has got no branch

(e) The Bank's Balance Sheet and Profit and Loss Account de with by this report are in agreement with the books of accou

(f) In our opinion and to the best of our information and accord to the explanations given to us, the said accounts give t information required by the Companies Act, 1956, in t manner so required for banking Companies and on such ba the said Balance-Sheet gives a true and fair view of the st. of the bank as at 31st December, 1965, and the Profit a Loss account gives a true and fair view of the profit for t year ended upon that date.

NEW DELHI.
Date . 15th March 1966.

SODHBANS & Co.,
Chartered Accountants.

BARI DOAB BANK LIMITED, HOSHIARPUR.

Profit & Loss Account for the year Ending 31 December, 1965.

31.12.1964 Rs.	EXPENDITURE	Rs. P.	31.12.1964 Rs.	INCOME	Rs.
55,723	1. Interest paid on Deposits, borrowing etc. ...	78,293 36		(Less provision made during the year for bad and doubtful debts and other usual or necessary provision)	
19,433	2. Salaries, allowances and Provident Fund. ..	19,706 25	1,20.203	1. Interest and Discount ...	1,48,239 3
—	3. Directors and Local Committee Members Fees and allowances...	—	127	2. Commission, Exchange and Brokerage ...	163 3
2,812	4. Rent, Taxes. Insurance, Lighting etc. ...	3,071 56	—	3. Rents ...	—
521	5. Law Charges. ..	829 84		4, Net profit on investments, Gold and Silver, Land, premises and other assets (not credited to Reserves or any particular Fund or Account) ...	
535	6. Postage, Telegrams and stamps .	546 87			
300	7. Auditor' Fees. ...	300 00			
1,238	8. Depreciation on and Repairs to the Banking Company's Property. ...	1,225 55			750 0
620	9. Stationery, Printing advertisements etc. ...	696 09		5. Net Profit on revaluation of investments Gold and Silver, Land, premises and other assets (not credited to Reserves or any particular Fund or Account) ..	—
—	10. Loss from sale of or dealing with non-banking assets. ...	—			
148	11. Net loss on sale of shares and securities. ...	—	32,223	6. Income from non-banking assests 30,026 31	7,788 [illegible]6
	12. Other expenditure		22,489	Less expenses 22,237 68	
22,980	(including income-tax paid at source Rs. 19,360 80) ...	21,911 86	9,734		
99,397	13 Balance of Profit (Subject to Taxation) ...	.) 1,496 57		7 Other Receipts	
	Note :—Particulars of remuneration paid to the Chief Executive Officer during 1965 :— Salary Rs. 4,080 (Rs. 4,080), Allowances Rs. 1380 (Rs 1,260). Perquisites Rs. 204 (Rs. 204) : Total Rs. 5,664 (Rs. 5,544). Figures in the brackets are for 1964. Rs. 360 paid as conveyance allowance have been included in the figures against allowances in and outside the bracket.		70,741	(i) Dividend on Shares 68,576 00	
			2,902	(ii) Miscellaneous Earnings 2,561 65	
			73,643		71.137 6
2,03,707	TOTAL ...	2,28,078 95	2,03.707	TOTAL ...	2,28,078 9

Bari Doab Bank

BALANCE SHEET AS

31-12-1964 Rs.	CAPITAL & LIABILITIES			Rs.	P.	Rs.	P.
	1. Capital						
(2,00,000)	Authorised Capital : 4000 equity shares of Rs. 50 each ...					2,00,00)	00
	Issued, Subscribed and paid up Capital ·						
2,00,000	4000 equity Shares of Rs. 50 each fully paid up ...					2,00,000	00
8,90,000	**2. Reserve Fund and other reserves** ...					9,15,000	00
	3. Deposits and other Accounts						
12,87,625	Fixed Deposits ...			13,21,472	35		
3,85,167	Saving Bank Deposit ...			4,00,524	34		
3,97,188	Current acoounts, Contingency accounts etc. ...			3,41,779	29		
2,500	Employee's Security Deposit ...			2,500	00	20,66,275	98
20,72,480							
—	**4. Borrowing from Banking Companies, agents etc.** ...						
—	**5. Bill payable**						
6,367	**6. Bills for Collection being bills receivable as per contra** ...						
	7, Other Liabilities : ...						
	Provision for Income tax :						
74,569	Balance as per last Balance Sheet	72,845	35				
38,326	Additions during the year	44,033	90				
1,12,895		1,16,879	25				
40,050	Less Income-tax paid	35,879	95	80,999	30		
72,845							
6,029	Dharmada			7,328	56		
127	Dividend unpaid ...			213	15	88,541	01
79,001							
—	**8. Acceptances, endorsements anb other obligations as per contra** ...						
	9. Profit and Loss Account :						
2,80,599	Balance as per Balance Sheet as at 31st December, 1964 ...			2,99,996	06		
	Less appropriations .						
25,000	Statutory Reserve	25,000	00				
36,000	Dividend	36,000	00				
1,000	Dharmada	2,000	00				
18,000	Provision for Income-tax	32.000	00	95,000	00		
80,000				2,04,996	06		
2,00,599							
99,397	Add profit for the year ended 31-12-1965			1,01.496	57	3,06,492	63
2,99,996							
	10. Contingent Liabilities						
(15,300)	On Partly paid Shares Rs. 15,300						
35,47,844	TOTAL ...					35,76,309	62

BANK LIMITED, AMRITSAR.
AT 31-12-1965

Previous Years Figures	PROPERTIES & ASSETS			AMOUNT Rs. P	TOTAL Rs. P.
	1. Cash				
9,89,7:5	In hand with Reserve Bank and State Bank of India (including foreign currency notes) ..				11,55,238 66
	2. Balance with other Banks .				
	A. In Current Accounts.				
5,01,717	(i) In India		11,19,906 43		
7,451	(ii) Outside India		6,131 53	11,26,037 96	
	B. In Deposit Accounts.				
7,25,000	(i) In India		5,95,000 00		
Nil	(ii) Outside India		—	5,95,000 00	17,21,037 96
3,00,000	**3. Money at call & short notice** ...				Nil
	4. Investment at Cost				
19,53,048	(i) Securities of the Central & State Govt. and other Trustee Securities including treasury bills of the Central & State Govts			20,06,253 00	
	(ii) Shares				
	(a) Ordinary shares fully paid up		7,85? 75		
4,15,612	(b) Preference shares do		3,17,981 74	3,25,839 49	
	Note : (a) Shares on which market quotations				
	Previous year are available .				
	3,95,524 Book Value		3,09,051 74		
	5,52 945 Market Value		4 37,1?? 75		
	(b) Shares for which market quotations are not available : Book value		16,787 75		
	(Previous year)		20,088 ?0		
Nil	(iii) Debentures or Bonds			Nil	
Nil	(iv) Other investments .			Nil	
Nil	(v) Gold ..			Nil	23,32,092 49
	5. Advances				
	(a) Loans, Cash Credits & Overdrafts				
44,43,311	(i) In India ..			42,82,490 81	
4,94,628	(ii) Outside India ...			1 00	
	(b) Bills discounted & Bills purchased				
54,252	(i) In India ...			99,105 20	
Nil	(ii) Outside India ... particulars as per separate schedule attached (Provision for bad & doubtful debts has been made as per contra)			Nil	43,81,597 01
	6. Bills receivable being Bills for collection as per contra				
7,75,943	(i) Payable in India ...			9,00,683 43	
Nil	(ii) Payable outside India ...			Nil	9,00,683 43
8,46,028	**7. Constituent liabilities for acceptances endorsements and other obligations as per contra.** ...				<
1,93,626	**8. Premises at cost up to 31-12-64**		1,96,409 07		
2,783	Additions during the year		93 20		
	Total		1,96,502 27		
Nil	Less Lahore Premises written off		64.979 35	1,31,522 92	
66,136	Less Dep. up to 31-12-64	67,534 08			
	Dep. Written back on				
Nil	Lahore Premises	21,945 88	45,588 20		
1,398	For Current year		1,363 07	46,951 27	84,571
45,122	**9. Furniture & Fixtures** Last Balance		45,418 97		
297	Additions during the Year		363 00	45,781 97	
29,520	Less Dep. up to 31-12-1964		31,109 72		
1,590	For current year		1,464 96	32,574 68	13,207
	10. Other Assets				
34,577	(i) Interest accrued on investments but not realized ...			30,100 40	
32,875	(ii) Misc. account recoverable ..			22,485 74	
10,776	(iii) Due from Banks in Liq. and under scheme. ...			10,776 13	
1,85,065	(iv) Income Tax deducted at source on yield of investment ...			1,85,064 86	
268	(v) Stamps in hand ...			225 87	
19,125	(vi) Advance payment of Income Tax ...			22,993 45	
1,006	(vii) Advance payment of deposit insurance premium ...			979 99	
Nil	(viii) Compensation due from Govt. ...			25,954 07	2,98,580 5
	11. Non Banking Assets Acquired in Satisfaction of claims				
3,62,606	(i) Land & House Property at cost		3,69,525 81		
6,920	Additions during the year		61,691 21		
	Total		4,31,217 02		
Nil	Less written off during the year		2,64,933 23	1,66,283 79	
	(ii) Other assets at cost				
1,64,080	Last balance		1,92,980 41		
48,400	Additions being expenses		148 54		
	Total		1,93,128 95		
19,500	Less sales during the year		3,500 00	1,89,628 95	3,55,912 7
1,24,96,087	Total				1,17,83,197 7

VED PAL SURI
General Manager

JAG RAJ
CHIRANJIV LAL AGGARWAL
CHANDRA GUPTA
DINA NATH
} Directors

THE PUNJAB CO-OPERATIVE BANK LIMITED, AMRITSAR.

PROFIT & LOSS ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31ST DECEMBER 1965,

Previous Year's Figures	EXPENDITURE		AMOUNT Rs. P.	TOTAL Rs. P.
1,89,729	1. To interest paid on deposits, borrowing etc. ..			2,41,116 81
1,35,459	2. To salaries & Allowances to Staff ...			1,69,074 66
1,150	3. To Directors & Local Committee member's fees & al owances			
21,002	4. (a) To Rent, Taxes, Insurance, Lighting etc.	Rs. 19,116 63	700 00	
3,880	(b) To Deposit insurance premium	3,940 06	23,056 69	
5 176	5. To Law Charges .		2,920 16	
7,498	6. ,, Postage, Telegrams & Stamps		8,248 44	
900	7. ,, Auditor's Fee ..		900 00	
3,472	8. ,, Depreciation on and repairs to the Banking company's property. .		4,469 66	
5,007	9. ,, Stationery, Printing & Advertisement		8,024 64	48,319 59
Nil	10. ,, Other Expenditure .			Nil
68,567	11. ,, Loss on sale of shares of Tata Iron & Steel Co. Ltd. .			30,472 00
156	12. ,, Loss on Redemption of Government Securities ...			Nil
Nil	13. ,, Provision for Bad & Doubtful debts .			36,191 37
	14. ,, Assets writen off			
Nil	(i) Pakistan debts and advances ...		4,32,369 50	
137	(ii) Other Advances .		64,259 46	
	(iii) Shares of joint stock companies held as investments ...		3,300 75	
Nil	(iv) House Property in Pakistan ...		3,07,966 70	
Nil	15 ,, Provision for payment of Bonus ..			8,07,896 41
Nil	16. ,, Provision for Income Tax ...			5,900 00
37,412	Tax deducted at source on yield of investments ..		34.189 72	
33,800	Balance Provision ...		Nil	34,189 72
1,52,391	17. To Balance of Profit ...			
	Particulars of the remuneration paid to the General Manager during 1965			80,590 08
	1,939 (i) Salaries	9,000 00		
	— (ii) Allowances	—		
	— (iii) Sitting fees	—		
	— (iv) Bonus for 1962 & 1964	485 60		
	(v) Employers contribution to Provident Fund pension fund			
	102 or any other superannuation Fund	562 44		
	(vi) Payment by way of gratuities, pensions or otherwise, in excess of employer's contributions and interest thereon	—		
	180 (vii) The monetary value of any other benefits or perquisites	720 00		
	2 221	10,768 04		
6,65,736		Total		14,53,750 64

Previous Year's Figures	INCOME		AMOUNT Rs P.	TOTAL Rs. P.
	1 By Interest and Discount			
3 59,?39	(a) Interest and Discount ..		3,77,159 41	
54,667	(b) Interest on Govt. Securities .		76,645 02	4,53,804 43
39,760	2 ,, Commission, Exchange & Brokerage			39,967 43
8,382	3, ,, Rent ...			11,028 65
1,545	4. ,, Net profit on sale of investment, gold and silver, land, premises and other assets (not credited to reserve or any particular fund or account) ..			Nil
Nil	5. ,, Net profit on revaluation of investment, gold and silver land, premises and other assets (not credited to reserve or any particular fund or account) ...			Nil
	6. ,, Income from non banking assets and profit from sale of or dealing with such assets			
16,595	(a) Rents on Property ..		9.846 00	
20	(b) Income from Agricultural land .		40 00	
Nil	(c) Profit on sale of Property ...		Nil	9,886 00
	7. ,, Other Receipts			
6,088	(a) Miscellaneous Earnings ...		6,765 98	
1,10,286	(b) Dividend on Shares ...		95,763 90	
487	(c) Written off bad debts realised ..		1,466 59	
68,567	(d) Transfers from . Contingent Reserve	4,91,061 58		
Nil	General Reserve	1,70,000 00		
Nil	Unclaimed Deposits of Evacuees	1,74,006 08	8,35,067 66	9,39,064 13
6,65,736		Total .		14,53,750 64

The Punjab Co-operative Bank Limited Amritsar.

Schedule of Particulars required by the Banking Companies Act, 1949 (Act X of 1949) attached to and forming part of the Balance Sheet as at 31 December, 1965.

Previous Year's figures		Loans, Advances, Cash Credits and Overdrafts	
44,18,808	(i) Debts considered good in respect which the bank is fully secured. ...		37,61,488 82
5,73,383	(ii) Debts considered good, for which the bank holds no other security than the debtor's personal security.		6,20,108 19
Nil	(iii) Debts considered good, secured by the personal liabilities of one or more parties in addition to the personal security of the debtors. ...		Nil
Nil	(iv) Debts considered doubtful or bad, not provided for. ...		Nil
49,92,191			
Nil	(v) Debts due by Directors or Officers of the Bank or any of them either severally or jointly with any other person. ...	Nil	
Nil	(vi) Debts due by companies or firms in which the Directors of the bank are interested as directors, partners or managing agents or in the case of private companies, as members ...	Nil	
Nil	(vii) Maximum total amount of loans, including temporary advances, made at any time during the year to Directors or Managers or Officers of the Bank or any of them either severally or jointly with any other person. ...	Nil	
Nil	(viii) Maximum total amount of loans, including temporary advances, granted during the year to the companies or firms in which the Directors of the Bank are interested as Directors, Partners or Managing Agents or, in the case of private companies, as members....	Nil	
Nil	(ix) Due from Banking companies. ...	Nil	
	TOTAL		43,81,597 01

V. K. MEHTA & Co.

JAG RAT

भाषा के आधार पर देश के बटवारा की गल्ती

पंजाब का विभाजन राज्य सरकार की दुर्बलताओं के कारण हुआ

(लुधियाना में श्री यश जी का भाषण)

लुधियाना—कल रात यहां आर्यवीर दल की ओर से आयोजित राष्ट्र रक्षा सम्मेलन मे भाषण करते हुए श्री यश ने भाषा के आधार पर देश के बटवारे और नये सूबों की स्थापना को राष्ट्रीय हित के लिए हानिकर करार दिया और इस बात पर जोर दिया कि देश को कुछ प्रशासनिक भागो में बांट देना ही काफी होगा। उन्होने कहा कि भाषा की आड मे देश का यह बटवारा जारी रहा तो एक दिन देश के टुकडे-टुकडे हो जाएंगे और हमारी एकता और देश की अखंडता को भारी नुकसान पहुचेगा भाषा देश के बटवारे का कारण नही बल्कि एकता और संगठन का कारण होना चाहिए। भाषा विचार अभिव्यक्ति का साधन है और इस तरह यह देश के विभिन्न भागो के लोगो को एक-दूसरे की भावनाओ आदि को समझने मे सहायता देती है। इस तरह एक राष्ट्रभाषा देश को एक बनाने में सहायक होती है। इसीलिए जब हमारे देश का विधान बनाया गया तो उन लोगो ने जो हिंदी नही जानते थे देश की राष्ट्रभाषा हिंदी को बचाने का फैसला किया किन्तु यदि १८ वर्ष बीत जाने के बाद भी हमारी एक राष्ट्रभाषा नही बन सकी तो इसमे न केवल भारत सरकार का दोष है बल्कि हमारा अपना भी दोष है क्योकि हमने हिंदी को ऊपर उठाने और उसे राष्ट्रभाषा का रूप देने की बजाए अपना ध्यान दूसरी ओर लगाए रखा। सरकार ने बुनियादी गलती यह की कि देश को भाषायी आधार पर बांटना शुरू कर दिया और राजनीतिज्ञों ने प्रश्न को ऐसा उलझाया कि बजाए अपना ध्यान दूसरी ओर लगाए रखा। सरकार ने बुनियादी गलती यह की कि देश को भाषाई आधार पर बांटना शुरू कर दिया और राजनीतिज्ञों ने प्रश्न को ऐसा उलझाया कि वह देश में फूट डालने और बटवारे का कारण बनी। महाराष्ट्र बना, गुजरात बना, आंध्र बना और इस तरह भाषा के नाम पर कई सूबे बने और अब भाषा का नाम लेकर पंजाब का बटवारा कर दिया गया। यह इलाका पंजाबी बोलता है और यह इलाका हिन्दी बोलता है। यद्यपि तथ्य इसके सर्वथा विपरीत हैं। जहा-जहा हिंदी बोली जाती है वहा-वहा पंजाबी भी बोली जाती है, इसलिए यहा भाषा के आधार पर बटवारा हो ही नही सकता। पंजाब का बटवारा आपके सामने है। किस तरह लोग छोटे-छोटे टुकड़ो के लिए लड़ रहे है। मैं पूछता हू कि इसमे भाषा कहा आती है? कौन-सी वस्तु है जो आप भाषा के नाम पर माग रहे हैं और क्या-क्या छोड रहे हैं। अपने भाषण को जारी रखते हुए आपने कहा कि हम पजाबी बोलते हैं किन्तु यह हमारी मातृभाषा नही हो सकती। हमारी मातृभाषा वह है जिसका हम अपनी मां की तरह सन्मान करते हैं। इस का यह भी अर्थ नही कि हम पजाबी से प्यार नही करते। जो अपनी मा का आदर करता है वह दूसरो की मां का सन्मान भी करता है। हमारी मातृभूमि वह है जिस ने हमें जन्म दिया किन्तु हम मातृभूमि उसे कहते हैं जिस को हम प्यार करते हैं। मै जलालपुर जट्टा (पाकिस्तान) मे पैदा हुआ किन्तु पाकिस्तानी हमले के दौरान में मैं चाहता था कि यह इलाका तबाह हो जाए क्योकि यह मेरी मातृभूमि नही है। जब कोई मेरे देश की ओर देखता था तो मैं चाहता था कि उसकी आखे निकाल लू। सारे देश की धरती अपनी है। सूबो का बटवारा पानी की एक रेखा है। लोग प्रश्न करते है कि हम अब पंजाब से चले जाएं। यह धरती अपनी है। उन्होंने कहा कि किसीमे इतना साहस नही हमारी ओर आंख उठाकर देख सके। यह धरती अपनी है। हम यहा का अनाज खाते हैं। हमे चाहिए कि हम पंजाब के हिंदुओ को सगठित करे। आर्य समाज को डराए जा सकने का कोई कारण नहीं। हमें अपने सिद्धात पर डटे रहने की आदत है। राजनीतिक पार्टिया यह देखती है कि उन्हे वोट कितने मिल सकते है। वोट के विचार से यह अपने सिद्धांतो पर दृढ नही रह सकती। इन राजनीतिक पार्टियो से टक्कर लेने की शक्ति आर्यसमाज मे है। हम कमजोर नही हैं। पानी की यह रेखाए मिट कर रहेगी। प्रशात सागर पर छोटी-छोटी किश्तिया चल सकती हैं किंतु तूफान आ जाए तो बड़े-बडे जहाज डूब जाते हैं। आर्य समाज अपनी रक्षा करना जानता है, राष्ट्र भाषा की रक्षा करना भी जानता है और देश की रक्षा करना भी जानता है।

आर्यसमाज माडलटाऊन जालन्धर में अमृत वर्षा

जालन्धर १७-६-६६ श्री जगदीश चन्द्र जी शास्त्री दर्शनाचार्य महोपदेशक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा तथा श्री राजपाल मदन मोहन जी विसटा मण्डली वाले इस सप्ताह समाज मे पधारे। श्री जगदीशचन्द्र जी शास्त्री ने कठोपनिषद की अध्यात्म चर्चा पर मनोहर व्याख्यान दिये। यम नचिकेता की कथा बडे सुन्दर व सरल ढंग से की श्री राजपाल मदनमोहन जी के मीठे भजनों ने भी माडल टाऊन के नर-नारियो को खूब प्रभावित किया। श्रोतागणो मे भी बडे उच्चकोटि के विद्वान तथा पुराने आर्य घरानो के शिष्ट नर-नारी विद्यमान थे। इस कार्यक्रम से सबको हार्दिक प्रसन्नता हुई। यह सारा कार्यक्रम आर्यसमाज के नव-निर्मित हाल मे हुआ जिसे बिजली के दस पखो और आठ नीयन लाईट टयूबो से अभी-अभी सुसज्जित किया गया है।

—वेदप्रकाश मलहोत्रा
प्रधान आर्य समाज
माडल टाऊन, जालन्धर

माता ललिता शास्त्री जी

आर्यवीर सम्मेलन लुधियाना मे पजाब के आर्यसमाज ने अपनी शक्ति व सगठन का परिचय दिया, नाम तो इसका आर्य वीर दल सम्मेलन मारे आर्यसमाज का था। लुधियाना समाजो ने इसके लिए जो परिश्रम किया। आर्यसमाज के सारे नेताओ ने तो पूरा सहयोग दिया। आर्यसमाज ने व संस्थाओ ने जो परिश्रम किया। इसके सारे समाज को बधाई हो। इस अवसर पर भारत के स्वर्गीय देव-स्वभाव शस्त्र और शास्त्र दोनो की प्रतीक बने हुए प्रधान मन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री की सरलता की सजीव मूर्ति धर्म पत्नी श्रीमती शास्त्री भी लुधियाना सम्मेलन मे पधार कर शुभाशीष दे गई। हमारे लिए वह माननीया माता है। माता का शुभ आशीर्वाद बड़ी काम देता है। आर्यवीरों का मार्ग दर्शन करा गई। आर्य वीरों ने बड़ा काम करना है। गुडगांवा व करनाल के बाद यह तीसरा सम्मेलन था। अब सम्मेलन तो हो गया। इसके बाद अब विशेष काम की आवश्यकता है। युवक शक्ति को संगठित करना होगा। सम्मेलन अपने स्थान पर होते है तथा युवाशक्ति का ठोस संगठन अपने स्थान पर होता है। अब क्रियात्मिक रूप में लग जाईए—स.

सभा का प्रचार कार्य

श्री प. ओमप्रकाश जी महोपदेशक सभा तथा ठा. दुर्गासिह जी की भजन मडली एक मास के लिए जोगेन्द्र नगर, धर्मशाला पालमपुर, नूरपुर, नगरोटा बगुवा आदि समाजो मे वेद प्रचारार्थ जा रही है सभी समाजे पूर्ण सहयोग देने की कृपा करे।

शुभ सगाई

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के रिटायर हैड क्लर्क श्री मेहरचन्द जी के सुपुत्र श्री सुशीलकुमार जी की सगाई क्रिया धूमधाम से उनके निवास स्थान वोवी मुहल्ला मे ११-६-६६ को श्री प. खुशीराम जी शर्मा ने सम्पन्न कराई।

आवश्यकता

आर्य कन्या महाविद्यालय बडोदा को एक वृद्ध महानुभाव जो कि मैट्रिक को हिन्दी मे गणित और साइन्स (विज्ञान) पढा सके। आवेदन पत्र नीचे के पते पर भेजे।

प्राचार्या
आर्य कन्या महाविद्यालय बडौदा

भूल सुधार

आर्य जगत के ५ जून १९६६ के अक मे आर्यसमाज दीवाने हाल के बारे मे जो सूचना प्रकाशित की गई थी वह भूल से छप गई थी, जिस का हमे बहुत खेद है। हमारे दिल मे श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले मत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि के बारे में बहुत आदर सत्कार है। इस भूल से छापे गए समाचार के लिए हमे अति खेद है। —व्यवस्थापक

चुनाव

आर्य कुमार सभा बाजार सीताराम दिल्ली का

प्रधान—श्री राजारामसिंह जी
उपप्रधान—श्री रामकुमार जी
मन्त्री—श्री नरेश चन्द शर्मा जी
उपमन्त्री—श्री वीरेन्द्र वा शिवकुमार जी
कोषाध्यक्ष—श्री वीरेन्द्र जी
क्रीड़ाध्यक्ष—श्री मोहनलाल जी
पुस्तकाध्यक्ष—श्री राघवेन्द्रनाथजी (तेजराम पुरोहित)

आर्यसमाज प्रभाया मुहल्ला रोहतक

संरक्षक—श्रीयुत राम रंग जी वकील; प्रधान—श्री किशोरीलाल जी, उपप्रधान—श्री प्रेमचन्द्रजी चक्रवर्ती, व श्रीमती दयावंती जी, मन्त्री—श्री भवानीदास जी, उपमन्त्री—श्री नदलाल जी, व भीमसेन जी, कोषाध्यक्ष—श्री रामदित्ता मल जी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री विद्यार्थी जी, लेखा निरीक्षक—मुरदियालजी, भंडारी—श्री शंकरदासजी, अतरग सदस्य—सिकन्दर जी, श्री, भसीन जी, प्रो. जगदीशजी व गुरुदत्त जी।

आर्यसमाजों को सूचना

वेद सप्ताह श्रावणी उपाकर्म की वार्षिक पुनीत पर्व आ रहा है। उन दिनो सारी समाजों का इकट्ठा कार्यक्रम बनाने मे कठिनता हो जाती है। इस लिए पहली अगस्त से ३० सितम्बर ६६ तक सारा समय वेद सप्ताह की कथाओं के लिए है। समाजों से निवेदन है कि सभा को इस विषय मे अभी से सूचना देवें ताकि सब का अनुचित कार्यक्रम बनाया जा सके।

वेद प्रकाश मलहोत्रा
सभा मन्त्री
आर्य प्रादेशिक सभा जालन्धर

आर्यजगत का विशेषांक

स्वर्गीय म. देवीचन्द जी के प्रथम स्मृति दिवस के अवसर पर आर्यजगत उनकी पुण्य स्मृति में म. देवीचन्द स्मृति अंक ३-७-६६ को प्रकाशित कर रहा है, सब आर्य संस्थाएं अपने आर्डर से सूचित करें।

—व्यवस्थापक

गुरुकुल-कांगड़ी-विश्वविद्यालय

गुरुकुल—कांगड़ी, हरिद्वार मे (६ से १० तक आयु के) ब्रह्मचारियों का प्रवेश १ जुलाई १९६६ से आरम्भ होगा। शिक्षा निःशुल्क। सब विषयो की शिक्षा। आश्रम-वास। सब विषयो की शिक्षा। आश्रम-वास, विशेष देख-रेख। सीधा-सादा भारतीय जीवन। कड़ा अनुशासन। एकसा रहन-सहन। प्राकृतिक, सुन्दर, स्वास्थ्य-प्रद वातावरण... पाठ्य-बोध... उपाधियां प्राप्त। निः...

आर्यसमाज २७५ जवाहरनगर गोरेगांव बम्बई-६२

श्री दीवानचन्द जी साहनी की अध्यक्षता में १५-५-६६ को निम्न प्रकार से चुनाव हुआ—

प्रधान—श्री दीवानचन्द जी साहनी
उपप्रधान—श्री सत्यपाल जी खन्ना
मन्त्री—श्री वेदमित्र जी भाटिया
उपमन्त्री—श्री अनुज्ञान जी आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री सत्यवीर जी गुलाटी
हिसाब निरीक्षक—श्री रामप्यारे जी सिक्वाना
पुस्तकाध्यक्ष—श्री शिव प्रसाद जी

श्रीमती सुशीला जी साहनी, श्री सत्यव्रत जी अग्रवाल, श्री बाबूलाल जी चौधरी, श्री मलीजा जी, श्री प्रभदयाल जी मलिक अन्तरंग सदस्य। इस समाज के ५० सदस्य हैं। समाज के भवन निर्माण फण्ड में २०५०० रुपये देने के लिये श्री रघुवीर जी ने घोषणा की। आशा है समाज का अपना भवन १९७० तक बन जायेगा।

वेदमित्र—मन्त्री
आर्यसमाज गोरेगांव बम्बई

आल इण्डिया दयानन्द साल्वेशन मिशन होश्यारपुर

श्री जे० आर० चावला, पंन्सनर, ९२-डी सेकेट, मेरठ शहर, ने प्रसन्नता पूर्वक आल इंडिया दयानन्द साल्वेशन मिशन होश्यारपुर को निर्धन लोगों के सहायतार्थ, कुष्ट रोगियों के सेवार्थ (आयुर्वेदिक औषधियों के लिए) तथा वैदिक धर्म के प्रचारार्थ १२००/- रु० दान दिया है। जिस के लिये मिशन उनका अत्यधिक धन्यवादी है।

आल इंडिया दयानन्द साल्वेशन मिशन होश्यारपुर की बड़ौदा (गुजरात) शाखा के कार्यकर्ताओं ने पं० आत्मानन्द जी, मिशन के प्रचारक, त्यागशील तथा अवैतनिक कार्यकर्ता हैं और मिशन की वहां की शाखा के अध्यक्ष हैं, के नेतृत्व में तूटपा (कच्छ) में मिशनरियों के २०० परिवार जिनके सदस्यों की कुल संख्या १००० है, का पुनः वैदिक (हिन्दू) धर्म में प्रवेश किया है।

राम दास प्रधान मिशन

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज हिसार का यह साप्ताहिक अधिवेशन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान माननीय श्री प्रतापसिंह जी की माता जी की मृत्यु पर हार्दिक शोक प्रकट करता है और उनके परिवार से पूर्णतया सहानुभूति रखता है। साथ ही परम-पिता परमात्मा से विनय करता है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें और उनकी छत्रछाया से वंचित होने वाले प्रिय परिवार को इस वियोग को सहन करने की शक्ति दें।

इस प्रस्ताव की एक प्रति श्री प्रतापसिंह शूर जी वल्लभदास प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पास भेजी गई। —नन्दलाल मन्त्री

आर्यसमाज हिसार

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P 121

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे | वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक २८) २७ आषाढ़ २०२३ रविवार—दयानन्दाब्द १४१— १० जुलाई १९६६ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

इन्द्रमित् स्तोता

उस इन्द्र भगवान की ही स्तुति किया करो क्योंकि वही परमात्मा सारे ऐश्वर्यों का भण्डार है, सर्व सुखो सम्पदाओ का प्रदाता है। उसे ही जानो, उसे ही मानो, उसी का ही स्तवन भजन और पूजन करो।

मुहुरुक्था च शंसत

मुहु- बार २ वेद की ऋचाओ साम के सगीतो, स्तुति के मन्त्रो तथा भक्तिरस भरे भावो मे उसी के गीत गाओ, उसी के स्तोता बन कर सोमरस के कटोरे भर २ बार २ जीवन में पान करो। सवेरे भक्ति रस पियो, शाम को पियो, बार २ पियो।

यश्चकार सदावृधम्

जो नर-नारी प्रभु का प्रेमी उस जीवन मे सुख शान्ति सम्पन्नता आदि की वृद्धि प्रदान करने वाले उस भगवान को पाकर अपना साथी, नेता बना लेता है, उसका आश्रय प्राप्त कर लेता है—उसे अपना लेता है।

मा चिदन्यद् विशंसत

हे लोगो! सावधान हो कर सुनो कि आप लोग उस परमेश्वर के सिवा य और किसी वस्तु पदार्थ की या मनुष्य की, देवी देवता की ईश्वर के स्थान स्तुति उपासना, पूजा न करो। अपूज्य का पूजन प्राप्त ही है।

अथर्व वेद

वेदामृत

वीर बन कर आगे बढ़

शुक्रोऽसि भ्राजोऽसि स्वरसि ज्योतिरसि।
आप्नुहि श्रेयांसमति समं क्राम ॥

अर्थ - हे वीरता का रसपान करने वाले मनुष्य! तू (शुक्र, असि) वीर है शुद्ध है और तू (भ्राज असि) चमकीला है, परिपक्व है और तू (स्वरसि) आनन्द मे भरा है (ज्योति असि) तू प्रकाश है। इसलिए (आप्नुहि) प्राप्त कर (श्रेयांसम्) श्रेष्ठ मण्डल को तथा (समम् अतिक्राम) जो तेरे समान है उन से आगे बढ़ता जा। तू वीर है फौलादी है, अपना पथ स्वयं बनाने वाला है तथा तू प्रकाश है। शत्रु को मार गिरा।

इस का भाव यह है

हे वीरवर! तेरे होते हुए किसी को क्या चिन्ता हो सकती है? शत्रु की अब क्या शक्ति है जो वह अब हमारी ओर आंख भी उठा सके। तू शुक्र है। हर प्रकार से आचार विचार मे, जीवन के हर कार्य मे शुद्ध है। शत्रु को साहस कहा कि वह तेरे सामने मुख भी दिखा सके? तू भ्राजमान है, फौलादी है। वज्र के समान पक्का है। शत्रु टक्कर मार २ कर अपना सिर फोड लेगा। तू अपना मार्ग स्वयं बनाने वाला है। तेरे आगे नदी-नद सागर-पर्वत तथा वन भी आकर तेरा मार्ग नही रोक सकते। सब को काटता चीरता तथा पार करता हुआ अपना पथ बना कर चल पड़ता है। तू प्रकाश है। हे वीर! राक्षसो को मारने के लिए आगे ही आगे बढ़ता जा।

अथर्व वेद २-११-५

★ नशे से बुद्धि भ्रष्ट होती है। बुद्धि भ्रष्ट होने से नाश ही हो जाता है। वायुमडल दूषित होता है। मन पाप करने की ओर दौड़ता है। मन मे बुरे विचार आते हैं। शरीर में रोग उत्पन्न हो जाते हैं। फेफड़ा खराब हो जाता है, खासी, दमा, तपेदिक आदि रोग भी पैदा हो जाते हैं। इस के अतिरिक्त रुपया पैसा व्यर्थ बरबाद होता है। यदि उस पैसे का भक्ष्य वस्तुओ मे व्यय किया जाय तो बहुत ही लाभ हो।

ऋषि दर्शन

तदाज्ञानुष्ठातार:

जो लोग भगवान् के भक्त उस परमेश्वर की आज्ञा का अनुष्ठान करते है आदेश पर चलते है प्रभु के परम विश्वासी बनकर उस पिता की निर्धारित मर्यादाओ पर चलते है। उसी के बन जाते है।

स्थिरा भवन्ति

वे अमृत पुत्र प्रभु के प्रेमी अपने जीवन के प्रत्येक काम मे स्थिर हो जाते है। उन का वचन अटल, मन स्थिर तथा कर्म प्रशस्त हो जाता है। उनको अपने जीवन पथ से ससार की कोई भी शक्ति विचलित नही कर सकती है। वे ध्रुव होते है।

विद्वांस: क्रान्तदर्शना

जो विद्वान् है, जिन्होने ज्ञान का प्रकाश पा लिया है। सत्य विद्या का प्रसार जिनको मिल गया है वे क्रान्तदर्शी बन जाते है। उनकी दृष्टि बड़ी दूर पैनी बन जाती है। दूरदर्शी हो जाते है।

ज्ञान स्वरूपश्च

तथा वह जगदीश्वर ज्ञान स्वरूप है। सारे ज्ञानो का केन्द्र और भण्डार है। सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते है, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है। उसी से सब को ज्ञान की प्राप्ति होती है। ज्ञान के स्रोत से ही तो ज्ञान मिलता है।

भा ष्य भूमि का से

श्री संतोषराज जी

सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शा

धार्मिक विवेचन—

आओ ! हम वैदिक संध्यारूपी सागर में डुबकी लगाएं ताकि अमूल्य रत्न पायें

(श्री परमानन्द जी विद्यार्थी, रोहतक)

नोट—इस से पूर्व तीन मन्त्रों की व्याख्या पहले अंको में प्रकाशित हो चुकी है

प्राणायाम मन्त्राः नं० ४

ओं भूः । ओं भुवः । ओं स्वः ओं महः । ओं जनः । ओं तपः । ओं सत्यम् ।

सन्ध्या के इस चौथे मन्त्र के शब्दों का अर्थ 'मार्जन मन्त्र' मे कर चुके है (देखिये २९ मई का आर्यजगत) केवल कविता या पद्य रूप में नीचे अर्थ जान लें—

पद्य में अर्थ

प्राण स्वरूप प्राणों से प्यारे।
दुःख दूर सब करने हारे ॥
सुख स्वरूप सुखों के दाता।
सब से बडे जगत पिता-माता॥
दुष्टो को दंड देने हारे।
सब की सुध लेने हारे ॥
सत्य स्वरूप दया सागर हो ।
अविनाशी तुम अजर-अमर हो ॥

व्याख्या

प्राणों से प्यारे परमात्मा ! मुझे शक्ति दे, कि मै पवित्र वेद का ज्ञान प्राप्त करके अपने जीवन को उन्नत करू। हे दुःखो के दूर करने वाले ईश्वर ! मुझे शक्ति दे, कि आपके पवित्र और सर्व-श्रेष्ठ (वैदिक धर्म) पर चलकर अपने जीवन को सफली भूत बनाऊ। हे सुख के आधार परमेश्वर ! मुझे बल दे, कि मैं 'काम वासना' को नियन्त्रित रखकर शारीरिक रोगो से छुटकारा पाऊ। हे सबसे महान् पिता ! मुझे बल दे, कि मै विवाहित अथवा अविवाहित अवस्था में वेद के आदेश अनुसार 'ब्रह्मचर्य' का व्रत धारण करता हुआ और विधिवत् 'प्राणायाम' करता हुआ अपने मन को स्थिर कर पाऊ, ताकि आपके दर्शन करने निमित पात्र बन सकू हे पापियो को दण्ड देने वाले ! मुझे ताकत दे, कि ब्रह्म 'यज्ञ अर्थात्' आपको सर्वव्यापक समझता हुआ आठो पहर-चौबीस घण्टे आपके गुण (स्तुति) गान करता हुआ आपका निकटतम स्थान पाने अर्थ 'प्रयत्नशील' रहूं।

विशेष संकेत

(१) यह वेद का मन्त्र नही, अपितु उपनिषदो मे आया मन्त्र है, जिसे प्राणायाम मन्त्र के नाम से भगवान दयानन्द जी महाराज ने चौथे स्थान पर 'वैदिक सन्ध्या' मे अंकित किया है। (२) प्राणायाम करने अर्थ किसी महान् विद्वान् के चरणों में बैठकर विधि सीखनी चाहिए। (३) इस मन्त्र का केन्द्र बिन्दु, अर्थात् जिसके बाहर मन्त्र घूमता है 'ओ३म्' है, शेष शब्द आए हुए इसके विशेषण मात्र हैं। (४) यह वास्तव में मानसिकोच्चारण मन्त्र है। अतः सन्ध्या करते समय अथवा वैसे प्राणायाम करते समय 'मन द्वारा' इस के शब्द अर्थ पर विचार करते हुए [illegible] पर ध्यान जमाना चाहिये। (५) प्राणायाम आलस्य और बुरे विचारों और भावो को दूर करने की अचूक दवा है। अनुभवी आर्य पुरुषों का कथन है कि जहा प्राणायाम करने से जुकाम-नजला, खांसी, दमा, तपदिक, अपाचन, बद्ध (कब्ज) शूल, धरण, अफाडा आदि अनेक रोगो का नाश हो जाता है. वहा परम पिता परमात्मा का ध्यान जमाने मे यह अमोघ शस्त्र है। (६) विधिवत प्राणायाम करने से आयु बढ जाती है। ७) यदि प्राणायाम विधिवत तथा शक्ति अनुसार किया जाए और साथ ही उचित मात्रा मे शुद्ध घृत और गाय का दूध भी सेवन किया जाए तो शरीर मे ऊर्जा (शक्ति) तो बढती ही है इसके अतिरिक्त 'आत्मिक शक्ति' इतनी बढ जाती है. कि परमात्मा-मिलाप मे देर नही लगती। (८) योग के आठ दर्जो मे इस प्राणायाम मन्त्र का चौथा स्थान है अर्थात् जिन्हे प्रभु-मिलन की इच्छा हो. जन्म-मरण के चक्र से छुटकारा पाना अभीष्ट हो अथवा मोक्ष पद पाने की प्रबल लालसा हो। उन्हे यम-नियम की दस बातो पर आचरण करके आसन पर काबू पा, प्राणायाम द्वारा करना चाहिए।

ईश्वर-रचना-चिंतन मन्त्र

सृष्टि-उत्पत्ति के मन्त्र

(सन्ध्या का दूसरा भाग)

ओ३म् ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्,
तपसोऽध्यजायत ।
ततो रात्र्य जायत ततः समुद्रो
अर्णवः ॥ १ ॥ समुद्रादर्णवादधि
संवत्सरो अजायत ।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य
मिषतो वशी ॥ २ ॥ सूर्याचन्द्रमसौ
धाता यथा पूर्व मकल्पयत् ।
दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्ष
मथो स्वः ॥ ३ ॥

शब्द अर्थ

ओ३म् (परमात्मा का निज नाम) [illegible] पवित्र वेद), च (और), सत्यम् (स्थूल [illegible]) जगत की कारण [illegible] प्रकृति, अभि (चारों ओर से) इद्धात (प्रकाश स्वरूप) से तपसः (ज्ञान स्वरूप से), अधि+अजायत (उत्पन्न हुई), ततः (उसी से), रात्रि (महा प्रलय), समुद्रः (भूमिस्थ समुद्र), अर्णवः (आकशस्थ मेघ रूप जल सागर) समुद्रात् (भूमिस्थ समुद्र से), अर्णवात (आकास्थल जल-कोश से). अधि (पीछे) सवत्सर. (वर्ष. काल तथा ऋतुएं), अजायत (उत्पन्न हुआ), अहो रात्राणि (दिन-रात) विदधत् (बनाए), विश्वस्य (जगत के) मिषत. (सहज स्वभाव से), वशी-(वश मे रखने वाले परमात्मा ने) सूर्याचन्द्र मसौ (सूर्य और चन्द्र को), धाता—(धारण करने वाले ने) यथा पूर्वम् (जैसे पहले कल्प की सृष्टि मे) अकल्पयत— (बनाया) दिवम् (द्युलोक को) पृथिवीम् (भूमिलोक को) अथो (और) स्वः (भूमि तथा द्युलोक के बीच के लोक-लोकान्तरो को)।

सरलार्थ गद्य में

प्रकाश स्वरूप और समस्त जगत को प्रकाश मे प्रकाशित करने वाले तथा समस्त ज्ञानोंके भडार परम पिता परमात्मा ने अपनी शक्ति से प्रलय रूपी रात्रि में पड़ी सूक्ष्म अवस्था की प्रकृति को विकृत करके स्थूल रूप दिया। इसी स्थूल प्रकृति से आकाश का आकार प्रकट हुआ, जिस मे प्रकाश के पुञ्ज 'सूर्य' को उत्पन्न करके उसके सौर जगत अर्थात मंगल, बुध, बृहस्पिति, शुक्र, शनि, यम, वारुण, वारुणी आदि को जन्म देने के साथ 'पृथ्वी' को उत्पन्न किया। यह हमारी पृथ्वी 'सूर्य की पुत्री' कहलाई। चन्द्र बना, जो पृथ्वी का पुत्र कहलाया इस प्रकार सूर्य का परिवार कहलाया। जब पृथ्वी बनी, तो अग्नि का गोला होने के कारण सूर्य के बाहर निश्चित मार्ग पर और अपनी [illegible] पर चक्कर लगाने लगी। इस प्रकार पल, घड़ी, पहर, दिन-रात और वर्ष तथा ऋतुओं का जन्म हुआ। संसार को सहज स्वभाव से वश में रखने वाले परमेश्वर ने अपनी अपार शक्ति से पृथ्वी को ठण्डा करने निमित्त 'महासागर' का जलकोश स्थिर किया। जब इस जल कोश पर सूर्य की किरणों का प्रभाव पड़ा, तो जल का वाष्पीकरण हुआ, तो आकाश में बादल छा गये। इन मेघों से इस भूमि पर वर्षा हुई तो भूमि की रही सही गर्मी दूर हुई। अब भूमि का शुष्क स्थल ठण्डा हुआ तो समस्त संसारों के धारण वा पालन वाले परमात्मा ने इस भूमि पर क्रमशः पर्वत, पोठार, मैदान की बनावट के पश्चात घास-फूस, पेड़-पौधे वनस्पति को उत्पन्न किया। पश्चात् कीड़े-मकौड़े, पशु-पक्षी अर्थात् मनुष्य समाज की समस्त आवश्यकताए पूर्ण करने अर्थ पदार्थ और वस्तुएं पैदा करके सर्वप्रथम अमैथुनी सृष्टि के नियम से पैदा होने वाले अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा महर्षियो के पवित्र हृदयों मे क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद का प्रकाश हुआ। इन पवित्र आत्माओ ने एक-दूसरे को प्रत्येक वेद का ज्ञान कराया और पीछे पैदा होने मनुष्य समाज को इन वेदो का ज्ञान सिखाया। इस प्रकार आरम्भ में उत्पन्न हुआ मनुष्य समाज ने पवित्र वेद वाणी से सम्पन्न होकर अपना जीवन गुजारने का मार्ग पाया। खुली आख या दूरदर्शी व सूक्ष्म यन्त्रो द्वारा देखा जाने वाला ससार, जिसमे अनेक सूर्य, हजारों-लाखो पृथिवियां और करोडो चन्द्रमा हैं, यह सब के सब उसी प्रकार आप ने बनाए, जैसे अनादि काल से लोक लोकान्तरो को आप बनाते चले आ रहे है। हे मेरे पिता ! तेरी महान रचना, चाहे अन्तरिक्ष हो, चाहे प्रत्यक्ष दिखाई देने वाली पृथ्वी के रूप में हो अथवा द्यु लोक की हालतमें हो, यह सब के सब आपकी महत्ता को प्रदर्शित करते हैं।

सरल अर्थ गद्य में, प्रत्येक मन्त्र का पृथक्-पृथक् रूप में :—

(पहले मन्त्र का)

उसी ज्ञानमय तथा सब प्रकार से प्रकाशमान परमात्मा की अनन्त सामर्थ्य से वेद और त्रिगुणात्मक प्रकृति प्रकट हुई। उसकी शक्ति से महा प्रलय तथा सर्वत्र पृथ्वी तथा आकाश में जल उत्पन्न हुआ।

(क्रमशः)

आर्य जगत्

वर्ष ६] रविवार २०२३, १० जुलाई १९६६ [अंक २८

हिन्दी प्रेमियों को चुनौती

सन्त फतह सिंह एक मुख से दो भिन्न २ बातें कहते हैं। एक ओर तो पंजाब के हिन्दु सिखों की एकता की बात करते हैं, कि मैं दोनों की एकता के लिए काम करता रहूंगा। उसी सांस में इस के सर्वथा विपरीत बात कह देते हैं कि पंजाब मे भाषाई अल्पमत कोई है नहीं। सब की भाषा पंजाबी है। हिन्दी किसी की मातृभाषा नहीं है। पंजाब में हिन्दी को वही स्थान मिलेगा जो कि मद्रास आदि मे मिला हुआ है। ऐसी तथा इस प्रकार की और भी कई बातें आये दिन कहते रहते हैं।' पहले तो हमें यही बात ही समझ में नहीं आती कि सन्त जी ऐसे दमगजे किस आधार पर मारते हैं। इस प्रकार बढ चढ कर बातें कहने का उन का आधार तथा अधिकार क्या है? क्या वह पंजाब के मुख्यमन्त्री हैं या राज्यपाल अधिनायक हैं अथवा सम्राट? उन को यह अधिकार किसने दिया है कि वह दूसरो की मातृभाषा का स्वयं निर्णय कर के मानमानी घोषणाएं करते फिरें। केन्द्रीय सरकार की कमजोरी तथा पंजाब की परस्पर फूट के कारण सन्त जी का पंजाबी सूबा का स्वप्न पूरा हो गया है। अब उनका कर्तव्य तो यह था कि वह पंजाब के सारे लोगो में विश्वास पैदा करके इस कुमावे टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए प्रान्त के निर्माण करने में सहयोग देते। विपरीत इसके अभिमान भरी बातें कहकर दमगजे मारते फिरते हैं। भाषा के नाम पर पंजाब जैसे सुन्दर, स्वस्थ तथा सुन्दर प्रान्त के शरीर को कई भागों में काटने के लिए छुरी फेर दी गई। फूट तथा स्वार्थी तत्वों की विजय हो गई। किन्तु अब हिन्दी के बारे में सन्त साहब को ऐसी बेकार धमकियां देना शोभा नहीं देता। उनको अपनी ही सीमा मे रहना चाहिए। आज इस प्रान्त के ग्रामीण जीवन में कितना शराब घर करता जा रहा है। नैतिकता का कितना पतन हो रहा है। मांस की कितनी अधिकता हो रही है। साधारण-सी बात पर एक-दूसरे की हत्या होती है। कचहरियां व जेलों के कमरे वायु का क्या रूख बताते हैं! शृंगार, आचार, विचार, व्यापार तथा परिवारों का संसार कितना बिगड़ता जाता है। इसकी तो चिन्ता नही है। यदि रात दिन जोर दिया जाता है तो इस बात पर कि पंजाबी सूबा मे हिन्दी भाषा सहयोगी भाषा नहीं बन सकती। हिन्दुओं की मातृभाषा हिन्दी नहीं है।

हमारे लिए यह एक चुनौती है। यह प्रश्न राजनीति के विचार को लेकर नहीं है वरन् जीवन का प्रश्न है। इस बात का सन्त जी को किसने अधिकार दिया है कि हमारे परिवारों की मातृभाषा का निर्णय वह करते फिरें। प्रत्येक इस बात को सुन्दरता से जानता है कि उसकी माता कौन है? मेरी मातृभाषा कौन-सी है, यह मैं जानता हूं। मैं जिस भाषा को अपनी मातृभाषा मानता हूं—उसमें दूसरे को हस्तक्षेप करने का हक किसने दिया है। विधान दस साल बाद प्रत्येक को अधिकार देता है कि अपनी मातृभाषा का स्नेह प्रकट करे। कौन है? जो हमारी मातृभाषा को बदल सकता है। १९६१ की जनगणना मे प्रत्येक ने अपनी माता के समान मातृभाषा का भी सम्मान कर के उसे अंकित कराया है। कौन होता है जो मेरी माता व मातृभाषा के सम्मान में हस्ताक्षेप करता है। इसे कदापि सहन नहीं किया जाएगा। हां हम हिन्दी को अपनी मातृभाषा मानने वालों को भी इस प्रांत मे कहना चाहते हैं कि इस चुनौती को भी स्वीकार करना है। इस के लिए भी संगठन, त्याग, साहस तथा सिर मिला कर बैठने की आवश्यकता है। हिन्दी हमारी मातृभाषा है। पंजाबी केवल बोली है। हमने ओज जी युग में भी मातृभाषा से प्यार किया। अब कौन हमारी मातृभाषा का अपमान कर सकता है। हिन्दी प्रेमियो! आप को निर्बल जान कर बार-बार चुनौती दी जा रही है। जागो! स्वार्थ को छोड़ कर संगठित हो कर इस चुनौती का ऐसा उत्तर दो ताकि सन्त जी के दमगजे हवा में ही रह जायें।

—त्रिलोकचन्द

बधाई ही बधाई

आर्य समाज अन्य आवश्यक कार्यों के साथ-साथ अविद्या के नाश और विद्या की वृद्धि के पवित्र काम मे भी लगा हुआ है। दयानन्द कालेज कमेटी की देख-रेख में कितने बड़े-बड़े कालेज और स्कूलो का विशाल जाल बिछा हुआ है। जिन में बहुत बड़ी संख्या मे विद्यार्थी प्रतिवर्ष परीक्षाएं देते है। इन शिक्षण संस्थानो की अपनी विशेष, शानदार परम्परा है।

इस बार भी पंजाब के विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में भी हमारे स्कूलों व कालजों ने परिणाम में कमाल कर दिया है। डी० ए० वी० कालेज जालन्धर ने कमाल कर दिया। इसके विद्यार्थी बी० ए० हो या बी.एस.सी हो, एम० ए० हो या प्री० इंजीनियरिंग परीक्षा हो—नाना प्रकार के विषयो में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। यही बात हंसराज महिला कालेज जालन्धर डी.ए.वी. कालेज अमृतसर, साईदास एंग्लो वैदिक हायर सैकन्डरी स्कूल जालन्धर के बारे में है। इन सब ने शानदार परिणाम दिखाये है। यही परम्परा हमारी अन्य संस्थाओ की है। इस शानदार व गौरवभरी परम्परा के लिए हम माननीय प्रिंसिपल भीमसेन जी बहल डी. ए. वी. कालेज जालन्धर, प्रिंसिपल विद्यावती जी आनन्द हंस राज महिला कालेज जालन्धर, प्रिंसिपल चमनलाल जी आरोड़ा डी. ए. वी. कालेज अमृतसर, प्रिंसिपल प्यारेलाल जी बेरी साईदास ए. एस. स्कूल जालन्धर व स्टाफ एवम अन्य कालेज स्कूलो के मान्य आचार्यों को बहुत २ बधाई देते हैं। यह शानदार परम्परा इन संस्थाओं के अध्यापन, प्रबन्ध तथा साधना को प्रकट करती है।

दो तमाशे

आर्य समाज के गम्भीर लेखक व वक्ता मान्य प्रो० सत्यदेव जी विद्यालंकार एम. ए. जालन्धर ने आर्य-जगत के गत महात्मा देवीचन्द स्मृति विशेषांक में जिन दो तमाशो की चर्चा की है। उस से सारे आर्य समाज की आंखें खुल जानी चाहिए। पानी पर तैरने की घोषणा करके भारत के बड़े २ नेताओ के पास पहुंचने वाले हठयोगी तथा जालन्धर ब्रह्मकुमारियों के अधिवेशन में सूर्य के प्रकाश में आज के पढ़े लिखे युग में दिये गये विचारों के तमाशो की ओर कितना आवश्यक ध्यान दिलाया है। जनता की स्थिति क्या है? आज भी कितना खुला पाखण्ड पनपता जाता है। सब सुनते देखते हैं पर मौन हैं? क्या आर्यसमाज की आखों के सामने यह सारा कुछ होता रहेगा। कितना प्रबल प्रवाह है इस पाखण्ड का? इसे रोकने का कौन प्रयास करेगा? आर्यसमाज को इस पर विचार करके इस प्रकार के पाखण्डो का प्रतिकार करने के लिए विशेष काम करना होगा। आराम से बैठने से अब काम नही चलेगा।—स०

समाजके नये पुरोहित

आर्यसमाज विक्रमपुरा जालन्धर यहा केन्द्र का आर्य प्रादेशिक सभा से सम्बन्धित शानदार समाज है। नया तथा सुन्दर भवन है। अब समाज के मान्य अधिकारियों ने अपने समाज मे श्री प० भीमसिंह जी शास्त्री को पुरोहित के पवित्र कार्य पर लगा कर समाज की इस कमी को पूर्ण कर दिया है। श्री प० भीमसिह जी शास्त्री दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय के योग्य स्नातक युवक हैं। उनके समाज में आ जाने से समाज का सत्संग तो चलेगा ही, वहा नगर के अपने परिवारो मे वैदिक संस्कारों को करने का भी प्रचार होगा। मान्य समाज के अधिकारियो को बधाई हो कि योग्य स्थान पर योग्य विद्वान आ गये।—स०

श्री स्व० ला० शंकरदास जी की स्मृति में

आर्यसमाज के स्वर्गीय नेता श्री ला० शंकरदास जी त्रेहन जालन्धर की पुण्य स्मृति मे उनके सुपुत्र ला० ज्ञानचन्द जी त्रेहन अपने परिवार मे यजुर्वेद का पारायण यज्ञ अपने निवास स्थान २६५, लाजपतराय नगर मे करवा रहे हैं। सोमवार प्रात: ८ से ९ बजे तक उनकी बनाई हुई यज्ञशाला मे श्रद्धा पूर्वक यज्ञ हो रहा है। परिवार के छोटे बड़े तथा समय २ बाहर के सज्जन भी सम्मिलित होते है। रविवार १० तारीख को प्रात: समारोह के साथ पूर्णाहुति डाली जाएगी सब सज्जनो से प्रार्थना है कि ठीक समय पर पूर्णाहुति के समय दर्शन दे।

केरल में आर्यसमाज का प्रचार

(ले० श्री राजेन्द्र जी एम. ए., जिज्ञासु शोलापुर)

आर्यसमाज ने केरल में वैदिक धर्म के प्रचार के पुनीत कार्य के लिए कई बार प्रयत्न किए। आर्यसमाज केरल में क्यों विराट रूप धारण न कर सका इस का कारण आर्य नेताओं की भूलें हैं न कि केरलीय जनता। जब अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने दलित वर्ग के जन अधिकारों के लिए वाईकम में सत्याग्रह का नेतृत्व किया तो केरलीय जनता ही नहीं अपितु सारा दक्षिण उस शूर प्रतापी संन्यासी के अदम्य उत्साह और आर्यों की धर्म धुन पर मोहित हो गया। खेद है कि आर्य समाज ने स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के प्रति दक्षिण भारत के लोगों की श्रद्धा का लाभ उठाकर केरल मद्रास व मैसूर आदि में वैदिक धर्म के प्रचार की ठोस योजना न बनाई। दक्षिण में राष्ट्रवीर ला० लाजपतराय जी ने भी ऋषि सन्देश सुनाने के लिए भ्रमण किया। जनता में उनके प्रति भी श्रद्धा है। आर्यसमाज की ओर लोग आकृष्ट हुए पर हम ही ऐसे कर्त्तव्य विमूढ सिद्ध हुए कि आर्यसमाज के संगठन का वहां विस्तार न कर पाए।

जब मालाबार में हिन्दू लूटे पीटे व मारे गये तो दीन दुखी के त्राण महात्मा हंसराज तड़प उठे। स्वामी श्रद्धानन्दजी व महात्मा जी ने संकट की इस वेला में सीना तान कर पीड़ितों की सेवा का संकल्प किया। देव दयानन्द के दीवाने ससार को चकित करते हुए अग्नि में कूद पड़े। पंजाब के आर्य वीर दूर दक्षिण में जा पहुंचे। अपनी सेवा व सदाचार से आर्यों ने जनता के हृदय को जीत लिया। आर्य प्रादेशिक सभा ने तब केरल में जो कार्य किया वह इतिहास में बड़ा महत्व रखता है।

आर्य प्रादेशिक सभा ने कालीकट में सुन्दर समाज मन्दिर का निर्माण कराया। कालीकट के क्षेत्र में मुसलिम लीग का सगठन राष्ट्रीय हितों को एक खुली चुनौती रहा है। प्रादेशिक सभा ने इस क्षेत्र में प्रचार का प्रबन्ध किया है।

१९६४ के फरवरी मास में दयानद ब्राह्म महाविद्यालय हिसार से विदाई पाकर श्री नरेन्द्र भूषण जी ने केरल में वैदिक धर्म का सन्देश सुनाने का सकल्प किया। आपने सारे प्रात का भ्रमण कर के वहा की स्थिति का अध्ययन करके अपने अनुकूल व प्रतिकूल सब तत्वों को देखकर कार्य की योजना बनाई। किसी सभा से तो कोई सहयोग अब तक मिला नहीं आगे की भगवान जाने। आर्य जनता के सहयोग से यह युवक आर्य समाज को केरल में फैलाने में सफल हो रहा है। केरल में आर्य समाज के पांव टिक गये हैं। आशा करनी चाहिए कि अगले पांच वर्षों में वहां आर्य समाज एक जीती जागती शक्ति बन जाएगा।

इस वर्ष केरल में आर्यसमाज का जो शिविर नरेन्द्र जी ने आयोजित किया उसमें सारे प्रदेश के विभिन्न भागों से प्रतिनिधि पधारे। इनमें प्राध्यापक, सस्कृतज्ञ, साधु, सुशिक्षित युवक आदि थे। केरल के सब भागों के लोगों को ओ३म् ध्वज के नीचे इकट्ठे करने का यह पहला प्रयास है। नरेन्द्र जी कई नई समाजें स्थापित कर चुके हैं। कई युवक समाजें वहां चल रही हैं। केरल से हमारा मासिक त्रिभाषी पत्र आर्य भारती सफलता पूर्वक चल रहा है। वैदिक धर्म के प्रसार के लिए दक्षिण में यह पत्र अत्यन्त उपयोगी कार्य कर रहा है। केरल की क्षेत्रीय भाषा मलयालम में वैदिक सिद्धांतों पर कई ट्रैक्ट छप चुके हैं।

सहस्रों विधर्मी वैदिक धर्म में प्रवेश पा चुके हैं।

केरल में आर्यसमाज के प्रचार से राष्ट्रीय भावनाओं को बल मिलना स्वाभाविक ही है। केरल में हिन्दी के कई कालेज हैं। हिन्दी पाठशालाएं स्थान-स्थान पर मैंने देखी। दक्षिण के लोग संस्कृत निष्ठ हिन्दी ही समझ सकते हैं। सिनेमा की फारसी उर्दू से बोझिल हिन्दी ही दक्षिण में हिन्दी के प्रचार में सहायक है। दक्षिण की भाषाएं बहुत संस्कृत निष्ठ हैं। हिन्दी में दक्षिण की भाषाओं के शब्द अपनाने से उत्तर व दक्षिण में प्रेम बढ़ेगा। राष्ट्रियता की भावना प्रबल होगी। सत्य असत्य, जीवन मरण, जल, देव, गुरु, विप्लव, दृढ़ विश्वास, निश्चय, मातृभूमि, सहोद्री आदि शब्द मलयालम में भी हैं इससे पता चलता है कि दक्षिण की भाषाएं हिन्दी से दूर नहीं।

माताओं से

(श्रीमती विजय लक्ष्मी एम०ए०, अलीगढ़)

हे माताओ! सच्चे अर्थो में तुम मातायें कहलाती हो।
गा गाकर सच्चे वीर गान, पुत्रों को वीर बनाती हो॥
भूल गई उन माताओं को, प्रताप जैसा वीर बनाया,
धर्म प्रेमी गोबिन्द गुरू ने, मुगलों से निज धर्म बचाया।
दोनों बालों ने धर्मके कारण बलि वेदी पर शीश चढ़ाया,
देख आधुनिक दशा हमारी बार-बार यह ध्यान में आया।
सुप्त केसरी पुत्रो को, क्यों न आज जगाती हो॥१॥

मातायें हैं धन्य वही, जिनको स्वदेश पर मरते देखा,
शोक न करके मृतक शिशु का, उत्साहित करते देखा।
स्वाभिमान का तृतीय पुत्र को, पाठ पढ़ाते ही देखा,
कर में दे तलवार युद्ध हित, भुजा पूजते ही देखा।
धन्य तुम्ही माताओं जो ऐसे वीर बनाती हो॥२॥

गा गा कर गाने गन्दे का, मोर्चा, पर, करना छोड़ो,
काम अश्व पर चढ़े हुवे की, कामवासना को मोड़ो।
प्रेमपाश में बंधे हुओ की, रज्जू मार काट कर तोड़ो,
छिन्न-भिन्न उन्हीं तारों में, वीरत्व तार का तुम जोड़ो।
मोह स्वप्न में सुप्त सुतों को, क्यों न आज जगाती हो॥३॥

माताओ आ गया समय अब, केसरिया बाना पहिनाओ,
देश पताका खतरे में है, पथ उन्नति का बतलाओ।
पुत्र आप के वीर बनें, नित ऐसे ही गाने गाओ,
गान गान में यह तान रहे, देश की खातिर मर जाओ।
वीर भूमि भारत को अब, बलि भूमि क्यों न बनाती हो।४

तब और अब

(पृष्ठ ५ का शेष)

'तुम क्या उसे मिटा सकते हो?'

'शायद पर तुम बताओ तो सही।'

'बात! और कुछ नहीं, मेरा एक भाई पैदा हो गया है।'

तो इसमें रोने की क्या बात है? यह तो खुशी का समाचार है।

बालक क्रोधित दृष्टि से देखते हुए बोला' तुम्हारे लिए हो तो खुशी की बात हैं पर मेरे लिए तो रोने की। क्योंकि इससे मुझे बहुत हानि होगी।

'भाई से हानि?'

'हां भैया से हानि।'

'कैसे?'

'नहीं मानते तो सुनो अब तक पिताजी की सम्पत्ति पर मेरा ही एकाधिपत्य था और अब उसमें भाग लेने वाला आ गया।'

वाह रे भ्रातृ-प्रेम

आवश्यकता

आर्य समाज लक्ष्मणसर, अमृतसर को एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है सस्कार, व्याख्यान, धर्म कथा आदि करने में निपुणता रखता हो। निवास समाज मंदिर में रहेगा। निम्न पते पर प्रार्थना पत्र भेजें। युगल किशोर उपमंत्री आर्य समाज लक्ष्मणसर अमृतसर।

डी.ए.वी. हायर सैकण्डरी स्कूल कादियां का शानदार नतीजा

डी० ए० वी० हायर सैकंडरी स्कूल कादिया का हायर सैकंडरी भाग प्रथम (कांर) का परिणाम गत वर्ष की तरह बड़ा शानदार रहा है। नतीजा ८०% रहा है। इलाका भर मे किसी भी स्कूल का नतीजा इतना शानदार नहीं निकला इस समस्त सफलता का श्रेय स्कूल के मान्य प्रिंसिपल श्री प्रतापसिंह जी ठुकराल तथा उनके योग्य स्टाफ को है।

—रोशन लाल

आर्यसमाज माडल टाऊन

गुड़गाम्वां का चुनाव २६-६-६६ को निम्न प्रकार से हुआ। प्रधान—चौ० बालूराम जी, उपप्रधान—चौ० नवनीत रामजी, फतेहचंदजी, महामंत्री—श्री त्रिलोकनाथ जी, मंत्री—श्री महेश्वर दयाल लूथड़ा, उपमंत्री—श्री सुभाषचन्द्रजी, कोषाध्यक्ष—मास्टर होतूराम जी, लेखानिरीक्षक—श्री कृष्णबलदेव जी, लायबरेरियन व स्टोर कीपर पं० तीर्थरामजी सहायक—श्री अमृतलालजी

महेश्वरदयाल लूथड़ा
मंत्री—आर्यसमाज

भारतवर्ष बहुत विस्तृत, विशाल और प्राचीन देश है। इसका इतिहास भी विश्व के लिए आदर्श - दीपस्तम्भ रहा है। रामायण और महाभारत का यहां महत्वपूर्ण सम्मान है। लाखों वर्ष के बीत जाने पर भी भारत की जनता राम को न भूल पाई। वह नित्य श्रद्धा और विश्वासपूर्वक रामायण का पाठ करती है। प्रतिवर्ष रामलीलाओं का आयोजन करती है। किन्तु कोरे गुणगान से कार्य पूरा हो जाएगा ? हम अपना उत्तरदायित्व इतने से ही पूरा निभा सकेंगे? इत्यादि जलते प्रश्न प्रत्येक भारतीय के हृदय में उथल-पुथल मचा रहे हैं। आइये इस अवसर पर हम आत्म - निरीक्षण करें। आइये कि तब और अब में कितना परिवर्तन हो गया है। लीजिये तीन चित्र उपस्थित है;—

(१)

विशाल राजमहल का एक भाग। अनेक दास-दासियां शीघ्रता से इधर-उधर आ जा रहे हैं। सबके मुख म्लान हैं, महल के प्रकोष्ठ में एक ओर राजा दु:खद अवस्था में पड़े हैं और सामने राम खड़े हैं।

'बेटा! मान जाओ। इस हत्यारे पिता को कैद कर लो और अयोध्या का राज्य करो न्याय तुम्हारे साथ है, धर्म तुम्हारे साथ है, प्रजा तुम्हारे पक्ष में है।' राजा ने कहा—

'ठीक है पिताजी! पर मैं तो पिता के बचनों को सत्य सिद्ध करने के लिए ही बन में जा रहा हूं। इस धर्म कार्य में मुझे रोककर अपयश के भागी न बनिये।' राम ने उत्तर दिया।

राजमार्ग पर लाखों की संख्या में जनता खड़ी है। एक ओर रथ पर राम अनुज के और प्रिय पत्नी के साथ आरूढ़ होने जा रहे है, पर रास्ता अवरुद्ध है। जनता अपने प्रिय युवराज को जाने नहीं देना चाहती। परन्तु राम महाकवि तुलसी के शब्दों में :—

'राजीव लोचन राम चले तजि,
बाप को राज बटोऊ की नाईं।'

★

आधुनिक न्यायालय का एक भाग सैकड़ों स्त्री - पुरुष आ जा रहे हैं। सामने दो वकील और कुछ पुरुष खड़े हैं। एक कमरे में न्यायाधीश अपने सहकारियों के साथ विराजमान हैं। मुकद्दमे की सुनवाई हो रही है।

'क्या ये तुम्हारे पिता हैं?'

'जी हुजूर!'

'तो जिस समय इन्होंने तुम्हारे भाई के नाम सारी जयदाद लिखी उस समय ये दिल और दिमाग से दुरुस्त नहीं थे।'

'जी सरकार।'

'तुम यह सिद्ध कर सकते हो?'

'जी, और शिक्षित पुत्र पिता को पागल सिद्ध करने में लग गया।

रामायण के बोलते पृष्ठ :—

तब और अब

(आचार्य मित्रसेन जी एम० ए० शास्त्री, अलीगढ़)



(२)

पर्वतीय प्रदेश, चारों ओर सुरम्य वातावरण। पेड़-पौधे फल-फूलों से लदे खड़े है। एक ओर प्रकृति को अनुपम झरना कल-कल ध्वनि से वन को गुंजाता हुआ चला जा रहा है। मानों कह रहा हो अपने उद्देश्य पथ पर विघ्न बाधाओं को चिन्ता न करते हुए बढते चलो। तो दूसरी ओर मुनिजनों के आश्रम से निकलता हुआ यज्ञधूम उन्नति की प्रेरणा देते हुए ऊपर की ओर जा रहा था, स्वच्छ स्फटिक शिलायें यत्र तत्र बिखरी पड़ी हैं। उन्ही में से एक पर भगवान राम अनुज सहित विराजमान हैं तो दूसरी पर मन्त्रिमण्डल सहित सुग्रीव।

'एक देवी रोती कलपती आकाश मार्ग से लेजाई जा रही थी, सम्भवत: वही माता सीता हो।' बानरराज सुग्रीव ने शान्तिभंग करते हुए कहा।

'हो सकता है आपका अनुमान यथार्थ हो। परन्तु केवल अनुमान से ही महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध नहीं हो सकते। सन्देह निवारण के लिए कोई न कोई ठोस प्रमाण होने चाहिये।' राम ने कहा।

'आपने बात युक्तियुक्त पूर्ण, कही है। परन्तु कुछ स्मरण सा करते हुए सुग्रीव ने कहा। 'शायद उस विमान से एक छोटी पोटली डाली गई थी जो हमें प्राप्त हो गई है।' बीच में ही पवनसुत बोले।

'आपने उचित समय पर स्मरण दिलाया। लाओ जल्दी लाओ।' वानरराज ने कहा।

'हनुमान ने एक छोटी-सी पोटली लाकर राम को दी। किन्तु शोकाकुल राम उसके आभूषण न पहिचान सके। उन्होंने उसे लक्ष्मण को देते हुए पहिचानने को कहा। लक्ष्मण ने बहुत सावधानी पूर्वक एक एक कर सभी अलंकारों की परीक्षा की किन्तु वे भी न पहिचान पाये कि अचानक नीचे नूपुर दिखाई पड़े। नूपुरो को देखकर उन्हें अपार हर्ष हुआ वे महाकवि बाल्मीक के शब्दों कह उठे—

नाह जानामि केयूरे
नाह जानामि कुण्डले।
नूपुरे त्वहं जानामि
नित्य पदामि वन्दनात्॥

अर्थात् भो भ्रात' न तो मैं केयूरों को ही जानता हूं और न कुण्डलो को ही, किन्तु इन नूपुरों को भली भांति पहिचानता हूं कि ये माता सीता के ही हैं। क्योंकि मै इन्हे नित्य प्रात: उनके चरण स्पर्श के समय देखा करता था।

★

अच्छा सा बंगला, फिल्मी अभिनेत्रियों के चित्रों से सुसज्जित ड्राइंग-रूम। एक ओर रेडियो से सुरीला गाना सुनाई पड़ रहा है। कुर्सी पर एक युवक सफेद कमीज, पैण्ट पहिने बैठा है। दूसरी ओर पूर्ण श्रृंगार किये हुए शिक्षिता नारी। दोनो चाय पी रहे हैं।

'देखो भाभी! हमे नाहक परेशान करने से आपको कोई लाभ तो हो नही रहा, हम तो वैसे ही आपके तीरे नजर से घायल हैं।' पुरुष कह रहा था। तभी रेडियो गा उठा तुम्ही ने दर्द...

'देखो जी! यह बात ठीक नही। किसी भले घर की स्त्री को सताना अच्छा नहीं और फिर मैं तो तुम्हारी भाभी हूं।' कुछ कृत्रिम क्रोध से और तिरछी नजर से देखते हुए स्त्री ने कहा।

'हां हां ठीक ही तो है, मैं कब कहता हूं कि तुम भाभी नही। पर यह भी जान लो कि भाभी और भाभी आधी...' निर्लज्जता की हंसी के बीच पुरुष ने कहा।

'बडे नटखट हो।'

'अच्छा नाराज न होओ, चलो पिक्चर चलते हैं। एक पन्थ दो काज, भैया को भी पता न चलेगा और अपना भी काम बन जायगा।' चाय समाप्त कर प्याला रख युवक खडा हो गया। युवक को खडे देखकर महिला भी खड़ी हो गई। बाहर शोफर से कार निकलवा कर पीछे की सीट पर दोनों बैठ गये। शीशो के पर्दे गिरा दिये गये। थोडी दूर जाने पर एक हल्का सा चीत्कार सुनाई पडा और—

वाह रे भाभी देवर का पवित्र सम्बन्ध

★

(३)

सायंकाल का समय। युद्ध का मैदान, चारो ओर मौत का सन्नाटा। कही कटे हाथ पडे हैं तो कही धड और कहीं सर। गिद्ध, चील, सियार, कुत्ते आदि मृत शवो को नोंच-नोंच कर खा रहे हैं। एक ओर विशाल भीड एकत्रित है। सभी के मुखों पर शोक के चिन्ह। मध्य में कृष्णकाय किन्तु सुन्दर एक युवक बैठा है। उसके घुटनो पर गौरवर्ण युवक लेटा है।

'हाय! अब मैं माता को क्या उत्तर दूंगा? जब अयोध्या की जनता मुझ से पूछेगी कि तीन प्राण गये थे अकेले लौटे हो तो मैं क्या कहूंगा? अरे! आज तक रघुकुल सत्य पर दृढ रहा पर उसी कुल में उत्पन्न तुमने कैसे छोड दिया? तुम तो कहते थे कि लंका विजय करके सीता के साथ अयोध्या जाएंगे, कहा गये तुम्हारे वे बचन? तुम्हारे बिना मैं कैसे जीवित रहूंगा? जो गति अनुज की हुई वही अग्रज की हो।' राम के इन शोकातुर वाक्यो को सुन छाती फटने लगी। और ठीक भी है :—

दुनिया मे सब चीज पैदा.
पैदा न मां का लाल है।

★

दिल्ली का सीताराम बाजार, किसी विचार में मग्न आगे बढ़ा जा रहा था कि एक पन्द्रह वर्षीय बालक को रोते देख रुक गया। पूछा 'क्यों बेटा! क्यों रो रहे हो?'

पुन: प्रश्न किया।

'बात ही ऐसी हो गई है।' थोडी देर बाद उत्तर मिला।

'क्या बात हो गई है?'

(शेष पृष्ठ ४ पर)

स्वास्थ्य स्तम्भ—

आसनों द्वारा व्यायाम पद्धति

शरीर को हृष्ट पुष्ट बनाने के लिए आसनो का व्यायाम अति उपयोगी है इस के ऊपर आर्य जगत के पिछले दो तीन अंकों में आसनो का वर्णन किया गया है। 'आसन' धर्म कृत्यों संध्योपासन आदि सब कार्यो मे सर्वप्रथम स्थान रखते हैं। आसन लगाये बिना कोई भी धर्म कृत्य सफल नही होता साधारण से साधारण कार्य मे भी आसनों की आवश्यकता पड़तीहै।

आसनों का महत्व

आसनो का महत्व उतना ही है कि जितना आरोग्य का महत्व है। आरोग्य के साथ आसनो के व्यायामो का घनिष्ठ सम्बन्ध है। शरीर के सब आतरिक अवयवों और अगो तथा नस नाडियो का ठीक ठीक ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात प्राचीन काल के ऋषि मुनि और योगियों ने इस आसन पद्धति की सिद्धता की है। ऋषिकाल से इस समय तक जिन्होने आसनो का अभ्यास किया है, उनको आसनों से आरोग्य प्राप्ति का अनुभव हुआ है। यह बात केवल श्रद्धा अथवा अंध विश्वास से ही मानने की नही है। इस समय मे भी सहस्रो की सख्या मे अनेक लोगों ने इस आसन पद्धति के व्यायाम से अपूर्व लाभ उठाया है। आप भी केवल तर्क न कीजिये। परन्तु स्वंय अनुभव कीजिए।

जहां स्वय एक दो मास के अदर ही अनुभव आ सकता है, वहा तर्क का और दलीलो का काम ही क्या है? अनेक असाध्य बीमारिया इस पद्धति के आसनो के व्यायाम से दूर गई हो हैं। औषधि के सेवन की आवश्यकता नही है, इस मे व्यय कुछ भी नहीं है। केवल प्रतिदिन १५ अथवा २० मिनिट कोई आसन आप करते जाइये, आपको आठ दस दिनो के अंदर ही इससे आरोग्य का अनुभव नि:सदेह हो जायगा।

कई लोग ख्याल करते हैं कि आसन करने में बड़ी कठिनता होती है। परन्तु यह वास्तविकता नहीं है। आसनों का अभ्यास बडा सुगम है। आप जितना सुगम चाहते हैं उससे भी सुगम है। इसीलिये इस अभ्यास से इस समय भी ७० और ७५ वर्ष के वृद्ध पुरुष लाभ उठा रहे हैं।

जो आसन ७५ वर्ष के वृद्ध कर सकते है वे आसन उससे कम आयु वाले नि:सदेह कर सकते है। छः वर्षों से लेकर ७५ वर्ष तक की आयु वाले इस पद्धति से इस समय लाभ उठा रहे हैं। बाल, तरुण, वृद्ध, निर्बल, बलवान, रोगी, नीरोग, आदि सबो को इस पद्धति से लाभ हुए हैं। इस लिये यह प्रत्यक्ष अनुभव होने के कारण ही हम कह सकते हैं कि, इस से सब को नि:संदेह लाभ होगा।

स्त्रियो को प्रसूति के बहुत कष्ट होते हैं। चारों ओर आज कल ये कष्ट बढ रहे हैं। इसका एक मात्र उपाय आसनो का अभ्यास ही है। अनेक स्त्रियो ने इसका अनुभव किया है, जिस से यह निश्चय पूर्वक और बलपूर्वक कहा जाता है कि जो स्त्रियां नियम पूर्वक आसनो का व्यायाम करेंगी और विशेषत: गर्भवती होने पर करने योग्य आसन करती जायगी, तो उनको प्रसूति के कष्ट कदापि नही होगे!

इस प्रकार यह आसनो का व्यायाम स्त्रियों और पुरुषों के लिये लाभकारी है।

आज हम शीर्षासन का संक्षेप से वर्णन करेंगे। यह सब आसनो का राजा है। यह मस्तिष्क सम्बन्धी समस्त रोगों एव ज्ञान इन्द्रियों की दुर्बलता को दूर करता है।

लाभ :— वीर्य की ऊर्ध्व गति करके समस्त वीर्य रोगो को दूर करता है। बालो को समय से पूर्व सफेद होने से रोकता है। चेहरे पर पड़ी झुरियों, हर प्रकार के दाग, कील, छाइया आदि को दूर करके चेहरे को सुन्दर तथा योल और कांति युक्त बनाता है। इस के अभ्यास से रक्तगति, श्वास संस्थान तथा समस्त बाल संस्थान, एवं पाचन संस्थान को बल प्राप्त होता है एवं विशेष शक्ति को उत्साह प्राप्त होता है। संसार में यह आसन शरीर के सब अवयवों के लिए गुणकारी है इसीलिए इसे आसनों का राजा कहा गया है।

करने की विधि :— प्रात: काल सूर्योदय से पूर्व शौचादि से निवृत्त होकर एकांत शांत और शुद्ध स्थान पर नरम आसन बिछा कर भूमि पर दोनो हथेलिया रख उन पर सिर रख दें और धीरे-धीरे हाथो एव वस्तुओ के सहारे टागे ऊपर ले जाकर सीधी कर दे। यह ध्यान रहे कि सिर पर जितना कम से कम भार पड़े उतना ही अच्छा रहेगा। सारी प्रक्रिया साथ के चित्र में देखें।

सावधानी :— यह आसन शुरू मे बहुत थोड़े समय तक ही करना चाहिए। दो-चार सैकिंड से बढाकर धीरे-धीरे शक्ति और सुविधा अनुसार दो-चार मिनट तक करें।

जिन को रक्त चाप रोग हो, आखो में कुकरे व अन्य रोग हो, पेट बहुत खराब हो, वे इस आसन को न करें।

नोट :—आसनों के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त करनी हो तो वैद्य राम सिंह जी लिखित आरोग्य प्रकाश पुस्तक का अध्ययन करें। आप ने अपने जीवन में आसनों का अभ्यास करने के पश्चात अनुभव पूर्ण आसनों का वर्णन किया है। मूल्य २ रुपए ५० पैसे आरोग्य मन्दिर (रजिस्टर्ड) यमुना नगर से मिल सकती है।

डी०ए०वी० कालेज जालन्धर का शानदार परीक्षा परिणाम

डी०ए०वी० कालेज जालन्धर प्रतिवर्ष ही विश्वविद्यालय की परीक्षाओ के परिणामों में अपनी शानदार परम्परा को उत्तमता से स्थिर किए हुए है। यह हमारे लिए बड़े ही गौरव की बात है। इसके लिए कालेज के मान्य प्रिंसिपल श्री भीमसेन जी बहल को विशेष बधाई हो। उनके योग्य नेतृत्व मे उनके स्टाफ के परिश्रम से इस वर्ष भी परीक्षा परिणाम कमाल का है। नीचे कालेज परिणाम का भाग दिया जाता है—

प्री मैडिकल— परीक्षा मे इस वर्ष इस कालेज के छात्रों सुभाषचन्द्र कुमाटी, रजनीश प्रताप चौधरी ने क्रमश: तीसरा और चौथा स्थान प्राप्त किया है। इसी प्रकार रविदत्त, कृष्ण बहादुर तथा सुभाषचन्द्र ने छठा और सातवां स्थान लिया है। विश्वविद्यालय के प्रथम आठ स्थानो मे कालेज को पहले पांच स्थान प्राप्त हुए हैं। कुल मिलाकर इस कालेज ने मैरिट लिस्ट में आठ स्थान लिए हैं। ३४ छात्रों की फर्स्ट डिविजन तथा ७० प्रतिशत परिणाम है।

प्री इंजनीरिंग— की परीक्षा में इस कालेज का छात्र हरजीतसिंह यूनिवर्सिटी में सैकण्ड रहा है। इसी प्रकार हरीशकुमार डोगरा, सदाराम, रेवतीरमण मलहोत्रा और रमेशचन्द्र महाजन ने तीसरी, छटी और नौवीं पोजीशन प्राप्त की है। विश्वविद्यालय की पहली २० पोजीशनों में दस इस कालेज के विद्यार्थियों ने प्राप्त की हैं। ९५ छात्रों की फस्ट क्लास आई हैं। परिणाम ७६ प्रतिशत रहा है।

एम. ए. संस्कृत— में इस कालेज का विद्यार्थी ओमप्रकाश शर्मा पंजाब भर मे प्रथम आया है। कुमारी राजकुमारी तृतीय आई। यूनिवर्सिटी मे १८ फस्ट क्लास लेने वाले छात्रो में से दस इसी कालेज के हैं।

एम. ए. पोलिटिकल सायंस— मे इस कालेज की कुमारी उमा कपूर और विजयकुमार राणा यूनिवर्सिटी भर मे सैकण्ड रहे। कुमारी गुरदेवकौर मान थर्ड और कवीन्द्रकुमार ने पांचवीं पोजीशन प्राप्त की है। यूनिवर्सिटी भर मे तीन फर्स्ट क्लास लेने वाले विद्यार्थियों मे से दो विद्यार्थी इस कालेज के हैं। परिणाम शत प्रतिशत है। बहुत-बहुत बधाई।

आर्यसमाज मन्दिर, हांसी का चुनाव २१-६-६६ को सम्पन्न हुआ

प्रधान—श्री कृष्ण कुमार आर्य, उपप्रधान—श्री प्रेमप्रकाश आर्य, सह-प्रधान—श्री कपूर चन्द, मन्त्री—श्री रमेश कुमार, उप-मन्त्री—श्री सदानन्द, प्रचार-मन्त्री—श्री सोहनलाल, श्री अशोक कुमार, खजांची—वेदप्रकाश पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री हरिकिशन, क्रीडाध्यक्ष—श्री राजकुमार, संरक्षक—श्री चेतन प्रकाश।

रविदत्त शास्त्री
पुरोहित आर्य समाज मन्दिर
हांसी (हिसार)

प्रा० मधोक का नया वक्तव्य आर्य समाज को मुंह चिड़ाना है

(श्री ज्ञानी पिंडीदास जी प्रधान पंजाब हिन्दु महा सभा अमृतसर)

भारतीय जनसंघ के १३ वें जालन्धर अधिवेशन के अध्यक्षीय भाषण में प्रा० बलराज मधोक ने निम्न शब्द लिखे थे—

'स्थिति को फिर से सामान्य बनाने और अकाली अथवा आर्य समाज के उग्रवादी तत्वों द्वारा स्थिति को और खराब करनेसे बचाने के लिए यह अति आवश्यक है।'

उक्त शब्द यह दर्शाने के लिए लिखे गये प्रतीत होते हैं कि पंजाबी सूबा विरोधी आन्दोलन में जो दुर्घटनाए घटीं उनका दायित्व जनसंघ पर नहीं अपितु आर्य समाज पर है, और यदि भारत सरकार ने वह आश्वासन पूरे न किये जो जनसंघ के एक नेता को अलहदगी में दिये गये थे तो आर्य समाज के उग्रवादी तत्व फिर से स्थिति को बिगाड़ देंगे जैसे अकालियो के फसादी तत्व सदा बिगाडते रहते है।

परमात्मा का धन्यवाद है कि लगभग दो महीने बाद प्रा० महोदय की कुम्भकरणी निद्रा अकस्मात् भंग हो गई और आपने एक वक्तव्य में अपने बाकायदा आर्य समाजी होने का दावा करते हुए समस्त विरोधियो को कांग्रेसी विचारों का होने का उपालम्भ दिया है।

प्रा० महोदय को भली भान्ति विदित होगा कि उनके आर्य समाज विरोधी रीमार्क्स के विरुद्ध सर्वप्रथम मैंने ही उर्दू हिन्दी पत्रो मे एक लेख 'आत्म अविस्मृति आत्मघात है' प्रकाशित कराया था और अपना नाम सैक्यूलर वादी कांग्रेसी अथवा जनसंघियो मे गिनाना मैं उनकी ही बड़ी गाली समझता हू जितनी बड़ी कि शायद प्रो० समझेंगे यदि कोई उन्हे मुसलमान होने का उपालम्भ दे।

शोक ! महाशोक कि हिन्दू समाज अथवा आर्यसमाज में वह सगठन और उस से उत्पन्न होने वाली अथाह शक्ति नहीं है अन्यथा वीर यज्ञदत्त जैसे देव-स्वभाव, कर्त्तव्य निष्ठ विद्वान उच्चकोटि के वक्ता, चरित्रवान युवक नेता को पहले तो मरण व्रत की कड़ी परीक्षा में डाल कर और अपनी अदूर दर्शिता और जल्दबाजी के कारण उनका मरण व्रत अभीष्ट सिद्धि से पूर्व ही तुड़वा कर उन्हे 'मास्टर तारासिंह द्वितीय' के रूप में जनता के समक्ष प्रस्तुत होने पर बाध्य करने वाला भारतीय जनसंघ का हाईकमान आज उसी तरह किसी 'लगर में जनता के जूठे बर्तन मांजने अथवा कहीं संगत के जोड़े झाड़ने' पर लगा दिया गया होता।

कुछ भाई प्रसन्न हो जायेंगे यदि प्रा० मधोक अपने शब्द वापस ले ले मगर मेरी तुच्छ सम्मति में अपने प्रेरणा स्रोत महर्षि दयानन्द (जैसा कि प्रा० महोदय ने नये वक्तव्य में स्वीकार किया है) के स्मारक रूप आर्यसमाज के विरुद्ध साहस करने वालों का शब्द वापस लेना ही पर्याप्त दण्ड नहीं। इस प्रकार के उद्दण्ड चुनाव बाजी की सौ तभी समझ आ सकती है कि लोक-सभा की सदस्यता रूपिणी जिस लैला के प्रेम मे अन्धे होकर अपने प्रेरणा स्रोत के साथ विश्वास घात किया गया है उत्कट इच्छा होने पर भी उन्हे उस प्रेयसी (सदस्यता की कुर्सी) तक न पहुचने दिया जाए। ऐसे मजनुओ के स्वास्थ्य के लिये यही एक रामबाण औषधि है और बस !

शुभ बधाई

नई पीढी के नवयुवक तथा आर्य जगत के सुप्रसिद्ध लेखक आचार्य मित्रसैन जी एम. ए. शास्त्री के गृह पर २८ फरवरी को नवीन बालक ने जन्म लेकर गृहस्थ को प्रफुल्लित किया है बच्चे का नामकरण विश्वमित्र रखा गया है। आर्य जगत परिवार की ओर से बच्चे के दीर्घायु होने की प्रभु से प्रार्थना है।

करमगति टारे नाहिं टरे

जनयुग में बेचारी जनता भूखों रोज मरे
करमगति टारे नाहिं टरे
हर गठकतरा बना मिनिस्टर जेबे साफ करे,
करमगति टारे नाहिं टरे
मुर्गा खाकर कहें भगत जी जय जगदीश हरे,
करमगति टारे नाहिं टरे
भ्रष्टाचार चहुं दिशि व्यापा कैसे देश तरे,
करमगति टारे नाहिं टरे।

—विजय निर्बाध

केरल में आर्यसमाज का प्रचार

श्री राजेन्द्र जी 'जिज्ञासु' शोलापुर

केरल निवासी चोरी नही करते। मन्दिरो में जूते बाहर पडे रहते है। कोई रखवाली नहीं करता फिर भी जूते गुम नही होते। रामायण मे जिस पंजाब नदी का वर्णन है। मैं वहा स्नान करने जाता रहा। घडी व वस्त्र किनारे पर उतार कर रख जाता था पर देर तक नदी में स्नान करने के पश्चात् बाहर आकर प्रत्येक वस्तु सुरक्षित मिल जाती। अब सुना है कि जेब कतरे केरल में पैदा हो रहे है।

केरल के लोग सुरक्षित है पर सादा हैं। पंजाब की भांति वहा फैशन नहीं। लोगों का प्रिय वेष कुर्ता व धोती है। नंगे पांव घूमने मे भी कोई मान हानि नहीं समझते। लोग सज्जन हैं। झगडालु नही। लोग निर्धन हैं। बागो के इस प्रदेश मे इस उपजाऊ धरती मे अनेक मूल्यवान वस्तुए पैदा होती है फिर भी जनता का एक बडा भाग निर्धन है। कारण यह है कि लोगो मे आत्म-विश्वास की की कमी है।

ईसाइयो का एक वर्ग बहुत सपन्न है। हिंदु प्राय निर्धन है। स्कूल कालेज ईसाइयों के हाथ मे है। नायर सर्विस सोसायटी के भी १८ कालेज व कई सौ स्कूल है। ऐसा दीखता है कि केरल ईसाइयों का प्रदेश है। बडे-बडे भव्य चर्च हैं। सड़को के किनारे बडे-स्तूप हैं जिन पर सूली का निशान होता है। पादरियो के भवन भी बडे सुन्दर हैं। प्रत्येक स्टेशन पर, बस स्टैण्ड पर पादरियो व पादरानियो के टोल मिलते है। केरल मे रामकृष्ण मिशन के कई आश्रम हैं. कई साधु है पर फिर भी लाखो लोग विधर्मी बन गये। रामकृष्ण मिशन के एक साधु श्री स्वामी धर्मानन्द जी के शब्दो मे कोई ईसाई हो या मुसलमान रामकृष्ण वालो को क्या ? इनको तो बस वेदांत का प्रचार करना है। आर्यसमाज अब एक जीवित जागृत सस्था बन रहा है। सब मत अविलम्बी वैदिक धर्म की शरण मे आकर कल्याण मार्ग के पथिक बनेंगे ऐसी आशा है।

केरल के लोग सुशिक्षित है अत वहा साहित्य की बडी माग है। अब तो आर्य साहित्य बिकने भी लग गया है। अब तक श्री नरेन्द्र जी ने सैकडो रुपये का आर्य साहित्य बाटा है। लाखो लोगो तक हमारा साहित्य जा चुका है। यदि आर्य जनता का सहयोग रहा तो नरेन्द्र जी अपनी लगन व तप त्याग से अवश्य अपने पवित्र लक्ष्य मे सफल होंगे। ★

श्री आनंद स्वामी जी महाराज का प्रि. भगवान दास जी के नाम पत्र

मेरे प्यारे श्री प्रि० भगवानदास जी,

सप्रेम नमस्ते।

लगभग तीन महीने हो गये मुझे विदेश मे भ्रमण करते हुए. थाईलैंड-मलेशिया-सिंगापुर-फीजी - न्यूजीलैंड-आस्ट्रेलिया-हांग कांग, फारमूसा मे वेद सन्देश सुनाकर आज कल जापान मे वेद कथा सुना रहा हू। सिंगापुर मे आर्यसमाज का विशाल भवन है। कार्य भी ठीक हो रहा है. फीजी मे आर्यसमाज के १५ स्कूल तथा कालेज है। समाजे ११ है परन्तु फूट काम बिगाड रही है और कही समाज नही हा बैंकाक (थाईलैंड) मे एक समाज है। लोगो मे श्रद्धा है. वह वेद की बात सुनना चाहते है परन्तु सुनाने वाला कोई नही, यदि दयानन्द कालेजो मे से ५-६ प्रचारक आ जाए, जो मीठी इगलिश मे भाषण दे सके तो प्रचार आगे बढ सकता है, आप के हृदय मे अग्नि जलती है इसी लिए आप से निवेदन किया है।

नोट—जो सज्जन प्रचारार्थ विदेश मे जाना चाहते हो वे प्रि० भगवानदास जी एम. ए., डी. ए वी. कालिज अवाला से पत्र व्यवहार करें।

सेवक
आनन्द स्वामी

पुस्तक समीक्षा

आर्यसमाज के दिवंगत महापुरुषों के जीवन

आंदोलन तथा प्रवृत्तियां तीनों भाग ले० पं० देवप्रकाश जी भूतपूर्व आचार्य अरबी संस्कृत विद्यालय अमृतसर

प्रकाशक—जगतराम जी रिटायर्ड S.D.O. अमृतसर। मूल्य ४/-

उपरोक्त पुस्तक २०×३०/१६ के १२ प्वाइंट पर छपी गई है पृष्ठ संख्या प्रथम भाग ४३० दूसरा भाग ३४ पृष्ठ तीसरा भाग ७८।

पुस्तक को आद्योपान्त पढने से ज्ञात होता है कि लेखक को इसके संकलन में पर्याप्त वर्ष लगाने पड़े हैं। पुस्तक में आर्य सामाजिक क्षेत्र में काम करने वाले दिवंगत सभी पुरुषों का जीवन कार्य तथा विशेष गुणों का विस्तृत वर्णन बड़े सुन्दर ढंग से किया गया है। पुस्तक की सब से बड़ी विशेषता यह है कि तीसरे भाग मे, भिन्न विषयों यथा शिक्षा आन्दोलन पटियाला में आर्य समाजियों पर राजद्रोह, पटियाला केस, प्रचार आन्दोलन दुर्भिक्ष, हैदराबाद सत्याग्रह पर बड़ी मार्मिक भाषा मे लेखनी उठाई है। इस के अतिरिक्त विदेशो मे वेद प्रचारार्थ कार्य का भी विस्तृत विवेचन है। पुस्तक-पुस्तालयों की शोभा है प्रचारको उपदेशको और आर्य मिशनरियो के लिए तो अति उपादेय है।

प्रथम भाग मे १४१ व्यक्तियों, दूसरे भाग मे ३५ और तीसरे भाग में ४९ व्यक्तियो का जीवन चरित्र है।

प्राप्ति स्थान—

आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा निकट कोर्ट जालन्धर

देवप्रकाश जी आचार्य आर्यसमाज उज्जैन मथुरादास जी गली नं० ५ नया कोट अमृतसर

आर्य समाजों को सूचना

वेद सप्ताह श्रावणी उपाकर्म का वार्षिक आ रहा है। उन दिनों सारी समाजों का दूकम बनाने में कठिनाई हो जाती है। इसलिए अगस्त से ३० सितम्बर ६६ तक सारा समय वेद की कथाओं के लिए है। समाजों से निवेदन है कि सभा को इस विषय में अभी से सूचना देवें ताकि सब का समुचित कार्यक्रम बनाया जा सके।

—वेद प्रकाश मल्होत्रा

सभा मन्त्री आर्य प्रादेशिक सभा जालंधर

भारत सरकार की कथनी और करनी में अन्तर

ओमप्रकाशजी त्यागी उपमन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन नई दिल्ली—१

राष्ट्र विरोधी कार्यों एवं देश के विभाजन आदि की मांग करने वाले व्यक्तियों व संस्थाओ के विरुद्ध भारत सरकार ने एक आर्डीनेन्स पास करके अपनी बुद्धिमत्ता व साहस का परिचय दिया है। परन्तु समझ मे नही आ रहा है कि सरकार ने यह आर्डीनेन्स किस लाभ को सन्मुख रखकर बनाया है। भारत सरकार एक ओर तो देशभक्त नागाओ की उपेक्षा करके देशद्रोही नागाओ के साथ भारत की मान-प्रतिष्ठा को धूल में मिलाकर समझौता वार्ता कर रही है, और आदिवासियों में भोली भाली जनता को देशद्रोह का पाठ पढ़ाने वाले और उनका प्रदर्शन करने वाले विदेशी मिशनरियों का संरक्षण कर रही है और उन्हें पर्वतीय क्षेत्रों में विद्रोह की ज्वाला को भड़काने की खुली छुट्टी दे रखी है। दूसरी ओर सरकार इस प्रकार के आर्डीनेन्स पास कर जनता की आखो मे धूल झोंक रही है।

प्रतीत होता है कि इस आर्डीनेंस के पीछे भारत सरकार की दृष्टि मे देश-द्रोही व राष्ट्र विरोध तत्व न हो कर कोई अन्य कांग्रेसी विरोधी व्यक्ति व संस्थाएं होगी। जिन्हें वह इसकी आड़ मे कुचलना चाहती है। इस प्रकार भारत सरकार की कथनी और करनी मे बड़ा अन्तर है, और यही इस देश की अशान्ति, अवन्नति व संघर्षो का मूल कारण है।

क्रांतिकारी आर्य वीर दल होशियारपुर की सूचनाएं

१. भू.पू. संचालक श्री वेदप्रकाश मुरादाबाद पर पहुंचकर आर्य वीर दल की शाखा खोल रहें हैं।

२. कादिया मे आर्य युवक समाज के साथ-साथ आर्य वीरो ने व्यायाम, आसन आदि का आरम्भ विधिवत कर दिया है।

३. स्थानीय आर्य वीरदल ने १५ जून से दयानन्द साल्वेशन मिशन को वेदव्रत आर्य आर्योपदेशक दिए हैं।

४. बजवाड़ा में आर्य वीर दल छुट्टियो में खोला जा रहा है।

५. श्री चन्द्रप्रकाश व श्री भूषण जी रिसर्च-स्कालर आर्य वीर दल के कार्य में जुटे है।

६. १८-६-६६ को दयानन्द आर्य आर्य वीर दल जालन्धर में प्रचारार्थ जा रहा है।

७. ६-६-६६ को स्थानीय आर्य वीर दल में दर्शनाचार्य श्री मदसेन जी का प्रभावशाली प्रवचन हुआ।

—दयानन्द आर्य बौद्धिक शिक्षक

आर्य युवक परिषद् दिल्ली—६

सत्यार्थ प्रकाश की परीक्षाएं

सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय व प्रचार के लिए आर्य युवक परिषद् (रजि०) गत कई वर्षों की भाति इस वर्ष भी ४ सितम्बर १९६६ को सारे देश मे सत्यार्थ प्रकाश की परीक्षाओ का आयोजन कर रहा है। परीक्षाओ में बैठने के इच्छुक बहिन - भाई पाठविधि तथा आवेदन पत्रादि परीक्षामत्री आर्य समाज मौडल बस्ती—देहली—५ के पते से प्राप्त करें। —प्रचार मन्त्री

पंजाब प्रान्तीय आर्य वीर दल की ओर से

प्रशिक्षण शिवरों का आयोजन

इस वर्ष शिक्षण शिवरों का कार्यक्रम इस प्रकार से है;—

१९/६/६६ से ३/७/६६ डी.ए.वी. हाई स्कूल गुड़गांव।

१०/७/६६ से १७/७/६६ नगीना (पलवल)

१७/७/६६ से २४/७/६६ गुरुकुल गदपुरी (पलवल)

१३/७/६६ से १७/७/६६ आर्य कुमार सभा, बरनाला।

सभी स्थानों पर योग्य शिक्षक आर्य वीर को शिक्षण देंगे। अन्य आर्य नेता भी शिवरों पर पधारेंगे।

—प्रान्तीय पत्र "भास्कर" संचालक

आर्य समाज (कालिज विभाग) बटाला में वेद कथा

डी. ए. वी. मल्टी कालिज विभाग मंडी २०-६-६६ से २६-६-६६ तक रोजाना रात्री ८-३० से १० बजे तक वेदो के महारथी प० बुद्धीराम जी की मनोहर कथा होती रही, साथ में महाशय राजपाल जी तथा प्रो० मदनमोहन जी के मनोहर संगीत भी हुए। नगर की जनता ने इसका बहुत लाभ उठाया। आर्यसमाज के अतिरिक्त पंडित जी के प्रवचन दैनिक प्रार्थना सभा, सती लक्ष्मी स्मारक मे भी हुए।

आर्यसमाज की ओर से १०१ रुपये (एक सौ एक) आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजाब जालन्धर नगर को दिये गए।

इसके अतिरिक्त २४ जून १९६६ शुक्रवार प्रात: साढ़े सात बजे माननीय पं. जी ने श्री बलदेवसिंह भूतपूर्व प्रधान, आर्यसमाज जौहरी चौक, बटाला के घर उनके सुपुत्र का नाम करण संस्कार कराया।

बालक का नाम ओंकारसिंह रखा गया। ईश्वर करे यह बालक दीर्घायु हो और संसार में मान प्राप्त करे।

—दर्शनकुमार मन्त्री

आवश्यकता

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर

आर्य जगत

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 12.

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे — वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक २९) २ श्रावण २०२३ रविवार—दयानन्दाब्द १४१— १७ जुलाई १९६६ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

पंजाब में हिंदी भाषियों को पूर्ण संरक्षण मिलेगा

राज्यपाल धर्मवीर जी की घोषणा

पंजाब के राज्यपाल श्री धर्मवीर ने आज यहां एक पत्रकार सम्मेलन में घोषणा की कि पंजाब में सेवाओं का विभाजन, १९६१ की जनगणना में कर्मचारियों और अधिकारियों द्वारा लिखाई गई मातृभाषा अथवा वर्ग, सम्प्रदाय या जाति के आधार पर नहीं किया जाएगा। सेवाओं का विभाजन दोनों नए राज्यों की आवश्यकतानुसार ही किया जाएगा, ताकि नए राज्यों का प्रशासन किन्हीं प्रशासनिक कमियों के कारण दुर्बल न रहे। उन्होंने एक पंजाबी पत्रकार का यह सुझाव रद्द कर दिया कि जिन कर्मचारियों की मातृभाषा हिन्दी है, उन्हें केवल हरियाणा में ही भेजा जाए। उन्होंने कहा कि यदि यह सिद्धान्त मान लिया जाए तो इस में भारी समस्या उत्पन्न हो जाएगी।

नए राज्यों में भाषाई अल्पसंख्यकों की रक्षा-प्रश्न पर राज्यपाल ने कहा कि पंजाब में हिन्दी-भाषी अल्पसंख्यकों को पूरा-पूरा संरक्षण दिया जाएगा और यही फार्मूला हरियाणा में लागू होगा। उन्होंने बताया कि दोनों राज्यों में साझी कड़ियों के प्रश्न पर केन्द्रीय नेता गम्भीरता पूर्वक विचार कर रहे हैं।

आर्य जगत के कर्मठ कार्यकर्ता

श्री स्वर्गीय शंकरदास जी त्रेहन जालंधर

आप की सारी आयु आर्यसमाजों और उनकी संस्थाओं की सेवा करने में ही बीती। आप कई संस्थाओं के प्रधान व मन्त्री पद पर भी रहे। वृद्धावस्था में भी आर्य समाज विक्रमपुरा का भव्य मंदिर निर्माण आप की पवित्र स्मृति का द्योतक है जिसे देखते ही आप का स्मरण हो आता है। अभी पिछले दिनों आप की प्रथम निर्वाण स्मृति में उनके सुपुत्र श्री ज्ञानचन्द जी त्रेहन ने एक सप्ताह यजुर्वेद पारायण यज्ञ अपनी कोठी लाजपत नगर में पूर्ण किया जिस की पूर्णाहुति कल रविवार १० जुलाई ६६ को डाली गई। इस अवसर पर अनेक गण्य मान्य सज्जनों ने अपनी २ श्रद्धांजलियां उनके चरणों में अर्पित कीं।

राष्ट्र एक-दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने की नीति अपनाएं

विश्वशांति के लिए शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व

इन्दिरा-नासिर संयुक्त विज्ञप्ति प्रकाशित

काहिरा १० जुलाई—प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी और राष्ट्रपति नासिर ने आज यहां एक संयुक्त वक्तव्य में विश्व-शांति एक दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की नीतियों और विश्व में तनाव कम करने के लिए राष्ट्रों में सक्रिय सहयोग को विशेष महत्ता प्रदान किया है।

भारतीय प्रधानमन्त्री और संयुक्त अरब गणराज्य के राष्ट्रपति के मध्य हुई तीन दिवसीय वार्ता की समाप्ति पर प्रसारित संयुक्त वक्तव्य में कहा गया है कि उनमें बातचीत और विचार विनिमय मुख्यतया वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति के प्रसंग में गुटों से अलग रहने की नीतियों को सुदृढ़ बनाने और शांति एवं सहयोग का क्षेत्र बढ़ाने के बारे में हुआ। दोनों नेताओं ने विश्व-शांति को प्रभावित करने वाली विभिन्न समस्याओं पर विचार किया तथा इस बात पर सहमति प्रकट की कि विश्व-शांति को सुदृढ़ बनाने के लिए हर सम्भव प्रयत्न किया जाए।

अधिष्ठाता—श्री संतोषराज जी

सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

धार्मिक विवेचन—

आओ ! हम वैदिक संध्यारूपी सागर में डुबकी लगाएं ताकि अमूल्य रत्न पायें

(श्री परमानन्द जी विद्यार्थी, रोहतक)

(गतांक से आगे)

(दूसरे मन्त्र का)

सकल संसार को अपने वश में रखने वाले परमात्मा ने अपने सहज स्वभाव से जल कोष रचने के अनन्तर, काल के विभाग, दिन रात तथा वर्ष आदि उत्पन्न करने वाले रवि को रचा। ॥२॥

(तीसरे मंत्र का)

सारे जगत को धारण तथा पालन-पोषण करने वाले परमेश्वर ने जैसे पहले कल्प की सृष्टि में रचना की थी, ठीक उसी प्रकार अब इस कल्प में भी सूर्य और चन्द्र को, अग्नि रूपी अपने सर्वोत्तम प्रकाश को, पृथ्वी को और भूमि को तथा द्युलोक के बीच के लोक-लोकान्तरों को रचा ॥३॥

सरल अर्थ पद्य में—

अपनी सत्ता से परमेश्वर ।
प्रकृति से जगत बनाकर ॥
ज्ञान दिया, गुरु कहलाया ।
वेदों का प्रकाश फैलाया ॥
जीव, वृक्ष पृथ्वी के अन्दर ।
नदिया, नाले रचे समुन्दर ।
जिस सत्ता से जग उपजावे ।
उसी से जग में प्रलय लावे ॥
जगत को वश में रखने वाले ।
परमेश्वर के खेल निराले ॥
रात बनाई दिवस बनाया ।
काल के हिस्से कर दिखलाया।
सूर्य चन्द्र भू मण्डल तारे ।
लोक लोकान्तर रच के सारे।
नियम रखे इन में भी ऐसे ।
थे पहले कल्पों में जैसे ।

व्याख्या

हे ज्ञान के भण्डार परमात्मा ! आप मुझे शक्ति प्रदान करो, ताकि मैं पवित्र वेद का (ज्ञान) प्राप्त कर के जीवन को उन्नत करता चला जाऊं। हे प्रकाश स्वरूप परमेश्वर ! मुझे बल दो, ताकि मैं आप के पवित्र (वैदिक धर्म) के अनुसार अपने जीवन को ढाल कर उसी अनुसार (अर्थ) अर्थात धन, सम्पत्ति, पदार्थ तथा मनोवांछित वस्तुओं का संग्रह करके जीवन को सफली भूत बनाऊं। हे संसार को सहज स्वभाव से वश में रखने वाले प्रभुदेव ! मुझे ताकत दें ताकि मै (काम), (क्रोध) को वश में करके शारीरिक दुःखों से छुटकारा पाऊं। हे संसार के धारण पालन-पोषण करने वाली माता ! मुझे साहस दे, कि मैं (अपरिग्रह) अर्थात् अनुचित रूप से धन संग्रह की लालसा और है-है किल-किल, और-और की प्यास की भावना से दूर रहूं इस प्रकार (अभिमान) और क्रोध के विचारों से अलग हो कर अपने जीवन को शान्तमय बनाये रखूं। हे जगदीश्वर ! मुझे आशीर्वाद दे, कि मैं (ब्रह्म यज्ञ) आप को सर्वत्र जानता हुआ, (देव यज्ञ) अर्थात् धधकती हुई हवन-कुण्ड की ज्वाला के समान मेरे सांस आप के दर्शनों अर्थ उत्सुक रहे और आप के महान् संसार का (अवलोकन) प्रकृति-निरीक्षण करता हुआ तेरे पास आने का साहस धारण करू।

विशेष संकेत :—

(१) यह तीनों मन्त्र पवित्र ऋग्वेद के है। (२) भगवन दयानन्द जी महाराज ने इसे सृष्टि-रचना-मन्त्रों के नाम से पुकारा है। (३) यद्यपि विद्वान लोग इन मन्त्रों अर्थ बतलाने 'महर्षि अर्थ' को बतलाते हैं, और अघ-मर्षण का अर्थ पापों को दूर करने वाले अर्थ भी निकलते हैं। सच-मुच यह मन्त्र पाप दूर करने में कमाल शक्ति रखते है। यह साढे तीन हाथ का पांच तत्व से निर्मित पुतला थोड़ी शक्ति पाकर जिस अकड़ फूं मे हो जाता है, वह आज के संसार में ९९% दीख रहा है। जो अपने-आपको परमात्मा कहने मे, मैं ही ब्रह्म हूं ऐसा बोलने मे लज्जा नही करते, उनके कर्म क्यों कर ठीक हो सकते है ? जो परमात्मा को देव समाजी, राधा स्वामी, आनन्द स्वामी, नरकारी तथा ब्रह्मकुमार सर्वथा नही मानते, उनका सिर अभिमान के कारण आकाश पर है। भला वह पवित्र जीवन वाले क्यों कर हो सकते है ? क्या यह नास्तिक लोग इतने बड़े संसार को बना सकते है ? या किसी और व्यक्ति मे शक्ति है ? कि केवल इतनी पृथ्वी को बनाये या ईश्वर की सी कोई क्रिया कर दिखाये। परन्तु अभिमान में विफरा यह आदमी जब जिज्ञासा भाव से परमात्मा की सृष्टि को देखेगा तो उसका अभिमान चिकना चूर हो जायेगा और पापों से दूर हो कर धर्म में दिल लगायेगा। डारविन का यह सिद्धांत (Darvin's Theory) कि बन्दर से बन्दे बने, यह सर्वथा अशुद्ध है इन तीन मन्त्रों में संक्षिप्त तथा सांकेतिक रूप में संसार की उत्पत्ति का जो वर्णन किया है वह कितना सुन्दर है इसी प्रकार वेदों मे अनेक मन्त्र हैं, जो संसार के पैदा होने का नियम बताते है। परन्तु (Darvin) ने न केवल संसार की आयु गलत बताई, अपितु मनुष्य की उत्पत्ति भी ज्ञान के उल्ट बताई। क्या ही अच्छा हो, कि डारवन (Darvin's Theory) के सिद्धांत पर लट्टू होने वाले नर नारी आज से पौने दो अरब साल से प्राप्त वेद-ज्ञान को किसी महान आर्य विद्वान की सेवा मे उपस्थित हो कर सृष्टि उत्पत्ति का विवरण सुन ले, तो उन्हे वेद की महानता का बोध हो जाये। यह बातें, कुरान, बाइबल या किसी जैनी-बौधी पुस्तकों मे बुद्धि और तर्क व विज्ञान पर पूरी उतरने वाली सिवाये वेद के कही नही मिल सकती। (५) इस पहले मन्त्र का केन्द्र बिन्दु "तपस:" दूसरे का "वशी" और तीसरे मन्त्र का "धाता" है। जिस के बाहर मन्त्र घूम रहे हैं। (६) जब भक्त अपने (पिंडे) शरीर को पवित्र बना लेता है और सब प्राणी मात्र के लिये सुख चाहता है, तो स्वाभाविक रूप से अपने परमात्मा के बनाये 'ब्रह्माण्ड' संसार का अवलोकन कर के, उस की महान् शक्ति से चकित हो कर उसे मिलने के लिए दौडता है।

विचार-तरंग (१३)

(श्री राममूर्ति जी कालिया एम० ए०, नई दिल्ली)

ज्ञान का कोई पारावार नहीं। सच्चा साधक ही इस को प्राप्ति कर सकता है। मार्ग अति दुस्तर है। 'ज्ञान पंथ कृपाण की धारा' ठीक ही कहा है। इतने पर भी 'हंस वाहिणी कुन्देन्दु तुषारहार धवला वीणा पुस्तक धारिणी सर्व शुक्ला सरस्वती के उपासक बनने की साध कई लोगों के मन में रहती है किन्तु सच्चे मार्ग दर्शकों का अभाव सा है। सरस्वती को देवत्व की कामना करने वाले (मानव) बुलाते हैं। 'सरस्वती देवयन्ती हवन्ते" सीधा भाव यही है कि जो मनुष्य विद्या का आदर करते हैं वे देव कोटि मे पहुंच जाते है। परिस्थितियों से होड़ लेना तो अनिवार्य है ही किन्तु कोई सिद्ध व्यक्ति गुरु रूप में प्राप्त हो जाये, उसे भगवान का विशेष अनुग्रह ही समझना चाहिए। मेरा आशय उस गुरु की ओर है जिस की ओर सन्त कबीर ने संकेत किया कि :—

'गुरु कुम्हार, शिष्य कुम्भ है।
गढ गढ काढे खोह।
ऊपर से चोटें करे।
और भीतर राखे ओट ॥

किन्तु आज दशा तो विचित्र ही नहीं भयावनी भी है। गुरु और शिष्य के सात्विक सम्बन्धों की शृंखला विशृंखल हो चुकी है। प्यार और सौहार्द और दूसरी ओर विनयशीलता इनका अभाव है। शिक्षा तो बिकने लगी है और खरीदने वाले भी छाती ठोक कर खरीदते है। सन्मान और विनय का स्थान पैसे ने ले लिया है। सरस्वती लक्ष्मी की चेरी बनकर रह गयी है। परिणाम स्वरूप शिक्षा का स्तर दिन प्रतिदिन गिर रहा है। विद्यार्थियों में उद्दण्डता, उच्छृंखलता और अनुशासन हीनता आ गई है। जो कह झूठ मसखरी जाना, कलिजुग सोई गुणवन्त बखाना, उक्त ठीक नजर आती है। आजकल की शिक्षा द्वारा समाज राष्ट्र हितों पर बलिदान होने वाले वीर उत्पन्न हो सकेंगे इसमे किसे सन्देह नही है। सामाजिक क्षेत्रो मे अनगिनत अनथक कार्यकर्त्ताओं की नितांत आवश्यकता रहती है। इस आवश्यकता की पूर्ति अनुशासन हीन विद्यार्थियों द्वारा हो सके गी, असम्भव जान पड़ता है। गुरु शिष्य का सम्बन्ध बखान करते हुए तुलसीदास ने ठीक ही कल्पना की है। उन्होंने लिखा कि

'गुर सिस बधिर अन्ध का लेखा,
एक न सुनई एक नहिं देखा।

शिक्षा के इस अधोपतन से हम कौन से गर्त में जायेंगे, ईश्वर ही जाने। गुरु जो शिष्य के जीवन के शोक, सन्ताप का हरण नही करता वह नरक में पड़ेगा। 'हरइ सिष्य धन सोक न हरई, सो गुर घोर नरक महं परई।'

शिक्षा द्वारा तो व्यक्तित्व में निखार आना आवश्यक है। यह

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सम्पादकीय—

आर्य जगत

वर्ष ६] रविवार २०२३, १७ जुलाई १९६६ [अंक २९

सभाओं की सम्मिलित बैठक

पंजाब की दोनों समाजो—आर्य प्रादेशिक सभा और आर्य प्रतिनिधि सभा की आवश्यक अन्तरग सभाओ के सदस्यो की सम्मिलित बैठक आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर के भव्य मन्दिर के हाल में ता० १० जुलाई रविवार को प्रारम्भ हुई। पंजाब के दो प्रान्तो हरियाना एव पंजाब के रूप में बट जाने के बाद वर्तमान धर्म प्रचार, भाषा समस्या, परस्पर एकता के सूत्र में मिलने की बात व अन्य भी कई आवश्यक विषयो पर विचार करके किसी सर्वसम्मत निर्णय पर पहुचने के लिए ऐसी बैठक बड़ी आवश्यक थी। यह बैठक उस समाज में सम्पन्न हुई, जो आर्य प्रादेशिक सभा से सम्बन्धित है तथा उस की एक बडी विशेषता यह है कि वहां पन्द्रह वर्षों से एक यह पवित्र परम्परा चली आ रही है कि छोटे बडे विषयो से लेकर वार्षिक निर्वाचन जैसे विषय पर भी आज तक कभी मतभेद की बात तो दूर रही, मतदान तक भी नही हुआ। बहुमत व अल्पमत का प्रश्न ही नही आया। सारे विषय, निर्णय और कार्य सर्वसम्मति से होते हैं। जिसमें एक का भी मतभेद हो वह काम होता ही नही। कितनी स्वस्थ परम्परा है। इसका श्रेय वहा के अधिकारियों स्वर्गीय प्रिंसिपल ज्ञानचन्द जी भाटिया तथा वर्तमान सज्जन कैप्टन शिवराम जी, प्रो. वेदप्रकाश जी एम० ए० आदि सज्जनों व माताओं को है। समाज का प्रबन्ध व आने वाले सारे सज्जनों के लिए खान-पान, स्वागत सत्कार का प्रबन्ध भी तो बडा ही सुन्दर था।

दोनों सभाओं की अन्तरंग सभाओ के सदस्य पधारे थे। आर्य प्रादेशिक सभा की ओर से श्रीयुत यश जी प्रधान सभा, प्रो० वेदप्रकाश जी एम०ए० मन्त्री, प्रि० कुमारी विद्यावती जी आनन्द, कैप्टन शिवराम जी, पं० रुद्र दत्त जी शर्मा अमृतसर, श्री मेहरचन्द जी जौली अम्बाला, ला० सन्तराम जी लुधियाना, श्री मुरारीलाल जी जोगेन्द्र-नगर, ला० किशन चन्द जी प्रधान उपसभा देहली, प्रिंसिपल प्यारेलाल जी बेरी, ला० सन्तोषराज जी अधिष्ठाता आर्य जगत, श्री पराशर जी, पं० सत्यदेव जी विद्यालंकार, प० दुर्गा दास जी आर्य गजट, श्री बलदेवराज जी, प्रिंसिपल रलाराम जी होशियारपुर चौधरी बलबीरसिंह जी, प० लब्भूराम जी, प्रिंसिपल चंचल दास जी आदि तथा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रो० रामसिह जी प्रधान सभा, प० रघुवीर सिह जी शास्त्री मन्त्री, पं० जगदेव सिह जी सिद्धांती M.P. प्रो० शेरसिंह जी, आचार्य भगवान देव जी, प्रिंसिपल दीक्षित जी पानीपत, श्री लालचन्द जी सभ्रवाल आदि काफी सज्जन पधारे। प्रो० रामसिह जी की प्रधानता मे बैठक आरम्भ हुई। प्रो० वेद प्रकाश जी मन्त्री सभा के प्रारम्भ मे सभा व समाज की ओर से सब का स्वागत किया। श्री यश जी प्रधान सभा ने विस्तार के साथ पजाब के पुनर्गठन पर आर्य समाज के कार्य और सामने आने वाली सारी समस्याओं तथा इस परिस्थिति मे मिल कर कार्य करने की प्रभावपूर्ण शब्दो में चर्चा की। प्रचार की समस्या, भाषा की तथा संस्थाओ के भविष्य के वातावरण तथा समय २ पर आने वाली समस्याओ को उपस्थित किया। इस के बाद अनेक सज्जनो ने अपने २ विचार प्रकट किए। पंजाब के दो प्रान्त बन जाने पर भी आर्यसमाज का क्षेत्र तो उसी प्रकार से रहना चाहिए तथा राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति की जाने वाली उपेक्षा को दूर करने का प्रयत्न जारी रखा जाये। आर्यसमाज अपनी पुरानी परम्परा को निभाता हुआ जनता का पथप्रदर्शन करता रहे। अलग २ प्रांत बनने के बाद भी आर्य समाज के नाते हम सारे एक ही समाज के विशाल परिवार का पूर्ववत् अंग हैं तथा दोनों समाजो को मिल कर अपने सगठित सूत्र के द्वारा जोर शोर से समाज प्रचार का कार्य जारी रखा जाए इस पर सब बोलने वालो ने ऐक्यमत होकर बल दिया। पजाब की इन दोनो सभाओ को मिलाकर एकता के सुन्दर सूत्र मे पिरोये जाने पर भी विचार व्यक्त किये गये तथा दोनो प्रधानो को अधिकार दिया गया कि इस दिशा मे समिति का गठन कर एकता के काम को आगे बढाया जाये। इस पजाबी भाषी भाग मे हिन्दी के सरक्षण के लिए भी आर्यसमाज पूरा २ प्रयत्न व प्रबन्ध करे इस मे सारे एकमत हैं। इस प्रकार का प्रस्ताव पारित हुआ। तीन घण्टे तक बडे सुन्दर विचार विमर्श होते रहे। आर्यसमाज के इतिहास मे इस बैठक ने एक सुन्दर आदर्श पेश किया है। हम दोनो सभाओ के अन्तरग सदस्यो व अधिकारियों को बधाई देते हैं कि समय की पहिचान करते हुए बडे सुन्दर निर्णय किये है। प्रभु करे कि आर्यसमाज एकता के सूत्र मे पिरोया जाकर जनजीवन का नेतृत्व करे। बाद में भोजन हुआ। माडल-टाउन समाज के अधिकारियो को भी बधाई। —त्रिलोकचन्द्र

स्वर्गीय ला० शंकरदास की स्मृति में

आर्यसमाज के विशाल आंदोलन में भिन्न-भिन्न समय और स्थानों पर अनेक प्रकार के ऐसे मान्य महानुभाव हुए हैं व हैं, जिन्होंने समाज-निर्माण तथा सेवा कार्य में बहुत बड़ा योगदान दिया। इतिहास लिखते समय उनको पूरा सम्मान दिया जाना चाहिए। ऐसे ही समाज निर्माताओ में जालन्धर के स्वर्गीय ला० शकरदास जी त्रेहन भी थे। जालन्धर के सामाजिक सेवियो, आर्यसमाज की सस्थाओ को उन्नत करने वालो एवं मौन रहकर, दिखावे आडम्बर से दूर रहकर रात दिन समाज के लिए अपना समय देने वालो मे इनका नाम बड़े आदर मान से सदा लिया जाएगा। जालन्धर में डी०ए०वी० कालेज, स्कूल, आर्यसमाज व आर्य प्रादेशिक सभा की भारी सेवा की उनका काम व स्मृति अमिट है। आर्यसमाज विक्रमपुरा जालन्धर का नया बना हुआ भव्य समाज मन्दिर तो उनके तप, श्रद्धा, सेवा तथा अथक परिश्रम की सदा याद दिलाता रहेगा। रात दिन खडे होकर इसे बनवाने में लगे रहे। तथ्य तो यह है कि स्वर्गीय ला० शंकरदास जी प्रभु भक्त, वेद के प्यारे, क्रियात्मिक जीवन वाले, समाज के दीवाने तथा ऊंचे विचारो के थे। यह भी विशेषता थी कि उन्होने अपने सारे परिवार के जीवन पर भी धर्म-व समाज प्रेम की गहरी छाप लगा रखी थी। परिवारो मे आर्यसमाज कही-कही होती है। किन्तु उनका सारा परिवार ही प्रभु प्रेमी, देश भक्त तथा समाज सेवी है। उनके सुपुत्र ला० ज्ञानचन्द त्रेहन मे तथा परिवार के विचारो मे तो आर्यसमाज की कभी न मिटने वाली छाप है। धनपतियो की कोठियो मे कारे होती है, और भी सजावट का सामान होता है। किन्तु अपनी शानदार व सम्पन्नता भरी कोठी मे विशाल एव सुन्दर यज्ञ शाला तो बहुत विरले परिवारो मे होती है। ला० ज्ञानचन्द जी त्रेहन की कोठी मे जहा भव्य यज्ञशाला है, वहा यज्ञ का कार्यक्रम भी अबाधगति से चलता है। सारा परिवार यज्ञ व प्रभु का प्रेमी है। वर्षों से निरन्तर यहा यज्ञ होता है। सारे परिवार मे सौम्यता, धर्म भावना की सुगन्धि है। ला० ज्ञानचन्द जी सचमुच स्वर्गीय पिता के सुपुत्र हैं। वार्षिक यज्ञ प्रतिवर्ष इन के परिवार मे सुन्दरता से होता है। इस वर्ष चार जुलाई सोमवार से लेकर १० जुलाई रविवार पूर्णाहुति तक अपनी सभा की ओर से कार्यक्रम के नाते मुझे भी इस भव्य यज्ञ मे शामिल होने का अवसर मिला। प० ज्ञानचन्द भजनोपदेशक तथा विक्रमपुरा समाज के पुरोहित प० भीमसिह जी शास्त्री भी साथ रहे। लगातार एक सप्ताह तक इस परिवार के वातावरण मे बैठ कर अत्यन्त समीपता से देखने का मौका मिला। मन सारे परिवार की सौम्यता, यज्ञ प्रेम, ईश्वर निष्ठा एवं वेदप्रेम को देख-देख कर बडा ही प्रसन्न हो गया। जीवन व कर्म व्यवहार में ईश्वर-वेद प्रेम भरा हुआ है। छोटा बडा प्रत्येक बच्चा सौम्यता, मिठास की सजीव प्रतिमा है। यजुर्वेद का छत्तीसवा अध्याय तो इन के सारे परिवार के लिए जीवन का दैनिक पाठ का अध्याय बन गया है। पूर्णाहुति पर मान्य प्रिंसिपल भीमसेन जी बहल डी० ए० वी० कालेज जालन्धर, प्रि० प्यारेलाल जी बेरी साई दास

(शेष पृष्ठ ४ पर)

पंजाब की दोनों सभाओं के एकीकरण का फ़ैसला

भाषा प्रश्न पर प्रधानमंत्री, गृहमंत्री को ज्ञापन दिए जाएंगे

राज्य पुनर्गठन के बावजूद सभाओं के क्षेत्राधिकार ज्यों के त्यों

आज यहां आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब की कार्यरिणियो की एक संयुक्त बैठक मे दोनो सभाओ को मिला कर एक करने का ऐतिहासिक निर्णय किया गया। बैठक की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो० रामसिंह ने की और इस ने प्रो० रामसिंह और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री यश को एक उपसमिति नियुक्त करने का अधिकार दिया जो दोनो सभाओ के परस्पर विलय के लिए सभी विवरण और औपचारिकताए तय करेगी। यह भी फ़ैसला हुआ है कि चाहे सरकार ने पजाब का विभाजन कर दिया है, दोनो सभाओ के कार्य क्षेत्र वही रहेगे जो इस समय हैं। आजकल इन सभाओ के क्षेत्राधिकार मे वर्तमान पजाब, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली और जम्मू काश्मीर शामिल हैं।

उल्लेखनीय है कि लगभग साठ वर्ष पूर्व पजाब मे आर्यसमाज दो हिस्सो मे बंट गया था और दो अलग-अलग सभाए बन गई थी। तब से यह दोनो वैसे ही चली आ रही है, इस समय दोनो सभाओ के लगभग सात सौ आर्यसमाजे सम्बद्ध है। आर्य समाज के दो धडो मे बटने का कारण यह था कि तत्कालीन आर्य प्रतिनिधि सभा केवल गुरुकुल शिक्षा पद्धति की ही समर्थक थी और महात्मा हसराज जैसे वयोवृद्ध आर्यसमाजी शिक्षा शास्त्री और कई दूसरे लोग स्कूल-कालेज पद्धति के समर्थक थे। जब डी०ए०वी० शिक्षण सस्था की स्थापना हुई तो मत-भेदो के कारण दो सभाए बन गई। एक को साधारणतया गुरुकुल पार्टी (आर्य प्रतिनिधि सभा) कहा जाने लगा। लाहौर मे यह सस्थाए क्रमश: आर्यसमाज वच्छोवाली और आर्य-समाज अनारकली के नाम से प्रसिद्ध थी। लेकिन दोनो मे सिवा शिक्षा पद्धति के और कोई सैद्धांतिक या धार्मिक विवाद या टकराव नही था। धीरे-धीरे शिक्षा-पद्धति मे मत-भेद भी घटने लगा। चुनाचे गुरुकुल पार्टी ने गुरुकुल खोलने शुरु कर दिए और कालेज पार्टी वालो ने स्कूल, कालेज स्थापित करने शुरू कर दिए।

भाषा समस्या पर प्रस्ताव

इसी बैठक में पंजाब की भाषा समस्या पर सर्व सम्मति से एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास किया गया। प्रस्ताव मे कहा गया—'आर्य प्रतिनिधि सभा और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की कार्य कारिणियों की यह संयुक्त बैठक विश्वास प्रकट करती है कि पजाब के पुनर्गठन से निरपेक्ष हिंदी के शिक्षण एव प्रचार तथा अन्य सुविधाए प्राप्त हैं वे ज्यों की त्यो कायम रहेगी। इस सम्बन्ध में आर्य-समाज कोई भी परिवर्तन या प्रतिबन्ध सहन नही करेगा।'

यहा यह उल्लेखनीय है कि प्रोफ़ेसर शेरसिंह, श्री जगदेव सिद्धाती और आचार्य भगवानदेव ने भी, जो पृथक हरियाणा प्रात के कट्टर समर्थक रहे है, हिदी के प्रश्न पर इस प्रस्ताव का पूर्ण समर्थन किया और यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार हुआ।

पता चला है कि बैठक में यह निर्णय हुआ कि यदि सरकार ने हिंदी के शिक्षण, प्रचार और प्रसार पर कोई प्रतिबन्ध लगाया तो आर्यसमाज स्थिति का मुकाबिला करने के लिए हर आवश्यक पग उठाएगा। पिछले पचास वर्षों से पंजाब में ५५ प्रतिशत छात्रो का शिक्षा माध्यम हिन्दी है। डी. ए. वी. सनातन और देवसमाज आदि सभी शिक्षा संस्थाओं में शिक्षा का माध्यम हिन्दी रहा है। जहां तक मातृ भाषा का सम्बन्ध है किसी भी व्यक्ति की मातृभाषा वह भाषा होती है जिसे वह मा की तरह प्यार करता हो। भाषा आयोग के फतवे के अनुसार बच्चे की मातृ भाषा का निर्णय उसके माता-पिता ही कर सकते हैं न कि कोई अन्य व्यक्ति।

इसी बैठक में यह भी फ़ैसला किया गया कि भाषा के प्रश्न पर प्रधानमन्त्री, गृहमन्त्री और पजाब के राज्यपाल को एक ज्ञापन दिया जाए। ज्ञापन का मसौदा एक उपसमिति तैयार करेगी जिसे दोनो सभाओ के प्रधान मनोनीत करेंगे। बैठक मे पंजाब और दिल्ली से लगभग ७० सदस्य और विशेष रूप से आमन्त्रि व्यक्ति उपस्थित थे इनमे प्रिंसिपल रलाराम प्रिंसिपल चचलदास, लाला सतोषराज, श्री बलदेवराज, प्रधान जालन्धर नगर पालिका, चौधरी बलवीरसिंह होशियारपुर, श्री लक्ष्मीधर दीक्षित पानीपत, श्री लालचन्द सभ्रवाल, श्री रघुबीरसिंह शास्त्री, सत्यदेव जी और प्रिंसिपल विद्यावती आनन्द के नाम उल्लेखनीय हैं। रोहतक हिसार और गुडगाव से भी प्रतिनिधि आए हुए थे।

वन विहार तथा फलाहार

रविवार २४ जौलाई १९६६ की मध्यान्होत्तर २ बजे से कोटला फिरोजशाह (दिल्ली गेट के बाहर) में आर्य युवक परिषद् की ओर से ऋतु अनुसार एक विशेष समारोह का आयोजन किया गया है। जिसमें संगीत, कविता तथा मधुर मिलन आदि का कार्यक्रम होगा।

इसमें प्रत्येक व्यक्ति २) रुपए तथा बारह वर्ष तक के कुमार १) रुपया देकर सम्मिलित हो सकते हैं।

नाम तथा शुल्क २० जोलाई तक परिषद के कार्यालय १६५४, कूचा दखिनीराय, दरियागंज में पहुंच जाने चाहिए।

सत्यार्थ प्रकाश दान में दें औरों से भी दिलवायें

प्रति वर्ष की भाति इस वर्ष भी वेद सप्ताह में ४ सितम्बर, १९६६ को सारे देश में सत्यार्थ प्रकाश की परीक्षायें हो रही हैं। स्थानीय जिन केन्द्रो में सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक नहीं है उन में परीक्षार्थियो की सहायता के लिए हमें आप स्वय सत्यार्थ प्रकाश दान मे दे व दूसरो से दिलवायें। सार्वदेशिक सभा सत्यार्थप्रकाश २) रुपये मे देती हैं। इस के हिसाब से रुपये या पुस्तकें परिषद् के कार्यालय में भिजवाने की कृपा करे। जिस से परीक्षार्थियों के स्वाध्यायार्थ ये पुस्तकें केन्द्रों को दी जा सकें।

मन्त्री—ओमप्रकाश जी
आर्य युवक परिषद दिल्ली (रजि०)

★ मधु-कलश ★

(श्री विजय निर्बाध जी, आडिटर इन्चार्ज पंजाब केसरी)

(१)

युद्ध आज तक कभी विश्व का भला नही कर पाया,
सारा अमन के अराधक ने सबको सुख पहुचाया,
अत: मुनासिब है दुनिया में जियो भले के बल पर,
मत पडने दो मन के ऊपर कभी युद्ध की छाया।

(२)

जब चाहो जितना भी चाहो उतना जोर लगाना,
मगर दोस्तो नामुमकिन है अधिक भाग्य से पाना,
किसी कुए से भरो भले ही तुम सागर से भर लो,
सदा घडे के अन्दर पानी एक बराबर आना।

(३)

खाते छप्पन भोग कभी वह सूखे चने चबाते,
कभी खाट पर कभी टाट पर अपनी रात बिताते,
जिस हालत मे रखे विधाता उसमे ही खुश रहते,
महापुरुष सीमा से हटकर कदम नही धर पाते।

स्वर्गीय ला० शंकरदास की स्मृति में

(पृष्ठ ३ का शेष)

स्कूल, प्रि० विद्यावती आनन्द जी हंसराज महिला कालेज, प्रो० सत्यदेव जी विद्यालकार, ला० इन्द्रसेन जी, ला० चमनलाल जी, लुध्याना से ला० सन्तराम जी, ला० सन्तोषराज जी, प्रि० चचलदास जी, प० दुर्गादत्त जी आर्यगजट, कैप्टन शिवराम जी, ला० बलदेवराज जी प्रधान नगर-पालिका, प्रो० किशनचन्द जी, प्रो० वेदीराम जी एम०ए०, प्रो० मेनन जी, समाजो के मान्य अधिकारी भाई बहिने, नगर के गण्य मान्य व्यक्ति तथा मित्र बन्धु वर्ग और देविया भारी संख्या में पूर्णाहुति पर पधारी थी। दृश्य बड़ा ही सुन्दर था। सबने परिवार को पुष्पो की वर्षा से आशीर्वाद दिया। श्रद्धांजलियां व्यक्त की गई। समारोह से कार्यक्रम समाप्त हुआ। इस परिवार के धर्म प्रेम को देखकर बडी प्रसन्नता हुई। बा० ज्ञानचन्द जी त्रेहन, उनकी धर्म परायणा धर्मपत्नी तथा सारे परिवार को बधाई हो। इससे सारे परिवार को बधाई हो। इससे जीवन में प्रेरणा मिलती रहे। —त्रिलोकचन्द्र

आनन्द मार्ग

श्री रामानन्दजी शास्त्री उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार

कुछ वर्षों से बिहार में एक नया सम्प्रदाय फैल रहा है। उसका नाम है 'आनन्द मार्ग'। इसके प्रवर्तक प्रभात रंजन सरकार एक बंगाली हैं। वे जमालपुर (मुंगेर) के रेलवे आफिस में किरानी का काम करते हैं और आनन्द मूर्ति के नाम से ही उसका प्रकाशन होता है। अतः उनके धर्म का नाम उन्ही के नाम से आनन्द मार्ग प्रचलित है। आनन्द मूर्ति जी अपने को ईश्वर का अवतार घोषित करते हैं। जब भक्त मण्डली में आते हैं तो उनके ठीक आने के पहले उनके भक्त एक सामूहिक भजन गाते हैं कि—हे भिलनी के बेर खाने वाले, अहिल्या को तारने वाले, गृद्धराज को स्वर्ग भेजने वाले! हे गोपियों के साथ क्रीड़ा करने वाले! हम भक्तों को क्यो भूले हो? आवो हम सब गोपालबाल तथा गोपिया आप के दर्शन के लिये लालायित हैं, आवो। स्मरण रहे भक्तो मे स्त्री और पुरुष दोनों रहते हैं किन्तु स्त्रियो की सख्या अधिक रहती है। आनन्दमूर्ति जी सबों से नही मिलते हैं, वे सार्वजनिक सभाओ मे भाषण नही करते है किन्तु जाते है तो उनके अनुयायी उन्हे छिपा कर रखते हैं। यदि कोई चाहे कि मैं आनन्दमूर्ति जी से कुछ धार्मिक बात करूं तो उसे तब तक स्वीकृति नही मिलती हैं, जब तक वह शिखा न कटा ले, एवं जनेऊ तोड कर न फेंक दे। आनन्दमूर्ति जी शिखा और जनेऊ के कट्टर विरोधी हैं। उनका कहना है कि शिखा और सूत्र से विषमता उत्पन्न होती है तथा मिथ्या अभिमान होता है। आनन्द मार्ग की एक छोटी-सी पुस्तिका है 'आनन्द मार्ग चर्याचर्य' उस मे लिखा है कि जननेन्द्रिय की ऊपर वाली चमड़ी को भी हटा देना चाहिये अर्थात् वे खतना का समर्थन करते हैं।

आनन्दमार्ग में 'ब्रह्मचर्य' का अर्थ ईश्वर के पास पहुंचना है। अतः मास में कम से कम साधक को एक बार वीर्यपात अवश्य कर लेना चाहिए। जो बाल ब्रह्मचारी है, उनके लिए आनन्द मार्ग मे कोई स्थान नही है। वे ढोंगी कहलाते हैं, जो ब्रह्मचर्य का का अर्थ वीर्यपालन करते है।

आनन्द मार्ग मे सन्यास का कोई महत्व नही, आनन्द मूर्ति जी का कहना है, यह आश्रम व्यवस्था पाखण्ड है। संन्यास लेकर घर छोडना मिथ्या है। ब्राह्मणो ने अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए संन्यास धर्म चलाया है। आनन्दमूर्तिजी कहते हैं कि 'संन्य.स' का अर्थ सम्+न्यास नहीं अपितु सत्+न्यास है।

आनन्द मार्ग अग्निहोत्र के विरुद्ध है उसके मत में ३ ऋण तथा ४ महा-यज्ञ हैं।

(१) माता-पिता की सेवा, प्रथम यज्ञ।
(२) साधना दूसरा यज्ञ।
(३) गुरु की पूजा तीसरा यज्ञ।
(४) गुरु को सर्वस्व अर्पण।

आनन्द मार्ग मे गुरु को सर्वस्व अर्पित करने का आदेश है। एक साधक या साधिका जब दीक्षा ग्रहण करता है या करती है तो उसे शरीर के प्रत्येक अंग पर हाथ रखकर कहना होता है कि यह सब मेरा नही, अपितु गुरु जी का है। इसपर निरन्तर अभ्यास किया जाता है कि मन में पूर्ण भावना उत्पन्न हो जाए कि यह अनुभव भी न हो कि गुरु जी का यह अंग नहीं है। जब साधक या साधिका पूर्णता को प्राप्त कर जाती है तो गुरू जी को अपना अभिन्न अंग समझती है।

आनन्द मार्ग में आनन्द मूर्ति जी के बिना कोई सिद्धि को नही प्राप्त कर सकता है। भक्तो का कहना है कि हमारे गुरुदेव अन्तर्यामी है, उन्होनें पूर्व मे अनेक अवतार धारण किये, किन्तु कल्कि का अवतार शेष था, इसलिए अब इस रूप मे आए है इसके पश्चात् जीवन मुक्त हो जाएगे।

आनन्द मार्ग मे साधन का महत्व प्रथम है—कहने को तो यम, नियम कहा जाता है किन्तु भोजन पान पर कोई नियत्रण नही है जिसकी अभिरु जिस वस्तु मे हो बस उसी से साधक हो सकते है। प्रत्येक सप्ताह में एक स्थान पर वहा के स्थानीय मार्गी एकत्र होते हैं, एक विशेष स्थान में वहा और दूसरे का प्रवेश निषिद्ध है, एकत्र हो दीपक बुझा कर समाधि मे लीन हो जाते हैं। जो बिल्कुल समाधिस्थ हो जाता है तो विभिन्न पशुओ की बोली बोलता है। आनन्द-मार्गियो की समाधि काक, बटेर, कोयल, कुत्ता, बिल्ली आदि सबो की बोली से पूर्ण रहती है। इन की पुस्तक का नाम है 'जीवन वेद' जो दो भागों मे छपा है, किन्तु सबों को यह पुस्तक लभ्य नही है। ये लोग वाममार्ग के समान भग की पूजा को अपना प्रतीक मानते हैं।

यह नया व्यक्ति पूजावादी सम्प्रदाय बिहार में उत्तरोत्तर बढता जा रहा है। इसमे दीक्षा देने वाले 'आचार्य' कहलाते हैं। आनन्द मार्गी को आचार्य के बिना कोई काम नही करना चाहिए। ये आचार्य ही गुरु के पास पहुच सकते हैं। एक नूतन साधक को पहले आचार्य के पास जाना पडता है। जब आचार्य समझ लेते है कि अब यह गुरु के पास जाने लायक हो गया तो गुरु जी के पास भेजते है। तब गुरु जी योग की विशिष्ट पद्धति बताते हैं। कहते है कि गुरु आनन्द-मूर्ति जी गृहस्थाश्रमी है, इन्होने अभी एक दूसरी शादी की है। भक्तो का कहना है कि नवबाला ने गुरु जी की सेवा में अपने को अर्पित कर दिया, अतएव गुरु जी को उसे ग्रहण करना पडा। दिन प्रतिदिन भक्तो की सख्या बढ रही है, पुलिस के कर्मचारी, आबकारी विभाग के आफिसर प्रतिदिन सख्या बढा रहे हैं। कितने ही समाज से बहिष्कृत है किन्तु गुरु जी की सेवा मे जाकर अवधूत कहलाते है। इन्होंने बिहार के 'दो-तीन स्थानो में शिशु विद्यालय भी खोले हैं। जिसमे लडकों को 'अंग्रेजी' माध्यम से शिक्षा दी जाती है। उद्देश्य यह है कि छोटी अवस्था से ही बालको के मस्तिष्क मे आनन्द-मार्ग की शिक्षा दी जाए। आनन्दमूर्ति जी ईशोपनिषद की व्याख्या भी करते हैं। वेद और सस्कृत साहित्य से अनभिज्ञ होते हुए भी सर्वज्ञ है। 'अन्धेन नीयमाना यथान्धा' वाली कहावत चरितार्थ है।

आनन्दमूर्ति जी जब समाज अथवा राष्ट्र सम्बन्धी भाषण करते है तो उस समय अपना नाम 'प्रभात रजन सरकार' नाम से प्रकाशित करते है। उनकी एक सस्था है—Progressive Federation of India भारत प्रगतिशील सघ। बगला भाषा मे इन का एक समाचार पत्र भी निकलता है जिस का नाम 'नूतन पृथ्वी' है। आनन्द मार्ग राष्ट्र भाषा हिन्दी का विरोधी है। प्रभात रंजन सरकार गाधी जी की अहिंसा को बहुत ही खराब समझते हैं, इनकी दृष्टि मे एक ही नेता है—वे नेता जी सुभाषचन्द्र बोस। इन का राजनैतिक विचार भी एक पहेली है। धार्मिक विचार तो पाठक थोडा जान ही गये हैं।

अब जनता का कर्तव्य है कि इस नूतन अवैदिक धर्म से राष्ट्र को अव-गत कराये, नही तो व्यक्ति-पूजावादी धर्म से राष्ट्र का बहुत बड़ा अकल्याण हो सकता है।

आर्यमार्तण्ड से साभार

सूचना

छात्रो मे फैली अनुशासन हीनता को दूर कर उनमे तथा प्रौढो मे स्वा-ध्याय की प्रवृत्ति जागृत करने का एक मात्र उपाय धार्मिक शिक्षा है। साथ ही आर्य समाज में नवीन रक्त का प्रवेश भी धार्मिक स्वाध्याय की प्रवृत्ति जागृति करने से ही होगा। इन सब को दृष्टि मे रखते हुए भारतवर्षीय वैदिक सिद्वात परिषद ने सिद्धांत विशारद, सिद्धात भूषण सिद्धांता-लंकार तथा सिद्धाताचार्य (दो खण्डो मे) परीक्षाओं का आयोजन किया है। भारत में सर्वप्रथम, द्वितीय और तृतीय आने वाले छात्रो को वर्ष-भर का शुल्क पुरस्कार स्वरूप भेंट किया जायेगा। उत्तीर्ण होने पर सुनहरी पत्र प्रदान किया जाता है। अधिक परीक्षार्थियो को सम्मिलित होकर आर्य समाज के प्रचार कार्य मे सहयोग देना चाहिए।

परीक्षा मन्त्री,
भारतवर्षीय वैदिक सिद्धांतपरिषद
परीक्षा कार्यालय, अलीगढ
—मित्रसेन आर्य



आर्यसमाज धर्मसाला...

(पृष्ठ ६ का शेष)

तक श्री प्रधान जी के निवास स्थान पर सप्ताह भर सत्सग का आयोजन भी खूब सफल रहा। डिपो बाजार के भाई-बहिन उस सत्सग मे सम्मिलित होकर लाभ उठाते रहे। लगभग दो सप्ताह धर्मशाला निवासी ज्ञानगगा मे स्नान करते रहे। हम सभा के तथा अपने मान्य उपदेशक प्रचारक महानु-भावो के विशेष कृतज्ञ हैं और आशा करते है कि इसी प्रकार प्रचार की योजना द्वारा हमे कृतार्थ किया जाता रहेगा।

समाज की ओर से १०१) वेद प्रचार ४०) मार्ग व्यय तथा ६) शुल्क आर्यजगत भेट किये गए।

—मन्त्री आर्यसमाज धर्मशाला

सैंसर बोर्ड के अधिकारीयों द्वारा भारत की ४९ करोड़ जनता के भविष्य के साथ खिलवाड़

प्रेषक—ओमप्रकाश आर्य विकल उज्जैन म० प्र०

भारत में बढ़ती हुई चरित्र हीनता गुण्डागरदी एव बलात्कार, अपहरण आदि की गाथाए आजकल चर्चा का विषय बनी हुई हैं। परन्तु इस के कारण की तरफ कभी किसी ने ध्यान नही दिया है। इसका एक मात्र कारण है। 'अश्लील' चल चित्र एव विनोबा के सिद्धान्तो का जनाजा निकालने वाला सैंसर बोर्ड के अधिकारी देश के करोड़ो लोगो के जन जीवन के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं।

अभी-अभी मेरी निगाह फिल्म 'बदतमीज' के पोस्टरो की तरफ पड़ी मेरे दिल मे यही ख्याल आया कि ऐसे अश्लील चित्रो को पास करने वाला सैंसर बोर्ड भी किसी से कम नही है।

सैंसरबोड़ द्वारा पास किये गये चित्रो मे जितनी अश्लीलता पाई जाती है, वह तो फिल्म के अन्दर ही रह जाती है। परन्तु बाहर के आकर्षक अश्लील चित्रो के द्वारा जो पब्लीसीटि की जाती है, वह मनुष्य को पतन के मार्ग पर ले जाने मे काफी है। इस के पूर्व इन्दौर में अश्लील, चित्रो के विरुद्ध आन्दोलन चलाया था। वहा की महिलाएं और बच्चो ने भी साथ दिया था, परन्तु विनोबा भी अपने स्थान पर ही है और महिलाए और बच्चे भी उनके स्थान पर है?

अब हम यह जानना चाहेगे कि विनोबा भावे का आन्दोलन सिर्फ एक ही अश्लील चित्र 'लम्बे हाथ' के पोष्टरो मे था। क्या उनके इस आदोलन मे समाप्त होने के पश्चात् देश मे अश्लीलता के चित्रो मे थाके साथ अश्लीलता का जनाजा निकल गया? यह नही तो विनोबा भावे की वाणी को लकवा क्यो मार गया है। नगर के चौराहो पर अश्लील बोर्ड, जिन्हे स्कूल मे जाने वाली छात्राए देखती है, तो उनकी गर्दन शर्म से नीचे झुक जाती है। ये अश्लील चल-चित्र।

लाखों मनुष्यों के हृदय में वासना-रूपी जहर घोलने के लिए काफी हैं।

विदेशो मे बनने वाली फिल्म 'आदम और हवा' जो कि अंग्रेजी में बनने वाली है, जिसमें आदमी और औरतो को पूर्णतः नग्न दिखाया जाएगा वह यदि भारत में प्रदर्शित हुई तो लोगों पर असर क्या होगा। और उसके पोष्टर किस प्रकार के होगे, आप स्वय ही कल्पना कर सकते हैं, वह क्या नौनिहालो, तरुण युवक और युवतियो को चारित्रिक पतन की ओर अग्रसर नही करेगी।

फिल्मो की बदोलत ही देश चरित्र हीनता के पथ पर अग्रसर है। जबकि पाश्चात्य लोग, भारतीय सभ्यता को सस्कृति को अपनाने मे अपना गौरव समझते हैं। वही भारत में पाश्चात्य सभ्यता का और जोर बढ़ता जा रहा है। आजकल तो इन्ही फिल्मों की बदोलत महिलाओ के वस्त्र, गले से आकर सीने तक उतर आये हैं। तथा वस्त्रो का पहरावा इस प्रकार का हो गया है कि, उसमे शरीर के अवयव तक झाकने लगते हैं। मानो कि उन्होंने अपने शरीर को ढकने के लिए ही नही बल्कि शरीरके प्रदर्शन के लिए किए है। इन्ही वस्त्रो को पहनकर जब नारिया सडको पर चलती हैं, तब वह चारों तरफ यही देखती हैं कि हमारी तरफ कोई देख रहा है अथवा नही? मानो कि यह ड्रेस नही पहनती अपने शरीर का प्रदर्शन कर रही है।

देश में बढते हुए रोमास, अपहरण बलात्कार, व लडकियो के भागने, के समाचार इन्ही की देन है।

सस्ती लोक प्रियता प्राप्त करने के लिए विनोबाभावे के इन्दौर मे अश्लील, चित्रों का आन्दोलन चलाया था। परन्तु यह आन्दोलन भी आंधी की तरह आया और तूफान की तरह चलाया गया, फिल्म मे बढ़ती हुई अश्लीलता का अनुमान आप ही कर सकते है। यदि सैंसर बोर्ड का बस चले तो वह एक दिन भारतीय फिल्मों मे भी अभिनेत्रियो के नग्न पोज पास करके भारत मे महिलाओ को नग्न घुमायेंगे। क्योकि यह कटु सत्य है कि फिल्मो मे जिस प्रकार के वस्त्र पहनकर, अभिनेता व अभिनेत्रिया प्रदर्शित की जाती हैं उसी प्रकार की महिलाएं वस्त्र पहनती हैं। बड़े-बड़े शहरो में तो महिलाएं अपने साथ दर्जियो को इसी उद्देश्य से सिनेमा दिखाने ले जाती हैं कि वह अभिनेत्रियों के वस्त्रों के डिजाइन देखे व इस प्रकार के वस्त्र सी कर दे।

आर्य संस्थाओं तथा आर्य बन्धुओं से निवेदन

ले०—श्री मुरारी लाल जी मंत्री आर्यसमाज जोगेन्द्र नगर

आर्य समाज जोगिन्द्र नगर ने पंजाब केसरी लाला लाजपत की जन्म शताब्दी के उपलक्ष में अपने वार्षिक उत्सव पर दिनाक १३ अप्रैल १९६६ को वैशाखी के महत्वपूर्ण दिवस पर लाला लाजपत राय पुस्तकालय एवं दैनिक वाचनालय की स्थापना की है। जनता में आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द की विचारधारा का प्रचार दैनिक पत्र, साप्ताहिक व मासिक पत्रिकाओं और साहित्य द्वारा पहुंचाने में पुस्तकालय एवं वाचनालय का स्थान बहुत महत्वपूर्ण रखता है। भारत में आज ईसाई मिशनरियों ने स्थान २ पर दैनिक वाचनालय तथा लाइब्रेरी द्वारा अपने साहित्य का प्रचार कर ईसाई मत का विकास कर रहे है प्रत्येक आर्य समाज के अतंर्गत दैनिक वाचनालय एवं पुस्तकालय खोल कर आर्यसमाज के प्रचार को बढावा दिया जाना आज के युग मे अतिआवश्यक है जिस से दैनिक पत्रो के साथ २ आर्यसमाज का साहित्य द्वारा जनता मे प्रचार हो सकता है। आर्यसमाज ने इसी उद्देश्य से लाला लाजपत लाइब्रेरी की स्थापना की है।

२—लाला लाजपतराय आर्य-समाज को अपनी माता और महर्षि दयानन्द को अपने गुरु मानते थे लाला लाजपतराय ने जहा आर्यसमाज के शिक्षाक्षेत्र मे सक्रिय कार्य किया था वहा स्वतन्त्रता सग्राम मे भी अपनी अमिट छाप छोड़ गए है जहा पजाब केसरी प्रभावशाली वक्ता थे वहां उच्चकोटि के लेखक भी थे। उन्होने अमेरिका में "आर्यसमाज" नामक पुस्तक भी लिखी है इसके अतिरिक्त अनेकों विषय पर समय-समय पर साहित्य का सम्पादन करते रहे हैं परन्तु आज पंजाब केसरी लाला लाजपतराय द्वारा लिखित पुस्तकें आर्य प्रतिनिधि व सार्वदेशिक प्रकाशन विभाग में नही है और मारकीट मे भी बहुत कम मिलती है इसलिए आर्य बन्धुओ तथा आर्य-सस्थाओ के पास लाला लाजपतराय द्वारा लिखित पुस्तकें व अन्य साहित्यकारों द्वारा पंजाब केसरी लाला लाजपतराय पर लिखि पुस्तकें हों तो कृपया भेजने का कष्ट करें या सूचित करने का कष्ट करे।

३—दूसरा निवेदन यह है कि लाला लाजपतराय लाइब्रेरी को पजाब केसरी लाला लाजपतराय के भिन्न-भिन्न प्रकार के चित्रों की भी आवश्यकता है जिन-जिन महानुभावों के पास हो तो भेजने का कष्ट करें।

४ - तीसरा आर्य सस्थाओं एवं दानी महानुभावों की सेवा में पुरजोर निवेदन तथा अपील है कि इस संस्था को उन्नतिशील बनाने हेतु सामाजिक, राष्ट्रीय, अध्यात्मीक वैदिक धर्म और महान पुरुषो के जीवन चरित्र सम्बन्धित पुस्तकें दान रूप में भेज कर पुस्तकालय को विकसित करने में तन, मन, धन से सक्रिय सहयोग देकर कृतार्थ करे।

नोट—समस्त प्रकार के सुझाव एव सहायता श्रीमान् राजकुमार मन्त्री लाला लाजपत राय लाइब्रेरी आर्य समाज जोगेन्द्र नगर के पते पर भेजने का कष्ट करे।

आर्यसमाज धर्मशाला (कांगड़ा) में प्रचार

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजाब की ओर से कागड़ा जिला मे प्रचारार्थ सभा के सुयोग्य उपदेशक श्री ओम्प्रकाश जी तथा प्रसिद्ध भजन मण्डली श्री ठा० दुर्गासिंह जी तथा श्री नत्थूराम जी भ्रमण कर रहे हैं। २२-६-६६ से ४-७-६६ तक आर्य-समाज धर्मशाला में बड़ी धूमधाम के साथ प्रचार कार्य सम्पन्न हुआ। बाल्मीकि रामायण की कथा को लोगों ने बडे चाव से सुना और अनेक संशयों की निवृत्ति हो कर उनके ज्ञान मे इस कथा से पर्याप्त वृद्धि हुई। ठा० दुर्गासिह जी व श्री नत्थूराम जी के भजनोपदेश समयानुसार खूब रंग जमाते रहे। भजन मण्डली की लग्न और कार्य शैली की सभी श्रोताओं ने मुक्त कण्ठ से प्रशसा की।

आर्यसमाज मन्दिर में कथा का कार्यक्रम रात्रि को ८॥ से १० तक चलता था परन्तु मध्याह्न में ४ से ५॥

(शेष पृष्ठ ५ पर)

यजुर्वेद यज्ञ और श्रद्धांजलि समारोह

आर्य समाज के नेता स्वर्गीय ला० शंकरदास जी के परिवार मे उनकी वार्षिक स्मृति में यजुर्वेद पारायण यज्ञ की समारोह पूर्वक पूर्णाहुति के अवसर पर बडी सख्या मे उनके परिवार मे नगर के गण्य-मान्य भाई-बहिने पधारी कई मान्य सज्जनो ने सारे परिवार को बधाई दी। स्वर्गीय के प्रति श्रद्धांजलिया व्यक्त की।

सब से पहिले डी. ए. वी. कालेज के प्रिंसिपल श्री भीमसेन जी बहल ने परिवार को बधाई देते हुए कहा कि स्वर्गीय ला० शकर दास जी आर्यसमाज के बड़े प्रेमी थे। दयानन्द कालेज हो या स्कूल, सभा हो या समाज सब की सेवा के लिए उन्होंने बड़ा तप किया उन का परिवार भी अपने पिता के सेवा मार्ग पर चलता रहे।

साईंदास एंग्लो वैदिक H/S स्कूल जालन्धर के प्रिंसीपल श्री प्यारेलाल जी बेरी ने बोलते हुए कहा—जब आर्य समाज विक्रमपुरा का नाम आता है, तब ला० शकरदास जी याद आ जाते हैं। उन के तप के बिना इतना विशाल मन्दिर खडा न होता। तन मन लगाना असली कुर्बानी है। एक दीपक जल कर सारे दीपकों को जगमगा देता है। वह उज्ज्वल दीपक थे। आज समाज को कार्यकर्ता चाहिए। उन जैसी लग्न भरी जाये।

प्रो० वेदीराम जी एम०ए० ने सभा की ओर से श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि आज हम जिस पवित्रात्मा का स्मरण कर रहे हैं उनके चरणों मे बैठकर मैंने बहुत कुछ सीखा है। युवक उनसे स्फूर्ति लेते थे। जलूस मे बीमार होते हुए भी साथ चलते उनके जीवन श्रद्धा और कर्म का सच्चा समन्वय था। स्वर्गीय का यह अर्थ यह भी है कि आत्मा मे रमण करने वाला। इस दिशा मे भी वह बहुत ऊंचे थे।

जालन्धर नगरपालिका के प्रधान ला० बलदेवराज जी ने बोलते हुए कहा कि स्वर्गीय ला० शकरदास जी आज शरीर के रूप मे तो हमारे पास नही हैं परन्तु शिक्षा रूप मे उनका जीवन आज भी हमारा पथ-प्रदर्शन करता है। पुत्र के लिए अपने पिता की सबसे सुन्दर स्मृति यह है कि वह पिता के व्रतो, आदर्शों को अपनाता जाये। माता का मन जीत सके तथा पुत्रो को उन्नत करता रहे।

आर्यसमाज लुधियाना माडल-टाउन के प्रधान ला० सन्तराम जी ने सुन्दर शब्दो में कहा कि—जब मैंने स्वर्गीय ला० शकरदास जी के पहली बार दर्शन किए तो मन मे बडी प्रसन्नता हुई। आर्य समाज के लिए उनके मन में बडी तडप था। युवकों को तो वह सदा समाज के काम करने की प्रेरणा किया करते थे। प० सत्यदेव जी विद्यालकार ने भाव भरे शब्दो मे बोलते हुए कहा कि—समाज मे नेता-गिरि करने वाले लोग तो बहुत मिल जाएगे। किन्तु समाज मे झाड़ू लगाने वाले श्रद्धालुओ की बडी कमी है। स्वर्गीय ला० शकरदास जी सच्चे समाज सेवी थे। ऐसे व्यक्ति विरले ही होते हैं। विक्रमपुरा का समाज मन्दिर बनवा गये। एक बात है। यदि समाज मन्दिर में समाज रहे तभी वह समाज मन्दिर है, अन्यथा वह कुछ और ही है। हमे इधर ध्यान देना है आर्यसमाज माडल टाउन जालन्धर के मान्य कैप्टन शिवराम जी ने श्रद्धाजलि देते हुए कहा– कि परिवार के लिए जीने वाले तो बहुत होते है किंतु समाज की सेवा मे अपना जीवन देने वाले कम होते है. ला० शकरदास जी का जीवन साक्षात् यज्ञमय था। आर्यसमाज की सेवा मे तो वह धूप, गर्मी का भी विचार नही करते थे। वृद्ध आयु मे भी उनमे जवानों की स्पिरिट काम करती थी। वह सच्चे कर्मयोगी थे। उनका यह परिवार प्रभु करे फूले-फले। माडल हाउस समाज के मान्य

सभा द्वारा

समाजों में प्रचार व कथाएं

आर्य समाज धारीवाल–

मे प० त्रिलोक चन्द्र शास्त्री व प० ज्ञान चन्द जी भजनोपदेशक सभा की कथा तथा मधुर भजनो द्वारा प्रचार हुआ। एक दिन प० आशा राम जी शास्त्री मन्त्री समाज के प्रबन्ध मे माडल स्कूल मे भी दोनों का उपदेश व भजन हुए। समाज का वार्षिकोत्सव भी अक्तूबर मास मे निश्चित किया गया। एक दिन डी० ए० वी० स्कूल मे भी प्रचार किया गया। सभा को वेद प्रचार भी मिला।

आर्य समाज गुरदासपुर–

में भी पं० त्रिलोक चन्द्र शास्त्री तथा प० ज्ञान चन्द जी भजनोपदेशक सभा की ओर से प्रचारार्थ गये। वहा भी समाज का वार्षिकोत्सव अक्तूबर मास मे नियत किया गया।

जालन्धर मे यजुर्वेद यज्ञ – आर्यसमाज के स्वर्गीय नेता ला० शकरदास जी त्रेहन के सुपुत्र श्री ज्ञान चन्द जी त्रेहन ने अपने परिवार मे कोठी न० २६५ लाजपत राय नगर माडल टाउन मे अपने पूज्य स्वर्गीय पिता जी की वार्षिक पुण्य स्मृति मे यजुर्वेद परायण यज्ञ ता० चार जुलाई से समवार से प्रारम्भ किया। ता० १० जुलाई को समारोह से पूर्णाहुति हुई। यज्ञ मे सभा की ओर से प० त्रिलोक चन्द्र शास्त्री प० ज्ञान चन्द जी भजनोपदेशक तथा आर्य समाज विक्रमपुरा जालन्धर के पुरोहित प० भीम सिंह जी शामिल हुए।

ला० टेकचन्द जी ने भी बड़े मार्मिक शब्दो मे श्रद्धाजलि दी। प० त्रिलोक-चन्द्र शास्त्री ने सबसे निवेदन किया कि स्वर्गीय ला० शकरदास जी इस परिवार के पिता थे -इस नाते परि-वार ने तो अपना कर्त्तव्य पूर्ण किया, पर वह समाज के भी थे. अगले वर्ष समाज उनका दिवस मनाए।

आर्यसमाज माडल हाउस

मे पण्डित खुशी राम जी शर्मा महो-पदेशक सभा की मनोहर कथा तथा प० बेला राम जी के मधुर भजन होते रहे। जनता ने कथा एवं संगीत से बडा लाभ उठाया। नर-नारियो की काफी उपस्थिति होती रही। स्त्री समाज के सत्सग मे प० त्रिलोक चन्द शास्त्री व प० ज्ञानचन्द जी का उपदेश व भजन हुए।

आर्यसमाज माडल टाऊन

मे स्वामी सर्वानन्द जी का मधुर उप-देश होता रहा तथा प० ज्ञानचन्द जी के मधुर भजन होते रहे। जनता ने खूब लाभ उठाया।

कांगड़ा की समाजों में–

जिला कागडा की आर्यसमाजों में सभा की ओर से प० ओ३म्प्रकाश जी आर्य महोपदेशक तथा डा० कुलामिह जी व सुभाष जी की भजनी प्रचार के लिए गए हुए हैं। वहा नगरों में खूब प्रचार हो रहा है।

आर्यजगत का वेदांक

सभा का साप्ताहिक पत्र आर्यजगत समय २ पर अपने विशेषांक प्रकाशित करता रहता है। आर्य समाज के वैदिक सिद्धांतो पर ठोस सामग्री दी जाती है। इस बार श्रावणी वेद सप्ताह रक्षाबन्धन के अवसर पर अगस्त मे आर्यजगत का (वेदांक) प्रकाशित होगा। इस में वेद विषय वैदिक विद्वानो के लेख होंगे। वेद के विषय मे उत्तम सामग्री होगी। पढने तथा मनन करने योग्य विचार मालाए होंगी। इतनी समाजे तथा संस्थाए है। पता नही क्या होता जाता है। जिसके पास इतनी समाजे व संस्थाए हो, उसे किसी प्रकार की कमी कैसे हो सकती है? पर बात रुचि व ध्यान की कमी की है। कई संस्थाए तो नमस्कार के योग्य है। बडा सहयोग देती है। पर बहुत-सी समाजे व संस्थाए ध्यान नही देती। निवेदन है कि :—

सभा आप की व आर्यजगत आप का है। हम तो छोटे सिपाही हैं। इस बार इस वेदांक को पचास-पचास से कम तो कोई भी समाज व संस्था न मंगवाये। अधिक से अधिक शीघ्र आर्डर दें। विद्वान्, लेखक महोदय गंभीर वेद विषयक लेखों से कृतार्थ करें। –सं०

आल इंडिया दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियापुर

आल इंडिया दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर ने अपने कार्य-कर्त्ताओं के अनथक प्रयत्नो द्वारा इस वर्ष (१९६५-६६) मे ५०९१ विधर्मियो को शुद्ध करके उनका पुनः वैदिक धर्म मे प्रवेश किया है। इस के अतिरिक्त ३८ हिन्दू देवियो को विधर्मियो तथा आततायीओ के पंजे मे मुक्त कराके उन मे से कुछ की शादी कर दी गई है और शेष को उनके माता-पिता के पास पहुचा दिया गया है।

रामदास
प्रधान मिशन

आर्य समाजों को सूचना

वेद सप्ताह श्रावणी उपाकर्म का वा आ रहा है। उन दिनों सारी समाजों का क्रम बनाने में कठिनता हो जाती है। इसलिए पहली अगस्त से ३० सितम्बर ६६ तक सारा समय वेद सप्ताह की कथाओं के लिए है। समाजों से निवेदन है कि सभा को इस विषय में अभी से सूचना दें ताकि सब का समुचित कार्यक्रम बनाया जा सके।

—वेद प्रकाश मल्होत्रा
सभा मन्त्री आर्य प्रादेशिक सभा जालंधर

अदालती नोटिस

इस्तहार जेर अदालत श्री देसराज जी महाजन सबजज दरजा अव्वल राजपुरा जिला पटियाला

सेकशन केस ४ नम्बर मोवरखा १-५-६६

धर्मवीर वल्द ऊधेराम सकना टौनशिप राजपुरा—सायल

बनाम—जनरल पवलिक

दरखास्त हसूल सार्टिफिकेट जान-शीनी बावत ५६१/- मुतलका ऊधेराम मुतवफी इस्तहार बराए इत्तला आम पबलिक

मुकद्दमा अवाम वाला में हर खासो आम को बजरिया इस्तहार हजा बारफत आर्य-जगत जालन्धर इत्तला दी जाती है और सायल धर्मवीर ने दरखास्त हसूल सर्टिफिकेट जानशीनी बावत ५६१/- मुतलका ऊधेराम मुतवादी पेश की है अगर किसी को इस बारे में कोई उजर होवे तो वो तारीख पेशी २२-७-६६ को हाजिर अदालत हजा होकर उजर पेश करे वरना मुनासिब हुक्म दिया जाएगा।

आज तारीख ६-७-६६ को मेरे हस्ताक्षरो व मुहर अदालत से जारी किया गया।

अदालती नोटिस

बा-अदालत जनाब श्री जगवन्त-सिंह जी सीनियर सब-जज वा (गार-डियन जज) फिरोजपुर।

केस न० १५/१९६६

श्रीमती यमुनादेवी बेवा सोभासिंह वलद डोगरसिंह ग्राम इन्द्री (Indri) तहसील व जिला करनाल सायल।

बनाम :—

नम्बर १. —कश्मीरसिंह पुत्र सोभासिंह पुत्र डोगरसिंह ग्राम इन्दरी (Indri) तहसील व जिला करनाल।

नम्बर —२. हरबन्ससिंह पुत्र बहादुर चन्द्र पुत्र चौधरी राम ग्राम ठेठर (Thathar) तहसील फिरोज-पुर फरीक दोयम।

दरखास्त जेर दफा ८ हिन्दु मनोरटी वा गारडियनशिप एक्ट (Hiodu Minnority and Gardian Ship Act) बराए लेने इजाजत बेचने आराजी नबालगान।

बनाम दरखास्त व आम

ऊपर लिखे मुकद्दमे में तारीख १८-७-६६ मुक्करर हुई है। इसलिए हर खास व आम को सूचित किया जाता है कि अगर किसी आदमी को कोई उजर निस्बत दरखास्त मजकूर के हो तो वह ता० १८-७-६६ को खुद या बकील की राहीं हाजिर होकर पेश करे। वरना हसब-जाब्ता कारवाई की जाएगी।

आज मिति २७-[illegible] मेरे अदालत व दस्तखत [illegible] जारी किया गया।

पुस्तक परिचय

महात्मा हंसराज [illegible]

ले० श्री हीरालाल जी औलक एम० ए० अध्यक्ष हिन्दी विभाग दयानन्द कालिज शोलापुर कीमत ३० नै. पै.। पृष्ट सं० १८

यह छोटी सी पुस्तक २०×३०/३२ के आकार में इंग्लिश भाषा में प्रका-शित की गई है।

इस में म० हंसराज जी के गुणों पर प्रकाश डाल कर पुस्तक के अन्त में महान व्यक्तियों की सम्मतियों का संग्रह भी किया गया है। पुस्तिका सब प्रकार से उपादेय है।

प्राप्ति स्थान—प्रो० एच० एल० औलक एम० ए० दयानन्द कालिज शोलापुर।

सूचना

आर्य समाज विक्रमपुरा जालन्धर का साप्ताहिक सत्संग रविवार १७.७.६६ को प्रातः आठ बजे आरम्भ होगा। देव यज्ञ के पश्चात संध्या प्रार्थना तथा पुरोहित जी का मनोहर व्याख्यान होवेगा। सभी सज्जनों से प्रार्थना है कि समय पर पधार कर अनुगृहीत करे।

—मन्त्री आर्य समाज विक्रमपुरा जालन्धर शहर

शुभ बधाई

आर्य परिवार को यह समाचार पढ़ कर अति प्रसन्नता होगी कि श्री कान्ति प्रकाश जी अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग प्रतिनिधि सभा के सुपुत्र श्री सुभाष चन्द्र जी आर्य का पाणिग्रहण संस्कार श्री त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री बी. ए. सम्पादक आर्यजगत की सुपुत्री सरस्वती जी आर्या के साथ उनके निवास स्थान कादियां मे सम्पन्न हुआ। विवाह संस्कार श्री महेन्द्र प्रताप जी एम. ए. ग्वालियर तथा राजपाल मदन मोहन जी ने पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न कराया। श्री प्रि० रामचन्द्र जी जावेद एम. ए. ने वर वधु को आशीर्वाद के साथ २ गार्हस्थिक उप-देश को गागर में सागर भर दिया।

२—बरात का स्वागत कादियां के सभी दुकानदारों व सर्वसाधारण ने पुष्पो से किया भोजनादि का प्रबन्ध नागरिक ढंग से किया गया था। विवाह सब प्रकार से सराहनीय था।

—व्यवस्थापक

विचार तरंग [१३]

(पृष्ठ १ का शेष)

अध्यापक के हृदय में कोई नए बीज नहीं बोती अपितु जो बीज पहले से ही विद्यमान रहते हैं उन को खिलाती है, विकसित करती है। उस शिक्षा से क्या लाभ जिस से कि हमें पूर्ण ज्ञान प्राप्त न हो और हम आत्म-निर्भर न हो सकें। मौलिकता का यदि हम आभास नही दे सकते तो हमारी शिक्षा, चाहे वह विश्वविद्यालय की क्यों न हो, वृथा है। ऐसे ही विचार स्वामी विवेकानन्द जी ने प्रकट करते हुए लिखा :—"True education consists [i]n learning to think for [one]self and becoming [mer]ely a receptacle of [othe]r peoples thought how-ever,, brilliant."

विद्यार्थी को भी साधक बनना होता है। संकुचितता से उसे घृणा होनी चाहिये। ज्ञान प्राप्ति के लिये मन लालियित रहना चाहिये। आ नो भद्राःक्रतवोयन्तु विश्वत: 'Let noble thoughts came to us from everyside' दृष्टिकोण नितांत बना रहना चाहिये। कठिन परिस्थितियों के कारण हीन भाव कदापि भी मन में नहीं आना चाहिये स्मरण रहे कि कीचड़ में कमल भी उदय होते हैं।

★ संगठित होकर काम करने से वैदिक धर्म का प्रचार होगा, कुरीतियों का नाश हो कर देश और जाति का उद्धार होगा और संसार में आर्य सभ्यता फैलेगी।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, पंजाब

अपनी अन्तरंग सभा में प्रा[illegible] सूर जी की माता श्रीमती जयलक्ष्मी सूर जी के स्वर्गवास पर जो शोक प्रस्ताव पास किया था, उसका उत्तर निम्न प्रकार से आया है—

श्रीयुत वेदप्रकाश जी मलहोत्रा

हमारी पूज्या स्नेहमूर्ति माताजी श्री जयालक्ष्मी सूरजी के हृदयद्रावक दु:खप्रद अवसान पर आपका समवेदना-त्मक सहानुभूतिपूर्ण आश्वासन सन्देश मिला। जिससे परिवारजनों के शोक-सन्तप्त उद्विग्न मन को कुछ सान्त्वना प्राप्त हुई है। एतदर्थ हम आपके आभारी हैं।

—प्रतापसिंह सूरजी, [illegible] सूरजी

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मासिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P 121

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक ३१। १६ श्रावण २०२३ रविवार – दयानन्दाब्द १४१ – ३१ जुलाई १९६६ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

सरकार कांग्रेस की नीतियों पर दृढ़

इन्दिरा जी का आलोचकों को उत्तर

कांग्रेस संसदीय दल में भाषण

नई दिल्ली—प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी ने आज यहा कांग्रेसी ससत्सदस्यो को बताया कि रूस से चौथी योजना मे ८३० करोड रु० की सहायता ही प्रत्याशित है। श्रीमती गाधी ने कहा कि सरकार दल की घोपित नीतियो पर स्थिर है और कि इन मे कोई शैथिल्य या परिवर्तन नही आया। आर्थिक मोर्चे की कठिनाइयो को दूर करने के लिए, जो कि विदेशी सहायता मे ह्रास और विदेशी हमले से गम्भीर हुई, रुपए का अवमूल्यन किया गया। अब हमे सन्तुलन को खोए विना कठिनाइयो का सामना करना है। ये कठिनाइया जटिल हैं, लेकिन हल से दूर नही। उन्होने कहा कि रूस का काश्मीर पर स्टैंड अपरिवर्तित है। आपने कहा कि पाकिस्तान, चीन और अमरीका से सहायता लेने के लिए स्थिति का अनुचित लाभ उठा रहा है।

★ सत्य, शिव, सुन्दरम्, शाश्वत शान्त का पाठ याद करो।

★ शुद्धि और वेद प्रचार के लिये अपने दिल मे दर्द लेकर मरना और जीना सीखो।

★ इस ससार मे से क्या लेकर जाओगे। टुक इस पर भी तो ध्यान करो।

वे दा मृ त

विश्व की विजय का संकल्प

कृतम्मे दक्षिणे हस्तेजयो मे सव्य आहितः।
गोजिद भूयांसश्वजिद धनञ्जयो हिरण्यजित् ॥

अर्थ —भगवान की कृपा अनुकम्पा है कि (कृतम) कर्म, पुरुपार्थ है (मे) मेरे (दक्षिणे) दाये (हस्ते) हाथ मे और (जय) विजय है (मे) मेरे (सव्ये) बाये हाथ मे (आहितः) रखी हुई है। मै तो अपने कर्म पुरुपार्थ से (गोजित्) गौ को भूमि को जीतने वाला (भूयासम्) बन जाऊ (अश्वजित्) अश्वों का विजयी (धनञ्जय) धन भण्डारो को विजय करने वाला तथा (हिरण्यजित्) स्वर्ण खजानों को जीतने वाला हो जाऊ जिस ओर भी जाऊ और कर्म व पुरुपार्थ बल मे मैं जिस पदार्थ पर हाथ रखू — उसपर विजयी हो जाऊ।

इस का भाव यह है

मैं कर्मयोग की साधना करके कर्मयोगी बन गया हू। निरन्तर कर्म करते रहना मेरे जीवन का एक स्वभाव बन गया है। आलस्य भूल कर भी मेरे पास नही आ सकता। मेरा दाया हाथ कर्म का केन्द्र बन गया व ये हाथ पर मेरे विजय रखी है। जो काम हाथ मे लेता हू, उस मे विजयी हो जाता हू। मैने गौओ को जीता, भूमि पर विजय प्राप्त की। अश्वशक्ति को जीता। राष्ट्र का विजयी हू धनसम्पत्तियां, स्वर्ण के भण्डार मेरे हाथ मे हैं। कर्मयोगी बन कर प्रभु की कृपा से सब ओर विजय ही विजय मिलती जाती है। अथर्व वेद ७-५०-८

ओ उद्वय तमसस्परि स्व: पश्यत उत्तरम् ।
देव देवत्रा सूर्य मगन्म ज्योति रुत्तमम् ।
हमे जाना वहा है, हे जहा पर जोति उजियाली ।
प्रभा के पुंज सविता से जहा फैली ललित लाली ॥
प्रकृति से पार होकर श्रेष्ठ नर निज तेज को देखो ।
जहा है जोति उत्तम, तुम उसी परमेश को देखो ॥

आहा ! कैसा मधुर गान है !! कैसा शान्ति दायक, चिन्ता विदारक, उद मोनहारक, शीतल, सुखद हृदय आह्लादकारी, मनोमलिन्य हारी, आत्मानद दायी, रमणीय राग है। पथिक चिंता न करो। स्वच्छ मार्ग है सुरक्षित समरण-पथ है ! बढे चलो, अविवेक का नाश करो। तेज को पास करो दिव्य धाम प्रकाशपुंज, सर्वश्रेष्ठ धाम को प्राप्त हो जाओ यही तुम्हारा ध्येय अभीष्ट का प्राप्ति-स्थल, और जीवन का उद्देश्य है।

ऋषि दर्शन

एका राजाऽर्य सभा

राज्य के कार्यो को ठीक ढग से चलाने के लिए तथा प्रजा को सुखी बनाने के निमित्त पहिली राजार्य सभा बनानी चाहिए। जिसका काम सारे राज्य प्रबन्ध को चलाना है। राजनीति ठीक चले।

द्वितीय आर्य विद्यासभा

दूसरी सभा आर्य विद्या सभा बनानी चाहिए उस के द्वारा सारे राज्य मे विद्या तथा शिक्षा का कार्य किया जाए। कोई भी अशिक्षित न रहे, इस की देख-भाल तथा शिक्षा का प्रबन्ध आर्य विद्या सभा की ओर से होना चाहिए।

तृतीया आर्य धर्मसभा

तीसरी सभा का नाम आर्य धर्म सभा है उसका काम यह है कि सारे राज्य मे धर्म की उन्नति का प्रबन्ध होता रहे। सारी जनता ठीक तथा सदाचार मार्ग पर चलती रहे, बुराई पनपने न पाए। आचार-विचार की उन्नति का प्रबन्ध आर्य धर्म सभा करती रहे।

एकवचनस्यैव निर्देशात्

वेद मन्त्रों मे जहा भी स्त्री-पुरुप के विवाह की या गृहस्थ की चर्चा आती है वहा पर एक वचन का ही प्रसग मिलता है। इसलिए पुरुष के लिए एक स्त्री तथा स्त्री के लिए एक पुरुष का ही विधान है—

भाष्य भूमिका मे

धर्म के बिना क्या ?

(श्री पं. तिलक राज जी शर्मा जालन्धर)

वर्तमान समय में जबकि सर्वत्र निरकुशता, उच्छृङ्खलता, दुर्व्यसन झूठ कपट, चोरी, व्यभिचार, आलस्य, प्रमाद आदि अनेको दोष विश्व मे अपना घर बनाए बैठे है इस के मूल कारण क्या हैं इस पर गम्भीर दृष्टि-पात करने से यह भी प्रतीत होता है कि हर जीव अपने धर्म कर्म सभ्यता और सस्कृति को भूल बैठा है मेरा धर्म क्या है ? मै इस ससार मे किस-लिए आया हू ? क्या करना है ? और क्या करना चाहिए ? इस मे कि कर्तव्यविमूढता ही सब ओर अपना अधिकार कर बैठी है। खेद का विषय तो यह है कि जिस भारत की सभ्यता सस्कृति धर्म कर्म और आचार इतने ऊंचे हो जिनका उदाहरण और कहीं नही उसकी भी आज ऐसी दशा जो हम सभी देख रहे है बिगडती जाए ? अगर इस पर विचार किया जाए तो यह कहना उचित है कि हम अपने आपको भूल चुके है कि हम क्या थे ? और हमारे पास क्या है ? इस का प्रमाण सब मे बडा यही है कि आज हमे पाश्चात्य भाषा वेष सभ्यता अच्छे लगते है और अपने महान ऋषियो के त्याग पूर्ण चरित्र धर्म एव ईश्वर मे ग्लानि होने लगी है इस कारण सारी पश्चिमीय शिक्षा सभ्यता का प्रभाव है। कोई यह कहना उचित नही ? कि यह बिगाड वही से प्राप्त हो रहा है। पाश्चात्य शिक्षा भी दी जाए परन्तु हमारे पास जीवन को सुखी बनाने के लिए वेद शास्त्रो को भी प्राथमिकता होनी चाहिए जिस मे सच्ची सुख शान्ति और सदमार्ग मिल सकता है। इस के बिना हमारे पास और कोई साधन है नहीं। इस मे जीवन को सुख शान्ति मे व्यतीत करने के लिए एक नियमों का सूत्र बना पडा है जो कि बिलकुल स्पष्ट और साफ है उस साधन पर चलने से ही हमारा कल्याण हो सकता है। वस्तुत. ये दुर्गुण तथा दोष बढते क्यो चले जा रहे हैं क्योकि हम इससे छुडाने वाले अपने सर्वश्रेष्ट धर्म की ओर से मुडते दिखाई दे रहे हैं। कोई पाश्चात्य विद्या का अभ्यास न कराया जाए ऐसा नही परन्तु उससे पूर्व अपने धर्म की शिक्षा अध्ययन परमावश्यक है। विष को अकेले खाने से मृत्यु को बुलाना है। किन्तु उसे औषधि के साथ खाया जाए तो अमृत का फल देता है इसी प्रकार हम भारत वासियो को भी धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ या धर्म से सशोधन करके पाश्चात्य विद्या का अभ्यास करना चाहिए। क्योंकि ऐसा न होने से हम सभी असली स्वरूप को भूलते जा रहे हैं। यह शक्ति यदि है तो केवल धर्म मे कि वह पुन: सुख शान्ति के मार्ग पर ला सकता है।

क्योकि धर्म ही मनुष्य का जीवन प्राण है और इस लोक व परलोक मे कल्याण करने वाला है। परलोक मे तो केवल धर्म ही साथ जाता है। हमे देखना है कि धारण करने योग्य धर्म क्या वस्तु है।

ऋषियों ने सदगुण और सदाचार के नाम मे धर्म की व्याख्या की है। भगवान ने गीता अध्याय १६ मे जो दैवी सम्पत्ति के नाम से तथा अध्याय १७ मे तप के नाम से जो कुछ कहा है वह धर्म की व्याख्या है इसके अलावा महर्षि पतजलि के योगदर्शन और मनु जी ने जो कहा इन सब को देखते हुए यह सिद्ध होता है कि सदगुण और सदाचार ही धर्म है।

जो आचारण अपने और सारे ससार के लिए हितकर है यानि मन, वाणी और शरीर द्वारा की हुई जो उत्तम क्रिया है वही सदाचार है और अत. भाव मे जो पवित्र भाव है वही सदगुण है।

अब तो प्रश्न यह है कि ऐसे धर्म की प्राप्ति कैसे हो ? इस का यही उत्तर है कि सत्पुरुषो के सग से ही इसकी प्राप्ति हो सकती है।

क्योंकि वेद स्मृति सदाचार और अपनी रुचि के अनुसार परिणाम मे हित का यह चार प्रकार का धर्म का लक्षण है। मनु जी भी ऐसा लिखते है :—

वेद स्मृति सदाचार.
स्वस्य च प्रियमात्मन: ।
एतच्चतुर्विध प्राहु
साक्षार्धस्य लक्षणम् ॥

परन्तु इन की एकता सतसग से ही होती है अत: इस के जानने के लिए महापुरुषो का सग आवश्यक है।

अतएव मनुष्य को उचित है, प्राण जाए पर धर्म का त्याग न करे क्योकि धर्म पर चलने वाले तथा मरने वालो की उत्तम गति होती है। गुरु गोबिन्द सिह के लडको ने धर्म के लिए ही प्राण दे कर अचल कीर्ति और उत्तम गति प्राप्त की है।

मनु जी ने कहा है .—

श्रुति स्मृत्युदितं धर्म
मनुतिष्ठिान्हु मानव: ।
इह कीर्ति मवाप्नोति
प्रेत्य चान्द्तम सुखम् ॥

जो लोग वेद और स्मृति मे कहे हुए धर्म का पालन करता है वह इस ससार मे कीर्ति को और मर कर परमात्मा की प्राप्ति रूप अत्यन्त सुख को पाता है।

वर्तमान समय जब कि सर्वत्र दु:ख अशान्ति दिखाई दे रही है और तीसरे विश्व युद्ध के लिए बादल जल-कण से व्याप्त चारो दिशाओ मे मण्डरा रहे है। इस समय हमे अपने उस धर्म सभ्यता सस्कृति की शरण ले कर फिर विश्व को इन विनाश-कारी साधनो से परिचय कराने की आवश्यकता जिस को कि हर देश आत्म रक्षा के लिए क्षण भर मे सर्वनाश करने वाले शस्त्रो को बना रहा है और अपने को हर सम्भव कोशिश से बचाना चाहता है। परन्तु यह तो स्पष्ट है कि ऐसे-ऐसे साधन जिनसे क्षण भर मे सर्वनाश हो जाता है इस की तरफ मानव की बुद्धि बढती जा रही है परन्तु जो सच्ची शान्ति और सुख का मार्ग है वह दिखाई ही नही देता और न ही बुद्धि को उधर लगाता है।

इस समय ऐसे महान साधन की आवश्यकता है जो इस ससार को विनाश की ओर से मुख मोड सच्ची सुख शाति के मार्ग पर चलाए। वह कहा है ? यही भारत का तो धर्म-कर्म सभ्यता वेष और आचरण ही ऐसा है। जिस मे साक्षात सुख का मुखडा निहत है यह तो सारी कमिया पाश्चात्य विद्या की है ऐसा धर्म जिस मे सभी को अपने जैसा सुखी और शात रहने की कामना है जैसे कि—

सर्वे भवन्तु सुखिन:,
सर्वे सन्तु निरामया
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु,
माकश्चिद दु:खभाग्भवेत

कितने ऊंचे भाव है जिस मे अपने लिए ही नही विश्व की कल्याण कामना है हम सभी उससे विमुख होते जा रहे है। तभी तो यह बिगडती दशा सामने आ रही है यदि हम इसी प्रकार भूल मे पड़ते चले गए और अपनी इतनी ऊंची संस्कृति वैदिक धर्म की आज्ञा का पालन करते हुए विश्व मे सच्ची सुख शांति के मार्ग का आदर्श न रखेंगे तो विनाशकारी लक्षण सर्वत्र घटेंगे। परन्तु हमें तो यह ध्यान होना चाहिए कि जो हमारे पास अमूल्य पवित्र वस्तु वैदिक धर्म है अगर उस पर चले और अन्य देशों को भी स्वयं आदर्श बन कर मार्ग पर लाएं तो कही सुख शाति का नाम सार्थक हो सकता है। अभी बिगडा कुछ नही यदि आज भी हम अपने धर्म पर चलने का प्रण करें तो सफलता मिल सकती है।

आर्यसमाज पालमपुर (कांगड़ा) में वैदिक धर्म प्रचार का विशेष तथा सफल आयोजन

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजाब ने कागडा वा हिमाचल प्रदेश के अपने समाजो मे प्रचार करने के लिए जो विशेष व्यवस्था स्वीकार की थी उसी के अनुसार सभा के सुयोग्य व्याख्याता श्री प० ओम प्रकाश जी तथा प्रसिद्ध भजन मण्डली ठा० दुर्गा सिह और श्री नत्थू राम जी ५-७-६६ को हमारे समाज मे पधारे। उपदेशक वर्ग ने निरन्तर आठ दिन तक बडी लग्न और उत्साह से प्रचार कार्य सम्पन्न किया। भजनो मे और उप-देशो मे आर्य स्त्री पुरुषो के अतिरिक्त अन्य मतावलम्बी भी सुरुचि पूर्ण भाग लेते रहे। तीन चार दिन कार्यक्रम प्रात: साय दोनो समय चलता रहा। एक दिन स्त्री समाज मे भी विशेष प्रचार किया गया। अन्य दिनो में १३—७—६६ तक रात्रि को निय-मित प्रचार की व्यवस्था सुचारू रूप से चलती रही। इस बार के प्रचार मे नवयुवक भी श्रद्धापूर्ण भाव से भाग लेते रहे। यह अत्यन्त आशाजनक एवं उत्साह वर्धक बात थी। हम सभा के तथा उपदेशक महानुभावो के प्रति हार्दिक आभार प्रदर्शित करते है और आशा करते है कि वर्ष में दो-तीन बार इसी प्रकार प्रचार की व्यवस्था की जाती रहेगी।

सभा के लिए आर्य समाज वा स्त्री समाज की ओर से निम्न राशियां भेट की गई।

१०१) वेद प्रचार आ० समाज पालमपुर। १५) दशाश। १०) शिवरात्रि फण्ड। ६) आर्य जगत्। २५) मार्ग व्यय। ५१) वेद प्रचार आर्य स्त्री समाज पालमपुर (कांगड़ा)।

स्वराज कुमार मन्त्री.
समाज

सम्पादकीय—

आर्य जगत्

वर्ष ९६] रविवार २०२३, ३१ जुलाई १९६६ [अंक ३१

समाज की ये जोकें

जोंक का काम सदा खून पीना है। दूध के भण्डार के पास भी लगी हुई यह रक्त ही पियेगी, दूध नहीं। खून पी २ कर ये बड़ी मोटी होती जाती हैं। ये जहां भी लग जाती हैं, वहां अपना काम करती रहती हैं। गौ हो या कोई पशु—इन से घिर जाने पर बड़ा दु:खी होता है। इन से सावधान रहना पड़ता है। ये जोकें अभिशाप मानी जाती हैं। जब कभी इन के केन्द्र बने हुए पानी के अन्दर कोई स्नान आदि के लिए प्रविष्ट होता है—तभी वे उस से चिपट जाती और फिर अपने खून पीने के काम मे लग जाती हैं। इन को शरीर से अलग करने मे कठिनता होती है। इन का नाम ही जोक है—जो चिपट कर न छूटे। खून पीने के स्वाद मे ये भारी उत्पात तथा हानि करती रहती हैं।

इन जोको के समान समाज और राष्ट्र में भी बडी-बडी भयकर जोकें पनपती रहती हैं। वे भी लोगो का खून पी-पी कर मोटी होती जाती हैं। उनका शरीर, पेट और तोंद फूलती रहती है। जनता का रक्त पी-पी कर उसे बेचैन किये रहती है। जीवन के हर क्षेत्र मे ये छिप कर अपना काम बनाये रखती है। यदि इन से सावधानी न रखी जाये तो सारा समाज इनका शिकार हो हो जाता है। इन को लोगो के खून पीने का इतना स्वाद आता है कि ये उसके लिए निन्दित काम करते हुए भी लज्जा का अनुभव नही करती। वे जोकें तो पानी में रहती हैं। किन्तु ये बड़ी - बड़ी जोकें समाज मे छिप कर रहती हैं। मनुष्य के रूप मे राष्ट्र के जीवन के प्रत्येक मैदान में इन की गति बनी रहती है। समाज तथा राष्ट्रीय जीवन का खून पी - पी कर ये अपने को मोटा करने मे लगी रहती है। जनता की निर्धनता से इन को कोई मतलब नहीं हैं, विषम परिस्थिति का कोई विचार नहीं, राष्ट्रीय चरित्र का तनिक ध्यान नही तथा लोगों की महगाई की कठिनता की भी कोई परवाह नही। न धर्म का भय और इन को भगवान् का स्मरण। बस लोगों का खून पीना और अपनी तोदें बढाना ही इन का एक मात्र प्रयोजन होता है। सारे समाज के शरीर का खून पी पी कर उसे ये खोखला कर देती है। समाज के कष्ट मे इन का प्रमोद है, उस के दिवालिया मे इन की दीवाली हुआ करती है। मनुष्य के शरीर में ये भयकर जोंकें राष्ट्र मे सदा बेचैनी पैदा किये रहती हैं। ये जोकें भी सारे समाज व राष्ट्र के लिए बड़ा भारी अभिशाप हैं। इनसे भी सावधान रहना पड़ता है।

आजकल पंजाब मे ऐसी २ जोको की धर-पकड प्रारम्भ है। भारत के अन्य प्रान्तो मे भी जीवन की आवश्यक वस्तुओ की चोर-बाजारी के कारण बडा हाहाकार है किन्तु हम इन स्तम्भो मे पजाब की चर्चा कर रहे हैं। वास्तविकता यह है कि लोगो के मन मे भय ही नही रहा था कि हम पर कोई हाथ भी डाल सकता है। मन्त्रिमडल के मिनिस्टरो ने तथा अन्य सदस्यो ने लोगो मे तथा विशेषकर इन बडी २ जोको से वोटो का सहयोग लेना होता है—इसलिए वे तो आखो पर पट्टी बान्ध कर चुप हो जाते है। साधारण जनता दु:खो की चक्की मे पिसती है तो पिसने दो। यदि खाड, तेल, सीमैंट, आटा तथा अन्य जीवन की मोटी २ वस्तुओ को लेने के लिए घण्टो कतार मे धूप मे खडे रहते है—तो उनको क्या? पदार्थों मे मिलावट कर जनता के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ की जाती है तो चिन्ता क्या? लोगो मे कितना हाहाकार था। क्या स्वराज्य का चित्र व नमूना यही था कि गर्म मसाले मे लीद मिला दी जाये, घी मे चर्बी और आटे मे न जाने क्या २ मिलाया जाये। हल्दी मे ईंटे पीस कर मिलाई जाये। इस पर भी चीजे मिले ही नही। परन्तु मन्त्रिमंडल समाप्त हो गया। श्री धर्मवीर जी राज्यपाल बन कर आये थोडा सा अपना धर्म चक्र, चलाना आरम्भ किया। देखिए तो सही-क्या से क्या बन गया। समाज का खून पीने वाली इन मोटी २ जोकों पर जिस समय हाथ डाला गया—तो क्या २ चित्र सामने आने लगे। इन खून पीने वाली जोको की करतूतों को देख-देख, पढ-पढ कर कौन भारतीय है, जिस का सिर लज्जा से झुक नही जाता। इन लोगो का यह है राष्ट्रीय चरित्र और यह है जीवन-आचार। सब के समाने नगे हो गये। मोटे-मोटे स्पष्ट हो गये। कितना तेल, कितना सीमेंट, कितना घी और कितना अन्न निकला है। करनाल की एक बड़ी जोक से तो चालीस मन चादी और छ: किलो सोना—ये छ: लाख रुपये कीमती सामान। ये लोग राष्ट्र के लिए भारी कलक है। अभी तो धर्मचक्र या धर्म राज्य का प्रारम्भ है। हम चाहते है कि इन जोंको को कडा से कडा दण्ड दिया जाये। तनिक भी सहानुभूति न दिखाई जाये। माननीय श्री राज्यपाल जी यदि इन खूनी जोको को हल्का कर दे नो उनकी सर्वत्र सराहना की जायगी। अभी बहुत कुछ काम करना होगा। जिन को दूसरो के खून पीने का स्वाद लग गया है—जिन का जीवन प्रयोजन ही पैसा बन चुका है ऐसी जोको को कड़े हाथो से आज ही ठीक करना होगा, तभी समाज बचेगा।

—त्रिलोकचन्द्र

वेद सप्ताह आता है

वेद आर्यों के लिए परमधर्म का स्थान रखते है। परम धर्म के लिए परम कर्तव्य का भी सब को ध्यान रखना चाहिए। आर्य समाज की स्थापना तो हुई ही वेद प्रचार के लिए है। वेद का प्रचार और करनी ही कौन सस्था है? नाना प्रकार के आन्दोलन तो रोटी कपडे और मकान के घोषो पर समाप्त हो जाते है। कुछ सस्थाओ की दौड केवल वोट ले कर हर पाच वर्ष के लिए अनेक कुर्सियों पर बैठने के लिए लगी रहती है। वेद तथा वैदिक धर्म के प्रचार का आर्य समाज के सिवाय किसे ध्यान है? यदि आर्य समाज भी इधर-उधर के अनावश्यक कामो मे मस्त हो कर अपने परमधर्म के चरम-लक्ष्य से आखे बन्द कर ले नो वेद का प्रचार कैसे होगा? कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का महान् कार्य पूर्ण कैसे होगा। अभी तक तो सारे गोले में से एक पूनी भी नही काती गई। हमारे विविध काम वेद प्रचार के काम को पूरा करने के लिए हैं। अभी तक तो हम गीता प्रेस के समान वेद प्रेस भी नही बना सके। बायबल सोसायटी के समान वेदो को विश्व के कोने-कोने फैलाने का काम कितना कर पाये है? अभी तक तो हमारे अपने घर मे, सन्तान मे, सस्थाओ मे एव अपने जीवन मे भी वेद नही आया तो विश्व का काम कितना महान् है।

फिर भी वेद का धर्म आर्यों को निराशा नहीं सिखाता। वैदिक धर्म आशावाद का धर्म है। काम बडा है पर यह करना ही होगा। वेद सप्ताह प्रति वर्ष आकर हमे यही सन्देश देता है कि वेद वालो! वेद-प्रचार के लिए तन-मन धन देना सीखो। जिन के पास समय है वे समय देकर समाजो में जाकर वेद का सन्देश देवें। सारे समाजो का कर्तव्य है कि वेद सप्ताह पर वेद की कथाओ का प्रबध करें। इन दिनो वेदो पर ही प्रवचन करायें। घरो मे वेदो के लिए विशेष उत्साह भरे। जितना भी हो सके प्रत्येक वेद भक्त परिवार इन दिनो वेदों के मन्त्रो को, सूक्तियो को कण्ठस्थ करना रहे। मौखिक जमा खर्च तो होना रहता है पर इस सप्ताह इसे क्रियात्मिक रूप देना होगा। वेद के स्वाध्याय का व्रत लेवें। परिवारो के सारे कामो तथा सस्थाओ के सारे समारोहो पर हम पहले से भी अधिक व्यय करते है। पर वेद प्रचार के लिए, इस परमधर्म के निमित्त क्या अवस्था है? सोच लीजिये। वेद सप्ताह के अवसर पर वेद प्रचार के लिए अधिक से अधिक धन सभा के वेद प्रचार कोष मे देने का सकल्प करें। जिस पवित्र मिशन के लिए देव-दयानन्द ने सर्वमेध कर दिया। तपस्वी महात्मा हंसराज ने यौवन की आहुति दे दी। स्वामी श्रद्धानन्द ने जीवन बलिदान कर दिया। अमर शहीद लेखराम ने पेट फडवा लिया—अनेक वीरो ने उत्सर्ग किया—उस वेद प्रचार के लिए हम क्या देने है? मन मे विचारें। आर्यसमाज की इतनी छावनियां, महान् महारथी, विशाल सेना हो—उसका वेद प्रचार कोष खाली हो—वेद प्रचार कोष? कितनी लज्जा की बात है। दूसरो को उपदेशक, वेद प्रचारक बनाना चाहते है। किन्तु हमारे परिवार के बच्चे अध्यापक, प्रोफैसर, इजनीयर तथा सता की कुर्सियो के मार्ग पर चलें। तब वेद प्रचार कैसे होगा? बडे-बडे आर्यसमाज के सज्जन अपने-अपने घर मे अपना एक एक युवक आर्यसमाज का उपदेशक या दयानन्द का सिपाही बना कर लगा देवें तो कितना सुन्दर काम हो जाये। पर यह कौन करे। वेद सप्ताह पर कम से कम धन से तो सभा कोष भर दीजिये—स०

नारी स्तम्भ—

श्री राम की उच्चता में सीता का हाथ

लेखिका – कु० सुशीला जी आर्या एम० ए०
आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला

किसी कवि की अत्यन्त प्रसगानुकूल यह पक्ति स्मरण आती है 'नारी नर का निर्माण करने वाली होती है।' नर का निर्माण करने वाली नारी का मुख्य रूप माता है। बहिन तथा पुत्री रूप में भी नारी ने पुरुष को समय-समय पर प्रभावित किया है किन्तु यह सम्पर्क काल की दृष्टि से न्यून रहता है पुनः पत्नी के रूप में नारी नर का कायाकल्प करती देखी गई है। क्योंकि पत्नी का पति से सयोग जीवन की दीर्घ अवधि तक रहता है। इतिहास साक्षी है महापुरुषो की महत्व-प्राप्ति मे उनकी पत्नियो का उल्लेखनीय योग रहा। क्या विद्वत्ता, क्या धैर्य, क्या तप, क्या त्याग सभी सद्गुणों का पाठ स्त्री पुरुष मिल कर पढते रहे हैं। यहा आकार वे सहचारी के साथ-साथ सहपाठी का रूप भी धारण कर लेते है। महात्मा गाधी को उच्चता के शिखर तक पहुचाने में माता कस्तूरबा के योगदान से कौन निषेध कर सकता है ? क्या देवी उर्मिला की ब्रह्मचर्य-साधना ने ही लक्ष्मण को 'यती' की उपाधि से अलंकृत नही करवाया ? यही बात देवी सीता के विषय मे है।

संसार में तीन प्रकार के बल है शरीर बल, मनोबल तथा बुद्धिबल। श्रीराम को चमकाने में उनके मनोबल का सर्वाधिक योग रहा है। उन्होने रावण से युद्ध भी अपनी सैन्य शक्ति या राजबल से नही अपितु मनोबल से ही जीता। संयम और ब्रह्मचर्य के जीते जागते आदर्श हैं और इस साधना मे विवाह के पश्चात् से देवी सीता का भी योग रहा। इस मे कोई सन्देह नही कि देवी सीता कोमलांगिनी राजकुमारी होते हुए भी शैशव से ही वीरता के वैभव से सम्पन्न थी। किशोरावस्था में ही भारी धनुष को हिला देने की घटना से भी यह प्रमाणित है। इस देवी का विवाह भी वीरता के वातावरण मे हुआ। धनुष की टङ्कार उसके विवाह की शहनाई बनी किन्तु कौन कह सकता है कि गुदगुदे बिछौनो पर सोने वाली राजभवन से बाहर पैर न रखने वाली इस देवी ने विवाह के तुरन्त पश्चात् यौवन की शीत कालीन दुपहरी की सी वेला मे वन का तपस्वी जीवन बिताने की कल्पना की होगी ? उच्च राजवंश के लाडले ज्येष्ठ पुत्र से विवाहित होकर कोई भी राजकुमारी निकट भविष्य में राजरानी होने की आशा करे, तो इस मे क्या अनौचित्य है ? श्रीराम का धैर्य प्रशसनीय है कि उन्होंने राज्य के बदले फकीरी की आज्ञा पाकर भी मुख मलिन न किया। किन्तु उस देवी की श्लाघा में शब्द कहा से लाए जिसने सब सुखों की कल्पनाओ पर तुषारपात होने दिया तथा हर्ष सहित दुःखों को गले लगाया। आप मानें न मानें—हमारा हृदय तो यही कहता है कि श्रीराम को वन का कठोर जीवन बिताने का साहस देवी सीता ने ही प्रदान किया। कौन निश्चित रूप से कह सकता है कि देवी सीता का सहयोग न मिलता तो भी वे जंगल के काटों में कूद सकते ? पुनः देवी सीता का यह त्याग क्षणिक भावुकता नहीं अपितु अन्तरात्मा का निश्चय था तभी तो चौदह वर्ष की दीर्घ अवधि मे वे कभी क्लांत नही हुई, विकलता ने उन्हे नही घेरा, सुखों की स्मृति ने नही सताया। तभी तो रूपक रूप मे इस देवी को धरती की पुत्री कहा जाता है जो धैर्य के लिए एक सुष्ठु उपमान है। एक अविवाहित पुरुष अपने संयम बल से ब्रह्मचर्य पालन करता है किन्तु श्रीराम तो गृहस्थी थे उनकी सयम-साधना मे कम से कम पचास प्रतिशत भाग देवी सीता का था। अधिक भी सम्भव है सो कितना इसका परिमाप करना कठिन है। और यही शक्ति थी जिसने श्रीराम को लोक-दृष्टि मे इतना महान बनाया। विलास वैभव में जीवन के दिन पूरे करने वाले असंख्य सम्राटों की गाथाओं से इतिहास भरा पड़ा है। उनमें से कितने जन-जन के आराध्य बन सके ? यतीन्द्र वीर लक्ष्मण की सयमशीलता उनकी प्रसिद्ध घटना—देवी सीता के पैरो के आभूषण मात्र पहचानने वाली से जानी जाती है किन्तु इस उच्चादर्श का निर्वाह भी इसी देवी के पुण्यचारित्र्य की विभूति है। धन्य हैं देवी सीता की आंखे ! उनका संयम, तेज बल ! जिस ओर झांकने का लक्ष्मण को कभी अवसर ही न मिला। दृष्टि को संयम प्रदान किया और अनोखे अविस्मरणीय इतिहास का निर्माण कर डाला।

आगे भी देवी श्री सीता का तप रग लाया। रावण पर विजय राम ने क्या की ? यदि सीता देवी के मानस पटल मे तनिक भी विचलितता आ जाती तो श्रीराम क्या कर पाते ? फिर इस देवी ने राम की विजय का पथ और रूप मे भी प्रशस्त किया। वे रावण के घर में थी। रावण भी उन के पास अनुपम विनय के लिए आता था। दासियों आदि द्वारा भी सम्पूर्ण समाचार मिलते रहते थे। देवी सीता के उच्च चरित्र से प्रभावित अनेक व्यक्ति उनके पक्ष मे हो चुके थे। उन के द्वारा तथा श्री हनुमान जी के जाने पर देवी सीता ने शत्रु के अभेद्य रहस्यों का ज्ञान श्रीराम को कराया। देवी सीता कोई मोम की गुड़िया नही थी ! ऐसी होती तो भला शत्रु के घर में अपनी मान मर्यादा की रक्षा कैसे कर पाती ! उनमें नीति भी थी, साहस भी उच्चकोटि की सूझबूझ थी। उनकी सम्पूर्ण शक्ति इसी ओर लगी थी। इस प्रकार शत्रु के घेरे में रह कर ही उन्होंने अपने पक्ष की स्थिति सुदृढ की। इसी देवी ने जीवन के इन सघर्षों की भट्ठी में तप कर खरा-कञ्चन बनने के पश्चात आगामी जीवन में भी श्रीराम को राजकाज चलाने में कितना सहयोग दिया होगा यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। इन तथ्यों से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि देवी सीता श्रीराम की पूरक थीं। उनकी महत्ता में उनका सदैव अधिक से अधिक योग रहा। नारी जीवन के वेदोक्त आदर्श को उन्होंने चरितार्थ कर दिखाया। वे पति के बराबर चुनाव लड़ने वाली वर्तमान युग की तथाकथित देवियों की दृष्टि में भले ही पुरातन तथा पिछड़ी हुई प्रतीत होती हों किन्तु गम्भीरता से विचार करने पर उनमें मर्यादित तथा संयत प्रगति शीलता का वह रूप दिखाई पड़ता है जिस के समक्ष स्वतः नतमस्तक होना पड़ता है। भगवान हमारी गृहस्थ देवियों को सीता जी की भान्ति पति के जीवन निर्माण में योग देने की शक्ति प्रदान करें ताकि उनमें पुरुषोचित गुणों के साथ-साथ देवियों के स्त्रियोचित गुणों का मणि-काञ्चन-योग भी हो सके।

आर्य समाजों को सूचना

वेद सप्ताह श्रावणी उपाकर्म का वार्षिक पुनीत पर्व आ रहा है। उन दिनों सारी समाजों का इकट्ठा कार्यक्रम बनाने में कठिनता हो जाती है। इसलिए पहली अगस्त से ३० सितम्बर ६६ तक सारा समय वेद सप्ताह की कथाओं के लिए है। समाजों से निवेदन है कि सभा को इस विषय में अभी से सूचना देवें ताकि सब का समुचित कार्यक्रम बनाया जा सके।

—वेद प्रकाश मल्होत्रा
सभा मन्त्री आर्य प्रादेशिक सभा जालंधर

आर्यजगत् का वेदांक

आर्य प्रादेशिक सभा के साप्ताहिक पत्र आर्यजगत् का श्रावणी के पवित्र वेद सप्ताह के अवसर पर वेदांक प्रकाशित किया जा रहा है। सभा का अपना यह पत्र है। हमारी कितनी समाजें व विशाल संस्थाएं हैं। उनका कितना बजट होता है। सभा के वे स्तम्भ हैं। वेद हमारे जीवन का परम-धर्म है। महर्षि जी ने इसी के लिए सर्वस्व दान किया। हम सारी समाजों संस्थाओं तथा वेद प्रेमी परिवारो से सानुरोध प्रार्थना करते हैं कि इस वेदांक की काफी संख्या मे प्रतियां मंगवा कर छात्रों मे, परिवारों में, समाजों में, इष्ट मित्रों में और दूसरे विचारों के लोगों मे बांटें। इस से प्रचार होता है। इस वेदांक के लिए खास व्यय करें। यदि हमें वेद प्रचार के लिए श्रद्धा है तो वेदांक की प्रतियों के लिए जल्दी ही आर्यजगत कार्यालय को लिखे। यह भी प्रचार का साधन है—सं०

(गतांक से आगे)

पुराणों की सांप्रदायिक प्रवृत्ति स्वयं पुराण धर्मावलम्बियों को भी अस्वीकृत नही है। वे भी यह मानते हैं कि इन ग्रन्थों में विभिन्न देवताओ का माहात्म्य वर्णित है और जिस पुराण में जिस देवता को सर्वोच्च माना है उस मे अन्यो के महत्व को अस्वीकार करते हुए उन्हे तत् देवता का सेवक, किंकर और भक्त बताया गया है। इसके प्रमाण सर्वत्र मिलते हैं परन्तु इतना कह देने मात्र से ही पुराणों पर लगने वाले आक्षेपो का समाधान नही हो जाता। ब्रह्मवैवर्त में जैसा कि हम पूर्व ही लिख चुके हैं कृष्ण की महत्ता वर्णित है। उसे ही परात्पर, चिन्मय तत्व माना गया है अत: अन्य सभी देवी देवता कृष्ण के ही अनुगामी और सेवक बताये गये हैं। एक उदाहरण इस बात को स्पष्ट कर देगा। यह सभी जानते हैं कि मारकण्डेय पुराण के अन्तर्गत जो 'दुर्गा सप्तशती' का प्रकरण आता है, उस मे आदि शक्ति जिसे दुर्गा, आदि नामो से सम्बोधित किया गया है, का माहात्म्य वर्णित है। यही दुर्गा सप्तशती की सम्पूर्ण कथा ब्रह्मवैवर्त पुराण के प्रकृतिखण्ड मे वर्णित हुई है। परन्तु इस पुराण मे कथा को थोड़ा परिवर्तित कर दिया। गया है। ब्रह्मवैवर्त की प्रकृति के अनुकूल यहां स्वय दुर्गा ही समाधिवैश्य को कृष्ण की भक्ति करने का उपदेश देती है। देखो उक्त खंड का ६३ वा अध्याय मारकण्डेय पुराणोक्त सप्तशती में जहा दुर्गा का ही महत्व वर्णित है वहां ब्रह्मवैवर्त का यह दुर्गोपाख्यान भी कृष्ण के ही गुणगान करता है। साम्प्रदायिक आग्रह के कारण ही यह सब तमाशे पुराणों में दिखाई पड़ते हैं।

अब दुर्गोपाख्यान की बात चल ही पड़ी तो लगते हाथ कुछ अन्य बातें भी लिखना आवश्यक है। ब्रह्मवैवर्तपुराण वैष्णव पुराण है, परन्तु शाक्त मत के अन्तर्गत जो मद्यमांस आदि का प्रयोग देवी की पूजा अर्चा के लिए होता है उसका खुल कर विरोध करने की शक्ति इस पुराण के लेखक में नहीं। तभी तो वह पूजा के त्रिविध रूपो की कल्पना करता हुआ लिखता है—

जीव हत्या विहीना या

वरा पूजा तु वैष्णवी ॥प्र. ६४।४६

जीवहत्या रहित पूजा वैष्णव पूजा है जो सर्वश्रेष्ठ है। द्वितीय स्थान

ब्रह्मवैवर्तपुराण की आलोचना (२री किश्त)

पुराणों में ऋषि मुनियों की निंदा सर्वत्र है

(प्रो० भवानीलाल जी भारतीय एम० ए०)

माहेश्वरी पूजा का है जो बलिदान युक्त होने से राजसी है—

माहेश्वरी राजसी च

बलिदान समन्विता ॥६४।४७

किरातादि असभ्य जातियो के पूजाचार को 'तामस' संज्ञा प्रदान की गई है। इसी अध्याय मे देवी के प्रीत्यर्थ किये जाने वाले बलिदानों का भी उल्लेख हुआ है। पाठको को यह जान कर आश्चर्य होगा कि इस वैष्णव पुराण मे भी जीवहिंसा युक्त बलिदानो का विधान किया गया है।

बलिदान विधानं च

श्रूयतां मुनिसत्तम।

मायार्थि महिष मेष

दद्यान्मेषादिक शुभम्॥६४।९२

हे मुनि श्रेष्ठ बलिदानों का विधान सुनें। जिन २ पशुओ को देवी के लिये बलि चढाया जाता है उस मे मनुष्य की गणना सर्वप्रथम की गई है और कहा गया है कि नर बलि से दुर्गा हजार वर्षो तक प्रसन्न रहती है, भैंसे की बलि से सौ वर्ष तक तथा बकरे की बलि से १० वर्ष तक—

सहस्र वर्ष सुप्रीता

दुर्गामायाति दानत:।

महिषाच्छ्तवर्षं च

दशवर्षं च च्छागलात् ॥६४।९३

यह बलि विधान भी विचित्र है, जैसी सेवा करो वैसा मेवा पाओ। यदि मनुष्य की बलि चढाओ तो हजार वर्षो तक देवी को प्रसन्न कर पाओगे, परन्तु खेद है कि आज के युग मे नर बलि को कानूनी दृष्टि से अपराध माना गया है और नर बलिदान करने वाला नर हत्या का अपराधी माना जाकर दण्ड पाता है। आज के शाक्त तो मूक पशुओं को मार कर ही देवी को तुष्ट करते हैं। यह बलि प्रकरण किसी तंत्र ग्रन्थ या अन्य किसी शाक्त मत की पुस्तक मे होता तो हमारे लिये कोई आश्चर्य की बात नही थी, परन्तु यह घोर आश्चर्य का विषय है कि ब्रह्मवैवर्त जैसा वैष्णव पुराण भी इस प्राणि हत्या के विधान मे किसी वाममार्ग के ग्रन्थ से पीछे नही हैं। जिस व्यक्ति की देवी के सम्मुख बलि चढ़ाई जाए उसके लक्षण भी इस पुराण में बताये गये हैं। इसी अध्याय के अन्त में कहा गया है—

मायातीनां स्वरूपं च

श्रूयता मुनिसत्तम।

वक्ष्याम्यथर्व वेदोक्तं फल-

हानिर्व्यतिक्रमे ॥ १००

बलि के उपयुक्त व्यक्ति का स्वरूप अथर्ववेद के अनुसार कहता हूं। इसमें व्यतिक्रम हो जाने पर बलिदान का फल नही मिलता। प्रथम तो पुराणकार का दुस्साहस देखिए जो नरबलि का विधान भी अथर्ववेद मे ढूंढता है। इसके अनुसार तो वह जो कुछ उल जलूल लिख रहा है वह सब किसी न किसी वेद में कहा ही गया है। ऐसा: अन्तिमरूप से तो पुराणो की वाही तबाही का भी दायित्व इन पौराणिकों के अनुसार तो वेदों पर ही है। तभी तो माधवाचार्य जेसे सनातनी पण्डितो के समक्ष जब पुराणो की किसी आपत्तिजनक कथा या प्रसग को समाधानार्थ प्रस्तुत किया जाता है तो उसका कोई समुचित उत्तर देने की अपेक्षा वे उसे येन केन प्रकारेण वेदोक्त सिद्ध करने के लिए ऐडी से चोटी तक का पसीना बहाने लगते हैं। अस्तु। प्रकृत मे नरबलि की बात चल रही थी। आगे लिखा है—

पितृमातृ विहीने च

युवक व्याधि वर्जितम्।

विवाहित दीक्षित च

परदार विहीनकम् ॥ १०१

अजारजं विशुद्ध च

सच्छुद्र परियोषितम्।

तद्बंधुभ्यो धनं दत्वा

क्रीत मूल्यातिरेकत: ॥ १०२

वह पुरुष जिसकी देवी के समक्ष बलि चढाई जाय पिता-माता से रहित हो, युवक हो तथा व्याधि रहित हो। उसका विवाहित और दीक्षित होना भी आवश्यक है। वह व्यभिचार से उत्पन्न न हो, तथा किसी सच्छूद्र मे पोषित हो। उसके बंधुओ को धन देकर उसे बलिदान के लिए खरीद लिया जाय। यदि यह बात माधवाचार्य जैसो के समक्ष रखी जाए तो वे तुरन्त ऐतरेय ब्राह्मण के उस प्रकरण की ओर संकेत करेंगे जिस मे अजीगर्त ब्राह्मण के पुत्र शुन: शेप को वरुण के समक्ष बलि देने के लिए राजा हरिश्चन्द्र द्वारा खरीद लिया था, चाहे ऐतरेय की इस कथा का वास्तविक तात्पर्य कुछ और ही क्यों न हो। अस्तु आगे देखिए—

स्नापयित्वा च त

कर्तापूजयेद्वस्त्र चन्दनै:।

माल्यधूपैश्च सिन्दूरैर्दधि

गोरोचनादिभि:। १०३

उस नरपशु को बलिदान कर्ता स्नान कराये, तदनन्तर वस्त्र और चंदन, माला, धूप, सिन्दूर, दही और गोरोचन से उसकी पूजा करे।

पुन: तं च वर्षं भ्रामयित्वा

भृत्यद्वारेण यत्नत:।

वर्षान्ते च समुत्सृज्य

दुर्गायै तं निवेदयेत् ॥१०४॥

अपने नौकरो द्वारा उसे १ वर्ष तक भ्रमण कराये और वर्ष के समाप्त होने पर उसे मार कर दुर्गा के लिये निवेदन कर दे। यह है वाममार्गी लीला जो वैष्णव पुराण में भी उपस्थित है।

ब्रह्मवैवर्त मे यज्ञ निंदा—

हम पूर्व ही यह कह चुके हैं कि पौराणिक धर्म की यह एक सामान्य प्रवृत्ति रही है कि वैदिक यज्ञ यागों की निंदा की जाए और उनके स्थान पर मूर्तिपूजा, अवतार, तीर्थ, स्तोत्र, आदि के महत्व को प्रतिष्ठित किया जाए। दूसरे शब्दो मे यह कहा जा सकता है कि अब धर्म सचय का मार्ग सुगम बन गया या बना दिया गया है। अश्वमेध, वाजपेय, राजसूय जैसे वैदिक यज्ञ पौराणिक क्रिया कांडों की तुलना मे नगण्य हो गये। वैदिक परम्पराओं को नष्ट करने और उनके महत्व की अवगणना करने का यह पूर्व नियोजित प्रयास था जिस मे पौराणिक धर्म के पुरस्कर्ताओं को अभूतपूर्व सफलता मिली। (क्रमश:)

आर्यसमाज विक्रमपुर जालन्धर

साप्ताहिक सत्संग ३१-७-६६ को प्रात: आठ बजे दैनिक कार्यवाही के साथ आरम्भ होगा। तत्पश्चात श्री हंसराज जी वायरलैस का व्याख्यान होगा। सब सज्जन समय पर पधार कर लाभ उठाए।

नोट—दैनिक सत्सग पहली अगस्त से सवा छै: बजे से सवा सात बजे तक प्रात: हुआ करेगा। पुरोहित जी से कार्यार्थ समाज मन्दिर में हर समय मिल सकते हैं।

—मन्त्री आर्यसमाज

आर्यसमाज का संगठन और विकास का ऐतिहासिक निर्णय व उसका स्वागत

श्री मुरारीलाल जी मन्त्री आर्यसमाज जोगेन्द्र नगर (H.P.)

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि पंजाब द्वारा आयोजित दिनाक १० जुलाई को आर्य समाज मोडल टाऊन जालन्धर में आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभाओं की संयुक्त बैठक माननीय प्रो० रामसिंह जी की अध्यक्षता मे हुई इस पवित्र आयोजन के लिये सर्वश्री यश जी प्रधान, वेद प्रकाश जी मल्होत्रा मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजा बधाई के पात्र हैं जिन्होने इस शुभ कार्य को आयोजित किया। मोडल टाउन आर्य समाज जालन्धर के पदाधिकारी एव युवक कार्यकर्ताओ ने इस आयोजन पर जो भोजनादि की व्यवस्था की थी धन्यवाद के पात्र हैं। इस पवित्र आयोजन को सफल बनाने मे जो सक्रिय सहयोग सर्वश्री प्रो० रामसिंह जी प्रधान रघुवीरसिंह जी शास्त्री मन्त्री आचार्य भगवान देव जी, जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती तथा प्रो० शेरसिंह जी ने दिया है उनके सहयोग का स्वागत है। मुझे भी बैठक मे सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सभी पदाधिकारी अन्तरग सभा सदस्यो तथा आर्य नेताओ ने पूर्ण रुचि, द्वारा निष्पक्ष होकर अपने-अपने विचार स्पष्ट रूप से प्रकट करने के बाद सर्व सम्मति से दोनों सभाओं को एक करने का जो निर्णय किया इससे आर्य समाज एक नये मोड पर आकर खडा हुआ और उसे एक नई दिशा मिली है इस बैठक मे किए गए निर्णय को ऐतिहासिक स्थान देकर दैनिक हिन्दी, उर्दू अग्रेजी पत्रो ने प्रकाशित कर आर्य समाज के इस ऐतिहासिक निर्णय का प्रसार किया। पत्रकारों ने अपने सम्पादकीय लेखो मे इसको प्रमुखता देकर आर्य समाज एव ऋषि दयानन्द के मिशन के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट कर जनता का ध्यान आर्य समाज के संगठन की ओर आकर्षित कर दिया है।

ऐसे समय मे यह निर्णय किया जब कि भारत विश्व मे एक नई करवट लेने जा रहा है, जब कि प्रान्तो का वैज्ञानिक एव भौगोलिक आधार पर जनता की माग तथा प्रशासन को नया नया रूप देने हेतु प्रान्तीय करण किया जा रहा है इस समय आर्य समाज के इस महत्व पूर्ण पत्र एव निर्णय को क्रियात्मकरूप मे देखने के लिए आर्य जगत एव जन-साधारण लालियत है।

जो उपसमिति दोनो सभाओ के प्रधानों द्वारा मनोनित करके इस निर्णय को असली रूप देने का निर्णय हुआ उसको पूरा करके ही नैतिक उत्तरदायित्व समझ कर समाजो तथा आर्य बन्धुओ के सहयोग से शीघ्र अति शीघ्र क्रियात्मक पगो को उठाकर दोनों सभाओ को एक कर के (**Zonal Body**) वैधानिक ढंग से बनाकर आर्य समाज के संगठन को व्यापक तथा विकासित करने की दृष्टि सभा के अंतर्गत देहली, हरियाणा, पंजाबी, जम्मू-काश्मीर तथा हिमाचल प्रदेश में क्षेत्रीय परिषदें स्थापित एव सचालित करके आर्य समाज के सगठन में सुदृढता आएगी जिससे योजना बद्ध नवीन शैली से प्रचार व्यवस्था होनी अनिवार्य है जिस से वेद प्रचार, समाज सुधार, चरित्र निर्माण आदोलन चला कर महर्षि दयानन्द की तडप को साकार रूप दे कर जनता - जनार्दन का विश्वास प्राप्त करना पडेगा तभी आर्य समाज जन-साधारण में अपना स्थान बना सकेगा अन्त मे मैं माननीय श्री प्रो० रामसिंह जी तथा श्री यश जी प्रधान महानुभावो की सेवा मे प्रार्थना करूगा कि इस ऐतिहासिक निर्णय को सक्रिय बनाने के लिए शीघ्र अति शीघ्र उचित पग उठाकर समय - समय पर जनता तक इस सम्बन्ध मे अपने विचार दैनिक समाचार पत्रों द्वारा पूर्व की भान्ति देने का कष्ट करेगे।

आर्यसमाज हिमाचल प्रदेश में प्रचार आंदोलन कार्यक्रम

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभाने इस वर्ष जिस ढंग से ग्रीष्म कालीन प्रचार व्यवस्था की है उसी कार्यक्रम के अनुसार पं० ओमप्रकाश जी आर्योपदेशक तथा ठाकुर दुर्गासिंह जी व तरथुराम जी की भजन मण्डली धर्मशाला दिनांक २२-६-६६ से ४-७-६६ तक करके पालमपुर मे दिनांक १३-७-६६ तक प्रचार करके दिनांक १४-७-६६ को जोगिन्द्र नगर आर्य समाज में १७-७-६६ तक प्रचार करके दिनांक १८-७-६६ को मण्डी को प्रस्थान कर गई है! जिला मण्डी की आर्य समाजों में प्रचार करके नगरोटा तथा नूरपुर की समाजो में लौटती हुई प्रचार करेंगी।

यहां पर पण्डित ओम प्रकाश जी के ओजस्वी विचारों को जनता ने आर्य समाज की विचारधारा को रुचि से सुना तथा ठाकुर दुर्गासिंह की भजन मण्डली के मनोहर तथा वीर रस के गीतों से नवयुवकों ने लाभ उठाया मैं सभा के स्टाफ तथा सभा के पदाधिकारी विशेष रूप से श्री वेदप्रकाश जी मल्होत्रा सभा मन्त्री का आभारी हूं जिन्होने इस क्षेत्र के लिये प्रचार की जो व्यवस्था की है आशा है कि जिला कागड़ा तथा मण्डी हि० प्र० की आर्य समाजें सभा को सक्रिय ढंग से सहयोग देकर आर्य समाज के संगठन को सुदृढ बनायेगी। जोगिन्द्रनगर आर्य समाज की ओर से १०० रु० वेद प्रचार फण्ड मे दिये।

आर्यजगत का वेदांक

सभा का साप्ताहिक पत्र आर्यजगत समय २ पर अपने विशेषांक प्रकाशित करता रहता है। आर्य समाज के वैदिक सिद्धांतो पर ठोस सामग्री दी जाती है। इस बार श्रावणी वेद सप्ताह रक्षाबन्धन के अवसर पर अगस्त मे आर्यजगत का (वेदांक) प्रकाशित होगा। इस में वेद विषय वैदिक विद्वानों के लेख होगे। वेद के विषय मे उत्तम सामग्री होगी। पढने तथा मनन करने योग्य विचार मालाए होगी। इतनी समाजे तथा सस्थाएं हैं। पता नही क्या होता जाता है। जिसके पास इतनी समाजे व संस्थाए हो, उसे किसी प्रकार की कमी कैसे हो सकती है? पर बात रुचि व ध्यान की कमी की है। कई संस्थाए तो नमस्कार के योग्य है। बडा सहयोग देती हैं। पर बहुत-सी समाजे व सस्थाए ध्यान नही देती। निवेदन है कि :—

सभा आप की व आर्यजगत आप का है। हम तो छोटे सिपाही हैं। इस बार इस वेदांक की पचास-पचास से कम तो कोई भी समाज व संस्था न मंगवायें। अधिक से अधिक शीघ्र आर्डर दें। विद्वान्, लेखक महोदय गंभीर वेद विषयक लेखों से कृतार्थ करें। —सं०

शिक्षा आयोग की अराष्ट्रीय गति-विधियां

श्री पं. नरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा सुलतान बाजार हैदराबाद

(१) उच्च शिक्षा अंग्रेजी माध्यम द्वारा दी जाए।

(२) आठवीं श्रेणी के बाद संस्कृत को अनिवार्यता न दी जाए तथा संस्कृत यूनिवर्सीटियों को निष्प्रयोजन करार दिया जाए।

(३) भारतीय सभी भाषाओं पर रोमन लिपि का आवरण चढ़ाया जाए।

पं० नरेन्द्र जी, प्रधान हिन्दी प्रचार सभा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण ने शिक्षा आयोग के प्रतिवेदन के सम्बन्ध मे एक वक्तव्य प्रसारित किया है जो इस प्रकार है—

शिक्षा आयोग का प्रतिवेदन प्रकाशित होकर अब जनता के सामने आ गया है। इस की रूपरेखा इस प्रकार से रखी गई थी कि इस मे जापान, फ्रांस और रूस के विशेषज्ञो के साथ-साथ ऐसे कोटि के भारतीयो को भी सम्मिलित किया गया था जिन मे भारतीयता से बढ़कर पाश्चात्य सूझ-बूझ की प्रचुरता है इसका निश्चित परिणाम यह निकला कि आयोग ने जो सिफारिशे की है वे हमारी राष्ट्रीय भाषा और राष्ट्रीय परम्परा की मान्यता के प्रतिकूल और अपमानजनक है। इसे कोई बुद्धिमान राष्ट्रवादी स्वीकार नही कर सकता। विदेशी विशेषज्ञ उन देशो से भी अपना सम्बन्ध रखते है जहा शिक्षा के माध्यम के साथ-साथ उनकी अपनी राजकीय भाषा का ही व्यवहार होता है परन्तु खेद है कि भारतवर्ष से सम्बन्धित इस राष्ट्रीय दृष्टिकोण को उन्होने सर्वथा अपनी दृष्टि से ओझल कर दिया है, जो न्याय सगत नही है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह प्रतिवेदन शिक्षा विभाग की प्रेरणा एवं इशारे पर तैयार किया गया है।

इस रिपोर्ट मे सबसे अधिक आपत्तिजनक और हानिकारक बात यह है कि त्रिभाषी सूत्र को हटाकर हिन्दी अथवा अंग्रेजी इन दोनों में से किसी एक भाषा को अपनाने का परामर्श दिया गया है। यह केवल इसी लिए दिया गया है कि हिन्दी भाषा जिसे संविधान ने राष्ट्रीय भाषा का स्थान प्रदान किया है, उसकी प्रतिष्ठा और गौरव को आघात पहुचा कर, हिन्दी के विकास के प्रति उपेक्षा कर, अंग्रेजी को अनिश्चित काल तक के व्यवहार का बहाना बनाकर इसे पूरी तरह लागू कर दिया जाए। वस्तुतः यह मनोवृत्ति अराष्ट्रीय है। इस दूषित प्रवृत्ति की जितनी भी निन्दा की जाए कम है।

प्रतिवेदन मे हिन्दी की समवृद्धि के सम्बन्ध में जो दिल को लुभाने वाले परामर्श दिए गए है उनपर यदि सूक्ष्म रूप से विचार किया जाए तो स्पष्ट हो जाता है कि कमीशन की राय अदूरदर्शिता से पूर्ण के होने के साथ-साथ हास्यास्पद भी है।

भारतीय भाषाओ के साहित्य के लिए देवनागरी और रोमन दोनो लिपियो को स्वीकार करने की आयोग ने सिफारिश की है। इसका स्पष्ट अभिप्राय यह है कि जिन प्रान्तो मे हिन्दी नही बोली जाती है वे रोमन लिपि को स्वीकार कर ले जिससे कि परीक्षा रूप मे उन प्रान्तो मे हिन्दी को सदा के लिए समाप्त कर दिया जाए।

सस्कृत के बारे मे दो बाते कही गयी हैं। एक तो यह कि आठवीं कक्षा से सस्कृत के साथ-साथ अरबी के पढाने का भी प्रबन्ध किया जाए। दूसरी यह कि सस्कृत का कोई विश्व-विद्यालय स्थापित न किया जाए। जबकि अंग्रेजी माध्यम द्वारा और विश्वविद्यालयों की स्थापना की सिफारिश की गई है। संस्कृत के साथ अरबी जैसा विदेशी भाषा की शिक्षा के सम्बन्ध में जो विचार कमीशन ने प्रकट किए हैं, वे सर्वथा निरर्थक और सारहीन हैं। कारण यह है कि संस्कृत ही हमारी राष्ट्रीय और सास्कृतिक परम्पराओ का एकमात्र परिचायक है न कि अरबी। इसलिए इन दोनों की पारस्परिक तुलना करना सर्वथा असंगत है।

शिक्षा आयोग का प्रतिवेदन उन समस्त राष्ट्रीय आशाओं और विश्वासो को धूमिल करता है जिसकी पूर्ति के लिए उस से आशा की जा रही थी। अब सरकार और जनता का यह कर्तव्य है कि राष्ट्रभाषा से सम्बन्धित इस प्रतिवेदन की सिफारिशो को वह अस्वीकार कर दें जिस से कि राष्ट्रीय आदर्श, उद्देश्य और चेतना की जो एक करारी चोट पहुचने वाली है, उस से उसे बचाया जा सके।

परीक्षा परिणाम १९६६ डी०ए० वी० कालिज, अम्बाला नगर

प्री० मैडिकल- मे कालिज से भेजे गए ६९ विद्यार्थियो मे से ४५ विद्यार्थी पास हुए। कालिज का परीक्षा परिणाम ६५·२ प्रतिशत रहा जब कि विश्व विद्यालय का परीक्षा परिणाम ४९·५ था। कालिज के चार विद्यार्थियो ने प्रथम डिवीजन और बीस विद्यार्थियो ने द्वितीय डिवीजन प्राप्त किए। इसके अतिरिक्त हमारे देवेन्द्र कुमार ओबराय ने ४५९ अंक प्राप्त कर पंजाब विश्व विद्यालय मे ग्यारहवां स्थान प्राप्त किया।

प्री० इजीनियरिंग- मे कालिज से भेजे हुए ११८ विद्यार्थियो के परिणामो मे से ८० विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए। कालिज का परीक्षा परिणाम ६७·८ प्रतिशत रहा जबकि विश्व विद्यालय का परिणाम ४६·० था। कालिज के विद्यार्थियों ने २२ प्रथम डिवीजन प्राप्त किए। और ३९ द्वितीय डिवीजन प्राप्त किए। हमारे विद्यार्थी कुल भूषण ने ४०० अंक प्राप्त कर पजाब विश्व विद्यालय मे १३वा स्थान प्राप्त किया।

B Sc Part III — मे कालिज से भेजे गए ३१ विद्यार्थियों मे २७ पास हुए। कालिज का परीक्षा परिणाम ८७·०% प्रतिशत रहा जबकि विश्व विद्यालय का परीक्षा परिणाम ६४·७ प्रतिशत था। कालेज के तीन विद्यार्थियो ने प्रथम डिवीजन और नौ ने द्वितीय डिवीजन प्राप्त की। इसके अतिरिक्त हमारे विद्यार्थी त्रिलोकचन्द ने ३६३ अंक प्राप्त कर पंजाब विश्व विद्यालय मे १०वा स्थान प्राप्त किया।

B. A. Part III. — मे कालिज से भेजे गए १९ विद्यार्थियो मे से १६ पास हुए। कालिज का परीक्षा परिणाम ८४·२ रहा जबकि विश्व विद्यालय का परिणाम ६५·७ था।

प्रैप-मैडीकल- मे कालिज मे भेजे गए ५८ विद्यार्थियो मे से ३५ विद्यार्थी पास हुए! कालिज का परीक्षा परिणाम ६०.३% रहा जबकि विश्व-विद्यालय का परीक्षा परिणाम ४७·७६ प्रतिशत था! कालिजमें दो विद्यार्थियो ने प्रथम डीवीज़न और १८ ने द्वितीय डिवीजन प्राप्त की! इसके अतिरिक्त हमारे एक विद्यार्थी रणवीर सिंह ने ५०६ अंक प्राप्त किए।

B. A. Part I- बी० ए० पार्ट **Ist**-मे कालिज से भेजे गए ६६ विद्यार्थियो मे से ४१ पास हुए कालिज का परीक्षा परिणाम ६२·१% रहा जब कि विश्व-विद्यालय का परिणाम ५८·८ था! कालिज के ७ विद्यार्थीयो ने द्वितीय श्रेणी प्राप्त की इसके अतिरिक्त हमारे एक विद्यार्थी दलवीर सिंह ने १२९ अंक प्राप्त कर कालिज मे प्रथम रहा!

B. A. Part II-मे कालिज से भेजे गए २७ विद्यार्थीयो मे से १८ उत्तीर्ण हुए कालिज का परीक्षा परिणाम ६६ ६ रहा जबकि विश्व-विद्यालय का परिणाम ४९·१% रहा कालिज के ३ विद्यार्थियो ने द्वितीय श्रेणी प्राप्त की इस के अतिरिक्त हमारे एक विद्यार्थी बलदेव राज ने १४४ अंक प्राप्त कर के क्लास मे प्रथम रहा।

B.Sc Part II Med.— मे कालिज से भेजे गए ३२ विद्यार्थियो मे से २५ पास हुए कालिज का परीक्षा परिणाम ६८·१ रहा जबकि विश्व विद्यालय का परीक्षा परिणाम ४९·१ था! कालिज के चार विद्यार्थियो ने द्वितीय श्रेणी प्राप्त की। हमारे एक विद्यार्थी राजेन्द्र कुमार पुरी ने १४८ अंक प्राप्त किए और कक्षा मे प्रथम रहा।

★ आर्य समाज के दशो नियमो को दशो दिशाओ में गुंजा दो।

★ बनो आर्य और जमाने मे हलचल मचा दो।

★ विश्व मे राम-राज्य स्थापित करने के लिये राम और कृष्ण के गुणो को अपनाओ।

★ ईसाइयत और इस्लाम के जाल से विश्व के मानव समाज को बचाओ।

★ आत्मा अजर-अमर है इस लिए मौत से मत घबराओ।

★ मृत्यु मे अलौकिक झांकियो को देखो, अमर बनो।

दयानन्द कालिज हिसार का शानदार परीक्षा परिणाम

कालिज के विद्यार्थी, श्री अविनाश चन्द्र आनन्द ने बी० एस० सी (पार्ट ३) की परीक्षा में ५०० में से ३८४ अंक लेकर पंजाब यूनिवर्सिटी में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। वह इस कालिज का विद्यार्थी है, स्थानीय गवर्नमैंट कालिज का नहीं जैसा कि गलती से ट्रिब्यून पत्रिका के २५ जून १९६६ के अंक में छपी सम्मानित सूची (**Merit List**) में छप गया है। कालिज का प्रतिशत परीक्षा—परिणाम ९३% है।

प्री—इन्जीनियरिंग परीक्षा में हमारा विद्यार्थी श्री आनन्द देव ६५० में से ५३६ अंक प्राप्त करके पंजाब यूनिवर्सिटी में प्रथम रहा और उसने यूनिवर्सिटी का ५२९-६५० अंको वाला पिछला रिकार्ड भी तोड़ दिया। हमारे दो विद्यार्थी इसी परीक्षा की सम्मानित सूची (**Merit List**) में भी आए हैं। ग्यारह विद्यार्थियों ने प्रथम श्रेणी और २४ विद्यार्थियों ने द्वितीय श्रेणी प्राप्त की कालिज का प्रतिशत परीक्षा परिणाम ६७% है जब कि यूनिवर्सिटी का ४४.९.%।

प्री—मैडिकल परीक्षा में हमारा विद्यार्थी श्री जगदीश चन्द्र अग्रवाल ६५० में ४३० अंक प्राप्त करके जिले भर मे प्रथम रहा।

बी. ए. पार्ट **iii** में भी इस कालिज के छात्र हनुमान दास ने ५०० मे से ३२१ अंक प्राप्त करके पुरुष छात्रो मे समस्त पंजाब विश्वविद्यालय में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

इस कालिज का प्रायः सभी कक्षाओ का उत्तीण प्रतिशत अंक (**Pass Percentage**) विश्वविद्यालय के उत्तीर्ण प्रतिशत अंक से ऊंचा रहा है। कालिज की परीक्षा परिणाम सम्बन्धी तथा अन्य सफलताओं को देखते हुए जनता इसकी और अधिकाधिक आकृष्ठ होती जाती रही है।

मन्त्री
स्टूडेन्ट्स एसोसियेशन
दयानन्द कालिज हिसार

चुनाव

आर्यसमाज लोहगढ़ अमृतसर

प्रधान—ज्ञानी पिंडीदास जी।

उपप्रधान—प्रि० चिमनलाल जी अरोड़ा डी० ए० वी० कालेज, प्रि० भक्तराम जी, डी० ए० वी० हायर सै० स्कूल, [illegible]

मन्त्री—प्रो० मुकुन्दलाल तनेजा डी० वी० वी० कालेज।

उपमन्त्री—ला० रोशनलाल ला० सीताराम आनन्द।

खजांची—पं० पूर्णचन्द जी आनंद डी० ए० वी० कालेज।

आडिटर=प्रो० एम० के० गुप्ता डी० ए० वी० कालेज।

पुस्तकाध्यक्ष—ला० मथुरादास जी, डी० ए० वी० स्कूल।

प्रतिष्ठित—स० रणधीरसिह जी, स० गुरमुखसिह जी, ला० हरभजनसिह जी, ला० हंसराज जी मित्तल, ला० शांति स्वरूप, प्रि० एन० एन० सरीन, श्री धर्मपाल जी, श्री देसराज जी पुरी।

—पिण्डीदास ज्ञानी

आर्य समाज शकूर बस्ती देहली

इस प्रकार से चुनाव हुआ।

प्रधान—श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री उपप्रधान—श्री छज्जू राम जी, श्री विद्यारत्न जी सागर मन्त्री—श्री मूलशकर जी शास्त्री, उपमन्त्री — श्री भीमसेन जी, प्रचार मन्त्री —श्री पुरुषोत्तम जी आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री दीनानाथ, ऋषिराम (कीपर) — पुस्तकाध्यक्ष, यज्ञ संयोजक — श्री ऋषिकेश जी, लेखा निरीक्षक — श्री कृष्ण कुमार जी प्रतिष्ठित व्यक्ति—तीन निर्विरोध हुए। प्रतिष्ठित सभासद छः निर्विरोध हुए।

मूलशंकर शास्त्री
मन्त्री आर्य समाज

आर्य समाज मालवीय नगर (वा. वि.) नई देहली

प्रधान श्री विका प्रकाश पाली श्री उप-प्रधान श्री संगम दास वावन श्री मन्त्री श्री [illegible] जी मन्त्री श्री किशोरी लाल बहल उपमन्त्री:—श्री राम कुमार गुप्ता सहायक मन्त्री श्री अर्जुन देव जी कोषाध्यक्ष:—श्री सरदारी लाल जी सहायक कोषाध्यक्ष श्री शान्ति स्वरूप जी पुस्तकाध्यक्ष:—श्री राम चन्द जी निरीक्षक:—श्री नन्द लाल जी

किशोरी लाल बहल मन्त्री

★

आर्य समाज श्री गंगानगर

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज श्री गंगानगर की दिनांक १५-७-६६ की यह शोक सभा आर्य जगत के कर्मठ, त्यागी सन्यासी कार्यकर्ता श्री स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती के आकस्मिक देहावसान पर गहरा दुख प्रकट करती है एवं परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि वे उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

मन्त्री
आर्य समाज श्री गंगानगर

आर्य समाज श्री गंगानगर में आदर्श विवाह सम्पन्न।

दिनांक १-७-६६ को प्रातः ८ बजे आर्य समाज मन्दिर श्री गंगानगर में श्री जौहरीलाल जी टाक (राजगढ़ वाले) सहायक रजिस्ट्रार सहकारी विभाग श्री गंगा नगर (बीकानेर) की सुपुत्री श्रीमति विमला देवी टाक का शुभ विवाह श्री हरिश चन्द्र पुत्र श्री शंकर लाल जी टाक सांगानेर (जयपुर) जो मर्करी फिल्म बम्बई के मालिक हैं के साथ वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। विवाह में नगर के प्रतिष्ठित सज्जन [illegible] नर-नारी उपस्थित थे जिन्होंने प्रसन्नता पूर्वक वर वधु को आर्शीवाद दिया।

विवाह में दहेज आतिश बाजी तथा घूंघट जैसे प्रथाओं का तिरस्कार किया गया।

भारतीयो को देश तथा जाति की रक्षा के लिए ऐसे विवाह का अनुकरण करना चाहिए।

मंत्री,
आर्य समाज, श्री गंगानगर,
(राजस्थान)

अदालती नोटिस

बा अदालत सब-जज जिला कांगड़ा अपील संख्या ६६/३। ज्ञानचन्द बनाम—रोशनलाल।

श्री ज्ञानचन्द बनाम रोशनलाल के आदेश के अनुसार असहमत होते हुए भी अपील ६६/३ जिसके अनुसार रोशनलाल सुपुत्र सरदाराम जात जरगर निवासी कोतवाली बाजार धर्मशाला जि० कांगड़ा उपर्युक्त मुकद्दमे वेदवाली में श्री रोशनलाल समन तामील करने से जानबूझ कर बचता है और छिप गया है। इसलिए उक्त श्री रोशन लाल के नाम यह इश्तहार (विज्ञापन) जारी किया जाता है कि यदि रोशनलाल तारीख ९-८-६६ को कांगड़ा की अदालत में उपस्थित नहीं होगा तो इसके संबंध में एक पक्षीय कार्यवाही की जाएगी।

आज तारीख ८-७-६६ को मेरे हस्ताक्षर तथा अदालत मोहर के जारी किया गया।

हस्ताक्षर
सब-जज कांगड़ा

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक ३०) ६ श्रावण २०२३ रविवार—दयानन्दाब्द १४१— २४ जुलाई १९६६ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

अग्निरस्मि जन्मना

हे लोगो ! कान खोल कर सुन लो। मैं तो जन्मकाल से ही अग्नि बन के आया हू। अग्नि के समान सब से आगे चलता तथा सब को प्रकाश देकर जीवनपथ दिखलाता हू दुष्टो को भस्म भी कर देता हू।

घृतं मे चक्षु

यह मेरी आखे बडी चमकती हैं। कोई भी धर्म का, समाज या राष्ट्र या द्रोही शत्रु मेरी आखों से बच कर निकल न सकेगा। मेरी दृष्टि से बच नही सकता। सब को मेरी आंखें देखती हैं।

अमृतम् म आसन्

मेरे मुख में अमृत भरा है। जैसे अमृतपान कर के तृप्ति हो जाती है वैसे मेरे मुख से निकले शब्दो को सुन कर सारे मुग्ध, मस्त हो जाते हैं। मधु की तरह मेरे मुख में मीठा अमृतरस भरा हुआ है।

वसन्त इन्नु रन्त्य:

हे लोगो ! जीवन में कभी उदास न होना। नाना प्रकार की अवस्थाए आती रही हैं। देखो ! यह वसन्त ऋतु भी हमें प्यारा है, बड़ा सुन्दर है, रमणीय मालूम होता है। नानाविध रंग-विरंगे फूल खिलते हैं।

—

सा म वे द से

वे दा मृ त

मैं सदा विजयी हूं

अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम्।
अभीषाऽस्मि विश्वाषाडाशामाशां विषासहि॥

अर्थ—मै कायर नही हू वरन् (अहम् अस्मि) मैं तो सदा (सहमान:) बडा ही साहसी हू (भूम्याम्) भूमि पर (उत्तर: नाम) बडा ही प्रसिद्ध व उत्तम हू तथा जो भी शत्रु बन कर मेरे मुकाबिले पर आयेगा उसे (अभीषाड् अस्मि) देखते २ पराजित कर देने वाला हू और (आशाम्) हर दिशा व दशा मे मैं (विषासहि:) अच्छी तरह से शत्रु को चकनाचूर कर देने वाला हू। मैं सदा विजयी हू। पराजय तो कभी मेरे पास नही आती। जो भी राक्षस, चोर लुटेरा या शत्रु बन कर मेरे सामने आया वह वही मेरे बल से समाप्त हो गया।

इस का भाव यह है

प्रभु की कृपा से मैं मानवता के मान का रक्षक बन कर आया हू। मैंने राक्षसो, चोरो डाकुओ तथा अत्याचारियो को मिटा देने का व्रत धारण कर लिया है। उन से टक्कर लेने मे लग गया हू। सारे लोग ही आज मेरे शब्दो को सुन लेवें कि मैं निर्बल कायर नही हूं। मेरे पास बडी भारी सहन शक्ति का बल है। मेरा पराक्रम प्रसिद्ध हो चुका है। मैं तो शत्रुओं को राक्षसो पिशाचों को, आक्रमण करने वालो को मार काट कर उनको भूमि पर गिरा देता हू। गाजर मूली के समान काट देता हू। जिस ओर भी पाव रखता हूं उधर ही विजय करता चला जाता हू। शत्रु को चकनाचूर करता जाता हू। अथर्व वेद १२-१-५४

★ महर्षि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द तथा धर्मवीर प० लेखराम जी के अन्तिम शब्दो को ध्यान पूर्वक सुनो और उनके स्वप्नो को, उनके अधूरे कार्यो को पूर्ण करने के लिये आज ओ३म् का झण्डा धारण करके सर पर कफन बाध कर मौत को भी ललकार कर विश्व विजय पथ पर आगे बढो। ये ही श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द की आत्मा का आज विश्व के मानव समाज के नाम तथा आर्य वीरो के नाम आर्य समाज के नाम परम पवित्र दिव्य पावन सदेश है।

★ विश्व के इतिहास में आर्य समाज का नाम स्वर्णाक्षरो मे अंकित करो।

ऋषि दर्शन

सत्यं न्यायं विज्ञातवान

जिस मनुष्य का जीवन सत्य से भरा है, न्याय और न्याय करने वाला है और ज्ञान से युक्त है। कभी किसी काम मे असत्य नही कहता व करता अन्याय नही करता तथा ज्ञान से परे नही होता है—

स राजसभामर्हति

ऐसा सत्यकर्मी, सत्यधर्मी, न्याय प्रिय ज्ञानी विद्वान ही राजसभा का सदस्य, अधिकारी तथा शासन के योग्य हो सकता है। ऐसे गुण वाले व्यक्ति ही राज्यसभा के सभासद होने या मन्त्रिमण्डल मे जाने का अधिकारी है।

विदित सर्व व्यवहारान्

जिन लोगो को राज्य के भिन्न-भिन्न विभागो के कार्यों का ज्ञान है, चतुर है व योग्य है, जो राज्य के प्रबन्ध मे तथा कार्यों मे कुशल है—ऐसे निपुण लोगो उत्तम अधिकारियों को ही राज्य के कार्यों मे सदा लगाना चाहिए।

यज्ञानुष्ठानेन च

और जहा पर जिस राष्ट्र मे यज्ञो का शुभ कर्मों का परोपकार रूप शुभ कार्यों का अनुष्ठान करने वाले सज्जन होते है। जहा पर परोपकार का काम करने वाले उत्तम प्रकृति के लोग है जहा निस्वार्थी

सिद्धांत विवेचन

सुषुप्ति अवस्था में जीव को सुख होता है ?

(वेदबन्धु शास्त्री महोपदेशक हैदराबाद)

विद्वानों में इस बात पर पर्याप्त मत-भेद है कि कुछ विद्वान जीवात्मा को सुषुप्ति में सुख मानते है और कुछ विद्वान नही अतः यह विवाद का विषय है। मेरा मत यह है कि सुषुप्ति अवस्था में सुख और दुःख दोनों ही नही होते। महर्षि दयानन्द का भी यही मत है। इस मन्तव्य सिद्धि के लिए निम्न पंक्तियां दी जा रही है, आशा है स्वाध्याय प्रेमी और सिद्धान्ती लोग इस लेख पर विचार करके यथार्थ आर्य सिद्धांत का ग्रहण करेंगे।

जीवात्मा की तीन अवस्थाएं होती हैं—जागरित अवस्था, स्वप्न अवस्था और सुषुप्ति अवस्था।

जागरित अवस्था—'जागरित स्थानो बहिष्प्रज्ञः' माण्डूक्योप, जागरित अवस्था में जीव का सम्बन्ध बाह्य-पदार्थों, इन्द्रियों और मन से बना रहता है। उस काल का नाम जागरित अवस्था है। माननीय श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज ने सन्मार्ग-दर्शन मे कहा है कि 'इन्द्रिय जन्यज्ञानावस्था जागरणम्' अर्थात् विषय और सम्बन्ध से जब सुख-दुख का अनुभव होता है उस काल का नाम जागरित अवस्था है अतः जागरित अवस्था मे सुख और दुःख होते है।

स्वप्न अवस्था—'स्वप्नस्थानोऽन्तः प्रज्ञः' जिस समय बाह्य-पदार्थों से मन हट कर इन्द्रिय शक्ति का मन मे लय हो जाता है, तब पूर्व अनुभव किए हुए विषयो के संस्कारों का प्रकट हो जाना स्वप्नावस्था कहलाती है।

'इन्द्रियाणां विलयत्वे दृष्ट श्रुतानुभूतविषयाणां संस्कारवशात् मनसि-उद्भवय स्वप्नम्' सन्मार्ग दर्शन, अर्थात् जिस समय इन्द्रिय शक्ति का मन मे लय हो जाता है। तब पूर्व देखे, सुने व अनुभव किए हुए विषयो के संस्कारो का उद्भव हो जाना स्वप्नावस्था कहलाती है। स्वप्न अवस्था मे यद्यपि बाह्य-पदार्थों से जीव का सम्बन्ध नही रहता, परन्तु मन से बना रहता है इसलिए स्वप्न अवस्था में भी सुख और दुःख की प्राप्ति होती रहती है।

सुषुप्ति अवस्था—'यत्र सुप्तो न कंचन काम कामयते न कंचन स्वप्नं पश्यति तत्सुषुप्तम्' माण्डूक्योप, जिस अवस्था में सोया हुआ मनुष्य किसी भी भोग की कामना नही करता, कोई भी स्वप्न नही देखता वह सुषुप्ति अवस्था है। 'सर्व संसार दुःख वियुक्तावस्था सुषुप्ति' सन्मार्गदर्शन—अर्थात् संसार मे यावत् प्रकार के सुख

—→ निम्न अवस्था

का नाम सुषुप्ति है। सुषुप्ति अवस्था में जीव का सम्बन्ध मन से भी हट जाता है। अतः उस दशा में कोई भी नैमित्तिक ज्ञान नही रहता, सुख दुःख नैमित्तिक हैं इस कारण सुषुप्ति में सुख और दुःख दोनों ही नहीं रहते। क्योंकि सुख और दुःख का ज्ञान जीवात्मा को केवल मन के साथ सम्बन्ध होने से होता है। सुषुप्ति अवस्था में जीवात्मा का मन से सम्बन्ध न होने से कोई भी नैमित्तिक ज्ञान नही होता चाहे वह इन्द्रियजन्य हो या मानस। जीव का स्वाभाविक ज्ञान अत्यल्प होने से कुछ भी करने में असमर्थ है, अतः सुषुप्ति अवस्था में जीव सुख - दुःख का अनुभव नही करता। बृहदारण्यकोपनिषद में भी कहा है कि 'यत्र सुप्ति न कंचन काम कामयते न कंचन स्वप्नं पश्यति।' [बृ. ४/३/७९]

अर्थात् जब जीव गाढ़ निद्रा में होता है तब उसको जागरित और स्वप्न दशा का ज्ञान नहीं होता।

न च सुखित्व प्रत्ययो दुःखित्व प्रत्ययो वा सुषुप्ते विद्यते"

वेदान्त शंकर भोले स्वामी शंकराचार्य जी कहते हैं कि सुषुप्त जीव को सुख दुःख का ज्ञान नहीं होता।

महर्षि दयानन्द के प्रमाण

(१) "जब सिद्ध जीव सुषुप्ति दशा में जाता है, तब उसको कुछ भी भान नही होता।

(२) जब मनुष्य का जीव सुषुप्ति दशा में रहता है तब उसको सुख व दुःख की प्राप्ति कुछ भी नही, क्योंकि वह शरीर के भीतर तो है परन्तु उस का बाहर के अवयवों के साथ उस समय सम्बन्ध न रहने से सुख दुःख की प्राप्ति नहीं कर सकता। और जैसे वैद्य वा आजकल के डाक्टर लोग नशे की वस्तु खिला वा सुंघा के रोगी पुरुष के शरीर के अवयवों को काटते वा चीरते हैं उसको उस समय कुछ विदित नहीं होता।

(३) "जब तुम सुषुप्ति दशा में होते हो तब तुमको सुख दुःख प्राप्त क्यों नही होते ?" [सत्यार्थ प्रकाश १२ समुल्लास]

इत्यादि प्रमाणों से सिद्ध है कि सुषुप्ति अवस्था में जीव को सुखः दुःख प्राप्त नही होते।

प्रत्येक प्राणी सुषुप्ति दशा में ब्रह्म के साथ संयोग सम्बन्ध से शान्ति लाभ करता हुआ पुनः कुछ समय के पश्चात् अपने २ पूर्वावस्था में आता है परन्तु अविद्या के कारण जीवात्मा को इस का ठीक बोध नही होता क्यो कि जड़ प्रकृति-कारण रूप तत्व मे उस समय जीव होता है। उस समय जीव का अन्तःकरण मन से सम्बन्ध न रह जाने के कारण सुख दुःख दोनो ही नहीं होते इस मे केवल इतना ही कथन है कि गाढ निद्रा मे दुःखाभाव में सुख का आरोपमात्र है वास्तव में नहीं। यदि कदाचित् सुख ही मान लें तो यह सन्देह भय दिखा रहा है कि अज्ञान प्रधान सुषुप्ति अवस्था मे तत्वज्ञान से ही लाभ होने वाले सुख की प्राप्ति कैसी होगी ? विचार पथ मे उलझन भी आ जाती है, बहुपरिश्रम साध्य योगज धर्म निष्फल हो जाता है। इसका कारण यह है कि सुषुप्ति अनायास सर्वत्र सब को सदा प्राप्त है और वेदादि सच्छास्त्र मोक्ष सुख लाभ के लिए जो शासन कर रहे है उस को मिथ्यात्वापत्ति सिद्ध होगी, अतः सुषुप्ति अवस्था मे दुःख निवृत्ति है सुख प्राप्ति नही, अन्त मे सुषुप्ति समय जीव का मन से सम्बन्ध न रहने से सुख दुःख नही होते। यदि सुषुप्ति में सुख का बोध हो जाता तो वह दशा सुषुप्ति ही नही हो सकती, वह स्वप्न अथवा जागरित ही रहेगी।

आशा है आर्य विद्वान इस छोटे लेख पर सूक्ष्म विचार करके उचित का ग्रहण और मिथ्या का त्याग करेंगे।

आर्य समाज और गौरव

रचयिता—श्री रवि वर्मा आर्य 'रवि' उज्जैन

ओ३म् ध्वजा लेकर द्रुत गति से,
कौन बढ़ा आता है आज ?
आर्य समाज, आर्य समाज।
आर्य समाज, आर्य समाज॥

किस का सिंह निनाद श्रवण कर,
मतपंथी सब थर्राते।
जैनी, कुरानी, बौद्ध किरानी,
और पुराणी बबराते॥
सम्प्रदाय के दम्भ - दुर्ग पर,
कौन गिर रहा, बन कर गाज ?
आर्य समाज, आर्य समाज।
आर्य समाज, आर्य समाज॥

राम सनेही, राधा स्वामी,
वैष्णव शैवादिक सारे।
दादू, नानक और कबीर मत,
चमके जो टिम-टिम तारे॥
किसके सम्मुख तेज हीन ये,
पड़े हुए तज लज्जा-लाज ?
आर्य समाज, आर्य समाज।
आर्य समाज, आर्य समाज॥

अरे किधर है अद्वैत,
अद्वैत, विशिष्ट अरु शुद्धा द्वैत।
द्वैता - द्वैतवाद किधर है,
शून्यवाद क्यों पड़ा अचेत॥
त्रैतवाद का तुमुलनाद कर,
कौन छा रहा बन कर छाज ?
आर्य समाज, आर्य समाज।
आर्य समाज, आर्य - समाज॥

★ जिस वस्तु की उपासना की जाती है उसके गुण उपासना करने वाले में आ जाते हैं। जैसे यदि कोई विद्वान् की उपासना करे तो उसे विद्या प्राप्त होगी। इसी प्रकार यदि कोई पत्थर की पूजा करेगा तो वह पत्थर के समान जड़, मूर्ख और आलसी व अज्ञानी हो जावेगा।

सम्पादकीय—

आर्य जगत्

वर्ष ६] रविवार ०२३, २४ जुलाई १९६६ [अंक ३०

आर्य युवक समाजें

आज हम आर्य जगत के इन स्तम्भों द्वारा सारे आर्य समाजो तथा आर्य संस्थाओ स्कूलो कालेजों के माननीय सम्बन्धित सज्जनों कार्यकर्ताओं एवं परिवारों का ध्यान इस विशेष बात की ओर दिलाना चाहते हैं जो बात आर्य समाज के लिए बहुत ही जरूरी है। जिस के द्वारा समाज का काम भलीभांति चलता रहता है। जिसके बन्द हो जाने से समाज की चलती गाड़ी रुक सकती है। आज के युग में तो विशेष रूप से यह बात परमावश्यक है। हर अवस्था मे इस का ध्यान रखना ही होगा। वह बात है आर्य युवक समाजों की।

यह तो बिना विवाद के माना गया है कि युवक परिवार हो या सस्था, समाज हो या राष्ट्र सब की उन्नति के लिए एक आवश्यक मेरुदण्ड है। मेरुदण्ड सारे शरीर को सीधा रखता है। इसके ठीक न होने से शरीर की प्रक्रिया बिगड़ जाती है। युवको मे नयाउल्लास, जोश तथा उत्साह भरा होता है। जहां व जिस कार्य में युवक होगे, उस का रूप ही कुछ और होगा। युवक कार्य चाहते हैं और काम भी प्रगतिशील। उन्हे कोरी बातो से बडी घृणा होती है।

आर्य समाज और अपनी विशाल संस्थाओं की सुन्दर छावनियो मे काम करने वाले हमारे मान्य नेता महारथियो के जीवन मे युवावस्था से ही समाज सेवा का प्रेम पैदा हुआ। वही उन को इन मे खींच लाया। इन के कारण ही तो आज समाजें व संस्थाएं भरपूर काम कर रही हैं। किन्तु कब तक? जहां २ इन में से कोई वृद्ध महारथी अपनी आंखें बन्द करके चल देता है, वहां अवस्था यह होती है कि काम करने वाला कोई न होने से समाज का काम ही बन्द हो जाता है। कई स्थान ऐसे हैं जहां पर समाजों में काम करने वाला कोई न होने से अवस्था चिन्तनीय हो गई। सब जानते ही हैं। यही बात अपनी संस्थाओं के बारे में कही जा सकती है। युवक तो मिलते हैं पर धर्म के रंग में रंगे हुए कम। यदि कोई मिल भी जाये तो अपनी सस्थाओं में उनके लिए कम ही स्थान मिलता है। कहीं २ ऐसे युवकों को ढूढ २ कर लाने वाले सज्जन भी हैं पर बहुत विरले। इसका परिणाम सामने आ रहा है। हमारी इन शानदार छावनियों में हर प्रकार की उन्नति है पर आर्य समाज के वातावरण की छायामात्र शेष रहती जाती है। इस का एकमात्र कारण यह है कि युवको के इस दिशा में निर्माण का ध्यान देने वाले बहुत कम हैं। वृद्धो के बाद समाजें सम्भालने वाले युवक कम हो रहे है। वे और किसी ओर जा रहे हैं। युवक भी जल के प्रवाह के समान होता है—उसके सामने रुकावट आ जाये तो वह अपना मार्ग बदल लेता है। आज हमें शिकायत होती है कि सत्संगो में, समाजो के कामों मे युवक नहीं आते। इस पर विचार करना ही चाहिए।

स्वर्गीय महात्मा हसराज जी इतने ऊचे नेता होकर भी प्रति रविवार समाज में जाते थे। अपने साथ कितने ही युवको को ले जाते। वही युवक आज मान्य नेता के रूप मे हमारे सामने हैं। डा० मेहर चन्द जी महाजन काश्मीर के प्रधान मन्त्री होकर भी बाद मे भारत के सर्वोच्च न्यायालय के उच्च न्यायाधीश होकर भी परिवार समेत समाज मे जाते थे। अब भी और कामो में अवकाश कर ले पर समाज मे जाने का कभी अवकाश नहीं करते। इन का प्रभाव विशेष कर युनको पर पडता है। किन्तु ऐसे कितने हैं जो रविवार समाज मे जाते है। अपने परिवार को तो कौन समाज मे लाता है? हमारी तो भावना यह होती है कि समाज में दूसरे लोग व दूसरो के परिवार आये। हमे जाने की क्या आवश्यकता है। हमारे व हमारे बच्चो के लिए समाज नही है। फिर काम कैसे चलेगा? युवक समाजो के बिना समाजों की गाड़ी रुकती जा रही है धन्य हैं वे परिवार जिनके बच्चे आर्य समाज में जाते हैं। ऐसे ही लोगो व परिवारों पर समाज को मान है। हम सारे समाज से अनुरोध करना चाहते हैं कि आज की बदलने वाली परिस्थिति में अपने युवक समाजो के निर्माण का ओर आज और इसी समय से ही ध्यान देना प्रारम्भ कर देवें। कोई भी समाज व संस्था ऐसी न रहे जहां पर आर्य-युवक समाज की स्थापना न हो जावे। यदि दस बाहर की संख्या मे भी सच्चे युवक मिल बैठे तब भी समाज प्रगति करेगा। सभा ने अपने गत वार्षिक निर्वाचन अधिवेशन में आर्य युवक संगठन का विशेष कार्य आन्दोलन प्रस्ताव पारित किया था सभा को इस आवश्यक काम को आज से अपने हाथ में लेकर इस कमी को पूर्ण करना चाहिए। समाजें सर्वत्र युवक समाजें बनावें। आर्य जगत की सेवाएं इस कार्य में प्रस्तुत है—त्रिलोक चन्द

टंकारा का महा-विद्यालय

महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्म-भूमि टकारा में और काम तो बडी उत्तमता से किये जा रहे हैं। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के अवसर पर स्पेशल ट्रेनो से नर-नारी वहा मेले में पहुंचते हैं। विशेष महाविद्यालय की कमी थी, जहा पर ऊची शिक्षा प्राप्त युवको को प्रविष्ट करके उनको वैदिक शिक्षा देकर देश-विदेशो मे धर्म-प्रचार के लिए भेजा जा सके ताकि वहा वे अंग्रेजी व सस्कृत मे भाषणो द्वारा वैदिक धर्म की छाप लगा सकें।

मान्य डा० मेहरचन्द जो महाजन के के दिल मे आरम्भ से ही आर्यसमाज के लिए बडी लगन है। ऋषि के अनन्य भक्त है। टकारा के वर्तमान उन्नत रूप मे आपका बडा हाथ है। डा० महाजन जी के मन में एक तडप है। वह एक तो दयानन्द यूनिवर्सिटी और दूसरा टकारा का ऐसा महाविद्यालय निर्मित कराकर अपनी आखो से देखना चाहते है टकारा के ऐसे महाविद्यालय के लिए डा० महाजन जी किसी योग्य, आदर्श जीवन वाले, आचार के सजीव प्रतीक व अनुभवी विद्वान् की तलाश मे थे। आर्य जनता को यह सुनकर बडी प्रसन्नता होगी कि प्रधान जी ने उस ऋषि महाविद्यालय के लिए आर्य-समाज के विद्वान्, तपस्वी ब्राह्मण, सौम्यता की प्रतीक, इगलिश व सस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित तथा अनुभवी श्री पं० सत्यदेव जी विद्यालकार एम०ए० जालन्धर को अपना प्रेम भरा आदेश देकर टकारा भेजा है। माननीय विद्यालकार जी के बारे में जितना लिखा व कहा जाए थोड़ा है। डी०ए०वी० कालेज मे वर्षों एम०ए० श्रेणी को पढाते रहे। अब जालन्धर मे ही कन्या महाविद्यालय जालन्धर मे एम०ए० को पढाते थे। जालन्धर मे ही घर मकान अपना है। परिवार है। शानदार काम तथा मान-प्रतिष्ठा है। इतनी सुख-सुविधा छोड़कर इतनी दूर कौन जाता है? पर बोले - श्री महाजन जी के आदेश को इनकार नही किया जा सकता है। टंकारा चले गए। रविवार को डा० ज्ञानचन्द जी त्रेहन के परिवार मे यज्ञ की पूर्णाहुति पर जनता मे उनका टकारा पधारने की तैयारी पर भाव भरा पुष्प माला से सम्मान स्वागत भी किया गया। योग्य स्थान पर योग्य चले गए। बधाई देते है। ऋषि महाविद्यालय सचमुच समाज का मस्तक ऊचा करता रहे।

मुरादपुर (राजौरी) में नई समाज की स्थापना

आर्य प्रादेशिक सभा के उपदेशक पं० चन्द्रसेन आर्य हितैषी सोनीपत निवासी २७ जून से जम्मू प्रात में प्रचारार्थ भ्रमण कर रहे हैं, पुछ के बाद वापसी पर मुरादपुर आए यहां प्रचार कार्य के पश्चात नई समाज की स्थापना की गई। सभा से सम्बन्ध वास्ते समाज की ओर से फार्म भी भर के भेजे गए है। चुनाव पं० चन्द्रसेन जी को देख-रेख मे इस प्रकार से हुआ प्रधान श्री प० देवराज जी शर्मा, उपप्रधान—बख्शी तीर्थराम जी, मन्त्री—श्री प० देवमित्र जी शर्मा उपमन्त्री—श्री प० विश्वामित्र जी शर्मा, कोषाध्यक्ष-श्रीमती यशोदा देवी शर्मा। अन्तरंग मे श्री प० ऋषिदेव जी शर्मा आदि चुने गये—आशा है ये पौदा फूले फलेगा।

—देवमित्र शर्मा
आर्य समाज मुरादपुर

★ महर्षियो की प्रणाली को अपनाओ। घर-घर मे यज्ञ रचाओ महर्षि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द के पद-चिन्हो पर चलो। इसी मे जीवन का और विश्व का कल्याण निहित है।

★ बनो आर्य और जमाने मे हलचल मचा दो।

धर्मसंकट में आपबीती

श्री देवीदास जी आर्य गोविन्दनगर, कानपुर

कानपुर गोविन्दनगर के निर्भीक नेता, आर्य समाज के महारथी, सच्चे आर्य श्री देवीदास आर्य ने कानपुर में मुसल्मान युवको द्वारा अपहरण की जाती हुइ कितनी हिन्दु परिवारों की युवती लडकियों को उन से बलपूर्वक जीवन को कई बार मौत के मुख मे डालकर वापस लिया है यह तो एक पुस्तक बन सकती है। आर्य समाज को इस आर्य वीर पर बडा गौरव है। हम चाहेंगे कि ऐसे नरसिंह को सार्वदेशिक सभा विशेष सम्मानित कर के वीरपदक प्रदान करे। इस लेख में इसी प्रकार की आपबीती की एक घटना है। आर्य जगत् के प्रेमी पढे—स०

जीवन मे कई बार ऐसी घटनाएं घटित हो जाती है कि मनुष्य धर्म-संकट में पड जाता है कि वह करे तो क्या करे? किन्तु बड़ी सावधानता से उस धर्म संकट को दूर करना पड़ता है। मेरे साथ भी जीवन मे समाज सेवा करते हुए ऐसे अनेक अवसर आए। भगवान ने समय पर ऐसी बुद्धि दी कि मै उसे धर्म संकट से पार निकल गया। एक घटना जो कभी नही भूलती—वह लिखता हूं—

मुझे एक धर्म प्रेमी सज्जन ने सूचना दी कि उसने एक पंजाबी हिंदु युवती लड़की कानपुर के समीप एक गांव में मुसलमान के घर में बन्द देखी है। यदि आप में हिम्मत है तो इस कन्या को गुण्डो के चगुल से छुडाने का यत्न करो। मुझे जब यह निश्चय हो गया कि सूचना गलत नहीं तो मैंने निश्चय कर लिया कि उस लडकी को कैद से छुडा लिया जाये। उस समय मूसलाधार वर्षा हो रही थी—उसी समय मैं उस प्रेमी सज्जन को लेकर उस गांव में पहुच गया। उसने मुझे दूर से वह मकान दिखला दिया कि इस मे मैंने प्रात.काल वह हिन्दू लडकी देखी है। यह वे दिन थे जबकि किताब का आन्दोलन मुसलमानों की ओर से चलाया जा रहा था। हिन्दू-मुसलिम तनाव जारी था। के. एम. मुन्शी की किताब में जिस में मुहम्मद साहिब के बारे में लिखा था– उस पर जोरों का आन्दोलन जारी था। यहां तक कि इस वर्ष १५ अगस्त के राष्ट्रिय त्योहार को मुसलिम लीगी विचारों के मुसलमानों ने काले झण्डे मकानों पर लहरा कर मनाया था। इस से अनुमान किया जा सकता है कि वातावरण कितना भयानक था। अस्तु!

मैं जोश मे वहा पर पहुच गया। मकान का द्वार खटखटाया। अन्दर से एक नौजवान आया और बोला—क्यों साहिब! क्या बात है? किस को मिलना चाते हो? मैंने उत्तर दिया कि आपके घर मे मेरी बहिन है, उसे लेने आया हू। नौजवान बोला—मालूम पडता है कि आप घर भूल गये हैं। यहा पर तो आपकी बहिन नही है। तब मैंने अपने साथ आने वाले साथी को पीछे मुडकर देखा—वह वहा नही था। केवल रिक्षा वाला बडी घबराहट के साथ खडा था। उसने कहा कि बाबू जी! वह तो खिसक गया है। तब मैंने अनुभव किया कि उसने मेरे साथ धोखा किया है अन्यथा वह भाग क्यो जाता? फिर ऐसे धर्मसंकट में मुझे अकेला इस विषम अवस्था मे छोड़ कर चला जाता? मैंने साहस करके उस मुसलिम नौजवान से कहा कि तुम झूठ बोल रहे हो। मेरी बहिन तुम्हारे घर के अन्दर है। मैं तो उस को लेकर ही जाऊगा। किंतु वह जोर २ से क्रोध से भर कर यह कहता जाए कि यहां कोई लड़की नही है। मैं भी जोर से कहता जाऊ कि लड़की अन्दर ही है। गाली गलौच तक नौबत पहुंच गई। इस समय उसी मकान से एक बूढ़ा आदमी निकला—उसने मुझ से पूछा कि आप क्या चाहते हैं? झगड़ते क्यों हैं। अपनी बात उसके सामने खोल कर मैंने कह दी कि मेरी बहन आप के घर के अन्दर है। मैंने पुलिस को सूचना दे दी है, वह भी आने वाली होगी। आपका भला इसी बात में है कि लड़की मेरे हवाले कर दो। यदि ऐसा न करोगे तो इसका परिणाम भयकर निकलेगा। यद्यपि मैंने पोलिस को सूचित न किया था—पर ऐसा कहने के सिवाय कोई चारा नही था। मेरी धमकी काम कर गई। बूढे बाप ने अपने युवक बेटे को कहा कि इसको लड़की से बात करने दो। वह इसके साथ जाएगी नही। तुम लाठी रख दो, बेकार में बात का बतंगड़ न बनाओ। नौजवान के हाथ मे लाठी थी। मुझे बड़ी-बड़ी आंखें निकालकर के घूर-घूर कर देख रहा था। मुझ पर हमला करने वाला ही था, जबकि उसके बाप ने उक्त बात कही। मुझे विश्वास हो गया कि दाल मे काला है। लड़की अन्दर है। यह कोलाहल सुनकर वह पजाबी लडकी जिसका नाम शान्ति था, बाहर निकल आई। कुछ पड़ोसी भी पहुंच गये। बूढ़े ने लड़की को कहा कि बेटी! तुम्हारा भाई है, वह तुम से बात करना चाहता है। क्या तुम उसके साथ जाना चाहोगी? दीपक के प्रकाश में जब उस अज्ञात लड़की ने देखा तो वह बोल उठी—कि इसे मैं नहीं जानती, यह मेरा भाई नहीं है, यह झूठ बोल रहा हैं। अब तो उस नौजवान का पारा गर्म हो गया। उसने लाठी सम्भालते हुए कहा—धोखे बाज! हम से चालाकी करने आया है। मैं तो पहले ही समझ गया था कि क्या होगा? उस नौजवान ने मुझ पर लाठी का वार करना चाहा, तब बूढ़े ने रोकते हुए कहा—ठहरो! क्रोध शंतान होता है।

तब मैंने कहा कि मैं धोखे बाज नहीं हूं। यह मेरी बहन है। चूंकि घर से भाग आई है, इस लिए रोष में ऐसा कह रही है। आप मुझे इस से बात करने का मौका देवें सब ठीक हो जाएगा। इस पर पड़ोसियों ने भी मेरी बात को उचित समझ कर नौजवान को बात करने की सम्मति दी बूढे पर भी मेरा जादू चल गया। उसने लडके को एक ओर हटा कर मुझे लड़की से बात करने के लिए कह गया। मैं अन्दर चला गया। उस लड़की को दूर एक कोने में ले जाकर हाथ जोड कर प्रार्थना की—कि मैं आर्य समाज का प्रधान हू। तुम यहां से निकल चलो। मैं तुम्हें तुम्हारे माता पिता तक पहुंचा दूंगा। इस पर लड़की ने कहा कि—अब मुझे माता-पिता रखेंगे नहीं। मुझे ठुकराया हुआ है, कोई रखने को तैयार नहीं था। इस मुसलमान परिवार ने मुझे अपना बनाकर रखा हुआ है। अब मैं वापस नहीं चलूंगी। मैंने लड़की को विश्वास दिलाते हुए कहा—निश्चय रखो कि यदि तुम से अन्याय हुआ तो मैं तुम्हारा विवाह किसी योग्य युवक हिन्दू नौजवान से करा दूंगा। यह मैं वचन देता हूं। वह बिगड़ कर बोली—कौन हिंदू युवक मुझ से विवाह करने को तैयार होगा? मुझे ठोकरें खानी पड़ेगी। यहीं रहने दो। फिर सहसा बोल उठी—क्या तुम मुझ से शादी करोगे। दूसरों की बात न करें। यदि यह स्वीकार है तो मैं आपके साथ चलती हू, मैं तनिक देर चुप हो गया—इस धर्म संकट को देख कर मैं बोल उठा, तैयार हूं—चलो! वह हैरान हो गई। क्योंकि हिन्दू समाज की अवस्था का उसे पता था। प्रसन्नता हुई। वह मेरे साथ चलने को तैयार हो गई। उसने सब के सामने कह दिया कि मैं इस के साथ जाऊंगी। मुसलमान नौजवान हैरान तो बड़ा था परन्तु अब वह कर कुछ भी नहीं सकता था। गांव के काफी लोग इकट्ठे हो गये।

मैं उस लड़की को रिक्षा पर बिठा कर अपने घर गोविन्द नगर ले आया। मेरी पत्नी तथा बच्चे मेरी प्रतीक्षा मे थे। लड़की ने यह सब देख लिया और पूछा कि ये कौन है? उत्तर मिला कि पत्नी और बच्चे! तब मैंने उसे कहा—शान्ति! देखो। मेरी बहिन कोई नही है। आज से तुम मेरी बहिन बनी और मैं तुम्हारा भाई मैंने तुम्हारे विवाह का जो वायदा किया था, उसे मैं पूर्ण करूंगा। उत्तम परिवार का युवक देखकर मैं तुम्हारा समारोह से विवाह करूगा। किन्तु अपने माता पिता का पता बताओ ताकि उन को बुला कर विधिवत तुम्हारी शादी की जा सके। लड़की को हिन्दू अनाथालय पहुंचा कर उसके माता पिता को तार देकर बुलाया। वे आये। प्रेमपूर्वक उसे ले गये। जाते समय मैंने एक साड़ी देकर कहा—कि यह मेरी बहिन है। इस के विवाह में भाई के नाते मेरी ओर से इसको यह साड़ी भेंट है, उसका विवाह एक अच्छे परिवार में योग्य युवक से कर दिया गया। वहां वह अपना जीवन बड़े ही सुख में व्यतीत कर रही है। न जाने हिन्दु परिवारों की कितनी ऐसी-ऐसी युवती लड़कियों को मुसलमान लड़कों से छुड़ाने के लिए जीवन को जोखम मे डालकर कई पापड़ बेलने पड़ते हैं। सुनकर रहा नहीं जाता। [illegible]

पुराणों में ऋषि मुनियों की निंदा सर्वत्र है। दुर्वासा ने एक बार एक असुर को तिलोत्तमा नामक अप्सरा के साथ क्रीड़ा करते हुए देखा। उसे देखते ही उनके हृदय में सुरत इच्छा उत्पन्न हो गई पौराणिक ऋषि भी इस मामले में बड़े कच्चे साबित होते हैं। कोई भी अप्सरा उनके तप, त्याग और वैराग्य को एक क्षण में विनष्ट कर सकती है। यही दुर्वासा जब तिलोत्तमा और असुर को रति क्रीड़ा में संलग्न देखते हैं, उस समय उनकी जो दशा होती है वह पुराणकार के द्वारा निम्न प्रकार वर्णित की गई है—

दृष्ट्वा तयोश्च शृंगारं
मुनिः कामी बभूव ह।
जितेन्द्रियोऽप्यसंसर्गाद्दोषः
संसर्गिको भवेत्॥
सहसा तस्य हृदये बभूव
सुरतेस्पृहा॥ कृष्ण ज. २४।२।३

अर्थात उनके शृंगार को देखकर मुनि कामी बन गये। जितेन्द्रिय मुनि भी कुसंग में पड़ कर दोष युक्त हो गये। उनके हृदय में सुरत की इच्छा उत्पन्न हो गई।

यह है दुर्वासा ऋषि का पुराण-कथित चरित्र। अब जमदग्नि की दुर्दशा देखिये। कृष्ण जन्मखण्ड के ७९वें अध्याय में यह कथा आती है। एक बार जमदग्नि अपनी पत्नी रेणुका के साथ नर्मदा तट पर गये और वहां पर एकान्त स्थल देख कर दिन में ही अपनी पत्नी से सभोग में प्रवृत्त हो गये। उस समय भगवान सूर्य ने उन्हें इस प्रकार दिवा मैथुन में रत देख कर उनकी भर्त्सना की। सूर्य ने कहा आप वेद कर्ता ब्रह्मा के प्रपौत्र, स्वयं चारों वेदों के ज्ञाता, वेदांगकर्ता, धर्मज्ञ और वेदज्ञों में श्रेष्ठ हैं फिर—

धर्मं त्यजति धर्मज्ञो
ह्यधर्मेषु रतः कथम्।
दिवामैथुन दोषं च
वक्ति वेदो विशेषतः॥७९।१८

हे धर्मज्ञ, आप धर्म छोड़ कर अधर्म में क्यों रत हो रहे हैं। वेदों ने दिन में मैथुन करना विशेष रूप से दोष माना है। गनीमत यह हुई कि सूर्य की इस गर्हणा से लज्जित होकर

सूर्यस्य वचनं श्रुत्वा तत्याज,
मैथुनं द्विजः॥ १९

जमदग्नि ने मैथुन त्याग दिया। परन्तु मैथुन कर्म से विरक्त भले ही हो गये हों, उन्होंने अपने आपको दोषी नहीं माना और भागवत के शुकदेव की भांति कहने लगे—

ब्रह्म वैवर्त पुराण की आलोचना

(ले०—प्रो० भवानीलाल जी भारतीय एम. ए.)

तेजीयसां न दोषाय
वह्नेः सर्वभुजो यथा॥ २३

अर्थात् जिस प्रकार सर्वभुज अग्नि को कोई दोष नहीं लगता उसी प्रकार तेजस्वी व्यक्तियों को अनुचित कर्म में प्रवृत्त होने पर भी दोष नहीं लगता। अर्थात् जमदग्नि की दृष्टि में तेजस्वी व्यक्तियों को दिवामैथुन से कोई दोष नहीं लगता। जमदग्नि इतना कहकर ही संतुष्ट नहीं हो गए। उन्होंने तो यहां तक कहा—

न वैष्णवानां शास्तारो,
यूयमस्माकमेव च।
न वासुदेव भक्तानाम शुभं,
विद्यते क्वचित्॥ २५

अर्थात् वैष्णवों को उपदेश देने का अधिकार तुम्हें नहीं है। वासुदेव भक्तों का अशुभ कभी नहीं होता। यह कहकर तो मानो जमदग्नि ने यह स्पष्ट कर दिया कि वैष्णव लोग यदि कोई अनुचित कृत्य भी करें तो उन्हें समझाने का अधिकार भी किसी को नहीं है। क्या जमदग्नि का अनुकरण करते हुए आज के वैष्णव भी दिवा-मैथुन में आसक्त होने के लिए तैयार हैं? जमदग्नि को अपने वैष्णव होने बड़ा अभिमान था। उसी अहंकार के वश होकर वे कहते हैं—विष्णु का सुदर्शन चक्र वैष्णवों की सदा रक्षा करता है—

हरेः सुदर्शनं चक्रं शश्वद्,
रक्षति वैष्णवान्॥

उचित तो यह था कि जमदग्नि सूर्य के परामर्श से अपने को उपकृत हुआ अनुभव करते और अपने कुष्कर्म के प्रति लज्जा अनुभव करते, परन्तु वे तो 'रस भंग' हो जाने से खिन्न थे और उसी आवेश में चट सूर्य को उन्होंने यह शाप दे डाला—

मम शापात्पापदृश्यो,
राहु ग्रस्तो भविष्यसि॥

मेरे शाप से तू राहुग्रस्त हो जाएगा। पुराणकार की सम्मति में जमदग्नि के शाप से ही सूर्यग्रहण होता है। इस प्रकार के शतशः दृष्टांत पुराण में से दिये जा सकते हैं जिन में इन ग्रन्थों के रचयिताओं का ऋषि मुनियों को कलंकित करने का ध्येय स्पष्ट प्रकट होता है।

साम्प्रदायिक विभेद—

पुराणों की रचना शैव, शाक्त, गाणपत्य, सौर, वैष्णव आदि विभिन्न सम्प्रदायों द्वारा अपने २ आराध्य देव को सर्वोत्कृष्ट सिद्ध करने की दृष्टि से की गई है। इस दृष्टि से वैष्णव पुराण विष्णु को ही सृष्टि का कर्ता-हर्ता बताते हैं और शैवपुराण शिव को। कहीं कहीं विष्णु और शिव की एकता की बताई गई है, यद्यपि अन्यत्र पुराणों में इस के प्रतिकूल भाव भी मिलते हैं। ब्रह्म वैवर्त के ब्रह्म खण्ड में शिव निंदा का खण्डन करते हुए स्वयं विष्णु से शिव के प्रति कहलाया गया है—

ये त्वां निन्दन्ति पापिष्ठा
ज्ञानहीना विचेतनाः।६।३१
पच्यन्ते ते कालसूत्रे
यावच्चन्द्र दिवाकरौ॥६।३२

जो पापी, ज्ञानहीन और अबोध तुम्हारी निंदा करते हैं वे अनन्तकाल पर्यन्त कालसूत्र नरक में पड़ते हैं। यह सत्य है कि उपर्युक्त कथन में शिव के प्रति आदर भाव व्यक्त किया गया है, परन्तु अन्यत्र भागवतादि पुराणों में शिव निंदा भी कम नहीं आई है। सभी पुराणों को एक ही व्यक्ति की रचना बताने वाले व्यक्ति इस विरोध की संगति कैसे लगाये? कुछ भी हो ब्रह्म-वैवर्त पुराण में शिव निंदा का स्वर कहीं भी लक्षित नहीं होता। इस के विपरीत शिव और विष्णु की ऐक्यता का भाव यत्र तत्र लक्षित होता है। कृष्ण जन्मखण्ड अध्याय ७५ में कृष्ण नन्द से कहते हैं—

शिव पूजा विहीनश्च
ब्राह्मणो नरकं व्रजेत्।८५

शिव पूजा विहीन ब्राह्मण नरक को जाता है। ९१ वें श्लोक में तो कृष्ण स्पष्ट कह देते हैं—

'नास्ति मे शंकरात्प्रियः'

शंकर से अधिक प्रिय मुझे और कोई नहीं है। कहना पड़ेगा कि वैष्णव पुराणों में अन्य सम्प्रदाओं के प्रति जितनी उदारता के भाव व्यक्त हुए हैं उतने शैव पुराणों में नहीं। तभी तो शैव, शाक्त आदि पुराणों को 'तामस' कहा गया है। शिव पुराण की ही भांति इस पुराण में भी लिंगार्चन की महिमा वर्णित हुई है। ब्रह्मखण्ड अध्याय ६ में विष्णु कहते हैं—

ज्ञानवान्मुक्तिमान्साधुः,
शिवलिंगार्चनाज्जुक्त।
शिवलिंगार्चनं स्थानम्,
तीर्थं मेवतत्॥ ६।४६

शिवलिंग का अर्चन करने वाला ज्ञानी हो जाता है, उसे मुक्ति प्राप्त हो जाती है और वह साधु बन जाता है। शिव लिंगार्चन का स्थान अतीर्थ होने पर भी तीर्थ का महत्व प्राप्त कर लेता है। गनीमत यह रही कि इस पुराण में शिव पुराणोक्त दारुवन की कथा की भांति लिंगोत्पत्ति का इतिहास नहीं लिखा। (क्रमशः)

आर्यजगत के प्रेमियों से

सभा का साप्ताहिक पत्र आर्य जगत भी एक उपदेशक बन कर प्रति सप्ताह अपने पवित्र प्रचार के काम में लगा रहता है। घरों परिवारों, संस्थाओं व व्यक्तियों के हाथों में पहुंच कर माननीय संन्यासी महात्माओं नेता महारथियों, विद्वान लेखकों के तथा अपनी सभा के सज्जनों के लेखों व सन्देशों को लगातार मौन होकर पहुंचाता रहता है। आर्य प्रादेशिक सभा इस के द्वारा कितना प्रचार का काम करती है। वह भी घाटा उठा कर जिस के पास १५० हाई व हायर सैकंड्री स्कूल विशाल कालेजों की छावनियां हों, बड़ी २ समाजों का परिवार हो। इतना बड़ा क्षेत्र हो— फिर भी सब की ओर से आर्य जगत के प्रति इतनी उदासीनता समझ नहीं आती। जीवन के सारे काम चलते हैं तो यह क्यों न चले। कई मान्य प्रिंसिपल, संस्थाएं स्कूल समाजें व सज्जन बड़ा ही सहयोग देते हैं। आभारी हैं। पर अभी कमी है। यह तो सभा का पत्र है। हम तो केवल सिपाही हैं। यदि सिपाही का दिल अवस्था को देखकर उदास हो तो ठीक नहीं होता।

अत: नम्रता से सब से निवेदन है कि आर्य जगत की ओर विशेष ध्यान दिया जावे। समाजें भी यदि प्रति-सप्ताह इस सभा पत्र की १०-२० ५-५ प्रतियां मंगवा कर सत्संग में बंटवा दिया करें। संस्थाओं के मान्य सज्जन भी इसी प्रकार करते रहें। तथा समाजें भी ध्यान देवें तो उदासीनता आज ही समाप्त हो जावे। विज्ञापन इस में भिजवा कर भी सहयोग दिया जा सकता है। आप स्वयं सभा के स्तम्भ, महारथी तथा इसके प्रेमी हैं। फिर आर्य जगत से ऐसी उदासीनता क्यों? आज ही इस ओर विशेष ध्यान देकर इस को उन्नत करने में लग जावें—हमारी सभा का स्कूल-कालेज परिवार इतना बड़ा है। उसके होते हुए सभा को तथा इसके मुखपत्र आर्य जगत को कैसी चिन्ता? देखना चाहिए कि आर्य जगत की चिन्ता कब हटती है—स.

कपिल मुनि परम आस्तिक था

श्री भीष्म का उद्घोष

(आचार्य देव प्रकाश जी आर्य समाज रतलाम) (म० प्र०)

महर्षि दयानन्द से पहिले कई हिन्दू तथा विधर्मी लोग श्री कपिल मुनि को नास्तिक ही मानते थे दयानन्द ने उच्चस्वर से घोषणा की. कि कपिल को नास्तिक कहने वाले स्वय नास्तिक हैं-कपिल अस्तिक था. आज हम इस विषय को महाभारत से उद्धृत करते हैं—कि पितामहा भीष्म कितने बल पूर्वक शब्दो से कपिल मुनि को आस्तिक मानते है।

युधिष्टिर ने कहा (भीष्म से) आप मेरे परम हितैषी हैं—आप ने योग मार्ग का यथोचित रूप से वर्णन किया अब—

सांख्ये त्विदानीं कात्स्न्येंन
विधिं प्रब्रुहि पृच्छते (२)

अब मै साख्य विषयक सम्पूर्ण विधि पूछ रहा हूं—आप मुझे बताने की कृपा करें।

शृणु त्वमिदं सूक्ष्मं
साख्यानां विदितात्मनाम।
विहित यतिभि: सर्वै:
कपिलादिभिरीश्वरै: (३)

श्री भीष्म ने कहा—युधिष्ठिर! आत्म तत्व के जानने वाले सांख्य शास्त्र के विद्वानो का यह सूक्ष्म ज्ञान तुम मुझ से सुनो! इसे ज्ञानैश्वर्य युक्त कपिलादि सम्पूर्ण यतियो ने प्रकाशित किया है। प्रकरण बहुल विस्तृत है अत: हम आवश्यक श्लोको को ही इस लेख मे लिखेंगे किसी ने पूर्ण प्रकरण पढना हो तो वह महाभारत मोक्ष धर्म पर्व अध्याय ३०१ साख्य योग अध्याय पढे, भीष्म जी ने कहा—

अस्मिन् न विभ्रमा·
केचिद् दृश्यन्ते मनुजर्षभ।
गुणांश्च यस्मिन् बहवो
दोष हानिश्च केवला (४)

नरश्रेष्ठ! इस मत मे किसी प्रकार की भूल नही दिखाई देती, इस मे गुण बहुत हैं किन्तु दोष का सर्वथा अभाव है।

अत्रापि तत्वं परमं,
शृणु सम्यङ्मयेरितम्।
बुद्धिश्च परमा यत्र
कपिलाना महात्मनाम् (८५)

इस विषय मे जो परम तत्व है, उसे मैं भली भान्ति बता रहा हू सुनो! यहां कपिल जी के द्वारा प्रतिपादित सांख्य मत का अनुसरण करने वाले महात्मा पुरुषों का जो उत्तम विचार है, वही प्रस्तुत किया जाता है।

साख्या राजन् महाप्राज्ञा
गच्छन्ति परमां गतिम्।
ज्ञानेनानेन कौन्तेय तुल्यं
ज्ञानं न विद्यते (१००)

राजन! कुन्ती कुमार महा ज्ञानी सांख्य योगी ऊपर बताये हुए इसी परम गति को प्राप्त होते हैं। इस ज्ञान के समान दूसरा ज्ञान कोई नही है।

अत्र ते संशयो मा भुज्ज्ञानं
सांख्य परं मतम्।
अक्षरं ध्रुवमेवोक्त पूर्णं,
ब्रह्म सनातनम् (१०१)

साख्य ज्ञान सब से उत्कृष्ट माना गया है। इस विषम में तुम्हे तनिक भी सशय नहीं होना चाहिए, इस मे अक्षर, ध्रुव एवं पूर्ण सनातन ब्रह्म का ही प्रतिपादन हुआ वह ब्रह्म कैसा है।

अनादि मध्यनिधन निर्द्वन्द्वं,
कर्तृ शाश्वतम्।
कूटस्थ चैव नित्य च
यद् वदन्ति मनीषिण: (१०२)

वह ब्रह्मा आदि मध्य और अन्त से रहित, निर्द्वंद्व, जगत की उत्पत्ति का हेतु भूत, शाश्वत, कूटस्थ और नित्य है, ऐसा मनीषी पुरुष कहते है।

यत: सर्वा: प्रवर्तन्ते सर्ग प्रलय विक्रिया:।
यच्च शन्सन्ति शास्त्रेषु वदन्ति
परमर्षय: (१०३)

ससार की सृष्टि स्थिति और प्रलयादि का कर्त्ता वही है। महर्षि अपने शास्त्रो मे उसी की प्रशंसा करते हैं। कितना स्पष्ट वक्तव्य कपिल मुनि के आस्तिक होने के सम्बन्ध में है।

सर्वे विप्राश्च देवाश्च
तथ शम विदो जना:।
ब्रह्मण्यं परमं देव
मनन्तं परमच्युतम्(१०४)
प्रार्थयन्तश्च तं विप्रा
वदन्ति गुण बुद्धय:।
सम्यस्युक्ता स्तथा योगा:
सांख्याश्चाभत दर्शना:(१०५)

समस्त ब्रह्मण, देवता और शान्ति का अनुभव करने वाले उसी अनन्त, अव्यक्त ब्राह्मण हितैषी परमदेव परमात्मा की स्तुति, प्रार्थना करते हैं। उसके गुणों का चिन्तन करते हैं उसकी महिमा का गान करते हैं। योग में उत्तम सिद्धि को प्राप्त हुए योगी तथा अपार ज्ञान वाले साख्य वेत्ता पुरुष भी उसी के गुण गाते हैं। भगवान् की भक्ति का कैसा सुन्दर वर्णन है।

शमश्च दृष्ट: परमं बलं च
ज्ञान च सूक्ष्मं च यथा विदुस्तम:।
तपासि सूक्ष्माणि सुखानी चैव
सांख्ये यथावद विहितानि राजन्(११०)

राजन! प्रत्यक्ष प्राप्त मन और इन्द्रियो का संयम, उत्तम बल, सूक्ष्म ज्ञान तथा परिणाम मे सुख देने वाले जो सूक्ष्म तप बतलाये हैं, उन सब का सांख्य शास्त्र मे यथावत् वर्णन किया गया है (११०)

हित्वा च देह प्रविशन्ति देव
दिवौकसोद्यामिव पार्थ साख्या:।
अथोऽधिकंतेऽभिरतामहार्हे
साख्ये द्विजा: पार्थिव शिटञ्जुष्टे(११२)

पार्थ! साख्य ज्ञानी शरीर-त्याग के पश्चात् परम देव परमात्मा मे उसी प्रकार प्रवेश कर जाते है, जैसे देवता स्वर्ग मे। पृथ्वी नाथ! अत: शिष्ट पुरुषो द्वारा सेवित परम पूजनीय सांख्य शास्त्र मे वे सभी द्विज अधिक अनुरक्त रहते है (११८)

तेषां न तिर्यग्गमन हि दृष्टं नावाग्गति:
पाप कृताधिवास:।
न वा प्रधाना अपि ते द्विजातयो ये
ज्ञानमेतन्नृपतेऽनुरक्ता: (११३)

राजन्! जो इस साख्य ज्ञान मे अनुरक्त है, वे ही ब्राह्मण प्रधान हैं, अत: उन्हे मृत्यु के पीछे कभी पशु-पक्षी आदि योनी मे नही जाना पढता, वे कभी नरकादि अधोगति को भी नहीं प्राप्त होते है, अत: उन्हे पापाचारियो के बीच भी नही रहना पडता है।

साख्य विशाल परमंपुराण.
महार्णवे विमल मुदार कान्तम्।
कृत्स्नच साख्यं नृपते महात्मा,
नारायणो धारयतेऽप्रमेयम् ॥११४

सांख्य का ज्ञान अत्यन्त विशाल और परम प्राचीन है। परिपूर्ण और अति सुन्दर है। नर नाथ परमात्मा भगवान नारायण इस सम्पूर्ण सांख्य ज्ञान को पूर्ण रूप से धारण करते हैं।

अर्थात् परमात्मा के ज्ञान को कपिल मुनि ने दर्शन के रूप में प्रकट किया है, जो लोग कहते है कि केवल ऋषि दयानन्द की ही उपज है कि सांख्य शास्त्र का कर्त्ता आस्तिक है उन्हें महाभारत का यह स्थल पढ़ना चाहिए।

शिक्षा आयोग का प्रतिवेदन

पं० नरेन्द्र जी, प्रधान, हिन्दी प्रचार सभा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य [illegible] शिक्षा आयोग के प्रतिवेदन के सम्बन्ध में एक वक्तव्य प्रसारित किया है जो इस प्रकार है :—

शिक्षा आयोग का प्रतिवेदन प्रकाशित होकर अब जनता के सामने आ गया है। इसकी रूप-रेखा इस प्रकार से रखी गई थी कि इसमें जापान फ्रांस और रूस के विशेषज्ञों के साथ-साथ ऐसे कोटि के भारतीयों को भी सम्मिलित किया गया था जिनमें भारतीयता से बढ़कर पाश्चात्य सूझ-बूझ की प्रचुरता है इसका निश्चित परिणाम यह निकला कि आयोग ने जो सिफारिशें की हैं वे हमारी राष्ट्रीय भाषा और राष्ट्रीय परम्परा की मान्यता के प्रतिकूल और अपमानजनक है। इसे कोई बुद्धिमान राष्ट्रवादी स्वीकार नही कर सकता। विदेशी विशेषज्ञ उन देशों से भी अपना सम्बन्ध रखते हैं जहा शिक्षा के माध्यम के साथ-साथ उनको अपनी राजकीय भाषा का ही व्यवहार होता है परन्तु खेद है कि भारत वर्ष से सम्बन्धित इस राष्ट्रीय दृष्टिकोण को उन्होनें सर्वथा अपनी दृष्टि से ओझल कर दिया है, जो न्याय संगत नही है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह प्रतिवेदन शिक्षा विभाग की प्रेरणा एव इशारे पर तैयार किया गया है।

इस रिपोर्ट में सबसे अधिक आपत्तिजनक और हानिकारक बात यह है कि त्रिभाषी सूत्र को हटाकर हिन्दी अथवा अंग्रेजी इन दोनों में से किसी एक भाषा को अपनाने का परामर्श दिया गया है। यह केवल इसी लिए दिया गया है कि हिन्दी भाषा जिसे संविधान ने राष्ट्रीय भाषा का स्थान प्रदान किया है, उसकी प्रतिष्ठा और गौरव को आघात पहुंचा कर, हिन्दी के विकास के प्रति उपेक्षा कर, अंग्रेजी को अनिश्चित काल तक के व्यवहार का बहाना बनाकर इसे पूरी तरह लागू कर दिया जाए। वस्तुत: यह मनोवृत्ति अराष्ट्रीय है। इस दूषित प्रवृत्ति की जितनी भी निन्दा की जाए कम है। (क्रमश)

★स्वामी श्रद्धानन्द जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अपने जीवन मे अगाध श्रद्धा को धारण करके वैदिक धर्म के दीवाने और शुद्धि के परवाने बनो।

★ अपने जीवन मे राष्ट्रिय चेतना को धारण करो।

सर्व साधारण आर्यों के सम्बन्ध में मेरा निवेदन

लेखक—किशोरी लाल 'प्रेम' रेणुका जिला सिरमौर (H.P.)

आर्य[illegible] के [illegible] नेता विद्वान उपदेशक स[illegible] महात्माओं के सम्बन्ध में [illegible] कुछ नहीं कहना। मैं तो केवल [illegible] आर्यसमाजियों के सम्बन्ध में ही कुछ नम्र निवेदन करना चाहता हूं।

पुराने आर्यसमाजियों को सिद्धान्त का पूर्ण ज्ञान होता था। आजकल के आर्यसमाजियों को सिद्धान्तो का ज्ञान नही है। पुराने आर्यसमाजी मांस, मदिरा, तम्बाकू आदि अभक्ष पदार्थों का सेवन नही करते थे। आजकल के कई आर्यसमाजी इन अभक्ष्य पदार्थों का सेवन करते हैं। पुराने आर्यसमाजियों का चरित्र बहुत ऊंचा होता था। सन्ध्या, प्राणायाम, हवनयज्ञ आदि नियमानुसार करते थे। उन मे तप और त्याग और सेवा की भावना होती थी तथा आर्यसमाज के प्रचार की धुन होती थी। आजकल के आर्यसमाजियो में इस प्रकार की कोई भी बात नही है इस का क्या कारण है? आज इसी विषय पर विचार करना है।

महर्षि दयानन्द के प्रचार से पूर्व कोई आर्यसमाजी नही था। इसलिए जो लोग आर्यसमाजी बने वह सब दूसरे सम्प्रदायो मे से ही थे जो कि वैदिक सत्य सिद्धान्तो को समझ कर इन से प्रभावित होकर आर्यसमाजी बने थे। इसलिए उनको वैदिक सिद्धातो का ज्ञान होता था। उस समय वह ऐसा अनुभव करते थे—कि जिस प्रकार कोई व्यक्ति अमावस्या की घोर काली रात्री के गहन अन्धकार से एकाएक सूर्य के प्रकाश में आ जाए। उन्हें इस प्रकार अज्ञान अन्धकार मे निकलकर ज्ञान के प्रकाश को प्राप्त करना अद्भुत वस्तु प्रतीत होती थी। और जिस प्रकार किसी व्यक्ति के मन से कोई विचित्र वस्तु देखकर दूसरो को बताने की प्रबल इच्छा उत्पन्न हो जाती है इसी प्रकार पुराने आर्यसमाजियों के मन मे भी अवैदिक सम्प्रदायों के अन्धकूप से लोगो को निकालकर वैदिक सत्य ज्ञान के प्रकाश मे लाने की स्वय ही प्रबल इच्छा उत्पन्न हो जाती थी। यह मैं जो कुछ लिख रहा हूं अपने अनुभव के आधार पर लिख रहा हूं। क्योकि आरम्भ मे मैं स्वयं भी पौराणिक सनातनधर्मी था। जब मैं आर्यसमाज मे आया और आर्य समाज के सिद्धान्तो को समझा तो उस समय मेरे मन मे भी दूसरे लोगो को आर्यसमाजी बनाने की प्रबल इच्छा उत्पन्न हुई थी। जैसे कोई दीवाना पागल होता है। ऐसी ही मुझे आर्यसमाज के प्रचार की धुन लगी हुई थी।

किन्तु आजकल के आर्यसमाजी वैदिक सिद्धातो के सत्य ज्ञान को प्राप्त करके आर्यसमाजी नहीं बने अपितु यह आर्यसमाजी माता-पिता की संतान होने से ही आर्यसमाजी हैं, या किसी कारण से आर्यसमाज मे आने जाने लगे। इसके अतिरिक्त स्वाध्याय न करने के कारण और आर्य समाजो मे सिद्धांतों पर बहुत कम व्याख्यान होने के कारण भी इन्हें सिद्धांतों का ज्ञान नही है इसलिए इनमें आर्यसमाज के प्रचार की धुन भी क्यो कर हो सकती है।

मास, मद्य, तम्बाकू आदि के सेवन का एक कारण यह है कि पहले अभक्ष्य पदार्थों के सेवन करने वालो को आर्यसमाज का सभासद नही बनाया जाता था। परन्तु अब इस ओर ध्यान नही दिया जाता। दूसरा कारण यह है कि जिन आर्य समाजियों के माता - पिता आर्यसमाजी होते हुए भी इन अभक्ष्य पदार्थों का सेवन करते है उनकी सतान भी उनका अनुकरण करती है। भारतीय शासन भी इसके लिए उत्तरदायी है। अन्न की कमी का बहाना बन कर मांस भक्षण का खुलमखुल्ला प्रचार हो रहा है। मछलियो को पालने के तालाब, मुर्गी खाने, सूअर पालने आदि कार्यों को बढावा दिया जा रहा है। और साधारण क्लर्क से लेकर बड़े-बडे पदाधिकारियो तक लगभग सब मद्य का सेवन करते है। तम्बाकू की उपज को बढाने के लिए भारतीय शासन सब कमेटिया बना रही है। इसके अतिरिक्त आर्यसमाजो में अधिकतर अमीर लोगो को लाने का यत्न किया जाता है और अमीर लोग भक्ष्य-अभक्ष्य का विचार नही करते। इस प्रकार के दूषित वातावरण का सर्व-साधारण आर्यसमाजियो पर प्रभाव पडना सम्भव है।

जिनके माता-पिता आर्य समाजी होते हुए भी सन्ध्या, हवन आदि नही करते उनकी सन्तान ने सन्ध्या, हवन क्यों करना है। जहां ईश्वर और धर्म मे श्रद्धा न हो वहां सन्ध्या हवन आदि हो भी नही सकता। जिन लोगो के घरों मे रेडियो सेट लगे हुए हैं वह प्रात सायम् सन्ध्या हवन करने के स्थान पर रेडियो पर गाने सुनते हैं।

जब सिद्धांतों का ज्ञान न हो, भक्ष्य अभक्ष्य का विचार न हो, सन्ध्या, हवन आदि में श्रद्धा न हो आर्यसमाज के प्रचार की धुन क्योंकर हो सकती है। तप, त्याग और सेवा की भावना क्योकर उत्पन्न हो सकती है। और चरित्र निर्माण कैसे हो सकता है। यह दोष किस प्रकार दूर हो सकते हैं इस के लिए मैं केवल दो सुझाव देना चाहता हूं।

१. आर्य समाज के उच्चकोटि के विद्वान, उपदेशक, प्रचारक सन्यासियो की सेवा मे मेरा नम्र निवेदन है—कि जब आप प्रचार के लिए आर्यसमाजो मे जाए, आप के व्याख्यानो में के विषय हों मद्य, मास, तम्बाकू आदि के सेवनका निषेध, सन्ध्या, प्राणायाम, हवन, यज्ञ, प्रभु भक्ति तथा वैदिक सिद्धान्तो का मडन और अवैदिक मत मतान्तरो का बलपूर्वक खडन परन्तु खडन मधुर शब्दो मे, युक्तियुक्त और वेद शास्त्रों के प्रमाणो सहित हो। कडवे शब्दों मे खण्डन न हो। जिस से किसी को चिडने का अवसर न मिल सके।

२. उपरोक्त महानुभाव आर्य समाज के सभासदो का पूर्ण परिचय प्राप्त करें। उनके गुण, दोषो को जानने का यत्न करें और एकान्त मे एक-एक के दोषो को बडे प्रेम से, गम्भीरता से और मधुर वाणी से समझा कर दूर करने का प्रयत्न करे। उन से मास, मद्य, तम्बाकू आदि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन छुडायें तथा सन्ध्या, प्राणायाम, हवन आदि करने की उन्हे प्रेरणा दें। सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेद आदि भाष्य भूमिका व्यवहार भानु आदि ऋषि कृत ग्रन्थो तथा अन्य उच्चकोटि के आर्य विद्वानो के लिखे हुए ग्रथो के स्वाध्याय करने का बलपूर्वक उन से अनुरोध करें। जो व्यक्ति जिस योग्यता का हो वैसी ही पुस्तकें पढने के लिए उन्हे बताएं और स्वयं आर्यसमाज के पुस्तालयो से पुस्तकें निकलवा कर उनके हाथों में दे और इस प्रकार उन्हें स्वाध्यायशील बनाने का पूरा पूरा प्रयत्न करें। स्वाध्याय मे ही सर्व - साधारण आर्यसमाजी दृढ आर्य समाजी बन सकते हैं। आर्यों को सच्चे अर्थो मे आर्य बनाने के सम्बन्ध मे इतना लिखना ही पर्याप्त है।

गीत

पलकों में कोई बैठा है।
मांला जपने मे सार नही,
चन्दन घिसने मे पार नहीं,
गीता को देखा पलट-पलट,
गगा को डाला उलट-उलट
श्वासो में कोई पैठा है।
चुन ली बगिया की कली कली
देखी गोपी की गली गली
रट डाला पूरा सामवेद,
समझा साधा हर ताल भेद
अधरो पे कोई बैठा है!
हर सुबह खुला है पाल नया
हर शाम उतारा माल नया
बांधे हैं कितने सेतु बन्ध।
लादे हैं कितने अपंग अन्ध
लहरो में कोई बैठा है।
केशर छिडकी हर हाट डगर
तारे हैं कितने पुत्र सगर
पाले है कितने नवल भंवर
झेले हैं कितने धवल चंवर
गजरो में कोई बैठा है।

सुन्दरलाल जी बोहरा, जोधपुर

आर्य युवक समाज कादियां (गुरदासपुर)

का चुनाव

प्रधान—श्री रवीन्द्र कुमार जी
मन्त्री— ,, अरुण कुमार जी।
उपप्रधान ,, मंगतराम जी, श्री कृष्ण लाल जी।
उपमन्त्री—श्री अश्विनी कुमार जी,
पुस्तकाध्यक्ष— श्री कंवल कृष्ण जी,
सहायक पुस्तकाध्यक्ष—श्री जोगिन्द्र कुमार जी।
प्रचारमन्त्री—श्री शान्ति प्रकाश जी।
कोषाध्यक्ष— ,, रमेश कुमार जी
सरक्षक—श्री सत्यपाल जी।
आंतरिक सदस्य — सोलह निर्वाचित हुए। भवदीय—अरुणकुमार आर्य
मन्त्री समाज

डी.ए.वी. कालिज का एम.ए. (अर्थ शास्त्र) का शानदार परिणाम

गत वर्षों की भान्ति इस वर्ष भी डी० ए० वी० कालेज जालन्धर ने एम० ए० की परीक्षाओं मे पंजाब विश्वविद्यालय के सभी कालेजो को पछाड़ दिया है। एम० ए० पार्ट २ अर्थ शास्त्र (इकोनोमिक्स) मे इस वर्ष इस कालेज के अमरीक सिंह ४८० नम्बर लेकर विश्वविद्यालय मे प्रथम आए। इसी कालेज की कुमारी बलवीर कौर तथा कुमारी चन्द्रप्रभा सुपुत्री प्रिंसीपल चमल दास क्रमश ४७० और ४५८ नम्बर लेकर विश्वविद्यालय में द्वितीय और तृतीय स्थान पर आई। कालेज का परिणाम १०० प्रतिशत रहा जबकि विश्वविद्यालय का ८८ ८ प्रतिशत रहा।

सस्कृत पार्ट १ मे इसी कालेज की कुमारी वनिता सूरी और तृप्ता कुमारी क्रमश २३४ और २३३ अंक लेकर विश्वविद्यालय में तृतीय तथा चतुर्थ रही। इस मे भी कालेज का परिणाम शत प्रतिशत रहा। पोलिटि-कल साईस एम० ए० पार्ट (१) में भी कालेज का परिणाम भी शत प्रतिशत निकला।

श्री प्रभुदयाल जी आर्य प्रभाकर का प्रचार कार्य

आर्य प्रादेशिक सभा की ओर से नियुक्त प्रचार मडली प्रभुदयाल जी आर्य की जो कि श्री प० रामविचार जी की देखरेख म हिसार-रोहतक जिलो में प्रचार कर रही है। इन्ही दिनो आपकी मडली ने मेयड, मुडाल (बादाहेडी) मोखरा और सीमर म प्रचार किया।

आर्य समाजों को सू[illegible]

वेद सप्ताह श्रावणी उपाकर्म [illegible] आ रहा है। उन दिनों सारी समाजों का क्रम बनाने में कठिनता हो जाती है। [illegible] अगस्त से ३० सितम्बर ६६ तक सारा समय वेद सप्ताह की कथाओं के लिए है। समाजों से निवेदन है कि सभा को इस विषय में अभी से [illegible] दें ताकि सब का समुचित कार्यक्रम बनाया जा सके।

वेद प्रकाश मल्होत्रा

सभा मन्त्री आर्य [illegible] सभा जालंधर

आर्यसमाज मेयड से चौ० रामसिह जी आर्य पेंशनर और चौ० [illegible]सिंह जी इन्स्पैक्टर की सहायता से सभा को वेद प्रचारार्थ १२२) प्राप्त हुए।

आर्य समाज मुण्डाल (बादाहेडी) में यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर चौ० हरलाल जी को यज्ञोपवीत धारण कराया। चौ० मुशीराम जी के सुपुत्रो को उनके निवास स्थान पर यज्ञोपवीत धारण कराये गए।

चौ० दरयावसिंह जी, चौ० मुन्शीराम जी चौ० प्रतापसिंह के पुरुषार्थ से सभा को वेद प्रचाराय २२५) प्राप्त हुए।

मोखरा मे १ से ७ जौलाई तक वेद सप्ताह मनाया गया। वृहद यज्ञ के पश्चात् पूर्णाहुति के अवसर पर अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियो को यज्ञोपवीत धारण कराए गए। यज्ञ समाप्ति पर चौ० मगाराम जी ठकेदार, बहिन शान्ति देवी जी आर्या मुख्याध्यापिका आर्य कन्या पाठशाला टिटोली, चौ० जुगतीराम जी आर्य, चौ० जागेराम जी वैद्य, चौ० रिसालसिंह चौ० अमीरसिंह जी आदि सज्जनो के पुरुषार्थ से २१८) वेद प्रचारार्थ सभा को प्राप्त हुए। श्री [illegible]राम जी ठेकेदार ने ५५) इस शुभ कार्य के लिए भेंट किये। इस प्रचार मे वानप्रस्थी भूराराम जी का विशेष हाथ रहा। आर्यजगत के चन्दे भी प्राप्त किए।

प० प्रभुदयाल जी आर्य और उनकी मडली का कार्य अत्यन्त सतोष जनक हो रहा है। सभा की ओर से उपरोक्त दानी सज्जनो का और प्रभुदयाल जी आर्य का अति धन्यवाद।

—व्यवस्थापक

डी०ए०वी० कालेज जालन्धर का शानदार परीक्षा परिणाम

डी०ए०वी० कालेज का छात्र रमेशकुमार प्री० यूनिवर्सिटी परीक्षा में ६७७ अंक लेकर सर्व-प्रथम रहा।

डी०ए०वी० कालेज जालन्धर ने अपनी पूर्व मर्यादाओं को चालू रखते हुए इस वर्ष भी विश्व विद्यालय की प्री० यूनिवर्सिटी परीक्षा मे रिकार्ड स्थापित किया है। इस कालेज का छात्र रमेशकुमार प्री० यूनिवर्सिटी (Non medical group) मे सर्व प्रथम रहा, राम गोपाल सिंह और विनोद कुमार (Medical group) में ६१४, और ६०८ अंक लेकर प्रथम और द्वितीय रहे। अशोक-कुमार और सुभाषचन्द्र दोनों ६३३ अंक लेकर चतुर्थ स्थान पर रहे। सतजीतसिंह ग्रेवाल सुरेन्द्रपाल शर्मा, बहादुरसिंह सिद्धू पंचम, षष्ठ और नवम् स्थानो पर रहे। इन्होंने क्रमश ६२७, ६१७ और ६१४ अंक प्राप्त किए। रामगोपालसिंह, अशोककुमार, विनोदकुमार हरिदयाल और शेरसिंह चौधरी १०वीं, १२वीं, १६वीं, और [illegible] इन्होंने क्रमश: ६१४, ६११, ६०९, ६०८, और ६०५ अंक प्राप्त किए। शेरसिंह चौधरी और पवनकुमार गर्ग प्री० यूनिवर्सिटी आर्टस मे प्रथम और द्वितीय रहे। कुल २० वरिष्ठ स्थानो मे से इस कालेज ने ११ स्थान ग्रहण किए। यह सख्या प्रदेश के सभी कालेजो की सख्या से सर्वाधिक है। ४४ छात्र वरिष्ठ सूची मे आए। यह सख्या भी सभी कालेजो में सर्वाधिक है। प्रथम श्रेणी मे इस कालेज के ७१ छात्र

[illegible] सबसे [illegible] परीक्षा [illegible] की दृष्टि से [illegible] कालेज [illegible] रहा। विश्व-विद्यालय के [illegible]% परिणाम की तुलना में इस [illegible] का परिणाम ६९.३ रहा। इस प्रकार प्रत्येक रूप में [illegible] इस कालेज का परिणाम उत्तम रहा।

इसका श्रेय प्रि० भीमसेन जी बहल और सुयोग्य प्राध्यापक वर्ग को ही है।

डी०ए०वी० कालेज जालन्धर का एम०ए० गणित द्वितीय वर्ष का शानदार परिणाम

रामप्रकाश पाहवा, मोहनलाल और बृजमोहन क्रमश प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर रहे।

गत वर्षों की भाति इस वर्ष भी डी०ए०वी० कालेज जालन्धर ने पजाब विश्व विद्यालय के गणित एम०ए० द्वितीय वर्ष की परीक्षा में अद्वितीय परिणाम द्वारा पहिले सभी रिकार्ड तोड दिए। इस वर्ष इस कालेज क के रामप्रकाश पाहवा, मोहनलाल और बृजमोहन ६७७, ५८० और ५७३ अंक लेकर पजाब विश्व-विद्यालय में प्रथम द्वितीय और तृतीय रहे। इसी कालेज के राजेन्द्रसिंह, सत्यपाल ने ५५३, ५४६ और ५३५ अंक लेकर सप्तम् अष्टम और नवम् स्थान प्राप्त किए। इस कालेज के २२ छात्र प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण हुए। अन्य किसी भी कालेज ने इतनी संख्या में प्रथम श्रेणियां प्राप्त नहीं कीं। कालेज का परीक्षा परिणाम विश्व-विद्यालय के ६८५% के मुकाबले मे ८०% रहा। इसी प्रकार कालेज ने [illegible] के बी०ए०, बी०एस०सी, द्वितीय वर्ष में भी शान-दार परिणाम प्रस्तुत किए। इस परीक्षा में कालेज के रामचन्द्र, अमर-ज्योति बहल, और सेवाराम ने १९७ १९२ और १८९ अंक लेकर तृतीय पचम और सप्तम स्थान प्राप्त किए। कालेज का प्रतिशत परिणाम विश्व विद्यालय के ४९ के मुकाबिले मे ७०% रहा। इसका श्रेय कालेज के प्रि० श्री भीमसेन जी बहल और सुयोग्य प्राध्यापक मण्डल को है।

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर में मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित स्वामित्व—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टेलीफोन नं० ३०५५ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १२ पैसे   वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक ३२)   २३ श्रावण २०२३ रविवार दयानन्दाब्द १४१ – ७ अगस्त १९६६   (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

तुभ्यं धावन्ति धेनव:

प्रभो ! हमारी ये धेनव:— स्तुति करने वाली वाणियां स्तुतियां तुभ्यम्-तेरे लिए ही धावन्ति दौड़ती हैं। हम जितना भी स्तुतिगान करते हैं। यह सारा आपके लिए है।

कृधि नो यशसो जने

हमारे देव ! कृपा करो। नः हमें जो आपके उपासक हैं, यशसः यश कीर्ति वाले कृधि-कर दीजिए, जने-सारे जनमंडल में यशस्वी बना देवें। हम कीर्ति वाले बन कर रहें। आप ऐसी कृपा करें।

विश्वा अप द्विषोजहि

परमेश्वर ! हमारे अन्दर या बाहर जो भी जितने भी द्विष-शत्रु विरोधी या द्वेषी हैं उन विश्वा-सब को अप-दूर भगा देवें न जहि-नाश कर देवें। कोई भी शत्रु न रहने पावे ताकि विश्व की हानि न हो।

सदा हवन्ते विश्वपतिम्

जो लोग ज्ञानी हैं, प्रभु के प्यारे भक्त हैं। वे सदा उस विश्व-पतिम् सारे संसार के स्वामी तथा विश्व के रक्षा करने वाले, परमात्मा को ही हवन्ते-पुकारते हैं। उसी के उपासक होते हैं।

सा म वे द से

तटस्थता भा० विदेश नीती का मुख्य सिद्धांत : कामराज

आम चुनाव में कांग्रेस की सफलता असंदिग्ध

सोवियत पत्रकारो ने श्री कामराज से 'भारत की विदेश नीति' आदि विभिन्न विषयों पर प्रश्न किए। इस अवसर पर भारतीय पत्रकार भी आमंत्रित थे। तटस्थता के विषय में श्री कामराज ने कहा कि भारत तटस्थता पर ही चलता रहा है, चलता रहेगा और चल रहा है। उन्होंने कहा कि तटस्थता भारत की विदेशनीति का मुख्य सिद्धात है। प्रश्नो के उत्तर देने के बाद श्री कामराज ने सोवियत पत्रकारो की भारतीय आदर्शों और समस्याओ मे रुचि पर हर्ष प्रकट किया। वियतनाम की स्थिति पर कांग्रेस पार्टी की स्थिति के बारे मे पूछे जाने पर श्री कामराज ने कहा कि कांग्रेस पार्टी वियतनाम पर अमरीकी बमबारी की सदा से निंदा करती आई है। भारत के आगामी चुनावों मे कांग्रेस की स्थिति के बारे में श्री कामराज ने कहा कि कांग्रेस की विजय मे कोई संदेह नही। उन्होंने कहा कि भारत ताशकंद घोषणा के क्रियान्वन के लिए पूर्णतया प्रयत्नशील है।

इस से पूर्व श्री कामराज ने सोवियत प्रधानमंत्री श्री कोसीगन और सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के जनरल सैक्रेटरी श्री ब्रेजनेव से अपनी बातचीत पर संतोष प्रकट किया।

उन्होंने कहा कि सोवियत संघ के एशियाई जनतन्त्रों का प्रगति से बड़े-बड़े प्रभावित हुए हैं।

★ जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का पालन और बिना पक्षपात के न्याय और सबकी भलाई करना है, जो कि प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से परीक्षा किये हुए सत्य भाषणादि कर्म है और जो वेदोक्त होने से सब मनुष्यो के लिए यही एक मानने योग्य है, उसको धर्म कहते हैं।

★ धर्म का प्रचार तथा अधर्म का नाश होकर सत्य फैलता है क्योंकि सच्चे अतिथि ही सब जगह सत्य का प्रचार करते हैं।

★ शरीर, मन और आत्मा के शुद्ध करने का नाम शुद्धि है।

★ मलीन विष्ठा, मलादि से उत्पन्न हुए शाक, फल, फूलादि न खाना चाहिए। इसके अतिरिक्त जितने तमोगुणी पदार्थ हों जैसे प्याज, लहसुन आदि उनका खाना भी तमोगुण को बढाता है।

ऋषि दर्शन

यत्रैको मनुष्यो राजा

जिस देश मे एक ही मनुष्य राजा बन जाता है, सारी शक्ति उसी के हाथ में होती है, प्रजा की कोई सत्ता व आवाज नहीं होती। अकेला अधिनायक होता है, डिक्टेटरशिप चलती है, अकेला ही सब कुछ होता है—वहा।

तत्र पीड़िताश्च

वहां, उस देश में, राज्य मे सारी प्रजा सारी जनता, सारे लोग पीड़ित हो जाते हैं, दुखी होते हैं। वह अकेला जन-तन्त्र को कुचल कर अधिनायक बन कर मन-मानी करता है। लोग अतीव कष्ट पाते हैं।

एता: तिस्र: सभा:

इसलिए सारे कामों को ठीक रूप से चलाने के लिए राज्य मे तीन सभाएं बनानी चाहिएं ताकि सारे देश में राज्य के लोगों के काम उत्तम ढंग से चलते रहें। इन सभाओ के द्वारा सारी प्रजा जीवन में सुखी बनी रहे।

राजकर्मास्ति तद् द्विविधम्

यह जो राज्य चलाने का काम है, राज धर्म या शासन है, यह दो प्रकार का होता है राष्ट्र के राज्य विधान के दो ही रूप हुआ करते हैं। दोनो ही बडे आवश्यक हैं। शासन रथ के दो पहिए हैं।

भा ष्य भू मि का से

द का कथन है कि हे कर्मशील ? तू अपने किए कर्मों को स्मरण । वेद ने जीवो को सदा अच्छे र करने का आदेश दिया । 'कुर्वन्नेवेह र्माणि जिजीविषेच्छतं समाः ।' अर्थात् हे जीव तू कर्म करता हुआ ही सौ वर्ष तक जीने की इच्छा कर। इस में जिजिविषेत् । शब्द ध्यान देने योग्य है। इसका अर्थ है, जीवितु मिच्छेत ।' अर्थात् जीने की इच्छा कर। जहां तू शारीरिक दृष्टि से अधिक काल तक जीना चाहता है, वहां आत्मिक दृष्टि से भी जीने की इच्छा कर। जीवन में उत्साह हो, शान हो तथा साथ होने चाहिए पवित्रकर्म। अधिक जीना ही कोई बड़प्पन नहीं है, बल्कि जीवन मे कितने अधिक शुभ कर्म किए इसी में मानव जीवन की महत्ता निहित है। नही तो पशु पक्षी भी ज्यादा समय तक जीवित रहते हैं। अत: यहा आत्मिक जीवन की ओर विशेष सकेत किया गया है। इस का शब्द है 'एव' अर्थात् कर्म करता हुआ ही जीने की इच्छा करे आलसी निठल्ला बनकर नही। यहा यद्यपि कर्म सामान्य वाचक सज्ञा है, परन्तु उसका अर्थ श्रेष्ठ कर्म है। अर्थात् हे जीव! तू शुभ कर्म करता हुआ ही जीने की इच्छा कर। मानव का अमूल्य चोला पवित्र कर्मों की कमाई के लिए मिला है। क्योकि कर्तव्य कर्मों की महिमा को मानव ही पहचानता है। जीवन के लक्ष्य विन्दु तक पहुंचने की मानव मे क्षमता है। यदि जीवन में वहीं-नही किया तो निठल्लेपने के लिए तो और बहुत-सी योनियां हैं। वेद ने जीव के लिए 'क्रतु' शब्द का प्रयोग किया है. यद्यपि इसका अर्थ यज्ञ होता है, परन्तु यहा 'कर्मशील' अर्थ होगा। जीवन के लिए यह शब्द क्यो प्रयोग किया गया है, इसे जानने के लिए इसकी पृष्ठ भूमि को समझना आवश्यक है। सस्कृत साहित्य मे कथा आती है कि जीवन मे १०० यज्ञ करने पर मनुष्य इन्द्र के पद को पा लेता है और वह स्वर्ग का राजा हो जाता है। वास्तव मे यह एक आलकारिक कथन है। इन्द्र नाम है जीवात्मा का, यह स्वर्ग का राजा है। वेद के शब्दो मे वह स्वर्ग । 'अष्ट चक्रा नव द्वारा देवानां पूरयोध्या, तस्या हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृत:' अर्थात् जीव के वास स्थान हृदय को स्वर्ग कहा गया है, जहां का अधिपति इन्द्र अर्थात् जीव है। लेकिन

—धार्मिक चर्चा

ओ३म् कृतोस्मर

पं० सत्य प्रिय जी शास्त्री सिद्धान्त शिरोमणि प्राध्यापक:— दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार

मैं स्वर्ग का राजा हूं । इस रहस्य को कौन जान सकेगा; जो सौ यज्ञ करेगा। वेद में कहा—'जीवेम शरदःशतम्' अर्थात् सौ वर्ष तक जियें। एक-एक वर्ष मानो एक-एक यज्ञ है। लेकिन बनाने से बनेगा, क्योंकि 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमम् कर्म ।'

अर्थात श्रेष्ठ कर्मों का नाम यज्ञ है। जो पुरुष अपने जीवन के प्रत्येक वर्ष को यज्ञ अर्थात् श्रेष्ठ कर्म से भरपूर करता चलेगा। जीवन के प्रत्येक क्षण में शुभ कर्म ही करता चलेगा तो उसकी आयु का प्रत्येक वर्ष एक यज्ञ के समान होगा।' निरन्तर यदि वह इसी प्रकार प्रत्येक वर्ष को यज्ञ तुल्य मान कर शुभ कर्मों द्वारा व्यतीत करता रहा तो सौ वर्ष की आयु होने पर मानो उसने सौ यज्ञ पूर्ण कर लिये होते हैं। तब वह वास्तव मे अपने इन्द्र स्वरूप अर्थात पुण्य कर्मों के महान् ऐश्वर्य के स्वामी के रूप में अपने को पहचान पायेगा। पाठक जानते ही है कि इन्द्र का असुरो के साथ सदा युद्ध चलता रहता है। यही जीवन में दैवी तथा आसुरी वृत्तियों का युद्ध है। परन्तु इन्द्र अपने वज्र से असुरों को मारता है, अर्थात् पुण्यात्मा रूपी इन्द्र के पास आत्मिक बल रूपी कठोर तथा तीक्ष्ण वज्र होता है, जिसकी मार के आगे पाप रूपी असुर नष्ट भ्रष्ट हो जाते हैं। इन्द्र देवो का राजा है। देव का अर्थ इन्द्रियां भी होता है तथा दिव्य भावनायें भी होता है। यदि समस्त इन्द्रियां देव अर्थात दिव्य रही तभी जीव इन्द्र है, क्योकि देवों के अन्दर दिव्यता होने से ही वे देव संज्ञा के अधिकारी हैं। यदि इन्द्रियो के अन्दर कलुषता आ गई तो जीव का इन्द्र पद भी गया क्योकि असुरों द्वारा अधिकार कर लिया जाता है। अत: स्वर्ग का राज्य चाहिने वाले तथा इन्द्र पद का अधिकार प्राप्त करने वाले जीव का कर्तव्य होगा कि वह अपने सैनिकों इन्द्रियों को देव अर्थात् श्रेष्ठ बनाए। इन्द्रियो के विषय हम से छूट नहीं सकते। हमारा कर्तव्य है कि इन्द्रियो का मार्ग परिवर्तित कर दे, हम देखें, लेकिन प्यारे प्रभु की महिमा देखे, सुनें भी तो परम-पिता की विचित्र लीला के गान सुने, सूघें परन्तु उस महान शिल्पी द्वारा निर्मित प्रकृति की सात्विक गन्ध को। इन्द्र का यह कर्तव्य है कि वह अपने अनुयायियों के अन्दर दिव्यता भरे उसी में उसका इन्द्रत्व है। इन्द्र का एक नाम 'शक्र' भी आता है। 'शतं' शब्द से शकार लिया तथा 'क्रतु' से क्र लेकर 'शक्र' शब्द बना है। आधुनिक संक्षिप्त नाम की यह परिपाटी वेद के इस शब्द मे छुपी है। अर्थात् जीव सौ वर्ष शुभ कर्मों मे गुजारे इसीलिए वेद मे जीव को 'वायो ?' कहा है, वायु का पर्याय 'गन्धवाह' आता है। जो एक देश से दूसरे स्थान में गन्ध को ले जाया। अत: हे इन्द्र जीव ! तू भी जीवन में सुगन्ध का वातावरण पैदा कर, जब जड वायु सुगन्ध को अन्यत्र पहुंचा देता है तो तू तो चेतन है, अत: तू शुभ कर्म तथा पवित्र भावनाओं की सुगन्ध प्रत्येक वर्ष और प्रत्येक जन में बखेरता चल तभी तू शक्र अर्थात् सौ यज्ञ करके इन्द्र बनकर स्वर्ग मे राज्य करेगा, यह ही तेरे जीवन का रहस्य है, जिसके लिए तूने प्रयत्न करना है।

★ जिस प्रकार शरीर रक्षा के लिए खाने-पीने और वस्त्रों की आवश्यकता होती है उसी प्रकार आत्मा के लिए धर्म की आवश्यकता है। धर्म के पालन करने से आत्मा को शक्ति मिलती है।

आर्य समाज और गौरव

(श्री रवि वर्मा आर्य 'रवि', उज्जैन)

देवदूत अवतार वाद भी,
किस के भय से भाग चले।
किसके भय से तीर्थ मूर्ति,
काशी—काबा—सौभाग्य चले ॥

'बिना ज्ञान के मुक्ति न होगी'
कौन लगाता है आवाज ?
आर्य समाज, आर्य समाज।
आर्य समाज—आर्य समाज ॥

बाल-विवाह का कहा समर्थन,
विधवा-विवाह - विरोध कहां,
जाति-पाति अरु छुआ छूत का,
बन्धन क्या अवशिष्ट रहा ॥

कहो कौन जो कुठाधार सा,
बदल रहा है आज समाज,
आर्य समाज, आर्य समाज।
आर्य समाज, आर्य समाज ॥

वैदिक सन्ध्या पंच यज्ञ का,
किसने पुनः प्रचार किया।
गुरुकुल प्राच्य प्रणाली का भी
किसने पुनरुद्धार किया ॥

कौन अनाथों को सनाथकर
मातृ शक्ति की रखता लाज।
आर्य समाज, आर्य समाज।
आर्य समाज, आर्य समाज ॥

आओ, उसी समाज-काज हित,
तन-मन-धन बलिदान करें।
उस के संवर्धन द्वारा रवि,
देश, जाति कल्याण करे ॥

यही हमारा सत्पथ-साथी,
रक्षक, शिक्षक अरु सरताज,
आर्य समाज, आर्य समाज।
आर्य समाज, आर्य समाज ॥

सम्पादकीय—

आर्य जगत्

वर्ष २६] रविवार -०२३, ७ अगस्त १९६६ [अंक ३२

ये लीद खिलाने वाले

सारे पंजाब में आजकल पुलिस द्वारा छापे मारने का व्यापक चक्र चल रहा है। बडे २ व्यापारी पकडे जा रहे हैं। कहीं तेल का भण्डार पकडा जाता है तो कहीं टायर ट्यूबों का स्टाक सामने आता है। कहीं चालीस मन पक्की चांदी व आठ किलो सोना अधिकार में कर लिया जा रहा है तो कहीं लोहे की बडी २ फर्में शिकंजे में आ रही हैं। एक ओर दूध घी के मिलावटी केन्द्रों का पता लग रहा है तो दूसरी ओर खाने पीने की बनावटी व मिलावटी सामग्री प्रकट हो रही है। घी मे चर्बी, डीजल में तेल, आटे मे बुरादा मिलाने वाले केन्द्र भी पकड गये हैं। सीमैंट के भण्डार भी सामने आगये हैं। पंजाब के नये राज्यपाल श्री धर्मवीर जी ने आसन पर बैठते ही अपना धर्मचक्र चलाना प्रारम्भ कर दिया है। प्राय सारा व्यापार नंगा हो रहा है कि ऐसे २ लोग जनता के जीवन के साथ क्या २ खिलवाड करते थे। धन कमाने के लिए पतन के इतने गहरे गढे मे भी आदमी गिर सकता है—इन छापों से सब की आंखें खुल जाती हैं। आज हम कहां खडे हैं—इस का भयंकर रूप सामने आ जाता है। इन छापों मे अन्य बातों के साथ जब यह बात भी पढी कि कई ऐसे कारखाने भी पकड गये, जिन मे बनावटी काला मिसाला बना कर जनता को असली बता कर दिया जाता था। उस मे क्या २ वस्तुएं होती थीं—यह पढ कर तो ऐसे व्यापारियों को सुन कर कौन है जो उन पर भारी रोष प्रकट नहीं करेगा? ये लोग नकली मिसाला मे पपीते के बीज कपड़ों के चीथड रेत, मिर्चों के डठल और पक्षियों की बीठें कूट पीस कर मिलाते थे। घोडों व गधों की लीद भी पीस कर मिलाया करते। चार सौ बोरी लीद की भी पकडी गई। पता नहीं कब से जनता को व्यापारियों की इस मिसाले की आड में लीद पक्षियों की बीठें खिलाई गई। घी मे चर्बी खिलाई गई। बनावटी लाल मिर्चों मे लकडी का बुरादा तथा चनों व चावलों का छिलका पीस २ कर खिलाया जाता रहा। सारे ऐसे नहीं—किन्तु ऐसे हैं ही। पंजाब मे तो धर्मचक्र चला है इसी लिए यह पता चला। यदि अन्य प्रान्तों मे भी चले तो वहां पर भी क्या २ रहस्य प्रकट हों—यह कौन कह सकता है? आजाद भारत मे यह बात कितनी लज्जा की है। इसकी जितनी निन्दा की जाये थोडी है। यह भी तो जनता के जीवन के स्वास्थ्य की हत्या है। ऐसे हत्यारे दया के पात्र नहीं हैं।

हमारा समाज का जीवन स्तर इस दिशा मे कितना गिरता जा रहा है। ये बात पढकर तो इस जीवन पर रोना आता है। इसका कारण यह है कि आज के मनुष्य का केवल मात्र माया के टकों से प्यार है। उसके मन मे न भगवान का भय है और धर्म का उसे न समाज का डर है न विधान का। न उसके सामने मौत है और न परलोक। वह तो केवल धन को ही सब कुछ समझता है। इसके लिए वह इतना पतित हो सकता है लोगों के शरीर से खिलवाड कर सकता है तथा सबकी आंखों मे धूल झोंक सकता है। वह समझता है कि मैं पैसे कमाकर समाज मे सम्मान प्राप्त कर सकता हूं। पैसों से सब को खरीद सकता हूं। मैं संस्थाओं का नेता भी तो पैसे के जोर से बन सकता हूं। चाहे जितनी घोडे गधे की लीद व पक्षियों की बीठ खिला दूं—मुझ पूछने वाला कौन है? वह भूल जाता है कि सब दिन होत न एक समान। पाप की नौका भर कर अवश्य डूबती है। मारा हुआ धर्म उसे मार देता है। सदा कामरेड का राज्य नहीं रहता। धर्म का शासन भी चला करता हैं। समय-समय सारे पाप उसके सामने आ ही जाते हैं। उसे एक दिन अपने किए पर रोना पडता है। इसके लिए सारा समाज भी दोषी है। उसका अंकुश बडा ढीला है। उससे किसी को भय नहीं—तभी ऐसे ऐसे पतन के काम होते है। श्री राज्यपाल जी ने ठीक कहा है कि सारा समाज ऐसे लोगों के विरुद्ध अभी तक हरकत मे क्यों नहीं आता। और बातों के लिए तो प्रदर्शन किए जाते है पर समाज के इन शत्रुओं के विरुद्ध प्रदर्शनों का तूफान क्यों नहीं उठता। सारी संस्थाएं चुप क्यों बैठी हैं? लोगों को लीद व बीठ रेत व लकडी का बुरादा चर्बी व पपीते के बीज कपडों के चीथड खिलाने वाले ये लोग भी समाज के घोर शत्रु है। ये केवल माया दास हैं। यदि समाज ऐसे लोगों के विरुद्ध प्रबल आंदोलन करे बहिष्कार करे तथा घृणा का भाव प्रकट करे तभी इनकी आंख खुलगी। जिन कर्मचारियों का भी इनको सहयोग मिलता हैं वे भी दोषी है। एक बात सरकार भी करे कि ऐसे इसे घातक तत्वों को दण्ड भी ऐसा कडा दिया जाए ताकि ये भी याद रखें और सब के भी कान खडे हो जाएं। ये लीद खिलाने वाले समाज के शत्रु है।

—त्रिलोक चन्द्र

अभी से जागो

पंजाबी प्रान्त व हरियाणा प्रान्त बन जाने के बाद हरियाना मे तो भाषा समझौता समस्या होगी नहीं। यदि कोई हुई भी तो उस का समाधान वहां के नेता व जनता मिल कर करेंगे। किन्तु इस पंजाब प्रान्त मे जो वातावरण होगा उस का परिचय अभी से मिल रहा है। संत जी कहते हैं कि यहां अल्पमत ही नहीं। सब की भाषा पंजाबी है। पैंतीस चालीस प्रतिशत को वह अधिकार ही देने को तैयार नहीं है। विचार की धाराएं भी उन की आंखों के सामने नहीं है। वह तो नव सूर्य के साथ नया दमगजा मार देते हैं। वह हिंदी प्रेमियों को हिन्दी का अधिकार तक देने को तैयार नहीं हैं। यह बात वह अकेले नहीं कहते। उनके पीछे सारे उन जैसे लोग इसी बोली मे बोलते हैं। कांग्रेसी सिख वहां बैठकर यही बोली बोलते है। अकाली बाहर बैठ कर यही बोलते हैं। बैठने के स्थान उन के अलग अलग हैं—पर बोली एक जैसी बोलते हैं। हमारे आदमियों मे ऐसी बात नहीं है। यदि वे भी हर जगह बैठ हुए ऐसी वीरता दिखाते तो पंजाब के विशाल शरीर को इतनी बेदर्दी से न काटा जाता। हम तो अपनी कुर्सी सत्ता व अपनापन प्यारा है। उसे प्राप्त करने के लिए कुछ न करना रहे वह किया जाता है—हम इसकी तनिक चिन्ता नहीं। फिर का फल हम भुगत रहे है। अब तो पंजाब चार टुकडों मे बंट गया।

इस समय पंजाब के हिन्दी प्रेमियों के सामने सब से जो बडा प्रश्न है वह यह है कि आगे आने वाले समय मे हमारे इस पंजाबी प्रान्त मे हिन्दी की क्या स्थिति होगी। पंजाबी भाषा तो सरकारी भाषा बन जायगी। प्रान्त भी भाषा के आधार की आढ लेकर बनवाया गया है। किन्तु इस मे क्या पैंतीस चालीस प्रतिशत हिन्दी प्रेमियों का अल्पमत मान कर उन को भाषाई संरक्षण मिलेगा या नहीं? विधान हमारे पक्ष मे है पर ये सारी बातें धरी रह जाती है जब तक प्रबल आवाज न हो। पंजाबी सूबा नहीं बनेगा—यह समझते थे। बड़े लोग बड़ी बड़ी आधार बात करते थे। पर बनते देर न लगी। उनकी निराधार बात बात हो रही। किसी ने सुना तक भी नहीं। कहीं ऐसा न हो—इस लिए सारे हिन्दी प्रेमी अभी से जागें। इस के लिए अपना मंच बना लिया जाय—जिस मे सारे विचारों के हिन्दी प्रेमी शामिल हों। अपनी संस्थाएं। समाजें सभाएं तथा अन्य भी प्रतिष्ठित संस्थाओं के लोग आयें। यह काम केवल एक का नहीं। इस मे सारे नेता भी हों। हां कई गालियां बोलने वाले न हों। एक ही आवाज मे बोलने वाले हों। हम जान लेना चाहिए कि हम हिन्दी का अधिकार सरलता मे देने वाले वे लोग नहीं। केन्द्र का उच्च कमान भी उनकी मानता है शायद हमारी नहीं। उनकी संगठित शक्ति एक आवाज और नेतृत्व से प्रभावित है। हम इनके लिए प्रबल संघर्ष करना होगा। स्वार्थवाद को छोड कर समष्टिवाद का सामने रखना पडेगा। हमारे पास क्या कुछ नहीं है। बडा भारी प्रेस है वदी है जनता का सहयोग है बडे २ लोग हैं। यह सब यदि मिल कर एक ही आवाज निकालें तो कौन है जो हमे राष्ट्रभाषा व विधान मे सम्मत उचित अधिकार से वंचित कर सकता है। इस के लिए अभी से जागने की आवश्यकता है। हम सारे हिन्दी प्रेमियों से बलपूर्वक कहेंगे कि अपने उचित अधिकार के रक्षण के लिए जाग जायें— स०

स्वास्थ्य स्तम्भ :—

स्वस्थ रहने के सरल साधन

श्री जगदीश्वरानन्द जी शास्त्री, प्रा० चिकित्सक

सभ्यता के इस वैज्ञानिक युग में सभ्य मानव सभी उड़ानें मार रहा है। पर विचारा शरीर और मन से रोगी ही बनता जा रहा है। क्या करे अपना काम तो वह नौकर-चाकर को वेतन देकर करवा लेता है। उस के व्यापार भी हिस्सेदारी से चल सकते है। बड़े-बड़े मकान भी वेतन वृत्ति से बन सकते हैं। बड़े-बड़े काम भी रिश्वत से चल सकते है। वेतन वृत्ति, रिश्वत खोरी व साझीदारी मन को शरीर को कुछ नहीं बढा सकती। मुझे अपने मन को पवित्र करना है तो स्वय ही सत्य का पालन, सत्याचरण, सत्य व्यवहार सत्य विचार, सत्याहार करना है, तो होगा। बुद्धि को सूक्ष्म करना है, चमकाना है तो ज्ञान पाना होगा। अध्ययन में स्वय श्रम करना होगा, महापुरुषों की सेवा करनी होगी। सत्सग मे समय लगाना होगा। ऐसे ही शरीर को सुन्दर, सुडौल, स्वस्थ तथा सबल बनाना है। अच्छा खाना होगा, उसे पचाना होगा। पचाने के लिए भूख को जगाना होगा। भूख के लिए श्रम करना होगा। श्रम दूसरा करे, भूख मुझे लगे। पसीना दूसरा बहाए, खाना मुझे पच जाए, ऐसी बात नहीं है। यहा तो स्वयं कमा, स्वयं पचा, इस भाति हृष्ट, पुष्ट बन जा। जिस अग से हम काम लेगे, वही सक्रिय होगा और सशक्त बनेगा, दूसरा अंग यों ही कमजोर बना रहेगा। दिमाग से काम करते रहे, कुर्सी पर बैठे, पढे-लिखे सभ्य होने के कारण काम नही किया जाता या मन ही नही चाहता या शर्माता है तो काम कैसे चले? शरीर कैसे स्वस्थ बना रहे? धन कमाने के सम्बन्ध मे तो खूब श्रम करते है, वैसा ज्ञान पाते है पर जिस शरीर से कमाना है उसकी लापरवाही किए रहते हैं। जबकि थोडी-सी सावधानी से ही शरीर स्वस्थ रह सकता है। 'रोगों की सरल चिकित्सा' पुस्तक की भूमिका लिखते हुए अनुभवी ले० श्री महावीर प्रसाद पोद्दार ने कुछ बाते लिखीं जिन्हें मूल रूप से याद करना है और मनन द्वारा उन्हें समझना वा जीवन सगी बनाना है। उन्होने लिखा हम बीमार क्यो होते हैं? बीमार होने के कुछ कारण—

(१) हम जरूरत से ज्यादा खाते हैं। नहीं जानते हमें कितना खाना चाहिए। (२) गलत चीजें खाते है। (३) जो खाना चाहिए वह नहीं खाते। (४) बिना भूख के खाते हैं। (५) बेमेल चीजें खाते हैं। (६) चबाकर नही खाते, दांतों से पूरा काम नही लेते। (७) जितना चाहिए उतना पानी नही पीते। (८) अथवा आवश्यक श्रम नही करते अथवा जरूरत से अधिक और गलत तरीके का श्रम कर बैठते हैं। (९) खुली हवा व धूप का पूरा उपयोग नही करते। (१०) ठीक नहाना नही जानते। (११) पूरे लंबे श्वास नही लेते गदी हवा व गन्दे वातावरण मे रहते है। (१२) व्यर्थ की चिंताओं और कामों में मन को परेशान रखते है। (१३) शारीरिक व मानसिक शक्तियो का अपव्यय करते हैं। (१४) कोई नशा या कोई बुरी आदत अपने पीछे लगाए हुए हैं।

इस प्रकार रोगी होने के कारणों का संकलन किया गया। प्रत्येक बात मनन योग्य है। मनन के बाद उसे जीवन सगी बनाने का प्रयत्न होना चाहिए। जैसे आध्यात्मिक दुःखों का कारण अज्ञान है तद्वत शारीरिक दुःखों का कारण भी अज्ञान है। आहार के सबध में ठीक ज्ञान प्राप्त करे पर ठीक ज्ञान पाने के लिए क्या किसी विशेष स्थान या कालिज में अध्ययनार्थ जाना होगा? यह ज्ञान तो सर्वत्र व्याप्त है। मानवेतर सभी प्राणी अपने स्वाभाविक आहार को जानते है, पहिचानते हैं उसका पालन करते हैं। हमे भी चाहिए, प्रकृति के समीप रहे। प्रकृति से पकाई वस्तुओं को अधिक पकाने, गलाने के चक्कर में न आएं। सर्दी, गर्मी, धूप छाया वर्षा व हवा से छिप छिप कर न रहें, शरीर को कपडों से ढांपते हुए सहिष्णता की शक्ति को कम न करते जाएं। प्रतिदिन यथा संभव कुछ कच्ची सब्जियां, अंकुरित चने, मूङ्ग, मूंगफली, लोभिया, गेहूं को अंकुरित कर सेवन करना चाहिए। इस से पेट साफ होता है। रक्त शुद्ध होता है। रोग प्रतिरोध क्षमता बढती है। जीवनशक्ति बढ़ने लगती है। कच्चे अंकुरित चने प्रातः प्रतिदिन खाने से दांत कितने साफ रहने लगते हैं, चमक आने लगती है। कमजोर होने वाले दांत सुदृढ़ सबल होने लगेंगे। प्रातः चाय, काफी, पराठे, डबल रोटी या बिस्कुट का नाश्ता छोड़ कर अनुभव के विचार से कोई भी अंकुरित अन्न का नाश्ता लेकर देखें। चाहे तो साथ में मूली, प्याज जैसी कोई कच्ची सब्जी के टुकड़े नमक, काली मिर्च भी मिला सकते हैं। अधिक स्वादिष्ट बनाना हो तो अंकुरित अन्न को जरा सा घी में छौंक हलकी आग में पांच सात मिनिट आग पर पका भी सकते हैं। करने का ज्ञान भी कोई कठिन नहीं। किसी अन्न को पानी से धोकर साफ कर लें। थोड़े पानी में भिगोकर रख दे, चार-चार घंटे बाद निकाल किसी टाट की थैली या कपड़े की थैली में डाल टांग दें। चौबीस घंटे के लगभग समय मे ही अंकुरित हो जाएगे। क्या चने मूंगफली, लोभिया, मूंग वगैरह। यह एक छोटा-सा साधारण सा प्रयोग है पर पालन करने मे कितना महत्व का है। इस का चमत्कार दूर व देर में नहीं समीप ही शीघ्र दिखाई देगा। जैसे नित्य नियम से किए गए सध्या, हवन, स्वाध्याय, माता-पिता की सेवा व बलिवैश्व यज्ञ देखने में साधारण होने पर भी नित्य अनुष्ठित हुए महायज्ञ कहलाते हैं। वस्तुतः स्वास्थ्य के लिए ज्ञान, संयम व श्रम एक साथ तीनों ही प्रमुख साधन हैं। शरीर व आहार के सम्बन्ध मे ज्ञान प्राप्त करे। प्राप्त हुए ज्ञान को जीवनसगी बनाने के लिए संयम से काम ले। शरीर को सक्रिय, सबल स्वस्थ रखने हेतु उचित श्रम करे। तीनो के सधने पर स्वस्थ रहना अति सरल सा जान पड़ेगा।

नोट—अगले अक के इसी स्तंभ में आम फल पर विचार किया जाएगा।

शोक समाचार

आर्य पाठशाला जुलाना शादीपुर के हैड मास्टर श्री रामधन नादल की की पूज्या माता का स्वर्गवास हो जाने पर श्री प्रधान चन्दगीराम जी की अध्यक्षता में शोक सभा की गई जिस में दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए और उनके परिवार को दारुण दुःख सहन करने की प्रभु से प्रार्थना की गई। इस अवसर पर पं० भूरा राम जी उपदेशक आ० प्रा० सभा ने शोक संतप्त हृदयों के लिए शांति की प्रार्थना की। —दलीपसिंह मन्त्री समाज

आर्यजगत् का वेदांक

आर्यजगत् का वेदांक श्रावणी उपाकर्म पर प्रकाशित हो रहा है। स्वाध्याय जीवन का आवश्यक अंग है। इस में वेद विषय विद्वानों के खोजपूर्ण लेख होंगे। सारी समाजों, कालेज के मान्य अधिकारी तथा परिवार इसकी अधिक से अधिक प्रतियां मंगवा कर बांटें ताकि वैदिक धर्म का प्रचार हो। यह भी हमारा कर्तव्य है।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का वेद प्रचार कार्य

आर्यसमाज पठानकोट

सभा का के पं० त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री बी. ए. के वेद विषय पर उपदेश होते रहे तथा साथ ही पं० ज्ञान चन्द जी भजनोपदेशक के मीठे भजन। स्त्री समाज में भी उपदेश भजन हुए। सभा को वेद प्रचार भी दिया गया।

सुजानपुर में

आर्यसमाज सुजानपुर में निरन्तर एक सप्ताह तक रात को पं० त्रिलोक चन्द्र जी शास्त्री बी. ए. के राष्ट्रिय सूक्त के आधार पर भाषण होते रहे। पं० ज्ञानचन्द जी के प्रभावशाली भजन। प्रातःकाल स्त्री समाज में भी प्रचार होता था। रविवार को हिन्दी दिवस धूमधाम से मनाया गया।

कठूआ समाज में

आर्य समाज कठूआ में वेद के स्वराज्य प्रसंग को लेकर पं० त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री बी. ए. के भाषण तथा पं० ज्ञानचन्द जी के मनोहर भजन लगातार एक सप्ताह होते रहे। नये चले हुए आनन्द मार्ग के बारे में भी जनता को सचेत किया गया। सभा को वेद प्रचार मिला।

शोक प्रस्ताव

पंजाब प्रांतीय आर्य वीर दल की कार्यकारिणी की विशेष बैठक प्रि० भगवानदास जी की प्रधानता में २३-७-६६ को अम्बाला नगर में हुई जिस में राजपुरा आर्यसमाज के मन्त्री श्री फकीर चन्द के भ्राता की मृत्यु, लुधियाना के श्री मलवालचन्द की बहन की मृत्यु तथा स्वामी वेदानन्द जी की मृत्यु पर गहरा शोक प्रकट किया गया। परमात्मा इन के परिवारों को दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

पंजाब प्रांतीय आर्यवीर दल
कार्यालय आर्यसमाज प्रेम नगर करनाल

ब्रह्मवैवर्तपुराण की आलोचना (३री किश्त)

पुराणों में ऋषि मुनियों की निवासवंत्र है

(प्रो० श्री भवानीलाल जी भारतीय एम० ए०)

(गतांक से आगे)

और यज्ञ यागों का स्थान नाम स्मरण तीर्थ यात्रा, प्रति मार्चन आदि ने ले लिया। वैदिक यज्ञो की अवगणना निम्न प्रमाणों से सिद्ध होती है। प्रकृति खण्ड के ८ वें अध्याय में एक विष्णुकृत पृथ्वी स्तोत्र आता है। उसका महात्म्य वर्णन करते हुए कहा गया है—

पापेर्न मुच्यते प्राज्ञ.
स्तोत्रस्य पठनान्मुने।
अश्वमेघ शतं पुण्यं
लमते नात्र संशय: ॥६५

इस पृथ्वी स्तोत्र का पढने वाला व्यक्ति पापों से मुक्त हो जाता है, और सौ अश्वमेघ यज्ञों का फल प्राप्त करता है, इसमें कोई संशय नही। दूसरे उदाहरण भी द्रष्टव्य हैं। इसी प्रकृति खण्ड के १० वें अध्याय मे एक विष्णुपदी (गगा स्तोत्र) है जिसके विषय में कहा गया है—

नित्यं यो हि पठेद्भक्त्या
सपूज्य च सुरेश्वरी
अश्वमेघ फल नित्य लभते
नात्र सशय: ॥ १३६

इस स्तोत्र को जो व्यक्ति गगा की पूजा कर नित्य भक्ति पूर्वक पढ़ता है, उसे अश्वमेघ यज्ञ का फल मिलता है, इसमें कुछ भी संशय नहीं।

इसी पुराण के महागणपति खण्ड को जो समाहित चित्त होकर सुनता है वह राजसूय यज्ञ के फल को प्राप्त करता है। यह उक्त गणपति खण्ड के अन्तिम ४६ वे अध्याय मे फलश्रुति के रूप में कहा गया है—

इदं गणपते: खण्ड य:
श्रृणोति समाहित:
स राजसूय यज्ञस्य
फलमाप्नोति निश्चितम् ॥ ४१

अब राजसूय यज्ञ करना ही व्यर्थ हो गया। जब पुराण का एक अंश सुनना ही पर्याप्त है तो राजसूय यज्ञ का श्रम कौन करे। जन्माष्टी व्रत निरूपण के प्रसंग में लिखा गया है—

जन्माष्टम्यांच शुद्धायामुपोष्य
केवलं नरः।
अश्वमेघफलं तस्य व्रतं
जागरणं विना ॥ कृष्ण ८।७५

जो व्यक्ति जन्मष्टमी के दिन उपवास करता है उसे अश्वमेघ यज्ञ का फल मिलता है। इस प्रकार सर्वत्र ही यज्ञ यागों को पौराणिक धर्म-कांड से अवर सिद्ध किये जाने की कुचेष्टा इस पुराण में मिलती है। हमारे कथन का यह अभिप्राय नही कि कृष्ण जन्माष्टमी जैसे ऐतिहासिक पर्व न मनाये जाये। अवश्य ही रामनवमी और कृष्ण जन्माष्टमी आर्य जाति के लिये अपूर्व प्रेरणादायक पुण्य पर्व हैं जब कि हम राम और कृष्ण जैसे आर्य मर्यादा के रक्षक, पालक और बर्द्धक महापुरुषों का गुणकीर्तन और चरित्र श्रवण करते हैं, परन्तु पुराणों मे तो इन पुनीत पर्वों के मनाने की विधिया ही विचित्र दी हुई हैं। पूर्वोक्त ८वे अध्याय में जन्माष्टमी मनाने की जो विधि बताई गई है सम्भवतः उसी के अनुकरण के रूप मे वल्लभ सम्प्रदाय में इन पर्वो पर अत्यन्त स्थूल क्रिया कांड करने का प्रचलन हुआ। आज भी जन्माष्टमी के दिन वैष्णव मन्दिरो में एक स्त्री को या पुरुष को देवकी बनाया जाता है, वह प्रसव पीड़ा का अभिनय करती है, तत् पश्चात् कृष्ण को जन्म देती है आदि २ सभी बाते अत्यन्त स्थूल रूप में की जाती है। ब्रह्मवैवर्त में इसके लिये स्पष्ट आधार मिल जाता है जहा कहा गया है—

स्नात्वा नित्यक्रिया कृत्वा निर्माय
सूतिका गृहम् ।८।८
स्नानादि नित्य क्रिया करके सूतिका गृह बनावे। फिर—

तत्र द्रव्यं बहुविध नाभिच्छेदन कर्तनम्।
धात्री स्वरूपा नारी च यत्नत:
स्थापयेद्बुधा: ॥८।९

इस सूतिका गृह में नाभि-छेदन आदि के विविध औजार रखे और दाई के रूप मे एक नारी की स्थापना करे। कहने का तात्पर्य यह है कि जन्माष्ठमी के दिन आप योगेश्वर कृष्ण की योगनिष्ठा, आध्यात्मिक भावना, उनकी अपूर्व राजनीति, सामाजिक भावना तथा उनके अन्यान्य सहस्रशः गुणो को याद करें, यह कोई आवश्यक नही, परन्तु प्रसूति गृह का निर्माण कर मन्दिरो मे कृष्ण जन्म का नाटक अवश्य होना चाहिए। पुराणकार की सम्मति में जन्माष्टमी पर्व की यही सार्थकता है। वस्तुत: जिस देश और जाति के लोग अपने महा-पुरुषों के गुणों को भूलकर उनकी स्थूल उपासना में ही रत हो जाए, उस जाति की अधोगति और पतन सुनिश्चित है।

सत्य तो यह है कि पुराणो ने मुक्ति को एक सस्ता सौदा बना दिया है। अब न तो 'ऋते ज्ञानान्न मुक्ति' वाली बात है कि ज्ञान के बिना मुक्ति नही होती और न यजुर्वेद मे कहे गये इस वाक्य का ही कोई आदर है कि 'तमेव विदित्वातिमृत्युमेति नान्य: पन्था: विद्यतेऽयनाय' अर्थात उस परमात्मा को जाने बिना मृत्यु के पार नही जाया जा सकता, इस के अतिरिक्त और कोई मार्ग नही है। बल्कि पुराणकारो ने तो ऐसे २ मार्ग मोक्ष प्राप्त करने के ढूढ निकाले हैं जिन मे हर्रे लगे न फिटकरी और रग चोखा आये। उदाहरणार्थ इसी पुराण का गगोपाख्यान और गगामहात्म्य देखिये। प्रकृतिखण्ड अध्याय १० में स्पष्ट लिखा है—

गंगागंगेति यो ब्रूयाद्योजनाना शतैरपि।
मुच्यते सर्व पापेभ्यो विष्णुलोक स
गच्छति ॥७१॥

सैकडो योजन दूर मे ही जो व्यक्ति 'गगा गगा' पुकारता है उसके सब पाप दूर हो जाते हैं और वह विष्णु लोक को प्राप्त होता है और यह गगा भी कैसी है—

कोटि योजन विस्तीर्णा
दैर्घ्यं लक्ष गुणा तत: ॥१०।११७

करोड योजन मे जिस का विस्तार है और जो उस से लाख गुणा लम्बी है। वस्तुत: ऐसे वर्णनो को पढ कर हमे स्वामी दयानन्द की वह उक्ति बर-बस स्मरण हो आती है जिस मे उन्होंने कहा है कि पुराणकर्ता भूगोल विद्या के तो शत्रु ही है। परन्तु ब्रह्मवैवर्त-पुराण की विशेषता तो उसके सभोग वर्णनो मे है। इस पुराण का कोई भी उपाख्यान या प्रकरण मुरत प्रसग के वर्णन किए बिना नही चल सकता। अत: गगोपाख्यान मे भी गगा और कृष्ण के समागम का वर्णन उसी सरस शैली मे किया गया है जिसका दर्शन हम पूर्व राधा के प्रकरण मे देख चुके हैं। यहा भी रतिकरी शय्या है(१२।१९) और नवसगम मे होने वाली मूर्छा है (१२।२१) जिसे देख कर राधा को सपत्नी जन्य ईर्ष्या होती है। सच ही कभी - कभी शका होने लगती है कि यह गोलोक है या मध्यकालीन सामन्तों का अन्त:पुर जिसकी स्त्रिया परस्पर सपत्नीद्वेष (सौतिया डाह) की शिकार रहती हैं।

मुक्ति का सस्ता सौदा—

शालग्राम शिलार्चन—

इसी प्रसग मे शालग्राम शिला के महत्व की आलोचना भी अनुपयुक्त न होगी। प्रकृति खण्ड अध्याय २१ मे लिखा है यानि कानि च पापानि ब्रह्मा हत्यादिकानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्ति शालग्राम शिलार्चनात् ।७८। (क्रमश:)

आर्यजगत का वेदांक

सभा का साप्ताहिक पत्र आर्यजगत समय २ पर अपने विशेषांक प्रकाशित करता रहता है। आर्य समाज के वैदिक सिद्धातो पर ठोस सामग्री दी जाती है। इस बार श्रावणी वेद सप्ताह रक्षाबन्धन के अवसर पर अगस्त मे आर्यजगत का (वेदांक) प्रकाशित होगा। इस में वेद विषयक वैदिक विद्वानो के लेख होगे। वेद के विषय मे उत्तम सामग्री होगी। पढ़ने तथा मनन करने योग्य विचार मालाए होंगी। इतनी समाजें तथा सस्थाएं हैं। पता नहीं क्या होता जाता है। जिसके पास इतनी सभाजे व सस्थाए हो, उसे किसी प्रकार की कमी कैसे हो सकती है? पर बात रुचि व ध्यान की कमी की है। कई सस्थाए तो नमस्कार के योग्य हैं। बड़ा सहयोग देती हैं। पर बहुत-सी सभाजे व संस्थाए ध्यान नही देती। निवेदन है कि :—

सभा आप की व आर्यजगत आप का है। हम तो छोटे सिपाही हैं। इस बार इस वेदांक को पचास-पचास से कम तो कोई भी समाज व संस्था न मंगवायें। अधिक से अधिक शीघ्र आर्डर दें। विद्वान्, लेखक महोदय गंभीर वेद विषयक लेखों से कृतार्थ करें। —सं०

हिमाचल की सुधि लीजिए

श्री ओमप्रकाश जी महोपदेशक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

हिमाचल प्रदेश की प्राय सारी समाजे आर्य-प्रादेशिक सभा जालन्धर के आधीन है उनमे प्रचारार्थ गए हुए हमारी सभा के महोपदेशक श्री ओम्प्रकाश जी ने वहां की समाजों की जो दुर्दशा देखी है उसके निवारणार्थ जो उपाय लिखे है उन्हे उन्ही के लेख में पढ़िए, और सभा का कर्तव्य हो जाता है कि इस प्रदेश की समाजों को सुव्यवस्थित करें।

यह दुर्भाग्य की बात है कि स्वतन्त्र भारत मे गोत्रहत्यारे दुर्योधन की दुर्भावना बल पकडती जा रही है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस देश मे देश की भावना अर्थात् भारत-वासी एक है और उनका एक राष्ट्र है यह समाप्त हो कर रहेगी। प्रत्येक प्रान्त पर दृष्टिपात करके आप पृथक्-पृथक् रहने की—होने की भावना के दर्शन कर सकते है। कटे-फटे और अविकसित पजाब का बटवारा तो अभी अभी स्वीकार किया गया है। इस बटवारे के किस प्रकार के और कैसे भयानक दुष्परिणाम निकलेंगे—यह तो समय आने पर पता चलेगा—परन्तु हमे आज अपने आर्य बन्धुओ, वैदिक धर्म के अनुयायियो से कहना है कि वे किस गाढ निद्रा मे सो रहे हैं ?

हिमाचल प्रदेश और कागडा क्षेत्र में ईसाईयों का पहले ही बोलबाला था। उनकी गतिविधिया और भी तेज हो गई हैं राधा स्वामी मतवाले भी अपना पूरा जोर लगा रहे हैं। उधर राजनीति क्षेत्र मे चीन चक्र साम्यवादी सक्रिय हैं। नास्तिकता अपने यौवन पर है। आहार प्रायः बिगड चुका है घर-घर मे शराब का दौर चलता है। आर्यसमाज का सगठन और प्रचार इस क्षेत्र में सन्तोष-जनक नही है। काम करने वालो की ही कमी है क्षेत्र पर्याप्त है। पठानकोट से चल कर नूरपुर धर्मशाला नगरोटा बगवा पालमपुर योगेन्द्र नगर मण्डी सुन्दरनगर और कुल्लू मे आर्य मन्दिर है परन्तु काम न होने के बराबर है। कागडा समाज का भी अपना पृथक और सुन्दर मन्दिर है। इस क्षेत्र मे कम से कम दो तीन सुयोग्य उपदेशक भजन मण्डलियो सहित प्रचारार्थ अपेक्षित है।

हमारे वानप्रस्थी और सन्यासी सभी ज्वालापुर आदि स्थानो पर रह कर ही प्रसन्नता अनुभव करते है। यह क्षेत्र पिछडा हुआ है। यदि समय रहते इसे न सम्भाला गया तो सारे का सारा क्षेत्र अवैदिक मतो का अखाडा बन जायेगा। चीनवादी साम्यवादियो के प्रचार प्रभाव से केवल नास्तिकता ही नही पनप रही अपितु अराष्ट्रियता और देशद्रोह की भावना भी बल पकडती जा रही है।

आर्यसमाज सदा ही धर्म प्रचार और देश हित मे सक्रिय रहा है। इस का सारा इतिहास बलिदानो और त्याग तपस्या की गौरव गाथाओ से भरा हुआ है।

मैं इस छोटे से लेख द्वारा जहा अपने वानप्रस्थ तथा पूज्य सन्यासी महानुभावो से प्रार्थना करूगा कि वे इस क्षेत्र मे अपने प्रचार केन्द्र तथा साधना केन्द्र बनाने की कृपा करे वहा अपनी प्रान्तीय सभा से भी मुझे कहना है कि एक उपसभा इस क्षेत्र मे तत्काल बना कर प्रचार कार्य को सुव्यवस्थित रूप देने का शुभ स्नेह करे।

अपने नवयुवक बन्धुओ से भी अनुरोध है कि इस क्षेत्र की उपेक्षा न करे युवक सभाओ, कुमार सभाओ तथा आर्य वीर दलो का आयोजन शीघ्राति-शीघ्र होना चाहिए।

हिंदी व्यवहार में लाइए

नई दिल्ली २७ जुलाई—हिंदी साहित्य सम्मेलन ने १५ अगस्त ६६ की 'हिंदी व्यवहार वर्ष' मनाने का निश्चय किया है। १५ अगस्त को मनाए जाने वाले 'हिंदी व्यवहार वर्ष के सम्बन्ध मे हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष सेठ गोविन्द दास ने हिंदी भाषी क्षेत्रों की शिक्षण सस्थाओ के प्रिंसिपलो, मुख्य अध्यापको आदि से अपील की है कि वे अपने कामो मे हिंदी का पूरी तरह से व्यवहार करे, विश्वविद्यालय से, राज्य सरकार तथा भारत सरकार से तथा गैर-सरकारी सस्थाओ से सारा पत्र-व्यवहार हिंदी मे करे, विद्यार्थियो के लिए सूचनाए और परिपत्र हिन्दी मे निकाले, सस्था को लेखन सामग्री अर्थात् लेटर-पैड, लिफाफे, फार्मों आदि को हिंदी मे ही छपवाए और उसका हिंदी मे प्रयोग करे, प्रमाणपत्र हिंदी मे जारी [redacted] उपस्थिति रजिस्टर, हिसाब के [redacted]र आदि हिंदी में रखे। सेठ जी [redacted] बात पर खेद व्यक्त किया है कि हम स्वतन्त्र होने के इतने वर्षों के पश्चात् भी अधिकाश कार्य अग्रेजी मे करते हैं और अभी तक देश के भारतीय भाषाओ के प्रति उतना उत्साह दिखाई नही पडता जितना कि स्वतन्त्र देशो मे हुआ करता है।

एक भक्त की प्रार्थना और ईश्वर उपदेश

भक्त — मेरा कर्म असत्य मिथ्या मम व्यवहार।
तेरी मैं पूजा करू, मुझे लगा दे पार॥
चोरी मेरा काम है, करू भक्ति जप ध्यान।
पाप मुक्त कर दीजिए, विनय करू भगवान।

ईश्वर — चोरी करना छोड दे कहना मेरा मान।
फिर कर मुझसे प्रार्थना, जो चाहे कल्याण।

भक्त — अगर काम लू सत्य से, चले नही व्यापार।
मिले न धन कैसे बता, मैं पालू परिवार॥

ईश्वर — तुझे नही विश्वास, मैं, रक्षक पालनहार।
मैं ही देता कर्म-फल, जानू सब व्यवहार॥

मुझे समझ, चल सत्य पथ, दुःख सहनकर तात।
श्रद्धा से तू भज मुझे, बन कृतज्ञ दिनरात॥
सत्य मार्ग चलता हुआ, मुक्त तट आ बन दास।
तुझे बिठाऊ गोद मे, रखू सदा निज पास॥

—मुन्शी लाल गुप्त, हरिद्वार

आर्य समाज मंडी (हिमाचल प्रदेश) में वेद प्रचार सप्ताह

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजाब जालन्धर की ओर से श्रीमान् पण्डित ओमप्रकाश जी आर्योपदेशक तथा ठा० दुर्गासिंह जी व नत्थूराम जी की भजन मण्डली १८-७-६६ से २४-७-६६ रविवार प्रातःकाल तक धर्मोपदेश तथा वीर रस से भरे गीतो द्वारा जनता को आनन्दित किया। मध्याह्न ३ बजे से ४ ३० तक स्त्री समाज मे विशेष प्रचार होता था और रात्रि को सार्वजनिक सभाओ मे वैदिक सिद्धान्तो पर विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान होते रहे। भजन मण्डली का कार्य क्रम भी विशेष सराहनीय रहा।

आर्य समाज की ओर से वेद प्रचारार्थ १०१ और ३०) मार्ग व्यय मे प्रदान किए गए।

स्त्री आर्यसमाज की ओर से भी ५१) वेद प्रचारार्थ बडी श्रद्धा से भेट किए गए।

आर्यसमाज मण्डी अपनी सभा तथा पूज्य पण्डित जी वा ठा० दुर्गासिंह नत्थूराम जी की भजन मण्डली का विशेष धन्यवाद करता है।

—चेतराम बहल मन्त्री
समाज मण्डी

इंदिरा जी ! भारतीय बनिए

भारत का प्रधानमन्त्री के नाते इंदिरा जी विदेश यात्रा पर गईं, तो स्वागत मे सब से हाथ मिलाए। शास्त्री जी व नेहरू जी जब विदेश जाते थे तो उन्हे हाथ जोडे हुए देखा जा सकता था किन्तु इंदिरा जी तो हाथ जोडना सर्वथा भूल गई हैं।

हमारा आग्रह है कि उन्हे और भारत के प्रत्येक प्रतिनिधि को विदेशों मे भारतीय परम्पराएं ही निभानी चाहिए। आत्म प्रतिष्ठा खोकर, दूसरों की नकलें करना भारत जैसे महान देश के महान नेताओं के लिए किसी भी दृष्टि में शोभनीय नहीं।

आर्योदय से साभार

आर्य समाज में जब तक ... प्रवेश नहीं करेंगे, तब तक आर्य ... सदा के लिए उन्नत नहीं रह सकता। शायद कभी समाप्त भी हो जावे। नवयुवकों को आर्य समाज में लाने का एक साधन आर्य स्कूल है, दूसरा पारिवारिक-सत्संग। महर्षि दयानन्द जी के प्रभाव से कभी आर्य समाज के रंग मे रंगे हुए प्रभावशाली, त्यागी, परिश्रमी अध्यापक मिल जाते थे। अब नही मिल रहे। जब तक दृढ़ आर्य अध्यापक न मिलेंगे तब तक आर्य स्कूल अपनी पुरानी शान के अनुसार नही चल सकेंगे। आवश्यक है कि अध्यापक के जीवन का प्रभाव नवयुवकों पर हो। स्कूल में शानदार अनुशासन व अध्यापन कार्य हो। परिणाम और स्कूलों की अपेक्षा ऐसे बढ़िया हो कि लड़के अपने आप प्रवेश होने के लिए भागे चले आएं। लडकों के पीछे-पीछे न फिरना पड़े। अध्यापकों के मिठास-भरे, परोपकारी, परिश्रमी जीवन का प्रभाव लड़कों पर ही नही बल्कि लड़कों के संरक्षकों पर तथा जनसाधारण पर भी हो। परम पूज्य महात्मा हंसराज जी, पं० मेहरचन्द जी, ला० मेहरचन्द जी, ला० साईं दास जी किस-किस महानुभाव का नाम लिखा जाए। ऐसे अनेकों त्यागी, तपस्वी, ऋषि-भक्त महानुभाव हो चुके है और अब भी कहीं २ हैं जहा कहीं हैं, वहां हमारे कालिजों, स्कूलों व आर्यसमाज की अवस्था अवश्य सुधर गई है। अब देखना है कि ऐसे प्रभावशाली अध्यापक, प्राध्यापक, प्रिंसिपल कहा से आवें। इसके लिए मेरी तुच्छ बुद्धि में यही आ रहा है कि डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी या गुरुकुल विद्या-सभा या जैसे भी हो सके सब मिलकर आर्य समाज की ओर से एक प्रभावशाली आर्य ट्रेनिंग कालिज की स्थापना करे। गवर्नमेण्ट से स्वीकृत भी हो, लेकिन उसका प्रबन्ध आर्य समाज के अधीन हो। इस ट्रेनिंग कालिज में मिडल पास, मैट्रिक, एफ. ए., बी. ए., एम. ए०, प्राज्ञ, विशारद शास्त्री, नौजवानों के लिए अलग २ ट्रेनिंग श्रेणियां हों। उदाहरण के तौर पर जे० बी० टी०, बी० एड, बी० टी०, एस० बी० आदि। सिलेबस दो वर्ष अथवा एक का हो। व्यय कम से कम हो। इस ट्रेनिंग कालिज में यूनिवर्सिटी की शानदार पढाई के

'आर्य समाज के प्रचार का एक आवश्यक साधन'

(ले०—गुरु प्रसाद जी आर्य सेवक अलावलपुर)

साथ-साथ महर्षि-ग्रन्थ पढाए जावें। भजनोपदेशक तथा उपदेशक आर्य समाज के प्रचार के साधन के रूप मे तैयार करने का विशेष प्रयास हो। व्याख्यान देना सिखाया जाए। इन नवयुवको का जीवन प्रभावशाली बनाने का विशेष ध्यान रखा जाए। भोजन-वस्त्र, शुल्क, कापियां इत्यादि के लिए बिल्कुल सादगी का प्रयोग हो। जो आशा अब दयानन्द ब्रह्ममहाविद्यालय या उपदेशक महाविद्यालय से पूरी करने की, की जा रही है, वही आशा इस ट्रेनिंग कालिज से पूरी की जाने की कोशिश हो। ट्रेनिंग कालिज के लिए दान अधिक से अधिक मांगा जाना चाहिए। अब सोचना है कि ऐसे महान-कार्य को चलाने वाले, त्यागी तपस्वी, अनुभवी शिक्षित महान् विद्वान, दृढ़-ऋषि-भक्त कहा से आवें। इसके लिए आवश्यक है कि अनुभवी रिटायर्ड या रिटायर होने वाले आर्य समाज के प्रेमी, भक्त, उच्च-कोटि के विद्वान, आचार्य प्रिंसिपल, अध्यापक और अनुभवी विद्वान अपना शेष जीवन प्रदान करें। सन्यासी, वनप्रस्थी भी सहयोग दें। ऐसे महानुभावों की खोज करके, उनसे प्रार्थना की जावे। उनके भोजन, वस्त्रादि, निर्वाह का प्रबन्ध कालिज की ओर से हो। सारे पंजाब के लिए यह एक केन्द्रिय ट्रेनिंग कालिज बन जावे। हरिद्वार मोहन आश्रम मे या किसी और अच्छी जगह इस ट्रेनिंग कालिज की स्थापना हो। यह कालिज वेद प्रचार का एक प्रभावशाली साधन बन सकता है। इसके लिए अधिक से अधिक शक्ति लगाई जाए। इस ट्रेनिंग कालिज से निकले नवयुवक आर्य समाज के स्कूलो कालिजो मे अपने जीवन के प्रभाव से नवयुवक बच्चो मे आर्यसमाज के लिए भक्ति, श्रद्धा पैदा करने वाले होंगे। जहां भी काम करेंगे, आर्यसमाज की शान बढ़ाएंगे। आर्यसमाजो मे नवयुवको के प्रवेश का इसके अतिरिक्त और कोई साधन दृष्टिगोचर नही हो रहा। आशा है कि पारिवारिक सत्संग होने की भी परिवारो मे प्रथा चल पड़ेगी। नवयुवक न प्रवेश करेंगे तो आर्य समाजो की अवस्था आपके समक्ष ही है।

आज राज महंगाई का

★

इस महगाई ने कर दी सब की डिबली टाइट।
मिलता था सात आने मे अब ग्यारह आने का सनलाईट॥
मैल उतारो नीम छाल से अब न गुजारा होय।
पचपन पैसे मे अब न मिलेगा लाईफ बोय॥
बिन साबुन कर स्नान मत कर ध्यान सफाई का।
आज राज महगाई का॥

★

डालडा घी का डब्बा मिलता पूरे सौ मे।
देसी बारह का सेर कौन देने वाला नौ मे॥
दुकान पर लगी भीड़ एक दूसरे को रहा धकेल।
मुश्किल से मिलता एक एक बोतल मिट्टी का तेल॥
दो पैसा नया बढा प्रति दियासलाई का।
आज राज महगाई का॥

★

मित्रगण आते घर पर दुश्मन सारे लगते है।
घर में नही कुछ खाने को चूहे पी० टी० करते हैं॥
फीका आदर सन्मान और फीकी रिश्तेदारी।
इस महगाई ने तोड दई आज कमर हमारी॥
स्वागत नही कर सकती अब सास जमाई का।
आज राज महगाई का॥

—समाज संदेश से साभार

सत्यार्थप्रकाश दान देवें

आर्य युवक परिषद दिल्ली के प्रधान श्री देवव्रत जी धर्मेन्दु ने धनी, मानी तथा दानी सज्जनो से अपील की है कि परिषद की सत्यार्थ प्रकाश परीक्षाओ मे बैठने वाले परिक्षार्थियो के लिये जिन के पास पुस्तके नही है सत्यार्थ प्रकाश चाहिये। दानी सज्जन स्वयं अधिक से अधिक सत्यार्थ प्रकाश दान देवें तथा दूसरो से भी दिलावें।

ओ३म् प्रकाश मन्त्री
आर्यसमाज मोडल बस्ती देहली—५

श्री गुरु प्रसाद जी अलावलपुरी की आंतरिक तड़प

हमारे स्कूल के लिए कोई प्रभावशाली परिश्रमी, जैसे कि इस विषय मे मेरे भाव है हैडमास्टर नही मिलता। आपके ध्यान मे हो तो अवश्य पता देने का कष्ट करें। हमारा स्कूल अति संकट मे है। मुकाबला सख्त है। दूसरे स्कूल दिन-प्रतिदिन उन्नति कर रहे है। हमारे स्कूल का आधार परिणाम मिलनसारी है। दूसरे स्कूलो की पृष्ट पर सारी सनातन-सिख जनता है। जब टूटेगा, हमारा ६० वर्षीय स्कूल टूटेगा। जिसकी एक लाख की इमारत खडी है। हालात देखकर बहुत दुःख हो रहा है।

जम्मू स्टेट में वैदिक धर्म प्रचार

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर की ओर से श्री प. चन्द्रसैन जी आर्य हितैषी महोपदेशक सभा प्रचारार्थ जम्मू स्टेट भेजे गए। आपने राजौरी, पुंछ, मुरादपुर, दलांगडा, नौशहरा, अखनूर, रियासी और उधमपुर मे प्रचार किया। इन स्थानों पर कई नवीन समाजो की स्थापना के इलावा मृतप्राय समाजोमे नवीन उत्साह भरा। आर्यसमाज राजौरी ने १०१ - ६/- आर्यजगत का चन्दा पुन्छ से ५१/- वेद प्रचारार्थ प्राप्त हुए इसके अतिरिक्त कुछ फुटकर धन प्राप्त हुआ है। सभा की ओर से दानी समाजो का धन्यवाद। सभी समाजो मे प्रचार कार्य की सराहना होती रही।

[illegible] आर्य समाज

[illegible] समाज मोतीबाग [illegible] सत्संग नियमपूर्वक [illegible] सायंकाल ३ से ५ बजे तक उपस्थिति सन्तोष जनक हो। देवियां बहुत लग्न और से कार्य करती हैं। उन्होंने छोटा सा सुन्दर मन्दिर भी बना है श्रीमती शकुन्तला जी जुल्का की मन्त्राणी हैं। बड़े उत्साह वाली हैं शुक्रवार ति० १५-७-६६ को इनके सत्संग मे मेरा उपदेश हुआ। उनके उत्साह को देख कर चित्त बहुत प्रसन्न हुआ।

कृष्णचन्द्र प्रधान
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि
उपसभा देहली

आर्य समाज खंडवा (पूर्वनिवाड़ म. प्र.)

दि० ११-७-६६ से १८-७-६६ तक श्री पं० वीरसेन जी वेदश्रमी वेद विज्ञानाचार्य इन्दौर द्वारा (वृष्टि महायज्ञ का आयोजन किया गया। जिस में प्रतिदिन प्रातः ७॥ से १० तक १२॥ से २ तक और ४ से ६ तक [illegible] कार्यक्रम तथा रात्रि के ८॥ बजे से [illegible] तक श्री स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती के वेद प्रवचन एवं श्री पं० रामनारायण जी पहलवान इन्दौर के संगीतमय भजनोपदेश हुए। प्रतिदिन जनता हजारों की संख्या में यज्ञ तथा वेद प्रवचन से लाभ उठाती रही।

मन्त्री—आर्यसमाज, खंडवा

श्रावणी के शुभ पर्व पर वितरण करने के लिए पुस्तक

वैदिक धर्म मुझे क्यों प्यारा है

जिसके लेखक हैं महता रामचन्द्र जी शास्त्री भूतपूर्व महोपदेशक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालंधर, बड़ी खोज और छानबीन के साथ लिखी गई पुस्तक का अध्ययन करें। अधिक से अधिक संख्या मे मगाकर वितरण करें।

मूल्य १·५०। डाक खर्च पृथक

प्राप्ति स्थान— हंसराज वैदिक साहित्य विभाग निकट कोर्ट जालन्धर

डी. ए. वी. कालेज [illegible] परीक्षा परिणा[म]

यह एक पुनः स्थापित की गई संस्था है। एव डी० ए० वी० कालेज लाहौर की उत्तराधिकारिणी है। यह आर्य समाज के संस्थापक की पुण्य स्मृति में स्थापित की गई है। आर्य समाज की यह से पहिली शैक्षणिक संस्था है। इस संस्था में त्याग, तपस्या तथा देश भक्ति की गौरवपूर्ण भावनाएं निहित हैं और अनेक नवयुवकों को इस से प्रोत्साहन प्राप्त हुआ है तथा इस से डी. ए. वी. आन्दोलन की सच्ची भावना का संचार होता है।

देश के विभाजन के पश्चात १९४८ में यह कालिज एक निर्वासित भवन में आरम्भ किया गया। विभिन्न विषयों के लिए कालिज में परिवर्तन एवं वृद्धि की गई तथा पुराने भवन में दो लाख रुपये की लागत से आवश्यक परिवर्तन किए। इसके अतिरिक्त कालिज में विशाल खेल का मैदान, एक बड़ा पुस्तकालय भवन, वनस्पति उद्यान, ओपन एयर थियेटर तथा दो नए छात्रावास हैं।

परीक्षा परिणाम १९६६

डी ए.वी. कालिज अम्बालानगर

प्री. मैडीकल में कालिज से भेजे गए ६९ विद्यार्थियों में से ४५ विद्यार्थी पास हुए। कालिज का परीक्षा परिणाम ६५.२१% रहा जब कि विश्व विद्यालय का परीक्षा परिणाम ४६.५ था। कालिज के चार विद्यार्थियों ने प्रथम डिवीजन और बीस विद्यार्थियों ने द्वितीय डिवीजन प्राप्त की। इसके अतिरिक्त हमारे विद्यार्थी देवेन्द्र कुमार ओबराय ने ४५६ अंक प्राप्त कर पंजाब विश्व विद्यालय में ११वां स्थान प्राप्त किया।

प्री इंजीनियरिंग में कालिज से भेजे हुए ११८ विद्यार्थियों के परीक्षा परिणामों में से ८० विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए। कालिज का परीक्षा परिणाम ६७.८ प्रतिशत रहा जब कि विश्व विद्यालय का परिणाम ४४.९ थी। कालिज के १२ विद्यार्थियों ने प्रथम डिवीजन और २९ ने द्वितीय डिवीजन प्राप्त की। हमारे विद्यार्थी कुल भूषण ने ४२९ अंक प्राप्त करे पंजाब विश्व विद्यालय में तेहरवां स्थान प्राप्त किया।

बी. एस. सी. पार्ट III [illegible] में कालिज से भेजे गए ४१ विद्यार्थियों [illegible] में से २७ प[ास हुए] परीक्षा परिणा[म] [illegible] कि विश्व वि[द्यालय] ६४.७%" था। कालिज के तीन विद्यार्थियों ने प्रथम डिवीजन और [illegible] ने द्वितीय डिवीजन प्राप्त की। इसके अतिरिक्त और एक विद्यार्थी त्रिलोक चन्द ने ३६३ अंक प्राप्त करे पंजाब विश्व विद्यालय में १०वाँ स्थान प्राप्त किया।

B.A. Part III. में कालिज से भेजे गए १९ विद्यार्थियों में से १६ पास हुए। कालिज का परीक्षा परिणाम ८४.२ रहा। जबकि विश्व विद्यालय का परिणाम ६५.७ था।

प्रेस मैडिकल—में कालिज से भेजे गए ५८ विद्यार्थियों में से ३५ पास हुए। कालिज का परीक्षा परिणाम ६०.३ रहा। जबकि विश्वविद्यालय का परिणाम ४७.७१% था। कालिज के दो विद्यार्थियों ने प्रथम डिवीजन और १८ के द्वितीय डिवीजन प्राप्त की, इसके अतिरिक्त हमारे एक विद्यार्थी रणवीरसिंह ने ५०६ अंक प्राप्त किए।

B.A. part I. में कालिज से भेजे गए ६६ विद्यार्थियो मे से ४१ पास हुए। इस कालिज का परीक्षा परिणाम ६२.१ रहा। जबकि विश्व-विद्यालय का परिणाम ५८.८ था कालिज के २ विद्यार्थियों ने द्वितीय श्रेणी प्राप्त की। इसके अतिरिक्त हमारे एक विद्यार्थी दलवीरसिंह ने १२९ अंक प्राप्त कर कालिज में प्रथम रहा।

B.A. Part II. में कालिज से भेजे गए ९७ विद्यार्थियों मे से १८ उत्तीर्ण हुए। कालिज का परीक्षा परिणाम ६६.६ रहा जबकि विश्वविद्यालय का परिणाम ४९.१ रहा। कालिज के ३ विद्यार्थियो ने द्वितीय श्रेणी प्राप्त की इसके अतिरिक्त हमारे एक विद्यार्थी बलदेव राज ने १४४ अंक प्राप्त कर क्लास मे प्रथम रहा।

Bsc. Part-II. Med. में कालिज से भेजे गए ३२ विद्यार्थियो में से २५ पास हुए। कालिज का परीक्षा परिणाम ७८·१ रहा जबकि विश्व विद्यालय का परिणाम [illegible]

[illegible] कालिज से भेजे गए [illegible] विद्यार्थियों [illegible]

[illegible] के चार विद्यार्थियों ने द्वितीय [श्रेणी] प्राप्त की। इसके एक विद्यार्थी [illegible] कुमार पुरी ने १४८ अंक प्राप्त कर और कक्षा में प्रथम रहा।

—[illegible]

आर्य जगत का वेदांक नम्बर

श्रावणी के पवित्र अवसर पर २०×३० के रिसाला साईज पर प्रकाशित हो रहा है। जिसमें भारत के चुने हुए विद्वानों के लेख संग्रह किए गए हैं। वेदों के मन्त्रों की अद्भुत ढंग से व्याख्या पढ़ने का सुअवसर है। मुख पृष्ठ पर स्वामी दयानन्द जी (कुर्सी पर बैठे हुए) का चित्र रंगदार प्रकाशित हो रहा है। वेद महिमा पर कविताएं पढ़ने का सुअवसर है। सभी आर्य संस्थाएं अधिक से अधिक आर्डर देकर कर्तव्य पालन करें। कीमत केवल ४० पैसे।

नोट—आर्डर १५ अगस्त तक मैनेजर आर्यजगत निकट कचहरी हंसराज भवन जालन्धर के पते पर दें।

सभा का नवीन प्रकाशन

संध्या पर व्याख्यान

लेखक

स्व० महात्मा हंसराज जी

अगर आप संध्या के प्रत्येक मन्त्र की साङ्गोपांग व्याख्या के पढ़ने के इच्छुक हैं तो एक बार अवश्य स्वाध्याय करें कीमत १/- केवल डाक खर्च पृथक

प्राप्ति स्थान— हंसराज वैदिक साहित्य विभाग निकट कोर्ट जालन्धर

पठनीय एवं मननीय साहित्य

वेद प्रवचन ५/- गीतासार ५५ पैसे, आलमगीर के पत्र १/- वेदारम्भ संस्कार २/५० पैसे, मेरी आठ रोचक कहानियां ७५ पैसे, लौकट ७५ पैसे, लड़कियों का जीवन ५० पैसे, धर्म मीमांसा २/२५ पैसे, संतति निग्रहण क्यों और कैसे १५ पैसे, वैदिक व्याकरण भास्कर ३/- व्याख्यान बोधक पत्र ११/२० पैसे, साहित्य प्रचारक १/-

जयदेव ब्रदर्स बड़ौदा—१

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर

स्वास्थ्य स्तंभ

आम का कल्प

डा. लक्ष्मीनारायण टंडन 'प्रेमी'

कल्प कई प्रकार के होते हैं। आम का भी कल्प होता है। जैसे अन्य कल्पों के करने के पूर्व जुलाब आदि लेकर पेट शुद्ध कर लिया जाता है वस ही आम के कल्प में भी होता है। यह कल्प घी के द्वारा करना उपयोगी है। किन्तु यदि रोगी कमजोर हो तो जुलाब या रेचन के बिना भी काम चल सकता है।

अब आम के चुनाव का प्रश्न है। कल्मी आम तो होने ही नही चाहिए, चुसवा आम होने चाहिएं। आम पतले रस के हों तथा मीठे हो और ताजे हों। खट्टे न हो इसका ध्यान रखा जाए। आम के प्रयोग के पूर्व उन्हे पानी में भिगो देना चाहिए ताकि उनकी गरमी निकल जाए। आरम्भ थोड़े ही आम से करना चाहिए। जितनी खुराक मनुष्य लेता है। कल्प के प्रथम दिन नित्य से कम खुराक रहे इसका ध्यान रहे। फिर धीरे-धीरे आम की मात्रा बढ़ाई जाए। किन्तु इसका ध्यान रखा जाए कि अजीर्ण न होने पावे या दस्त न आने लगे। यदि ऐसा हो तो आमो की मात्रा धीरे-धीरे ही घटाकर फिर बढाई जाए। अत: प्रथमदिन कम संख्या में आम ले। फिर बीच-बीच मे मात्रा बढाता जाए। अन्त मे फिर आम की संख्या कम कर देना चाहिए। आम के बाद थोड़ा-थोड़ा दूध पीना चाहिए। जब कल्प समाप्त हो जाए तो अन्न का भोजन प्रारम्भ करे। पर भोजन स्निग्ध, सुपाच तथा हल्का होना चाहिए। दलिया, खीर आदि हल्की चीज ली जा सकती है। जब कल्प करना हो तब जल नहीं पीना चाहिए। और पिए भी तो यथा-सम्भव कम से कम। मेरा विचार है कि संभव है पूर्व अभ्यास के कारण कल्प के प्रारम्भ करने पर जल की आवश्यकता मनुष्य अनुभव करे किन्तु यदि दो एक दिन आत्म-नियन्त्रण करे तो जल की आवश्यकता का वह अनुभव ही नहीं करेगा। आम तथा जल मे तो यो ही पानी का अंश बहुत होता है अत: अलग से पानी की आवश्यकता है ही नही कल्प करने वाले को।

एक विशेष बात का ध्यान रखा जाए। बिना इस कल्प के सम्बन्ध में सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त किए कल्प प्रारम्भ न कर दें। अच्छा तो यही होगा कि पहले स्वयं अध्ययन कर ले और फिर किसी विशेषज्ञ की देख-रेख में कल्प प्रारम्भ करे। निश्चय ही गरमी के दिनों में आम का कल्प करना सम्भव है क्योंकि तभी आम की फसल होती है और ताजे आम मिलना संभव है। यों तो विज्ञान ने इतनी अधिक प्रगति कर ली है कि 'कोल्ड-स्टोरेज' में रखी चीजें वैसी की वैसी ही बनी रहती हैं और बेफसल भी वे प्राप्त की जा सकती हैं किन्तु कोल्ड स्टोरेज' की वस्तुओ मे वह ताजापन नहीं रहता और इसीसे वे वस्तुएं उतनी लाभप्रद नही होती। अत: कल्प ताजे फलो का ही करें। दूसरी बात यह ध्यान मे रखे कि दूध बिना शक्कर का हो या शक्कर हो तो हल्की। यह इसलिए कि आम स्वय बहुत मीठा होता है। और आम का प्रयोग काफी संख्या में होता है। ऊपर से दूध भी काफी मात्रा मे पिया जाता है अत: यदि प्रत्येक बार दूध मे काफी शक्कर रहेगी तो शक्कर तथा टोटल मिठास की मात्रा बहुत अधिक हो जाएगी। इससे न केवल मिठास के प्रति अरुचि उत्पन्न हो जाएगी वरन् अधिक शक्कर तथा मीठा सभव है कुछ हानि भी करे। साधारण मनुष्य को एक सीमा तक शक्कर तथा मीठे को आवश्यकता होती है। जिस वस्तु की भी अति हो जाएगी वही हानि करेगी।

यह तो बिना बताए ही समझा जा सकता है कि मधुमेह (डाइविटीज) के रोगी को यह कल्प नही करना चाहिए। कल्प कितने दिनो का हो इस सम्बन्ध मे कोई निश्चित निर्णय नही दिया जा सकता। ३० दिन, ४० दिन० ४५ दिन, ६० दिन कितने ही दिनो का कल्प किया जा सकता है। यह रोगी या मनुष्य की दशा तथा स्वास्थ्य तथा विशेषज्ञ की राय पर निर्भर है।

दूध और आम का साथ परम आवश्यक है। रक्त-क्षय, शुक्र-क्षय, पित्त विकार वाले तथा कमजोर आंतो वाले रोगियों को प्रारम्भ से ही आम के साथ दूध का सेवन करना चाहिए। दूध आम की गर्मी को मार देता है। केवल यही नहीं आम के ऊपर दूध की प्रतिक्रिया अत्यन्त लाभ-प्रद होती है। साधारणतया जितने आम के रस का प्रयोग हो उतना ही दूध लिया जाए। जो कमजोर आंत वाले हैं उन्हें तो आम के साथ दूध बहुत उपयोगी होता है।

पर जो लोग मोटे हों या जिन्हे मेद विकार हो या जो कब्ज के पुराने रोगी हो उन्हे आम का कल्प बिना दूध के ही करना चाहिए। ऐसे लोग यदि कमजोरी का अनुभव करे तो दूध के स्थान पर अगूर या अनार के रस का प्रयोग कर सकते हैं। आम के कल्प मे यदि तीन-चार-पाच तक दस्त आवें तब तक यो ही चलने दे पर यदि इससे अधिक दस्त आवे तो आम की कूटी हुई बिजली का चूर्ण तीन से छ: माशे तक दे इससे लाभ होगा। प्रकृति ने कितना प्रबन्ध तथा व्यवस्था रख छोड़ी है। आम के प्रयोग मे बुरी प्रतिक्रिया होने पर उस बाधा के दूर करने का कितना सुविधाजनक तथा निकट का प्रबन्ध उसने रख रखा है। और यदि कब्ज या अजीर्ण हो जाये तो आम के छिलके का चूर्ण देने से लाभ होगा।

अब एक प्रश्न और उठता है। चुसुवा आम का क्या रस निकालकर प्रयोग किया जाए या उन्हे चूसकर खाया जाए? मेरे विचार से जिसको जिसमे सुविधा हो या रुचि हो वैसा करे। उससे कोई विशेष अन्तर नही पडेगा। पर हा, रस अपेक्षाकृत अधिक उत्तम रहेगा।

यदि कल्प करने वाला श्वास का रोगी है या कल्पकाल मे उसे श्वास के कष्ट मे वृद्धि जान पड़े या स्त्रियो के प्रदर विकार के बढने पर या स्वप्न-दोष के बढने पर आम की मजरी का चूर्ण देने से लाभ होगा।

जो कल्प करने वाले पलीहा या बढे हुए जिगर के रोगी है या कल्प काल मे यह कष्ट बढ जाए तो चोपी की एक-दो बूंद दूध मे डाल कर दे (बताशे मे न दे)।

मान लो कि कल्प काल में बवासीर का कष्ट बढ जाता है तब भी मंजरी का चूर्ण लाभ-प्रद हो सकता है। यदि खूनी बवासीर मे खून की मात्रा बढ जाए तो कुछ दिनो कल्प रोक देना चाहिए तथा बिपरीत विपाक वाले फलो को देना चाहिए। किश-मिश या अन्य कोई खट्टे फल का प्रयोग करे। और जब बढ़े रोग मे लाभ हो जाए तो फिर कल्प प्रारम्भ कर दे। जिसे कफ-दोष हो अर्थात् कफ प्रधान दोष न होकर उप-प्रधान हो उसे आम के साथ शहद का प्रयोग लाभ-प्रद होगा। जो कमजोर रोगी हो उन्हे कल्पकाल मे नहाना न चाहिए तथा वायु के तेज झोंके भी उन्हे न लगना चाहिए। हा, पंखे की हवा उन्हे हानि न करेगी। बात के अनेक रोगों में आम का कल्प लाभ देता है. उससे कम रोगो मे जो पित्त सम्बन्धी है और सबसे कम कफ सम्बन्धी रोगो मे।

जो राजयक्ष्मा (टी०बी०) के रोगी हो उन्हे पहले दूध का कल्प करना चाहिए और तब आम का कल्प। और आम के साथ वे शहद का प्रयोग करे। इससे उन्हे बहुत लाभ होगा।

जिन्हे मोतियाबिंद होने वाला हो, या दमा हो या अमाशय और जिगर बिगडा हो उन्हे आम का प्रयोग करा वमन कराना चाहिए। शरीर के ऊपर के समस्त रोगो मे ऐसे वमन से बहुत लाभ होता है। वमन इस प्रकार कराया जाए। पहले तो खूब पेट-भर ठूसकर आम का रस पिला दिया जाए। और फिर १०-१५ मिनट बाद दो चुटकी मैनफल दे दे। इससे वमन होगा। वमन के साथ समस्त अदरूनी विकार निकल जाएगे। वमन ऐसे बार ही नही. वरन् ५-६ बार कराना चाहिए तभी लाभ होगा। पर एक दिन मे एक या दो ही बार और वह भी प्रतिदिन निरंतर नही. एक-दो दिन का अन्तर देकर। वमन प्रात काल कराना चाहिए। दूसरी बार दिन मे कराया जा जा सकता है।

यह कहा ही जा चुका है कि अधिक आम के प्रयोग से विषमज्वर, मन्दाग्नि, कब्ज, रक्त विकार, नेत्र रोग, बहुत फोडा-फुन्सी भी हो सकते है। तब सोंठ के चूर्ण को दूध के साथ लेना चाहिए।

आम के रस के साथ अनेक चीजो का प्रयोग होता है। शहद के साथ यदि आम के रस का प्रयोग किया जाए तो राजयक्ष्मा, प्लीहा बात तथा श्लेष्मा का नाश होता है।

आम के रस के साथ यदि घी का प्रयोग किया जाए तो पित्त तथा बात सम्बन्धी रोगो का नाश होता है। वह बल-बर्धक, वीर्य-वर्धक, भारी शीतल तथा रुचिकर होता है। भपके के साथ आम के रस के अर्क को निकालकर ४ तोला मात्रा देने मे स्वप्न-दोष मे लाभ होता है। क्रमश:

ताशकन्द का प्रचारक

(पृष्ठ ३ का शेष)

भाषाओं का ज्ञाता भी बताते हैं। कई समाजों में घूमते है। शरीर स्वस्थ है. सिर पर गांधी टोपी तथा प्रायः प्रेस किए वस्त्र पहिरते है। इधर भी कठूआ व जम्मू की समाजों में फिर गए है। उन्होंने कहा है कि मैंने चार साल मास्को (रूस) मे रह कर वहा के प्रधान मन्त्री श्री कोसीगन को वेद पढाए है। अब वह वेदो का भाष्य रूसी भाषा मे कर रहे हैं। मैं ताशकन्द श्री शास्त्री जी के साथ गया। उनका भाषा अनुवादक था। यह भी कहते हैं कि बर्लिन जर्मनी मे कई वर्ष प्रोफेसर रहा हू। कभी कहते हैं कि प्रधान मन्त्री इन्दिराजी से यह काम करा दूंगा व काश्मीर के प्रान्तपति युवराज श्री कर्ण सिंह जी मेरे भाषण मे रोज आते थे। समाजें व सज्जन भ्रम में उनको पैसे देते है। कृपया सार्वदेशिक सभा से प्रार्थना है कि जल्दी ही इस ताशकन्दी प्रचारक के बारे मे सारा विवरण दैनिक तथा अपनी प्रांतीय सभाओं के मुखपत्रो मे भेजे ताकि इन के सम्बन्ध में पूरा परिचय मिल सके। इधर के समाजो व लोगो ने विशेष कर इस दिशा में पूछा है। सारी सभाएं भी इस के सम्बन्ध मे अपनी-अपनी समाजों को पता देवे।

वेद सप्ताह पर्व

इस बार वेद सप्ताह का पवित्र पर्व श्रावणी उपाकर्म के रूप मे ता० तीस अगस्त से प्रारम्भ हो रहा है। जन्माष्टमी भी साथ मे साथ आती है। आर्यों के लिए यह वेदपर्व बड़ा ही पवित्र माना जाता है। इस सप्ताह वेदमन्त्रो की कथाए हो। वेद के स्वाध्याय का व्रत लिया जाए। आर्य-समाज तो पैदा ही वेद प्रचार के लिए हुआ है। आज वेद प्रचार की निधि की क्या अवस्था है? आर्य प्रादेशिक सभा का महात्मा हंसराज वेदप्रचार कोष भर दो। सभा के मुखपत्र आर्य-जगत् के वेदांक को खूब प्रतियां मंगवा कर सब मे बांटने का कर्तव्य निभाए।—स०

कठूआ में धर्म प्रचार

प० त्रिलोकचन्द्र शास्त्री आर्य प्रादेशिक सभा जालन्धर तथा पं० ज्ञानचन्द जी भजनोपदेशक सभा का लगातार एक सप्ताह तक भाषणों व भजनो द्वारा प्रचार होता रहा। इस नगर मे अभी २ आनन्दमार्गमत के गुरु अपने शिष्यो समेत आये व कई लोगो व नारियो को दीक्षा दी। आनन्दमार्ग की वास्तविकता के बारे मे भाषण दिये गये। श्री बा० तेजराम जी चेयरमैन प्रधान, श्री बा० रूपचन्द जी ऐडवोकेट मन्त्री, श्री मुल्खराज जी श्री खजांची जी आदि सारे सज्जन समाज की सेवा में लगे हैं। स्त्रीसमाज भी खूब काम करती है। सभा को वेद प्रचार भी मिला।

हंसराज महिला महाविद्यालय जालंधर के बी० ए० तृतीय वर्ष का शानदार परीक्षा परिणाम

विद्यालय की तीन छात्राओ कुमारी राज, कुमारी प्रमिला कपूर और कुमारी शोभा ने क्रमशः ३२८, ३०८ और ३०६ अंक लेकर विशिष्ट योग्यता प्राप्त विद्यार्थियो की सूची मे स्थान प्राप्त किया।

कुमारी राज विश्वविद्यालय के समस्त परीक्षार्थियो मे आठवें स्थान पर और जालन्धर जिला में प्रथम स्थान पर रही।

विद्यालय का परीक्षा परिणाम ९०% रहा जबकि विश्वविद्यालय का केवल ६५% है। अभी तेईस छात्राओ का परीक्षा परिणाम घोषित नहीं हुआ है। इस के घोषित होने पर परीक्षा परिणाम और भी शानदार हो जाएगा।

बी. ए. प्रथम वर्ष का परीक्षा परिणाम

कुमार प्रवीण ओहरी १४२ अंक लेकर जालन्धर जिला के समस्त छात्र-छात्राओ मे प्रथम स्थान पर रही। विद्यालय का परीक्षा परिणाम ७४% है जबकि विश्वविद्यालय का केवल ५३.४% है।

पुरानी मंडी जम्मू

आर्यसमाज पुरानी मंडी जम्मू में भी वेद प्रचार का समारोह होता रहा। प० त्रिलोकचन्द्र शास्त्री के उपदेश तथा पं० ज्ञानचन्द जी के भजन होते हैं। स्वराज्य सूक्त पर भाषण हो रहे हैं।

★ वेदों के विद्वान्, देशसुधारक, त्यागी, सत्यवादी, तपस्वी, सच्चे ब्राह्मण, सन्यासी तथा बोले वहां चारी थे।

प्री-यूनिवर्सिटी का शानदार परीक्षा परिणाम

हंसराज महिला महाविद्यालय की छात्रा कुमारी प्रोमिला जैन और कुमारी वीना जैन ने क्रमशः ५०७ और ५०४ अंक लेकर जिला जालन्धर की छात्राओ मे प्रथम और द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

कुल २४६ छात्राओ ने परीक्षा दी जिन मे से २३० का परिणाम अभी घोषित हुआ हैं। इस प्रकार विद्यालय का परीक्षा परिणाम ६४.४ प्रतिशत है जब कि विश्वविद्यालय का केवल ५०:३० प्रतिशत है। शेष १७ छात्राओं का परीक्षा फल निकलने पर विद्यालय का परीक्षा परिणाम और भी शानदार हो जाएगा।

—विद्यावती 'आनन्द' प्रिन्सीपल

अत्यावश्यक सूचना

उत्कल प्रान्त में अत्यन्त भूखमरी के कारण सैंकड़ो लोग अपने बच्चे तथा घरों को छोड़कर अन्य स्थानों को चले गये है और जा रहे हैं. सैंकडों ही अखाद्य पदार्थ खा कर अपना पेट भर रहे हैं और सैंकड़े ही भूख के कारण मृत्यु को प्राप्त हो चुके है। ईसाई मिशनरी इस भूखमरी का अनुचित लाभ उठा रहे है। उन्होंने उन भूखे तथा निर्धन आदिवासी लोगो तथा उनके बच्चो का धर्म परिवर्तन करने के लिए वहा अनाथालय, हस्पताल तथा शिक्षा-केन्द्र स्थापित कर दिए हैं। आल इंडिया दयानन्द साल्वेशन मिशन होश्यार पुर ने भी निर्धन तथा भूखे आदिवासियो के बच्चो को ईसाईयो की चंगुल से बचाने के लिए पानपोस, ज़िला सुन्दरगढ मे एक अनाथालय खोल दिया है जिसकी देख-भाल मिशन के एक अवैतनिक, लगनशील तथा अनथक कार्यकर्ता, स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती कर रहे हैं। —राम दास

पंजाब प्रांतीय आर्य वीरदल की आवश्यक बैठक

१४-८-६६ को आर्य समाज गोविंदगढ जालन्धर में सम्पन्न हो रही है।

सब सज्जन ठीक समय पर पधार कर सहयोग दें।

कार्यक्रम— प्रथम बैठक—९ से ११ तक दूसरी बैठक—२ से ५ तक। रात्रि ८॥ से ११ बजे तक सार्वजनिक सभा होगी।

—उत्तमचन्द 'शरर' संचालक

राखी का महत्व

देश जाति राष्ट्र मर्यादा की पुकार पर जिन सुभटों की वीर भावना सुना राखी है।

पीड़ित जनों के दुःख दर्दभरे आंसुओं को पीने चले बन के अगस्त जग साक्षी है।

सतियो के लुटते सतीत्व, रक्षा के हितार्थ प्राणो को चढा दी बली जला जैसे पाखा है।

उन्हीं वीर आर्य पुरुषों के हाथ, रामसिंह, रक्षा हित आर्य ललनाओं की ये राखी है।

मक्खन लाल वरनवाल मुलतानपुर

आर्य समाज विक्रमपुरा जालंधर का साप्ताहिक सत्संग

रविवार १४-८-६६ को प्रातः आठ बजे होगा। दैनिक कार्य विधि के बाद श्री ओमप्रकाश जी नारंग का मनोहर व्याख्यान होवेगा। सभी सज्जन समय पर पधार कर अनुगृहीत करें।

नोट दैनिक सत्संग प्रातः छः से सात बजे तक होता है। संध्या—हवन के पश्चात श्री पुरोहित जी एक वेद मन्त्र की व्याख्या करते है सभी सज्जनो से प्रार्थना है कि इस पुण्य कार्य मे पधार कर लाभ उठाए।

—मन्त्री आर्य समाज

आर्यसमाज कालीकट (आ. प्र.) के समाचार

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालंधर से नियुक्त बुधसिंह भी प्रचारक सभा ने पिछले तीन मास में २ मुसलमान और ५ ईसाइयों को शुद्ध करके हिन्दू धर्म में प्रविष्ट किया। २७ घरो में पारिवारिक यज्ञ कराए। एप्रैल में २३ घरो, मई में ७ घरो, जून में ७ घरों मे शुद्धि हवन कराए। ऐसा करने से श्राद्ध का प्रचार बहुत कम हो गया है। हिन्दी विद्यालय सुचारु रूप से कार्य कर रहा है। इस विद्यालय में प्राथमिक, मध्यमा राष्ट्र भाषा, प्रवेशिका आदि श्रेणियां ठीक चल रहीं हैं इनकी परीक्षा अगस्त की २०, २१ तारीख को आरम्भ हो रही है। साप्ताहिक सत्संग नियमानुसार चल रहे हैं।

बुधसिंह प्रचारक सभा

सम्पादकीय—

आर्यजगत

वर्ष २९। रविवार ०२३, १४ अगस्त १९६६ [अंक ३३

वेद की तीन देवियां

वेद में इडा, सरस्वती, मही नाम से तीन देवियों का सम्मान करने का सन्देश मिलता है। इन मे एक देवी मही है। इसे मातृभूमि का नाम भी दिया गया है। मातृभूमि की पदवी स्वर्ग से भी ऊची है। इस से बढ़ कर जन जीवन के लिए दूसरा कोई उत्तम स्थान नही है। हमारे पुरातन इतिहास में इसी कारण अन्य देवों के सम्मान के साथ २ वन्दे मातरम् का पवित्र जयघोष भी लगाने की बात कही है। मानव प्यारी से प्यारी वस्तु भी मातृभूमि की वेदी पर अर्पित कर देता है। स्वाधीनता सब से कीमती प्रसाद है। इसे प्राप्त करने मे हमारे राष्ट्र का अपना ही दिव्य बलिदानो भरा इतिहास है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने राज्य को दूसरो के राज्य की अपेक्षा बहुत ऊचा स्थान दिया है। वेद मे स्वराज्य व स्वतन्त्रता के विषय मे सुन्दर शब्दों मे कहा है—अर्चन्ननु स्वराज्यम्— अर्थात् स्वराज्य की प्रतिष्ठा करो। आर्य सभ्यता में अदीनाः स्याम हम स्वतन्त्र तथा अदीन होकर जीवन बितायें इस बात की प्रार्थना की है। स्वराज्य परमसुख एवं पर-राज्य परम दुःख माना है। भारत ने बड़ा भारी बलिदान देकर मातृभूमि की स्वाधीनता ली है। यद्यपि विशाल राष्ट्र ने अपनी गलत नीति से टुकडे-टुकडे करा लिए हैं। प्रतिवर्ष अगस्त की १५ ता० को सारा राष्ट्र अपनी आजादी का यह पर्व-सा मनाता चला आता है। इस बार के इस स्वराज्य दिवस की भी सब को बधाई हो। किन्तु इतने वर्षो के बाद आज हमें गम्भीर विचार करने की आवश्यकता है, कि स्वाधीनता के बाद हमें हो क्या गया है? हमारी भावनाओं का इतना घिनावना पतन किस लिए होता जा रहा है। बीस वर्ष होने आये इस समय इस बात की तो प्रसन्नता है कि भारत में निर्माण का कार्य बड़ी सुन्दरता से हो रहा है। जहां सुई तक नही बनने दी जाती थी, वहा शत्रु का मुख मोडने के लिए टैंक, विमान तथा अन्य शस्त्र बनने लगे हैं। कला-कौशल में वृद्धि होती जा रही है। भौतिकता में राष्ट्र आगे बढ रहा है—किन्तु खेद यह है कि जीवन के स्तर में, भारतीय नैतिकता में राष्ट्रीय जीवन का बेडा-गर्क होता जा रहा है। भारतीय आदर्श नैतिकता का है, जब यह न रहा तो आत्मा के बिना कोरा सुन्दर शरीर किस काम का है? इतने वर्षो के स्वराज्य के बाद आज जन-जीवन मे वह उल्लास व उत्साह क्यो नही? १५ अगस्त का दिवस आता है। सरकारी रूप से चाहे दिवस-समारोह मनाया जाता है—पर जनता का उत्साह दिखाई कम देता है। स्वराज्य के सुनहले स्वप्न कहा चले गये। क्या वीर बलिदानियों ने अपना जीवन इसी लिए भेंट किया था कि उन को पूरी तरह खाने-पीने को भी न मिले। टैक्सो के भार के नीचे दबा दिया जाये। शिक्षा इतनी महगी हो जाये। जीवन यात्रा कठिन हो जाये। वस्तुओ की महगाई आकाश को छूने लगे। दूध घी स्वप्न हो जाये। भोगवाद का वातावरण पाव पसारता जाये। मांस शराब का प्रवाह बहता रहे। गोवश समाप्त होता जाये। गो-रक्षा की बात कहने वाली जनता और साधु महात्माओ को जेल मे बन्द कर दिया जाये। गोरक्षा पर प्रश्न पूछने वालो को लोकसभा से निकाल दिया जाये। लिप्सा और सत्ता का नशा इतना बढ जाये कि एक बार विधान सभा और लोक सभा का सदस्य बनने पर जीवन पर्यन्त उस का पट्टा लिखा लिया जाये। भोगवाद को प्रोत्साहन देने के लिए लूटवाद का बोलबाला किया जाये। भारत को सत्तर अरब के कर्जों के बोझ तले दबा दिया जाये। बात - बात में लाठी — गोली का सहारा लिया जाये। बीस वर्षों के बाद भी विधान सम्मत राष्ट्रभाषा हिन्दी के लिए उचित स्थान न बना कर विदेशी तथा केवल दो प्रतिशत की भाषा अग्रेजी को ऊचे आसन पर प्रतिष्ठित रखा जाए। खाने पीने के पदार्थों मे घोडे गधे की लीद पीस कर, पक्षियो की बीठें, ईंटे पीस कर खिलाए जाये। दवाईयो मे मिलावट घी मे चर्बी मिला कर जन-जीवन के स्वास्थ्य से खिलवाड किया जाए। स्वराज्य मे यह हो क्या रहा है? यदि कोई इतिहास का ऐसा लेखक इस को लिखने बैठे तो कांग्रेस राज्य के बीस वर्ष पर पता नही क्या-क्या लिखेगा? चारो ओर से सारा देश ही नाचने वाला, झगडो का प्रेमी, शराब जाम का मस्ताना, भोगवाद का दीवाना बनता जा रहा है। हर स्थान हर बात और हर वस्तु मे पतन ने डेरा डाला हुआ है। बधाई है नये राज्यपाल श्री धर्मवीर जी को, जिन्होंने प्रान्त मे थोडा धर्मचक्र चलाना प्रारम्भ किया है।

यह है चित्र स्वराज्य का। फिर भी जनता को निराश नही होना। मिल कर इन बातो के निराकरण का प्रयत्न करना है। स्वराज्य-स्वराज्य ही। इस से बढ कर कोई वरदान नहीं। आओ इस दिवस निर्माण का संकल्प ले। —त्रिलोक चन्द्र

इस आनन्द मार्ग की
गतिविधि तीव्रता में

आर्य जगत् के गत एक अंक मे हम ने आर्य प्रतिनिधि सभा पटना बिहार राज्य के माननीय विद्वान उपप्रधान श्री पं० रामानन्द जी शास्त्री का एक आवश्यक लेख आनन्द मार्ग के शीर्षक से प्रकाशित किया। वह लेख सब की आंखें खोलने वाला है। इस प्रकाश के युग मे भी ऐसी बाते जनता मे प्रचारित की जाती है, इस का हमें तो बड़ा अचम्भा है। जमालपुर (मुघेर) मे रेलवे विभाग में काम करने वाले श्री प्रभातरञ्जन सरकार जो अपना नाम आनन्दमूर्ति रख कर जनता मे अपने चेलो आचार्यो के साथ जाते हैं—अपने मत का नाम भी आनन्द मार्ग रखा है। इधर सभा के प्रचार कार्य के नाते जम्मू प्रात मे कठूआ जिला मे जब मुझे सभा के भजनोपदेशक प० ज्ञान चन्द जी के साथ जाने का अवसर मिला तो वहा जनता मे अभी ताजा-ताजा ही श्री प्रभातरजन ही अपनी चेला मण्डली समेत जाकर अपनी दीक्षा कईयो को दे गये थे। जनता मे बड़ा कौतूहल था। आर्य समाजी मौन कैसे रहे। वहां समाज मे पूरा एक सप्ताह रह कर इस नये मत आनन्द मार्ग पर विशेष भाषण देने पड़े। जो भी श्री सरकार के पास दीक्षा लेने जाता है—उसे सब से पहले यह कहा जाता है कि अपना यज्ञोपवीत उतार कर तथा चोटी उतार कर आओ। ये दोनो विषमता फैलाती है। कठूआ मे तो एक आर्य पुरुष श्री अमरनाथ जी का चोटी जनेऊ उतारने के बारे मे झगडा व विवाद भी हो गया। **युवक हो या युवती—उनको कहा जाता है कि तुम्हारा यह सारा शरीर एवं इस का एक २ अंग अब तुम्हारा नहीं वरन् गुरु का है। इस पर अब गुरु जी का अधिकार हो गया है। तुम अपना सर्वस्व गुरु को समर्पित कर दो। दीक्षा गुप्त देते हैं।** कहा जाता है कि यदि तुमने इसे प्रकट किया तो तुम पागल हो जाओगे। मन पर एक भय आतक का प्रभाव बिठा दिया जाता है। बगाली होने के नाते श्री सरकार अंगरेजी पढे लिखे तो है ही—जनता मे **Progressive Fedration of India** भारत का प्रगतिशील नामक सस्था की स्थापना करते है। हम आर्यसमाज से जोरदार शब्दो मे कहना चाहते है कि इस नये भोगवादी मार्ग को अभी से रोकने के लिए जोरदार आन्दोलन करे। ट्रैक्ट छाप कर जनता मे बाटें।

ताशकन्द का प्रचारक

एक अच्छे भले व्यक्ति डा० ओम प्रकाश दुबे नाम के कई स्थानो पर भ्रमण कर रहे हैं। वह अपने आपको कहते हैं कि मैं भारत के स्वर्गीय प्रधान श्री लाल बहादुर जी शास्त्री के ताशकन्द जाने के समय उनके शिष्ट-मंडल मे गया था। अपने को कई

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्यसमाज और विश्व में वेद प्रचार

वेद पथिक पं० धर्मवीर जी आर्य, झंडाधारी व्याख्यान भूषण

सराय रुहेला देहली—५

आज विश्व का मानव समाज अबाध गति से प्रति क्षण वेद विद्या के ज्ञान प्रकाश को भूल कर विनाश की ओर द्रुत गति से आगे बढ़ रहा है।

आज का जगत जजाल मे फंसा हुआ है। आज का मानव ईश्वर और धर्म को भूल कर, सदाचार व आत्म-बल, वैदिक कर्म कान्डो की अलौकिक धरोहर को भूल कर भारतीय वैदिक सभ्यता के रत्न कोष को तिलांजलि देकर मानव अपने स्वरूप को भूलकर माया की मदिरा का पान कर सुख शान्ति और आनन्द की तलाश में सदियो से व्यथित अवस्था में भटक रहा है। वेद पथ को मानव भूल कर वैदिक विज्ञान के तत्व को त्याग कर ईश्वर की आज्ञाओ की तनिक भी परवाह न कर आज का मानव इन्द्रियो के भोगो मे फसा हुआ है। आज विश्व के मानस भवन मे वैदिक विकारो की क्रान्ति मचाने का बीड़ा आर्य समाज ससार का उपकार करना अपना परम लक्ष्य समझता है। आर्य समाज रूपी माता की गोद मे आकर ससार मानवता की रक्षा की भव्य भावनाओ से चमक जाता है।

ऐ विश्व के नर-नारियां यदि अपना कल्याण चाहते हो तो वेदो का तथा ईश्वर की आज्ञाओ का पालन करो। पुन: मानव जीवन का मिलना महा कठिन होगा।

विश्व के समस्त वेद भक्तो के सामने आवश्यक सुझाव :—

वेदो का अनुवाद और प्रकाश का कार्य विश्व की समस्त प्रमुख राष्ट्र भाषाओ मे किया जाना नितान्त आवश्यक है।

आर्यसमाज की जन्म शताब्दी के दिन निकट आ रहे है। इस अवसर पर कम से कम एक करोड सत्यार्थ प्रकाश विश्व की अनेको भाषाओ में प्रकाशित कराकर जनता मे महर्षि दयानन्द की विचार धारा का उपहार दिया जाये।

वैदिक राज्य विधान के बिना विश्व की मानवता की रक्षा नही होगी अत: राजनीति में आकर वैदिक साम्राज्य की स्थापना आर्य समाज को करनी होगी।

भारत से गौ बध जैसे महा कलंक को मिटाने के लिए आर्य समाज के मैदान में कूदकर हैदराबाद जैसे सत्याग्रह के आदोलन का सचालन करना चाहिए और भारत सरकार के सभी जेलो को सत्याग्रह से भर देना चाहिए।

भारत की राजधानी दिल्ली नगर में जहां १५० आर्य समाज हैं यहां सार्वदेशिक आर्य उपदेशक महा विद्यालय का निमाण और संचालन शीघ्र होना चाहिए यह उपदेशक महा विद्यालय नालन्दा विश्व विद्यालय के समान बनना चाहिए जहां हजारों आर्य उपदेशक और उपदेशिकायें अपना जीवन दान देने वाले प्रकान्ड महा विद्वान तैयार किये जायें।

अश्लील फिल्मों पर प्रतिबन्ध लगाने के लिये प्रबल आंदोलन किया जाये। अश्लील पोस्टरो में आग लगाई जाये तार कोल फेरे जायें। अपने बालको और बालिकाओ के चरित्र निर्माण के लिये अश्लील फिल्मो पर प्रबल प्रतिबन्ध लगाया जाये इसके लिये घोर तप और बलिदान चढाने की आज आवश्यकता है।

धर्म शिक्षा :—धर्म शिक्षा के बिना विश्व की मानवता देश की स्वतन्त्रता और धर्म खतरे मे हैं। अत: प्रत्येक स्कूलो और कालिजो के विद्यार्थियो के चरित्र निर्माण के लिए धर्म शिक्षा अनिवार्य रूप से लागू करने के लिए भारत सरकार को बाध्य किया जाये। इसके लिये विश्व व्यापी क्रान्ति मचाई जाये

सह: शिक्षा पर प्रतिबन्ध लगाओ सह शिक्षा के कारण आज चरित्र का पतन वे रोक-टोक हो रहा है। आज देश में नित्य हजारों की संख्या में गर्भ हत्याए हो रही हैं। सदाचार संयम का दिवाला निकाल रहा है। व्यभिचार दिन दूना बढ रहा है।

ऐसी अवस्था में सर्व प्रथम [illegible] समाज की शिक्षण [illegible] शिक्षा तुरन्त बन्द की जानी चाहिए। पुन: देश-भर मे सह-शिक्षा बन्द करने का आदोलन चलना चाहिए।

देश विदेशो की समस्त आर्यसमाजों मे आर्य वीर दल के शिविर चलाये जायें। नौजवानों को आर्यसमाज में लाया जाये।

परितोषिक

निर्धन होनहार लेखकों, साहित्यकारों, धर्म प्रचारकों उपदेशकों को उनके प्रोत्साहन के लिये गृहस्थ की समस्याओं से दूर रह कर वैदिक मिशन के प्रचार के लिए उन्हें परितोषिक भेंट किये जायें। उनके बालकों का शिक्षा दीक्षा का पूरा प्रबन्ध किया जाये।

विश्व को समस्त धर्म समाजों में वैदिक दैनिक सत्संग की पवित्र परिपाटी का प्रचलन किया जाये। आर्य समाजों के सभी सदस्य सपरिवार नित्य एक घण्टा का समय निकाल कर सन्ध्या हवन उपदेश के श्रवण मनन ईश्वर उपासना के लिये आर्यसमाज के सत्संगों में जाने का व्रत धारण करें। परिवारिक सत्संग चलाते जाए। वैदिक कर्मकाण्ड का विश्व व्यापी प्रचार किया जाये।

विश्व की समस्त आर्य समाजें आर्य समाज की जन्म शताब्दी के उपलक्ष में कम से कम एक आर्यसमाज नई स्थापित करने का सकल्प करे। आज देश के प्रत्येक नगरो और ग्रामो में आर्यसमाज की आवश्यता हैं।

स्वाध्याय यज्ञ

महर्षियो के ऋण से उऋण होने के लिये प्रत्येक आर्य नर नारी को प्रति दिन कुछ समय निकाल कर स्वाध्याय करने का वेदों के पठन पाठन का महाव्रत धारण करना चाहिए।

महर्षि दयानन्द द्वारा गुरुकुल शिक्षा परिपाटि को चलाने से ही मानव मानव बन सकेगा अन्यथा मानव दानव बनता जा रहा है। अत: अपना और विश्व का कल्याण यदि चाहते हैं तो गुरुकुलों में अपने बालकों और बालिकाओ को अवश्य भेजे।

वैदिक युग का निर्माण

आर्यसमाज की स्थापना विश्व वंदनीय महर्षि दयानन्द जी ने की थी वैदिक युग के निर्माण की भव्य भावना [illegible] वैदिक युग के निर्माण के लिये विश्व में राम राज्य स्थापित करना होगा।

वैदिक संस्कृति की धरोहर की रक्षा आर्यसमाज ही कर सकेगा। मुझे पूर्ण आशा और विश्वास है कि विश्व के समस्त महर्षि दयानन्द के अनुचर मेरे सुझावों पर ध्यानपूर्वक विचार करके वेद प्रचार की काया पलट में सफली भूत होंगे।

आज वेद के पावन संदेश की हमें विश्व के घर-घर में पहुचाने का महा व्रत धारण करना है।

आओ आज हम गली-गली और घर-घर में शास्त्रों की धूम मचावें। ईसाई मत और इस्लाम के जाल से विश्व के मानव समाज को बचाने के लिये शुद्धि की बूटी पिलायें जन-जन को। आज शुद्धि का काम वेग से चलाने के लिये हमें अपने प्राणों की ममता का त्याग करना होगा। आज विश्व के समस्त राष्ट्रों में वेद-प्रचार के केन्द्र स्थापित करने हैं। वेद विश्वविद्यालय का निर्माण यज्ञ शालाओं का निर्माण आर्यसमाज को करना है। इन कार्यों के लिये आज करोड़ों और अरबों रुपयों की हमें आवश्यकता है। आर्यसमाज रजिस्टर्ड सदस्यों की संख्या आज करोड़ से ऊपर है। यदि सभी आर्य वृन्द संगठित होकर सब भेद-भाव को भूल कर वेद प्रचार की दिव्य दिशा के पथ-प्रदर्शन में जुट जायें तो संसार में वेद प्रचार की महा क्रान्ति मचा सकते हैं।

आओ आज समय की पुकार है कि हम बुद्ध और अशोक के अनुचरों की भांति अपना सर्वस्व निछावर करके विश्व को मानवता की रक्षा मे वेद प्रचार में विश्व सेवा में अपना जीवन समर्पित कर दें। यह याद रहे कि मनुष्य के लिए इस ससार मे कोई कार्य नही है। मनुष्य शक्तियों का पुंज है। प्रबल प्रकाशार्थ से मनुष्य इसी जीवन में धर्म अर्थ काम तथा मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। परमात्मा की कृपा का पात्र हम को और वेद प्रचार की दिव्य व्यापी प्रचार के लिये अपना तन-मन-धन, सर्वस्व निछावर करने वाले देश भक्त कर्मवीर और धर्म वीर बने।

इस सम्बन्ध में पाठक वृन्द अपना अमूल्य सुझाव श्रम सम्पत्ति तथा पवित्र आशीर्वाद सन्देश ऊपर के पते पर प्रदान कर के कृतार्थ करें।

गुरुकुल वैदिक आश्रम वेद व्यास राउर केला

आर्य प्रादेशिक सभा की ओर से श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने उड़ीसा प्रांत के राऊर केला में प्रचार कार्य करते हुए २२ अनाथ बच्चों को ईसाई होने से बचा कर अपने आश्रम में निवास दिया। ५ हिन्दू देवियों को मुसलमानों से छुड़ा कर हिन्दू धर्म की शरण में लाया गया। २ ईसाई महिलाओं को शुद्ध करके हिन्दू युवकों के साथ विवाह कर दिया।

कलाहाण्डी में अनाथ आश्रम खोल कर उस में अनाथ बच्चों की पालना की जा रही है। खरिआर में नवीन आर्यसमाज कायम की गई है। शिक्षा-वृत्ति द्वारा अनाथ आश्रम चलाया जा रहा है। स्वामी ब्रह्मानन्द



टैलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक ३६) २० भाद्रपद २०२३ रविवार—दयानन्दाब्द १४१— ४ सितम्बर १९६६ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

त्वमेतदधारय:

प्रभो ! आपने ही एतत् - यह सारा चराचर जगत धारण किया हुआ है। आप के ही नियत नियमो मे हर एक पदार्थ अपने-अपने काम मे लगा हुआ है। आप ही इस सारे विश्व के धारक हो। नियामक हो।

इन्द्रो वज्री हिरण्यय:

लोगो ! वह इन्द्र भगवान वज्री-वज्र वाला, बडी भारी शक्ति वाला है और वह तेजस्वी है। उस की शक्ति से वज्रदण्ड से कोई भी तो बच कर जा नही सकता। उसकी निरन्तर चलने वाली चक्की सबको पीसती है।

इन्द्र बाजेषु नोऽव

हे परमेश्वर ! आप बाजेषु-ज्ञान के तथा बल के कामो मे हमारी रक्षा करे। हम ज्ञान मे किसी से कम न हो या कोई हमे दबा न सके पराजित न कर सके। ज्ञान मे बढते जावे।

मित्रं वयं हवामहे

हम उस भगवान को बुलाते है, जो हमारा मित्र है। इस ससार के मित्र, साथी तो कष्ट आ पडने पर साथ छोड जाते है। पर प्रभु ऐसा परम मित्र है जो सदा हमारे अंग-संग रहकर सुखी करता है।

सा म वे द से

वे दा मृ त

शत्रु को जीवित मत छोड़ो

अतिधावताऽतिसरा इन्द्रस्य वचसाहत। अविं वृक एव मथ्नीत स वो जीवन्मा मोचि प्राणमस्यापि नह्यत॥

अर्थ —हे राष्ट्र के वीरो ! (अतिधावत) खूब दौडो (अतिसरा) तुम सदा आगे बढने वाले हो (इन्द्रस्य) अपने नेता के (वचसा) वचन से सारे शत्रुओ को (हत) मार दो उन पर एकदम टूट पडो। (अविम्) जैसे भेड को (वृक.) भेडिया (मथ्नीत) मथ डालो (सव) वह तुम्हारा शत्रु (जीवन्) जीवित, जिन्दा (मा) मत (मोचि) जाने पाए (प्राणम् अस्य) इसके प्राणो को (नह्यत) बाध दो। उसे कसकर वश मे कर लो। राक्षस व शत्रु तुम से अब बचकर जाने न पाये।

इसका भाव यह है

हे वीरो ! सदा आगे ही आगे बढते जाओ। आपका नाम ही अतिसर है सदा आगे बढने वाला। अतिसर बनकर प्रतिसर बनने का विचार तो स्वप्न मे भी पैदा न होने पाए। सेना का राष्ट्र का जो नायक नेता आपको आदेश देता है--शत्रु दलन की आज्ञा देता है – उसके अनुसार शत्रुओ के, राक्षसो, लुटेरो चोरो के पीछे भागो। उनको मथ डालो, कुचल मसल कर रख दो। उन मे से कोई भी तुम्हारे हाथो मे, पजो तथा सामने से एक भी बच कर न जाने पाये। जिन्दा कोई भी लौट कर जा न सके। आप की वीरता शक्ति की आग उनको सूखे घास के समान जला डाले।

अथर्ववेद ५-८-८

वेद के आदि और अंत में ओम्

महामुनि पाणिनि के मत मे प्रणवष्टे: ८-२-८९ यज्ञ कर्मणी टेगे मित्यादेश स्यात्। अया रेतासि जिन्वतोम् यज्ञ मे वेद मन्त्रो के अत की 'टि' स्वर को ओम् आदेश हो जाए कहा है. यथा जिन्वति के इकार को ओम् बनाकर 'जिन्वतोम' किया गया है इस से यह सिद्ध हुआ कि वेद के जितने मत्र है उतनी संख्या मे ही उन मे ओम् है। ओम् अभ्यादाने ८-२-८७ इस सूत्र से पाणिनि मत्र के आदि मे लुप्त ओम् बताता है इस प्रकार वेद मत्रा की सख्या से ओम् सख्या दुगनी हो जाती है। 'ब्रह्मण प्रणव कुर्यादादावन्ते च सर्वदा मनु २-७४ वेद मन्त्र के आदि अत पाठ मे ओम् का उच्चारण करे।

ऋषि दर्शन

विद्यादि श्रेष्ठधनम्

हे पित. ! हम आपके पुत्र याचना करते है कि हमे आप विद्या आदि का उत्तम धन प्रदान करे। केवल विद्वान न बने वरन यह विद्या हमे अच्छे पथ पर ले चले। धन भी उत्तम कर्मो लगने वाला हो, श्रेष्ट हो।

ब्रह्मनिष्ठात्वम्

हमे ब्रह्म मे निष्ठा हो, श्रद्धा हो विश्वास हो, हम वेद के भी परम भक्त बने तथा ज्ञान के अर्जन करने वाले हो। ज्ञानी बन कर अज्ञान के अन्धकार को दूर करने वाले हो। ईश्वर विश्वासी वेदप्रेमी तथा ज्ञान-श्रद्धालु बने।

सोत्तमशरीरेन्द्रिया:

हमारा शरीर उत्तम हो तथा सारी इन्द्रिया अपने २ काम को करने वाली हो शरीर रोग का घर न हो एवम् इस के किसी अग मे भी विकार न होवे। स्वस्थ और प्रसन्नता से जीवन भरा हो।

सदा सुखदा: सौम्या:

राज्य सभा मे जो लोग आये वे सदा दूसरो को सारी प्रजा को सुख देने वाले होवे। गम्भीर तथा नम्रस्वभाव वाले शान्त प्रकृति के होने चाहिए। उद्दण्ड अभिमानी स्वभाव के न होवे।

भा ष्य भू मि का से

परम देव परमात्मा का तेज पृथ्वी के कण-कण मे जन मन मानस भवन की गहन गुफाओ मे चमक रहा है। सूर्य की किरणों में, उषा काल की लाली मे, चन्द्र चांदनी में, नक्षत्रों मे, हवा मे, पानी में, बिजली में, निर्जन वनों में, आशा के प्रकाश पुञ्ज मे, जीवन के उत्थान मे, जीवन और मृत्यु में, यत्र, तत्र, सर्वत्र उस परमब्रह्म परमात्मा की लीलाओ का अवलोकन करने पर दुःख और शोक मे मुक्त हो कर मनुष्य परमानन्द में विचरण करने लग जाता है।

विचार धन

विमल विचारो के रत्न कोष को प्राप्त कर जो आनन्द की अनुपम अनुभूति एक महात्मा को महर्षिगण को होती है उस आनन्द कण को चक्रवर्ती सम्राट भी तरसते रहते है। सृष्टि की आदि काल से अब तक का इतिहास पढने मे यह ज्ञात है कि परमात्मा की सत्ता की महत्ता मे विचरण करने से विचारो की अनमोल मोतियो की असख्य जाज्वल्य मान ज्योतियो को प्राप्त कर लेने से परम शांति और आनन्द को प्राप्त कर के अमर पद को प्राप्त करने वाले महर्षिगण हुए है।

परमात्मा का साक्षात्कार

परमात्मा का साक्षात्कार कर लेने पर मनुष्य इसी जीवन मे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का अधिकारी बन जाता है। परमात्मा का दिव्य दर्शन इन चर्म चक्षुओं से नही किया जाता। अपितु आत्म ज्ञान के प्रकाश मे निष्काम कर्मों के करने मे पराई आग मे कूदने से परमात्मा के विराट रूप का दिव्य दर्शन कर लेने पर मनुष्य कृत कृत्य हो जाता है।

कर्म गति

इस ससार मे कर्मों की गति विचित्र, चित्र-चित्रित चित्रकार के समान है। सुकर्म कमाने से मेधा शक्ति का विचित्र आकल्पनीय विकास होता है। कर्म विज्ञान कर्म, फिलास्फी कर्म रहस्य, कर्म गति, कर्मरेखा, कर्म दर्शन कर्म विवेक के रहस्य के मर्म का ज्ञान होने पर मनुष्य देव बन जाता है।

शुभ कर्मों के करने पर मनुष्य को परम पुण्य का फल मिलता है और इतना परम सतोष प्राप्त होता है कि जन्म मरण के बन्धनो के भयकर भय मे मनुष्य मुक्त हो जाता है।

कर्म काण्ड

वेद विमुख अल्पज्ञ जनों को

धार्मिक चर्चा :—

चतुर्दिक तेरा तेज छाया हुआ है

श्री वेद पथिक धर्मवीर जी आर्य, झंडाधारी व्याख्यान भूषण, सराय रुहेला नई दिल्ली—५

वैदिक कर्म काडों की दिव्य अनुपम अलौकिक, शक्तियों के रत्न कोष का लेश मात्र भी अंश नहीं है। वैदिक कर्म कांडों की पवित्र परिपाटी को त्याग कर आज मानव दानव बन चुका है। आज संयम, सदाचार, आचार विचार व्यवहार का ज्ञान हमारे जीवन से कोसों दूर हो गया है। वैदिक कर्म काडो के करने से ही वैदिक जीवन का निर्माण होता है।

हे विश्व के नर नारियो यदि अपना कल्याण चाहते हो और अकाल मृत्यु के भय से बचना चाहते हो तो अपना जीवन वेदोक्त बनाने के लिए वेद पथ के पथिक बनो। एक ईश्वर की उपासना करो। सन्ध्या, उपासना, प्रार्थना, यज्ञ मे अपने जीवन को लगाकर परमानन्द को प्राप्त करो।

वीर भोग्यावसुन्धरा

इस पृथ्वी का सम्पूर्ण भोग वीरो के लिये ही है। आलसी, कायर, कपूत, निरुद्यमी, साहसहीन, पुरुषार्थ रहित मनुष्यो के लिए तो यह जीवन भार स्वरूप है। अतः आज स्वतन्त्र भारत के स्वर्ण प्रभात मे स्वतन्त्रता दिवस के पावन पर्व पर विश्व विजय के पथ पर प्रति क्षण आगे बढ़ने की प्रबल प्रतिज्ञा करो। वीरो के लिए पुरुषार्थियो के लिए परम तपस्वियो के लिए इस ससार मे कोई कार्य असभव नहीं है।

हम भारत वसुन्धरा की सन्ताने विश्व विजयी पिताओ के पुत्र और पुत्रिया है। आज हम यज्ञ वेदी पर चक्रवर्ती वैदिक साम्राज्य स्थापित करने की प्रबल प्रतिज्ञा करे। निराशा, भिरुता, कायरता को भगाएं।

विश्व की राष्ट्र भाषा सस्कृत वेद वाणी बने इसके लिए क्रान्ति मचाओ। विश्व के मानव समाज का जीवन पावन-पवित्र अति उज्ज्वल बन इस बात का सतत साधना मे हम सभी साधक और साधिकाए आराधक बनकर लगे। ज्ञान गगा की विमल शान्ति सुधा सार की अमृत धारा बहाने मे लगो।

विश्व के इतिहास मे नया मोड, नया जीवन, नया अरमान, नई रवानी, नई जिन्दगानी को जन्म दो।

वीर व्रती वीर रत्न देश भक्त भारत माता की आशाओं को पूर्ण करने का महाव्रत धारण करो।

तुम सूर्य और चन्द्र समान चमको। जीवन की उषाकाल मे तुम विश्व चमन के अनुपम सुमन बनो। जीवन संग्राम में प्रतिक्षण, प्रति पल अविराम आगे बढो। विश्व विजय कर भारत माता का गौरव सूर्य आशा किरण का प्रकाश पुंज बनो। पुनः महर्षियो के आश्रमो का निर्माण करो। विचारो को विमल बनाकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष फलो को प्राप्त कर जीवन सफल बना लो।

नारी जाति और नवयुग का निर्माण

आज यदि हमारे देश की नारिया महारानी सीता, मदालसा, पद्मनी, दुर्गा बाई, जीजा बाई के समान बने तो देश मे नवयुग का निर्माण हो सकता है। विश्व के नील गगन मे वैदिक रवि का उदय हो सकता है। सादगी और सयम के आचार, विचार व्यवहार दिव्य दृष्टि बने, पवित्र देश के सभी बहिने देश के शत्रुओ का मान मर्दन सुगमता से कर सकती है।

चंडीगढ़ में वेद सप्ताह

आर्यसमाज सैक्टर ८ चण्डीगढ़ की ओर से वेद सप्ताह का आयोजन डी. ए. वी स्कूल मे निम्न प्रकार मे किया गया है। प्रातः प्रतिदिन ६॥ से ८ बजे तक परिवारों मे वेद यज्ञ और सत्सग होते रहेगे।

सायं ७ से ८ तक आर्यसमाज सत्संग हाल मे प० ऋषिराम जी बी. ए. वैदिक मिशनरी वेद कथा किया करेंगे। ३०-८-६६ को मगलवार प्रातः श्रावणी उपाकर्म (रक्षा बन्धन) हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान स्मारक दिवस मनाया जायेगा।

७-९-६६ बुधवार को प्रातः ८ से १०॥ बजे तक श्री कृष्ण जन्मोत्सव आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की अध्यक्षता मे मनाया जाएगा।

आर्य समाज, नारनौल

१९-८-३६ में वेद सप्ताह मनाया गया। जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा जालन्धर के महोपदेशक प० समरसिंह जी वेदालंकार—तथा श्री चन्द्र भानु जी की भजन मण्डली के प्रवचन तथा भजन हुए। —हरिश्चन्द्र आर्य मन्त्री समाज

आर्य प्रादेशिक उपसभा देहली

मंगलवार २-८—६६ को देहली के प्रमुख आर्यों ने गोवध निरोध के निमित्त संसद के बाहर ८ घटे तक धरना दिया। प्रादेशिक उपसभा के प्रधान डा० किशन चन्द्र रल्हन ने श्री लाला रामगोपाल जी शाल वाले के साथ इस कार्यक्रम को पूर्ण सफल बनाने मे पूर्ण सहयोग दिया। उपसभा के जन सम्पर्क का कार्यक्रम भी प्रभावशाली रहा। —शिवराज सिंह अस्थायी प्रधान

आर्य समाज नया बाजार भिवानी चुनाव

प्रधान—श्री शिवकरणदास जी, उप-प्रधान—श्री महेश्वर लाल जी, मन्त्री—श्री सुग्रीवसिंह, उप-मन्त्री—श्री अमरनाथ जी, कोषाध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश जी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री विद्याव्रत जी शास्त्री पुरोहित।

उत्सव

२८-२९-३० अक्तूबर १९६६ को उत्सव होना निश्चित हुआ, जिसमें उच्चकोटि के सन्यासियों, विद्वानों तथा भजनोपदेशकों को आमन्त्रित किया है।

पुरोहित जी की नियुक्ति

आर्यसमाज नया बाजार भिवानी में पण्डित विद्याव्रत जी शास्त्री, की नियुक्ति पुरोहित रूप से हो गई है, आर्य जनता से प्रार्थना है कि—माननीय पण्डित जी से, यज्ञो, सस्कारो, कथा तथा उपदेशो द्वारा लाभ उठावें। —सुग्रीवसिंह मन्त्री समाज

★ अक्षरो के उच्चारण की विधि तथा उनके बोलने का स्थान और प्रयत्न आदि जानना 'शिक्षा' है। इसमें पाणिनि मुनि की बनाई 'वर्णोच्चारण शिक्षा' पुस्तक मुख्य है।

सृष्ट्युत्पत्ति, प्रलय-काल तथा जगत् का उपादान करण प्रकृति है

इस पर भागवत् पुराण की स्पष्टोक्ति

(ले० श्री देवप्रकाश जी आचार्य आर्यसमाज रतलाम)

महर्षि स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के आठवें समुल्लास तथा ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में जगत् की उत्पत्ति तथा प्रलय और उसके काल के सम्बन्ध में वेदादि सत्शास्त्रों से जो सिद्धान्त उपस्थित किये है ठीक भागवत्कार की भी वही धारणा है—इसके अतिरिक्त आचार्य शकर ब्रह्म को ही जगत् का उपादान कारण भी मानता है—परन्तु भागवत मे बड़े अकाट्य प्रमाणो से प्रकृति को ही जगत् का उपादान कारण माना गया है, जिसे सक्षेप से हम नीचे लिखते हैं, मैत्रेय जी विदुर जी को कहते है—

चरम: सद्विशेषाणामनेको

असंयुत: सदा।

परमाणु: स विज्ञेयो

नृणामैक्यभ्रमो यत:। (१)

भागवत-तीसरास्कन्ध अ.११

विदुर जी! पृथ्वी आदि कार्य वर्ग का जो सूक्ष्म अश है जिस का और विभाग नही हो सकता तथा जो कार्य रूप को प्राप्त नही हुआ है और जिसका अन्य परमाणुओ के साथ सयोग भी नही हुआ है, उसे परमाणु कहते है उन अनेक परमाणुओ के परस्पर मिलने से ही मनुष्य को भ्रमवश उनके समुदाय रूप एक अवयवी की प्रतीति होती है। इस मे परमाणुओ की अवस्था का ठीक प्रतिपादन कर दिया कि परमाणु वह है—जिस का आगे भाग न हो सके। आगे काल का वर्णन है—

यामाश्चत्वारश्चत्वारो मर्त्या

नाम हनी उभे:

पक्ष: पञ्चदशा हानि

शुक्ल: कृष्णाश्च मानद (१०)

विदुर जी! चार चार पहर के मनुष्य के दिन और रात होते है और पन्द्रह दिन-रात का एक 'पक्ष' होता है जो शुक्ल और कृष्ण भेद से दो प्रकार का माना गया है।

तयो: समुच्चयो मास: पितृणां

तद हर्निशम्—द्वौ तोवृतु:

षड्यन दक्षिण चोत्तर दिवि: (११)

इन दोनो पक्षो को मिला कर एक मास होता है। जो पितरों का एक दिन-रात है। दो मास का एक 'ऋतु' और छ: मास का एक 'अयन' होता है, अयन दक्षिणायन और उत्तरायण भेद से दो प्रकार का होता है। इत्यादि

कृतं त्रेता द्वापरं च कलिश्चेति,

चतुर्युगम्।

दिव्यैर्द्वादशभिर्वर्षै: सावधानं

निरूपितम् (१८)

विदुर जी! सत्युग त्रेता द्वापर और कलि—ये चार युग अपनी संध्या और सन्ध्यांशो के सहित देवताओ के बारह सहस्र वर्ष तक रहते हैं ऐसा कहा गया है (१८)

चत्वारि त्रीणिद्वे चैकं

कृतादिषु यथाक्रमम्—

सख्यातानि सहस्राणि

द्विगुणानि शतानिच (१९)

इन सत्यादि चारो युगो मे क्रमश: चार, तीन, दो और सहस्र दिव्य वर्ष होते हैं और प्रत्येक मे जितने सहस्र वर्ष होते हैं उस से दुगने सौ वर्ष उन की सध्याओ और सन्ध्याशो मे होते है (१९) इन का क्रम ऐसे होता है कि सत्युग मे दिव्य ४००० वर्षयुग के और सध्या ८००सन्ध्याश के अर्थात ४८०० वर्ष हुए। इसी प्रकार त्रेता मे ३६०० तथा द्वापर मे २४०० और कलियुग मे १२०० दिव्य वर्ष होते है, मनुष्य का एक वर्ष देवताओं का एक दिन होता है। इस प्रकार मानवीय मान से कलियुग में ४३२०० वर्ष इससे दुगने द्वापर मे ८६४००० और तिगने त्रेता मे १२९६००० और चौगने सत्युग में १७२८००० यह कुल ४३२०००० हुए यह एक चतुर्युगी हुई—आगे

निशावसान आरब्धो

लोक कल्पोऽनुवर्तते।

यावद्दिन भगवतो मनून,

भुञ्जश्चतुर्दश।

(२३) म.-३-आ.११-२-२३

उस रात्रि का अन्त होने पर इस लोक का कल्प आरम्भ होता है, उसका क्रम जब भगवान का दिन रहता है तब तक चलता रहता है, उसे एक कल्प मे १४ मनु हो जाते हैं। (२३)

स्वंस्वं कालं मनुर्भुङ्क्ते

साधिका ह्येक सप्ततम्।

मन्वन्तरेषु मनवस्तद्वश्या ऋषिय: सुरा: भवन्तिनैवयुगपत्सु रेशाश्चानु ये च तान् (२४)

प्रत्येक मनु इकहत्तर चतुर्युगी से कुछ अधिक काल तक अपना अधिकार भोगता है प्रत्येक मन्वन्तरमे भिन्न-भिन्न मनु वंशी राजा लोग आदि अपना राज्य भोगते हैं ऊपर के ४३२०००० को ७१से गुणा करने पर३०६७२०००० और इसको १४ से गुणा करने पर ४२९४०८०००० वर्ष हुए पहिले युग और युगाश सन्धियो को जोड़ लिया गया शेष १४ मन्वतरों के बीच महायुग के बराबर सन्धी होती होती है जिसके २५९२०००० साल होते है उनका ऊपर की राशि से जोड करने पर ४३२०००००० चार अरब ३२ करोड़ वर्ष होते हैं ऐसा ही वर्णन सूर्य सिद्धात मे भी है और लगभग ऐसा ही कल्प का वर्णन विष्णु पुराण षष्ठ अश अ—३ में है।

शतं वर्षाणि वर्षन्ति नदन्ति

रभस स्वनै:।

तत् एकोदक विश्व

ब्रह्माण्ड विवरान्तरम (१३)

बादल सैकडो वर्षो तक वर्षा करते रहते है उस समय ब्रह्माण्ड के भीतर का सारा ससार एक समुद्र हो जाता है। सब कुछ जल मग्न हो जाता है फिर—

तदा भूमेर्गन्ध गुण ग्रसन्त्याप

उदप्लवो ग्रस्त

गन्धातु पृथिवी प्रल-

यत्वाय कल्पते (१४)

इसी प्रकार जल प्रलय हो जाता है, तब जल पृथ्वी के विशेष गुण गन्ध को ग्रस लेता है, अपने मे लीन कर लेता है, गन्ध गुण के जल मे लीन हो जाने पर पृथ्वी का प्रलय हो जाता है वह जल मे घुल-मिल कर जल रूप बन जाती है इसी प्रकार—

अपा रस मथो तेजस्ता

लीयन्तेऽथ नीरसा:।

ग्रस्ते तेजसो रूप

वायुस्तद्रहित तदा (१५)

राजन! उस के बाद जल के रस को तेजस्तत्व ग्रस लेता है, और जल नीरस होकर तेज मे समा जाता है। तदनन्तर वायु तेज गुण रूप को ग्रस लेता है और तेज रूप हीन न होकर वायु मे लीन हो जाता है।

लीयते चानिले तेजो

वायो: खग्रस्ते गुणम्।

स वै विशति ख राज-

स्ततश्च नभसो गुणम्।।१६

शब्द ग्रसति भूतादि

र्नभस्तमनुलीयते।

तैजसश्चेन्द्रियाण्यङ्ग

देवान् वैकारिको गुणै:(१७)

अब आगे प्रलय और सृष्टि की उत्पत्ति का वर्णन करते है—सृष्टिक्रम प्रवाह से अनादि है जैसे—

द्विपरार्धेत्वति क्रान्ते

ब्रह्मण: परमेष्टिन:।

तदा प्रकृतय: सप्त

कल्पन्ते प्रलयाय वै(५)

भागवत स्कन्ध १२ अध्या० ४

गीता प्रेस पृ०९२०

इस प्रकार रात के बाद दिन और दिनके बाद रात होते होते जब ब्रह्माका अपने मान से सौ वर्ष की और मनुष्यों की दृष्टि मे परार्द्ध की(८३२००००००० आयु समाप्त हो जाती है तब महानत्व अहकार और पचतन्मात्रा—ये सातों प्रकृतियां अपने कारण मूल प्रकृति में लीन हो जाती है।

एष प्राकृति को राजन

प्रलयो यत्र लीयते।

आण्ड कोशस्तु सघातो

विघात उपसादिते(६)

राजन् इसी का नाम प्रलय है। इस प्रलय मे प्रलय का कारण उपास्थित होने पर पच भूता के मिश्रण से बना हुआ ब्रह्माण्ड अपना स्थूल रूप छोड कर कारण रूप मे स्थित हो जाता है, घुल-मिल जाता है

क्षय यास्यन्ति शर्के

कालेनो पद्रुता: प्रजा:।

सामुद्र दैहिक भौम

रस सावर्तको रवि: (८)

इस प्रकार काल के उपद्रव मे पीडित होकर धीरे-धीरे सारी प्रजा क्षीण हो जाती है।

प्रलय कालीन सावर्तक सूर्य अपनी प्रचण्ड किरणों से समुद्र, प्राणियो के शरीर और पृथ्वी का सारा रस खींच खींच कर सोख जाते है।

अब आकाश वायु के गुण स्पर्श को अपने मे मिला लेता है और वायु स्पर्श हीन होकर आकाश मे शान्त हो जाती है, इस के पीछे तामस अहकार आकाश के गुण शब्द को ग्रस लेता है और आकाश शब्द हीन होकर तामस अहकार मे लीन हो जाता है, इसी प्रकार तैजस, अहकार इन्द्रियो को और वैकारिक (सात्विक) अहकार इन्द्रियाधिष्टतृ देवता और इन्द्रिय वृत्तियो को अपने मे लीन कर लेता है। (१५-१७)

महान् ग्रसत्य हङ्कारं गुणा:

सत्त्वाद यश्चत्।

ग्रासतेऽव्याकृत राजन

गुणान कालेन चोदितम् (१८)(क्रमश:)

स्वर्गीय स्वा. सोमानंदजी

इन का निधन १५ अगस्त को १० बजे प्रातः लम्बी बीमारी के कारण चण्डीगढ़ में हुआ जिस पर निम्न संस्थाओ के शोक प्रस्ताव प्राप्त हुए। इन प्रस्तावो में स्वर्गीय आत्मा की सद्गति के लिए प्रभु से प्रार्थना की गई है।

आर्यसमाज सैक्टर ८ चण्डीगढ़, आर्य समाज अलावलपुर, आर्य समाज विक्रमपुरा जालन्धर, साईं दास H/S स्कूल जालन्धर, आर्यसमाज रेलवे रोड अम्बाला, आर्य समाज (का० वि०) गुरदासपुर, आर्य समाज बिजवाड़ा, आर्यवीरदल हुशियारपुर, आर्य समाज लोहगढ़ अमृतसर।

आर्य समाज मन्दिर मरवाई (चिन्तपूरणी)

आर्यसमाज मरवाई के सर्वेसर्वा श्री पं० हरिश्चन्द्र जी शर्मा शास्त्री सूचित करते हैं कि ६-८-६६ को भारी वर्षा के कारण समाज मंदिर पहाड़ की खड्ड में गिर कर चकनाचूर हो गया है। स्वर्गीय म० लड़का राम जी के परिश्रम तथा अन्य दानी महानुभावों के दान से बनाया गया मंदिर ध्वस्त हो गया है। अतः इस मन्दिर के पुनरुद्धार के लिए धर्म प्रेमी दानी सज्जनों से प्रार्थना है कि यथाशक्ति दान [illegible] भेजें। पहाड़ी इलाके में [illegible] चिंतपूरणीके पास इस समाज मन्दिर का विशेष महत्व है। दान, मंत्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा निकट कोर्ट जालन्धर के पते भेजें।

अजमेर में ऋषि मेला

आगामी ११-२०-२१ नवम्बर ६६ को ऋषि उद्यान स्थिति (आना सागर तट) सरस्वती भवन में मनाया जाएगा। इसी अवसर पर राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा की हीरक जयन्ती भी मनाई जा रही है। इसको सफल बनाने के लिए स्वागत कारिणी समिति का पुनर्गठन किया जा चुका है।

—मंत्री ऋषिमेला व हीरक जयन्ती सूचना विभाग

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

जालन्धरकी अंतरंग सभाके२३-८-६६का

शोक प्रस्ताव

श्री स्वामी सोमानन्द जी सरस्वती के देहांत पर शोक प्रस्ताव पास किया गया। श्री स्वामी सोमानन्द जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रमुख कार्यकर्ताओं में से थे। उन्होने आजीवन आर्यसमाज की तन, मन, धन से सेवा की। उन्होने सभा की सेवा महोपदेशक के रूप में वेद प्रचार अधिष्ठाता के रूप में तथा सभा के मन्त्री के रूप में की। आप महात्मा हंसराज जी के पुराने सहयोगियो मे से थे। आप ने सभा का कार्य बड़ी तत्परता से किया। सभा श्री स्वामी जी की बड़ी कृतज्ञ है। अतरग सभा परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि वे स्वामी जी की आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

वेदप्रकाश मलहोत्रा
सभा मंत्री

आर्य [illegible] देहली सीता[illegible] वे पो[illegible] की मन्[illegible] आर्य बहिनो ने गुड़वाओं में वर्षा यज्ञ करवाए। इसी प्रकार सावित्रीदेवी जी ने बस्ती हरफूलसिंह, सुशीलकुमार ने देहली आर्य भाई बहिनो ने कृष्णा नगर में वर्षा यज्ञ करवाए। जिसमें पूर्ण सफलता मिली। तेजराम पुरोहित आर्यसमाज सीताराम बाजार देहली।

आर्यसमाज माडल टौन सोनीपत

१४-८-६६ को सत्संग के पश्चात डा० राम जी लाल सिक्का के आकस्मिक निधन पर शोकसभा की गई जिस मे दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए तथा शोक सतप्त परिवार को शाति प्रदान करने की प्रभु से प्रार्थना की गई।

★ रात को एक मोटर साईकल सवार तीव्रगति से भागा आ रहा था रास्ते मे एक ट्रक दोनो लाईटे जला कर खड़ा था। मोटर साईकल सवार ने सोचा सामने से साथ २ दो मोटर साईकल आ रहे हैं मैं इन दोनो के बीच से शीघ्र निकल जाऊगा जैसे ही उसने आगे निकलने का प्रयास किया तो उसकी टक्कर खड़े ट्रक से हो गई गिरने पर मोटर साईकल कहने लगा ओहो ये मोटर साईकल तो दरम्यान से जुड़े हुए हैं।

आर्यजगत के पाठकों को शुभ सूचना

आर्यसमाज विक्रमपुरा जालन्धर का सात्विकदान

प्रतिवर्ष यह समाज आर्यजगत को ४५/- सहायता के रूप में देती हैं। इस दान से १५ नवीन ग्राहक प्रतिवर्ष, तीन-तीन रुपए वाले बनाए जाते हैं जो सज्जन इस दान से लाभ उठाना चाहते हैं वे २० सितम्बर तक तीन रुपए M. O. से भेजकर एक वर्ष के लिए आर्यजगत के ग्राहक बन सकते है। ये रियायत केवल नवीन ग्राहको के लिए है।

—व्यवस्थापक

आर्यसमाज दयालपुरा करनाल

चुनाव २१-८-६६ को निम्न प्रकार से हुआ—

प्रधान — डा० गणेश दास
उपप्रधान—ला० माम चन्द
मन्त्री—मा० अमरनाथ
उपमन्त्री—प० शमशेर कुमार
कोषाध्यक्ष—चौ० हुकमचन्द
पुस्तकाध्यक्ष—श्री राधेश्याम
लेखा निरीक्षक—चौ० पजाबसिंह

अमरनाथ
मन्त्रीसमाज

★ सनातन के अर्थ हैं प्राचीन। वैदिक धर्म ही प्राचीन होने के कारण सनातन है। इसीलिये हम सब का सनातन प्राचीन धर्म वैदिक धर्म ही है।

प्रादेशिक आर्य-युवक-संगठन के अध्यक्ष का निर्वाचन

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा ने अपने अन्तर्गत चल रहे युवक संगठन का कार्य पुनः सुचारु रूप से चलाने के लिए अन्तरंग सभा दिनांक २३-८-६६ मे सर्व-सम्मति से प्रो० वेदीराम जी शर्मा एम० ए० को अध्यक्ष मनोनीत किया गया है।

मैं पजाब, हरयाणा, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश और जम्मू-काश्मीर के सभी आर्य समाजो, स्कूल व कालेजों के अधिकारियो से निवेदन करता हू कि वह पहिले की भाति प्रो० वेदीराम जी को सहयोग प्रदान कर युवक शक्ति को सगठित करने में भरसक प्रयत्न करें।

सभा ने यह भी निश्चय किया है कि अगले कुछ महीनो में उक्त प्रदेशो के युवक समाजों का एक सम्मेलन आयोजित किया जाए। अतः उसके लिए भी अभी से कार्य आरम्भ होगा।

—वेद प्रकाश मलहोत्रा
मन्त्री सभा

मुद्रक व प्रकाशक प्रो० वेदप्रकाश मलहोत्रा एम. ए. आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० ३०५७ [आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे — वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६, अंक ३८) ३ आश्विन २०२३ रविवार—दयानन्दाब्द १४२— १८ सितम्बर १९६६ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तयः

अयं विश्वानितिष्ठति

हे लोगो ! यह परमात्मा विश्वानि—सारे ससार मे, प्रत्येक स्थान और पदार्थ मे तिष्ठति—व्यापक हो रहा है। सर्व व्यापक है। उससे रहित कोई स्थान नही है। पाप से बचो।

श्रुतेन गमेमहि

हम वेद के अनुसार चलें। हमारा जीवन वेद के अनुकूल हो, हमारा पथ वेद पथ तथा हमारे कार्य वेद से अनुमोदित हो। जो कुछ सुने उस पर आचरण करते रहे।

मा श्रुतेन विराधिषि

हम कभी भी वेद के प्रतिकूल न चले। कथन, मनन, चिन्तन तथा जीवन का आचरण वेद के विपरीत न हो। जो भी सुने उसे भुला न देवे, उसका विरोध न करे तथा उससे आंखें बन्द न करे।

देवदत्तं ब्रह्म गायत

यह वेद का ज्ञान देव का भगवान का दिया हुआ है। उस परमेश्वर की वाणी है। सब के लिए उस पिता का दिव्य एवं मीठा प्रसाद है। उस वेद का गान करो। वेद का गीत सगीत गाते रहो।

असि होता न ईड्यः

प्रभो ! आप होता है। इस सारे-ससार में आप का ही महान् यज्ञ हो रहा है। आप इस सारे यज्ञ के होता हो और नः हमारे लिए ईड्यः—स्तुति के योग्य हो। आपकी स्तुति हम लोग किया करें।

अथर्ववेद से

महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज



आप चार मास अफ्रीका के प्रांतो की आर्यसमाजों में वेदामृत पिलाकर भारत लौट आए है। आजकल आपकी वेद कथा से पंजाब प्रांत लाभ उठा रहा है।

ऋषि दर्शन

शौच बाह्याभ्यन्तरञ्च

शौच-सफाई शुद्धता पवित्रता दो प्रकार की है। बाह्यम्-बाहिर की और आभ्यन्तर अपने अन्दर की। केवल बाहर की या अन्दर की पवित्रता एकादशी कहलाती है। दोनों ही प्रकार की पवित्रता से पूरी शुद्धता होती है।

बाह्यं जलादिना

इन मे जो बाहर की पवित्रता सफाई है, वह जल आदि से की जाती है। शरीर की मैल को दूर करने या धोने के लिए पानी की आवश्यकता है। निर्मल जल मे बाहर की मैल दूर हो जाती है। स्नानादि बाहर की शुद्धि है।

रागद्वेषासत्यादित्यागेन

दूसरी सफाई अन्दर की है, जहां पानी काम नही आता। वह राग, द्वेष, असत्य आदि के त्यागने तथा प्रेम सत्य आदि को धारण करने से होती है। मन की सफाई जल से न होकर सत्यादि से होती है।

यस्मिन् देशे विद्वांसः

जिस देश में, जिस राज्य मे शासन के काम मे विद्वान, धर्मो तथा न्याय के प्यारे लोग होते है। राज्य के तन्त्र को भली-भांति समभते हैं। ज्ञान के प्रकाश मे जिनका मार्ग प्रशस्त होता है। कथनी और करनी समान है।

भाष्य भूमिका

[illegible]—प्रो० वेद प्रकाश [illegible] एम० ए०

सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

धार्मिक चर्चा-

उत्तरायण तथा दक्षिणायन

श्री पं० सत्यप्रिय जी शास्त्री सिद्धांत शिरोमणि:
प्राध्यापक:-दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार

महाभारत में वर्णन आता है कि भीष्म पितामह जब शर शय्या पर पड़े थे और मृत्यु उनके निकट खड़ी उन्हे ले जाने को तैयार थी तब उस बाल ब्रह्मचारी ने मृत्यु को कहा कि अभी सूर्य दक्षिणायन मे है जब उत्तरायण में होगा तभी मैं प्राणो को छोड़ूंगा। इस प्रकार उन्होने उत्तरायण मे ही अपने शरीर का त्याग किया। सामान्य रूप से भारतीय जन समाज की यह धारणा है कि दक्षिणायन मे मृत्यु होना अच्छा नही तथा उत्तरायण में देह त्याग करना उत्तम होता है। उत्तरायण तथा दक्षिणायन का सम्बन्ध इस प्रकरण मे बाह्य भौतिक जगत के साथ नही है। प्रत्युत यह एक आध्यात्मिक रहस्य है। संसार मे मुख्य रूप से मानव समुदाय के दो प्रमुख भाग है। एक वे हैं। जिनकी वृत्तिया भक्ति मार्ग की ओर जाती है। दूसरे संसार को ही सब कुछ जान इसी के भोग मे जीवन बिताना अपना कर्त्तव्य समझते है। प्रथम प्रकार के लोगो को हो उपनिषद् के शब्दो मे श्रेय मार्गी अथवा निवृत्ति मार्गी कह सकते है। क्योकि वे सासारिक भोगो को जीवन का लक्ष्य न जानकर परमानन्द प्राप्ति को ही जीवन का ध्येय समझते है। इस मार्ग मे आरम्भ मे दुःख एव कठिनाइया आती है. परन्तु इसका अन्त आनन्द-दायक है। दूसरी तरह के मनुष्यों को मार्गी अथवा प्रवृत्ति मार्गी कहा गया है। इनकी दृष्टि दूर तक न जानकर इस जीवन तक ही सीमित होती है. अत. वे इस जीवन के सुख के लिए ही यत्न शील होते है। इस मार्ग का आरम्भ तो बड़ा लुभावना तथा मोहक है, किन्तु इसका अन्त अति भयानक एव कष्ट-प्रद है। वेद ने इन्ही भागो को क्रमश देवयान: तथा पितृयान नाम से प्रकाश है। पितरो का सम्बन्ध दक्षिण दिशा से है। क्योंकि वे लोग इसी ससार को सासारिक विभूतियो के सग्रह द्वारा ऐश्वर्यवान बनाने मे ही जीवन का सार मानते है। अत वे दक्षिण दिशा के साथ सम्बन्धित है। परन्तु देव लोग उत्तर दिशा के साथ जुड़े हुए है। क्योकि वे सोमपान करते है। उत्तर दिशा है ही सोमप्रधान अर्थात् सोम की दिशा है। वे महान् सोम परमेश्वर का पान करते है। सस्कारो की वैदिक पद्धति से जब बालका नाम करण संस्कार किया जाता है तब माता बच्चे का शिर उत्तर दिशा में तथा पांव दक्षिण दिशा में कर के पति को देती है। उस का भी मुख्य अभिप्राय यह ही है कि बच्चे का मस्तिष्क सदा उत्तर अर्थात् दो चेतन तत्वो मे से जो उच्च मात्मा है उसी की ओर रहे। वह मस्तिष्क से परमेश्वर का चिन्तन करता रहे। इस के साथ ही जीवन की पगडडियो पर उस के पाव अपनी सोची हुई विचार धारा के अनुसार बढ कर समृद्धि का कारण बने। ये जीवनके विचार तथा कर्मों को दो दिशायें हैं। बाह्य जगत की भौतिक दिशायें नही हैं। जो मनुष्य भक्ति प्रधान होता है, वह अन्यो की अपेक्षा उच्चतर अर्थात् ऊंचा होता है. लेकिन जो सांसारिक ऐश्वर्य तथा पदार्थों के संग्रह मे ही लगा रहता है। वह समृद्ध होता है। ये दोनो समुदाय दो विभिन्न अध्यात्म मार्गों के मुसाफिर होते हैं। पितर लोग अपने जीवन क्षेत्रों मे आने वाले तिरस्विराजी' अर्थात् काम को क्रोध लोभ मोहादि को स्थूल आलम्बनो से दबाते रहते हैं। परन्तु वे पुन: २ उनके मार्ग में आते हैं और कभी २ उनको अपने चक्कर में डाल लेते हैं। देवताओं के मार्ग में भी उक्त दोष आते हैं परन्तु वे 'स्वज' अर्थात अपने अतिरिक्त ज्ञान एवं बल से इन्हें ऐसा दूर फेंकते हैं कि फिर ये उनके निकट नहीं आ पाते हैं। क्योंकि वे सोम अर्थात महान शान्तिदायक परमेश्वर के स्वरूप का प्रतिदिन पान करते हैं। इस के कारण उनका जीवन भी सोम प्रधान होता है, जबकि पितर लोगों का जीवन इन्द्र प्रधान होता है। इस प्रकार जो अपने अन्त:करण को सोम से पूर्ण करते हुए मरते हैं वे उत्तरायण में मरते है, लेकिन जो ऐश्वर्य की लालसा की विचार-धारा लिये मरते हैं. वे मानो दक्षिणायन मे मरते हैं। ये हैं आत्मिक जीवन के दक्षिणायन तथा उत्तरायण। यदि ऐसा न माने तो बाह्य उत्तरायण मे भी तो असख्य पशु पक्षी मरते हैं, क्या वे सभी श्रेष्ठ होते है ?

इन वैदिक रहस्यो को हम समझें तथा मनन कर अपने अध्यात्म वातावरण को उत्तर मे लगा और सोम से परिपूर्ण कर उत्तरायण की मृत्यु के अधिकार को प्राप्त कर मानव जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करें।

★ ★

मुल्क मेरे इस तरह मिटना कहां की रीत है ?

सुन्दरलाल बोहरा, जोधपुर (राजिस्थान)

सुन रहा हू मुल्क मेरा हो चुका आजाद है,
मगर मेरे मुल्क से क्यो राम अब भी बाद है,
आज मेरे हिंद में हर ओर भगदड छा रही,
आज मेरे हिंद मे हर सुबह सध्या छा रही,
मुल्क मेरे इस तरह मिटना कहा की रीत है ?

आज मेरे मुल्क मे नित सूखती अमराइया,
शेष मेरे मुल्क मे क्यो रह गई परछाइया,
बिक रही है आज लाखो शीलतजकर रमणिया
सिसकती श्मशान तकती आज लाखो रमणियां
चमन मेरे इस तरह मिटना कहा की रीत है ?

आज खादी बेशरम कोरे खजाने भर रही.
खानदानी मुल्क के सब बन्द खाते कर रही,
मुल्क की सब शायरी क्यो आज सौदा कर रही,
इल्म मे सारी खुदाई आज गौना कर रही,
वतन मेरे इस तरह ठगना कहा की रीत है ?

भटकती मदिरालयो मे आज क्यो मर्दानगी ,
बेखबर है नाचघर में आज क्यो मर्दानगी ,
मदरसो में आज केवल बाग बाकी रह गई ,
खो गया भोला मगर क्यों भांग बाकी रह गई,
मुल्क मेरे इस तरह बचना कहां की प्रीत है ?

आज मेरा मुल्क क्यों हर मुल्क का मोहताज है.
देश का बच्चा जवा क्यो अन्न को मोहताज है,
हर घडी मेरे वतन में बढ रहे श्मशान हैं,
हर गली क्यो हिंद मे अब लड़ रहे इन्सान हैं,
भवन मेरे इस तरह गिरना कहा की रीत है ?

औलियाओं की जमी ये मुल्क हिन्दोस्तान है ,
मगर मेरे मुल्क मे क्यो बढ रहा शैतान है,
अब नही रुकता मेरे कण्ठ में अटका गरल,
धमनिया बेचैन मेरी हो चुका पूरा खरल,-
दोस्त मेरे सिसकिया भरना कहा की रीत है ?

महात्मा आनन्द स्वामी जी ३० सितम्बर को मंडी (हिमाचल) पधारेंगे

मण्डी (हि०प्र०) ९ सितम्बर—आर्यजगत के महान नेता व प्रसिद्ध सन्यासी महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती ३० सितम्बर को मण्डी पहुंच रहे है। वह २ से ९ अक्तूबर तक मण्डी नगर में वेद कथा करेंगे। इस समय स्थानीय आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव मनाया जा रहा हैं। ६ अक्तूबर को नगर कीर्तन होगा। उत्सव पर महात्मा जी के अतिरिक्त आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के महोपदेशक भजनीक भी पधार रहे हैं। संसत्सदस्य श्री प्रकाशवीर शास्त्री को भी निमंत्रित किया गया है।

★ 'हिन्दू' का अर्थ लुगत (कोष) में काफिर किया है। मुसलमान द्वेष से इस देश के रहने वालो को, मूर्ति पूजक होने के कारण, हिन्दू (काफिर) कहते थे। बाद में मुसलमानी राज्य में सब आर्यों ने पराधीन होकर 'हिन्दू' नाम स्वीकार-सा कर लिया।

सम्पादकीय—

आर्यजगत्

वर्ष २६] रविवार - ०२३, १८ सितम्बर १९६६ [अंक ३८

सभा का नया प्रकाशन

आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब जालधर वेद प्रचार के अपने महान मिशन मे दोनो प्रकार के साधनो का सदुपयोग कर रही है। वेदी से स्थान स्थान पर वेद का सन्देश दिया जाता है तथा प्रकाशन विभाग के द्वारा सत्साहित्य प्रकाशित कर के जनता के हाथो में समय-समय पर पहुचाया जाता है। सभा ने स्वर्गीय महात्मा हसराज जी के पवित्र नाम पर ही अपना महात्मा हंसराज साहित्य विभाग स्थापित किया हुआ है। इस मे समय २ पर अगरेजी व हिन्दी मे सुन्दर पुस्तके छपती रहती है। अब न मिलने वाली पुस्तकों का भी प्रकाशन होता है। इन पुस्तको मे पिछले वर्ष सभा की ओर से प्रिसिपल श्रीराम शर्मा जी की लिखी पुरानी अगरेजी पुस्तक महात्मा हसराज नाम की भी सक्षिप्त करके प्रकाशित की गई ताकि आज कल के युवक युवतियो एव दूसरे अगरेजी के प्रेमी लोगो के हाथो मे ऐसा साहित्य दिया जा सके। इसी प्रकार प्रिसिपल सूर्यभानु जी वायस-चासलर पजाब विश्वविद्यालय चडीगढ़ लिखित अगरेजी किताब 'स्वामी दयानन्द' नाम को भी छापी गई। लोगो ने बडी पसन्द की। डा० दीवानचन्द जी कानपुर ने भी सभा को उदारता से पुस्तक लिख दी। बड़ी सुन्दर पुस्तके प्रकाशित को गई तथा वर्तमान काल मे छापी जा रही है। गत दिनो पूज्य महात्मा हंसराज जी की एक विशेष किताब 'सन्ध्या पर व्याख्यान' नामक सभा के मान्य मन्त्री श्री प्रो. वेदप्रकाश जी एम.ए. ने बड़ा परिश्रम करके सभा के इसी साहित्य विभाग की ओर से प्रकाशित की। यह पुस्तक तो हम चाहते हैं कि कोई भी परिवार, आर्य-समाज, सस्था तथा व्यक्ति ऐसा न हो, जहा भक्तिरस से भरी हुई, महात्मा हसराज जी सरीखे प्रभुभक्त देवता की लिखी सन्ध्या पर व्याख्यान वाली यह रस भरी पुस्तक न हो। बड़ी भावना से लिखी गई है तथा प्रकाशित करने में भी उसी मन की आस्था का परिचय दिया गया है। हर प्रकार से सुन्दर व आकर्षक है। सभा ने यह पुस्तक बडा प्रयत्न करके किसी पुस्तकालय से ढूढी तथा प्रकाशित की है। हमारे पास कितने स्कूल, कालेज व समाजे हैं। उनके प्रबन्धक व कार्यकर्ता महानुभावो का कर्तव्य है कि अपने बच्चों, बच्चियो के हाथो मे पुस्तक को पहुचाकर भक्तिभाव भर देवे। बहुत ही सुन्दर व रसीली किताब है यह। इसी प्रकार अभी-अभी गत दिनो सभा मन्त्री जी के पुरुषार्थ से एक और पूज्य महात्मा हसराज जी लिखित छोटी-सी पुस्तिका सभा के द्वारा ही 'दश प्रश्नी' नामक प्रकाशित की गई है। इसमे स्वर्गीय रायबहादुर मूलराज जी एम.ए. ने, महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम पर अपने पूछे गए प्रश्नो के आधार पर जो ऐसे-वैसे उत्तर छापे थे=जिसे दस प्रश्नी के नाम से आज से तैंतीस वर्ष पूर्व लिखकर जनता मे बटवाई थी—उन असगत प्रश्नो से जनता मे कही भ्रम न पैदा हो जाए—इस विचार से स्वर्गीय महात्मा हसराज जी ने उस दश प्रश्नी की समीक्षा करते हुए पुस्तिका लिखकर आर्यसमाज का वास्तविक रूप जन-मण्डल मे पेश किया था। इसका नाम है 'दसप्रश्नी की समीक्षा'। यह चौवीस पृष्ठो की नई पुस्तिका भी सभा ने प्रकाशित कर दी है। बडी उपयोगी है। आर्यसमाजे तथा सस्थाए इसे भी अवश्य ही मगवाए। इस प्रकार के सत्साहित्य से लोगो को तथा वर्तमान पीढी को उदात्त विचार मिलेगे हम सभा के इस साहित्य के प्रचार की सबसे बल-पूर्वक प्रार्थना करते है।

—सम्पादक

★ आर्यो का सगठन किया, सस्कृत भाषा तथा वेदो का उद्धार किया, वैदिक धर्म प्रचार किया, और गौ, ब्राह्मण, अनाथ, विधवाओ की रक्षा की। आर्यों (हिन्दुओ) को मुसलमान ईसाई होने से बचाया।

हिन्दी की यह उपेक्षा असह्य

हिन्दी को भारत की प्रमुख राष्ट्रभाषा होने का गौरव प्राप्त है और इसके प्रचार प्रसार के लिए केन्द्रीय सरकार अनेक पग उठा रही है या उठाने का दावा करती है परन्तु स्वय सरकार के शीर्षस्थ अधिकारियो का रवैया और आचरण इन दावो को केवल झुठला ही नहीं देता बल्कि सम्भवत: हिन्दी के विकास मे मुख्य बाधा भी है। इसी रवैये का एक उदाहरण हिन्दी के प्रति केन्द्रीय सरकार के पत्र सूचना विभाग की नीति है। केन्द्रीय सरकार के जालन्धर स्थित पत्र सूचना कार्यालय मे हाल ही मे हिन्दी विभाग खोला गया, **स्थानीय हिन्दी समाचारपत्रों को सर्विस देने के लिए। लेकिन वास्तव नें यह हिन्दी समाचार पत्रों से एक मजाक था। इन हिन्दी पत्रों के लिए, जो पंजाब के प्रमुख दैनिकों में अग्रणी हैं और जिनकी समूची प्रकाशन संख्या राज्य के अन्य भाषायी पत्रों से किसी तरह भी कम नहीं, खोले गए इस विभाग में केवल एक व्यक्ति रखा गया। जबकि अन्य भाषाओं के विभागों में काफी अधिक कर्मचारी हैं।** एक व्यक्ति कितनी कुशलता से काम चला सकता है, यह अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। इस स्थितिकी ओर भारत सरकार के मुख्य सूचना अधिकारी श्रीभारद्वाज का, जो गत दिवस जालन्धर पधारे, ध्यान जब दिलाया गया तो उन्होने स्थिति को सुधारने का आश्वासन या सुझाव देने की बजाए यह कहा कि इस विभाग की कार्य क्षमता बढाने की कोई आवश्यकता नही और न ही इस दिशा मे कोई पग उठाया जा सकता है। क्यो? उनका उत्तर था कि भारत सरकार व्यय मे कमी करना, बचत करना चाहती है। अपने तौर पर यह दलील ठीक कही जा सकती है। बचत जहा तक की जा सके, अवश्य की जानी चाहिए। लेकिन इसकी कीमत हिंदी से क्यो वसूल की जाए? क्या इसलिए कि वह राष्ट्रभाषा है? यदि बचत करनी है तो उसका सीधा उपाय अपव्यय रोकना है, हिंदी का गला घोंटना नही। जैसा कि श्री भारद्वाज के नोटिस मे लाया गया, पत्र सूचना कार्यालय द्वारा समाचार पत्रो को भेजी जाने वाली बहुत-सी सामग्री अनावश्यक, निष्प्रयोजन और असामयिक बल्कि रद्दी होती है। उदाहरणार्थ ससद की कार्रवाई सम्बन्धी समाचार जो प्रायः एक दिन बाद भेजे जाते है जबकि वे पहले ही पत्रो मे प्रकाशित हो चुके होते है। क्यो नही इस सर्विस को सुधारा जाता और पुराने समाचार भेजना बन्द करके समय, शक्ति और धन का अपव्यय रोका जाता। यदि यह तथा ऐसे ही अन्य अपव्यय बन्द हो जाएं तो सरकार को हिन्दी विभाग के प्रसार के लिए धन की उपलब्धि मे कोई कठिनाई नही होगी परन्तु स्थिति का सामना करने और अपनी कमजोरी को दूर करने की बजाए जालन्धर कार्यालय मे हिन्दी विभाग के अस्तित्व से ही इन्कार कर देना या यह धमकी देना कि 'बचत' के लिए उसे बिल्कुल ही बन्द कर दिया जाएगा, सर्वथा औचित्यहीन नही बल्कि हिन्दी पत्रो और हिन्दी भाषा के प्रति अन्यायपूर्ण है। यह एक प्रकार की चुनौती है हिन्दी पत्रो के लिए और वे इसे स्वीकार करने मे जरा भी सकोच न करने हुए सूचना कार्यालय द्वारा प्रेषित सामग्री छापना बन्द कर देंगे। ★★

आर्य समाज गोंदिया [महाराष्ट्र] शुद्धि व विवाह सस्कार

आर्यसमाज गोंदिया के तत्वावधान मे जगदीशपुर (एम.पी.) निवासिनी, कुलीन ईसाई परिवार की कुमारी कुसुम कुमार ने स्वेच्छा से ईसाई धर्म त्याग कर हिन्दू धर्म स्वीकार करके, हैदराबाद (दक्षिण) के निवासी उमाकात उदगिर के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। शुद्धि व विवाह सस्कार मे प० काशीनाथ जी शास्त्री एम. ए. ने सराहनीय भाग लिया।

इस विवाह मे नगर के सम्भ्रात व्यक्तियो ने पधार कर समाज के अधिकारी वर्ग का उत्साह वर्धन किया। पति पत्नी सुशिक्षित तथा वयस्क है और भडारा जिले मे सरकारी नौकरी मे है।

काशीनाथ
मत्री समाज

माननीय मुख्य मन्त्री जी, आंध्र प्रदेश सरकार के नाम

भारत के अस्वाभाविक विभाजन के द्वारा जब पाकिस्तान का अस्तित्व निर्माण पाया तो इसी के साथ-साथ द्विराष्ट्र सिद्धान्त का भी दृष्टिकोण लोगो मे स्थान प्राप्त करने लगा, जिसका कि प्रचार स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व मुस्लिम-लीग किया करती थी। इस्लामी राज्य स्थापना का प्रयत्न भरपूर वेग द्वारा किया जाने लगा। जिन मुसलमानो ने भीनिमत्ता से भारत मे ही अपना आवास निर्धारित किया था, इन्हे भारतीय सघ सरकार के विरुद्ध भडकाने और उभारने का भी पूरा-पूरा प्रयास यहा से होता रहा और भारत के अन्य भाग मे मुस्लिम लीग के अस्तित्व को शेष रख कर इसके द्वारा विरोधी प्रचार का कार्य भी किया जाता रहा है। तथापि भारत के विभिन्न भागो मे पाकिस्तानी मनोवृत्ति के मुसलमानो ने कुछ समय के मौन के उपरान्त पुन: उभरने और अपनी प्रवृत्तियो को क्रियात्मक रूप देने का प्रयत्न प्रारम्भ किया और अपने कार्यक्षेत्र को विशेष रूप से विस्तीर्ण करने कटिबद्ध हुए। दक्षिण भारत इस दृष्टि से विशेष अभिलक्ष रहा। मद्रास, केरल और हैदराबाद अब पाकिस्तान समर्थक क्षेत्र समझे जाने लगे हैं।

पुलिस एक्शन से पूर्व हैदराबाद के रजाकार मन्त्री ने कहा था कि 'हैदराबाद अपने स्थान पर स्वय एक पाकिस्तान है। पुलिस कार्यवाही के पश्चात भी सर्वसाधारण मुसलमानो की मनोवृत्ति मे कोई परिवर्तन नही आया अपितु अब तो व्यापक रूप से इस का प्रदर्शन हो रहा है। जिस का अनुमान एक पत्र मे जो आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प नरेन्द्र जी के नाम ८ सितम्बर १९६५ को कार्यालय को प्राप्त हुआ है. इस पत्र के लेखक का नाम है सैयद यूसुफ अली। यह पत्र हिन्दी मे लिखा हुआ है। पत्र के लेखक का कथन है—

हैदराबाद हमारे मुसलमानो का पाकिस्तान है इस पर हमारा जन्मजात अधिकार है। यहा हिन्दुओ का कुछ नही चलता। भली प्रकार याद रखो! विद्रोहियो ''!

पुलिस कार्यवाही के तत्काल बाद ही पाकिस्तानी मनोवृत्ति व व्यक्तियो ने भोनगीर मे एक मासूम अण्डालम्मा नामक कन्या का अपहरण कर इससे

हैदराबाद नगर में साम्प्रदायिकता के उभरते चिन्ह !

स्मरण-पत्र

जो कि

माननीय मुख्य मन्त्री जी,

आन्ध्र प्रदेश की सेवा में समर्पित किया गया

व्यभिचार किया और इसका वध कर डाला एव इसी के रक्त से "दरगाह" की दीवार पर अकित करते हुए अपनी पाकिस्तानी प्रियता का परिचय प्रस्तुत करते हुए लिखा कि "पाकिस्तान जिन्दाबाद"।

सैनिक प्रशासन और इसके पश्चात् के प्रस्थापित जनतन्त्र प्रशासन से विशेष यह भूल हुई थी कि "इत्तेहाद-उल-मुसलमीन" जैसी साम्प्रदायिक और राष्ट्र विरोधी भावनाओ की प्रचारक विषाक्त संस्था को कानून विरोधी घोषित कर इस पर प्रतिबन्ध नही लगाया था। जबकि इसी कट्टर साप्रदायवादी पक्षपात समर्थक संस्था ने "आजाद हैदराबाद" का आन्दोलन प्रारम्भ कर रियासत के रहने वाले हिन्दुओ और अन्य गैर मुस्लिमो पर अत्याचार किये थे। इतना ही नही बल्कि भारतीय राष्ट्र सघ के विरुद्ध एक विद्रोही आन्दोलन खडा कर रखा था। इस भूल का भयानक परिणाम यह हुआ कि पुन: जब मजलिस ने नगरपालिकाई एव विधान सभा आदि के निर्वाचन मे अपने प्रत्याशी खडे कर सक्रिय भाग लेना प्रारम्भ कर दिया तब सपूर्ण आध्र प्रदेश क्षेत्र का वातावरण विक्षुब्ध कर दिया गया। और दिन प्रति दिन स्थिति बिगडती ही गयी। मजलिस इत्तेहाद-उल-मुस्लमीन की वर्तमान प्रक्रिया भी वातावरण को उत्तेजित और विक्षुब्ध करने में लगी हुई है। धार्मिक प्रक्रियाओंकी स्वतन्त्रता और भाषणो आदिके सामाजिक प्राप्त अधिकारो का जैसा दुरुपयोग इस के द्वारा हुआ और हो रहा है. वह एक लम्बी कहानी है, जो जनता और राज्य से छुपी हुई नही है। मेलाद-उल-नबी के पवित्र जलसो और मसजिदो मे होने वाली प्रार्थना सभाओ मे कांग्रेस और इसकी सरकार पर भद्दे और ओछे ढग से आक्षेप किये जाते है। यहा तक कि महात्मा गाधी और प० जवाहर लाल नेहरू जैसी विश्व-वन्द्य विभूतियो की घिनोने ढग से आलोचना की जाती है जो अप्रासगिक होने के साथ सभा के उद्देश्य मे विपरीत होते है। नगरपालिका एव विधान सभा के निर्वाचन मे मजलिसी प्रत्याशी के समर्थन मे जो स्थान स्थान पर भाषण दिये गये उनसे यह तथ्य स्पष्ट हो गया कि मजलिसदिराष्ट्र सिद्धात के दृष्टिकोण को ही रियासती मुसलमानो के मुक्ति का उपाय मात्र अनुभव करती है। और वह कट्टर साप्रदायिकता के प्रचार की घिनौनी मनोवृत्ति से विमुक्त नही होना चाहती। कांग्रेस ने भी अपने टिकट पर जिन मुसलमानो को राष्ट्रवादी मुसलमान अनुभव कर अवसर प्रदान किया उनकी भी मजलिसी मनोवृत्ति अधिक समय तक छुपी न रह सकी। जबकि कांग्रेस को उच्च श्रेणी के शिक्षित, सभ्य और राष्ट्रवादी मुसलमान उपलब्ध हो सकते थे। विशिष्ठ प्रकार के मुसलमानो के वोटो की प्राप्ति निमित्त कुछ ऐसे अदूरदर्शी पग उठाये जा कर उन मुसलमानो से सौदा किया गया जो किसी भी प्रकार से न तो विश्वास के योग्य थे और न इसके पात्र हो।

श्री विजयवाडा गोपालरेड्डी जी ने जब उर्दू से अपनी रुचि प्रकट की और नुमायश क्लबमे हैदराबाद-कराची मैत्री सस्था को स्थापना हुई तो इसके द्वारा पाकिस्तानी मनोवृत्ति के लोगो ने इस अवसर को देव कृपा अनुभव कर इससे पर्याप्त लाभ उठाया। इस सम्बन्ध मे बम्बई के सुप्रसिद्ध साप्ताहिक 'ब्लिटज' ने जब प्रकाश डाला तो लोगो को पता चला कि हमारे ही कांग्रेसी कर्णाधार किस भयानक मार्ग पर देश को ले जा रहे है? विशेष आश्चर्य और खेद की बात तो यह है कि आज भी हमारे कांग्रेसी नेता ऐसी विषाक्त मनोवृत्ति वाले तत्वो की पुष्टि और समर्थन मे लगे हुए है, जिसका एक दिन परिणाम राष्ट्र की अखण्डता और शांति को आघात पहुचाने के अतिरिक्त और कुछ नही होगा।

देश की अखण्डता और राष्ट्रीय एकता को जान-बूझ कर नुकसान पहुचाने के उद्देश्य से वर्तमान मे जो प्रयत्न किये गये उन मे उस आपत्ति-जनक मानचित्र (नकशा) का प्रकाशन भी सम्मिलित है जो कि स्थानिक व्यापारी कम्पनी आसाम टी० डिपो द्वारा प्रकाशित कर वितरण करवाया गया था और जिस में कश्मीर को भी इस्लामी देशो में दर्शाया गया।

अशांतता के उत्पादन की घटनाओं में सशस्त्र गुण्डागर्दी को व्यापक रूप से स्थान प्राप्त होता जा रहा है। और अब स्थिति यह है कि जनता का दैनिक जीवन अत्यन्त भयावह स्थिति से व्यतीत हो रहा है। ऐसा लगता है कि जगल का कानून लागू है। पिछली घटित घटनाओ पर दृष्टिपात करने से पाकिस्तानी मनोवृत्ति विभिन्न रूपों में स्पष्ट साकार होती दिखाई देती है। पुलिस कार्यवाही के कुछ काल बाद ही एक स्थानिक जूतो की कम्पनी द्वारा जूतो के तलवे केवल अपमान और भावनाओं को ठेस पहुचाने के उद्देश्य से पवित्र राष्ट्रीय ध्वज के नमूने पर तिरगे बनाये गये। प्राचीन पडाऊ मन्दिरों की संपत्ति हड़पने के प्रयत्न भी होने लगे। अलि-आबाद की बस्ती के बीच बख्शीगज के कृष्ण मन्दिर के राजकीय क्षेत्र के विस्तृत भू-भाग पर अनुचित कब्जा कर मकान निर्माण किये गये एव अभी तक यह अनुचित कब्जा चला आ रहा है। पुराने मलक-पेठ के हनुमान मन्दिर से मूर्तियो को उडा ले जाना और इन सब के अतिरिक्त वह घटना भी याद आती है जबकि श्री बी. रामकृष्णराव जी के मुख्य मंत्रित्व काल मे सिटी कालेज के सम्मुख छात्रो के आदोलन का दमन करने के बहाने अशांति उत्पन्न करने का भी दुष्प्रयास किया गया था। अभी दो वर्ष होते है जब कि शिक्षण शुल्क की वृद्धि के सम्बन्ध मे विद्यार्थियो द्वारा विरोधी प्रदर्शन (Agitation) जो राजकीय प्रयत्न हुए और इसके प्रति उत्तर में विद्यार्थियो के आंदोलन के पीछे जो शहर के प्रमुख बाजार आबिदशाप आदि मे दिन-दहाड़े तोड़-फोड़ दुकानों मे की गयी उनमे जितनी भी दुकानों को लक्ष बनाया गया वह सब हिन्दु व्यापारियो की ही थी। तदर्थ प्रातीय विधान सभा के सम्माननीय सदस्य श्री रामगोपाल रेड्डी जी ने विधान सभा मे इस विषय को प्रस्तुत कर स्थिति की ओर ध्यान आकर्षित भी करवाया था। इसके पश्चात् से विभिन्न बस्तियों याकूतपुरा, दबीरपुरा, चंचलगुडा इत्यादि में भी एक अवधि तक मुस्लिम गुण्डागर्दी का क्रम चलता रहा।

(क्रमश:)

नौजवानों की सुध लो नं. २

मास्टर श्री हरिचन्द्रजी गुप्त मंत्री आर्यसमाज जाखल (हिसार)

मैंने गत लेख मे यह बतलाने का प्रयत्न किया था कि आजकल के युवक किधर जा रहे हैं और उनको प्रेरणा की थी कि माता-पिता अपनी सन्तान को आर्ष ग्रन्थ अर्थात वेदोक्त पुस्तकें पढ़ायें और पढने को दें और सर्वप्रथम आर्य समाज जो सकल संसार की एक-मात्र हितैषी जमात है और प्रत्येक का भला चाहने वाली सस्था है इसके बनाये हुए दस नियमो पर चल कर अपना जीवन सफल बनाये, (आर्यसमाज क्या है ट्रैक्ट का १५ पैसे मे हमसे मगा कर अध्ययन करें जो हसराज आर्य ट्रस्ट जाखल ने प्रकाशित किया है जहा इसके पढने से आपके सभी भ्रम छिन्न-भिन्न होगे वहा पढने मे भी आनन्द आयेगा। वैदिक आर्ष ग्रन्थों का बोध होने से ही आप आर्य समाज का स्वरूप समझ पायेगे तभी आप का आर्यसमाज पर विश्वास बढ़ेगा जब विश्वास हो गया फिर स्वय ही आप इसे स्वीकार करने पर विवश होगे ऋग वेद आदि भाष्य भूमिका और सत्यार्थप्रकाश का एक बार नही, दो बार नहीं बल्कि तीन बार अध्ययन करे और आर्यसमाज रूपी वैदिक धर्म को समझने का प्रयत्न करे।

ऋषि दयानन्द जी महाराज किसी एक साधारण मत के प्रचारक न थे वे तो सकल मानव धर्म के उपदेष्टा थे, और ससार को सन्मार्ग पर लाने के लिए यत्नशील थे और वे किसी सीमा तक इसमे सफल भी हुए परन्तु शोक है उनकी मृत्यु के पश्चात् जैसा कार्य उन्होने हमे सौंपा था वह न कर पाए और दूसरे ही झगडो मे पडकर व्यर्थ समय खोते रहे, स्वय को और अपनी सन्तान को इस योग्य न बना सके जो एक आर्य विद्वान की होनी चाहिए। आज प्राय: माता-पिता और समाज के अन्य लोग कह रहे हैं कि बच्चो में अचार हीनता बढ रही है मां-बाप और अध्यापको तक की कोई प्रतिष्ठा नही करते, नव-युवक शान से सज-धज से रहना पसन्द करते हैं। क्या घर, क्या बाजार, क्या किसी गली कूचे में और कोई दुकान ही रही हो जहा के रेडियो वगैरा के गन्दे गाने और गीत हमारे मस्तिष्क मे अपना प्रभाव डाले बिना रहते हो बल्कि परस्पर की बातें सुनना और सुनाना भी शोर में अति दुष्कर है।

जैसे आप प्रतिदिन देखते हैं कि कितने नवयुवक बच्चे रेडियो ट्राजेंटर आदि गले मे लटकाये सारा-सारा दिन हर समय गाना सुनने मे व्यस्त हैं और अपने कानो को ऐसे बेहूदा गीतों का लोभी बना लिया है कि बस करने का नाम नही है। और स्थान-स्थान पर स्त्रियो के नग्न फोटो और तस्वीरें आप को लटकती दिखाई देती होगी जो कि हमारे बच्चो के आचार पर कितना बुरा प्रभाव डालती हैं और उनकी कामाग्नि पर कितना तेल का काम करती है यह आप ही जान सकते हैं।

यदि किसी पुस्तक के पढने से बच्चो के आचार बिगडे तो वह पुस्तक फाड देने योग्य है यदि पराई स्त्रियो को देखकर माता-बहन बेटी वा और औरत के सदृश्य भाव पैदा न हो तो ऐसे गदे विचारो का भस्म करना ही लाजमी है यह सभी कुछ नवजवानो को ले डूबने का सामान है अत. जहा यकहो इन से बचो। ऐसे अश्लील चरित्रो पर व पुस्तको पर भारत सरकार को प्रतिबन्ध लगाना चाहिए ताकि भविष्य मे होने वाली सन्तान तो अपना सुधार कर सके यदि यह कुकर्म न रोके गये और हमारी सरकार ने इस ओर कोई ध्यान न दिया तो देश की अवनति ही होती चली जायेगी।

आजकल बच्चे से लेकर बडे तक सिग्रेस-बीडी पीना एक फैशन बन गया है रोटी - पानी चाहे न मिले परन्तु सिग्रेट - हुक्का जरूर हो, कितनो के कपड़े जल जाते है, सहस्रो मन अन्न भस्म हो जाता है, तेल के कारखाने नष्ट हो जाते है और कपासादि के कारखानो मे कितनी हानि होती है परन्तु यह बहादुर सूर्मे नौजवान इसे पीना अपना गौरव समझते हैं। प्रात: काल न दातन न मुह धोना बीडी जलाई और चल दिए। दूध का स्थान चाय ने ले लिया है, शुद्ध देसी घृत के बदले वनस्पति आ गया, सादा कपडो के बदले टैरालीन को पसन्द किया, ईश्वर प्रार्थना के स्थान पर मधुशाला आदि के गीत गाये। फिर भला युवक सुधरेंगे या बिगड़ेंगे यह आप ही बताए कवि के शब्दो में— क्या करना था क्या लगे करण हमें यही अचम्भा है, यदि देश का यही पैदा दूध घी पौष्टिक पदार्थ खाने मे व्यय होता न तो स्वास्थ्य बिगडना ना ही पैसा व्यर्थ जाता।

रहा सहा काम आजकल की सह-शिक्षा ने हमारी समाज का और हमारे नव-युवको का बेड़ा ही तो डुबो दिया वहा ही स्कूलो में कालेजों मे ब्याह की परस्पर बात-चीत होकर औलाद पैदा होने तक सारा कार्य वही पर ही समाप्त हो जाता है। मा-बाप को लडके और लडकियो के लिए गृहस्थ-श्रम का प्रबन्ध करने की विशेष आवश्यकता नही रह जाती। क्या इसी का नाम ब्रह्मचर्य है क्या इसी पढाई का नाम देशोत्थान है ? ब्रह्मचर्य सदाचार सादगी, काम को वश मे करने आदि का किसी भी बच्चे मे नाम मात्र भी नही है. भला हो भी कैसे जबकि हमारी अपनी सरकार ने हमारे राष्ट्र के बच्चो के कोमल हृदयों को धर्म शिक्षा से दूर रखकर हमे अपनी सस्कृति और धर्म से वहीन कर रखा है किसी बच्चे को यह ज्ञान नहीं कि धर्म क्या है ? शिक्षा का अर्थ क्या है फिर भला कैसे हमारा देश ऊंचा उठे, पहले तो नव-युवको के माता-पिता को ही धर्म का ज्ञान नहीं होता।

फिर स्कूलो के अध्यापक जिन बच्चो को धार्मिक शिक्षा देने में अस्वर्थ होते हैं प्राय: आरम्भ ले कर अन्त शिक्षतक बच्चो के कानो मे धर्म का कोई एक शब्द भी नही जाता जिस से बच्चे अपना जीवन सुधार सकें कैसे स्वास्थ्य रहे गा कैसे ब्रह्मचर्य स्थिर रहेगा "महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं कि" ब्रह्मचर्य का नाश होने से भारत वर्ष का नाश हुआ है और ब्रह्मचर्य का उद्धार होने से ही फिर देश का उद्धार होगा"।

यह ऐसी धर्म हीनता की भरमार क्यू है एक मात्र इस का यही उत्तर है कि जनता भोग वास की ओर दौड़ी जा रही है और अपने धर्म कर्म को तलाजली दीये जा रही है। मातायें अपनी सन्तान को राम, कृष्ण, राणा प्रताप, दयानन्द, गाधी न बना कर दुर्योधन, कस, जयचन्द बनाती जा रही है। देश के होनहार बच्चे रसातल को पहुच रहे है। किन्तु इन सभी बातों के होते हुये आर्य समाज अपना कर्तव्य नहीं छाड़ता ना ही छोड़ेगा, जबतक कि देश की बिगडी दशा न सुधर जाये और बच्चो मे न धर्म जीवन का सचार हो जाये।

खेतो को दे लो पानी यह वह
रही गा गा।
कुछ कर लो नौ जवानो उठती
जवानीया है।

★ ★

वेद पथिक की गोरक्षा के लिये अपने सर्वस्व की आहुति देने की घोषणा

दिल्ली के सुप्रसिद्ध धर्मोपदेशक वेदपथिक श्री प. धर्म बीर जो आर्य झडाधारी ने सार्वदेशिक सभा के महामत्री श्री लाला राम गोपाल जी की अध्यक्षता में दयानन्द भवन मे भाषण देते हुये यह कहा है कि इस समय समस्त गौ, गगा, गीता, गायत्री और वेद भक्तो को गोरक्षार्थ लाखो की सख्या मे पहुच कर ससद भवन पर सत्याग्रह कर के समस्त देश के जेलो को भर देना चाहिये।

श्री झडा धारी जी ने अपना नाम सत्याग्रह करने के लिये जेल जाने के लिये अपने एक पत्र मे सार्वदेशिक सभा को अपना नाम दे दिया है। यह ज्ञातव्य है कि श्री झडा-धारी जी अब तक नोआखाली, कराची नेजाम हैदराबाद, चडी गढ आदि आर्य समाज के सभी आन्दोलनो मे सरधड की बाजी लगा कर जेल की यातनाओ को भोग चुके हैं।

सवाद दाता
वैदिक समाचार समिति

सृष्ट्युत्पत्ति, प्रलयकाल तथा जगत् का उपादान करण प्रकृति है

इस पर भागवत पुराण की स्पष्टोक्ति

(श्री देवप्रकाश जी आचार्य आर्यसमाज रतलाम)

(गताक से आगे)

न तस्य काला वयवैः
परिणामदयो गुणाः ।
अनाद्यनन्तमव्यक्त-
नित्य कारणमव्ययम् ।१९।

तत्पश्चात महतत्व अहकार को और सत्व आदि गुण महत्व को ग्रस लेते हैं, परीक्षित ! यह सब काल की महिमा है। उसी की प्रेरणा से अव्यक्त प्रकृति गुणो को ग्रस लेती है, और तब केवल प्रकृति ही प्रकृति शेष रह जाती है।

(१८) वही (प्रकृति) चराचर जगत का मूल कारण है। वह अव्यक्त अनादि, अनन्त, नित्य और अविनाशी है, प्रलय के समय वह साम्यावस्था को प्राप्त हो जाती है, तब कोई विकार उस मे नही रहता इसी अव्यक्त को जगत का मूल भूत तत्व कहते हैं।

तन्मूल भूत पद मामनन्ति । (२१)

इसी प्रकार का वर्णन पुराण अश ६ अध्याय १४ श्लोक ३५ तक देखे।

हमारा इसके सम्बन्ध मे यही कहना है कि पौराणिक सज्जन उक्त पुराणो को देखकर प्रकृति को ही जगत का उपादान कारण माने ब्रह्म जगत का उपादान कारण नही हो सकता। गीता भी देखे प्रकृति ही जगत का उपादाक कारण है उस के हम तत्व विवेचनी गीता प्रैस गोरखपुर मे छपी और जिस का भाष्य सनातन धर्म के विख्यात पण्डित जय दयाल गोयन्दका ने किया है जिन्होने दर्शनो और उपनिषदों का भी भाष्य किया है लिखते है देखिये कि किस प्रकार प्रकृति की नित्यता को श्री पण्डित जी ने स्वीकार किया है।

प्रकृति पुरुष चैव विद्धानादी उभावपि ।
विकारांश्च गुणां श्चैव विद्धि प्रकृति सम्भवान ।

गीत अ० १३ श १९ पृष्ठ ५१९

अर्थ—प्रकृति और पुरुष इन दोनों को ही तू अनादि जान और राग द्वेषादि विकारो को तथा त्रिगुणात्मक सम्पूर्ण पदार्थो को भी प्रकृति से ही उत्पन्न जान (१७) व्याख्या में लिखते हैं कि प्रकृति अनादि है तीनों गुण सृष्टि के आदि मे इससे उत्पन्न होते है...इन तीनो गुणो को (सत्व, रज और तम) इनके विकारो को उनके कार्य सहित प्रकृति से उत्पन्न हुआ समझना चाहिए।

कार्य करण कर्तृत्वे हेतुः प्रकृतिरुच्यते
पुरुषः सुखदुखानाभोक्तृत्वे हेतु रुच्यते२०

कार्य और करण को उत्पन्न करने मे हेतु प्रकृति कही जाती है और जीवात्मा सुख-दुखों के भोक्ता पन में अर्थात् भोगने मे हेतु कहा जाता है (२०) प्रश्न का उत्तर देते हुए लिखते है। आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी ये पाचो सूक्ष्म महाभूत तथा शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध—ये पाचो इन्द्रियो के विषय इन दसो का वाचक यहां कार्य शब्द है, बुद्धि, अहकार और मन ये तीनो अन्तकरण श्रोत्र त्वचा और नेत्र रसना तथा घ्राण ये पांचो ज्ञानेन्द्रिया एवं, वाक्, हस्त, पाद, उपस्थ और गुदा ये पाचो कर्मेन्द्रियो इन तेरह का वाचक यहां 'करण' शब्द है, ये तेईस तत्व प्रकृति से ही उत्पन्न होते है । प्रकृति ही इनका उपादान कारण है—फिर स्वय और साख्य कारिका की एक कारिका भी इसकी सिद्धि के लिए लिखते है।

प्रकृति से महत्तत्व, महत्तत्व से अहकार अहकार से पाच सूक्ष्म महाभूत मन और दस इन्द्रिय तथा पाच सूक्ष्म महाभूतो से पाचो इन्द्रियो के शब्दादि पाचो स्थूल विषयो की उत्पत्ति मानी जाती है, साख्यकारिका मे थोड़ा-सा भेद है आगे लिखते है. पुरुष शब्द चेतन आत्मा का वाचक है। प्रकृति पुरुष का सग अनादि है इसीलिए यहां पुरुष को सुख दुखो के भोक्तापन मे हेतु यानी निमित्त माना गया है, इसी बात को स्पष्ठ करने के लिए अगले श्लोक मे कह भी दिया है, कि प्रकृति मे स्थित पुरुष ही प्रकृति जनित गुणों को भोक्ता है।

पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुङ्क्ते
प्रकृति जान्गुणान ।
कारणं गुण सगोऽस्य
सदसद्योनि जन्मसु ।२१।

प्रकृति में स्थित ही पुरुष प्रकृति से उत्पन्न त्रिगुणात्मक पदार्थों को भोगता है और इन गुणो का संग ही इस जीवात्मा के अच्छी-बुरी योनियो में जन्म लेने का कारण है।

अद्भुत गुणी म० हंस[illegible] के जीवन की विचित्र घटना

पं० दौलत राम जी शास्त्री

लाहौर का चिड़िया घर देखकर हम सब सैंट्रल ट्रेनिंग कालिज के ओ. टी० श्रेणी के छात्र गोलबाग में आ कर परस्पर एक विषय पर वाद विवाद कर रहे थे कि क्या आयु निश्चित है या घटती बढती है पंडितो की श्रेणी ठहरी। दो पक्ष हो गए। कोई घटा भर खूब प्रमाणो व तर्कों का आदान प्रदान होता रहा। किसी ने कहा देखो सत्यवान मर ही गया था न। सावित्र के प्रताप से फिर जीवित हो गया। रामराज्य मे शम्बूक के अवैदिक अभिचार के कारण एक व्यक्ति का पुत्र शिशुकाल मे चल बसा फिर राम द्वारा शम्बूक वध करने उपरान्त वह फिर उठ खड़ा हुआ। अमुक के ऐसा हुआ और अमुक के वैसा हुआ। कपिल ऋषि ने अपने नेत्रो की विद्युत से सगर की सारी सेना नष्ट कर दी। अमुक के वर से विवाह वेदी मे मरा हुआ दुल्हा फिर जीवित हो गया।

दूसरे पक्ष की ओर से भी तर्क मिलने लगे। अजी पुरुष को शतायु कहा है। सौ वर्ष की आयु वाला—परन्तु सुनते है बहुत बड़ी-बड़ी आयु वाले महात्मा हुए। श्वास नियत है। प्राणायाम से मनुष्य अपने प्राणो को लम्बा कर सकता है। छः छ मास की समाधि लगाने छः महीने तक श्वास रोक लेने से कितनी ही आयु की अवधि बढ जाती है। एक बोल उठे कि देखो जो घडी की गारटी दश वर्ष की हो उसको सावधानी से रखने से होश्यार मनुष्य बड़ी देर तक चिरस्थायी रख सकता है। इसी प्रकार स्वास्थ्य के नियमो का पालन करने से वैद्य लोग बतलाते है कि मनुष्य बहुत देर तक जीवित रह सकता है।

एक और सज्जन बोले। अजी आयुर्वेद शब्द के बीच में से एक मध्यमपद लुप्त हुआ है—उसका अर्थ है—वह ज्ञान जो आयु के घटने के नियमो को बतलाने वाला है उसे आयुर्वेद कहते हैं। इस से सिद्ध होता है कि विशेष नियमो से आयु बढ़ती भी है और घटती भी है। कुछ ऋषियों के वाक्य है कि 'आयुर्वै घृतम्' घृत आयुवर्धक है। कोई - कोई महाभाग घी मे अपना मुख देखने से आयु वृद्धि होती है यह कह रहे थे। इस प्रकार अपना-अपना मत पण्डित मण्डली प्रकट कर रही थी। थोडी दूर बैठा हुआ साधारण वेशी व्यक्ति पण्डितो के पास आकर कहने लगा कि महाशय मैने आपकी सब चर्चा सुनी। इस विषय में मैं भी अपना मत दे सकता हूं ?

हां कहिए, पण्डितो ने कहा।

अज्ञात व्यक्ति ने कहा कि सध्या मे हम पढते हैं 'शत जीवेम शरदः भूयश्चशरादः शतात्'। हम सौ वर्ष जीए। उससे अधिक भी। और देखिए मनु ने कहा—

अभिवादन शीलस्य
नित्य वृद्धोपसे विनः ।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते
आयु विद्या यशोबलम् ॥

जो व्यक्ति अपने बड़ो को नमस्कार करता है—और उनके पास बैठकर उपदेश सुनता है—और उनकी सेवा करता है—उसकी चारवस्तुएं बढती है—आयु, विद्या यश और बल। क्या मनु ने झूठ बोलना था। बढती है तभी तो लिखा है न !!! यही अवस्था अल्प मृत्यु में समझ लीजिए।

सभी स्तब्ध से रहे। किसी को क्या पता कि यह भी पण्डित है।

एक ने पूछा कि महाशय। आप की बात सत्य है। आप क्या काम करते है ?

अध्यापक हू एक मिडल स्कूल मे।

क्या आप जन्म से ब्राह्मण हैं ?

जन्म से कुछ भी नही, आजकल अध्यापक हू।

फिर भी हम क्या समझे ?

अजी। हरिजन ! हू।

शिक्षा कहा से पाई ?

एक महात्मा के घर की सफाई किया करता था—और वे एक तख्ते पर बैठकरर मन्त्र पाठ करते, मैं भी सुनने बैठ जाता। मुझे उनके एक भजन ने बड़ा आकर्षित किया। एक दिन मुझे उन्होंने पूछा कि तुम कुछ पढे हो ? मैंने कहा—महाराज ! विद्या-माई हमें धक्के मारती है। (क्रमशः)

(गता[illegible] से आगे)

लेकिन जब [illegible]नी [illegible] आती है तो चुपके से चो[illegible] अन्दर ही अन्दर लडकी वाले से [illegible]सीट लेते हैं और प्रत्यक्ष में लोगों को [illegible] हम ने कुछ नहीं लिया और कई लोग ऐसे भी होते हैं जो पहले तो यह कहते रहते हैं कि हम कुछ नही लेते। पैसे की क्या बात होती है? हमे तो लडकी योग्य चाहिए। लेकिन जब कोई रिश्ता करने वाला आता है तो उन का यह पहला लेने का विचार बिल्कुल खत्म हो जाता है और वह भी अपने लडके की रकम खोलने लग जाते हैं। आज लड़को की (Advance Booking) जारी है। इस दहेज रूपी दानव ने भारतीय समाज को अभिपप्त कर रखा है। यदि हम इसे अब भी नहीं छोडेगे तो हमारी नैतिक स्थिति इतनी गिर जाएगी कि लाख सम्भालने से भी नही सम्भलेगी। लेकिन प्रश्न यह उठता है कि इसे समाप्त कैसे किया जाए? जिन युवको के उदार हृदय होने चाहिए आज वह मुर्दार बने हुए है। किन्तु यह मेरा विश्वास है कि जब तक इस निन्दनीय प्रथा के विरुद्ध विद्रोह मचाने का साहस मेरे नवयुवक भाई जो मेरे देश के भावी कर्णधार है और जो मेरे देश की आशाओं के उजाले है, के हृदयो मे नही होता तब तक इस कुप्रथा का हटना असम्भव है। इस के लिए नौजवानो को प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से भाग लेना पड़ेगा। यदि इसे समाप्त करने मे अभिभावक गणो की सहमति हो तो कहना ही क्या? मगर उनकी ओर से ऐसी सम्भावना फिलहाल तो दिखाई नही देती। आगे की कौन कहे?

इसके लिए नवयुवको को आगे आकर बलिदान देना ही होगा। त्याग, बलिदान और सयम के बिना यह कुप्रथा भारतीय समाज को छोडने से रही क्योकि यह तो हमारे समाज की प्रमुख विशेषता है कि ये बुराई को ग्रहण तो शीघ्र कर लेता है पर छोड़ता देर मे है। अतः युवको को चाहिए कि वे सगठित होकर एकता के सूत्र में बंध कर प्रतिज्ञा करें कि—'हमें नही बिकना है। लड़की वालो के आसू पोछने हैं तथा लड़की की सर्द आहो से बचना है। हमने समाज को सुधारना है।' इस के लिए अपने बुजुर्गों को समझाए और यदि वह बुजुर्ग समझाने से न समझे तो वह उनकी अवज्ञा कर दें इस में कोई बुराई नही है।

ते–

दहेज

(श्रीमती अरुणा आर्य प्रभाकर जालन्धर छावनी)

यदि मेरे भाईयो मे अपनी प्यारी बहनो के जीवन को सकटापन्न न देने वाली रूढियो और कुप्रथाओ को मिटाने का साहस नही है उन्हे स्वतन्त्रता प्यारी है हम कैसे कह सकते हैं? वे किस मुख से रक्षा-बन्धन के दिन अपनी कलाई पर बहनो से शुभ राखी बन्धवाते है? ससार भी उन्हे कैसे स्वातन्त्र्य प्रिय कह सकता है।

कवि भी नवयुवको को इस बुराई कोमिटाने केलिए प्रेरित तथा उत्साहित कर रहा है।

'कुछ करलो नौजवानों,
उठती नौजवानिया है।'

मगर इसका यह मतलब नही कि यह कार्य केवल जोश दिखाने मात्र का है। हमारी कथनी एव करनी मे एकता होनी चाहिए इसके लिए काफी समय और धैर्य की जरूरत है। बिना दान के कोई कार्य भी सम्भव नही। फिर इसमे तो बहुत बडे बलिदान की आवश्यकता है। एक शायर ने इस कार्य के इतने आसान न होने की ओर सकेत करते हुए कहा है कि :—

आसा नही है मेरे वियाबान इश्क की,
काटे बिछे हुए है इस मजिल की राह मे।

युवको के गर्म खून मे वह तेजी है जिस से वह मुर्दे समाज मे प्राण फूक सकते है उसके रीति रिवाजो को बदल सकते है। देश और समाज को उन्नति के उच्च शिखर पर पहुचा सकते है और भूले भटके मानव को राह बतला सकते है। समस्त संसार के अन्दर चेतना की फूक भर सकते है। इस कठिन और पवित्र कार्य को करके आप सच्चे मनुष्य कहला सकते हैं जैसा कि एक कवि का कथन है—

जहाजो को पलट दे जो
उसे तूफान कहते है।
जो तूफानों से टक्कर ले
उसे इन्सान कहदे है।।

शादी से पहले और शादी के समय तो जो मागते है, वह अलग रहा लेकिन उसके पश्चात भी लडकी वालो का पिड नही छोड़ते। बाद मे भी लडकी को तग करना प्रारम्भ कर देते हैं। लडकी को कहते है कि तुम अपने मायके (घर) से इतने हजार रु० लाओ वरना तुम्हे मार देंगे। बेचारी लडकी अपने माता पिता की आर्थिक स्थिति से भली भांति परिचित होती है जब वह ऐसा करने से इन्कार कर देती है वह क्रूर, अत्याचारी, निर्दयी मनुष्य उसकी जीवन लीला को समाप्त कर देते है लडकी उनके दुर्व्यवहार से तंग आकर विषपान या आत्महत्या कर लेती है। ऐसी घटनाए भी नित्य हमारे सुनने व पढने मे आती है लेकिन किसी के कानो पर जू तक नही रेगती। उन मागने वाले भिखारियो से कहना है कि तुम्हारे दो हाथ दो पैर है, परिश्रम करो। परिश्रम का फल सदा मीठा होता है। मागता तो वह है जिस के घर का दीवाला निकल चुका है। लेकिन तुम मागने में अपनी शोभा समझते हो जब कि भारतीय इस बात को मानते है कि मांगने से मरना भला है!

कहा तो हमारा वह महान् उदार धर्म जो गौ तक को बेचने को निषेध करता हो, [illegible] अनुयायी अपने लडके-लडकियो तक को बेचने मे भी नही लजाते! कितना अधःपतन है। इससे बढकर दूसरा अधर्म या कुकर्म क्या हो सकता है? कुछ तो सोचो-समझो और अपने मस्तिष्क को ठिकाने लगाओ। यदि तुम्हारी दशा अब भी इसी प्रकार से रही और तुम यह कुकर्म करने से नही हटे तो समझ लो कि अब नारी अपना इतना घोर अपमान सहन न कर सकेगी। वह एक दिन उठेगी और अपनी ठंडी आहो रूपी विषैली हुकारो से तुम्हारा सर्वनाश करने मे कदाचित् नही हिचकिचाएगी, जिसे तुम अबला कहते हो वह सबला बनकर दिखला देगी। जहा नारी के हृदय मे प्रेम एव दया की भावना की कोमल तृषा है वहा अठखेलिया लेता हुआ शक्ति का तूफान भी है वह नर की अर्चना करने मे अपना सर्वस्व अर्पण कर देती है। पुरुष समझता है कि वह उस की परिचारिका है पर वह यह नही जानता है कि नारी अजस्र शक्ति का स्रोत है। वह कौन-सी कला है जिससे भारतीय नारी अपरिचित हो। नारी जब हाथ मे तलवार पकड़ती है तो दुर्गा बन जाती है। वीणा पर अंगुली रख ले तो सरस्वती का रूप धारण कर लेती है और पुरुष का दामन पकडती है तो लक्ष्मी बन जाती है।

अन्त मे इस समस्या के समाधान के लिए मै कुछ सुझाव देती हू जो कि निम्नलिखित है :—

१ दहेज न लेने और न देने का प्रचार अपने नगर मे व आस-पास मे करें क्योकि रिश्ते अक्सर समीप ही होते है।

२. भारत के मध्य वर्ग की स्थिति दिनो-दिन गिरती जा रही है। अतः दहेज की भावना उसके दिल मे बिठलाई जा सकती है। क्योकि इसका बीच रूप उसमे विद्यमान है केवल उसे पल्लवि करने की आवश्यकता है अतः इसके प्रचार मे कोई कठिनाई नही आएगी।

३ जब हम लडकी वाले से दहेज नही लेंगे तो लडके के हृदय मे भी दहेज न लेने की भावना स्वतः ही उत्पन्न होगी और सम्बन्धी बन जाने पर हम भी अपना नैतिक प्रभाव डाल सकेंगे। इसके अतिरिक्त हम रिश्ता करने से पूर्व उसे अपने लडके के लिए दहेज न लेने के लिए प्रतिज्ञा-बद्ध भी करवा सकते है।

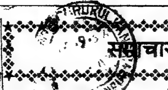
४ किसी भी कार्य के लिए बलिदान की आवश्यकता होती है और हमे यह सोचकर चलना चाहिए कि पहले व्यापार मे हानि ही होती है।

मेरे विचार मे उपरोक्त सुझाव अपनाने पर इस प्रथा को समूल नष्ट किया जा सकता है। कोई भी कार्य करना हो तो उसके करने मे पहले इस विचार को सर्वथा त्याग दें कि 'कोई क्या कहेगा' वरना आगे कदम नही बढ पाएगा। मगर इसमे काफी समय लगेगा। बीज को वृक्ष बनने मे भी तो समय लगता है और अच्छा कार्य देर सवेर अपना फल अवश्य दिखलाता है। शुभ सकल्प मे बड़ी भारी शक्ति होती है।

मैं फिर प्रत्येक नव-युवक भाई को आवाहन करती हू इस पुनीत कार्य मे व्रतनिष्ठ होने के लिए।

★ ★

★ जो-जो बुद्धि का नाश करने वाले है उनका सेवन कभी न करे और जितने अन्न सडे, बिगड़े, दुर्गन्धादि से दूषित और अच्छे प्रकार न बने हुए हों उनको भी खाना नही चाहिए।



आर्य विद्या सभा, चित्रगुप्त मार्ग, नई दिल्ली,

महात्मा हंसराज आर्य टूर्नामैंट १९६६

गत वर्षों की भांति आर्य विद्या सभा, मार्ग नई दिल्ली, के तत्वावधान में इस वर्ष भी उपरोक्त टूर्नामैंट अमृतसर, जालन्धर, चन्डीगढ़ व देहली में क्षेत्रीय स्तर पर २६ से ३० सितम्बर १९६६ तक और अन्त: क्षेत्रीय स्तर पर २ से ६ अक्तूबर १९६६ तक अम्बाला नगर मे होना निश्चित पाया है।

सभी सम्बन्धित संस्थाओं के प्रधानाध्यापकों व क्षेत्रीय अथवा अन्त: क्षेत्रीय मन्त्रियों को पार पत्र द्वारा ... के विषय में पूरी २ जानकारी दी जा चुकी है, ... र प्रवेश-पत्र भेजे जा चुकी है, चुके हैं।

इस विज्ञप्ती द्वारा प्रार्थना की जाती है, कि सभी सम्बन्धित संस्थाएं यथोचित समय पर प्रवेश पत्र भेज अथवा अन्य टूर्नामैंट में सक्रीय भाग ले, इसे सफल बनाने मे अपना अपना सहयोग दे।

टूर्नामैंट सम्बन्धी अन्य किसी भी जानकारी के लिए श्री देवराज जी महाजन एजुकेशनल एडवाईजर डी. ए. वी. कालिज प्रबन्ध कर्तृ समिति, चित्रगुप्त रोड, नई दिल्ली से पत्र-व्यवहार करे। देवराज महाजन

आर्य समाज मन्दिर भरवाई (चन्तपूरणी)

आर्यसमाज भरवाई के सर्वेसर्वा श्री पं० हरिश्चन्द्र जी शर्मा शास्त्री सूचित करते हैं कि ६-८-११ को भारी वर्षा के कारण समाज मंदिर पहाड़ की खड्ड में गिर कर चकनाचूर हो गया है। स्वर्गीय म० लड़का राम जी के परिश्रम तथा अन्य दानी महानुभावो के दान से बनाया गया मंदिर ध्वस्त हो गया है। अत इस मन्दिर के पुनरुद्धार के लिए धर्म प्रेमी दानी सज्जनो मे प्रार्थना है कि यथाशक्ति दान देकर पुण्य के भागी बने। पहाडी इलाके विशेषकर चितपूरणी के पास इस समाज मन्दिर का विशेष महत्व है। दान, मंत्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा निकट कोर्ट जालन्धर के पते भेजे।

समाचार दर्शन

आर्य समाजों में कृष्ण-जन्माष्टमी पर्व

प्रेषक श्री दयानन्द जी होशियारपुर

७-९-६६ को आर्यसमाज तलवाड़ा में जन्माष्टमी के महोत्सव पर श्रीयुत पं० रलाराम जी एम. एल.ए. व दयानन्दजी आर्य का भाषण हुआ। योगेश्वर कृष्ण के आर्य जीवन को प्रस्तुत किया गया।

आर्यसमाज मुकेरियां में ८-९-६६ को प्रात: यज्ञ के पश्चात् कृष्ण-जन्माष्टमी का पर्व मनाया गया। श्री वेदव्रत शास्त्री व दयानन्द आर्य रिसर्च स्कालर का व्याख्यान हुआ।

आर्य कुमार सभा मुकेरिया में स्थापित हो गई है। जिसके प्रधान सतीन्द्र व मन्त्री शचीन्द्र हैं।

आर्य वीर दल बजवाड़ा मे ८-९-६६ को मडलपति श्री चन्द्रप्रकाश आर्य रिसर्च स्कालर का प्रभावशाली प्रवचन हुआ।

आर्यसमाज रोहतक में आर्य-वीर दल की साप्ताहिक शाखा में ६० से ऊपर आर्य युवक आते हैं। श्री विष्णु मित्र जी उत्साह से संचालन कर रहे हैं।

अमृतसर में तीन आर्य वीर दलों के चलाने का कार्य श्री करनैलसिंह विद्यावाचस्पति कर रहे हैं।

तलवाड़ा में आर्यसमाज के मन्त्री श्री मुन्शीराम जी आर्यवीर दल की साप्ताहिक शाखा खोल रहे हैं।

आर्यसमाज बजवाड़ा में २८-८-६६ व ४-९-६६ के साप्ताहिक सत्संगों में अखिल भारतीय दयानन्द साल्वेशन मिशन के प्रधान श्री प्रि० रामशरण जी के प्रभावशाली व्याख्यान हुए।

वैदिक साधन-आश्रम यमुना नगर (अम्बाला)

का ...

पन्द्रहवां वार्षिक साधना शिविर

२८ सितम्बर से २ अक्तूबर १९६६ तक दिन बुध, वीर शुक्र, शनि, और रविवार श्रद्धा और समारोह से सम्पन्न होगा। इस अवसर पर संन्यासी महात्माओ, महाविद्वानो, प्रसिद्ध नेताओ व गायनाचार्यो के पधारने की पूर्ण आशा है।

प्रतिदिन प्रभात को आध्यात्मिक शिक्षण, प्राणायाम और योग सम्बन्धी प्रवचन हुआ करेंगे अत: आप स्वयं तथा अपने बन्धुओं समेत आवश्यमेव पधार कर इस धर्म सम्मेलन की शोभा बढावें।

स्वा० सत्यानन्द सरस्वती, अध्यक्ष

शुभ ...

श्री पं० हरिश्चन्द्र जी शास्त्री पुरोहित आर्य समाज पुराना मण्डी तथा भरवाई आर्य समाज के सर्वेसर्वा के भतीजे श्री जगदीश जी का ... विवाह संस्कार सम्पन्न हो रहा है। इस के उपलक्ष में आर्य परिवार की ओर से नव-दम्पती को शुभ कामनाएं प्राप्त हों।

★ १८ से २५ सितम्बर तक वार्षिकोत्सव मनाया जा रहा है। सब धर्म प्रेमी इस अवसर पर पधार कर धर्म लाभ प्राप्त करें —व्यवस्थापक

आर्यसमाज पुल बंगश देहली

१. आर्यसमाज मन्दिर पुल बंगश दिल्ली में वेद सप्ताह के उपलक्ष में वेद कथा १८-९-६६ से २५-९-६६ तक प्रति दिन रात्रि ९ से १० बजे तक श्री पं० खुशीराम जी शा० करेंगे।

२. कथा से पूर्व ८ से ९ बजे तक श्री पं० देशराज जी के मनोहर भजन हुआ करेंगे।

३. आर्य युवक परिषद दिल्ली सचालित सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा में आर्य समाज पुल बंगश केन्द्र से ५० परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी। इस का श्रेय श्री विजय कुमार चौधरी को है।

भवदीय—सुरेश कुमार मन्त्री

आर्यसमाज विक्रमपुरा जालन्धर

१८-९-६६ रविवार को प्रात: दैनिक कार्यवाही के बाद श्री आदरणीय पुरोहित जी का व्याख्यान होवेगा।

नोट—स्त्री समाज का साप्ताहिक सत्संग शनिवार को दोपहर बाद तीन बजे से पांच बजे तक होता है। सभी माता तथा बहिनों से प्रार्थना है कि समय पर पधार कर अनुगृहीत करें।

मन्त्री आर्य समाज

मुद्रक व प्रकाशक प्रो० वेदप्रकाश मलहोत्रा एम. ए. आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P.

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे — वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६, अंक ३९) १० आश्विन २०२३ रविवार—दयानन्दाब्द १४२— २५ सितम्बर १९६६ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

अगर अब हमला हुआ तो सीमा लाहौर के पार बनेगी

मे. ज. महेंद्र सिंह ने जनता से निर्भीक रहने को कहा

बाघा सैक्टर के एरिया कमाडर मेजर जनरल महेन्द्रसिंह ने आज एक स्वागत समारोह में घोषणा की कि अमृतसर और दूसरे सीमान क्षेत्रो की जनता बिल्कुल न घबराये। पाकिस्तान को इतनी जबर्दस्त मार पड चुकी है कि वह कई साल तक जंग करने का नाम नही लेगा। लेकिन अगर उसने गलती की तो इस बार इच्छोगिल नहर सीमा नहीं रहेगी बल्कि लाहौर से भी आगे जाकर बनेगी।

जनरल महेन्द्रसिंह ने जनता से कहा कि वह बिना खटके अपना कारोबार करती रहे। हम यहा बैठे हुए हैं, कोई आख उठा कर भी हमारी सीमा की ओर नही देख सकता। पाकिस्तान को अच्छी तरह मालूम है कि भारत एक चट्टान है और चट्टान से टकराना अपना सिर फोडना है। बाघा सैक्टर की लडाई का जिक्र करते हुए जनरल ने कहा कि ७ से ११ सितम्बर तक इस सैक्टर मे जो लड़ाई लड़ी गई, वह दुनिया मे अद्वितीय हैं। जितनी मार इस सैक्टर में पाकिस्तान को पड़ी है, उतनी किसी दूसरी जगह नही पड़ी।

वे दा मृ त

शत्रु की पसली तोड़ दूंगा

शप्तारमेतु शपथो यः सुहार्त् तेन नः सह।
चक्षुर्मन्त्रस्य दुर्हादः पृष्टीरपि शृणीमसि ॥

अर्थ:—मेरा अटल विश्वास है कि (शप्तारम्) शाप देने वाले को, मेरा बुरा चिन्तन करने वाले को (एतु शपथः) उसका शाप व बुरा चिन्तन उसीको ही प्राप्त होगा। जो मनुष्य (सुहार्त्) अच्छे दिल वाला है, सुमना है (तेन नः सह) उसके साथ हमारा साथ है, वह हमारा साथी है। हम नेक के सहयोगी हैं। जो (चक्षुर्मन्त्रस्य) आखो से टेढा देखता है, जिसकी दृष्टि क्रूर व दुष्ट है तथा जो (दुर्हादः) बुरे मन वाला है, जिसके विचार नीच हैं ऐसे मनुष्य की हम (पृष्टीः अपि) पसलियो को (शृणीमसि)तोड़ डालेंगे।

इस का भाव यह है

प्रभु का ऐसा नियम है कि जो शत्रु बन कर किसी के लिए बुरा सोचता है, उसका स्वय बुरा होता है जो किसी के लिए कुआ खोदता है, उसमे स्वय ही गिरता है। इसी प्रकार जो भी बुरा व्यक्ति राक्षस या शत्रु बन कर हमे शाप देता है, हमारा अनिष्ट चिन्तन करता है, वह शाप उसे स्वय ही हानि पहुचाता है, हम तो नेक लोगो के साथी हैं, सहयोगी हैं। जिसकी आखे मैली दुष्टता से भरी हुई हैं, जिस का दिल काला है। विचार नीच छोटे तथा बड़े ही खोटे हैं। हम उस की तो पसलिया तोड डालेंगे। उस राक्षस को, चोर, लुटेरे, शत्रु को कभी भी जीवित छोड़ेंगे नही —अथर्व २—७—५

★ शांति अंदर की चीज है बाहर की नही। शान्ति मनमे आएगी। ज्ञान मे विचार से शांति मिलती है सक्षेप में कहता हू जिस समय हम हृदय को आर्द्र करते हैं उस समय भगवान छू गए होते है। ज्ञानी ज्ञानाग्नि मे पाप की वासनाओ को दग्ध करते है। हम ज्ञानी नही। अज्ञानी दो बातो मे होता है। जिस को जानता है मानता नही। वह कर्म फलदाता सब मे समाया हुआ है। उसको देखते हुए भी मानते नही कि हमारे साथ परमेश्वर क्या करेगा ! प्रायः सर्व साधारण आदमी इसकी उपेक्षा करते हैं।

ऋषि दर्शन

सर्वेभ्यो महत्तरम्

वह ब्रह्म सबसे महान् है। संसार में सूर्य आदि लोकांतर भी बहुत हैं, जिनका ज्ञान प्राप्त करते मानव दिमाग चकरा जाता है। परन्तु ब्रह्म इन सबसे महान् है, पूज्यतम है। उसी की पूजा करनी है।

प्रकाश स्वरूपम्

वही सर्वव्यापक महान् भगवान् प्रकाश स्वरूप है, ज्योतिर्मय है। जितने भी प्रकाश देने वाले पदार्थ विश्व मेहैं, येसारे उसी की आत्मा से भासित प्रकाशित हो रहे हैं। उसी की इनमे ज्योति है। उसी महान् सूर्य से चमकते हैं।

सर्वज्ञं करुणामयम्

यह ब्रह्म सर्वज्ञ है, सबकी सब क्रियाओ को जानने हारा है। उससे किसी भी वस्तु, भाव को गुप्त नही रखा जा सकता। वह परमात्मा करुणामय है, दयालु, दया के सागर हैं। सब पर दया करते रहते हैं।

सर्वत्र व्याप्तः

वह महान् भगवान् सर्वत्र-व्याप्त है, सर्वव्यापक है, कोई भी स्थान, दिशा या लोक ऐसा नही हैं, जहा उस परमसत्ता की सत्ता का परिचय न मिलता हो। मानव उससे बचकर किसी स्थान पर भी जाकर कोई कार्य नही कर सकता।

भा ष्य भू मि का से

अधिष्ठाता—प्रो० वेद प्रकाश एम० ए०)अंग्रेजी तथा हिन्दी)

सम्पादक—त्रिलोक चन्द शा

विचित्र अश्व

श्री पं० सत्यप्रिय जी शास्त्री सिद्धान्त शिरोमणि
प्राध्यापक—दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार

बृहदारण्यकोपनिषद् का आरम्भ एक महान अश्व के वर्णन से होता है। वह अश्व संसार ही है। 'अश्नोत्यध्वानमित्यश्व:' इस निरुक्ति के अनुसार शीघ्रगामी पदार्थ का नाम अश्व है। संसार की गति बड़ी तीव्र है। इसीलिये इसे जगत अर्थात निरन्तर बिना रुके चलने वाला कहा गया है। मनुष्य उत्पन्न होता है। उसकी बाल्यावस्था खेलकूद मे समाप्त हो जाती है। जीवन का वसन्त काल नवयौवन रगरलियो तथा मेलो, उत्सवों की रंगीनियो में बीतता अनुभव नही होता है। जब सामने आयु का पतझड़ अर्थात बुढ़ापा अपने भयावने हाथो को पसारे खडा दिखाई देता है, तब मनुष्य अपने पिछले जीवन पर एक विहगम दृष्टि डाल कर अफसोस के साथ हाथ मसलता दिखाई देता है। उसे ऐसा लगता है कि मानो कल की ही बात है कि मैं नन्हा मुन्ना था जब घुटनों के बल सरकता था, जीवन का सुनहरीकाल यौवन उसे स्वप्न सा दिखाई देने लगता है। इस प्रकार मनुष्य जीवन के झझटो मे फसकर अपने बीतते समय की तेज रफ्तार को अनुभव नही करता है। परन्तु ससार तो अश्व तीव्र गति मे प्रयाण करने वाला ठहरा वह किसी के लिये क्यों रुकेगा। विभिन्न कोटि के मनुष्य इस ससार का कैसे उपभोग करते है, उपनिषद के उक्त स्थल मे ही इस तत्व का बडी अच्छी तरह निरूपण किया गया है। 'हयो भूत्वा देवान वहत' अर्थात ससार हय प्रेरक हो कर देवो को अपनी पीठ मे ढोता है। देव लोग इस विश्व मे एक प्रेरणा प्राप्त करते है। वे ससार की प्रत्येक स्थूल तथा सूक्ष्म रचना मे विश्वात्मा के स्वरूप ज्ञान एव उसकी उत्कृष्ट कला वृति मे सात्विकता की प्रेरणा लेते हैं। उन्हे सूर्य की अरुणप्रभा मे चन्द्रमा की शीतल रश्मियो मे तथा नक्षत्रो की झिलमिलाहट मे भी एक अलौकिक दिव्यता के दर्शन होते है वे जड पदार्थो की अटलता से धर्म पथ की अडिगता की सीख लेते है। वे वृक्षो, नदियो तथा पर्वतो से परहित जीवन अर्पण का पाठ पढते है। ससार की रचना उनके जीवन की पाठशाला बन जाती है, जो उन्हे जीवन की हर प्रकार उन्नति का मूलमन्त्र सिखाती है। 'वाजी गन्धर्वान' अर्थात विलासी लोग ससार से भोगों का पाठ पढते हैं। भोगप्रवृत्ति वाले ब्राह्म वेला, चन्द्र की शीतल किरणों तथा हरे.भरे पर्वतों से एन्द्रिक भोगो की शिक्षा लेते हैं। वे सात्विकता में भी रजोगुण के दर्शन करते हैं। ससार की पवित्र से पवित्र रचना एवं वस्तु मे विषय वासनाओं के चित्रो को देखते हैं। वे ससारको शरीर तृप्ति का साधन समझते हैं। वे फूल की कोमलता में भी अपनी प्रेयसी के रूप को देखते हैं। वृक्ष के हिलते पत्तो को अपनी कामिनी का बुलाने का इशारा समझते है। साराश उनका दृष्टिकोण भोग प्रधान होता है। 'अर्वा असुरान' अपने प्राण पोषण मे रत लोग इससे हिसा रूप मे अपनाते है। उन्हे ससार की सात्विक से सात्विक रचना को नष्ट करने में इसलिये कोई दर्द नहीं होता, क्योकि उससे उनके प्राण पुष्ट होते है। आज बेजुबा प्राणियो के गले पर छुरी चलाकर उनके खून मास से अपने पेट की आंते रंगकर पेट को उन गरीबो का कब्रिस्तान बनाने वाले लोग क्या इस कोटि मे नही है। अपने पेट की दुहाई देकर लाखो गरीबो के गले पर छुरी चलाकर उनका पेट काट कर अपना पेट बढाने वाले, चोर, रिश्वतखोर, ब्लैक करने वाले क्या इस पदवी के अधिकारी नही है। ऐसे ही पुरुषो का समूह असुर समुदाय कहाता रहा है। "अश्वो मनुष्यान" इस मे गति की प्रेरणा लेते है वे सोचते हैं कि समय बीतता जा रहा है अत: शीघ्र अपने कार्य करो। क्षण मे प्रलय होगी फिर करोगे कब। ऐसे लोग ईश्वर की प्रत्येक रचना से धर्म मीमासा करते है। परमेश्वर की प्रत्येक कला से अपने कर्तव्य पालन की शिक्षा लेते हैं। वे जगन्नियन्ता की हरेक शिल्प कला से शिक्षा लेकर अपने को वास्तविक मनुष्य बनाने का यत्न करते हैं। इस प्रकार एक ही ससार से चार प्रकार की प्रवृत्ति वाले पुरुष विभिन्न-शिक्षाये लेकर अपने जीवन को विताते है। हम सब मिल कर सोचे कि हम इन चारो में से कौन से वर्ग मे हैं। क्या सासारिक रचना से हम आत्म कल्याण कर रहे हैं अथवा अपना पतन करने मे ही अपने कर्तव्यकी इति श्री समझ रहे हैं।

हुंकार

(श्री सुन्दर लाल जी बोहरा, रंगा भवन, जोधपुर)

आज दूर हट गई युगों से
ये लगी जंग बन्दूकों की
आज तालियां खुली पडी हैं
भूमि में गड़ी सन्दूकों की
बेझिझक मोर्चा लेना है
लोहू तो आखिर देना है
आज शहीदी वक्त आ गया
निकलो पहन बसन्ती चोला
आज धमनियां फड़क उठी हैं
हाथो मे बम्ब हो हथ गोला
मुण्डों की माल सजानी है
काली को आज चढ़ानी है

गम खाना तो बहुत बुरा है
चाहे हो मोहताज गरीबी
भून चलो शठ को शोलो से
दुश्मन करता जाल फरेबी
मारू की मद पी जानी है
अरि सेना आज भुलानी है
मस्त सभी हम भारत वाले
लेकिन रण में महाकाल है
पाक बने नापाको सुन लो
भारत वाले महाव्याल है
बम शिव की नीद जगानी है
तृतीय आख खुलवानी है

भय को तो हम भगा चुके हैं
जब से राणा ने रण खेला
मौत मराठे जीत चुके है
खडग शिवा जी ने जब झेला
हम को करनी कुरबानी है
जैसे हो, जीत बुलानी है
मरु की आंधी को बोलो रे
कौन रोकने वाला जग में ?
लाल आख कर चले शेर जब
कौन रोकने वाला मग मे ?
हर माद शेर को छानी है
दुश्मन को मुंह की खानी है

पक्ष न्याय का सदा सबल है
हर पल पर इतिहास कह रहा
सदा सत्य की जीत रहेगी
पात पात में पवन कह रहा
जीवन की यही कहानी है
लोहू की नदी बहानी है
हम घुटी मे सीख चुके हैं
टूट चलो लेकिन मत झुकना
बर्फ गिरे अगार पड़े तुम
मरना या आगे ही बढ़ना
यौवन की कसम दिलानी है
आजादी हमें जिलानी है

★ यज्ञ करने के बाद यज्ञ के सामने शुद्ध रहने की प्रतिज्ञा करके हमेशा शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा को बुरे विचारो तथा बुरे कर्मों से दूर रखने का पूरा प्रयत्न करना चाहिए। यही शुद्धि करना है।

(गतांक से आगे)

प्रस्तुत घटनाओं के क्रम और रूप से पता चलता है कि अराष्ट्रीय तत्व किस भीषणता पर उतर आए हैं? जैसे—(१) ७ जूनको नेल्लूर की गीता कुमारी नामक लडकी का अपहरण हैदरगुडा के मकान से अर्धरात्रो को किया जाता है। (२) ३१ जून को शालीबण्डा मे एक नवजवान शंकर का वध किया जाता हैं। (३) पहली जुलाई को गुलजारहौज से मिट्टी के शेर तक के क्षेत्र मे बीच बाजार एक साधारण सी बात पर एक दल शस्त्र सन्नद्ध होकर आता है और दिन-दहाड़े दुकानदारो और रास्ता चलने वाले राहियों पर अन्धाधुन्ध आक्रमण कर अशांति उत्पन्न कर देता है। (४) ६ जुलाई को 'मेलाद-उल-नबी दिवस' के अवसर पर नुमाईश मैदान में हिन्दु अवकाफ बोर्ड की ओर से बाला जी मन्दिर में प्रस्थापित नन्दी की मूर्ति का शिर खण्डित कर दिया गया। शहर के पुराने भाग में ७ स्थानो पर जिनमे अलियाबाद, शालीबण्डा और जलालकूचा (हुसैनी अलम) भी सम्मिलित है, वह सब गुण्डागर्दी के क्षेत्र बने हुए है। यहा किसी सभ्य राही का चलना दुस्तर हो गया है।

तेलगाना क्षेत्रीय जिलो के कुछेक स्थानो पर भी शहर की इन घटनाओं का प्रभाव पडा है। और कई एक स्थानो से शांति भगता के समाचार उपलब्ध हो रहे हैं। पिछले वर्ष जुलाई के मास मे ही मादन्नपेठ मे हगामा हो हो गया था। इस दुर्घटना से घायल उस्मानिया चिकित्सालय मे चिकित्सा के उपरान्त स्वास्थ्य लाभकर निकले तो उस समय भी 'पाकिस्तान जिन्दाबार' 'कांग्रेस मुर्दाबाद' के नारे लगाये गये। कुछ वर्ष पूर्व बोधन आदि मे भी पाकिस्तानी ध्वज लहरानेकी दुर्घटनाए घटी थी।

आर्य प्रतिनिधि सभा और ऐसी ही अन्य राष्ट्रवादी शांति समर्थक सस्थाओ ने इस प्रकार की सारी दुर्घटनाओ के बारे मे जो समय-असमय घटती रही हैं खुले और सार्वजनिक रूप में इनकी तीव्र निन्दा करती रही हैं। और इस सम्बन्ध में अपने दृष्टिकोण को राज्य के कर्णधारों तक पहुचाया भी। किन्तु, राज्य की उपेक्षा और विशेषकर गृह विभाग व पुलीस की पक्षपातपूर्ण व्यवहार और इसकी अकर्मण्यता ने राष्ट्र विरोधी तत्वों को प्रोत्साहित ही किया है। जिसके परिणाम स्वरूप अब कोई दिन

हैदराबाद नगर में साम्प्रदायिकता के उभरते चिन्ह !

स्मरण-पत्र

जो कि

माननीय मुख्य मन्त्री जी,

आन्ध्र प्रदेश की सेवा में समर्पित किया गया

खाली नही जाता कि कहीं कोई छोटी बडी दुर्घटना न हो जाए। क्या ऐसी दुर्घटनाएं जिनका कि संक्षिप्त: ऊपर उल्लेख किया गया है, हमारी राज्य व्यवस्था और अधिनियम के लिए शांति प्रस्थापन के मार्ग में खुली चुनौती नही हैं? जो एक ज्वलन्त प्रश्न है।

(अ) सरकारी भाषा विधेयक—

इस विधेयक का धारा ७ मे उर्दू के विशेष रूप से उल्लेख किया गया है जब कि राज्य में अन्य अल्प सख्यको की भाषायें जैसे मराठी, कन्नडी, तामिल उड़िया आदि बोली जाती हैं। विधेयक मे इन अल्प सख्यकों की भाषाओ का कोई उल्लेख नही है जिससे यह अनुमान होता है कि राज्य सरकार इन भाषाओ को अल्प सख्यको की भाषाओ के रूप मे स्वीकार करती भी है कि नही ?

(ब) शिक्षा विभाग आन्ध्र प्रदेश की कार्यवाही—

आर.सी.न. ३७८। जे. ११.३.६५ दिनाक १३-९-१९६५

इसके द्वारा कालेज छात्रवृत्तियो के लिये मुसलमानो को सरक्षण दिये गये हैं।

(क) शिक्षा विभाग आन्ध्र प्रदेश की नियम म० १३४—

इस नियम द्वारा उर्दू माध्यम के स्कूलो मे शुक्रवार को पूरे दिन की छुट्टी देने की घोषणा की गई है।

उर्दू को हिन्दुओ और मुसलमानो दोनो की भाषा कहा जाता है, परन्तु आश्चर्य है कि उर्दू माध्यम के स्कूलो में शुक्रवार को पूरे दिन की छुट्टी की घोषणा कर दी गई है।

(ख) शिक्षा विभाग आन्ध्र प्रदेश से सम्बन्धित नियम संख्या २०४ व २१९ (३)—

इस नियम के अनुसार शिल्प कला तथा व्यावसायिक विद्यालय तथा महाविद्यालयों मे सम्पूर्ण मुस्लिम बालको को आधे शुल्क की सुविधा स्वीकार की गई है।

यह एक लज्जास्पद ऐसी सुविधा है जो खुले बन्दों पक्षपातपूर्ण साम्प्रदायिक मनोवृत्ति का प्रदर्शन करती है। यहां विचारणीय विशेष यह भी है कि इन विद्यालयो में जो उर्दू माध्यम द्वारा सचालित हैं और उनके द्वारा कई एक गैर मुस्लिम छात्र भी लाभान्वित होते हैं व राज्य द्वारा यह जो शिक्षण संस्थायें, आर्थिक आदि सहयोग प्राप्त करती हैं इनके लिए राज्य का इस प्रकार का पक्षपातपूर्ण साम्प्रदायिकता पोषक व्यवहार राष्ट्रीय सगठन और निष्पक्ष राष्ट्रीय सरकार के उच्चादर्शों के अनुरूप हो सकता है। स्वय दूरदर्शी निष्पक्ष मुसलमानो ने ऐसे पक्षपातपूर्ण व्यवहार के लिए चिन्ता व्यक्त की है और इन्हें अनुचित एव अनावश्यक बताया है। साथ ही ऐसे अदूरदर्शी प्रयत्नो ने जनता के बहुत बडे भाग को विचारने पर विवश कर दिया है कि स्वय सत्ताधारी राज्य के कर्णधार और हमारे अवसरवादी कांग्रेसी नेता कहीं द्विराष्ट्र सिद्धात के उस दृष्टिकोण का स्पष्ट या अस्पष्ट समर्थन तो नही कर रहे है कि जिस मे दक्षिण मे इनके इन्ही प्रयत्नो के परिणामस्वरूप एक और पाकिस्तान की प्रस्थापना को प्रोत्साहन प्राप्त हो सके।

गाय के विशुद्ध आर्थिक प्रश्न के प्रति भी मुसलमानो ने इसके वध द्वारा अन्यो की भावनाओ को ठेस पहुचाने का भयावह हथियार बना लिया है। सिकन्दराबाद और हैदराबाद मे बीच बाजार गौहत्या की कई घटनाये घटी है जिस से कि हिन्दुओ की भावनाओ को आघात पहुचाकर उत्तेजित किया जाये इसके अतिरिक्त भी गौ मास की दुकाने गली-गली खोली जा रही है और इन मे ऐसी दुकानो की सख्या बहुतायत से है जो अपने अनुमति-पत्र नही रखतीं। गौ हत्या को तत्काल रोकने की आवश्यकता है।

हमें किसी जाति या सम्प्रदाय के आधार पर किसी से भेदभाव का व्यवहार अपेक्षित नही किन्तु जब राष्ट्र की अखण्डता और राष्ट्रीयता सगठन पर ऐसी घटनाये प्रभावकारक होती दिखाई दे रही हैं तो हम इस स्थिति मे केवल मौन दर्शक की भाँति निष्प्राण नही बैठ सकते। हम अन्त मे मांग करते हैं कि—

१. अराष्ट्रीय सरकारी गश्तियों को रद्द किया जाए।

२. शासन व प्रबन्ध को विधिवत् ठीक करने के लिए पुलिस में उपस्थित अराष्ट्रीय तत्वों को निकाल बाहर किया जाए।

३. पृथकीकरण की भावनाओं को फैलाने वाले जिम्मेदार लोगो के विरुद्ध ठोस कदम उठाये जाए।

४. मजलिस इत्तिहादुल मुसलमीन पर तत्काल पाबन्दी लगा दी जाए।

यदि उपरोक्त इन मांगों की पूर्ति शीघ्र न की जाएगी तो हम राज्य की बिगड़ी हुई स्थिति को सुधारने के लिए और दूसरे उपाय सोचने पर विवश होंगे।

हम है आपके—

प० नरेन्द्र प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण, सुलतान बाजार हैदराबाद। महन्त बाबा सेवादास, प० हरिनारायण शर्मा, प० वी० वीरभद्रराव, प० राजाराम शास्त्री।

✶ ★ ✶

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा देहली का

वार्षिक निर्वाचन

प्रधान—श्री दीवान चन्द्र जी ठेकेदार, उपप्रधान—स किशनचन्द्र जी, श्री आर. सी. सूद, श्री दयाराम जी शास्त्री, मन्त्री—श्री आसानन्द जी राजेन्द्र नगर, उपमत्री—श्री गौरीशकर जी, श्री ओमप्रकाश जी तलवाड, श्री दरबारीलाल जी एम ए., कोषाध्यक्ष—श्री बृजलाल जी सोनी, लेखानिरीक्षक—श्री देवराज जी कोछड।

दरबारी लाल
उपमत्री

आर्य समाज मंडी (H.P.)

१-१०-६६ से ९-१४-६६ तक आर्यसमाज मडी का वार्षिकोत्सव सम्पन्न हो रहा है। इस अवसर पर प० जगतराम, बस्तीराम जी की मडली के मनोहर भजन प्रतिदिन हुआ करेंगे। १-१०-६६ से पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की कथा हुआ करेगी सब धर्म प्रेमी इस अमृत-वर्षा से लाभ उठाए।

चेतराम बहल
मन्त्री समाज

✶ जो सच्चे अर्थ मे देवता हैं उनकी पूजा अर्थात उन से यथायोग्य व्यवहार करना ही देवयज्ञ है। पत्थर तथा वृक्ष देवता नही और न ही पूजने योग्य हैं।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

(१) गुरुकुल के जीवन महाविद्यालय में रसायन शास्त्र, वनस्पति शास्त्र और जन्तु शास्त्र में स्नातकोत्तर (एम०एस०सी०) कक्षाएं प्रारम्भ हो गई हैं। उद्घाटन समारोह माननीय उपकुलपति जी की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें यज्ञ के उपरान्त आचार्य जी का उपदेश और उपकुलपति जी का अभिभाषण हुआ। ... गुरुकुल की ... के विकास एवं आध्यात्मिकता का ...

(२) यह प्रसन्नता की बात है कि इस वर्ष गुरुकुल के सभी विभागों में प्रवेश अधिक हो रहा है। इस समय तक गत वर्ष की अपेक्षा लगभग ३५० छात्र अधिक हो गए हैं। यह उत्साहपूर्वक होने के साथ-साथ गुरुकुल की सर्वप्रियता का द्योतक है।

(३) गुरुकुल के कार्य शान्तिपूर्वक चल रहे हैं। वर्षा-ऋतु में प्राकृतिक वातावरण मनोरम रहा और अब तो और अच्छा होता चला आ रहा है। दो-चार ब्रह्मचारियों को छोड़कर, जिन्हें ज्वर और खांसी का कष्ट है, सब का स्वास्थ्य ठीक है।

महेन्द्र प्रताप शास्त्री
उपकुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता

मारीशस मंत्री जी का आर्यजगत के सम्पादक के नाम पत्र

पूज्य सम्पादक जी,

सप्रेम नमस्ते !

मुझे आर्य जगत का महात्मा देवीचन्द विशेषांक और वेदांक सम्बन्ध ... प्राप्त हुआ, पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। ... इसके लेख तथा कविताएं आदि पठनीय हैं।

मेरी दृष्टि में आप एक उच्चकोटि के सम्पादक हैं आप अपने विचार बड़े सरल और सुबोध भाषा में प्रस्तुत करते हैं आप की लेखनी में काफी शक्ति है जिसकी प्रशंसा जितनी की जाए कम ही है। आर्य-जगत की निरन्तर उन्नति के लिए श्री ईश्वर जी से प्रार्थना करता हूं कि, यह पत्रिका सदा इसी प्रकार फूलती-फलती रहेगी।

विद्यानन्द रामदयाल, सेंठपेर
मोरिशस टापू

आर्यसमाज यूसफ सराय (ग्रीन पार्क) नई देहली

श्रावणी उपाकर्म, वेद प्रचार सप्ताह तथा जन्माष्टमी का पर्व बड़ी सफलता के साथ मनाए गए। वेद सप्ताह की पूर्णाहुति पं० सत्यपाल जी शर्मा एम ए ने यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय से समाप्त की। जन्माष्टमी पर्व पर आ० धर्मविन्द जी व प्रो हरदेव जी शास्त्री के सारगर्भित व्याख्यान हुए। वेद प्रचार का कार्यक्रम नगर के भिन्न भागों में प्रातः सायं होता रहा। ... दोनों काम करती रही इस अवसर पर १६०/- वेद प्रचारार्थ समाज को प्राप्त हुआ—देशराज कोषाध्यक्ष प्रधान समाज

आर्य युवक समाज दयालपुरा करनाल में वेद-प्रचार सप्ताह

तारीख २१-८-६६ से ३०-८-६६ तक नगर के भिन्न-भिन्न मुहल्लों में वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया जिसमें व्याख्यानों के अतिरिक्त ठा० दुर्गासिंह जी तूफान व महाशय नत्थूराम के रसीले भजन प्रतिदिन होते रहे। मुहल्लों के निवासियों ने बड़ी प्रेम और श्रद्धा के साथ धर्म लाभ प्राप्त किया तथा अपना पूर्ण सहयोग देते रहे। इस अवसर पर ट्रस्ट की ओर से वैदिक साहित्य आधी कीमत पर वितरण कर के नवयुवकों का उत्साह-वर्धन किया गया। ट्रस्ट की ओर से वेद के इच्छुक युवकों को १/४ मूल्य की सहायता दी जाती है। —मन्त्री आर्ययुवक समाज दयालपुरा, करनाल

आर्य समाज खंडवा (पूर्व नीमाड़) M P

३०-८ ६६ को प्रातः ७॥ बजे से श्रावणी पर्व समारोह पूर्वक मनाया गया। अक्षय कुमार मन्त्री द्वारा ... साधारण कार्यवाही के बाद नए यज्ञोपवीत धारण कराए गए। हैदराबाद शहीदों को श्रद्धांजली भेंट की गई।

वेद प्रचार सप्ताह पर भिन्न २ महानुभावों के भाषण और भजन आदि होते रहे। वेद मन्त्रों की व्याख्या का मुख्य कार्यक्रम चलता रहा।

८ ९ ६६ को साय ६॥ बजे से जन्माष्टमी पर्व मनाया गया। दैनिक कार्यवाही के बाद मगीलाल जी तथा मन्त्री आर्यकुमार सभा और सुखरामजी आय सिद्धात शास्त्री ने योगीराज श्री कृष्ण के जीवन पर भाषण दिए।

अक्षय कुमार मन्त्री आर्यसमाज

... हमारे ... घर की सफाई करना, ... अपनी सफाई नहीं रख सकते ... मैले, बस्त्र मैले, भली ... फिर ... पढ़ाता भी कौन है? ... अच्छा दूसरे ... ऐसी इच्छा अवश्य है।

मेरी बातों से महात्मा का मन पसीज गया। बोले, हाथ पैर धो के आओ, मैं तुम्हें नित्य पढ़ाया करूंगा। सफाई का ध्यान करके ... कहा कि इसी जन्म में पण्डित बनोगे। उनकी कृपा से मैं जो कुछ बना हूं आपके सामने हूं। मैंने मनुस्मृति पञ्चतन्त्र, रघुवंश आदि पढ़े, फिर उन्होंने एक पण्डित से उनका प्रबन्ध कर दिया। महात्मा जी के पास एक उसी प्रकार का कोई उन का मित्र कभी-कभी आता था, वह पं० जी को मासिक वेतन दे जाता। अब मैं अपने पैरों खड़ा हूं और अपने भाई हरिजनों को पढ़ाया करता हूं। भाई साहिब। उस महात्मा का क्या नाम? हम भी उनका दर्शन करें पण्डितों ने पूछा।

हरिजन पण्डित ने कहा 'प्रातः स्मरणीय महात्मा हंसराज जी' सबने एक स्वर से कहा—

"कीटोऽपि सुमन संगादारोहति सतांशिर"

नोट—मासिक वेतन देने वाला सज्जन पासला का एक धनी आर्य समाज का कबीर भक्त ला० काशी राम था। —लेखक

★ ★

मुद्रक व प्रकाशक प्रो० वेदप्रकाश मल्होत्रा एम ए, आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा ... कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मासिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफान नं० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे   वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६, अंक ४८)   १७ आश्विन २०२३ रविवार—दयानन्दाब्द १४२— २ अक्तूबर १९६६   (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

हिंदी का राष्ट्रभाषा के पद पर शोभित होना निश्चित : देसाई

अंग्रेजी को त्यागे बिना स्तर व शक्ति का विकास असंभव

२३ सितम्बर—भूतपूर्व वित्त-मन्त्री श्री मोरार जी देसाई ने आज यहां कहा कि हिंदी का राष्ट्रीय भाषा के रूप मे विरोध करने वालो को यह सोचना चहिए कि वे देश को कहा ले जाएगे। उन्होने कहा : यह निश्चित है कि बहुत लम्बे समय से पूर्व ही हम हिन्दी को राष्ट्रभाषा पाएंगे।

अखिल केरल हिंदी प्रचारकों की प्रसभा का उद्घाटन करते हुए श्री देसाई ने कहा कि जब तक हमारे देश की अंग्रेजी के अलावा, एक राष्ट्रीय भाषा नही, होती, हम भारत की शक्ति और स्तर का विकास करने के योग्य नही हो सकते। कुछ लोग यह सोचते हैं कि हिन्दी को अधिक महत्व देने से प्रादेशिक भाषाए कमज़ोर होगी। श्री देसाई ने कहा कि देश की सभी चौदह भाषाए सीखना सभव नही। उन्होने हिदी प्रचारको से कहा कि वे जनता मे हिदी का उत्साह मे प्रचार करें ताकि अंग्रेजी का स्थान हिंदी को देने की प्रक्रिया द्रुत बनाई जा सके।

आप ने कहा कि स्वतन्त्रता से से पूर्व लोगों को हिंदी को भारत की भाषा बनाने मे कोई आपत्ति नहीं थी। लेकिन स्वतन्त्रता के बाद कुछ लोग हिंदी को शका से देखने लगे हैं। उन्होने कहा कि हिंदीके समर्थको का प्रादेशिक भाषाओं को कमजोर बनाने का कतई इरादा नहीं।

वे दा मृ त

हे वीर ! तू महान है

बरामहां असि सूर्य बडादित्य महां असि ।
महांस्ते महतो महिमा त्वमादित्य महां असि॥

अर्थ :—हे वीर ! तू तो (बट) सचमुच (महा असि) महान् है (सूर्य) तू सूर्य के समान है। (बट्) सचमुच (आदित्य) तू अमृत पुत्र है, अन्धकार का नाशक है तथा (महान् असि) तू महान् है। और (महान्) बडी है (ते) तेरी (महत:) महान् की (महिमा) यश कीर्ति भी महान् है। तू तो अमर है, आदित्य है तथा (महान् असि) तू महान् है। हे वीर बांकुरे ! तू स्वय भी महान् है तथा तेरी महिमा भी बडी है एव तेरे वचन, कार्य भी महान् है। राक्षस और शत्रु नीच हो कर तेरा क्या बिगाड़ सकते हैं।

इस का भाव यह है

हे वीर नर ! तुझे छोटा कौन कहता है ? शरीर की आकृति मे चाहे तू छोटा-सा दिखलाई देता होगा। किन्तु तेरे जीवन मे, विचारो मे तथा कार्यों में जितनी शक्ति है, जितना बल पराक्रम है, जितना प्रभाव है उस का सामना कौन कर सकता है ? जिस प्रकार आकाश मे चमकने वाला सूर्य महान है तेजस्वी है, आदित्य है। अपने प्रकाश से सारे ही अन्धकार को मार २ कर भगा देता है। उसी प्रकार से हे वीर ! तू भी सूर्य के समान ही महान है तेरे कार्य भी महान हैं। तेरे विचारो की किरणे भी अपने प्रभाव से पाप के अन्धकार को मार भागाती हैं। तू सूर्य बन कर राक्षसो पिशाचो, वैरी विरोधियो को मार २ समाप्त कर देता है। तू वीरता में तेज मे आदित्य है। अथर्व १३-२-२९.

तुम्हारे उद्देश्य-जीवन का लक्ष्य, उसकी प्राप्ति के लिए मर्त्य मार्ग मे पदार्पण तुम्हारे लिए आवश्यक है ! हा, तुम तो सुहावनी उषा के समय मे परम सत्य बाल्य धाम मे दिन प्रति दिन, अपने अभीष्ट —अपने चिर वांछित ध्येय की प्राप्ति के लिए उस कल्याणमयी महती शक्ति का आह्वान करते हो—उस दिव्य गुणमयी सरस्वती देवी को पुकारते हो, जो चर और अचर, तुम और तुम्हारा मार्ग, दोनो की सचालिका है। स्वस्थता, निर्भयता और शान्ति की परिचारिका है।

देखो न, श्रीमति भगवती भी तुम्हारे ही विचार, विभाव के अनुरूप कैसा मधुर एव शान्ति प्रद उपदेश कर रही है।

ओं शन्नो देवी रभिष्ठय आपो भवन्तु पीतए। शयो रभि स्रवन्तु न.।

ऋषि दर्शन

स एकोऽद्वितीय:

वह परमेश्वर एक है और उस जैसा दूसरा और कोई नही है। जड और चेतन रूप से देवता और अनेक है, पर महान देव वह भगवान् एक है। और न कोई होगा ही।

ईश्वरोपासका मेधाविन:

जो ईश्वर के उपासक होते है, प्रभु के पास बैठते हैं, प्रभु-निष्ठ हो जाते है, वे मेधावी हो जाते है, ज्ञानी बन जाते हैं। प्रभु की उपासना से मानव को मेधा की प्राप्ति होती है। उस पिता का बन जाने मे सब कुछ मिल जाता है-

सूर्यादेधारणम्

जितने भी सूर्य आदि के ये बडे २ लोक है इनका धारण वही परमेश्वर ही करता है मनुष्य तो इन को समझ ही नही सकता। उस प्रभु के बिना और कौन सी शक्ति इस विराट् विश्व को धारण कर सकती है।

त्वं नो जिन्व सोमपा:

हे अपना भक्ति का रसीला रस पिलाने वाले परमेश्वर ! हम आप के ही तो अमृतपुत्र हैं, भक्त बालक है। आप हमारी सब ओर से रक्षा करे। हर सकट से हमारा परित्राण करे। आप के सिवाए हमारी रक्षा और कर ही कौन सकता है।

भाष्य भूमिका से

अधिष्ठाता —प्रो० वेद प्रकाश एम० ए० (अंग्रेजी तथा हिन्दी)   सम्पादक— त्रिलोक चन्द्र

धार्मिक चर्चा

देवनगरी का शोधन

(श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री प्रधान आर्यसमाज शकूरबस्ती देहली)

मुण्डकोपनिषद् में हृदय में ब्रह्म प्राप्ति की उत्कंठा इच्छा होने पर जिज्ञासु शिष्य को श्रोत्रिय विद्वान् के पास समित्पाणिः होकर जाने का आदेश दिया है। जब ब्रह्मजिज्ञासु साधक को पूर्ण रूप से यज्ञ-याग दान-पुण्यादि कृत कर्मों से अकृत ब्रह्म के प्राप्त न होने का ज्ञान हो जाता है और वह पूर्णतया संसार के सत्यासत्य विवेक होने पर सत्यज्ञान प्राप्त्यर्थ समित्पाणिः हो, वेदज्ञाता ब्रह्मज्ञ गुरु के सम्मुख उपस्थित हो, अपनी समिधाओं से संकेत करता है कि जिस प्रकार वृक्ष से अलग हुई ये समिधाएं पुनः वृक्ष से नही जुड सकती, उसी प्रकार मैं भी विवेकी होकर जान चुका हू कि कृत से अकृत अर्थात् सकाम कर्मों से निष्काम ब्रह्म की प्राप्ति सभव नही, अतः विरक्त होकर आया हू, दुबारा विश्व का कोई प्रलोभन मुझे उसकी ओर आकर्षित न कर सकेगा। मैं आत्मज्ञान के पवित्र मार्ग से विचलित न होऊगा। इसकी साक्षी है मेरे हाथ मे की समिधा। जो कट कर पुनः वृक्ष से नही लग सकती।

गुरु ब्रह्मज्ञान पाने के योग्य ऐसे साधक को ही दुर्लभ मानुष जन्म को जिसे शास्त्रकारो ने दैवीनाव-दिव्य तनुः-अमृतसेतु और देवपुरी इत्यादि उत्तम नाम देकर अति पवित्र ऋषि आश्रम बताया है, पशुवन न बनाकर देव वन-तपो भूमि बनाने की शिक्षा देता है। मानव तनु के देव भाव पाये बिना देवाधि देव ब्रह्म के इस में प्राप्त किए जाने की बात प्रायः असभव है। अतः साधक को साधना द्वारा इसे अयोध्या और अपराजिता तपोभूमि बनाना पड़ता है।

प्रश्न है कि सामान्यतया मानव अपनी सुरक्षा तथा सुख प्राप्ति केलिए भरसक यत्न करते हुए सुदृढ़ शासको का आश्रय लेते हुए भी, अपने अनेक प्राकृतिक पार्थिव साधनो से अपने को वेष्ठित करते हुए भी नित्य का याज्ञिक हो, वेद की कल्याणी वाणी का पाठ पाठी होते हुए भी प्रभु में अनेकशः विश्वास और निष्ठा रखते हुए भी क्यो नही शात होता ? इसकी दैवनाव विश्वसागर मे क्यो डावा डोल हो जाती है? प्रायः सर्वसाधन, यथाशक्ति प्राप्त करने पर भी इसे सोम लाभ क्यो नही होता ? ये उपरोक्त सभी प्रश्न साधना मार्ग की ओर जाने वाले पथिक को अनेक बार चिन्तन ही नही अपितु विनाश भी कर देते हैं।

इन सभी प्रश्नों का उत्तर अथर्ववेद के चतुर्थ कांड के तीसरे सूक्त मे 'व्याघ्रादि निवारण उपाय' के मिसले बताया गया है। ऋग्वेद के ७वें मण्डल मे भी निम्न प्रकार से दिया गया है—

ओ३म् उलूकयातुं शुशुलूकयातुं
जहि श्वयातुमुत कोकयातुम्।
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं दृषदेव
प्रमृण रक्ष इन्द्र ॥
ऋ० ७।१०४।२२ अ० ८।४।२२

इसी मन्त्र को अथर्ववेद में दुष्टों के सुधारने के लिए (राजा) इन्द्र को आज्ञा देकर राष्ट्र को सुखी करने का प्रकार बताया गया है।

मनुष्य की वृत्ति रही है जब भी अपनी असफलताओ की ओर इस का ध्यान गया है, इसने प्रयत्न किया है कि इसका उत्तरदायित्व असफलताओ के निमित्त न होकर किसी भिन्न का ही हो।

(१) विद्यार्थी परीक्षा असफलता न पा सकने पर अपनी अप्रयत्नशीलता को छुपाकर अध्यापक की अनेक त्रुटियो को कारण बताता है।

(२) विलासी मनुष्य अपने पतन मे प्रेम और प्राकृतिक तत्वो के आदर का आश्रय ले अपने असयमी प्रभाव पर परदा डालता है।

(३) रोगी रोग के कारण प्रकृति को, प्रभु को, पूर्व जन्म के कर्मों को, जल वायु को, अधिक परिश्रम को तो ऊंचे स्तर से कहता है परन्तु अपने अपथ्य सेवन-ब्रह्मचर्य हीनता-जिह्वा के असयम का दोष जानता हुआ भी नही कहना चाहता—चाहे वह अपने मन मे यह सब जानता है।

(४) किसी से ईर्ष्या द्वेष होने पर वाक् छल से उसी के दोषो का हम मुक्तकण्ठ से वर्णन करते हुए भूल जाते हैं कि अप्रत्यक्ष रूप में छिपा है हमारा मनोमालिन्य और ईर्ष्या भावना जिसकी घोषणा हम नही करते। इसी प्रकार सभी क्षेत्रों में केवल बाहर ही बाहर की शुद्धि का ध्यान बड़ी सतर्कता से किया है। अन्दर की सुधबुध नही होती। राष्ट्र का नेता हमारी सुरक्षा हेतु नगर के पास के पशुओ राष्ट्र के नामी दुष्टों-डाकुओं को तो दण्डित कर देता है और विश्वास करता है कि अब राष्ट्र को सुरक्षा में कोई कमी नही, परन्तु उस भोले राजा को यह मालूम नहीं कि उसी की राज्य सभा मे कितनी बड़ी संख्या में बाघ, शेर, साप, व्यभिचारी स्वभाव के राष्ट्रघाती पशु छुपे पड़े हैं। राष्ट्र मे कितने रावण हैं जो साधुवेश में नित्य ही सीताहरण करते हैं, जिनको वह अपना हितैषी जानता है।

उपरोक्त अथर्व वेद के चतुर्थ काण्ड के तीसरे सूक्त, ऋग्वेद के तथा अथर्व वेद मन्त्रों में ऐसे ही गुप्त शत्रुओ का सकेत है, जिन के कारणो से अनेक साधनाए करने पर भी साधक का जीवन देव जीवन न हो कर पशु जीवन बनता जाता है।

हम लोग वन मे रहने वाले पशुओ से अपने को दूर कर सुरक्षित समझते है और दूसरी ओर उन्हीं की सगति मे रहने वाला 'वेन' प्रभुभक्त हो कर ब्रह्म का ज्ञान लाभ करता है। अतः सिद्ध हुआ कि बाह्य पशु हमारे मानुष भवन को राक्षस भवन बनाने मे साधन नही अपितु इस देव भवन को पतित करने वाले ६ शत्रु ऐसे हैं जो हमारे मित्र बन कर हमारे देव भवन में ही निवास कर रहे हैं, जिन पर हमे शत्रु होने का, हिंसक पशु होने का भ्रम ही नहीं होता—उन्हीं ने इस ऋषि वास को हिंसास्थली बना रखा है।

वे ही शत्रु रूप पशु मान ऋग्वेद के ७वें मण्डल के मन्त्र में इस रूप मे वर्णित है :—

(१) सुपर्णयातुम् (बाज के समान कमजोरो का माल लूटने की वृति)

(२) गृध्रयातुम् (गीध के समान मरते सिसकतोंकी सम्पत्तिहरण वृत्ति)

(३) कोकयातुम् ((चिड़ियो के समान काम वासना की वृत्ति)

(४) श्वयातुम् (अपनों से गुर्राने मत्सर करने की वृत्ति)

(५) उलूकयातुम् (उल्लू के समान अन्धकार, अज्ञान प्रियता की वृत्ति)

(६) शुशुलूकयातुम (भेड़िये के समान क्रूरता की मलीन वृत्ति)

यही है ६ शत्रु जो हिंसक पशुओं के रूप मे हमारे देव भवन को पशुवन राक्षस भवन बनाए हुए हैं। इन का चिरनिवास ही मनुष्य के अन्तःकरण का उत्थान नही होने देता। इस (काम क्रोध-लोभ-मोह, मद और मत्सर रूपी) पशुसमूह ने इस मानव की उदीयमान दिव्य शक्ति की उन्नति रोकी हुई है।

मनुष्य अपने बाहर के वातावरण को अपने पतन का कारण बताकर, कभी राष्ट्र, कभी राजा, कभी माता पिता तथा कभी पड़ोसियो को समय समय पर अपनी वाक पटुता से दोषी सिद्ध कर जगत मे अपनी मान मर्यादा बनाए हुए हैं।

ओ३म् यत्संयमो न नियमो
वियमो यन्न सयमः।
इन्द्रजाः सोमजा अथर्वणमसि
व्याघ्रजम्भनम् ॥ अ० ४।३।७

इस मन्त्र मे देव भवन मे गुप्त रूप से पैठे हुए वासना रूप शत्रुओ पर विजय पाने के लिए दो प्रकार, बड़े सुन्दर बताये गए हैं।

यह स्पष्ट रूप मे समझने की आवश्यकता है कि क्रोधावेश, लोभावेश, ईर्ष्यावेश आदि अनेक आवेशो में मानव का व्यवहार किसी व्याघ्र-सर्पादि विषैले जीव से कम नही होता। अतः इस मन्त्र में आन्तरिक वासनाओ पर यम नियमादि द्वारा जब तक निग्रह न किया जाय इस देव नगरी का शोधन नही हो सकता। उपरोक्त मत्र मे देव नगरी के सशोधनार्थ दो उपाए बताए गये हैं।

(१) इन्द्रजाः (२) सोमजाः।

आत्मज्ञान के विकास से मनुष्य अपने अन्तःकरण चतुष्टय अर्थात् मन-बुद्धि-चित, अहकार को सयमित करे। प्रत्येक आवेश की वेला मे उसके मूल कारण को शान्त भाव से विवेकी हो कर सत्य पक्ष का ग्रहण और असत्य-पक्ष का त्याग करे। एक प्रकार देव भवन से राक्षस निष्कासन का यह है। मन्त्र मे शत्रु-नाशन विधि के साथ संयम में सन्तुलन रखने की आवश्यकता का उपदेश भी दिया गया है जिस इन्द्रिय पर सयम हो जावे उसे मात्रा से अधिक ताप न दिया जाये अन्यथा प्रतिक्रिया हो कर उपद्रव होना संभव है। जिस वासना पर सयम नही हुआ पर उस पर दमन क्रिया का प्रयोग किया जावे, यही स्थिर चित हो ब्रह्म मार्ग की ओर जाने हेतु अथर्व विद्या का नियम है।

दूसरा प्रकार है—'सोमजाः' संयम की साधना तभी सफल होती है जब देव मन्दिर मे घुसे राक्षसी भावों का भोजन भी समाप्त कर दिया जावे। अर्थात् 'सोमज वृत्ति' औषध प्रयोग से, सात्विक भोजन से, स्वाध्याय और सत समागम से पैदा की जावे।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सम्पादकीय—

आर्यजगत्

वर्ष २६] रविवार - ०२३, २५ सितम्बर १९६६[अंक ३९

सभा का युवक संगठन

आर्य प्रादेशिक सभा पजाब जालन्धर ने अपने गत वार्षिक बजट अधिवेशन में इस विषय पर गम्भीरता से विचार करके सर्वसम्मत निर्णय किया था, कि अपने युवक समाज को सगठित करके उमको समाज के विशाल कार्य के लिए उपयोगी बनाया जाये। यह तो निर्विवाद तथ्य है कि युवक वर्ग किसी भी समाज एव राष्ट्र के स्वस्थ शरीर मे मनोरम मेरुदण्ड माना गया है। यह समाज का क्षात्रबल है, शक्तिशाली भुजा है। आने वाले समय के समाज और देश को सम्भालने का महान् आशाकेन्द्र है। युवकवर्ग एक ऐसी नदी की प्रखर धारा के प्रवाह के समान है, जिस मे वेग भी है और गर्जना भी। बडी से बड़ी मार्ग की बाधा को बहा देने की भारी शक्ति भी है, समाज के दिव्यजीवन के अनुपम भवन के निर्माण करने की पक्की आधार शिला भी वही है। जहा भी युवक जागता है, वह परिवार नगर, समाज और सारी जाति जागती है जहा यह सो जाता है वहा सब कुछ ही सो जाया करता है। यह शक्ति वेद के सुन्दर शब्दों के अर्थ के रूप में पिशाचो को तपाने वाली असत्य, अन्याय से कभी समझौता न करने वाली तथा पाप-ताप की दिवालो को हिला देने वाली है। यह वह प्रदीप्त अग्नि ज्वाला है, जो एक बार यदि प्रज्ज्वलित हो जाये तो उस स्थान की सारी बुराईयो को तिनको के समान भस्म करके रख देती है। युवाशक्ति पर सब को गुरु गर्व व अमित मान होता है। राष्ट्रीय जीवन में तो युवको का बडा भाग होता है।

आर्य समाज के प्रारम्भिक सुनहले युग में एक युवक दल आया। उसने कमाल कर दिया। हर क्षेत्र मे वह तूफान मचाता गया। आर्य समाज ने हर क्षेत्र में अपने युवक दिए। युवक अग्रणी देवता महात्मा हंसराज जी ने कितना युवक मण्डल बनाया पं० गुरुदत्त जी, प० लेखराम जी का यौवन कितना प्रखर था। सच्चे ब्राह्मण पं० मेहरचन्द जी प्रिंसिपल, ला० साईदास जी, पजाब केसरी ला० लाजपतराय, प० लखपतराय आदि युवक दल ने क्या-क्या कमाल नही कर दिखाया? राजनीति में सरदार भक्तसिंह, श्री बिस्मिल, श्री भाई परमानद श्री हसराज वायरलैस आदि न जाने कितने युवको ने राष्ट्रीय जीवन में कितनी भारी क्राति मचा दी। आज भी कई युवक अपने अपने स्थानो पर आर्य समाज के काम मे लगे है। किंतु यह दल तारो के समान अलग-अलग बिखरा हुआ है। कोई सगठन नही है। कितनी बडी सस्थाए हैं, इन मे हजारो युवक है, पर समाज मे कोई भी नही आता। न ही अब उन को देवता हंसराज सरीखे प्रेरणा देने वाले ही है? जब वे बडे २ लोग स्वय ही नही आते तथा न ही आने की आवश्यकता समझते हैं तो युवको को प्रेरणा कहा से मिले। आज के लोगो को तो समाज के काम के लिए अवसर ही नही है और न मन मे वह समाज प्रेम ही है। चलाचली का सौदा है। यही कारण है कि हमारी सारी युवक शक्ति दूसरी दिशाओ में जा रही है। उसे रोके तो कौन? अग्नि से अग्नि जलती एव जीवन से जीवन बनता है। जीवन मे यदि समाज प्रेम न हो तो युवक वर्ग मे कैसे होगा उस देवता हसराज जी के दर्द भरे शब्दो मे यह ठीक है कि आज आर्यसमाज तथा इस की प्राय: सस्थाएं निस्सन्तान होती जा रही है। हमारे परिवारो व सस्थाओ का युवक वर्ग समाज से बहुत दूर है।

सभा ने इस पर विचार किया तथा इस कमी को पूर्ण करने के नाते युवको के संगठन का काम भी अपने हाथ में लिया है। इस महान काम के लिए उसने अपने योग्य, उत्साही विद्वान व ओजस्वी वक्ता प्रो. वेदीराम जी एम. ए. जालन्धर को चुना है। माननीय प्रोफैसर जी आर्यसमाज के जगत के लिए नये नही। वह पुराने तथा मंजे युवक हैं। युवकवर्ग के संगठन में कुशल हैं, पहले भी इस दिशा में सुन्दर काम किया है हम सभा को इस चुनाव पर बधाई देते हैं। माननीय प्रो. वेदीराम जी का स्वागत करते हुए उन से भी यही निवेदन करना चाहते हैं कि यह काम बडा महान है, है भी आवश्यक। इस के लिए समय तथा मनोयोग देना होगा। सगठन सूत्र को गठित करना है। ठोस कार्य करना होगा। युवक आप से स्नेह रखते हैं आप के नेतृत्व मे प्रसन्नता अनुभव करते हैं। सभा ने तो अपने युवकवर्ग के सगठन का काम अपने हाथ मे लिया है। अब युवक वर्ग का भी कर्तव्य है कि बिखरी तारो को इकट्ठा करने में आज ही जुट जाये। सगठन मे काम करना ठीक है। स्थान स्थान पर अपने अध्यक्ष जी के कथनानुसार युवक समाजे व युवक सगठन का पवित्र काम करने को कमर कस लेवें। काम बेशक थोडा २ हो परन्तु होना ठीक चाहिए। कागजी काम से कुछ न बनेगा। अब युवा शक्ति पंजाब मे मर्यादा मे आकर इतनी बडी शक्ति बन जाए जिस पर सारा समाज गौरव कर सके। इसके लिए बडा भारी क्षेत्र है, बडे क्षेत्र हैं, बडी भारी छावनिया है। प्रभु करे यह विशाल काम बढता जाए। —त्रिलोकचन्द्र

भारत का संतसमाज

आजकल सारे देश मे गोहत्या पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए एक व्यापक आदोलन चल रहा है। राष्ट्र के सविधान मे गोरक्षा के लिए बहुत कुछ लिखा हुआ है। गोहत्या को रोकने के लिए धारा विद्यमान है। उन्नीस वर्ष भी भारत को अग्रेजी सत्ता से मुक्त हुए हो गए। जनताने कई वार अपनी मोतियो वाली सरकार से भी कहा, तथा अनुरोध किया कि सारे भारत से गोवध का कलक दूर कर दिया जाये। किंतु सुना किसी ने भी नही। बोलने वालो के मुख बन्द कर दिए गए, उन को जेलो मे बन्दी बना दिया गया किन्तु गोरक्षा का काम पूर्ण न हो सका। श्री राम जी तथा गोपाल कृष्ण के भारत मे गीता गाधी, अशोकचक्र बैल की जोडी को प्रतीक मानने वाली सरकार गोहत्या को बन्द करने पर ध्यान भी नही देती। लोग मौन है। गोरक्षा से उनको क्या काम? दूध-घी का कितना अभाव हो गया है। चमडे, आतो तथा खून के व्यापार के लिए कितना गोवध होता है। पढकर तो सारा शरीर काप जाता है। आज के जीवन मे भावना मिटती जाती है। किन्तु सारे तो ऐसे नही हैं। समय-समय पर आदोलन होते ही रहते हैं। आज इस भारी कलंक को मिटाने के लिए सन्त समाज कमर कस कर मैदान मे आया है। हन सन्तो ने विधान या लोक सभा का सदस्य नहीं बनना। उसने मन्त्री मण्डल मे नहीं जाना। वह तो गो-हत्या जैसे कलक को भारतीय जीवन से दूर करना चाहता है। गत दिनो से इस काम मे अनेक सन्त त्याग करके जेलों में पहुच गये। पिछले दिनों लोक-सभा के बाहर सनातन धर्म सभा के नेतृत्व मे सारी संस्थाओ का सहयोग प्राप्त कर प्रदर्शन किया गया। इस में सरकार से गो-हत्या बन्द करने की माग की गई थी। आर्यसमाज ने भी इस मे पूरा-पूरा सहयोग दिया। अब भारी जन सभा मे श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी, सघ के नेता श्री गुरु गोलवलकर जी, सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री राम गोपाल जी शाल वाले तथा अन्य सस्थाओ के नेताओ ने आवाज उठाई। गो-हत्या बन्द करवाने के निमित्त सन्तो ने जान की बाजी लगा देने की घोषणा भी की गई। अब सन्त समाज इस आन्दोलन मे आया है। जनता को सन्तो पर बडी श्रद्धा है। गत दिनो अमृतसर केन्द्रीय आर्य सभा द्वारा कैप्टन केशव चन्द जी की प्रधानता मे सब सस्थाओ का सम्मिलित गो-रक्षा सम्मेलन हुआ। आर्य समाज भी स्थान २ पर जनता मे गो-रक्षा के भाव भरे ताकि यह कलक भारत से जल्दी दूर हो सके।—स०

लारेंसरोडमें वेदसप्ताह

आर्यसमाज लारेंस रोड अमृतसर मे निरन्तर लगभग पच्चीस दिन उपनिषद तथा वेद-सप्ताह मे वेदकथा आर्य प्रादेशिक सभा जालन्धर के प० त्रिलोक चन्द्र शास्त्री द्वारा होती रही तथा साथ सभा के पुराने मीठे भजनोपदेशक प० ज्ञानचन्द जी के भजन होते रहे। समारोह से जन्माष्टमी का पुण्य पर्व भी मनाया गया। सभा के वेदप्रचार मे पाच सौ रुपये की राशि देने का समाज ने निश्चय किया है।

खन्ना में वेदकथा

आर्यसमाज खन्ना मे वेद सप्ताह समारोह मे मनाया गया। सभा कार्यक्रम के अनुसार सभा से आय हुए प० त्रिलोक चन्द्र शास्त्री की वेद कथा तथा प्रसिद्ध मण्डली प० जगतराम वस्तीराम जी के मीठे-मीठे भजन होते रहे। यह कार्यक्रम हिन्दी पुत्री पाठशाला के विशाल प्रागण मे ता. १२ सितम्बर रविवार १८ ता. तक जारी रहा। जनता ने पूरा-पूरा लाभ उठाया। सभा को वेद प्रचार भेजा गया।

हम क्यां करें ?

(श्री सुन्दरलाल बोहरा श्रीरगा भवन, जोधपुर)

पिछले पन्द्रह वर्षो से हम एक जनतन्त्र होने का प्रचार कर रहे है। हम इस बात की सार्थकता सिद्ध करने में कृत सकल्प हैं कि शासन मे जनतन्त्र प्रणाली के प्रचलन से ही जहा में जन्नत लाया जा सकता है। पाश्चात्य राष्ट्रो के योजनाबद्ध आर्थिक विकास द्वारा सम्मोहित होकर हमारा आर्थिक पुरुष भी जनतात्रिक बनने के लिये बेचैन हो उठा, लेकिन राष्ट्र में जनतन्त्र के प्रचलन ने सिद्ध कर दिया है कि हमारा आध्यात्मिक व्यक्तित्व भी पश्चिम प्रसूत जनतन्त्र की जन्त्री में अन्न हुआ जा रहा है। हमारा व्यक्तित्व इस तन्त्र के प्रति इतना आसक्त हो चुका है कि हमे और कोई मन्त्र ही नही सूझता।

अपेक्षा तो यह थी कि राष्ट्र के आर्थिक व्यक्तित्व को पुष्ट करने के लिये पश्चिम प्रसूत जनतन्त्र शीघ्र ही भारतीय रग मे रग जाएगा, लेकिन परिणाम विपरीत ही प्रतीत हो रहे हैं। भारत का समन्वयकारी पित्ताशय यहा आकर मनोमालिन्य रूपी मन्दाग्नि का शिकार हो गया है। मानव के प्रति अजस्र आस्था से पूर्ण सामान्य भारतीय के अन्त:करण मे आज मनोविकारो की ही मौज बनी है। प्रजातन्त्रीय दर्शन का अध्ययन करने से ऐसा प्रतीत होता है कि यह पीडित एवम् पतित लोगो को पुष्ट तथा पाक करेगा, लेकिन प्रचलित जनतन्त्र ने भारत के आध्यात्मिक व्यक्तित्व को व्याधिग्रस्त ही किया है। यह मेरा निष्पक्ष निष्कर्ष है।

समाज और सरगर्मी

जनतन्त्र रूपी जन्नत के जवाहरखाने की एकमात्र चाबी चुनाव है। जहा चुनाव है वहा निश्चित रूप से चालाकी पनपती है। सुलझे हुए व्यक्ति कभी भी चुनाव प्रणाली में आस्था नही रखते। मानसिक मन्दाग्नि से ग्रस्त व्यक्ति ही मुकुट एवम् महफिलो के लिये मर मिटते हैं। जरा दबग होकर कहू तो चुनाव की प्रणाली सम्पूर्ण मानव समुदाय के आध्यात्मिक खोखलेपन की प्रतीक है—चुनाव की चर्चा वे ही लोग करते है जिन्हे मानव के अस्तित्व एवम् व्यक्तित्व की शादवत्ता मे सन्देह है।

इस दृष्टि से हम तिलाश मे भी समाज शब्द का दर्शन नही समझ पाये है। जिस समुदाय के सदस्य वर्तमान के प्रति ही समदृष्टि रखे वे ही सामाजिक होने के अधिकारी है। जिस मानव समुदाय मे जीवन आर्थिक एवम् आध्यात्मिक असमानताओ से आक्रान्त है वह समुदाय समाज कहलाने का अधिकारी ही नही है। एक अनुत्तरदायी एवम् अनुशासनहीनता से ग्रस्त समाज मे ही 'अवसर की समानता' का प्रचार किया जाता है। जहा व्यष्टि "एकला रेंगीने बेकला चलो" की ऋचा को अपने रक्त मे रमा चुका है वहा उत्तरदायित्व का न तो उदात्तीकरण ही किया जाता है न उच्छृण्डता ही पनप पाती है। आर्षकालीन भारतीय समाज व्यवस्था मे ऐसा ही जनतन्त्र जन्मा और सच्चा जनपदीय बना। वैदिक व्यवस्था व्यष्टि पोषक होते हुए भी प्रतियोगिता से रहित रही है। वैदिक जनतन्त्र मे सच्चा अन्तर यही है।

सम्प्रति विश्व मे प्रचलित जनतन्त्र समाजवादी (अथवा साम्यवादी) होने का दावा करते हुए भी संघर्ष एवम् सरगर्मी को स्थायी शरण देने की हठधर्मिता करता है। परिणामस्वरूप समाज सच्चे अर्थ मे समाजवादी न रह कर सघर्षवादी हो जाता है। ऐसे समाज का आध्यात्मिक व्यक्तित्व पगु एवम् पतित हो जाता है। हा, आर्थिक व्यक्तित्व पर कुछ प्लास्टिक अवश्य चढ जाता है और इस आवरण का आविष्कार शुष्क बुद्धिवाद के प्रति पूर्ण अन्ध आस्था रख कर ही किया जाता है। फलत: समाज का नैतिक एवं आध्यात्मिक अह मृतप्राय हो जाता कोरे आर्थिक व्यक्तित्व का प्लास्टिकनुमा आवरण ओढ लेने से समाज एषणाओ एव कुण्ठाओ से ग्रस्त एक कबाड़खाना बन जाता है। तदनुसार समाज की व्याख्या तथा साहित्य का सृजन भी 'सर्वेगुणा: काञ्चन आश्रयन्ति' की अट्टालिकाओं मे ही रहकर किया जाता है। परिणामस्वरूप समाज मे प्रतियोगिता तथा प्रतिशोध की भावनाए उग्रतम रूप में उभरकर उद्दण्डता को जन्म देने लगती हैं। यो शनै: शनै: समाज श्मशानोन्मुख होता रहता है। वर्तमान विश्व में प्रचलित प्रजातन्त्र एव समाजवाद से ही उक्त परिणामो का पोषण एव प्रचलन हुआ है।

परम्परा की प्रताड़ना क्यों ?

आज जीवन के किसी भी क्षेत्र में परम्परा को पोषण इसलिए नही दिया जाता क्योकि इससे पुरानापन जीवन पर पुन. हावी हो सकता है। यदि हकीकत मे बात ऐसी ही है तो पुराने गुड, शराब तथा घृत को अनेक दु:साध्य व्याधियों का नाशक क्यो माना जाता है? क्या पूर्व रात्रि मे उदरस्थ किए गए खाद्य पदार्थो से प्रात:काल तक शरीर को शक्ति नही मिलती? क्या पुस्तक के पिछले पृष्ठो पर छपी हुई सामग्री का कोई महत्व नही है? क्या शरीर के पृष्ठ भाग का कोई महत्व नहीं है? क्या छत को जानेवाली एक सीढी पार करने के बाद उस सीढी का भवनमे कोई महत्व ही नही है? क्या नौ अक तक गिनती सीखने के बाद अक 'एक' का कोई महत्व ही नही है? यदि इन प्रश्नो का उत्तर निषेधात्मक नही है तो परम्परा का भी प्रजातन्त्र मे पोषण अनिवार्य ही नही अपितु निवशक रहना चाहिये। भूत और वर्तमान अलग किये ही नही जा सकते, भविष्य तो निश्चित रूप से वर्तमान की ही प्रतिछाया एव प्रदर्शन है और यो कर्म के निष्पादन मे कालक्रम का कोई महत्व नही होना चाहिये। कर्म को काल का कोपभाजन बनने देना अकर्मण्यता ही है। सच्चा सृजन काल-क्रम की कोठरी से बाहर ही हो सकता है। सही अर्थ मे कौशल का क्षेत्र वर्तमान ही है पर इसके लिये वीर्यवर्द्धक पाक भूत की भट्टी पर ही पक सकता है। अत: परम्परा की उपेक्षा शताश मे भी बरदाश्त नही की जानी चाहिये।

एतदर्थ हमारी वर्तमान मे आस्था भूत के अनुभवरूपी आसव से परितृप्त रहनी चाहिये। प्रजातन्त्र का भारतीयकरण ऐसे ही सम्भव है।

उदात्तीकरण अथवा अनुत्तरदायित्व ?

भारत मे हम समाजवाद के द्वारा व्यष्टि की समृद्धि चाहते हैं लेकिन व्यष्टि के व्यक्तित्व की ओर हमने आज तक सहानुभूतिपूर्वक ध्यान ही नही दिया है। हमारा सारा प्रयास बोतल के लेबल बदलने में व्यर्थ गया है. बोतल के भीतर स्थित द्रव्य को बदलने की हर सम्भव चेष्टा को हमने टाला ही है। हम व्यष्टि को सांस्थनिक तौर पर समृद्ध बनाने के लिये उन्मत्त हो चुके हैं, लेकिन व्यष्टि के अन्त:करण मे पनप रहे राज्य यानि समष्टि के प्रति रोषमय रोमाणुओं की ओर हम आज भी उदासीन बने हुए हैं। यह तो समाजवाद रूपी छलनी में पानी भरना ही हुआ। आज हमे वही 'पुनर्मूषको भव' की विडम्बना का शिकार होना पड रहा है। स्पष्ट शब्दो मे कहें तो एक खालिस प्रजातन्त्र में **राज्य का अस्तित्व ही नहीं रहना चाहिये।** लेकिन जब 'काशी - करवत' तक पहुच ही गये तो फिर घिघियाना नही चाहिये। राज्य द्वारा निर्धारित करों को देने मे हिचकिचाना, रेलगाडियो मे बिना टिकट यात्रा करना तथा भाई-भतीजावाद को पनपाना व्यष्टि तथा समष्टि दोनों के लिये समान रूप से घातक प्रवृत्तिया है।

एक प्रजातन्त्र मे भी जब राज्य का अस्तित्व स्वीकार कर लिया जाता है तो वह व्याख्या की दृष्टि से भले ही अन्य तन्त्रो से भिन्न प्रतीत होता हो, लेकिन व्युत्पत्ति तथा व्यवहार की दृष्टि से वह राजतन्त्र ही है। व्यक्ति ने जब भी अपने दायित्व को सरकाने की कुचेष्टा की है राज्य की शक्तियो को पोषण मिला है। एक प्रजातन्त्र मे राज्य (नौकर शाही) के स्थायी एवम् अनिवार्य होने का परिणाम होता है एक कुण्ठाग्रस्त तथा एषणाओ से आक्रान्त समाज का अभ्युदय। ऐसा प्रजातन्त्र शताश मे भी 'भारतीय' नही कहा जा सकता।

सस्थाओ के अस्तित्व मे उलझे हुए तथा अनुत्तरदायी व्यक्ति ही आस्था रखते हैं। एक सुलझे हुए व्यक्ति को उसके समष्टिगत दायित्व का स्मरण कराने की कोई आवश्यकता ही नही है। इस प्रसग मे एक राजस्थानी कहावत मनन योग्य है—'अकल सरीरा ऊपजैंदीया लागे डाम' अर्थात दायित्व निभाने की प्रवृत्ति तथा कर्मण्यता यदि व्यक्ति के सस्कारजात गुण नही है तो उन्हे खालिस रूप मे खरीदना ऐसा ही प्रयास होगा जैसा एक वर्षाकात प्रदेश में एक गोबर के आगन का निर्माण।

★

★ गृहस्थी मे रह कर जो हिंसा होती है उसको दूर करने के लिये जो अग्नि मे भोजन के टुकड़े डाले जाते हैं तथा जो भोजन भिखारियो, लूले लंगडो, पापियो, कुत्तों, कौओ और चींटी आदि कृमियों को खिलाया जाता है वह कार्य भूतयज्ञ व बलिवैश्वदेव यज्ञ कहाता है।

★ अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध यज्ञ पर्यन्त को देवयज्ञ कहते हैं।

सम्पादकीय—

आर्यजगत्

वर्ष २६] रविवार ·०२३, २ अक्तूबर १९६६[अंक ४०

संस्कृत की दुर्दशा और हम

भारतीय जीवन का सारा आदर्श गौरव उसकी पुनीत पुरातन संस्कृति मे है। यह संस्कृति विश्व की सब भाषाओ की जननी संस्कृत में है। इस प्रकार संस्कृत भाषा सब भाषाओ की माता है और यह आधुनिक भाषाओं का सारा वर्ग उस का पुत्र पुत्रियो के रूप में अपना परिवार है। लम्बे समय के बाद शब्दो मे कई परिस्थितियो के कारण परिवर्तन आ जाता है। किन्तु थोड़ा-सा भी गम्भीर ध्यान इस बात का परिचय देता है कि इस शब्द का या भाषा का मूल स्रोत कौन सा है। विश्व के तमाम भाषा परिवार का अनुसन्धान होने पर भाषा विज्ञान ने संस्कृत को सारी भाषाओ की प्राय: माता मान लिया है। भारतीयो के लिए यह बडे गौरव की बात है कि उनकी संस्कृति इसी भाषा मे है। हमारे उपनिषद, दर्शन, ब्राह्मण, इतिहास तथा अन्य ग्रन्थ भी इसी भाषा मे हैं। भारत के नानाविध सर्वतोमुखी कर्मकाण्ड की प्रक्रियाओ और धर्मकार्यों मे संस्कृत का बड़ा मान है। इस माता की वन्दना होती है।

अंग्रेज विदेशी सत्ता लाकर आये। अपनी भाषा भी भारत पर लाद दी। वे तो चले गये पर उनकी अंग्रेजी आज भी उनके मानस पुत्रो, काले अंग्रेजो उसी भाषा मे अपना हर काम करने वाले इन लोगो ने प्रत्येक क्षेत्र मे अभी तक बना रखी है। आज भी इन्ही दो प्रतिशत काले अंग्रेजों का सारे देश पर शासन चलता है। आज भी इतने वर्षों के बाद भी हर स्थान व हर काम मे अंग्रेजी की प्रभुता है। अपनी भाषा के रूप मे आज भी हमारे देश पर उसी का शासन है। अपनी भाषा के प्रति मान ही नही। हर बात अंग्रेजी में होती है। इस हमाम मे सब नंगे हैं। आर्यसमाज की संस्थाओं, सभाओं व कमेटियो में भी सारा काम अंग्रेजी में होता है। वही वातावरण है। तनिक भी फर्क नही आया। सब की वाणी, लेखिनी, मस्तिष्क और मन पर अंग्रेज ने अधिकार जमाया है। छपता भी सब कुछ अंग्रेजी में है, सारे समारोहों का कार्यक्रम, भी इंगलिश में, निमन्त्रण पत्र भी उसी भाषा में तथा मान भी उस भाषा वालो का। कितना बडा उपहास हो रहा है। सब प्रवाह मे बह रहे हैं। सब ने नशा पी रखा है। यह सब कुछ ऋषि दयानन्द के नाम के नीचे होता है। न कोई बोलता है और न कोई सुनता है। सब ने भंग पी रखी है। संस्कृत की दुर्दशा पर तो क्या कहा जाये? इस माता की बुरी हालत इस के पुत्रों के हाथो जो की जा रही है—उसे देख कर तो लज्जा को भी लाज आने लगी है। संस्कृत देव भाषा का इस युग मे इतना भारी अपमान? आज हायर सैकण्डरी स्कूलो के बन जाने पर संस्कृत को वहा से निकाल दिया गया है। नाम मात्र के लिए रखा हुआ है। इस समय पंजाब मे तो इस का कोई भी रखवाला नही है। संस्कृत परिषद पता नही कहा सिसकिया ले रही है। न संस्कृत का नाम और न ही संस्कृत वाले का मान। दोनों को धक्के मारे जाते हैं। अपने राष्ट्र में देव भाषा की यह दुर्दशा? न किसी के कान पर जू रेंगती है न स्वाभिमान की नस ही फडकती है। चारो ओर से संस्कृत तथा उस के पढने वालो को फटकार पड़ती है। न कोई संस्था बोले, न सभा, न राजा, न कोई व्यक्ति बोले, न कोई आन्दोलन। आज पंजाब में संस्कृत को सर्वथा समाप्त किया जा रहा है। सारे स्कूलो मे इस की अवहेलना की जाती है। आजाद भारत मे यह तमाशा भी देखना था। भावना को ही मार दिया गया है। अंग्रेजी के दासों ने देव भाषा के उपासकों का स्नेह ही समाप्त कर दिया है। कोई भी अपने लडकों को संस्कृत पढ़ाना अच्छा नहीं समझता। वे संस्कृत भाषा को भूखा मारने वाली समझते हैं। कितना बड़ा जननी का निरादर है।

संस्कृत की जितनी भी थोडी शाखाएं हैं, उन को पहले ही क्या मिलता है? स्कूलों, कालेजो के लिए हजारो लाखों की ग्रांटें पर संस्कृत के लिए सैंकड़ें भी तो नहीं हैं। वे भी बन्द किये जा रहे हैं। कपूरथला का रणधीर कालेज बडा पुराना महाराजा का कालेज है। अब सरकारी बन गया है। लगभग सौ वर्षो से इस कालेज के साथ जो संस्कृत का विभाग है, उसे महाराजा की ओर से संस्कृत शिक्षा के लिए ग्रान्ट मिलती थी छात्र आराम से देवभाषा पढने आते। अबतक सरकार भी देती है। किन्तु अब पत्रो मे पढ़ा है कि पंजाब सरकारने संस्कृत विभाग कीजो सहायता है, वह भी बहुत नही, बन्द करने की घोषणा की है। अगले वर्ष से यहा भी संस्कृत समाप्त हो जायगी। **संस्कृत की इससे बढ़ कर क्या दुर्दशा होगी? कितना दुःख है कि हमारी सरकार मछलियों, मुर्गियों सूअरों को पालने केलिए तो अधिकसे अधिक पैसा दे सकती है। भोगवाद के मार्ग पर सरपट दौड़ने के निमित लूप मार्ग की वृद्धि के लिए भी दे सकती है पर शोक है कि सौ वर्षो से मिलनें वाली संस्कृत विभाग रणधीर कालेज कपूरथलाको चलती सहायता भी बन्द करना चाहती है। उसकी दृष्टि में मछलियां अच्छीहैं पर संस्कृत बेकार है।** इस पर जनता ने भी क्या किया है? कपूरथला नगर की आर्यसमाज सनातन धर्म व जैनसभाओं ने बैठक कर के इस के विरोध मे सरकार को लिखा है। आर्य समाज लक्ष्मणसर अमृतसर आदि एक दो ने और भी प्रस्ताव पारित किये किन्तु और तो किसी के कान पर जू भी नही रींगी? भावना मर चुकी है। इस दुर्दशा पर क्या हम जागेंगे?

—त्रिलोक चन्द

हमारा वेद प्रचार

आर्यसमाज का प्रमुख काम वेद प्रचार ही है। सब कुछ इसी के लिए है। अन्य सारे साधन हैं इस साध्य को पूरा करने के लिए। यह मूल है जिस के दूसरे पत्र पुष्प आदि माने गये हैं। यह आत्मा है तथा अन्य सब अंग ही तो हैं। आर्यसमाज के प्रारम्भिक युग में इस को इसी विचार से माना जाता था तभी उस युग में आर्य समाज का सब स्थानों पर दबदबा था, प्रभाव था, सम्मान था। निर्भीकता से आर्यसमाज अपनी बात कहता था। यह बात मुख्य थी और सारी बातें गौण थी किन्तु आज स्थिति विपरीत है।

वेद प्रचार तो गौण है तथा और सारी बातें मुख्य हैं। जो अवस्था आज विवाहों की है वही वेद प्रचार की बन रही है। पहले विवाह मे संस्कार मुख्य था और सारी वस्तुएं गौण थी। अब वहा पर साजसज्जा, खानपान, नाचगान, लेनादेना तो मुख्य बन गया है किन्तु वेदी पर विवाह संस्कार गौण है। वेद प्रचार की भी यही दशा है।

आर्य प्रादेशिक सभा जालन्धर देश मे बडी प्रसिद्ध संस्था है। महात्मा हंसराज जैसे देवता इस के संस्थापक थे। ला० साई दास, बख्शी टेकचन्द, प० मेहरचन्द जी जैसे इस के पोषक रहे। भारत के इतिहास मे इस सभा का प्रमुख स्थान है। भारी जन-सेवा-कार्य इस ने किया है। सब इसे श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं। आज भी इस के विशाल परिवार मे बडे २ सन्यासी महात्मा, शिक्षा विशारद, उपकुपति, सभा विधायक, व्यापार के नेता, ऊंचे लेखक वक्ता, प्रिंसिपल तथा समाजो के मान्य महारथी हैं। किन्तु सच्ची बात यह है कि आर्य समाज का वेद प्रचार का काम बहुत पीछे जा रहा है। जनता दूसरे २ कामो को प्रमुख मान कर उधर ही दौडती है। सारे राजनीति में लगे हैं। उसे ही प्रमुख मानते है। लोगो के पास आर्यसमाज वेद प्रचार का काम करने के लिए न समय है न दिल। न धन है न रुचि। आज लाखो रुपये के सिनेमा भवन बनाये जाते है पर वेद प्रचार के लिए उन का भी दिवालिया निकल जाता है। हमे अनुभव है कि वेद प्रचार के लिए जब लोगो को कहा जाता है तो क्या २ सुनना पडता है। परिणाम सामने है। आज तो कोई युवक आर्यसमाज का प्रचारक बनने को कम ही मानता है। वह सब कुछ जानता है, देखता और समझता है। बाहर कोई भी दिन-रात घूमना नही चाहता। वेद-प्रचार के लिए धन देने में आनाकानी होती है। हा यदि कुछ बडे २ कहे जाने लोग वेद प्रचार के लिए बाहर घूमने का समय दे तथा कुछ बडे परिवार अपने एक लड़के को उपदेशक बनावें तो बड़ा लाभ हो। ★

सत्पात्र का दान सत्पात्र को

श्री दौलत राम जी शास्त्री ओ. टी सिरोही राजस्थान

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर कहीं जा रहे थे। एक निर्धन भिखारी बालक ने आ कर पैसा मांगा। उन्होंने उसे पूछा कि यदि मैं तुझे एक पैसा दूं तो तुम क्या करोगे? बाल ने उत्तर दिया 'श्रीमन् तो मैं एक दिन भीख न मांगूंगा।

विद्यासागर। यदि दे दूं तो?

बालक। दो दिन भीख न मांगूंगा।

विद्यासागर यदि आना दूं तब?

बालक। तब चार दिन नहीं मांगूंगा।

ईश्वर चन्द्र। भैया यदि आना दूंगा फिर?

बालक। महाराज देना हो तो दीजिये मिरखाई से क्या लाभ?

विद्यासागर। बेटा दूंगा अवश्य मेरे प्रश्न का उत्तर दो!

बालक। तो जी मैं १५ दिन भीख न मांगूंगा।

विद्यासागर ने प्रसन्न मुद्रा से कहा चिरजीव? मैं तुम्हे एक रुपया दूंगा-कहो क्या करोगे?

बालक श्रीमान तो फिर मैं सदा के लिये भीख जोड़ दूंगा।

विद्यासागर एक रुपया उसे दे कर चले गये।

बालक ने उस रुपये में से एक आना के चने खरीदे जो उस के चार दिन के निर्वाह के लिये पर्याप्त थे। पन्द्रह आने के छोटे-छोटे जापानी खिलौने लिये उन्हें बेच २ कर जो कुछ सचय हुआ, और भाग्य ने साथ दिया पुरुषार्थ उस में था ही, छोटी-सी दुकान खोली। दश वर्ष बीत गये, वह बालक एक बड़ा सेठ बन गया। लक्ष्मी उसके चरण चूमती। वह लखपति सेठ बना। अचानक उस की दूकान के आगे से श्री विद्यासागर जा रहे थे। सेठ की नजर पडी। पहचान लिया कि यह वही पारस है जिसने मुझे सोना बनाया। शीघ्र अपने क्लर्क को आज्ञा की कि जाओ उस जाने वाले महोदय को बुला लाओ, क्लर्क गया विद्यासागर से निवेदन किया कि महाराज हमारे सेठ जी आपका दर्शन करना चाहते हैं, पधारिये!

महात्मा विद्यासागर लौटे। सेठ के ठाठ बाठ को देखकर उसे पहचान नही सके। उनके ऑफिस मे ज्योंही पहुंचे, सत्पात्र छूए। आशीर्वाद देकर विद्यासागर ने कहा सेठजी क्या बात है फरमाइये।

सेठ—महाराज आप मुझे पहचानते हैं न?

विद्यासागर—नही सेठ जी! मैंने पहले कभी आप से भेंट नही की अथवा स्मरण नहीं।

सेठ—महाराज मैं वही बालक हू जिसे आप ने एक रुपया दिया था।

विद्यासागर ने उसे थापी देकर कहा. कहो मैं बडा ही प्रसन्न हूं। अब तो ईश्वर की बडी कृपा है?

सेठ-महाराज! ईश्वर की तो होगी परन्तु कृपा तो आप के से सत्वगुणी एक रुपये की है। विद्यासागर ने कहा:—

'चीयते बालिशस्यापि
सत्क्षेत्र पतिता कृषिः।
न शाले: स्तम्बकरिता
वप्तुर्गुणमपेक्षते॥' ऐसा कहा।

अर्थात अच्छे क्षेत्र मे पडी फसल अजान द्वारा भी बोई हुई बढती है। क्योकि धानो का झाडीदार होना बोने वाले के गुण की आवश्यकता पर निर्भर नही। आपके प्रश्नोत्तरो पर ही मैंने भविष्य का अनुमान कर लिया था। अच्छा फूलो फलो अब हम चले। सेठ ने प० जी के चरणों पर एक थैली नोटो से भरी धर दी। आसू ढल रहे थे। हाथ जोड़े हुए सेठ गदगद स्वर से कह रहा था, महाराज भेंट स्वीकार कीजिये ठुकराइये मत। पण्डित जी ने बहुत कुछ कहा पर सेठ इस बात पर दृढ रहा कि मेरा सकल्प हो चुका है। मेरा सकल्पित धन मेरे कोष मे अब नही जाना चाहिये। पण्डित जी उसके श्रद्धाभाव से वशीभूत हुए और कहने लगे—अच्छा इन्हें धर्म कोष में जमा करो इन का शीघ्र ही किसी अच्छे स्थान पर वितरण करवा दिया जायेगा।

विद्यासागर अपने घर को लौटे ही जा रहे थे कि एक गली में से किसी अबला के रोने का स्वर सुनाई दिया। पण्डित जी ठहर गये। छड़ी से द्वार खटखटाया। कौन रो रहा है?

जिसका कोई नहीं रहा, अन्दर से अबला बोली।

स्पष्ट-स्पष्ट कहो क्या कष्ट है? पण्डित जी ने कहा।

कहा भी तो बनेगा क्या? बहुतेरो ने सुना, सुन के चल दिए। सब कुछ बन जाएगा। यदि उचित कहोगी, पण्डित जी ने धैर्यप्रद वाणी से कहा।

अबला। तो कहे देती हू सुनो देवता!

यह घर लखपतियो का था। समय ने गेड़ खाया। घाटा पडा, कुछ महामारी ने ले लिए, शेष सफेदपोशी के घुन से मौन-मौन अस्त हुए। भुखमरी से मेरे सब बाल काल ने ग्रस लिए। अब एक ही मेरा शेष है जो कई दिवस का भूखा है, अब यह भी उधर ही की तैयारी कर रहा है जिधर और गये है। मेरे ओढ़ने मे छिद्र है तन को ढाप नही सकती। कही मागने भी जाऊ तो कैसे, अर्धनग्न हू। बड़े घरो की बहू हू। चाहती हू इससे पहले मैं मर जाऊं, क्रूर दैव इसे पूरा न करेगा।

पडित जी। आध घण्टा प्रतीक्षा करो, मैं आया, यह कह कर उसी सेठ के हा पहुंचे, और बोले, चलो महोदय एक सत्पात्र मिल गया है। उस की करो सहायता, आगे से अधिक मिलेगा। उस कष्ट से कराहने वाली देवी की करुण कहानी सुना दी।

सेठ पण्डित जी के साथ गये। साथ ही अपने क्लर्क को आज्ञा दे गये कि एक गाड़ी पर छः मास तक की रसद उस देवी के घर पर ले आओ। सेठ ने गरीबी के दिन देखे थे। वे जानते थे मुसीबत क्या होती है। प. जी के द्वारा वह छः हजार की पूंजी उस दुखिया के नाम जमा करवा दी और उस के पुत्र की शिक्षा आदि का सब उत्तर दायित्व अपने ऊपर लिया।

पाठको! प. ईश्वर चन्द्र और उस सेठ का आजन्म पिता पुत्र का सद्व्यवहार चलता रहा। ★★

समाज के हितचिन्तकों से

पंजाब आर्यसमाज का महान् केन्द्र रहा है। यहां का अपना प्रेस और वेदी दोनों ही शक्तिशाली हैं। बडी-बडी सस्थाएं हैं। समाजों में जीवन है। इस प्रांत में दो प्रतिनिधि सभाएं हैं। गत कुछ समय से पंजाब में आर्य-प्रतिनिधि सभा के काम करने वालों मे मनमुटाव सा हो गया है। इसका परिणाम ठीक नही निकल रहा। कचहरियों में अभियोग तक चले हैं। यह सब कुछ देख कर प्रत्येक भाई बहिन को दुःख होता है। सारे लोग सब समाचारपत्रों में पढते हैं तथा सारा खेल देखते भी हैं। हम आर्य-जगत् के इन स्तम्भों द्वारा समाज के के वृद्ध महानुभावों श्री दीवान बद्रीदास जी, कैप्टन केशवचन्द जी, दीवान अलखधारी जी, महात्मा आनन्द स्वामी जी, डा० गोकुलचन्द जी देहली, प्रिंसिपल दीवानचन्द जी कानपुर आदि से प्रार्थना करते हैं कि वे समाज के विशाल परिवार के इस मनमुटाव को दूर करने के लिए आगे आकर परस्पर मिलाने का प्रयत्न करें ताकि आर्यसमाज की यह आपसी दरार पाटी जा सके। जनता में समाज की जो बदनामी होती है, उसे दूर किया जा सके।

खन्ना में वेदप्रचार

गत दिनों सभा कार्यक्रम पर आर्यसमाज खन्ना में वेद सप्ताह में कथा पर जाना हुआ। एक सप्ताह तक निरन्तर हिन्दी पुत्री पाठशाला के सुन्दर प्रागण मे कथा का काम चलता रहा। जनता खूब आती थी। सभा की विख्यात भजनमडली प० जगतराम बस्तीराम जी ने खूब धूम मचाये रखी। वहा समाज के प्रधान श्री मुन्शीराम जी तो समाज के साक्षात् दीवाने मस्ताने हैं। कितना काम वह तथा उनका सारा परिवार मण्डल करता है। यह देख कर उनसे बड़ी प्ररणा मिलती है। सारी जनता उनका सम्मान करती है। मास्टर मदन गोपाल जी भी समाज के अतीव प्रेमी हैं। श्री वसिष्ठ जी मैनेजर हिन्दी पुत्री पाठशाला बड़े ही समाज व पाठशाला के प्रभावशाली व्यक्ति हैं। प्रिंसिपल नन्दलाल जी, श्री मन्त्री जी, बा० लभूराम जी, मास्टर धर्मदेव जी आदि सज्जन समाज के काम मे लगे हैं। वेद-सप्ताह समारोह से मनाया गया। मार्ग व्यय समेत सभा को वेद-प्रचार के लिए १६२) रु० मिले। आर्य-जगत् की पांच प्रतियां प्रति सप्ताह वहां के सज्जनों ने मगानी आरम्भ कर दी। खन्ना समाज का वातावरण, प्रेम, उत्साह देख कर मन प्रसन्न हुआ। —स०

★ चाय दिल को कमजोर करती है, यही कारण है कि हृदय की गति रुकने का रोग जब से चाय चली है तब से अधिक है। चाय भी उत्तेजक होने के कारण एक प्रकार का नशा है अतः उसे छोड़ देना चाहिए। मिर्च, खटाई आदि भी नहीं खाना चाहिए। ब्रह्मचारियों और विद्यार्थियों को तो लाल मिर्च आदि बिलकुल न खाना चाहिए।

कुष्ट रोगियों की समस्या

श्री हरिश्चन्द्र जी विद्यार्थी दयानन्द साल्वेशन मिशन

भारत भर में ४० लाख से अधिक लोग कुष्ट रोग में ग्रस्त हैं। पहले यह प्रसिद्ध था कि यह रोग सक्रामक और पैतृक है। मगर सैकडों प्रयोग करके यह निश्चय किया गया है कि यह रोग न ही संक्रामक है और न ही पैतृक। यह छूत से भी दूसरे प्राणी को नहीं लगता और माता पिता से भी उनकी सतान को नहीं जाता।

इस रोग को दूर करने के लिये सरकार द्वारा और ईसाई मिशनरियों द्वारा कई केन्द्र सचालित हैं। महात्मा गांधी इस मे विशेष रुचि रखते थे। उनकी याद में स्थापित गाधी निधि द्वारा भी कई स्थानो पर इसके इलाज का प्रबन्ध है। पर यह सारा अंग्रेजी ढग का है और बहुत व्यय साध्य है। और फिर इस रोग से पूर्ण मुक्ति भी नहीं मिलती।

हल द्वानी नगर के एक सज्जन श्री राजेन्द्रप्रसाद ने एक ऐसी सरल आयुर्वेदक द्वाई तैयार की है जो गलित कुष्ट को केवल दस दिन में जड से उखाड देती है। उनका कथन है कि अब तक कई सहस्र लोगों पर इसका प्रयोग किया गया है और एक भी प्रयोग असफल नहीं हुआ है। मगर सरकारी डाक्टर इस प्रयोगसिद्ध दवाई को अपनाते है, न लोगों को या सरकार को अपनाने देते है।

कुष्ट के रोगयों मे भी बढ कर इनकी सतान की समस्या है। अब तक सारे वर्ष में ही इन के लडके लड़कियों को ईसाई मिशनरी ले जाते रहे है, और अब भी यह काम उन के ही सुपुर्द है। जहा कोढी अपने बच्चो का खरच देते हैं—जैसे हडकी स्थित कोढी कालोनी के निवासी—वहा भी बच्चे अब के सब ईसाई मिशनरयों के पास हैं।

ईसाई मिशनरी इन बच्चो को माता पिता से दूर शिक्षाकेन्द्रो में शिक्षण और प्रशिक्षण दे कर, उन्हे ईसाई बना प्रायः अपना प्रचारिका या प्रचारक बना लेते है। हडकी वालों के बच्चे पूना मे पढ रहे हैं, तो लुध्याना वालों के डेहरादून, फीस आदि व दे कर सहायता कर सकते हैं। और खान पान का व्यय कोई भी संस्था—यथा दयानन्द सालवेशन मिशन या सार्वदेशिक सभा—अपने ऊपर लेकर दानी सज्जनों से अपील कर के इसी फड में धन एकत्रित कर इस का संचालन कर सकती है। दानी भी धन दे कर, या एक-एक बच्चे के खान पान का उत्तर दायित्व ले कर अपनी कमाई सफल कर सकते हैं। जो सारे शिक्षण समय का भर न ले वह एक, दो, तीन या कुछ अधिक वर्षों ही एक एक लडके या लडकी के खान पान की जिम्मावारी ले सकते हैं। काम नही है केवल किसी विश्वस्त सस्था को यह काय अपने हाथ में लेकर इस का सगठन करना चाहिये। इस कार्य में बच्चो के माता पिता भी सहायता करते हैं। और कार्य का आरम्भ थोडे बच्चो से भी किया जा सकता है। शनै. २ यह कार्य बढाया जा सकता है।

स्वल्पमपि अस्य धर्मस्य
त्रायते महतो भयात ॥

थोड़ा सा कार्य भी बडी विपति से बचाने वाला सिद्ध होगा। ★★

आर्यसमाज विक्रमपुरा जालन्धर

साप्ताहिक सत्सग रविवार २-१०-६६ को प्रातः आठ बजे होगा। दैनिक कार्यवाही के पश्चात श्रीमान देशराज जी महाजन का मनोहर व्याख्यान होगा, सभी सज्जन समय पर पधार कर अनुगृहीत करें।

सभा प्रचारक श्री पं० प्रभुदयाल जी आर्य का प्रचार कार्य

यह मण्डली श्री राम विचार जी प्रो० डी० ए० वी० कालिज तथा आर्यसमाज हिसार के निरीक्षण में सुचारू रूप से कार्य कर रही हैं। तहसील हांसी के अनेक ग्रामो में प्रचार किया। जिसे जनता ने पसन्द किया। हासी तहसील की अनेक जर्जरित समाजों का पुनरुद्धार किया तथा उन मे नव जीवन का सचार किया। पाली (तहसील हासी) मे इस मण्डली ने वेद सप्ताह के अवसर पर प्रचार किया तथा दैनिक कार्यवाही के बाद नवीन यज्ञोपवीत धारण कराए गए। सभा को वेद प्रचारार्थ १२८) प्राप्त हुए। इस भारी सफलता का श्रेय अधिकतर चौ० छज्जू राम जी प्रधान समाज को है।

पाली वाली ढाणी जिस मे मुलतानी शरणार्थी निवास करते हैं। नई समाज की स्थापना की तथा यज्ञोपवीत पहनाए गए। सभा को वेद प्रचारार्थ ४०) प्राप्त हुए। इस नवीन समाज के निम्नाधिकारी निर्वाचित हुए। प्रधान—चौ० नेकी राम जी, उपप्रधान—लालचन्द्र जी, मन्त्री—धर्म चन्द्र जी, उपमन्त्री—जगतराम जी। श्री सेठ लालमण जी आर्य कोठी न० ३०-५ मौडल टाऊन हिसार के यहा श्री प्रभुदयाल जी आर्य प्रभाकर के पुरुषार्थ से गृहप्रवेश सस्कार तथा उनके सुपुत्र श्री सत्यानन्द जी B.A. का यज्ञोपवीत सस्कार कराया। उपस्थित जनो ने अपने पवित्र आशीर्वाद से दोनो महानुभावो को कृतार्थ किया। इस अवसर पर ११/- प्रादेशिक सभा को और ११/- आर्यसमाज हिसार को वेद प्रचारार्थ दान प्राप्त हुआ। सेठ जी ने आर्य जगत का स्थायी ग्राहक बनना स्वीकार किया। सेठ दानवीर छबीलदास जी का भाषण इस अवसर पर सोने मे सुहागा का काम कर गया।

- प्रभुदयाल आर्य, प्रभाकर प्रचारक, आ० प्रा० सभा जालन्धर

स्त्री समाज का साप्ताहिक सत्संग शनिवार को दोपहर बाद तीन बजे से पाच बजे तक होता है। सत्सग मे व्याख्यान श्री पुरोहित जी का होता है सभी माताओं तथा बहिनो से सानुरोध प्रार्थना है कि समय पर पधार कर लाभ उठाए।

हमें अभी तो लड़ना है

(श्रीअरुण सरीन, होशियारपुर)

उठो, मत रखो हाथ पर हाथ,
मिलाओ कन्धा कन्धे के साथ,
करे विश्राम न यह गात,
हो 'एक-एक ग्यारह' की बात,
डटो औ' चूमो लक्ष्य का हाथ,
हमें अभी तो लड़ना है।

खेतो में हो हल-कर्षण से,
कल श्रृंगार हो हाथो से,
धूएं उगल दो चिमनियो से,
सगीत उमड़ दो कैनो से,
देखो लौटना न तुम तनिक से,
हमे अभी तो लड़ना है।

नही लड़ाई अब सगीनो की,
अब लड़ाई छानबीनो की,
नहीं लडाई अब मार काट की,
अब लड़ाई उद्यमी साजो की,
औ' भारतके दृढ़ पग सिंचन की,
हमें अभी तो लड़ना है।

कलम में भी हो उफान,
हाथो में भी हो तूफान,
तभी रहेगा देश मान,
बजाओ सुरीली उद्यमी तान,
फूंकी चप्पे २ मे नव जान,
हमें अभी तो लडना है।

उद्यम करो सहयोग करो,
नव-निर्माण का संयोग करो,
मातृ-भू हित जी दान करो,
न तनिक आलस्य से गिरो,
करो या फिर मरो,
हमें अभी तो लड़ना है।

आर्यसमाज श्री गंगा-नगर (राजस्थान)

वैदिक सप्ताह श्रावणी उपाकर्म ३०-८-६६ से कृष्ण जन्माष्टमी तारीख ८-९-६६ तक बडी धूमधाम से मनाया गया। श्रावणी उपाकर्म पर्व समाज मदिर मे सम्पन्न हुआ जिस में श्री भगवती प्रसाद जी, अभय के मनोहर भजन तथा भाषण हुए। इसी प्रकार गगा नगर के मुहल्लो में भी अभय जी द्वारा प्रचार होता रहा। इस अवसर पर जनता ने पर्याप्त रुचि प्रकट की। कृष्ण-जन्माष्टमी पर्व भी प्रोत्साह से मनाया गया। जिस मे 'अभय जी के अतिरिक्त अन्य महानुभावो ने भी श्री कृष्ण के जीवन पर प्रकाश डाला। रात्री के समय भी यह कार्यक्रम चलता रहा। मिष्टान्न वितरण के पश्चात शाति पाठ के साथ कार्यवाही समाप्त हुई। किशनचन्द्र मन्त्री आर्यसमाज।

★ जो सच्चे अर्थ में देवता हैं उनकी पूजा अर्थात् उन से यथायोग्य व्यवहार करना ही देवयज्ञ है। पत्थर तथा वृक्ष देवता नही और न ही पूजने योग्य हैं।

★ पृथ्वी से लेकर ईश्वर पर्यन्त पदार्थों का सत्य विज्ञान और उनसे यथायोग्य उपयोग लेना विद्या कहाता है।

नौजवानों की सुध लो

(ले० मा० हरिश्चन्द्र जी गुप्त जालल मण्डी)

हमें यह देखकर दुःख होता है कि आजकल के नौजवान कितने ढीठ और निर्लज्ज हो गये हैं कि माता पिता आज्ञा को पद दलन करना और अध्यापकों को गालियां देना, बडे बजुर्गों का आदर सत्कार के बदले मखौल उड़ाना, धर्म सभा मे अव्वल तो जाना ही नहीं यदि जाना तो वहा कोलाहल और दगा करना क्या इसी का नाम सभ्यता है और क्या इसी को तहजीब कहा जाता है क्या हमारे देशमें ऐसे ही स्वय उतपादक नास्तिक बच्चे जन्मेगे और माता पिता अपनी ऐसी नेक सन्तान पर गर्वकर के ग्रीवा निकाल कर बाजार मे चलेंगे शोक ! महा शोक !!

यह तो देश के बच्चो का ढाचा ही बिगड़ गया है किसी के वश का रोग नही रहा। बाल्यावस्था मे माता पिता अपनी सन्तान को जैसा भी बनाना चाहे वैसा तैयार कर सकते है- उसे वैसे ही साचे मे ढाल सकती हैं। जैसे माली छोटे २ पौदो को जो टेढा या निकम्मा हो उसे झट रस्सी से व किसी डण्डे से बाध कर सीधा खडा कर देता है ताकि यह ठीक प्रकार फले फूले हुव पौदा वैसा ही बढता चला जायेगा मैं एक बात और निवेदन कर दू ंगी बच्चे के जीवात्मा पर कुछ तो पूर्व के संस्कारो का प्रभाव भी होता है कुछ माता पिता के रजवीर्य का भी असर रहता है। कुछ अन्न का भी अवश्य होता है कहा भी है कि जैसा खाओ अन्न, वैसा होवे मन, तत्पश्चात सासारिक सृष्टि मे जन्म लेकर वहा की प्रकृति आदि का भी असर हुए बिना नही ठहरता फिर बच्चे कुछ माता पिता स अडौस-पडौस से और जैसी संगत हो वहा से सीख कर अपने आपको वैसा ही बनाने का प्रयत्न करते रहते है परन्तु इस इस मे सब से अधिक दायित्व मा बाप का ही है वे जैसा चाहे अपनी सन्तान को वैसा बना ले।

सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि दयानन्द जी लिखते है कि 'जो मां बाप आचार्य सन्तान और शिष्यो को बुरे मार्ग से डांटते हैं वे अपने हाथ से बच्चो को अमृत पिला रहे हैं और जो औलाद या शिष्यो से लाड करते हैं वे अपनी सन्तान को विष पिला कर मारते हैं।'

'बच्चो के सुधार के लिये उनके मन मे भय न बिठाये भूत प्रेतादि कुछ नही ऐसा कहे और जन्त्रमन्त्रादि पर विश्वास न करायें, झूठे ज्योतिष व निजूमी अथवा जप आदि व्यर्थ बीमारियों से भी इन्हें दूर रखें यह सभी बाते नव युवकों का भविष्य बिगाड़ने के साधन हैं और इन्हें आलसी और कर्महीन बनाने वाले हैं, बलकि जहा तक बने सदवार्थ ग्रन्थ ही पढ़ने को दें जिसमे उनका जीवन उच्च हो और शुभ कर्म कमायें और निर्भय होकर संसार में विचरें। इन आर्ष ग्रन्थो का पढना ऐसा है कि जैसे एक गोता लगाना और बहूमूल्य मोतियों का पाना' इन सनातन आर्य ग्रन्थो के पढ़ने से ही नवयुवक परम पिता परमेश्वर का ज्ञान प्राप्त कर सकते है और ससारिक दुःखों कष्टो चिन्ताओं से ही नहीं वरन जनम मरन के बन्धन से भी मुक्त हो सकते हैं। बलकि मैं प्रत्येक युवक से प्रार्थना करूगा, कि और कुछ नहीं तो कम से कम आर्य जगत, आर्य गजट का अध्यन हर सप्ताह जरूर करें इन दोनो से पत्रो मे बड़े ही विद्वता पूर्ण लेख होते है जो बार बार मनन करने और पढने योग्य हैं। इनके पढने से नई जवानो, नया खून नया जोश, नई उमगे और शुद्ध विचार पैदा होते हैं।

यदि आज के नौजवान इन भड़कीली, जोशीली, झूठी, निर्मूल और विध्वंसवाद बातें जैसे (प्रत्येक वर्ष मलेरकोटले जाकर जीवित बकरे काटकर पीर की कबर पर चढाकर कामना पूरी करवाना) इन निकम्मीबादी गन्दी देशद्रोही बातें तजकर शुद्ध मार्ग अपनाए फिर भी हमारे देश का भला हो जावे और हम सहस्रो के खर्च से बच जावे।

मगर हमे आश्चर्य यह है कि जो नौजवान प्रातः ४-५ बजे तक उठने का नाम नही लेते बल्कि आठ बजे तक चारपाई पर करवटें बदलते रहते हैं और घर घर ही शौचादि गये उठे बीड़ि सुलगाई और पी, या नावल को हाथ में ले लिया। रात देर से सोना, प्रातः देर से उठना, जब जब उन्हें अपनी ही सुध नहीं देस का तो कुजा। अपना ही सुधार कर लें।

बाल्यावस्था से ही बच्चो में कुसस्कार, चोरी ठगी, झूठ छल कपट के सस्कार डाले जाते हैं जो बड़ी आयु में दुःखदाई होते हैं। धर्म कर्म से विहीन होकर ठोकरें खाते हैं जैसा आप देखते हैं कि कितने नौजवान मद्यपान सेवन करते है और कितने ही आचारहीन हुए फिरते हैं। उन्हें यह पता नहीं कि Charcter is last Evry Thing is last सा आचार के बिना मनुष्य जीवन बिल्कुल है यदि जीवन कुन्दन बनाना है और आचार व्यवहार शुद्ध करना है तो वैदिक धर्म की शरण में आओ वैदिक ग्रन्थो को पढो, इस के अमृतरूपी रस का पान करे और आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्सग मे आओ, इसके नियमों को अपनाओ, हिन्दी ट्रैक्ट पं० मसाराम वैदिकतोप लिखत आर्य समाज क्या है मगा कर पढें। यदि आप में से कोई भी नवयुवक अपने अनमोल जीवन को सुधार कर पाया तो मैं अपना लिखा परिश्रम सफ समझू गा। ★★

आर्य समाज सैक्टर २२ चण्डीगढ़

१ सितम्बर से ८ सितम्बर तक वेद सप्ताह उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर ब्रह्मानन्द जी मण्डली के भजन तथा स्वामी सुरेन्द्रानन्द जी की कथा होती रही है जिस का जनता पर अच्छा प्रभाव रहा।

९-१०-११ सितम्बर को उत्सव कार्य क्रम आरम्भ हुआ। प्रथम दिन ध्वजारोहण के पश्चात् भव्य नगर कीर्तन आरम्भ हुआ जोकि नगर के भिन्न २ सैक्टरों से होता हुआ समाज मन्दिर में समाप्त हुआ। उत्सव में अनेक संन्यासी, महात्माओं तथा विद्वानो ने भाग लेकर जनता की धर्म पिपासा को शान्त किया।

यजुर्वेद ब्रह्म परायण यज्ञ की पूर्णाहुति ११-९-६६ को प्रातःकाल डाली गई। उत्सव के दिनों मे, आर्य समाज सम्मेलन तथा हिन्दी सम्मेलन भी मनाए गए जिस में अनेक प्रस्ताव पास करके किए गए। हिन्दी सम्मेलन में हिन्दी सम्बन्धी प्रस्ताव पास किए गए।

आर्यसमाज जे. जे. कालोनी न्यू दिल्ली २७ प्रथम वार्षिकोत्सव

२६-९-६६ से २-१०-६६ तक सम्पन्न हो रहा है। इस शुभ अवसर पर बड़े उपदेशक तथा संन्यासी श्री धर्मवीर जी, श्री लखपत राय जी, श्री कृष्णचन्द्र जी वैद्य, पं० चन्द्रप्रकाश जी आदि तथा राजकुमार, मदन मोहन चिमटा मण्डली के सुमधुर भाषण और भजन होवे।

समय—रात ७॥ बजे से १०॥ तक प्रतिदिन तथा रविवार को पूर्णाहुति, तथा २ से ५ बजे तक स्त्री समाज में होंगी। जनता इस प्रथम वार्षिकोत्सव पर सम्मिलित होकर अधिकारी वर्ग का उत्साह वर्धन करें।

—रामचन्द्र मन्त्री समाज

आल इण्डिया दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर

अमृतसर, फिरोजपुर तथा गुरदासपुर जिलो में इस भारी वर्षा के कारण बहुत नुकसान हुआ है सैकडों ही लोग बेघर हो गये है और हजारों फसलें तबाह हो गई है। इन शोचनीय परिस्थितिओ को मुख्य रखते हुए आल इण्डिया दयानन्द साल्वेशन मिशन होश्यारपुर ने अपने एक कार्यकर्ता श्री ज्ञानी रामसिंह को दवाया देकर वैद्य श्री उज्जागर सिंह जी के साथ उपरोक्त बाढ़ग्रस्त इलाको का भ्रमण करने के लिये भेज दिया है। वे बेघर तथा बाढ पीड़ित लोगो मे मुफ्त औषधियां बांट कर उनकी सेवा करेंगे। इस के लिये श्री दौलतराम जी बी. ए. मालिक अशोक आयुर्वेदिक फारमेसी, अकाली मार्कीट अमृतसर ने मिशन को बिना मूल्य औषधिया दी हैं जिस के लिये मिशन उनका अत्यधिक धन्यवादी है।

रामदास
प्रधान मिशन

देवनागरी का शोधन

(पृष्ठ २ का शेष)

तमोगुणी भोजन ही देह मे घुस कर इन शत्रुओं को जीवन देता रहता है। यदि सर्वथा तमोगुणी भोजन का विचार से सूक्ष्मरूप में अथवा भोजन द्वारा स्थूल रूप मे त्याग किया जावे और उसके स्थान पर सात्विक विचार, सरल सुपाच्य और सरस भोजन का ग्रहण किया जावे तो शत्रु नाशन में बड़ी सहायता प्राप्त होगी।

इस प्रकार सतत आत्म-परीक्षण, इन्द्रिय संयम ही ऐसे दो महान साधन हैं जिन से यह देवतत्, देवपुरी, ऋषि आश्रम, पशुविहीना तपोभूमि बन कर पाशवीय जीवन से ऊपर उठ कर अपने राजा इन्द्र आत्मा को श्रोत्रिय गुरु की कृपा से प्राप्त होने वाले परम पिता ब्रह्म के द्वारा मोक्ष प्रसाद को प्राप्त कराने में सहायक हो सके। ★

स्वास्थ्य स्तंभ :—

गरीबों के लिए लहसुन कस्तूरी के समान है

स्वामी—सत्यदेव परिव्राजक

यद्यपि लहसुन का प्रयोग पूरे विश्व मे होता है पर अधिकाश लोग उसको रोगो से मुक्ति दिलाने की क्षमता से अनभिज्ञ होते हैं। पर तथ्य तो यह है कि ऐसे बहुत कम पौधे है, जो उपयोगिता मे उससे मुकाबिला कर सके! प्याज की जाति के पौधों मे लहसुन मे चिकित्सा सम्बन्धी सब से अधिक गुण हैं। रक्त शोधन तथा कोषों के शोधन मे इसका बडा गहरा प्रभाव पड़ता है।

तत्वो की दृष्टि से, उसमें इतना वैभिन्य है कि रोगो में लहसुन का उपचारक गुण किंवदन्ती से लगते हैं। शरीर के जिस भाग मे क्षति होगी, लहसुन अपनी क्रियाशीलता उसी भाग मे प्रारम्भ करता है और यह एक पौधा है, जिसका उपयोग व्यक्ति परम विश्वास से कर सकता है। रक्त मे यह रक्षणात्मक तत्वो को पुष्ट करता है और कोषाणुओ को यह निर्दोष बनाता है, पसीना निकालता है और जहा भी मवाद बनने की आशंका रहती है, वहा उस जमे भाग को तोड कर मवाद बनने की प्रक्रिया के मूल पर आघात करता है।

लहसुन बडा शक्तिशाली ऐंटि-सैप्टिक है। पायरिया, फोडे, चर्म रोग आदि मे यह बडा ही प्रभावकारी हैं। जहा कही भी सूजन हो, लहसुन उसे नष्ट कर देता है। लहसुन के प्रयोग द्वारा आप प्रकृति की उपचार क्षमता को बल प्रदान करते है।

डाक्टर 'हुस' ने लिखा है कि मेयर होफर ने इस दिशा मे खोज की तो पता चला कि लहसुन वह पदार्थ है, जो आतो की सूजन को ठीक कर सकता है अत: कम से कम इतना तो निश्चित है कि बीसवी सदी की महामारी की रोकथाम के लिए लहसुन अदभुत शक्ति रखता है। वैज्ञानिक इस बात को बहुत दिनो से जानते है कि लहसुन में बैक्टीरिया-नाशक बडा गुण है। डा० वोयटचर का कथन है कि, यह लहसुन टाइफाइड, जख्म, त्वचा पर फफूंदकी छूतदार बीमारियों हैजा आदि की रोक थाम की अदभुत क्षमता रखता है।

गांधी जी ने कहा

जब उन्होने मुझ से मेरे खाने के विषय मे पूछा तो मैने लहसुन का विशेष तौर से जिक्र किया। गाधी जी खूब हसे और बोले, 'लहसुन तो गरीबो की कस्तूरी है। और मुझे तो उसके प्रयोग से बडा लाभ पहुचा है।

यह वैज्ञानिक विश्लेषण

केन्द्रिय सरकार ने खाद्य-विज्ञान के सम्बन्ध मे खोज कार्य करने के लिए मैसूर मे एक प्रयोगशाला स्थापित की है। उक्त प्रयोगशाला की ओर से 'खाद्य विज्ञान' नामक एक त्रैमासिक पत्र प्रकाशित होता है। उस पत्रिका मे प्रकाशित लहसुन के विवरण निम्न प्रकार से है।

लहसुन ससार भर मे पैदा होता है और मसाले के तौर पर तथा बहुत सी बीमारियो मे दवाई की रूप मे इस्तेमाल किया जाता है। लहसुन रोगाणुनाशक, प्रस्वेदक, मूत्रवर्धक तथा कफ निवारक होता है। इसी लिए आयुर्वेदिक चिकित्सा मे इसका बहुत उपयोग होता है। भारत मे और विदेशो मे लहसुन पर अनेक वैज्ञानिको ने अनुसधान किया। अनुसधानो के मुख्य निष्कर्ष सक्षेप मे इस प्रकार है। लहसुन मे एल्लिसिन नामक पदार्थ होता है जिस मे जीवाणु नाशक गुण होते है। एल्लिसिन नामक पदार्थ के अणु—एसिनेज मे बदल जाते है। लहसुन के काढे मे जीवाणुओ को मारने की सामर्थ्य अन्य मसालो की अपेक्षा अधिक होती है। लहसुन भोजन मे रहने पर आतो मे थायामीन (विटामिन-बी) का आतरिक निर्माण अधिक होता है। आंतो मे एल्लिसिन के साथ मिल कर एल्लि-थायामीन बनाता है जो थाया-मीन की अपेक्षा तेजी से जजब होता है।

लहसुन में औषधीय गुण भी है। वह कृमिनाशक, मूत्रवर्धक उदरवायु निरोधक है। आर्य प्रेमी से साभार।

★ ★



आर्यसमाज सैक्टर ८ चण्डीगढ़

३०-८-६६ को श्रावणी उपाकर्म तथा रक्षाबन्धन के पर्व मनाने के बाद निम्न प्रस्ताव पास किए।

१. गौ हमारे सास्कृतिक आदर्शो की प्रतीक है और खेती प्रधान भारत देश की अर्थ व्यवस्था का मूल स्तम्भ है। मनुष्य की शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति का विकास गौ से ऐसा जुड़ा है जैसे शरीर से प्राण गौ माता से भी बढकर मनुष्य की रक्षा करती है इसलिए लाखो वर्षो से गौ माता का पद प्राप्त है। देश के स्वराज्य के लिए अपना सर्वस्व बलि-दान करने वाले महात्मा गांधी, तिलक जी, प० मदनमोहन मालवीय जी आदि नेताओ ने स्वतन्त्रता प्राप्ति पर सर्व प्रथम गौ हत्या बंद करने का सकल्प धारण किया हुआ था अपितु वह तो गौ घातक को मनुष्य घातक मान कर देश के कानून मे इस के लिए प्राण दण्ड रखने की कल्पना किए हुए थे। प्रति वर्ष लाखो गौओ के नाश के कारण दूध, घी आदि पवित्र आहार ढूढने से भी नही मिलता। यहा से जब अगरेज गया उस समय बाजार मे एक रुपए सेर घी बिकता था किन्तु आज अपने राज्य मे घी तो कहा दूध भी सवा रुपया सेर नही मिलने वाला। अत: यह सभा भारत सरकार से बलपूर्वक गोहत्या पर प्रति-बन्ध लगाने का आग्रह करती है।

भारत के और विनाश के लिए आगरा के निकट एक बडा बूचडखाना बनाया जा रहा है जिस मे कि १५००० गौए प्रतिदिन काटी जाएगी इस का निर्माण तुरन्त बद किया जाए।

यह सभा देहली मे चलाए गए गौ रक्षा आदोलन के लिए अपनी पूरी सहानुभूति प्रकट करती है।

कृपया देश की सरकार निरपराध धनदाता, बलदाता, अमृत दाता, गौ आदि दूधधारी पशुओ की रक्षा कर, बेजबान जीवो का आशीर्वाद प्राप्त करे, जिस से भारत का प्रजा सुख सौभाग्य से सब दिन सम्पन्न हो।

आशुराम
पुरोहित आर्यसमाज

★ सस्कारो तथा यज्ञ की विधि को कल्प कहते है। इस मे अनेक गृह्य सूत्र और श्रौत सूत्र हैं तथा सस्कार विधि पुस्तक मुख्य हैं।

आर्य समाज गोविन्दनगर कानपुर में
कृष्ण जन्माष्टमी पर्व

आर्य समाज गोविन्दनगर व आर्य कन्या हाई स्कूल गोविन्दनगर की ओर से भगवान कृष्ण जन्मोत्सव श्री देवीदास जी आर्य की अध्यक्षता मे मनाया गया। विद्यालय की छात्राओ ने कृष्ण जीवन पर सुन्दर भाषण व कविताए सुनाई। श्री देवीदास आर्यने कहाकि भारत-भगवान कृष्ण की सफल युद्ध नीति को अपनाकर वर्तमान सकट से बच सकता है।

इसी प्रकार केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर के तत्वाधान मे आर्य समाज सीसामऊ हाल मे डा० शिवदत्त जी की अध्यक्षता मे कृष्ण जन्म दिवस मनाया गया।

जोगेन्द्र कुमार मरीन
मन्त्री, केन्द्रीय सभा

आर्यसमाज मल्हार गंज, इन्दौर—२

आज हमारे देश मे गौ हत्या बन्द हो इस बात का आन्दोलन चलाया जा रहा है। देश की सर्वोच्चसत्ता लोक सभा के सामने देश के बड़े २ सन्त महात्मा भूख हड़ताल कर रहे हैं। देश के कोने-कोने मे सभाये व प्रदर्शन किये जा रहे है मगर हमारी अपनी ही सरकार गौ हत्या के प्रश्न पर टाल-मटोल कर रही है और सरकार कहती है कि यह सवाल प्रान्तो का है उनको गौ हत्या बन्दी का कानून बनाना चाहिए आश्चर्य है और दुर्भाग्य भी कहा जाना चाहिए कि आज देश को स्वतन्त्रता मिलने के १९ वर्ष बाद भी देश से गौवध का कलक दूर नही हुआ।

गाधी जी ने गौ हत्या के बारे मे यहातक कहा था कि देशको स्वतन्त्रता मिलने के बाद अगर देश मे गौ हत्या बन्द नही होगी तो मै उसे स्वतन्त्रता मानू गा। देश को स्वतन्त्रता मिलने के पूर्व यही कांग्रेसी नेता भी अपने अधिवेशनो मे गौ हत्या बन्दी के प्रस्ताव पास किया करते थे। अब देश के उन सन्त महात्माओ के प्राणो की रक्षा के साथ गौ वश की रक्षा के लिए सरकार को अविलम्ब गौहत्या-बन्दी घोषणा कर देनी चाहिये।

रामप्रकाश बसल मन्त्री
आर्यसमाज, मल्हारगंज,
इन्दौर

भारत के माथे पर सबसे बड़ा कलंक गो हत्या

श्री देवीदास जी आर्य, गोविन्दनगर, कानपुर

वैदिक साहित्य में गो के लिए निम्न लिखित शब्द मिलते हैं

(१) अवघ्या अर्थात न मारने योग्य (२) रोहणी अर्थात उन्नति का साधन (३) महिन्द्री, इन्द्रियो को पुष्टि देने वाली (गो का दूध इन्द्रियो को पुष्ट करता है) (४) ज्या अर्थात पूजा के योग्य (५) दुग्धारी, दूध का भण्डार (६) इन्दिल, माता (७) बहोला बहुत दूध देने वाली (८) शतोघन्ता अर्थात एक सौ मनुष्यो को दूध से तृप्त करने वाली (९) पावनी पवित्र करने वाली (१०) भद्रा अर्थात सबका भला और उपकार करने वाली। इस प्रकार जगति, ज्योति, काम, दोहा, सावित्री, सरस्वती आदि २५ शब्द गो की महान्ता के लिए आते है जिनके अर्थों से सिद्ध होता है कि यह प्राणी कितना लाभदायक, उपयोगी माता के समान पालन करने वाला, उन्नति और समृद्धि का साधन, रक्षा और पालन के योग्य है।

बढ़ती हुई गो हत्या

मुस्लिम राज्य में भारत में गोवध होता रहा परन्तु बहुत कम था। अंग्रेजी राज्य में इस पाप मे वृद्धि हुई परन्तु अपने राज्य मे पुराने तमाम रिकार्ड टूट गये है। बूचडखाना के अन्दर और के बाहर खुले आम गो हत्या की जा रही। भारत का बहुमत इस को नही चाहता परन्तु उन की भावनाओ को ठेस पहुचाई जा रही है। वर्तमान शासन अपने पुराने वचनो को भूल गया है। स्वतन्त्रता मिलने से कुछ माह पूर्व गोवध के विरुद्ध भारतमें प्रबल आन्दोलन किया गया था। उसका उद्देश्य यह था कि १५ अगस्त १९४७ की स्वतन्त्रता की घोषणा के साथ साथ कानून द्वारा भारत मे गौ हत्या को बन्द करने की भी घोषणा की जाये। इस आदोलन के बीच केवल एक दिन मे ६० हजार तारे भारत के विभिन्न नगरो से सरकार को भेजी गई। प्रस्ताव और पत्रो का अन्दाजा नही लगाया जा सकता था। वजन करके ही अनुमान लगाया गया। ८ अगस्त १९४७ को प० जवाहर लाल नेहरू ने एक प्रतिनिधि मण्डल का विश्वास दिलाया कि सरकार इस प्रश्न पर सहानुभूति पूर्ण विचार करेगी। एक समिति नियुक्त की जायेगी वह समिति जो रिपोर्ट देगी उस पर अमल किया जायेगा। अतः आन्दोलन समाप्त किया जाये। इस आश्वासन पर यह देश व्यापी आन्दोलन समाप्त किया गया। १९ नवम्बर १९४७ को समिति बनाई गई उसने ६ नवम्बर सन १९४८ को गौ हत्या को कानून द्वारा बन्द करने की रिपोर्ट पेश की परन्तु सरकार ने आज तक उस पर अमल नहीं किया। ३ फरवरी को फिर एक प्रतिनिधि मण्डल गौ हत्या पर प्रतिबन्ध लगाने के सम्बन्ध में पं० नेहरू से मिला और उनसे पुनः गोहत्या पर प्रतिबंध लगाने सम्बन्धी आश्वासन प्राप्त किया परन्तु उस समय भारतवासियों को अत्यन्त खेद हुआ जब २ अप्रैल १९५५ को लोक सभा मे प० नेहरू ने आवेश मे आकर यहा तक कह दिया, "मैं प्रधान मन्त्री के पद से त्याग-पत्र देने को तैयार हू परन्तु गो-हत्या को बन्द करने के प्रश्न पर झुकने को तैयार नही हूं।"

निरर्थक बहाना

भारत सरकार प० नेहरू के इस रुख के कारण भारत के इस महत्व-पूर्ण प्रश्न को यह कह कर टालती रही कि यह मामला प्रान्तीय सरकारो से सम्बन्ध रखता है। यदि वे चाहे तो इस के लिए कानून बना ले आज भी लोक सभा में उक्त निरर्थक तर्क को दोहराया जा रहा है और जनता को धोखा दिया जा रहा है। वरन् केन्द्रीय सरकार ने जिस कानून को पास करना चाहा वह प्रान्तीय सरकारो के विरोध के बावजूद, संविधान मे संशोधन करके भी पास कर दिया। आवश्यकता है नीयत साफ होने की।

गौ-हत्या व गांधी हत्या

प० जवाहर लाल नेहरू ने अपनी पुस्तक मेरी कहानी के पृष्ठ ३९० पर स्वय लिखा है कि हिन्दू नरम और अहिंसक है क्योंकि उस का आदर्श गाय है। महात्मा गाधी ने तो गो-हत्या के प्रश्न को स्वराज्य की तरह महत्वपूर्ण बनाते हुए यहा तक लिखा है कि मुझे ऐसा लगता है कि जब तक गौ की हत्या होती है तब तक मेरी भी हत्या होती है। महात्मा जी को राष्ट्र पिता मानने वालो और उन की समाधि पर फूल चढाने वालों से मैं एक सवाल करना चाहता हू कि वे उनके आदर्श पर कहा तक चल रहे हैं?

इतिहास व गो-रक्षा

गो-रक्षा की भावना हर एक हिन्दू के नस-नस में भरी हुई है इस का संसार की कोई शक्ति मिटा नहीं सकती। इतिहास इस का साक्षी है। १८५७ में गो-रक्षा के प्रश्न पर ही भारत की स्वतन्त्रता का प्रथम युद्ध हुआ। आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस युद्ध के बन्द साल ही बाद सब से पहिले गो-हत्या के पाप को मिटाने का बीड़ा उठाया था। वेदो ने गौ की अनेक विशेषताएं लिख उस के हत्यारे को शीशे की गोली से उडा देने का आदेश दिया है। चक्रवर्ती आर्य महाराजा अपने हाथो से गौ की सेवा करना और उन को अमृत दूध पीना अपना सौभाग्य समझते थे। इस की रक्षा के लिए अपने प्राणो तक को आहुति देना आर्य हिन्दू राष्ट्र की परम्परा रही है। भगवान कृष्ण गो-रक्षा के कारण गोपाल कृष्ण कहे जाते हैं महर्षि दयानन्द को भी गो-रक्षा भावनाओं के कारण गोपाल दयानन्द कहा जाने लगा है।

इस्लामी काल मे गौ ब्राह्मण की रक्षा ही आर्य हिन्दू जाति का नारा था। मुस्लिम बादशाहो ने जब तक गो-हत्या का पाप बन्द न किया उनके कदम नही टिक सके। बाबर ने हमायूं को जो वसीयत की थी उस मे लिखा था "शान्ति पूर्वक राज्य करना है तो हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओ की कदर करके गौ-हत्या बन्द कर देना।" अकबर, जहागीर व शाहजहा के राज्य मे गो हत्या बन्द रही इसी लिए उनका राज्य काफी बढ़ा। अंग्रेजी शासन मे हिन्दुओं पर अत्याचार होने और गो हत्या होने लगी तो उस के विरुद्ध भी समय समय पर विद्रोह होता रहा। अन्ततः उसके भी पाव उखाड़ दिए गए। छत्रपति शिवाजी ने बाल काल मे गो मांस बेचने वाले मलेच्छ कसाई को इस्लामी राज्य में ही यम पुरी मे पहुचा दिया था और समर्थ गुरु रामदास के आदेशानुसार गो ब्राह्मण की रक्षा के लिए मराठा राज्य स्थापित किया था। गुरु गोविन्दसिंह जी ने अपने जीवन का विशेष उद्देश्य गौ घात हटाना बताया और प्रार्थना में सिंह गर्जना की—

यह देहु आज्ञा तुर्कन गेह खियाऊं
गौ घात का दोष जग से मिटाऊं।
यह आस पूर्ण करो तुम हमारी
मिटे कष्ट गोवां छुटे खेद भारी॥

यही पवित्र गौ रक्षा का मिशन वीर बन्दा वैरागी के सामने था। उस ने जिला गुरदासपुर (पंजाब) के निकट गौ हत्या की सजा में एक गांव को भस्मी भूत कर दिया था और आज्ञा जारी की थी कि जिस भी गांव में गो हत्या होगी उसे जला दिया जायेगा। महात्मा गांधी और दूसरे हिन्दुओं ने इसी लिए खुलाफ्त जैसे शुद्ध इस्लामी समस्या में मुसलमानो का साथ दिया था। इस पर हिन्दू मुस्लिम एकता की नीव रखी गई। उन दिनों बड़े-बड़े मुसलमान मौलवी व मौलाने फतवा देते नही थकते थे कि इस्लाम व कुरान शरीफ मे गौ की कुरबानी नही है।

डालर के लिए गौ हत्या

स्वतन्त्रता के १९ वर्ष गुजर जाने के बाद भी गौ हत्या का पाप जारी है यह कितनी लज्जा की बात है और भारत के माथे पर कलक है। कहने को तो भले ही हमारे कुछ शासक लोग मुसलमानो का बहाना पेश करे परन्तु भारत के मुसलमान आज गौ हत्या पर हठ नही करते और न पहिले करते थे। यदि पाकिस्तानी मनोवृत्ति के कुछ मुसलमान हो भी तो उन के लिए पाकिस्तान का मार्ग खुला है। आज स्वतन्त्र भारत के धर्म-निरपेक्ष राज्य में गो हत्या हो रही है चमड़े के लिए, मास के लिए, हड्डियो आदि के लिए। और इन चीजों के बदले लिए जाते हैं अमरीकी डालर ताकि अन्न मिल सके। आज एक करोड से अधिक गोओं का वध भारत में हो रहा है। यह संख्या संयुक्त भारत मे (जब पाकिस्तान नही बना था) जितना गो वध अंग्रेजी राज्य मे होता था उससे बहुत ज्यादा है।

स्वास्थ्य की हानि

यह अति असह्य है। भारत से गो वंश का नाश किया जा रहा है। बैलों की जगह विदेशों से करोडो रुपये भेज कर ट्रेक्टर मंगाये जा रहे है। दूध व घी के बिना टी० बी० जंगल की आग की तरह बढ़ रही है इस रोग के निवारक घी-दूध को उत्पन्न न करके टी० बी० के इन्जेक्शन व दवाइयों आदि पर करोड़ों रु० बरबाद किए जा रहे हैं।

स्वास्थ्य स्तम्भ—

शहद और उसकी उपयोगिता

(डा० भूपेन्द्र सिंह)

शहद अमृतोपम पदार्थ है। आयुर्वेद में शहद की चर्चा विस्तृत रूप से की गई है। वेदों और शास्त्रों में शहद की गणना पवित्र पदार्थों में की गई है। पुराणों में वर्णित दुग्ध आदि के सात समुद्रों में एक मधु के समुद्र की भी कल्पना की गई है। ईसाइयों और मुसलमानों के धर्मग्रन्थों में भी शहद स्वर्गीय पदार्थ माना गया है। प्राचीन यूनान की दंत-कथाओं मे शहद से बनने वाले देवताओ के भोजन एम्बोसया की भूरी २ प्रशंसा की गई है। रूस देश शहद के चमत्कारी प्रभाव से सदा प्रभावित रहा और आज भी हैं। प्राचीन मिस्र की चित्र लिपिओ मे शहद के गुणकारी प्रभावों का वर्णन पाया गया है।

प्राचीनकाल के महान चिकित्सक तथा चिकित्साशास्त्र के पिता हिपोकेट्स शहद के सेवन करने से ही १०७ वर्ष तक जिए। वह कितने ही रोगों का इलाज शहद से ही सफलता के साथ करते थे।

११वी शताब्दी मे हुए इतिहासकार नेस्ठर के ऐतिहासिक विवरणो से रूस मे मधु मक्खी-पालन विषयक प्रवीणता का वर्णन मिलता है। प्राचीनकाल मे रूसी मधु का ससार के भिन्न २ देशो को निर्यात होता था।

खेद है, उस अमृत तुल्य शहद की जो आदि काल से मानव भोजन का एक परमावश्यक अंग रहता चला आया है। आज हम भारतवासी विष तुल्य सफेद चीनी के आगे भूले से जा रहे है। यद्यपि ससार के अन्य देशो, जैसे अमरीका, यूरोप, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड आदि के शहद व्यवसायी शहद की पैदावार को आज भी टनो और वैगनो मे तोलते हैं।

शहद को किसी वक्त और किसी मौसम मे खा कर लाभ उठाया जा सकता है। प्रातःकाल खाली पेट शहद का उपयोग करना सब से अच्छा है। शहद किसी अन्य खाद्य अथवा पेय वस्तु जैसे रोटी, जल आदि के साथ खाने से अधिक लाभ करता है। जल में मिला कर और उस मे निंबू का रस निचोड़ कर पीना, शहद सेवन करने का एक उत्कृष्ट तरीका है। धारोष्ण दूध और फल के रस में भी शहद मिला कर पीना लाभप्रद है।

दुर्बलता दूर करने और तुरन्त शक्ति बढ़ाने के लिए शहद के समान गुणकारी संसार में अन्य कोई वस्तु नही है। शहद एक पचा-पचाया भोजन होता है, जो हमारे शरीर मे जा कर पांच मिनिट के भीतर ही शरीर के किसी भी पाचन यंत्र को बिना तनिक सा भी कष्ट दिए पच कर शरीर मे मिल जाता है। एक छोटे चम्मच भर शहद से मनुष्य को सौ कैलोरी की शक्ति प्राप्त होती है। जो लगभग पाव भर ताज़े फलों से प्राप्त शक्ति के बराबर होती है।

शहद के कुछ प्रमुख उपयोग निम्नलिखित हैं।

(१) शहद आयु को बढाता है। रोमन इतिहासकार प्लुटार्क ने प्राचीन ब्रिटेन के निवासियो के सम्बन्ध मे लिखा है कि वे १२० वर्ष की अवस्था मे वृद्ध हुआ करते थे। जिसका प्रमुख कारण शहद का भरपूर उपयोग था। ऋषि दयानन्द ने लिखा है कि मधु से जीवन बढता है।

(२) शहद शरीर की सुन्दरता बढ़ाता है। यदि कोई शहद को चेहरे और बदन पर रोज़ मलकर डेढ दो घंटे बाद धो डाला करे तो उस का सौंदर्य अक्षय हो जाता है।

(३) शहद मनुष्य को चरित्रवान बनाता है।

(४) प्रतिदिन प्रातःकाल मलाई के साथ शहद खाने से मस्तिष्क बलवान होता है। (५) यदि हृदय-दौर्बल्य अधिक बढ जाने से रोगी को मूर्छा आ जाए तो उस समय शहद को हल्के गुनगुने पानी में देना बडा लाभ करता है।

(६) जो मनुष्य नित्य प्रति थोड़े शहद का सेवन करता है, उस के फेफड़े इतने मजबूत हो जाते हैं कि उसे फेफडो के रोग होते ही नहीं। (७) शहद अपच को दूर करता है और कब्ज को तोड़ता है। रात को एक चमच शहद ठंडे जल में पीने से कब्ज अच्छा हो जाता है। (८) गुनगुने पानी में शहद और नीबू का रस मिला कर दिन मे दो तीन बार पीने से ज्वर का वेग कम हो जाता है। (९) एक भाग शहद को दो भाग निंबू के रस मे मिला कर बालों की जडो मे रोज मलने से बालो का झड़ना बन्द हो जाता है। (१०) नेत्र रोगों के लिए शहद, विशेषकर कमल का शहद गुणकारी है। शहद की एक बूंद रोगी की आंखमे टपकानी चाहिए। (११) शहद के शर्बत को पीने से थकावट दूर हो जाती है। (१२) नीम की पत्तियो के साथ शहद पानी मे उबालकर उस की भाप से डक मारने से ग्रस्त त्वचा सेकने से डक मारने का सारा कष्ट दूर हो जाता है। अधिक नही केवल तीन चम्मच शुद्ध शहद दूध, जल अथवा रोटी के साथ रोज खाइए और लाभ स्वयं अनुभव कीजिए।

—आर्य प्रेमी से साभार

विनय

दुर्मिल छन्द

नाम देवराव गनगने 'पथरोट'

हम वेद पढे गुणवान् बने, निज ज्ञान बढे उपकारन को।
प्रतिभा निखरे, शुचि ध्यान धरे, व्रतधार करे अनुशासन को ॥
सुख भोग करें व स्वतन्त्र रहे, अरु प्राप्त करें, सुख सम्पति को।
परता न रहे, पर प्रेम बढ़े, नित उच्च करें निज सस्कृति को ॥
तनया न बिके, सुरभी न करे, धनधान्य बढे सुख वर्धन को।
वनिता न नचें शठता न ठगे, बलवानबनें जनरक्षण को ॥
कटुता खलता सब दूर रहे, द्विषता जकड़े न किसी जन को।
अंधता न रहे, शुचिता निवसे, लघुता पकड़े न किसी मन को ॥
ममता न कभी हृदय वास करे, तृण मान तरे जड़-चेतन को।
सब द्वन्द्व सहें, तप त्याग गहे, तन त्याग करें भव-बन्धन से ॥
सब बन्धु बनें रस प्रेम बहे, अनुकूल करें इस जीवन को।
शुभ कर्म करें सब सौख्य धरें, अरु-स्वर्ग करें जग-कानन को ॥

विवाह संस्कारों पर

श्रीयुत हकीम सत्यपाल जी पूर्व मन्त्री आर्य समाज बटाला के सुपुत्र श्री विजय कुमार जी का शुभ विवाह जालन्धर मे सौभाग्यवती रविकान्ता के साथ समारोह से सम्पन्न हुआ। श्री सत्यपाल जी का सारा परिवार समाज के रंग मे रंगा हुआ है। इस परिवार पर समाज को गर्व है। इस शुभावसर पर सभा को वेद प्रचार के लिए वरपक्ष की ओर से १५) रु० कन्या पक्ष ने ५) रु० कुल कर २० रु० मिले। विवाह संस्कार पं० त्रिलोकचन्द्र शास्त्री ने कराया।

लेखराम नगर कादियां

मे बाबू बिहारी लाल जी की सुपुत्री सौभाग्यवती सुलेखा का शुभ विवाह बटाला के श्री रमेशचन्द्र जी के साथ धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर नगर के गण्यमान्य सज्जन थे। वेद प्रचार सभा को २१) रु० मिले। विवाह संस्कार पं० त्रिलोकचन्द्र शास्त्री ने कराया।

बटाला में

श्री बलदेवसिंह जी प्रधान आर्य समाज बटाला के प्रिय शिशु का शुभ नामकरण संस्कार सभा के महोपदेशक प० खुशीराम जी शर्मा ने धूमधाम से कराया। सारगर्भित भाषण भी दिया। प्रसिद्ध मण्डली प० राजपाल, मदन मोहन जी के भजन भी हुए। प्रिंसिपल युगलकिशोर जी ने भी प्रिय शिशु को आशीर्वाद दिया। समारोह मे जनता काफी पधारी। श्री बलदेव सिंह जी सचमुच आर्यसमाज के चलते फिरते रूप ही हैं। इस अवसर पर नाना प्रकार की संस्थाओ को दान दिया गया। सब का सत्कार किया गया। प्रिय शिशु चिरंजीव रहे।

गो रक्षा आंदोलन में

केरल के आर्य नेता में जेल

भारत भर में चल रहे गो रक्षा आंदोलन की गति को तीव्र करने के लिये आर्यन यूथ लीग केरल के महामन्त्री श्री नरेन्द्र भूषण जी रोग शय्या से उठते ही गो रक्षा के लिये प्रदेश का तूफानी दौरा आरम्भ किया। त्रिवेन्द्रम में बूचड़खाने के विरुद्ध आप ने ९ गो भक्तों के प्रचण्ड सत्याग्रह का नेतृत्व किया। श्री नरेन्द्र भूषण जी अपने ५६ साथियों सहित त्रिवेन्द्र जेल में हैं।

राजेन्द्र जिज्ञासु

पुस्तक समीक्षा

आर्य समाज क्या है ?

लें०—पं० मनसाराम जी
प्रकाशक—श्री हंसराज आर्य ट्रस्ट (बरेटा) जाखलमंडी
कीमत—१५ पैसे। पृष्ठ संख्या

इस छोटी-सी पुस्तक में, आर्य समाज के विषय में जो भ्रम फैले हुए हैं और वे सिर पैर की बातें आर्य समाज के बारे में करते हैं और आर्य समाज जैसी धार्मिक संस्थाओं पर लांछन लगाते हैं। उनको मुंह तोडकर जवाब दिया गया है। कदम-कदम पर आर्य समाज की वास्तविकता को बड़ी अच्छी प्रकार से दर्शाया गया है। देखिए इस पुस्तक के शीर्षक—

(१) पंडितों का सहायक आर्य समाज (२) रोगियों का डाक्टर आर्य समाज (३) सोते हुओं का राजा आर्य समाजआदि २ इन शीषकों के अन्तर्गत, बाल विवाह, वृद्ध विवाह, बे जोड विवाह, स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह आदि अनेक उपशीर्षक दे कर आर्य समाज की कर्तव्य निष्ठा पर भली प्रकार प्रकाश डाला गया है। पुस्तक छोटी होने पर भी प्रचारको, उपदेशको भजनीकों तथा आर्य समाज के प्रति प्रेम श्रद्धा रखने वालों के लिए अति उपयोगी है। इस के साथ २ नव युवको के लिए [illegible] समाज के प्रति वास्तविकता को प्रकट [illegible] का सुन्दर दर्पण है।

[illegible] प्रधान—मास्टर हरिचन्द [illegible] आर्य समाज जाखल मंडी (हिसार

समाचार द[illegible]

आर्यसमाजलक्ष्मणसर (अमृतसर)

आर्यसमाज लक्ष्मणसर के अधिवेशन में यह सूचना बड़े दुःख के साथ सुनी गई कि रणधीर कालिज कपूरथला की संस्कृत श्रेणियों को मिल रही ग्रांट पंजाब सरकार की ओर से बन्द कर दी गयी है जिसे देश की सब से प्राचीन तथा सभी भाषाओं की मूल भाषा संस्कृत के साथ घोर अन्याय और इसके प्रचार के मार्ग में भारी रुकावट समझते हुये इस ग्रांट को जारी रखने के लिये एक प्रस्ताव द्वारा सबल माग की गई।

—रुद्रदत्त शर्मा

शुभ सूचना

आर्यसमाज लक्ष्मणसर में २५ सितम्बर से आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के सुयोग्य उपदेशक श्री पं० ओ३म् प्रकाश जी पधार रहे हैं। आ. स. के दैनिक सत्संगों में प्रतिदिन प्रातःकाल उनके ओजस्वी एवं प्रभावशाली भाषण हुआ करेंगे। धर्मप्रेमी सज्जन अधिक से अधिक सख्या मे पहुंच कर लाभ उठावें।

—रुद्रदत्त शर्मा

अ[illegible]

इश्तहार

बा[illegible] मित्र की (गार्डियन जज) हिसार

जगन्नाथ बनाम रिश्तेदारान

दरखास्त :—बराए इजाजत बय करने अराजी

बनाम :—[illegible] हिसार।

श्री जगन्नाथ ने एक दरखास्त बराए इजाजत बय करने अराजी नाबालगान दिनेश कुमार, विजय कुमार, अरविन्द कुमार, वेद प्रकाश पिसरान जगन्नाथ दी है। लहजा हर खास व आम को मुतला किया जाता है कि अगर किसी को नाबालगान दिनेश कुमार, विजय कुमार, विजय कुमार, अरविन्द कुमार, वेद प्रकाश पिसरान जगन्नाथ की तादादी अराजी २६ बीघे १४ बिस्वे की फरोख्त करने में कोई उजर हो तो ता० १५-१०-६६ को हाजर आ कर उजर करे। बाद में कोई उजर न होगा आज बतारीख १९-९-६६ को मेरे दसखतों वा मोहर अदालत के जारी हुआ।

विषवा मित्र
गार्डियन जज, हिसार

पठनीय एवं मननीय साहित्य

वेद प्रवचन ५/- गीतासार ७५ पैसे, आलमगीर के पत्र १/-वेदारम्भ संस्कार १/५० पैसे, मेरी आठ रोचक कहानियां ७५ पैसे, लौकट ७५ पैसे, लड़खड़ाते जीवन ५० पैसे, कर्म मीमांसा २/२५ पैसे, सतति नियमन क्यों और कैसे १५ पैसे, वैदिक व्याकरण भास्कर ६/- व्यायाम बोधक पत्र ११/२० पैसे, साहित्य प्रचारक १/-

जयदेव ब्रदर्स बड़ोदा—१

शुभ संस्कार

श्री [illegible], श्री [illegible] पूर्व आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा सुपुत्र श्री योगेन्द्र कुमार जी का विवाह संस्कार श्रीमती [illegible] सुपुत्री, श्री तीर्थराम जी रिटायर पोस्ट मास्टर शिमला के साथ २४-९-६६ को पूर्ण वैदिक रीति से प० रविदत्त जी शर्मा ने सम्पन्न कराया। उपस्थित बरातियों ने वर-वधू को सहृदय से आशीर्वाद दिया।

आर्य समाज तरावड़ी (करनाल)

प्रादेशिक सभा के ठा. दुर्गासिंह 'तूफान' की मण्डली द्वारा १८.९.६६ तक तरावडी के मुहल्लों में वेद प्रचार किया गया। इस अवसर पर [illegible] भी बांटे गए। सभा को ८१/- वेद प्रचारार्थ दान प्राप्त हुआ।

इस कार्य मे इन्द्रसिंह जी ने सोत्साह भाग लिया। सभा उन का धन्यवाद करती है।

—मन्त्री समाज

★ यज्ञ करने के बाद यज्ञ के सामने शुद्ध रहने की प्रतिज्ञा करके हमेशा शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा को बुरे विचारों तथा बुरे कर्मों से दूर रखने का पूरा प्रयत्न करना चाहिए। यही शुद्धि करना है।

मुद्रक व प्रकाशक प्रो० वेदप्रकाश मलहोत्रा एम. ए. आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १२ पैसे | वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६, अंक ४१ | २४ आश्विन २०२३ रविवार—दयानन्दाब्द १४२— ९ अक्तूबर १९६६ | (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

काश्मीरी अपने भविष्य का निर्णय कर चुके, काश्मीर भारत का अंग रहेगा

प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी

श्रीनगर। प्रधानमंत्री इंदिराने आज कहा कि काश्मीर का केवल सामरिक महत्व ही नहीं, अपितु यह देश की धर्मनिरपेक्षता का प्रतीक भी है। तिथवाल और उड़ी सैक्टर के अग्रिम क्षेत्र में सैनिकों को सम्बोधित करते हुए श्रीमती इन्दिरा ने कहा कि गत वर्ष जनता को पास-पास ले आया और राष्ट्र ने इस से शक्ति प्राप्त की है।

श्रीमती गांधी ने घोषणा की कि काश्मीर के लोग भारत में रहने का निर्णय कर चुके हैं और वे भारत का ही अंग रहेंगे।

प्रधानमंत्री ने जवानों को कहा कि वे देश में हो रही गड़बड़ से, जो कुछ राजनीतिक दल करवा रहे हैं, दिल न छोड़ें। हमारा देश मजबूत है और दिन-प्रतिदिन सुदृढ़ हो रहा है।

श्रीमती इंदिरा एक हेलिकाप्टर द्वारा तंगधार पहुंचीं।

सेना के अफसरों और जवानों तथा नभ-सेना ने जो भूमिका निभाई, उस से देश की प्रतिष्ठा बढ़ी है। हमारे सैनिक महान् उत्साह और अद्वितीय वीरता से अपने कर्त्तव्य को निभा रहे हैं।

उन्होंने कहा कि गत वर्ष का भारत-पाकिस्तान युद्ध सेनाओं और देशको जागृत करने वाला है। श्रीमती इंदिराने कहा कि अगर भारत पर पुनः लड़ाई ठोंसी गई तो हमारे जवान हमलावर को मुंह तोड़ जवाब देने को तैयार हैं।

लालबहादुर शास्त्री ने कहा था

भारत के विजेता प्रधानमन्त्री स्वर्गीय श्री लालबहादुर शास्त्री की बच रही स्मृति आज देश-भर के लिए प्रेरणा पुंज है। कृश-काय लालबहादुर ने अपने आचरण से ऐसे बट वृक्ष का रूप धार लिया, जिसके तले सारे संगठित राष्ट्र ने स्वयं को सुरक्षित पाया। शाश्वत भारतीय और हिंदुत्व की साकार प्रतिमा श्री लालबहादुर के निम्न शब्दों पर पूरे उतरने का संकल्प ही उस महापुरुष के जन्म-दिवस पर हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।......

एक गरीब व्यक्ति आत्म निर्भर बन सकता है, लेकिन एक धनवान प्रायः औरों पर निर्भर रहता है। आत्मनिर्भरता का अर्थ है कि जो कुछ हमारे पास है, उस का अधिक से अधिक उपयोग करने की शक्ति और जो कुछ हमारे पास नहीं है और न ही हो सकता है, उसके बिना जीने का उत्साह हम में मौजूद हो। जब स्वतन्त्रता और सीमाओं की अखंडता खतरे में पड़ जाए तो, उस समय केवल एक ही कर्तव्य निभाना आवश्यक है कि सम्पूर्ण शक्ति से चुनौती का मुकाबिला करना हम किसी भी देश की धरती के एक इंच पर भी अधिकार नहीं करना चाहते, हम सदा शांति के साथ अच्छे पड़ोसियों की तरह रहना चाहते हैं, लेकिन यदि हम पर हमला किया जाता है तो हम अपने पूरे-पूरे साधनों से उसका कड़ा मुकाबिला करेंगे।

एक ऐसे सामाजिक 'ढांचे की स्थापना' से अधिक आवश्यक बात कोई नहीं हो सकती, जिस में कि समाज के निर्धन और निम्न वर्ग को उचित स्थान देने का आश्वासन दिया जाए।

आज मानवता के समक्ष सब समस्याओं से बड़ी समस्या विश्व शांति और निरस्त्रीकरण के उद्देश्य की प्राप्ति है। अनगिनत पीढ़ियों से मानवता शांति के लिए तरसती आई है, संघर्ष करती आई है हम सभी शांति-पूर्ण देशों के साथ मिल कर इन आदर्शों की प्राप्ति के लिए संघर्ष करने की प्रतिज्ञा करते हैं।

★ दर्शन छः हैं— (१) गौतम मुनि कृत—न्याय शास्त्र। (२) कणाद मुनि कृत—वैशेषिक शास्त्र। (३) कपिल मुनि कृत—सांख्य शास्त्र। (४) पातंजलि मुनि कृत—योग शास्त्र। (५) जैमिनी मुनि कृत—मीमांसा शास्त्र (६) व्यास मुनि कृत—वेदांत शास्त्र।

★ जिन पुस्तकों में चारों वेदों का अर्थ समझाया गया हो उन्हें ब्राह्मण ग्रन्थ कहते हैं।

ऋषि दर्शन

न्यायकार्यसि

हे परमेश! आप न्याय करने वाले हैं। आपकी न्याय नियम की तुला में कोई खोटा अपनी खोट को छिपा नहीं सकता।

निर्वैरोऽसि

हे दयानिधे! आप निर्वैर हैं। किसी से भी आप का वैर नहीं है। प्रजापति के नाते सारा विश्व आप की ही प्रजा है। जैसा २ कोई शुभ अशुभ कर्म करता है, उसी के अनुकूल उसे फल देते हो। उस में भी आप की दया का परिचय मिलता है।

ईश्वरात् याचितकम्

हे मानवो! इधर उधर क्यों भागते फिरते हो क्या मिलता है। भटक २ कर थकना ही होगा जो कुछ भी मांगना चाहते हो तो उसी परमेश्वर से मांगना सीखो। उसके बिना और दूसरा कोई भी तो मन की कामना को पूर्ण नहीं कर सकता।

सेनाऽत्यन्त प्रशंसनीया

हे राष्ट्र प्रेमियो! आपकी सेना, सैनिक शक्ति बड़ी ही प्रशंसा के योग्य हो। उस में किसी प्रकार की भी कमी न होने पाये। तीन प्रकार की सैनिक शक्ति पराक्रम से भरपूर रहे। आचार, विचार से भरी होनी चाहिए।

भा ष्य भू मि का से

अधिष्ठाता—प्रो० वेद प्रकाश एम० ए०(अंग्रेजी तथा हिन्दी) | सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

धार्मिक चर्चा :-

सुख-दुःख क्या और क्यों ?

(आचार्य श्री मित्रसेन जी एम० ए०, सिद्धान्तालंकार)

जिस धरती पर हम निवास करते हैं, उस में बड़ी आश्चर्यजनक वस्तुएं तथा घटनाएं विद्यमान हैं। दृष्टि डालिए, अद्भुत निर्माण-कुशलता दृष्टिगोचर होती है। उन में भी सब से अधिक आश्चर्यजनक है मनुष्य, जिसे सब से अधिक बुद्धिमान समझा जाता है। देश-विदेश की जलवायु और परिस्थितियों के कारण मनुष्य विभिन्न आकृति और स्वभाव के हैं, इन सब की विचारधारायें भी एक नहीं हैं।

कुछ मानव जन्म से ही सुख-समृद्धि में होते हैं तो कुछ अभाव-ग्रस्तता में, कुछ तीव्र बुद्धि के होते हैं तो कुछ मन्द बुद्धि के। कुछ जन्म के स्वस्थ होते हैं तो भविष्य मे रोगी और कोई जन्म के समय रोगी तो भविष्य मे स्वस्थ। एक चिड़चिड़े स्वभाव का है, दूसरा प्रसन्न चित्त रहता है। एक सुन्दर आकृति वाला है तो दूसरे का मुख देखा भी नही जाता। महाकवि पद्माकर कहते हैं कि एक ओर तो—

गुलगुली गुल हैं, गलीचा हैं,
गुनी जन हैं,
चादनी हैं, चिक हैं,
चिरागन की माला हैं।
कहे पद्माकर त्यो गजक
गिजा हैं सजी,
सेज हैं, सुराही है,
सुरा है और प्याला हैं।
सिसिर के पाला कोन
व्यापत कसालति है,
जिनके आधीन एते
उदित मसाला हैं।
तान तुक ताला हैं,
बिनोद के रसाला हैं, सु-
सुबाला हैं, दुशाला हैं,
विशाला चित्रशाला हैं॥

और दूसरी ओर एक व्यक्ति शिशिर की रात्रि में घुटने दबा कर और दिन मे सूर्य की किरणों की ताप से ही ठण्ड दूर करने का प्रयत्न करता है—

रात्रौ जानुर्दिवा भानुः कृशानुः
सन्ध्ययोर्द्वयोः।
इत्थं शीत मयानीत
जानु भानु कृशानुभिः।

इसप्रकार की अनेक विभिन्नताओं को देखकर यह प्रश्न हो उठना स्वाभाविक ही है कि सृष्टि में यह विचित्रता अर्थात सुख दुःख क्यों है? कविगण, विद्वान उत्तर देते हैं कि यह ईश्वर की लीला है, उसका खेल है, वह क्रीड़ा कर रहा है और निरुद्देश्य ऐसी सृष्टि रचता है। किन्तु यह विचार युक्ति की कसौटी पर खरा नहीं उतरता, क्योंकि कोठी बन कर कराहने में कोई लीला नहीं मालूम पड़ती। क्रीड़ा सुख के लिए होती है दुःख के लिए नहीं, तब संसार में दुःख क्यों दिखाई दे रहा है? ईश्वर की लीला मानने पर वह पक्षपाती सिद्ध होता है। जो उचित समाधान नही। अतः प्रश्न ज्यो का त्यों ही उपस्थित रहता है।

सभी दार्शनिक सृष्टि के सुख-दुख का एक ही कारण बताते हैं—मानव के पूर्व जन्म के किये हुए हुए कर्म। बिना कर्म के कभी कोई जन्म या मृत्यु नहीं होती। एक कवि कहता है—

बिना कर्म के कभी न रण मे,
जय की भेरी बजती है।
बिना कर्म के कभी न जग मे,
सौख्य राह भी मिलती है॥
डग-डग, पग-पग पर भी,
देखो कर्म कर्म की छाया है।
कर्म किया है जिस मानव ने,
मोक्ष उसी ने पाया है॥

वेद कहता है :—

मे मात्रा शार्यपसः पुरा ऋतोः॥
ऋ० २-२८-५॥

अर्थात भक्त प्रार्थना है हे प्रभो। मेरे कर्मों की मात्रा अकाल में ही समाप्त न हो जाये, इसी का स्पष्टीकरण भगवान पतजलि करते है—

'सतिमूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगः॥'
साधनापाद २, १३॥

तात्पर्य है कि कर्मों के फल जाति आयु और भोग होते हैं, जबकि उनके मूल मे क्लेश आदि विद्यमान हो। जाति का तात्पर्य योनि से है। मुख्य रूप से योनियां तीन कोटि की होती है, कर्म योनि भोगयोनि तथा कर्म भोग (उभय) योनि। जीव कर्मो के आधार पर ही, योनि प्राप्त करता है। उन्ही के आधार पर उसे आयु मिलती है। भोग (सुख-दुख) से अभिप्राय कर्म-फल से है।

सृष्ठि की उत्पत्ति भी इसीलिये हुई है। गीता ने कहा है—

कार्यकारण कर्तत्वे हेतुः प्रकृति रुच्यते।
पुरुषः सुख दुःखाना भोक्तृत्वे हेतु रुच्यते॥
गीता १३-२०

भावार्थ यह है कि पुरुष के कर्म-फल से सुख-दुःख के भोगने के लिए यह प्रकृति से निर्मित संसार है। सांख्य दर्शन में लिखा है—

प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः।
तथा—
पुरुषार्थं एव हेतुर्न
केनचित् कार्य ते करणम्॥

तात्पर्य यह है कि पुरुष के पूर्व कृत कर्मों के भोग एवं भोग के बाद अपवर्ग की सृष्टि का प्रयोजन है। भोग एवं अपवर्ग उसी समय प्राप्त होते हैं जबकि मानव ने उसके लिये कर्म किये हो, अतः कर्म ही इसके कारण हुए।

गीता ने एक अन्य स्थान पर कहा है—

'अवश्यमेव भोक्तव्य
कृतं कर्म शुभाशुभम्॥

विश्व के प्राणी जिन सुख-दुःखों का भोग कर रहे है वह उनके पूर्व कृत कर्मों का ही परिणाम हैं। इसी बात को सस्कृत के एक कवि ने यों कहा है—

रोग, शोक, परीताप,
बन्धन व्यसनानि च।
आत्मापराध वृक्षाणां
फलान्येतानि देहिनाम्॥

कर्म की परिभाषा

अब समस्त सुख-दुःखों के मूल कर्म क्या हैं यह जानने की प्रबल इच्छा होती है। बौद्ध-दर्शन ने कर्म की परिभाषा स्पष्ट रूप से यो दी है—

एक द्रव्यमगुण संयोग विभागेषु।
अनपेक्ष कारणमिति कारण लक्षणम्॥

अर्थात् कर्म शब्द का साधारण अर्थ क्रिया है। किन्तु कर्मवाद में इस का अपना विशेष अर्थ है कि वे कर्म होता हैं जिनके करने में कर्त्ता स्वतन्त्र होता है या जिनका उत्तरदायित्व उस के ऊपर है। बहुत से कर्म ऐसे भी हैं जिनका उत्तरदायित्व कर्त्ता पर नहीं होता, जैसे युद्ध करने वाले सैनिक होते हैं परन्तु उनका उत्तरदायी (अर्थात जय, पराजय का) राजा होता है नहीं। इसे ही भगवान पाणिनि ने यों कहा—

'स्वतन्त्रः कर्त्ता।'

गीता कहती है—'कर्मण्येवाधिकारस्ते।'

वेद कहता है—

'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजी-
विषेच्छतं समाः।'

कर्म विभाग

कर्मों के विभाग कई प्रकार से किये जाते हैं। प्रथम विभाग हैं संचित प्रारब्ध एवं क्रियमाण, द्वितीय विभाग है नित्य, नैमित्तिक और काम्य। तृतीय विभाग है सकाम और निष्काम। यहां प्रथम विभाग ही कार्य में आता है, उस में साधारणतः संचित और क्रियमाण दो ही कर्म भेद मुख्य हैं। प्रारब्ध संचित का ही एक विशेष भेद है।

कर्म-विपाक

कर्म तथा उसके फल का सम्बन्ध बहुत ही निकट का है। जैसे कर्म और कारण का है। जब कभी एक कर्म होता है तो उसका भोग होना ही चाहिये। गीता में भी कहा है कि चाहे अच्छे कर्म करो या बुरे, फल अवश्य भोगना पड़ेगा। इसी फल को कर्म के भोग के लिए इस शरीर की प्राप्ति हुई है, उसके भोगे बिना छुटकारा नहीं है। मनुष्य के हृदय में प्रारब्ध कर्म जनित प्रेरणा सदैव रहती है। उस से जो फल या भोग होता है वह भी एक प्रकार से कर्म कहा जायेगा। यदि उसके प्रति मनुष्य में ममत्व हो तो वह फल-भोग भी उस ममत्व के द्वारा नया कर्म कहलाता है और इस प्रकार कर्मों का सचय होता है, जब तक कर्म-प्रेरणा शिथिल नही होती।

कर्म-फल

किये हुए कर्मों का फल उत्तम अथवा अनुत्तम दोनों ही हो सकते हैं जो कि कर्मों के ऊपर ही आधारित हैं। जिस प्रकार कर्मों का विभाजन हुआ था, उसी प्रकार फल का भी हो सकता है। फल की भी तो कोटियां हैं। एक ही कर्म के कई फल हो सकते हैं तथा कर्म मिलकर एक फल पैदा करते हैं। इन का फल जाति-आयु और भोग है और मुख्य रूप से जाति ही है। जाति से तात्पर्य योनि है। यह मरण पर्यन्त एक ही रहती है, आयु और भोग पर गत जन्म के अतिरिक्त इस जन्म के कर्मों का भी प्रभाव रहता है। ★★

★ आजकल पढ़ने वाले लाखों मनुष्य बेकार हैं। इसके अतिरिक्त जो पढ़ता है वह भी मरता है और जो नहीं पढ़ता वह भी मरता है फिर पढ़ने पढ़ाने में दांत कटाटट क्यों करें!

सम्पादकीय—

आर्यजगत्

वर्ष २६] रविवार ०२३, ६ अक्तूबर १६६६ [अंक ४१

आर्यसमाज और गो-रक्षा

आर्यसमाज के महान संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ईश के विशाल कार्यों में पशु रक्षा का महान कार्य भी निश्चित किया। आर्यसमाज की आधारशिला वेद है। वेदों में जीव हिंसा पाप माना गया है। गाय को प्रतीक मान कर तमाम जीवों की हत्या बन्द कराने में आर्यसमाज सब से आगे है। वैदिक धर्म में मांस खाना सर्वथा निषिद्ध है। महर्षि दयानन्द ने इसके बारे में अपनी अमरकृतियों मे बहुत कुछ लिखा है। गौ का स्थान मानवीय तथा राष्ट्रिय जीवन में बहुत ऊंचा है। इस का सम्बन्ध भारतीय जनता के प्रत्येक काम से जुड़ा हुआ है। वेदो मे गौ को देवमाता कामधेनु कहा है। शास्त्रों मे, इतिहास एव तमाम कर्मकाण्ड के ग्रन्थो मे इस की पूजा का विधान मिलता है। गौ-बैल के बिना राष्ट्र का चित्र पूर्ण नही माना जाता। रामायण के राम, महाभारत के गोपाल, बौद्धकाल के भारत के अशोक गौ के परम भक्तो मे थे। मुगल सम्राट अकबर ने भी अपने राज्य में गोवध सर्वथा बन्द करके गोहत्यारे के लिए भारी दण्ड का विधान किया था। गोपालक दयानन्द तो जनता की आवाज विक्टोरिया तक पहुंचाने मे लगे थे। गोकरुणानिधि जैसी अनूठी पुस्तक इस पर लिखी। इस युग मे गान्धी जी ने गोरक्षा पर बड़ा बल दिया था। भारत के विधान में भी इस के लिए धारा नियत है। किन्तु खेद यह है कि उन्नीस वर्ष विदेशी सत्ता को समाप्त हुए बीत गये समय २ पर जनता ने पुकार की। एक बार तो राष्ट्रिय संघ ने भी पौने दो करोड़ लोगो के हस्ताक्षर करा कर उस समय के राष्ट्रति डा० राजेन्द्र प्रसाद की सेवा में पेश करके गोहत्या बन्द करने की मांग की। परन्तु आज तक भी भारत में गोवध बन्द नही किया गया। इस समय तो बूचड़खाने अंगरेजों के राज्य से भी अधिक हैं तथा गोवध आगे से बहुत सख्या में होता है। यह बात सारे भारतीयों के लिए बड़े शर्म की है। यह हमारी सरकार का बहुरूपियापन है कि उसने अपना प्रतीक तो अशोक को बनाया है पर अशोक चिन्ह के नीचे कितना गोवध होता है। किस ढंग से होता है, यह सुन कर तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं। गान्धी जी की समाधि की परिक्रमा करने वाले, गीता का पाठ करने वाले तथा अशोक का नाम लेने वाले ये नेता गोहत्या बन्द करने की बात ही नही सुनते। जनतन्त्र की सदा दुहाई दी जाती है पर सारी जनता गोहत्या बन्द करने का आन्दोलन करती है। भारत के सन्त, आर्यसमाज सनातनधर्म जैनसमाज, नामधारी सन्त जनसघ, राष्ट्रिय सघ, आर्य वीरदल, बहुत से मुस्लिम सस्थान भी, अनेक कांग्रेसी भी मिल कर गोवध बन्द करने की बात जोरदार शब्दों में कहते हैं। इस के लिए वीर रामचन्द्र जी ने प्राणो की बाजी लगा दी—पर परिणाम क्या हुआ कि सन्तो को जेलो मे पहुचा दिया गया। क्या यही जनतन्त्र है? यह तो मनमाना तत्र है।

भारतीय जनता और तो बडे से बडा कष्ट सहन कर सकती है, पर गोवध इसने कभी सहन नही किया। गोहत्या के कारण आज देश मे दूध घी का सर्वथा अभाव होता जा रहा है। यही अवस्था रही तो भारत मे दूध-घी का नाम तक भी न होगा। डालडा तो जनता को खिलाया ही जा रहा है। गोपाल का भारत आज चमड़े का भारत बनता जाता है। सच्ची बात यह है कि ऊपर के कई नेताओ की विचारधारा पश्चिमीय है। भारतीयता का उन के मन पर कोई भी प्रभाव नहीं। जिन की शिक्षा-दीक्षा पश्चिम में हुई, उसी वातावरण में आरम्भिक दिन बीते। उनकी बोली से बोलते, उनके दिमाग से विचारते, उन की आंखों से देखते हैं। उन को गोवध अखरता नहीं है। पर जनतन्त्र में जनता की आवाज सुननी ही चाहिए। अब इस के लिए जनता जाग उठी है। बड़े-बड़े सन्त महात्मा मैदान मे आने लगे हैं। सारा भारतीय समाज उन के साथ है। अब गोवध बन्द करना ही होगा। गोहत्या जारी नही रह सकती।

आर्य समाज तो इस पवित्र कार्य मे पूर्ण सहयोग दे रहा है। सार्वदेशिक सभा का सहयोग सारे समाज का सहयोग है। हमारे किसी भी साधुसन्त ने गोहत्या बन्द करने मे एकाध को छोड़ कर कोई वक्तव्य नही दिया। उनको खुल कर बोलना चाहिए सभाओ को बोलना चाहिए, दैनिक पत्रो मे लेख आने चाहिए। समाजो को संगठित रूप मे आवाज उठानी चाहिए।

—त्रिलोकचन्द्र

शतवर्षी सातवलेकरजी

आज के युग में अपने जीवन में अपनी शताब्दि देखने व मनाने वाले कितने भाग्यशाली हैं। यह स्वास्थ्य-पूर्ण लम्बी आयु उनके अपने नियमित सयमी तप का परिणाम है। भारत के प्रसिद्ध विद्वान् तपोजीवी, वेदमूर्ति श्री प० दामोदर सातवेलकर जी के साधनापथ पर चलते हुए पूरे सौ वर्ष हो गये हैं। उनका जीवन शताब्दि का हो चुका है। सारे भारत की जनता को कितनी प्रसन्नता है। हम आर्य जगत् परिवार की ओर से वेद-मूर्ति श्रद्धेय श्री पण्डित जी को सादर नम्रता भरे भावो से हार्दिक बधाई देकर उनके तपोमय, स्वस्थ जीवन एवम् वेदो के महान् निरन्तर स्वाध्याय व्रत के सामने श्रद्धा से अपना मस्तक झुकाते हैं। भगवान् उनको लम्बी आयु प्रदान करे।

वेदमूर्ति पडित सातवलेकर कितने भारी विद्वान् है. वेद के प्रति उनकी कितनी निष्ठा है, स्वाध्याय से कितना प्रेम है, कितने बडे विचारक, लेखक व मननशील है, उनका जीवन कितना तपस्वी, सयमी तथा नियमित है—ये सारी बाते आज भी उस दिव्यमूर्ति के दर्शन करके ज्ञात हो जाती हैं। कितने महान् ग्रन्थ लिखे है। वेदो को भाष्य व लेखो द्वारा कितना सरल बना कर कोने २ तक पहुचाया है, वैदिक धर्म मासिक को कई भाषाओं द्वारा कितनी गम्भीरता से सम्पादित कर रहे हैं। स्वय कितनी सौम्य-मूर्ति है, लेखन मे कितनी सरलता, भाषण मे कितनी मधुरता, जीवन मे कितनी सरसता है, मन मे कितनी उदारता, नेत्रो में कितनी कोमलता है—ये सारी विशेषताएं इस योगी के दिव्य जीवन में भरी हुई हैं। श्री पण्डित जी ने अकेले एक निश्चित साधना नियत कर उसको प्राप्त करने में कितना कमाल कर दिखाया है। उन को ब्रह्मर्षि की उपाधि मिली है। वह स्वय ही एक महान सस्थान का रूप है। जनजीवन को अकेले इस तपोमूर्ति ने इतना विशाल साहित्य दिया है—जिसकी समानता बडी २ संस्थाए व सभाए भी नही कर सकती। हिमालय की कन्दराओ में जाने की आवश्यकता नही पडी। तपोवन को खोजना नहीं पड़ा। योग के लिए आश्रमो मे भटकना आवश्यक नही समझा। जीवन मे साधना नियत कर के एक स्थान पर बैठ कर वेदमाता की गोदी मे बैठ कर सब कुछ पा लिया। अब वह बाहर बहुत कम जाते हैं। बडे २ लोग स्वय उनके पास जाकर बहुत कुछ सीखते हैं। आदर्श कर्मयोगी हैं वह, वेदमूर्ति है। अकेला तपस्वी क्या कर सकता है—यह देखना हो तो श्रीपण्डित सातवलेकर जी, आचार्य विश्वबन्धु जी, श्री प० गगाप्रसाद जी उपाध्याय, स्वर्गीय महात्मा हसराज जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, प्रिंसिपल मेहरचन्द जी जालन्धर के कार्य को देखे। हम तपोमूर्ति प० सातवलेकर जी का अभिनन्दन करते हैं।

दिल की बात

बहुत दिनो से दिल मे एक विचार बार २ उठता है। कई सज्जनो मे निवेदन भी किया है। दिल की दिल मे रह जाये, उसे प्रकट कर ही दिया जाये। बात यह है कि आर्यसमाज के विशाल परिवार मे इस समय कई ऐसे मान्य महानुभाव हैं, जिन की आयु नव्वे वर्ष के लगभग है। दो साल कम या अधिक। ये सारे सज्जन आर्यसमाज की विभूतिया है। आर्य समाज को इनके जीवन व कार्यो पर बडा मान है। इन को बडा अनुभव है। समाज का पुरातन सुनहला युग इन की आखो के सामने है। जीवन की लम्बी यात्रा पार कर ली है। ऐसे मान्य महानुभावो मे श्री डा० गोकुलचन्द जी नारग, डा० दीवानचन्द जी एम० ए० कानपुर, दीवान अनन्तधारी जी अम्बाला, दीवान बद्रीदास जी जालन्धर, कैप्टन केशवचन्द जी अमृतसर, महाशय रतनचन्द जी बन्दी मार्शलला अमृतसर, महात्मा आनन्द स्वामी जी, महता रामचन्द जी शास्त्री आदि आर्यसमाज के चमकते रत्न है। हमारा विचार है कि समाज की इन तथा इन जैसी पजाब की और भी

(शेष पृष्ठ ४ पर)

"ऋषि दयानन्द और वेद"

श्री वेदप्रकाश जी मलहोत्रा M.A. सभा मंत्री जालन्धर

वेद प्रचार मण्डल जालन्धर की ओर से आयोजित व्याख्यान माला का प्रथम भाषण आर्य जनता के ज्ञानार्थ भेट है जोकि डी०ए०वी० कालिज जालन्धर के सुयोग्य प्राध्यापक तथा सभा मन्त्री सम्माननीय प्रो० वेद प्रकाश जी एम० ए० २ अक्तूबर १९६६ को आर्यसमाज विक्रम पुरा जालन्धर मे सभी जालन्धर की समाजो के प्रतिनिधि नर-नारियो के सम्मुख रखा।

आर्य भाइयो और बहिनो!

महाभारत के काल के बाद मत-मतान्तरो की भरमार हुई। इस युद्ध में सारे ज्ञानी मारे गये। सत्य धर्म का लोप सा छा गया। सारी रीति नीतिया अस्त-व्यस्त हो गई। क्योकि धर्म का ज्ञान वेद से हो सकता है। वेदोपदेश के न होने से अन्ध परम्परा फैल गई। नाना मतो का प्रादुर्भाव होने लगा। मत प्रवर्तको ने अपना रास्ता सच्चा बनाने के लिये अपने २ मत को वेद के सत्य की पुट दे कर जनता के सामने प्रस्तुत करना आरम्भ कर दिया। इन मे जो भी सत्य था वह वेद का और असत्य मत प्रवर्तको का बिना सत्य के विश्वास नही होता (सत्य मूलको विश्वास) विश्वास मूल सत्य है। अत: जनता को विश्वास बन्धाने के लिये थोडा सत्य निश्चित कर दिया। इस सत्य की स्थिति (विष कुम्भ पयोमुख) मे अधिक न थी। केवल जनता को जाल मे फसाने के लिए ही ऐसा किया। जनता को वेद से विमुख कर अपना अनुयायी बनाना माना है। इन पथाई लोगो का उद्देश्य था।

इनकी पुस्तको में वेद की स्तुति और निन्दा दोनो प्रकार की बाते है। स्तुति अपनी ओर आकर्षित करने के लिए और धीमी सी निन्दा वेद से विमुख कर अपने सम्प्रदाय में लाने के लिये वेदानुयायी रहने से मतावता असम्भव थी।

इस प्रकार मत्र से पहला प्रभाव बुद्ध, जैन, तथा ईसाइत का हुआ। वेद से अनभिज्ञ होने के कारण वेद और ईश्वर से विमुखता का प्रचार आरम्भ हुआ। ईसाइयत पर भी बुद्ध धर्म की थोडी छाप हैं। ईसायत के प्रचारको और स्कालरो पर पुराणो की छाप है। सायण जैसे पौराणिक भाष्य कारो के प्रभाव के कारण पश्चिमी स्कालरो ने वेद सम्बन्ध मे अपनी भ्रात सम्मतिया प्रकट की। वेद के कारण के सम्बन्ध मे वे ईसा के जन्म से पाच सहस्र वर्ष पहले नही गये। जाने की हिम्मत ही नही थी। क्योकि जो बाइबिल के विरुद्ध अपनी लेखनी उठाता उसे मृत्यु दंड भोगना पडता। इस कारण सत्य को छुपा कर लिखा जो कुछ लिखा। पौराणिक मत में महर्षि व्यास को वेद का करता मानते हैं। कई ब्राह्मण ग्रन्थो को कई उपनिषदो को। कुछ महाभारत को भी पाचवा वेद मानते हैं। इस प्रकार वेद के सम्बन्ध मे महाभारत के बाद नाना भ्रातियां जन्मी। और लोग वेद से विमुख होते चले चले गये। पथभ्रष्ट की भाति नाना राहो से मंजिल तक जाने का यत्न करने लगे।

इस प्रकार जब भारतीय सस्कृति एव सभ्यता पश्चिमी सभ्यता के तूफान मे बही जा रही थी राम और कृष्ण तथा ऋषिमुनियो को वह वृद्धमूर्ख (ओल्ड-फूल) कहा जा रहा था। वेद का नाम मात्र ही केवल रह गया था। ऐसे प्यारे योग आकर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने सिंह गर्जना की और कहा ऐ ससार के लोगो वेद ईश्वर का ज्ञान है। वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। वेद प्रतिपादित धर्म ही सत्य धर्म है, धर्म की जाच के लिये वेद परम प्रमाण है। वेद को छोड़ कर कभी कोई सुखी नही हो सकता। वेद विहित कर्म ही परमार्थ के साधक हैं। वेद अपौरूषेय है। परम-प्रमाण है। इस प्रकार वेद की सत्यता और अपौरूषेयता का ऋषि ने प्रतिपादन किया। लोग इस घोष को सुन कर भौंचक्के रहे गये।

ऋषि ने कहा वेद मंत्र संहिता का नाम है। जो आदि ऋषि में परमत्मा ने चार ऋषियो के द्वारा दिया। ऋषि मत्रों के दृष्टा हैं कर्ता नही मानव की कृति मे दोषो का होना स्वाभाविक ही है। वेद का का ज्ञान निर्बाध सत्य है। यह मानव कृति नही। वेद मे बीज रूप से अनंत विद्या मे भरी पड़ी हैं जैसे २ विशुद्ध मस्तिष्क इन की खोज करेंगे त्यो २ अधिक जानेंगे। वेद प्रतिपादित ज्ञान का बखान ब्राह्मण, आदि ग्रंथों में है। परन्तु वे भी वेदानुकूल होने पर मानने के योग्य हैं।

वेद मे सृष्टिक्रम और तर्क सम्मत ज्ञान है। परमात्मा सब का पिता है और आदि गुरु है। अत: आदि सृष्टि में जहा परमात्मा ने जगत् और नाना भोग पदार्थ दिये उनके साथ उनके प्रयोग और ज्ञान के लिए ज्ञान भी दिया। वही ज्ञान वेद है केवल सृष्टि रच कर उसका प्रयोजन और प्रयोग के प्रकार का ज्ञान न देना सृष्टि को निष्प्रयोजन बनाने के समान हो जाता है। कोई आविष्कर्त्ता किसी प्रकार का अविष्कार कर उसके प्रयोग की विधि का निर्माण साथ २ ही करता है। ताकि उसके आविष्कार का उचित प्रयोग हो सके। इसी प्रकार उस महान आविष्कर्त्ता ने सृष्टि का आविष्कार कर उसके प्रयोग की विधि एवं तत्व ज्ञानार्थ वेद का ज्ञान आदि सृष्टि मे ही दिया। सृष्टि को बने लगभग दो अरब वर्ष हो चले है तभी से कार्य चल रहा है। सृष्टि दो अरब वर्ष पूर्व बना दी जाये और तत्सम्बन्धी ज्ञान को कुच्छ हजार वर्ष हुए हो यह तर्क सगत नही।

महर्षि ने यह सत्य ज्ञान दण्डी स्वामी विरजानन्द जी महाराज से प्राप्त किया और निधडक योधा की भाति इस तरह नाना कष्ट सह कर प्रचार किया। वेद के सम्बन्ध में किसी से स्वामी जी ने सुलहा नही की। इन का प्रभाव समकालीन पश्चात्य विद्वानो पर भी पडा। मैक्समूलर आदि स्वामी जी के प्रभाव से प्रभावित हुए बिना न रह सके।

स्वामी जी ने अपने दस वर्ष के महान व्यस्त जीवन के काल मे जहा नाना मतमतातरो का अन्वेषण किया। भाषण शास्त्रार्थ वहा अनेको असुविधाओ केहोते हुए १५००० पृष्ठ लेख बद्ध भी किये। उस महान कर्मयोगी की सब से बडी देन है वेद। इस सूर्य को उदय करने वाले पंजाबी ब्राह्मण गुरुदेव के भी हम सभी उपकृत हैं।

अत: वेद के पवित्र ज्ञान का प्रचार और प्रसार कटिबद्ध हो कर करने का संकल्प लो मेरे भाइयों और बहिनो तभी ससार सुखी होगा। 'वेद वाद परित्यज्य न कश्चित सुखमेधते।'

★★★

आर्यवीरों का विशाल मेला

आर्य जनता को जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्य युवक समाज लेखराम नगर (कादियां) अपना नवम् वार्षिकोत्सव ४ से ९ अक्तूबर तक मना रहा है इस अवसर पर आर्य वीरों के विशाल मेले का आयोजन किया है। जिस में सर्व श्री स्वामी सर्वानन्द जी, प्रि० रलाराम जी, श्री प० रुद्रदत्त जी शर्मा, आदि विद्वान वक्ता भाग ले रहे हैं। नोट—आर्य वीर दल अमृतसर, आर्य कुमार सभा बटाला, व जिला-भर की कुमार सभायें शामिल हो रही हैं।

—रविन्द्र कुमार प्रधान

दिल की बात

(पृष्ठ ३ का शेष)

इसी आयु की विभूतियों को सम्मान करने के लिए एक विशेश दिन का समारोह चाहे तो सार्वदेशिक सभा द्वारा अलग २ प्रातों में या देहली में किया जाये जिस में सम्मान हो। इन से एक २ अमूल्य लेख लिखवा कर पुस्तक रूप मे प्रकाशित किया जाये। बड़ा ही लाभ होगा व प्रेरणा मिलेगी।—सं०

आर्य समाजों से

आर्य जगत आर्य प्रादेशिक सभा पजाब जालन्धर शहर का अपना साप्ताहिक मुखपत्र है प्रति सप्ताह नियमित रूप से अपने सारे परिवार के हाथो में पहुचता रहता है। यह आपका ही है। हम केवल सिपाही बनकर इसकी सेवा मे लगे हैं। वेद प्रचार के काम मे बाहर समाजो मे घूमते हुए साथ साथ आर्यजगत की कर्तव्य के नाते सेवा के कार्य मे लगे हुए हैं। कर्मयोग सब से बड़ा योग है कर्मपथ सब से सुन्दर पथ है। समाज के मान्य सन्त महात्माओं व विद्वान भाई बहिनों की इस पर सदा कृपा रही है। अपने अमूल्य लेखो, विचारो, कविताओं एवं समाजे अपने समाचारों से कृपा करते रहते है। अपने कालेजो, स्कूलो के मान्य प्रिंसिपल महोदयों व समाजों का भी सहयोग मिलता है। उनका अपना ही है।

इस पर भी हमें सन्तोष नही। आजका युग तड़क-फड़क का है। उस के लिए खूब पैसा चाहिए। इतना घाटा सभा कैसे वहन करे। कई समाजें प्रति सप्ताह कई कई पर्चे इकट्ठे मंगवा मंगवा का वितरित करती हैं। अभी इस खन्ना कथा पर समाज में पांच प्रतियों का प्रति सप्ताह मंगवाने का प्रबन्ध कर आये। प्रत्येक समाज दस व पांच २ प्रतियां मंगवाये तो बड़ा काम हो सकता है। आर्य जगत का अवश्य ही ध्यान रखें। यह भी सभा का काम है।

जन्म से ही जो आलसी, प्रमादी एवं अचंचल होते हैं उनकी बात पृथक् है किन्तु शरीर में अल्पता बढ जाने के के कारण जो अस्वाभिविकता आ जाती है उस का प्रतिकार उपयुक्त उपचारों से सर्वथा सम्भव है। तीक्षण विषों की प्रतिक्रिया से भी स्नायुमण्डल को उदीप्त एवं स्वकार्यक्षम किया जा सकता है किन्तु जहरो के घातक प्रभाव से कालान्तर में चिर शिथिलता आ जाती है। अतः आवश्यक यह है कि मूल प्रवृत्ति में व्यतिरेक का कारण देखा जाए एवं तदनुसार चिकित्सा की जाए। प्राकृतिक चिकित्सा लीपापोती एवं रसायनिक परिवर्तन को आदर्श आरोग्य की अक्षुण्णता में जबरदस्त गतिरोध अनुभव करती है। जैसे सफेद दीवार को पहले काले रग से रग दिया जाये। उस दीवार को सफेद अवस्था मे लाने के लिए ऊपर सफेदी चढाने को लीपापोती कहते हैं। चाहिए यह कि रग की परत को खुर्च दिया जाए। ऐसे ही एक रस के विरुद्ध दूसरे रस का उपयोग (जैसे दाल में मिरच अधिक पड जाए शक्कर डाल तीक्ष्णता घटा दी जाती है) रसायनिक परिवर्तन कहा जाता है। हमारे शरीर मे अम्लता और विजायतीय द्रव्य बढ जाता है तो उसे प्रछन्न करने के लिए अथवा दूसरे द्रव्य मे रूपान्तरित करने के लिए जो औषधियो के प्रयोग किए जाते हैं उन्हे प्राकृतिक चिकित्सा स्वीकार नही करती। शरीर मे मूल धातुओ के अतिरिक्त जो अनावश्यक (मूल धातुओं को दूषित करने हारा) विजातीय द्रव्य सग्रहीत होता है। उसे बाहर निकाल फैंकनेसे ही सच्चा आरोग्य मिल सकता है ऐसा प्राकृतिक चिकित्सा का सिद्धात है। सखिया अफीम धूतरा भांग इत्यादि कई प्रकार के जहरो से विजातीय द्रव्य को मूर्च्छित अथवा सामाजिक रूपान्तरण कर के आरोग्य प्रदान करने वाली जितनी भी चिकित्सा प्रणालियां हैं—जीवन सौदर्य की विपर्यित करती हैं।

अस्तु। रक्तस्वभावतः क्षारीय एवं तरल होता है। बडी २ धमनियों से ले कर मांस और त्वचा मे आवेष्टित रसायनियों (केशिकाओ) तक वह एक क्षण में पार हो कर शिराओं मे प्रवेश कर जाता है। इतना सूक्ष्म और प्रवाहमान होता है। किंतु यदि रक्त में अल्प वृद्धि हो जाती है तो वह इतना सूक्ष्म नहीं रह पाता। फलतः उस का प्रवाह कठिनता धारण करता

स्वास्थ्य स्तम्भ—

दुर्बलता का प्राकृतिक उपचार

जाता है। शरीर मे चीटिया दौड़ना, झुनझुनी चलना सुन्नता आ जाना, अकड़न पैदा होना, कार्य मे अरुचि पैदा होना, सभी उसी के कारण होते हैं। स्वास्थ्य के नियमो की अवहेलना ही उनका उत्तरदायित्व वहन करती हैं।

काश! मनुष्य स्वास्थ्य का रहस्य समझता, शरीर मे विजातीय द्रव्य नही बढने देता, रक्त में क्षारीयता एवं अम्लता का अनुपात यथावश्यक रखता।

जो हो! प्राकृतिक चिकित्सा मे कारण त्याग ही औषधि है, कारण त्याग ही चिकित्सा है। अतः अपने रोग के लिए आहार विहार तथा नैतिक कर्मो मे अपनी न्याय प्रिय बुद्धि से जो भी कारण परिलक्षित हो उन्हें दूर करना चाहिए।

शरीर को सशोधित करने के पाच साधन हैं :—जल का पुष्कल प्रयोग, स्वच्छ वायु का निरन्तर सेवन प्राकृतिक क्षारो का आहार मे विस्तृत समावेश, नियमित प्राणायाम, आसन तथा व्यायाम, एव मन मे सात्विक विचारो का समाहार।

जल के प्रयोग दो तरह से होते है, बाह्य और आभ्यान्तर। स्नान, कटिस्नान, मेहन स्नान, विविध पैक पट्टियां मिट्टी की पुलटिश, बाह्य प्रयोग मे सम्मिलित हैं। जलपान और एनीमा भीतरी प्रयोग की गिनती मे आते है हैं। इन सब के यथावत प्रयोग केलिए किसी प्राकृतिक चिकित्सक से पूछिए अथवा प्रयोगविधि का साहित्य पढिए। क्योकि जलपान और स्नान ही जल के मुख्य प्रयोगो के पूरक है। जलपान और स्नान के कुछ नियम है जिनका पालन सर्वसाधारण नही करते।

स्नान के पहले ५-१० मिनिट की कुछ तीखी धूप मे वस्त्र रहित होकर बैठिए। पसीना आ जाए तो सूखे तौलिए से पोछिए। गीली मिट्टी और शुद्ध कीचड़ सम्पूर्ण शरीर पर लगा कर धूप या हवा मे सुखा लीजिए पश्चात प्रचुर जल राशि मे अग प्रत्यग को मसल-मसल कर रगड-रगड कर नहाइए। नहाने के बाद स्वच्छ तौलिए से शरीर को भली भाति पोछिए और उसके बाद सरसो के तेल की कुछ बूदे हथेली पर फैला कर शरीर को मालिशनुमा रगड दीजिए। तेल की इस हल्की-सी मालिश के बाद जरूरत हो तो बदन को कपडे मे पोछा जा सकता है। जल पीने का भी यह नियम है कि बहुत प्रातः जितना भी जल पिया जा सके पीना चाहिए। भोजन के एक घटा पहले और तीन घटे बाद जल पीने का अच्छा समय है। वैसे भी प्यास लगने पर जल पीना चाहिए। किंतु बगैर प्यास के जो जल पिया जाता है वह उपचार के जलपान मे सम्मिलित है। पानी के स्वाद को बढाने के लिए तथा प्राकृतिक लवणो से उसकी उपयोगिता बढाने के लिए उस मे निबू का रस और शहद मिला दीजिए। इस तरह प्यास के इलावा दो लिटर जलहमेशा पीना चाहिए।

स्वच्छ वायु सेवन के लिए सुबह जल्दी उठ कर जलपान करके शौच के लिए या भ्रमण के लिए जगल जाइए। स्थिर चित्त होकर लम्बे श्वास प्रश्वास खीचिए। शरीर को कम मे कम वस्त्रो में आवद्ध रखिए। रात को खिडकिया खोल कर सोइए।

आहार मे हरी पत्तिया (पत्तेदार शाक) फल, कच्चा दूध, छाछ अधिक रखे। चोकर समेत आटे की रोटी बनाए। रोटी शाक, दाल या छाछ मे गीली करके नही बल्कि सूखी चबाए। शाक दाल अलग से खाए या उन मे पानी कम रहे तो रोटी के साथ खा सकते हैं। अभिप्राय यह कि वस्त्र अजीर्ण आदि से बचने के लिए मुंह लार पेट मे जानी आवश्यक है। कब्ज रहती हो और घी तेल का सेवन जारी हो—बन्द कर देना चाहिए। बहुत सी अवस्थाओ मे घी कब्ज करता है। खाने पर खाना खाने से बिना भूख पेट को विविध बाजारु गरिष्ट चीजो की अलमारी बनाने से भी कब्ज हो जाती है। जो भी खाना हो एक समय पर खा लेना चाहिए। खाने के ४ घटे के भीतर जल के सिवाए कुछ भी ग्रहण नही करना चाहिए।

प्राणायाम आसन, तथा व्यायाम का समय है प्रातः काल शौच के और स्नान से पहले सब के प्रति आत्मीयता और हितचितना का भाव मन मे बार कायम करने से सात्विक विचारों की सृष्टि होगी। क्रोध, घृणा, ईर्ष्या, ग्लानी, आदि मनोविकार शरीर की स्वास्थ्य नीति मे जबरदस्त रोड़ा अटकाते है। अभ्यास पूर्वक उन्हे हटाने की चेष्ठा करनी चाहिए।

उपरोक्त पाचो नियमो का पालन करने से शरीर मे स्फूर्ति, कर्मण्यता, एव जीवन के प्रति रुचि ही उत्पन्न नही होती प्रत्युत शरीर मन और मस्तिष्क का बीमा भी हो जाता है।

कल्प वृक्ष से साभार ★★

हमारे इतिहास का काला कलंक अर्थात् सती-साध्वी द्रौपदी पर अत्याचार और उसका दुष्परिणाम

श्री पिण्डीदास जी ज्ञानी, प्रधान आर्यसमाज लोहगढ़, अमृतसर

नोट—इस लेखका पूर्वभाग ११ सितम्बर १९६६ के अंक में पढिए।

(गतांक से आगे)

कुन्ती कुमार युधिष्ठिर से ऐसा कहकर ऐश्वर्य मद से मोहित हुए दुर्योधन ने इशारे से राधानन्दन कर्ण को बढावा देते हुए और भीम सेन का तिरस्कार करते हुए अपनी जांघ का वस्त्र हटाकर द्रौपदी को मुस्कराते हुए देखा। उसकी केले के खम्भे के समान मोरी, सब लक्षणों से सुशोभित हाथी की सूंड के सदृश चढाव-उतार वाली और वज्रके समान कठोर अपनी बायी जाघ द्रौपदी की दृष्टि सामने करके दिखाई। १०-११-१२

दुर्योधन की इस बदतमीजी को देखकर क्षत-विक्षत सांप की तरह फुफकारते हुए क्रोधावेश के कारण भीम ने प्रतिज्ञा की कि—

पितृभि : सह सालोक्य मास्म
गच्छेद् वृकोदर :
यद्येतमूरं गदया न भिन्द्यां ते
महाहवे ॥ १४
सभा० आ० ७१

दुर्योधन ! यदि महासमर में तेरी इस जाघ को मैं अपनी गदा से न तोड़ू तो मुझ भीमसेन को अपने पूर्वजो के साथ उन्ही के समान पुण्य लोको की प्राप्ति न हो ॥

इस प्रकार बात बढती देख कर धृतराष्ट्र ने दुर्योधन की भर्त्सना की और द्रौपदी को वर दिये जिनसेपाण्डव सरथ-धनुष्य-बाण दासत्व से मुक्त कर दिये गये। परन्तु दुबारा फिर जुए के चस्के के कारण युधिष्ठिर हार गया और शर्त के मुताबिक मय चारो भाइयो और द्रौपदी के १२ वर्ष का वनवास और १ वर्ष का अज्ञातवास भोगता फिरा।

भगवान कृष्ण को इस दुर्घटना का पता चला तो आप पाचाल कुमार धृष्टद्युम्न और चेदिराज धृष्टकेतु को साथ लेकर पाण्डवो को वन मे जाकर मिले। भगवान से साक्षात्कार होने पर द्रौपदी की चीख निकल गई और उपालम्भ देती हुई बोली—

कचग्रहमनुप्राप्ता साऽस्मि कृष्ण वरासनी।
पचाना पाण्डुपुत्राणा प्रेक्षता मधुसूदन ॥
१२१ बन० अ० १२

हे मधुसूधन ! मैं श्रेष्ठ तथा सती साध्वी होती हुई भी इन पांचो पाण्डवो के देखते देखते, केशो से पकड कर घसीटी गई।

ऐसा कहकर अपने कोमल हाथों से मुंह ढककर फूट फूट कर रोती हुई क्रोध से बोली—

नैष मे पतय: सन्ति,
न पुत्रा न च बान्धवा:।
न भ्रातरो न पिता,
नैव त्वं मधु सूदन ॥
९५ बन० अ० १२

मधुसूदन ! मेरे लिये न पाण्डव हैं, न पुत्र हैं, न बांधव हैं, न भाई हैं और न आप ही हैं।

इस प्रकार कृष्णा का करुणाक्रन्दन कर्णगोचर होते ही करुणा सिन्धु भगवान कृष्ण ने सान्त्वना देते हुए कहा, 'द्रौपदी ! जिस समय तुम्हारे अपमान कराने के कारणभूत द्यूत-क्रीडा हस्तिनापुर मे हो रही थी, मुझे दुःख है कि मैं उन दिनों सौभविमान के स्वामी शाल्वराज के साथ युद्ध करने के लिये गया हुआ था, क्योकि उसने अपने भाई शिशुपाल के वध का बदला लेने के विचार से मेरी अनुपस्थिति मे ही द्वारका पर आक्रमण कर रखा था। यदि मैं उस समय हस्तिनापुर मे आ सकता तो यह दुर्घटना कभी न होती। तथापि सुनो—

रोदयिष्यन्ति स्त्रियो ह्येव
येषा क्रुद्धासि भाविनि।
बीभत्सु शर सञ्छन्ना
ञ्छोणितौघ परिप्लुतान्॥१२८
निहतान् बल्लभान् वीक्ष्य
शयानान् वसुधा तले।
यत् समर्थं पाण्डवाना
तत् करिष्यामि मा शुच:॥१२९
बन० अ० १२

भाविनि ! तुम जिन पर क्रुद्ध हुई हो, उनकी स्त्रिया भी प्राण प्यारे पतियो को अर्जुन के बाणो से छिन्नभिन्न और खून से लथ-पथ हो मर कर धरती पर पड़ा देख इसी प्रकार रोयेंगी। पाण्डवो के हित के लिये, जो कुछ भी सम्भव है, वह सब करूगा, शोक मत करो। और सुनो—

सत्य ते प्रतिजानामि राज्ञ राज्ञी भविष्यति।

पतेद्यौ हिमवाञ्छीर्येत्
पृथिवि शकला भवेत्
शुष्येत् तोयनिधि: कृष्णे न
मे मोघं वचो भवेत्
बन० अ० १२—१३१

मैं सत्य प्रतिज्ञा पूर्वक कह रहा हू कि तुम राज राणी बनोगी। कृष्णे ! आसमान फट पड़े, हिमालय पर्वत विदीर्ण हो जाये, पृथिवि के टुकड़े-टुकड़े हो जायें, और समुद्र सूख जाये, किन्तु मेरी प्रतिज्ञा अटूट रहेगी।

द्रौपदी ने अपनी बातों का उत्तर पा कर अर्जुन की ओर देखा, तब वह बोला—

मा रोदी: शुभताम्राक्षियदाह
मधुसूदन:।
तथा तद् भविता देवि
नान्यथा वर वर्णिनि ॥
बन० अ० १२—१३३

लालिमायुक्त सुन्दर नेत्रो वाली देवि ! वरवर्णिनि ! रोओ मत। भगवान् मधु सूदन जो कह रहे हैं, वह होकर रहेगा, टल नही सकता।

तब द्रौपदी के भाई धृष्टद्युम्न की भी भुजाये फडकने लगीं और अपनी सहोदरा भगिनी की अपमान जनित विह्वलता को देखकर धैर्य बंधाते हुए बोला—

अह द्रोण हनिष्यामि
शिखण्डी तु पितामहम्।
दुर्योधन भीमसेन:
कर्ण हन्ता धनजंय: ॥१३४॥
रामकृष्णौ व्यपाश्रित्य
अजेया स्मरणेस्वस:।
अपि वृत्रहणा युद्धे
किं पुन: धृतराष्ट्र जे ॥१३५॥

बहिन ! मैं द्रोण को मार डालूंगा, शिखण्डी भीष्म का बध करेगा, भीमसेन दुर्योधन को मार गिरायेंगे, और अर्जुन कर्ण को यम-लोक भेज देंगे। भगवान् श्री कृष्ण और बलराम का आश्रय पाकर हम लोग युद्ध मे शत्रुओ के लिये अजेय हैं। इन्द्र भी हमें रण में परास्त नहीं कर सकता, धृतराष्ट्र के पुत्रों की तो बात ही क्या है !

दुर्योधन, दुःशासन, शकुनि तथा कर्ण की चरित्रहीन चाण्डाल-चौकडी के षड्यन्त्र, धृतराष्ट्र के पुत्र—मोह, राज्य लोभ तथा अदूर दर्शिता के कारण सती-साध्वी पाञ्चाल कुमारी द्रौपदी पर असह्य अमानुषिक अत्याचारों के कारण भगवान् कृष्ण, भीम, अर्जुन तथा धृष्टद्युम्न को भीषण-भयङ्कर प्रतिज्ञाएं करनी पड़ीं, जो अक्षरश: सत्य सिद्ध हुईं—

दुःशासन का हृदय विदीर्ण करके भीम ने उसका गर्म-गर्म रक्त पिया, धृष्टद्युम्न द्वारा द्रोणाचार्य मारे गये, शिखण्डी ने भीष्म पितामहा का बध किया, भीमसेन ने अपनी कठोर गदा के प्रहार से दुर्योधन की जंघा तोड़ कर उसे यमधाम पहुंचाया और भगवान् कृष्ण ने पग-पग पर पाण्डवों को विजय दिला कर द्रौपदी को राजरानी बनाने की प्रतिज्ञा पूरी की।

सती साध्वी द्रौपदी के अपमान रूप हमारे इतिहास के काले कलक का कितना भयंकर परिणाम है यह !

**

भ्रष्टाचार निरोध सम्मेलन करनाल

पिछले दिनों करनाल में आर्य-समाज प्रेम नगर का वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ जिस में स्वामी आनन्द गिरी जी, प्रो० रतनसिह एम० ए० प० क्षितीश कुमार सह-सम्पादक हिन्दोस्तान, आचार्य सत्य प्रिय जी, आचार्य प्रिय व्रत जी प० जगदीश चन्द्र जी शास्त्री, प० ओम प्रकाश जी तथा अन्य विद्वानो ने भाग लिया। इस अवसर पर भ्रष्टाचार निरोध सम्मेलन भी हुआ जिसकी प्रधानता स्वामी आनन्द गिरी जी ने की। जनता के सामने भ्रष्टाचार समाप्त करने के लिये वैदिक दृष्टिकोण रखा, जनता ने भूरी-भूरी प्रशंसा की। हाजरी सतोष-जनक थी।

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार के शुभ समाचार

विद्यालय अपने जन्म काल से ही प्रचार कार्य पर विशेष बल देता आया है। इसके शिक्षित तथा दीक्षित सुयोग्य स्नातक भारत के भिन्न२ प्रांतों में बड़ी सफलता के साथ प्रचार कार्य कर रहे हैं। विद्यालय आर्य संस्कृति और सभ्यता की रक्षार्थ तथा प्रसार के कार्य में संलग्न है। विद्यालय में वेद, शास्त्र, उपनिषद् तथा वैदिक सिद्धात का तुलनात्मक अध्ययन कराया जाता है।

आजकल विद्यालय में भारत के भिन्न२ प्रांतों के पैंतालीस छात्र हैं। जिनके लिए चार सुयोग्य प्राध्यापक अध्यापन कार्य कराने के लिए नियुक्त हैं। भाषण कला पर विशेष बल दिया जाता है। विद्यालय मे सकल आवश्यक जीवन सामग्री विद्यालय की ओर से नि:शुल्क दी जाती है। जिसका भार दानी महानुभावों के ऊपर है।

निवेदक—उपाचार्य विद्यालय

गोरक्षा—एक अत्यावश्यक कर्तव्य

(श्री दयानन्द जी आर्य बौद्धिक शिक्षक आर्य वीर दल पंजाब)

यह एक निर्विवाद तथ्य है कि भारत कृषि-प्रधान देश है न केवल आज से अपितु सृष्टि के प्रारम्भ से ही खेती करना उत्तम व सर्वोच्च कार्य गिना गया है। भगवान वेद का सर्वकल्याणप्रद उपदेश है कि 'कृषमित् कृषस्व' अथवा मानव राष्ट्र की प्रगति के लिए द्यूत आदि हेयकर्मों को छोड देवें व परिश्रम करके भूमि पर खेती करें। यजुर्वेद के मन्त्र 'भूमिगोष्वरयन्त दधातु' का अर्थ यह है कि ईश्वर भूमि व गौओं कि हमें निधि दे। इसका प्रमुख कारण यह है कि अच्छी गौएं खेती का मूलाधार हैं। आर्यों की पूज्यमाता गौ भी है, जो बचपन से वृद्धावस्था तक मानवका पालन-पोषण करती है। हमारी सस्कृति को भी 'गोरूप' कहा गया है अर्थात जिस प्रकार गौ भोली भाली है अमृत भरा दूध देने वाली है उसी प्रकार वैदिक सस्कृति भी सुखद है। भगवान वेद ने तो कृषि की महत-हितकारिणी गौ की भूरि २ प्रशसा की है। यजु मे 'दोग्ध्रीधेनुर्वोढानड्वानाशुसप्तिः' कहा है कि गौवे साड व घोडे बलवान हो व पुष्ट हैं। अथर्ववेद ४-२१-६ में गौ का यह लाभ बताया है—

'यूयं गावो मेदयथा कृशं चिदश्रीरं चित् कृणुथा सुप्रतीकम् भद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचो बृहद् वो वय उच्यते सभासु।' कहने का तात्पर्य इतना है कि हे गो माता तू हमें मधुर दूध पिलाती है। बडी भद्र है......

'यजमानस्य पशून पाहि' में पशु रक्षा का निर्देश है। किन्तु इस के विपरीत गौ को हानि पहुचाने वाले के बारे मे अथर्व १.१६.४ में कहा है—

'यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पूरुषम्,
तं त्वा सीसेन विध्यामो यथा नोऽसो अवीरहा॥

शब्दार्थ: यदि हे राक्षस शत्रु पुरुष! तू हमारी गौ को मारे यदि अश्व व पुरुष को मारे तो तुझे हम सीसे की गोली से बींध डाले जिससे तू हमारे वीर पुरुषों को न मार सकें।

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानां अमृतस्य नाभिः'', में तो वेद मन्त्र गौ-माता के स्तुति-भरे गान गाता है। ''अन्तकाय गोघातम्' में गौ-हत्यारे को प्राण-दण्ड देना लिखा है। ऋ० १.६४.२७, ५.८३.८ १.१६१.४०, ४.१६, १०.१०.१, अथर्व ३.३०.१, ९.१०.२० में गौ को 'अघ्न्या' कहा है अर्थात्-गौ न मारने योग्य है। वेद मे अन्यत्र कहा है, हे न मारने योग्य, तू उत्तम जौ की भूमि खा कर निश्चय से दूध आदि सौभाग्यशाली पदार्थों से युक्त हो और हम सभी सुख-सम्पत्तिमान् हों। हे गौ, तू सदा ही घास खा व एक ओर विचरती हुई स्वच्छ जल का पान कर।

स्मृति ने 'गोषु पाप्मा न विद्यते' व ब्राह्मण-ग्रन्थों में ''माता धेनुः'' कहा है। हमारे प्राचीन महापुरुषों ने कितने सच्चे हृदय व भक्ति-भाव से गो-सेवा की है। उक्ति है, सर्वे उपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः'' अर्थात् योगेश्वर कृष्ण ने उपनिषदों रूपी गौओ से दूध दोहा।

रघुवंश मे एक बडा सुन्दर प्रसग आया है। जब राजा दलीप अपनी इच्छाओ को फली भूत करने के लिए नन्दिनी गौ की दिन-रात सेवा किया करता था। तो गौ पर विपत्ति को दूर करने के लिए अपने प्राणोत्सर्ग तक करने को तैयार हो गया था। उसकी अटूट गो-भक्ति भारतीय आदर्श की प्रतिमा है जो गो-रक्षा के महत्व पर प्रकाश डालती है। गो पालन श्रेष्ठ कर्म समझा जाता है। वेदो से लेकर मुसलमान युग तक गौ की रक्षा हो रही है। स्वय सम्राट् अकबर ने १५८६ ई० मे अपने राज्य मे यह आदेश लागू करवाया था,... इसमें गाय की जाति चाहे वह मादा हो या नर, लाभ देने वाली है क्योंकि मनुष्य और पशु अन्न खा कर जीते हैं......शाही फरमान के अनुसार अब के किसी गाव या शहर मे गोहत्या का नाम-निशान तक बाकी न रहे। यदि कोई आदमी इस आज्ञा का उल्लंघन कर वर्जित काम को नही छोड़ेगा। तो समझ लें कि उसे सुल्तानी गजब (क्रोध) मे जो ईश्वरीय कोपकारक नमूना है, फंसना पड़ेगा और दडनीय होगा। इस फरमान को जो उल्लंघन करेगा, उसके हाथ-पाव की उंगलियां कटवा दी जाएंगी।'

हुमायूं ने भी गो-हत्या को भी बन्द करवा दिया था। युग-द्रष्टा स्वामी दयानन्द जी ने 'गोकरुणा-निधि' मे गौ पर हो रहे अत्याचारों के विरुद्ध सशक्त आवाज़ उठाई है। उन्होंने तो गो-समर्थकों का हस्ताक्षर-अभियान भी चलाया था। वे लिखते है, 'गौ आदि पशुओ के नष्ट हो जाने से राजा और प्रजा दोनो का नाश हो जाता है। एक प्रसूता गाय से १९८० लोग एक बार तृप्त होते है। एक गाय के जन्म भर से २५७४० व्यक्ति तृप्त हो जाते है—तथा गौ की एक पीढ़ी से ४१०४४० लोग तृप्त होते है? यह भोला भाला पशु घास, तृण आदि खाकर व अमृत भरा दूध देता है। इसे मारना तो तो राष्ट्र के नाम पर कलक है। १८५७ ई० के प्रथम स्वाधीनता आंदोलन की पृष्ठ भूमि मे भी गोरक्षा का भाव विद्यमान था। बहादुर शाह जफर ने ईद के अवसर पर गो-हत्या, को बद करवा दिया था। महर्षि देव दयानन्द जी का दृढ निश्चय था कि इन मांसाहारी विदेशियो ने गो-हत्या की आरम्भ बद करवा दी। श्री पडित मदन मोहन मालवीय जी ने १९२८ ई० मे वृन्दाबन में आयोजित अखिल भारतीय गोरक्षा सम्मेलन करके गोपाष्टमी दिवस को राष्ट्रीय स्वतन्त्रता का रूप दिया था। वे तो कहा करते थे कि इस सरकारका विरोध इसलिए करना चाहिए कि यह गोवध कराती है।

इस बात का बडा ही दुर्भाग्य है कि हमारे देश के नेता भारतीय ढग से नही सोचते। गाधी तो गो-भक्त थे किन्तु उनके आदर्शो के अनुकरण करने का दम भरने वाली सरकार गौ पर कटारे चला रही है, कितना खेद व दुख है। ४० करोड लोगो की गो पूजा के प्रति सद्भावना व निष्ठा को जिस कुनीति से कुचला जाता है वह अतीव निदनीय है। घी, दूध, मक्खन की क्या दुर्दशा हो गई। यदि ऐसा होता रहा फिर तो प्रदर्शनी मे घी के दर्शन करने जनता जाया करेगी। गो-भक्तों का आदोलन गो-वध बद कराने मे सफलता प्राप्त करे, प्रभु से ऐसी प्रार्थना है। Mythies Study Journal मे हो रहे गो-पालन के अध्यक्ष ने गौ का Mother Cow के के नाम से कहा है। भारत सरकार को चाहिए कि भारतीय भावनाओ व गो-भक्तो की विचारधारा का मान करके शीघ्रातिशीघ्र गो-हत्या को बद करें, यही उसके लिए श्रेयस्कर होगा।



मा० गुरु जी गो-रक्षा के लिए अनशन करें

आज ''दैनिक वीर अर्जुन'' मे एक सक्षिप्त किन्तु महत्वपूर्ण समाचार पढने को मिला कि राष्ट्रीय स्वय-सेवक सघ के सरसघचालक श्री गुरु जी ने गो-रक्षा के लिए अनशन का विचार त्याग दिया है। क्योकि उनका विचार है कि यह उग्रतम पग होगा। एव उनके अनशन से सघ भी सरकार विरोधी आन्दोलन मे पूर्णतः शामिल हो जावेगा। अगर वास्तव मे ऐसा है तो अपना अनशन अवश्य करना चाहिए। क्योकि गो रक्षा के लिए आर्यसमाज सनातन धर्म सभा एवं अन्य संगठन जिस प्रकार जोर लगा रहे है उस मे यदि सघ भी थोडा-सा जोर लगा दे तो निश्चित रूप से गो-हत्या समाप्त हो जावेगी। और अगर अपने को साम्प्रदायिक न कहलवाने की हविस मे या किसी दबाव मे आकर श्री गुरु जी ने गोरक्षा जैसे पुनीत आदोलन मे अपना सम्बन्ध तोड लिया तो निश्चित रूप से यह सघ के उज्जवल इतिहास मे कलक का टीका होगा। हिंदू सगठन के लिए स्थापित सघ के लिए यह परीक्षा की घड़ी है। उसे तो अपनी पूरी ताकत इस पर लगा देनी चाहिए थी। जहा तक उग्रतम पग का प्रश्न है भगवान राम कृष्ण, शिवा जी, गुरु गोविन्द सिह आदि महापुरुष तो गोरक्षा के लिए हथियार तक उठाने मे सकोच नही करते थे तो मेरी समझ मे नही आता कि अनशन उग्रतम पग कैसे है? जिनके एक इशारे पर हजारो नवयुवक मरने मारने को तैयार बैठे हो उन के लिए अनशन से पीछे पग हटाना नितान्त लज्जाजनक बात होगी। आशा है गुरु जी एवं सघ के अन्य पदाधिकारी इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर पुनः विचार करेंगे। और शीघ्र ही प्रत्यक्ष रूप मे सघ के इस आन्दोलन मे शामिल होने की घोषणा करेंगे।

शिव कुमार आर्य मत्री समाज
कान पुर

★ वेद का स्वाध्याय, जप और सन्ध्या करने को ब्रह्मयज्ञ कहते हैं।

★ इसके करने से शरीर और आत्मा पवित्र तथा पुष्ट होते हैं।

★ अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध यज्ञ पर्यन्त को देवयज्ञ कहते हैं।

★ इसके करने से जल, वायु, आकाश तथा मन की शुद्धि होती है। अन्न पुष्टिकारक तथा औषधियां रोग नाशक उत्पन्न होती है।

५००/-का सात्विक दान

सभा की प्रसिद्ध चिकटामण्डली राजपाल मदन मोहन जी हाली प्रचारार्थ वहा पधारे रास्ते मे श्री प्रिंसीपल देवराज जी एम ए डी ए वी कालेज हिसार जो कि सभा से अत्यन्त स्नेह रखते हैं और सभा की समय २ पर धन द्वारा सहायता प्रदान करते रहते हैं, इस अवसर पर ५००/- वेद प्रचारार्थ सभा को भेट किया। इस सात्विक दान के लिए सभा उनका अत्यन्त धन्यवाद करती है।

वेद प्रचार मंडल जालन्धर का मासिक सत्संग

गत रविवार शाम को ५॥ बजे से ६॥ बजे तक आर्य समाज मदिर विक्रमपुरा मे सम्पन्न हुआ। १ घटा मधुर भजनो के पश्चात श्री वेद प्रकाश जी मलहोत्रा M A प्रो डी ए वी कालिज का "वेद और ऋषिदयानंद' विषयपर सार गर्भित व्याख्यान हुआ। उपस्थिति सतोषजनक थी।

इस विशेष बैठक की प्रधानता प खुशी राम जी महोपदेशक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर ने सुशोभित की।

बटाला में प्रचार

श्री प्रिंसिपल प० युगल किशोर जी एम ए बटाला के प्रबन्ध से आयसमाज कालेज विभाग बटाला मे सभा के प्रोग्राम पर आये हुए प० त्रिलोक चन्द्र जी शास्त्री की रविवार ता० २५ सितम्बर प्रात कथा हुई। साय सती लक्ष्मी के खुले मैदान मे श्री महाशय गोकुलचन्द जी के प्रबन्ध मे प्रचार हुआ। सोमवार को डी० ए० वी० हायर सैक० स्कूल मे प्रचार हुआ। सभा को वेद प्रचार के लिए प्रिंसिपल जी ने ११ रु० दिए।

★ धर्म का प्रचार तथा अधर्म का नाश होकर सत्य फैलता है क्योकि सच्चे अतिथि ही सब जगह सत्य का प्रचार करते हैं।

★ वेदाङ्ग छः हैं—शिक्षा, कल्प, व्याकरण निरुक्त छन्द और ज्योतिष।

समाचार दर्शन

आर्य समाज हिसार

प्रस्ताव

आर्यसमाज हिसार का यह साप्ताहिक अधिवेशन श्री महात्मा रामचन्द्र वीर जिन्होंने गौ रक्षा के लिये अपने प्राणों की बाजी लगा रखी है से पूरी पूरी सहानुभूति रखता है और परमात्मा से प्रार्थी है कि वह महात्मा जी को दीर्घायु प्रदान करें ताकि वह देश जाति और गौ की रक्षा अधिक से अधिक कर सके।

और सरकार से [illegible] अनुरोध करता है कि वह गौ हत्या को सरकारी तौर पर कानून लागू करा कर बन्द कराए ताकि जनता की अशान्ति दूर हो।

नन्दलाल मन्त्री समाज

पठनीय एवं मननीय साहित्य

वेद प्रवचन ५/- गीतासार ७५ पैसे, आलमगीर के पत्र १/-वेदारम्भ संस्कार १/५० पैसे, मेरी आठ रोचक कहानियां ७५ पैसे, ऑक्ट ७५ पैसे, अनमोल जीवन ५० पैसे, कर्म मीमांसा २/२५ पैसे, सतति नियमन क्यों और कैसे १५ पैसे, वैदिक व्याकरण भास्कर ६/- व्यायाम बोधक पत्र ११/२० पैसे, साहित्य प्रचारक १/

जयदेव ब्रदस बडोदा—१

आर्यसभा को पारिवारिक सत्संग योजना

२५-९-६६ से १ १०-६६ तक श्री प० ओम्प्रकाश जी सभा उपदेशक द्वारा पारिवारिक सत्सगो मे भिन्न भिन्न घरो में वेद प्रवचन होते रहे। प्रत्येक परिवार ने बडी श्रद्धा और भक्ति-भावना से इन सत्सगों में भाग लिया और [illegible]। आर्यसमाज की ओर से सभा को वेद प्रचार निधि में ५१) सत्कार पूर्वक भेंट किए गए।

आर्यसमाज लक्ष्मणसर अमृतसर।

अम्बाला छावनी, अम्बाला नगर तथा अम्बाला माडल टाउन में वेदप्रचार

सप्ताह ससमारोह सम्पन्न!

अम्बाला छावनी के पजाबी मोहल्ला समाज नगर के रेलवे रोड समाज तथा माडल टाउन समाज में सभा के सुयोग्य उपदेशक श्री प० ओम्प्रकाश जी की वेदकथा निरन्तर एक मास तक होती रही। जनता पर आप के विद्वत्तापूर्ण व्याख्यानों का यथेष्ट प्रभाव पडा। आप के साथ सभा की सुयोग्य भजन मण्डलियां जगतराम बस्तीराम तथा श्री सत्यपाल सुभाषचन्द्र अपने भक्तिरस और वीर-रस के भजनों द्वारा उपस्थित जनता को आनन्दित करती रहीं। तीनों समाजो ने निम्न प्रकार वेद प्रचार धन देकर सभा का सत्कार किया।

आर्यसमाज पंजाबी मोहल्ला अम्बाला छावनी २०१) रुपये।

आर्यसमाज रेलवे रोड अम्बाला नगर १५१) रुपये।

आर्यसमाज माडल टाउन अम्बाला १०१) रुपये।

तीनो समाजो ने मार्गव्यय की राशि पृथक प्रदान की। (सम्वाददाता)

आर्यसमाज लारेंस रोड अमृतसर की ओर से

५००) रु सभा वेदप्रचार में

आर्यसमाज लारेंस रोड अमृतसर के मान्य सज्जन अपने समाज की ओर से समय-समय पर सभा को वेदप्रचार के लिए पुष्कल धनराशि भेजते रहते हैं। इस बार भी वेद-सप्ताह के बाद समाज की ओर से सभा को ५००) रु० का चैक वेद-प्रचार निधि में भेजा गया है। समाजों की ओर से सभा का यदि ऐसा ध्यान हो जावे तो सभा को [illegible]। धन्यवाद!

★★

आर्य वीरदल, अमृतसर

विजय दशमीपर विराट्समारोह

आर्य जनता को यह जानकर खुशी होगी कि [illegible] आर्य वीर दल अमृतसर भी इस बार विजय—दशमी को बडे पैमाने पर मना रहा है। विजय दशमी के दिन (२३ अक्तूबर) को दोपहर १२ बजे तक आर्य वीरों का ठाठें मारता हुआ जोश देखने सुनने को मिलेगा। विजय-दशमी का खास महत्व क्या है, क्यों मनाया जाता है यह देखने को मिलेगा। आर्य-जगत के महान नेता युवक हृदय सम्राट श्री उत्तमचन्द 'शरर' श्री प्रो० रामप्रकाश जी रिसर्च स्कालर के ओजस्वी भाषण होंगे। कार्यक्रम पुन भेजा जाएगा।

—करनैलसिंह विद्यार्थी

मुद्रक व प्रकाशक प्रो० वेदप्रकाश मलहोत्रा एम. ए. आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन न० २०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd No P 121

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे — वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६, अंक ४२) ३१ आश्विन २०२३ रविवार—दयानन्दाब्द १४२– १६ अक्तूबर १९६६ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तयः

न त्वामिन्द्रातिरिच्यते

हे इन्द्र ! त्वाम—आप से तुझ से न अतिरिच्यते—ससार मे कोई भी और बढ कर नहीं है। आप सब से महान् हैं, आप से और कोई भी बढकर महान तथा श्रेष्ठ नही है । आप सब ज्येष्ठ हैं। आप अविनाशी तथा अधिकारी हैं।

इन्द्रं वाणीरनूषत

हमारी सारी वाणियां-स्तुतियां भक्तिरस भरे गीत उसी इन्द्र की ही स्तुति प्रशसा करती हैं। ये वेद वाणियां और सारे सुन्दर सूक्त सूक्तियां उसी महान भगवान की प्रशसा करती हैं। उसी के मधुर गान से भरी हुई हैं। हमारी वाणी मे में यदि प्रभु का गान है तब तो यह सफल है।

वाजी ददातुवाजिनम्

वह वाजी–सब बल, ज्ञान आदि का दाता परमेश्वर मुझ और सबको बल प्रदान करे, ज्ञान का प्रसाद देवें शक्ति पराक्रम का दान देते रहे । उसके सिवा इन सम्पदाओं को और देने वाला भी कौन है। वह प्रभु सब शक्तिमान है, हमे शक्तिवाला बनावे।

न किइन्द्र त्वदुत्तरम्

हे इन्द्र प्रभो ! आपसे बढ़कर कोई भी उत्तर उत्तम या ऊंचा नही है। आप ही सबसे उत्तम ऊंचे हैं। आपकी भक्ति से ही हमे जीवन मे हर प्रकार की सुख सुविधा की सामग्री मिलती है । आप महान् बलवान् हो ।

सा म वे द से

वे दा मृ त

हिंसकों को मार भगा

भिन्धि विश्वा अपद्विषः परिबाधो जही मृधः।
वसु स्पार्हं तदाभर ॥

अर्थ—हे राष्ट्र की स्वाधीनता के रखवाले वीर ! तू (भिन्धि) तोड फोड डाल उन (विश्वा) सारे (द्विष) द्वेषियो को राक्षसो तथा शत्रुओ को मार दे और इन (परिबाध) विघ्न बाधा पैदा करने वालो को जो (मृध) हिंसक बने हुए हैं (जहि) मार दे तथा (वसु) धन को (स्पार्ह) प्रशसा के योग्य सम्पत्ति को (तत् आभर) उसको प्राप्त कर ले । सारे शत्रुओ पिशाचो को तू मार काट कर रख दे तथा हिंसक भेडिया वृत्ति वाले शत्रुओ को कुचल डाल। वीरता, कीर्ति तथा यश के महाधन को प्राप्त कर ले । तू वीर है।

इसका भाव यह है

हे शूरता से भरे वीरवर ! तेरी वीरता पर सब लोगो को बडा मान है। तेरी शक्ति के सामने राक्षसो की क्या मजाल कि वे कुछ भी कर सके । इस लिए हे वीर ! अब प्रण कर ले कि जितने भी द्वेषी हैं नीच विचारो के पामर है । दुष्ट वृत्ति वाले खोटे हैं नीच विचारो के पामर है। जो भी राक्षस पिशाच हैं। हिंसा हत्या कर के राक्षसी मार्ग पर चलने वाले हैं। जिनसे राष्ट्र की स्वाधीनता को भय होता है । मानवता के शत्रु हैं, तथा जो नीच भावो से भरपूर हैं। इस प्रकार के हिंसक हत्यारो को दुष्टो पिशाचो को तू सहन न कर। न ही ऐसे राक्षसो पर दया भाव रख । इन सब पामरो को तू अपनी वीरता का वज्र लेकर मसल दे कुचल कर रख दे। इन सब दुष्ट शत्रुओ की सत्ता ही मिटा दे। —अथर्ववेद २० ४३।१

स्वभाव का माधुर्य

मनुष्य के स्वभाव दो प्रकार के हैं। एक मीठा स्वभाव और दूसरा क्रूर स्वभाव। मधुर स्वभाव से अहिंसा फैलती है और क्रूर स्वभाव से हिंसा होती हैं। कायिक, वाचिक अथवा मानसिक। अहिंसा अथवा हिंसा क्रमश स्वभाव की मधुरता और क्रूरता के साथ सबंध रखती है। अत अहिंसा का विधायक स्वरूप सरल शब्दों मे कहना हो तो स्वभाव का माधुर्य इन शब्दो द्वारा व्यक्त हो सकता है। तात्पर्य कोई यह न समझे कि अहिंसा मे करने का कुछ भी नहीं और न करने का सब कुछ है। अहिंसा मे करने का बहुत कुछ है और उसकी उत्तम सूचना 'स्वभाव की माधुरी से ठीक प्रकार व्यक्त होती है अब विचार करना है कि यह स्वभाव का माधुर्य किस प्रकार प्राप्त हो सकता है और इस से क्या लाभ हो सकता है।

ऋषि दर्शन

चन्द्रलोकः पृथिवीमनु

यह चन्द्रलोक इस पृथिवि के चारो ओर भ्रमण करता है । पृथिवि तो सूर्य के गिर्द चक्कर लगाती है और यह हमारा चन्द्रमा इस हमारी धरती के चारो तरफ घूमता रहता है। इसकी गति का नियम नियत है।

विद्वांसः क्रान्तदर्शनाः

विद्वान या ज्ञानी वे हैं जो ऊंचे दर्शन वाले होते हैं। जो किसी तत्व के अन्दर पहुंच कर उसकी वास्तविकता को जानते है। साधारण लोग तो केवल बाहर की दृष्टि से ही देखते हैं—पर विद्वान लोग अन्दर के तत्व तक पहुंच जाते है।

वयं सर्वदोपास्महे

हे प्रभु जी ! हम सब सदा आपकी उपासना करने वाले बनें । आपके पास बैठ आपकी भजन भक्ति किया करें । आपके स्थान पर हम और किसी की पूजा भक्ति न किया करें। आपके भक्त बनकर आपकी उपासना किया करें।

सर्वानन्द वर्धकम्

वह भगवान सब प्रकार के सुख आनन्द का बढाने वाला है । उसकी कृपा एवं आशीर्वाद से जीवन के कष्ट दूर होकर सुख की प्राप्ति होती है। परमेश्वर स्वयं सुख रूप तथा आनन्द घन है ! उसी की उपासना से जीवन मे आनन्द के अमृत का पान किया जा सकता।

भा ष्य भू मि का से

सम्पादक— त्रिलोक चन्द शास्त्री

सयम मानव जीवन की उन्नति का अकल्पनीय मूल मत्र है। जीवन में विवेक, वैराग्य, अनुराग, साहस, तेज, पराक्रम, पुरुषार्थ, आत्म ज्योति का प्रकाश पुंज प्राप्त होता है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि महात्माओ, योगियो महर्षियो को तथा भक्त जनो को प्राप्त हो जाती है आत्म शुद्धि आहार शुद्धि तथा जीवन के अंतिम लक्ष का महाबोध प्राप्त हो जाता है। सयम भक्ति का पथ प्रदर्शक है। सयम के द्वारा मनुष्य के जीवन मे अनुपम दिव्य दर्शनीय आभा प्रतिभा का प्रबल प्रतिबिम्ब दृष्टिगत होता है। सुगमता से विजय प्राप्त कर लेता है। सयम से आहार शुद्धि का ज्ञान मनुष्य को हो जाता है। सयम के द्वारा चित्त की वृत्तियां संयमित निरुद्ध हो जाती है। चित्त की चंचलता मिट जाती है। मनुष्य आत्म उन्नति मे मन मन्दिर की शुद्धता मे अष्टाग योग की सिद्धि मे लग कर भव बन्धनो से मुक्त हो जाता है। सयम से मनुष्य के सस्कार उज्वल बनते है, मनुष्य को सकल सिद्धिया प्राप्त हो जाती है। सयम के द्वारा मनोविज्ञान, वेद विज्ञान, आत्मविज्ञान अणु और प्रमाणु विज्ञानो का महा ज्ञाता मनुष्य इस जीवन मे बन जाता है। सयम के द्वारा मनुष्य समाधि अवस्था मे समाहित हो जाता है। समाधि अवस्था की गति प्राप्त हो जाने पर मनुष्य का जीवन कुन्दन समान चमक जाता है। सयमी महा पुरुष के ऊपर परमात्मा की महा कृपा और दया हो जाती है। व्रत के पालन से मनुष्य कर्मयोगी बन जाता है। दुःख, शोक और दरिद्रता का नाशक है। मानव जीवन की उषाकाल का चित्र विचित्र चित्रण है। धर्म के मर्मका बोध मनुष्यको प्राप्त होता है।

सयम विद्यार्थियो को विनम्र बनाता है। ब्रह्मचर्य व्रत के पालन का प्रधान अग और प्रबल प्रसग है। विश्व कल्याण मार्ग का दिव्य दर्शन कराता है, विश्व ज्योति का प्रकाश पुंज प्रबल प्रतिभा है, मगल मूल दुःख शोक, दरिद्रता का नाशक है, राष्ट्र चेतना और आत्म चेतना का दैवी सम्पदा का मूर्ती मान सगल रूप है। सयम मनुष्य की पुण्य पताका है। वसुधा का प्राण रत्न धन जीवन सर्वस्व सुख सार है। मानव जीवन की अनुपम अलौकिक शोभा है। वैदिक सस्कृति की धन्य धरोहर है। सयम की महिमा अगम्य अपार और अकथनीय है।

धार्मिक चर्चा—

संयम और जीवन

वेदपथिक श्री धर्मवीर जी आर्य झंडाधारी नई दिल्ली—५

प्रिय पाठक वृन्द! आप यदि अपना और विश्व के मानव समाज का तथा भावी सन्तानों का कल्याण चाहते हो तो सयम के महत्व को जान कर अपना जीवन संयम के साचे में ढाल कर जीवन को सुखी बनाओ।

आज हमारे दुःखो और अशान्त जीवन का मूल कारण यह है कि हम अपने शुद्ध स्वरूप को, परमात्मा को, अन्तर आत्मा को, धर्म की और मोक्ष की सिद्धि को भूल कर सयम को त्याग कर दिन रात प्रतिक्षण विषय-वासनाओ मे इन्द्रीय भोगो मे पशुओ के समान पड गये है।

यह याद रखो जो समय बीत रहा है वह अरबो और खरबों रुपयो से अधिक मूल्यवान है अतः जीवन के एक क्षण को भी व्यर्थ की बातो मे मत गंवाओ। अपने जीवन को संयम और सदाचार के सांचे में ढाल कर अक्षय सुखो को प्राप्त करो। सयम के द्वारा परमात्मा की सत्ता की महत्ता का दिव्य दर्शन करो। आस्तिक बनो।

यह ध्यान रहे सयम व्रत के द्वारा ही परमात्मा की प्राप्ति होती है। जीवन की इस सुरम्य वाटिका मे अमृत फल लाने के लिये यह परम आवश्यक है कि हम संयमी बने। संयम मे ही सुख अपार है। आज विश्व के नर नारियो को यदि सयम का बोध हो जाये तो आज करोड़ो और अरबो रुपयो का विपुल धन सतति निरोध पर लगाने की कोई आवश्यकता न रह जाये। सयम मे वह एक अपार स्थाई सुख शान्ति की अनुपम अनुभूति होती है।

विषय भोगो में क्षणिक सुख प्राप्त होता है।

आओ सयम के द्वारा हम जीवन में अमृत रस का पान करे। आज सयम के महत्व को समझ कर हम अपना जीवन सयम के साचे में ढाल कर इस सुर दुर्लभ मानव जीवन को सफल बना लें। संयम मे वह सुख शान्ति प्राप्त होती है जिस सुख आनन्द और शान्ति के लिए चक्रवर्ती सम्राट भी तरसते रहते हैं।

आशावादी बनो, प्रति क्षण सयम महाव्रत का ध्यान रखो। पथिक बनो यह वेद भगवान का और महर्षियो का विश्व के मानव समाज के नाम आज अनुपम आदेश है अमृत मय उपदेश है। विश्व की महा क्रान्तियो को यदि सदा के लिये समाप्त करना चाहते हो तो अपना जीवन सयमित बनाओ विश्व कल्याण महा यज्ञ की सफलता में लग जाओ। विश्व की मानवता की रक्षा करो, वसुधा को अपना निज कुटुम्ब मान कर अपना जीवन यज्ञमय बनाकर लोक उपकार मे भव्य भावनाओं के प्रकार में, आत्म चिन्तन मे संयम सदाचार, विवेक मे आहार शुद्धि मे लग जाओ। अपना जीवन सयमित बना कर पूर्व जन्मो की विद्याओं के रत्न कोष को भी प्राप्त करो।

सयम विश्व की रत्न मणियो का भव्य-भूषण है। बनावट और फैशन-परस्ती का त्याग करो सादगी को अपनाओ। जीवन को सादा और पवित्र सयमित, अनुराग युक्त बनाओ।

पापों और बुराईयों का परित्याग करो

आज देश में भुखमरी, गरीबी, दरिद्रता का नग्न रूप दृष्टिगत हो रहा है ऐसी दयनीय दशा को देखकर योगी की समाधि टूट जाती है। आज इस देश मे अरबो रुपये बुराईयो के और पापो के प्रबल प्रचार में यह काग्रेस सरकार पानी की तरह बहा रही है। आज जब देश महंगाई की चक्कि में पिस रहा है इस नाजुक परिस्थिति में नग्न फिल्मो का अन्धा-धुन्ध निर्माण और प्रबल प्रचार हो रहा है जिस के कारण आज देश के चरित्र बल का दिवाला निकल चुका है।

मद्यपान को छोड़ो

संयम का सहारा लेकर गांजा, भंग, शराब, अफीम, चरस चण्डू बीड़ी तम्बाकू आदि समस्त दुर्व्यसनों से अपने आप बचो और अपनी सन्तानों को बचाओ। अपनी खून पसीने की कमाई को अपनी शिक्षा, विद्या पर खर्च करो। घर घर में यज्ञ रचाओ अपना जीवन यज्ञमय बनाओ।

मद्यपान को त्याग कर दूध दही, मलाई मक्खन का पान करो। वीर बनो, धर्मवीर बनो।

भूतल के और छोर में दसों दिशाओं में वैदिक विचारों की महा क्रान्ति मचा दो। आज यज्ञ वेदी पर परमात्मा को अपनी अन्तर आत्मा में देखकर परमात्मा के दिव्य गुणों और आदेशों को धारण करो। अण्डे, मांस, शराब आदि समस्त बुराईयों और पाप से बचने का तथा देश को समृद्ध बनाने का आज व्रत धारण करो।

भारत वर्ष देश को विश्व का गुरु बनादो। वैदिक युग का वैदिक साम्राज्य का निर्माण करो। यह वेद भगवान का, उपनिषदों का, शास्त्रों का, गीता, रामायण और महाभारत का विश्व के मानव समाज के नाम आज अनुपम दिव्य हिय हर्षक संदेश है।

सयम व्रत को धारण करो यह धर्म वीर का उपदेश रत्न मात्र है।



महर्षि दयानन्द के निर्वाणोत्सव की तैयारी प्रारम्भ

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्वावधान में पूर्व वर्षों की भांति दिल्ली की १५० आर्यसमाजो तथा अनेक आर्य संस्थाओ की ओर से दीपावली के शुभ अवसर पर शुक्रवार ११ नवम्बर १९६६ को रामलीला मैदान में प्रातः ८ से १० बजे तक ऋषि निर्वाणोत्सव बडे समारोह से मनाया जायेगा आर्य केन्द्रीय सभा मन्त्री श्री रामनाथ सहगल ने प्रत्येक आर्यसमाज से प्रार्थना की है कि वह इस उत्सव को सफल बनाने के लिये अपने अपने क्षेत्र मे इस का प्रचार अभी से आरम्भ कर दें।

आर्यसमाज विक्रमपुरा जालन्धर

१६ १०-६६ रविवार को दैनिक कार्यवाई के पश्चात् श्री भीमसिंह जी पुरोहित आर्यसमाज किला मुहल्ला का सार गर्भित व्याख्यान होगा। सभी धर्म प्रेमी नर-नारी समय पर पधार कर लाभ उठाएं।

दैनिक सत्संग प्रातः सवा छः बजे से सवा सात बजे तक प्रतिदिन समाज मन्दिर में सम्पन्न होता है जिसमें दैनिक कार्यवाई के पश्चात एक मन्त्र की मधुर व्याख्या पुरोहित जी करते हैं। इस दैनिक सत्संग में सब स्त्री पुरुष पधार कर सत्संग की शोभा बढ़ाए। —मन्त्री, आर्य समाज

सम्पादकीय—

आर्यजगत्

वर्ष २६] रविवार ०२३, १६ अक्तूबर १९६६ [अंक ४२

छात्रों की यह गड़बड़

युवक राष्ट्र के विशाल शरीर के लिए मेरुदण्ड का काम देते हैं। यही कल के देश के नेता होते हैं। इनमें उल्लास, उत्साह, और भरपूर जोश होता है। नदी के प्रखर प्रवाह के समान युवकों का जीवन भी समाज में सदा गतिमय हुआ करता है। यदि यह वर्ग अनुशासन मे रहकर सगठित अवस्था के पथ पर चलता रहे तो किसी भी राष्ट्र का कल्याण हो जाता है। इसके विपरीत यदि युवक वर्ग की मर्यादा इधर-उधर होने लगे तो वही प्रवाह बनकर अपनी शक्ति को बिखेर कर रख देता है। युवकों की शक्ति पर सारे समाज को मान होता है। भारत मे इस वर्ग के प्रति पूरा-पूरा ध्यान दिया जाता था। इसकी शिक्षा-दीक्षा में ही राष्ट्रिय सेवा की भावना इस वर्ग के विचारो मे आचार्य कुल की ओर से भर दी जाती थी। यही, कारण था कि पुरातन सस्थाओ, गुरुकुलो तथा आश्रमो के आदर्श वातावरण में निवास करने वाला प्रत्येक युवक राष्ट्र की दिव्य थाती का काम देता था। वीर युवक राजकुमार राम जैसे आदर्श नेता, गोपाल कृष्ण जैसे पवित्र चरित्र के देवता, व्यास के शिष्य जैमिनी एव चाणक्य आदि महान राजनीति के कर्णधार इसी आचार्य-कुल की पुनीत परम्परा की अनुपम देन हैं। अभी इस युग में स्वामी दयानन्द सरीखे देवता भी तो गुरुकुल की विभूतियां है। आर्यसमाज के महात्मा हंसराज तथा स्वामी श्रद्धानंद के नेतृत्व में खोले गए विशाल आदर्श संस्थानों से निकले हुए कितने ही दिव्य युवक आज राष्ट्र के भिन्न-भिन्न स्थानो व कार्यक्षेत्रों में कितना सुन्दर काम कर रहे हैं। युवकवर्ग राष्ट्र के काम को आगे ही आगे ले जाने मे सदा सतर्क होता है। किन्तु अब वह पुरानी अवस्था तथा भावना समाप्त होती जा रही है। प्राय: विरलों २ को छोड़ कर न तो आचार्य ही उस युगमार्ग के गुरु हैं उनका जीवन, निवास का राजसी ठाठ बाट भारतीयता के रंग के सर्वथा विपरीत है उनका जीवन सम्पर्क अपने छात्रों से न होने के समान है और न ही छात्रों में अपने गुरुओं के प्रति सम्मान की भावना काम करती है। आचार का निर्माण करने वालों को शास्त्र ने आचार्य की पदवी दी है और उनकी जीवन सारणी पर चलने वालो को शिष्य माना गया है। आज की शिक्षा दीक्षा ही ऐसी है कि परस्पर का गुरु शिष्य का पवित्र सम्बन्ध समाप्त हो चुका है। अब तो प्रिंसिपल स्टूडेंट का रिश्ता है। इस समय के गुरु प्रिंसिपल कहलाना पसन्द करते है और युवक छात्र बनना नही चाहते। इस प्रकार जीवन निर्माण का सारा ताना बाना ही बिगड गया है। जहा कही अभी तक यह परस्पर का गुरु शिष्य का सम्बन्ध है, वहा अब भी जीवन की भावना मौजूद है। वहा पर इस समय भी सम्मान होता है। जीवन से जीवन बनता है, अग्नि से अग्नि जलती है, दीपक से दीपक चमकता है। इस के अनुसार युवकवर्ग के जीवन में अपने आचार्यों के जीवन से तथा पवित्र शिक्षा दीक्षा से निर्माण की सुगन्धि पैदा हुआ करती है।

भारत मे विदेशी सत्ता ने और बातो के साथ २ यहा की शिक्षा दीक्षा का सारा वातावरण भी बदलकर अपना पश्चिमी वातावरण ला खडा किया। पुरानी परम्परा को समाप्त कर दिया। उसका प्रभाव तो निश्चित रूप से होना ही था। वह होकर रहा। गुरु शिष्य का प्यारा सम्बन्ध समाप्त होकर Teacher and Taught का पश्चिमी रिश्ता कायम हो गया। स्वाधीनता के बाद भी न तो शिक्षा-दीक्षा की परिपाटी बदली और न वह वातावरण ही गया। आगे से भी अधिक होता गया। इतने वर्षों के बाद भी आज वही खेल-खेला जा रहा है। इसका दुष्परिणाम भी सारे राष्ट्र के सामने है। वैसे तो कई बार भारतीय जीवन में इस छात्रवर्ग ने अपनी बात को मनवाने के लिए अनेक आदोलन किये। संस्थाओं, विश्वविद्यालयो मे हड़तालें की गई। अलीगढ का विश्वविद्यालय हो या हिन्दु विश्वविद्यालय काशी हो—कई स्थानो में गड़बड हुई। समय-समय पर वे आदोलन दबते चले गये। सरकार ने समझा कि चलो काम ठीक हो गया। मूल की बीमारी को जानने व उसका इलाज करने की ओर किसी का भी ध्यान न गया। उसका नतीजा आज सारे नेताओ के सामने है। इस समय समाचार पत्र छात्रों के आंदोलनों से पैदा होने वाली गडबड़ से भरे होते हैं। बसे व जीपे जलाई जाती हैं, सस्थाओ को हानि पहुचाई जाती है तथा सरकारी सम्पत्ति का भी ध्यान नही किया जाता। पत्थराव होता है, विश्व विद्यालय बन्द किये जा रहे हैं। अश्रुगैस, लाठी-चार्ज तथा कही-कही पर गोली भी चला कर शांति स्थापित करनेका प्रयत्न किया जा रहा है। राष्ट्र के नेता छात्रो की मागो पर विचार करने के लिए समिति को सगठित कर के उन से शान्त रहने की बात कहने में लगे हैं छात्रो की वर्तमान गडबड से सारा देश चिन्तित है। बाहर के देश भारत के बारे मे क्या सोचते व कहते होगे? यह अनुमान लगाया जा सकता है। छात्रो का जोश मर्यादा से बाहर चला गया है। इसने अपने कगारो को बुरी तरह से तोड कर रख दिया है। विषम समस्या है।

इसे शान्त करने का उपाय क्या है? नेताओ का हर काम व हर समस्या के समाधान के लिए दृष्टिकोण पश्चिमी है। उसी ऐनक से देखते तथा उसी मन से विचारते है। पत्तों को पानी देने का प्रयत्न करते हैं। तभी न कुछ बना है और न कुछ बनेगा ही। ये सारे युवक अपने ही देश के, परिवारो के है। इन को मर्यादा मे रखना परमावश्यक है। भूल तो मूल मे है। आज की हमारी शिक्षामे, पाठ्यक्रम मे आकाश-पाताल की बातों का तो समावेश है, समुद्रपार की विदेशी भाषा की भी उसी प्रकार से अनिवार्यता मौजूद है, परन्तु जीवन निर्माण करने के लिए धर्म को कोई स्थान नहीं दिया गया। निरा भौतिकवाद, शरीरवाद का प्रपच है, आचार लो लेशमात्र भी स्थान नही। गुरु शिष्य का पुरातन भाव नही भरा जाता—तो भला इलाज कैसे हो सके? भारत सरकार की अर्बों खर्बों की योजना मे आचार व जीवन योजना के लिए एक पैसा भी नहीं है। फिर काम कैसे बने? मूल का उपाय करो।

—त्रिलोक चन्द्र

कथनी और करनी

अभी-अभी भारत की राजधानी देहली मे सस्कृत सम्मेलन की स्वर्ण-जयन्ती का समारोह धूमधाम मे मनाया गया। उसका उद्घाटन राष्ट्रपति जी ने बडे सुन्दर शब्दो को बोलकर किया। प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने अपना सस्कृत के प्रति सम्मान व्यक्त करने का सदेश भेजा। और भी सज्जनों ने अपने - अपने विचार व्यक्त किए। यह हर समारोह की एक परम्परा-सी बन गई है। इस मे भारत के सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व चीफ जस्टिस श्री गजेन्द्रकर जी ने भी अपना सन्देश देते हुए बिना लाग-लपेट के स्पष्ट शब्दों मे कहा कि सस्कृत भारतीय संस्कृति का जीवन है। हमारी सस्कृति इसी मे है। किन्तु खेद है कि हमारी सरकार ने सस्कृत के लिए जो करना चाहिए था, वह अभी तक नही किया। उस से उपेक्षा ही वर्ती है। श्री गजेन्द्रकर जी ने सारे सस्कृत प्रेमियों की मन की बात कही है। वास्तव मे भारत सरकार की कथनी व करनी मे भारी अन्तर है। तथ्य यह है कि आजाद भारत मे सस्कृत व सस्कृत वालो को बुरी तरह से मारा जाता है! पग-पग पर उनका तिरस्कार किया जाता है। पजाब में तो सस्कृत को स्कूलो व कालेजो से कान पकड कर अपमान-पूर्वक धकेला जाता है रणधीर सरकारी कालेज कपूरथला की सस्कृत छात्रों को मिलने वाली सौ वर्षोंसे चली आ रही ग्रांट तक बद की जा रही है। विश्व-विद्यालय की समितियो मे अगरेजी के परम प्यारे ये लोग इगलिश के लिए तो कितना सोचते, उन्नति के लिए कितनी राशि पारित करते स्कूलो, कालेजो के पाठ्यक्रमों मे और बहुत कुछ करते है—पर सस्कृत के प्रश्न पर उसे मारने में सारे एक बन जाते हैं। आज इस प्रकाश युग मे भी सस्कृत के शास्त्रियो को निर्वाचन मे मत देने का अधिकार तक भी नही दिया जाता। सस्कृत को स्कूलो मे अपमानित किया जाता है। इसकी ओर किसी का भी ध्यान नही है। देहली के उसी समारोह मे बोलते हुए एक जापानी प्रोफैसर ने सस्कृत मे भाषण दिया। किन्तु हमारे नेता अगरेजी मे सन्देश देते है। जब तक कथनी व करनी एक एक नहीं होती, तब तक काम नही बन सकता।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

व्यक्ति को अपने चरित्र और व्यवहार-दर्शन का पोषण करने के लिये समूह मे रहना अत्यावश्यक होता है। अपनी शारीरिक सुरक्षा के लिए भी व्यक्ति यूथ बना कर चलने की आदत पसन्द करता है। अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिए भी जिज्ञासु को ऐसे समूह या संस्था की खोज रहती है जो उसे विधिवत आध्यात्मिक उपादानो की उपलब्धि करा सके। अतः व्यष्टि के लिये यह विवश है कि वह अपने व्यक्तित्व का उत्सर्ग समष्टि के व्यक्तित्व को बनाने के हेतु कर दे। इस प्रकार विभिन्न व्यष्टि-स्रोतो से प्रवाहित गुण दया, क्षमा, पारस्परिक सहयोग, शौर्य, शील, सत्य, अस्तेय व त्याग एक समष्टि के व्यक्तित्व को सुघड प्रारूप प्रदान करते है। इन गुणों द्वारा अर्जित समष्टि की सम्पन्नता का मूल्याकन या तो समूह विशेष के विचारशील व्यक्तियो द्वारा अथवा अन्य देशो के व्यक्तियो द्वारा किया जाता है। आदिम काल मे इन गुणो की परिभाषा व विवेचन मे चाहे क्षण-भगुर (Ephemeral) अन्तर रहा हो, लेकिन इनका आध्यात्मिक दर्शन अपरिवर्तित ही रहा है। व्यष्टि प्रसूत व प्रदत्त इन समष्टि गुणो की अक्षुण्णता के लिये मानव समाज को अनेक ऊहापोहो का सामना करना पड़ा है, लेकिन फिर भी व्यक्ति की इन गुणो के प्रति आस्था मे कोई विघटन नही हुआ है। क्षुधा निवारण अथवा अन्य प्राकृतिक या पैशाचिक कामनाओ की तृप्ति के लिये व्यक्ति ने भले ही इन गुणो की बलि दी हो, किन्तु अपने कारनामो की पुनरावृत्ति न करने की भी उसने कई बार शपथ ली है। चू कि व्यक्ति को इन गुणो का सिचन समाज मे रह कर ही करना पडता है, इसलिये कभी कभी समूह विशेष मे अपना स्थायित्व बनाने के लिये उसे इन गुणो मे कुछ 'एडजस्टमेण्ट' भी करने होते हैं। लेकिन ये एडजस्टमैंट निश्चित रूप से कुत्सित नही हो सकते—इन से समष्टि के हितो का हनन नही होना चाहिये।

इसलिये यदि समष्ठि की सुरक्षा या प्राणरक्षा के लिये हिंसा या असत्य का सहारा लेना पडता है तो यह निन्दनीय नहीं है—क्योकि हमारा लक्ष्य समूह की श्री वृद्धि करना ही है। हमारे राष्ट्रीय चरित्र का प्रारूप व्यक्ति की समूह के प्रति इसी प्रकार की सद्भावनाओं और सदाचार से निश्चित होता है।

राष्ट्र किधर जा रहा है ?

(श्री सुन्दरलाल जी बोहरा जोधपुर)

पर इस प्रकार की प्रवृत्ति तभी पनप सकती है जबकि शासनतन्त्र व कल्याणकारी संस्थाएं उन्ही व्यक्तियो द्वारा संचालित हो जिनके लिये उनका निर्माण हुआ है। यही कारण है कि एक स्वतन्त्र एवम् जनतान्त्रिक राष्ट्र अपनी चारित्रिक सम्पत्ति के लिये जितना जागरूक और बलिदान की भावना से ओतप्रोत रहता है उतना एक गुलाम राष्ट्र कदापि नही रह सकता। चू कि विदेशी सत्ता द्वारा सचालित एक देश मे व्यक्ति को उसके व्यक्तित्व - निर्माण के लिये उपलब्ध सभी स्रोतो से रहित करने की राज्य-स्तर पर कुचेष्टा की जाती है, इसलिये आदतन व्यक्ति 'अन्धा बाटे रेवडी फिर फिर अपने को देय' वाली कुण्ठा से ग्रस्त हो जाता है। वह अपने हितो और समष्टि के हितो के मध्य एक गहन अन्तराल का अनुभव करता है। फल-स्वरूप अपने स्वातन्त्र्य काल मे अर्जित उसके गुण कलुषित हो जाते है, और इस प्रकार उस समष्टि का चक्रवृद्धि रूप से (Cumulatively) चारित्रिक पतन होने लगता है। यह पतन इतना सघातिक (fatal) होता है कि यदि उस राष्ट्र को पुनः स्वतन्त्रता भी प्राप्त हो जाए तो उसे अपनी दासता से पूर्व का चारित्रिक दर्शन समझने के लिये ही पीढ़ियां लग जाती हैं। आज हमें भी ऐसा ही अनुभव हो रहा है। अपने खोए व्यक्तित्व को पाने के लिए न जाने आज हमे कितने साहित्यिक व सास्थानिक प्रयत्न करने पड़ रहे हैं फिर भी 'पुनर्मूषको भवः' का नाटक अपूर्ण है।

चू कि ब्रिटिश काल में हमें किसी भी प्रकार का दायित्व-वैयक्तिक अथवा सांस्थानिक-निभाने का अवसर ही नही प्रदान किया जाता था, इसलिए हमारा सोचने व समझने का क्षेत्र ही संकुचित हो गया। 'कम्पनी की कुण्ठा' के हम पूरे शिकार हो गए। हम अपनी हर क्रिया व अनुभव को अर्थ के सन्दर्भ में देखने लगे। यों शनैः शनैः हमारा चरित्र आध्यात्मिक के स्थान पर आर्थिक बन गया। हमारी स्थिति उस घोड़े जैसी हो गई जिसको कुछ दूरी पर हरा घास (चारित्रिक विकास उपादान) दिखाई देता था, लेकिन उसके पास चरने की मशीनों द्वारा सुखाया हुआ घास ही पड़ा था। इसलिए जब घोड़े को स्वतन्त्र किया गया तब भी वह हरा घास चरने को राजी न हुआ। हम भी आज उसी 'दो पैसे की कमाई' की कुण्ठा से बंधे हुए है। हमारे सांस-सांस मे 'हाय, माई अन्न थोडा' की रट लगी हुई है। हम अपनी आध्यात्मिक धरोहर का उपयोग भी आज अर्थार्जन करने मे नही चूकते। इस सन्दर्भ में एक दृष्टान्त प्रासंगिक होगा। एक व्यापारी को मृत्योपरान्त यमराज के पास लाया गया। चू कि उसके पाप व पुण्य बराबर थे, इसलिए यमराज ने स्वर्ग-नरक का निर्णय उसकी इच्छा पर ही छोड दिया। लेकिन अपने सस्कार-दोष के कारण व्यापारी ने कहा कि उसे जिधर भी 'दो पैसे' का लाभ हो जाय उसे उधर ही भेज दिया जाए—स्वर्ग-नरक उसकी दृष्टि में कोई महत्व नही रखते!

आज कल हमारा राज्य कौन-सा रास्ता अपना रहा है इसकी सच्ची तस्वीर देखनी हो तो ऊपर के लेख को पढ़िए और फिर सोचिए कि आप के और लेखक के विचारों में समन्वय है या विभिन्नता।—व्यवस्थापक

क्या आज हम उस व्यापारी से कम है? नही, कदापि नही। **ईमान एक वहम है, धर्म एक धोखा है, सत्य एक सूना कुआं है, जीवन में जो कुछ है वह धन है, लक्ष्मी है। आज तो बस, यया कया च विधया वित्तम् बहु कुर्वीत' ही हमारा जीवन मन्त्र (Motto) बन गया है।** हम माग और पूर्ति के मोहरे बन गये हैं। वस्तुओ का संग्रह और काला बाजार, ये ही व्यापारियों के भूषण रह गये हैं। चाहे वे स्वतन्त्र व्यापारी हों चाहे सहकारी समितियां, कुत्सित एवम् राष्ट्रघाती प्रवृत्तियों को समान रूप से पनपाते व पूजते है। वस्तुओं के भाव बढ़ रहे है, लेकिन व्यापारियों की परिग्रह-वृत्ति में कोई कमी नहीं प्रतीत होती। **"ऐसा राज कब कब आता है, जितना अर्जित करना हो कर लो" यही हमारे व्यापारी समुदाय का जीवन-दर्शन है। उन्हें रोकने वाला कौन? 'वस्तुओं में मिलावट करो, वस्तुएं महगे बेचो, जीवन की सफलता इसी में है। व्यापार में शील व सदाचार की कोई कीमत नहीं है।'**

सच भी है व्यापारियों का ईमान और धर्म तो अर्थ ही होता है। वे किसी सिद्धांत विशेष से चिपके हुए नही होते। वे उसी ईश्वर और धर्म को मानते हैं जो उन्हें 'कमाई' में सहयोग दे। उनका जीवन ही तराजू में बसता है, और तराजू को दिन मे असख्य बार 'एडजस्ट' करना पड़ता है। यही कारण है कि उन के लिये 'एगमार्क' और 'क्वालिटि कण्ट्रोल' का उतना ही महत्व है जितना एक हुक्का पीने वाले के लिये बीडी का महत्व!

लेकिन यह सब व्यापारियो का दोष नही उन का भाग्य सरकार के आधीन है, और सरकार का भाग्य है उस के कर्मचारियो के आधीन। ज्यों ज्यों सरकार करों मे वृद्धि करती है त्यों त्यों व्यापारियो को धनार्जन की कुत्सित विधियो का सहारा लेना पडता है।

व्यापारियो का तो साफ नारा है: 'हम ब्रिटिश काल में भी इतने टैक्स नही देते थे तो अब हम हमारे ही राज में क्यो दे?' और आज टैक्स की बचत करने के लिए रातो-रात बहियां बदल दी जाती हैं। आखिर दूसरा कोई उपाय भी तो नहीं है। सरकार की टैक्स वसूल करने की नीति ही दोषपूर्ण है। बेचारे सरकारी अधिकारी भी तो बाल-बच्चे वाले हैं।

'सरकारी पद पाकर भी यदि हम लोगों में मिशन की भावना जीवित रही तब हम खाक सरकारी अधिकारी कहलाये। पानी की तरह रुपया बहा कर, कितनी प्रतियोगी परीक्षाएं पास कर **इन्द्रासन** प्राप्त किया, फिर भी हम फकीरी का जीवन बिताएं। लानत है हमारी पढ़ाई पर!!' यह है स्वतन्त्र भारत के सरकारी अधिकारियों का सही जीवन-दर्शन।

(क्रमशः)

शिवाजी के यज्ञोपवीत की करुण कहानी
ऐतिहासिक रंगमंच के लिए नवीन खोज
रोचक एव पठनीय

(ले० श्री देशबन्धु जी शास्त्री महोपदेशक, हैदराबाद)

शिवा जी महाराज को छत्रपति बनाने में उनकी वीर माता जीजाबाई का प्रमुख हाथ था। माता जैसा चाहे अपने पुत्र को बना सकती है अतः जीजा बाई एक आदर्श माता थी। औरंगज़ेब के अत्याचारो का विनाश करने के लिये वीर माता ने वीर पुत्र शिवा जी को पैदा किया। शिवा जी की प्रतिभा सर्वतोमुखी थी, राजकाज में, प्रजा पालन में, सैन्य-संचालन और संगठन में तथा शत्रुओं के दमन करने में उन्होने अपनी अलौकिक प्रतिभा का परिचय दिया था। परन्तु भारत में धर्माचारो की एक श्रेणी थी जिसने अपने स्वार्थवश जनता को धर्मान्ध विवेक-रहित और मतिमन्द बना रखा था। जातपात छूत-छात और खान पान के भेद-भाव की दीवारे खडी की हुई थी। उसी समय मे आर्य जाति अन्याय और अत्याचार की चक्की मे पिस रही थी। तुर्किस्तानी भेडिये अनाथ और निर्दोष हिन्दुओ का रक्त बहा रहे थे। लाखों स्त्रिया अपना पतिव्रत धर्म बचाने के लिये अग्नि देवता की शरण ले रही थी। हजारो गो-माताओ का गला सूर्योदय होने से पूर्व ही काट दिया जाता था। सैकडो चोटिया और यज्ञोपवीत प्रतिदिन उतार दिये जाते थे। इस समय मे शिवाजी को राज्याभिषेक का अधिकार नही है, इस प्रकार महाराष्ट्रीय ब्राह्मणो ने घोषणा की थी। शिवाजी ने अपने आध्यात्मिक पथ-प्रदर्शक श्री समर्थ गुरु रामदास स्वामी के निकट अपने एक विश्वस्त राज कर्मचारी को राज्याभिषेक के विषय मे परामर्श करने के लिये भेजा था। श्री समर्थ गुरु रामदास जी श्री शिवाजी के इस प्रस्ताव से पूर्ण सहमत थे। इस प्रकार अपने पूज्य गुरु के परामर्श से ही उन्होने अपने हिन्दु समाज के मुख्य स्तम्भ ब्राह्मणो को अपने वीर सेनानायकों तथा मन्त्रियो को भी निमन्त्रत किया था। इस सभा में इस विषय पर कई दिनो तक तर्क वितर्क होता रहा कि श्री शिवाजी को राज्याभिषेक का अधिकार है या नही। अन्त मे सभा मे सर्वसम्मति से यह निश्चय हुआ कि शिवाजी का राज्याभिषेक होना चाहिये। इस के पश्चात ब्राह्मणों ने दूसरा प्रश्न यह उपस्थित किया कि राज्याभिषेक की क्रिया किस प्रकार करनी चाहिये ? क्योंकि श्री शिवाजी की अवस्था भी इस समय ४६ वर्ष की हो गयी है। उनका विवाह भी हो चुका है। उनके कई लड़के लडकियां भी हैं। अतएव इस प्रकार एक विकट समस्या सभा मे उपस्थित हो गई। तब प्राइवेट सेक्रेटरी बाला जी आबाजी राव चिटनीस ने उन्हे यह परामर्श दिया कि स्थानीय (महाराष्ट्रीय) ब्राह्मणो की सम्मति पर निर्भर न रहकर, भारत के दूसरे प्रातों के विद्वानो से भी परामर्श करना चाहिए।

"उन दिनो में काशी के गागाभट्ट नामक एक ब्राह्मण, विश्वेश्वर नामक स्थान मे रहते थे। चारो वेदों में उनकी अच्छी गति थी, दर्शन के भी पण्डित थे। व अपनी विद्वत्ता के कारण विख्यात थे। धर्म सम्बन्धी विवादग्रस्त विषयो मे वे जो कुछ व्यवस्था देते थे वह सबको मान्य होती थी। उनकी सम्मति और व्यवस्था के सामने सब लोग सिर झुकाते थे' (N. S. takaha M. A. कृत शिवाजीका चरित्र पृष्ठ ३५०० पर से) उन दिनो गागाभट्ट काशी से स्वस्थान पैठन नगर (दक्षिण) मे आए थे तब श्री बाला जी आबा जी राव ने श्री शिवाजी से कहा कि श्री गागाभट्ट के साथ हो पैठन नगर के अन्य पण्डितों को भी समस्या हल करने को बुलाना चाहिए। श्री शिवाजी, श्री बाला जी आवाजी राव के इस प्रस्ताव से सहमत हुए। उन्होने श्री गागाभट्ट जी को बुलाने के लिए अपने मन्त्री श्री बाला जी आबाजी राव को श्री केशव पडित, श्री भालचन्द्र राव पुरोहित और सोमनाथ राव कात्रेय को भेजा। पालकी और घोड़ो की सवारी का अच्छा प्रबन्ध कर दिया उनके खर्च के लिए दस हजार रुपए भी मजूर करके दिये गये थे।

श्री बाला जी राव अपने साथियो सहित पैठन पहुंचे और श्री गागाभट्ट से शिवाजी के यज्ञोपवीत और राज्याभिषेक के विषय मे परामर्श किया था। श्री गागाभट्ट की सम्मति से पैठन के पंडितो की एक सभा श्री शिवाजी के यज्ञोपवीत और राज्याभिषेक के विषय में विचार करने केलिए हुई वह सभा एक मास होती रही। श्री गागाभट्ट तथा पण्डितो ने यह आपत्ति उठाई कि शिवाजी क्षत्रिय नहीं हैं, शूद्र (मराठा) हैं इसलिए यज्ञोपवीत और पुराने समय मे अयोध्या और हस्तिनापुर में जिस प्रकार से राजतिलक होते थे, उस प्रकार से श्री शिवाजी का नही हो सकता है। इस पर बाला जी राव ने श्री गागाभट्ट को शिवाजी का वश वृक्ष दिखलाया, तब उन्होने मराठों का क्षत्रिय होना स्वीकार किया और श्री बाला जी राव के प्रार्थना करने पर श्री गागाभट्ट पैठन नगर के पण्डितो के साथ श्री शिवाजी की राजधानी (रायगढ) मे गये श्री शिवाजी ने मार्ग मे सतारा पहुच कर उनका बडी धूमधाम से स्वागत किया, उस समय स्वागत के लिए पाच हजार रुपये व्यय किए गये थे।

रायगढ मे श्री गागाभट्ट के पहुचने पर शिवा जी ने पुन: एक सभा का आयोजन किया, जिस में उन्होने महाराष्ट्रीय पण्डित, मन्त्री तथा प्रसिद्ध नागरिको को निमन्त्रित किया। इस सभा मे श्री शिवाजी गागाभट्ट तथा नगर और अन्य पण्डितो का परिचय कराया और पुनः यज्ञोपवीत सस्कार का प्रश्न पण्डितो के सामने उपस्थित किया। विशेषवाद-विवाद के अनन्तर श्री गागाभट्ट ने लिखी हुई अपनी यह सम्मति प्रकट की, "मराठा क्षत्रिय हैं सीसो दिया वश के है। नर्मदा नदी के इस पार होने से मराठा कहलाये है परन्तु इन मे अभी क्षात्र रक्त का ह्रास नहीं हुआ है, जैसे राज वशो मे राज्याभिषेक के पूर्व उपनयन सस्कार होता है। वैसे ही श्री शिवाजी का होना चाहिये। इस मे सन्देह नही कि इतनी बडी अवस्था मे श्री शिवाजी का उपनयन सस्कार धर्मशास्त्र के विरुद्ध है क्योकि उनका विवाह हो चुका है और सन्ताने भी हैं परन्तु विशेष परिस्थिति के कारण उन का उपनयन सस्कार हो सकता है। इस मे कुछ आपत्ति की बात नही है।" (श्री शिवाजी का चरित्र पृष्ठ ५१३ पर से, श्री नन्दकुमार कृत) एव अन्य इतिहासो मे भी मराठो को क्षत्रिय सिद्ध किया है कि महाभारत के युद्ध मे महारथी नामक बहुत बडा योद्धा था उसके नाम से ही इस जाति का नामकरण हुआ है महारथी का ही बिगड़ा हुआ रूप—महारथी, महाराठी, महराठी, मराठी हुआ एवं इन्हीं लोगों में यादव, भी लोग हैं। अत मराठी लोग क्षत्रिय है। महाराष्ट्र के ब्राह्मणो ने गागाभट्ट को उपर्युक्त व्यवस्था को स्वीकार नही किया और कहने लगे कि शूद्रो (मराठों) को यज्ञोपवीत धारण करने का शास्त्रों मे विधान नही है। इस प्रकार का प्रचार करना आरम्भ किया और गागाभट्ट को जाति बहिष्कार का भय दिखाना शुरू कर दिया तब गागाभट्ट ने श्री शिवा जी को सस्कार द्वारा शुद्ध करने का निर्णय किया। श्री गागाभट्ट की उपर्युक्त व्यवस्था को कुछ पण्डितो ने स्वीकार कर लिया।

श्री शिवा जी को इस निर्णय पर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। इसके पश्चात् यज्ञोपवीत सस्कार के लिए श्री शिवा जी ने पवित्र नदियो—जैसे गगा, गोदावरी, यमुना और नदी समुद्रो का पानी, शुभ चिह्न स्वरूप मे घोडो को मृग चर्मों, सोने, चादी के बर्तनो और अनेक कलशों को मगवाया और सर्वविधि साकल्य एकत्रित करने को १,०५,७५,००० रुपये व्यय करके पण्डितो से निवेदन किया कि वे यज्ञोपवीत के लिए शुभ तिथि का निश्चय करे। इस आज्ञानुसार पण्डितो ने ज्येष्ठ शुक्ल ४ तदनुसार २७ मई १६७४ ई० को दिन नियत किया। मुहूर्त का निश्चय होने पर शिवा जी ने महाराष्ट्र तथा अन्य प्रान्तो के समस्त स्वतन्त्र राजाओ, सरदारो को यज्ञोपवीत के निमित्त निमन्त्रण पत्र भेजे। इसके अतिरिक्त श्री गागाभट्ट की इस व्यवस्था के प्राप्त होने पर श्री शिवा जी ने भारत वर्ष के समस्त तीर्थों के ब्राह्मणो का यज्ञोपवीत के सस्कार मे उपस्थित होने के लिये निमन्त्रण पत्र भेजे। उनका निमन्त्रण प्राप्त होने पर लगभग ग्यारह हजार ब्राह्मण अपने बाल बच्चो और स्त्रियो सहित इस शुभ उत्सव मे सम्मिलित होने के लिये पहुचे थे। तथा स्त्रियो और बच्चो के सहित पचास हज़ार सख्या अन्य हो गई थी। ये लोग रायगढ मे चार महीने रहे थे। जब तक ये धर्माचार्य लोग रायगढ में रहे थे तब तक हलवा पूरी राज्य की ओर से उडाते रहे। जिस पर ९२१००० रुपये मार्ग व्यय और ४ महीने हलवा पूरीओ का ६६५००००० रुपये व्यय हुआ था। इन ब्राह्मणो के अतिरिक्त और भी बहुत से महाराष्ट्रीय ब्राह्मण, सरदार, दूसरे राज्यो के प्रतिनिधि विदेशी व्यापारी तथा बहुत से दर्शक भी आये थे। (क्रमशः)

समय देने वाले

(पृष्ठ ३ का शेष)

इधर मण्डी हिमाचल प्रदेश के आर्यसमाज के महोत्सव पर आने पर देखा कि व्यास गद्दी के राधा स्वामी गुरु मण्डी केन्द्र मे आए हुए थे। उनके भक्तो की ओर से स्वागत सम्मान तथा सत्सग के समारोह को देखकर मन ने कहा कि अभी आर्य समाज के लिए कितना भारी काम है। अभी तक कितनी व्यक्ति पूजा तथा गुरुडम की परम्परा है। कितने नर-नारी अभी तक ऐसे प्रवाहो मे प्रवाहित होते है। आर्यसमाज के सिवाए ऐसे-ऐसे गुरुडमो के वेग को रोकने की चिन्ता भी किसे है? किन्तु बातो से तो अब यह काम होने से रहा। हम यह समझते हैं कि यह काम प्रचारको का है। वे इसी काम के लिए पैदा किये गये है। नगर हो या देहात, पहाड हो या समतल भूमि, रात हो या दिन, सर्दी हो या गर्मी, सुखी हो या दुखी, स्वस्थ हो या रोगी—प्रत्येक अवस्था मे उन का ही यह काम है। हम उन से काम कराने के लिए पैदा हुए है ओर वे काम करने के लिए। इस भावना ने काम करने वालो को समाज से दूर कर दिया है। यह काम सारे सज्जनों का है। वर्ष मे कम से कम थोड़े दिन वे भी तो परिवारो से बाहर जा कर, सस्थाओ के अवकाश के दिनो मे कुछ दिन दे कर बाहर प्रचार के लिए निकलें। समाजो मे घूमे। बाहर समाज प्रचार के लिए यात्रा करें। इस से समाज प्रचार का काम बढ़ता जायेगा। आज प्रचार का काम करने के लिए समय देने वाले सज्जनों की बडी आवश्यकता है। समय दानियो के बिना यह गाड़ी आगे कैसे चलेगी? ऐसे २ गुरुडमो के प्रवाह को रोकने के निमित्त समय देने वाले मैदान मे निकलें। बैठने से या केवल बातो की योजनाओ से कुछ नही बनगा। यह सत्य है कि प्रचारको ने इसी अवस्था को आखो से देखते हुए किसी ने भी अपनी सन्तान को प्रचारक नहीं बनाया। आर्य समाज मे समय दान यज्ञ प्रारम्भ होना चाहिए। वर्ष मे कुछ सज्जन समाज के धर्म-प्रचार के लिए इस यज्ञ मे अपने कुछ दिनो की आहुति दे तभी यह काम आगे ही आगे बढ़ता जायगा। इस समय प्रचार कार्य मे समय देने वालों की बडी आवश्यकता है।

महात्मा हंसराज हिन्दी विद्यालय, अशोका रोड मैसूर

उद्घाटन ३. १०. ६६ को श्री चित्र लिङ्गैया जी की अध्यक्षता में हुआ। श्री पृथ्वी चन्द जी बहल ने अपनाउद्घाटन भाषण देते हुए पूज्य महात्मा जी के त्याग एव तपमय जीवन पर प्रकाश डाला तथा आर्य जनता से प्रार्थना की कि इस विद्यालय के उत्थान के लिए पूर्ण रूप से सहयोग प्रदान करें। मन्त्री अमरनाथ बी.ए. साहित्य रत्न

मण्डी का अपूर्व समारोह

मण्डी हिमाचल की सुन्दर नगरी व्यास नदी की पवित्रधारा के तीर पर है। यहा के निवासियों मे धर्म के प्रति श्रद्धा भी है। आर्यसमाज के विशाल परिवार में काम करने वाले भाई बहिनो का उत्साह तो आदर्शमय है। अब तो समाज मन्दिर भी बडा शानदार निर्मित हो रहा है। इस बार समाज के वार्षिक महोत्सव मे आर्य जगत के तपस्वी परम सन्त महात्मा आनन्द स्वामी जी जो अभी २ जापान सिगापुर, मलेशिया आदि नौ देशो की ३५ हजार मीलो की यात्रा से लौटे हैं—उनका मंडी समाज के जल्से पर कथा के लिए पधारना इस बात का परिचय देता है कि इस समाज के नर-नारियों मे समाज के काम के लिए कितना प्रेम है पूज्य महात्मा जी की कथा क्या थी—अमृत का प्रवाह ही चलता था। इस बार के नगर कीर्तन का विशाल जलूस तो अभूत पूर्व था। मण्डी के इतिहास मे याद रहेगा। प्रसन्नता की मस्ती मे लोग नाच २ गा २ कर समाज के पुराने युग को स्मरण कर रहे थे। पूज्य महात्मा जी की कथा व प्रवचनो से नगर का वातावरण ही बदल गया। उत्सव मे स्वा. शिवानन्द जी, प० त्रिलोकचन्द्र शास्त्री, ब्रह्मचारी सतीश जी, प० मेलाराम जी रेडियो सिंगर भजनोपदेशक, पं० जगतराम जी बस्तीराम जी मडली आये थे। समाज के उत्साही प्रधान श्री कैप्टन इन्द्र सिंह जी, मन्त्री श्री चेतराम जी तथा सारा समाज परिवार प्रेम श्रद्धा का सजीव आकार है। हम चाहते हैं कि मण्डी का मन्दिर शानदार बन जाये। बधाई। **

आर्य समाज मंडी (H. P.) का वार्षि कोत्सव

९. १०. ६६ को उत्सव के उपलक्ष्य में राष्ट्र रक्षा सम्मेलन स्वामी कृष्णानन्द जी सरस्वती महाराज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिस में पं. त्रिलोक चन्द्र जी शास्त्री B.A. के अतिरिक्त ब्र. सतीश जी, भ्राता केवल कृष्ण जी, स्वामी जी महाराज, तथा जगत राम बस्ती राम जी व मेला राम जी रेडियो सिंगर के व्याख्यान व मधुर भजन हुए। जिस का जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

चेतराम बहल
मंत्री समाज

आर्यसमाज लोहगढ़ (अमृतसर)

१८-१९-२० नवम्बर को वार्षिक उत्सव सम्पन्न हो रहा है। बड़े-बड़े संन्यासी महात्माओ तथा विद्वानो से पत्र व्यवहार किया जा रहा है। निश्चित प्रोग्राम की प्रतीक्षा करें।

ज्ञानी पिंडीदास
प्रधान सभा

आर्यसमाज कोटली बस्ती (बख्शीनगर) जम्मू का वार्षिक चुनाव

प्रधान—श्री ओमप्रकाश जी ट्रांस्पोर्टर, उप-प्रधान—श्री महाशय तीर्थराम जी, मन्त्री—ओमप्रकाश खन्ना, सहायक मन्त्री—श्री ओमप्रकाश जी बजाज, श्री देवीचन्द जी गुप्ता, पुस्तकाध्यक्ष—श्री बाबू कुन्दनलाल जी, स्टोरकीपर—देवराज जी, वाचनालय प्रबन्धक पं. सुदर्शनदत्तजी।

—ओमप्रकाश खन्ना
मन्त्री समाज

शोक समाचार

आर्यसमाज दयालपुरा करनाल के प्रधान डा० गणेशदास जी की सुपुत्री प्रो० सुशीला जी का जो कि महिला कालिज देहली में अध्यापन कार्य करती थीं एक मास लगातार बीमारी भोगने के बाद रविवार को देहली मे स्वर्गवास हो गया। इस दुःखद निधन को सुनकर करनाल नगर में शोक छा गया तथा डी.ए.वी. सस्थाएं उनके साथ सहानुभूति के रूप में बद रहीं। आर्यजगत डा० गणेशदास जी व उनके परिवार के साथ संवेदना प्रकट करता है। और दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रभु से प्रार्थना करता है।

अदालती नोटिस

बा अदालत जनाब श्रीजगवंत सिंह जी सीनियर सबजज बा अखितायार गारडियन जज फिरोजपुर

नत्थूराम पुत्र बिहारीलाल साकन फिरोजपुर छावनी। बनाम—सोनीयां देवी बेवा बिहारीलाल साकन फिरोजपुर छावनी—फरीकदोयम दरखास्त बराए तकररी गारडियन जायदाद।

बनाम—हरखास अतयाम मुकद्दमा ऊपर लिखे मे तारीख पेशी बराय समायत दरखास्त १९.१०.६६ मुकरर हुई है। लिहाजा इश्तहार बनाम हरखास अयाम को मुशतहर किया जाता है कि अगर किसी शखस का कोई उजर निसबत दरखास्त मजकूर हो तो वह मिति १९.१०.६६ को खुद या वकील राही हाजिर आकर पेश करे। वरना मुनासब हुक्म दिया जाएगा।

आज तारीख ६.१०.६६ को हमारे हस्ताक्षर व मोहर अदालत के जारी किया।

आर्यसमाज दानापुर

४८वां वार्षिकोत्सव १२ अक्तूबर ६६ से १९ अक्तूबर ६६ तक

समाज मन्दिर मे सम्पन्न होगा। ता० ९ अक्तूबर, १९६६ से १५ अक्तूबर, १९६६ तक आर्यसमाज मन्दिर में प्रतिदिन ७ बजे सन्ध्या अध्यात्म कथा प्रगाढ विद्वान् आचार्य कृष्ण द्वारा। ता० १२ अक्तूबर१९६६ से १९ अक्तूबर, १९६६ तक वृहत् यज्ञ।

नोट—इस वर्ष पूज्य प्रो० रमाकान्त जी, प्रो० रामसिंह जी, प्रो० रतनसिंह जी, श्री कुंवर यशपालसिंह एम०पी० श्री जगदेव सिद्धाती एम०पी० श्रीमती प्रभावती देवी काव्य तीर्थ, आर्यजगत की महान सन्यासिनी विद्योत्तमा यति, आदि-आदि प्रसिद्ध विद्वानो तथा आर्य नेताओं के पधारने की आशा है।

—रामबली प्रसाद आर्य मन्त्री
आर्यसमाज दानापुर कैन्ट

★ इन संसार की बनी आंखों से परमेश्वर को नहीं देख सकते, पर आत्मा में उसका अनुभव करके ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

आर्य समाज और राजनीति

(श्री सीताराम जी आर्य, हिसार)

महोदय,

मैं आप के समाचार पत्रो द्वारा आर्य समाज और राजनीति के विषय में निरन्तर पढता रहा हू और उन सब के आधार पर इस निर्णय पर पहुंचा हूं कि आज आर्यसमाज की हालत उस व्यक्ति के समान है जो अपनी गृहणी को एक कोने में बिठा कर दो पराई स्त्रियों को अपने घर की गृह-स्वामिनी बना कर रहता हो। उन मे एक स्त्री तो घर के ऊपर वाले भाग में रहती थी और दूसरी नीचे के भाग मे। जब गृह - स्वामी घर पर आया तो नीचे वाली स्त्री सो रही थी। उस ने ऊपर जाना चाहा। अभी वह आधी सीढियाही चढ पाया था कि नीचे वाली की निद्रा टूट गई। उसने लपक कर टाग पकड ली और इतने मे ही ऊपर वाली को पता लग गया और उसने आकर हाथ पकड लिया उसे दोनो अपनी ओर खीचने लगी और वास्तविक गृहस्वामिनी बैठी रोती रही। और आज आर्यसमाज की इससे भी बुरी हालत है। दो ओर से खीचा जा रहा है। अर्थात् कांग्रेस, जनसघ, हिन्दु महासभा, राजनैतिक आर्य सन्यासी।

सर्व-प्रथम मैं राजनैतिक आर्य सन्यासियो से यह पूछना चाहता हू कि महर्षि दयानन्द जी महाराज ने सत्यार्थप्रकाश का छटा समुल्लास क्या यों ही लिख दिया और यहा तक बताया कि वेदो मे तीन प्रकार की सभाओ को बनाने का प्रमाण मिलता है :—

त्रीणी राजाना विदेय पुरुणि

परि विश्वानि भूषथः संदासि।

ऋ० म० ६१ सू० ३८।म०८॥

अर्थात विद्यार्य सभा, धर्मार्य सभा, राजार्य सभा, बनावे। मैं पूछना चाहता हू कि इस को आर्य समाज ने करना है या ये किसी और को सौपेगए है। आर्यसमाज ने दो सभाएं तो बनाई आर्य धर्म सभा, आर्य विद्या सभा। परन्तु आपकी आर्य राज्य सभा कहां है ? क्या आप कांग्रेस को आर्य राज्य सभा कहते हैं जिस के राज्य में प्रति दिन गौ-वध होता ही नही बल्कि बड़े जोरों पर है। जब कि वेदों में गौ-हत्यारे को सीसे की गोली से उड़ा देने का उपदेश है। या आप जनसंघ को आर्य राज्य सभा कहते हैं जिस के अध्यक्ष के कथानुसार आर्य समाज अकाली दल के समान है।

मनुष्य एक राजनैतिक प्राणी है। यदि आप राजनीति से दूर रहना चाहते हैं तो राज्य से बाहर रह कर ही ऐसा सम्भव हो सकता है अन्यथा आप को राजनीति में अवश्य ही भाग लेना पड़ेगा। बिना राज्य के आप उन्नति नही कर सकते। राजनीति मे भाग न लेने की बातें तो मेरे विचार मे वही लोग करते है जिन्हे कांग्रेस से प्यार है और जहां से उन्हे कुछ प्राप्त हो जाता है।

कांग्रेस मे जितने भी बलिदान हुए है वे प्राय. आर्य-राज्य सभा बनने से कांग्रेस से निकाल लिए जाएगे क्योकि वे प्राय: आयोग द्वारा ही दिए गए थे और इस प्रकार कांग्रेस खोखली ही रह जाएगी। सब को भली - भाति विदित होगा कि कांग्रेस को स्वतन्त्रता की ओर मोड देने का श्रेय केवल आर्य नेताओ को ही है। परन्तु यह हमारा दुर्भाग्य है एव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की कमजोरी है जिस ने आर्य राज्य सभा न बनाकर हमारे नेताओं को लोगो में बाट दिया। आज बेचारे आर्य नेता टिकटो के लिए कभी तो कांग्रेस के द्वार खटखटाते है और कभी जनसघ की टिकटो के लिए मारे-मारे फिरते हैं। इस प्रकार इन आर्य नेताओ का बुरा हाल है।

मैं आर्य सज्जनो एवं सार्वदेशिक सभा से प्रार्थना करता हू कि यदि आप अपना हित चाहते है तो महर्षि के लिखे अनुसार आर्य-राज्य सभा बनाएं और अपने पैरों पर खड़े हो नही तो फिर वही हालत होगी कि पहले तो कांग्रेस को बलिदान दिए जाए और फिर अपनी उचित मांगो को मनवाने के लिए अनशन, सत्याग्रह एवं धरनों का सहारा लेना पड़े। इसलिए अब भी समय है कि आप अपना अलग सगठन बनाए और भिन्न-भिन्न राजनैतिक पार्टियो की दुत्कार से बचे। जब तक आप अपनी स्वामिनी को नही अपनाते आपकी भी बुरी हालत होनी होगी आप जनसघ से शरण मांगे या अन्य किसी राजनैतिक पार्टी से।

★ ★

आर्यनेता श्रीयुत लाला रामगोपाल शालवाले तथा स्वामी गणेशानन्दजी का हांसी की स्थिति पर संयुक्त वक्तव्य

(श्री जयपाल सिंह जी मन्त्री समाज)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री लाला रामगोपाल शालवाले तथा सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के प्रधान मन्त्री श्रीयुत स्वामी गणेशानन्द जी महाराज ने हासी की स्थिति का निरीक्षण किया और संयुक्त वक्तव्य मे मे कहा है कि वहां की स्थिति बडी दयनीय है। पुलीस ने वहा के ८० वर्षीय आर्य प्रधान श्री पारसदास जी तथा नगर के अन्य सम्भ्रान्त ८६ व्यक्तियों को गिरफ्तार कर लिया है जिस मे छोटी आयु के बच्चे भी है। श्री महन्त दीनानाथजी को पुलीस और निरकारी स्वय सेवको ने बुरी तरह से पीटा किन्तु आश्चर्य है कि एक भी निरकारी गिरफ्तार नही किया गया हांसी मे ७ दिन से पूर्ण हड़ताल है। उनका पूर्ण वक्तव्य इस प्रकार है :

वर्तमान हासी काण्ड के १० मास पूर्व इसी प्रकार का नग्ननृत्य निरकारी गुट ने किया था, उस समय भी जनता ने विरोध किया था और पकड धकड भी हुई। गत सम्मेलन मे होने वाले उपद्रव की प्रतिरोध भावना से पुन: निरंकारियों ने सम्मेलन का आयोजन किया।

जनता ने स्थानीय अधिकारियो से अनुरोध किया कि उनको प्रत्येक क्रिया हमारे चरित्र और सदाचार के सर्वथा प्रतिकूल है अत सम्मेलन को रोका जाये।

सम्मेलन से पूर्व एक वृहत जलूस की तैयारी की गई थी इसे सफल बनाने के लिए २६ लारिया और ४०० लट्ठधारी उठेत तथा ७ एम. बी. बी. एस. डाक्टर, २७ लैस बन्दूके लेकर जनता बाहर से आई थी। बाहर के सब जन दिल्ली, लुधियाना, जालन्धर आदि से आये थे।

जलूस के साथ साथ घुडसवार नंगी तलवारे लेकर चल रहे थे। अनेको के पास कृपाणे भी थी। जब जलूस निकल गया तब श्री महन्त दीनानाथ जी और आर्य समाज हासी के प्रधान लाला पारसदास जी सबसे आगे पण्डाल की ओर चले तब पुलीस ने उन्हे रोका परन्तु श्री महन्त जी ने कहा कि मेरे पास निरंकारियों का निमन्त्रण पत्र है। अत: हम वहा का उपदेश सुनने जा रहे हैं इस पर पुलीस ने महन्त जी को पुन: रोका परन्तु जब वे आगे बढ़े तो पुलीस ने निर्दयता से उन पर लाठी प्रहार किया। और निरंकारी सेवकों का कहा कि क्या देखते हो ? बस यह सुनते ही पन्द्रह लठैत एक दम महन्त जी पर टूट पडे और महन्तजी बेहोश होकर जमीन पर गिर पडे। जनता मे यह अफवाह फैली कि महन्त जी मर गये है बस इसी से जनता मे रोष व्याप्त हो गया और जनसमुह पण्डाल की ओर चल दिया इस पर पुलीस ने बेदर्दी और अन्याय पूर्ण लाठी प्रहार किया। सामने छोटे २७ स्कूल के बच्चे थे उन्हें भी बुरी तरह से मारा गया। रास्ते में जाती हुई माताओ पर अन्यायपूर्ण अत्याचार हुआ। यही तक सीमा ही नही पुलीस ने गोली चलादी।

यह सब पूर्व योजना बद्ध था क्योकि सम्मेलन से पूर्व महन्त जी को धमकी भरा पूर्ण पत्र चण्डीगढ से मिला था कि अगर निरंकारियो का विरोध किया तो आपको गोली मार दी जाएगी। और वह पत्र भी दिखा दिया गया था।

पुलीसने कोई ऐक्शन नही लिया। समयपर यह सब घटना घटी। इस दगे में सैकड़ो नागरिक जख्मी हुए और प्रतिष्ठित सज्जन वन्दी हुए जो कई दुकानो पर बैठे थे अथवा खेत मे थे उन्हे भी बेदरदी मे मारा गया। ८० वर्षीय आर्यसमाजी लाला पारसदास भी गिरफ्तार कर लिए गए।

जख्मी नवो को २४ घण्टे तक चाय और पानी से वंचित रखता गया और किसी भी शहर के आदमी को उनसे मिलने नही दिया।

जब जख्मी अस्पताल भेजे गए तो उनके बिस्तर पर भी बेड़िया लगी हुई थी।

इस अन्याय की प्रतिक्रिया के लिए ८ दिन से शहर में पूर्ण हडताल है। जनता का यह भाव उग्र रूप धारण कर चुका है। पुलीस मे प्रतिशोध की भावना से यह अत्याचार किया है। इसलिए जनता न्याय की माग करती है और स्थानीय पुलीस तथा अधिकारियो को स्थानान्तरित करने की माग करती हे। ★ ★

आर्यसमाज बजवाड़ा का वार्षिक निर्वाचन

संरक्षक :—श्री पृथ्वीनाथजी बहल ।
प्रधान :—श्री प० दीनानाथ जी अग्निहोत्री ।
उपप्रधान—श्री त्रिलोकचन्द जी विन्द्रा
,, ,,—श्री हुकमचन्द जी
,, ,,—श्रीमती द्वारकादेवी जी ।
मन्त्री—श्री जगदीशपाल जी भल्ला ।
उपमन्त्री—ब्र० चिरंजीवलालजी आर्य।
उप मन्त्री —श्री शिवराम जी आर्य ।
कोषाध्यक्ष—श्रीमती कौशल्यादेवीजी
अन्तरंग सदस्य :—६ निर्वाचित हुए

—जगदीशपाल मंत्री समाज

आर्यसमाज कोट ईसा खां में वेद सप्ताह

२०-९-६६ से २७-९-६६ तक समाज मंदिरमे वेद सप्ताहका कार्य-क्रम चलता रहा जिसमें प. चन्द्रसेन जी आर्य हितैषी महोपदेशक सभा तथा श्री हजारीलाल जी के व्याख्यान और भजन होते रहे ।

२७-९-६६ को एक प्रस्ताव द्वारा भारत सरकार से गो-वध बंद करने तथा अनशन कर्त्ताओं की रिहाई के लिए प्रार्थना की गई ।

२८-९-६६ को निम्न प्रकार से चुनाव सम्पन्न हुआ ।

प्रधान—रामस्वरूप जी, 'पलिता' उप-प्रधान—अर्जुनदास जी, मन्त्री—रामरक्षपाल जी 'कपाही' उप-मन्त्री व खजाची—हरबन्सलाल जी, मन्दिर रक्षक—श्री गिरधारीलाल जी सूद ।

रामरक्षपाल मन्त्री समाज

★ इन संसार की बनी आंखों से परमेश्वर को नही देख सकते, पर आत्मा मे उसका अनुभव ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं ।

समाचार दर्शन

"टंकारा सहायक समिति दिल्ली

वार्षिक अधिवेशन ११-९-६६ को आर्य समाज अनारकली मार्ग में सपन्न हुआ जिसमें भिन्न २ आर्य समाजों के एक सौ से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया ।

श्री सोमनाथ जी मरवाह एड वोकेट प्रधान, श्री गंधर्व लाल जी सोसला कार्यकर्ता प्रधान और श्री राम नाथ जी सहगल मंत्री चुने गये । उन को अधिकार दिया गया कि वह शेष अधिकारी और, अंतरग सदस्य चुन लेवें । उन्होंने निम्न अधिकारी चुने :—

उपप्रधान...श्रीमती पुष्पा जी पुरी, श्री देव राज जी चड्ढा, श्री कृष्ण लाल जी मलहोत्रा । सहायक मंत्री—श्री बलवन्त राम खन्ना उप-मंत्री श्री मनोहर लाल जी गुप्ता, श्री राम शरण दास जी खजाची—श्री गुमान सिंह जी ! लेखा निरीक्षक—श्री सरदारी लाल जी वर्मा ।

इस के अतिरिक्त ३९, अंतरंग सदस्य चुने । —राम नाथ मन्त्री

★ जन्म और मृत्यु के बन्धन से छूटकर दुखो से मुक्ति हो जाती है और परमेश्वर का परम आनन्द मिलता है जिसे वाणी से नही बता सकते ।

आर्य समाज की गोरक्षा आंदोलन ईसाईयत का प्रबल प्रवाह और भ्रष्ट परिवार नियोजन

हिन्दू जाति के लिए घातक है

श्री राम गोपालजी शाल वाले की घोषणा

आर्य समाज का गौरक्षा आंदोलन राजनैतिक नहीं है । वोटो तथा सत्ता प्राप्ति के लिए यह अभियान नहीं छेड़ा हुआ है । यह घोषणा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री लाला राम गोपाल शालवाले ने आर्य समाज कृष्णपाल बाजार के उत्सव के अवसर पर आयोजित गौरक्षा सम्मेलन के अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए की । अपने भाषण मे श्री शाल वाले ने कहा कि गोवध आन्दोलन का सूत्रपात सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द सरस्वती ने किया था और वह उनके तथा आर्य समाज के कार्यक्रम का अंग रहा और अब भी है । यह आन्दोलन जीव तथा देश वासियो के स्वास्थ्य एवं आर्थिक समृद्धि की प्रेरणाओं से ओत प्रोत है । उन्होने सरकार को चेतावनी दी कि उसे संविधान का तथा बहुसंख्यक हिन्दुओं की भावना का ध्यान करते हुए अविलम्ब समस्त भारत मे कानूनी रूप से गोवध बन्द कर देना चाहिए । अन्यथा एक बड़ी क्रांति का खतरा है । इस से पूर्व श्री शालवाले के एक पत्रकार सम्मेलन में इसी प्रकार के विचार व्यक्त किए जिस में नगर के पत्रकारों के अतिरिक्त अनेक प्रतिनिधि एवं गण्यमान्य महानुभावो ने भाग लिया था । उन सबने आर्य समाज के गोरक्षा तथा ईसाई प्रचार निरोध अभियान के महत्व को स्वीकार कर सक्रिय सहायता का आश्वासन दिया । इस सम्मेलन में श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री एम० पी० भी सम्मिलित हुए ।

रात्रि को भारी भीड़ के समक्ष शालवाले जी का ईसाई प्रचार निरोध के विषय पर ओजस्वी भाषण हुआ । श्रोताओं से सभा स्थल भरा हुआ था । अनेक लोगो ने स्थान न मिलने के कारण बाहर खड़े होकर भाषण सुना। श्री शालवाले ने अपने भाषण में बताया कि हिन्दू जाति के विनाश के तत्व जोरो से कार्य रत हैं । ईसाई मिशन विदेशों की करोड़ों रुपयो की सहायता से तथा हमारे शासकों की अदूरदर्शिता से हिन्दुस्तान को ईसाई स्थान बनाने के कार्य में सलग्न है । एक ओर ईसाईयत हिन्दू जाति का विनाश कर रही है और दूसरी ओर परिवार नियोजन के द्वारा हिन्दुओं की संख्या घटाने का कुचक्र चल रहा है । इन खतरो के निवारण के लिए प्रत्येक हिन्दू को सतर्क एवं कार्यरत होना है । सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा इस दिशा में देश के विभिन्न भागों यथा उड़ीसा, केरल, छोटा नागपुर, पहाड़ी अंचलों आदि में जो कार्य कर रही है, उस पर प्रकाश डालते हुए सभा के हाथ मजबूत करने की श्री शालवाले ने जोरदार अपील की ।

आर्यजगत के पाठकों से निवेदन

आर्यजगत के ३० सितंबर और ७ अक्तूबर के अंक बंद रहेंगे उसके बाद १२ अक्तूबर को ऋषि निर्वाण अंक ३ सप्ताह का सम्मिलित अंक प्रकाशित होगा । पाठक नोट कर लें ।

मुद्रक व प्रकाशक प्रो० वेदप्रकाश मलहोत्रा एम. ए. आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० १०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १२ पैसे — वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६, अंक ४३) ८ कार्तिक २०२३ रविवार—दयानन्दाब्द १४२– २३ अक्तूबर १९६६ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

मयिवर्चो अथो यश:

हे परमदेव ! ऐसी कृपा करो कि मुझ में वर्च:—शक्ति, तेज भर दें और यश:—मुझे यश वाला कर दें मैं बलवान् कीर्ति वाला बनूं । निर्बल व निन्दा का पात्र न कभी बनूं । यह प्रसाद मुझे दे देवें ।

अथो यज्ञस्य यत्पय:

और भी प्रसाद का दान देवे । जो भी यज्ञ का परोपकार का, शुभ कर्म तथा प्राणिमात्र की सेवा का पय: आनन्द है, सुख तथा प्रसाद है, वह भी हे प्रभो ! मुझे प्रदान करे मैं लोक सेवा में लगा रहूं ।

द्यामिव दृंहतु

वह भगवान् मुझे द्याम इव-द्युलोक के समान दृढ बना दे । चमका दे द्युलोक जैसे चमकता है, सूर्य का प्रकाश है उसी प्रकार ही वह प्रभु मुझे जीवन मे, ज्ञान में तथा कार्यों में चमका देवें । तेजस्वी करें ।

वर्षाण्यनु शरदो हेमन्त

वर्षा की मौसम हो या सर्दी हो या बरफ गिरा कर शून्य बना देने वाली हेमन्त की मौसम आ जाये—जीवन में सारी रमणीय हैं, सुन्दर व प्यारी हैं । रथ के पहिये के समान जीवन चक्र भी घूमता रहता है कभी बसन्त कभी हेमन्त सब प्रिय हैं ।

सा म वे द से

वे दा मृ त

पिशाच की आंखें फोड़ दे

अक्ष्यौ निविध्य हृदयं निविध्य जिह्वां नितृन्धि प्रदतो मृणीहि । पिशाचो अस्य यतमो जघास अग्ने यविष्ठ प्रति तं शृणीहि।।

अथर्व वेद ५-२९-४

हे वीरवर ! जो भी शत्रु है उसकी (अक्ष्मा) दोनों आखे (निविध्य) फोड डाल उसका (हृदयम्) दिल (निविध्य) चीर डाल और उसकी (जिह्वाम्) जीभ को (नितृन्धि) काट डाल उसके (दत:) दान्त व दाढ़े (प्रमृणीहि) तोड़ डाल । (पिशाच:) जिस भी राक्षस पिशाच ने (अस्य) इस तेरे प्यारे को (यतम:) जिस किसी ने भी (जघास) खा या है (अग्ने) हे अग्नि के समान वीर (यविष्ठ) हे युवा शूर नर (तम्) उस पिशाच हिंसक को (शृणीहि) तू मार दे, नष्ट कर दे । मत छोड़ एक २ पिशाच को चुन २ कर पीस कर रख दे ।

इसका भाव यह है

वीर पुरुष देश की दौलत और मानवता का मान ही होते हैं । वीरों के होते हुए किसी को भी किसी प्रकार की चिन्ता नही होती । हे वीरवर ! तेरे होते हमें क्या भय हो सकता है ? जितने भी और जहा-जहा पर भी राक्षस पिशाच दिखाई देवें जिससे स्वाधीनता को, मानवता को, सदाचार भय आदि होवे । जितने भी शत्रु और चोर लुटेरे हों । उन सबको पकड-पकड़ कर उनकी आंखें निकाल ले, उनके दिल को चीर दे । उनकी जीभ निकाल दे तथा मुखके सारे दांत तोड दे । उन सब पिशाचोंको मार डाल । एक भी बचने न पाए । उन पर दया करना पाप है । ऐसे हिंसक भेड़िय को तो जितना जल्दी कुचल दिया जाए अच्छा है ।

वैदिक कर्त्तव्य शास्त्र के मूल सिद्धांत

परमेश्वर सब प्राणियों का एक ही पिता है, अत: हम सब को परस्पर भ्रातृभाव तथा मित्रता दृष्टि धारण करनी चाहिए । अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए प्राणियो की हिसा करना अनुचित है । द्वेषभाव को दूर करके प्रेम भाव की वृद्धि करनी चाहिए ।

परमेश्वर सर्व व्यापक और सर्वज्ञ है उसकी अध्यक्षता में सार्वभौम अटल नियम कार्य कर रहे हैं । इन के पालन करने से मनुष्यमात्र का कल्याण हो सकता है इन का उल्लघन करना अपने को आपत्तियों के मुंह में डालना है ।

ऋषि दर्शन

सत्यं न्यायं विज्ञातवान्

जिस मनुष्य का जीवन सत्य से भरा है, न्याय और न्याय करने वाला है और ज्ञान से युक्त है । कभी किसी काम मे असत्य नही कहता व करता, अन्याय नही करता तथा ज्ञान से परे नही होता है—

स राजसभामर्हति

ऐसा सत्यकर्मी, सत्यधर्मी, न्यायप्रिय ज्ञानी विद्वान ही राजसभा का सदस्य, अधिकारी तथा शासन के योग्य हो सकता है । ऐसे गुण वाले व्यक्ति ही राज्यसभा के सभासद होने या मन्त्रिमण्डल में जाने का अधिकारी हैं ।

विदित सर्व व्यवहारान्

जिन लोगों को राज्य के भिन्न-भिन्न विभागों के कार्यों का ज्ञान है, चतुर हैं व योग्य हैं, जो राज्य के प्रबन्ध मे तथा कार्यों में कुशल हैं—ऐसे निपुण लोगों, उत्तम अधिकारियो को ही राज्य के कार्यों मे सदा लगाना चाहिए ।

सुखं दु:खं च

यह जीवन में मिलने वाला सुख और दु:ख भी इसी प्रकार का है सुख को देखकर उसके कारण बने बुरे कर्मों का स्वयं ही अनुमान लगाया जा सकता है ।

भा ष्य भू मि का से

अधिष्ठाता—प्रो० वेद प्रकाश एम० ए०(अंग्रेजी तथा हिन्दी) सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास

मन्त्र

ओ३म् दक्षिणा दिगिन्द्रो अधिपति स्तिरश्चि राजी रक्षिता पितर इषवः। तेभ्योनमो अधिपतिभ्योनमः, रक्षितृभ्यो नमः इषुभ्योनमः एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥२॥

शब्द अर्थ

दक्षिणा (दाहिनी) दिक् (दिशा में) इन्द्रः (सुख की वर्षा करने वाले परमात्मा) अधिपतिः (स्वामी) तिरश्चि (टेढ़े-मेढ़े चाल तथा स्वभाव वाले जीव और दुष्ट स्वभाव वाले (मनुष्य) राजि (पंक्ति, समूह) रक्षिता (बचाने वाला) पितः (ज्ञानी, विद्वान जन, वैद्य और डाक्टर लोग, महांपुरुष) इषवः (शक्ति) तेभ्यो नमः (ऐसे परमपिता परमात्मा को नमस्ते) रक्षितृभ्यो नमः (ऐसे रक्षा करने वाले को नमस्ते) इषु भ्यो नमः एभ्यो अस्तु (उन सब गुणो तथा पदार्थों के देने वाले परमात्मा को नमस्ते करते हैं और साथ ही उन सब गुणो और पदार्थों का आदर करते है, जो हमारे जीवन को सुख मय बनाने वाले हैं) यः (जो) अस्मान (हम से) द्वेष्टि (वैर करता है) यम् (जिस से) वयम् (हम) द्विष्मः (वैर करते है) तम (उस को) वः (आप के) जम्भे (न्याय रूपी शक्ति) दध्म. (रखते है)।

सरल अर्थ पद्य में :—

हे भगवान दक्षिण भी सारा,
महाराज है राज तुम्हारा।
सांप आदि जीवो से ईश्वर,
रक्षा इन से करो निरन्तर।
ऋषि-मुनि विद्वानो के द्वारा,
देते हम को ज्ञान अपारा।
दयामय दातार ध्यावे,
बार-बार तेरे गुण गावे।
जो हम को देवे क्लेश,
या हम जिस से करें द्वेष।
हे न्याय कारी ईश हमारे,
सौपे उसका वश मे तुम्हारे।

सरल अर्थ गद्य में

प्रभु देव! आप सुख की वर्षा करने वाले हमारे दाहिनी (दायें) दिशा मे विराजमान हैं आप हम पर महान कृपा करके हमारे दाये दिशा की ओर टेढो-मेढी चाल चलने जीवो तथा बिना हड्डी वाले जन्तुओ के समूह और दुष्ट आदतो वाले मनुष्यो के समाज मे, ज्ञानी विद्वानो, वैद्यो और बुद्धिमान महाजनो के द्वारा हमारी रक्षा करते हो। अतः ऐसे परमात्मा को, महाराज अधिराज

आओ! हम वैदिक सन्ध्या रूपी सागर में डुबकी लगाएं, ताकि अमूल्य रत्न प्राप्त करें

श्री विद्यार्थी जी रोहतक निवासी

मनसा परिक्रमा मन्त्र नं० २

(सन्ध्या के तीसरे भाग का)

परमेश्वर को, हर प्रकार से रक्षा करने वाले प्रभु को हम बारम्बार नमस्कार करते हैं, साथ ही हमारे जी[illegible] को [illegible]मय [illegible] गुणों, पद[illegible] और जो शक्तियां हैं, उनका हम स्वागत करते हैं। परमात्म देव !! दाहिनी दिशा से यदि कोई जीव हमसे जान-बूझकर शत्रुता करते हैं अथवा हम उसकी दुष्टता को दूर करने अर्थ या उसे सीधे मार्ग पर लाने के लिए उससे शत्रुता करते है, वह आपकी न्याय रूपी शक्ति पर छोड़ते है। हमारी तो यह प्रबल इच्छा है कि न तो हमसे कोई शत्रुता करे और न हम किसी से शत्रुता करे। अपितु हम प्रेम पूर्वक परस्पर मिलकर रहे।

भाव अर्थ :—

हे सुख की वर्षा करने वाले परमात्मा! आप कृपा करके हमें पवित्र वेद का 'ज्ञान' प्रदान करे, ताकि हम उस 'ज्ञान' को पाकर शुभ कर्म करे और जीवन उन्नत हो। हे महाराज अधिराज! हमे शक्ति दो, ताकि हम सब आप के 'वैदिक धर्म' पर चल कर उस के अनुकूल 'अर्थ' संग्रह करके पुनः 'काम' (शुभ इच्छाओं की) की पूर्ति करें ताकि हमारा जीवन सफल हो।

हे रक्षा करने वाले ईश्वर! आप हमे साहस दो, कि हम 'काम, क्रोध,' मद् को वशीभूत करके शारीरिक, मानसिक दुःखों से छुटकारा पाए। ताकि हमारा जीवन सुखी हो। हे स्वामी! हमे शक्ति प्रदान करो! जहा जल से शरीर को 'पवित्र' रखें, वहा आपके ध्यान से अपने मन को पवित्र रखे। इस प्रकार हमारा मन अपनी चचलता को छोड़ कर आप की परिक्रमा करे, ताकि हमारा जीवन शातमय बना रहे। हे पापियो को दड देने वाले प्रभु! हमे शक्ति दें, ताकि हम 'ब्रह्म यज्ञ' (आपको सर्वव्यापक समझते हुये) 'देव यज्ञ' (आपके मिलन अर्थ अपने सासो को धधकती हुई अग्नि की ज्वाला के समान चलाते हुए और अपने बुरे विचारो को भस्मी भूत करते हुये) और 'पितृ यज्ञ' (आप की आज्ञा के अनुसार अपने मन को आप के चरणोमे झुकाते हुये तथा शारीरिक और मानसिक क्रियाओ को आप की आज्ञा अनुसार [illegible] अपने जीवन का अंग बनाकर [illegible] अपने जीवन अर्थात् 'प्रयत्नशील' रहें आपके [illegible] संसार को 'अवलोकन' करके शिक्षा ग्रहण और मनन करके यहां 'समाज' में आदर पाएं, वहां तेरे चरण कमलों में ध्यान स्थित हो जाएं। इस प्रकार तेरी स्तुति (गुण गान) करते हुये अपनी शुभ इच्छाओ की पूर्ति अर्थ आप की श्री सेवा में 'प्रार्थना' करें और किसी आदमी, पत्थर पुस्तक तथा जड वस्तु के आगे 'प्रार्थी न बनें।

विशेष संकेत :—

(क) यह पवित्र मन्त्र भगवान की वाणी अथर्ववेद का है। (ख) वैदिक सन्ध्या के मन्त्रों में ९वां और मनसा परिक्रमा मे दूसरा स्थान रखता है। (ग) यह आध्यात्मक दृष्टि कोण से अन्दर की बुरी प्रवृतियों को दूर करने की विशेष शक्ति रखता है, जो दाहिनी ओर पाई जाती हैं। (घ) यह सामाजिक व्यवहार का द्योतक है। (ङ) भौतिक जगत में बुरे जीवों तथा दुष्ट आदमियों से रक्षा करने वाला है। स्मरण रखें कि समय पर, एकान्त में अर्थ सहित सन्ध्या करने से धीरे-धीरे सब सुख उपलब्ध हो जाते हैं। जो हम लोग इस लोक और परलोक के लिये इच्छुक हैं। आजमाएं और लाभ उठाएं। ★★

★ मधु-कलश ★

श्री विजय निर्बाध, एडीटर इंचार्ज पंजाब केसरी, जालंधर

★

अपनेपन के बोल हमेशा नवजीवन सरसाते
सकल शोक सन्ताप मिटाकर अमृत-सा बरसाते
तलवारो के घाव विलाशक भर जाते हो भाई
इस वाणी के घाव बन्धुवर कभी नही भर पाते।

★

करलो जो सकल्प सोचकर उस पर ही डट जाओ
जल्दी में मुंह जल जाता है ठंडी करके खाओ
अगर तुम्हे अमरत्व चाहिए इस दुनिया के अन्दर
जिसको कहे असम्भव सारे वह करके दिखलाओ

★

कैसा अपना और पराया भेदभाव मत जानो
हर मन्दिर मे एक देवता भिन्न रूप पहचानो
ईश्वर का वरदान रूप है पुण्य प्रेम तो जग में
तुम नफरत को अपने मन का पागलपन जानो

आर्य युवक समाज लेखराम नगर कादियां

का नवम वार्षिकोत्सव

८, ९, १०, १९६६ को बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। ८को प्रातः ध्वजारोहण के समय श्री पं० देवकीनन्दन जी का वेद संदेश पर प्रवचन हुआ। बाद दोपहर आर्य स्त्री सम्मेलन में आर्य कन्या पाठशाला बटाला की छात्राओ ने भाषण व कविताएं पढीं। सगीत सुनाया।

रात्रि को आर्यनेता श्री प्रि० रलाराम जी एम० ए० एम० एल० ए० ने बड़े ओजस्वी ढंग से स्वामी दयानन्द की महत्तापर प्रकाश डाला।

९ को बाद दोपहर श्री प्रिंसीपल जुगलकिशोर जी के सभापतित्व में गोरक्षा सम्मेलन मनाया गया। आर्य नेता श्री प० रुद्रदत्त जी शर्मा ने अपने गंभीर व विद्वतापूर्ण भाषण मे सरकार की गो घातक नीति की कड़ी आलोचना की तथा अन्य अनेक वक्ताओं के भाषण हुए।

आर्यजगत्

वर्ष २६, रविवार ०२३, २३ अक्तूबर १९६६ [अंक ४३

अयोध्या के राम

विजयदशमी का पवित्र पर्व प्रति वर्ष आता है। सारा देश अपने-अपने भाव भरे मन से इसे मनाता है। पर्व वास्तव में जीवन की न्यूनता को पूरा करने का काम देते हैं। क्योंकि मां समाज के भिन्न-भिन्न काम में जैसी कमी होती है, उसे ठीक करने में इनका बड़ा योग होता है। यह पर्व तो भारतीय जीवन का एक सुन्दर अङ्ग सा बन चुका है। इस समय हम अयोध्या के राम को याद करते है। उनका जीवन पढ़ते और सुनते हैं। रामराज्य की बात विश्व में एक विख्यात लोकोक्ति बन चुकी है। प्रति वर्ष सारी जनता रामायण का पारायण कर जाती है। राम गुणगान कर लेती हैं तथा राम की जय जय बुलाती है। किन्तु हम में से ऐसे कितने हैं जो कि राम के जीवन पथ पर चलते हुए अपने जीवन में उनके दिये सन्देश को भी सुनने का एवम् उस पर आचरण करने का प्रयत्न करते हैं।

अयोध्या के राम सब को क्यो प्यारे थे। उनका रामराज्य आज भी इतिहास की एक भव्य विभूति बना है। उनका आदर्श माना हुआ है। उनकी प्रत्येक मर्यादा ने मानवसमाज को इस समय भी मन्त्रमुग्ध सा कर रखा है। इसका कारण क्या है? श्रीराम का नाम लेते ही कौन ऐसा है, जिसका मस्तक श्रद्धा से झुक नही जाता?

राम के रामायण में अनेक नाम है—वे सारे सब को प्यारे हैं। सब में रहस्य भरा हुआ है। उनमें मर्यादा-पुरुषोत्तम भी एक महत्वपूर्ण नाम है। इसका अर्थ यह है कि उस देवता के जीवन में कोई भी काम है, कोई भी खेल हो तथा कोई भी बात हो—सब में मर्यादा मौजूद थी। मर्यादा के वह साक्षात् सजीव प्रतीक थे। राजा की मर्यादा, प्रजा की मर्यादा, भाईपन की मर्यादा, सेवक तथा योद्धा की मर्यादा, पतिपन की मर्यादा कोई भी [illegible]—उनकी मर्यादा की [illegible] होती है। यह एक पत्थर की लकीर के समान कहावत बन गई है कि संसार के पदार्थों की अवस्था व गति बदल जाये तो बदल जाये पर राम के जीवन की मर्यादा कभी नहीं बदल सकती। सारी रामायण उन के जीवन की विविध-रूपों का सुन्दर चित्रण है। सारे समाज को इस पर अमित मान है। हम उनके मर्यादा पुरुषोत्तम के उदात्तभाव को प्रणाम करते है। मर्यादा का बडा भारी सन्देश है जो रामायण हम को प्रतिवर्ष देती है। मर्यादा शरीर मे प्राणशक्ति के समान है।

आज विश्व की अवस्था को जाने दीजिए। हमारे अपने राष्ट्र की, परिवार तथा जीवन की क्या अवस्था है? मर्यादा का बन्धन है क्या? आज देश का कौन-सा ऐसा क्षेत्र है जिसमें मर्यादा के दर्शन होते हैं? जीवन का स्तर मर्यादा के किनारो को तोड चुका है। शृंगार बिगडकर अब नंगा रूप धारण कर चुका है। वेशभूषा पर मर्यादा का अकुश नही है। न तो पुरुषो मे राम की मर्यादा के प्रति श्रद्धा है और और न देवियो में सीता के प्रति मर्यादा की पुरानी भावना काम करती है। इन युवक युवतियो के पथ प्रदर्शक राम जैसे देवता और जानकी जैसी माता नही है—इनके आदर्श गुरु तो सिनेमा-जगत के अभिनेता व अभिनेत्रिया बने हैं। सिर के बालों की सज्जा हो या कपडों का वेश, शरीर का शृंगार हो या मन का विचार, खानपान का संसार या मिलने का व्यवहार सब कुछ मर्यादा की रेखा को पार कर गया है। जीवन की हर बात बिगड व बदल गई है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम को कौन मानता है। मर्यादा पथ पर चलने की तो बात कहां? मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जय-जयकार बुलाने वालों के इस हमारे भारत में विदेशी सत्ता के चले जाने के बाद तो मांस और शराब का इतना खुला प्रचार हो गया है कि लज्जा से आंखें भी नीचे झुक जाती हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि आज चारों ओर मास की मंडियां तथा शराब के घर खुले हुए है। व्यक्ति पीना चाहता है और प्रत्येक खाने का शौकीन बन रहा है मास और शराब का प्रचार तो इतनी मात्रा मे बढ गया है कि इस धरती का कोई पशुपक्षी आज के लोगो से बच पाएगा या नही। रामधुन गाने को सुनने और सुनाने वाली सरकार भी तो आज के लोगो को भोजन की पुरानी परम्परा को बदलने का उपदेश देती रहती है। कभी अडों के खाने के लाभ की बात होती है और कभी मछलियो का भोजन करने की। कही सुअरो के मांस का काम होता है अब तो एक ने जनता को चूहे खाने का भी विटेमन के नाते उपदेश दे डाला है। शराब का खुला प्रचार है। पश्चिमी सभ्यता की आड का नाम लेकर शराब की नदियां चलने लगी हैं। शृंगार अपने नंगेपन की सीमा मे पहुच गया है। हर बात का पर्दा तथा हर काम की मर्यादा समाप्त होती जाती है। यह अवस्था हमे कहा तक ले जाएगी? आज फिर विजयदशमी का पर्व आया है। अयोध्या के राम की याद करनी है तो इस पुनीत अवसर पर सारा समाज मर्यादा के सकल्प को जीवन मे धारण करे। तभी राष्ट्र का भला होगा। उस देवता की सबसे बडी देन मर्यादा है।

—त्रिलोकचन्द्र

शराब की नदियां

स्वराज्य से पूर्व भारत की जनता शराब की दुकानो पर धरना मार कर सत्याग्रह किया करती थी। कांग्रेस के कार्यक्रम मे नशाबन्दी भी शामिल थी। किन्तु अपने राज्य में आगे से शराब का प्रचार कितना अधिक होता है—यह शराब की बिक्री को देखकर पता लग जाता है। इस समय खाने पीने और शरीर को ढापने के लिए वस्तुए तथा कपडा अपने मूल्यो मे आकाश को छू रहा है। चारों ओर बेचैनी है। परन्तु शराब आगे से भी सस्ती है। दूध घी की दशा सामने है पर शराब की दुकानें और धडाधड खुलती जा रही हैं और तो और गत दो अक्तूबर को गान्धी जी के जन्म-दिवस पर देशी शराब की कितनी बिक्री हुई। लोगों ने कितनी शराब पी। यह पढ सुन कर तो लाज आ जाती है। वही जनता है, वही सरकार के पुराने नेता हैं। क्या कहे कि भावना ही बदल गई है देश के नेताओं ने जनता को कहां से कहां तक पहुचा दिया है। जनमत को जागृत करने के लिए आर्यसमाज यदि स्थान२ पर सम्मेलन करे तो लाभ हो सकता है। आर्यसमाजे इस ओर यदि ध्यान देवे तो बड़ा सुधार हो सकता है। इस शराब पीने की बढती हुई जन-रुचि को यदि रोका न गया तो भविष्य मे देखना कि देश किस दशा को प्राप्त होगा।

यह सुन्दर रीति

आर्यजगत सभा का अपना साप्ताहिक मुख पत्र है। सस्थाओ के मान्य अधिकारियों, समाजों व सज्जनो का इसके प्रति प्रेम है। पूरा-पूरा सहयोग देते ही रहते हैं। कई समाजे ऐसी हैं कि जो आर्यजगत की प्रति सप्ताह कुछ प्रतियां मगवाकर अपने समाज के परिवारो मे वितरित करती हैं। इस प्रकार भी उनका सभा को ही सहयोग मिलता है। कुछ सज्जन ऐसे भी प्रेमी है जो अपनी ओर से आर्य-जगत को पैसे देते है कि इनका आधे मूल्य का अधिकारी सज्जनो व कुमारो मे जगत भेजा जाए। अभी गत दिनों खन्ना समाज मे कथा करते हुए हमारी नम्रता भरी प्रार्थना पर वहा के पांच सज्जनों ने प्रति सप्ताह जगत के पांच पर्चे भेजने का आदेश दिया। गत सप्ताह मण्डी हिमाचल जल्से पर प्रार्थना करने पर वहा के भी सज्जनो ने दस पर्चे प्रति सप्ताह भेजने का प्रेम भरा आदेश दिया। इसके साथ वहा के कर्मठ श्री प. महेन्द्रलाल जी एडवोकेट ने अपनी ओर से बारह रुपये इसलिए दिए ताकि इनसे चार सज्जनो या कुमारो को आधे मूल्य पर जगत भेजा जाए। हम सब के आभारी है। चार सज्जनों या कुमार सभाओं को चाहिए कि वे तीन-तीन रुपये जगत को भिजवा कर जगत जारी करा लेवे।—स.

आर्यसमाज विक्रमपुरा जालंधर

२३-१०-६६ रविवार को दैनिक कार्यवाई के पश्चात् श्री देसराज जी महाजन का मधुर व्याख्यान होगा सभी धर्मप्रेमी नर-नारी समय पर पधार कर धर्म लाभ उठाए।

दैनिक सत्सङ्ग प्रातः साढ़े छः बजे से सवा सात बजे तक प्रतिदिन समाज मंदिर मे सम्पन्न होता है जिस मे दैनिक कार्यवाई के पश्चात् एक मन्त्र की मधुर व्याख्या पुरोहित जी करते हैं। इस दैनिक सत्सङ्ग में सब स्त्री पुरुष पधार कर सत्सङ्ग की शोभा बढ़ाए।

मंत्री— आर्यसमाज

राष्ट्र किधर जा रहा है ?

(श्री सुन्दरलाल जी बोहरा जोधपुर)

(गतांक से आगे)

टैक्स कैसे बचाया जाय, फर्जी नौकरोंका वेतन किस प्रकार व कितना बताया जाय, अंकों को कैसे बदला जाये, ये विधियां आपको कोईभी 'ऊपर की कमाई' करने वाला कराधिकारी 'विधिवत्' समझा देगा, बशर्ते आप उसको निश्चित 'चौथ' दे दें। आज हमारे सरकारी अधिकारियोंका जीवन-मन्त्र 'घर भरो चाहे बधू, जोशी को टके से मतलब' हो गया है। जनता को वस्तुएं स्वस्थ रूप में नहीं मिलतीं। वस्तुओं के भाव तीव्रतर गति से बढ़ रहे हैं। व्यापारी खाद्य-वस्तुओं का संग्रह और काला बाजार करते जा रहे हैं। पर सरकारी अधिकारियों को कर्त्तव्याकर्त्तव्य का कोई विचार नहीं है। वे तो ताल ठोंक कर कहते हैं— 'हम रिश्वत खाएंगे, हम काला बाजार करवाएंगे, हम सार्वजनिक धन का गबन करेंगे, हमें रोकने वाला कौन ? हमारे हाथ में राजदण्ड है, राजदण्ड ! जनता क्या चीज है—भेड़ !'

एकतन्त्रीय शासन में व्यक्ति विशेष पर दायित्व रहने से जन-समूह के कार्य-कलाप एक निश्चित विधि से प्रतिपादित होते रहते हैं। एकतन्त्र में निरकुंशता भले ही विद्यमान हो, पर जैसा अनुशासन और व्यवस्था एकतन्त्र में पाए जाते हैं वैसा क्रम किसी भी व्यवस्था में दुःसाध्य ही है। प्रजातन्त्र में तो राष्ट्र की स्थिति उस परिवार जैसी हो जाती है जिसकी सारी बहुएं रानियां बन कर एक-दूसरी पर हुक्म चलाने लगती हैं : हू बी राणी, तू बी राणी कुण भरै पलीडा पाणी ? तब भला व्यवस्था आए कहां से ? परिणाम होता है कलह, संघर्ष, फूट और षड्यन्त्र।

भारतवर्षमें आज यही तो हो रहा है। हमारा ईमान और आचार काफेसों में लय हो रहा है, अपने पूर्णरूप में विकसित होने में समय लगेगा। आज जो कानून बनता है कल वही रद्दी की टोकरी में शरण पाता है—कितने अस्थिर हैं हमारे विचार व योजनाएं। व्यवस्था और अनुशासन नाम की वस्तु हम लोगों में है ही कहां ? 'संघे शक्ति कलौयुगे' इसलिए हमें जीवन के हर क्षेत्र में संघ बनाने चाहिए—याने यूनियन बनाने चाहिए। 'पार्टी के बिना मन्त्रियों का जीवन खतरे में, यूनियन के बिना मालिकों और मजदूरों का जीवन खतरे में, फैडरेशन के बिना विद्यार्थियों का अध्यापकों द्वारा शोषण, बिना संघ बनाये मठाधीशों और तथाकथित साधुओं की साधना खतरे में (साध न चले जमात !), और बिना महिला-मण्डल बनाए पुरुषों द्वारा स्त्रियों पर अत्याचार।' कहने का तात्पर्य यह है कि बिना यूनियन बनाए हमारी प्रेस्टिज ही खतरे में है। तब भला राष्ट्र में चेतना कौन प्रवाहित करे ?

पीढ़ी-दर-पीढ़ी स्वामी विवेकानन्द नहीं हुआ करते, हर तन्त्र में चाणक्य जैसे मन्त्री नहीं हुआ करते, और हर काल में विश्वामित्र जैसे गुरु नहीं होते। बात भी सही है। आज मन्त्री लोग अपनी 'तिकड़म' के मोहरे भी ठीक से नहीं जमा पाए हैं, तब भला शासन में कल्याण की बात कौन सोचे, सन्यासी लोग अपनी रजिस्ट्रेशन करवाने के लिए अभी भी 'क्यू' में में खड़े हैं, हमें अपने कर्त्तव्याकर्त्तव्य का भान कराये भी तो कौन, और अध्यापक व व्याख्याता लोग अपने 'रिसर्च वर्क' से ही निवृत्त नहीं हुए हैं तब भला विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं का समाधान करके उन्हें अनुशासन का पाठ पढ़ाए भी तो कौन? हमारे राष्ट्ररूपी शरीरमें चारित्रिक रक्त लाने वाली धमनियां आज हृदय की ओर रक्त को न ले जाकर पेट में ले जा रही हैं।

> राष्ट्र किधर जा रहा है, की दूसरी किश्त पाठकों को भेंट की जा रही है। लेखक के विचारों से जनतापूर्ण तया सहमत है। राष्ट्र की अव्यवस्था इसी से प्रतीत हो रही है कि सर्व साधारण महंगाई की चक्की में पिसे जा रहे हैं हाय अन्न! हाय अन्न!! की चीख पुकार सब ओर से आ रही है। परन्तु किसी के कानों पर जूं तक नहीं रेंगती। क्या अजब खेल खेला जा रहा है। लेखक के विचारों का अध्ययन करें।

आये दिन राष्ट्रीय सम्पत्ति के विनाश के समाचार मिलते हैं। आज कोई बांध या लौह भट्टी का निर्माण हुआ, कल उसीकी मरम्मत हो रही है। सरकारी अधिकारी कहते हैं, 'टूटा तो टूटा। सोच फिर किस बात का। भगवान सही सलामत रखे रूस, ब्रिटेन, अमेरिका और अन्य यूरोपीय राष्ट्रों को। बेचारे मुंहमांगा ऋण दे रहे हैं। चार्वाक भी कह गया है : 'यावद् जीवेत सुखम् जीवेत ऋणं कृत्वा घृतम् पिबेत।' भावी पीढ़ियों की चिन्ता हम क्यों करें !' सरकारी अधिकारियों का तर्क सामयिक और उचित है। आखिर येन केन प्रकारेण देश में समाजवाद की नींव जो जमानी है। बांध टूटने से या लौह भट्टी फूटनेसे समाजवाद को कोई धक्का नहीं लगता।

इसी समाज वाद को देश में व्यावहारिक बनाने के लिये सहकारी समितियों का निर्माण किया गया। जूता बनाने वाले से लेकर जेवर बनाने वाले लोग सहकारिता के झण्डे के नीचे आ जुटे। सरकारी अनुदान के सहारे दिन दूनी रात चौगुनी सहकारी समितियों को पनपाया गया। मन्त्रियों ने अपना बनाये रखने के लिये, और अधिकारियों ने 'ऊपर की कमाई' करने के लिये, 'सहकारिता हमारा जीवन मन्त्र' का नारा दिया। अवकाश प्राप्त सरकारी अधिकारी, राजनैतिक नेता, वकील, पत्रकार और ठेकेदार लोग सहकारिता के समर्थक व पोषणकर्ता बने। साधारण अंशधारियों के हितों के लिये इन लोगों ने आनरेरी कार्य करने का प्रदर्शन किया। किन्तु ऐसे ऐसे उदाहरण पाए गये हैं जहां इन आनरेरी लोगों ने रातों रात सहकारी माल को भूमिगत किया, और दूसरे दिन समिति का विघटन (Liquidation) हो गया। देश में सब जगह यही तो हो रहा है। आज एक सहकारी समिति बनी और कल उसका दिवाला निकल गया। साधारण अंशधारी लोग शिकायत करें भी तो किस से ? रजिस्ट्रार से लेकर कोआपरेटिव इन्सपेक्टर तक का 'पारिश्रमिक' निश्चित किया हुआ है।

लेकिन यह सब न्याय संगत है, क्योंकि हमें जल में कमलवत् रहना है। हम ज्ञानी हैं। हम वेदान्ती हैं। हम जनक और शुकदेव की परम्परा में हैं। हम ब्रह्म हैं, और ब्रह्म कभी बेईमान नहीं होता !! यों भी भारतवासियों का जन्म उपदेश करने के लिये ही तो हुआ है। हम जगत् के आध्यात्मिक गुरु जो ठहरे। द्वैत और अद्वैत के प्रतिपादक जो ठहरे। हमारे व्यवहार में द्वैत है, हमारी विद्या में अद्वैत ! दूसरे के रसोईघर में उड़ते हुए मच्छर तक हमें दिखते हैं, लेकिन हमारी स्वयं की रसोई में भनभनाती हुई मक्खियां भी हमें नहीं दिखतीं।

हम मन, वचन और कर्म की शुद्धता के पुजारी हैं। यही कारण है कि हम स्वतन्त्र प्राप्ति से लेकर आज तक मद्य-निषेध की नीति अपनाये हुए हैं। हम शराब पीना और पिलाना अपराध मानते हैं। लेकिन नये मदिरालय खोलने वालों को लाइसेन्स देना हमारा पहला धर्म है। यानि हम चोर को चोरी करने को कहते हैं लेकिन साथ ही गृहस्वामी को भी सावधान कर देते हैं। धन्य है हमारा जीवन ! आखिर हम कब तक अपने आपको धोखा देते रहेंगे ? प्रचलित अर्थों में आज हमारा न तो कोई आर्थिक व्यक्तित्व ही है और न कोई आध्यात्मिक उपलब्धि ही।

सरकार चाहती है कि देशवासी रेलगाड़ियों में बिना टिकट यात्रा न करें। सरकार का हुक्म सिर ऊपर। साधारण जनता 'सरकार' के नाम से ही घबराती आ रही है। इसलिये यथासम्भव सामान्य लोग टिकट खरीद कर ही रेलगाड़ियों में बैठते हैं। तब भला बिना टिकट यात्रा कौन करते हैं ? टी. टी. ई. लोगों की फौज में वृद्धि की गई। टी. टी. ई. लोगों को पुरस्कृत करने की योजना बनाई गई। लेकिन फिर भी जो बिना टिकट यात्रा करते हुए पकड़े गये वे अपाहिज या भिखारी या उद्दण्ड विद्यार्थी ही थे। टी. टी. ई. लोगों को भी तो 'दुनियादारी' निभानी पड़ती है। वे अपने सम्बन्धियों, स्टेशन मास्टरों और अन्य रेलवे कर्मचारियों व उनके सम्बन्धियों का भला चार्ज कर ही कैसे सकते हैं? भारत में ग्यारह लाख से अधिक लोग रेलवे कर्मचारी हैं। इस प्रकार इन में से यदि चौथाई लोग भी साल में एक बार बिना टिकट यात्रा करें तो तीन लाख 'अदृश्य अपराधी' तो ये ही हो जाते हैं। आखिर रेलगाड़ियां उनकी बपौती (fies) जो ठहरी। उन लोगों की संख्या अलग है जो इन की 'रिकमण्डेशन' पर 'विदाउट टिकट' यात्रा करते हैं। लेकिन व्यवहार में सब चलता है'—सब बाल-बच्चे वाले जो ठहरे। ईमानदार और निःस्वार्थी लोग कुछ विरोध करें भी तो 'यूनियन' का सवाल जो ठहरा। इस प्रकार राष्ट्र में 'तकटातन्त्र' (hooliganism) का प्रसार होता रहता है।

राष्ट्र में आज स्थिति यहां तक पहुंच गई है कि वेतन चुकाने वाले क्लार्क से लेकर विद्यालय में भर्ती करने वाले अधिकारियों तक हरेक का 'बाप-पास का कुछ-न-कुछ'

(शेष पृष्ठ ५ पर)

इतिहास का एक पृष्ठ :

स्वामी दयानन्द और केशवचंद्र के व्यक्तिगत सम्बंध

श्री प्रो० भवानीलाल जी भारतीय एम० ए०
गवर्नमेंट कालिज पाली (राजस्थान)

ब्राह्म समाज के एक नेता बैरिस्टर चन्द्र शेखर सेन के आमन्त्रण पर स्वामी दयानन्द पौष सं० १९२९ (१८७२ ई०) में कलकत्ता गये। सौरीन्द्र मोहन ठाकुर के उद्यान में उनके निवास की व्यवस्था की गई। यहां पर ही सर्वप्रथम ब्राह्मसमाज के तृतीय नेता और अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सुधारक केशव चन्द्र सेन की उन से भेंट हुई। इस का वर्णन करते हुए दयानन्द के प्रसिद्ध जीवनी लेखक देवेन्द्र नाथ मुखर्जी लिखते हैं—'जब बाबू केशव चन्द्र सेन से प्रथम बार स्वामीजी मिले तो उन्होंने स्वामी जी से अपना परिचय नहीं दिया था। बातचीत की समाप्ति पर केशव बाबू बोले—'आप बाबू केशवचन्द्र सेन से मिले हैं ?

दया० हां मिला हूं।

केशव० परन्तु वे तो यहां थे नहीं।

दया० मैं अवश्य मिला हू।

केशव० जब वह कलकत्ते में थे ही नहीं, कैसे मिले ?

दया० आप ही बाबू केशवचन्द्र सेन हैं।

केशव, आपने मुझे कैसे पहचाना ?

दया० जो बात चीत आप से हुई है। वह किसी अन्य की हो ही नहीं सकती।

केशव बाबू स्वामी जी की पुरुष परीक्षा की अपूर्व योग्यता से बड़े प्रसन्न और चकित हुये और वह स्वामी जी के प्रीति सूत्र में बद्ध हो गये।' १

श्री हेमचन्द्र चक्रवर्ती नामक एक अन्य ब्राह्म सज्जन स्वामी दयानन्द को अपना गुरु मानते थे। वे बंगला में ऋषि दयानन्द के साथ २ रह कर उन से योग साधन सीखते रहे। उनकी दैनन्दिनी मे महर्षि दयानन्द के विषय मे जो कुछ अंकित हुआ था वह प्रकाशित हो गया है। इस डायरी के २९ दिसम्बर १८७२ के विवरण मे वे लिखते हैं। केशवचन्द्र सेन से उनका प्रेम हो गया है। पुन: १ जनवरी १८७३ के विवरण में लिखते हैं—केशवचन्द्र सेन ने दयानन्द सरस्वती को लेकर कलकत्ते के विभिन्न स्थानो का भ्रमण किया। पुन: ३ जनवरी को केशव के साथ दयानन्द, ईश्वर चन्द्र, विद्यासागर के घर गये। वहां इन सुधारको में विधवा विवाह, नियोग, बाल विवाह, जात-पात, वृद्ध विवाह आदि के विषय मे विचार विनिमय हुआ। सम्भवत: दयानन्द के विचारों से ही प्रभावित हो कर राजा राजेन्द्र नाथ मलिक के मकान पर केशव सेन ने वेद विद्यालय की स्थापना के लिए एक बैठक बुलाई जिस में कलकत्ता के गण्यमान्य पुरुष उपस्थित थे। ५ जनवरी को प्रसिद्ध पौरस्त्य विद्या विशारद राजा राजेन्द्र लाल मित्र के साथ केशव ने पुन: दयानन्द से भेंट की।

९ जनवरी को केशव के 'लिली काटेज' वाले मकान में स्वामी दयानन्द की संस्कृत में एक वक्तृता हुई जिसे अनेक सम्भ्रान्त व्यक्तियों ने सुना। जनवरी मास में ही ब्रह्म समाज का उत्सव हुआ जिस मे महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर के आग्रह पर स्वामी दयानन्द सम्मिलित हुए। यहां ब्राह्म समाज के सब नेता उपस्थित थे। वेद के विषय मे उपस्थित लोगों से उनका विचार विनिमय हुआ। देवेन्द्रनाथ के पुत्रोके मुखसे वेदमन्त्र सुनकर आप प्रसन्न हुए। २३ फरवरी को गोरा चाद दत्त के घर पर स्वामी दयानन्द का 'ईश्वर और धर्म' पर व्याख्यान हुआ। केशव सेन सभापति थे। बहुत से प्रतिष्ठित व्यक्ति उपस्थित थे। संस्कृत कालेज के बहुत से विद्यार्थियो को साथ लेकर पं० महेशचन्द्र न्याय रत्न सभा में सम्मिलित हुए। उन्होंने ही स्वामी जी के संस्कृत व्याख्यान का बंगला अनुवाद सुनाया। विद्यार्थियो ने आपत्ति की कि अनुवाद मे गड़बड की जा रही है। सम्भवत: इसी अवसर पर केशव स्वामी जी को संस्कृत के स्थान पर हिन्दी में भाषण देने तथा सभास्थल में वस्त्र धारण कर जाने का परामर्श दिया, जिसे उन्होंने प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर लिया। इससे पूर्व वे केवल संस्कृत ही बोलते थे और केवल मात्र कौपीन ही उनका वस्त्र था। यह भी प्रसिद्ध है कि केशव ने स्वामी जी के अंग्रेजी न जानने पर खेद प्रकट करते हुए कहा कि यदि आप अंग्रेजी जानते तो इंगलैंड जाते समय आप मेरे इच्छानुकूल साथी होते। इस पर स्वामी जी ने हंसकर कहा, 'मुझे मेरे अंग्रेजी न जानने का उतना दुख नहीं, परन्तु शोक है कि ब्राह्मसमाज का नेता संस्कृत नहीं जानता और लोगों को उस भाषा में उपदेश देता है जिसे वे समझते ही नहीं।'

२४ फरवरी के लगभग केशव के कालू टोला वाले मकान पर स्वामी जी का भाषण हुआ यद्यपि वक्तृता संस्कृत थी, परन्तु भाषा इतनी सरल थी कि केशव जैसे संस्कृत से अनाभिज्ञ व्यक्ति भी उसे सहज ही समझ गये। केशव के प्रयत्नसे ही ब्राह्म समाज के अन्यान्य नेताओं से भी स्वामी जी की भेंट हुई जिनमें अक्षयकुमार दत्त, राजनारायण बसु, राम तनु लाहरी, प्रतापचन्द्र मजूमदार आदि प्रमुख थे।

कलकत्ते के पश्चात स्वामी की केशव बाबू से दूसरी भेंट दिल्ली में हुई। इस अवसर पर स्वामी जी ने भारत के विभिन्न धार्मिक नेताओ और समाजसंशोधकों का एक सम्मेलन बुलाया। इस में ब्राह्मसमाज के प्रतिनिधि के रूप में केशव चन्द्र सेन और नवीनचन्द्र राय सम्मिलित हुए। स्वामी जी ने देश के इन नेताओ के समक्ष यह प्रस्ताव रक्खा कि हम भारतवासी परस्पर एकमत होकर एक ही रीति से देश का सुधार करे तो देश की दशा सुधर सकती है। परन्तु खेद के साथ लिखना पडता है कि उपस्थित नेताओ के विचारो में सामञ्जस्य नहीं हो सका, और विश्व का यह प्रथम धर्म सम्मेलन असफल रहा। स्वामी जी के एक अन्य जीवनी लेखक स्वामी सत्यानन्द जी ने लिखा है—'कई मौलिक मन्तव्यो मे मतभेद होने के कारण वे सब एकता के सूत्र में सम्बद्ध नहीं हो सके।' यही स्वामी दयानन्द केशवचन्द्र का अन्तिम मिलन था।

हमे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि स्वामी दयानन्द के जीवन चरित लेखको ने तो स्वामी जी और केशव बाबू के व्यक्तिगत सम्बन्धो का विस्तृत उल्लेख किया है, परन्तु केशव बाबू के एकमात्र हिंदी जीवनी लेखक श्री 'भारतीय हृदय' ने अपनी पुस्तक मे इसकी संकेत मात्र भी चर्चा नहीं की है।

★★

१. महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन-चरित भाग १ पृ० २२५ द्वितीय संस्करण सं० २००९ वि०

२. बंगाल में ऋषि दयानन्द के चार मास: हेमचन्द्र चक्रवर्ती की डायरी—वेदवाणी वर्ष ९ अंक ८

१. महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन-चरित भाग १ पृ० २२५ द्वितीय संस्करण सं० २००९ वि०

२. बंगाल में ऋषि दयानन्द के चार मास: हेमचन्द्र चक्रवर्ती की डायरी—वेदवाणी वर्ष ९ अंक ८

राष्ट्र किधर...

(पृष्ठ ५ से आगे)

बंधा हुआ है। गर्ज बावली होती है। हरेक व्यक्ति को अपना 'कैरियर' बनाना है। इसलिये यदि प्रत्येक 'लेबता' को उसका 'पत्रं पुष्पं' न मिले तो हमारी वेतन की स्लिप और प्रार्थना-पत्र सरकारी कार्यालयों की विशालकाय मेजों की यात्रा ही करते रहेंगे।

अत: यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भले ही हमारी राष्ट्रीय आय में वृद्धि हुई हो, लेकिन सामान्यत राष्ट्र का प्रशासक वर्ग भ्रष्ट और पतित हो गया है। जनजीवन में चोरी, रिश्वतखोरी, तस्करी, शराब खोरी व अन्यानेक भ्रष्टाचार के कीटाणुओं को बिखेरने में हमारे देश का प्रशासक वर्ग बहुलांश मे उत्तरदायी है। इसके साथ ही मानापमान के पीछे अन्धे हमारे मिशनरी लोग (मन्त्री, अध्यापक, पत्रकार, उपदेशक) भी कम उत्तरदायी नहीं हैं, वे अपने हर कार्य को राज्य द्वारा सम्मानित व पुरस्कृत देखना चाहते हैं। सही अर्थों में आज हमारा कोई राष्ट्रीय चरित्र नहीं है। और यदि जो कुछ भी है तो वह "दो पैसे की कमाई" द्वारा सचालित है। हम अर्थ के पीछे बावले व उन्मत्त हो गये हैं। दूसरे की पकाई हुई खीर खाने को हम टूटे पडते हैं, लेकिन हमारी खीर की ओर किसी को आख उठा कर भी नहीं देखने देते। हम पूरे भौतिक व्यक्ति बन गये हैं, आध्यात्मिकता व आदर्श हमारे जीवन में धन कमाने के टूल' है We are more a pig and less a person। परमेश्वर मेरे राष्ट्र-वासियों को सदबुद्धि दे ताकि वे दत्तात्रेय और वशिष्ठ की परम्परा को अक्षुन रख सके।

★ वेद का स्वाध्याय, जप और सन्ध्या करने को ब्रह्मयज्ञ कहते हैं।

(गताक से आगे)

इन सबके स्वागत का प्रबन्ध शिवाजी की ओर से हुआ था जिसपर लगभग ५५ लाख रुपया व्यय हुआ था। यज्ञोपवीत और राज्याभिषक काय सम्पन्न करने के लिए शिवाजी ने सात बड बड भवन बनवाये थे। इन बड भवनो के अतिरिक्त अतिथियोके स्वागत और ठहरने के निमित्त ब त से मकान तैयार करवाए थे। एक सभा गह था। यह सभागृह लम्बाई और चौडाई मे बहुत बडा था। इसकी सजावट अत्यन्त मनमोहिनी थी। मुख्य मुख्य स्थानो और दीवारो पर अत्यन्त सुन्दर और चित्ताकर्षक चित्र लगे हुए थे। सभागह मे हजारो ही आदमियों के बठने का स्थान था। जिसपर लगभग ५ करोड रुपया व्यय हुआ था।

यज्ञोपवीत के पूव शिवाजी के और लेवना देवताओ के चार महीने परामश तथा शुद्धि मे बीते अन्त मे सब कुछ निश्चित होने पर पुरोहित श्री प्रभाकरराव महोपाध्याय के पुत्र बल्लभभट्ट के निरीक्षण मे कई दिन महादेव भवानी आदि की उपासना और पूजा की। तब २८ मई को श्री शिवाजी का उपनयन सस्कार हुआ। श्री गागाभट्टने इनका उपनयन सस्कार कराया। श्री गागाभट्ट को ३४ हजार रुपया यज्ञोपवीत सस्कार कराने की दक्षिणा मे प्राप्त हुए। अन्य सब पण्डितो को ४० लाख १५ हजार रुपए दिए गए। उस दिन एक लाख ब्राह्मणों को भोजन कराया गया और सबको एक-एक रुपया दक्षिणा भी दी गई। जिसपर लगभग ६ लाख रुपए व्यय हुए। यज्ञोपवीत सस्कार के दूसरे दिन श्री शिवाजी से तुलादान पाप निवृत्ति के लिए करवाया। तुलादान इसप्रकार हुआ कि तराजूके एक पलडमे शिवाजी बठ और दूसरे मे सोना (स्वण) रखा गया और श्रीशिवाजी के बराबर स्वण तोल कर दीन दु खियों और ब्राह्मणो को बाट दिया गया। क्रम से इसी प्रकार चादी ताबा पीतल सीना जस्त लोहा सन लवण लौंग इलायची पान सुपारी घी शक्कर फल मेवा मिठाई इत्यादि तुलादान में खच हुआ। इस तुलादान में लगभग दस लाख रुपया खच हुआ। तुलादान होने क पीछे कुछ ब्राह्मणो ने शिवाजी से कहा कि सूरत नगर की चढाई के समय आपकी सेना से कितने ही मनुष्य, स्त्री और बच्चों की हत्या हो गई थी अतएव आप इस पाप का भी प्रायश्चित्त कीजिये, प्रायश्चित्त

शिवाजी के यज्ञोपवीत की करुण कहानी

ऐतिहासिक रंगमंच के लिए नवीन खोज

रोचक एव पठनीय

(ले० श्री देशबन्धु जी शास्त्री महोपदशक हैदराबाद)

स्वरूप अठारह हजार रुपया वेशस्थ और कोकणस्थ ब्राह्मणो को दान दीजिए। इस प्रकार श्री शिवाजी को चढाई का भी प्रायश्चित करना पडा।

श्री शिवाजी के यज्ञोपवीत के अवसर पर ६१ सहस्र ब्राह्मण और हजारो दशक चार महीने तक घी हलवा खीर और पूडी इत्यादि माल उडाते रहे जिसपर उपरोक्त कुछ निम्नलिखित व्यय हुआ—

१०००० रुपए गागाभट्ट बुलाने के लिए माग व्यय और एक मास विद्वानो के चर्चा के लिए खर्च।

७००० रुपए श्री शिवाजी ने गागाभट्ट के स्वागत मे व्यय किया।

१०५७५००० सवविद साकल्य पर खर्च हुआ।

९२१००० ब्राह्मणों का माग व्यय।

६६५०७००० लेवता ब्राह्मणो का और दशकोका भोजन व्यय।

५००००००० सभागृह तथा धर्माचार्यो का निवास स्थान पर व्यय।

५५००००० अतिथिस्वागत पर व्यय।

३५००० श्री गागा भट्ट को दक्षिणा दी।

४०१५००० अन्य ब्राह्मणो को दक्षिणा

६०००००० सस्कार के दिन भोजन और दक्षिणा।

१००००००० तुलादान।

१८००० सूरत हिंसा का प्रायश्चित्त

१३८७७९००० कुल व्यय

दुःख होता है कि १३ कोटि ८७ लाख ७९ हजार रुपया व्यय होने पर तथा प्रायश्चित करने पर भी धर्माचार्य श्री गागाभट्ट और लेवता ब्राह्मणों की व्यवस्था से श्री क्षत्रिय स्वामी शिवाजी अपने आपको गायत्री मन्त्र से पवित्र न कर सके।

धन्य हो! महर्षि देव दयानन्द सरस्वती जी महाराज को, जिन्होंने स्त्री तथा मानव मात्र को [illegible] आदि के [illegible] प्रथम सराहनीय साहस किया। तथा मानव मात्र को द्विजो के समान यज्ञोपवीत और वेद पढने का समस्त अधिकार देते हुए वेद का यह उदघोष किया?

यथेमा वाच कल्याणीमावदानि जनेभ्य। ब्रह्म राजन्याभ्या शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय॥ यजुवद २६।२

अथ—परमेश्वर कहता है कि (यथा) जसे मैं (जनेभ्य) सब मनुष्यो (स्त्री पुरुष शूद्र, अति शूद्रादि) के लिए (इमाम) इस (कल्याणीम) कल्याण अर्थात सासारिक और मोक्ष सुख देने हारी (वाचम) ऋग्वेदादि चारो वेदो की वाणी का (आवदानि) उपदेश करता हू। वसे तुम भी किया करो। यहा कोई ऐसा प्रश्न करे कि जनेभ्य शब्द से द्विजो का ग्रहण करना चाहिए। क्योकि स्मृत्यादि ग्रन्थो मे ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य ही को वेदो के पढने का अधिकार है ऐसा लिखा है। स्त्री और शूद्रो का नहीं। तो इसी के निराकरण के लिए। भगवान मन्त्र मे आगे नाम निर्देशपूवक वर्णन करते हुए कहते है कि हमने (ब्रह्म राजन्याभ्या) ब्राह्मण क्षत्रिय (अर्याय) वैश्य (शूद्राय) शूद्र और इन्हो के (स्वाद) अपने भृत्य वा स्त्रियादि (अरणाय) और अरण्यो में रहने वाले अति शूद्रादि के लिए भी वेदो प्रकाश किया।

★श्री शिवा जी—नन्दकुमार शर्मा कत A History of the Maratha People बेरडा किनकेट और रावबहादुर दत्तात्रय बलवन्त की पुस्तक the life of Shivaji Maharaj श्री ग्राट डफ साहब कृत। महाराष्ट्र भाषा के गीतों (जिन्हें पवाड कहते हैं) प्रो० यदुनाथ सरकार कृत पुस्तक। मराठ्याच्या इतिहासाची साधने राजवाड कृत। मराठी रियासत—सरदेसाइ कृत इत्यादि पुस्तकों से सहायता मिली है।

सो हमारा निवेदन है कि जब शूद्रों कोवेद पढने का अधिकार है तो इस से वेद पठनार्थ यज्ञोपवीत का धारण करना भी सिद्ध हो जाता है। क्योंकि बिना यज्ञोपवीत के वेद पढने का वेद मन्त्रो के उच्चारण का निषेध है अतः मराठा क्षत्रिय है मराठों को वेद पढने का तथा यज्ञोपवीत धारण करने का भी अधिकार सिद्ध हो जाता है।

हे तपोधन ऋषि सन्तान, आर्य वीरो! सनातन (पौराणिक) धर्म के कुपुत्र वेद धम शास्त्रादि द्वारा बनाये गये वण व्यवस्था तथा यज्ञोपवीताधिकार के महल को जलता रहे हैं। परस्पर के भेदभाव जात-पात की आग भारत के कोने कोने मे भी आज तक सुलगा रहे हैं। किसी ने सत्य कहा है कि—

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

ऐ आर्य वीर! गौतम कपिल, एवम दयानन्द के रुधिर को लज्जित न करो! आज भी कुछ वेदुरदर्शी नामधारी धर्माचार्य और मिथ्या मठ धारी मराठों के यज्ञोपवीत का विरोध करते हैं। इस प्रकार वैदिक धर्म रूपी कल्प वृक्ष की जड को खोखला करने मे लगे हुए हैं। ब्राह्मणों ने देश धम तथा जाति का विनाश कर डाला है। यह जाति बडी स्वार्थी और अहङ्कार रखने वाली है। जिस समय भारत वष अधोगति के महागर्त मे गिर पडा था और वण व्यवस्था भी लुप्त हो चुकी थी ऐसे घोर समय मे आपकी ही जाति के एक बालक कौपीन धारी दयानन्द जी ने दण्ड कमण्डलु हाथ मे ले विद्या और तपो बल के प्रताप से मानव मात्र के लिए द्विजो के समान यज्ञोपवीत का विधान किया है। क्रमशः

जिला वेद प्रचारिणी सभा, होशियारपुर

सब आय समाजो तथा आय सस्थाओं को सूचित किया जाता है कि 'जिला वेद प्रचारिणी सभा होशियार पुर की प्रचारक मण्डली (श्री प० देव व्रत जी शास्त्री, श्री प० राम देव जी भजनोपदेशक मा० पुरुषोत्तम लाल जी) सारे जिला होशियार पुर में वेद प्रचार कर रही है। अतः सब सस्थाए लाभ उठाए।

[illegible]

नवजवानों की सुध लो नं० ४

(मा० हरिचन्द गुप्त मन्त्री आर्यसमाज जाखलमंडी हिसार)

मैं आप की सेवा में नव जवानों की सभ्यता, सदाचार, खान-पान, रहन-सहन आदि कुछ लिखकर बातें वर्णन कर रहा हू कि यदि नवयुवक बच्चों के शरीर की मशीनरी ठीक ही जावे तो नवजवानों का जीवन एक एक अनमोल मोती बन जाये और वे देश की राष्ट्र की उन्नति में सहायक ही नहीं किन्तु अग्रणीय सिद्ध हो सकते है और उनकी शक्ति के सामने किसी गैर देश का दुश्मन भी आख उठा कर नही देख सकता, वह मशीनरी है क्या ? जिस का बच्चो में अभाव है, वह मशीनरी है "ब्रह्मचर्य" को, आओ ! तनिक इसके अर्थों पर विचार करें ब्रह्म—परमात्मा, चर्य—विचरना, अर्थात् परम-पिता परमेश्वर के गुणो का चिन्तन करते हुए उसी मे रत रहना और उसकी आज्ञाओ का पालन करते हुए उसे प्राप्त करने का यत्न करना, ब्रह्मचर्य धारण किये बिना मनुष्य जीवन, जीवन नही है वो तो केवल मात्र ससार मे सब वस्तुओ का भोग भोगता और खाता-पीता और चलता-फिरता मनुष्य है परन्तु ब्रह्मचर्य का वह बल, वह तेज, वह नूर लुप्त है। जीवन दु:खदाई है "ऋषिवर लिखते हैं कि जो ब्रह्मचर्य को अख्तयार करके नष्ट नही करते। वे सब प्रकार के दु:खो से रहित होकर धर्म अर्थ काम और मोक्ष को प्राप्त होते हैं।

यदि नव-जवानों मे २५ वर्ष का न्यूनतम पूर्ण अखंड ब्रह्मचर्य भी रहे जो बपु नाम का है और वे संयम मे रहे अपनी आत्मा को शुद्ध पवित्र बना और ब्रह्मचर्य की महिमा जान उसपर आचरण करे और इस बीच पौराणिक अवैदिक ग्रन्थो से दूर रहकर सत्य-सनातन आर्य ग्रन्थो का स्वाध्याय करे और ट्रैक्ट आर्यसमाज क्या है वह भी पढे ताकि कुछ आर्यसमाज बाबत जान सकें ऐसी दिन चर्या करने से वे अपनी आयु ८० वर्ष तक की निरोग बना सकते है। ब्रह्मचर्य की महानता महाभारत युद्ध के हीरो भीष्मपितामह जी को कौन नही जानता जिन्होंने युद्ध की समाप्ति तक बाण शय्या पर रह कर जब तक सूर्य उत्तारायण मे नहीं आता मैं प्राण न छोड़ूगा ससार को दिखला दिया कि एक ब्रह्मचारी अपनी मौत पर भी विजय पा सकता है और कितनी शक्ति है ब्रह्मचर्य मे आप जगत गुरु महर्षि दयानन्द की जीवनी पढे वह बाल ब्रह्मचारी ऋषि दयानन्द उदयपुर के राणा को ब्रह्मचर्य का एक छोटा-सा करिशमा दिखाते हैं जबकि वे राणा की बग्गी को पीछे से एक हाथ से रोक कर खडे हो जाते हैं मजाल क्या बग्गी एक कदम भी आगे चले घोड़े चाबुक खा २ कर हार जाते हैं परन्तु एक पग नही बढते यह सारी शान यह अद्‌भुत खेल ब्रह्मचर्य का ही है।

सारा संसार ही नवयुवको पर आधारित है वे जिधर चाहे जैसा चाहे वेसा ही राष्ट्र को कर और लेजा सकते हैं जैसा की आपको स्मरण होगा गत वर्ष भारत पाक युद्ध मे हमारे भारती नवयुवक वीरो ने पाकिस्तान के वे छक्के छुडाये कि वे इस युद्ध को मरण पर्यन्त याद रखेंगे, यह तो पाक की खुशकिस्मती कहो या और कुछ वरना सारा ही पाकिस्तान भारत बन गया होता तो यह सारी करामात नवजवानो की ही कहिये।

आदि सृष्टि मे भी परमेश्वर ने जवान जवान जोडो के रूप मे ही यह सारा ससार रचा है बिना युवको के यह जगत आगे नही चल सकता था नाही बच्चे नाही बूढे जगत को आगे चला सकते थे यह तो केवल नव जवानो को ही परमेश्वर ने सामर्थ्य दी है।

ब्रह्मचर्य की मार्मिक शक्ति शरीर के रोम रोम मे ब्रह्मचारी में छिपी है जिसका मेरा भी अपना अनुभव है जब मैं आर्य हाई स्कूल लुध्याना मे आठवी नवमी कक्षा मे पढता था अभी अविवाहित ही था छुट्टियो मे घर पर आया हुआ था, एक बार घर मे किसी स्त्री को पुस्तक मे से पाठ पढा रहा था पढाते पढाते उस स्त्री के माथे का एक बाल वायु के एक जरा से झोके मे मेरे माथे से छू गया उस एक बाल का छूना था कि मारे शरीरमे बिजली का वह अलौकिक करण्ट आया कि मेरा सारा वदन उस की रौ मे आ गया मुझे कुछ क्षण के लिये सतब्ध किये रखा, सो आप अनुमान लगाये कि यदि नारी का एक तुच्छ बाल छू जाने से ब्रह्मचारी की यह दशा होती है यदि उसका सारा शरीर छू जाय तो समझ ले कि उस का क्या परिणाम होना होगा।

परन्तु आज कल नारियो को नवयुवको को यही कुछ चाहिए, विषय वासना, ऐशोइशरत, फैशनपरस्ती फिल्मी गायन और नावलो का पाठ, जिसने जीवन की शृखला ही तो बिगाड दी। अपना और घर बार तथा देश का सर्वस्व नाश हो जाये कोई बात नही-हम देखते हैं कि कितने नवयुवक ब्याह कराकर तुरन्त मा-बाप से पृथक होना पसन्द करते हैं वे उन की कोई सेवा करना नही चाहते बरन इच्छा यह बनी रहती है कि हम दोनो ही घर मे ऐश ले जब नवयुवको की ऐसी भावनायें है वे कैसे अपनी कामनायें माता-पिता से पूर्ण कर अपना सुधार कर सकेंगे कदापि नही ! कैसे उनके ऋण से उऋण होकर भविष्य उज्जवल बना सकेंगे यह असम्भव ही नही बल्कि कृतघ्नता है, भला माता-पिता अपनी सन्तान को कैसे नेक आज्ञाकारी बनाये जबकि मा-बाप की सुनने को तैयार ही नही, ऋषि दयानन्द अपने वेद भाष्य मे माता पिता को उपदेश देते हुए लिखते है कि 'अपनी सन्तान को यथा योग्य पालन, शिक्षा से विद्वान करके सदा धर्मात्मा और पुरुषार्थी बनाना, बडो का मान और अपने अन्दर दूसरो की सहायता का भाव रखना, फिर मा बाप सन्तान को उपदेश करे कि हमारे जो अच्छे काम हैं उनका ग्रहण और जो बुरे काम हो उन्हें कभी न करना आगे चल कर स्वामी जी लिखते हैं कि जिस देश मे यथायोग्य ब्रह्मचर्य विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार होता है वही देश सौभाग्यवान होता है यदि हम महर्षि दयानन्द की रची पुस्तक व्यवहार भानु का कुछ भी आचरण करते तो हमारे देश से आज कभी का भ्रष्टाचार, चरित्रहीनता, अनाचार और दुर्व्यवहार समाप्त हो गया होता हम सुखी होते यह दुर्दिन देखने को नसीब न होते।

परन्तु यह दुर्दिन कैसे टलने ? जबकि हमारे ऊपर पश्चमी सभ्यता ने अपनी छाप लगा रखी है हमा एक २ नवयुवक पश्चमी तहजीब मे ग्रस्त होकर और दो चार शब्द अग्रेजी के पढ कर अधार्मिक और नास्तिक बन कर वैदिक आर्ष ग्रन्थो से ऐसे कोसो दूर जा रहा है जैसे अग्नि से हिसक जानवर। अपने देश की सस्कृति और धर्म को तिलाजली देने पर उतारु हैं, भाईओ ! यह तो राक्षस वृत्ति अपनाना है और राक्षस धर्म का प्रचार करना है, सभी राजा रावण के समर्थक बनने चले जा रहे है कोई तो राम राज्य लाने वाला हो, इन्हे यह पता नही, कि जीवन तो प्रकाश में ही है अन्धकार तो मृत्यु ही है, इसीलिए यजुर्वेद मे प्रार्थना है कि 'असतो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतगमय।' प्रकाशमय जीवन तब होगा यदि हम (इन्द्र वर्धन्तो अप्तुरा. कृण्वन्तो विश्वमार्यम् अपघ्नन्तोऽराव्णा') ऋग० कांड १, सूक्त ६३ मन्त्र ५ के अधार पर अर्थात सकल जगत मे प्रभु के नाम का विस्तार करते हुए सारे ससार को आर्य बनाते हुए दुष्टों को सुमार्ग पर लाते हुए आगे बढे चले। यही वेद का आदेश है इसी पर चले और चलाये। ★★

भूल सुधार

आर्यजगत के पाठकों से निवेदन

आर्यजगत के ३० अक्तूबर और ६ नवम्बर के अक बन्द रहेगे उसके बाद १२ नवम्बर को 'ऋषि निर्वाण अंक' तीन सप्ताह का सम्मिलित अक प्रकाशित होगा। पाठक नोट कर ले।

—व्यवस्थापक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा गोवध के विरुद्ध सामूहिक सत्याग्रह करेगी

नई दिल्ली, १७ अक्तूबर—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने गोवध बन्द कराने के लिए सामूहिक सत्याग्रह करने का फसला किया है। अतरग सभा की कल यहा हुई बैठक मे यह आदोलन चलाने के लिए ९ सदस्यीय कमेटी स्थापित की गई है जिस के प्रधान श्री प्रतापसिह, सयोजक लाला रामगोपाल शालवाले, उपप्रधान श्री प्रकाशवीर शास्त्री एम. पी और सर्वश्री पडित नरेन्द्र (हैदराबाद) सोमनाथ मरवाहा, उमेशचन्द्र सनातक, ओमप्रकाश त्यागी और बिशम्भर शर्मा सदस्य है।

अतरग सभा ने एक प्रस्ताव द्वारा सब आर्य समाजो को इसमे पूर्ण सहयोग करने और सत्याग्रहियो की सूचिया सभा को भेजने के निर्देश दिये है। दीवान हाल आर्यसमाज मे २३ सत्यग्रही कैम्प खोल दिया जाएगा। एक अन्य प्रस्ताव मे स्वामी रामचन्द्र की दशा पर चिंता व्यक्त की गई।

जुलाना मण्डी में वेद प्रचार

(श्री प्रभुदयाल जी आर्य प्रभाकर द्वारा)

तहसील जींद की जुलाना मण्डी में ७ से १० अक्तूबर तक आर्य प्रतिनिधि सभा के भजनोपदेशक तथा उनकी मण्डली ने वेद प्रचार किया।

इस कार्य में पं० घासी राम जी, संचालक आर्य पाठशाला जुलाना, श्री ला० जगन्नाथ जी आर्य और श्री प्रकाश जी आर्यवीर ने विशेष सहयोग देकर सभा से सहानुभूति प्रकट की है।

इस अवसर पर इन सज्जनों के पुरुषार्थ से मण्डी में निम्न राशि सभा के वेद प्रचार के लिए एकत्रित की गई।

[illegible] जगन्नाथ गंगा बिशन जी	५३/-
[illegible] लाल, आत्माराम जी	१६/-
[illegible] राम, बंसी लाल जी	१५/-
[illegible] दास जी [illegible]	११/-
,, ला० रामचन्द्र, जय नारायण जी	११/-
,, ला० अर्जुन देव जी	५/-
,, ला० मदनलाल जी पत्थर वाले	५/-
,, भगवानदास, सीमूराम जी	५/-
,, कृपा राम स्योन	५/-
,, पूर्ण चन्द्र बालक राम जी	५/-
,, सीता राम बाल किशन दास जी	५/-

इसके अतिरिक्त ३१/- अन्य सज्जनों से एकत्रित हुए। सभा इस पुरुषार्थ के लिए प्रभु दयाल व उनकी पार्टी तथा सहायक महानुभावों की अति कृतज्ञ है।

आर्यसमाज दयालपुरा, करनाल

वार्षिकोत्सव ७ से ९ अक्तूबर को बड़ी धूम-धाम से डी. ए. वी. महिला कालेज के विशाल प्रांगण में सम्पन्न हुआ, जिस में नगर की जनता एवं देहातों की जनता ने भारी संख्या में भाग लिया। अनेक विद्वानों के सार गर्भित व्याख्यानों द्वारा तथा मनोहर भजनों द्वारा जलसा सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। —अमरनाथ

मन्त्री समाज

समा[illegible]

वेद प्रचार मंडल जालन्धर का निर्वाचन

१८ सितम्बर रविवार १९६६ को वेद प्रचार मंडल जालन्धर का निर्वाचन निम्नलिखित ढंग से हुआ।

प्रधान—श्री [illegible] जी [illegible], उप-प्रधान—श्री [illegible] जी, मन्त्री—[illegible] प्रभाकर, उपमन्त्री—श्री [illegible] कोषाध्यक्ष—श्री [illegible] जी।

—मन्त्री [illegible]

वेदप्रचार मंडल जालन्धर

आर्यसमाज मल्हारगंज इन्दौर—२

रविवार दिनांक ९-१०-६६ को प्रातःकाल समाज मन्दिर में पंजाब प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प्रो० रामसिंह जी के मार्मिक व्याख्यान के पश्चात एक शोक प्रस्ताव श्री हासानन्द जी की मृत्यु का पारित किया गया परम-पिता परमात्मा से प्रार्थना की गई कि वह दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें। तथा उनके शोक संतप्त परिवार को इस दुःख को सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

—रामप्रकाश बंसल

मन्त्री समाज

आर्यों का उपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र

(श्री सत्यव्रत राजेश शास्त्री, एम.ए.)

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार आर्यों की अपनी संस्था है। यह आर्योपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र है, जहां मैट्रिक अथवा उससे [illegible] छात्रों का प्रवेश होता है तथा चार वर्ष का पाठ्य क्रम है। यहां पंजाब, उत्तरप्रदेश, [illegible], मैसूर, आंध्र, महाराष्ट्र, [illegible], राजस्थान आदि प्रांतों के छात्र वैदिक धर्म का उपदेश देकर जनता में सुख शांति का संचार करने के लिए प्रशिक्षण ले रहे हैं। इसके अतिरिक्त पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, केरल, [illegible] तथा महाराष्ट्र में यहां के स्नातक उपदेशक, पुरोहित, अध्यापक एवं आचार्य पदों पर नियुक्त हुए वैदिक धर्म के प्रचार एवं भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति के प्रसार में संलग्न हैं। इस समय यहां ५० के लगभग छात्र प्रशिक्षण ले रहे हैं जिन में आदिवासी [illegible] वाले छात्रों की भी पर्याप्त संख्या है।

विभिन्न भाषा एवं बोली वाले छात्रों का यह संगम ईश्वर की कृपा, आर्यों के सहयोग तथा प्रि० [illegible] जी के अथक परिश्रम से उन्नति पथ पर अग्रसर हो रहा है। इस वर्ष नवीन छात्रों के प्रवेश से तथा भोजन, वस्त्र, तेल, साबुन, औषध, प्रातःराश आदि का प्रबन्ध विद्यालय की ही ओर से होने के कारण वैदिक संस्कृति के प्रेमियों पर विशेष भार आ गया है। इस समय शीतकाल के लिए २० कम्बल, ३० दर्री, २४ रजाई तथा पहनने के अन्य वस्त्रों की आवश्यकता है। अतः आप सबकी विशेष सहायता की अपेक्षा है। आशा है आप सब इस महान् संस्कृति-उत्थान-यज्ञ में अपनी आहुति देनी न भूलेंगे।

[illegible]

[illegible]दिक साम्राज्य [illegible] [illegible]पना के बिना [illegible] मानवता खतरे में

(श्री मंत्री [illegible] आर्यसमाज विनय नगर देहली)

विश्व के मानव समाज में सुख शांति और वैदिक साम्यवाद के लिए वैदिक साम्राज्य की स्थापना में [illegible] लग जाने का हम महाव्रत धारण करें।

आर्यसमाज विनयनगर देहली की एक सभा में भाषण देते हुए वेद [illegible] विद्यालय निर्माण समिति, दिल्ली के मन्त्री वेद पथिक पं. [illegible] जी आर्य ब्रह्मचारी ने विश्व के समस्त [illegible], [illegible] और [illegible] के मानने वालों से, [illegible] राम और योगीराज कृष्ण महाराज के उपासकों से विश्व वंदनीय महर्षि दयानन्द के भक्तों के नाम मार्मिक अपील की है कि सभी संगठित होकर वैदिक युग के निर्माण में जुट जाएं।

वैदिक युग का निर्माण करो

वैदिक युग के निर्माण के बिना धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सुख की सिद्धि का साधन प्राप्त नहीं होगा। विश्व का मानव समाज आस्तिक बने इसके लिए परम आवश्यक है कि हम अपने जीवन का एक आदर्श बनाकर विश्व उपकार में अपने जीवन को लगा दें।

श्री ब्रह्मचारी जी ने आज परमात्मा के साक्षात्कार विषय पर अपना महत्वपूर्ण मार्मिक हृदय ग्राही भाषण देते हुए यह कहा है कि मनुष्य इसी जीवन में संयम सदाचार के द्वारा साधना और समाधि के द्वारा कर्मयोगी बनकर जीवन मुक्त होकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि को प्राप्त कर अमर बन सकता है। श्री ब्रह्मचारी जी ने विश्व की समस्त आर्य समाजों के आज यह संदेश प्रसारित किया है कि सभी आर्य भाई-बहिनें, गो-रक्षा जैसे महायज्ञ की सफलता में जुट जायें। श्री वेद पथिक जी ने देश के बावन लाख साधु-महात्माओं से, सनातन धर्म जगत से, जैन समाज और सिख गुरुओं, संतों से अपील की है कि सभी संगठित होकर सर पर कफन बांधकर भारत के समस्त जेलों को भर देने के लिए आज संकल्प धारण करें।

मुद्रक व प्रकाशक प्रो० वेदप्रकाश मलहोत्रा एम. ए. आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित स्वामित्व—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे | वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६, अंक ४७) ५ मार्गशीर्ष २०२३ रविवार—दयानन्दाब्द [illegible]० नवम्बर १९६६ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तयः

पवमान धारय रयिम्

हे पवमान ! सर्व-व्यापक परमेश्वर ! आप पवमान हैं, सबको पवित्र करने वाले हैं। कृपा करते हुए रयिम्-ऐश्वर्य को, धन-धान्य आदि को धारय-मुझ में धारण करावे। आपकी कृपा से मैं तथा हम सब राय वाले, धन-सम्पदाओं वाले बन जावे।

महो नो राय आभर

हे परमात्मन ! नः—हमारे लिए महः—बडा रायः—धन-धान्य का भण्डार आभर-प्रदान करें। प्रभो ! आप वैभव के स्वामी हो, धनो के स्वामी हो। इसलिए कृपा करो, हमें भी धनशाली बना दीजिए। धनपति होवे।

पवमान जहि मृधः

हे पवमान् ! सबको पवित्र कर देने वाले पितः ! हमारे जो और जितने भी मृधः—शत्रु है, विरोधी हैं, हिसा करने वाले घातक लोग है। जिनसे सारे समाज के जीवन को हानि होती है। इन सब को जहि नष्ट कर दीजिए। समाप्त कर दें।

रास्वेन्दो वीरवद्यशः

हे इन्दो ! परमेश्वर देव। हमे रास्वप्रदान करें वीरवत्—वीरता भरी सन्तान तथा वीर सन्तति से भरा यशः—यश कीर्ति प्रदान करें। हम वीर पुत्रो तथा यश वाले बने रहे।

सा म वे द से

वे दा मृ त

हे इन्द्र ! अपने शस्त्र उठाओ

ओ३म् उद्धर्षय मघवन्नायुधान्युत्सत्वनां मामकानां मनांसि । उद्वृत्रहन्वाजिनां वाजिनान्युद्रथानां जयतां यन्तु घोषाः ॥

साम० उत्तर० अ० २ खं० १ मं० १

अर्थ :—हे इन्द्र—वीर राजन् व सेनापते ! आप (उद्धर्षय) ऊचा करो (मघवन्) इन्द्र ! (आयुधानि) शस्त्रो को व युद्ध के साधनो को और (सत्वना) वीर पुरुषो के (मामकाना) मेरे (मनासि) मनो को। हे (वृत्रहन्) शत्रु को नाश करने वाले इन्द्र! (वाजिना) अश्वो के (वाजिनानि) वेगो को (रथाना) रथो के (जयता) विजय करने वाले (उद्यन्तु) ऊचे उठें (घोषाः) जयघोष व ध्वनियां।

भाव यह है

हे राष्ट्र के नायक ! तथा सेना के नेता ! आप इन्द्र हैं। यह सारा राष्ट्र आप का ही ऐश्वर्य है। आप इस के रक्षक हैं। इस लिए आप का यह कर्तव्य है कि जिस देश की सत्ता को आपने सम्भाला है। उस पर आक्रमण करने वाले या उसे हानि पहुचाने वाले जो भी शत्रु हैं—उनका नाश करने के लिए अपने तेज युद्ध के शस्त्रों को तैयार रखो। संग्राम के तमाम साधनो को जुटाते चलो। वीरो के मन मे वीर भावना भरते रहो। अश्वों की गति तेज रखो। युद्ध यानो को प्रस्तुत करो। विजय के जयघोष भी ऊचे उठते रहे। कोई भी शत्रु राष्ट्र का विरोध न कर सके। आपके होते हुए राष्ट्र विजयी हो। संग्राम मे काम आने वाले जितने भी शस्त्र व रथयान आदि साधन हो वे विजय प्राप्त कराने मे सहयोगी बने। चारो ओर योद्धा वीरो के प्रसन्नता से जयघोषों की ऊची ध्वनि सुनाई देती रहे। हे नायक ! आपके नेता होते हुए सारी सेना विश्वास से शत्रुओ पर आक्रमण करके उनको पराजित करने वाली बनें। आपके स्फूर्ति बढ़ाने वाले उत्साहवर्द्धक वचनों से सैनिक वीरों के मन वीरता के भावो से भर जावें। इस अवस्था में शत्रु का क्या हौसला कि वह दम मार सके।—सं०

ऋषि दर्शन

व्यापकं शान्तस्वरूपम्

वह ब्रह्म व्यापक है, सर्वव्यापक है। सारे चराचर विश्व में ओत-प्रोत है तथा वह शान्तस्वरूप है। विश्व के सन्तप्त प्राणियो को उसी से शान्ति प्राप्त होती है। उसी सर्व-व्यापक ब्रह्म की उपासना से जीवन शान्त होता है।

प्राणस्यापि प्राणम्

वह परमात्मा प्राण का भी प्राण है। जिस प्रकार हमारे भौतिक शरीर को आत्मा प्राण चलाते व जीवन देते है। वह परमात्मा सारे विश्व के है। उसी के नियम में विश्व कार्य करता है।

पूज्य सर्वेभ्यो महत्तरम्

वह ब्रह्म सब का पूज्य है, पूजा के योग्य है। वही सब से महान है, वही परमात्मा सब से पूजनीय है। उसके स्थान पर और किसी की भी पूजा नही करनी चाहिए।

वयं सततम् उपास्महे

हे प्रभो ! हम सदा आपके उपासक बन कर आप की ही उपासना करते रहे। आपके बिना हमारा मस्तक और कही भी न झुके। आप हमारे उपास्यदेव है।

भा ष्य भू मि का से

अधिष्ठाता—प्रो० वेद प्रकाश एम० ए०(अंग्रेजी तथा हिन्दी) सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शा

आज हम संसार की ओर देखते हैं तो मानव मानव बनने के लिए बहुत ही परिश्रम कर रहा है। परन्तु उसको पता नहीं लग रहा है कि मैं क्या बनता जा रहा हूं। मनुष्य की भावनाएं बहुत ही अच्छे तथा मोक्ष को प्राप्त करने वाली होती हैं। उसके ऊपर आचरण कर मनुष्य बनना बहुत ही कठिन है। वेद कहता है "मनुर्भव" अर्थात् मनुष्य बन। वेद का कितना सुन्दर उपदेश है। संसार के सभी मानव, मानव बने दानव नहीं। और मनुष्य भी जानता है कि यह जो मानव चोला है यह बहुत ही शुभ तथा अच्छे कर्म करने के पश्चात ही मिला है। किसी कवि ने बहुत ही सुन्दर शब्दों में कहा है— 'कदाचित लभ्यते जन्तुर्मानुष्यं पुण्य-संचयात्'' अर्थात् यह शरीर बहुत पुण्य के सचय से प्राप्त हुआ है। ऐसी सुन्दर काया को पुरुष सासारिक उपभोगो में फस कर अपने जीवन को नाश कर देता है। वेद भगवान् स्वय कहते है—''तेनत्यक्तेन भु जीथा: अर्थात् इह लोग की भोग्य वस्तु त्याग भाव से भोगो तभी आप को सुख प्राप्त होगा। और एक साधन है सुख प्राप्त करने का वह है शुभ कर्म। जैसे कर्म करेगा वैसे ही फल पावेगा क्योंकि कहा है ''अवश्यमेव भोक्तव्य कृत कर्म शुभाशुभम्'' अर्थात्—किये हुए कर्मो को अवश्य ही भोगना पड़ता है।

एक किसान है अपनी जमीन को अच्छी प्रकार से मशागत (परिश्रम) करके यह अनुभव करता है कि यदि वर्षा आदि ऋतु के अनुसार हो तो फसल बहुत ही बढ़िया आयेगी। आगे वैसा ही हुआ उस किसान का जीवन आनन्द में चला गया। यदि वह अपनी जमीन मे अच्छी प्रकार मेहनत न करता तो अधिकान्न को प्राप्त तथा सुख का अनुभव नही करता। ठीक इसी प्रकार मनुष्य चोला है। जिस प्रकार मनुष्य कर्म करेगा उसी प्रकार से उसको फल मिलेगा। आप तुलसीदासजी के शब्दो मे पढ़िये—

तुलसी काया खेत है
मनवा भयो किसान।
पाप पुण्य दो बीज है
जो बोये सो ले निदान॥'

मनुष्य जिस समय ससार मे आता है उस समय मुट्ठी बाधकर माता के गर्भ में आता है। और यहा से जब प्रस्थान होता है तो खाली हाथ जाता है। अतः मानव को सोचना चाहिए

धार्मिक चर्चा—

मनुष्य का निर्माण

(ब्र० कर्मवीर जी 'आर्य' विद्या-विधि दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार (पंजाब)

कि हमारे साथ क्या चलेगा? हे मनुष्य! अपने साथ तो धर्म एक ही चलेगा, अन्त का वही साथी है। संसार के सभी भोग्य वस्तु तथा धन, सम्पत्ति, ऐश्वर्य, पुत्र, पौत्री, पत्नी आदि यही रहने तथा श्मशान तक के ही है। अतः हे मानव! अब तो जाग—

जब हम इतिहास का आद्योपान्त अध्ययन करते है तो हमें ज्ञात होता है कि (मैं, मैं,) 'अहं' 'अहं' करके बहुत चले गये हैं। यह सारी वस्तुए मेरी ही हैं। परन्तु अन्त में कुछ भी नहीं। संसार के लोग मोह मे फंसकर अपने सच्चे स्वरूप को भूल जाते है। इतिहास प्रसिद्ध है—आज हम श्रीराम तथा रावण का नाम सुनते हैं, 'राम' का ही नाम अमर है। इसी प्रकार अनेक उद्धरण है जिन से कि हमे ज्ञात होता है। मनुष्य की गिरावट अधिकतर काम तथा मोहादि से होती है।

एक बार की घटना है—जिस समय राजा भोज बालक अवस्था मे थे उसी समय उनके पिता का स्वर्गवास हुआ। भोज के पिता मृत्यु से पूव अपने भाई मुञ्ज को बुलाकर कहते हैं कि हे मुञ्ज आप इस राजगद्दी को सम्भालो। और जब यह सन्तान (राजा भोज) राज्य करने योग्य हो जाए उस समय राज्य दे देना। यह सन्देश राजा भोज के पिता ने मुञ्ज को दिया। भविष्य मे राजा भोज को शिक्षार्थ गुरुकुल भेज देते है। और वह गुरुकुल मे अध्ययन करते हैं। राजा भोज के चाचा मुञ्ज के मन मे राजगद्दी पर मोह हुआ। वह मन ही मन मे सोचने विचारने लगा यदि भोज को मार डाला जाए तो राज्य मेरा हो जाएगा। यदि मेरे कार्य मे बाधा है तो भोज ही है। ऐसे इस धन, ऐश्वर्य, तथा लोभ के कारण उसके मन मे कपट की भावना पैदा हुई, यही आशाएं मन्त्री के सम्मुख रख कर चाचा मुञ्ज आदेश देते है—जाओ! गुरुकुल, और उसको जगल में मारकर उसकी आख ले आवो। राज्य मन्त्री के लाख समझाने पर भी मुञ्ज नेलोभ वश मन्त्री को भेज दिया। मन्त्री रथ लेकर गुरुकुल जाता है और आचार्य से कह कर राजा भोज को रथ में बिठा कर जंगल की ओर ले जाता है। बहुत दूर जाते हैं तो भोज पूछते हैं—

इधर कहां ले जाओगे? मन्त्री जी कहते हैं—आया है स्थान रथ से उतरो आपका वध करना है। उक्त कही बातें मन्त्री जी कहते हैं—राजा भोज मरने के लिए तैयार होते है परन्तु मेरा एक सन्देश है वह दे देना—राजा भोज जी सन्देश लिखते हैं। मन्त्री जी का हृदय पिघल आता है। इतना सुन्दर, गुणवान, बालक को किस प्रकार वध किया जाय। उसको रथ में बिठा कर रास्ते में किसी प्राणी को मार कर आख ले लेता है। उस भोज को अपने घर रख कर मन्त्री जी अपने राज्य-स्थल पर पहुचते हैं। इधर चाचा मुञ्ज इसी राह में था। जब मुञ्ज पूछता है—जिस समय आप ने राजा भोज का वध किया उस समय कुछ सन्देश आदि दिया है क्या? मन्त्री जी वही रक्त से अंकित किया हुआ सन्देश पेश करते है—वह सन्देश इस प्रकार है—'मान्धाता च महीपतिः कृतयुगा-लंकार भूतो गतः।
सेतुर्येन महोदधौ विरचितः
क्वासौदशास्यान्तकः।
अन्ये चापि युधिष्ठिर प्रभृतयो
याता दिवं भूपते।
नैकेनापि समगता वसुमती
मुञ्ज त्वया यास्यति॥
भोज प्रबन्ध

अर्थ—सतयुग का आभूषण स्वरूप मान्धाता चला गया, जिन्होने समुद्र पर पुल बान्धा था, वे रावण विनाशक श्री राम भी अब कहा है? हे राजन! और भी युधिष्ठिर आदि राजा स्वर्ग सिधार गये। यह पृथ्वी उन में किसी के भी साथ नही गई परन्तु हे मुञ्ज! अब मालूम पडता है कि तुम्हारे मर जाने के बाद यह पृथ्वी तुम्हारे साथ अवश्य जायेगी।

जिस समय यह पढकर चाचा जी की आखे खुल जाती हैं। उस समय हाय! हाय! करता बिलखता हुआ मन्त्री जी के गले पडता है।

अतः उपयुक्त कथन से यह ज्ञात होता है कि मनुष्य छोटे २ लोभ के कारण कितने गहरे गढे मे गिरता है। इसलिए मनुष्य का कर्तव्य है कि इस मानव चोले को पुण्य तथा शुभ कर्मों का संचय करते हुए मनुष्य जीवन को सफल बनाये।

हमारे प्राचीन काल के ऋषि मुनि तथा वेद, शास्त्र, उपनिषद् आदि का यही सन्देश तथा उपदेश है कि मनुष्य को अधिकतर तीन (३) साधनों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। जिस से मनुष्य का वास्तविक स्वरूप क्या है पता चले?

वह साधन यह है—(१)स्वाध्याय (२) सत्संग और (३) ईश्वर चिन्तन यह तीनों साधन आपस में सम्बन्ध रखते है। मनुष्य का पहला कर्त्तव्य है वह स्वाध्याय करें। स्वाध्याशील बनें।

जिस समय महाभारत का युद्ध हुआ उसके पश्चात हमारे देश की स्थिति बहुत ही दिन प्रतिदिन पतन की ओर चलती गयी। यहां तक कि लोग वैदिक संस्कृति सभ्यता, शिष्टाचार यज्ञादि शुभ कर्मों को भूल गए। देश में भ्रष्टाचार, अनाचार मूर्तिपूजा, बाल विवाह, आदि अनेक कुरीतियां फैली हुई थीं। ऐसे समय में तथा १९ शताब्दि में इस भारत-भूमि के रंग-मच पर ऋषि दयानन्द जी का प्रादुर्भाव हुआ स्वामी दयानन्द ने देखा तो राष्ट्र-भर में कुरीतिया, इनको दूर करने मे लगे रहे। मानव जाति को अपने भूले स्वरूप को बताकर वेद का उपदेश दिया 'मनुर्भव' 'मनुष्य बनो'। यदि मनुष्य बनना है तो आपको स्वाध्याय करना चाहिए। और किन-किन ग्रथों का स्वाध्याय करना न करना अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास मे वर्णन किए हैं। अर्थात् आर्ष प्रीणत एव ऋषि, मुनि कृत ग्रन्थ तथा वेदोका स्वाध्याय करनाचाहिए

स्वाध्याय शब्द ही अर्थ बताता है कि 'स्व' 'अध्याय' अर्थात् स्वय अपने आपका विचार करो, अपने आप मनन करने से पता लगता है सत्य और असत्य क्या है? अतः स्वाध्याय आर्ष ग्रन्थों का बहुत कुछ किया, परन्तु उसके ऊपर आचरण न हो तो रावण के समान सब मनुष्यो की गति होगी। इसलिए स्वाध्याय किये तथा शास्त्र, उपनिषदादि ग्रन्थो का उपदेश सुना है उसके अनुसार आचरण करना। क्योकि कहा है—

श्रूयता धर्म सर्वस्व,
श्रुत्वा चैवाव धार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि,
परेषा न समाचरेत॥

अर्थात् वेद, शास्त्र, उपनिषदादि कथित धर्म की सब बातें सुनो और सुन करके उसको धारण करो। (क्रमशः)

सम्पादकीय—

आर्यजगत्

वर्ष २६] रविवार २०२३, २० नवम्बर १९६६[अंक ४७

मानव कहें या देव

आज का युग बडा ही विषम है। स्वार्थ की प्रवृत्तियों ने प्रत्येक स्थान पर आकाशबेल के समान अपना घेरा डाल रखा है। भ्रष्टाचार का जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में खुला प्रसार हो रहा है। लिप्सा और एषणा अपने तानावाना में लगी हुई हैं। आज भारत मे जीवन की दशा हर प्रकार से बिगड़ती जाती है। त्याग, तपस्या, निष्कामभाव, सेवा तथा बलिदान की भव्य भावनाएं पंख लगाकर उड़ती जा रही है। चारों ओर अपनापन पनपने में लगा हुआ है। यज्ञमय जीवन तो स्वप्न की वस्तु रह गया है। आसुरी विचारो का बोल बाला है। राष्ट्र को बनाने का दम भरने वाले अपने को बनाने मे मस्त हैं। बापू नाम की लूट जारी है। जितना भी लूटा जा सकता है, लूटा जा रहा है। क्या पता फिर यह स्वर्णकाल मिले या नही, इस भावना से भरे लोग अपने घरो को भरने मे लगे हुए हैं।

ऐसी विषम परिस्थिति में जब कि मानवो को खोजने मे भी परिश्रम करना पड़ता है। वहा देवो का दर्शन तो विरले मे ही हो सकता है। किन्तु आज के काम युग मे भी ऐसे-ऐसे त्याग व यज्ञ की सजीव मूर्तियो को देखकर तथा उनके सद्-विचारो को सुनकर मन अतीव प्रसन्न हो जाता है। सोचने पर विवश हो जाना पड़ता है कि ऐसो को मानव कहा जाये या साक्षात् देवता? ऐसे ही दिव्य जीवन वाले मानवों मे अमृतसर मैंटल चिकित्सालय के मनोरोगों के अतीव विशेषज्ञ माननीय डाक्टर विद्यासागर जी हैं। गत दिनो आर्य समाज लारेंस रोड अमृतसर मे मान्य डाक्टर जी का एक बड़ा ही भव्य विदाई समारोह था। उस दिन वहां प्रवचन भी स्वयं डाक्टर जी का था। विषय था कि जीवन में काम-क्रोध-लोभ आदि का क्या स्थान है। कितना मीठा, गम्भीर तथा सरल अंग्रेजी भाषा में यह भाषण श्री डाक्टर जी ने दिया। पहली बार सुनने का अवसर मिला। मनोगों के विशेषज्ञ होने तथा वर्षों के अनुभव से कितनी वास्तविकता से भरा यह भाषण था। हम ने डा. विद्यासागर जी को देव के नाम से पुकारा है। क्यो? आज के सचमुच यह देव ही कहलाने के अधिकारी हैं। निरन्तर सोलह वर्षो से अमृतसर मे एक स्थान मे बैठ कर सेवा मे लगे रहे। रात के दो बजे तक पागलो को देखने तथा उपचार करने मे लगे रहते। इतना मीठा स्वभाव बहुत कम ही लोगो मे देखा है। मानव की परीक्षा आने से नही वरन् जाने के समय होती है। सोलह वर्षो बाद भी सचमुच सर्वप्रिय, अजातशत्रु तथा सौम्यता की सजीव प्रतीक हैं। इतने ऊंचे आसन पर बैठ कर अपने वेतन मे से भी पता नही कितना प्रतिमास रोगियों के निमित्त अर्पण कर देते है। पंजाब विश्वविद्यालय के उपकुलपति प्रिंसिपल सूर्यभानु जी ने एक बार अपने भाषण में डाक्टर विद्यासागर जी को ऋषि तक कह कर पुकारा था। इन के बारे में जो भी कहा जाये उचित ही है। इगलैंड में पढे हुए और इतने ऊंचे आसन पर बैठ कर जो चाहते कर सकते तथा जो चाहते बना सकते मामूली एम. एल. ए. या मिनिस्टर बन कर लोग क्या २ नही बनाते? सब कुछ सब के सामने है। पर मान्य डाक्टर जी साक्षात देवता है आज के युग के मनोरमे मानव है। कामना, लोभ, मोह, व क्रोध अहकार इन को पास से भी छू नही सका। अभिनन्दन पत्र में इन के लिए देव उचित ही कहा था अमृतसर से रोहतक तबदील हो कर गये है। भाषण तो अगले अक मे दिया जायगा। हम भी इस देव को सादर नमस्कार करते है। —त्रिलोक चन्द्र

गोरक्षा आन्दोलन

भारतीय सभ्यता में गौ का स्थान बड़ा महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय जीवन का चित्र तब तक पूरा नहीं होता। सब प्रकार की दृष्टियों से धार्मिक हों या सामाजिक हो या राष्ट्रीय गौ की रक्षा बड़ी आवश्यक है। वैदिक सस्कृति की परम्परा में गौ माता है। इसी के द्वारा राष्ट्र का जीवन बनता है। रामराज्य में गौ को पाव लगाना भी पाप था। धर्मपुत्र युधिष्ठर के राज्य-काल मे गौ की महत्ता बराबर बनी हुई थी। वेद ने तो अन्तकाय गोघातम गोहत्यारे को मृत्युदण्ड का विधान किया है पुरातन युग में राम-गोपाल की इस धरती पर गौ का पूरी तरह सम्मान किया जाता था। मुगलो के युग मे भी अकबर आदि के राज्य में गोवध सर्वथा बन्द था। गोघाती को मौतदण्ड मिलता था। अंग्रेज आये, हमारे जीवन से खिलवाड किया गया। देश के बडे २ नेता महात्मा गांधी, महामना मालवाय, लोकमान्य तिलक आदि सारे स्वराज्य मे गोहत्या एक दम बन्द कर देने की बाते खुले तौर पर कहते थे। आर्य समाज के महान प्रवर्तक स्वामी दयानन्द जी ने तो अपने मिशन मे गोरक्षा भी विशेष अग बनाया था। गोकरुणानिधि जैसी पुस्तक लिखी। प्रयत्न भी जारी रखा। आर्य समाज को यह काम सौपे गये।

विदेशी सत्ता गई। अपने लोग आये। विधान में गोवध बन्द करने की धाराए रखी। कई बार भारत मे इसके लिए आन्दोलन भी किये गये। किन्तु भारत सरकार ने न सुना। आज गोवध को रोकने के लिए सारा देश तथा विना भेद-भाव के सारे सस्थान एकत्रित हो कर खड़े हो गये है। जगत् गुरु शकराचार्य, स्वामी करपात्री जी, भारत साधु समाज, महामण्डलेश्वर, सनातन धर्म सभा, आर्यसमाज, जैन सभा, नामधारी दरबार आदि सारी भारतीय जनता एकत्रित हो गई है। देहली मे जो महान् प्रदर्शन लाखो का हुआ, उस मे जो हिसात्मक कारवाई हुई, उस की तो जितनी भी निन्दा की जाये थोडी है, किन्तु उस पर सरकार की पुलिस ने भी जो कुछ किया उस पर भी महान् दुःख है। उस हिसा के लिए कौन उत्तरदायी है—इस की जाच-पड़ताल करानी ही होगी। सारा सन्त समाज प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी के नेतृत्व में जेले भरता जाता है। जब हमारे देश के विधान की आधारशिला जनतन्त्र पर है, और सारी जनता गोहत्या बन्द करने की बात कहती तथा बलिदान देती है तो सरकार हठ क्यों करती है? क्या यही जनतन्त्र है। विधान का सम्मान इसी बात में है कि भारत मे जनता की आवाज को सुनते हुए गोहत्या बन्द करा देवे ताकि जनता का रोष शान्त हो सके। गोवध बन्द होकर ही रहेगा—स०

★★★

लखनऊ से अपहृत नाबालग लड़की कानपुर में बरामद
आर्य नेता का सराहनीय कार्य

गत रात्रि दो बजे जूही कालौनी के एक मकान पर नगर के आर्य समाजी नेता श्री देवीदास जी आर्य ने अपने कुछ सहयोगियो को लेकर छापा मारा नवाब गज जिला लखनऊ से कुछ दिन पूर्व अपहृत की गई १४ वर्षीय कन्या द्रोपदी को बरामद कर उन के भाई सुपुर्द कर दी।

घटना इस प्रकार बताई जाती है कि उक्त लडकी के एक सम्बन्धी के षडयन्त्र से उसे बेचने के विचार से देशराज सिंह नामक एक व्यक्ति भगा कर गोविन्द नगर कानपुर लाया था। लडकी के सम्बन्धी गोविन्द नगर में श्री देवीदास आर्य के यहां सहायता लेने पहुचे श्री आर्य ने रात में ही गोविन्द नगर में एक क्वार्टर पर छापा मारा परन्तु लडकी को दूसरे द्वार से निकाल कर जूही कालौनी ले जाया गया। परन्तु श्री आर्य ने दो घण्टे के अन्दर ही जूही से लडकी को बरामद कर लिया। देशराज सिह फरार हो गया।

आर्यसमाज बाजार सीताराम दिल्ली का वार्षिक उत्सव

दिनाक १९ तथा २० नवम्बर को राम लीला मैदान मे समारोह मे मनाया जायेगा उत्सव के उपलक्ष मे १३ से १८ नम्बर तक रात्री ८.३० बजे से ९.३० बजे तक श्री प० हरि शरण जी सिद्धातालकार आर्य समाज मन्दिर बाजार सीता राम दिल्ली में उपनिषदो की मनोहर कथा करेंगे (मन्त्री)

श्री सर्वदानन्द साधु आश्रम (अलीगढ़)

वार्षिकोत्सव मिती कार्तिक सुदी ७-८-९ स. २०२३ शनिवार, रविवार तथा सोमवार, तदनुसार ता. १९-२०-२१ नवम्बर १९६६ ई० का है। जिस मे बडे २ सन्यासी महोपदेशक तथा भजनीक महोदय पधारेगे। आशा है आप इष्ट मित्रो सहित पधार कर कृतार्थ करेंगे। भवदीय

मन्त्री सभा

देश का उत्थान चाहते हो तो गौहत्या बंद करो

श्री वेदव्रत जी शास्त्री विद्यावाचस्पति प्र० वेद प्रचारिणी सभा होशियारपुर

राष्ट्रपिता बापू गान्धी भारत मे राम राज्य को स्थापित करना चाहते थे। वे कहा करते थे कि स्वराज्य में गौ नही मारी जावेगी। किन्तु अहिंसा का पाठ पढ़ाने वाले भारत के नेता आज स्वयं लाखों की संख्या मे गौ मरवा रहे हैं। ज्यो २ देश में इस के विरोध के लिए आंदोलन किये जा रहे हैं त्यो २ ये हमारे नेता बच्चों जैसी हठ पकड़ते चले जा रहे हैं। वे अपने हठ को न छोड़ना ही अपनी शान समझते हैं। जिस गौ को महाराजा कृष्ण ने माताके नाम से पुकारा आज उस अबला माता की गर्दन पर कटार चलाई जा रही है। वह अपनी उस जबान से बोल नही सकती। उस पर जो जुल्म कमाए जा रहे हैं किस को सुनाएं। गौ माता की करुणामयी सजल आखे आज भारत के भाग्य पर रो रही है। भारत के प्रत्येक नवयुवक बाल और वृद्ध की ओर देख रही हैं कि कौन मेरी रक्षा करेगा। सृष्टि निर्माण काल से लेकर आज तक असख्यो मातृहीन बच्चों को गौ माता के दूध से पाला गया है। इस निर्दयी का हृदय कितना कठोर है कि जिस गौ को घर मे पालता है उसी पर कटार चलाता है। उसके प्यार का बदला कृतघ्नता से चुकाना चाहता है। उसकी शीतल आखो के सामने आग जलाना चाहता है। उसकी भोली-भाली सूरत को उस समय कोई सहृदय शक्ति देख नही सकता। उसके ऋण को भूल चुका है। आज हम अन्न की समस्या को अण्डे मास मछली और चूहों के आचार से सुलझाना चाहते हैं। भला जिस देश के नौजवान चूहो के आचार खाते हों वे कितने बलवान हो सकते है। यह बात विचारणीय है कि जिसके घर मे एक गाय हो उसका आधा तो अन्न का ही खर्च घट जाता है। हमारी अन्धी सरकार तामसिक पदार्थो की ओर बढावा दे रही है जो कि और भी बढते हुए भ्रष्टाचार मे सहायक है। विदेशियो ने हमारी नकल करके गौ पालन शुरू किया आज उन्हे पर्याप्त मात्रा मे घी, दूध मिलता है। किन्तु आज सरताज भारत गो मांस और खून से भूख और प्यास को मिटाना चाहता है। यह अन्धी सरकार गौ रक्षा के लिए गए हुए लोगों को अत्याचार के जुर्म में गिरफ्तार कर रही है। कितने दु:ख की बात है कि उनकी आवाज को सुना नही जा रहा। यदि गौ हत्या बन्द न हुई तो याद रखो भारत का बच्चा-बच्चा धर्म की बेदी पर कुर्बान हो जाएगा। भारत हमारा है हम भारत के मालिक हैं। राम, कृष्ण और दयानन्द की सभ्यता के पुजारियो ? तुम तो ? जागो ? गौ हत्या बंद हो, गौ हत्या बन्द हो। ★★

आर्यसमाज कोटली कालोनी जम्मू

आर्यसमाज की ओर दीवारी के बाहर वैदिक धर्म का प्रचार करने के लिए हर शुक्रवार को मुहल्लो में रात्री को पारिवारिक सत्संग होते हैं—जिस में हर विचार के लोग आते हैं। पं० विद्याभानु जी सुन्दर भजन बोलते हैं और वेद के सिद्धान्तो पर प्रभावशाली प्रवचन होता है २. बच्चो की रोज़ाना धार्मिक श्रेणी लगती है—५॥ से ६॥ सायकाल सध्या और हवन मत्र याद कराये जाते हैं तथा सत्यार्थप्रकाश मे से शिक्षा दी जाती है। ३.हर वीरवार को स्त्री समाज का सत्सग होता है और रविवार के साप्ताहिक सत्सग में उपस्थिति पर्याप्त होती है।

इस वर्ष भी पूर्व वर्षो की भान्ति दीपावली उत्सव धूमधाम से मनाया गया।

ओंप्रकाश खन्ना
मन्त्री समाज

आर्यसमाज बोलारम

इस वर्ष विजयादशमी बड़े धूमधाम से मनाई गई। शनिवार रात्रि को बाज़ार मे वैदिक धर्म का प्रचार व गो हत्या के विरोध में विराट सभा का आयोजन किया गया। जिस मे आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् प. मगलदेव जी शास्त्री तथा प० प्रेमचन्द्र जी प्रेम ने भजनोपदेश किया जनता पर आर्यसमाज का अच्छा प्रभाव पड़ा। दूसरे दिन आर्यसमाज में ध्वजारोहण तथा यज्ञ हुआ तथा प्रधान जी ने वेद मन्त्रो की व्याख्या की। सायंकाल को शोभा यात्रा नगर के प्रसिद्ध बाज़ार से होती हुई समाज मंदिर में समाप्त हुई।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

गोरक्षा आंदोलन का ९०० व्यक्तियों का जत्था

आचार्य भगवानदेव जी के नेतृत्व में गिरफ्तार

गृह मन्त्री की कोठी पर पुलिस द्वारा सत्याग्रहियों पर निर्दयता से लाठी प्रहार। २ व्यक्ति बेहोश, एक की स्थिति चिन्ता जनक।

नई दिल्ली—५ नवम्बर हरियाणा के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता आचार्य भगवानदेव के नेतृत्व में आज ९०० से अधिक सत्याग्रहियों ने गृह मन्त्री के निवास पर सत्याग्रह किया। पुलिस ने सत्याग्रहियों पर निर्दयता से लाठी चार्ज किया। २ व्यक्तियों को श्री दलीपसिंह व भगत खेम राम को घातक चोटें लगी। श्री खेमराम की स्थिति चिन्ताजनक है। श्री ब्रह्मानन्द के सारे कपड़े पुलिस ने फाड़ दिए।

जत्थे को विदा देने केलिये आर्य समाज करोल बाग मे विशाल सभा हुई जिसकी अध्यक्षता करते हुए श्री प्रकाशवीर शास्त्री संसत्सदस्य ने कहा कि सरकार को जन भावना का आदर करते हुए तुरन्त गोहत्या बन्द कर देनी चाहिये।

श्री जगदेवसिंह सिद्धान्ती ससत्सदस्य (कांग्रेस) ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि गो-रक्षा के प्रश्न पर सारा देश एक है और हम इसके लिये बडे से बड़ा बलिदान देने को तैयार है।

आचार्य भगवान देव जी ने घोषणा की कि सारा हरयाणा गो रक्षा के लिये बडे से बडा बलिदान देने को तैयार है और आगे हम १०-१०० हजारके जत्थे लेकर दिल्ली आयेंगे और सरकार को विवश कर देंगे कि,वह गो हत्या बन्द कर दे।

पुलिस द्वारा लाठी चार्ज की तीव्र निन्दा करते हुए अपने एक वक्तव्य मे गो रक्षा आन्दोलन सचालन समिति पजाब के संयोजक भारतेन्दु नाथ ने सरकारको चेतावनी दी है कि सरकार बुद्धि से काम ले। जनता की भावना से खिलवाड़ न करे अन्यथा जो गम्भीर परिणाम होगे उनका दायित्व केवल सरकार पर होगा।

श्री रघुवीरसिंह शास्त्री ने पंजाब के समस्त आर्य समाजों की ओर से आचार्य जी को विदा दी। इस अवसर पर श्री ला० रामगोपाल जी शाल वाले मन्त्री सार्वदेशिक सभा व प्रोफेसर राम सिंह जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब उपस्थित थे। पुलिस द्वारा लाठी चार्ज की सर्वत्र निन्दा की जा रही है।

हिन्दू महा सभा भवन अनशन कार्यालय से

१५-१०-६६, गो रक्षा आन्दोलन मे अब नया मोड़ आ गया है। हरयाणा क्षेत्र से हज़ारों व्यक्ति गो-धन की रक्षा के लिये १ नवम्बर से पहले सत्याग्रह के लिये दिल्ली पहुंच रहे हैं।

हरयाणा के लोकप्रिय नेता आचार्य भगवान देव जी ने अपनी पूरी शक्ति के साथ गो-रक्षा के लिये तीव्र आन्दोलन आरम्भ कर दिये हैं।

संसद सदस्य स्वामी रामेश्वरानन्द जी ने देश की जनता से प्रार्थना की कि वह सर्वस्व देकर भी गो-माता की रक्षा के लिए त्याग-बलिदान की तैयारी करे। स्वामी जी ने यह विश्वास प्रकट किया है कि सरकार ने गो-वध बन्द न किया तो सरकार स्वयं समाप्त हो जायेगी।

इस समय ४०० के लगभग साधु संन्यासी ब्रह्मचारी गो-रक्षा आन्दोलन के लिये तिहाड जेल में है। ससद् सदस्य बी० पी० मौर्य की पत्नी भी इस रक्षा के लिये जेल में ही हैं।

हिन्दू महा सभा भवन में अनशन कर रहे श्री धर्मेन्द्र के अनशन का आज २५वा दिन है किन्तु उनका उत्साह निरन्तर बढ रहा है और एक भेंट में उन्होंने यह सकल्प घोषित किया है कि यदि आवश्यकता पडी तो वे और भी अधिक तीव्र पग उठायेंगे।

महात्मा 'राम चन्द्र वीर' पंत हस्पताल मे हैं, उनके अनशन को ५६ दिन हो गये हैं उनका जीवन-दीप बुझने वाला है यदि सरकार ने शीघ्र ही कोई पग न उठाया तो उसे जनता के भारी रोष का सामना करने के लिये तयार रहना होगा।

कार्यालयाध्यक्ष
गोहत्या उन्मूलन सघर्ष समिति
हिन्दू महासभा, भवन
नई दिल्ली

आर्यसमाज पलवल नगर (गुड़गावां)

१३वा वार्षिकोत्सव-अन्तरंग सभा ने विशेष परिस्थितियो के कारण उत्सव २५, २६ व २७ नवम्बर के स्थान पर २, ३, ४ दिसम्बर निश्चित कर लिया है। उत्सव से पूर्व २४ नवम्बर से स्वामी वेदानन्द जी द्वारा वेद कथा होगी।

गरीबी

श्री ओमप्रकाश जी 'अंशु' नयी दिल्ली

भी हां यह वही गरीबी है जिस के मु' की श्रेयवन्द को दो मुट्ठी चबेना खाकर निर्वाह करने पर आश्रित कर दिया था। गरीबी का नाम लेते ही रोमांच हो जाता है और एक सिहरन सी पैदा हो जाती है परन्तु उन्हें जिन्होंने इस के दर्शन नहीं किए।

गरीबी एक अभिशाप है, ऐसा कहा जाता है परन्तु क्या हम भी इस को पनपने देने के कारण दोषी हैं? इसे हम ने देखना है। मुझे स्मरण हो आया और हां इस लेख को लिखने की प्रेरणा भी इस घटना से मिली थी।

नयी दिल्ली के एक विशाल उप-नगर लाजपत नगर के समीप दयानन्द कालोनी है और इसी कालोनी की एक दुकान पर खड़ी वह बुढिया एक किलो आटा निज आंचल में डाल कर दालों से भरे डिब्बों को प्यासी नजरों से निहार रही थी, कुछ बोलना चाह रही थी परन्तु उसके दबे होठ भी उसका साथ देने से इन्कार करते हुए कांप रहे थे। पास खडे एक राहगीर की आंखे गीली हो आई थी, उसने सारी समस्या को निगलते हुए दुकानदार को एक पाव दाल और कुछ घी उस बुढिया को देने के लिए आदेश दे दिया। जब बुढिया की झोली मे ये सब चीजें आ गई तो वह न चाहती हुई भी ये सब कह गई 'बेटा!' यही एक रुपया आज बड़ी मुश्किल से कमाया था जो आटा पर चला गया, तू ने दाल दिला दी सो दो बुरकी जरा आसानी से खा लूंगी, वरना दो रोटी लूण (नमक) के लिए भी...' वाक्य पूर्ण होने से पहले ही बुढ़िया सिसकने लगी, उधर राहगीर ने भी अपना रास्ता पकड़ा।

दुःखी व्यक्ति दूसरो के दुःख को तो यथा शक्ति दूर कर सकता है परन्तु स्वयं किसी की व्यथा को सुन पाषाण नही बन सकता, जैसा कि प्रायः होता है।

गंगा के तट पर एक योगी ध्यान मग्न बैठे थे ज्यो ही नेत्र खोले कि उन्हे एक युवती तट पर खड़ी हाथ मे एक बच्चे को लिए थी, पहले तो वह युवती उन वेगवती तरंगो को निहारती रही फिर अपने मृतबालक को उन तरंगों की भेंट कर दिया और उसके शव पर का कपड़ा जो धोती का एक फटा हुआ भाग था, उसे धो कर पुनः निज तन को ढक लिया।

योगी से वे सब देखा न गया। आंखे मूंद लीं। तभी से सब वस्त्र छोड़ एक लंगोटी को धारण किया। उस दिन रात उन्हे नीद नहीं आई, सारी रात करवटें बदलते रहे। अन्त मे तंग हो टहलने लगे। सेवक ने पूछा, 'क्या बात है महाराज बोले दर्द हो रहा है। सेवक बोला, 'अच्छा ठहरिए! मैं वैद्य जी को ले आता हू।' योगी दयानन्द बोले 'यह दर्द कोई वैद्य दूर नही कर सकता' पुनः कहने लगे 'आज मेरा देश इतना निर्धन हो गया है कि एक मां अपने बच्चे के लिए कफन तक नही खरीद सकती।'

राष्ट्रपिता महात्मा गाधी भी कुछ इस प्रकार की घटना से प्रभावित हो कर निज तन पर से कपडे उतार कर लगोटी बाबा कहलाने लगे। परन्तु ये दोनो युग पुरुषो की घटनाएं परतन्त्र भारत की थी। लेकिन क्या आज भी ऐसी समस्या स्वतन्त्र भारत की नही?

अभी दो मास हुए समाचार पत्रों में पढा था कि देश मे लाखो व्यक्ति ऐसे हैं,जो कपडे की न्यूनता के कारण या तो अर्द्ध नग्न रहते हैं अथवा सदैव ही फटेहाल रहते हैं। यदि भारत-वासी कम से कम एक वर्ष में एक गज कपड़ा कम खरीदे तो देश मे कपड़े की न्यूनता दूर हो सकती है और ऐसे सब लोग कपडा पहन सकते हैं। कितनी सारगर्भित बात है। इसे कहते है बून्द बून्द से...! परन्तु हमारा रवैया बिल्कुल उलट है। हम तो वर्ष प्रति वर्ष निज वस्त्रों की तादाद बढाते ही चले जाते है।

नयी दिल्ली का कस्तूरबा नगर। सब्जी की दूकान। विक्रेता बोला, "बाबू जी, एक किलो और लो तो दाम घटा सकता हूं" मैंने कहा, "आज मेरे लिए तो कुछ घटा दोगे परन्तु कल सब के लिए बढा दोगे। इस प्रकार दाम बढ़ते ही चले जावेगे। खरीदने वाले तो खरीदेगे ही परन्तु गरीब नही खरीद सकेंगे। इस लिए डेढ़ की आवश्यकता हो तो किलो लो।"

लेकिन क्या गरीब को कोई पूछता भी है? रात को सभी सुख की नीद सो जाते है। चांदनी चौक का लकड़ हजम पत्थर हजम चूर्ण अधिक खाने वालो के लिए धड़ाधड़ बिक जाता है, लेकिन यही चूर्ण वास्तव में लकड़ पत्थर निगले हुए उस गरीब भिखारी के उदर में उठी पीड़ा को शमन नहीं कर सकता जो सूखे और भूखे पेट दिसम्बर जनवरी मास की ठण्डी रात्रि में देह को चीर कर निकलने वाली सर्द पवन का उस की उष्ण सांसों से संघर्ष होता रहता हैं। कभी कभी संघर्ष काफी जोर पकड़ जाता है और फिर प्रातः भानु-अशु उस के निर्जीव ललाट पर थिरक पड़ती हैं। इसी समय घरों में सोने वाले सभ्यजन हवाखोरी को बाहिर निकलते हैं। अव्वल तो दूर से ही कन्नी कतरा जाते हैं अन्यथा यह मित्र रास्ता नापते हैं 'रात काफी अच्छी सर्दी पड़ी। तभी तो......"

'एक कुत्ते की रोटी मिल सकती है परन्तु गरीब को शायद नहीं' यह वाक्य दिन भर खाट बुनने वाले भोगल निवासी का है जिसकी नयन-ज्योति इतनी क्षीण हो चुकी है कि अपनी दिन भर की कमाई (एक रुपया सत्तर पैसा) अच्छी तरह से नहीं गिन सकता। बड़ा आदमी एक रुपए पाव वाला अगूर खरीद कर खा सकता है और घर के लिए भी एक किलो तुलवा सकता है परन्तु समीप खड़ा झल्ली वाला निरीह नेत्रो से निहारता रह जाता है। समस्त साहस बटोर जब वह गरीब विक्रेता को दस का सिक्का दिखलाता है तो विक्रेता के श्रीमुख से यह वाक्य निकलता है 'जा! जा! अंगूर का रसिया तो देखो! अबे! पहले कमाना तो सीख ले।' ठीक है बेचारे के भाग्य मे वह मेवा कहां? अभी वह कमाता भी तो नही। बारे के न्यारे न कर सके जो, भला उसकी कमाई भी कोई कमाई है। और यदि है भी, तो वह कमाई— कमाई नही कहलाती।

ये सब सजीव उदाहरण पुकार पुकार कर मानव मन को झक झोडने के लिए प्रयाप्त हैं। आह! गरीबी कितनी भयानक है। और वही लोग पनपने देने के दोषी हैं जो लोग नजाईज जमाखोरी करते हैं। ये वे लोग हैं जो गरीब के मुह से निकाल कर तयखाने भरते है। ब्लैक मार्केट करते है और अपनी आवश्यकताओं को बढाते हैं।

कहने को अपनी सरकार इसका उन्मूलन करने पर तुली हुई है परन्तु उससे कुछ न होगा जब तक हम जिस कर्तव्य को नहीं समझेंगे। कम से कम हम अधिक मुंह बनाने के काम में तो बढ़चढ़कर उन्नति न करें। अन्यथा आकाशवाणी की रोजमर्रा की बुल्टिन के भाव बढ़ते चले जाएंगे, जैसे कि रोजाना बढ़ रहे हैं। ★★

विश्वेश्वरानन्द संस्थान का ६३वां वार्षिकोत्सव

होशियारपुर—९ नवम्बर, ६६ वि० वैदिक शोध संस्थान के ६३वें वार्षिकोत्सव के अध्यक्ष के रूप में उपस्थित भारी जन समुह को सम्बोधित करते हुए पंजाब-हरियाणा के राज्यपाल श्री धर्मवीर जी संस्कृत-भाषा के महत्व पर प्रकाश डाला। आपने कहा कि इस संस्थान ने भारतीय संस्कृति के छिपे हुए रत्नों को खोज निकालने तथा जनता तक पहुचाने का अभूतपूर्व महान कार्य किया है। आपने संस्थान के इस वर्ष प्रकाशित ५७ ग्रन्थो का, जिनकी कुल पृष्ठ सख्या ६००० से अधिक है, उदघाटन किया।

संस्थान के सचालक आचार्य श्री विश्वबन्धु जी ने सस्थान के सुदीर्घ इतिहास का विवरण प्रस्तुत करते हुए सस्थान जिन सकटो मे से निकल कर अपनी वर्तमान स्थिति तक पहुचा है उनका तथा इसकी आने वाली समस्याओ का सकेत किया। पजाब विश्वविद्यालय के उप-कुलपति श्री सूरज भानुजी ने सस्थान की भारतीय संस्कृति व संस्कृत-विद्या के प्रमुख केन्द्र के रूप में भूरि प्रशंसा करते हुए तथा इसके द्वारा सम्पन्न किए गए व किए जा रहे कार्य का महत्व बताया। संस्थान के उप-प्रधान श्री दीवान आनन्द कुमार जी ने आरम्भ मे अध्यक्ष महोदय के स्वागत मे कुछ शब्द कहे तथा अन्त में कार्यकारिणी के सदस्य प्रि० रला राम जी ने अध्यक्ष महोदय और अन्य सब सज्जनों का धन्यवाद किया।

'आर्य कुमार सभा घोड़वाह' 'जिला होशियारपुर, पंजाब' स्थापना

१७-१०-६६ को जिला वेद-प्रचारिणी सभा होशियारपुर की प्रचारक मण्डली ने आर्य कुमार सभा 'घोडवाह' की स्थापना की। श्री प० वेदव्रत शास्त्री की अध्यक्षता में निम्न-लिखित अधिकारी वर्ग चुना गया— प्रधान श्री रमेशकुमार मेनन; मन्त्री विनोद कुमार, उपमन्त्री प्रमोदकुमार, कोषाध्यक्ष मिस राजकुमारी जी।

प्रचार का प्रकार

श्री विजयपाल जी आर्य, विद्यार्थी दयानन्द कालिज हिसार

आज यह देखकर दु:ख होता है कि आर्य समाज के सिद्धान्त सत्य एव सर्वहितकारी होते हुए भी देश में उनका उस विशाल परिणाम तथा स्तर पर प्रचार नही हो रहा। अन्य मतो के प्रचार की अपेक्षा वैदिक धर्म का प्रचार कम हो रहा है। लेकिन ऐसा हो क्यो रहा है? इस के भी कुछ एक कारण है। इन कारणों की ओर ध्यान देना आवश्यक तथा समयोचित कर्तव्य है।

धर्म या किसी भी मत के प्रचार में सब से अधिक योग उस के साहित्य का होता है। यह तो उसका आधार होता है। हमारे देश में ईसाइयो की संख्या दिन प्रतिदिन बढती जा रही है। इसका कारण यह है कि वे लोग अपना साहित्य जनता में मुफ्त बांटते हैं। यदि उनका साहित्य बिकता भी है तो वह सस्ता और सुन्दर है। लेकिन इसके विपरीत आर्य समाज का साहित्य महगा है और उतना सुन्दर नही। आर्यसमाज को भी यथा शक्ति अपना साहित्य जनता में मुफ्त बाटने की ओर ध्यान देना चाहिए। लेकिन यदि इतना नही हो सकता तो कम से कम अपना साहित्य सस्ता और सुन्दर तो करें। अंग्रेजो की चाय का प्रचार अपने आप ही नही हुआ। वे तो लोगो को मुफ्त चाए पिलाते थे और चाय पीने वालो को इनाम तक देते थे। इसी तरह आर्य समाज अपना प्रचार कर सकता है।

आर्य समाज अपने साप्ताहिक अथवा दैनिक संत्सग आर्य समाज मन्दिर की चार दिवारी में न कर के शहर के भिन्न २ स्थानो पर करे। इस से कई लाभ होगे। एक तो दूसरे लोगों को आर्य समाज के सिद्धांतों का पता चलेगा। दूसरे उन समाज मन्दिरो में दैनिक समाचार पत्र और अपने धर्म सम्बन्धी पत्र पत्रिकाएं रखी जाएं। आने जाने वाले लोग उन्हें पढ़ेंगे। इस से भी आर्य समाज को अपने प्रचार में काफी सहायता मिल सकती है।

आर्य समाज के स्कूल और कालिज प्रचार में बहुत अधिक सहायक सिद्ध हो सकते हैं लेकिन यदि आदर्श और पूर्णवैदिक धर्मी अध्यापक रखे जाए तो। परन्तु आज कल ऐसा नहीं हो रहा। अंडे मांस खाने वाले, बीड़ी सिग्रेट और शराब पीने वाले तथा आर्यसमाज के सिद्धांतों से सर्वथा अनभिज्ञ अध्यापक स्कूलों में हैं। ऐसे ही लोग कई समाजों के मन्त्री बन बैठे हैं। जैसा नेता होगा वैसी ही प्रजा। अच्छे अध्यापको का प्रभाव बच्चो पर भी अच्छा ही पडेगा। अच्छे नेताओ का जनता पर अच्छा ही असर होगा।

महर्षि दयानन्द के नाम पर चलने वाले स्कूल और कालिजों में सह-शिक्षा चल रही है। धन के लोभ मे ऋषि के सिद्धान्तों को तिलांजलि दी जा रही है। क्या इस अवस्था मे वैदिक धर्म के प्रचार की आशा की जा सकती है।

हिन्दी का प्रचार देखिए। आर्यसमाजी चिल्ला-चिल्ला कर कहते हैं कि राष्ट्र भाषा हिन्दी हो। लेकिन पत्र व्यवहार अंग्रेजी मे होते हैं। क्या इस तरह हिन्दी राष्ट्र भाषा बन सकती है। अपने सिद्धातो का स्वयं विरोध करने से प्रचार कैसे हो सकता है?

राजनीति प्रचार का मुख्य साधन है। अकाली इसी लिए सफल हुए कि उन्होने राजनीति मे हिस्सा लिया। ईसाई और कम्युनिस्ट राजनीति का सहारा ले कर अपना प्रचार कर रहे हैं। आर्य समाज भी इस ओर ध्यान दे। अन्य पार्टियो के सहारे न रह कर अपनी अलग पार्टी बनाए और राजनीति में प्रवेश करे बीते हुए समय से कुछ न कुछ तो सीखना चाहिए। राजनीति ने ही तो बुद्धमत को फैलाया था। पर न जाने आर्य समाजी क्यो राजनीति मे हिस्सा नही ले रहे। और समाज सुधारक के रूप में रहना चाहते हैं। आर्यससाज इस तरह रहकर अपना प्रचार नहीं कर सकता। हर सभव उचित तरीकों से अपने प्रचार को प्रसारित करना चाहिए। अन्यथा समाज पिछड कर रह जाएगा।

गो हत्या बन्द नहीं की गई तो देश में गड़बड़ी फैल जायेगी

गो रक्षा सम्मेलन [illegible]

३१-१०-६६ कानपुर आर्यसमाज लाजपतनगर कानपुर के वार्षिकोत्सव के अवसर पर गो रक्षा सम्मेलन आर्य नेता श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता में हुई। सम्मेलन में ब्रह्मचारी सतीश चन्द्र, पं० कालीशंकर अवस्थी, पं० त्रिलोकचन्द शास्त्री सम्पादक आर्य जगत जालन्धर, माता ज्योतमा यती और गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के आचार्य प्रियव्रत के भाषण हुए। वक्ताओं ने गौ हत्या पर प्रतिबन्ध लगाने तथा गौ पालन पर बल दिया और इस बात का खण्डन किया कि वेदो मे गौ वध लिखा है। वेदों में तो गौ हत्यारे को गोली मार कर मृत्यु दण्ड देने की आज्ञा दी गई है। मुस्लिम बादशाहो ने भी अपने राज्यो में गोवध बन्द कर भारतवासियो की धार्मिक भावनाओ की कदर की थी। अपने राज्य मे गो वध दिन प्रति दिन बढ़ता जा रहा है लगभग एक करोड़ गायें हर साल काटी जाती है। सम्मेलन के अध्यक्ष श्री देवी दास आर्य ने चेतावनी दी कि यदि अब भी गो वध पर प्रतिबन्ध नहीं लगाया गया तो देश में गड़बड़ी फैल जायेगी। आर्य समाज दीवाली के दिन से संसद के बाहर सत्याग्रह प्रारम्भ कर रहा है।

मधु कलश

श्री विजय निर्बाध

(१)

तुम किस्मत को बुरा दोस्तो नाहक मत बतलाओ
बातो से कब काम चला है थोड़े हाथ हिलाओ
अगर किया आचरण वही जो करते हो तो क्या है
मजा तभी है जो कहते हो वह करके दिखलाओ

(२)

हिम्मत करके मन के ऊपर जो काबू पा जाता
इस दुनिया के अन्दर उस को संकट नहीं सताता
कम पैसे के अन्दर जो भी सुखी नहीं है मन में
पैसे वाला हो कर भी वह सुखी नहीं रह पाता

(३)

महामिलन के साथ शर्त है होगा दुखद विसर्जन
दिल के अन्दर दर्द दाब कर करना पड़ता नर्तन
मैंने तो बस यह देखा है इस दुनिया के अन्दर
यहां जन्म से मरनें तक है कदम कदम पर उलझन

मुंबई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा

'हमें यह जानकर आश्चर्य और खेद हुआ है कि 'ओवल मैदान का नाम' बम्बई कारपोरेशन द्वारा बदल कर पोप पाल के नाम पर किया गया है।

जबकि स्वतन्त्र भारत में विदेशियों के नाम रखे जा रहे हों तब ऐसे समय में इस नीति के विरुद्ध बम्बई में एक यह उदाहरण उपस्थित करना कभी भी उचित नहीं माना जाएगा।

किसी राष्ट्र भक्त का नाम यदि उक्त मैदान को दिया जाता तो इस नगरी के निवासियों को उससे संतोष होता। किन्तु पोप पाल का नाम दिया जाना अवश्य ही आश्चर्य का कारण है।

इस नीति से किसी भी देशभक्त को दु:ख ही होगा। क्योकि यह कार्य हमारी राष्ट्रभावना तथा धार्मिक भावना को ठेस पहुंचाने वाला है।

इस निर्णय के विषय मे पुनर्विचार करना है। --भवदीय

प्रधान गुलजारीलाल आर्य
मुंबई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्य समाज रैनावारी श्रीनगर—काश्मीर

वार्षिक निर्वाचन

तिथि २३-१०-६६ को आर्य समाज रैणावारी की अन्त रङ्ग सभा का वार्षिक निर्वाचन निम्न प्रकार से हुआ—श्री काशीनाथ जी प्रधान, श्री श्याम लाल जी दर उपप्रधान, श्री श्यामसुन्दर जी वैद्य मन्त्री, श्री राधा कृष्णजी रैणा उपमन्त्री, श्री मोहन लाल जी कोषाध्यक्ष, श्री मदन मोहन जी पुस्तकाध्यक्ष, श्री दीना नाथ जी हुण्डू सभासद।

आर्ययुवक समाज दसूआ

निर्वाचन श्री राजेन्द्रनाथ जी प्रिन्सीपल डी. ए. वी. स्कूल की अध्यक्षता में निम्न प्रकार से हुआ।

संरक्षक—पं० हरवसलाल जी मुजरिम, श्री सुरेन्द्र कुमार जी, प्रधान श्री सत्यपालजी, मंत्री—श्री अमरनाथ जी, उप प्रधान—श्री रमेशकुमार जी, उपमंत्री—श्री अश्वनी कुमार जी, कोषाध्यक्ष—श्री राजेन्द्र कुमार जी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री राजकुमार जी।

आर्यसमाज कानपुर

आर्यसमाज लाजपतनगर कानपुर का पहला वार्षिक समारोह बड़ी धूम-धाम से हुआ। नगर कीर्तन तो बड़े कमाला का था। हजारो युवक युवतिया, नर-नारिया गीत गाते चल रहे थे। सारे बाजार जयघोषों से गूंज उठे। जलसे मे डा० शिवदत्त जी की अध्यक्षता में राष्ट्ररक्षा सम्मेलन प्रसिद्ध नेता श्री देवीदास जी आर्य की प्रधानता में गोरक्षा सम्मेलन तथा आचार्य प्रियव्रत जी गुरुकुल कागडी की प्रधानता में आर्य सम्मेलन हुए। उत्सव मे स्वामी वेदानन्द जी, माता विद्योत्तमा जी यती, ब्र० सतीश जी, प० त्रिलोक चन्द्र शास्त्री आर्य प्रादेशिक सभा पजाब, श्री देवीदास जी आर्य, आचार्य प्रियव्रत जी गुरुकुल कागडी, प० प्रकाशवीर जी, मान्यवर मेहरचन्द जी खन्ना मिनिस्टर, प० विद्याधर जी, प० लक्ष्मण शास्त्री आदि पधारे। अधिकारियो व देवियो का बडा उत्साह था।

आर्यसमाज लाजपत-नगर सोनीपतत का महोत्सव

प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष भी आर्यसमाज लाजपत नगर सोनीपत का वार्षिक समारोह प. चन्द्रसैन जी आर्य हितैषी सभा उपदेशक के अथक परिश्रम और लगन से २८-२९-३० अक्तूबर सन् ६६ को सम्पन्न हुआ। २४ से २७ अक्तूबर तक श्री पं. ओमप्रकाश जी महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा की प्रातः और रात को मनोहर कथा भजनों द्वारा होती रही। अम्बाला मडली सतपाल जी की, और राजपाल मदन मोहन चिमटा मडली के सम्पूर्ण उत्सव तक मनोहर भजन होते रहे। शुक्रवार को भी जगदीशचन्द्र जी शास्त्री सभा उपदेशक का प्रभावशाली व्याख्यान हुआ।

रात के समय श्री उत्तमचन्द जी एम. ए. शरर, प्रो० आर्य कालिज पानीपत की प्रधानता में कवि दरबार का आयोजन किया गया जिसमे देहली, पानीपत, गन्नौर के कवियों ने भाग लिया। यह सम्मेलन श्री नाज की व बेताब जी के प्रबन्ध में निर्विघ्न समाप्त हुआ। उत्सव में प्रि० रला-राम जी एम. एल. ए. होशियारपुर जगदीशचन्द्र जी शास्त्री, ओमप्रकाश जी, चन्द्रसैन जी, आर्य हितैषी,

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा अक्तूबर मास का वेद प्रचार कार्य-क्रम

राजपाल, मदन मोहन चिमटा मडली के अतिरिक्त प्रो० रामविचार जी एम. ए. हिसार, प्रो० रामप्रकाश जी रिसर्च स्कालर चण्डीगढ, बहिन ईश्वर देवी जी, तथा श्री प. कृष्णजी शास्त्री देहली आदि महानुभावो के सार गर्भित व्याख्यान होते रहे। भजनो की तो बहार ही लगी रहती थी। इस प्रकार यह महोत्सव सर्व-दृष्टि से सफल रहा। वेद प्रचारार्थ २५१/ सभा को प्राप्त हुए।

इस उत्सव की सफलता का सेहरा श्री चन्द्रसैन जी आर्य हितैषी, डा० देवराज जी, मा० खुशीराम जी, म० बिशनचन्द्र जी, मेवराज जी, डा० ठाकुरदास जी, म० दयालचन्द्र जी, भक्त वासुदेव जी, खडूराम जी हकीम, पृथ्वीराज जी, तथा उर्मिला शहीद आदि सज्जनों के सिर पर है।

आर्य प्रादेशिक प्रति-निधि सभा का गो हत्या निरोधक प्रस्ताव

प्रस्ताव नं. १७ की अमली कापी

१७ :—सभा ने गौ हत्या के सम्बन्ध में निम्नलिखित प्रस्ताव पास किया :—

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की अतरग सभा की यह बैठक भारत की केन्द्रीय सरकार तथा राज्य सरकारो से माग करती है कि भारत भर में गौ-हत्या पर प्रतिबन्ध लगाया जाए। भारत की पुण्य भूमि में गौ-हत्या का जारी रहना धार्मिक सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टिकोण से हानिकारक है। इससे साम्प्रदायिक शाति के बिगडने का भी भय रहता है। अतः सभा का मत है कि गौ-हत्या को तुरन्त समाप्त कर दिया जाए।

निश्चय हुआ कि इस प्रस्ताव की प्रतिया केन्द्रीय सरकार तथा सार्वदेशिक सभा को भेजी जाए। सम्बन्धित समाजो से भी प्रार्थना की जाए कि वे इस विषय मे अपने प्रस्ताव पास करके सरकार को भेजे।

—वेदप्रकाश मलहोत्रा सभा मन्त्री

ये अपने लोग !

मैं अभी कानपुर समाज के महोत्सव से लौटा हू। वहा पर अपने ही डी० ए० वी० कालेज कानपुर मे सस्कृत विभाग के अध्यक्ष प्रसिद्ध मनीषी कई तीर्थ तथा कई एम. ए. व डी. लिट् डा. पं. हरिदत्त जी एम ए. ने गत दिनो **भारतीय साहित्य और संस्कृति** नामक एक पुस्तक लिखी है। उस मे वेदो व वैदिक ऋषियो के आचार-विचार खानपान पर कितने भयकर हमले किए है। उनको गौ-बैल के मास खाने वाला शराब पीने वाला, पता नहीं क्या २ लिखा है। बडा दुःख हुआ है। अगले अक मे विस्तार से पढ़े। ये अपने ही लोग। शोक। --स.

आर्यसमाज श्रद्धानंद बाज़ार अमृतसर में कथा

पजाब मे प्रसिद्ध आर्य समाज श्रद्धानन्द बाज़ार अमृतसर में विजया-दशमी का सप्ताहपर्व ता. १४ अक्तूबर से ता. २३ अक्टूबर रविवार तक बड़े समारोह से मनाया गया। इस में ता. १४ अक्टूबर से लेकर २२ ता. तक प. त्रिलोक चन्द्र शास्त्री तथा प. मेला राम जी रेडियोसिंगर आर्य प्रादेशिक सभा जालन्धर के रामराज्य को लेकर रामायण के आधार पर रात को उपदेश होते रहे तथा मस्ती भरने वाले श्री रेडियोसिंगर जी के गीत होते थे। माताओं बहिनों तथा सज्जनों की काफी संख्या मन्दिर मे पधार कर लाभ उठाती रही समाज के प्रधान जी, सौम्य स्वभाव श्री मदन मोहन जी सेठ मन्त्री जी, माननीय श्री विश्वनाथ जी, प भूपाल सिंह जी शास्त्री व श्री ठाकुरदास जी सारे सज्जन उत्साही है। मार्ग व्ययसमेत वेद प्रचार में १५० रु० मिले।

आर्यसमाज मण्डी (हिमाचल)

आर्यसमाज मण्डी हिमाचल प्रदेश मे बड़ी ही श्रद्धालु तथा उत्साह भरी सभा से सम्बन्धित समाज है यहा का जल्सा श्रद्धा से भरपूर होता है। यहां के सज्जनो ने अपना पुराना मन्दिर गिराकर नवीन सुन्दर मण्डी के अनुरूप मन्दिर बनाना प्रारम्भ किया है। गत दिनो जल्से पर पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी इस निर्माण को अपना आशीर्वाद भी दे आए तथा अपनी ओर से एक सौ रुपया भी इस निर्माण कार्य मे दे आए प्रेरणा भी कर आये। श्री कैप्टन इन्द्रसिंह जी प्रधान जी पूरे प्रयत्न मे लगे है। मण्डी केन्द्र की समाज है। बाहर के सज्जन व समाजे अपना ध्यान मण्डी समाज के निर्माण में थोड़ा-थोड़ा वहा मन्त्री समाज के नाम आहुति भेजे तो बहुत ही अच्छा होगा।

आर्य समाज जाखल मंडी (हिसार)

समाज का वार्षिकोत्सव २५. २६. २७ नवबर को धूमधाम से मनाया जा रहा है इस अवसर पर बड़े २ धुरधर विद्वानो व भजनीको के व्याख्यान व भजन होगे।

हरिचन्द्र गुप्ता मत्री समाज

पूज्य महात्मा आनंद स्वामी जी का कार्यक्रम

आर्य जगत के परमसन्त पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज का प्रचार कार्यक्रम यह है—

१३ नवम्बर से १६ तक जयपुर

१७ से २८ तक अजमेर ऋषि निर्वाण मेला तथा राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा की जयन्ती समरोह

१९ नवम्बर से ८ दिसम्बर

आर्य समाज अनारकली रीडिंग रोड़ नई देहली इसके बाद बनारस कथा करेंगे।

पूज्य महात्मा जी कितना महान उपकार कर रहे हैं। प्रभु उनको सदा स्वस्थ तथा दीर्घायु रखें।

आर्यसमाज होश्यारपुर

वार्षिक महोत्सव ता. ४ से ६ नवम्बर तक बड़े समारोह से मनाया गया। पं. त्रिलोकचन्द्र शास्त्री की वेद कथा तथा प. मेलाराम जी रेडियो सिंगर के भजन होते रहे। प्रात:काल वेद यज्ञ पं. देवीदास जी की अध्यक्षता में होता था। जल्से में प्रिंसिपल लक्ष्मीदत्त जी दीक्षित आर्य कालेज पानीपत, पं. त्रिलोकचन्द्र शास्त्री, प. चन्द्रसेन जी आर्य हितैषी, पं. राजपाल मदनमोहन चिमटा मंडली, पं. ज्ञानचन्द जी, श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज, श्री दयानन्द जी एम. ए. शामिल थे। जलूस बड़ा ही शानदार था। आर्यसमाज के अधिकारी श्री चौधरी बलबीरसिंह जी, प्रिंसिपल सत्यप्रकाश जी सात्विक प्रिंसिपल बैजनाथ जी प्रधान समाज, श्री नन्दसिंह जी मन्त्री, प. लभूराम ज शर्मा, श्री महता जी तथा माताओ की स्त्री समाज ने बड़ा उत्साह दिखाया। स्कूल कालेज के छात्रो के रोचक संगीत थे। सभा को मार्ग व्यय के सिवाय २२४) रु० मिले।

पठनीय एवं मननीय साहित्य

वेद प्रवचन ५/- गीतासार ७५ पैसे, आलमगीर के पत्र १/-वेदारम्भ संस्कार १/५० पैसे, मेरी आठ रोचक कहानियां ७५ पैसे, लौकट ७५ पैसे, लड़खड़ाते जीवन ५० पैसे, कर्म मीमांसा २/२५ पैसे, संतति नियमन क्यों और कैसे १५ पैसे, वैदिक व्याकरण भास्कर ६/- ग्राम बोधक पत्र ११/२० पैसे,यग साहित्य प्रचारक १/-

जयदेव ब्रदर्स बड़ोदा—१

समाचार द

मान-पत्र

जो कि (आदरणीय डाक्टर विद्यासागर जी को अमृतसर से रोहतक स्थानान्तरण के समय रविवार २३-१०-६६ साप्ताहिक सत्संग में आर्य समाज लारेंस रोड़ अमृतसर की ओर से सादर-सप्रेम भेंट किया गया।)

१९४७ के बाद का एक निरीह-दिन-जब अमृतसर खोया-खोया, थका-थका, क्लान्त सा-पर भविष्य के स्वतन्त्र भारत के सुखद स्वप्नों को हृदय मे संजोये किसी दैवीय प्रकाश-किरण की टोह में क्षण-क्षण घटता जा रहा था कि डा० विद्यासागर जी ने यहां से पदार्पण किया मेंन्टल हास्पिटल में डिप्टी सुपरिन्टैनडैण्ट के रूप मे। शीघ्र ही उच्च शिक्षार्थ तीन वर्ष के लिए लंदन जाना हुआ। लौटे तो सुपरिन्टैन्डैण्ट बनकर। देखते-देखते एक व्यक्तित्व उभरा सहानुभूति का पुट लिए, शान्ति का दूत बनकर तप और त्याग को मूर्तरूप देने के लिए। स्वागत के वह क्षण तो मौन रहे स्यात्, अथवा स्मरण नहीं, पर आज विदाई की अविस्मरणीय दु:खद बेला हृदय को आलोड़ित कर रही है। कल जो आगुन्तक बनकर आए थे, जन-जन के हृदय में आज एक चिर-स्मरणीय अमिट छाप टीस के रूप में देकर जा रहे हैं।

चिकित्सा कार्य को व्यवसाय के रूप में अपनाया अवश्य, पर कर्तव्य सदा भावना पर विजयी रहा। जीवन का मात्र लक्ष्य सेवा रहा। मनुष्य मात्र की सेवा—बिना भेद-भाव के। लक्ष्मी का मोह भी पछाड़ खा कर रह गया सेवा में बाधक न बन पाया कभी। सेवा धर्मो परमगहनो योगिनामप्यगम्य: नीति के इस वाक्य की अगमता को योगियो की तुलना मे एक सद्-गृहस्थी ने झुटला कर रख दिया। केवल इतना ही नहीं बल्कि परिस्थितियों की परम्पराओं मे न बह कर कुछ नवीन मान्यताए यथा Tent System अथवा बिना मारे-पीटे प्रेम से बिना क्रोध भाव दिखाए चिकित्सा की पद्धतियां प्रदान की।

आपको देव कहकर पुकारूं अथवा ऋषि कह कर ? दोनों ही संज्ञाएं यथार्थ लग रही हैं अत: हे देवर्षे ! धन्य हैं आपका व्रत और कृतज्ञता कृति इतिहास आपके इस उज्वल उदाहरण से अमर हो उठा है।

आप कल रोहतक के लिए चल देंगे। जहां हृदय विदाई की टीस को अनुभव कर रहा है इस विश्वास से कि वहां की जनता आपके स्वागत में लालायित होगी। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह आपको दीर्घायु प्रदान करें, स्वाध्याय और सामर्थ्य प्रदान करें, ताकि आप जन सेवा के इस अनुव्रत को अधिकाधिक साक्षात् कर सकें।

अन्त में हम आर्यसमाज लारेंस रोड की ओर से उस विशेष प्यार का जो आप सदा बनाये रहे हैं धन्यवाद देते हैं और आपकी मंगल कामना के लिए एक बार फिर प्रभु से प्रार्थना करते हैं।

हम हैं आपके
समस्त आर्य सदस्य
आर्यसमाज लारेंस अमृतसर

दानापुर आर्यसमाज का उत्सव

प्रति वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी आर्यसमाज का उत्सव १६ से १९ अक्तूबर तक धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में एक सप्ताह तक बृहद यज्ञ होता रहा। शेष दिनों में व्याख्यान आदि का कार्यक्रम चलता रहा। इस अवसर पर समाज सुधार, शिक्षा सम्मेलन राष्ट्र भाषा सम्मेलन व वेद सम्मेलन, आर्य महिला सम्मेलनो का भी आयोजन किया गया था। आचार्य कृष्ण जी द्वारा समाज मंदिर में अध्यात्म कथा होती रही।

१६ अक्तूबर को भव्य नगर कीर्तन का समारोह हुआ जिस में सर्व-साधारण जनता के अतिरिक्त स्वयं सेवक, सेविकाओं व छात्र-छात्राओ की खासी उपस्थिति रही। नगर निवासियों ने शोभा यात्रा का भली प्रकार स्वागत किया।

आर्य महिला सम्मेलन का उद्घाटन श्रीमती शकुन्तला अग्रवाल, आर्यकुमार सम्मेलन का उदघाटन श्री जगदेव जी सिद्धान्ती एम. पी. गो कृष्यादि सम्मेल का उदघाटन करते हुए श्री रामानन्द जी शास्त्री ने गौ रक्षा की उपयोगिता बताते हुए उसके लाभों पर प्रकाश डाला उत्सव हर प्रकार से सफल रहा।

आर्य प्रादेशिक सभा की आवश्यक सूचना

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा से सबंधित सभी समाजों को अपने प्रतिनिधि भेजने तथा दशांश भेजने के 'क,ख'फार्म भेजे जा चुके हैं परंतु गति बहुत धीमी है। समय थोड़ा रह गया है अत: अपनी समाजों के प्रतिनिधियों की सूचि तथा दशांश सभा के कार्यालय में यथा समय भेज कर कर्तव्य पालन करें।

—सभा मन्त्री

★★

शुभ समाचार

आर्य जगत को यह समाचार पढ़ कर प्रसन्नता होगी कि आर्य जगत के प्रसिद्ध योगाभ्यासी तथा आरोग्य मन्दिर का सचालक श्री रामसिंह जी वैद्य कविराज की सुपुत्री सुश्री विमला अष्टम श्रेणी की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया है और छात्रवृत्ति प्राप्त की है। वैद्य जी ने इस अवसर पर यज्ञ का आयोजन किया और आनन्द स्वामी जी महाराज ने कन्या को शुभ आशीर्वाद दिया तथा जीवन को उच्च बनाने का उपदेश दिया। वैद्य जी ने ५/- आर्य जगत को भेंट किए। हम उनके इस प्रेम सम्बन्ध के लिए उन्हें धन्यवाद देते हैं।

मुद्रक व प्रकाशक प्रो० वेदप्रकाश मलहोत्रा एम. ए. आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर

आर्य जगत

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टेलीफोन नं० २०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे — वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६, अंक ४८) १२ मार्गशीर्ष २०२३ रविवार—दयानन्दाब्द १४२— २७ नवम्बर १९६६ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तयः

त्वमिन्द्र वाजयामसि

हम सब तम्-उस इन्द्र-ऐश्वर्य शाली महान् इन्द्र को वाजयामसि-स्तुति करते हैं। हे प्रभो! कोई किसी का स्तुति करें, किन्तु हम तो तेरे ही भक्त हैं। आपकी ही स्तुति करते हैं। आप के बिना हमारा कोई भी उपास्यदेव नहीं।

महे वृत्राय हन्तवे

प्राणेश! तेरी कृपा से हमें बड़े-बड़े भयानक, वृत्राय-वृत्र को, बुराई रूप राक्षस को, पापरूप रूपी असुर को हन्तवे-मारने के लिए बल प्राप्त हों। वह जो विघ्न आदि पाप में प्रवृत्त करने वाला वृत्र है, उसे मारने में शक्तिशाली बनें।

स वृषा वृषभो भुवत्

सः—वह वृषभः—सुख की वर्षा करने वाला वृषा-बड़ा बलवान् भुवत्-है। हे प्रभो! आप वृषभ हैं, सब प्रकार के सुखों के दाता हैं। आप ही वृषा हैं, सबसे बलवान शक्तिशाली हैं। आप से न कोई बड़ा न कोई समान है।

इन्द्रः सखामभे कृतः

वह इन्द्र रूप भगवान सारे ऐश्वर्यों का भण्डार है, महान् इन्द्र है। वही प्रभु [illegible] सुखों [illegible] है। [illegible] सुख के भण्डार से [illegible] आनन्द को [illegible]

वेदामृत

राष्ट्र के बलवान् वीर

ओ३म् अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्ता जयन्तु। अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्मां उ देवा अवता हवेषु॥

साम. उत्तर. अ. २१ ख. १ सू. ४ मं. २

अर्थ:—राष्ट्र का इन्द्र (अस्माकम्) हमारे (इन्द्रः) राष्ट्रनायक (समृतेषु) मिलने पर (ध्वजेषु) हमारी ध्वजाओं के (अस्माकम्) हमारी (याः) जो (इषवः) बाण शस्त्र हैं (ताः) वे (जयन्तु) विजय प्राप्त करें, (अस्माकम्) हमारे जो भी (वीराः) वीर सैनिक है वे (उत्तरे) ऊंचे, विजयी (भवन्तु) होवे (तस्मान्) उन की (देवा) दिव्य वीरजन (अवन्तु) रक्षा करे (हवेषु) संग्रामों में। कोई भी वीरों को हानि न पहुंचा सके।

भाव यह है

हमारा राष्ट्र नायक इतना वीर हो कि वह इन्द्र बन कर सदा विजयी होता रहे। संग्राम काल में जब हम शत्रुओं के साथ भिड़ जायें। हमारी ध्वजाएं उन से मिली हों तो उस विषम समय में वह हमारी रक्षा करता रहे। हमारी सेना, शत्रु का नाश करने वाले शस्त्रों की सदा विजय होती रहे। हमारे शस्त्र शत्रुओं पर सदैव भारी होवें। शस्त्र शक्ति में हम कभी निर्बल न हों। हमारे वीर सैनिक बड़े ही ऊंचे एवं वेग वाले हों। आगे ही आगे प्रगति करने वाले होवें। जितने भी दिव्यजन हैं, देवों का मंडल है, वह सारा हमारी रक्षा करने वाला हो। हम जनता का बल भी साथ लेकर चलें। सारा देवजन हमारे सैनिक की पीठ पर हो। हम विजयी हो।

स्वाध्यायात् मा प्रमदः

इस ऋषि वचन पर आचरण करें फिर देखें कि आप का जीवन कैसा आनन्दमय गुजरता है। प्रातः उठकर स्नान आदि से निवृत्त होकर किसी आर्षकृत धार्मिक ग्रन्थ का नियमानुसार पठन करें। ऐसा करने से आप का सम्पूर्ण दिन शांति से व्यतीत होगा। मन शांत रहेगा।

दैनिक कार्य में सिद्धि होगी। आचार विचार ऊंचा होगा। अतः स्वाध्याय करने का अभ्यास करें।

ऋषि दर्शन

सततंनमोऽस्तु ते

हे परमेश्वर! आप को हमारा निरन्तर नमस्कार हो। हम आपको ही श्रद्धा की भावना से प्रणाम करते हैं। हमारे लिए तो आप ही एक मात्र नमस्कार के योग्य है।

सर्वोत्कृष्टत्वात्

हे महान् देव! आप सब से ही उत्कृष्ट हैं, ऊंचे हैं, सब से श्रेष्ठ हैं। आप से बढ़ कर सारे विश्व में कोई भी तो श्रेष्ठ व ज्येष्ठ नहीं है। आप सर्वोत्तम हैं। आप को प्रणाम हो।

परमेश्वर अनन्तविद्या युक्त

हे परमेश्वर! अनन्त विद्याओं के भण्डार हैं। सारी विद्याओं के केन्द्र आप ही हैं। सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

विद्वांसः क्रान्त दर्शं[illegible]

विद्वान् वे कहलाते [illegible] दर्शी होते हैं। जो बहुत [illegible] सोचते हैं, उनकी दृष्टि [illegible] हम इन [illegible] चिन्तन बहुत दूर जाने वा[illegible] प्रस[illegible] बड़े दूरदर्शी [illegible] विद्वान् कहलाते [illegible]

(गतांक से आगे)

अपने आत्मा के प्रतिकूल जो रीतियां है उसको दूसरे के साथ न करें । मनुष्य बन सकता है तो स्वाध्याय तथा आचरण से । प्राचीनकाल में आचार्यगण शिष्यों को उपदेश देते थे—'स्वाध्यायान्मा प्रमादः' अर्थात् स्वाध्याय में आलस्य प्रमाद नहीं करनी चाहिए । अतः मनुष्य जीवन को उत्थान की ओर ले जाने वाले यही ग्रन्थ तथा उपदेश है । काश ! कि आज हम देखते हैं लोग स्वाध्याय करने में प्रमाद आदि तो करते नहीं परन्तु आर्ष ग्रन्थों का नहीं । प्रातःकाल उठते ही उनके हाथ में चाय का प्याला तथा समाचार पत्र तथा उपन्यास, नाटक, कादम्बरी आदि साहित्य जब अनार्ष ग्रन्थों का ब्रह्म-मुहूर्त मे इसका निरूपण तथा स्वाध्याय हो तो जीवन किस प्रकार बने । इस लिए इन पुस्तको का पठन-पाठन छोड़ के प्राचीन शिक्षा प्रणाली को अपनाना पडेगा तभी जीवन मे सुख तथा आनन्द को प्राप्त कर सकते हैं ।

हमारी वैदिक सभ्यता, संस्कृति यह बताती है कि संसार के लोगो ने इस भारतवर्ष मे, वेद, उपनिषद् तथा शास्त्र का आद्योपान्त अध्ययन करके अपने - अपने राष्ट्र में धर्म का तथा वेदादि शास्त्रों का प्रसार एवं प्रचार क्या है । आदि राजा स्वायम्भू मनु महाराज मनुस्मृति मे लिखते हैं—

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्या
सर्वमानवाः ॥
॥ मनु० २।२० ॥

यह प्रमाण मिलता है । परन्तु आज इन अनार्ष तथा मनुष्यकृत ग्रन्थों का स्वाध्याय करके मनुष्य जीवन को गहरे समुद्र के तल में डुबा रहा है । अतः प्रत्येक मानव को आर्ष ग्रन्थो का आवलोकन तथा स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए । अब इसके आगे मनुष्य निर्माण का दूसरा साधन सत्संग पर प्रकाश डालते है ।

सत्संग मनुष्य बनाने का एक अंग है । जिस प्रकार का सत्संग हो उसी प्रकार मनुष्य बनेगा । महापुरुष, सन्त, महात्मा आदि सज्जनोंके समीप बैठेगा तो उन्ही के समान बनेगा और कुसंग अर्थात् बुरे आचरण करने वाले व्यक्ति, मद्य, मांस व्यभिचार, निन्दा, चोरी आदि के मनुष्यों मे [illegible] तो वैसा ही बनेगा । क्योंकि [illegible] "जैसा संग वैसा रंग" जिस बालक का बालपन आरम्भ से ही सदाचार,

धार्मिक चर्चा—

"मनुष्य का निर्माण"

श्री० कर्मवीर 'आर्य' [illegible]
[illegible] विद्यालय हिसार (पंजाब)

सत्यनिष्ठा, धर्मपरायण, श्रेष्ठ पुरुषों की [illegible] में वे पुरुष [illegible] जीवन [illegible] होता है । यदि इससे विपरीत हो तो इस संसार में ही दुःख का भागी हो कर जीवन को मृतवत बनाता है । मनु महाराज दुराचारों की दुर्गति का वर्णन करते हुये लिखते हैं—

"दुराचारो हि पुरुषो
लोको भवति निन्दितः ।
दुःख भागी च सततं
व्याधितोऽल्पायुरेव च ॥

अर्थात्—दुराचारी, आचार हीन पुरुष इस संसार मे निन्दा के पात्र होता है और दुःख का भागी निरन्तर हुए रोगी, अल्प आयु को प्राप्त होता है । अतः मनुष्य को चाहिए कि अपने जीवन को बनाने के लिए सदाचारी श्रेष्ठ सत्पुरुषो का संग सदा किया करे । क्योंकि "संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति ।" संसर्ग से ही दोष तथा गुण आते हैं । बहुत ऐसे उदाहरण हैं कि सत्संग में आकर महान् रूप को प्राप्त कर चुके हैं । स्वामी दयानन्द (जी) सरस्वती महाराज के संसर्ग (सत्संग) से भक्त अमीचन्द की घटना जग विख्यात है । एक शराबी, कबाबी दुराचारी व्यक्ति स्वामी जी के सम्पर्क मे आने के कारण अपने जीवन को किस प्रकार उज्ज्वल बनाया । यह आदर्श हम आर्य नर-नारी को अपनाना पडेगा ।

आज हम देखते हैं—बालक को किस प्रकार की विचारधारा मिलती हैं । वातावरण कैसा है उनकी मनःप्रकृति कैसी है, और क्या चाहते हैं । और इनके विद्यार्थी अवस्था में क्या-क्या दोष तथा गुण आ रहे है । इसकी ओर किसी भी माता-पिता का लक्ष्य नही है । जब प्राचीन काल के इतिहास के पन्नो को पलटते हैं तो माता-पिता को गुरू पूछते हैं इस बालक को कौन से सस्कार से पुनरुजीवित किए हैं । उसी सस्कार के आधार पर तथा उसके स्वभाव के अनुसार शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध करते थे । और राष्ट्र मे जिन व्यक्तियो की तत्परता तथा ब्राह्मण क्षत्रियादि उत्तम तेज, धैर्य, बलवान बनाकर [illegible] के [illegible] उपरान्त । विद्यार्थी को बनाने वाले [illegible] थे माता पिता तथा गुरु थे परन्तु आज धोबी, नाई, टेलर थे है जीवन निर्माण करने वाले ! हा ! हा ! देश का सत्यानाश हो गया । इन पाश्चात्य तथा विदेशीय सभ्यता संस्कृति की और अपनी प्रवृत्ति करके जीवन को बरबाद किया ।

जो आज संसार में महापुरुषों के रूप में चमक रहे, हैं वे सारे के सारे क्या पाश्चात्य शिक्षा पद्धति से चमके है ? कदापि नही वे तो भारतीय संस्कृति तथा वैदिक सभ्यता के आधार पर ही उस परम पद को प्राप्त होकर अपना उज्ज्वल जीवन दर्शा गए हैं । आज हमें चाहिए कि भारतीय संस्कृति को पुनः आचरण मे लाए । तथा हम मानव पद को प्राप्त होते हैं । अतः उपर्युक्त दो कारण स्वाध्याय तथा सत्संग की अत्यन्त आवश्यकता है ।

ईश्वर प्रणिधान या चिन्तन—मनुष्य को चाहिए कि इन दो अर्थात् स्वाध्याय तथा सत्संग से पार होकर आगे ईश्वर के चिन्तन में प्रवेश करें । आज का संसार तथा मानव सुख और शांति के लिए दौड़ रहा है । परन्तु कही सुख और शांति के लिए दौड रहा । सांख्यदर्शन के कर्त्ता कपिलमुनि कहते हैं—'कुत्रापि कोऽपि सुखीन ।'

मनुष्य जीवन मे आकर सुख बाहर ढूंढता है जिस प्रकार नाभि मे कस्तूरी है और मृग गन्ध तृष्णा के कारण भी है । अतः मनुष्य को सचेत होना चाहिए कि सुख कहां पर है । सुख, धन, सम्पत्ति, ऐश्वर्य, पुत्र, पौत्र, माता-पिता, बन्धु, बहन, सखा आदि में नही—मनुष्य को सुख तथा शांति ईश्वर के चिन्तन से मिलती है । परमात्मा का २ घड़ी नाम लेने से मिलता है । इसलिए जगत् गुरु वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज ने पंच-महायज्ञ विधि मे सबसे प्रथम ब्रह्मयज्ञ को रखा । ब्रह्मयज्ञ का आशय ही है कि परमात्मा का अन्तर्मुखी हृदयस्थ होकर चिन्तन करना ।

आज हमें सन्ध्या यही सिखाती है । मनुष्य जो दिन-भर अर्थात प्रातः से सायंकाल तक अनेक प्रकार बुरे कर्म चक्षु मन, वाणी आदि से करता है । महाभारत के शान्तिपर्व में कहा है—

चक्षुषा मनसा वाचा
कर्मणा च चतुर्विधम् ।
यादृशं कर्म कुरुते
तादृशं प्रतिपद्यते ॥

अर्थात नेत्र, मन, वाणी और कर्म से जैसा व्यवहार करता है उसी प्रकार भोगता है । दिन भर जैसा कर्म करता है उसी प्रकार रात्रि भी निद्रावस्था में करता है । वैदिक सिद्धान्त के अनुसार स्वामी जी बताते हैं—मनुष्य प्रातः-काल सायंकाल सूर्य सन्धि के बेला में सन्ध्या करनी चाहिए । ताकि हम दुर्गुणों से दूर होकर सद्गुणों को धारण कर जीवन को सफल बना सकें । वेद भी इसी बात को स्वीकार करता है । सामवेद का मन्त्र प्रस्तुत करते हैं—

ओ३म् उप त्वाग्ने दिवे-दिवे दोष-वस्तर्धिया वयम् । नमो भरन्त एमसि॥

भावार्थ—हे अग्ने ! प्रतिदिन और रात के प्रकाशक सूर्यवत तेजस्विन हम सब लोग अपनी श्रद्धा बुद्धि और सत कर्म से नमस्कार करते हुए या यज्ञ की हवि प्रस्तुत करते हुए तुम को प्राप्त होते हैं । जिस समय मनुष्य अपने को ईश्वराधीन करता है, तब उसके बुरे कर्म करने की प्रवृत्ति नहीं होती । अतः सन्ध्या का निष्क[illegible] नहीं है ।

उपर्युक्त लेख का निष्कर्ष यही है कि मनुष्य का निर्माण कैसे हो ? किन २ बातों पर ध्यान देना चाहिए । इस विषय पर ये विचार ईश्वरोक्त तथा हमारे आप्त पुरुष एवं ऋषि मुनियों के कथनानुसार याथातथ्य रखने का प्रयत्न किया है । ★★

आर्यसमाज 'मोडलहौस जालंधर
ऋषि निर्वाण उत्सव

मंगलवार को प्रातः प्रभातफेरी निकाली गई । ९ से १२ नवम्बर तक सामवेद पारायण यज्ञ श्री प० साजन-देव जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ यह यज्ञ दोनो समय प्रातः ६॥ से ८ बजे तक तथा सायं ५॥ से ७॥ बजे तक नियमानुसार होता रहा तथा अंतिम दिन पूर्णाहुति हुई और यज्ञ शेष वितरण हुआ । इसी अवसर पर अनेक महानुभावों ने महर्षि जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए श्रद्धा-ञ्जलिया समर्पित की । कवितायें तथा मनोहर भजनो का प्रवाह बहता रहा । भार्गव कैंप निवासियो तथा अन्य सज्जनो, देवियों ने पधार कर समाज के अधिकारियों का उत्साह बढ़ाया ।

—चूनीलाल प्रधान समाज

सम्पादकीय—

आर्य[illegible]

वर्ष २६, रविवार २०२३, २७ नव[illegible] अंक ४८

सामवेद का भाष्य

आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब जालन्धर स्वर्गीय तपस्या एव त्याग के देवता महात्मा हसराज जी की पुनीत पुरातन यादगार है। यह सभा अपने आरम्भ काल से ही प्रचार तथा साहित्य प्रकाशन के द्वारा विशेष सेवा कार्य करती चली आती है वेद प्रचार का पवित्र काम तो इस का वेद प्रचार विभाग करता है और सत साहित्य को प्रकाशित करने का काम सभा का महात्मा हसराज साहित्य विभाग की ओर से किया जाता है। सभा ने इस दिशा मे कितना सुन्दर काम किया तथा वर्तमान रूप मे भी किए जा रही है। प्रचार कार्य की इस की धूम तो है ही। मुलझा व मजा हुआ इस का प्रचारक वर्ग कितने मनोयोग से वेद प्रचार के काम मे जुटा है। भारत के प्राय: सारे प्रान्तो मे यह जाता रहता है। इस के साथ सभा का साहित्य विभाग भी बडा ही सुन्दर काम कर रहा है। जनता के जीवन मे धर्म भावना भरने वाला उपयोगी साहित्य प्रकाशित होता रहता है। अभी गत दिनो पूज्य महात्मा हसराज जी लिखित पुस्तक सन्ध्या पर व्याख्यान नामक लगभग चालीस वर्षो के बाद सभा के मान्य मन्त्री प्रो० वेदप्रकाश जी एम० ए० ने परिश्रम करके प्रकाशित करा कर आवश्यक कमी की पूर्ति कर दी है, और भी उत्तम-उत्तम पुस्तको को सभा द्वारा प्रकाशन किया गया है। इस की सराहना होनी ही चाहिए।

अभी-अभी सभा के साहित्य विभाग ने बहुत ही बडा और उत्तम काम किया है। देश विभाजन से पूर्व सभा के यशस्वी प्रधान महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज ने सामवेद का बडा सुन्दर भाष्य आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री से कराया था। वेद का भाष्य करना साधारण काम नही, न ही इस महान् कार्य को साधारण व्यक्ति कर ही सकता है। पूज्य महात्मा जी की यह प्रबल इच्छा थी कि समय-समय पर चारों वेदों के भाष्य सभा द्वारा प्रकाशित किये जाये। विशेष कर के साम और अथर्ववेद के तो अवश्य ही निकले। महात्मा जी ने बडे परिश्रम व आस्था से सामवेद भाष्य लिखवाया। अब पूज्य उसी परम सन्त ने उस महान भाष्य को सभा द्वारा छपवाने के व्यय को भी अपने प्रेमी वेद भक्त सज्जन से प्रबन्ध करा दिया। हमे सारी जनता को यह शुभ समाचार देते हुए परम हर्ष होता है कि साम वेद का सुन्दर भाष्य सभा की ओर से छप कर तैयार हो गया है। इस का कितना सुन्दर कागज है, कितना सुन्दर टायप और छपवाई है तथा कितनी सुन्दरता व श्रद्धा से यह छापा गया है। इसके लिए कितना परिश्रम किया गया है—यह सब कुछ देख कर चित गदगद प्रसन्न हो जाता है। सभा ने परम धर्म वेद का प्रसार करते हुए सामवेद का इतना बढिया जीवनोपयोगी भाष्य प्रकाशित करके भारी यज्ञ कर दिया है। अन्य नाना प्रकार के ग्रन्थ तो सभाए निकालती रहती है। किन्तु वेद भाष्य प्रकाशित करना बहुत बडा काम है। इसके पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी का जितना भी धन्यवाद किया जाये थोडा है। स्वय लिखवाया तथा स्वय इसे प्रकाशित कराने केलिए सभा का नाम ऊचा किया। व्यय का प्रबन्ध करा दिया। सभा का भी धन्यवाद है कि वेद जैसी परम सम्पत्ति का प्रसार करने मे लगी हुई है। सभा ने अपना काम कर दिया। अब समाजो, सस्थाओ तथा वेद भक्तो का का कर्तव्य है कि वे हाथो हाथ इस को अपने प्रेम परिवार एव जीवन क अग बना कर इसी समय सभा से अपनी प्रति मगवाने का प्रबन्ध करे। अपना प्रत्येक स्कूल, कालेज समाज, सस्थान, परिवार कोई भी ऐसा न रहे जहा यह सामवेद भाष्य का सुन्दर ग्रन्थ ना जाये। सभा ने वेद प्रचार की दिशा मे क्रियात्मिक पग उठाया है। वेद के निष्ठा वाले सामवेद भाष्य का मगवा कर पढे। जालन्धर के विक्रम पुरा जलसे मे आने वाले सज्जन भी इस का ध्यान रखे। —त्रिलोक चन्द्र

वेदों का घोर अपमान

आर्य समाज के महान् सस्थापक ऋषि दयानन्द सरस्वतीजी महाराजने अपना सारा जीवन ही वेद प्रचार के के पवित्र कार्य मे अर्पित कर दिया। दस नियमो मे वेद को सत्यविद्याओं का पुस्तक लिखते हुए वेद का पढना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यो का परम धर्म कहा। आर्य समाज की स्थापना वेद प्रचार के महान् मिशन के लिए ही की गई है। अपने आरम्भ काल से ही समाज वेद के पुनीत काम मे सब प्रकार से जुटा हुआ है। वेदो के सम्बन्ध मे समय २ लिखी जाने वाली ऐसी वैसी पुस्तको को देख कर आर्य समाज मौन नही बैठ सकता अपने हो या विदेशी लेखक हो, जिन्हो ने भी वेद के प्रतिकूल अनर्गल बाते लिखी या कही—आर्य समाज ने उन सब का समुचित उत्तर देने मे कभी सकोच नही किया। आज भारत के तमाम विश्वविद्यालयो की ओर से एम ए श्रेणियो मे वेदो के बारे मे जो पाठ्यक्रम नियत है। वैदिक युग को ले कर जो २ विचार पढाये जाते है—उन को पढ कर तो लज्जा से सिर ही झुक जाता है कि स्वतन्त्र भारत मे आज भी वेदो के सम्बन्ध मे ऐसा पाठ्यक्रम जारी है। इसे बदले का कोई भी प्रयत्न नही करता। वेद कितने है? क्या है? उन मे क्या २ है? इन विषयो को ले कर कितनी भयकर बाते आज नही पढाई जाती। आज हम इसी सम्बन्ध मे अपनी ही सस्था मे बैठ कर आर्य समाजी कहने का दम भरने वाले, उस देव दयानन्द के पवित्र नाम के डी ए. वी कालेज कानपुर जैसी सस्था मे बैठ कर वेदो के सम्बन्ध मे क्या विचार रखने वाले लोग है। इस की ओर सारे समाज का ध्यान दिलाना चाहते है। पता नही कि आर्य समाज इतना भावहीन हो चुका है कि ऐसी २ पुस्तक लिखने वाले अपने हो कहलाने वाले इस महानुभाव से इतना भी नही पूछता कि यह आप ने क्या लिख दिया। क्यो आर्यसमाज को कलकित करने मे लगे हो। दयानन्द की पवित्र सस्था मे काम करते हुए उसी देवता का इतना बडा अपमान क्यो कर रहे हो?

श्री डा. हरिदत्त जी शास्त्री एम ए. पी. एच. डी. बहुत बडे विद्वान है। गुरुकुल ज्वालापुर के उपकुल पति भी रह चुके है। वर्षो से कानपुर मे डी ए वी कालेज मे सस्कृत विभाग के भी अध्यक्ष है। वहा प्राध्यापक है। आप ने भारतीय साहित्य और सस्कृति नामक एक पुस्तक लिखी है। सस्कृत एम ए पढने उसे ले कर पढते है। चारो वेदो के विषय को समक्ष रख कर विस्तार मे वर्णन किया गया है। यह पुस्तक क्या है तथा इस मे अपने ही महानुभाव ने वेदो पर क्या २ कीचड उछाला है और वेदो को किस प्रकार कलकित किया है? यह पढ कर लज्जा के मारे सिर झुक जाता है। खेद और शोक तो यही है कि आर्य समाज तथा उसके विद्वान यह सब कुछ पढ देख कर भी चुप है। चाहे कोई भी क्यो न हो परन्तु जो भी वेदो पर हमला करता है उस से समझौता कैसा? नमूने के रूपमे थोडी सी इस पुस्तक की पक्तिया पेश की जा रही है। आर्य सज्जन इन को पढ २ कर अपने आदर्श पर मनन करे। डा० हरिदत्त जी एम ए. अपनी इस पुस्तक भारतीय साहित्य और सस्कृति के पृष्ठ ३२ पर लिखते है—

विभिन्न तरकारिया और फल भी भोजन के अग थे **मासाहार विशेष उत्सवो पर होता था। अधिकतर गाय या बैल का मांस (beaf) ही खाया जाता था। मांस को या तो** भून कर खाते थे या फिर धातु या मिट्टी के **बर्तनों मे पका कर खाते थे।** पीने के बर्तन लकडी के बने होते थे। **मद्यपान भी होता था। दो प्रकार के मद्य होते थे।**

थोडा सा ही नमूना दिया है। आर्यसमाजो के नर-नारी अपनी सस्थाओ मे बैठ कर पढाने का काम करने वालो के वेद विषयक विचार पढे और विचारे कि देव-दयानन्द के वेद परम धर्म है के सिद्धान्त की कितनी मिट्टी पलीत की जाती है। सारा समाज मौन है। कोई बोलता या पूछता ही नही कि यह सब क्या और क्यो हो रहा है। क्या हम इतने बेबस हो चुके है। हम इस पुस्तक के नाना प्रकार के प्रसग आर्य-जगत् के अको द्वारा जनता के सामने रखते जायेगे। हम विदेशियो तथा

(शेष पृष्ठ ५ पर)

ज्यो-ज्यो गोरक्षा विषयक आदोलन उग्र होता जाता है, गोरक्षा के विरोधियो की हिम्मत पस्त होती जाती है। अब तो वे ऐसे ओछे हथियारो पर उतर आए हैं जिस की कल्पना तक नही की जा सकती। ट्रिब्यून मे डा० गण्डासिंह का एक लेख छापा है—'गोवध पर प्रतिबन्ध' लेखक ने इस मे अपने मन प्रसूत सिद्धातो का उल्लेख करते हुए यह चेष्टा की है कि प्राचीन भारत मे गोवध को धार्मिक स्वीकृति प्राप्त थी इसे सिद्ध किया जाए। ऐसा लगता है कि लेखक को कभी वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत आदि पढने का अवसर प्राप्त नही हुआ अन्यथा वह यह कहने का साहस कभी नही करता गोरक्षा का आदोलन हिंदू शास्त्रो से अनुमोदित नही है। अपने पक्ष मे प्रमाण देते हुए लेखक लिखते हैं—

वैदिक और उपनिषद साहित्य में ऐसी धार्मिक रीतियो का उल्लेख हुआ है जिन मे गाय बैल, घोडे और बछडे मारे जाते थे। सम्भवत: लेखक को वैदिक यज्ञो का रहस्य ज्ञात नही है तभी तो उस ने गाय मे बैल, घोडा आदि मारना लिखा। अश्वमेध, गोमेध आदि के वास्तविक अभिप्राय को आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द ने अपने सत्यार्थ प्रकाश मे स्पष्ट किया है। उन के अनुसार अश्व नाम राष्ट्र का और गो नाम वाणी अथवा पृथ्वी का है। राष्ट्र के उत्थानके लिए जो उपाय शासको द्वारा किये जाते हैं वे अश्वमेध संज्ञक हैं। इसी प्रकार वाणी के संस्कार अथवा भूमि के शोधनार्थ किये जाने वाले कर्मों गोमेध कहा गया है। इन का छोड़े अथवा गाय को मारने से कोई सम्बन्ध नही। अथर्ववेद मे 'ब्रह्मगवी सूक्त' आता है जिस में ब्राह्मण की गौ (वाणी) का हनन करने वाले को चेतावनी दी है। यहा गाय से अभि-प्राय है ब्राह्मण की डा. गडा सिंह गोवध के समर्थन मे कोई वेद या शास्त्रीय प्रमाण न देकर डा, राजेन्द्र लाल मित्र के Indo Aryans (Vol. I) को प्रस्तुत किया है परन्तु उन्हे स्मरण रहना चाहिये कि शास्त्रालोचन मे उन पाश्चमी विद्वानो के उच्छिष्ट भोजी डा. मित्र जैसे भारत विद्या विशारदो के कथन को प्रामाणिक नही समझा जा सकता जिन्होने वैदिक ग्रन्थो का प्राचीन पद्धति मे अनुशीलन न कर पाश्चात्य प्रणाली मेपल्लव ग्राही पाण्डित्य प्राप्त किया है।

गोवध निषेध और डा. गंडासिंह की बहक

(श्री प्रो० भवानीलाल जी भारतीय M. A. R. E. S. गवर्नमैंट कालेज पाली (राजस्थान)

डा. मित्र के अनुसार राजसूय, वाजपेय, अश्वमेध आदि यज्ञों मे पशुओ का बडी सख्या मे वध होता था। तैतिरीय ब्राह्मण का प्रमाण देते हुये वे लिखते हैं कि अकेले अश्वमेध मे ही १८० पशुओ का बलिदान होता था। यहा भी डा. मित्र को भ्रम ही हुआ है। यजुर्वेद के २४ वे अध्याय मे वहा अनेक पशु, पक्षी, कीट, पतग आदि का उल्लेख हुआ है उन्हे मारना तथा उन को बलि देना वेद का अभिप्रेत नही है। यहा 'आलभन' किया का प्रयोग हुआ है जिस का अर्थ न समझ अनर्थ किया गया है। वस्तुत: राजा अश्मेध के अवसर पर विभिन्न पशु पक्षियो की प्रदर्शनी यज्ञस्थल पर लगाता था, जिस से जनता के ज्ञान की वृद्धि होती थी। आज भी जैसे विभिन्न प्रदर्शनियों का आयोजन होता है उसी प्रकार के प्रदर्शन यज्ञ के अवसर पर होते थे। यदि यह माना जाय कि इस अवसर पर उक्त अध्याय मे उल्लिखित प्राणियो का वध होता था, तो यह नितान्त हास्यास्पद ही होगा। इस अध्याय मे मेडक, मत्स्य, हस, बलाक, उल्लू, कबूतर, चूहा, नकुल आदि कतिपय ऐसे जानवरो का उल्लेख हुआ है जिनके यज्ञ मे बलिदान का कही कोई उल्लेख नही मिलता। वस्तुत: ये जानवर कहा से प्राप्त हो सकते है, यही उस अध्याय मे बताया गया है।

इसी प्रकार मधुपर्क के प्रसग में गोवध की जो कल्पना की गई है वह भी भ्रम पर आधारित है। अतिथि के स्वागत मे उसे गाय भेट स्वरूप दी जाती थी। इसे ही मधुपर्क में 'गवालम्भ कहा गया है। भारत के इतिहास से किसी भी घटना को उद्धृत नही किया जा सकता जिससे यह सिद्ध होता हो कि कभी किसी अवसर पर गाय का धार्मिक विधियों के सम्पादन के लिए वध किया गया हो। यहां लेखक ने 'उत्तर राम चरित के उस प्रकरण की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है जिस मे वसिष्ठ के स्वागतार्थ वाल्मीकि के आश्रम मे वत्सतरी (बछडी) मारी गई थी। वस्तुत: नाटक अथवा काव्य धर्मालोचना मे प्रामाणिक नही माने जा सकते। यदि काव्य और नाटक को ही प्रमाण मान लिया गया तो फिर धर्मशास्त्रो की क्या आवश्यकता रह जायगी। भवभूति का यह कथन भी शास्त्र के अभिप्राय को न समझने के कारण ही लिखा गया प्रतीत होता है। जिस युग मे भवभूति उत्पन्न हुए उस समय तक वैदिक शास्त्रो का वास्तविक अभिप्राय लुप्त हो चुका था और मध्यकालीन युग के पाप मार्ग की प्रवृत्तिया उस काल के लोगों की विचारधारा को प्रभावित कर चुकी थी। अतः उत्तरराम चरित का यह प्रसंग बाल्मीकि कृत रामायण से विपरीत होने के कारण अप्रमाणिक है।

इसी प्रकार बृहदारण्यक उपनिषद के उस अश को भी उद्धृत किया है जिस मे कहा गया है कि यदि कोई चाहे कि उसके विद्वान पुत्र उत्पन्न हों तो उस दम्पति को वृषभ पका कर खाना चाहिये। यहा वृषभ या 'ऋषभ' का अर्थ बूढा बैल किया है जो अनुचित है। वस्तुत: यह तो एक औषधि थी जिसका सेवन किया जाता था। आयुर्वेद का भी इस मे प्रमाण दिया जा सकता है? 'अश्वगधा औषधि ही इस मे उल्लिखित है। अत: आयुर्वेद की औषधियो के रहस्य को न समझ कर डा. गण्डासिंह का यह कथन कि बैल का मास पुराने युग मे खाया जाता था आधारहीन है। महाभारत के आधार पर राजा रन्तिदेव की रसोई मे सहस्रो गायो के मास पकने का उल्लेख भी मिथ्या और भ्रमोत्पादक है। प्रथम तो महाभारत आज जिस रूप मे हमें उपलब्ध होता है वह अपने मूल ग्रन्थ से कई गुना बढे हुये आकारमे है। शताब्दियो तक इस ग्रन्थ मे न्यूनाधिक होता रहा है। वाम मार्गी प्रक्षेपकारो ने मासभक्षण की पुष्टि में जो स्थल महाभारत मे प्रक्षिप्त किये हैं उन्ही मे से एक प्रसंग यह भी है।

डी. वी. एम. आपटे के Vedic Age (History and cullure of the Indian People Vol. I. PS. 20) विद्याभवन बम्बई मे प्रकाशित ग्रन्थ को उद्धृत करते हुये लेखक ने यह सिद्ध करने का यत्न किया है कि वैदिक काल मे मास भक्षण का आम प्रचलन था, यहा तक कि गाय का मास भी वर्जित नही समझा जाता था। श्राद्ध में ब्राह्मण को मास भोजन परोसा जाता था तथा अन्त्येष्टि अतिथि यज्ञ में मधुपर्क प्रसग शूलगव जैसे यज्ञो में गोवध होता था। वस्तुत: वेद तो गोरक्षा का ही विधान करता है। 'गामा हिंसी' जैसे वचनो के रहते वेद को गाय को मारना सिद्ध करना साहस मात्र ही हैं। वेद में 'अघ्न्या' शब्द गाय के लिये आया है जिसे किसी भी सूरत में मारा नही जा सकता। अथर्ववेद के गोसूक्त मे गाय को रुद्र ब्रह्मचारियों की माता, वसु ब्रह्मचारियों की दुहिता तथा आदित्य ब्रह्मचारियों की बहिन कहा गया है। इस अमृत की नाभि गाय को भी जो निष्पाप है न मारने का स्पष्ट आदेश दिया गया है 'मा गा अनागा अदितिबधिष्ठ' यह अखण्डनीया गौ सर्वथा अवध्य है। बल्कि गाय की हत्या करने वाले के लिए वेद ने उसे सीसे की गोली से उडा देने का विधान किया है। ऐसी स्थिति मे गोमास के खाने या श्राद्ध में उसे परसने का तो प्रश्न ही नही उठता। शूलगव आदि याग वाममार्गी युगो मे निकाले गए जब कि जिह्वा लोलुप पुरोहित वर्ग ने यज्ञो के नाम पर पशु हिंसा का प्रचलन किया। मधुपर्क (अतिथि सत्कार) के अवसर पर गोवध का होना निरतर कल्पित और असिद्ध है जिस का उल्लेख हम ऊपर कर चुके हैं।

मनुस्मृति के मास विधायक जो प्रमाण लेखक ने दिए है, वे भी उसके अभिप्राय को सिद्ध नहीं करते। प्रथम तो मनुस्मृति मे मृतक श्राद्ध निरूपणात्मक तथा मास भोजन विधायक श्लोक कालन्तर मे प्रक्षिप्त किए गए हैं। इस का सब से बड़ा प्रमाण यह है कि मनुस्मृति में ही 'अनुमन्ता विशासिता' आदि श्लोको मे मासाहार को घोर पाप कहा गया है और आठ प्रकार के घातको मे केवल मासाहार करने वालो की ही नही, अपितु उस की अनुमति देने वालो तथा उस से सहमति रखने वालो को भी पाप का भागी बताया गया है। मनुस्मृति जैसे उदात्त और महनीय धर्मग्रन्थ मे मासाहार विषयक प्रक्षेप निश्चय ही प्रक्षेपकर्ताओ की करतूत हैं जिन की इस षड्यन्त्र पूर्ण कार्यवाही से कोई भी ऋषि निर्मित शास्त्र नही बच सका है।

चरक का प्रमाण देते हुए लेखक ने यह सिद्ध करने का निष्फल यत्न किया है कि अन्नपान विधि के अन्तर्गत

(शेष पृष्ठ ५ पर)

गौ वध निषेध...

(पृष्ठ ४ का शेष)

गाय, भैंस आदि का मांस नित्य प्रति न खाया जाए। वस्तुतः आयुर्वेद शास्त्र एक विज्ञान है। उस मे चर्चित विषयो का धार्मिक विधि निषेधों से कोई सम्बन्ध नही। आयुर्वेद तो तथ्य मूलक विज्ञान होने के नाते सभी खाद्य अखाद्य पदार्थों का विवेचन करता है। इस का यह अभिप्राय नहीं कि उस के द्वारा विचारित सभी पदर्थो का नैतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टि से खाद्य के रूप मे प्रयोग किया जाए।

लेखक ने वैदिक धर्म मे प्रचलित इस तथाकथित हिंसावाद के निराकरण का श्रेय बौद्ध धर्म को दिया है। यह अवश्य सत्य है कि तत्कालीन ब्राह्मण धर्म मे यज्ञो में पशु-हिंसा के प्रचलन को देखते हुये प्रतिक्रिया स्वरूप बौद्ध धर्म ने वेद और यज्ञ के विरुद्ध आवाज उठाई थी, परन्तु यह कथन नितान्त निर्मूल है कि बौद्ध धर्म ही वैदिक धर्म मे अहिंसा और प्राणी मात्र के प्रति दया के भावो को जगाने मे समर्थ हुआ। वस्तुतः अहिंसा और भूत दया तो वैदिक ब्राह्मण धर्म का सदा से एक अविच्छिन्न अंग रहा है। वेदों मे 'यजमानस्य पशून पाहि' 'माहिंस्यात् सर्वाणिभूतानि कह कर प्राणिमात्र के प्रति दया का भाव दर्शाया गया है। अहिंसा को वैदिक योगदर्शन मे महाव्रत माना गया है और उसकी सिद्धि से वैरत्याग की उपलब्धि बताई गई है। मनुस्मृति, उपनिषद, गीता, महाभारत और इतिहास आदि सभी ग्रन्थो मे अहिंसा को सर्वोपरि धर्म माना गया है। यह बात नही कि भारतीय समाज मे अहिंसा का गौरव बौद्ध आदि वैदिकेतर सम्प्रदायो के द्वारा ही स्थापित हुआ हो। भारत की वैदिक परम्परा पर आधारित वैष्णव सम्प्रदाय में भी अहिंसा को सर्वोपरि स्थान मिला और यह निश्चित है कि वैष्णवो का अहिंसावाद किसी भी प्रकार से बौद्धो की अहिंसा से अप्रभावित नही था।

अन्त मे लेखक उन लोगों की वकालत करने से भी नही चूकता जिन की दृष्टि मे गाय का धार्मिक दृष्टि से कोई महत्व नही है और जो गोवध मे पाप नही समझते। हमारी दृष्टि में गाय की पवित्रता और उसकी महत्ता को देश मे आर्थिक, सांस्कृतिक और परम्परागत कारणों से सर्वोपरि महत्व मिलना चाहिए। जिसने भारत मे जन्म लिया है और भारत के जल और अन्न से पला है उसके हृदय मे तो गाय के प्रति मातृवत पूज्य भाव होना ही चाहिए, चाहे वह किसी भी धर्म का मानने वाला क्यो न हो ? रहीम, रसखान, जायसी और कबीर की उदार विचारधारा को स्वीकार करने वाले लोगों को ही भारतवासी अपनी कला का केतु बनायेंगे, उन लोगो की नही जिन्होने अल्लाउद्दीन, औरंगजेब और जिन्ना का आदर्श उत्पन्न कर भारत के धार्मिक सौहार्द को समाप्त किया और साम्प्रदायिकता के बीज बोये।



आर्यसमाज सैक्टर ८ चण्डीगढ़

गऊ को राष्ट्रीय पशु घोषित कर इसकी रक्षा के लिए सम्पन्न राज्य नियम बनाना चाहिए।

चण्डीगढ के गऊ रक्षा सम्मेलन मे कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर और देवियो ने सत्याग्रह के लिए अपने को पेश कर दिया।

आर्यसमाज के उत्सव की धूम-धाम

दिनाक १३-९-६६ को आर्यसमाज सैक्टर ८ चण्डीगढ के आठवें वार्षिक उत्सव के गोरक्षा सम्मेलन के प्रधान पद से भाषण देते हुए आचार्य प्रियव्रत जी गुरुकुल कागडी ने कहा कि गो-रक्षा के लिए गो घातकी रोक का कानून सम्पन्न होना चाहिए। जिसमे वृद्ध गऊ को भी मारने की आज्ञा नही होनी चाहिए। और यह तब हो सकता है जब कि गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित कर उस के प्रति सम्मान की जाए।

कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर ने अपने ओजस्वी भाषण के मध्य कहा कि आर्थिक स्थिति का बहाना बनाने वालों को ऋषि दयानन्द की लिखी हुई पुस्तक गऊ करुणानिधि को पढना चाहिए।

जिस में उन्होंने आर्थिक लाभो के आधार पर लिखा है कि एक गाय के मारने से एक लाख २० हजार मनुष्यो के धन ऐश्वर्य और शरीरो की हानि होती है।

बहिन सुशीरा देवी जी ने देवियो की ओर से सत्याग्रह मे जाने की घोषणा की।

सम्मेलन मे श्री ओमप्रकाश जी आर्य और श्री जयदेव ज्योति वाले और अन्य महानुभावो ने सरकार पर यह आरोप लगाया कि अंग्रेज़ी राज्य मे जहा १८०८ बूचड खाने थे वहां अपने राज्य मे इनकी संख्या २०२२ हो गई है।

सम्मेलन में निम्न तीन प्रस्ताव पारित करके गृहमन्त्री तथा प्रधान भारत सरकार और चीफ कमिश्नर चण्डीगढ़ को भेजे गये।

१. गो हत्या की पाबन्दी सारे देश मे कानून के द्वारा लगा देनी चाहिए।

२. आर्य समाज द्वारा चलाए गए सत्याग्रह का जोरदार समर्थन किया गया।

३ चण्डीगढ मे गऊ रखने और पालने का अधिकार सब को होना चाहिए जैसा सारे देश के अन्दर है।

उत्सव मे १२.११.६६ को महाऋषि दयानन्द निर्वाण दिवस वेद स्वामी मेधार्थी जी सामवेद मार्तन्ड की अध्यक्षता मे समारोहपूर्वक मनाया गया।

शुक्रवार ११.११.३६ को अढाई बजे से पाच बजे तक नगर कीर्तन निकाला गया जो कि एक मील लम्बा था जिस मे अनेक प्रमुख संस्थाओ ने भाग लिया।

६ नवम्बर से वेद स्वामी व्याख्यानवाचस्पति सामवेद मार्तन्ड श्री स्वामी मेधार्थी जी एम०ए० विद्यालकार की अध्यक्षता मे सामवेद महायज्ञ हुआ। स्त्री आर्यसमाज के उत्सव मे बहिन सुवीरादेवी जी का सारगर्भित उपदेश हुआ।

— आयुराम आर्य पुरोहित समाज

वेदों का घोर अपमान

(पृष्ठ ३ का शेष)

अन्य लोगो के द्वारा जो वेदो पर अनर्गल लिखा जाता है, उनके विरुद्ध अपना रोष प्रकट करते हैं, किन्तु हमारे अपने घर मे अपने ही लोग वेदों में गाय-बैल के मास का आहार तथा ऋग्वैदिक काल मे दो प्रकार का शराब पीना सिद्ध करने है—तो चुप हो जाते हैं। वेदो का तथा परम-धर्म वेद का उद्घोष करने वाले देव-दयानन्द का तो इतना अपमान न करने दो। क्या हमारी भावनाए सर्वथा समाप्त हो चुकी है—स०

आर्य प्रादेशिक सभा की आवश्यक सूचना

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित सभी समाजो को अपने प्रतिनिधि भेजने तथा दशांश भेजने के 'क,ख' फार्म भेजे जा चुके हैं परन्तु गति बहुत धीमी है। समय थोडा रहगया है अत: अपनी समाजों के प्रतिनिधियो की सूचि तथा दशांश सभा के कार्यालय मे यथा समय भेज कर कर्तव्य पालन करें।

—सभा मन्त्री

यमुना नगर माडल टाऊन

आर्यसमाज माडल टाऊन यमुना-नगर का वार्षिक महोत्सव भी बडी धूम-धाम से हुआ। यहा का समाज व इस समाज परिवार के सारे भाई-बहिने बड़े ही श्रद्धालु उत्साही हैं। बडे समारोह से जलसा करते हैं। श्री दीना नाथ जी चण्डोक प्रधान तथा श्री शक्ति कुमार जी मन्त्री के साथ सारा समाज ही खूब समाज के काम मे जुटा हुआ है। समाज का शिशु विद्यालय खूब प्रगति कर रहा है। उत्सव मे पूर्व ता० ७ नवम्बर से कथा सभा के मधुर भाषी श्री प० खुशी राम जी महोपदेशक जी करते रहे। प० राजपाल मदन जी की व प० राम देव जी की मण्डली के भजन होते रहे। उत्सव मे स्वामी आनन्द गिरि जी, प० त्रिलोक चन्द्र शास्त्री, पं० वेद व्रत जी शास्त्री, प० मेला राम जी रेडियो सिंगर, ब्रह्मचारी महेश जी, प० जगत राम, बस्ती राम जी, प० राम देव जी मण्डली पधारी। जल्से मे गो-रक्षा सम्मेलन व संस्कृत सम्मेलन भी हुए। छात्रो के कार्यक्रम भी हुए। डी० ए० वी० स्कूल व कालेज ने भी खूब भाग लिया। वेद प्रचार मे सभा को भी पुष्कल राशि मिली। जलसा बडा शानदार था—

शंकराचार्य की गिरफ्तारी धर्म में सीधा हस्तक्षेप

सुशील मुनि का वक्तव्य

नई दिल्ली—गत दिवस सर्वोदय गोरक्षा महाभियान समिति की एक बैठक मे स्वामी प्रभुदत्त ब्रह्मचारी के स्थान पर स्वामी सुशील मुनि को समिति का प्रधान नियुक्त किया गया। स्वामी सुशील मुनि ने आज एक वक्तव्यमे जगद्गुरु शकराचार्य की गिरफ्तारी को धर्म मे सीधा हस्तक्षेप बताया। गोहत्या पर प्रतिबन्ध ही समस्या का हल है।

उस युग की ओर

(श्री ला० सन्तोषराज जी प्रिंसिपल हरकौर गर्ल्स स्कूल माडल टाऊन पानीपत)

हमारे पुरातन साहित्य मे कथा आती है कि प्रभुनिष्ठ अध्यात्मवादी उपासक ने अपने जीवन के अन्तिम समय अपने योग्य युवक पुत्रको समीप बिठा कर कहा—वेदोऽसि, यज्ञोऽसि, लोकोऽसि। तू वेद है, ज्ञान है, तू यज्ञ है, परोपकार है और तू लोक है। तूने जीवन मे वेदनिष्ठ बन कर ज्ञान का प्रसार करना है। यज्ञमय बन कर विश्व सेवा मे लगे रहना है इस लोक के कर्मो का भी सम्पादन करतेरहना है। तीनो बातो के होते हुए अब मुझे किसी बात की भी चिन्ता नहीं है। ये तीन व्रत मैंने अपने जीवन मे धारण किए थे। आज तेरे जीवन मे इन तीनो विशेष गुणो को देख कर मुझे परम मनस्सन्तोष होता है। अब मुझे ससार से विदा होते हुए किसी भी प्रकार का कष्ट नही होता। मेरा व्रत आगे चलता रहेगा।

ऋषि का यह उपदेश बडा ही शिक्षादायक है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन मे विशिष्ट प्रकार के तीन कार्य करने आया है उस ने ज्ञान का सम्पादन करना है। उसने वेद का सन्देश अपने जीवन मे लाकर सारी जनता तक वेद ज्ञान को पहुचाना है उसने यज्ञको अपना करके लोगोकी सेवा भी करनी है। केवल स्वार्थ का ससार नही बनाना, प्रत्युत सेवामय बनना है। तीसरा व्रत यह है कि उसे लोक भी बनाना है। इस जीवन के लिए भी पूरा २ प्रयत्न करना है। इसे सुखी बनाने की ओर ध्यान देना है। जीवन की यात्रा को सुगमता के साथ चलाने के लिए आवश्यक काम आने वाले पदार्थों का प्रबन्ध करना है। ज्ञान, सेवा एव लोकार्जन ये तीनो बातें जीवन का आवश्यक अग है। इन तीनो मे से जब भी कभी एक कम हो जाती है। मनुष्य इन मे से किसी एक को भी छोड देता है। उस समय जीवन, परिवार तथा समाज की प्रगति मे भारी बाधा उपस्थित हो जाती है। पुरातन युग मे ऋषि मुनि अपने मे तीनो व्रतो को धारण करके अपने शिष्यो को इन से विभूषित किया करते थे। पिता जीवन के अन्तिम समय मे निश्चिन्त होकर भौतिक शरीर को छोडता था। उसे किसी प्रकार का शोक चिन्ता, भय तक नही होता था, क्योकि उसने अपने व्रतो का समावश अपनी सन्तान के जीवन मे कर दिया होता था। अन्तिम अवस्था मे अपने लड़के को पास बिठा कर यही कहते थे—पुत्र त्व वेदोऽसि, यज्ञोऽसि, लोकोऽसि।

वैसे तो तीनो व्रत जीवन व समाज के लिए बडे आवश्यक हैं। पुरातन अध्यात्मवादी युग मे वेदोऽसि की अधिक प्रतिष्ठा थी। वेद निष्ठा का सुन्दर समय था। घर परिवार मे वेदोपासना होती थी। सब सत्य विद्याओ एव तमाम ज्ञान का भण्डार वेद को माना जाने के नाते वेद का पठन-पाठन परमावश्यक था। जिसने वेद का स्वाध्याय नही किया होता उसे उत्तम शब्दो से स्मरण नही किया जाता था। प्रत्येक आचार्य अपने आश्रम में, प्रत्येक पिता अपने परिवार, प्रत्येक सस्थान अपने यहा वेद के पढने की ओर पूरा-पूरा ध्यान दिया करता। स्वाध्याय और प्रवचन ये दोनो कार्य ही बडे जरूरी थे। जीवन के विशिष्ट अग थे। यही कारण था कि उस युग के ऋषियो केआश्रमो मे वेदकी शिष्य परम्परा का प्रवर्तन जारी था। प्रत्येक आचार्य अपने शिष्यो को वेदोऽसि का प्रतीक बनाने में अपना कर्तव्य समझता है। उपनिषदो के युग मे यह परम्परा जागृत थी। इसीलिए वेद ज्ञान का प्रकाश चारो ओर फैला हुआ था। जीवन में वेद की निष्ठा प्रधान बनी हुई थी।

दूसरा समय ऐसा आया कि लोग अपने जीवन मे यज्ञ,सेवा भावना को ले कर काम करने लगे। महाराणा प्रताप अन्तिम मृत्यु समय मे बडी बेचैनी थी। पूछने पर कहा कि मेरा पुत्र विलास में पड़ कर कहीं [illegible] की स्वतन्त्रता को अपने सुखो के लिए बेच न देवे। मेवाड़ भूमि की स्वाधीनता मैं ने बडे कष्टों से प्राप्त की है—इसे अपने तुच्छ ऐहिक भोगो के लिए गवा न बैठे। यह विचार मुझे बेचैन किये जाते है। इस पर उन के सेनानायको ने महाराणा को विश्वास दिलाया, तब कही उस यज्ञ रूप महाराणा ने सुख से अपने प्राण विसर्जन किए। यह यज्ञोऽसि की भावना से भरा युग था। राष्ट्रसेवा, देश भक्ति, जनता की वेदना को दूर करने का युग था। गुरु विरजानन्द ने कहा दयानन्द। आज का विश्व दु:खी है। लोग अपने २ स्वार्थ मे लगे हैं। यज्ञ मयी भावना का सर्वथा लोप होता जा रहा है। यज्ञ के व्रत को जगाना होगा। वह युग यज्ञोऽसि का प्रतीक था। पिता अपने पुत्र को, गुरु अपने शिष्य को यज्ञ भावना के मार्ग पर चलाना चाहते थे। दूसरो के लिए भी जीओ। तीसरा समय आज का है। जिस को केवल लोकोऽसि का युग कहा जा सकता है। यही लोक ही जीवन है। योग्य पदार्थों को जीवन की निष्ठा बनाना ही जीवन का प्रयोजन है इस समय सारे समाज के जीवन मे स्वार्थ के भावो की आंधी चलती है अपने घर की चार दीवारी के अन्दर बैठ कर अपने लिए ही सोचना, जुटाना, बनाना, कमाना ही एक मात्र काम रह गया है। आज इस तमाम उत्पात का गडबड का मूल कारण क्या है? क्या वस्तुओ की कमी हो गई है। ऐसी बात नहीं। इतनी कमी नही। वास्तव मे बात यह है कि लोगो के मन की विचार-धारा मे सकुचितपन आ चुका है। प्रत्येक व्यक्ति, परिवार, समाज केवल अपने लिए ही सोचता है। अपने लिए ही वह काम करता है। अपने को सुखी बनाने के लिए दूसरों को यात ना दे कर भी लज्जित नही होता। इसी भावना को स्वार्थ भावना या आसुरी वृत्ति कहा गया है। भोग-प्रधान जीवन बन गया है। इदन्न मम की पवित्र भावना समाप्त हो गई है। इद मम, इद मम। यह मै हूं और यह मेरा है। इस का प्रबल प्रचार है। अपनेपन का तूफान चलता है। न यज्ञोऽसि है और न वेदोऽसि का पुनीत पाठ है। केवल लोकोऽसि ही रह गया है। शरीर की पूजा हो रही है। आत्मवाद समाप्त है। इस स्थिति को बदलना होगा। उन वेदोऽसि, यज्ञोऽसि के व्रतो को भी साथ में मिलाना होगा। ★★

पानीपत माडलटाऊनका जलसा

आर्यसमाज माडलटाऊन पानीपत का वार्षिक महोत्सव बडे ही समारोह से सम्पन्न हो गया। यहा पर समाज के सज्जनो व देवियो का बडा ही समाज के लिए श्रद्धा व उत्साह है। यह देख कर और भी प्रसन्नता हुई कि माननीय ला० सन्तोषराज जी पूर्व मन्त्री सभा अब पानीपत मे हर कौर आर्य कन्या स्कूल के प्रिंसिपल बनकर आ गए है। समाज के कामो की ओर भी वृद्धि हो जाएगी। जलसे मे स्वामी आनन्दगिरि जी, प्रिंसिपल ज्ञानचन्दजी प० त्रिलोकचन्द शास्त्री प० वेदव्रत शास्त्री, प० राजपाल मदनमोहन मण्डली, प० प्रभुदयाल जी की मडली व प० रामदेव मडली पधारे। नगर कीर्तन कमाल का था। उत्सव का सारा कार्यक्रम ही बडा रोचक था। माडल टाऊन समाज का केन्द्र है। बडी बडी शिक्षण सस्थाएं है। स्त्री समाज की बहिने भी बडा सुन्दर काम करती है। प्रिंसिपल शानुराम जी प्रधान, श्री हुकमचन्द जी मन्त्री सारा समाज ही खूब काम करता है। सभा को काफी वेद प्रचार दिया गया। आठ प्रतियां आर्य जगत की भी प्रति सप्ताह लगी—

गऊ की फरयाद अपने स्वामी से

भजन

श्री मास्टर हरिचन्द जी गुप्त जाखल मडी

गऊ माता दा कष्ट मिटा, गल उत्ते चल्ले छुरिया।
दूध, घी, मलाई खोआ दही खवावदी।
गोबर मूत्र नाल शुद्ध चौके नू बनावदी।
स्वास्थ रक्षा दी जेहडी दवा, गल उत्ते.

जदो ताई दुध दित्ता, ओदो ताई प्यार सी।
बूढी होई गऊ माता घरा तो निकारती।
दित्ती हथमैं कसाईया दे फड़ा। गल उत्ते ..

पापिया तूं पापा कोलो मूल नही सवदा।
फेर शुभ कामना दी इच्छा मैथो मगदा॥
तेरे सिर बिष पावांगी सवाह, गल उते...

बम्बई कलकत्ता जांदी एना तों मालूम है॥
चालीस हजार साडा रोज हुंदा खून है।
किथे भुगतेगा तूं एह गुनाह। गल उते...

गऊ बध बन्द हो 'गाधी' दी पुकार जी।
'गुप्ता' दी बेनती भी एहो बार-बार जी।
सभा भारत दी चालू करे ला। गल उते...

धर्म निरपेक्षता का भूत

(श्री काशीनाथ जी शास्त्री, [illegible] टी०, गोंदिया)

जब से भारत धर्मनिरपेक्ष राज्य घोषित हुआ है तब से इस 'धर्म-निरपेक्षता' का जितना अधिक दुरुपयोग हो रहा है उतना शायद कभी न हुआ होगा। मालूम नही लोग 'धर्म निरपेक्षता' का क्या अर्थ लगाये बैठे हैं और उनके दिलो में धर्म के प्रति कौन-सा वहम समा गया है?

गत माह सितम्बर में केन्द्रीय राज्य सभा मे एक कम्युनिस्ट सदस्य ने उत्तर प्रदेश में पढ़ाई जाने वाली कुछ पुस्तकों में विद्या की प्रतीक सरस्वती की महिमा के वर्णन को 'एक धर्म की बातें दूसरे धर्म पर लादने का प्रयत्न बताया। एक कांग्रेसी सदस्य ने इतिहास की एक पुस्तक का हवाला देते हुए कहा कि 'औरंगजेब कट्टर सुन्नी मुसलमान था और अन्य मुसलमानो तथा हिन्दुओ के प्रति बहुत बुरा व्यवहार करता था एवं मन्दिरो पर भी हमले करवाता था।' ये आपत्तिजनक अंश है, इन्हे बच्चो को नही पढ़ाना चाहिये।'

मैं जानना चाहता हू कि यदि किसी व्यक्ति के गुणो-अवगुणो का चित्रण आपत्तिजनक हैं तो क्या किसी की प्रशंसा ही करनी चाहिए? क्या उसके दोषो या अवगुणो पर प्रकाश डालना ठीक नही है? फिर यदि कोई ऐतिहासिक तथ्य हो तो उसे तोड-मरोड कर रख देने या लिखने से वह उस दशा में व वास्तविक इतिहास ही न रह जाएगा।

इतिहास मे एक ओर जहा औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता की भर्त्सना है वहां दूसरी ओर बाबर की वीरता, रण कुशलता, उदारता और धार्मिक सहिष्णुता की तथा जहांगीर की न्यायप्रियता की प्रशंसा भी है। फिर यदि औरंगजेब सरीखे व्यक्तियों के अवगुणो का उल्लेख आपत्तिजनक है तो क्या अकबर का हिन्दू-स्त्रियो के साथ विवाह-सम्बन्ध इत्यादि बातो का उल्लेख हिन्दुओ के लिए अपमान व लज्जाजनक नही है?

इसी प्रकार प्रत्येक युद्ध के परिणाम या अंत में यह लिख देना कि 'राजपूत या हिन्दू बडी वीरतासे लडे किन्तु हार गये' क्या ये बाते हिन्दुओं को निरुत्साहित व लज्जित करने वाली नहीं हैं?

वास्तविकता यह है कि हमारे देश के इतिहास को अंग्रेजो ने बदल कर व बिगाड कर रख दिया। उसी बिगडे इतिहास को हम आज तक मानते, पढते-पढ़ाते चले आ रहे हैं। आवश्यकता इस बात की है कि भारत का सच्चा व प्रामाणिक इतिहास लिखा जाय। प्रतिवर्ष इतिहास की सैकडों पुस्तकें प्रकाशित होती हैं और इतिहास विषय पर डाक्टर रेट प्राप्त करने वाले भी सैंकड़ो निकलते हैं किन्तु हमारे भारतीय इतिहास वेत्ता व लेखक उसी पीसे को पीसा करते हैं। कोई नयी खोज व शोध नही करता। हमे गौरंग महाप्रभु (अंग्रेज) जो कुछ पढ़ा गये वही "बाबा वाक्य प्रमाण" के अनुसार हम मानते व लिखते चले आ रहे हैं। लिखने का तात्पर्य यह है कि यदि इतिहास पर खोज की जाय और भारत का सच्चा व प्रामाणिक इतिहास तैयार किया जाये तो अति उत्तम हो किन्तु यदि 'धर्म निरपेक्षता का भूत" सर पर सवार होने के कारण दूसरे धर्म वालो के तुष्टिकरण के लिये यदि इतिहास के किन्ही कटु सत्य बातो को निकाल डालें तो फिर इतिहास की अस्लियत रसातल को चली जायगी। इसके अतिरिक्त धर्म निरपेक्षता के नाम पर की गई ऐतिहासिक काट-छाट का अन्त भी उसी प्रकार कठिन हो जायगा जिस प्रकार भाषा के आधार पर प्रान्तो की रचना।

अन्त मे मै धर्म निरपेक्षता के तथाकथित महान् प्रेमियो से निवेदन करूगा कि वे दूसरे धर्म वालो की तुष्टिकरण की नीति वश किन्ही ऐतिहासिक तथ्यो का काट-छाट के लिए आग्रह न करे अन्यथा नित्य नई-नई मागे सामने आवेगी और उनका कभी अंत न होगा। फिर एक दिन ऐसा भी आ सकता है जब कि आप के द्वारा बहकाये हुए कुछ लोग यह भी माग करें कि हम किसी भाषा विशेष में रचित भारत माता की वंदना (राष्ट्र गीत) न गाएगे।★

★ जिस का स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का पालन और बिना पक्षपात के न्याय और सबकी भलाई करना है, जो कि प्रत्यक्ष आदि प्रमाणो मे परीक्षत किए हुए सत्य भाषणादि कर्म हैं और जो वेदोक्त होने से सब मनुष्यो के लिए यही एक मानने योग्य हैं, उसको धर्म कहते हैं।

पुराणों की शिक्षा

(श्री हरिश्चन्द्र जी गुप्त, मन्त्री आर्य समाज जाशल मंडी)

आर्य समाज का तीसरा नियम है कि "वेद सब सत् विद्याओ का पुस्तक हैं, वेद का पढना-पढाना और सुनना सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है" सो आदि सृष्टि मे परमेश्वर ने हमारी सुगमता के लिए अपना पवित्र ज्ञान हमे वेदो द्वारा दान मे दिया, जिसे हम ग्रहण करके ईश्वर के परम धाम मुक्ति को पा सकें, जब तक भारत वर्ष मे वेद विद्या जारी रही, और वेदो द्वारा बनाये गए ऋषि-कृत ग्रथो का लोगो मे मान रहा तब तक सभी जन सुपथ अपनाते रहे और निराकार परमात्मा की उपासना में ही लीन रहे और हमारा भारत देश सुख सागर मे ही डुबकिया लगता रहा कोई दुःख कोई क्लेश वा अन्य कोई संकट और न ही अन्य प्रकार की पूजा का रोग लेशमात्र भी किसी पर प्रभाव न डाल सका! श्री स्वामि दयानन्द महाराज लिखते हैं कि 'वेदोंकी अप्रवृत्ति होने का कारण महाभारत युद्ध हुआ इनकी अप्रवृत्ति से अविद्या अन्धकार के भूगोल मे विस्तृत होने से मनुष्यो की बुद्धि भरम युक्त होकर जिसके मन मे जैसा आया वैसा मत चलाया, उन सब मतो मे चार मत अर्थात जो वेद विरुद्ध पुराणी, जैनी, किरानी और कुरानी सब मतो के मूल है जब विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार दूर होने लगा और देश छोटे २ टुकडो मे बट गया, लोगो मे जो वेदादि पढने का रिवाज था समाप्त हो गया, अनेको मत मतान्तर प्रचलित हो गए सब मत वालो ने अपना २ राग गाना आरम्भ कर दिया, यदि कही बुतप्रस्ती और मूर्तिपूजा हो रही है तो उधर श्राद्धो का दौर चल रहा है. यदि एक ओर अश्वमेध-यज्ञ, गौमध यज्ञ और नर मेधयज्ञ रचाया जो रहा है तो उधर दूसरी ओर मद्य का पीना और पिलाना और सस्ती मुक्ती दिलाई जा रही है। जो जिसके जी मे आया किया और भोली जनता ने उसे ही सत्यमान अपने आपको नष्ट-भ्रष्ट किया।

१८ पुराणो के कर्ता व्यास जी को मान और देवी भागवतआदि पुराणो मे जो गपोडे हाके हैं उन पर झूठे दोष लगाकर उन्हे भी बदनाम करने मे कोई कसर उठा नही रक्खी, प्रथम तो व्यास जी १८ पुराणो के लेखक ही नही, वे ऐसी झूठी बाते अर्थात् मद्यपान. मास भक्षण, व्यभिचार करना. झूठ बोलना, चोरी करना, गर्भपात करना, द्यूत खेलना आदि न लिख सकते थे, व्यास जी तो बड़े विद्वान, सत्यवादि धार्मिक योगी थे, दुर्गा पाठ मे देवी का लेख है कि राजा भोज के राज्य मे किसी ने मारकडे और शिव-पुराण व्यास जी के नाम लिखकर प्रकाशित किये जब भोज को पता लगा तो उसने पडितो के हाथ कटवा दिये। स्वामी जी लिखते हैं कि 'पुराणो मे यह सिद्ध होता है कि जिन विरोधी मतो ने भगवदादि नवीन कल्पित पुस्तके रची है उनमे व्यास जी के गुणो का लेश भी न था, वेद शास्त्रो के विरुद्ध ऐसी ऐसी झूठी बातो का लिखना व्यास जी जैसे विद्वानो का काम नही बल्कि यह विरोधी स्वार्थी पेटू और धूर्त लोगो का काम है।'

बल्कि प० मदन मोहन मालवीय जी ने तो यहा तक कहा था कि सभी पुराणो का संशोधन होना जरूरी है और उन्होने लाल पैंसल से कही कही जो अनुचित श्लोक या बाते उनमे लिखी है निशान भीलगाये थे, पुराणो ने कोई ऋषिमुनि या महात्मा को कलक लगाए न छोडा सभी देवी देवताओ को रगड मारा। इन नास्तिक अनार्ष ग्रन्थो ने देश का बेडा ही तो गरक कर दिया. इनकी गन्दी शिक्षा ने लोगो के दिलो पर ताले लगा दिए थे। जैसे लिखा है कि—ब्रह्मा को दोष लगाया पुत्री मग विषय कराया. जो थे पूर्ण विद्वान।

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने फिर मे हम पर अपार कृपा करके वेदो का सूर्य चमकाकर ससार का प्रकाशित किया और सन्मार्ग दिखलाया वेद विद्या का प्रकाश घर-घर मे किया जो भी प्रकाश आज हमे देश मे दृष्टिगोचर हो रहा है यह सभी कुछ आर्यसमाज के राव दयानन्द के परिश्रम का ही परिणाम कहा है कवि ने—लेके सारे जग का प्यार. करने वेदो का प्रचार. मथुरा नगरी से आया के साधु दयानन्द।

सो यदि आप सभी आर्य-जन पुराणो के गपोड सुनना चाहे और

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्यसमाज विक्रमपुरा (किला), जालन्धर
का

८१वां वार्षिक महोत्सव

इस बार २५, २६, २७ नवम्बर १९६६ शुक्रवार, शनिवार तथा रविवार को साईंदास ऐंग्लो संस्कृत हायर सेकण्डरी स्कूल के अन्दर वाले मैदान में बड़े समारोह से मनाया जा रहा है। जिस में आर्य समाज के प्रसिद्ध सन्यासी, महात्मा, दार्शनिक विद्वान् तथा उपदेशक पधार रहे हैं। शुक्रवार २५ नवम्बर को २ बजे बाद दोपहर ध्वजा रोहण होगा। तत्पश्चात श्री प्यारे लाल जी बेरी, प्रधान विक्रमपुरा जालन्धर, श्री ला. देसराज जी महाजन, तथा श्री संतोष राज जी बी. ए. बी. टी. के भाषण होंगे।

पवित्र वेद-कथा:—२१ नवम्बर से २४ नवम्बर तक पूज्य पं. त्रिलोक चन्द जी शास्त्री सम्पादक आर्य जगत् तथा महोपदेशक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, आर्यसमाज मन्दिर विक्रमपुरा में रात्रि ८ बजे से १० बजे तक वेदों की कथा किया करेंगे।

यज्ञ:—२१ से २५ नवम्बर तक प्रातः ७ बजे से ९ बजे तक आर्य समाज विक्रमपुरा में तथा २६ और २७ नवम्बर १९६६ को साईंदास स्कूल के अन्दर वाले मैदान में श्री स्वामी आनन्द भिक्षु जी महाराज की अध्यक्षता में यजुर्वेद का यज्ञ होगा। २७ नवम्बर साढे ९ बजे यज्ञ की पूर्णाहुति होगी।

प्रभात फेरी:—२३ से २४ नवम्बर को प्रातः ५ बजे आर्य समाज मन्दिर विक्रमपुरा से प्रभातफेरी आरम्भ हुआ करेगी, और जिस में जालन्धर की समस्त आर्य समाजें, श्री दयानन्द कालेज जालन्धर के छात्र, साईंदास स्कूल के अध्यापक तथा विद्यार्थी मेहरचन्द टैक्निकल और पालीटैक्निक इन्स्टीच्यूट जालन्धर, दयानन्द माडल स्कूल तथा डी. ए. वी. आयुर्वैदिक कालेज के विद्यार्थी भी सम्मिलित हुआ करेंगे।

राष्ट्रीय एकता सम्मेलन:—२७ नवम्बर १९६६ को साईंदास ए० एस० हायर सैकण्डरी स्कूल के अन्दर वाले मैदान में २ बजे बाद दोपहर से साढ़े ५ बजे तक श्री यश जी एम० एल० ए० प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब और (राज्यमन्त्री पंजाब सरकार) की अध्यक्षता में सम्मेलन होगा।

नोट:—स्त्री आर्य समाज विक्रमपुरा का वार्षिक महोत्सव २८ नवम्बर १९६६ ई० को आर्य समाज मंदिर विक्रमपुरा में २ बजे बाद दोपहर से ५ बजे तक होगा।

आप से सानुरोध प्रार्थना है कि आप अपने परिवार तथा इष्ट मित्रों सहित समय पर पधार कर अनुगृहीत करें।

नोट:—शहर से बाहर से आने वाले सज्जनों के निवास तथा भोजन का प्रबन्ध आर्य समाज की ओर से साईंदास ए० एस० हायर सैकण्डरी स्कूल जालन्धर में होगा।

—साईंदास भल्ला, मन्त्री समाज

आर्यसमाज मण्डी (H.P.)

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज मण्डी की यह विशेष सभा श्री ताराचन्द जी, श्री ज्योति प्रसाद जी और श्री कान्ति भूषण जी की पूज्य माता प्रभा देवी जी के निधन पर हार्दिक शोक प्रगट करती है और परमात्मा से इस पुण्य आत्मा की सद्गति की प्रार्थना करती है तथा उन के परिवार को इस कठोर दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की याचना करती है।

आर्यसमाज मन्दिर में ऋषि निर्वाण उत्सव रात्री के ७॥ बजे से १० बजे तक मनाया गया।

हवन के पश्चात श्री इन्द्रसिंह जी की प्रार्थना और भजन हुए। पं० महेन्द्र लाल जी (Advocate), श्रीमती वीणा टण्डन, श्री राम प्रकाश जी के भाषण हुए। डा० जगदीश मित्र जी कुमारी हेम लता, कुमारी चंचला लता और कुमारी प्रतिमा की कविताएं हुई। सभा के लिए वेद प्रचार फण्ड एकत्रित किया गया। यज्ञ शेष बांटा गया और शान्ति पाठ के बाद कार्यवाही समाप्त हुई।

—चेत राम बहल मन्त्री समाज

आर्यसमाज विक्रमपुरा (किला) जालन्धर का ८१वां वार्षिकोत्सव

२५, २६, २७ नवम्बर को साईंदास H/S स्कूल के अन्दर वाले मैदान में धूमधाम से सम्पन्न हो रहा है। इस के उपलक्ष्य में अनेक उच्च कोटि के विद्वानों तथा भजनीकों के व्याख्यान व मनोहर भजन सुनकर आनन्द उठाएं। धर्म प्रेमी सज्जन पधारकर अधिकारियों का उत्साह वर्धन करें।—व्यवस्थापक

पुराणों की शिक्षा

(पृष्ठ ७ का शेष)

उन गपोड़ों का रसीला और करारा जवाब पढ़ना चाहें तो आपको यह सब कुछ 'वैदिक पिस्तौल' रूपी पुस्तक हिन्दी में पढ़ने को मिलेगा, यह रोचक रसीली पुस्तक स्वर्गीय पं. मनसाराम जी वैदिक तोप द्वारा लिखी गई है मूल्य डेढ रुपया है और टाईटल सहित है हमारे हां से मंगवाकर पढ़ें, पुस्तक पढ़कर आप जान पाएंगे कि पुराणों में क्या-क्या भूठी बातें भरी पड़ी हैं ऋषि मुनियों पर कैसे कीचड़ उछाला गया है और उनकी मिट्टी पलीद की है।

इधर तो पौराणिक-जन अवैदिक बातें सुनाकर जनता को मार्ग भ्रष्ट कर रहे हैं उधर भारत देश में हिमाचल प्रदेश और ... में ... इलाकों में ईसाई ... करके हमारे भाई ... हैं और हिन्दु ... उतारू हैं।

श्री ... डी०ए०वी० ... उन इलाकों में बड़ा शानदार काम किया है और बहुत से बच्चों को ईसाई बनने से बचाया है हम उनका धन्यवाद करते हैं, जनता से अपील है कि वे इन छुते लोगों के हथकंडों में न आएं और सावधान रहें इन ... के ... में न आवें हम तभी जीवित रह सकेंगे अन्यथा नहीं।

★ ★

मुद्रक व प्रकाशक प्रो० वेदप्रकाश मलहोत्रा एम. ए. आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मासिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टैलीफोन नं० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६, अंक ४६) १६ मार्गशीर्ष २०२३ रविवार—दयानन्दाब्द १४२– ४ दिसम्बर १९६६ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

ओजिष्ठः स बलं हितः

सः-वह परमात्मा सारे ससार में ओजिष्ठः-बलवान् है। उसके समान कोई भी बलशाली नही है। सारे पदार्थ उसने बल द्वारा धारण किये हुए हैं। वही बल-विश्व के पालन में हितः-लगा हुआ है परमेश्वर ही पालक, धारक व उत्पादक है।

द्युम्नी श्लोकी स सौम्यः

वह भगवान् द्युम्नी-सब से बड़ा यश वाला है। वही श्लोकी प्रशंसा तथा पूजा के योग्य है। वह सोम्यः-तमाम गुणो का भण्डार है। उसी की स्तुति करनी चाहिए। उसी की प्रशंसा करनी तथा उसी महान गुणवान की उपासना करनी चाहिए।

स बलो अनपच्युतः

वह प्रभुदेव बलः-महाबलवान है। बड़े २ बली उसके सामने सिर झुकाते हैं। बड़े २ बली व अभिमानियों को वह चूर २ कर देता है। वह अनपच्युतः-है। अपने कार्यो से नियमो से नहीं डिगता है। एक रस है।

ववक्षे उग्रो अस्तृतः

वह महान भगवान बड़ा ही उग्र है, बलवान् तथा नियमों में रखने वाला है। वह अस्तृतः सदा अजर है तथा वह ववक्षे-सारे विश्व को बनाने वाला है। वही प्रजापति महान है।

सा म वे द से

वे दा मृ त

शत्रु सेना को भगा दो

ओ३म् असौ या सेना मरुतः परेषामभ्येति न ओजसा स्पर्द्धमाना। तां गूहत तमसापव्रतेन यथै तेषामन्यो अन्यं न जानात्॥

साम० उत्तर अ. २१ ख. १ सू० ४ मं. ३

हे वीर मरुतो! सैनिको! देखो-(असौ) वह (या) जो (सेना) शत्रु की सेना (मरुत.) हे वीरो (परेषाम्) शत्रुओ की (अभ्येति) चली आती है (न:) हमारे (ओजसा) बल से (स्पर्द्धमाना) मुकाबिला स्पर्द्धा करती हुई आती है। (ताम्) उस शत्रु की सारी सेना को (गूहत) ढाप दो कही का भी न रहने दो (तमसा) अन्धेरे से (अपव्रतेन) क्रिया शक्ति को नष्ट करने वाले अन्धकार से उसे सर्वथा अशक्त बनाकर रख दो (यथा) ताकि (एतेषाम्) दूसरे को (न जानात्) जानने भी न पाये। एक का दूसरे को पता तक भी न लग सके! ऐसी मार मार दो।

भाव यह है

हे राष्ट्र के वीर सैनिको! आपकी वीरता से सारा देश सुरक्षित है। देखो तो—वह जो शत्रु की सेना अपना दल बल बनाकर राष्ट्र पर हमला करने चली आती है। उसे ऐसी मार दो ताकि उसे सदा के लिए पाठ-पढाया जा सके। वह सेना हमारे बल की स्पर्द्धा करना चाहती है, हमारी शक्ति का मुकाबिला करना चाहती है। उसे घेर कर ऐसा अन्धकार करके मारो। तमो बाणों से उसे ढांप कर उनमे एक-एक को ऐसा मारो कि उनका नामोनिशान इस पृथ्वी तल से लुप्त हो जाए। उस प्रान्त का शासक फिर किसी पर भी आक्रमण करने का साहस न कर सके! हे राष्ट्र के वीर सैनिक ऐसा पराक्रम दिखाते हुए अपने देश का गौरव बढाओ। तुम्हारी ही वीरता पर देश को अभिमान है। इसी कारण देश की सर्व-साधारण जनता राष्ट्र के प्रतापी सैनिकों का अभिनन्दन करती हुई उन की सब प्रकार से तन-मन-धन देकर उत्साहित करने को तत्पर रहती है। हे राष्ट्र रक्षक सैनिक! तू शत्रुओं को परास्त करता हुआ विजयी हो। देश की जनता का आशीर्वाद तेरे साथ है। तू विजयी होता हुआ राष्ट्र आक्रमण करने का नतीजा शत्रुओं को दिखा दे।

ऋषि दर्शन

ईश्वरोपासका मेधाविनः

जो परमेश्वर की उपासना करने वाले होते हैं, प्रभु के प्रेमी भक्त हैं, वे मेधावी होते हैं। पवित्र ज्ञान के मालिक होते हैं। उन की मेधा होती है। प्रभु भक्ति से मेधा की प्राप्ति हो जाती है।

स एकोऽद्वितीयः

वह परमेश्वर एक है तथा उस के समाने और कोई दूसरा नही है। प्रभु एक ही है। उसी एक भगवान् को जानना, मानना तथा पूजना चाहिए। अनेक भगवान मानना प्रभु का अपमान है।

तदाज्ञानुष्ठितार:

हम सारे उस भगवान् की आज्ञा का पालन करने वाले हों प्रभु के आदेश तथा नियमों के अनुसार चले तथा अपना जीवन बनाने वाले हो। उस की आज्ञापालन उस की भक्ति है

विद्योपासना युक्तानि कर्माणि

शुभ कर्म वे हैं जो कि विद्या ज्ञान और उपासना से युक्त होते है। ज्ञान पूर्वक कर्म ही उत्तम होते है। प्रभु के प्रेम से कर्म पवित्र होते हैं बिना भक्ति के कर्म-कर्म नहीं।

भा ष्य भू मि का से

अधिष्ठाता—प्रो० वेद प्रकाश एम० ए०(अंग्रेजी तथा हिन्दी) सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शा

धार्मिक चर्चा—

पिण्ड और ब्रह्माण्ड

(ले०—श्री सत्य प्रिय शास्त्री [illegible] शिरोमणि:
[illegible] महाविद्यालय हिसार

प्राध्यापक:—संस्कृत भाषा में लोकोक्ति है "यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे" अर्थात् विश्व का छोटा स्वरूप यह मानव देह है। विश्व का नियन्ता परमात्मा है तो इस छोटे विश्व शरीर का अधिष्ठाता जीवात्मा है। ब्रह्माण्ड भी पंच भूतों के सम्मिलन से बना है और यह पिण्ड भी पञ्च भूतों का कार्य रूप है। विश्व में रात्रि के अन्धेरे मे देखने के लिये चन्द्र का निर्माण किया गया है। इस मानव शरीर मे उसका सक्षिप्त रूप मन है, यह मन अज्ञानान्धकार मे ज्ञान रूपी प्रकाश प्रदान करता है। पाठक जानते ही हैं कि चन्द्रमा सूर्य के प्रकाश से ही प्रकाशित होता है, उस मे अपना निजी प्रकाश नही है, उसी प्रकार मन भी बुद्धि अर्थात् श्रेष्ठ ज्ञान से प्रकाशित होता है, जब ज्ञान की किरणे मन को मिलनी बन्द हो जाती हैं, तब मन अप्रकाशित अर्थात् तमोगुणी हो जाता है। मनुष्य जीवन के अन्दर वही कृष्ण-पक्ष कहलाता है। ज्ञान से प्रकाशित होते हुए मन की अवस्था शुक्ल-पक्ष है। इसके साथ ही यह भी कहा जा सकता है कि ससार मे जैसे सूर्य और चन्द्रमा है, ठीक इस छोटे ससार मे वैसे ही दोनो नेत्र है। इस विश्व मे प्रतिक्षण वायु चलता है, जिसके बिना मनुष्य एक क्षण भी जीवित नही रह सकता है, ठीक देह रूपी विश्व में प्राण वायु चलता है। यदि प्राण न रहे तो यह लघु विश्व नष्ट ही हो जाता है। विशाल ब्रह्माण्ड के प्रमुख तीन भाग है। पृथ्वी-अन्तरिक्ष तथा द्युलोक यही तीन विभाग इस काम ब्रह्माण्ड के भी है। पैरो का हिस्सा पृथ्वी स्थानीय है। उदर का भाग मध्य अर्थात् अन्तरिक्ष स्थानीय जानना चाहिए। शिर द्युलोक के समान ही शरीर का विभाग है। अन्तरिक्ष मे वायु चलता है तथा जलो का स्थूल रूप बादल वही से बरसते है। शरीर मे भी उदर मे ही स्थूल जलादि पदार्थ तथा प्राणादि की गति होती है। द्युलोक की तीखी किरणो से पार्थिव जल ऊपर जाकर मेघ रूप में पुनः बरसता है। शरीर में भी द्युलोक के स्थानापन्न मुख के द्वारा जल प्रवेश करता है तथा मूत्र एव पसीने के रूप में मानो बरसता है। लोक मे वर्षा होने पर पृथ्वी वृक्ष वनस्पति, लता तथा पौधो से भरपूर हो जाती है, ठीक ऐसे ही शरीर मे अन्नपान की वर्षा होने पर शरीर में [illegible] तेज [illegible] है। द्युलोक [illegible] है तो शरीर मे द्युलोक स्थानीय शिर मे समस्त ज्ञान-इन्द्रियां सन्निहित हैं। ज्ञान और प्रकाश पर्यायवाची होते ही हैं। संसार में हम प्रकाश मे देखकर चलते हैं तो व्यक्ति-गत जीवन में हमें ज्ञानालोक से अपने जीवन के पथ पर सावधानता से चलना चाहिए। इस विश्व में [illegible] पर भूकम्प आते [illegible] जीवन मे भी कष्टों और विपत्तियों को देखकर पांव कांपने के रूप में भूकम्प आते हैं। विश्व मे प्रतिदिन प्रातःकाल होता है, तदनन्तर मध्याह्नकाल भी होता है और अन्त में सायकाल भी आता है। मानव जीवन मे भी यही स्थिति है। प्रतिदिन उसके अन्तःकरण मे सात्त्विक भावों के उदय होने का सुनहरी उषाकाल आता है। काश ? कि [illegible] के [illegible] के साथ [illegible] कर के [illegible] अन्धा-कार [illegible] सके। रजोगुण [illegible] लपटें मध्याह्नकाल बन कर आती है। रजोगुण का कल्पित रंग लाल तथा गति और क्रिया से द्योतित है। मध्याह्न की उपमा इस से श्रेष्ठ और क्या होती है। तमोगुण भी बहुधा आता है, उस तमोगुण मे ही सोने वाले लोग तो कुम्भ करण हैं। कई तो छ मास की बजाय जीवन भर ही सोते रहते हैं ये तीनों गुण आते हैं तभी जीवन ठीक रहता है। रात्री में चन्द्र का प्रकाश होती हर्षित होते हैं। तभी तो सोते समय वैदिक धर्मी प्रार्थना करते हैं, 'तन्मे मनः शिव से कल्पमस्तु' अर्थात् सोते समय मेरा मन रूपी चन्द्रमा प्रकाशित रहे। संसार में आने वाली ऋतुओं के प्रमुख रूपेण तीन भाग हैं। बसंत ग्रीष्म तथा शिशिर। मानव जीवन में भी तो ये तीन ऋतु आते हैं। [illegible] बचपन का काल बसंत ऋतु है। कहते है कि इस विश्व की उत्पत्ति भी इस ऋतु में हुई है। मानव की उत्पत्ति से ही मानो बसन्त शुरू होता है। कैसा सुहावना तथा [illegible] काल होता है। [illegible] कोमल अंग प्रत्यंग धीरे बढ़ रहे होते हैं मानो कोई नन्हा पौधा फलफूल रहा हो। तत्पश्चात यौवन आता है, काम, क्रोध आदि की भयं-कर गर्मी होती है। धनादि की बड़ी प्यास लगती है। अन्त में जीवन का पतझड़ आता है, पत्ते गिर गये ठूंठ रह गया, ठीक यही ऋतु जरावस्था होती है। अब उसने पुनर्जन्म के रूप मे फिर वसन्त मे पहुंचना है। यह ससार एक क्षेत्र है, जिस मे अनेक जीव कर्म करते है, तथा विश्वात्मा द्वारा अपने फलो को प्राप्त करते हैं। यह संसार तो समष्टि क्षेत्र है और यह मानव देह व्यक्तिगत क्षेत्र है। प्रत्येक जीव अपने व्यष्टिक्षेत्र में पाप, पुण्य के बीज डालता है, उनके परिणामस्वरूप दुःख सुख रूपी फलों की उत्पत्ति होती है। यह जीव किसान की तरह जो अपने कर्म रूपी हल को चला कर शरीर क्षेत्र में भावना रूपी बीज बोता है। उस मे कुछ बीज जल्दी ही फल लाते है। कुछ ऐसे भी हैं कि जो जन्मा-न्तर मे फलते हैं। इस विशाल ब्रह्माण्ड में द्रवरूप जाल नदियों तथा मेघों द्वारा इधर उधर जाता रहता है। ऐसे ही शरीर के ससार में भी नस-नाड़ियो के द्वारा द्रव रूप खून सर्वत्र जा २ कर जीवन प्रदान करता है। इस विश्व को ससार तथा जगत् आदि नामो से पुकार कर इस के चलत्व तथा अनित्य स्वरूप को प्रकट किया जाता हैं। इसी प्रकार शरीर द्वारा देह की अस्थिरता तथा अनित्यता को व्यक्त किया गया है। इस प्रकार सभी प्रकार से मनन करने तथा अध्ययन से यह शरीर इस विशाल ब्रह्माण्डका एक संक्षिप्त रूप है। दुनिया का नकशा ही इसे कह सकते हैं। हम ने अपने शरीर को विश्व का अंग बनाते हुये चलना है। यदि किसी देश या स्थान का नकशा गलत हो तो वह प्रमाण नही होता तथा उस के स्वरूप ठीक व्यक्त नहीं कर सकता। ठीक इसी प्रकार जब हमारा यह शरीर इस विश्व का नकशा है तो हम ने तदनुरूप ही जैसे विश्व परोपकारार्थ चल रहा है। उसी प्रकार अपने शरीर को व्यवहृत करना है। अर्थात् कार्यकलापों, प्रयोजनो तथा हेतुओ को [illegible] ब्रह्माण्ड से संगत करते हुए चलना है तभी हमारा यह पिंड वास्तव में ब्रह्माण्ड का संक्षिप्त रूप बनेगा।

गीत

[श्री किशोर कलाकार डी. ए. वी. हायर सेकेंडरी स्कूल दसूहा]

गऊओं की गर्दन पर जब तक, तलवार चलेगी भारत मे।
नामुमकिन है "दो बैलो की सरकार" चलेगी भारत में॥
इस राम राज्य की दुनिया में,
रावण ही रावण बसते हैं।
हैरान हूं रावण के बुत पर,
हर साल ही रावण हसते हैं।
भला सत्य अहिंसा के बदले, "खू खार" चलेगी भारत मे।
जहा कृष्ण की बसी बजती थी,
जो गऊ माता की धरती है।
जहा दूध की नदिया बहती थी,
अब खैर से फाका मस्ती है।
मालूम न था ऐसी भी कभी सरकार चलेगी भारत मे।
ये कृष्ण की पूजा क्या मानी ?
गऊओं की पूजा हो कैसे।
ये बुद्ध और गांधी के हामी,
कहते हैं अहिसा ही वैसे।
लाठी भी चलेगी, गोली भी, तलवार चलेगी भारत मे।
ये गऊ हमारी माता है,
खूखारो को समझा देंगे।
इस गऊ हत्या के बदले में,
हम अपना खून बहा देंगे।
आखिर कब तक खूखारों की, सरकार चलेगी भारत मे।
गऊ-हत्या भी गर पाप नहीं,
फिर किस को पाप कहेंगे हम।
न हराम रहा, न हलाल रहा,
फिर 'हिन्द' को 'पाक' कहेंगे हम।
बेटो के हाथो माता पर, तलवार चलेगी भारत में।
गऊओं की गर्दन पर जब तक, तलवार चलेगी भारत मे॥

सम्पादकीय—

आर्यजगत्

वर्ष २६] रविवार २०२३, ४ दिसम्बर १९६६ [अंक ४९

जालन्धर का केन्द्रीय महोत्सव

आर्यसमाज विक्रमपुरा जालन्धर शहर का वार्षिक महोत्सव सारे प्रान्त में एक केन्द्रीय समारोह मे दूर दूर से आने वालों को जीवनमें प्रेरणा मिलती है। इस बार भी यह महोत्सव पूरे सभारोह से मनाया गया। जालन्धर शहर मे आर्य समाज की बड़ी बडी शिक्षण संस्थाए हैं। दयानन्द कालेज कमेटी से सम्बन्धित विशाल इन सस्थाओ का महानकेन्द्र बना हुआ है। तारीख इक्कीस नवम्बर से यजुर्वेद यज्ञ के पवित्र कार्य के साथ यह समारोह प्रारम्भ हो गया। आर्य समाज के अपने भव्य विशाल भवन मे ही प्रात: काल यजुर्वेद का यज्ञ होता था। इस में पं० त्रिलोक चन्द्र शास्त्री, प० हरिश्चन्द शास्त्री, प० अयोध्या प्रसाद शास्त्री तथा विक्रम पुरा समाज के पुरोहित प० भीम सिंह जी, प० टेक चन्द जी शास्त्री यज्ञ कराने वाले थे। बड़ी श्रद्धा से यज्ञ मे नर नारी शामिल होते थे। पूर्णाहुति पिण्डाल मे हुई बड़ा सुन्दर दृश्य था। रात को समाज मन्दिर मे वेदो की कथा आय प्रादेशिक सभा के प० त्रिलोक चन्द्र शास्त्री करते रहे तथा प्रसिद्ध चिमटा मण्डली पं० राजपाल मदन मोहन जी के मीठे भजन होते रहे।

शुक्रवार दोपहर साईदास स्कूल के विशाल मैदान मे समाज के प्रधान प्रिंसिपल श्री प्यारे लाल जी बेरी ने ओ३म पताका लहराई। हंसराज कालेज की छात्राओं ने मधुर गीत गाया। श्री ला० देसराज जी, प्रिंसिपल बेरी जी आदि ने बड़े सुन्दर विचार प्रस्तुत किये। रात को शानदार कवि दरबार हुआ। बडी शोभा थी। शनि और रविवार को प्रात: के रात तक सजे पिण्डाल में बड़ा सुन्दर कार्यक्रम चलता था। उत्सव के दूसरे कार्यक्रमों के साथ साथ रविवार को आर्य प्रादेशिक सभा के माननीय प्रधान श्रीयुत यश जी खाद्य राज्य मन्त्री पजाब की प्रधानता में प्रभावशाली राष्ट्रीय एकता सम्मेलन सम्पन्न हुआ। राष्ट्र की वर्तमान विघटन कारी प्रवृत्तियों को समक्ष रखते हुए प्रिंसिपल रलाराम जी एम०ए०, प० त्रिलोकचन्द्र शास्त्री पं० ओ३म प्रकाश जी आर्य, प्रो० पृथ्वीपाल तारा, प्रो० राम विचार एम० ए०, प्रिंसिपल कुमारी विद्यावती जी आनन्द एम० ए०, प्रो० वेदीराम जी एम० ए० आदि के बडे प्रभावशाली भाषण हुए। अन्त में सभापति श्रीयुत यश जी राज्य मन्त्री का राष्ट्रीय एकता पर ओजस्वी भाषण हुआ।

इस महोत्सव में प्रिंसिपल प० रलाराम जी एम० ए० प्रो० रामप्रकाश जी एम० एस० सी०, प्रो० वेदीराम जी एम० ए० प० ओ३म् प्रकाश जी महोपदेशक, प० त्रिलोकचन्द्र शास्त्री, प्रो० रामविचार जी एम० ए० हिसार, प्रो० पी० पी० तारा जी एम० ए० आदि पधारे। सब के सामयिक, भाषण हुए। जनताको प्रेरणा मिली। हंसराज महिला कालेज की छात्राओ के सुरीले गीत तथा एक स्वर से उच्चारण किए वेद मन्त्रो ने सब को मुग्ध कर दिया। साईदास स्कूल के छात्रो ने श्री निरन्जन की देख-रेख मे जो मीठे गीत गाये उनसे भी जनता प्रभावित थी। दयानन्द माडल स्कूल के शिशुओ ने भी मीठे गीत सुनाये। सभा की ओर से चिमटा मडली प० राजपाल मदन जी की पं० मेलाराम जी रेडियो सिंगर, पं० ज्ञानचन्द जी ने भी खूब मस्त किया। पिण्डाल की सजावट, ऋषिलंगर का प्रबन्ध सुन्दर था। माताओं बहनो की श्रद्धा भी देखने योग्य थी। इस उत्सव की सफलता के लिए आर्य समाज के प्रधान प्रिंसिपल बेरी जी व मन्त्री श्री आनन्द सागर जी सब को बधाई।

धर्मपता की ध्वजा सदा ऊंची रहे

आर्य समाज विक्रम पुरा जालन्धर के वार्षिक महोत्सव समारोह पर समाज के माननीय प्रधान प्रिंसिपल श्री प्यारे लाल जी बेरी ने अपने हाथो से पताका लहराते हुए कहा कि यह ध्वजा किसी एक प्रान्त या राष्ट्र की है। किसी एक व्यक्ति की भी यह नही। आर्य समाज भगवान् के पवित्र नाम ओ३म की पताका सदा लहराती है सारे विश्व को इस के द्वारा यह सन्देश देता है कि अपने २ जीवन के कामों में लगे हुए उस महान् भगवान को कभी भुला न देना। सारे ससार में सब से ऊचा स्थान उस परमात्मा को देना है। उस के पवित्र नाम व आर्शीवाद के नीचे खडे हो कर ही मानव अपना जीवन सुखी व सम्पन्न बना सकता है। जिस को उस का आश्रय मिलता रहता है, उस की सर्वत्र जय होती है। आज के युग मे लोग प्रभु को भुलाने लगे है। आर्य समाज इस भौतिक युग मे सब को आस्तिकता के शान्ति देने वाले मार्ग पर लाना चाहता है। हर काम में भगवान् का स्मरण करे। श्री प्रिंसिपल देसराज जी महाजन ने ध्वजारोहण के समय बडा सामयिक व प्रेरणादायक प्रवचन देते हुए कहा वैदिक धर्म मे भगवान का स्थान सब से ऊंचा है। सारे विश्व मे उस परम सत्ता का नियम, अनुशासन चलता है आत्म-तत्व के बिना जो अवस्था भौतिक शरीर की होती है, वही अवस्था भगवान् के बिना जीवन की भी होती है। आज का युग भौतिकवादी तथा भोगवादी है। कोई किसी की बात नही सुनना चाहता। इस समय तो वातावरण मे भौतिकता की लहर चल रही है। सब कुछ इसी शरीर को समझ रखा है। थोडे समय के सुखो के लिए मानव परमेश्वर को भुलाये जा रहा है। प्रकृति का ही अवलम्बन लेने की दौड लगी है। यह युग विषमता का है। गत दिनो छात्रो ने क्या २ आन्दोलन किये। सीमा मर्यादा का पालन तो होना ही चाहिए। यदि घर मे कोई रोष हो जाये या कोई मनमुटाव हो जाये तो क्या उस समय अपने घर की सम्पत्ति को हानि पहुचाना उचित प्रतीत होता है? आज अपनी भावनाओ को बदलने की आवश्यकता है। ज्यो २ हम अपने जीवन मे भौतिक पदार्थों की ओर बढते जाएगे उनको ही जीवन का सर्व-प्रथम साधन समझेंगे, त्यो-त्यो हमारा जीवनभगवान से दूर होता जाएगा तथा अशात होगा। यह वास्तविक तत्व हमारे भारत के पुराने महात्माओ ने पूर्वकाल में जान लिया था। जीवन उनका भी चलता था। आवश्यक साधन वे भी जुटाते थे। किन्तु भौतिकवाद ही उनके जीवन का प्रयोजन न था। उनके जीवन मे अस्तिकता की सुगन्धि भरी थी। प्रभु प्रेम की निष्ठा से वे ओत-प्रोत थे। परम धार्मिक थे। यही कारण था कि पुरातन युग भौतिक पदार्थों से सम्पन्न होकर भी कोरा भोगवादी नही था वरन् अध्यात्मवादी था। जीवन सदा शांत था। आज का समय चारो ओर अशान्त है। इसे बदलने के लिए इस बात के लिए इस बात की बडी आवश्यकता है कि हम ओ३म् भगवान का जीवन का अवलम्बन लेवे। ओ३म् की ध्वजा को आज विश्व मे लहराने का काम आर्यसमाज को करना होगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की हीरक जयंती पर ऋषि उद्यान मे सामवेद पारायण महायज्ञ का शुभारम्भ।

अजमेर (डाक से)

गत १५ नवम्बर १९६६ को प्रात: काल आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की हीरक जयती (७५ वर्षीय महोत्सव) के अवसर पर ऋषि उद्यान की ऐतिहासिक यज्ञशाला मे सामवेद पारायण महायज्ञ आरम्भ हुआ। यज्ञ का सचालन वेदो के पंडित आचार्य कृष्ण जी ने किया है। यज्ञ की पूर्णाहुति २१नवम्बर को सम्पन्न हुई और उसी दिन हीरक जयती के अवसर पर ऋषि उद्यान मे वेद सम्मेलन सम्पन्न हुआ जिसका उदघाटन राजस्थान के के राज्यपाल डा. सम्पूर्णानंद जी तथा अध्यक्षता गुरुकुल कांगडी के आचार्य प्रियव्रत जी ने किया। सामवेद पारायण महायज्ञ का कार्यक्रम प्रात:काल और सायकाल दो-दो घटे तक जारी रहा।

हीरक जयती मे भाग लेने हेतु प्रतिनिधियो और दर्शको का आगमन भली प्रकार हुआ।

आर्य समाज भदसाली

आर्य समाज भदसाली जिला हुशियार पुर सभा के सदस्यो व सर्व साधारण की बैठक २३-११-६६ गो रक्षा के लिए भारत सरकार से बलपूर्वक माग करती है के समस्त भारत वर्ष मे से गो बध जो खास धार्मिक मामला है के लिए कोई खास फारमूला बनाया जाए जिससे यह घृणित पाप इस भारत भूमि से सर्वथा दूर हो और भारत-माता के माथे पर से गो-बध कलक दूर हो। श्री ब्रह्मचारी प्रभुदत्त जी, श्री पूजनीय जगत गुरु शकराचार्य निरजनदेव जी गोवर्धनमठ तथा उनके साथके कर्मचारियो की गिरफ्तारी की निन्दा करती है। और भारत सरकार से माग है कि देहली हत्याकाड की जुडिशल जाच करवाई जाए।

सूर्यराम वात्स्यायन मन्त्री समाज

आर्यसमाज और वर्तमान युग

(श्री प्रि० रलाराम जी एम०ए० एम०एल०ए० का भाषण)

आर्यसमाज विक्रमपुरा जालन्धर शहर के वार्षिक महोत्सव पर आर्यसमाज के प्रसिद्ध तपस्वी नेता, सौम्यता की सजीव मूर्ति प्रिंसिपल रलाराम जी एम. ए. एम. एल. ए. ने आर्यसमाज तथा वर्तमान युग के विषय पर ओजस्वी भाषण देते हुए बड़ा भावपूर्ण विचार प्रकट किया आर्यसमाज की आवश्यकता आगे से भी अधिक है, इस पर बल दिया। सं.

स्वामी दयानन्द की आवाज युग की आवाज थी। इतिहास का गम्भीर अध्ययन करने से यह तथ्य भली भांति सामने आ जाता है। फ्रांस के महान् लेखक श्री रोमांरोला ने रामकृष्ण परमहंस के जीवन में पुस्तकें लिखी हैं। उस में स्वामी दयानन्द की भी बड़ी सुन्दरता से चर्चा की है। दोनों समकालीन थे। उनके वर्णन में स्वामी जी महाराज के कार्यों का प्रसंग आ जाना स्वाभाविक भी था। फ्रांस का महान् लेखक लिखता है कि स्वामी दयानन्द के जीवन को गहराई से देखा जावे तथा उनके कार्यों पर विचार किया जाये तो दो बातें स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। पहली यह कि सच्ची भारतीयता को जन्म देने वाला स्वामी दयानन्द ही था। भारतीय जनता अपना रूप भुला चुकी थी। उस विस्मरण को फिर से स्मरण कराने का काम स्वामी दयानन्द ने किया। आत्मबोध एवं भारतीय पुरातन परम्परा की स्मृति कराने वालों में सर्वप्रथम नाम उसी का श्रद्धा से लिया जायगा।

दूसरी बात यह है कि स्वामी दयानन्द ने उस समय जो आवाज उठाई, वह भारतीय आत्मा का पश्चिम के लोगों के द्वारा किये जाने भारत के अपमान का उत्तर था। पश्चिम के विचारक तथा लेखक अपने प्रचार और लेखों में भारत तथा उस की पुरानी सभ्यता का आये दिन जो भी निरादर करते रहते थे—स्वामी दयानन्द की आवाज उस अपमान का तर्क पूर्ण उत्तर था—जिस ने पश्चिम को सोचने पर विवश कर दिया। पश्चिम के लोग भारत का कितना अपमान करते थे। भारतीय संस्कृति की कितनी निन्दा किया करते। यह पढ कर तो कौन ऐसा भारतीय है जिसे ग्लानि तथा रोष पैदा नहीं होता। मैकाले ने कहा था कि सारा भारतीय साहित्य व संस्कृति का भण्डार इकट्ठा कर दिया जाए तो भी हमारे महाकवि शेक्सपीयर की कृतियों का मुकाबिला नहीं हो सकता। इससे भारत की संस्कृति की और क्या हो निंदा सकती है? यह सब कुछ पश्चिमी लेखकों के विचार पढ कर हमारे देश के लोग सर्वथा मौन थे। इस अपमान का उत्तर किसी ने भी नहीं दिया। स्वामी दयानन्द यह तिरस्कार सहन नहीं कर सके। रोमा रोला स्वामी दयानन्द की की आवाज के बारे में लिखता है कि— It was the answer which India gave to the challange of the west. यह आवाज विश्व का कल्याण करने वाली थी। जब कभी ऐसी कहीं से आवाज आती है कि आज के युग में आर्यसमाज की आवश्यकता नहीं—तो यह हमारी श्रद्धा की कमी को प्रकट करती है। क्या हम उस भयानक जंगल से बाहिर निकाल आए हैं, जिससे बाहर लाने के वास्ते स्वामी दयानन्द ने काम शुरू किया था। ऐसी अवस्था में खुशी के नारे लगाना बुद्धिमत्ता नहीं है। वह भयानक तथा परम्परागत रूढ़ियों का जंगल आज भी मौजूद है। भारतीय जनता आज भी उसी प्रकार उस जंगल में भटकती नजर आती है। उसी प्रकार की भ्रांतियां इस समय भी जन समाज को घेरे में लिए हुए हैं। उन्नीसवीं शती में यदि उस आवाज की आवश्यकता थी तो आज के युग में तो अब क्यों उस आवाज की आवश्यकता नहीं है? वास्तविक बात यह है कि अब तो उस की आवाज की आगे से भी अधिक आवश्यकता है।

यह तथ्य है कि हिन्दु सब से कम अपने धर्मग्रन्थों को पढ़ते हैं। यह बुनियादी गलती है। यदि वह प्रतिदिन अपने वेद शास्त्रों से प्रेरणा नहीं लेता, तो यह ठीक है कि वह अपना जीवन का मार्ग नहीं प्राप्त कर सकता। अन्य सारे मतों वाले अपने अपने धर्मग्रन्थों को पढते हैं। परन्तु हिन्दु में यह भावना नहीं है। यही कारण है कि हिन्दु भ्रम भ्रांतियों का शिकार अधिक होता है। उसे अपने पुरातन शास्त्रों से जीवन प्रेरणा नहीं मिलती। जब वह उनको पढ़ता ही नहीं तो प्रेरणा कैसे मिले?

स्वामी दयानन्द देशभक्त थे। सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में आर्यावर्त्त के सम्बन्ध में कितने सुन्दर महत्वपूर्ण शब्दों में लिखा है कि आर्यावर्त्त देश स्वर्णभूमि है, देव भूमि है यह पारसमणि है। इसके सदृश कोई देश नहीं। जब उनसे प्रश्न किया कि आपका धर्म तो सारे संसार का उपकार करता है तो फिर केवल भारत का कल्याण क्यों चाहते व मानते हैं। इसे क्यों विशेषता देते है। स्वामी जी ने उत्तर दिया कि जो सन्देश मैं देना चाहता हू, वह यही देश फैला सकता है। विश्वव्यापी दृष्टिकोण होते हुए भी उस सन्देश को विश्व में फैलाने का काम आर्यावर्त्त ही कर सकता है। यह था देशभक्ति का अनुपम उदाहरण जोकि उस महान् दयानन्द ने दिया है।

विश्व के महान् चिन्तक श्री अरविंद जी ने अपनी पुस्तक India has a devine mission में लिखा है कि भगवान के दैवी सन्देश को फैलाने का यही युग है। उस के लिए भारत को चुना है। यदि आज के परमाणु युग में इस आध्यात्मिक विद्या का प्रचार न किया गया तो इस में किसी प्रकार का भी सन्देह नहीं कि मानवी सभ्यता मिट जाएगी। यह थी भक्ति स्वामी दयानन्द को अपने देश के प्रति। उस युग में जनता के विचारों में इसी देश-भक्ति की भावना को जागृत किया। भारतीय सभ्यता के प्रति सब का मान बढ़ाया। और लार्डनार्थब्रुक के साथ बातचीत करते हुए स्वामी जी की देश-भक्ति के प्रति कितनी ऊंची भावना थी। क्या आज उसी देश प्रेम को जन-जीवन में जगाने की फिर आवश्यकता नहीं है? क्या इन विचारों के प्रचार की जरूरत नहीं? आज का समय बड़ा विषम है। जुदाई के अधिक गीत गाये जाते हैं। यह एक कड़वी सच्चाई है। इस आवश्यक बात को हम यदि अनुभव नहीं करेंगे तो हमारी स्वतन्त्रता देर तक टिक नहीं सकेगी। अभी तक तो यह आवश्यक मोटी सी बात भी हमारे जीवन में नहीं आई। इस स्थिति को देखते हुए क्या यह कहना उचित है कि आज आर्यसमाज के प्रचार की आवश्यकता नहीं है।

गत दिनों भारत में जो कुछ होता रहा। उस से तो यह विचार और भी पक्का हो गया कि आर्यसमाज के प्रचार की जरूरत पहले से भी अधिक बढ़ गई है। छात्रों की ओर से आन्दोलन के नाम से जो कुछ भी हुआ, वह सब के सामने है। यह ठीक है कि अध्यापकों में कमियां हो सकती हैं। हमें democretie बनना है। पर इस का अर्थ यह नहीं कि साझूक की नीति को छात्र अपनाएं। छात्रों की बात तो है सो है—पर इस समय बड़े बड़े लोग असैम्बलियों में क्या कर रहे हैं सत्य यह है कि देश भक्ति कम हो गई है। दूसरे देशों वाले भारत के बारे में लिखने लगे हैं India is now cracking। यह बात अत्यन्त विचारने की है। यह समय सारे देशवासियों के लिए चेतने व जागने का है। मौलिक बातें जीवन में लानी पड़ेगी। इन को आधार बनाए बिना देश की प्रगति कठिन हो जायेगी। आज का यह आवश्यक काम है।

स्वामी दयानन्द की आवाज में दर्द भी था। शिक्षा भी एवं सन्देश भी था। इस समय सचेत होना है। आओ! हम उस युगपुरुष दयानन्द की आवाज को सुनें। जो आवाज उसने अपने समय में लाई। जो आन्दोलन उन्नीसवीं शती में किया। आज भी उसी आवाज को सुनने का समय है। उसी आंदोलन करने का आगेसे अधिक अवसर है। इस आवाज को उठाने के लिए तथा देशप्रेम के आन्दोलन का दिव्य सन्देश देने के लिए भगवान ने भारत को चुना है। हमारा कर्तव्य है कि उस दिव्य सन्देश को घर घर पहुंचावे। ★★

सरस्वती भवन में ऋषि निर्वाण दिवस सम्पन्न

गत २३ नवम्बर को सायंकाल स्थानीय ऋषि उद्यान स्थित सरस्वती भवन में महर्षि दयानन्द सरस्वती का ८४ वां निर्वाण दिवस मनाया गया। इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता करते हुये कुंवर रघुवीरसिंह (बांदनवाड़ा) ने कहा कि ऋषि दयानंद सत्य का जो प्रकाश दे गये यदि हम उसकी एक किरण को भी ग्रहण कर सकें तो अपना जीवन सफलीभूत बना सकते हैं।

सभा में अन्य वक्ताओं में सर्व श्री. श्रीकरण शारदा, डा. सूर्यदेव शर्मा, पं. भद्रसेन जी व श्री शीतल ने ऋषि के जीवन पर प्रकाश डालते हुये उन के बताये मार्ग पर चलने का अनुरोध किया।

कौशल्या भारती

आर्थिक दृष्टिकोण के आधार पर राजेश्वरी विक्टोरिया को आवेदन पत्र गो हत्या पर विधिवत रोक लगनी चाहिए। जिसके लिए भारत के नर-नायक महर्षि दयानन्द, लोकमान्य तिलक, महात्मा गाधी और पं. मालवीय सरीखे अनेक देश भक्तों ने भारत मां के बद छुडाकर इसे स्वतन्त्र कराया। जो गो हत्या को मनुष्य हत्या से कदापि कम नही मानते थे। किंतु यह अपनी सरकार है जो विशाल भी इस बात का ध्यान रखते हुए भी चू-चरा करती जा रही है। गोली वर्षा हो रही है और लूह बहाया जा रहा है गो भक्तों का। जेलें भरी-जा रही हैं और अनशन द्वारा हजारो गौ रक्षक वीर प्राणों की बली देने के लिए कफन बांधे हुए मैदान में निकल पड़े **सरकार का रोना है आर्थिक हानि का फिर यह प्रत्यक्ष देखते हुए भी देश के करोड़ों लोगों ने यह ठान लिया है कि हमारे प्राण रहेंगे या गौहत्या** कि दूध, घी, अन्न उत्तरोत्तर देश में समाप्त हो रहा है। क्यों न हो। उनकी मां का लहू बहा कर रो रहे हैं अर्थ को। क्या यह विडम्बना है? **अन्ततः अर्थ-अर्थ का शोर मचाने वालों को तुष्टि के लिये वा इस अर्थ की मां का अपनें हाथों घात करके रो रहे हैं अर्थ को। कैसी यह विडम्बना?** बात की जांच के लिये एक कमेटी बनाई है सरकार ने। जिस के प्रधान हैं श्री थेवर। कमेटी क्या करती हैं वा नही? इधर देश को सत्याग्रह आंदोलन ने चारो ओर से घेरे में ले लिया है। और करोड़ों लोगो ने यह ठान लिया है कि हमारे प्राण रहेगे या गोहत्या? इस लिये आओ! आज से ९० वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द ने गोहत्या छुडाने के लिये करोड़ों देशवासियों के हस्ताक्षरो से जो आंदोलन आरम्भ किया था अकेले होते हुये। रात दिन कितने चिन्तित थे इस के लिये क्वीन विक्टोरिया के के आवेदन पत्र और देश के एक छोर से दूसरे छोर तक किया गये पत्र व्यवहार को पढ़े और देखें कि महर्षि ने इस संदर्भ में कितना पुण्य प्रयास जुटाया था।

महर्षि दयानंद के सधन्य प्रयास गो रक्षा के लिए

(श्री आशुराम जी पुरोहित आर्यसमाज सैक्टर ८ चडगढ़)

आवेदन पत्र

ऐसा कौन मनुष्य जगत में है जो सुख के लाभ होने में प्रसन्न और दुःख के प्राप्त होने मे अप्रसन्न न होता हो। जैसे दूसरे के लिए अपने उपकार मे स्वयं आनन्दित होता है वैसे ही परोपकार करने में सुखी अवश्य होना चाहिए। क्या ऐसा कोई भी विद्वान भूगोल में था, है और होगा, जो परोपकाररूप धर्म और परहानिस्वरूप अधर्म की सिद्धि कर सके। धन्य वे महाशय जन हैं, जो अपने तन, मन और धन से संसार का अधिक उपकार सिद्ध करते हैं। निन्दनीय मनुष्य वे हैं जो अपनी अज्ञनता से स्वार्थवश होकर अपने तन, मन और धन से जगत में परहानि करके बडे लाभ का नाश करते हैं। सृष्टिक्रम से ठीक ठीक यही निश्चय होता है कि परमेश्वर ने जो जो वस्तु बनाई है, वह पूर्ण उपकार लेने के लिए है। अल्प लाभ से महाहांनि करने के अर्थ नही। विश्व मे दो ही जीवन के मूल हैं, एक अन्न और दूसरा पान, इसी अभिप्राय से आर्यवर शिरोमणि राजे महाराजे और प्रजाजन महोपकारक गाय आदि पशुओ को न आप मारते और न किसी को मारने देते थे। अब भी इन गाय, बैल, भैंस को मारने और मरवाने देना नही चाहते हैं। क्योकि अन्न और पान की बहुताई इन्ही से होती है। इससे सबका जीवन सुख से हो सकाहै। जितना राजा और प्रजा का बडा नुकसान इन के मारने और मरवाने से होता है, उतना अन्य किसी कर्म से नही। इस का निर्णय गोकरूणानिधि पुस्तक मे अच्छी प्रकार प्रकट कर दिया गया है अर्थात एक गाय के मारने और मरवाने से ४,२०,००० (चार लाख बीस हजार मनुष्यो के सुख की हानि होती है। इसलिए हम सब लोग स्वप्रजा की हितैषिणी श्रीमती राजराजेश्वरी क्वीन विक्टोरिया की न्याय प्रणाली मे जो यह अन्याय रूप बड़े-बड़े उपकारक गाय आदि पशुओ की हत्या होती है इस को इन के राज्य में से प्रार्थना से छुड़वा के अति प्रसन्न होना चाहते हैं। यह हम को पूरा निश्चय है कि विद्या, धर्म, प्रजाहित प्रिय श्रीमती राजराजेश्वरी क्वीन विक्टोरिया पालियामैंट सभा और सर्वोपरी प्रधान आर्यवर्तरूप श्रीमान गर्वनर साहिब बहादुर सम्प्रति इस बड़ी हानिकारक गाय, बैल तथा भैंस की हत्या को उत्साह और प्रसन्नता पूर्वक शीघ्र बन्द करके हम सब को परम आनन्दित करे। देखिए कि उक्त गाय आदि पशुओ के मारने और मरवाने से दूध-घी और किसानो की कितनी हानि होकर राजा और प्रजा की बड़ी हानि हो गई और नित्य प्रति अधिक-अधिक होती जाती है। पक्षपात छोड़ के जो कोई देखता है तो वह परोपकार ही को धर्म और पर हानि को अधर्म निश्चित जानता है। क्या विद्या का यह फल और सिद्धात नही है कि जिस-जिस से अधिक उपकार हो उस-उस का पालन वर्धन करना और नाश कभी न करना परमदयालु, न्यायकारी सर्व-शक्तिमान परमात्मा इस समस्त जगदुपकारक काम करने मे एकमत्य करें॥

(हस्ताक्षर)

ऋषिवर ने जब इस आवेदन पत्र को सम्पूर्ण भारत मे हस्ताक्षरो के लिए जहा-तहा भेजने का विचार किया तो साथ एक नोट विज्ञापनके रूपमे लगाया जिसे हिदायत नामा ही करना चाहिए कि हस्ताक्षर किस प्रकार करने-कराने हैं इसमें आप ऋषि का हृदय और सुव्यवस्था की योग्यता पाएगे।

विज्ञापन-पत्र

सब आर्यों पुराणो को विदित किया जाता है कि जिस पत्र के ऊपर (ओम) और नीचे हस्ताक्षर ऐसा वचन लिखा है, वही सही करने का है उस पर सही इस प्रकार करनी होगी कि जिसके स्वराज्य व देश में ब्राह्मण आदि मनुष्यों की जितनी संख्या लिखकर अर्थात् इतने सौ हजार लाख व करोड मनुष्यो की ओर से मैं अमुक नामा पुरुष सही करता हू इस प्रकार एक श्रीयुत महाशय प्रधान पुरुष की सही मे सर्वसाधारण आर्य-पुरुषो को सही आ जाएगी। परन्तु जितने मनुष्यों की ओर से एक मुख्य पुरुष सही करे वह उनसे सही लेकर अपने पास अवश्य रखे और जो मुसलमान व ईसाई लोग इस महोपारक विषय में दृढ़ता और प्रसन्नता मे सही करना चाहे तो कर दे। मुझे दृढ निश्चय है कि आप परम उदार महात्माओ के पुरुषार्थ उत्साह और प्रीति से यह सर्व-उपकारक महापुरुष कीर्ति प्रदायक कार्य यथावत सिद्ध हो जाएगा।

चैत्र कृष्ण ९ स०१९३९ तदनुसार १४ मार्च १८८२ मुबई
दयानन्द सरस्वती।

पत्र व्यवहार

श्री युत मित्रवर आर्यकुल प्रभाकर महाशय बाबू रूपसिंह जी योग्य इत॰ रामानन्द ब्रह्मचारी का यथायोग्य नमस्ते विदित हो।

हे महाजन आपके पत्र के उत्तर श्रीयुत स्वामी जी के आज्ञानुसार भेज दिया था। आशा है कि पहुचा होगा। अब दो पत्र गोरक्षा के विषयके भेजता हू। जिस में एक पत्र तो सही करने का है जिसके ऊपर (ओ३म) और नीचे हस्ताक्षर। ऐसा चिन्ह है और दूसरा विज्ञापन पत्र अर्थात किस प्रकार महाशयो के हस्ताक्षर और मोहर होनी चाहिए इस विषय का है।

आशा है कि आप इस महोपकीर्ति को प्राप्त होकर आर्यावर्त मे सुशोभित होगे आप पजाब मे जहां तक आपका पुरुषार्थ चले वहा तक अपनी और सब महाशयो की सही करा कर शीघ्र स्वामी जी के पास भेज देंगे। इस मे सही इस प्रकार करानी होगी कि जिस महाशय के मेल मे जितने आर्य पुरुष हों उन सब की ओर से वह एक पुरुष हस्ताक्षर कर दे कि इतने १०० इतने १००० इतने १०००० वा इतने १००००००० करोड पुरुषो की ओर से मैं अमुकनामा पुरुष अपने हस्ताक्षर करता हू। इस प्रकार सही करके पश्चात जितने पुरुषो की ओर से उस ने सही की हो उन सब के हस्ताक्षर कराके अपने पास रख ले। क्योकि जिस समय मुकदमा सरकार मे पहुचेगा उस समय जब सरकार पूछेगी कि इतने मुनुष्यो की ओर से तुमने हस्ताक्षर किए परन्तु उनकी सही तुम्हारे पास है कि नही, तब दिखलाई जाएगी कि है। इस लिए सही करा कर रखनी अवश्य है।

मुझ को दृढ निश्चय है कि इस कीर्ति के भागी आप होगे। अब आप अपना पत्र शीघ्र भेज कर मुझ को कृतार्थ करेंगे। जो कुछ मेरे करने का काम हो कृपा पूर्वक विदित करना।

शुभम् सम्वत १९३८ चैत्र कृष्ण

(शेष पृष्ठ ६ पर)

महर्षि दयानन्द के सघन्य

(पृष्ठ ५ का शेष)

५ शुक्र तारीख १० मार्च सन् १८८२ ईस्वी

(रामानन्द ब्रह्मचारी)

लाला कालीचरण जी रामचरण जी आनन्दित रहो।

जो गोरक्षा के विषय में पत्र वहां भेजे है उनको दिखला के अपनी जाति सिवा सब को सही वही में लेना। और सही करने वालों की ओर से जितनी संख्या हो लिख के पंच लोग सही उस छपे हुए पत्र पर कर देवें। चैत्र कृष्ण ३० रविवार सम्वत् १९३८।

(दयानन्द सरस्वती)

लाला कालीचरण जी रामचरण जी आनन्दित रहो।

गोरक्षार्थ कितनी सही हो चुकी इस का भी उत्तर लिखना। इस समय (आर्य भाषा के) राजकार्य में प्रवृत्त होने के अर्थ जो मैमोरियल छपे हैं सो शीघ्र भेजना और आप लोग भी जहा तक हो सके गोरक्षार्थ सही और आर्य भाषा के राजकार्य म प्रवृत्त होने के अर्थ शीघ्र प्रयत्न कीजिए। १४ अगस्त सन १८८२।

दयानन्द सरस्वती (उदयपुर)

• स्वस्ति श्रीमद्वर सदगुण समूहालंकृतेभ्यो राजराजाऽधिनाहर्रासहवर्म्मभ्यो दयानन्द सरस्वती – स्वामिन आशियो भूयासु।

प्रथम तो श्रीमान महाशयो ने करुणा पूर्वक ५०००० हजार पुरुषो की ओर से हस्ताक्षरकर पत्र मम्बापुरी में हमारे पास भेजा था, परन्तु अब इस विषय में श्रीमानो के प्रबन्ध से कितनी सही हुई है। जो भवान सदृश महाशय इन महोपकारक माता पिता के समान रक्षक करूणापात्र गायादि पशुओं के दु:ख निवारणार्थ प्रयत्न किया है व करते जाते हैं वह अवश्य सफल होकर इस आर्यावर्त को औषधि रूप होकर सब आर्यो के हृदय की अग्नि को शात करेगा।

श्रावण शुक्ल। मंगल सवत् १९३९। (उदयपुर) (दयानन्द सरस्वती)

श्रीयुत् बाबू दुर्गाप्रसाद जी आनन्दित रहो

गोरक्षार्थ कितनी सही हुई है। इस विषय में ध्यान देना अवश्य है। बडे हर्ष के ये दोनों विषय प्रकाशित हुए हैं। इस लिए जहां तक हो सके तन, मन, धन से सब आर्यों को अति उचित है इन दोनों कार्यों के सिद्ध करने में प्रयत्न करें। बार-बार ऐसा ही निश्चय होता है कि ये दोनों सौभाग्य कारक अंकुर आर्यों के कल्याणार्थ उगे हैं। अब हाथ पसार न होवे तो इससे दुर्भाग्य की और क्या बात होगी।

शुद्ध श्रावण शुक्ल ३ बृहस्पति सम्वत् १९३९

(दयानन्द सरस्वती) (उदयपुर)

श्रीयुत पंडित गोपालराव जी आनन्दित रहो।

आशा है कि आर्य भाषा में प्रचारार्थ भी आप स्वपुरुषार्थ की प्रकटता करेंगे। हम उदयपुर पहुंचकर नौलखा बाग के राजमहलों में ठहरे हैं एक बार 'श्रीयुत आर्यकुल दिवाकर श्री महाराणा साहब पधारे। परस्पर प्रेमप्रीति के साथ समागम हुआ। जैसा उनका नाम है वैसे गुण भी देखे। द्वितीय श्रावण (सुदी) १२शनि सम्वत १९३९। (दयानन्द सरस्वती)

मंत्री आर्यसमाज दानापुर आनन्दित रहो!

मैं आप परोपकार प्रिय धार्मिक जनो को सब जगत के परोपकारार्थ गाय, बैल और भैंस की हत्या के निवारणार्थ दो पत्र एक तो सही करके और दूसरा जिसके अनुसार सही करानी है दो पत्र भेज रहा हूं। इस को आप प्रीति और उत्साह पूर्वक स्वीकार कीजिये जिस से आप महाशय लोगों की कीर्ति इस ससार में सदा विराजमान रहे। इस काम को सिद्ध करने का विचार इस प्रकार किया गया है कि दो करोड से अधिक राजे महाराजे और प्रधानादि महाशय पुरुषों को सही कराके आर्यवर्तीय श्रीमान गवर्नर जनरल साहेब बहादुर से इस विषय की अर्जी करके ऊपर लिखित गायादि पशुओं की हत्या को छुड़वा देना। मुझे यह दृढ़ निश्चय है कि प्रसन्नता पूर्वक आप लोग इस कार्य को शीघ्र करेंगे। १२ मार्च १८८२ (दयानन्द सरस्वती बम्बई)।

विस्तार के भय से यहां पर समाप्त कर रहा हू। कितना घोर परिश्रम किया था महर्षि ने। अत: हम को इनके चलाये हुए गोरक्षा आंदोलन में धन जन की आहुति देने के लिये तैयार होना चाहिये।

चलती चक्की देख के
दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में
साबित रहा न कोय॥

आर्यसमाज लाजपत नगर सोनीपत का चुनाव तथा श्री खन्ना जी से अपील व प्रार्थना

पिछले दिनों २८ से ३० अक्तूबर इस समाज का बहुत ही शानदार आर्य महोत्सव हुआ, अब चुनाव सर्व-सम्मति से इस प्रकार हुआ प्रधान डा० देवराज जी, सुपर्ड, राज हस्पताल, कार्यकर्ता प्रधान मान्य मा. सुखीराम जी हांसेजा, उप-प्रधान पं० लद्दू राम जी हकीम अशोक दवाखाना, मन्त्री म० दियालचन्द आर्य उप-मन्त्री भगत बासदेवजी और उर्मिला शहीद, खजानची डा० ठाकुरदास जी दीवान पुस्तकाध्यक्ष श्री पृथ्वीराज जी, सहायक कृष्णकुमार बत्रा अन्तरंग सदस्य मान्य मा० मेघराज जी कपूरिया, मा० किशनचन्द आर्य, म० कंवलनैन आर्य, श्री देवराज बत्रा तथा प. चन्द्रसेनआर्य हितैषी इसके अतिरिक्त इस समाज की ओर से प. चन्द्रसेनजी को ये अधिकार दिया गया कि वे दानवीर मान्य ला० हंसराज जी खन्ना (भग मघियाना वाले) जो आज जंगपुरा नई दिल्ली विराजते हैं ये न्यायधीश हैं, वे अपने स्वर्गवासी पूज्य के नाम पर सोनीपतमें ला० हीरानन्द जी के नाम पर हीरा कालोनी बना रहे हैं। उन से इस समाज की ओर से अपील की जावे कि हमें आर्य समाज मन्दिर वास्ते एक बडा अच्छा प्लाट दान रूप मे देवें अति कृपा होगी यदि खन्ना जी सडक के किनारे कुएं के पास दे ताकि नगर निवासियो की पानी वाली कठिनाई भी दूर कर सके स्नान आदि का भी अच्छा प्रबन्ध किया जा सके तथा इसी पलाट में यात्रियों के ठहरने आदि का स्थान बनाया जा सकता है। पहले भी श्री खन्ना जी से प्रार्थना की जा चुकी है। इस परम पुनीत कार्य वास्ते पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज ने पं० चन्द्रसेन आर्य हितैषी को जो कि आर्य प्रादेशिक सभा के महोपदेशक भी हैं। आर्यसमाज के गौरवशाली आर्य नेता मान्य डा० जी० एल० दत्ता प्रधान दयानन्द कालिज कमेटी के नाम पत्र भी दिया था कि खन्ना जी आपके शिष्य हैं उन से अवश्य सोनीपत समाज वास्ते एक बड़ा और अच्छा मौके का प्लाट दिला दें। पं० चन्द्रसेन पहले भी दो तीन बार श्री खन्ना जी से मिले भी थे। अब फिर से कार्य [illegible] सौंपा है वे इस हीराकालोनी में आर्य समाज मन्दिर वास्ते प्लाट के बारे में मिले डा० दत्त जी भी आशा है इस कार्य की सफलता में पूर्ण सहयोग देंगे। हम भी मान्य [illegible] जी को विश्वास दिलाते हैं इस दान का अच्छा सदुपयोग होगा। आशा है हमें निराश नहीं करेंगे। नोट—ये प्लाट आर्य प्रादेशिक सभा के नाम रजिस्ट्री कराया जायगा। [illegible]

[illegible] लाजपत नगर सोनीपत

आर्यसमाज अनारकली मन्दिर मार्ग नई देहली

श्री महात्मा आनन्द स्वामीजी महाराज के निरीक्षण में

२८ नवम्बर सोमवार से ४ दिसम्बर रविवार तक धूमधाम से सम्पन्न हो रहा है। वृहद् गायत्री यज्ञ-२८ से ४ दिसम्बर तक श्री व श्रीमती रमेशचन्द्रजी पुरी के शुभ दान से ६.१५ से ७.१५ तक प्रात: सम्पन्न हो रहा है।

आशीर्वाद—श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती, श्री डा. जी. एल. दत्त प्रधान डी. ए. वी. कालिज प्रबन्ध कर्तृ सभा, श्री तीर्थराम जी हांडा की ओर से चल विजयोपहार संयोजक श्री ठा० राधाकृष्ण जी रविवार ४ दिसम्बर को ९ से ११॥ बजे तक यज्ञ शेष वितरण, भाती सेवा देवी जी के परिवार की ओर से सम्पन्न होगा।

इस धार्मिक महोत्सव पर श्री आनन्द स्वामी जी महाराज, श्री जी. एल. दत्ता कालिज प्रबन्धकर्तृ समिति, श्री यश जी प्रधान आ. प्रा. प्र० सभा जालन्धर, (मन्त्री पंजाब) प्रि० रलाराम जी एम. एल. सी. (पंजाब) श्री पं० त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री बी. ए. सम्पादक आर्य जगत, श्री पुरुषम शर्मा एम. ए., श्री प्रि० ज्ञानचन्द जी, श्रीमती सुशीला जी दुबे, श्री पं० दयाराम जी शास्त्री आदि उच्चकोटि के विद्वानों के भाषण होंगे। सम्पूर्ण उत्सव मे मनोहर भजन छात्र व छात्राओं के होते रहेंगे। सभी धर्म प्रेमी सज्जनों से उत्सव में पधारने का सादर निमन्त्रण है। दरबारीलाल M.A.

प्रादेशिक सभा से सम्बन्धित समाजों को आवश्यक सूचना

दीपवाला पर्व बीत चुका है लेकिन अभी तक दीवाली फंड सभा के दफ्तर में नहीं आया इसके बारेमें ऋषि-निर्वाण अंक मे सूचना दी जा चुकी है लेकिन बहुत-सी समाजों ने इस ओर ध्यान देने का कष्ट नहीं किया। अत: पुन: प्रार्थना है कि परिवार के प्रत्येक सदस्य के अनुसार चार आना दीवाली फंड एकत्रित करके सभा के कार्यालय में भेज कर सभा के आदेश का पालन करें।

—व्यवस्थापक

राजनीति और आर्यसमाज

(श्री विजयपाल जी आर्य, विद्यार्थी दयानन्द कालेज हिसार)

धर्म या किसी भी मत के प्रचार को प्रसारित करने में जहां उसके प्रचारक और साहित्य का उच्च स्थान है वहां राज्य का भी प्रचार फैलाने में कम महत्व का स्थान नहीं। इसके अतिरिक्त भी प्रचार के कई एक साधन हैं।

आज भारतवर्ष में ईसाई लोग बल-पूर्वक हिन्दुओं को मांस का ग्रास खिलाकर या और कई ओछे हथकण्डे अपना कर अपना मत फैला रहे हैं। इसके अतिरिक्त भी वे अपना प्रचार प्रसारित करने के लिए एक और साधन का प्रयोग कर रहे हैं वह है राजनीति। उनके प्रचार के प्रसार मे अधिक योग राज्य का ही है। इसी लिए उनका मत अधिक फैल रहा है। भारतवर्ष मे उनकी सख्या अधिक मात्रा मे दिन प्रतिदिन बढ रही है। स्वतन्त्रता प्राप्ति और भारत पाकिस्तान के विभाजन के पश्चात् मुसल्मानों की सख्या थोडी ही थी। लेकिन अब उनकी सख्या पहले से कई गुणा बढ गई है। यह सख्या अब लाखों मे है। परन्तु यह सख्या इतनी क्यो बढ गई है? उसका यही एक उत्तर है कि वे राज्य का सहारा लेकर अपना प्रचार कर रहे हैं। थोडी मात्रा में होते हुए भी राजनीति का साहस लेकर अकाली सफल हो गए। लेकिन इसके विपरीत आर्य समाज को देखिए। आज से कुछ वर्ष पहले जो प्रचार वैदिक धर्म का हो रहा था आज तक उसमें जो वृद्धि हुई है वह केवल नाम मात्र ही हुई। वह इसी लिए हुई कि आर्य समाजी राज्य का सहारा नही ले रहे।

युग प्रवतक ऋषि दयानन्द जी का एक अपना ही आदर्श था और इसी लिए आयसमाजी ऋषि दयानन्द के शिष्य होने के नाते ईसाइयो की भांति ओछे हथकण्डे अपना कर अपने वैदिक धर्म का प्रचार करना उचित नहीं समझते। लेकिन आर्यसमाजियों को ईसाइयत से यह सबक कि राजनीति से प्रचार अधिक प्रसारित होता है सीखनी चाहिए। अच्छी बातें तो शत्रु की भी माननी चाहिए। किसी कवि ने लिखा है—

उत्तम विद्या लीजिए
यदपि नीच पै होय।
[illegible] [illegible] ठौर में
[illegible] [illegible] न कोय॥

बीते हुए समय से आर्यसमाज ने [illegible] ही सारी बातें सीखी। लेकिन एक बात को न सीखा कि राज्य भी प्रचार का सर्वोत्तम साधन है। बुद्धमत को अशोक ने राज्य के सहारे भारत में फैला दिया था और जब तक उसे राज्य का सहारा रहा बुद्धमत फलता फूलता रहा और राज्य का सहारा समाप्त होते ही यह मत भी न रहा। राज्य के बल से ही मुसलमान हमारे देश में पौने नौ सौ साल अपने मत का प्रचार कर गए। भारत के ऊपर अग्रेजों ने केवल पौने दो सौ वर्ष ही राज्य किया। लेकिन उनकी सभ्यता और संस्कृति आज भी हमारे देश मे घर किये हुए है।

यदि आयसमाज अपने धर्म का प्रचार करना चाहता है तो उसे भी राजनीति में प्रवेश करना पडेगा और आयसमाज को ऐसा करना चाहिए भी। ऋषिवर दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश मे ये शब्द—त्रीणि राजाना विदथे पुरूणि परिविश्वानी भूषथ सदांसि अर्थात आर्य तीन सभा विद्याय सभा धर्माय सभा और राजाय सभा बनाए आर्यों के लिए ही लिखे हैं। आयसमाज ने विद्याय सभा और धर्माय सभा तो बनाई। लेकिन राजार्यी सभा कहा है? बेचारे कुछ आयसमाजी काग्रेस जनसघ या अन्य राजनतिक पार्टियो के टिकटो की भीख माग २ कर राजनीति मे प्रवेश कर रहे हैं। लेकिन इस तरह आयसमाज राजनीति मे प्रवेश नहीं कर सकता। क्योकि जो जिस पार्टी में जाता है उसे उसी पार्टी के नियम मानने पडते हैं। इसलिए आयसमाज को अपनी अलग ही राजनतिक पार्टी का निर्माण करना चाहिए।

आज देश की स्थिति डावाडोल है। शासन कर्ताओं की कमजोरी का लाभ उठाकर विदेशियो ने भारत पर आक्रमण भी कर दिए। देश की आन्तरिक स्थिति भी अच्छी नहीं। भुखमरी और महंगाई बढ रही है। विभाजन की क्षति देश में उत्पन्न हो चुकी है। अब देश की इस अवस्था को केवल आर्य समाज ही सुधार सकता है। अन्य पार्टियों के बस का यह रोग नहीं। किसी कवि ने ठीक ही लिखा है—

देश का सुधार न हो
आर्यों के राज्य बिना।
[illegible] का सुधार न हो,
आर्यों के राज्य बिना॥

यह अनर्गल प्रलाप

श्री दयानन्द जी आय एम ए बौद्धिक शिक्षक आयवीरदल पजाब

डा गडासिह जी ने १२ १० ६६ को ट्रिब्यून मे सम्पादक के नाम पत्र में यह सिद्ध करने का यत्न किया है कि प्राचीन काल मे गौ हत्या होती थी परन्तु इन्ही ग्रन्थो मे गौ-माता की बल पूवक स्तुति की गई है। लेखक ने इन शास्त्रों के उज्जवल पक्ष को जान-बूझकर छिपा लिया है व केवल उन बातो को प्रमाण रूप मे प्रस्तुत किया है जो प्रक्षिप्त हैं। अथव वेद १-१ ६४ में गौ-हत्यारे को गोली से उडाने का विधान है—

यदिनो गां हसि
यद्यश्वं यदि पूरुषम्।
तं त्वा सीसेन विध्यामो
यथान्तिऽसा अवीरहा।

वेद में गौ को अघ्न्या अथवा न मारने योग्य कहा है। मनुस्मति मे तो मास न खाने का इतना सख्त विधान है कि—

अनुमन्ता विशसिता
निहन्ता क्रयविक्रयी।
संस्कर्ता चोपहर्ता च
खादकश्चेति घातकी॥

अर्थात मास भक्षी आठ प्रकार के पापी है। चरक का जो उन्होने प्रमाण दिया है वह निराधार है क्योकि चरक सहिता, चिकित्सा खड ८ १४९ मे कहा है—

द्विजानामोषधी सिद्ध
घृत मांसविवृद्धये।
सिताधुक्त प्रदातव्य
गव्यनैपयसा भृशम॥

इसमे गोमांस का साफ निषध है और बुद्ध का जो उल्लेख डा० गडासिह ने किया है कि भगवान बुद्ध ने यज्ञो मे गो हिसा बन्द कराई थी उन से पहले यज्ञों मे हिसा होती थी यह भी बिल्कुल मिथ्या है क्योकि कहा है यज्ञ उपस्थित होने पर वह गाय को नही मारते थे। गाय को उन्होने माता पिता के समान माना है—देखिए राहुल साकृत्यायन कृत बुद्धचार्या ब्राह्मण धम्म सुत ५ ३ ६५ ६६

हमे डा० जी की भ्रमपूण प्रवृत्ति का बडा ही खेद है। उन्होने इस बात को भला दिया कि सिख गुरु हिन्दु धम की रक्षा के लिए आये थे वे गौ भक्त थे। पता नही, डा०जी ने गुरुओं की शिक्षा को ताक मे रख कर आर एल मित्रा के अनवाद को अपना अग्रदूत क्यो समझ लिया। स्वय गुरु गोविंद सिह जी कहते हैं

देह आगिआ तुरक गहि खपाऊ।
गो घात दा दौर जग सिऊ मिटाऊ।

डा० जी मिथ्यापूण का प्रतिवाद करते है। देवता स्वामी दयानन्द जी की वेद भाष्य रीति को वे देख ताकि वे सन्मार्ग पर आवे। ★★

आज आर्य समाजी चिल्ला चिल्ला कर कह रहे हैं कि देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी हो गोहत्या नही होनी चाहिए ईसाई और कम्युनिस्ट देश का नाश कर रहे हैं इत्यादि। लेकिन यह सब क्यो न होगा तुम्हारी बात सरकार क्यों मानने लगी। वहां तुम्हारा अस्तित्व ही क्या है? एक ग्रामीण कहावत है कि बिना रोए तो माता भी बच्चे को दूध नही देती। अपनी बातें मनवाने के लिए तो तुम्हे परिश्रम करना पडेगा। यह परीश्रम भी तब ही हो सकेगा यदि वहां तुम्हारा अस्तित्व होगा। देश का उत्थान चाहते हो तो राजनीति में प्रवेश करो। देश का शासन अपने हाथों मे लो। महाभारत के युद्ध तक भी तो तुम ने चक्रवर्ति राज्य किया है। आर्यों! उठो, सम्भलो और समय के महत्व को समझो। ★★

आयसमाज प्रधाना मोहल्ला के समाचार

(१) महर्षि निर्वाणोत्सव नियम पूवक मनाया गया। चार आना ऋषि निधि चन्दा परिवार के प्रत्येक सदस्य का एकत्र करके आय प्रादेशिक सभा को भेजा जायेगा।

(२) हर मास नियम अनुसार ३०) रु० मासिक रूप मे केरल शुद्धि यज्ञ अर्थ श्री नरेन्द्रभूषण जी चिंगनूर केरल प्रात को भेजे जा रहे हैं ताकि शुद्धि का काम जारी रहे।

(३) आर्य भारती आय जगत आय गजट तथा वदिक धम के महर्षि निर्वाण अक मगवाकर स्वाध्याय प्रमियो को विक्रय किए जा रहे हैं।

(४) आर्य समाज का दैनिक सत्सग नियम अनुसार चल रहा है। जिसमें आयसमाज के प्रधान महोदय आजकल सत्यार्थ प्रकाश की कथा कर रहे हैं।

—परमानन्द जी
विद्यार्थी रोहतक

आर्य समाज दसूहा का वार्षिकोत्सव

४, ५, ६ अक्तूबर सन ६६ को बडी धूमधाम से मनाया गया। इस उत्सव के उपलक्ष्य मे आर्य जगत के मधुर भाषी प० खुशीराम जी शास्त्री उपदेशक आर्य प्रादेशिक सभा जालन्धर ने २४ अक्तूबर से ३० अक्तूबर तक रामायण की मनोहर कथा की। कथा से पूर्व पंडित मेलाराम जो रेडियो सिंगर का आनन्द दायक संगीत भी प्राप्त होता रहा।

उत्सव से पहले आर्य समाज, युवक और आर्य समाज के सभासदो ने प्रभात फेरी की। ४ नवम्बर को ४ बजे दिन के कीर्तन आरम्भ हुआ। जिस मे स्कूल का स्टाफ तथा समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति पूर्ण उत्साह के साथ जय घोष करते हुए जलूस की शोभा को बढ़ा रहे थे।

शुक्रवार रात्रि को श्री सुरेन्द्रकुमार जी की अध्यक्षता मे कवि सम्मेलन हुआ। जिस मे दूर दूर से पधारे हुए कवियो ने बढ़चढ कर भाग लिया।

इसके पश्चात संगीत सम्मेलन हुआ। जिसमें अनेक संगीताचार्यो ने अपनी अपनी संगीत कला का परिचय दिया। उत्सव मे, प्रि० रामदास जी, ... लाराम जी, श्री दयानन्द जी आर्य, पंडित हरिदत्तजी, कुन्दनलालजी एम. ए. कैप्टन बूटाराम जी, पंडित वेदव्रत जी, पंडित श्याम सुन्दर जी, पंडित ओम्प्रकाश जी महोपदेशक सभा पंजाब, पंडित लब्भूराम जी आर्य मिश्नरी, प्रो० वेदप्रकाश जी मल्होत्रा एम०ए० डी०ए०वी० कालेज जालन्धर आदि महानुभावों के सारगर्भित भाषण हुए।

गो-रक्षा सम्मेलन के प्रधान प० वेदव्रतजी थे। इस सम्मेलन में श्री हरियाणा के प्रसिद्ध सनातन धर्म प्रसिद्ध विद्वान विशेष निमंत्रण पर बुलाया गया था। भ्रष्टाचार सम्मेलन की अध्यक्षता कै० बूटाराम जी ने की। इस वर्ष का उत्सव हर तरह से प्रभावशाली रहा।

—बलदेव मित्र एडवोकेट
मन्त्री समाज

समाचार दर्पण

आर्यसमाज दसूहा का प्रस्ताव

आर्यसमाज दसूहा की ये सभा भारत सरकार द्वारा गोमाता के प्रति अपनाई गई अनार्य नीति की तथा गो भक्तों पर ७ नवम्बर को हुए एक अमानुषिक अत्याचार की घोर निन्दा करती है और सरकार से आशा करती है कि गो भक्तो की भावना का सम्मान करती हुई गौ हत्या बंद करने के लिए तुरन्त न्यायिक कार्वाई करे।

राजेन्द्र नाथ
प्रधान आर्यसमाज दसूहा

क्रांतिकारी आर्य वीरदल होशियारपुर

गो रक्षा के अभियान मे गिरफ्तार हुए आर्य नेताओ व जगद्गुरु स्वामी शंकराचार्य की गिरफ्तारी पर सरकार के इस निन्द्य कृत्य पर हार्दिक रोष प्रकट करता है। सरकार को चाहिए कि भारतीयों की गौ के प्रति पूज्य भावना को देखते हुए गौहत्या शीघ्र बन्द करो अन्यथा यह कुनीति उसे हानि पहुंचाएगी।

१६ व २३-११ के अधिवेशनों में श्री प्रा० वीरेन्द्र जी एम. ए. व श्री पं... प्रवचन हुए।

... एम. ए.
संयोजक

आर्य गुरुकुल वैदिक आश्रम वेदव्यास

गत ता. १७-१०-६६ को ग्राम कुन्दुर मुन्डा (जि०राची) में ११४ ईसाई परिवार ८०१ नर-नारीयो को शुद्धि किया गया है। अगले ता० २८-११-६६ को इस कुन्दूर मुण्डा क्षेत्र में और शुद्धि होने जा रहा है। गत ता० १२-११-६६ को जिला कुलाहान्डि खरियार स्थान पर ४५ ईसाई नर-नारियों को शुद्ध किया गया है। अगले ता० २४-११-६६ को जिला सुन्दरगढ एतमा पंचायत में ११ ईसाई परिवार बने ७६ नर-नारी शुद्धि होने वाले हैं।

—स्वामी ब्रह्मानन्द

गोवध निरोध विधेयक पारित न करने पर आंध्र प्रदेश विधान सभा से दो सदस्योंका त्यागपत्र

हैदराबाद : सर्वदलीय गोरक्षा महाभियान समिति आंध्र प्रदेश के उपाध्यक्ष तथा विधान सभा के निर्दली सदस्य पं० वन्देमातरम रामचन्द्र राव जी तथा अन्य एक गो भक्त विधान सभा सदस्य श्री रामचन्द्रराव जी देशपांडेय ने आज विधान सभा की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया है।

दोनों सदस्यों का त्यागपत्र देने का कारण यह बताया जाता है कि दोनों सदस्यों तथा अन्य विरोधी पक्ष के सदस्योंके हस्ताक्षर से विधानसभामें आज एक स्थगन प्रस्ताव गो-वध निरोध विधेयक पारित करने सम्बन्धी प्रस्तुत किया गया था। प्रस्ताव पर आज सदन मे चर्चा की गई जिसमें सर्वदलीय गो रक्षा अभियान समिति द्वारा चलाए जा रहे आन्दोलन पर प्रकाश डाला गया। परन्तु श्री के० ब्रह्मानन्द रेड्डी जी, मुख्यमंत्री आंध्र प्रदेश के इस प्रश्न पर सदन में संतोषजनक उत्तर न प्राप्त होनेसे सदस्योंने दोनों सदस्यता से त्यागपत्र देने की घोषणा कर दी। बाद उन्होंने विधान सभा अध्यक्ष को अपने त्यागपत्र प्रस्तुत कर दिए हैं।

आर्यसमाज राजेन्द्र नगर नई देहली

राजेन्द्र नगर निवासियों की यह सार्वजनिक सभा ७ नवम्बर १९६६ को शांत गोभक्त प्रदर्शन कारियों पर लाठी चार्ज, अश्रुगैस और निर्मम गोली कांड पर सरकार की घोर निन्दा करती है तथा गोली कांड से शहीद गोभक्तों की सद्गति के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

यह सभा प्रदर्शन में हिंसात्मक कार्य करने वाले असमाजिक तत्वों की भी निन्दा करती है तथा उत्तेजना के बावजूद गोभक्त नेताओं के असीम धैर्य की प्रशंसा करती है।

यह सभा सरकार द्वारा ... निवारण उत्सव के आयोजन की स्वीकृति न देने पर सरकार की घोर निन्दा करती है तथा इसे हिन्दु जगत के धर्म में हस्तक्षेप समझती है।

प्रतापचन्द्र प्रधान आर्यसमाज

आर्य प्रादेशिक सभा की आवश्यक सूचना

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित सभी समाजों को अपने प्रतिनिधि भेजने तथा दशांश भेजने के 'क, ख' फार्म भेजे जा चुके हैं परन्तु अभी बहुत थोड़ी है। अवधि थोड़ा रह गया है अतः अपनी समाजों के प्रतिनिधियों की सूचि तथा दशांश सभा के कार्यालय में शीघ्र समय भेज कर कर्तव्य पालन करें।

—सभा मन्त्री

मुद्रक व प्रकाशक प्रो० वेदप्रकाश मल्होत्रा एम. ए. आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर में मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित ...



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६, अंक ५०) २६ मार्गशीर्ष २०२३ रविवार—दयानन्दाब्द १४२- दिसम्बर १९६६ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

सोम कामं हि ते मन:

हे मानव ! ते-तेरा यह मन:—मन सोमकामम्—सबको प्रेरणा देने वाला है। नाना प्रकार के सकल्पो से भरा हुआ है। अपने मन के सद्-विचारो से दूसरो को सुन्दर प्रेरणा देता रह, उत्तम-उत्तम सकल्पो का संचय कर।

नेदिष्ठतमा इष: स्याम

हम उस इष:=बलशाली तथा सब पदार्थों के देने वाले भगवान के नेदिष्ठतम:—अत्यन्त समीप स्याम-हो जावे। हे प्रभो ! ऐसी कृपा करो कि हम आपके सदा पास रहे, कभी आपको भुलाने न पावे।

रक्षा तोकं तनूना

हे परमेश्वर ! आप अपनी त्मना-शक्ति से सामर्थ्य से तोकम्-मुझ अमृत पुत्र की रक्षा—करो। मैं आपका ही तो पुत्र व पुत्री हू। आप मेरे पिता है। इसलिए आप अपने पुत्र की सदा रक्षा करते रहे।

हन्तादस्यो र्मनो वृध:

परमात्मन् ! आप दस्यो:—दस्यु के, दुष्टो के, अज्ञान के हन्ता-नष्ट कर देने वाले हो। तथा मनो—ज्ञान के वृध:—बढ़ाने वाले हो। जितना भी अज्ञान रूपी दस्यु मण्डल है, उस सारे के आप विनाशक हो तथा जो ज्ञान है उसके बढ़ाने वाले आप ही हो।

सा म वे द से

वे दा मृ त

शत्रुओं का कचूमर निकाल दो

ओ३म् अमीषां चित्तं प्रतिलोभयन्ती गृहाणां गान्यप्वे परेहि। अभि प्रेहि निर्दह हृत्सु शोकै रन्धेना मित्रास्तमसा सचन्ताम् ॥

साम० उत्तर० अ० २१ ख. १ सू० ४ मं० ४

अर्थ—हे नायक ! (अमीषा) इन शत्रुओ के (चित्त) चित्त को (प्रतिलोभयन्ती) मोहित करती हुई(गृहाण)पकड ले (अगानि) उनके अगोको (अप्वे) हे भीति ! (अभिप्रेहि) उन तक पहुच जा। उनको (निर्दह) पूरी तरह जला डाल और उनके (हृत्सु) दिला मे (शोकै.) शोको से (अन्धेन) अन्धकार से (तमस:) मोह से वे सारे (अमित्रा.) शत्रु लोग (सचन्ताम्) भर जाये।

भाव यह है

हे राष्ट्र के वीर रक्षक ! आप निर्भय वीर हैं। जो और जितने भी राष्ट्र के शत्रु है, घाती है—उनके मन को मोहित करने वाला जो भय है—उस के द्वारा उनके अगो को पकड ले। सारे शरीर मे भय पैदा कर दो। सारा ही शत्रुदल आप के भय से काप उठे। उन को पकड २ कर मार मार उन को भस्म करता जा। जरा राष्ट्र पर हमला करने का फल तो उनको दे दो, ताकि दूसरो को इस बात का पता लग जाये कि राष्ट्र पर हमला करने का नतीजा क्या निकलता है। उन के दिल मे शोक का अन्धकार इतना गहरा भर दो जिस से वे शत्रु लोग परिचय पा सके कि आप के वीर सैनिक कितने कमाल की वीरता के मालिक हैं। आप की वीरता के सामने कौन है जो कि देश पर हमला करने का साहस कर सकता है। उठ कर उन को ऐसी मार मार, कि फिर हमारे देश की ओर मुख न कर सके अगर वीरता दिखाने से ज़रा भी सकोच किया तो निश्चय जानो कि चिरकाल प्रतीक्षित प्राप्त स्वतन्त्रता से हाथ धो बैठोगे। अत: किसी भी शत्रु को जीता न जाने दो। प्रत्येक शत्रु को चुन २ कर भस्मसात कर दो। यही सच्ची देश भक्ति है। यही सच्ची वीरता का लक्षण है। प्रत्येक क्षण कमर कसे हुए शत्रु की ताक मे रहो।

ऋषि दर्शन

स विष्णु रीश्वर:

वह परमात्मा विष्णु है, सर्व-व्यापक है। वही भगवान ईश्वर कहा जाता है। इस सारे चराचर जगत् में वह परमेश्वर व्याप्त हो रहा है। तमाम ऐश्वर्यों का वही भण्डार तथा एकमात्र स्वामी है।

ब्रह्मा चतुर्वेदज्ञाता

ब्रह्मा वह है जो कि चारों वेदो को जानने वाला है। जो इन चारो वेदो का विद्वान होता है, उस की सज्ञा ब्रह्मा की होती है। वास्तव मे वही महान होता है। चतुर्वेदात ब्रह्मा भवति।

यज्ञानुष्ठान कर्ता

वही ब्रह्मा तमाम यज्ञों को अनुष्ठान करने वाला होता है प्रत्येक यज्ञ रूपी शुभ कर्म काड में ब्रह्मा की स्थापना यज्ञ कराने के लिए होती है।

एतत्सर्वं परमेश्वराय

यह सारा कुछ परमेश्वर के लिए है। ईश्वर की निष्ठा जीवन मे बड़ी आवश्यक है। ईश्वर को समर्पण कर देना ही जीवन को सुखी बनाना है सब कुछ प्रभु के अर्पण करें।

भा ष्य भू मि का से

अधिष्ठाता—प्रो० वेद प्रकाश एम० ए०(अंग्रेज़ी तथा हिन्दी) सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

धार्मिक चर्चा

महर्षि दयानन्द और अनीश्वरवाद

(श्री० रवि वर्मा आर्य 'सिद्धांत वाचस्पति' उज्जैन)

मानव प्राणी जब से इस पृथ्वी पर आया तभी से यह विश्व उसके सम्मुख एक समस्या के रूप में उपस्थित रहा । 'कुत आ जाता कुत इय वि सृष्टि' (१०/१२९/३) अर्थात् यह विविध प्रकार की सृष्टि कहा से आ गई ?' का प्रश्न मानव - मस्तिष्क को सदैव से चिन्तित करता रहा । इसी एक प्रश्न को लेकर विचारको के दो प्रमुख दल बने । एक ईश्वरवादी और दूसरा अनीश्वरवादी । प्रथम दल 'ईशावास्य मिद सर्वम् (यजु० ४०/१)' का डिन-डिम घोष कर इस चराचर जगत् का कर्त्ता ईश्वर को बतलाता था, तो दूसरा अनीश्वरवादी दल यह सब झूठ मानता था । उसका कहना था कि यह सब पेटू लोगो ने अपनी उदरपूर्ति के लिए गढन्त गढ रखी है । उनका प्रसिद्ध वचन है—

'अग्निहोत्र त्रयो वेदास्मि
दण्ड भस्म गुण्ठनम् ।
बुद्धि पौरुष हीनाना
जीवकेति बृहस्पतिः ।

अर्थात अग्निहोत्र, तीन वेद, तीन दण्ड, भस्म का लगाना बुद्धि और पुरुषार्थ हीन लोगो ने अपनी जीविका चलाने के लिये बना रखे है ।' इन का कहना है कि वास्तविक बात यह कि—

अग्नि उष्ण जल शीत
शीत :स्तस्पर्श-थानिल. ।
केनेद चित्रित तस्मात्
स्वभावातद् व्यवस्थिति॥१॥

अर्थात अग्नि मे उष्णता, जल मे शीतलता, वायु मे स्पर्श ये किसने बनाये ? अर्थात किसी ने नही । ये सब स्वभाव मे है । इन की दृष्टि मे 'न स्वर्गो नापवर्गो नैवात्मा पारलौकिक. । नैव वर्णाश्रमादीना क्रियाश्च फलदायक: ॥ अर्थात न तो कोई स्वर्ग है, न अपवर्ग, न आत्मा, न परमात्मा न परलोक कोई चीज है और न वर्ण और आश्रम द्वारा किये गए कर्मकाण्डो का ही कोई फल मिलता है ।'

अनीश्वरवादियो के ईश्वर को जगत का सृष्टा न मानने म प्रमुखत. तीन मत है —

(१) ईश्वर की सिद्धि मे कोई प्रमाण नही ?

(२) जगत सदैव से है और सदव रहेगा अत: उसका कोई कर्ता ईश्वर नही ।

(३) जगत् की रचना स्वयमेव होती है ।

इस युग के सर्वश्रेष्ठ विचारक एव सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जहां ससार के सभी वेद विरोधी मत सम्प्रदायो की तीव्र समालोचना की तथा उन मत-पन्थों द्वारा वैदिक धर्म पर लगाये गये सभी आक्षेपो का युक्ति-युक्त उत्तर दिया है, वहा उन्होने इस अनीश्वरवाद के पक्षपातियों द्वारा किये गये सभी आक्षेपो का भी अपनी अकाट्य युक्तियो द्वारा समुचित समाधान किया है । प्रस्तुत निबन्ध मे अनीश्वरवादियो के उन समस्त आक्षेपो का, लेख का कलेवर बढ जाने के भय से, [illegible] जो ऋषि दयानन्द ने अपने ग्रन्थो में किया है, प्रस्तुत कर सकना तो सभव न होगा, किन्तु केवल कुछेक युक्तिया हो प्रस्तुत की जा रही है । जिनसे अनीश्वर वादियो की उपर्युक्त तीनो समस्याओ का पूर्ण रूपेण समाधान हो जाता है । अनीश्वर वादियो के समस्त छोटे मोटे आक्षेप इन्ही तीन आक्षेपो के अन्तर्गत आ जाते है । अत: इन्ही पर हम ऋषि दयानन्द के विचार प्रस्तुत करते हैं .—

(१) क्या ईश्वर की सिद्धि मे कोई प्रमाण नही ?

अनीश्वर वादियो का प्रथम और प्रमुख आक्षेप यह है कि ईश्वरवादियो के पास ईश्वर को जगत का सृष्टा मानने मे कोई प्रमाण नही कारण यह है कि मनुष्य को ज्ञान होता है वह पाच ज्ञानेन्द्रियो द्वारा ही होता है और ईश्वर है इन्द्रियातीत । वह किसी भी ज्ञानेन्द्रिय से जाना नही जा सकता । कण्ठोपनिषद मे ईश्वर के गुण इस प्रकार लिखे है ;—

'अशब्द मस्पर्शमरूपम व्यय
तथाऽरस नित्यमगन्धवच्चयत ।
अनाद्यनन्तं महत: पर ध्रुव
निचाय्यत मृत्यु मुखात् प्रमुच्यते
(कठ० ३।१५)

अर्थात् परमात्मा अशब्द, अस्पर्श, अरूप, अव्यय, अरस, नित्य, और अनादि, अनन्त आदि नामो से उसका स्मरण किया गया है ।' अनीश्वरवादियो का कहना है कि ऐसे इन्द्रिया तीत ईश्वर को जाना कैसे जाए ? और वह जब जाना नही जा सकता तो उसको माना भी क्यों और कैसे जाए ? इनका आक्षेप है :—

ईश्वरासिद्धे ॥१॥ साख्य अ०१सू० १२
प्रमाणा भावान्नतत्सिद्धि ॥२॥
साख्य अ० ५ सू० १०
सम्बन्धाभावान्ना नु मानम ॥३॥

अर्थात् प्रत्यक्ष से घट सकते ईश्वर की सिद्धि नही होती और जब उसकी सिद्धि मे प्रत्यक्ष ही नही तो अनुमानादि प्रमाण नहीं हो सकता । व्याप्ति सम्बन्ध न होने से अनुमान नही हो सकता । पुन: प्रत्यक्षानुमान के न होने से शब्द प्रमाण भी नही घट सकते ।

तौतातियो ने भी लिखा है :—

सर्वज्ञो दृश्यते तावन्न दानी मस्मदादिभि: । दृष्टेन चैक देशोऽ स्तिलिग वायोऽनुमापयेत् ॥१॥

न चागम विधि . काश्चन्नित्य सर्वज्ञ बोधक :।

न चतत्रार्थ वादात तात्पर्यमपि कल्पते ॥ २ ॥

न चान्यार्थ प्रधानै स्तैस्तदस्ति व विधीयते ।

न चानु वादितु शक्य: पूर्व मन्यैरबोधित : ॥ ३ ॥

अर्थात् जिस लिये हम इस समय ईश्वर को नही देखते इसलिये कोई सर्वज्ञ अनादि परमेश्वर प्रत्यक्ष नही, जब ईश्वर मे प्रत्यक्ष प्रभाव नही तो अनुमान भी नही घट सकता क्योकि एक देश प्रत्यक्ष के बिना अनुमान नहीं हो सकता । और जब प्रयत्क्ष 'अनुमान नही तो आगम अर्थात् नित्य अनादि सर्वज्ञ परमात्मा का बोधक शब्द प्रमाण भी नही हो सकता । जब तीनो प्रणाम नही तो अर्थवाद अर्थातस्तुति, निन्दा, प्रकृति अर्थात पराये चरित्र का वर्णन और पुराकल्प अर्थात इतिहास का तात्पर्य भी नही घट सकता ॥ २ ॥ और अन्यार्थ प्रधान बहुव्रीहि समास के तुल्य परोक्ष परमात्मा की सिद्धि का विधान भी नही हो सकता, पुन: ईश्वर के उपचेष्टाओ से सुने बिना अनुवाद भी कैसे हो सकता है ।'

अनीश्वर वादियो के उपर्युक्त आक्षेपो का समाधान ऋषि दयानन्द ने कितने सुन्दर ढग से किया है :—

ऋषि दयानन्द का उत्तर

प्रश्न—आप ईश्वर २ कहते हो परन्तु उसकी सिद्धि किस प्रकार करते हो ?

उत्तर—सब प्रत्यक्षादि प्रमाणो से ।

प्रश्न—ईश्वरसें प्रत्यक्षादि प्रमाण कभी नहीं घट सकते ।

उत्तर :— इन्द्रियार्थ सन्नि कर्षोत्पन्नं ज्ञान मव्यपदेश्य मव्यभिचारि व्यव सायात्मकं प्रत्यक्षं न्याय । १।४

यह गौतम मुनि कृत न्याय दर्शन का सूत्र है । जो श्रोत्र, त्वचा, चक्षु, जिह्वा, घ्राण और मन का शब्द स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, सुख, दुःख, सत्या-सत्य, विषयो के साथ सम्बन्ध होता है उसको प्रत्यक्ष कहते हैं । परन्तु वह निर्भ्रम हो । अब विचारना चाहिये कि इन्द्रियो और मन से गुणो का प्रत्यक्ष होता है गुणी का नही ।'

"जैसे चारो त्वचा आदि इन्द्रियो से स्पश रूप, रस और गन्ध का ज्ञान होने से गुणी जो पृथ्वी उसका आत्मा-युक्त मन से प्रत्यक्ष किया जाता है है वैसे इस प्रत्यक्ष सृष्टि मे रचना विशेष आदि ज्ञानादि गुणोसे परमेश्वर का भी प्रत्यक्ष है ।'

"और जब आत्मा मन, और मन इन्द्रियो को किसी विषय मे लगता वा चोरी आदि बुरी वा परोपकारादि अच्छी बात के करने का जिस क्षण आरम्भ करता है उस समय जीव की इच्छा ज्ञानादि उसी इच्छित विषय पर झुक जाते है। उसी क्षण आत्मा के भीतर से बुरे करने मे भय, शका, लज्जा तथा अच्छे कामो के करने मे अभय नि:शकता तथा आनन्दोत्साह उठता है । वह जीवात्मा की ओर से नही किन्तु परमात्मा की ओर से है । और जब जीवात्मा शुद्ध होके परमात्मा का विचार करने मे तत्पर रहता है उसको उसी समय दोनो प्रत्यक्ष होते हैं । जब परमेश्वर का प्रत्यक्ष होता है तो अनुमानादि से परमेश्वर के ज्ञान होने मे क्या सन्देह ।

सत्यार्थ० समु० ७ पृ० ११३-१४

उपर्युक्त पक्तियो मे महर्षि दयानन्द ने भली प्रकार स्पष्ट कर दिया है कि ईश्वर के होने मे प्रत्यक्षादि सभी प्रमाण साधक है बाधक नहीं । अत: यह कहना कि ईश्वर के होने मे कोई प्रमाण नही अत: उसे नही मानना चाहिए सर्वथा निरर्थक है ।

अब कुछ प्रमाण और लीजिए

(१) 'बिना चेतन परमेश्वर के निर्माण किए जड पदार्थ स्वय आपस में स्वभाव से नियमपूर्वक मिलकर उत्पन्न नही हो सकते ।' सत्यार्थप्रकाश समु० १२ पृ० २६३ (क्रमश:)

सम्पादकीय—

आर्यजगत्

वर्ष २६] रविवार २०२३, ११ दिसम्बर १९६६ [अंक ५०

आर्य समाज मंदिर मार्ग नई दिल्ली

नई देहली भारत की राजधानी है। यहां पर रीडिंग रोड जैसे प्रसिद्ध स्थान पर अपने अत्यन्त भव्य एव विशाल समाज मन्दिर का बन जाना बड़े ही गौरव की बात है। इसका श्रेय डा० श्री मेहर चन्द जी महाजन पूर्व चीफ जस्टिस सर्वोच्च-न्यायालय को है। आप के ही जीवन प्रभाव, धर्म प्रेम तथा प्रभुनिष्ठा से इतना सुन्दर धर्म का केन्द्र बन जाना सम्भव हो सका। इस मन्दिर को और इसके शोभा भरे हाल को देख कर मन प्रसन्नता से उछलने लगता है। सारे समाज के जगत को अपने माननीय नेता श्री डा० महाजन जी पर अमित मान है। एक विशेष बात यह भी तो है कि जैसा यह भव्य मन्दिर है, वैसा ही इस का वार्षिक समारोह भी प्रशसनीय होता है। इस बार भी आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग का वार्षिक महोत्सव बड़े समारोह से सम्पन्न हो गया। सभा के कार्यक्रम के अनुसार मुझे भी इस समारोह मे जालन्धर से आकर शामिल होने एव विद्वानो के प्रवचनो को सुनने, पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की अमृतभरी कथा सुनने, तपस्वी महान विद्वान श्री प० दयाराम जी शास्त्री एम० ए० की अध्यक्षता मे सम्पन्न होने वाले प्रातः कालीन गायत्री महायज्ञ का आनन्द लेने तथा समाज के प्रधान श्री० हाडा जी व कुल परम्परा के आर्य मन्त्री श्री सोमनाथ जी गुप्ता तथा सारे समाज परिवार के उत्साह को देखने का सौभाग्य मिला। ऋषि भक्त श्री मुल्खराज जी भल्ला द्वारा लगाये विशाल ऋषि-लगर को भी देखा, जिस मे दोहजार के लगभग ने मिल कर भोजन किया।

समाजो के महोत्सव वास्तव मे प्रेरणा के महान् स्रोत होते है। जनता को बड़ा लाभ पहुचता है। वेद के सगठन सूक्त का क्रियात्मिक रूप देखने को मिलता है। कर्म भोग का सुन्दर पाठ पढने को चित्त करता है। माताओं, बहिनो की श्रद्धा का उमडता प्रवाह सामने आ जाता है। आज के भौतिक युग मे लोगो की धार्मिक पिपासा कितनी है — यह सारी बाते सामने आ जाती हैं। सोमवार प्रातः से गायत्री महा यज्ञ सजी हुई यज्ञ वेदी पर प्रारम्भ हो गया था। यज्ञ मे प्रभात के समय मे ही इतनी उपस्थिति देख कर दिल आनन्द विभोर हो जाता था। तीन-तीन, चार-चार यजमान दम्पति आसनो पर बैठ कर आहुतिया देते थे। यजमानो में कोई कर्नल थे, कोई सरकार के ऊचे कार्यकर्ता, कोई बडे व्यापारी तथा कई शिक्षा विशारद। ब्रह्मा के आसन पर श्री प० दयाराम जी शास्त्री थे। उनका अपना ही मीठा व सौम्य स्वभाव है। मधु रस के वह भण्डार है, नम्रता, सरलता जीवन की सम्पत्ति है। पविारो पर जीवन का प्रभाव है। साथ मे समाज के विद्वान् पुरोहित प० सोमकीति जी भी थे। रात को प्रसिद्ध तपोमूर्ति महात्मा आनन्द स्वामी जी की अमृत कथा का प्रवाह चलता था। इस शीत मौसम मे भी सारा विशाल हाल नर-नारियो से भरपूर हो जाता था। कथा से पूर्व व यज्ञ मे अत्यन्त मधुर गायक श्री ब्रह्मचारी महेश जी का भक्ति रस भरा मीठा सगीत वातावरण को अमृत से भर देता था। प्रभु ने बडा ही मीठा कण्ठ दिया है। प्रायः समाजो मे बड़े-बडे लोग आने मे संकोच करते है। किन्तु सब को इस समाज के महान नेताओ से यह प्रेरणा अवश्य लेनी चाहिए। निरन्तर आठ दिनो तक कथा व तमाम जल्से के दिनो मे सवेरे, साय व रात के कार्यक्रमो मे श्री डा० मेहरचन्द जी महाजन, डा० गोवर्धनलाल जी दत्त पूर्व उपकुलपति विक्रम विश्व विद्यालय व प्रधान डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध कर्तृ सभा नई देहली, डा० महाराज कृष्ण जी, श्री० तलवाड जी, श्री अग्निहोत्री जी आदि बड़े-बडे सज्जन आते रहे। यह इस समाज की विशेषता है। आर्य समाज के बडे २ लोगो को यहा से यह जीवन पाठ अवश्य पढना चाहिए। आदमी तनिक ऊचे स्थान पर जाता है तो समाज मे आने मे उसे सकोच होने लगता है। ऐसा उचित नही है। इस समाज मे बड़े-बड़े लोग हैं—वे सब समाज के कामो मे पूरी श्रद्धा से भाग लेते है। ये सब बधाई के पात्र है। यह विशेषता है।

रविवार को पूर्णाहुति का मनोरम दृश्य था। श्री ब्रह्मा जी ने सबको आशीर्वाद दिया। सारे यजमान परिवार श्रद्धा से नमस्कार करते थे। रविवार के दिन तो मेला-सा लगा रहा प्रायः सारे समाजो के सज्जन यहा जल्से मे आये थे। ऋषि-लगर मे सब ने मिलकर भोजन किया। यह भी समाज का जीवन है। इस समारोह मे अपने स्कूलो के छात्रो की भाषण प्रतियोगिता भी थी। दयानन्द माडल स्कूल की छात्राओ का भी मनोरम कार्यक्रम था। हमारी ये छात्राएं बडा जीवन निर्माण कार्य करती है। स्त्री आर्य समाज का जलसा भी धूम-धाम से हो गया। इस महोत्सव मे प्रिंसिपल ज्ञान चन्द जी हिसार, प० त्रिलोक चन्द्र शास्त्री, श्री प० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड प० पुरुषोत्तम लाल जी आदि तथा प० हरि दत्त जी भजनोपदेशक ब्रह्मचारी महेश जी आये थे। पूज्य महात्मा जी की कथा तथा डा० जी० एल० दत्त जी प्रधान दयानन्द कालेज कमेटी के प्रभावशाली प्रवचन के साथ समारोह समाप्त हुआ। महोत्सव सचमुच प्रेरणा का स्रोत था। माननीय प्रधान जी व मन्त्री जी समेत समाज के सारे विशाल परिवार के सज्जनो व देवियो का प्रेम व उत्साह प्रशसनीय था। मिलाप परिवार की ओर से यज्ञ शेष बाटा गया। ऋषि लगर का सारा व्यय श्री मुल्खराज जी भल्ला ने दिया। माता कृष्णा जी ने बडी श्रद्धा से प्रबन्ध किया। राजधानी की अपनी समाज का यह समारोह अत्यन्त चेतना व स्फूर्तिदायक था। —त्रिलोकचन्द्र

आर्य समाज और गौ-रक्षा

आज गोवध रोकने के लिए देश व्यापी आन्दोलन जारी है। गोरक्षा महाभियान समिति के नेतृत्व मे सारा कार्य हो रहा है। गोहत्या का कलक भारत भूमि से मिट जाये—इस के लिए सारी ही सस्थाए जुटी हुई है। गौ माता ने सब को एक ही केन्द्र पर लाकर एकत्रित कर दिया है। जगद गुरु शकराचार्य जी, ब्रह्मचारी प्रभुदत्त जी, सुशील मुनि जी, वीर रामचन्द जी जैसे मान्य महानुभाव अनशन पर हैं। सत्याग्रही जत्थे अपने आप को गिरफ्तार करा रहे है। स्वामी रामेश्वरानन्द जी, स्वामी करपात्री जी, महात्मा आनन्दभिक्षु जी, सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प० रामगोपाल जी शाल वाले, प्रो० रामसिंह जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब प० शिवकुमार शास्त्री आदि महारथी जेल मे बन्द है। स्वामी भीष्म जी, श्री ओम् प्रकाश जी त्यागी जेल यात्रा कर आए हैं। हैदराबाद दक्षिण से भी जत्थे आकर जेल मे चले गए है। आर्यसमाज दीवान हाल देहली से सत्याग्रही जत्थे जाते हैं। साधु समाज हो या जैन समाज, आर्यसमाज हो या सनातन-धर्म सारी सस्थाए मिलकर गो-रक्षा के काम मे लगी है। भारत को स्वाधीन हुए उन्नीस वर्ष हो गये। कई बार आदोलन हुए स्मरण पत्र पेश किए गए—किन्तु उसका परिणाम नहीं निकला। अब बलिदान का समय आ गया है। यह ठीक है कि इस समय देश के सामने अन्न के अभाव का महान सकट है। बिहार एव कई स्थानो पर सूखा के कारण विषम परिस्थिति है। इधर यह गो-रक्षा का आन्दोलन भी जारी है।

आर्यसमाज राष्ट्र के प्रत्येक निर्माण काम मे सदैव अग्रणी रहा है। कई कामो मे तो उसने जनता का नेतृत्व किया है। हमारी आर्य प्रादेशिक सभा पजाब तो देश के समाज सेवा के महान् काम मे प्रभाव-पूर्ण काम करती चली आ रही है। सहयोग एव मनोयोग इसकी सम्पत्ति रही है। आज भी सभा का सेवा कार्य एव दयानन्द कालेज कमेटी द्वारा चलाया जाने वाला विशाल शिक्षा कार्य राष्ट्र मे प्रसिद्ध ही है। इस गो-रक्षा के आदोलन मे भी सभा की अन्तरग ने प्रस्ताव पारित कर दिया है। भारत सरकार से कहा है कि जन-तन्त्र के नाते भारतीय जनता की आवाज को सुनते हुए देश मे सरकार गो-वध को सर्वथा बन्द कर देवे। समाजो को भी निर्देश दिया है कि वे भी इस काम मे अपना पूरा-पूरा सहयोग देते रहे। समाचार पत्रो मे सभा का पारित

(शेष पृष्ठ ६ पर)

वैदिक धर्म और गौ

स्वतन्त्रता से पूर्व हमारी वर्त्तमान राष्ट्रीय संस्था कांग्रेस के तत्कालीन सभी अग्रगण्य नेताओ को गो माता के सदृश पूज्या दृष्टिगोचर होती थी और विदेशी शासको से गोहत्या बन्द कराने तथा गोरक्षा की ओर पूरा-पूरा ध्यान दिलाने में वे सदा सक्रिय रहते थे। लोकमान्य बाल गगाधर तिलक जी ने तो यहां तक कह दिया था कि स्वराज्य प्राप्ति के तुरन्त पश्चात पांच मिनट के अन्दर हम भारत मे गो-हत्या का कलक धो डालेगे और गो हत्यारे को कडा दण्ड दिया जाएगा। पूज्य गान्धी जी के विचार भी इसी भावना के द्योतक थे। वे स्वराज्य से भी बढकर गो-रक्षा को स्वीकार करते थे। उनकी नजरों मे गो-हत्या मनुष्य की हत्या से भी बढकर पाप था। परन्तु खेद है कि देश की बाग-डोर सम्भालने के पश्चात उसी कांग्रेस सस्था के कर्णधारो का दृष्टिकोण न जाने क्यो वैसा न रहा और अद्यावधि भी गोहत्या का कलक भारत भाल से मिटाया न जा सका। अधिक दुःख एव लज्जा की बात तो यह है कि परतन्त्रता के दिनो से भी अधिक आज गो - हत्या, गो-हत्यारो और गो-मास खाने वालो को उत्साहित किया जा रहा है। उत्तरप्रदेश के आगरा जिलान्तर्गत हजरतपुर ग्राम मे ३२ करोड रुपये से दुनिया का सबसे बडा बूचडखाना बनाया जा रहा है। जहा प्रतिदिन ५००० से १५,००० तक पशुओ का वध किया जाएगा। गाधी जी की अहिंसा का इससे बढिया और सुन्दर व्यवहारिक रूप पेश नही किया जा सकता !

जहा एक ओर वर्त्तमान सरकार गो आदि मूक पशुओं के वध और मास भक्षण को बढावा देने मे जुटी हुई है। वहा दूसरी ओर पश्चिमी विद्वानो के मानस-पुत्र कतिपय भारतीय विद्वान् अपने प्राचीन धर्म ग्रन्थो एवम् पूज्य-पुरुषो के जीवन वृत्तो मे से गो-भक्षण तथा यज्ञ मे गो-वध का समर्थन प्राप्त करने का असफल प्रयत्न कर रहे हैं। उनकी लेखनी से यदा कदा वेद और वैदिक वाड्मय के सम्बन्ध मे अशुद्ध एवम् भ्रामक विचार प्रकाशित होते रहते है चू कि ऐसे लेख अग्रेजी भाषा मे लिखे और प्रकाशित कराए जाते है अत उनका अग्रेजी पढे-लिखे परन्तु प्राय धर्म ग्रन्थो का स्वाध्याय न करने वाले शिक्षितो पर उलटा प्रभाव पडता है और वे ऐसा मानना प्रारम्भ कर देते है कि गौ-वध सदा से ही होता चला आ रहा है और कि हमारे धर्म ग्रन्थ इसकी आज्ञा देते हैं ! ऐसे महानुभावो तथा पश्चिमीविद्वानोमानसके पुत्र भारतीय सज्जनो की सेवा मे कुछ प्रमाण हम अपने इस लेख मे प्रस्तुत कर रहे हैं ताकि पारस्परिक विचार विमर्श से मिथ्या धारणाओ का विनाश हो सके।

वेद और गाय

माता रुद्राणां दुहिता वसूना
स्वसाऽऽदित्यानाममृतस्य नाभिः।
प्रनु वोच चिकितुषे जनाय मा
गमयनागामदिति वधिष्ट ॥

गाय रुद्र ब्रह्मचारियो की माता, वसुओ की पुत्री और आदित्य ब्रह्मचारियो की बहिन एवम् घृत रूप अमृत का खजाना है। प्रत्येक विवेकशील मनुष्य को मैं कहता हू कि निरपराध और अवध्य गौ का वध न करो।

आगावो अग्मन्नुत भद्रमक्रन्त्सीदन्तु
गोष्ठे रणयन्त्वस्मे।
प्रजावतीः पुरुरूपा इह स्युरिन्द्राय
पूर्वीरुषसो दुहानाः ॥
अथर्व ४-२१-१

गौए हमारे यहा आ गई हैं और उन्होने हमारा कल्याण किया है। वे हमारी गोशाला मे बैठे तथा हमे सुख दे। ये रङ्ग-बिरङ्गी गौए यहा उत्तम बच्चो मे युक्त होकर इन्द्र (परमात्मा) स्वामी, गोपालक के लिए उषाकाल से पूर्व दूध देने वाली होवे।

गोबध कर्ता के लिए दण्ड

यदि नो गा हंसि यद्यश्व यदि पूरुषम्।
त त्वा सीसेन विध्यामो यथा
नोऽसो अवीरहा ॥
अथर्व १-१६-४

यदि तू हमारी गौ, घोडे तथा पुरुष की हत्या करता है तो हम सीसे की गोली से तुझे बीध देंगे, जिस से तू हमारे वीरो का वध न कर सकें।

यूयं गावो मेदयथा कृशचिदश्रीरचित्
कृणुथा सुप्रतीकम्।
भद्र गृह कृणुथ भद्रवाचो बृहद्वो
वय उच्यते सभासु ॥

गौओ ! तुम कृश शरीर वाले को हृष्ट-पुष्ट कर देती हो, एवम् तेज हीन को देखने मे सुन्दर बना देती हो। इतना ही नही तुम हमारे घरो को अपने मगलमय शब्द से मगलमय बना देती हो। इसी लिए सभाओ में तुम्हारे ही महान् यश का गान होता है।

वैदिक धर्मी की प्रार्थना

इमे गृहा मयोभुवः ऊर्जस्वन्तः
पयस्वन्तः।
पूर्णा वामेन तिष्ठन्तस्ते नो
जानन्त्वायतः ॥
अथर्व० ७-६०-२

ये सारे के सारे घर सुखमय हो जाय, ये सारे के सारे तेज मे भर जायें, ये सब के सब दूध पुत्र से पूर्ण हो जायें सुन्दरता से भरपूर हो जाए और ऐसे ही भरपूर घर हम आने वालो को प्राप्त हो।

उपहूता इह गाव उपहूता अजावयः
अथो अन्नस्य कीलाल उपहूतोगृहेषु नः
अथर्व ७—६०—५

'हमारे इन सुन्दर गृहो में दूध देने वाले गाय आदि पशु प्रेमपूर्वक पाले गए हो, ऊन देने वाले चौपाये स्नेह से सुरक्षित किये गये हो और हमारे घरो मे अपने तथा उनके लिए अन्नका बहुत बडा भण्डार सग्रह किया गया हो।

उपासक की तड़प

सोम रारन्धिनो हृदि
गावो न यवसे स्वः।
मर्य इव स्व ओक्ये ॥
ऋ १—९१—१३

अय सो मैश्वर्य के स्वामिन। आओ हमारे मनो मन्दिरो मे निरन्तर रमण करो, और ऐसे ही रमण करो गायें स्वतन्त्रता पूर्वक खेतो मे और मनुष्य स्वतन्त्रता पूर्वक अपने घरों मे रमण करते हैं।

इन वेद मन्त्रो में गाय की महिमा और उसके प्रति मनुष्य का क्या कर्तव्य है इसका इतना स्पष्ट और असन्दिग्ध वर्णन है कि उस के अवध्य और निरपराध होने मे कोई सन्देह शेष नही रहता। गोघातक के लिए प्राण दण्ड का जो वेद विधान कर रहे है उन के माथे गो हत्या का कलक मढना किसी विचारशील बुद्धिमान का काम कैसे माना जा सकता है ? वेद तो गोपालन का ही पक्षपाती है न कि गो-वध का और देखिये—

पुष्टिं पशूना परिजग्रभाह
चतुष्पदां द्विपदायच्च धान्यम्।
पयः पशूना रसमोषधीना
बृहस्पतिः सविता मे नियच्छात् ॥
अथर्व १९।३१।५

'मै पशुओ से बल पुष्टि लेता हू, दोपाये और चौपायों से भी पुष्टि और धान्य लेता हू। पशुओ से दूध तथा औषधियो से रस सकल ससार के स्वामी वा उत्पादक सविता देव ने मुझे दिया है।

दूध देने वाले पशुओ मे दूध के अतिरिक्त मास, हड्डी, चर्बी और रक्त सभी होते है परन्तु वेद मन्त्र का आदेश है कि हम पशुओ से केवल दूध ही ले। इतने स्पष्ट आदेश के होते हुये यह कहना कि वेद गोबध या गो मास अथवा पशुओ के मास भक्षण की आज्ञा देते है। वेदो से अपनी अनभिज्ञता ही प्रगट करना है या फिर जानते बूझते हुए वेदो को बदनाम करना है। (क्रमशः)

ले० ओम प्रकाश जी महोपदेशक आ० प्रा० प्र० सभा जालन्धर

नवीन संतति के उदीयमान लेखक ने वेदों के आधार पर गौ हत्या निषेध पर प्रकाश डाला है। गो भक्तों तथा देश के उच्च संन्यासी महात्माओं के लिए अति उपयोगी है। पाठकों की रुचि अनुकूल इस से अगामी अंक में भी लेखक के विचार पढ़िए।

देश में आपात स्थिति खत्म करने की मांग

आम चुनावो के लिए लोक सभा-सदस्यो के अनेक सुझाव

नयी दिल्ली —आज लोक सभा मे आगामी आम चुनावो पर विधि मन्त्री श्री पाठक के वक्तव्य के बाद सदस्यो ने सुझाव दिया कि नजरबन्दी निरोधक कानून और भारत रक्षा नियमो के अधीन गिरफ्तार राजनीतिक बंदियो को रिहा किया जाए ताकि वे चुनाव में भाग ले सकें। सदस्यों ने यह अनुरोध किया कि चुनावो के लिए सामान्य वातावरण पैदा करने के लिए आपात स्थिति खत्म की जाए। इसके अलावा इकट्ठे होने तथा अभिव्यक्ति के मौलिक लोकतन्त्री अधिकारो की रक्षा के लिए प्रयास किए जाएं।

भारतीय सांस्कृतिक भावना : गोरक्षा

श्री हरिकिशनदास जी अग्रवाल बम्बई

भारत एक भावना प्रधान देश है, इसकी सनातन वैदिक संस्कृति वेद शास्त्र ऋषि, धर्माचार्य, त्यागी महात्मा साधु-सन्त गौ, ब्राह्मण एव अध्यात्म-पथ-प्रदर्शक गुरुजनो एव पूज्य पुरुषो पर विश्वास, श्रद्धा और सत्कार तथा पूज्य की भावना रही है और जब तक भारत सच्चे अर्थो मे भारत रहेगा यह भावना अखण्ड बनी रहेगी। किसी के हटाए हट नही सकती।

वास्तव में देखा जाय तो मानव मे भावना ही मुख्य है। जिस मे भावना नही वह मानव, मानव नही प्रत्युत एक हाड-मास का निर्जीव लोथडा-सा ही है।

आज की सत्तारूढ सरकार महात्माओ और जगत् गुरु को जेल मे ठूस रही है। एक समय था कि गोखले और तिलक और अन्य कांग्रेस के नेता शकराचार्य जैसे महान् पुरुषो के पास जा कर नम्रतापूर्वक आशीर्वाद प्राप्त करते थे। यह महात्मा उपाधि का ही कमाल था जो राष्ट्रपिता भारत के श्रद्धाभाजन बन कर महात्मा गाधी कहलाये।

श्री रवीन्द्र नाथ टैगोर स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ भी एक महात्माही महात्माओने ही हमारे देश की सस्कृति और परम्परा को बचाया है। और हमारी सरकार का अब उन्ही पर दमन की नीति का उपयोग करना बहुत ही अनुचित है।

आज भावना के कारण स्कूलो मे अनियमितता, उद्दडता तथा अनुशासन हीनता फैल रही है। स्कूलो और कालेजो के शिक्षक आध्यापको के प्रति कोई मान सत्कार नही। आज कांग्रेस के नेताओ पर से देश का विश्वास उठ सा चला है, जिस के परिणाम स्वरूप सारे देश मे हलचल फैल रही है। जनता मे असतोष, प्रेमभाव एव एक दूसरे के प्रति सहानुभूति न हो कर घृणा का भाव फैल रहा है। प्रान्तीयता के नाम पर कई प्रकार के झगडे खड़े हो रहे हैं। मालिक और मजदूरो मे विरोधाभाव खडा हो रहा है। अनाज की कमी और सरकारी महकमो में भयकर घूसखोरी इत्यादि से जनता इतनी तग आ गयी है कि असंतोष का वातावरण दबाये भी नहीं दबता-चारो और फैल रहा है। यहां अब चरित्र पर जोर न देकर मनुष्य की कुर्सी पर जोर दिया जा रहा है। जब किसी पदाधिकारी का चरित्र अच्छा नहीं होता तो यह कह दिया जाता है कि हमे इसी के नर्जी जीवन से क्या मतलब? पर वे यह नही समझते कि जिस मनुष्य का जो खासगी जीवन होता है, वही उसके सामाजिक जीवन मे प्रतिबिम्बित होता है, अगर उसका खासगी जीवन अच्छा है तो सामाजिक जीवन भी ठीक हो सकता है। अन्यथा नही। क्योकि खासगी जीवन को सामाजिक जीवन से अलग नही किया जा सकता।

मन्त्रिमडल मे वही लोग पदारूढ होने चाहिए जिनका चरित्र किसी भी शक व शुबह से दूषित नही है। जिनका चरित्र बिलकुल शुद्ध हो। जिनका अपना चरित्र शुद्ध नही वह समाज कल्याण क्या कर सकते है? उनसे समाज कल्याण की आशा रखना केवल आकाश कुसुम सरीखा है।

गो-रक्षा का प्रश्न भी देश के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण एव-भावना प्रधान है। गाय परम्परा मे पूज्य मानी जाती है। यह पूजा केवल कपोल कल्पना ही नही, किन्तु वेद-शास्त्रो पर आधारित एव परम्परागत है। वेद-शास्त्र हमारी सस्कृति के आधार स्तभ एव मूलभूत है। जैसे एक मन्दिर, मस्जिद या गिरजाघर का तोडना इस देश मे एक गुनाह है हालाकि उनमे मनुष्य की तरह कोई जीव नही है। सरकार इसलिए इनकी रक्षा करती है कि धर्म विशेष की भावना उस मन्दिर-मस्जिद और गिरजाघर को सुरक्षित रखना अपना कर्तव्य समझती है।

जबकि मंदिर जिस मे कि एक देवता का निवास है—रक्षा करना सरकार अपना कर्तव्य समझती है तो यह गाय के रूप मे चलता-फिरता मदिर जिस मे शास्त्रो ने ३३ करोड देवताओ का निवास माना है, उसकी हत्या करना हमारी धर्मनिरपेक्ष सरकार को कहा तक उचित है? क्योकि धर्मनिरपेक्ष का अर्थ सब धर्मो का आदर करना है। गोहत्या चालू रख कर सरकार बहुमत हिन्दुओ की धार्मिक भावना को आघात पहुचा रही है।

इस प्रश्न को तत्वचिन्तको की दृष्टि से राष्ट्रपिता महात्मा गाधी, लोकमान्य तिलक, सत विनोबा भावे, शंकराचार्य, छत्रपति शिवाजी, डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद, पंडित मदनमोहन मालवीय, सत ज्ञानेश्वर, सत तुकाराम आदि अनेक महापुरुषो ने सोचा है—उसी प्रकार कुर्सियो पर बैठे लोगो को भी सोचना चाहिए, क्योकि ऐसे लोगो के ये महत्वपूर्ण विचार देश की जनता केलिए अनुकरणी होने चाहिए।

गाय भारतीय परिवार का एक महत्वपूर्ण अग है। किसान गाय को अपने कौटुम्बिक सदस्य की तरह पालता पोसता है। जैसे आर्थिक दृष्टि के आधार पर निकम्मे बुड्ढे मा बाप को या बीमार बच्चे को मार नही दिया जाता इसी प्रकार वृद्ध गोवश की हत्या बन्द की जानी चाहिए।

महात्मा गाधी तथा राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसादजी के प्रयत्न १९-११-४७ को भारत सरकार के कृषि मन्त्रालय के द्वारा गोरक्षा और गोपालन पर भली भाति विचार करके सम्मति देने के लिए दातारसिह जी की अध्यक्षता मे पशुरक्षण और सवर्धन कमेटी (Cattle Preservation and Development Committee बनायी गयी।

भारत सरकार के द्वारा निमित इस कमेटी ने ६-११-४९ को अपनी रिपोर्ट दी और गोरक्षण तथा गोसवर्धन की योजना उपस्थित करते हुए यह सिफारिश की कि १४ वर्ष तक की उम्र के अन्य पशुओ का बध तुरन्त रोक दिया जाए और 'दो वर्ष के अन्दर अन्दर सम्पूर्ण गो बध बन्द हो जाय।'

इस सिफारिश के अनुसार गोवध सम्पूर्ण बन्द हो जाना चाहिए था, किन्तु सरकार अपनी ही नियुक्त की हुई कमेटी की पूर्णतया अवहेलना कर रही है।

मनुष्य जिस प्रकार सोचता है, वही वह करता है, ईश्वरीय अटल नियम है। हमारी सरकार गो-हत्या करने की ही सोचती है, इसलिए उसे हत्या ही हत्या सूझती है। गो-सवर्धन की कोई बात उसे नही सूझती। मनुष्य का मस्तिष्क अगर विनाश की ओर चला जाता है, तो वह विकास की सोच ही नही सकता। और जो विकास की सोचता है वह विनाश नही करता। इस कारण हमारी अपनी सरकार से अनुरोध है कि वह विकास की सोचे न कि विनाश की—जिससे देश का गो धन बढे, दूध-दही अधिक प्राप्त हो, तथा अन्न की समस्या हल हो।

प्राणी मात्र जिसने जन्म लिया है, वह तो एक न एक दिन स्वाभाविक रूप से मृत्यु को प्राप्त होगा ही। अगर हम हत्या बन्द कर देगे तो भी पशु, जिन्होने जन्म लिया है वे एक न एक दिन स्वाभाविक मौत से मरेंगे ही। जिससे उनके चमडे, सीग, हड्डिया आदि भी इसी प्रकार मिलेगे। उनमे किसी प्रकार मिलेगे। उनमे किसी प्रकार की कमी नहीं आएगी।

सरकार कितने ही खाद के कारखाने लगा दे किन्तु अनाज की समस्या जब तक गो-वध जारी है हल नही हो सकेगी। क्योकि बनावटी खाद भूमि को खोखला और शक्तिहीन कर देती है। कभी उपजाऊ नही बना सकती। किन्तु गाय के गोबर की खाद भूमि मे उत्पादन की शक्ति को बढाती ही है उसके खाद का असर तीन वर्ष तक भूमि मे रहता है। हमे एक माली ने बताया कि पौधो मे केवल खाद (Fertilizer) डालने से पौधे सड सड है, किन्तु अगर उसी फर्टिलाइजर को गाय के गोबर मे मिला कर डाला जाय तो वह पौधे बहुत जल्द बढते हैं।

आज जब हम धर्म के साथ अर्थ नही चाहते किन्तु शुष्क आर्थिक दृष्टि को ही महत्ता देते है, इसी का आज यह परिणाम हुआ है कि मालिक और नौकर मे, पिता-पुत्र मे, भाई भाई मे, पति-पत्नी मे और गुरु शिष्य मे कोई धार्मिक नाता रह ही नही गया है। परस्पर के मतभेदो के कारण नित नये झगडे खडे हो रहे है, नही तो पहले नौकर-मालिक का पिता-पुत्र का सा सम्बन्ध रहा करता था। सभी सुखी थे। कोई द्वेष नही था क्योकि मनुष्य मे भावना ही एक ऐसा महान् तत्व है, जिसके कारण पिता-पुत्र, मालिक-नौकर बहन-भाई पति-पत्नी माता-पुत्र का सम्बन्ध बधा हुआ है। एक-दूसरे को अपना समझते है। अगर भावना नही तो सम्बन्ध ही नही। पास रहते हुए भी एक-दूसरे से कोसो दूर हो जाते है।

देश के प्रति भी सद्भावना, प्रेम, कर्त्तव्यबुद्धि का आधार भी देश की भावना ही है। अगर भावना नही तो देश के प्रति न प्रेम ही होगा और न कर्त्तव्य ही पालन किया जायेगा। मन्त्री चुनकर आते हैं, चुनाव के समय न जाने सेवा करने की शपथें खाते है,

(शेष पृष्ठ ६ पर)

महान् दार्शनिक चले गए

यह दुःखदायक समाचार पढकर वज्रपात-सा हुआ है कि भारत के महान फिलास्फर, आगरा विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति दयानन्द कालेज कानपुर के पूर्व योग्यतम आचार्य, आर्यजगत के प्रसिद्ध वयोवृद्ध नेता, लब्ध प्रतिष्ठ वक्ता एव लेखक डा० प्रिंसिपल दीवानचन्द जी कानपुर हमे सदा के लिए छोडकर परलोकवासी हो गए। अब वह स्वर्गीय बन गए है। उनके चले जाने से सारे समाज तथा देश को गहरी क्षति पहुची है वह किसी रूप मे भी पूरी कभी नही होगी। उनका स्थान अपना ही था, उनकी विशिष्टता तथा प्रभाव अपना ही था। उस ऊचे स्थान पर और कौन बैठ सकता है। आज आर्य समाज के विशाल परिवार का एक अत्यन्त प्रभावशाली, मार्गदर्शक एव अनुभवो की सम्पत्ति से मालामाल करने वाला वृद्धतम कुशल नेता सदा के लिए चला गया है। बिना सकोच के यहा जा सकता है कि डा० दीवानचन्द जी सारे समाज और तमाम देश के थे। वह सर्वजनीन बन गये थे। वह इस समय व्यक्तिरूप न होकर समाजरूप बन चुके थे। उनका प्रत्येक श्वास व क्षण समाज की सेवा मे लगा हुआ था। उनका व्यक्तिभाव सर्वथा समाप्त हो कर समष्टिभाव के रूप मे प्रकट हो गया था। वह सच्चे अर्थो मे स्वय एक जीवन, एक युग, एक आदोलन तथा एक समाज बन चुके थे। उनका प्रत्येक वाक्य अपने मे साक्षात् एक प्रकार का प्रेरणा का स्रोत बन गया था। इतने बडे फिलास्फर हो कर भी उनके जीवन मे धर्म के प्रति आस्था, अध्यात्मवाद के लिए श्रद्धा, वैदिक धर्म के लिए रुचि एवम् आर्यसमाज के लिए मनोभावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। यह पहली बार है जब कि जालन्धर व अनारकली समाज नई देहली के वार्षिक महोत्सवो पर जनता उनके प्रभावपूर्ण दर्शन तथा दार्शनिक प्रवचन से वचित रही। उनका प्रवचन सारे महोत्सव की समाप्ति पर अन्तिम रात को सचमुच एक चेतना का स्रोत होता था। पूरे वर्ष के लिए गम्भीर व स्वादुतम प्रसाद होता था। वेदो पर उनको कितनी आस्था थी, उपनिषदो का कितना गम्भीर मनन था, चिन्तन पर कितना अधिकार था—यह सारी बात उनका प्रवचन सुन कर स्पष्ट हो जाती थी।

प्रारम्भ से ही उनका जीवन समाज के क्षेत्र मे बीता! समाज सेवा उनका व्रत था। जवानी मे ही स्वय को समाज के अपने आप को अर्पण कर दिया। शिक्षा विशारदो मे उनकी विशेष गणना होती थी। आर्य समाज को इस बात का गौरव है कि उसके इतने दार्शनिक नेता भी है। प्रिंसिपल दीवनचन्द जी वक्ता व लेखक भी तो गजब के थे। आज भी कानो मे उनके वाक्य गूजते हैं। जब भी आर्य समाज कानपुर के जलसे पर जाने का सौभाग्य वर्ष बाद मिलता तो इस महान नेता के मैं अवश्य दर्शन कर आता था। उनके शब्द आज भी कहे हुए कानो मे गूज रहे हैं कि आर्यसमाज प्रत्येक अवस्था मे चलता रहे। आर्यसमाज पैदा ही इसी लिए हुआ है। डा० जी आर्यसमाज की विभूति थे। आर्य प्रादेशिक सभा को कई महत्वपूर्ण पुस्तके लिख कर दी। उनको पढ कर स्वर्गीय फिलास्फर का उनमे साक्षात आत्मा ही बोलता है। बडा भारी ज्ञानके विचारो का भडार दे गये। अब उनके निधन से सारा समाज सन्तप्त है। उनके सारे परिवार से हार्दिक सम्वेदना प्रकट करता है। इस समय सब से बडी उनकी यादगार जहा समाजके अपने नेताओ न सोचनी है कि क्या हो सकता है। हम यह अवश्य कहेगे कि उनका सुन्दर जीवन प्रकाशित किया जाय। तथा उनके विशेष लेखो व भाषणो का सकलन करके हिन्दी व इगलिश मे छपाया जाये हम श्रद्धाजलि पेश करते है वास्तविक श्रद्धाजलि तो यह है कि वह सारे समाज के थे। सेवाकाल मे तथा उसके बाद भी उनका सारा समय आर्यसमाज के कार्य मे लगा हुआ था। लिखने भी समाज के लिए और बोलते भी इसी के लिए थे। इसलिए अब समाज का यह कर्तव्य है कि उनके विशेष २ प्रवचनो तथा लेखो को एकत्रित करके उन पर एक सुन्दर ग्रन्थ तैयार किया जावे। इस मे उनके दार्शनिक, सामाजिक, धार्मिक विचार हो। यह ग्रन्थ आज के भौतिक युग मे लोगों विशेषकर नवयुवक युवतियो के हाथ मे दिये जायें। इतने महान दार्शनिक के अनुभव भरे विचारो का निश्चित रूप से प्रभाव पढेगा। हमारी दयानन्द कालेज कमेटी नई देहली भी इस काम के लिए बड़ी प्रेरणा का स्रोत होगी। स्वर्गीय प्रिंसिपल दीवानचन्द जी के विचारो को लेकर एक तो हिन्दी में ऊचे स्तर की पुस्तक प्रकाशित की जाये तथा दूसरी अग्रेजी भाषा मे। दोनो का अपना-अपना महत्व होगा। दोनो से लाभ ही होगा। यह उनकी कीमती स्मृति होगी। सारा समाज आज अपने इस प्रकार के योग्यतम दार्शनिक अध्यात्मवादी पथ प्रदर्शक से वचित हो गया है। प्रभु नियम के सामने नतमस्तक होना ही पडता है—स०

आर्यसमाज और...

(पृष्ठ ३ का शेष)

सुन्दर प्रस्ताव पूर्णरूप से प्रकाशित हो गया है। जब सार्वदेशिक सभा इस मे जुटी है तो स्वभावतः सारे समाज का इस में सहयोग आ ही गया। उन्नीस वर्ष हो गये भारत से विदेशी सत्ता को गये हुए। उस समय बापू गाधी जी, लोकमान्य तिलक, महामना मालवीय, ला० लाजपतराय जी आदि सारे नेता कहा करते थे कि स्वाधीन भारत मे गोवध बन्द किया जायगा। विदेशी राज्य चला गया। अब अपना ही राज्य है। अपने ही कर्णधार है। अपने ही लोग शासन सूत्र के चलाने मे लगे है। किन्तु बड़ा दुःख है कि आज के अपने इस स्वतन्त्र भारत मे आगे से भी गोवध अधिक से अधिक होता जा रहा है। बूचडखाने और ज्यादा है। गोरक्षा की धारा भारतीय सविधान मे मौजूद है। कई प्रांतो मे गोहत्या बन्दी कानून भी पास किया जा चुका है। थोडे से प्रात बाकी है जिन मे गोवध बन्द का कानून बनाना शेष है। परन्तु जनतन्त्री राष्ट्र मे भी जनता की इस उचित आवाज को सुना नही जा रहा। हम किसी भी आदोलन मे हिसा व तोडफोड की नीति से सर्वथा असहमत है। राष्ट्र की सम्पत्ति को कोई भी हानि पहुचाना है, वह ठीक नही है। जब कभी कोई आदोलन होता है उसमे प्रायः कुछ तोड फोड करने वाले तत्व आ कर मिल जाते है। राजनीतिक दल भी अपना अवसर ढूढने का प्रयास करते है। किन्तु आदोलन को केन्द्र तो विशुद्ध अपना निस्वार्थ भाव भरा काम लेकर आगे चलता जाता है। गोरक्षा के निमित्त किया जाने वाला यह सब के सामने है। जगद गुरु शकराचार्य हो या सुशील मुनि जी महाराज ब्रह्मचारी हो या आर्य समाज सनातन धर्म व साधु मण्डल। इन से किसी ने भी राज नीति में नही जाना। ये सारे अपने अपने क्षेत्रो मे कार्य में लगे हुए हैं। गोरक्षा का प्रश्न नही यह तो राष्ट्रीय प्रश्न है। गौ सब की है। दूध घृत की जीवन निर्माण केलिए सब को आवश्यकता है। इस मे तो मुसलमान भी साथ है। जनता की पुकार है सब की माग है। विधान मे मौजूद है यदि केन्द्रीय सरकार इस को सुनकर गोरक्षा कानून पास कर दे तो सारे राष्ट्र का कल्याण हो जायेगा। आज इस गोवध से सारे देश मे दूध घी का कितना अभाव है। यदि गोवध बन्द न हुआ तो नितात सत्य है कि दूध घी देखने को भी नही मिलेगा खाने की बात दूर रही। हजरत पुर के पास खुलने वाले बत्तीस करोड रुपयो के व्यय से बूचडखाने के भयानक समाचार से कौन भारतीय है जो विक्षुब्ध नही हो गया। यह बात भी समझ मे नही आती कि यह प्रश्न केन्द्र का नही है। क्या इससे केन्द्र का सम्बन्ध नही है? हिंदुकोटबिल बनाते समय केवल हिन्दुसमाज के लिए क्यो बनाया था। इसे सिविल कोट बिल का रूप क्यो न दिया गया। यदि विधान की कोई अडचन है तो जब कई बार इससे पूर्व भी सविधान मे अपने मतलब का परिवर्तन कर दिया गया तो अब की बार जनता की अचेत माग पर ध्यान देते हुए गोवध बन्द करने मे सविधान मे परिवर्तन क्यो नही कर दिया जाता? यदि सरकार चाहे तो क्या बात नही की जा सकती? सब कुछ हो सकता है। इस लिए इस आन्दोलन को देख कर तथा बडे-बडे महात्मा लोगो के अनशन को सामने रखते हुए हमारे नेताओ का कर्त्तव्य है कि वह इस आवश्यक बात पर विचार करके शीघ्र गो-रक्षा का आदेश जारी करे—स०

★★

भारतीय सांस्कृतिक ...

(पृष्ठ ५ का शेष)

पूर्व के लोगो की सेवाओ को न जाने कितनी महत्ता आकते हुए वोट मा[illegible]क मत्रिमडलमे आते है। अत. हमारे मत्रिमण्डलको केवल लेखे-जोखे से ही किसी प्रश्न का मूल्याकन नही करना चाहिए किन्तु उसमे जनता की भावना की ओर भी देखना चाहिए। हिन्दू जिन का देश मे ८३/५ प्रतिशत बहुमत है उनका गोहत्या सम्बधी प्रतिरोध उनके प्रतिरोध उनके धर्म ग्रन्थ वेदों के आधार पर है।

'गईया मैया करे पुकार
कहा गये वो आर्य कुमार।
काग्रेस राज्य मे आकर देखो
चलती है मुझ पर तलवार।'

यह ऊपर का दोहा आज की सरकार पर लानत फेरता है।

क्या हम आर्य हैं? क्या आप और हम आर्य कहलाने के हकदार है? क्या आप और हम समझते है कि हम राम और कृष्ण के आदर्शो का पालन करे रहे हैं?' 'अगर नही।' तो आप और हम आर्य नही कहला सकते। ऋषि जी ने कहा आर्य बनने के लिए आर्य विचार होने चाहिए। वो हमारे अन्दर तब तक नही आ सकते जब तक हम गाय का दूध नही पिएंगे।

आज जो हम अपने आपको आर्य कहलाते है। क्या हम वास्तव मे आर्य हैं? नही' क्या हमारे विचार तथा कर्म आर्यो जैसे हैं? कदापि नहीं' अगर हमारे अन्दर यह सभी प्रकार की अच्छाइया नही हैं तो हम आर्य कहलाने के हकदार नही है।

अरे भारतवासियो अगर तुम्हें सच्चे आर्य बनना है तो तुम्हे अपने पूर्वजो के सम्मान की रक्षा करनी होगी। तभी हमारा कल्याण हो सकता है।

आज क्या हो रहा है? जिस देश मे प्रात: सूर्य की पहली किरण के साथ कई लाख गऊओ का दूध निकाला जाता था, जिसे पीकर बच्चे अपने विद्या पाठन के लिये बैठ जाते थे और लोग गाय माता का दूध पी करके अपने-अपने कार्यो मे जुट जाते थे। आज उसी देश मे उसी पहली किरण के साथ लाखो गौओ के सर काट दिये जाते है: दूध की जगह आज खून की धाराए बहती है। तो आज हम और हमारे सम्मान योग्य माता-पिता भी दूध के लिए तरसते हैं और चाय की ओर झुकते है।

वो देश हमेशा जहा अनाज के भण्डार रहते थे। धरती सोना उगलती थी। आज वह देश अन्य देशो के आगे हाथ फैलाता है। क्या यही आर्यो का चिन्ह है? "नही" आज हमे गौरक्षा अवश्य करनी है। यदि हम अपनी और देश की स्वतन्त्रता चाहते हैं। तो हमे गौरक्षा अवश्य करनी पड़ेगी। वरना हमारी स्वतन्त्रा को वह धक्का लगेगा। और देश की शासन प्रणाली भी डावा डोल हो जायेगा। और हमारा देश फिर गुलामी जंजीरों में फंस जायेगा।

गौ-रक्षा और आर्य

श्री पूर्ण जी आर्य, आर्य कुमार सभा जवाहर नगर पलवल

यह गुलामी का धक्का एक ऐसा धक्का है जो सैंकड़ो तथा हजारो वर्ष लग जाते है। फिर भी ठीक नहीहोता' इसलिये हमे चाहिये कि अपनी अजादी को कायम रखने के लिए यह आवश्यक है कि हम गौ माता की रक्षा अवश्य करे।

गाय के गुणो का वर्णन करना बहुत कठिन है। वास्तव मे देखा जाये तो एक मानव समाज का जीवन गाय पर ही निर्भर करता है।

आज गौ रक्षा आन्दोलन चला है। उस मे वैदिक धर्म के अनुयायिओं का प्रथम कर्तव्य हो जाता है कि वैदिक सस्कृति के चिन्हो को मिटने से रोकने के लिये तन, मन व धन की कुर्बानी दे। और काग्रेस राज्य को बता दे कि यदि तुम उस महात्मा के अनुयायी हो जो भारत मे राम राज्य लाना चाहता था। तो सबसे पहले अपने आपको राम जैसा शासक बनाओ और गौ-हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाओ।

आओ अगर तुम्हारे अन्दर भी हिम्मत है तो अपने और जगत के गुरु स्वामी दयानन्द जी की तरह गौ-रक्षा करने के लिए लार्ड-ब्रूस जैसे काग्रेसी नेताओ को अपनी माग के लिए झुका दो।

यदि तुम्हारे अन्दर राम, कृष्ण का मान गौओ के प्रति दर्द है। दलीप राजा पर गर्व है और ऋषियो के प्रति सम्मान है तो आज गौ रक्षा आन्दोलन मे अपना सर्वस्व लुटा दो और अपने घर के सामने एक गाय बाध कर अपना और गाय का सम्मान बढाओ। जिस से भारत के कोने मे यही आवाज गूज उठेगी कि —

'गाऊ माता की जय'
गाय देश की गौ माता है।
दुनिया की जीवन दाता है॥

**

सुन माय गरीब की पुकार पुकार॥

(सी. आर. अहूजा परदेसी, आर्यसमाज उलहासनगर बम्बई)

भेद भाव किस मे नही रखती।
प्राणी-मात्र का हित ही करती॥
दूध मेरा है निर्विकार'
पीऊ पानी सादा, खाऊ घास भी मस्ती।
दूध मक्खन की वृद्धि करती।
फिर क्यो गले पे छुरी का वारी ओ! भारत

प्रजा मारी है मेरे पक्ष मे।
प्रेम दया नही तेरे रग मे।
क्या तुझे नही मेरी दरकारी। ओ! भारत
खेती आदि मे हाथ है मेरा।
मेरे हित मे हित है तेरा।
जग मे क्यो होती शर्मसारी।

(हाय!) कृष्ण भूमि मे गाय है कटती
गो-सम्पति भारत की घटती!
राज्य पराया था बेकार—
(अब्ब तू स्वदेशी सरकार)
कलम अडतालीसवा(४८वा)तेरे ही विधान का।
वचन देता है प्राण दान का॥
(क्या?)अपना विधान भी ना स्वीकार?

मर कर भी मैं भला करती।
चर्म हड्डी उपयोगी बरती।
'परदेशी' हटा दो अत्याचार। ओ! भारत
ओ भारत की सरकार सरकार!
सुन माय गरीब की पुकार पुकार!!

आर्यसमाज जाखलमंडी

२५-२६-२७ नवम्बर को बड़े समारोह क्रिया मे मनाया गया। ध्वजारोहण श्रीमती निहालदेवी जी आर्य ने सम्पन्न की। नगरकीर्तन ओम ध्वजा से सुसज्जित ट्राली मे निकाला गया जो कि नगर के मुख्य-मुख्य भागो से होता हुआ समाज मदिर मे समाप्त हुआ। २६-२७ नवम्बर को नित्य कर्म विधि के पश्चात प्रात: से रात्री तक मनोहर व्याख्यान होते रहे। भजनो का कम भी भली प्रकार होता रहा। उत्सव पर श्री अमृतानन्द जी की वेद कथा होती रही। वक्ताओ मे राजेन्द्र जी जिज्ञासु एम. ए, डी.ए.वी. कालिज अबोहर का नाम विशेष उल्लेखनीय है। अपील पर ३३०/- की प्राप्ति हुई। इसी अवसर पर स्त्री समाज की स्थापना की गई। एक देवी ने गुप्तदान के रूप मे एक मन गेहू दो किल्लो देसी घी और पाच किलो हवन सामग्री यज्ञ के लिए दान दी। इस वार्षिकोत्सव की सफलता का सेहरा ला० मौजीराम जी, श्री हरिदेव जी, श्री अर्जुनदेव जी, श्री वेदप्रकाश जी के सिर पर है।

हरिचन्द्र गुप्त
मत्री आर्य समाज

आर्यसमाज हांसी (हिसार)

प्रस्ताव न.—१

आज दिनाक १२-११-६६ ऋषि-निर्वाण-उत्सव के उपलक्ष्य मे आर्य-समाज हासी के प्रधान म०० इन्द्राज-सिह जी आर्य की अध्यक्षता में सर्व-सम्मति से पास हुआ कि दिल्ली मे हुए भयकर गोली काड मे समाज विरोधी तत्वो का हाथ है इसमे समिति का कोई हाथ नही। अत: यह बैठक इस काड की अत्यन्त निन्दा करती है तथा सरकार से अनुरोध करती है कि इस काड की तहकीकात शीघ्र ही करवाई जाए और गो-वश-वध कानून बन्द किया जाये।

प्रस्ताव न०—२

आज दिनाक १२-११-६६ ऋषि-निर्वाण-उत्सव पर सरकार द्वारा आर्य समाज का सर्व-प्रतिष्ठित-पर्व-ऋषि निर्वाण-उत्सव रामलीला मैदान दिल्ली मे न मनाने देने पर आर्यसमाज हासी की यह बैठक अत्यन्त खेद प्रकट करती है तथा इसे सरकार की सर्वथा अनुचित कार्यवाही समझती है।

इसकी प्रतिलिपिया भारत सरकार के वरिष्ठ अधिकारियो को भेजी गई। —ब्रह्मराज मत्री

गो हत्या निरोधक

आर्यसमाज रैनावारी ... २७-११-६६ की यह साधारण सभा भारत की केन्द्रीय सरकार तथा राज्य सरकारों से मांग करती है कि समस्त भारत वर्ष मे गो हत्या पर शीघ्र प्रतिबंध लगाया जाए। भारत की पुण्य-भूमि पर गो हत्या का जारी रहना धार्मिक, सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टिकोण से हानिकारक है। इस से साम्प्रदायिक शांति बिगड़ने का भय है। अत: इस पर प्रतिबन्ध लगाना अत्यावश्यक है।

श्याम सुन्दर वैद्य मन्त्री

प्रादेशिक सभा से सम्बन्धित समाजों को आवश्यक सूचना

दीपमाला पर्व बीत चुका है लेकिन अभी तक दीवाली फंड सभा के दफ्तर में नहीं आया इसके बारेमें ऋषि-निर्वाण अंक में सूचना दी जा चुकी है लेकिन बहुत-सी समाजोंने इस ओर ध्यान देने का कष्ट नही किया। अत: पुन: प्रार्थना है कि परिवार के प्रत्येक सदस्य के अनुसार चार आना दीवाली फंड एकत्रित करके सभा के कार्यालय मे भेज कर सभा के आदेश का पालन करें।

—व्यवस्थापक

जहां चाय वाले चैकिंग करते हैं

घरौंडा। स्थानीय रेलवे स्टेशन पर चाय-विक्रेताओ द्वारा रेलवे टिकट चैकरों की वर्दी मे यात्रियो से रुपये बटोरे जाने का समाचार मिला है। कहा जाता है कि वे लोग वर्दियां उधार मांग कर ऐसा करते हैं और बाद में धन राशि का बाबुओ से बंटवारा कर लेते हैं। कहा जाता है कि इन 'बाबुओं' का शिकार हुए एक व्यक्ति ने जब रेलवे के उच्चाधिकारियो तक पहुचने की कोशिश की तो उसकी पिटाई की गई।

समाचार द...

आर्य जगत द...

(श्री भूराराम जी प्रचारक आ० प्रा० प्र. सभा जालन्धर)

टेक—वेदों का प्रचार सुन। आर्यजगत मंगाया कर।
वेद शास्त्र महर्षि बतावें। आर्य जगत की महिमा गावें॥
संकट काटनहार सुन ॥१॥
वेदों को सब पढ़ो पढ़ाओ। ब्रह्मचर्य महाव्रत निभाओ॥
हो जा बेड़ा पार सुन ॥२॥
आर्य जगत के नेता प्यारे। इसी में लेख देते हैं सारे॥
राजा प्रजा सरकार सुन ॥३॥
श्रीमहात्मा हंसराज बताए। तन मन धन सब जीवन लाये॥
... है विस्तार सुन ॥४॥
महा यज्ञ संस्कार हो ... ॥
महा मन्त्र की मार सुन ॥५॥
छ: छ: रुपये भेजो सारे। कई कई अंक मिले न्यारे-न्यारे॥
पक्षपात को टार सुन ॥६॥
भूराराम कैसे समझावे। बात नही कहने मे आवें॥
बुद्धि का भंडार सुन ॥७॥

आर्य प्रतिनिधि सभा हीरक जयन्ती महोत्सव समापन समारोह एवं यज्ञ की पूर्णाहुति

(अजमेर डाक से)

गत २१ नवम्बर को सामवेद परायण यज्ञ की पूर्णाहुति के साथ आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की हीरक जयन्ती (७५ वर्षीय महोत्सव) सम्पन्न हो गई। यज्ञ का सचालन वेदो के पण्डित आचार्य कृष्ण ने किया।

समापन समारोह मे महात्मा आनन्द स्वामी, आचार्य कृष्ण, आचार्य विश्वश्रवा और श्री श्रीकरण शारदा ने अपने भाषणो मे आर्यजनो से अपील की कि वे हीरक जयन्ती के सन्देश को राजस्थान और देश के कोने-कोने मे फैलादे।

हीरक जयन्ती के स्वागत मन्त्री श्री करण शारदा ने आगुन्तक आर्य-नेताओं, अतिथियो, प्रतिनिधियो एवं अन्य सभी लोगो के प्रति समारोह की की सफलता में दिए गये योगदान के लिए आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद दिया।

वाद-विवाद प्रतियोगिता सम्पन्न

दिनांक २१ नवम्बर को हीरक जयन्ती के अवसर पर आयोजित कुंवर चादकरण शारदा वाद-विवाद प्रतियोगिता और महात्मा कन्हैयालाल वाद-विवाद प्रतियोगिता सम्पन्न हो गई। प्रतियोगिताओं में विषय छात्रों में अनुशासन हीनता का कारण नैतिक शिक्षा का अभाव है तथा आधुनिक शिक्षा पद्धति राष्ट्रीय उत्थान में बाधक है रखे गये। इन प्रतियोगिताओं में क्रमश: सावित्री उच्च माध्यमिक विद्यालय की छात्रायें प्रथम एवं द्वितीय तथा गवर्नमैंट कालेज के छात्र प्रथम और ... द्वितीय रही।

इस अवसर पर आयोजित क्रीड़ा प्रतियोगिता में नगर की प्रमुख खेल-कूद सस्थाओं ने भाग लिया।

काठमंडू में बर्मी दूतावास स्थापित होगा

रगून ५ दिसम्बर—बर्मा और नेपाल ने वियतनाम में विदेशी हस्तक्षेप बन्द करने की अपील की है। जनरल नेविन की नेपाल-यात्रा की समाप्ति पर जारी सयुक्त विज्ञप्ति मे जनरल ने काठमंडू में शीघ्र बर्मी दूतावास स्थापित करना स्वीकार कर लिया है।

आर्य प्रादेशिक सभा की आवश्यक सूचना

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित सभी समाजों को अपने प्रतिनिधि भेजने तथा दशांश भेजने के 'क, ख' फार्म भेजे जा चुके हैं परन्तु गति बहुत धीमी है। समय थोड़ा रह गया है अत: अपनी समाजों के प्रतिनिधियों की सूचि तथा दशांश सभा के कार्यालय मे यथा समय भेज कर कर्तव्य पालन करें।

—सभा मन्त्री

आर्य जगत का चन्दा जल्दी से भेजने की कृपाकरें

मुद्रक व प्रकाशक प्रो० वेदप्रकाश मलहोत्रा एम. ए. आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित साप्ताहिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



टेलीफोन नं० ३०५७ [आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र] Regd No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे — वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६, अंक ५१) ४ पौष २०२३ रविवार—दयानन्दाब्द १४२— १८ दिसम्बर १९६६ (तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

वेद सूक्तय:

सहस्रंयस्य रातय :

जिस भगवान् के रातय:-दान सहस्रम्—हजारों हैं, अनन्त है। उस महादानी का दान तो सदा से चल रहा है। उस के दान के प्रवाह का क्या ठिकाना। चारो ओर उस के दान की सरिता प्रवाहित हो रही है।

एष देवो अमर्त्य :

यह परमात्मा देव है, महादेव है। वह अमर्त्य है, अमृतस्वरूप है। वह मर्त्य नही है। जन्म, मरण के बन्धन में नही आता। अजर अमर तथा अजन्मा है। अमृतमय है।

एष विप्रैरभिष्टुत :

यह परमात्मा विप्रै :—ज्ञानियो से, मेधावी पुरुषो से सदा अभिष्टुत:- स्तुति किया जाता है। जितने भी मेधावी व ज्ञानी हैं, वे सारे भगवान् की स्तुति करते रहते हैं।

दधद्रत्नानिदाशुषे

जो मनुष्य दान करता है, उदार है, वह प्रभु उसे हर प्रकार की सम्पत्ति देता है। उसे किसी प्रकार की न्यूनता नही रहती। जो देता है, भगवान उसे बहुत २ देता है।

भा ष्य भू मि का से

वे दा मृ त

अकेला सैंकड़ों पर भारी

ओ३म् आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम। संक्रन्दनोऽ-निमिष एकवीरः शतं सेना अजयत्साक-मिन्द्रः ॥१॥

सामवेद उत्तरार्चिक अध्याय २१ प्र० ६ सू०१ मन्त्र १

अर्थ—हमारे वीर इन्द्र सेनानायक व राजा बडा (आशु:) शीघ्रगामी (शिशान:) तेज बुद्धिवाला (वृषभ: न) बलशाली वृषभ के समान (भीम:) भयकर (घनाघन) शत्रुओ के मारने कुचलने वाला है। तथा (क्षोभण:) वैरियो को कपा देने वाला (चर्षणीनाम) सब मनुष्यों, प्रजाओ को कम्पित करने वाला है। वह नेता (सक्रन्दन:) शत्रुओ को रुला देने वाला और उन को सग्राम मे ललकारने वाला (अनिमिष:) सदा सावधान (एकवीर:) एक मात्र वीर, अनुपम बलशाली (शत सेना) सैकडो सेनाए (अजयत) विजय कर लेता है (साकम) एक साथ ही (इन्द्र:) वह हमारा वीर नेता सेनानायक सब पर विजयी होता है।

भाव यह है

जितने भी हमारे राष्ट्र को, सस्कृति, सभ्यता, धर्म अथवा देश की स्वतन्त्रता के किसी भी जन, पशुधन, भवन, भूमि और इसी प्रकार के किसी प्रकारके महाधन को हानि पहुचाने वाले वैरी, शत्रु, विरोधी हमलावर या आघाती हैं—वे कान खोल कर बार बार सुन लेवे कि हम ने किसी निर्बल कमजोर को अपना नेता, नायक तथा राष्ट्र का कर्णधार नही बनाया हमारा नेता तो वीरता से भरा हुआ इन्द्र है। उसके होते हम सारे ही निश्चिन्त हो गये हैं। हमारा वीर नायक बडा ही तेज है, प्रखर बुद्धिवाला है। प्रजा के लिए वृषभ है, सुख व अभय का वर्षक है भयानक है। शत्रुओ को व दुष्टों को पीस देने वाला है। वैरियो को सग्राम मे ललकार कर मौत के घाट उतारने वाला है। वह सदा सतर्क है। अकेला ही सैकडो पर भारी है। विजयी वीर है। वैरियो भाग जाओ। खबरदार! किसी ने चोट की तो कुचले जाओगे। —स०

ऋषि दर्शन

परम कारुणिक:परमेश्वर:

वह परमेश्वर बड़ा ही दयालु है करुणा का घर है। हमें सुख के लिए जगत् के कितने ही पदार्थ दिये हैं—यह भी उसी महान् भगवान् की करुणा ही है। वह तो सदा दयालु है।

सुखमस्मभ्यं दद्यात्

वह महान् भगवान् हमारे लिए सदा सुख देवे। वह स्वयं ही आनन्द का धाम है, सुख स्वरूप है। उसी से हमें सुख मिल सकता है। हम उसी सुखधाम से आनन्द की प्रार्थना करते है।

वयं परमेश्वरस्यैव प्रजा:

हम सब नर नारी उसी परमेश्वर की प्यारी प्रजा हैं। उसी के पुत्र-पुत्रियां हैं। वह प्रजापति है। पिता है, हम उसकी सन्तान हैं। वह पालक है, हम उसके बच्चे हैं। उस की सन्तान है।

वयं सत्यं वदाम:

हम अपने जीवन मे सदैव सत्य बोलने वाले बने। हमारे विचार, वाणी का उच्चारण तथा कर्म व्यवहार सदा सत्य के रग मे रगा हुआ होवे। आपकी कृपा सदा बनी रहे।

भा ष्य भू मि का से

अधिष्ठाता—प्रो० वेद प्रकाश एम० ए०(अंग्रेजी तथा हिन्दी) सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

धार्मिक चर्चा :—

महर्षि दयानन्द और अनीश्वर वाद

(श्री रविवर्मा आर्य 'सिद्धांत वाचस्पति' उज्जैन)

स्तम्भ के आगे

यहां स्वामी जी का भाव यह है कि बिना कर्ता या कारण के कोई भी कार्य वस्तु नहीं बनती। अतः जगत भी, जो कि एक कार्य है, बिना कर्ता या निमित्त कारण ईश्वर के नहीं बन सकता। वैशेषिक दर्शन में भी कहा है कि कारणाऽभावात् कार्या-ऽभावः वै० १। २। १ अर्थात् कारण के बिना कार्य नहीं होता—

देखो सूर्यादि को नियम में रखना अनादि चेतन का काम है' सत्यार्थ प्रकाश समु० १२ पृ. २७८

भाव यह है कि यदि ईश्वर न होता तो सूर्यादि बड़े-बड़े पिण्डों को धारण करने की शक्ति और किस में है अतः ईश्वर को मानना आवश्यक है

(३) जो कार्य जगत को नित्य मानो तो उसका कोई कारण न होगा किन्तु वही कार्य कारण रूप हो जाएगा जो ऐसा कहोगे तो अपना कार्य कारण आप ही होने मे अन्यो-न्याश्रय और आत्माश्रय दोष आवेगा। जैसे अपने कंधे पर आप ही चढ़ना। अपना पिता पुत्र आप ही नहीं हो सकता। इसलिए जगत का कर्ता अवश्य मानना है। सत्या. प्र, समु. १२ पृ २७८

भाव यह है कि एक ही वस्तु में कार्य कारण भाव नही हो सकते। जगत को नित्य मानने मे यह दोष आता है। अतः जगत नित्य नही अतः इस का कर्ता भी ईश्वर अवश्य है।

२—जगत सदैव से है और उस का कर्ता कोई नही ?

अनीश्वरवादियो मे एक मत यह भी है कि जगत को उत्पन्न होते किसने देखा ? अतः क्यो न यह मान लिया जावे कि इस जगत की उत्पत्ति और प्रलय नही होता। जब यह उत्पत्ति तथा नाशमान ही नही अर्थात सदैव से रहने वाला है तो फिर इसके कर्ता ईश्वर को मानने की क्या आवश्यकता है ? यह आक्षेप जैनियो की ओर से किया जाता है। उनका आक्षेप इस प्रकार से है —

सामि अणाइ अणन्ते च
ससार घोर कान्तारे।
मोहाइ कम्म गुरु हिइ
विवाग वसनुभमइ जीवरो॥

प्रकरण रत्ना.भा-२ षष्टी शतक६०॥२

अर्थ—ससार अनादि और अनंत है न कभी इसकी उत्पत्ति हुई न कभी विनाश होता है यदि वास्तव में जगत सदैव से है और उसकी उत्पत्ति और नाश ही होता तो उसके कर्ता मानने की कोई आवश्यकता नहीं। परन्तु ऐसा है नहीं संसार की प्रत्येक वस्तु संयुक्त रूप में पाई जाती है। एक मिट्टी के ढेले को हाथ में लीजिए। यह ढेला अनेक सूक्ष्म परमाणुओं से पूर्व एक समय अवश्य ही पृथक पृथक रहे होंगे। कारण यह कि संयोग उन्ही वस्तुओं का होता है जिनकी कभी पृथक स्थिति रही होती है। पृथक स्थिति के बिना संयोग कैसा ? फिर संयुक्त वस्तुएं वियुक्त भी होती ही हैं। चाहे यह वियोग काल कितना ही लम्बा क्यों न हो। इसी को हम वस्तुओं का बनना बिगड़ना कहते हैं। संसार में हम बहुधा वस्तुओं को बनते बिगड़ते देखते हैं। जो दशा किसी एक वस्तु की है वही दशा समष्टि जगत की है। वह भी उत्पत्ति और नाश वाला है। वह सदैव से नहीं न सदैव रहेगा। अतः उसका कर्ता मानना भूल है।

ऋषि दयानन्द का समाधान इस प्रकार है :—

"जो सयोग से उत्पन्न होता है वह अनादि और अनन्त कभी नही हो सकता और उत्पत्ति और विनाश हुए बिना कर्म नहीं रहता। जगत् मे जितने पदार्थ उत्पन्न होते है सब सयोगज उत्पत्ति विनाश वाले देखे जाते हैं। पुनः जगत् उत्पन्न और विनाश वाला क्यों नही।"

सत्या० प्र० समु० १२ पृ० २७५

स्वामी जी के समाधान का भावार्थ हम ऊपर दे चुके हैं। विशेष व्याख्या की आवश्यकता नहीं।

क्या जगत् की रचना स्वयमेव होती है ?

अनीश्वर वादियो मे एक मत ऐसा भी है जो जगत् को उत्पत्ति और नाशमान तो मानता है परन्तु फिर भी उसका कोई कर्ता मानने को वह उद्यत नहीं यह जगत् को अपने आप बना हुआ मानते हैं इन के दो प्रमुख भाग हैं :—(१) परमाणु स्वयमेव जगत की रचना परस्पर मिल कर कर लेते हैं। परमाणुओ में सृष्टि रचना का स्वभाव है।

किसी भी वस्तु के अपने आप बन जानेके बाद एक थोथा वाद है। इसका व्यावहारिक रूप कहीं देखने में नहीं आता। यदि ससार में वस्तुएं अपने आप बनती होतीं तो मानवों के सारे व्यापार व्यवहार ही समाप्त हो जाते। फिर किसी वस्तु को बनाने के लिए क्यों किसी को हाथ हिलाना पड़ता। घरों में रोटिया अपने आप बन जाती कपड़े अपने आप बन जाते, मकान अपने आप खड़े हो जाते और न जाने क्या-क्या हो जाता। परन्तु दुर्भाग्य से ऐसा है नही और न ही किसी अनीश्वरवादी ने इस प्रकार का अनुभव ही किया। जब ससार की कोई वस्तु अपने आप नहीं बनती तो यह जगत कैसे अपने आप बन गया ! ऋषि दयानन्द का समाधान इस प्रकार है :—

'बिना चेतन परमेश्वर के निर्माण किये जड पदार्थ स्वयं आपस मे मिल कर स्वभाव से नियम पूर्वक मिल कर उत्पन्न नहीं हो सकते।'

सत्या० प्र० समु० १२ पृ०२६३

इस की व्याख्या हम ऊपर दे चुके हैं अतः आवश्यक नही।

स्वभाव से सृष्टि बनना मानने वाले कहते हैं कि स्वभाव से जगत की सृष्टि होती है। जैसे पानी, अन्न एकत्र हो सड़ने से कृमि उत्पन्न होते हैं। और बीज, पृथिवी, जल मिलने से घास वृक्षादि और पाषाणादि उत्पन्न होते हैं। जैसे समुद्र, वायु के योग से तरंग और तरगो से समुद्र फेन, हल्दी चूना और नीबू के रस मिलाने से रोटी बन जाती है वैसे सब जगत तत्वो के स्वभाव गुणो से उत्पन्न हुआ है। स्वामी जी उत्तर देते हैं कि :—

"जो स्वभाव से जगत् की उत्पत्ति होवे तो विनाश कभी न होवे और जो विनाश भी स्वभाव से मानो तो उत्पत्ति न होगी और जो दोनों स्वभाव युग पत द्रव्यों मे मानोगे तो उत्पत्ति और विनाश की व्यवस्था कभी न हो सकेगी 'जो स्वभाव से ही उत्पत्ति और विनाश होता तो' समय ही में उत्पत्ति और विनाश का होना संभव नही। जो स्वभाव से उत्पन्न होता हो तो इस भूगोल के निकट दूसरा भूगोल सूर्य चन्द्र आदि उत्पन्न क्यों नहीं होते ? और जिस-जिस के योग से जो-जो उत्पन्न होता है वह-वह ईश्वर के उत्पन्न किए हुए बीज-अन्न जलादि के संयोग से घास, वृक्ष और कृमि आदि उत्पन्न होते हैं बिना उनके नहीं।'

जैसे हल्दी, चूना, नींबू का रस दूर-दूर देश से आप आकर नहीं मिलते। किसी के मिलाने से मिलते हैं। उसमें भी यथा योग्य मिलाने से रोटी बनती है, अधिकन्यून वा अन्यथा होने से रोटी नहीं होती। वैसे ही प्रकृति परमाणु का ज्ञान युक्ति से परमेश्वर के मिलाए बिना जड पदार्थ स्वयं कुछ भी कार्य सिद्धि के लिए विशेष पदार्थ नहीं बन सकते। इस लिए स्वभावादि से सृष्टि नहीं होती। किंतु परमेश्वर की रचना से सृष्टि होती है।

सत्या. प्र. अष्टम समु. प्र १३९-४०

श्री स्वामी के भाव उपर्युक्त उद्धरणों में अत्यन्त स्पष्ट हैं। प्रस्तुत निबन्ध में हमने अनीश्वर वाद के सम्बन्ध मे, स्वामी जी के विचारों का कुछेक उद्धरणों द्वारा, दिग्दर्शन मात्र कराया है अधिक जानकारी के लिए पाठक गण श्री स्वामी जी के अपूर्व ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का अध्यय करें।

★ ★

★ शरीर, मन और आत्मा के शुद्ध करने का नाम शुद्धि है।

दयानन्द ऐंग्लो-वैदिक कालेज कानपुर-१

शोक सभा

डी० ए० वी० कालेज, कानपुर के प्राध्यपको एव विद्यार्थियो की यह शोक सभा सुप्रसिद्ध शिक्षा विशारद एव दार्शनिक लाला दीवानचन्द जी के देहावसान पर हार्दिक दुःख प्रकट करती है।

यह उनकी ही कृपा का फल है कि उनके असख्य विद्यार्थी देश-देशान्तर को आलोकित कर रहे हैं।

हम सब परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवगत आत्मा को शांति प्रदान करें और उनके परिवार एवं असख्य शिष्यों, मित्रों एवं बन्धु बान्धवों को इस महान दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

इसी ही भावना से अविभूत डी० ए० वी० कालेज मीनिस्टिरियल एसोसिएशन ने भी एक शोक प्रस्ताव पास किया है।

—मन्त्री समाज

सम्पादकीय—

आर्यजगत्

वर्ष २९ | रविवार २०२३, १८ दिसम्बर १९६६ | अंक ५१

अमूल्य निधि संस्कृति

भारत स्वय एक अमूल्य महारत्न है। इसके पास भौतिक भण्डार की प्रचुरता है। प्रकृति ने भी इसे प्रत्येक सम्पत्ति से मालामाल कर रखा है। महर्षि दयानन्द के शब्दो मे यह तमाम विश्वरूपी लोहे को बनाने वाला यह पारस है। यह देश देवभूमि है, मानवीय सभ्यता का महान् केन्द्र है, तपस्या के अनुष्ठान का पवित्र धराधाम है, जीवन के विश्वजनीन आदर्शो का मूलाधार है, चरित्र का उद्गम-स्थान है महत्ता से भरा हुआ सस्कृति को मनोरम मन्दिर है। इसका प्रत्येक युग देवयुग और प्रत्येक काल स्वर्ण-काल है। विना विवाद के यह विश्व का प्रारम्भ से ही महान् गुरु है। इसकी सस्कृति सबको जीवन देने वाली है। वेद के शब्दो में-सा प्रथमा सस्कृति विश्ववारा है। सब मानव-समाज इसी के चरणो मे बैठकर एकता, समता, सभ्यता, शुद्धता, मानवता एव स्वतन्त्रता का पुनीत पाठ पढ़ता रहता है। इसी लिए भारत सबकी माता है। इसकी भाषा भी सबकी जननी है, इसकी विचार-धारा विश्व को देव बनाने की विचार-धारा है। इसके महापुरुष सारे ससार के ज्योति: स्तम्भ है। इसके दिव्य-ग्रन्थ रत्न सबको चमकाने का काम करते है। हम इसीलिए आज भी वन्देमातरम् का उद्घोष करते है। भारत की सारी सस्कृति देवभाषा सस्कृत मे निहित है। भारत सस्कृत मे है और सस्कृत भारत है। विश्व मे सस्कृत के लिए महान् आदर है। विश्व का प्रत्येक विश्व-विद्यालय सस्कृत पठन पाठन मे बिना पक्षपात के लगा है। जिस राष्ट्र की तमाम सस्कृति इस पुरातन, पुनीत भाषा मे है, चाहे अपना देश भारत उस से दूर होता जा रहा है, किन्तु आज जर्मनी, रूस, अमेरिका, इगलैंड आदि विदेशो मे सस्कृत पर भारी काम हो रहा है। इसका बड़ा मान है। हमारे देश में सस्कृत का मान व प्रोत्साहन नही है। दिखावे की बातें बहुत की जाती हैं किन्तु वास्तविकता सामने है। पजाब मे तो सस्कृत को गला पकड कर बुरी तरह से अपमानित किया जाता है। आज हायर सैकन्डरी स्कूलो मे नाम मात्र सस्कृत है। इस मे सारी सस्थाए लगी है। अपने ही अगरेज़ के मानस पुत्रो ने संस्कृत व सस्कृत वालो का गला घूंट कर के रख दिया है। न कोई कहने वाला है। अपने मे मस्त है।

अभी-अभी देहली मे अखिल भारतीय सस्कृत साहित्य सम्मेलन एव श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय सस्कृत विद्यापीठ के सम्मिलित अधिवेशन मे अध्यक्षपद से भाषण देते हुए प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने सस्कृत का गौरव गान करते हुए कहा—देश की एकता और शक्ति दोनो को कायम रखने मे सस्कृत का विशेष स्थान है। यह एक अमूल्यनिधि है। कोई भी मूल्यवान वस्तु सारे देश के उपयोग और गौरव की वस्तु होती है। इसलिए सस्कृत का भी वही स्थान होना चाहिए। मेरी आशा यही है कि सस्कृत सम्मेलन का यह प्रयास होना चाहिए कि देश के सब लोगो मे हमारी सस्कृत और प्राचीन सस्कृति की जानकारी फले। यह एक रत्न है जिसने देश को शक्ति दी थी। इसलिए उस को जाने बिना हम भारतके इतिहास और सस्कृति को नहीं समझ सकते। सस्कृत के अध्ययन मे अनुशासन आता है और राष्ट्र को इसकी बहुत आवश्यकता है।

और भी भारत के नेताओ ने सस्कृत के महत्व का गान करते हुए इसके प्रचार प्रसार अनिवार्य करने तथा इसकी ओर विशेष ध्यान देने पर बल दिया। हमे यह सब कुछ पढ कर प्रसन्नता हुई कि सस्कृत के लिए इन के दिल मे सम्मान है। किन्तु अतीव खेद के साथ लिखना पड़ता है कि आये दिन हमारे नेता सम्मेलनो मे अपने मौखिक उद्गार तो प्रकट करते रहते है, परन्तु क्रियात्मिक रूप कितना है? आज चौथी योजना मे पढ़ा था कि मछलियों के अनुसन्धान तथा पालन के लिए एक अर्ब तेरह करोड रुपये रखे गये हैं। इसके मुकाबिले मे राष्ट्र को एकता व शक्ति का पाठ पढाने वाली सस्कृत के लिए कितना व्यय होगा—यह पढ कर शर्म आ जाती है। इस युग मे भी सस्कृत का अध्यापक शायद एक दफ्तरी चपरासी के वेतन स्तर का ही होगा। सस्कृत की ओर युवक बालक रुचि नही लेते। वे समझते है कि सस्कृत पढना जीवन मे भूखो मरना है। बधाई के पात्र है साधु-आश्रम होशियारपुर के महान् तपस्वी विद्वान् आचार्य विश्वबन्धु जी तथा अन्य पजाब के छोटे-मोटे सस्कृत विद्यालय जहा पर तपस्वी इस देव भाषा के काम मे जुटे है। वर्ना स्कूलो, कालेजो, विश्वविद्यालयो मे तो सस्कृत व सस्कृत वालो को अपमानित करने मे कोई कमी नही। पजाब मे तो सस्कृत का बोलो राम ही है। कथनी बडी है पर करनी नही है। हम चाहते है कि इस अमूल्य निधि व इसके प्रेमियो को प्रोत्साहन मिले, तभी यह फूलेगी। सस्कृत सम्मेलन पंजाब का पता नही कहां है? है भी या नही। —त्रिलोकचन्द्र

विवाह परिपाटी बदलो

विवाह एक पवित्र धर्म है। प्रत्येक परिवार में समय २ पर विवाह का काम चलता ही रहता है। इस युग मे चारो ओर से वर्तमान विवाह की परिपाटी पर बड़ी समालोचना होती रहती है। सत्य तो यह है कि आज कोई भी ऐसा परिवार नही जो इस परिपाटी एवम् आडम्बर से दु:खी न हो। इस समय विवाह एक प्रकार की सौदाबाजी बन चुकी है। लडके नीलामी पर रहते हैं। आज की शादी लडके से न हो कर मोटर, रेडियो, बैंक बैलेंस से की जाती है। लड़को की बोली होती है जो भी अधिक बोली दे वह सफल हो जाता है। आर्य समाज सुधार के लिए पैदा हुआ। उस ने और तो बड़े २ काम किये, किन्तु विवाहो के प्रश्न पर वह भी गहरे काम किये, किन्तु विवाहो के प्रश्न पर वह भी गहरे गढे में गिर गया है। वैदिक रीति का अर्थ अब तो केवल यही रह गया है कि सस्कार विधि की रीति से सस्कार कर दिया जाये। उन मे भी दिनो की लगन तथा रात के समय का मुहूर्त कायम है। उस जाल व पाखण्ड से बडे २ आर्य समाजी परिवार भी निकल नही सके। इस का महान् खेद है। वैदिक रीति केवल मण्डप के आसन तक रह गई है। अन्दर बाहर उस का कोई प्रयोग नही होता, न ही उसे कोई मानने को तैयार ही है। इस के साथ २ अब तो सारा काम उसी प्रकार खुले रूप से चलता है। खुले रूप से लेने देने का काम होता है। आर्य समाज मे भी इस दिशा मे किसी प्रकार का भी परिवर्तन नही है। विरले परिवारो के सामने हमारा मस्तक झुकता है। आज के युग मे लडकियो वाले चिन्तित है। कई बेटिया इस कुरीति के कारण अपने आपको तेल डाल कर भस्म कर चुकी है। बगाल की स्नेहलता जैसी बहिने कितनी ही सख्या मे बलिदान हो गई है। हिन्दू समाज इस बात से खोखला होता जा रहा है। चारो ओर जवान कन्याओ की वेदना सामने है। अभी मैं देहली अनारकली समाज के महोत्सव से लौटा हू। वहा एक सभ्य सद्गृहस्थ ने विशेषकर कहा कि इस विवाह परिपाटी मे सुधार के आन्दोलन को क्रियात्मिक रूप दिया जाये। उनका यह कहना था कि जैसे दूसरे लोग अपने २ धर्ममन्दिरो मे विवाह की विधि पूर्ण करते है। उन मे पूरी २ सादगी बर्तते है। आर्यसमाज क्यो वैसा न करे। जैसे नामधारियो के केन्द्र भैनीसाहिब मे वार्षिक समारोह मे सैकडो विवाह सामूहिक रूप मे बडी सादगी से किये जाते है। आर्यसमाज वैसा क्या नही करता? आज विवाहो पर कितना अपव्यय होता है। बिजली तथा अन्य बेकार सजावट पर कितना व्यर्थ पैसा नष्ट किया जाता है। कितना दिखावा व आडम्बर होता है। इतनी बडी बरात, इतना व्यर्थ दिखावा, ऐसा व्यर्थ आडम्बर किस लिए? आर्यसमाज ने तो दूसरो का सुधार करना था—यही खेल तमाशा, दिखावा आडम्बर का स्वय शिकार हो गया है। बात यह है कि बडे आदमी किसी का भी अकुश स्वीकार नहीं करते। उनको अपने पैसे पर मान है। समाज उन पर भी अकुश रखे। पैसे का अर्थ यह नहीं कि वे समाज को गिराते जाये। आज वह समय आ चुका है जब कि कुछ व्यक्ति तथा सबल परिवार ऐसे निकले, जो इस विवाह विधि के आडम्बर को

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्य समाज की उन्नति के दस सूत्र
आर्य समाज कैसे आगे बढ़े ?

लेखक–पं० धर्मदेवजी 'विद्यामार्तण्ड(देवमुनि वानप्रस्थ), आनन्द कुटीर, ज्वालापुर ।

(१) आर्य समाज की उन्नति का का सब से प्रमुख साधन उसके सदस्यों का सच्चे अर्थों में आर्य बनना है। आर्य समाज के सदस्य जितने अधिक धर्मात्मा, सदाचारी, ईश्वर भक्त, कर्तव्य परायण, सत्यनिष्ठ, विशाल हृदय और परोपकारी होंगे उतनी मात्रा में आर्य समाज की उन्नति हो सकेगी। आर्यों के व्यक्तिगत जीवनों की अपवित्रता तथा पारस्परिक ईर्ष्या द्वेष आर्य समाज की उन्नति में सब से अधिक बाधक हैं। समाज शब्द सम् आ अज इस प्रकार बनता है। अज गति क्षेपणयो: के अनुसार समाज में लोगों के मिल कर गति करने और बुराईयों को परे फेंकने का भाव है। गति के ज्ञान, गमन और प्राप्ति अर्थ होते हैं। इस प्रकार समाज शब्द के अन्दर प्रेम पूर्वक मिलकर चारों ओर से ज्ञान प्राप्त करने, ससार के उपकार के उद्देश्य से गति करने का भाव आता है जो अत्यन्त महत्व पूर्ण है। आर्य समाज के इस प्रकार सच्चे कर्त्तव्य परायण ईश्वर भक्त धर्मात्मा आर्यों का सगठित प्रेम बद्ध समुदाय बनने पर आर्य समाज की यथेष्ट उन्नति में क्या सन्देह हो सकता है ?

(२) आर्य समाज की उन्नति का दूसरा सूत्र है तर्क के साथ श्रद्धा का समन्वय। यह तर्क वा मेधा के साथ श्रद्धा का सच्चा समन्वय ही वैदिक धर्म की बडी विशेषता है जिस का निर्देश 'स मे श्रद्धा च मेधा च जातवेदा: प्रयच्छतु' (अथर्व १९.६४ १) इत्यादि मन्त्रों मे किया गया है। धर्म ज्ञान के लिए तर्क की भी बडी भारी आवश्यकता है किन्तु स्वय वेद मे बताया गया है कि 'श्रद्धा भगस्य मूर्धनि वचसा वेदयामसि ।' (ऋ० १:१५१,१) अर्थात श्रद्धा को हम धर्म के मस्तक स्थानीय बताते हैं। श्रद्धा के बिना धर्म ऐसा ही है जैसा मस्तक के बिना शरीर। जब तक आर्यों के जीवनों मे तर्क के साथ श्रद्धा का समन्वय न होगा और उनके यज्ञ संस्कारादि सब कार्य श्रद्धा पूर्वक न होगे तब तक आर्य समाज की यथेष्ट उन्नति न हो सकेगी और न वह सर्व-साधारण जनता को अपनी ओर आकृष्ट कर सकेगा।

(३) आर्य समाज के आगे बढने अथवा उसकी उन्नति का तीसरा सूत्र है कुमार कुमारियों मे उसके द्वारा विशेष प्रचार की व्यवस्था। सब आर्य समाजों के साथ आर्य कुमार सभाओ की स्थापना और उनके साथ प्रेम पूर्ण सहयोग से इस उद्देश्य की पूर्ति हो सकती है। छात्र छात्राओं में वैदिक धर्म के प्रचार की व्यवस्था आर्य समाज की उन्नति के लिए अत्यावश्यक है! सुयोग्य विद्वानों और विदुषियों के उत्तम व्याख्यानों के अतिरिक्त धार्मिक परीक्षाओं, भाषण और निबन्ध प्रतियोगिताओं के आयोजन और पुरस्कारादि द्वारा प्रोत्साहन से भी बड़ा लाभ हो सकता है। उत्तम,विद्वानलेखको द्वारा छात्रोपयोगी सदाचार और 'समाज सेवा वर्धक स्फूर्ति दायक साहित्य की रचना करवा कर उसे छात्रवर्ग मे वितरित कराया जाए। अभी इस ओर बहुत कम ध्यान है।

(४) आर्य समाज की उन्नति के लिए महिलाओ मे वैदिक धर्म के प्रचार की अत्यधिक आवश्यकता है। आर्य महिला सभाओ और पारिवारिक सत्सगों द्वारा देवियों में प्रचार का विशेष आयोजन विदुषी देवियो को करना चाहिए। सगीत भजन तथा कथाओ का ऐसे सत्सगों मे विशेष आकर्षण होना चाहिए। जब तक महिलाओमें वैदिकधर्म और आर्यसमाज के प्रति सच्चा प्रेम उत्पन्न नहीं होता, तब तक आर्यसमाजकी प्रगति असम्भव है। केवल पुरुष वर्ग में प्रचार से भावी सन्तति आर्य नही बन सकती। सन्तान पर माताओ का प्रभाव विशेष होता है। महिलोपयोगी सरल भाषा और शैली में उत्तम साहित्य को भी विदुषियो द्वारा विशेष रूप से तैयार करवाकर उसका घर-घर प्रचार किया जाए।

(५) आर्यसमाज की उन्नति का पचम सूत्र शिक्षित जग के लिए विद्वत्ता पूर्ण प्रभाव जनक साहित्य क निर्माण और उसके प्रचार की व्यवस्था करवाना है। उह उत्तम साहित्य देश-विदेश की जितनी भाषाओं में तैयार कराया जाए और जितने कम मूल्य पर प्रचारार्थ बेचा जा सके, उतना ही अधिक लाभ होगा। इसके लिए कुछ सुयोग्य विद्वानो और विशेषज्ञो को आर्थिक दृष्टि से निश्चिन्त करके उनका विशेष सहयोग लेना आवश्यक है। अपने देश की भाषाओं के अतिरिक्त अग्रेजी, फ्रेन्च, जर्मन, रशियन आदि विदेशी भाषाओ मे भी इस प्रकारके साहित्यको तैयार करवाने का यत्न करना चाहिए। इसके विना केवल मौखिक प्रचार का कभी स्थायी प्रभाव नही हो सकता। अभी तक संगठित रूप में इस ओर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का ध्यान भी बहुत अपर्याप्त है।

(६) वैदिक धर्म के उत्साह पूर्वक प्रचार के साथ साथ हमारी शिथिलता के कारण निरन्तर अनेक रूपो मे बढते हुए पाखण्ड और दम्भ के निर्भयता पूर्वक खण्डन की भी मुझे आवश्यकता प्रतीत होती है। खण्डन कठोर और दिल दुखाने वाले शब्दो मे न हो, किन्तु प्रभाव जनक प्रमाण और तर्क द्वारा प्रेम से जनता के कल्याण की दृष्टि से उसका करना आवश्यक है। आवश्यकतानुसार मौखिक व लिखित शास्त्रार्थों के आयोजन से भी धार्मिक जागृति लाने में सहायता मिल सकती है।

(७) शुद्धि आन्दोलन को उत्तम उपायों से प्रेम पूर्वक चलाना आर्य समाज को आगे बढाने मे विशेष सहायक होगा, किन्तु इसके साथ जब तक आर्य नर नारियो शुद्ध हुए व्यक्तियो के साथ सामाजिक सम्बन्ध रखने को तैयार न होंगी तब तक इस से विशेष लाभ न होगा। इस के लिये जन्म मूलक जाति भेद का उन्मूलन करके अन्तर्जातीय विवाहो को प्रोत्साहित करना तथा अन्य प्रकारो से अपनी उदारता और विशाल हृदयता का परिचय देना आवश्यक होगा। जाति भेद निवारण के आदोलन को प्रबल और सगठित बनाना शुद्धि आदोलन को सफल बनाने के लिये अत्यावश्यक होगा। आर्यसमाज को, विधर्मियों को अपने अन्दर लेने और स्थिर रखने की शक्ति को बढाना होगा।

(८) आर्यसमाज की यथार्थ उन्नति के लिये यह भी आवश्यक है कि आर्यों में आध्यात्मिकता को विकसित किया जाए। इसके लिये अनुभवी आर्य योगियों का सहयोग लिया जाए जो आध्यात्मिक योग शिविरो और आश्रमो द्वारा सच्चे आध्यात्म मार्ग का प्रदर्शन कर सकें। इसके अभाव में जिज्ञासु लोग राधास्वामी मत, ब्रह्मा कुमारी तथा हंस सम्प्रदाय आदि में शांति और आनन्द की खोज में भटकते फिरते हैं। वानप्रस्थाश्रमादि को सच्ची आध्यात्मिकता की शिक्षा का केन्द्र बनाया जाए।

(९) आर्य समाज की उन्नति के लिये यह भी आवश्यक है कि उसका जनता से घनिष्ठ सम्पर्क रहे और वह उसके कष्टो के निवारण तथा सेवा के कार्य में सदा तत्पर रहें। इस दृष्टि से अनाथालयो के अतिरिक्त (जिनका सचालन बड़ी सत्यनिष्ठा और सेवा भावना से करना और उनको देश के उत्तम नागरिक बनाने का लक्ष्य रखना अत्यावश्यक है) धमार्थ औषधालयो की भी आवश्यकतानुसार स्थापना की जानी चाहिए। केवल मौलिक प्रचार से जनता को सन्तोष नही हो सकता।

(१०) जन सम्पर्क बढाने की दृष्टि से यह भी आवश्यक है कि भ्रष्टाचार और दुराचार निवारण, मद्यमास, धूम्रपान आदि दुर्व्यसन निवारण (जिनकी राष्ट्र मे निरन्तर वृद्धि होती जा रही है) जो अस्पृश्यता निवारण, जो अस्पृश्यता विधि वा कानून द्वारा अपराध घोषित करने पर भी ग्रामो मे विशेष रूप से प्रचलित है तथा गो-वध निषेध विषयक आदोलनो में आर्य समाज प्रमुख सक्रिय भाग ले और इन उपयोगी आन्दोलनो का सच्चा नेतृत्व करे। इसी के साथ राष्ट्र भाषा हिन्दी और देवनागरी तथा सस्कृत के सर्वत्र प्रचार की ओर नर नारियो तथा विशेषत: विद्वानो को इस समय अति विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। सुयोग्य आर्य विद्वान राजनैतिक क्षेत्र मे भी कार्य करते हुए उसे वेदो तथा आर्य सस्कृति के अनुरूप बनाने का अधिक से अधिक प्रयत्न करें तो यह देश की बडी भारी सेवा होगी। इस दृष्टि से उत्तम राजनैतिक साहित्य का भी निर्माण उपयोगी होगा।

इस दशसूत्री के अवलम्बन से आर्य समाज बढ सकता है, उसकी वास्तविक उन्नति हो सकती है और वर्तमान शिथिलता दूर हो सकती है। इसमे अणुमात्र भी सदेह का कारण नही। ★★

★ दयानद जीवेदो के विद्वान्, देश सुधारक,त्यागी,सत्यवादी, तपस्वी, सच्चे ब्राह्मण, सन्यासी तथा बाल ब्रह्मचारी थे।

७ नवम्बर का गोरक्षा प्रदर्शन
(आंखों देखा हाल)

श्री हरिकिशन दास जी अग्रवाल बम्बई-१०

जैनाचार्यमुनि सुशील कुमार के निर्देशन में सर्व दलीय गोरक्षा महाभियान समिति की ओर से ७ नवम्बर, १९६६ को एक प्रदर्शन गोहत्या निषेध के लिए निकालने का निश्चय हुआ। जिस का सदेश सभी सम्प्रदायो के विद्वान सत-महात्माओं द्वारा सारे देश में पहुंचा। फलतः अंदाजन आठ-दस लाख की सख्या में जनता बसों, रेलगाड़ियों तथा अन्य साधनों द्वारा ७ नवम्बर को गोहत्या निषेध के प्रदर्शन में भाग लेने के लिए दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, बगाल, बिहार पंजाब, हरियाना, हिमाचल प्रदेश राजस्थान और महाराष्ट्र आदि प्रान्तो से उमड़ पड़ी। जितनी भी जनता वहां आई थी वे प्रायः गोभक्त, ईश्वरासक्त तथा धर्मपरायण थी। इन मे माताओ की भी बहुत बडी सख्या थी।

६ नवम्बर को दिन व रात सैकडो भट्ठियों पर यात्रियों के लिए साग-पूड़ियां बनती रही। यात्री तीन बडे कैम्पों में बट गए थे। एक कैम्प रोशन आरा बाग मे दूसरा अजमल खा रोड और तीसरा लाल किले मे लगा था। और भी अन्य २१ छोटे कैम्प जमना किनारे व भिन्न-भिन्न धर्मशालाओ में खोले गए।

स्थान-स्थानसे विरक्त सन्त महात्मा विद्वान भी पधारे हुए थे। जुलूस पांचो स्थानो मे गोवध बन्दी के नारे लगाता हुआ शातिपूर्वक निकला और पालियामैंट स्ट्रीट की ओर चलता रहा। रास्ते मे सैकड़ो जगहो पर जनता ने फूलों की वर्षा की और महात्माओ के के गले मे फूल मालाए डालीं। जगह-जगह ठंडा पानी, शर्बत आदि बड़े आदर के साथ प्रदर्शन में सम्मिलित जनता को दिल्ली की जनता ने पिलाया।

प्रदर्शन में जनता गोहत्या निषेध के नारे लगाती शातिपूर्वक चल रही थी। किसी प्रकार की दुर्घटना रास्ते में नही हुई। लाल किले से निकला हुआ जुलूस अभी चांदनी चौक, नया बाजार मे ही था कि आसफअली रोड पर कुछ अवांछनीय लोगों ने, जिनका जुलूस के साथ कोई सम्बन्ध नही था दुकानों के कांच आदि तोड़ने शुरू कर दिए।

जलूस उपरोक्त पांचो स्थानो से निकला हुआ शांतिपूर्वक पालियमेंट स्ट्रीट पर दोपहर १२—३० पर पहुंच गया। वहां पर १०-११ फुट ऊंचा एक विशाल मंच बना हुआ था। जिसके ऊपर जैन मुनि सुशीलकुमार, शंकराचार्य जगन्नाथ पुरी व बदरीनाथ, श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी, श्री स्वामी पूर्णानन्द, श्री स्वामी गुरु चरणदास, श्री स्वामी प्रकाशानन्द, श्री स्वामी सदानन्द व स्वामी अरविन्दानन्द के साथ अन्य पचास-साठ साधु सत मच पर बैठे हुए थे। सभा की कार्यवाही जैन मुनि श्री सुशील कुमार जी ने प्रारम्भ की। दोनो शकराचार्यो का भाषण हुआ फिर प्रभुदत्तजी बोले। जनता मे शांति का सन्नाटा छाया हुआ था। जनता बड़े आदर पूर्वक महात्माओ के प्रवचन सुन रही थी। जब श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी पालियामैंट से बाहर निकल कर आये और उन्होने अपने पालियामैंट से बाहर निकलने की व्यथा तथा ससद की १ घण्टे के लिए स्थगन की सूचना जनता को सुनाई किन्तु साथ ही जनता को पालियमैंट पर घेरा डालने को कहा—इस पर श्री प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी अपने स्थान पर खड़े होकर रामेश्वरानन्द की इस बात का विरोध किया और कहा कि हमारा ऐसा कोई कार्यक्रम नही है और न हम किसी प्रकार का घेरा ही डालना चाहते हैं। हमारा कार्यक्रम केवल शाति पूर्वक प्रदर्शन का है। उन्होने जनता को सम्बोधित करते हुए शातिपूर्वक अपने स्थान पर बैठे रहने को। इसके बाद श्री सेठ गोविन्ददास जी (पार्लियामेन्ट के सदस्य) का भाषण हुआ। उन्होने भी गोहत्या बन्दी के पक्ष मे भाषण किया। इतने मे श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी फिर माइक की ओर लौटे और उन्होने अपनी पहले कही हुई बात का स्पष्टीकरण कर यह कहा कि घेरा डालने से मेरा तात्पर्य यह नही था कि आप अभी उठ करके घेरा डालना प्रारम्भ कर दे। अभी आप शातिपूर्ण ढंग से अपने स्थान पर बैठे रहे और जिस प्रकार गोरक्षा समिति का आदेश होता है, वैसा करे। इससे उन्होने गलतफहमी को दूर कर दिया। इसके बाद प्रकाशवीर शास्त्री (पालियामेन्ट के सदस्य) ने भाषण किया और कहा कि जनता के इस विशाल गोहत्या बन्दी के प्रदर्शन को सरकार ठुकरा नहीं सकती। उसे जनता की आवाज को मान्यता देकर गोहत्याबंद करनी ही होगी साथ ही उन्होंने पुलिस वालों को चेतावनी दी कि वे सभा से १०० गज पीछे हट जावें और जनता के साथ छेड़खानी न करें, अन्यथा जनता के भड़कने की सारी जिम्मेदारी उनके सिर पर होगी। यह चेतावनी सुनकर पुलिस वाले पीछे हटे हो ऐसा हमें दीखने में नही आया। मंच पर कार्यवाई अदाजन १ घण्टा शातिपूर्वक चलती रही। किन्तु कोई किसी प्रकार की दुर्घटना नही हुई। सब मुख्य वक्ता भी बोल चुके थे। इतने मे ही एक अजनबी मनुष्य ने मच पर आकर लाउडस्पीकर पर सूचना दी कि साधुओ पर पुलिस लाठी प्रहार कर रही है। उस मनुष्य को उसी समय माइक से अलग कर दिया गया कि इतने मे पुलिस ने मंच पर अश्रु-गैस छोड़ना शुरू कर दिया जिस से मच पर बैठे बहुत से लोग बेहोश हो गए। बहुतो को इतने ऊंचे मच से कूदना पडा और उन्हे चोटे भी आई। अश्रुगैस छूटे १-२ मिनट हुए थे कि गोलियां भी चलने लगी और जनता अपने प्राण बचाने के लिए इधर-उधर भागने लगी। बहुत-सी माताए रोती हुई दिखायी पडी और वे इधर-उधर अपने प्राणों की रक्षा के लिए भागने लगी। पीछे से भागती जनता का दबाव इतने जोर से आया कि बहुत से लोग गिर कर भी घायल हुए। मैं अपने प्राण बचाने के लिए ट्रासपोर्ट भवन के अन्दर चला गया। वहा पर लगातार गोलियो तथा अश्रुगैस चलने की आवाज आती रही और घुड़सवार पुलिस के घोड़ो के दौडने की टपटप की आवाज सुनाई पडती रही। ट्रासपोर्ट भवन के काच इत्यादि भी टूट गए। इतने मे किसी ने आकर खबर दी कि ट्रांसपोर्ट भवन मे खडी कारे और स्कूटरों पर भी आग लगा दी गयी है। जब बाहर का वातावरण थोडा शान्त हुआ तो मैं ट्रांसपोर्ट भवन से निकल कर पार्लियामैंट स्ट्रीट से पजाब नेशनल बैंक की ओर चलने लगा। जहा पर कि मैंने अपने ड्राइवर को कार खड़ी करने के लिए कहा था—किन्तु वहा पर कार नहीं मिली। मैं पजाब नेशनल बैंक से अपने एक मित्र की कार में करोल बाग पहुंचा और वहां से टैक्सी लेकर डिफेंस कालोनी ५ बजे शाम को पहुंचा।

अंदाजा लगाया जाता है कि प्रदर्शन में भाग लेनेवाली जनता ८ से १० लाख थी। जिन मे करीबन २ लाख स्त्रिया थी। चूंकि गाय के प्रति लोगों मे आदर की भावना है गाय एक चलता फिरता मदिर है। मंदिर मे तो सिर्फ एक देवता का निवास होता है, किन्तु गाय मे ३३ करोड़ देवताओ का निवास शास्त्र बतलाते हैं। गाय परम्परा से भारतीय परिवार का एक अग मानी गयी है, जो कि किसान का धन है, और देश की सम्पत्ति है।

हमारी सरकार धर्म निरपेक्ष है। धर्मनिरपेक्ष होने के नाते उसे चाहिए कि वह हिन्दू धर्म के इस भावनात्मक प्रश्न पर आदर भाव प्रदर्शित करे और गोहत्या बद करे न कि गोहत्या करके बहुमत हिन्दुओं की धार्मिक भावना पर ठेस पहुचाये। ऐसे जन समूह मे अधिकारी वर्ग का अधिकार तथा बल का ही नही किन्तु जन समूह के मनोविज्ञान का भी ध्यान रखना चाहिए। ऐसी कोई बात नहीं करनी चाहिए जिसमे जन समूह मे उत्तेजना फैले। अधिकारी वर्ग को चाहिए था कि यदि थोड़ी सी जनता रामेश्वरानन्द की घेरा डालो आवाज सुनकर पार्लियामेट के गेट की ओर बढी तो उनको बजाये लाठियो से मारने के पुलिस विवेक से काम लेती और वह प्रकाशवीर शास्त्री के कहे अनुसार कुछ पीछे हट जाती। और उन सौ-पचास आदमियो को एक तरफ ले जाती और वहा उन्हें मौका देखकर गिरफ्तार कर लेती। इससे जितने मनुष्य की जाने गयी, व इतने लाग जख्मी हुए वह न होते और शाति से प्रदर्शन सम्पन्न होता।

प्रदर्शन करने वाली जो जनता शातिपूर्वक लालकिला, रोशनआरा बाग, अजमल खा रोड आदि स्थानों से निकलकर पालियामेन्ट स्ट्रीट मे होता हुआ आयोजको के सभास्थल पर शातिपूर्वक के भाषण सुनता रही, उसके उत्तेजित होने का कोई प्रश्न ही नही था। रामेश्वरानन्द जी के वक्तव्य के २० मिनट बाद तक शांति-पूर्वक कार्यवाही चलती रही। किन्तु जब मच की पिछली तरफ साधुओ के ऊपर पुलिस ने लाठीचार्ज किया, अगर उस समय जनता के

(शेष पृष्ठ ६ पर)

विवाह परिपाटी बदलो

(पृष्ठ ३ का शेष)

समाप्त करने के लिए मैदान में आयें। जनता उनका उपकार मानेगी। उनके इस साहस से परिवार के परिवार उनका धन्यवाद करेंगे। युवतियों का जीवन बच जायेगा। समाज के शरीर में लगा रोग कम होता जायेगा। आर्य वीर दल पता नही कहा है। उसका काम केवल समय समय पर अलग अलग नगरो मे लम्बे चौड़े जलूस निकालना नहीं या थोड़े समय बाद समाचार पत्रो में लम्बे चौड़े वक्तव्य देना ही नही। उसका ठोस काम यह है कि समाज मे क्रियात्मिक रूपसे इस आवश्यक बुराई को समाप्त करना है। यदि उनके नेतागण स्वय ही बरात की लम्बी चौड़ी फौज ले कर चलें। वही बाते उनके विवाहों पर भी देखने मे आये जो दूसरो मे हो तो फिर लाभ क्या है ? वेदी की बातों व उदघोषो को परिवारो के क्रिया कलाप मे लाना होगा। हम चाहते है कि आर्य वीर दल वाले तथा दूसरे समाज के परिवार ऐसे निकले, जो इस मे अपना कदम उठा कर आवें। अपने २ नाम देवे आर्यजगत के स्तम्भ उनके लिए खुले है। हमे ऐसे सज्जनो के नाम चाहिए जोकि विवाह की विधि को सादे ढग से तथा आडम्बर रहित करने को तैयार हो। बरात मे अधिक से अधिक दस बराती हो। मैं स्वय तो पांच के हक में हू। विवाह कर्म मन्दिरो मे किए जाए तथा या विवाह पर्वो को चुन लिया जाए, जहा मण्डल रूप से विवाह का काम सम्पन्न हो सके। आडम्बर सर्वथा समाप्त हो। आज के युग की यह आवश्यक आवाज है। देखना है कि कितने युवक व परिवार निकलते हैं। प्रतीक्षा है —स०

यज्ञमय आदर्श परिवार

सचमुच कई परिवार ऐसे है जिन का जीवन व काम देखकर श्रद्धा से सिर झुक जाता है। उन्ही मे माडल-टाऊन पानीपत मे चौधरी लीलाकृष्ण जी प्रभु कुटीर का जीवन व पवित्र परिवार है। श्री चौधरी जी सचमुच देवयुग के निवासी हैं, यज्ञ पर अतीव श्रद्धा है। अलग ही यज्ञशाला है। प्रात: दो घण्टे तक दैनिक रूप से यजुर्वेद का यज्ञ चलता है। अब तक यह परिवार ९६ यजुर्वेद पारायण महायज्ञ करके ९७ वें यज्ञ को प्रारम्भ किए है। निरन्तर यज्ञ चलता है। परिवार मे चौधरी जी की देवी जो हमारे लिए आदरणीया माता का पूज्य स्थान रखती है। साक्षात देवयुग के सात्विकी माता है। दोनो का घर परिवार, जीवन व कार्य यज्ञमय बन गया है। इनके परिवार मे जाकर बड़ी प्रेरणा मिलती है। ऐसे परिवार पर सारे समाज को गौरव है।

कर्तव्य और अधिकार

(श्री डा. गोवर्धन लाल जी दत्त पूर्व वाइस चांसलर, प्रधान दयानन्द कालेज कमेटी नई देहली)

माननीय डा० जी. एल. जी दत्त भारत के विशिष्ट शिक्षा विशारदों में अपना विशेष स्थान रखते हैं। आप विक्रम यूनिवर्सिटी उज्जैन के वाइस चांसलर रह चुके हैं। डी. ए. वी. कालेज प्रबन्धक कमेटी नई देहली के प्रधान हैं। आर्य समाज की अनुपम विभूतियों मे से हैं। आप सरलता एव मिठास की सजीव प्रतिमा है। महान् चिन्त न शील, लेखक हैं। आर्य समाज अनारकली रीडिंग रोड नई देहली के वार्षिक महोत्सव पर 'कर्तव्य और अधिकार' के महत्व पूर्ण विषय पर आप ने प्रभावशाली भाषण दिया। आर्य जगत् के प्रेमी पाठको के लिए इस भाषण को नीचे दिया जा रहा है—सं.

आज तमाम विश्व दु:खी है। युग ही उलट गया है। पश्चिम के लोग **Golden age** स्वर्णमी युग चाहते हैं। वे सुखी ससार को गोल्डन एज के नाम से पुकारते है। इधर हम भारतीय लोग राम राज्य चाहते है ! ऐसे सुख से भरे ससार को रामराज्य के नाम से याद करते हैं। भाव दोनो का एक ही है। ऐसा युग जिस मे सुख हो। जीवन सरलता से व्यतीत होता जाये। किसी प्रकार का अज्ञान न हो, अन्याय का नाम न रहे तथा किसी भी जीवन की आवश्यक वस्तु का अभाव न हो। ऐसा युग रामराज्य है। यही सुनहली धरती होगी। पुरानी बात है कि लाहौर मे एक बार डाक्टर वजीर चन्द ने महात्मा हस राज जी से पूछा कि आप ने स्कूल क्यो खोला है ? उन का उत्तर यही था कि रामराज्य का युग लाने के लिए। सब सुखी होगे, सब के लिए समानता होगी भाव यह है कि सब के लिए एक जैसी सुविधा मिले।

कोई यह न समझे कि मुझे उन्नति का मौका नही मिला। हमने ऐसे युग का नाम रामराज्य रखा है और उन्होने गोल्डन एज—स्वर्णयुग। हम सारे ही उसी युग की प्रतीक्षा मे हैं।

कार्ल मार्कस ने आर्थिक समता से स्वर्णयुग लाने का उपाय बताया। किसी अधिनायकवाद का तरीका कहा। कोई मिलट्री डिक्टेटर शिप के साधन द्वारा स्वर्णयुग आने की बात कहते हैं। कई कहते हैं कि सोसायटी-समाज को बदलो। किन्तु धर्म कहता है कि व्यक्ति का निर्माण करो। उसे बदलने का प्रयत्न करो। धर्म वाले व्यक्तित्व को बनाना चाहते हैं। व्यक्तियों से ही समाज बना करता है। यदि व्यक्ति अच्छे होंगे तो उन से बना सारा समाज स्वयमेव उत्तम बन जाएगा। व्यक्तियो के समूह का ही तो नाम समष्टि है। है। व्यक्ति मूल है। इसी के द्वारा सारे पत्तों को रस मिला करता है। इसी लिए धर्मवादी कहते है कि मनुष्य मे एक शक्ति है, ज्योति है **spark** है, जिस से जीवन बनता है। व्यक्ति ही समाज को उठाते रहते हैं। ऐसे गुणो से पुरुष पुरुषोत्तम **superman** बन कर सारी सोसायटी को बदलकर रख देता है समाज का भी अपना स्थान है। वह साधन जुटा कर व्यक्ति को बडा बनाने मे सहयोग देती है। महात्मा बुद्धयुग में क्या था। पशुमार कर यज्ञ मे डाले जाते थे। बुद्ध ने अपनी आखो से बीमार, बूढा तथा मरा हुआ मनुष्य देखा। सोचा मेरी भी यही दशा होगी। क्यो न मै इनसे बचने का उपाय करू। यही विचार उसे महापुरुष बना देता है। यमन-चिकेता की गाथा मे भी यही रहस्य भरा है। प्रेम या भोगवाद का एक ही मार्ग है। यह **Path of pleasure** है। नचिकेता ने हाथी-घोडे

(क्रमश:)

७ नवम्बर का गोरक्षा प्रदर्शन

(पृष्ठ ५ का शेष)

मनोविज्ञान का ध्यान रखते हुए पुलिस विवेक द्वारा काम लेती तो यह दु:खद काड न होता।

इस जुलूस के जो सचालन हैं, उन्हें कभी स्वप्न में भी यह ख्याल नही था कि इस शातिमय प्रदर्शन का ऐसा काण्ड होगा। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि पुलिस के लाठी-चार्ज के बाद जब जनता में असंतोष फैला तो कुछ बाहरी [illegible] व गुण्डा-गर्दी मचाने वालों ने [illegible] का लाभ [illegible] लूटमार की काच तोड़े, कार, स्कूटरों इत्यादि को जलाया [illegible]वार ३० अक्तूबर, १९६६ को प्रात: [illegible] बजे एक डैप्युटेशन जिसमें जैनाचार्य मुनि सुशील कुमार, स्वामी गुरुचरण दास, स्वामी अरविन्दानन्द, श्री घोष और मैं श्रीमती इन्दिरा गाधीजी प्रधानमन्त्री से मिले। इस डेप्युटेशन ने प्रधानमंत्री से गोहत्या बन्द करने के लिए अनुरोध किया। किन्तु उन्होंने उत्तर में कहा कि गोहत्या बन्दी के विषय में जनता की कोई माग ही नही और मुझे सब रिपोर्ट मिलती हैं, जिसमें गोरक्षा निषेध के पक्ष मे जो सभाएं होती हैं उसमें बहुत ही कम हाजरी होती है। श्री सुशीलकुमार जी ने कहा कि २९ अक्टूबर की चांदनी चौक की सभा मे पचास साठ हजार व्यक्ति थे। और जनता मे गौरक्षा के प्रति बड़ी उच्च भावना है, और यह आदोलन जोर पकड रहा है। अभी तक तो यह आदोलन हमारे हाथ मे है और शातिपूर्वक चल रहा है। किन्तु अगर यह आदोलन हमारे हाथ से निकल गया और दूसरी राजदारा सस्थाओ के हाथ मे चला गया तो हम जिम्मेदार नही होगे।

आज के इस अशात वातावरण मे जहा पर विद्यार्थी और सरकार, मालिक और मजदूर सरकारी कर्म-चारी व सरकार आदि के बीच झगड़े और स्ट्रायके हो रही है, रेल की पट-रिया तक उखाडी जा रही हैं। जगह-जगह विरोधात्मक प्रदर्शन हो रहे है। अगर इसी प्रकार गोली चलाकर ही बलपूर्वक स्थितियो पर काबू पाना सरकार की नीति रहेगी तो इन सब का कहा अत होगा इस का अदाजा लगाना कठिन है।

अत: सरकार को चाहिए कि ऐसे मौको पर बुद्धि और विवेक से काम ले न कि सिर्फ बल प्रयोग से। गोलियो से जनता में असतोष कम नही होता किन्तु बढ़ता है और अधिक विद्रोह का रूप धारण करता है।

सम्पूर्ण गोवंश हत्या बन्दी का कानून केन्द्र में बनाकर सरकार को चाहिए कि बहुजन मानित धर्म की मान्यताओ को मान देते हुए हमारी धर्मनिरपेक्ष सरकार धर्म की भावनाओं को आदर की दृष्टि से देखे।

**

[illegible] और संस्कृत साहित्य के उद्भट [illegible] एवं सेवक श्री शशि भूषण विद्यालकार

(श्री [illegible] कुमार, विद्यालंकार)

पंडित शशिभूषण जी नहीं रहे। यह जान [illegible] उद्विग्न हुआ। वैदिक और संस्कृत वाङ्मय का एक प्रकाण्ड पंडित, मूक प्रचारक [illegible] निष्काम सेवक विश्व के रंगमंच से तिरोहित !!

श्री शशिभूषण जी एक [illegible] शिक्षक थे—रागद्वेष से परे। अपने एक गुरु भाई के शब्दों में—'वे अन्तः करण से हम लोगों की भलाई चाहते थे और अपना अधिक से अधिक समय इस काम के लिए देते थे। मैं हमेशा से उन के प्रति कृतज्ञ रहा हूं।'

पंडित जी पुराने ढंग के पंडित थे, जो विश्वास रखते थे कि पैसा गांठ में और विद्या कंठ में। वह यह विश्वास नहीं करते थे कि पुस्तकों की अनुक्रमणिका अच्छी होनी चाहिए। फलतः वह जिन को पढ़ाते थे उन विद्यार्थियों को कम से कम पांच श्लोक प्रति दिन अवश्य सुनाने पड़ते थे, कभी-कभी तो सुनाये बगैर सोना भी नहीं मिलता था। यह कठोरता तो अवश्य ही प्रतीत होती थी परन्तु इसी कारण उस समय याद किये श्लोक उन के शिष्यों को आज ५०-५०-६०-६०वर्ष की अवस्थामें भी नहीं भूले हैं। वे अनुभव करते हैं कि यह सब उनकी कृपा और अनुकम्पा का फल है।

श्लोक कण्ठस्थ कराने की उनकी विधि निरी कठोर ही नहीं अपितु एक प्रकार से रोचक भी थी। पंडित जी श्लोको का सामूहिक पाठ कराते थे और इस से वह बहुत प्रसन्न रहते थे। इस मे वे स्वयं सम्मिलित होते थे। इस समय वहां गुरु-शिष्य का भेद नहीं रहता था। वे स्वयं ही एक सदस्य होते थे। इस प्रकार जहा छात्र रुचिपूर्वक श्लोक कण्ठस्थ करने लगते थे वहा उनका स्वर तथा उच्चारण भी शुद्ध हो जाता था।

वह एक आदर्श गुरु थे। स्वभाव के सरल भी और उग्र भी। कोमलता एवं उग्रता का मेल हो सकता है। इस के वे एक मूर्तिमान् उदाहरण थे। पुराने पंडितो के समान तथा उस युग की प्रणाली के अनुसार वे कठोर शासन मे विश्वास रखते थे। परन्तु पढ़ाते थे बड़ी लग्न और मनोयोग से। जब तक छात्र विषय को भली भांति समझ नहीं लेता था। आगे नहीं बढ़ते थे। उन का अध्यापन एकांगी नहीं होता था। शब्द-अर्थ मात्र बताना उन्होंने कभी पर्याप्त नहीं माना-इतना काम तो टीकाएं ही कर सकतीं थीं। आज परीक्षार्थियों के लिए 'कुंजियां' निकलती हैं। पंडित जी विद्यार्थियो के लिये जीवित कुंजी थे।

उन की अपनी स्मृति आश्चर्यजनक थी, अतः एव छात्रों के लिए एक उदाहरण रहती थी। उन के अपने गुरु तो कुंजी बिना पढा नहीं सकते थे किन्तु यह इस के बिना ही पढ़ाते थे। कण्ठस्थ श्लोक क्रम वार घंटो पढ़ाते नही थकते थे। जब कभी हसते थे बच्चो के समान खूब जोर से हसते थे वहा कोई समय नहीं था और यह उन की सरल चित्त का अकाट्य प्रमाण था। विनोद करते समय वह अपने पद अथवा अपनी आयु का कोई लाभ नही उठाते थे। परन्तु विनोद भी उनका शास्त्रीय होता था। ऐसा लगता था कि इस समय भी वे पढा रहे हैं अथवा अपने प्रिय छात्रो की परीक्षा ले रहे हैं। पंडित जी का दुःखद शरीरावसान ७४ वर्ष की आयु मे गत २ अक्तूबर १९६६ को भरतपुर में हुआ। वे कुछ दिन रुग्ण रहे। परन्तु रुग्णता से पूर्व तक छोटे छोटे बालको को धर्मशिक्षा तथा संस्कृत उसी मनोयोग से पढा रहे थे। आज अच्छे संस्कृत-शिक्षको का तो अभाव ही है। पंडित जी सरीखे प्रखर मेधावी, निस्वार्थ भाव से मनोयोग पूर्वक पढाने वाले तथा शुद्ध अतः करण से छात्रो के हितैषी शिक्षक का देहान्त निश्चय से आकस्मिक ही कहा जायगा। उन का सहसा उठ जाना संस्कृत शिक्षा के प्रचार को भारी क्षति पहुचाने वाला है।

पंडित जी अपने पीछे एक साधारणतया समृद्ध परन्तु सर्वथा सुसंस्कृत परिवार छोड गये हैं। पत्नी, तीन पुत्र और एक पुत्री। पत्नी उन की जालन्धर कन्या महाविद्यालय की भूतपूर्वा छात्रा है, पुत्रो मे से एक उच्चकोटि के इंजीनियर तथा दूसरा वेदालंकार (गुरुकुल कांगड़ी), शास्त्री, प्रभाकर, साहित्य-रत्न, दो विषयो मे एम. ए. पी. एच. डी. तथा गवर्नमेंट कालेज भरतपुर में प्राध्यापक। पुत्री भी हिन्दी संस्कृत की अध्यापिका है। स्वर्गीय दामाद वेदालंकार, शास्त्री तथा एम. ए. थे, वे एक अत्यन्त होनहार वैदिक विद्वान् थे।

कुरुक्षेत्र में प्राचीन गुरुकुल शिक्षापद्धति का स्मारक गुरुकुल बसा हुआ है। वह आप के पिता श्री तथा अन्य वंशस्थो के संस्कृत-शिक्षा प्रेम की एक अमिट यादगार है। आप के निकट सम्बन्धी श्री ज्वालाप्रसाद जी ने इस संस्था के लिए जमीन दी, धन दिया और आप के पिता श्री गोपी नाथ जी तथा कुछ अन्य सम्बन्धियों ने इसको सींचने मे अपने तन तथा मन का योग दिया। आप के जीवन के अनेक बहुमूल्य वर्ष भी इस संस्था की सेवा मे व्यतीत हुए। आप के पिताश्री ने न केवल आप को, आप के छोटे भाई को और अपने कई पोतों को ही गुरुकुल में संस्कृत शिक्षा दिलवाई अपितु एक सच्चे वानप्रस्थी की न्याई अपनी आयु का अंतिम भाग इसको सींचने मे अर्पित किया। सम्भवतः ऐसे उदात्त कुल के संस्कारो के कारण ही वह वैश्य कुल मे जन्म लेकर भी संस्कृत वाङ्मय के प्रकांड पंडित बने, इसके मूक प्रचारक हुए और मृत्युपर्यन्त इसके निष्काम सेवक रहे।

जो आया है सो एक दिन जाएगा ही—परन्तु इसी कारण कोई विभूति विस्मरणीय नहीं होती। वन्दनियों की वन्दना करना कर्तव्य है। स्वर्गीय आत्मा को बार-बार नमस्कार। ★★

आर्यजगत साप्ताहिक के बारे में आर्यसमाज मारीशस का पत्र

पूज्य श्रीमान् सम्पादक जी सप्रेम नमस्ते।

आर्यजगत् का ऋषि-निर्वाण-अङ्क मिला पढकर बड़ी खुशी हुई। इसके जैसी उच्चकोटि की सामग्री मैंने अन्य धार्मिक पत्रिकाओ मे नही देखी है। मुझे प्रसन्नता है कि आर्यजगत ही एक मात्र पत्रिका है जो कई वर्षों से भारत के अलावा विदेशो मे वैदिक धर्म एव महर्षि दयानन्द सरस्वती के पावन सन्देश पहुचा रही है।

मेरी दृष्टि मे आप महर्षि दयानन्द जी के एक सच्चे अनुयायी हैं, प्रभु से प्रार्थना है कि आप जीवन भर इसी प्रकार विश्व के कोने-कोने मे अपनी पत्रिका द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार व प्रसार करते रहे यही मेरी अभिलाषा है।

विद्यानन्द रामदयाल
मंत्री आर्यसमाज

आर्यसमाज अमृतसर का ८९ वां वर्षीय जयन्ती महोत्सव

३० नवम्बर से ५ दिसम्बर तक आर्य समाज लोहगढ मे मनाया गया। इस अवसर पर

३० नवम्बर से ४ दिसम्बर तक यजुर्वेद के मन्त्रो से वृहद् यज्ञ किया गया जिसकी पूर्णाहुति रविवार ४ दिसम्बर को पूर्ण श्रद्धा पूर्वक डाली गई। यजमान सज्जन सस्त्रीक सम्मिलित होते रहे। ३० नवम्बर से २ दिसम्बर तक प. खुशी राम जी वेद कथा करते रहे।

१ दिसम्बर को गोरक्षा सम्मेलन श्री पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ इस मे प्रतिष्ठित सनातन धर्मी नामधारी आर्य समाजी सज्जनों के भाषण हुए। ११ व्यक्तियों के एक सत्याग्रही जत्थे का अभिनंदन किया गया। यह जत्था २ दिसम्बर को देहली चला गया। श्री मा० नन्द किशोर जी एम० ए० (अध्यापक डी० ए० वी० हाई स्कूल) ने २ दिसम्बर से ११ दिन का अनशन व्रत करने की घोषणा की और अब वह गीता भवन मे अनशन कर रहे हैं।

२ दिसम्बर को एक कविदरबार का आयोजन किया गया जिसमे प्रसिद्ध कवियो ने गोरक्षा, आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द के उपकारो पर कविता में पढ़ी।

उत्सव मे श्री प. खुशी राम जी, श्री प. ओ प्रकाश जी, श्री प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु जी, मेहता जगन्नाथ जी दत्त के सारगर्भित व्याख्यान तथा मा० वासुदेव गायनाचार्य, श्री सत्यपाल जी तथा चिमटा मण्डली श्री राजपाल-मदनमोहन ने अपने सुरीले भजनो और वीर रस पूर्ण प्रचार से समा बांधे रखा।

४ दिसम्बर साय काल काश्मीर बचाओ कान्फ्रेंस मे मेहता जगन्नाथ जी दत्त, महोपदेशक दयानन्द सालवेशन मिशन का एक विशेष व्याख्यान हुआ। इसमे आपने काश्मीर मे हिन्दुओ की शोचनीय दशा का ऐसा नकशा खेंचा जिसे सुन कर रोमाञ्च हो जाता था। रात ग्यारह बजे धन्यवाद और शान्ति पाठ से उत्सव की कार्यवाही समाप्त हुई।

५ दिसम्बर सोमवार स्त्री आर्य समाज लोहगढ के उत्सव में बहुत-सी देवियो के अतिरिक्त चिमटा भजन मण्डली के प्रेरणादायक भजन हुए।

—पिण्डी दास ज्ञानी प्रधान

अखिल भारतीय दयानन्द साल्वेशन मिशन होश्यारपुर के कार्यकर्त्ताओं का प्रथम वार्षिक सम्मेलन

(प० देवप्रकाशजी का अध्यक्षीयभाषण)

आल इंडिया दयानन्द साल्वेशन मिशन के संस्थापक प्रधान स्वर्गीय महात्मा देवीचन्द जी के जन्म दिवस १९ नवम्बर को मिशन ने अपने समस्त कार्यकर्त्ताओं का एक सम्मेलन होशियारपुर में बुलाया जिस में भारत के भिन्न-भिन्न प्रांतों में कार्य करने वाले प्रचारक बड़ी संख्या में सम्मिलित हुए। इस शुभ अवसर पर अमृतसर निवासी आर्य समाज के पुराने अनुभवी, त्यागी तपस्वी तथा शुद्धि क्षेत्र के प्रसिद्ध महारथी प० देव प्रकाश जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा—

इस समय देश बड़े संकट में है। हमारी भारत सरकार धर्म निर्पेक्ष है। विदेशी ईसाई मिशनरियों तथा मुसलमान मौलानों ने हमारे देश की भुखमरी तथा सरकार की नीति का अनुचित लाभ उठाया है। उनकी संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती चली जा रही है आल इंडिया दयानन्द साल्वेशन मिशन अपने जन्म-काल से ही हिन्दू जाति की रक्षा करता चला आ रहा है। मिशन ने देश के हरिजनों तथा आदिवासियों में सराहनीय सेवा कार्य किया है। गत ३३ वर्ष में इसने १,९६०५० धर्म से पतित किए गए हिन्दुओं को शुद्ध करके पुनः हिन्दू जाति का अंग बनाया है और २११२ हिन्दू देवियों को विधर्मियों तथा दुश्चरित्र लोगों से छुड़ा कर उनकी हर प्रकार रक्षा की है। इस के अतिरिक्त [illegible] की संख्या में हिन्दुओं को अन्य मतों का शिकार होने से बचाया है।

सभापति महोदय ने आगे चल कर कहा कि 'मुझे यह देख कर भी हार्दिक प्रसन्नता होती है कि मिशन के प्रचारक भारत के अनेक प्रदेशों में बड़े उत्साह से जाति सेवा का कार्य कर रहे हैं। मिशन ने धर्मार्थ औषधालय भी उत्कल (उड़ीसा) मध्यप्रदेश तथा तरनतारन में ईसाईयों के मुकाबला पर चला रहा है और योग्य तथा निर्धन विद्यार्थियों को पुस्तकें व छात्रवृत्तिया भी प्रदान कर रहा है।

इस महान् कार्य पर मिशन इस समय तक ५,९२०८२ रुपया व्यय कर चुका है। आप को यह जान कर भी प्रसन्नता प्राप्त होगी कि मिशन ने अभी थोड़े दिन हुए कि श्रीनगर कश्मीर में उन हिन्दू नवयुवकों तथा नवयुवतियों को जिन्होंने मैडिकल तथा वहां के इंजनीयरिंग कालजों में प्रवेशार्थ धर्म परिवर्तन कर लिया था, पुन. शुद्ध कर लिया है। इस महान कार्य के लिए मिशन हमारी बधाई का पात्र है।'

अपने भाषण के अन्त में प्रधान महोदय ने हिन्दू जनता तथा भारत सरकार का ध्यान ईसाई मिशनरियों तथा इस्लामी प्रचारकों के इन निन्दनीय कार्यों की देशघातक, अवैधानिक तथा आपत्तिजनक कार्यवाहियों की ओर दिलाते हुए तन, मन, धन द्वारा मिशन की सब प्रकार की सहायता प्रदान करने की अपील की।

रामदास—प्रधान मिशन

प्रादेशिक सभा से सम्बन्धित समाजों को आवश्यक सूचना

दीपमाला पर्व बीत चुका है लेकिन अभी तक दीवाली फंड सभा के दफ्तर में नही आया इसके बारेमे ऋषि-निर्वाण अंक में सूचना दी जा चुकी है लेकिन बहुत सी समाजोने इस ओर ध्यान देने का कष्ट नही किया। अत: पुन: प्रार्थना है कि परिवार के प्रत्येक सदस्य के अनुसार चार आना दीवाली फंड एकत्रित करके सभा के कार्यालय मे भेज कर सभा के आदेश का पालन करें।

—व्यवस्थापक

समाचार दर्शन

सभा मन्त्री का पत्र स्व. दीवानचन्द्र जी के सुपुत्र के नाम

माननीय श्री चड्डा जी

सप्रेम नमस्ते !

समाचार पत्रों मे आपके पूज्य पिता स्वर्गीय डा० दीवानचन्द्र जी के देहावसान का समाचार पढ कर सारे पंजाब भर मे शोक छा गया है। पंजाब का एक महान सपूत जिसने इस धरती पर विद्या विज्ञान की ज्योति प्रज्वलित की थी, जिसने यहां शिक्षा संस्थाओं और समाज मंदिरों की एक लंबी लड़ी स्थापित करने में अपना तन, मन, धन लगा दिया था, आज हम से सर्वदा के लिए बिछुड गया है। वे पुरानी पीढी के कर्म योगी सन्तों मे से थे जिन्होंने बलिदान का जीवन बिताते हुए अपने अंतिम क्षण तक समाज सेवा का कार्य बडी तत्परता से [illegible] किया [illegible] के [illegible] से उनके देहावसान से आर्यसमाज को [illegible] क्षति हुई है। आर्य समाज के इतिहास में उनका नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा। परम पिता परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें और सारे परिवार को इस [illegible] कष्ट सहन करने की शक्ति दें।

वेद प्रकाश मलहोत्रा
सभा मन्त्री

आर्यसमाज 'मल्हारगंज इन्दौर

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज मल्हारगंज, 'इन्दौर की यह साधारण सभा, इस समाज के कर्मठ सदस्य श्री वतल्लाल जी के आकस्मिक निधन पर हार्दिक दुःख प्रकट करती है, उनकी इस मृत्यु से इस समाज की बडी क्षति हुई है।

हम सब परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह दिवगंत आत्मा को शांति प्रदान करे तथा उनके शोक सन्तप्त परिवार को इस दुख को सहन करने की क्षमता प्रदान करे।

दसूआ

आज दिनांक ५-१२-६६ को डी. ए. वी. हायर सैकण्डरी स्कूल दसूहा के अध्यापकों तथा छात्रों की शोक सभा हुई। जिस मे स्कूल के भूतपूर्व मुख्याध्यापक लाला जमुनादास जी रल्हन बी. ए. बी. टी के आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करते हुए श्रद्धांजलियां अर्पित की।

हम उनके परिवार से समवेदना प्रकट करते हुए परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह दिवगत आत्मा को सदगति प्रदान करे तथा परिवार को इस अपार कष्ट को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

प्रिंसीपल डी ए. वी H.S. स्कूल

आर्य प्रादेशिक सभा की आवश्यक सूचना

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित सभी समाजों को अपने प्रतिनिधि भेजने तथा दशांश भेजने के 'क, ख' फार्म भेजे जा चुके हैं परन्तु गति बहुत धीमी है। समय थोड़ा रह गया है अत: अपनी समाजों के प्रतिनिधियों की सूचि तथा दशांश सभा के कार्यालय मे यथा समय भेज कर कर्तव्य पालन करें।

—सभा मन्त्री

मुद्रक व प्रकाशक प्रो० वेदप्रकाश मलहोत्रा एम. ए. आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा बार मिलाप प्रैस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर

Text illustration, p. 71 (cf. text p. 72)

Woodcut from 'Ragged and Torne and True. To the tune of Old Simon the King. Printed by the Assignes of Thomas Symcocke.' Roxburghe Collection of Ballads, I, 352, 353. Dept. of Printed Books, British Museum.

(For general note on the Roxburghe Collection cf. note to § 25–28 above)

The housewife sits spinning at her door, while a stag hunt goes by (rather improbably) in the background. The woodcut is not directly illustrative of the ballad, which is a somewhat smug song by a young man, who though poor and ragged, is contented, and therefore better off than everyone else:—

'What though my backe goes bare
I'm ragged and torne and true'

Text illustration, p 71 (cf text p. 72)

Woodcut from 'A lanthorne for Landlords. To the tune of the Duke of Norfolk London. Printed for John Wright.' Roxburghe Collection of Ballads, I, 180, 181. Dept of Printed Books, British Museum

(For general note on the Roxburghe Collection cf. note to § 25–28 above)

This doleful ballad tells how a poor widow helped in the harvesting near Norwich and of how her two little children wandered away among the broad cornfields and were lost and miserably died The woodcut shows haymaking instead of harvesting.

Text illustration, p. 95 (cf text p. 96)

Woodcut from *The Shepheardes Calendar*, by Edmund Spenser (1581 edition). From a copy in the Dept of Printed Books, British Museum

This woodcut for the month of May may be described in Spenser's own words from the dialogue between Piers and Palinodie The dialogue treats actually of a discourse between Protestant and Catholic, but disregarding this we may take the following passage purely for its description of the English countryside on May morning and the doings of the country youth

'Is not thilke the mery month of May,
When love lads masken in fresh aray?

. . .

Yongthes folke now flocken in everywhere,
To gather may buskets and smelling brere:
And home they hasten the postes to dight,
And all the Kirke pillours eare day light
With Hawthorne buds, and swete Eglantine,
And girlonds of roses and Sopps in wine

Sicker this morrowe, ne longer agoe,
I saw a shole of shepheardes outgoe,
With singing, and shouting, and jolly chere:
Before them yode a lusty Tabrere,
That to the many a Horne pype played,
Whereto they dauncen eche one with his mayd.
To see those folkes make such jouysaunce,
Made my heart after the pipe to daunce.
Then to the greene wood they speeded hem all,
To fetchen home May with their musicall:
And home they bringen in a royall throne,
Crowned as king. and his Queene attone
Was Lady Flora, on whom did attend
A fayre flock of Faeries, and a fresh bend
Of lovely Nymphs (O that I were there,
To helpen the Ladyes their Maybush beare).'

Text illustration, p. 96 (cf text p. 96)

Woodcut from 'The Milkmaid's Life, or, A pretty new Ditty, Composed and Pend, The praise of the Milking paile to defend To a curious new tune called The Milkmaids Dumps Printed at London for T Lambert' Roxburghe Collection of Ballads, I 244, 245 Dept of Printed Books, British Museum.

(For general note on the Roxburghe Collection cf. note to § 25–28 above)

Text illustration, p. 97 (cf text p. 96)

Woodcut from 'The Merry conceited Lasse To a pleasant northern tune. Printed at London for Thomas Lambert at the signe of the Horse-shoe in Smithfield' Roxburghe Collection of Ballads, I, 240, 241 Dept of Printed Books, British Museum

(For general note on the Roxburghe Collection cf. note to § 25–28 above.)

Text illustration, p 109 (cf. text p 109)

Woodcut from 'The Coaches overthrow or A Iovial Exaltation of divers Tradesmen, and others, for the suppression of troublesome hackney Coaches. To the tune of old King Harry' Roxburghe Collection of Ballads, I, 546, 547. Dept of Printed Books, British Museum

(For general note on the Roxburghe Collection cf. note on § 25–28 above)

The ballad is all for the suppression of hackney coaches for

'They make such a crowde
Men cannot passe the towne.'

It calls for room for 'the Carmens Cars and the Merchants Wares,' and in one verse declares

'Arise Sedan
Thou shalt be the Man
To beare us about the Towne.'

The oft repeated refrain is

'Heigh downe, dery dery downe, with the hackney coaches downe.'

(For other illustrations of different types of road traffic cf § 100–105.)

INDEX